সাহিত্য-পরিষদ্-গ্রন্থাবলী সংখ্যা—৪৫

সঙ্গীত
রাগকল্পদ্রুম

ভারতীয় প্রাচীন সঙ্গীত-শাস্ত্রালোচনা

ও

সংস্কৃত, হিন্দী, গুজরাতী, মরাঠী, কর্ণাট, তৈলঙ্গী, তামিল, বাঙ্গালা, উড়িয়া,
আরব্য, পারস্য, পেগুয়ান, ইংরাজী ও রাজপুতনার নানা-
প্রাদেশিক ভাষায় প্রচলিত নানা সুরের
প্রাচীন গান-সংগ্রহ

৺কৃষ্ণানন্দ ব্যাসদেব রাগসাগর বিরচিত

প্রথম খণ্ড।

সুপ্রসিদ্ধ সাহিত্যানুরাগী লালগোলার
রাজা রাও শ্রীযোগীন্দ্রনারায়ণ রায় বাহাদুরের
সম্পূর্ণ ব্যয়ে ও উৎসাহে
হিন্দী প্রভৃতি বিবিধ ভাষায় পারদর্শী
সঙ্গীতজ্ঞগণের সাহায্যে

বিশ্বকোষ-সম্পাদক
শ্রীনগেন্দ্রনাথ বসু প্রাচ্যবিদ্যামহার্ণব সিদ্ধান্তবারিধি
সম্পাদিত

কলিকাতা
২৪৩।১ অপার সার্কুলার রোড, বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষৎ-মন্দির হইতে
শ্রীরামকমল সিংহ কর্ত্তৃক প্রকাশিত
সংবৎ ১৯৭১

Printed by
R. C. Mitra, at the Visvakosha Press
9, Kantapukur Bye Lane, Baghbazar,
Calcutta.

SANGITA

RAGA-KALPADRUMA

Encyclopaedia of Indian Music

COMPRISING

Popular Sanskrit, Hindi, Gujrati, Karnatic, Telegu, Tamil, Bengali, Uriya, Arabic, Persian, Peguan and various songs of the different dialect of Rajputana as well as some ancient English songs.

COMPILED BY

LATE KRISHNANANDA VYASADEVA RAGASAGARA

———oo———

VOL. I

(REVISED EDITION)

Edited by

NAGENDRA NATH VASU, **Prachyavidyamaharnava, Siddhantavaridhi**

Under the distinguished patronage of

RAJA RAO JOGINDRANARAYAN RAY BAHADUR

OF

LALGOLA.

Published

From the Bangiya Sahitya Parishad,

By Rama Kamal Sinha

243|1 Upper Circular Road,

CALCUTTA.

1914



র.আ রাজা শ্রীযোগীন্দ্রনারায়ণ রায় বাহা:

লালগোলা

सङ्गीत

रागकल्पद्रुमः

भारतीय प्राचीन सङ्गीत-शास्त्रालोचना

और

संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, मराठी, कर्णाटी, तैलङ्गी, तामिल, बंगला, उड़िया, अरबी, फ़ारसी, उर्दू, पेगुयान, अंगरेजी और राजपूतानेकी नाना प्रादेशिक भाषाओंमें प्रचलित नाना सुरका प्राचीन गान-संग्रह

स्वर्गीय कृष्णानन्द रागसागर-विरचित

———0———

सुप्रसिद्ध साहित्यानुरागी लालगोलेके

राजा राव श्रीयोगीन्द्रनारायण राय बहादुरके

सम्पूर्ण व्यय और उत्साहपर

हिन्दी प्रभृति विविध भाषाओंमें पारदर्शी सङ्गीतज्ञोंके साहाय्यसे

विश्वकोष-सम्पादक

श्रीनगेन्द्रनाथ वसु प्राच्यविद्यामहार्णव

सिद्धान्तवारिधि-सम्पादित

———0———

२४।१ अपर-सरकुलार रोड, बङ्गीय साहित्य-परिषत्-मन्दिरसे

श्रीरामकमल सिंह द्वारा प्रकाशित

कलकत्ता

संवत् १९७१

বিজ্ঞপ্তি

উদয়পুরের মহারাণার অন্যতম সঙ্গীতাচার্য্য ৺কৃষ্ণানন্দ ব্যাসদেব মহাশয় এই সুবৃহৎ সঙ্গীতবিষয়ক গ্রন্থ সঙ্কলন করেন। যে সময়ে কলিকাতায় সর্ রাজা রাধাকান্ত দেব বাহাদুর **শব্দকল্পদ্রুম** সমাধা করিতেছিলেন, সেই সময়ে শব্দকল্পদ্রুম দেখিয়া ব্যাসদেবজীর সঙ্গীতবিষয়ক **রাগকল্পদ্রুম** প্রকাশের ইচ্ছা হয়। তজ্জন্য তিনি ভারতের নানাস্থানে ভ্রমণ করেন এবং দেশীয় রাজন্যবর্গের সভায় উপস্থিত হইয়া বহুতর সঙ্গীতশাস্ত্র এবং তৎকালে ভারতের নানা ভাষায় ও প্রধান প্রধান গায়কদিগের নিকট প্রচলিত নানা সুরের প্রাচীন ও অর্বাচীন প্রসিদ্ধ গানগুলি সংগ্রহ করেন। তাঁহার রাগরাগিণী সম্বন্ধে অসাধারণ পারদর্শিতা লক্ষ্য করিয়া মেবাড়ের মহারাণার সভায় তাঁহাকে **"রাগসাগর"** উপাধি দেওয়া হয়। শব্দকল্পদ্রুমের ন্যায় তাঁহার **রাগকল্পদ্রুম** খানিও প্রথমে সাতখণ্ডে প্রকাশ করিবার সঙ্কল্প ছিল। কিন্তু তিনি নানা কারণে অবশেষে তিনখণ্ডে প্রকাশ করিতে বাধ্য হন। ১৯০০ সংবতে (১৮৪৩ খৃষ্টাব্দে) তাঁহার এই বৃহৎ গ্রন্থ সম্পূর্ণ হয়। তিনি অল্প সংখ্যক পুস্তকই ছাপাইয়া ছিলেন এবং দেশের গণ্যমান্য ধনী ও রাজন্যবর্গ সেই সেই খণ্ড গ্রহণ করেন। তাঁহার গ্রন্থের শেষাংশে সেই সকল মহাত্মার নাম প্রকাশ করিয়া গিয়াছেন।

সঙ্গীতবিষয়ক এত বড় মুদ্রিত গ্রন্থ ভারতে কেন জগতের অপর কোন ভাষায় আছে কি না জানিনা। বহু দিন হইতে অনেকেই এই অপূর্ব্ব সঙ্গীত-গ্রন্থের অভাব অনুভব করিতেছিলেন। সঙ্গীতামোদিগণের সেই অভাব দূর করিবার জন্য স্বনামধন্য লালগোলার রাজা রাও শ্রীযোগীন্দ্রনারায়ণ রায় বাহাদুর এই মহাগ্রন্থ প্রকাশের আবশ্যকতা অনুভব করেন এবং তাঁহারই যত্নে ও সম্পূর্ণ অর্থানুকূল্যে এই বিরাট গ্রন্থ মুদ্রিত হইতেছে। তাঁহার অর্থসাহায্য ব্যতীত এই বিশাল গ্রন্থের বিপুল ব্যয় নির্ব্বাহ হইত না, তজ্জন্য তিনি ভারতের সঙ্গীতামোদিগণের চিরকৃতজ্ঞতা-ভাজন হইবেন।

এই খণ্ডে প্রথমাংশ প্রকাশিত হইল। অতঃপর মূল গ্রন্থের মুদ্রণ শেষ লইলে সংগ্রহকার রাগসাগরের জীবনী, তিনি যে যে গায়কের গান সংগ্রহ করিয়াছেন তাঁহাদের সংক্ষিপ্ত পরিচয় এবং এই গ্রন্থে যে সকল গান প্রকাশিত হইয়াছে সেই সকল গানের অকারাদি বর্ণানুক্রম সূচী এবং মুখবন্ধ স্বরূপ ভারতীয় সঙ্গীতশাস্ত্রের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস প্রদত্ত হইবে।

বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষদের পরম হিতৈষী মিত্র লালগোলার রাজা বাহাদুরই তাঁহার পুস্তকাগার হইতে এই রাগকল্পদ্রুমের এক খণ্ড বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষদ্‌কে উপহার দান করেন এবং সেই গ্রন্থের পুনর্মুদ্রণের ব্যবস্থা করিয়া দেন। তাঁহারই ইচ্ছাক্রমে এবং তাঁহারই সম্পূর্ণ ব্যয়ে বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষৎ এই গ্রন্থ প্রকাশ করিলেন। বাঙ্গালা ভাষা ও সাহিত্যের অনুশীলনই বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষদের মুখ্য উদ্দেশ্য হইলেও এই গ্রন্থের গৌরব বিবেচনায় ইহার প্রকাশ সাহিত্য-পরিষদের অধিকার-বহির্ভূত হয় নাই। সঙ্গীত বিদ্যায় বাঙ্গালা দেশে ভাষা ভেদে কোন পক্ষপাত নাই,—ভারতবর্ষের অন্যান্য প্রাদেশিক ভাষায় রচিত গান বাঙ্গালা গানের তুল্য আদরই পাইয়া থাকে। সঙ্গীতবিদ্যায় হিন্দী-গানের সমাদর এ দেশে বাঙ্গালা গানেরও উচ্চে। লুপ্তপ্রায় বিস্তর বাঙ্গালা গানও এই পুস্তকে সঙ্কলিত হইয়াছে। এই গ্রন্থপ্রকাশে সেই সকল বাঙ্গালা গানও ধ্বংসমুখ হইতে রক্ষা পাইবে। ভারতবর্ষের সর্ব্বত্রই এই গ্রন্থের প্রচলন আবশ্যক, এই বিশেষ কারণে প্রচলিত প্রথা ত্যাগ করিয়া এই গ্রন্থ দেবনাগর অক্ষরেই মুদ্রিত হইল।

সম্পাদকের কর্ত্তব্য আদর্শ পুস্তকের পাঠশুদ্ধির দিকে লক্ষ্য রাখা। আদর্শ গ্রন্থ ১৯০০ সংবতে প্রকাশিত হয়, তৎকালে এদেশে নাগরী মুদ্রণের সুব্যবস্থা ছিল না, এ কারণ মূল গ্রন্থ পাদচ্ছেদবিরহিত হস্ত-লিখিত প্রাচীন পুথির

ভাবেই মুদ্রিত হইয়াছিল, তাহা আবার উপযুক্ত সংশোধনের অভাবে মুদ্রাকরের দোষে এতই ভ্রমপূর্ণ হইয়া মুদ্রিত হইয়াছে যে, অনেক স্থলে অর্থগ্রহ হওয়াই দুরূহ। বিশেষতঃ আদর্শ পুস্তকে নানা প্রাচীন সঙ্গীতশাস্ত্র হইতে যে সকল সংস্কৃত শ্লোক উদ্ধৃত হইয়াছে, বলিতে কি তাহার একটী শ্লোকও ভ্রমশূন্য নহে, এ কারণ প্রত্যেক শ্লোক ঠিক করিবার জন্য নানা স্থান হইতে মুদ্রিত ও অমুদ্রিত সেই সেই সঙ্গীতশাস্ত্র সংগ্রহ করিয়া বহু আয়াসে প্রত্যেক শ্লোকের পাঠশুদ্ধি ও প্রাপ্তিস্থান নির্দ্দেশ করিতে হইয়াছে। এতদ্ভিন্ন নানা পদের যথাসাধ্য প্রকৃত পাঠ ঠিক করিতে তৎতৎ ভাষায় অভিজ্ঞ নানা মহাজনের আশ্রয় লইতে হইয়াছে।

বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষৎ
২৪৩।১ অপার সার্কুলর রোড, কলিকাতা
ভাদ্র-পূর্ণিমা

শ্রীনগেন্দ্রনাথ বসু

विज्ञप्ति

उदयपुर-महाराणाके अन्यतम सङ्गीताचार्य ८कृष्णानन्द व्यासदेव महाशयने यह सुबृहत् सङ्गीतविषयक ग्रन्थ सङ्कलन किया था। जिस समय कलकत्तेमें सर राजा राधाकान्त देव बहादुर शब्दकल्पद्रुम समाप्त कर रहे थे, उसी समय शब्दकल्पद्रुम देखकर व्यासदेवजीने अपने सङ्गीतविषयक रागकल्पद्रुमको प्रकाश करना चाहा। इसके लिये उन्होंने भारतके नाना स्थानोंमें भ्रमणकर और देशीय राजाओंकी सभामें उपस्थित हो, बहुतसा सङ्गीतशास्त्र, सामयिक भारतको नाना भाषाओं और प्रधान-प्रधान गायकोंके निकट प्रचलित तरह तरहका पुराना और नया गाना इकट्ठा किया। राग-रागिणियोंके सम्बन्धमें उनको असाधारण पारदर्शिता देखकर मेवाड़के महाराणाकी सभामें उन्हें 'रागसागर'की उपाधि दी गई। शब्दकल्पद्रुमकी तरह पहले रागकल्पद्रुमको भी सात खण्डोंमें वह प्रकाश करना चाहते थे। किन्तु अन्तमें कई कारणोंसे वह इसे तीन ही खण्डोंमें प्रकाश करनेके लिये वाध्य हुए। विक्रमीय १९०० संवत्में (सन् १८४३ई०) उनका यह बृहत् ग्रन्थ सम्पूर्ण हुआ। उन्होंने पुस्तकें थोड़ी ही छपाईं, और देशके गण्यमान्य धनियों और राजाओंने उन सब खण्डोंको ग्रहण किया। अपने ग्रन्थके अन्तमें वह लेनेवाले सब बड़े लोगोंके नाम प्रकाश कर गये हैं।

नहीं जानते, कि इतना बड़ा सङ्गीतविषयक मुद्रित ग्रन्थ भारतको ही क्या, जगत्की किसी भाषामें है या नहीं। बहुत दिनोंसे कितने ही लोग इस अपूर्व सङ्गीतग्रन्थके अभावका अनुभव करते थे। सङ्गीतामोदियोंका यही अभाव मिटानेके लिये स्वनामधन्य मुर्शिदाबाद—लालगोलेके राजा राव श्रीयोगीन्द्रनारायण राय बहादुरने इस बृहत् ग्रन्थके प्रकाश करनेकी आवश्यकता देखी; उन्हींके यत्न और सम्पूर्ण अर्थानुकूल्यसे यह विराट् ग्रन्थ छप रहा है; सिवा उनके अर्थसाहाय्य इस विशाल ग्रन्थके विपुल व्ययका निर्वाह कभी न होता, इस लिये राजाबहादुर भारतीय सङ्गीतामोदियोंके चिरकृतज्ञताभाजन अवश्य ही होंगे।

इस खण्डमें ग्रन्थका प्रथमांश प्रकाशित हुआ है। इसके बाद मूलग्रन्थ छप जानेपर, संग्रहकार-रागसागरकी जीवनी, उन्होंने जिन-जिन गायकोंके गानको संग्रह किया, उनका परिचय, इस ग्रन्थमें जो सकल गान प्रकाशित हुए हैं, उन सबकी अकारादि वर्णानुक्रमिक सूची और मुखबन्धकी तरह भारतीय सङ्गीतशास्त्रका संक्षिप्त इतिहास प्रकाशित किया जायेगा।

वङ्गीय साहित्य-परिषत्के परमहितैषी मित्र लालगोलेके राजाबहादुरने ही अपने पुस्तकागारसे इस रागकल्पद्रुमका एक खण्ड वङ्गीय साहित्य-परिषत्को उपहार-स्वरूप दान और इसके फिरसे छपानेका प्रबन्ध किया। उन्हींके इच्छाक्रम और उन्हींके सम्पूर्ण व्ययसे, वङ्गीय साहित्य परिषत्ने इस ग्रन्थको छपाया। बंगला भाषा और साहित्यका अनुशीलन ही वङ्गीय साहित्य-परिषत्का मुख्य उद्देश्य होते हुए भी इस ग्रन्थकी गौरवविवेचनासे इसका प्रकाश साहित्य-परिषत्के अधिकारसे वहिर्भूत न हुआ। सङ्गीत-विद्यापर बङ्गालमें भाषाभेदसे कोई पक्षपात नहीं,—भारतवर्षको अन्यान्य प्रादेशिक भाषाओंमें रचित गान, बंगला गानके समान आदर पाया करते हैं। सङ्गीतविद्यामें हिन्दी गानका समादर इस देशमें बंगला गानसे भी बढ़ा है।

लुप्तप्राय अनेक बंगला गान भी इस ग्रन्थमें सङ्कलित हुए हैं। इस ग्रन्थके छपनेसे वह सकल बंगला गान भी ध्वंसमुखसे रक्षा पायेंगे। इसी विशेष कारणसे प्रचलित प्रथा छोड़, यह ग्रन्थ देवनागर अक्षरोंमें ही छापा गया, क्योंकि भारतवर्षमें सभी जगह इस ग्रन्थका प्रचलन आवश्यक है।

सम्पादकका कर्तव्य आदर्शग्रन्थको पाठशुद्धिपर लच्य रखना है। आदर्शग्रन्थ विक्रमीय १८०० संवत्में प्रकाशित हुआ। पहले इस देशमें नागरीमुद्रणको सुव्यवस्था न थी। इसीसे मूलग्रन्थ पादच्छेद-विरहित हाथको लिखो पुरानी पोथी हो को तरह मुद्रित हुआ था। इसी कारण उपयुक्त संशोधनके अभाव और मुद्राकरके दोषसे इतना भ्रमपूर्ण हो आदर्श ग्रन्थ छपा, कि कितनी हो जगह उसका अर्थ हो समझ पड़ना मुश्किल हो जाता है। विशेषत: आदर्श ग्रन्थमें नाना प्राचीन सङ्गीतशास्त्रोंसे जो सकल संस्कृत श्लोक उद्धृत हुए हैं, उनमें यह कहनेका आवश्यकता नहीं, कि एक भी श्लोक भ्रमशून्य नहीं देख पड़ता। इस लिये प्रत्येक श्लोक सुधारनेके लिये नाना स्थानोंसे मुद्रित और अमुद्रित, उन्हीं-उन्हीं सङ्गीतशास्त्रोंको संग्रह कर, बड़े यत्नसे प्रत्येक श्लोकको पाठशुद्धि और प्राप्तिस्थानको निर्देश किया गया है, सिवा इसके. नाना पदोंका यथासाध्य प्रकृत पाठ ठीक करनेमें उन-उन भाषाओंके अभिज्ञ नाना विद्वानोंका आश्रय लेना पड़ा है।

श्रीनगेन्द्रनाथ वसु

भाद्र-पूर्णिमा।

वङ्गीय साहित्य-परिषत्,
२४३।१ अपार सार्कूलार रोड, कलकत्ता।

रागकल्पद्रुमः

प्रथमखण्ड- -सूचीपत्र

रागरागिणी-समय

रागरागिणी-ध्यानोदाहरण

सूचीपत्र

झिंझोटी—

राग जङ्गला—

रागसागर-संग्रहकृत—

———0———

रागकल्पद्रुमः

अथ मङ्गलाचरणं

देवीं सरस्वतीं नत्वा गणेशं हरिमीश्वरम् ।
रागकल्पद्रुमं ग्रन्थं कुरुते रागसागरः ॥*
पौत्रोऽहममरानन्द-वेदव्यास-द्विजन्मनः ।
पुत्रश्च हीरकानन्द वेदव्यासस्य धीमतः ॥
कृष्णानन्दाभिधो वेदव्यासो नत्वा सरस्वतीम् ।
रागकल्पद्रुमं नाम कुर्वे ग्रन्थं सतां मुदे ॥
देवीं वाक्पतिमीश्वरं गणपतिं नत्वा हरिं मारुतिं†
सङ्गीतं भरतेश-मारुति-मतं सम्यक् विचार्य्यादरात् ।‡
इन्द्रप्रस्थ-समुद्भवैर्विरचितं यत्तानसेनादिभि-
रुक्तं तत् प्रकरोमि§ नादनिलयं श्रीराग-कल्पद्रुमम् ॥

द्युतिकनकसुगौर-स्निग्धमाहेन्द्रनीलौ
छविभिरखिलवृन्दारण्यमुद्भासयन्तौ ।
घनपुरटसुवस्त्रौ मोहयन्तौ त्रिलोकान्
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिका-कृष्णचन्द्रौ ॥

संगीतदर्पणे (१।१—२)

प्रणम्य शिरसा देवौ पितामह-महेश्वरौ ।
सङ्गीत-शास्त्रसकल-सारभागो: मयोच्यते ॥

भरतादिमतं सर्वमालोच्यातिप्रयत्नतः ।
श्रीमता हरिभट्टेन* सज्जनानन्द-हेतुना ॥
प्रचुराह्लाद†-संगीत-सारोद्धारो विधीयते ॥

नारदसंहितायां (१।७)—

श्रीभगवानुवाच

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ! ॥

अथ नादोत्पत्तिः

संगीतदर्पणे (१।२८—३१)—

अथ नादस्य चोत्पत्तिं वक्ष्ये शास्त्र-विवेकतः ॥
धर्म्मार्थकाममोक्षाणामिदमेवैकसाधनम् ॥
नादविद्यां परां लब्ध्वा सरस्वत्याः प्रसादतः ।
कम्बलाश्वतरौ नागौ शम्भोः कुण्डलतां गतौ ॥
पशुः शिशुर्मृगो वापि नादेन परितुष्यति ।
अतो नादस्य माहात्म्यं व्याख्यातुं केन शक्यते ॥

संगीतसंहितायां (१।३६—३८)—

पूजा-कोटिगुणं ध्यानं ध्यानात् कोटिगुणं जपः ।
जपात् कोटिगुणं गानं गानात् परतरं नहि ॥

---

* राग-कल्पद्रुमो ग्रन्थः क्रियते रागसागरैः । इति पाठः ।
† हनुमन्तं । इति पाठान्तरं ।
‡ सङ्गीतं प्रविचार्य्य भरत-हनुमत्प्रोक्तैव वागुम्फितं । इति वा पाठः ।
§ सद्युक्तं प्रकरोमि । इति पाठः ।

* श्रीमद्दामोदराख्येन । इति संगीतदर्पण-धृत-पाठः ।
† 'प्रचरद्रूपसंगीत' इति मुद्रित-संगीतदर्पणम् ।

गीतज्ञो यदि गीतेन* चाप्नोति परमं पदम् ।
रुद्रस्यानुचरो भूत्वा तेनैव सह मोदते ॥
पूर्वं चतुर्णां वेदानां सारमाकृष्य पद्मभूः ।
इदन्तु पञ्चमं वेदं सङ्गीताख्यमकल्पयत् ॥

संगीतभाष्ये —

सुखिनि सुखनिधानं दुःखितानां विनोदः
श्रवण-हृदयहारी मन्मथस्याग्रदूतः ।
अतिचतुर-सुगम्यो वल्लभः कामिनीनां
जयति जयति नादः पञ्चमस्योपवेदः ॥

संगीतरत्नाकरे†—

श्रुतिस्मृत्यादि-साहित्य-नानाशास्त्रविदोऽपि च ।
संगीतं ये न जानन्ति ते द्विपादाः मृगाः स्मृताः ॥

संगीतमहोदधौ (१।५)—

संगीतसाहित्य-रसानभिज्ञः
ख्यातः पशुः पुच्छविषाणहीनः ।
चरत्यसौ किं तृणमत्ति नो वा
परं पशूनामुपवासहेतुः ॥

प्रयोजनमाह गान्धर्ववेदे—

त्रिवर्ग-फलदाः सर्वे दानाध्यय-जपादयः ।‡
एकं सङ्गीत-विज्ञानं चतुर्वर्ग-फलप्रदम् ॥
हर्षादि-सुखदो धर्मो धनकामौ नृपादितः ।
निष्कामं तदनुष्ठानं मोक्षः§स्तस्मात्तदभ्यसेत् ॥

तथा च विज्ञानेश्वरः—

वीणावादन-तत्त्वज्ञो रागविद्या-विशारदः ।
मूर्च्छना-श्रुतिसम्पन्नो मोक्षमार्गञ्च गच्छति ॥**
गीतवाद्यञ्च नृत्यञ्च त्रयः संगीतमुच्यते ।
गीतवाद्योभयं यत्र संगीतमिति केचन ॥

* 'योगेन' इति (३।११६) याज्ञवल्क्यस्मृतिधृत-पाठः ।

† मूल-संगीतरत्नाकरे इदम् श्लोकाभावः ।

‡ सर्वे दानाध्ययनमुखादयः । इति पाठान्तरम् ।

§ निष्कामं तदनुष्ठानान्मोक्ष । इति वा पाठः ।

** "वीणावादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः ।
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छति ॥"
इति याज्ञवल्क्यस्मृतिधृतपाठः ३।११५ ।

विष्णुपुराणे (१।२२।८३)—

काव्यालापाश्च ये केचित् गीतकान्यखिलानि च ।
शब्दमूर्त्तिधरस्यैतद्वपुर्विष्णोर्महात्मनः ॥
सर्वेषामेव पुण्यानामस्ति संख्या यशस्विनि ।
क्रमाच्च गीयते येन तस्य संख्या न विद्यते ॥

शिवसंगीते—

न घृते तादृशी प्रीतिर्न क्षीरे न च गुग्गुले ।
यादृशी चैव गान्धर्वे मम प्रीतिर्वरानने ॥

संगीतदर्पणे (१।३--६)—

मार्गदेशी विभागेन संगीतं द्विविधं मतम् ।
स्वर्गे मार्गाश्रितं देश्याश्रितं भूतल-रञ्जकम् ॥
नारायणेन यत्सृष्टं प्रयुक्तं द्रुहिणेन च ।*
महादेवस्य पुरतस्तन्मार्गाख्यं विमुक्तिदम् ॥
तत्तद्देशस्थया रीत्या यत् स्याल्लोकानुरञ्जनम् ।
गीतवादित्रनृत्यानां रक्तिः साधारणो गुणः ॥

संगीतभाष्ये—

द्रुहिणेन यदन्विष्टं प्रयुक्तं नारदेन च ।
कल्लिनाथस्य पुरतस्तन्मार्गाख्यं विमुक्तिदम् ॥

नारदसंहितायां† (१।१०)—

यदुक्तं द्रुहिणेनैव स मार्ग इति प्रोच्यते ।
देशे देशे तु संगीतं तद्देशीयं विधीयते ॥

नारदसंगीते —

न नादेन विना गीतं न नादेन विना स्वरः ।
न नादेन विना ग्रामस्तस्मान्नादात्मकं जगत् ॥
आत्मा बुद्ध्यादि-सहितं मनः प्रेरयते यतः ।
देहस्थवह्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम् ॥
न-कारः प्राणवायुः स्याद्द-कारो हव्यवाहनः ।
तत् समुत्पद्यते यस्मात्तस्मान्नादोऽयमुच्यते ॥
मन्द्रो हृदि स्थितः कण्ठे मध्यस्तारश्च मूर्द्धनि ।
द्विगुणः किं समानेन पूर्वस्मादुत्तरोत्तरः ॥

* द्रुहिणेन यदन्विष्टं प्रयुक्तं भरतेन च । इति मुद्रितसंगीतदर्पणपाठः ।

† नारदसंहितायां । इति पाठान्तरम् ।

ध्वन्यात्मको वर्णात्मक: स नादो द्विविधस्तथा ।
आहतोऽनाहतश्चेति स नादो द्विविधो मत: ।
यत्रोभयश्च संयोग आहत: स प्रकीर्त्तित: ॥

न्यायशास्त्रे शब्दगुणं आकाशं । तथा च नारदसंहितायां (१।१५—१७)—

आकाशसम्भवो नादस्तथानाहत उच्यते ।
आहतो नादमाक्रम्य तथानाहत-संज्ञकात् ॥
एको ध्वन्यात्मको ज्ञेय: परो वर्णात्मकस्तथा ।
स नादो द्विविध: प्रोक्तो नादशास्त्र-विशारदै: ॥
आहतो रञ्जक: प्रोक्तोऽनाहतो मुक्तिदायक: ।
सोऽयं प्रकाशते पिण्डे तस्मात् पिण्डोऽभिधीयते ॥

नादसंहितायां [संगीतदर्पणे १।१४—१७]

आहतोऽनाहतश्चेति द्विधा नादो निगद्यते ।
नाद: प्रकाशते पिण्डे तस्मात् पिण्डोऽभिधीयते ॥
तत्रानाहतनादन्तु मुनय: समुपासते ।
गुरूपदिष्टमार्गेण मुक्तिदं न तु रञ्जकम् ॥
स नादस्त्वाहतो लोके रञ्जको भव-भञ्जक: ।
नादो ब्रह्म-समाख्यातं चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥
आकाशाग्नि-मरुज्जीवो नाभेरूर्ध्वं समुच्चरन् ।
मुखेऽभिव्यक्तिमायाति य: स नाद: प्रकीर्त्तित: ॥

तत्र [संगीतदर्पणे १।३२] चाञ्जनेय: —

नादाब्धेस्तु परं पारं न जानाति सरस्वती ।
अद्यापि मज्जन-भयात्तुम्बं वहति वक्षसि ॥
नादेन व्यज्यते वर्ण: पदं वर्णात् पदाद्वच: ।
वचसो व्यवहारोऽयं नादाधीनमतो जगत् ॥

संगीतदर्पणे (१।७—१३) रागोत्पादनकारणं—

शारीरं नादसंभूति: स्थानानि श्रुतयस्तथा ।
तत: शुद्धा: स्वरा: सप्त विकृता द्वादशाप्यमी ॥
वाद्यादिभेदाश्चत्वारो रागोत्पादनहेतव: ॥
कुलानि जातयो वर्णा द्वीपान्यार्षञ्च* दैवतम् ।
छन्दांसि विनियोगाश्च स्वराणां श्रुतिजातय: ॥
ग्रामाश्च मूर्च्छनास्ताना: शुद्धा: कूटाश्च संख्यया ॥
प्रस्तार: खण्डमेरुश्च नष्टोद्दिष्टप्रबोधक: ॥
स्वरसाधारणं जाति-साधारणमत: परम् ।
काकल्यन्तरयो: सम्यक् प्रयोगो वर्णलक्षणम् ॥
त्रिषष्टिरप्यलङ्कारास्त्रयोदशविधास्तत: ॥ इति
ग्रहांशन्यासभेदादिं वक्ष्यामहे यथाक्रमात् ।*
गीतं नादात्मकं वाद्यं नादव्यक्त्या प्रशस्यते ।
तद्द्वयानुगतं नृत्यं नादाधीनमतस्त्रयम् ॥

तत्र (१।१८—२७) शरीरविवेक प्रसङ्गे—

गुदलिङ्गान्तरे चक्रमाधाराख्यं चतुर्दलम् ।
स्वाधिष्ठानं लिङ्गमूले षड्दलं चक्रसंज्ञकम् ॥
नाभौ दशदलं चक्रं मणिपूरकसंज्ञकम् ।
हृदयेऽनाहतं चक्रं शिवस्य प्रणवाकृते: ॥
पूजास्थानं तदिच्छन्ति युतं द्वादशभिर्दलै: ।
कण्ठे तु भारती-स्थानं विशुद्धि: षोडशच्छदम् ॥
तत्र षड्जादय: सप्त स्वरा: सम्यक्प्रभेदत: ।
ललनाख्यं घण्टिकायां चक्रं द्वादश-पत्रकम् ॥
भ्रूमध्ये द्विदलं चक्रमाज्ञासंज्ञं मनोरमम् ।
ततोऽप्यस्ति मनश्चक्रं षड्दलं सर्वसौख्यदम् ॥
ततोऽपि षोड़शदलं सोमचक्रं प्रकीर्त्तितम् ।
चक्रं सहस्रपत्रन्तु ब्रह्मरन्ध्रे सुधाधरम् ॥
तत्सुधासारधाराभिरभिवर्द्धयते तनुम् ।
सुषुम्नया ब्रह्मरन्ध्रमारोहत्यवरोहति ॥
जीव: प्राणसमारूढ़ो रज्वा कोलाटिको† यथा ।
ताश्च भूरितरास्तासु मुख्या प्रोक्ताश्चतुर्दश ॥
सुषुम्नेड़ा पिङ्गला च कुहूश्च पयस्विनी ।
गान्धारी हस्तिजिह्वा च वारणाथ यशस्विनी ॥
विश्वोदरा शङ्खिनी च तत: पूषा सरस्वती ।
अलंवुषेति‡ तत्राद्यास्तिस्रो मुख्यतमा मता: ॥

* वर्णद्वीपान्यार्षञ्च । इति पाठान्तरम् ।

* "जातिलक्षणग्रहांशादिभेदान् वक्ष्यामहे क्रमात् ।" इति मुद्रित-संगीत-दर्पण-पाठ: ।

† रज्वाकी-ल्लाटको । इति पाठान्तरम् ।

‡ अलंभुषेति । इति पाठान्तरम् ।

एवंविधे तु देहेऽस्मिन्मल-सञ्चय-सम्भृते+ ।
प्रसाधयन्ति धीमन्तो भुक्तिं मुक्तिमुपासतः ॥

तत्रैव (१।२४—३९)—

आत्मना प्रेरितं चित्तं वह्निमाहन्ति देहजम् ।
ब्रह्मग्रन्थिस्थितं प्राणं स प्रेरयति पावकः ॥
पावक-प्रेरितः सोऽथ क्रमादूर्ध्वपथे चरन् ।
अतिसूक्ष्मध्वनिर्नाभौ हृदि सूक्ष्मं गले पुनः ॥
पुष्टं शीर्षेऽत्वपुष्टञ्च कृत्रिमं वदने तथा ।
आविर्भावयतीत्येवं पञ्चधा कीर्त्त्यते बुधैः ॥
कथं कण्ठः स्थितः पुष्टः स्यादपुष्टः शिरःस्थितः ।
उच्यते तत्र शिरसि सञ्चार्य्यारोह-वर्णयोः ॥
संभूतिर्न भवेद्‌यस्मादपुष्टः शिरसि स्थितः ।
न-कारं प्राणनामानं द-कारमनलं विदुः ।
जातः प्राणाग्निसंयोगात्तेन नादोऽभिधीयते ॥

अथ ब्रह्मग्रन्थेर्लक्षणं

संगीतरत्नाकरे (१।२।१४५—१४७)—

आधाराद्द्व्यङ्गुलादूर्ध्वं मेहनाद्द्व्यङ्गुलादधः ।
एकाङ्गुलं देहमध्ये तप्त-जाम्बूनद-प्रभम् ।
तत्रास्तेऽग्निशिखा तन्वी चक्रात्तस्मान्नवाङ्गुलैः ॥
देहस्य कन्दो ह्युत्सेधो यत्राभ्यां चतुरङ्गुलः ।
ब्रह्मग्रन्थिरिति प्रोक्तमस्य नाम पुरातनैः ।

अथ श्रुतिः

संगीतदर्पणे (१।५३—५६) [तथा च संगीतरत्नाकरे १।३।३७-३९]—

तीव्रा कुमुद्वती मन्दा छन्दोवत्यस्तु षड्जगाः ।
दयावती रञ्जनी च रतिका चर्षभे स्थिता ॥
रौद्री क्रोधा च गान्धारे वज्रिकाथ प्रसारिणी ।
प्रीतिश्च मार्ज्जनीत्येताः श्रुतयो मध्यमाश्रिताः ॥
क्षिती रक्ता च सन्दीपन्यालापी चैव पञ्चमे ।
मदन्ती रोहिणी रम्येत्येता धैवतसंश्रयाः ॥
उग्रा च क्षोभिणीति द्वे निषादे वसतः श्रुती ।

संगीतभाष्ये (श्रुतीनां नामान्तराण्याह)—

सिद्धिः प्रभावती कान्ता सुभद्रा च मनोहरा ।
साधयन्ति स्वर-षड्जं प्रजापतिमुखोद्गतम् ॥
शिवा दीप्तिमती चैव उग्रा चापि सदुद्भवाः ।
श्रुतयः साधयन्त्येवं ऋषभं नामतः स्वरम् ॥
ह्लादिनी च श्रुतिश्चेति श्रुतिश्चामृतसम्भवे ।
गान्धारे साधयेते द्वे यथाहं गुणसंयुते ॥
वीरा सर्वसहं क्ष्यातिर्विभूतिस्तदनन्तरम् ।
मध्यमे साधयन्त्येताः श्रुतयः पृथिवीभवाः ॥
मालिनी चपला लोला सर्वरत्ना प्रभावती ।
श्रुतयः सामपुत्रन्तु साधयिष्यन्ति पञ्चमे ॥
शान्ता विकल्पिनी चैव हृदयोन्मीलनी तथा ।
धैवतं साधयन्त्येता यक्षराजविनिर्म्मितम् ॥
विस्तारिणी प्रपन्ना च निषादस्वरमुत्तमम् ।
साधयेते श्रुती वीर-यमराज-मुखोद्गता ॥

इति श्रुतिनामानि ।

अथ मूर्च्छना

संगीतरत्नाकरे (१।४।९)—

क्रमात् स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणम् ।
मूर्च्छनेत्युच्यते ग्रामत्रये ताः सप्त सप्त च ॥

संगीतदर्पणे (१।९२—९८)—

स्थानत्रयसमायोगान्मूर्च्छनारम्भसम्भवम् ।
तत्र मध्यस्थः षड्जेन षड्जग्रामस्य मूर्च्छना ॥
मध्य-मध्यममारभ्य मध्यमग्राममूर्च्छना ।
आद्यान्यास्तदधोऽधस्थः स्वरमारभ्यषट्क्रमात् ॥
प्रथमः षड्जग्रामः स्यात् द्वितीयो मध्यमस्तथा ।
गान्धारस्तृतीयः प्रोक्तः स्वर्गलोके च गीयते ॥
षड्जे तूत्तरमन्द्रादौ रजनी चोत्तरायता ।
शुद्धषड्जा मत्सरीकृदश्वक्रान्ताभिरुद्गता ॥
मध्यमे स्यात्तु सौवीरी हारिणाश्वा ततः परम् ।
स्यात्कलोपनता शुद्धमध्या मार्गी च पौरवी ॥
हृष्यका सप्तमी प्रोक्ता मूर्च्छनेत्यभिधा इमाः

+ मलमञ्चयसम्भृते । इति वा पाठः ।

* ब्रह्मसंहितायां । इति पाठान्तरम् ।

नन्दा विशाला सुमुखी विचित्रा रोहिणी सुखा ।
आलापी चेति गान्धारग्रामे स्युः सप्त मूर्च्छना: ॥

गीतभाष्ये —

ललिता मध्यमा चित्रा रोहिणी च मतङ्गजा ।
सौवीरी मध्यमध्या च षड्जमध्या च पञ्चमी ॥
मत्सरी मृदुमध्या च शुद्धान्ता च कलावती ।
तीव्रा रौद्री तथा ब्राह्मी वैष्णवी खेचरा चरा ॥
मदावती* विशाला च त्रिषु ग्रामेषु मूर्च्छना ।
एकविंशतिरित्युक्ता मूर्च्छनाश्चन्द्रमौलिना ॥

नारदपुराणे —

गोपी विस्तारिणी चैव जमाली रामिणी तथा ।
आलापिनी वयस्का च प्रमोदिनी सङ्कोचिका ॥
विहारिणी निर्मली च कामिनी च प्रलापिका ।
विनोदिनी शिखरा च लज्जा आधारिणी तथा ॥
विश्रामिणी कोमली च आनन्दी दीर्घिका तथा ।
आमोदिन्या च सहिता मूर्च्छनास्त्वेकविंशति: ॥
स्वराणां निवहो ग्रामो मूर्च्छना च तदाश्रया ।
नादश्रुति-स्वरग्रामा मूर्च्छनास्तन्निवर्त्तका: ।
स्वरा ग्रहांशन्यासाद्या ग्रामजातिक्रमादिह ॥

एतत्प्रयोजनमाह —

शिवाग्रे मूर्च्छनां कृत्वा ब्रह्मापि च विमुच्यते ।
मूर्च्छना एव ताना: स्यु: शुद्धा आरोहणाश्च ता: ॥

संगीतदामोदरे (१।३५—३७)—

विस्तार्यन्ते प्रयोगाय मूर्च्छना: शेषसंश्रया: ।
तानास्तेषूनपञ्चाशत् सप्तस्वरसमुद्भवा: ॥
तेभ्य एव भवन्त्यन्ये कूटताना: पृथक् पृथक् ।
भेदा बहुतरास्तेषां कस्तान् कार्त्स्न्येन वक्ष्यति ॥
ग्रामाणां मूर्च्छनानाञ्च बहवोपि तथाभिधा ।
प्रकृतानुपयोगित्वादत्र यत्नाद्यनेतरा ॥

तदुक्तं तानाधिकारे —

ताना: पञ्चसहस्राणि त्रयस्त्रिंशच्छतान्यमी ।
अग्निष्टोमिकताने तु शिवंस्तुत्वा शिवो भवेत् ॥

षड्जश्चलः पञ्चमश्च ऋषभश्चलति स्वर: ।
गान्धार: पञ्चमश्चाथ निषादो धैवतश्चल: ॥
स-रि-ग-म-प-ध-नीति षड्जग्रामस्य मूर्च्छना ।
म-प-ध-नि-स-रि-गेति मध्यमग्राममूर्च्छना ॥
प-ध-नि-स-रि-गमेति गान्धार-ग्राममूर्च्छना ।

तथा च संगीतदर्पणे (१।५७—७०)—

श्रुत्यनन्तरभावित्वं यस्यानुरणनात्मक: ।
स्निग्धश्च रञ्जकश्चासौ स्वर इत्यभिधीयते ॥
स्वयं यो राजते नाद: स स्वर: परिकीर्त्तित: ॥
शुद्धा: सप्तस्वरास्ते च मन्द्रादिस्थानतस्त्रिधा ।
शुद्धा: श्रुतादिभेदेन विकृता द्वादशोदिता: ॥*
चतु:श्रुतिर्यदा षड्जो द्विश्रुतिर्विकृतस्तदा ।
साधारणे च्युत: स स्यात् काकलित्वेऽच्युत: स्मृत: ॥
त्रिश्रुतिऋ्षभ: साधारणे षाड्जीं श्रुतिं श्रित: ॥
चतु:श्रुतित्वमापन्नस्तदैको विकृतो भवेत् ॥
साधारणे मध्यमस्य गान्धारस्त्रिश्रुतिर्भवेत् ।
स्वस्वान्तरत्वे भवति चतु:श्रुतिरिति द्विधा ॥
च्युताच्युतादिभेदेन मध्यमा षड्जवद्भवेत् ।
साधारणेऽन्तरत्वे च द्विश्रुतिर्विकृतस्तदा ॥
पञ्चमो मध्यमग्रामे त्रिश्रुतिर्जायते स्वर: ।
मध्यमस्य श्रुतिं प्राप्य कैशिके तु चतु:श्रुति: ॥
धैवतो मध्यमग्रामे विकृत: स्याच्चतु:श्रुति: ॥
कैशिके काकलीत्वे च निषादस्त्रिश्चतु:श्रुति: ।
एतैश्च सप्तभि: शुद्धैर्भवन्त्येकोनविंशति: ॥
वाद्यादिभेद-भिन्नाश्चतुर्द्धिधास्ते स्वरा: कथिता: ।
रागोत्पादनशक्तेर्वदनं तद्योगतो वादी ॥
(बहुलस्वर: प्रयोगे भवति राजा च सर्वेषाम् ।)
श्रुतयोऽष्टौ द्वादश वा भवन्ति मध्ये ययो: स्वरयो: ॥
संवादिनौ तु कथितौ परस्परं तौ निषादगान्धारौ ।
रिधयोर्विवादिनौ स्तस्तयोरिधौ वा विवादिनौ स्याताम् ॥

* मदीवती । इति वा पाठ: ।

* "च्युताच्युतादिभेदेन विकृता द्वादशोदिता: ॥" इति संगीतदर्पणधृत पाठ: ।

तत्रैव (१।७३-७४)—

शेषाणामनुवादित्वं स्वराणामुपजायते ।
वादी राजा स्वरस्तस्य संवादो स्यादमात्यवत् ।
शत्रुर्विवादी तस्य स्यादनुवादी तु भृत्यवत् ॥

तथा चान्यत्र:—

स्वराश्चतुर्विधा प्रोक्तास्तत्र वादी स कथ्यते ।
प्रचुरोऽयं प्रयोगेषु व्यक्ति रागादिनिश्चये ॥
स श्रुतिः स्यात्तु संवादी पञ्चमस्य समः क्वचित् ।
प्रतिविवादिनौ स्यातां रिधयो र्वा तु तौ ययोः ॥
अनुवादी भवेदेष य प्रयोगेषु दुर्लभः ।
सेनारागादिप्रचुरो बहुल-पञ्चनिश्चयः ॥
कथ्यते बहुधायुक्तो रागादिकोप्यनिर्णयः ।
स्वरैर्विवादीकुरुते पञ्चमस्य समश्रुतिः ॥

य स्वरेषु संवादो क्वचिन्मतेऽन्यभेदः निषाद गान्धारौ रिधयौ वादिनौ इनुमन्यते ।

संगीतमकरन्दधौ (१।५६—५८) [संगीतदर्पण १।७४—७८]-

वादी नृपस्वरस्तस्य संवादी स्यादमात्यवत् ।
(शत्रुर्विवादी तस्य स्यादनुवादी तु भृत्यवत् ॥)
ग्रामः स्वरसमूहः स्यान्मूर्च्छनादेः समाश्रयः ।
तौ द्वौ धरातले तत्र स्यात् षड्जग्राम आदिमः ॥
द्वितीयो मध्यमग्रामस्तयोर्लक्षणमुच्यते ।
षड्जग्रामः पञ्चमश्च चतुर्थश्रुतिसंस्थिते ॥
स्वोपान्त्यश्रुतिसंस्थेऽस्मिन्मध्यमग्राम इष्यते ।
यद्वा धस्त्रिश्रुतिः षड्जे मध्यमे तु चतुःश्रुतिः ॥

संगीतरत्नाकरे—

चतस्रः पञ्चमं षड्जे मध्यमे श्रुतयो मताः ।
ऋषभे धैवते तिस्रः द्वे गान्धारे निषादके ॥

तत्रैव (१।२।५८—६१)—

प्राणापानौ तथा व्यान-समानोदानसंज्ञकाः ।
नागः कूर्मश्च कृकरो देवदत्तो धनञ्जयः ॥
(दशेति वायुविकृतिस्तथा गृह्णाति लाघवम् ।)
तेषां मुख्यतमः प्राणो नाभिकन्दादधःस्थितः ।
चरत्यास्ये नासिकयोर्नाभौ हृदयपङ्कजे ॥
शब्दोच्चारणनिःश्वासोच्छ्वासकासादिकारणम् ।
अपानस्तु गुदे मेढ्रे कटिजङ्घोदरेषु च ।
(नाभिकन्दे वङ्क्षणयोरूरुजानुषु तिष्ठति ॥
अस्य मूत्रपुरीषादिविसर्गः कर्म कीर्त्तितम् ।)
व्यानोऽक्षिश्रोत्रगुल्फेषु कट्यां घ्राणे च तिष्ठति ।
समानो व्याप्य निखिलं शरीरं वह्निना सह ॥
(द्विसप्ततिसहस्रेषु नाडीरन्ध्रेषु संचरन् ।
भुक्तपीतरसान् सम्यगानयन् देहपुष्टिकृत् ॥)
उदानपादयोरास्ते हस्तयोरङ्गसन्धिषु ।
त्वगादिधातुनाश्रित्य पञ्च नागादयः स्थिताः ॥

तत्रैव (१।२।७८)—

त्वगसृग्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः ॥

तथा च संगीतदर्पणे (१।४८—५२)—

हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिसंस्थितः ।
उदानः कण्ठदेशे स्याद्व्यानः सर्व्वशरीरगः ॥
इति वस्तुस्थितिस्तावद्गात्रे त्रेधा भवेदसौ ।
हृदि मन्द्रो गले मध्यो मूर्द्धि तार इति क्रमात्
द्विगुणः पूर्वपूर्वस्मादयं स्यादुत्तरोत्तरः ।
एवं शारीरवीणायां दारव्यान्तु विपर्ययः ॥
स्वरूपमात्रश्रवणान्नादोऽनुरणनं विना ।
श्रुतिरित्युच्यते भेदास्तस्या द्वाविंशतिर्मताः ॥
तदभिव्यक्तये नाड़ी स्थितिर्देहे निरूप्यते ।
इड़ा वामे स्थिता नाड़ी दक्षिणे पिङ्गला तथा ।
हृदि नाड़ी सुषुम्ना च ब्रह्मरन्ध्रावधि स्थिता ॥

नारदसंहितायां (२।४८—६१)—

आकाशसम्भवो नादस्तथानाहत उच्यते ॥
आहतनादमाकृष्य तथानाहतसंज्ञकात् ।
तन्नादं सप्तधाकार्षीत् तस्य तु जातिभिः स्वरैः ॥
आद्यः कायभवो वाणी-सम्भवस्तु द्वितीयकः ।
तृतीयश्चापि वंशादिसम्भवः स त्रिधा मतः ॥
एवं बहुभिराचार्यैर्नादस्तु बहुधोदितः ।
षड्जर्षभौ च गान्धारो मध्यमः पञ्चमस्तथा ॥

धैवतश्च निषादश्च स्वरा: सप्त प्रकीर्त्तिता: ।
आत्मा च स-स्वर: प्रोक्तो शिरो रि-स्वर उच्यते ॥
हस्तौ गान्धारसंप्रोक्तौ वक्ष:स्थाच्च मध्यमस्वर: ।
कण्ठस्तु पञ्चम: प्रोक्त: कटिर्धैवत-संज्ञक: ।
पादौ निषाद एव स्यात् सप्ताङ्गा मूर्च्छना भवेत् ॥
मयूर: षड्जमाख्याति ऋषभं व्यक्ति चातक: ।
छागो गान्धारमाचष्टे क्रौञ्चो वदति मध्यमम् ॥
कोकिल: पञ्चमं ब्रूते मेषो वदति धैवतम् ।
निषादं भाषते हस्ती त्वेरतद्ब्रह्मादिसम्मतम् ॥
मयूर-वृषभ-मेष-काक-कोकिल-वाजिन: ।
मातङ्गश्च क्रमेणाहु: स्वरानेतान् सुदुर्गमान् ॥
आरोही वृषभो व्यक्तिश्चावरोही च केशरी ।
व्याहारस्त्रिषु लोकेषु स्वारोही भगवान् स्वयम् ॥
औड़व: पञ्चभि: प्रोक्ता स्वरै: षड्भिस्तु षाड़व: ।
संपूर्णा: सप्तभि: प्रोक्ता रागजातिस्त्रिधा मता ॥
संप्रोक्त: प्रथमो नाद: पश्चाद्वेदा: समुद्भवा: ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद: सामवेदोह्यथर्वण: ॥
संप्रदायानुसारेण भिन्नभिन्नं प्रगीयते ॥

अथालङ्कारा:

सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसा—
सानिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा ॥
अथारोह्यवरोही च स्वरालाप: प्रस्तारक: ।
जनपञ्चाशत्कोटितानत्रयभेदाश्च कथ्यते ॥

अथ स्वरालाप-पलटाप्रस्तार:

सारेगमपधनि १ सानिधपमगरेसा
सारेसारेग १ रेगरेगम २ गमगमप ३ मपमपध ४
पधपधनि५ धनिधनिसा६ सानिसानिध७ निधनिधप८
धपधपम९ पमपमग१० मगमगरे११ गरेगरेसा१२
सारेगसारेगम १३ रेगमरेगमप १४ गमपगमपध१५
मपधमपधनि १६ पधनिपधनिसा १७
सानिधसानिधप १८ निधपनिधपम १९
धपमधपमग २० पमगपमगरे २१
मगरेमगरेसा २२ सारेगसारेगसारेगम २३
रेगमरेगमरेगमप २४ गमपगमपगमपध २५
मपधमपधमपधनि २६ पधनिपधनिपधनिसा २७
सानिधसानिधसानिधप २८ निधपनिधपनिधपम २९
धपमधपमधपमग ३० पमगपमगपमगरे ३१
मगरेमगरेमगरेसा३२ सासारेसारे३३ रेरेगरेग३४
गगमगम ३५ ममपमप ३६ पपधपध ३७
धधनिधनि ३८ निनिसानिसा ३९ सासानिसानि ४०
निनिधनिध ४१ धधपधप ४२ पपमपम ४३
ममगमग ४४ गगरेगरे ४५ रेरेसारेसा ४६ ॥

प्रथम: सप्तक:

सारेगमपधनिसारेगम ४७ निधपमगरेसा ४८ ॥

द्वितीय: सप्तक:

सारेगमपधनिसारेग ४९ निधपमगरेसा ५० ॥

तृतीय: सप्तक:

सारेगमपधनिसारे ५१ निधपमगरेसा ५२ ॥

अथ स्वरप्रस्तार:

धनिसारेगमपधनिसा ५३ निसारेगमपधप ५४
सारेगमपधनिसारे ५५ रेगमपधनिसारेग ५६
गमपधनिसारेगम ५७ मपधनिसारेगमप ५८
पधनिसारेगमपध ५९ पधनिसारेगम ६०
सासापपरेरेनिनिगग ६१ निगपरेसाधम ६२
धगमनिरेपसा६३ पनिगधरेसा ६४ निपरेमगधसा६५
रेपगमधसानि ६६ गनिधगसारेम ६७
परेगधसानिमगसा ६८ सारेसा ६९ सारेगरेसा ७०
सारेगमगरेसा ७१ सारेगमपमगरेसा ७२
सारेगमपधपमगरेसा७३ सारेगमपधनिधपमगरेसा७४
सारेगमपधनिसासानिधपमगरेसा ७५ सानिसा ७६
सानिधनिसा ७७ सानिधपधनिसा ७८
सानिधपमपधनिसा ७९ सानिधपमगमपधनिसा ८०
सानिधपमगरेगमपधनिसा ८१
सानिधपमगरेसारेगमपधनिसा ८२ ॥

अथ तानप्रस्तारः

सा १ ॥ सारि १ रिसा २ ॥—

सारिग१ रिसाग२ गसारि३ गरिसा४ सागरि५ रिगसा६ ॥

सारिगम १ रिसागम २ मसारिग ३ सामरिग ४

गमसारि ५ मगसारि ६ गमरिसा ७ गरिमसा ८

मसारिग ९ सागरिम १० रिमसाग ११ मरिसाग १२

सागमरि १३ सामरिग १४ मरिगसा १५ रिमगसा १६

रिगसाम १७ गरिसाम १८ सारिमग १९ रिसामग २०

मसागरि२१ सामगरि२२ मरिगसा२३ मगरिसा२४ ॥—

सारिगमप १ रिसागमप २ मसारिगप ३ सामरिगप ४

गमसारिप ५ मगसारिप ६ गमरिसाप ७ गरिमसाप ८

मसारिगप ९ सागरिमप १० रिगसामप ११

मरिसागप १२ सागमरिप १३ सामरिगप १४

मगरिसाप १५ रिमगसाप १६ रिगसामप १७

गरिसामप १८ सारिमपग १९ रिसामगप २०

मसागरिप २१ सामगरिप २२ मरिगसाप २३

मगरिसाप २४ सारिगपम २५ रिसागपम २६

मसारिपग २७ सामरिपग २८ गमसापरि २९

मगसापरि ३० गमरिपसा ३१ गरिमपसा ३२

मसारिपग ३३ सागरिपम ३४ मरिगसाप ३५

मरिसापग ३६ सागमपरि ३७ सामरिगप ३८

मरिगपसा ३९ रिमगपसा ४० रिगसापम ४१

गरिसापम ४२ सारिमपग ४३ रिसामपग ४४

मसागपरि ४५ सामगपरि ४६ मरिगपसा ४७

मगरिपसा ४८ सारिपगम ४९ रिसापगम ५०

मसापरिग ५१ सामपरिग ५२ गमपसारि ५३

मगपसारि ५४ रिगमपसा ५५ गरिपमसा ५६

गसापरिम ५७ सागपरिम ५८ रिगपसाग ५९

मरिपसाग ६० सागपमरि ६१ सामपरिग ६२

मरिपगसा ६३ रिमपगसा ६४ रिगपसाम ६५

गरिपसाम ६६ सारिपमग ६७ रिसापमग ६८

मसापगरि ६९ सामपमरि ७० मरिगपसा ७१

मगपरिसा ७२ सापरिगम ७३ रिपसागम ७४

मपसारिग ७५ सापमरिग ७६ गपमसारि ७७

मपगसारि ७८ रिपमगसा ७९ गपरिमसा ८०

मपसारिम ८१ सापगरिम ८२ रिपमसाग ८३

गपरिसाग ८४ सापगमरि ८५ मपरिगसा ८६

रिपमगसा ८७ रिपगसाम ८८ गमरिसाम ८९

सापरिमग ९० रिपसामग ९१ मपसागरि ९२

सपमगरि ९३ मरिपगसा ९४ मपगरिसा ९५

पसारिगम ९६ परिसागम ९७ रिपमगसा ९८

पगमरिसा ९९ पमसारिग १०० पसागरिम १०१

परिमसाग १०२ पमरिसाग १०३ पसागमरि १०४

पमरिगसा १०५ परिमगसा १०६ परिगसाम १०७

पगरिसाम १०८ पसारिमग १०९ परिसामग ११०

पमसागरि १११ पसमगारि ११२ पमरिगसा ११३

पमगरिमा ११४ सारिगमपध ११५

रिसागमपध ११६ मसारिगपध ११७

सामरिगपध ११८ गमसारिपध ११९

मगसारिपध १२० गमरिसापध १२१

गरिमसापध १२२ मसारिगपध १२३

सागरिमपध १२४ रिमसागपध १२५

मरिसागपध १२६ सागमरिपध १२७

सामरिगपध १२८ मरिगसापध १२९

रिमगसापध १३० रिगसामपध १३१

गरिसामपध १३२ सारिमगपध १३३

रिसामगपध १३४ मसागरिपध १३५

सामगरिपध १३६ मरिगसापध १३७

मगरिसापध १३८ सारिगमधप १३९

रिसागमधप १४० मसारिगधप १४१

सामरिगधप १४२ मसारिगधप १४३

मगसारिधप १४४ गमरिसाधप १४५

गरिमसाधप १४६ मसारिगधप १४७

सामरिमधप १४८ रिगसामधप १४९

मरिसागधप १५० सागमरिधप १५१

सामरिगधप १५२ मगरिमाधप १५३
रिमगमाधप १५४ रिगमामधप १५५
गरिसामधप १५६ सारिमगधप १५७
रिसामगधप १५८ मसागरिधप १५९
सामगरिधप १६० मरिगमाधप १६१
मगरिसाधप १६२ सारिगमधप १६३
सारिगधमप १६४ रिमागधसप १६५
ममारिधगप १६६ धामरिधगप १६७
गमसाधरिप १६८ मगमाधरिप १६९
गमरिधमाप १७० गरिमधमाप १७१
ममारिधगप १७२ मागरिधमप १७३
रिगमाधमप १७४ मरिसाधसप १७५
मारिमधगप १७६ गरिमाधमप १७७
सामगधरिप १७८ मगरिधसाप १७९
सारिगधपम १८० रिमागधपम १८१
सारिगधपम १८२ रिमागधपम १८३
ममारिधपग १८४ सामरिधपग १८५
गमसारिधप १८६ मगमाधपरि १८७
गमरिधपमा १८८ गरिमधपमा १८९
मसारिधपग १९० मारिधपम १९१
रिगमाधपम १९२ मरिमाधपग १९३
मागमधपरि १९४ सामरिधपग १९५
मरिगधपमा १९६ मगरिधपमा १९७
मगरिपधमा १९८ सारिगमपधनि १९९
रिमागमपधनि २०० ममारिगपधनि २०१
सामरिगपधनि २०२ गमसारिपधनि २०३
मगसारिपधनि २०४ गमरिमापधनि २०५
गरिमसापधनि २०६ ममारिगपधनि २०७
सागरिमपधनि २०८ रिमसागपधनि २०९
मरिसागपधनि २१० मागमरिपधनि २११
सामरिगपधनि २१२ मरिगसापधनि २१३
रिमगसापधनि २१४ रिगसामपधनि २१५
गरिसामपधनि २१६ सारिमगपधनि २१७

रिसामगपधनि २१८ ममागरिपधनि २१९
सामगरिपधनि २२० मरिगमापधनि २२१
मगरिमापधनि २२२ सारिगमधपनि २२३
रिसागमधपनि २२४ ममारिगधपनि २२५
सामरिगधपनि २२६ गमसारिधपनि २२७
मगमारिधपनि २२८ गमरिमाधपनि २२९
गरिममाधपनि २३० ममारिगधपनि २३१
सागरिमधपनि २३२ रिममागधपनि २३३
मरिमागधपनि २३४ सागमरिधपनि २३५
सामरिगधपनि २३६ मरिगमाधपनि २३७
रिमगमाधपनि २३८ रिगमामधपनि २३९
गरिमामधपनि २४० सारिमगधपनि २४१
रिसामगधपनि २४२ ममागरिधपनि २४२
सामगरिधपनि २४४ मरिगमाधपनि २४५
मगरिसाधपनि २४६ सारिगधमपनि २४७
रिसागधमपनि २४८ धममारिगधपनि २४९
सामरिगधपनि २५० मागधमरिपनि २५१
साधमरिपनि २५२ रिगधमपनि २५३
धमारिगमपनि २५४ धरिसागमपनि २५५
धगममारिपनि २५६ धमगमारिपनि २५७
धगमरिमापनि २५८ धगरिममापनि २५९
धमसारिगपनि २६० धमामरिगपनि २६१
धगममारिपनि २६२ धमगरिमापनि २६३
धगमरिमापनि २६४ धगरिमसापनि २६५
धम[illegible]पनि २६६ धसागरिमपनि २६७
धरिमसागपनि २६८ धमरिसागपनि २६९
धसागरिमपनि २७० धरिममागपनि २७१
धगरिसागपनि २७२ धसागमरिपनि २७३
धरिमसागपनि २७४ धसामरिगपनि २७५
धमरिगसापनि २७६ धरिमगमापनि २७७
धरिगसामपनि २७८ धगरिसामपनि २७९
धमारिमगपनि २८० धरिसामगपनि २८१
धमसागरिपनि २८२ धसारिमगपनि २८३

धरेसामगपनि २८४ धमसागरेपनि २८५
धसामगरेपनि २८६ धमरेगसापनि २८७
धमगरेसापनि २८८ धसारेमपनि २८९
धरेसाममपनि २९० धममागरेपनि २९१
धसामगरेपनि २९२ धमरेगमापनि २९३
धमगरेसापनि २९४ सारेगपनिधम २९५
रेसागपनिधम २९६ मसारेगपनिधम २९७
गसारेपनिधम २९८ रेगमापनिधम २९९
मागरेपनिधम ३०० गमरेपनिधम ३०१
रेममापनिधम ३०२ गमापनिरेधम ३०३
मगसापनिरेम ३०४ गसापनिरेधम ३०५
सारेगमपधनिसा ३०६ रेमागमपधनिसा ३०७
मसारेगपधनिसा ३०८ मामरेगपधनिसा ३०९
गमसारेपधनिसा ३१० गरेमसापधनिसा ३११
मसागरेपधनिसा ३१२ ॥

अथ औडव

सागमाधसागमधनिधमगसा ३१३
निधमगनिधमगसा ३१४
सासागनिधधगममसा ३१५ ॥

अथ षाड़वः

सागपगसानिधपगमनिसा ३१६
गसापनिधमगसा ३१७
धधपमपनिसाधगसा ३१८
निधमगपगसासाधगमपनिसा ३१९
निनिधधपपममगसा ३२० ॥

अथ सम्पूर्ण-तानः

सामरेगमधपनिरेसाधगसा ३२१
धरेनिधपगमामगरेधगपरेनिसा ३२२
मगरेसानिपधरेसामधरेसा ३२३
सामारेरेगगममपपधधनिनिसासा ३२४
सामानिनिधधपपममगगरेरेसा ३२५ ॥

इति श्रीकृष्णानन्द-व्यासदेव रागसागरोद्भव-रागकल्पद्रुमे तानविवेक-
सतिमर्कनामस्वरप्रस्ताराध्यायः सम्पूर्णः ।

अथ रागविवेकाध्यायः

प्रणम्य परमात्मानं शिवब्रह्मादिकं ततः ।
रागकल्पद्रुमो ग्रन्थो रागरागिण्यदाहृतः ॥
संगीतशास्त्रे अमराख्यनन्द-
व्यासात्मजो श्रीरकनन्दव्यासः ।
श्रीकृष्ण-आनन्द यदात्मजोऽयं
स एव सर्वं वितनोतु रागान् ॥
संगीतशास्त्रज्ञ-परात्मवादी
वीणादियावत् सुसमिच्य सर्वम् ।
कल्पद्रुमो राग-सुसङ्गीताख्यो
तेनैव छ्त्वा वितंतस्म मूर्खान् ॥

अथ हनमन्मतानुसारेण रागरागिण्यः ।
बृहत्सङ्गीतरत्नाकरे *---

नारद उवाच ।

के रागाः काश्च रागिण्यः का वेला ऋतवश्च के ।
किं रूपं कथमुद्धारो वद देव ! प्रसादतः ॥

श्रीभगवानुवाच ।

भैरवो मालकोशश्च हिन्दोलो दीपकस्तथा ।
श्रीरागो मेघरागश्च षडेते पुरुषाः स्मृताः ॥

मतान्तरे च

वसन्तो नृहन्नाटश्च मल्लारो मालवस्तथा ।
प्रदीपः कौशिकश्चैव षडेते पुरुषाह्वयाः ॥

अथ भैरवरागस्त्रियः

भैरवी गुर्ज्जरी चैव टोड़ी रामकेली तथा ।
वराटी चैव संयुक्ता भैरवस्य वराङ्गनाः ॥
देशी रामगिरी चैव देशकारी विभाषिका ।
आशावरी पुनर्ज्ञेया भैरवस्य प्रिया इमाः ॥

अथ मालकोशस्त्रियः

वागीश्वरी च ककुभा पर्य्यङ्का शोभनी तथा ।
खम्भावती पुनर्ज्ञेया मालकोशस्य वल्लभाः ॥

---

* संगीतदर्पणे रागाध्याये पार्वतीश्वरसंवादे दर्शयति

तथा सङ्गीतमकरन्दे (२।१५)—

कौशिकी देवगिरी च वखारी मोहनी तथा ।
लीलाम्बरी पुनर्ज्ञेया कौशिकस्य वराङ्गना: ॥

अथ हिन्दोलरागस्त्रिय:

वेलावली च भूपाली मालश्री: पटमञ्जरी ।
ललिता सहिता एता हिन्दोलस्य वराङ्गना: ॥

सङ्गीतार्णवे (२।३६)

हिन्दोली गुणक्री चैव अन्या श्यामगिरिका ।
वैदिका चैव संयुक्ता हिन्दोलस्य प्रिया इमा: ॥

अथ दीपकरागस्त्रिय:

प्रदीपिका धनाश्री च जयतश्री: पलाशिका
विहागातु पुनर्ज्ञेया दीपकस्य वराङ्गना: ॥

सङ्गीतसंहिताया (२।३५-३६)

केदारी कान्हड़ी चैव पुरीयाभीरिका तथा ।
मूलतानी पुनर्ज्ञेया दीपकस्य प्रिया इमा: ॥

अथ श्रीरागस्त्रिय:

मालवी त्रिवर्णी गौरी गौरा पूर्वी तथैव च ।
रागिण्यो रागराजस्य श्रीरागस्य वराङ्गना: ॥

सङ्गीतसारे (२।५)—

धमनी टक्की संयुक्ता माली गौरा तथैव च ।
नागध्वनी चैतिका च श्रीरागस्य प्रिया इमा: ॥

अथ मेघस्त्रिय:

मल्लारी सौरठी चैव मारङ्गा वड़हंसिका ।
मध्यमादि पुनर्ज्ञेया मेघरागस्य योषित: ॥

सङ्गीतचन्द्रिकायां (२।३८)—

कामोदी लङ्कदोहिनी मावन्ती च वङ्गालिका ।
तथा जयजयन्ती च मेघरागस्य वल्लभा: ॥

इति श्रीइन्द्रप्रस्थीय-मुर्धाभिषिक्त-श्रीकृष्णमतानुयायि-बृहत्-संगीतरत्नाकरे हनुमन्मतानुसारेण रागरागिण्य: ॥

अथ मतान्तरे संगीतदर्पणे—

मध्यमादि भैरवी च वङ्गाली च वराटिका ।
सैन्धवी च पुनर्ज्ञेया भैरवस्य वराङ्गना: ॥
टोड़ी खम्भावती गौरी गुणक्री ककुभा तथा ।
रागिण्यो रागराजस्य कौशिकस्य वराङ्गना: ॥
वेलावली रामकली देशाख्या पटमञ्जरी ।
ललिता सहिता एता हिन्दोलस्य वराङ्गना: ॥
कान्हड़ी देशकारी च कामोदी नाटिका पुन: ।
केदारी दीपका चैव प्रिया: पञ्च इमा: स्मृता: ॥
वसन्ती मालवी चैव माधवी श्रीधनाश्रिका: ।
आशावरी तु विज्ञेया श्रीरागस्य वराङ्गना: ॥
मल्लारी मोरठी चैव भूपाली गुर्ज्जरी तथा ।
टक्का च पञ्चमी भार्य्या मेघरागस्य योषित: ॥*

अथ वसन्तरागस्त्रिय:

वसन्ती पञ्चमी टोली वहारी रूपमञ्जरी ।
रागिण्यो ऋतुराजस्य वसन्तस्य प्रिया: इमा: ॥
सरस्वती प्रभावती सुखावती तथैव च ।
मानमञ्जरी विजया च वसन्तस्य वराङ्गना: ॥

अथ नटनारायणस्त्रिय:

गुण्डग्री नाटिका गौरा सैन्धवी माधवी तथा ।
शुद्धनाटप्रिया: प्रोक्ता: सङ्गीत-परिभाषिता: ॥

---

* "मालश्री त्रिवर्णी गौरी केदारी मधमाधवी ।
तत: पाहाडिका ज्ञेया श्रीरागस्य वराङ्गना: ॥
देशी देवगिरी चैव वराटी तोड़िका तथा ।
ललिता चाथ हिन्दोली वसन्तस्य वराङ्गना: ॥
भैरवी गुर्ज्जरी रामकिरी गुणकिरी तथा ।
वाङ्गाली सैन्धवी चैव भैरवस्य वराङ्गना: ॥
विभाषा चाथ भूपाली कर्णाटी वड़हंसिका
मालश्री पटमञ्जर्य्या सहैता: पञ्चमाङ्गना: ॥
मल्लारी सौरटी चैव सावेरी कौशिकी तथा ।
गान्धारी हरशृङ्गारा मेघरागस्य योषित: ॥
कामोदी चैव कल्याणी आभीरी नाटिका तथा ।
सारङ्गी नट्टहम्बीरा नट्टनारायणाङ्गना: ॥"

इति मुद्रित-संगीतदर्पणधृत-पाठ: (२।१४—१९)।

कोलाहलो गौण्डगिरि गुञ्जारी सिन्दरी तथा ।
नटमल्लारो संयुक्ता नटनारायणप्रियाः ॥

अथ भरतमतानुसारिणः [संगीतदर्पणे २।६३]—

श्रीरागोऽथ वसन्तश्च भैरवः पञ्चमस्तथा ।
मेघरागो बृहन्नाटः षड़ेते पुरुषाह्वयाः ॥

इत्यादि अनेकमतरागवारिधिः ।

इन्द्रादयोऽपि यस्यान्तं नययूरागवारिधेः ।

तत्र [संगीतदर्पणे १।३२] चाक्षेपः—

नादाब्धेस्तु परं पारं न जानाति सरस्वती ।
अद्यापि मज्जनभयात् तुम्बं वहति वक्षसि ॥

यद्यपि बहवो भेदाः सन्ति इदमेव तत्र-युधिष्ठिर श्रीकृष्णोक्त मतभेदश्रयाम ॥

अथ रागपुत्राः

अथ भैरवपुत्राः

नारदमताने—

षड्‌रागो रामरागश्च मधु-गान्धार-हर्षकाः ।
तथा वङ्गालदेशाख्यौ विभासो भैरवात्मजाः ॥

सङ्गीतमिश्रे—

देव-गान्धार-आशाश्च भैरवस्य सुता इमे ।

अथ मालकोशपुत्राः

माधवः शोभनः सिन्धु-मारु-मेवाड़-कुन्तलाः ।
कलिङ्गः सोम : संयुक्ताः कौशकस्य सुता इमे ॥

सङ्गीतरत्नमालायां—

विहार लीलरङ्गश्च कौशकस्य सुता इमे ।

अथ हिन्दोलपुत्राः

आभीरः शुभ्र-धवलो चन्द्रकाशविमोहकाः ।
चन्द्रकान्तः सरो वेदः हिन्दोलात्मजकीर्त्तिताः ॥

सङ्गीत-पारिजाते—

गुणसागर-गम्भीरा हिन्दोलात्मजकीर्त्तिताः ॥*

* मुद्रित संगीतपारिजाते इदम्-श्लोकाभावः ।

अथ दीपकपुत्राः

सूहा च नायका जना शङ्करा कान्हड़ा तथा ।
विहागड़ा नाटः केदारा दीपकस्य सुता इमे ॥

शिवसंगीते—

प्रदीप-शङ्कराभरण-दीपकात्मजकीर्त्तिताः ॥

अथ श्रीरागपुत्राः

मारवाः पूरवाः श्यामो हेम-नेम हम्मिरिकाः ।
भूपाली जैतसश्चैव श्रीरागस्य सुता इमे ॥

सङ्गीतमालिनी—

कल्याणा ध्यानकल्याणाः श्रीरागस्य सुता इमे ।

अथ मल्लारपुत्राः

मल्लार-गौड़-कर्णाट-जलधर-मल्लाहकाः ।
तैलङ्ग-कमल कुसुमा मेघपुत्रा इमे स्मृताः ॥

सङ्गीतभाष्ये—

मेघनाटश्च सेवन्त-सावन्त हृम-लग्नकाः ।
वङ्गाल-नाट-भूपश्च मेघराग-सुता इमे ॥

अथ वसन्तरागपुत्राः

वासन्तः पञ्चम-चम्पक-विहारी भ्रमरस्तथा ।
पञ्चाल अङ्ग-वङ्गश्च वसन्तस्य सुता इमे ॥

अथ नटनारायणपुत्राः

छायानाट-देशनाट-नाटकेदार-सोरवाः ।
राजहंस-वक्षहंस-रैव-कुब्जाः नटात्मजाः ॥

अथ प्रदीपपुत्राः

कोलाहल-विजयश्च आन्ध्र कोङ्कन-निवारिकाः ।
वैराट-वर्द्धन-भोमः प्रदीपस्य सुता इमे ॥

अथ देवगान्धारपुत्राः

गान्धारः किन्नरः कान्तमङ्गलः बहुलः वरः ।
गुणः हीरः गम्भीरश्च गान्धारस्य सुता इमे ॥

अथ कल्याणपुत्राः

हिमालः वल्लभो वीरः जङ्गालश्च कलिन्दरः ।
पुलिन्दः गुरु-सागरश्च कल्याणतनुजाः स्मृताः ॥

इति रागपुत्राः ।

चन्द्रराग-सूर्य्यराग-शक्तिरागस्तथैव च ।
गणेश: क्षेत्रपालश्च: विष्णुवल्लभ-हनुमत: ।
शक्ति: लक्ष्मी: सरस्वती देवलोके च गीयते ॥
षोडश-सहस्र-भिन्नभिन्नरागरागिणी ईरित: ।
वृन्दावने रासक्रीड़ायां एकैकश्रीकृष्णसन्निधौ ॥

रागरागिणी श्रुतिरूपा गोपाङ्गना, ऋषिरूपा देवरूपा नित्यसिद्धा भिन्न-भिन्न-रागरागिणी। पृथक् पृथक् ताल:—एकताली१ आदिताली२ धमारताल ३ यतिताल ४ रूपकताल ५ तेवड़ा ६ जलदतिताला ७ धीमातिताला ८ सुलफाकताल ९ झपताल १० आड़चौताला ११ हरचौताला १२ पठताल १३ ब्रह्मताल १४ रुद्रताल १५ विष्णुताल१६ लक्ष्मीताल १७ अष्टाताल १८। इत्यादिरासमण्डले नृत्यसमय-प्रकाशितं सवारीफरोदस्त दवहरकेद पञ्चम-सवारी पस्तो इत्यादि लोके प्रसिद्धमाह।*

अथ रागस्त्रिय:

अथ षड्रागस्त्रिय:

श्यामा शैवी च भीमी च नागध्वनी तथैव च ।
आनन्दा च पुनर्ज्ञेया: षड्रागस्य वराङ्गना: ॥

अथ रामरागस्त्रिय:

रामा रमणी रङ्गिका केली कौमारिका तथा ।
भैरवात्मजरामस्य इमा भार्य्या प्रकीर्त्तिता: ॥

अथ मधुररागस्त्रिय:

माधुरी मोहिनी चैव रेवती मिष्टिका तथा ।
लीलाम्बरी पुनर्ज्ञेया मधुरागस्य वल्लभा: ॥

अथ गान्धाररागस्त्रिय:

गान्धारी गान्धर्वी चैव कोकिला कामवर्द्धिनी ।
योगीया तु पुनर्ज्ञेया गान्धारस्य प्रिया इमा: ॥

अथ हर्षरागस्त्रिय:

हार्षिकी च मनोहारी वैदी च मेघरञ्जिका ।
कामकेली तथा ज्ञेया हर्षरागस्य योषित: ॥

* "संगीतभाष्ये" इत्यारभ्य "प्रसिद्धमाह" इत्यन्तं नागराक्षरमुद्रिते पुस्तके नास्ति ।

अथ वङ्गालरागस्त्रिय:

मृगिणी-मनोरञ्जिन्यौ प्रतापी हंसिका वरी ।
वङ्गालो भैरवपुत्रस्तस्य भार्य्या: प्रकीर्त्तिता: ॥

अथ देशाख्यस्त्रिय:

देवनाटी देवक्री च वर्द्धनी च विनोदिका ।
विलासी तु पुनर्ज्ञेया देशाख्यस्य वराङ्गना: ॥

अथ विभासस्त्रिय: **

विभासी श्रीहटी प्राची आन्ध्री च वल्लिका तथा* ।
विभासस्य प्रिया: पञ्च ख्याता रागविशारदै: ॥

अथ मालकोश-पुत्रस्त्रिय:—

अथ माधवस्त्रिय:

माधुरी मौनिका शुद्धा विचित्रा मनोहारिणी ।
माधवस्य प्रिया: पञ्च सङ्गीते परिभाषिता: ॥†

अथ शोभनरागस्त्रिय:

शोभनी चन्द्रकाशी च प्रेमानन्दी तथैव च ।
आह्लादी मोदिनी एता: शोभनस्य वराङ्गना: ॥

अथ सिन्धुरागस्त्रिय:

सिन्धुरी सागरी चैव शान्तिका सुखकारिणी ।
श्यामगिरि पुनर्ज्ञेया पञ्चैता: सिन्धुवल्लभा: ॥‡

अथ माररागस्त्रिय:

मारणी पुष्पकी पद्मा लावण्या मन्मथा तथा ।
पञ्चैता वल्लभास्तस्य माररागस्य कीर्त्तिता: ॥

अथ कुन्तलरागस्त्रिय:

कुन्तली कोहली चैव कैलाशी कामिनी तथा ।
कटाक्षाख्या च संयुक्ता कुन्तलस्त्री प्रकीर्त्तिता: ॥

अथ कलिङ्गस्त्रिय: ।

कलिङ्गी कुसुमी तारा जयन्ती कज्जली तथा§ ।
कलिङ्गस्य प्रिया: पञ्च सङ्गीते परिकीर्त्तिता: ॥

** सुभास: । इति पाठान्तरम् ।

* चलैयका । इति पाठान्तरम् ।

† कौशिकात्मजप्रथमस्य माधवस्य वराङ्गना: ॥ इति वा पाठ:

‡ सावेरी तु पुनर्ज्ञेया पञ्चैता: सिन्धुवल्लभा: ॥ इति वा पाठ:

§ मानमञ्जरी । इति पाठान्तरम् ।

अथ सोमरागस्त्रियः

सोमी श्यामा स्वरूपा च शैलिका ईश्वरी पुनः ।
सोमरागप्रियाः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ हिन्दोलपुत्रस्त्रियः

आभीररागस्त्रियः

आभीरी बोधिका घण्टा गम्भीरी च सुमेरिका ।
आभीरस्त्री समाख्याता मुनिना भरतेन वै ॥

अथ शुभ्ररागस्त्रियः

शुभ्री च गन्धिका आरा गुञ्जी गर्भा तथैव च ।
शुभ्रस्य वल्लभाः प्रोक्ताः हिन्दोलतनुजस्य वै ॥*

अथ धवलरागस्त्रियः

धवली कारुणी धात्री धार्म्मिका जगदीश्वरी ।†
धवलस्य प्रिया एता ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ चन्द्रकाशरागस्त्रियः

चन्द्रकाशी प्रकाशी च धारिणी‡ करुणा तथा ।
कीर्त्तिस्तथा सुविज्ञेया चन्द्रकाशप्रिया इमाः ॥

अथ विमोहनकरागस्त्रियः

मोहनी मुरली मेधा मानसी मानवर्द्धिनी ।
विमोहनप्रियाः पञ्च मुनिना परिकीर्त्तिताः ॥

अथ मारव

मञ्जुषा मालिनी पाली तथामल्लि च चैतका ।**
मारवयोषितः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ पुरवास्त्रियः

परवी पार्व्वती प्रीतिर्म्माधुरी मनरञ्जिका ।
पञ्चैताः पुरवा-वामा भरतर्षिकथिता इमाः ॥

अथ श्यामरागस्त्रियः

ललिता सङ्कुली श्यामा सुष्टुरङ्गा च सौरभी ।
एताः पञ्च समाख्याताः श्यामरागप्रिया इमाः ॥

अथ हेमरागस्त्रियः

हेमी हंसी हुलासी च ज्वाला च जगवन्दनी ।*
हेमरागप्रियाः पञ्च भरतकथिता इमाः ॥

अथ क्षेमरागस्त्रियः

मङ्गली कुशली क्षेमी मातङ्गी मोदवर्द्धनी ।
क्षेमस्त्रियः प्रगीयन्ते पूर्वयामे विशारदैः ॥

अथ हमीर-रागस्त्रियः

हमीरी कामदा हंसी हरिणी कामकेलिका ।
हमीरस्य इमाः प्रोक्ता पञ्चैताः सुखदाः प्रियाः † ॥

अथ भूपालरागस्त्रियः

भूरली एमनी भीमा भोली आराभिका तथा ।
भूपालस्य पूर्वरात्रौ प्रगीयन्ते विशारदैः ॥

जैतरागस्त्रियः

जैती जम्बी च जाम्बती जगदीशी कल्याणिका ‡ ।
पञ्चैताः प्रथमे यामे जैतरागस्य वल्लभाः ॥

अथ दीपकरागपुत्रस्त्रियः—

अथ सुहास्त्रियः

सुही कार्फी सिन्धुली च धूमी च धारिणी तथा ।
सुहास्त्रिय इमाः प्रोक्ता भरतकथिता मुनिः ॥ §

अथ नायकस्त्रियः

नायकी सुस्तनी नन्दा रम्भा च रूपमञ्जरी ।
नायकस्य प्रियाः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ अड़ानास्त्रियः

अड़ानी गुणकरी गौरका लीलरङ्गी सुधावती ।
पञ्चैताः सुष्टुनयना अड़ानावल्लभा इमाः ॥

* शुभ्री च गन्धिका गारा गुन्जी गर्भा सुमालिका ।
शुभ्ररागवधूप्रोक्ता हिन्दोलतनुजस्य वै ॥ इति पाठान्तरम् ।

† धवली धारणी धात्री धार्म्मिका धवलश्रीका । इति वा पाठः ।

‡ कारिणी । इति पाठान्तरम् ।

** मञ्जुषा मालवी माली तथामल्लि च चैविका । इति पाठान्तरम् ।

* हेमी हंसी हलासी च जयन्ती यशोवर्धिनी । इति पाठान्तरम् ।

† पञ्चैते सुखदायकाः । इति वा पाठः ।

‡ जैती यन्त्री च यामन्ती जगदीशी जयन्तश्रीका । इति पाठान्तरम् ।

§ सुही सुभ्री भूषाली च लच्छी परणी तथैव च ।
सुहास्त्रियः समाख्याताः स्वयं रागविशारदैः ॥ इति पाठान्तरम्

अथ शङ्करास्त्रियः:

शङ्करी शङ्कभरणी शङ्कवेलावली तथा ।
कैरली कोकली चैव शङ्करावल्लभाः स्मृताः * ॥

अथ कान्हड़ाप्रिया:

वृन्दा आराधा कृष्णा च कृष्णकेली कामोदिनी ।
कान्हड़ावल्लभाः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ विहागड़ाप्रिया:

विङ्गी विहारिणी वारी वैणवी योगिनी तथा ।†
विहागड़ास्त्रियः प्रोक्ताः पञ्चैता मुनिना इमाः ॥

अथ नाटप्रिया:

नाटी च नर्त्तनी ‡ नित्या नारायणी नरोत्तमी ।
नटरागप्रिया एता मुनिना परिकीर्त्तिताः ॥ §

अथ केदाररागस्त्रियः:

केदारी कामपाली च कारवी योगध्यानिका ।
कल्लोलिनी पुनर्ज्ञेया केदारस्य वराङ्गनाः ॥

अथ श्रीरागपत्नप्रियाः—

अथ मालवरागस्त्रियः:

मतिका मालती मौना मालीगोरा तथैव च ।
विवर्णी तु पुनर्ज्ञेया मालवस्य च वल्लभा ॥

अथ मारुरागस्त्रियः:

मस्तनी मालिनी सुधा गोकर्णी गोपिका पुनः ।
मारुरागप्रियाः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ मेवाड़रागस्त्रियः:

मेवाती मल्लकी चिन्ता सायङ्का मूर्वका तथा ।
सङ्गीते च समाख्याता मेवाड़स्य तु वल्लभा ॥

अथ मरुधररागस्त्रियः:

मरुधरी कृष्णचन्द्री मारवी मुक्ता वल्लभी ।
मरुधरप्रियाः पञ्च सङ्गीते परिभाषिताः ॥

मालीगौड़ारागस्त्रियः:

मालीगोड़ी गुज्जारी च मयानी मृदु मिष्टिका ।
मालीगोड़प्रियाः पञ्च सङ्गीते परिभाषिताः ॥

अथ मारुतरागस्त्रियः:

मारुती मधुरी मुञ्जी मालिनी सुनृका पुनः ।
मारुतस्य प्रियाः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ मेघरागपुत्रस्त्रियः:

अथ मल्लारस्त्रियः:

मल्लिका वर्षणी गर्ज्जी गुञ्जिका घनवर्द्धनी ।
मल्लारस्य पञ्च योषित् वर्षाकाले सुखप्रदाः ॥

अथ गौड़रागप्रिया:

गुण्डी गुण्डगिरि गोभी गिरिजा जलधारिणी ।
गौड़स्त्रियः प्रगीयन्ते वर्षाकालविशारदैः ॥

अथ खंहरागप्रिया

खेड्डी प्रीति माधुरी च कोमली कोहली तथा ।
खेंहराग पञ्च भार्य्याः सङ्गीते परिभाषिताः ॥

अथ कर्णाटरागप्रिया:

कर्णाटी रङ्गनाथी च मल्लवारी च मल्लिका ।
श्रीरङ्गी सहिता एताः कर्णाटस्य वराङ्गनाः ॥

अथ जलधरप्रिया:

जलधरी वर्षिका घुमृड़ी घनश्यामा च घण्टारवी ।
जलधरस्य प्रगीयन्ते वर्षाकाले च सूरिभिः ॥

अथ आभीरप्रिया:

आभीरी भक्तिका चैव साविङ्का कोहली तथा ।
भनङ्गी सहिता एता आभीरस्य प्रिया इमाः ।

अथ तैलङ्गप्रिया:

तैलङ्गी तारिका तन्वी आन्ध्री कावेरिका तथा ।
कुण्डली सहिता एता तैलङ्गस्य प्रिया इमाः ॥

अथ नटनारायणप्रिया:

ब्रह्माण्डी ब्रह्मभेदी च नटनारायणी तथा ।
निरङ्गारी मुक्तिका च नटनारायणप्रियाः ॥

* शङ्करावधू कीर्त्तिताः । इति वा पाठः ।

† विहङ्गी विहारी विहाम वैष्णवी च वियोगिका । इति वा पाठः ।

‡ नृत्यनी । इति पाठान्तरम् ।

§ नटनारायणस्त्रीताः पञ्च भार्य्याः प्रकीर्त्तिताः ॥ इति वा ।

अथ घनश्यामप्रियाः

मालती मलुही मोखा वैकुण्ठी विष्णुवल्लभा ।
वर्षर्तौ ताः प्रगीयन्ते घनश्यामप्रिया इमाः ॥

अथ कमलरागप्रियाः

कमली कर्षणी चैव मनोहारिणी मनमोदिका ।
अप्सरी सहिता एता कमलस्य प्रिया इमाः ॥*

अथ कुसुमरागप्रियाः

कुसुमी सुमनी पुष्पी सुगन्धि गन्धिका तथा ।
कुसुमस्य प्रियाः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥†

इति षट्रागपुत्रस्त्रियः ।

अथ रागरागिणीसमयः

अथ दिवस-रागरागिणी

भैरवो भैरवी चैव रामकली षट्राम च ।
विभासो देशकारोऽयं प्रातःकाले प्रगीयते ॥
हिन्दोलः पञ्चमः सिन्धुर्ललितश्च वसन्तकः ।
भखारो भटीयारी च आद्ययामे प्रगीयते ॥
अलैया देवगिरिया लच्छशाखः पुनस्तथा ।
देवशाखो भूशाखश्च रामशाखः पुनस्तथा ॥
रामगिरि देवक्रति च दिने प्रथमयामके ।
द्वितीय-प्रहरार्द्धे च सूहा वेलावली तथा ॥
सुघराइ माधवी माधो गान्धारी गुणक्री पुनः ।
टोड़ीका शावरी देशी वराटी टोड़िका तथा ॥
तुरस्का योनिका चारिभैरवी ढौड़िका तथा ।
गुर्ज्जरी श्यामगुर्ज्जरी च वैष्णवी वल्लरी तथा ।
द्वितीयप्रहरार्द्धे च वासरे गीयते बुधैः ॥
मध्यमादि च सारङ्गा वृन्दावनी वड़हंसिका ।
सावन्तलङ्कदहनी मध्याह्ने गीयते सदा ॥
मेघमल्लारिका गौड़ो नटमल्लारिका पुनः ।
वर्षाकाले सदा ज्ञेया * मध्याह्नोत्तरतो बुधैः ॥
धनाश्रीर्धवलश्रीश्च जयत्श्रीर्मालवश्रीकाः ।
मूलतानी पूर्व्वी पूर्व्वा तृतीयप्रहरात् पराः ॥
प्रदीपदीपकाभीरटङ्कमालवसंज्ञकाः ।
गौरामालवगौरा च पूरीया शुद्धधनाश्रीकाः ॥
श्रीरागगौरी चेती च त्रवणी मालवी तथा ॥
सन्ध्याकाले सदा ज्ञेया दिवसे गीयते बुधैः ॥

इति दिवस रागरागिणी ।

अथ रात्रिरागरागिणी

कल्याणीमनभूपाली-हमीर-जैत-क्षेमकाः ।
हेमाध्यानश्यामशुद्धा निशा प्रथमयामके ॥
कामोदो नाटछाया च कर्णाटकान्हड़ा तथा ।
नायका डायका टाना शोभनी मोहनस्तथा ॥
वागीश्वरी च केदारो मलोहा जलधरस्तथा ।
निशा द्वितीययामे च गीयते सुबुधैर्जनैः ॥
सोरठी देशसिन्धुरा शङ्कराभरणस्तथा ।
विहागमानमञ्जर्य्यारईरागौ प्रगीयते ॥
खम्भावती च पर्य्यङ्का कलिङ्गो मालकौशिकः ।
जयजयन्ती सोहनी च तृतीयप्रहरात् परः ॥

इति रागरागिणीसमयः ।

अथोपरागः

झिंझोटी जङ्गला पील्लू वरवा धानी तिलङ्गिका ।
आसा घाटा लूहरश्च लूम लहरी तथैव च ॥
सिन्धु सोहरसोहन्यौ गर्भा धवलध्वनी तथा ॥
गारा गोधुनी भटीयारी च विरहा कज्जलिका पुनः ॥
साजगिरि सरपड़दा च जौनपुरी उशाखिका ।
सनम् गनम् नारेजश्च वाकरेजो यवनिका ॥
सावणी जोगीया जङ्गी अहङ्गसुहाना कोशिका † ॥

---

* पुष्पिका कमला क्रान्ति परमानन्दी प्रफुल्लिका ।
कमलस्य प्रियाः पञ्च सङ्गीते परिकीर्त्तिताः ॥ इति पाठान्तरम् ।

† कुसुमी काशिका ककणा करतारी पुष्पगन्धिनी ।
वर्षर्त्तौ ताः प्रगीयन्ते कुसुमस्य प्रिया इमा ॥ इति वा पाठः ।

* च गीयते । इति वा पाठः ।

† मुक्ताशाखया । इति पाठान्तरम् ।

उपराग इति प्रोक्तो देशे देशे तु विस्तरात् ।
गानभेदोप्यनेकस्तु नास्त्यन्तो गानवारिधे: ॥
गीत-प्रबन्ध-छन्दश्च तुरङ्गत्रेवटस्तथा ।
माठा च परमाठा च धोरा धारु तथैव च ॥
योगी कठरतिल्लाना श्लोष्टा निरोष्टा तथा ।
युगलबन्ध-सरिगमपधनि-प्रेमलु-शब्दिका: स्मृता:
ध्रुवपद-तुकमखोष्टख्यालटप्पा पुनस्तथा ।
दादरा-ठुमरी-जातिपचरङ्गा-धवलगर्भिका: ॥
देशे देशे भिन्ननाम तद्देशीगानमुच्यते ॥

इत्युपरागगानभेद: ।

अथ रागरागिणी-ध्यानोदाहरणम्

अथ भैरवराग:

संगीतरत्नाकरे [संगीतदर्पण २।४६] —

गङ्गाधर: शशिकला-तिलकस्त्रिनेत्र:
सर्पैर्विभूषिततनुर्गजकृत्तिवासा: ।
भास्वत्त्रिशूलकर एष नृमुण्डधारी
शुभ्राम्बरो जयति भैरव आदिराग: ॥

इति ध्यानम्

पुनरस्य उदाहरणं संगीत-मकरन्दे —

स चन्द्रहास: फलकं दधानो
निबद्धकण्ठ: शशिबद्धचूड़: ।
व्याघ्राम्बरावेष्टित-गौरगात्र:
शिवस्वरूप: किल भैरवोऽयं ॥—
गान्धारांश-ग्रहन्यासो गान्धारादिकमूर्च्छन: ।
गीयते भैरव: प्रातर्ऋनुमम्मतकोविदै: ॥

अथ बाङ्गालाभाषा-सङ्गीत-तरङ्गिण्या

भैरों आदिराग शिविर वेश ।
शिव अवयव गुणे विशेष ॥
भुजङ्गनिन्दित शिरेते जटा ।
जटाय वेड़िया भुजङ्गघटा ॥
हिल्लोल कल्लोल तरङ्ग वाय ।
झर झर गङ्गा वहिछे ताय ॥
ताल शोभा हरिताल तिलकं ।
सुधांशुकला कपाल फलके ॥
आसन वसन वाघेर छाला ।
दलमल दोले मुण्डेर माला ॥
कोटी शशधर जिनिया काय ।
ताहाते विभूति कलङ्क पाय ॥
वृषभ-वाहन करे त्रिशूल ।
अस्थिर भाव ढुलु ढुलु ढुल ॥
संपूरणभावे वेड़ान फिरि ।
धैवत गान्धार दुरेते गिरि ॥
ऋषभ संवादी गान्धार वादी ।
खरज ताहाते हवे सम्वादी ॥
छय दण्ड निशि थाकिते गावे ।
अरुण उदये समाधा पावे ॥

अथ भैरवस्योत्पत्ति:

रामक्री गौरी टोड़ी च भैरवोत्पत्ति: कथ्यते ।*
क्वचिद्धैवत-संमुख्य ध नि-स रे ग-मस्तथा ॥
गगमगरेसाधमगामापनिधपमपमगमगरेगरेसा ।

इत्यस्थायी ।

मपधसारेसानिनिसानिनिधसासानिध
निनिधपधधपमपपमगममगरेसा । इत्यन्तरा ।

अथ भैरवी (संगीतदर्पण २।४८) —

स्फटिकरचितपीठे रम्यकैलासशृङ्गे
विकचकमलपत्रैरर्च्चयन्ती महेशम् ।
करतलधृतवीणा* पीतवर्णायताक्षी
सुकविभिरियमुक्ता भैरवी भैरवस्त्री ॥ इति ध्यानम् ।

तथा च नादमहोदधौ

सरोवरस्थे स्फटिकस्य मण्डपे
सरोरुहै: शङ्करमर्च्चयन्ती ।

* रामकली गौरी टोड़ी च भैरवोत्पत्तिरुच्यते । इति पाठान्तरम् ।
करधृतघनवाद्य । इति मुद्रित संगीतदर्पणपाठ: ।

तालप्रयोगैः प्रतिबद्धवाद्य-
वीणाधरा नारद भैरवीयम्

तथा च नादपुराणे—

ाविमलकमलकान्ति-स्वर्णताडङ्कवक्त्रा।
मुखजनितविकाशा पल्लवक्ता मृगाक्षी।
पीतवसनचारुभूषणा रत्नहैम्नी
सुरगणरमणीया भैरवी भैरवस्त्री॥ इति ध्यानम्।
धैवतांश-ग्रहन्यासं धैवतादिकमूर्च्छना।
सम्पूर्णा भैरवी ज्ञेया प्रातःकाले प्रगीयते॥
धपमगमगरेगरेसाधनिसासानिमारेगमग-
रेसासारेगमध गमधधनिसासानिधपमप-
धपमगमनिधनिधपमगसारेगम॥

इति हनुमन्मते।

अथ भरतमते—

मध्यमांश-ग्रहन्यासं मध्यमादिकमूर्च्छना।
सम्पूर्णा भैरवी ज्ञेया मपधनिसरेगस्वरा॥
मपधनिसासारेगमपमधनिसागरेमा
निधपमगरेसारेगधनिसानिसागमनिधगमगरेसा-
गगरेमानिमाधधनिसारेगमपमगरेसामगरेसा॥
ममगधधनिसानिसाधनिसारेगमपमगरेसामगरेसा॥

अथ गुर्ज्जरी (संगीतदर्पणे २:८०)—

श्यामा सुकेशी मलयद्रुमाणां
मृदुल्लसत्पल्लवतल्पमध्ये।
श्रुतिस्वराणां दधती विभागं
तन्विमुखा दक्षिणगुर्ज्जरीयम्॥ इति ध्यानम्।
धैवतांश-ग्रहन्यासं सम्पूर्णा गुर्ज्जरी मता।
सप्तमी मूर्च्छना तस्या बहुल्या सह मिश्रिता॥
रेगमपधनिसारे रेगमधसारे सानिधपमगरे।
रामक्री-टोड़ी-संयुक्ता वराटी मिश्रिता पुनः।
गुर्ज्जरी जायते विद्वन्! आद्ययामे प्रगीयते॥
धनिनिधनिनिधरेधगनिधमगगरेसानिरेरेधनि-
रेगमधममगसारेगनिध।

अथ टोड़ी * (संगीतदर्पणे २:५३)—

तुषारकुन्दोज्ज्वलदेहयष्टिः
काश्मीरकर्पूरविलिप्तदेहा।
विनोदयन्ती हरिणं वनान्ते
वीणाधरा राजति टोड़िकेयं॥ इति ध्यानम्।
गान्धारांश-ग्रहन्यासः क्वचित् मध्यम ईरितः।
सम्पूर्णा टोड़िका ज्ञेया आद्ययामे प्रगीयते॥
ग-म-प-ध-नि-सा। अथवा
धैवतांश-ग्रहन्यासा सम्पूर्णा टोड़िका मता।
दिवस-प्रथमयामे गीयते विबुधैर्जनैः॥
धनिसारेगमपपधनिसानिधपमगरेसा।
धसामपधसारेगममगरेसानिधपमगरेसा॥

अथ रामकली † (संगीतदर्पणे २:६०)—

हेमप्रभा भासुरभूषणा च
नीलं निचोलं वपुषा वहन्ती।
कान्ते समीपे कमनीयकण्ठा
मानोन्नता रामकली † मतेयम्॥ इति ध्यानम्।
धैवतांश-ग्रहन्यासा पूर्णा रामकली मता।
प्रथमा मूर्च्छना ज्ञेया रसे कारुण्यमुच्यते॥
भैरवी गुर्ज्जरी टोड़ीतुसत्पन्ना टोड़िका मता।
प्रातःकाले प्रगीयते भैरवस्य च वल्लभा॥
धगसारेमगधपमगमगरेसाधसाममसा-
पपमसासारेरेसासा पपसासानिरेसा-
धनिधपमपधपगमगरेसा।

अथ वराटी (संगीतदर्पणे २:५०)—

विनोदयन्ती दयितं सुकेशी
सुकङ्कणा चामरचालकेन।
कर्णे दधाना सुरवृक्षपुष्पं
वराङ्गनेयं कथिता वराटी॥ इति ध्यानम्।

* टोड़ि इति पाठान्तरम्।
† रामकिरी इति पाठान्तरम्।

मध्यमांश-ग्रहन्यासं क्वचित्‌ऋषभ ईरित: ॥
प-वर्ज्या षाड़वप्रोक्ता दिनशेषे हि गीयते ।
मधनिसारेममधमगरेसानिधसागधनिसाधमगरेसा ॥

इति पञ्चभार्यासहितभैरवराग: ।

अथ मालकोशम् * (संगीतदर्पणे २।५२)—

आरक्तवर्णो धृतरक्तयष्टि:
वीर: सुवीरेषु कृतप्रवीर: ।
वीरैर्धृतो वैरिकपालमाला-
माली मतो मालवकौशिकोऽयम् ॥ इति ध्यानम्

मध्यमांशग्रहन्यासं पञ्चमवर्जितस्वरम् ।
षाड़वाजातिविज्ञेया मालकौशिकसंज्ञक: ॥
मालवाकाकड़ायुक्ता वागीश्वरी-सुमिश्रिता ।
कौशिको जायते यत्र मध्यममुख्य ईरित: ॥
ममरेमानिधगरेनिधगमामनिधनिसागगधनि-
धममधनिमागगधनिधसगधनिमामारेनिधनि
मगगरेगमगमासागमामारेनिधनिधनिमगगरे
गमगगमागमामारेनिधनिधनिमगमगमधधध
ममगमधनिधधमगरेगमधममसा ॥ इत्यस्थायी ।
धनिमासारेरेधधमगमधमधनि गगगरेमा
गधमनिधगगसानिधनिसागमधनिधधमधमम
गधनिमानिनिनिधधममगमधनिधमा
रेगमधगमगनिधनिमा ॥ इत्यन्तरा ।

अथ वागीश्वरी

वीणा-विनोदी कमलायताक्षी
सौन्दर्य्यलावण्यसुगौरगात्रा ।
कान्ते समीपे कमणीयकण्ठा
वागीश्वरी कौशिकरागिणीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांश-ग्रहन्यासा पूर्णा वागीश्वरी मता ।
गमपधनिसारेगसा सम्पूर्णा हनुमन्मते ॥
गमपधनिसारेगरेसानिधपधनिसारेग ।
गरेगरेममसारेसानिधपमगरेसारेग ॥

अथ ककुभा (संगीतदर्पणे २।५७)—

सुपोषिताङ्गी रतिमण्डिताङ्गी
चन्द्रानना चम्पकदामयुक्ता ।
कटाक्षिणी स्यात् परमा विचित्रा
दानेन युक्ता ककुभा मनोज्ञा ॥ इति ध्यानम् ।
षड्जांश-ग्रहन्यासा पूर्णा तु ककुभा मता ।
प्रात:काले प्रगीयते करुणारससम्भवे ॥
सामारेमामारेगमगरेसापमगरेसामगरेसा ।
मपधसारेमानिरेगरेगसानिनिधधपपममगगरेसा ॥

अथ पर्यंका

स्वर्णप्रभा सुन्दरगौरगात्रा
कटाक्षिणी स्यात् परमा विचित्रा ।
सौन्दर्य्यलावण्य-कलायताक्षी
सा पर्यंका रागिणी कौशिकेयम् ॥ इति ध्यानम् ।
पञ्चमांश-ग्रहन्यासा सम्पूर्णा पर्य्यंका मता ।
शेषरात्रौ प्रगीयन्ते कारुण्ये शान्तिके स्मृता: ॥
पमगरेमाधनिमागरेसामपधमारेगरेसारेगमप ।
मपधमानिधमगमागमधनिसानिधपमगरेसा ॥

अथ सोहनी

कर्णे दधाना सुरपुष्पगन्धौ
वीणा-विनोदी कमलायताक्षी ।
प्रांशुकुमारी कमनीयमूर्त्ति:
सा शोभनी कौशिकरागिणीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासं रिपौ वर्ज्जितमौड़वम् ।
निशीथे तृतीययामे शोभनी गीयते तदा ॥
गमधनिसानिधमगसाधनिधनिसागरेसा-
मगरेसानिधमगसा ।

अथ खम्बावती * (संगीतदर्पणे २।५४)—

खम्बावती स्यात् सुखदा रसज्ञा
सौन्दर्य्य-लावण्य-विभूषिताङ्गी ।

* अथ मालवकौशिक: । इति मुद्रित-संगीतदर्पणधृत पाठ: ।
‡ वीरहती । इति पाठान्तरम् ।
* खाम्बावती इति वा पाठ: ।

मानप्रिया कोकिलनादतुल्या
प्रियंवदा कौशिकरागिणीयम् ॥ इति ध्यानम्।
धैवतांश-ग्रहन्यासा खम्बावती सुसंवृता।
धनिसारिगमपञ्च-रात्रयां यामद्वितीयके ॥
पर्यौ वसन्तपञ्चमस्य खम्बावती जन्मभूः।
कोकिलानादकण्ठाच मालकोशस्य वल्लभा ॥
धनिसारिगमगपधनिधपमगरिसा।
धधनिधनिसारिसानिधपमगसारिग-
मपधनिनिमासानिधपमगरिसा ॥

इति पञ्चभार्य्यासहित मालकोशः।

अथ हिन्दोलः (संगीतदर्पणे २।५८)—

नितम्बिनी-मन्दतरङ्गितासु
दोलासु खेलासुखमादधानः।
खर्व्वः कपोत*-द्युतिकामयुक्तो
हिन्दोल रागः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम्।
वसन्तकौशिकयुक्तः पञ्चममिश्रितः पुनः।
हिन्दोलो जायते विद्वन् रिपौ वर्जित औड़वः।
षड़जांश-ग्रहन्यासं सगमधनीति स्वराः।
वसन्तर्त्तौ प्रगीयन्ते आद्ययामे च कीर्त्तिता ॥
सासागगसासाधधनिनिधधगगममगगमम-
सासागगमामा। मागमाधसागमधनिध-
गमधसानिधमगनिधगमग।
सागसामधसागमाममानिधमगमा। धगसानि-
मगसारिगमगमामधगमनिसानिधमगमानिध ॥

अथ वसन्ती (संगीतदर्पणे २।७१)—

शिखण्डिबर्हीच्चयबद्धचूड़ा
कर्णावतंसीकृतशोभनाम्नी।
इन्दीवरश्यामतनुर्विलासी*
वसन्तिका स्यादलिमण्डलश्रीः† ॥ इति ध्यानम्।

वसन्ती स्यात्तु संपूर्णा षड़्जांश-न्याससंयुता
वसन्तकाले विदुषा प्रयोगः कथ्यतेऽधुना।
सारिगमपधसानिधपमगरिसा। सासागरि-
सानिनिधपमगरिसा। रिसानिधनिसा ॥

अथ पञ्चमी

मयूरबर्हिर्दृढ़वेणीबद्ध-
पिक-शुकच्युतलताङ्कुरेण।
सौन्दर्य्यलावण्यमनङ्गमूर्त्तिः
सा पञ्चमी प्रातःसमे वदन्ति ॥ इति ध्यानम्।
ललितश्च वसन्तश्च हिन्दोलः पर्य्यसंयुता।
पञ्चमीभूतसर्वः स्यात् ऋतौ वसन्ते गीयते ॥
पञ्चमग्रहसंयुक्ताः सम्पूर्णाः पञ्चमस्वराः।
पधनिसारिगमश्च हिन्दोलवल्लभा स्मृता ॥
पपधधनिमारिगमपरिसा।
मपधसागरिसानिधपमगरिसा ॥

अथ हिन्दोलिका।

नितम्बिनी सुन्दरगौरगात्रा
वीणा दधाना सुरपुष्पगन्धी।
स्वर्णप्रभा श्रीकमलायताक्षी
हिन्दोलिकेयं कथिता मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम्।
वसन्तः पञ्चमश्चाथ ललितस्वरसंयुता।
हिन्दोली जायते प्रायः वसन्ते गीयते बुधैः ॥

अथ ललिता (संगीतदर्पणे २।६३)—

प्रफुल्ल*-सप्तच्छदमाल्यधारी
युवा च गौरोल्लसलोचनश्रीः†।
विनिश्वसन् दैववशात् प्रभाते
विलासवेशा ललिता प्रदिष्टा‡ ॥ इति ध्यानम्।
निषादांशग्रहन्यासं क्वचित् मध्यम ईरितः ॥
सम्पूर्णा ललिता प्रोक्ता हेमन्तर्त्तौ प्रगीयते ॥

'कपोल' इति पाठान्तरं।
सुचिता। † मञ्जुलश्रीः' इति वा पाठः।

* प्रोत्फुल्ल इति वा पाठः।
† गौरोऽब्जदलायताक्षः। इति मुद्रित-संगीतदर्पणधृतपाठः।
‡ यस्याः पतिः सा ललिता प्रदिष्टा ॥ इति वा।

निरेसगमगगपपमगगमपगरेसा ।
गमपनिसारेगरेसानिपमगरेसा ॥
हिन्दोलपञ्चममिश्र-वसन्तस्वरसंयुता ।
ललिता जायते विद्वन् प्रात:काले प्रगीयते ॥

अथ मालवश्री (संगीतदर्पणे २।७३)—

रक्तोत्पलं हस्ततले दधाना
विभावयन्ती तनुदेहवल्ली ।
रसालवृक्षस्य तले निषण्णा
स्तोकस्मिता सा किल मालवश्री: ॥ इति ध्यानम् ।
षड़्जांशस्य ग्रहन्यामं रि-वर्ज्यात्र हि षाड़वा: ।
तृतीयदिवसे यामे गीयते विबुधैर्जनै: ॥
धनाश्री जयच्छ्रीयुक्ता धवलश्री मिश्रिता पुन: ।
मालश्री जायते विद्वन् रागकल्पद्रुमे इमा: ॥
सागपगसानिनिधधममगसा ।
मधनिसागमापमगसाधमग
मानिधमगसानिधगगसा ॥

अथ धनाश्री (संगीतदर्पणे २।७४)—

दूर्वादलश्यामतनुर्मनोज्ञा
कान्तं लिखन्ती विरहेण दूना ।
खेदे कपोले दधति दृगम्बु-
निष्यन्दनिर्धौतकुचा धनाश्री: ॥ इति ध्यानम् ।
मालश्री गौरीसंयुक्ता टोड़िका पुन: मिश्रिता ।
धनाश्री जायते विद्वन् कथिता हनूमन्मते ॥
पूर्णा धनाश्री संप्रोक्ता पञ्चमस्वरसंस्थिता ।
शेषयामे दिने गानं क्रियते सुखसंप्रदम् ॥
पमगरेसानिसागमपगमधपमगरेसा
रेसानिधपमगरेगपमगरेसा ॥
गमपसानिसागरेसानिधप
मगपमसारेसानिधपमगरेसा ॥

अथ दीपक: (संगीतदर्पणे २।६४)—

बाला रतार्थं प्रविलीनदीपे
गृहेऽन्धकारे सुभगो प्रवृत्त: ।
तस्या: शिरोभूषण-रत्नदीपे-
र्लज्जां दधौ दीपकरागराज: ॥ †
षड़्जांशग्रहन्यासं रिपौ वर्ज्जित औड़व: ।
तृतीययामे दिवसे गीयते विबुधैर्जनै: ॥
पलासी जयच्छ्रीयुक्ता धवलश्री धनाश्रीका ।
दीपको जायते विद्वन् ग्रीष्मर्तौ च प्रगीयते ॥
सागमधसानिधमगसागगमधसामगसानिधमगसा ॥

अथ प्रदीपिका

रक्ताम्बरा रक्तसुलोचना च
सूर्यप्रभा सूर्यमुखी मनोज्ञा ।
कान्ते समीपे कमनीयकण्ठा
प्रदीपिका दीपकरागिणीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासा ऋषभस्वरवर्ज्जिता ।
तृतीययामे दिवसे प्रदीपा मा प्रगीयते ॥
धनिसागमपमासापमगसाधनिधसागसाध ॥
पलासी धानिसंयुक्ता जयतश्री च मिश्रिता ।
प्रदीपा जायते विद्वन् तृतीय-प्रहरात् परा ॥

अथ जयतश्री (जयच्छ्री)

स्वर्णप्रभा वीणधरा कराग्रे
सौन्दर्य्यलावण्य-कलायताक्षी ।
पीनोन्नता रागिणी जयतश्री
कामिनी चेयं कथिता मुनीन्द्रै: ॥ इति ध्यानम् ।
धनाश्री धानिसंयुक्ता मालश्री तासु मिश्रिता ।
जयच्छ्री जायते विद्वन् तृतीयप्रहरात् परा ॥
मध्यमांशग्रहन्यासा ऋषभस्वरवर्ज्जिता ।
षाड़वा तु हि विज्ञेया जयच्छ्री जायते ध्रुवम् ॥
मगसापमगसासागपमगसानिधममगसा ।
ममममधसागगसापमगमधगसानिधपमगसा ॥

अथ भीमपलश्री

वीणा दधाना कमलायताक्षी
गम्भीरनादा सुरपुष्पगन्धी ।

† लज्जा: प्रकुर्व्वन् कृतवान् प्रदीप: । इति वा पाठ:

कलामयी सा कमनीयमूर्त्तिः
भीम पलासी कथिता मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम् ।
धनाश्री धानिसंयुक्ता जयत्-श्री मिश्रिता पुनः ।
भीम-पलासी जायेत करुणा-रौद्रसंयुता ॥
पञ्चमांशग्रहन्यासं ऋषभो वर्ज्जितस्वरः ।
षाड़वास्तु सुविज्ञेया सुष्ट भीमपलासिका ॥
पनिसागपमगसामगसानिगरेसा निपनि-
सागपमगसा । निसानिसागरेसागरेसानि-
पमपनिसानिपमगरेसानिपनिसा ।

अथ नटः (संगीतदर्पणे २।६९)—

तुरङ्गमस्कन्धनिषिक्तबाहुः
स्वर्णप्रभः शोणितशोणगात्रः ।
संग्रामभूमौ विचरन् प्रतापी
नटोऽयमुक्तः किल रागमूर्त्तिः * ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासं संपूर्णो नटसंज्ञकः ।
द्वितीय-प्रहरादूर्द्ध्वा नटिका गीयते बुधैः ॥
धनिसागरेसानिधपमगरेसाधपमगरेसानिध ॥
मपधसारेसागरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ श्रीरागः (संगीतदर्पणे २।७०)—

अष्टादशाब्दः स्मरचारुमूर्त्तिः
धीरो लसत्पल्लवकर्णपुरः ।
षड्जादिसेव्योऽरुणवस्त्रधारी
श्रीराग एषः क्षितिपालमूर्त्तिः ॥ इति ध्यानम् ।
षड्जांशग्रहन्यासं क्वचिद्धैवत ईरितः ।
सन्ध्याकाले प्रगीयन्ते श्रीरागनृपरूपिणः ॥
सारेगरेसारेरेगमपमा
सासासानिनिधपममपपगगरे-
रेसारेरेगरेसानिधनिसारेसारेसा ॥
रेगगमधपधधपपममम्रधनिनि
निधगरेसासारेगमपमगरेसा ॥
गपधनिसारेसागरेसा
मगरेसानिधपमपमधमगरेसा ॥

* स्वर्णमूर्त्तिः । इति वा पाठः ।

अथ मालवी

पीनस्तनी शुभ्रविलासनेत्रा
नितम्बबिम्बप्रतिबद्धकाञ्ची ।
मुखारविन्दस्मरगीतरम्या
नृत्यानुगा मालविका प्रवीणा ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासा क्वचित्पञ्चमवर्ज्जिता ।
सन्ध्याकाले सुष्ठुतरा गीयते मालविकैमा ॥
धनिसारेगमनिधगमसारेनिध धमगरेगमग-
रेरेसानिधधमगपसानिरेधपग ॥

अथ मालवः

नितम्बिनीचुम्बितवक्त्रपद्मः
शुकद्युतिकुण्डलवान् प्रमत्तः ।
सङ्केतशालां प्रविशन् प्रदोषे
मालाधरो मालवराग एषः ॥ * इति ध्यानम् ।
धैवतस्तीव्रसंप्रोक्तो मध्यमः कोमलस्तथा ।
गान्धारः कोमलकान्तिर्मालवः पूरणो मतः ॥
धमगरेगमगरेसानिध धपमगमगरेगरेसा ।

तथा च संगीतमकरन्दे—

गम्भीरनादो मधुरं सुरज्ञो
पाणिग्रणान् नारदसंप्रयोगात् ।
श्यामो युवा विप्रकुलप्रसूतः
वीणाधरो मालवराग एषः ॥

अथ मालवगौड़ः

वीणाविनोदप्रतिपन्नपाणिः
गुणाण् कथा नारदसंप्रयोगात् ।
श्यामो युवा विप्रकुलप्रसूतः
स मालवो गौड़मुनिप्रणीतः ॥ इति ध्यानम् ।
मध्यमांशग्रहन्यासं मध्यमग्राममूर्च्छना ।
तृतीयप्रहरादूर्ध्वा गीयते गौड़मालवा ॥
मपधनिसारेगमधममरेसानिधपमगरेसा ॥

* संगीतदर्पणे २।७२ मालवीध्याने अयं श्लोको दृष्टः यथा—
'स्वकान्तसंचुम्बितवक्त्रपद्मा शुकद्युतिः कुण्डलिनी प्रमत्ता ।
सङ्केतशालां विशती प्रदोषे मालाधरा मालविकेयमुक्ता ॥'

अथ त्रिवणा (त्रवणा)

रम्भायास्तु तरोर्मूलनिषण्णा पीतवर्णभाक् ।
त्रिवणा सा च विज्ञेया पूर्णाश्री च वराङ्गना ॥
श्रीगौरीमारवा युक्ता ऋषभग्रह अंशभाक् ।
त्रिवण्युत्पत्तिराख्याता सन्ध्याकाले प्रगीयते ॥
रेमपनिसारेगमपमगसा ।
पनिरेनिरेसागमपरेसानिधपमगरेसा ॥

अथवा

त्रिवणा सा च विज्ञेया ग्रहांशन्यासधैवता ।
पूर्णास्तु हनुमत्प्रोक्ता सन्ध्याकाले प्रगीयते ॥

अथ गौरी

गौरद्युति: काञ्चनचारुदेहा
सौन्दर्य्यलावण्यकलायताक्षी ।
वीणां दधाना सुरपुष्पगन्धी
गौरी च उक्तास्तु श्रीकोहलेन ॥ †‡ इति ध्यानम् ।
मालवा गौरीसंयुक्ता श्रीरागे मिश्रितं पुन: ।
गौराद्युत्पद्यते यत्र दिनान्ते गानमिश्रिता ॥
धैवतांशग्रहन्यासं संपूर्णो जायते स्वर: ।
सन्ध्याकाले प्रगीयन्ते श्रीरागस्य वराङ्गना: ॥
धनिसागरेमपधसानिधप ।
ममपमागरेसाधनिनिधप ॥

अथ पूरवी

निद्रालसा गात्रकपटेन युक्ता
कान्तं स्मरन्ति विरहप्रपूर्णा ।
सौन्दर्य्यलावण्यकमलायताक्षी
सा पुरवी शेषदिने तुरीये ॥ इति ध्यानम् ।

पुरवीया जैतासंयुक्ता मालवा गौरीसम्भवा ।
पुरवीगान: कर्त्तव्यो दिवसे चतुर्थयामे ॥
पमगरेसामगरेसा निरेगममधमगममरेगरेसा ॥
मधसानिसारेसागमगरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ मेघराग: (संगीतदर्पणे २।७६)—

नीलोत्पलाभवपुरिन्दुसमानचैल: §
पीताम्बरस्तृषितचातकयाचमान: ॥
पीयूषमन्दहसितो घनमध्यवर्त्ती
वीरेषु राजति युवा किल मेघराग: ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासं क्वचित् धैवतवर्ज्जित: ।
वर्षाकाले सदा ज्ञेया मेघरागे घनद्युति: ॥

तथा च सङ्गीतचन्द्रिकायां (२।८२)—

पर्य्यङ्के प्रियया सार्द्धमासीन उपलालयन् ।
पीताम्बर: सुभूषाढ्यो मेघरागो घनद्युति: ॥
नीलो महाहसितसन्निविष्ट:
घनद्युतिर्वीररसे निविष्ट: ।
वर्षासु मेघविद्युच्छटासु चोक्त:
प्रचण्डवीर: किल मेघराग: ॥
पञ्चमांशग्रहन्यासकृत: गान्धार ईरित: ।
विष्णुरूपो मेघरागो वीररसे प्रयुज्यते ॥
पपगरेसारेसागमपपगमनिपमगरेसा ॥

अथ मल्लारिका (संगीतदर्पणे २।७७)—

गौरी कृशा कोकिलकण्ठनादा
गीतच्छलेनात्मपतिं स्मरन्ती ।
आदाय वीणां मलिना रुदन्ती
मल्लारिका यौवनदूनचित्ता ॥ इति ध्यानम् ।

सङ्गीतदर्पणे (२।५८)—

मेघागमे रम्यवपुर्दधाना
प्रख्यापनीया सततं मुरारे ।
मा नर्त्तयन्ती शिखिनां कुलानि
मल्लारिकेयं कथिता नृपेण ॥

† "चारुरम्भातरोर्मूले निषण्णा कनकप्रभा ।
नताङ्गी हारललिता कान्तं न त्रिवणा मता ॥"
इति संगीतदर्पणधृत-पाठ: २।८६।

‡ 'निदर्शयन्ती श्रवणावतंसभासाङ्कुरं कोकिलनादरम्यम् ।
श्यामा मधुस्यन्दिमधुस्वनादा, गौरीयमुक्ता किल कोहलेन ॥'
इति संगीतदर्पणधृत-पाठ: २।५५।

सङ्गीतदामोदरे—

सत्त्वावदातं प्रणीतं दधातु
प्रलम्बकर्णः कुमुदेन्दुवर्णः ।
वीणां दधानश्चातकयाच्यमानः
मल्लाररागो घनश्याममूर्त्तिः ॥
मेघगौड़श्च सारङ्गस्त्रये जाता मल्लारिका ।
वर्षाकाले सदा ज्ञेया ज्ञाता रागविशारदैः ॥
गान्धारांशग्रहन्यासं पूर्णा मल्लारिका मता ॥
गमपधनिसांरेंमानिधपमगम ।
पपगगरेसारेसागमपपगमनिधमसारेसा ॥

अथ सोरठी (संगीतदर्पणे २।८५)—

पीनोन्नतस्तनसुशोभनहारवल्ली
कर्णोत्पलोभ्रमरनादविलग्नचित्ता ।
याति प्रियान्तिकमतिश्लथबाहुवल्ली
सौराष्ट्रिका मदनमूर्त्तिः सुचारुगौरा * ॥
षड्जे च ग्रहविन्यासमर्द्धरात्रौ प्रगीयते ।
सोरठी सुन्दरी नारी मेघरागस्य योषितः ॥
मल्लारसिन्धुगौड़श्च मिश्रितः सोरठी भवेत् ।
देशसंज्ञा क्वचित् ज्ञेया अर्द्धरात्रयां प्रगीयते ॥
सारेगमपधनिसांनिधपमगरेसा ।
मपधसांरेसागरेसामगरेसा रेसानिधपमगरेसा ॥

अथ सारङ्गनट्टा (सङ्गीतदर्पणे २।८३)—

वीणां दधानो दृढ़बद्धवेणी
संख्यासमं मञ्जुलवृक्षमूले ।
जाम्बुनदाभा च निषण्णदेहा
सारङ्गनट्टा कथिता मुनीन्द्रैः ॥

सङ्गीतरत्नाकरे—

करधृतवीणा सख्या सहोपविष्टा कल्पतरुमूले ।
दृढ़तरनिबद्धकवरी सा सारङ्गा तु रागिणी प्रोक्ता ॥

निषादांशग्रहन्यासं धगौ वर्ज्जित औड़वः ।
मध्याह्ने गानः कर्त्तव्यः सारङ्गा मेघवल्लभा ॥
चौताल । निसारेसामपमपरेसा निसारेसानिधपम ।
रेसानिस्वरप्रोक्ता षड्जादिक-मूर्च्छना ॥

अथ वड़हंसी

अतिचतुरसुगौरा पीतवर्णायताक्षी
दृढ़तरकृतवेणी सेविता कल्पवृक्षैः ।
अतिचतुरसुगम्या वाड़हंसीति प्रोक्ता
मुनिमतमवलोक्य कीर्त्तिता रागिणीयं ॥
सारङ्गस्वरमेघश्च कामोदो मिश्रितं पुनः ।
वड़हंसी हंसयुक्ता मध्याह्ने गीयते बुधैः ॥
निषादांशग्रहन्यासं सम्पूर्णा वड़हंसिका ।
मध्याह्ने गीयते विद्वन् संगीते परिभाषिता ॥
निनिसासारेरेरेममपपनिनि सागरेसामानिमपरेसा ॥

अथ मध्यमादिः (संगीतदर्पणे २।४७) —

पत्या सह संपरिरभ्य कामं
संचुम्बितास्या कमलायताक्षी ।
स्वर्णद्युतिः † कुङ्कुमलिप्तदेहा
सा मध्यमादिः कथिता मुनीन्द्रैः ॥
सावन्तवड़हंसस्य वृन्दावनस्ततः परा ।
मध्यमादि च संप्रोक्ता मध्याह्ने गीयते बुधैः ॥
ऋषभग्रहसंयुक्ता रधौ वर्ज्जयन्या औड़वम् ।
रेमपनिसा प्रोक्ता सारङ्गा मध्यमादिका ॥

अथ ब्रह्मताल—।०।००।०००

रेसासानिमपरेरेमपमरे-
रेसारेमपनिसानिमपरेसा । मपनिसानिसारेम-
पमरेसारेसानिपमरेसा ॥

अथ लङ्कदहना

भस्मोज्ज्वलोत्पलशूलधारणी वह्निस्वरूपा गम्भीर-नादा मध्याह्नसमये हनुमत्सुप्रोक्ता सा लङ्कदहना मेघस्य भार्य्या ।

* करमुक्तं मिलिताङ्गयष्टिः । इति मुद्रितसंगीतदर्पणपाठः ।

† 'स्वर्णच्छविः' । इति पाठान्तरम् ।

गान्धारग्रहमाचष्टे वीरे रौद्रे प्रयुज्यते ।
धगौ वर्जितमौड़वा च मध्याह्ने प्रगीयते ॥
रेसानिरेसापमपमनिरेसामरेमानिपमरेसा-
निनिरेसानिपमरेसा ॥

अथ गुणकली (गुणकिरी । संगीतदर्पण २।५६)—

शोकाभिभूतनयनारुणदीनदृष्टि-
र्नम्रानना धरणीधूसरगात्रयष्टि: ।
जीमूतचारुकवरी प्रियदूरवर्त्ती *
संकीर्त्तिता गुणकिरी करुणे कृशाङ्गी† ॥ इति ध्यानम्
धैवतांशग्रहन्यासं कुत्रचित् पञ्चमस्वर: ।
मारवादेशकारस्य गौरायां जायते बुधै: ॥
धगसारेनिरेमगसा ॥ निमाधसामगरेसा ॥

अथवा

पञ्चमांशग्रहन्यासं गुणक्री च इति स्मृता ।
सौवीरी मूर्च्छना ज्ञेया कौशिकस्य वराङ्गना ॥
सम्पूर्णा भरतमते ।

अथ सुखावती ‡ (संगीतनारायणे)

वासं वसाना शरदभ्रशुभ्रं
विरिञ्चिदेवीपरिकर्म्मदक्षा ।
कुन्दावदाता चतुराननस्य
सुखावती लब्धसमृद्धसेवा ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासं खम्भाती-पर्य्यमिश्रिता
नीलाम्बरीसुसंयुक्ता सुखावती भवेत्तदा ॥
गमपधनिसारेगगमधसापसानिरेगसासारेग

अथ श्यामराग:

वीणानिनादे प्रतिपन्नमूर्त्ति:
सौन्दर्य्यलावण्यसुवर्णकान्ति: ।
श्यामघनमेघद्युतिस्वरूप:
स श्यामराग: कथितो मुनीन्द्रै: ॥ इति ध्यानम् ।
कल्याणीजैतसंयुक्त: केदारो मिश्रित: पुन: ।
तस्योत्पत्ति: भवेद्विद्वन् सन्ध्याकालेषु गीयते ॥

षड्जांशग्रहन्यासं तीव्र-गान्धार ईरित: ।
शेषे कोमलविज्ञेय: श्यामराग: प्रकीर्त्तित: ॥
सागमगरेसानिधनिसारेगमपमगरेसा ॥
निधनिमागरेसानिधपसागरेमानिगरेसा ॥

अथ आशा

योगीयाशावरी गौरी गान्धारस्वरमिश्रिता ।
आशारागो भवेद्यत्र पूर्वपुत्र: प्रकीर्त्तित: ॥
गान्धारग्रहमाचष्टे द्वे प्रहरार्द्धे दिने तथा ।
गगरेसासासानिधपमगसा ॥

अथ सोमराग: (संगीतनारायणे)

निशाङ्गनां वक्षसि स्थापयित्वा
कलङ्ककुम्भात् सुरतं श्रयन्तीम् ।
रसज्ञो गुणज्ञ: सुगौरगात्रो
वीणा दधान: स हि सोमराग: ॥ इति ध्यानम् ।
ऋषभांशग्रहन्यासं सप्तस्वरसुसंयुतं ।
निशायां गीयते विद्वन् सोमराग: प्रकीर्त्तित: ॥
कल्याणकान्हाड़ायुक्त: शङ्करामिश्रित: पुन: ।
सोमराग: प्रगीयते भरतकथितो मुने ॥
रेगमपधनिसासानिधपमगरे ।
मपधसागरेसानिपमरेसारे ॥

अथ नटनारायण: (संगीतनारायणे)

स्त्रीवेशधारी पुरुषो नवीन:
सङ्गीतशास्त्रे श्रमिमादधान: ।
गायन् सतालं सलयं मनोज्ञ:
स्यान्नटनारायणराग एष: ॥ इति ध्यानम् ।
काङ्काड़ानटसंयुक्त: कल्याणमिश्रित: पुन: ।
नटनारायणो जात: सन्ध्याकाले प्रगीयते ॥
गान्धारांशग्रहन्यासं सम्पूर्णं हनुमन्मते ।
क्वचिद्दृषभवर्ज्जितं नटनारायणस्य च ॥
गमपधनिसारेरेसानिधपमगरेसा ॥
मपधसागरेसानिधपमगरेसा ॥

---

* चाम्बुजचारुकवरी प्रियदूरवक्ता । इति पाठान्तरम् ।
† करुणेतकृशाङ्गी । इति वा पाठ: । ‡ सुखावती इति संगीतनारायण: ।

अथ हम्मीररागः

श्रुतौ दधानो नवकर्णिकारं
सङ्केतशालामनङ्गमूर्त्तिः ।*
वीणा दधानः सुकरैः करस्थः
हम्मीररागः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम् ।

कल्याणजैतसंयुक्तो तथा कामोदमिश्रितः ।
केदारस्वरसंयुक्तो हम्मीरनामको भवेत् ॥
षड्जांशग्रहन्यासं पूर्णाख्या च हम्मीरिका ।
निशायाः प्रथमे यामे सङ्गीते परिकीर्त्तिता ॥
सारिगमपधनिसानिधपमगरेसामधगसापमगसासा-
निरिगसामगरेसानिधपमगरेसा ।

आभीरी

विलोकयन्ती अधिकं गभीरे
विश्लेषयन्ती शुभगात्रगौरा ।
पीनस्तनी कुन्तलघृष्टगण्डा
त्वाभीरिकाख्या हृदये शुभं स्यात् ॥ इति ध्यानम् ।

भीमा-पलाशी सिन्दुरा पूरवास्वरसंयुता ।
आभीरी जायते विद्वन् धैवतग्रहसंस्थिता ॥
षड्जांशग्रहन्यासं ऋषभो रञ्जितो स्वरः ।
यामे तृतीये संयुक्ता आभीरी गीयते बुधैः ॥
सागमगसापगसानिधमगसानिध ।
मपधसामधसानिधपमगसा ॥

अथ कर्णाटः (संगीतदर्पणे २।६६)—

कृपाणपाणिर्गजदन्तपत्र- †
मेकं वहन्ती दक्षिणहस्तकेन ‡ ।
संस्तूयमानः सुरचारणौघैः
कर्णाटरागः क्षितिपालमूर्त्तिः ॥ § इति ध्यानम् ।

धैवतांशग्रहन्यासो धैवतादिकमूर्च्छना ।
प्रथमे प्रहरे गानं रसे वीरे प्रयुज्यते ॥

* अन्यापरमस्मि शुकस्य सारिका । इत्यधिकपाठः ।

† 'खण्ड' इति वा पाठः ।

‡ 'निजहस्तकेन' इति वा ।

§ सा कानडेयं किल दिव्यमूर्त्तिः । इति मुद्रितसंगीतदर्पणपाठः ।

शुक्लदेवगिरियुक्ता वेलावली च मिश्रिता ।
कर्णाटोऽयं रसे वीरे प्रयुक्तो भरतेन च ॥
धनिसागरेसानिपमगरेसा ॥
मगपसाधसानिगसारिपसा ॥

अथ भखार:

भैरवो मालकौशश्च ललिता मिश्रिता पुनः ।
भखारे जायते यत्र प्रातःकाले प्रगीयते ॥
निषादांशग्रहन्यासं पञ्चमस्वरवर्ज्जितः ।
निशागमे गायत्यत्र भखाररागसंज्ञकः ॥
निसारेगमगरेमाधनिसागरेसामगरेसा ॥
गमधनिसारेसामगरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ योगिनी

काली कराली सुभयङ्करी च
कङ्काली खनित्रत्रिशूलधारिणी ।
संग्राममूर्मी सुपिवन्ती रक्तं
रक्ताम्बरधारिणी योगिनीयम् ॥ इति ध्यानम् ।

धैवतांशग्रहन्यासं मावरीदेशीजन्मभूः ।
आद्याह्निके यामे गानं क्रियते योगिनी इदम् ॥
धनिसारेगमपध ॥ गमपधसागरेसानिधपमगरेसा

अथ नागध्वनिः

श्रीखण्डशैलशिखरे गजमौक्तिकाद्यैः
सौन्दर्य्यशोभनवती सुमृगायताक्षी ।
वीणाविनोदी समयस्तुयन्त्रधात्री
नागध्वनिः चन्दनेन लेपगात्री ॥ इति ध्यानम् ।

गान्धारी मावरी देशी भूपालीमिश्रितः पुनः ।
नागध्वनिर्जायते स्म मध्याह्ने सा च गीयते ॥
गगपपममधधरेरेनिनिसासा ॥
मपधनिसागरेसानिधगसा ॥

अथ सैन्धवी । सङ्गीतरत्नाकरे—

प्रलम्बकर्णा वपुषा च गौरी
वीणा दधाना सुरपुष्पगन्धी ।
वक्त्रानुरक्ताचरभूषणीयं
गीतेषु दक्षा किल सैन्धवीति ॥

संगीतदर्पणे (२।५१)—

त्रिशूलपाणि: शिवभक्तिरक्ता
रक्ताम्बरा धारितबन्धुजीवा ।
प्रचण्डकोपा रसवीरयुक्ता
सा सैन्धवी भैरवरागिणीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासं सम्पूर्णा सैन्धवी मता ।
तृतीयप्रहरे गेया भैरवस्य च वल्लभा ॥
धनिसारिगमपधपमगरिसानिध ॥
मपधमारिसासगरिसानिध ॥
शक्तिहस्ता महाकाया पुष्पमाला वितन्वती ।
चन्दनपुष्पार्चितागात्रैर्भटो-सिन्धुगौरक: ॥

अथ माधवी

नीलं निचोलं वपुषा दधाना
प्रिये च सा लक्षितमञ्जुभक्ती ।
तमालतालं शिखरे चरन्ती
प्रियानुरागादिव माधवीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
मध्यमांशग्रहन्यासं रिपा वर्ज्जितषाड़वा ।
लङ्कदहनमिश्रा सारङ्गा माधवी-स्वरा ॥
ममधनिसागमधमगमधसानिपमनिध ॥

अथ मनोहा

धैवतांशग्रहन्यासं पञ्चमं परिवर्ज्जयेत् ।
औड़व: स तु विज्ञेयो मल्लोहा निशि गीयते ॥
केदारो जलधरैर्युक्तो मल्लारस्वरसंयुत: ।
गीयते रागपुत्र: स्यात् धनिसागमप-स्वरा: ॥
धनिसागमधमगसानिधगमधनिसारिगमध ॥

अथ गौड़गिरि: (संगीतनारायणे)

रतोत्सुका कान्तपथप्रतीक्षा-
मापादयन्ती मृदुपुष्पतल्पे ।
इतस्तत: प्रेषितदृष्टिवार्त्ता
श्यामाङ्गिका गौड़गिरि: प्रसिद्धा ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहश्चैव वर्षाकाले प्रगीयते ।
पूर्णा गौड़वधू: प्रोक्ता तृतीयप्रहरात् परा ॥
गमपधनिसागपपगमगरिसा ॥
गमपसासानिरिसामगरिसा ॥

अथ वङ्गाल: । रत्नाकरे (संगीतनारायणे)—

मनोज्ञकाञ्ची गुणगुम्फिताङ्ग:
स्रजं दधानो धरणीधरस्थ: ।
चण्ड: कुमारो रमणीयमूर्त्ति-
र्वङ्गालराग: शुचिमाससमान: ॥

संगीतदर्पणे (२।४८)—

कक्षानिवेशितकरण्डधरायताक्षो
भास्वत्त्रिशूलपरिमण्डितवामहस्ता ।
भस्मोज्ज्वला निविड़बद्धजटाकलापा
वङ्गालिकेत्यभिहिता तरुणार्कवर्णा ॥ इति ध्यानम् ।
कण्ठे धृत्वाक्षमाला यज्ञोपवीतधारक: ।
वेदे अत्यन्तविद्वान् स शुक्लवस्त्रसमुज्ज्वल: ॥
पाणिपात्रं कराग्रे च शिवार्च्चाध्यानसंयुत: ।
वङ्गालराग: सर्व्वशो गीयते पुत्रभैरव: ।
प्रात:काले नमस्यस्त्वं कथित: स्वरसिद्धये ॥
वङ्गाली औड़वा ज्ञेया ग्रहांशन्यासषड्जभाक् ।
रिधहीना च विज्ञेया मूर्च्छना प्रथमा मता ॥
पूर्णा वामत्रयोपेता कल्लिनाथेन भाषिता ॥
ढोड़ी वराड़ी जयतश्रीर्जयन्तश्च त्रयमिश्रिता वङ्गालिका ।
सागमपनिसामानिपमगसामपसामानिगसागमपसा ॥

अथ पटमञ्जरी (संगीतदर्पणे २।६३)—

वियोगिनी कान्तविशीर्णगात्रा
स्रजं वहन्ती वपुषातिमुग्धा * ।
आश्वास्यमाना प्रियया च सख्या
सा धूसराङ्गी पटमञ्जरीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
देशीमालवमञ्जर्य्या मालश्रीमिश्रित: पुन: ।
पञ्चमांशग्रहन्यासं जायते पठमञ्जरी ॥

---

* 'शुष्का' इति वा पाठ: ।

पञ्चमस्वरमुख्या च संपूर्णा पठमञ्जरी ।
पधनिसारिगम-स्यात् तृतीयप्रहरात् परम् ॥
पमगरेसानिधपमगरेसारिगमप ॥
गमपधसागरेसानिधपमगरेसाप ॥

अथ टक्का (संगीतदर्पणे २।८१)—

शय्यासु सुप्तं नलिनीदलानां
वियोगिनी वीक्ष्य विपन्नचित्ता ।
सुवर्णवर्णा गृहमागता सा
सुभाषयन्ती * किल टक्कसंज्ञा ॥ इति ध्यानम्
ऋषभांशग्रहन्यासं संपूर्णा ऋतुमन्मते ।
सन्ध्याकाले प्रगीयन्ते श्रीरागस्य सुयोषितः ॥

अथ माधवः

नृत्ये गीतावसक्तं करधृतसुरसंवादयन्तीं सुवीणां
कस्तूर्यामोदयन्तीं पिकमृदुवचना चर्च्चिता चन्दनाद्यैः ।
देवान् साध्यादिसर्व्वानतिपुरुषमतिः स्वे च वर्णाम्बरे च
गीयन्ते स्मात्र मरुमधुना माधवो राग एषः ॥
चन्दनचर्च्चितगात्रं शीर्षमुकुटपीतवस्त्रम् ।
प्रभाते गायन्ति स्वर्गलोके माधवराग एषः ॥
सारङ्गकान्हड़ायुक्तो मधुमाधवमिश्रितः ।
निषादांशग्रहन्यासं माधवः स प्रकीर्त्तितः ॥
निसारिगमपधनिसानिधपमगरेसा ॥

अथ मधुरराग:

मधुरस्वरसंयुक्ता मव्वार्थगुणसंयुतः ।
गौरगात्रकाममूर्त्तिर्मधुररागः कथ्यते ॥
विहागेमनकल्याणं केदारीमिश्रिता यदा ।
गान्धारग्रहमाचष्टे मधुररागः जायते ॥
गमपधनिसानिधपमगरेसा ॥

अथ देशी (संगीतदर्पणे २।६७)—

निद्रालसं सा कपटेन कान्तं
विबोधयन्ती सुरतोत्सुकेव ।
गौरी मनोज्ञा शुकपिच्छवस्त्रा
ख्याता च देशी रसपूर्णचित्ता ॥ इति ध्यानम् ।
मध्यमांशग्रहन्यासं देशी संपूर्णिका मता ।
गुर्ज्जरी टोड़ीकायुक्ता मिश्रिताशावरी पुनः ॥
मपधनिसारिगमगरेसा ॥ मपधसागरेसानिधपम ॥

अथ पूर्व्वाराग:

विमलकमलकान्ती सुन्दरी गात्रगौरा
युवतीप्रियसुखदं कामदेवस्य मूर्त्तिः ।
* * †

तृतीयप्रहरे दिवसे पुरवा स प्रसिद्धः ॥
पञ्चमांशग्रहन्यासजातो मालवगौड़ च ।
त्रिभिर्मिश्रो भवेद्रागः पूरवा नामसंज्ञकः ॥
पमगरेसारिगमपधनिसानिध ॥
मपनिसारिसागरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ सिन्धुड़ा (संगीतनारायणे)

समुद्रनीलद्युतिरम्बुजाक्षी
प्रवादयन्ती सकला सयन्त्रम् ।
रत्नैर्विचित्राभरणा सुकेशी
सा सिन्धुड़ा कान्तसमीपसंस्था ॥ इति ध्यानम् ।
मध्यमांशग्रहन्यासं सिन्धुरा पूरवा तथा ।
वसन्तर्त्तौ सदा गेया तृतीयप्रहरात् परम् ॥
मपधनिसारिगम ॥

अथ देशाख्यः (संगीतदर्पणे २।६१)—

वीरे रसे व्यञ्जितरोमहर्षः
शिरोधराबद्ध*विशालबाहुः ।
प्रांशुः प्रचण्डः किल इन्दुरागो
देशाख्यरागः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासः क्वचित् ऋषभ ईरितः ।
सम्पूर्णा सा च विज्ञेया शार्ङ्गदेवेन भाषिता ॥
काफ़ड़ासुहासंयुक्तः सारङ्गसुरमिश्रितः ॥
देशाख्यो जायते दिने द्वितीयप्रहरार्द्धके ॥
गमपधनिसारिगमपधगरेसानिधसा ॥

* कान्तं भजन्ती । इति मुद्रितसंगीतदर्पणपाठः ।

† अत्र तृतीयचरणाभावः । * 'निबद्ध-सन्नद्ध' इति पाठान्तरम् ।

अथ गौरसारङ्ग:

वीणाविनोदी दृढबद्धवेणी
कल्पतरुसंस्थितगौरगात्र: ।
तृतीययामे पिकनादतुल्य:
सारङ्गगौर: कथितो मुनीन्द्रै: ॥ इति ध्यानम् ।

ऋषभांशग्रहन्यासं गौरसारङ्ग एव च ।
गौड़ा सारङ्गसंयुक्ता पुरीया सा संमिश्रिता ॥
दिवसान्ते सदा ज्ञेयो गौड़सारङ्ग ईरित: ।
रेगमपधनिसारेगमपधनिसा ॥

अथ गौड़करी

अवचित्य कुसुमराशीन् वितरन्ती पुष्पदामकामिभ्य:
नन्दनवनोपकण्ठे गौड़करी सा प्रसिद्धा स्यात् ॥

संगीतरत्नाकरे—

शैलाग्रशिखरे गौरी वंशशब्देन चारुणा ।
नर्त्तयन्ती प्रियतममेषा गौड़करी स्मृता ॥
गान्धारे श्रीनिवासस्य मल्लारे गौड़मिश्रिता ।
रामकीरसंयुक्ता गौड़करी इति स्मृता ॥
गमपधनिसारेसानिधपमगगमपनिसाधरेगम
निसारेगमसा ॥

अथ विभासराग

शुभ्राम्बरो गौरवर्ण: सुकान्ति:
धीरोन्नमत् कुन्तलघृष्टगण्ड: ।
सूर्य्योदये कुक्कुटपक्षिशब्दे
विभासराग: स्मरचारुमूर्त्ति: ॥ इति ध्यानम् ।

भूपाली देशकारश्च मालवो जन्मभू: स्मृता ।
धैवतादिस्वरा: सप्त विभासे गीयते बुधै: ॥
धनिसागरेसामधपमगरेमानिध ॥
गमधनिसागरेसानिधपमगरेसानिध ॥

अथ देशकारी (संगीतदर्पणे २।७८)—

भर्त्रा समं केलिकलारसज्ञा
सर्व्वाङ्गपूर्णा कमलायताक्षी ।
पीनस्तनी रुक्मतनु: सुकेशी
संपूर्णचन्द्रानना देशकारी ॥ इति ध्यानम् ।

मालीगौरा विभासेषु देशकारस्य जन्मभू: ।
ऋषभस्वरे निवास: प्रात:काले प्रगीयते ॥
रेगमपधनिसा
तीव्रगान्धार ऋषभ-संवादिमध्यमस्तथा ।
अनुवादिपञ्चमैर्युक्ता संपूर्णा देशकारिका ।
धगरेसानिमपधमागरेमानिध ॥
गमधनिपसारेसागममनिध ॥

अथ वेलावली (संगीतदर्पणे २।४८)—

सङ्केतदीक्षां दयिते च दत्त्वा
वितन्वती भूषणमङ्गकेषु ।
मुहु: स्मरन्ती स्मरमिष्टदेवं
वेलावली नीलसरोजकान्ति: ॥ इति ध्यानम्

पञ्चमांशग्रहन्यासं तीव्रगान्धारमध्यमम् ।
शेषानुदात्ता विज्ञेया पूर्णा वेलावली मता ॥

मतान्तरे—

नेत्रे कज्जलरञ्जिते तिलकिते नासाग्रमुक्ताफलम्
भाले भाति सुकुङ्कुमस्य तिलकं गौराङ्गचित्राम्बरा ।
वेणी चम्पककेतकीसुकुसुमै: मार्द्दं करे विटिका-
नानासौरभचर्च्चिताखिलवपुर्वेलावलीयोषित: ॥
गान्धारांशग्रहन्यासं पूर्णा प्रथमयामका ।
दिव गीयते विद्वन् वेलावलीतिसंज्ञका ॥
कल्याणा देवगिरिका अन्येयामिश्रिता मता ॥
गमपधनिसारेगमपपधनिसानिध ॥
गमधनिसानिधमगरेसामपधनिसागरेसानिधपमगरेसा॥

अथ षट्राग:

जटाजूटधारी शिवशिखरकैलासवसति-
स्थिता-भस्मालिप्तो मधुरमृदुहासी मुनिवर: ।
सदा षड्रागोऽयं सततनितरां ध्येय: सुपदां
प्रभाते गायन्ति मधुरसुरगीतार्थनिलयम् ॥ इति ध्यानम् ।

यदा रागस्यान्ते मुनिगणपरात्माद्विभवी ।
नमोद्भीरुर्नाम्ना गतिकतरगो भैरवतनु: ॥
भैरवो गुर्ज्जरी टोड़ी देशी गान्धार एव च ।
रामकी स्वरसंयुक्त: षट्रागश्च भवेत्तदा ॥

धैवतांशग्रहन्यासं धैवतादिकमूर्च्छना ।
सम्पूर्णां सुप्रभाते च गीयते षट् सुसंज्ञकः ॥
धधनिनिसासारेरेगगममपप ।
रूपतार । धसासामानिनिधधपपममगगरेसा ।
मपधनिसागरेसामगरेमानिधपममगरेसा ॥

अथ देवगिरी (संगीतदर्पणे २।८४) ·

कादम्बिनीश्यामतनुः सुवृत्ता
तुङ्गस्तनी सुन्दरहारवल्ली ।
चित्राम्बरा मत्तचकोरनेत्रा
मदालसा देवगिरी प्रदिष्टा ॥ इति ध्य
अलैयास्वरसंयुक्ता विहागेन सुमिश्रिता ।
देवगिरीत्युत्पत्तिस्तु कथिता हनुमन्मते ॥

संगीतार्णवे (संगीतनारायणे)—

भ्रमन्ती नर्त्तने श्यामा पुष्पहारसमन्विता ।
ख्याता देवकिरी ज्ञेया करार्पितसखीकरा ॥
षड्जांशग्रहन्यासं पूर्णा देवकिरिर्मता ।
दिवसे प्रथमयामे गीयते विबुधैर्जनैः ॥
सारेगमपधनिसानिधपमगरेसा ॥
गमपधसानिसागरेसानिधपधपमगरेसा ॥

अथ आशावरी (संगीतदर्पणे २।७५)—

श्रीखण्डशैलशिखरे शिखिपुच्छवस्त्रा
मातङ्गमौक्तिकमनोहरहारवल्ली ।
आकृष्य चन्दनतरोरुरगं वहन्ती
साशावरी वलयमुज्ज्वलनीलकान्तिः ॥ इति ध्यानम्
निषादांशग्रहन्यासं क्वचित् गान्धार ईरितः ।
यामे द्वितीये गीयते आशावरी सुखैर्नरैः ॥
देशीगान्धारटोड़ी च मिश्रिता त्रयसंयुता ।
आशावरी भवेन्नारी गायने रतिकामदा ॥
निसारेगमपधश्च ॥
निसारेमनिधपमगरेसाधपमगरेसाममपध-
पमपधसानिमागरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ योगीया

जटाकलापांशुविभूतिधारी
त्रिशूलसर्पञ्च वीणा दधाना ।
प्रचण्डकोपा रसवीरयुक्ता
सा योगिनी योगशास्त्रैः प्रवीणा ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासं योगीयाशावरी तदा ।
वैराग्यज्ञानसंयुक्ता ब्रह्मध्यानसुमिश्रिता ॥
देशीगान्धाराशावरी मिश्रिता योगीया भवेत् ।
दिवसे द्विप्रहरार्द्धे च गीयते विबुधैर्जनैः ॥
आशावरी च देशीया गान्धारेण सुमिश्रिता ।
त्रये कृते योगिनी स्याद्विप्रहरार्द्धेषु गीयते ॥
गगरेसानिनिधधपपममगगरेसागमपनिसारेमाम
गरेगरेसा मानिधपमगरेसा ।

अथ मोहनरागः

मदनमोहनरूपी वंशीधारी कराग्रे
खगमृगपशुपक्षिमोहिताखिलविश्वम् ।
जगतीतलसुवीर्यः शैवरूपार्थकेतः
विहरतु वनकुञ्जे मोहनो राग एषः ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासं क्वचित् मध्यम ईरितः ।
निशान्ते गीयते विद्वन् सङ्गीतैः परिभाषितः ॥

अथ गान्धारः । संगीतरत्नाकरे—

आदाय वीणां धृतयोगपीठे
गङ्गाधरध्याननिमग्नचित्तः ।
योगासने मौलिजटा दधानो
गान्धाररागः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम् ।

मतान्तरे (संगीतनारायणे)—

जटां दधानः कृतभूरिभूषः
काषायवासस्तनुदेहयष्टिः ।
सयोगपट्टकृततर्जनमुद्रो
गान्धारराग: कथितो मुनीन्द्रैः ॥
सम्पूर्णश्च भवेद्रागो प्रभाते गानमिष्यते ॥

धैवतांशग्रहन्यासं तीव्र-मध्यम एव ।
टोड़ी आशावरी देशी गान्धारीतूपत्तिः कथ्यते ॥
धपपगगरेमपपधसानिनिधधपपमगगरेसामम-
पपपधसासामानिनिमा गरेसासामपनिधप ॥

अथ गान्धारी

शरीरःस्थलधारिणी मितपदैः कमलायताक्षी भृशं
दिव्याभूषणभूषिनातितरुणी ताम्बूलहस्ताग्रका ।
श्यामा सभृतकञ्चुकी मलयजैरादित्यता सुन्दरी
नृत्यन्ती भृतनूपुरा मृदुरतिर्गान्धारिणी रागिणी ॥
इति ध्यानम् ।

धैवतांशग्रहन्यासं क्वचित् मध्यम ईरितः ।
सम्पूर्णा सा सुवस्त्रा च गान्धारी रागिणी ध्रुवम् ॥
धपमगरेमारेगममपधमगसारेसानिधपममगरेमा ॥

अथ नागध्वनिः ।

नागध्वनिसमारूढ़ो जेता हिङ्गुलसन्निभः ।
सितवासा कुम्भवर ऐरावतकुलोद्भवः ॥
ढक्कान्वयः शब्दध्वनिः रिपौ वर्ज्जितषाड़वः ।
षड़्जन्यासग्रहांशो यो गेयो वीरवरैर्दिवा ॥
मागमधमागसागमधनिसागमसानि ॥

अथ भूपाली ।

गौरद्युतिः कुङ्कुमरक्तदेहा
तुङ्गस्तनी चन्द्रमुखी मनोज्ञा ।
भर्त्तुः स्मरन्ती विरहेण दूना
भूपालिकेयं रसशान्तियुक्ता ॥ इति ध्यानम् ।
रात्रौ प्रथमयामे च धैवतग्रहसंस्थिता ।
स्यात्तु भूपालिका ज्ञेया सङ्गीते परिभाषिता ॥
धनिसारेगमपगमपधनि सानिगरेसामगरेसा ॥

अथ कल्याणः (संगीतदर्पणे २।८२)—

कृपाणपाणिस्तिलकं ललाटे
सुवर्णवेशः समरे प्रविष्टः * ।
प्रचण्डमूर्त्तिः † किल रक्तवर्णः
कल्याणरागः ‡ कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम्
गान्धारांशग्रहन्यासं पूर्णः कल्याण ईरितः ।
सन्ध्याकाले प्रगीयते कल्याणो नवधा भवेत् ॥

अथ अड़ानारागः

रणे प्रविष्टः स्मरचारुमूर्त्तिः
वीरे रसे व्यञ्जितरोमहर्षः ।
पाणौ कृपाणः किल रक्तवर्णः
अड़ानारागः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम्
पूर्णाड़ाना सुसंप्रोक्ता मध्यमग्रह ईरितः ।
रात्रावथ प्रथमे यामे गीयते विबुधैर्जनैः ॥
मल्लारकानड़ामिश्रनायकी स्वरसंयुता ।
अड़ानोत्पत्तिर्विज्ञेया रात्रौ द्वितीययामके ॥
मपधनिमारेगमगरेसानिमाधनिसा ॥
गमपधनिमागरेमानिधमगरेमा ॥

अथ केदारी (संगीतदर्पणे २।६५)—

जटां दधाना सितचन्द्रमौलिः
नागोत्तरीया धृतयोगपट्टा ।
गङ्गाधरध्याननिमग्नचित्ता
केदारिका दीपकरागिणीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
मध्यमांशग्रहन्यासं धैवतो वर्ज्जितः क्वचित् ।
अर्द्धरात्रान्तरे गानं केदारो गीयते बुधैः ॥
विहागशङ्कराश्यामहम्मीरो मिश्रितः पुनः ।
केदारो जायते विद्वन् योगध्यानतपस्विना ॥
सामपरेसामागमपरेसानिपमगरेसागरेमानिमपरेसा ॥

अथ मोहनी ।

वीणा दधाना दृढ़बद्धवेणी
सौन्दर्य्यलावण्यकलायताक्षी ।

* प्रचण्डः ।

† स्मरम् प्रविष्ट इति आदर्शपुस्तकधृतपाठः ।

‡ 'कल्याणनाड' इति मुद्रित-संगीतदर्पणपाठः ।

§ केदाररागः कथितो तपस्वी । इति आदर्शपुस्तकधृत-भ्रमपाठः ।

सुवर्णकान्तिर्मधुरस्य गानम्
सा मोहनी मोहितविश्वा एषा ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासं ऋषभो वर्जितः स्वरः ॥
षाड़वो शेषरात्रौ च मोहनी मोहनी तथा ।
मालकोशी कानड़ा च पर्जकास्वरमिश्रिता ।
मोहनी स्यात्तदुत्पत्तिः निशान्ते गीयते बुधैः ॥
गगममधधनिनिमागगसामधगसानि ॥

अथ पञ्चमः ।

उन्मत्तकोकिलनिनादयुक्तो
वीणा दधानो सुरवेशधारी ।
मदाङ्गमूर्त्तिः सुरपुष्पकर्णः
सुवर्णकान्तिः किल शोभनस्य ॥ * इति ध्यानम् ।
श्यामं ताम्बूलकरं धृतकुमुदं वेणुवाद्यं मताल्लं
चन्द्रार्कौ यस्य भाले पिकमृदुवचनं यस्य आस्ये प्रलिप्तम् ।
देवेन्द्रादियुक्तं शिरसि सुमुकुटं पीतवस्त्रं प्रभाते
गायन्ति स्वर्गलोके दनुजसुरगणाः पञ्चमञ्चात्र सन्तः ॥
ऋषभांशग्रहन्यासं पञ्चमस्वरवर्जितं ।
शेषरात्रौ प्रगीयन्ते पञ्चमो राग उच्यते ॥
रेमपधनिसागमधरेमागरेमानिपमग ॥

अथ मालिगौरा मालवगौड़ । संगीतनारायणे ।

वीणाविनोदप्रतिपन्नपाणिः
गृह्णन् कथा नारदसंप्रयोगात् ।
श्यामो युवा विप्रकुलप्रसूतः
स मालिगौड़ो गौरमुनिप्रणीतः ॥ इति ध्यानम्
धैवतांशग्रहन्यासं मालवी श्री च संयुतम् ।
धनाश्रीमिश्रिता एषा मालिगौरा च कथ्यते ।
धनिसारेगमपधमगरेगमरेसा ॥
निनिधधनिसागरेमानिधपमगरेसा ॥

अथ आभीरराग: ।

हेमप्रभा चारुमनोज्ञमूर्त्तिः
कान्ते समीपे कमनीयकण्ठा ।
धीरोल्लसत्पल्लवकर्णपूरे
षड्जादिसव्योर्पितवस्त्रधारी ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासं पूर्णा साभीरिका तथा ।
तृतीये सुदिने प्रोक्ता रसे वीरे प्रयुज्यते ॥

अथ जयजयन्ती ।

पीनोन्नता सुन्दरी सा मृगाक्षी
स्वर्णप्रभा कोकिलनादतुल्या ।
वीणाविनोदी सुरपुष्पगन्धी
सा जयजयन्ती सुरमेघस्य भार्या ॥ इति ध्यानम्
सोरठी गौड़संयुक्ता वेलावल्या सुमिश्रिता ।
जयजयन्ती तदोत्पन्ना निशान्ते गीयते बुधैः ॥
षड्जांशग्रहन्यासं क्वचित् धैवत ईरितः ।
सुसम्पूर्णा जयजयन्ती मेघरागस्य वल्लभा ॥
सामारेसामगरेमारेमानिधपमगमधमानिधपमगरे-
रेसामपधसारेसापमरेमागरेमानिधपमगरेमा ॥

अथ भैरवः । संगीतरत्नाकरे वा संगीतरत्नमालायां—

शुभ्राङ्गः शुभ्रवासः शिरसि शशिधरः शृङ्गवाद्यश्च हारे
शम्भोर्वक्त्राब्जजातो धृतगरलगलो भैरवो रक्तनेत्रः ।
हस्ते शूलं कपालं जलजमणिमयं कुण्डलं कर्णयुग्मं
तारं जूटे जटानां शरदि सुरगणैर्गीयते प्रातरेषः ॥
इति ध्यानम्

अथ भैरवी

स्वर्णाभसोमवक्त्रा हिमकरधवलं वस्त्रमुपावहन्ती
कण्ठे रत्नस्य हारं द्विरदवरशिरोजातमुक्ताफलानि ।
सिन्दूरं भालमध्ये प्रहसितवदना हस्तयोः कङ्कणे द्वे
नृत्याङ्गीयमाना चरणकमलयोर्नूपुरौ धारयोध्याम् ॥
इति ध्यानम् ।

अथ पुण्यकी

स्तनतटकृतरागा कुङ्कुमैः पीतवस्त्रा
विविधकुसुमस्रजां कञ्चुकीमादधाति ।

* रक्ताम्बरः रक्तविशालनेत्रः शृङ्गारयुक्तस्तरुणो मनस्वी ।
प्रभातकाले विजयी च नित्यं सदा प्रियः कोकिलमञ्जु भाषी ॥
इति मुद्रित-संगीतदर्पणधृतपाठः ।

भयचकितमृगाक्षी कान्तकण्ठे विलग्ना
जितमृगपतिमध्या पुण्यकी पुण्यदात्री ॥　इति ध्यानम् ।

अथ वङ्गाली

वङ्गाली भाति यस्या अलकपटलकं शीतरश्मिर्नितान्ता
भक्तः सन्ततिहन्ता मलयजरचिता सव्वदहप्रलया ।
गौराङ्गी शुक्लवासा रविसमकिरणा हास्ययुक्ता सुमध्या
युष्माकं संमुदे सा युवजनहृदयानन्दकर्लोकटाक्षैः ॥

तथा च

अन्तर्वासा जयति विमलामक्षमालामसोघां
धत्ते सूत्रं पठति नितरां वेदमत्यन्तविद्वान् ।
शुक्लं वस्त्रं कनकसदृशं पाणिपात्रं कराग्रे
वङ्गालोऽयं वदति वचनं नृत्यगीतावमत्तम् ॥
इति ध्यानम् ।

अथ मधुर-राग:

अत्यन्तरूपी मधुरस्वराङ्गो
गुणान्वित: सम्भृतसर्व्वविद्य: ।
वीरावरैर्वेष्टितगौरदेह:
ख्यातो मधुरो लोकहिते सङ्गि:　इति ध्यानम् ।

इति राग रागिणी ध्यानोदाहरणम

अथ तालाध्याय:

तकारे शङ्कर: प्रोक्तो लकारे पार्व्वती स्मृता ।
शिवशक्तिसमायोगात्ताल इत्यभिधीयते ॥
शिवशक्त्यात्मकं पुण्यं यशस्यं भुक्तिमुक्तिदम् ।
तत: प्राणात्मकं तालं योगिनामभिलिप्सितम् ॥
(संगीतरत्नाकरे ५।२)
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम् ॥

अथ तालं

अथ तालं प्रवक्ष्यामि लाबरूपं जगद्गुरुम् ।
जनयन्तं सुखं गीते वाद्य-नृत्यविशेषवित् ॥

उत्पत्त्यादित्रयं लोके यतस्तालेन जायते ।
कीटकादिपशूनाञ्च तालेनैव गतिर्भवेत् ॥
यानि कानि च कर्म्माणि लोके तालाश्रितानि च ।
आदित्यादिग्रहाणाञ्च तालेनैव गतिर्भवेत् ॥
ब्रह्मकल्पोऽपि कालेन यत: कालवशं गत: ।
कालक्रियावशाच्छिन्नस्तालशब्दे न मन्यते ॥
हस्तद्वयस्य संयोगे वियोगे चापि वर्त्तते ।
व्याप्तिमानो दशप्राणै: करात्तालकसंज्ञक: ॥
आद्यैकतालो धमालो यति: चाचपुटस्तथा ।
द्वितालो रूपकश्चैव त्रितालश्च द्विधा भवेत् ॥
तेवटो झम्पतालश्च अठतालस्तत: परम् ।
सूर्फाको चर्च्चरी च ब्रह्मचातुर्थतालिका ॥
चतुस्ताल: पञ्चतालो मुख: पञ्च बहुलिका ।
षट्ताल: सप्ततालश्च अष्टमुखी तत:परम् ॥
गणेशतालो नागश्च ब्रह्मतालस्तथैव च ।
रुद्रतालो विष्णुताल: सविता च तत: परम् ॥
करुणा त्रयोदश प्रोक्तश्चतुर्दशस्तथैव च ।
देशी पञ्च षोड्शी च लक्ष्मीतालश्च मल्लिका ॥
सरस्वती पार्व्वती च सावित्री-गायत्री तथा ।
सावित्रीतालविख्यात: कौशिकेन प्रदर्शित: ॥
हनुमद्वीरतालश्च भैरवस्ताल एव च ।
राधिकाताल: कृष्णश्च मोहनी चक्रतालिका ॥
गायन्ती गोपिका चेयं गोपिकाध्यानतत्परा ।
एकैकं कृष्णसन्निधौ वृन्दावने प्रगीयते ॥
गोपिका श्रुतिरूपा च प्रत्येकं तालमिश्रिते ।
इन्द्रादयोऽपि यस्यान्तं न ययुस्तालवारिधे: ॥
रागतानस्वरालाप: वाद्यभेदश्च तालिका ।
न शक्नोतीह केनापि न ययुर्नादवारिधे: ॥
लघ्वादितालो लोकेऽस्मिन् प्रसिद्ध एकतालिका ।
इति एकताली ।

द्रुतार्द्धौ यद्रुतस्यैव धमालताल उच्यते ।
((० ०ं इति धमालताल: :

लघुविरामो यतिताल: ।

इति यतितालौ ।

द्रुतो लघुश्चैव लघुश्चम्पकस्तथा ।

० । इति चम्पकताल: ।

दौलो रूपकतालेऽस्मिन् कथने गायने मति: ॥

० ० । इति रूपकतालौ ।

दौविरामे लघुद्रुतचातुरौताल उच्यते ।

। ० । । इति चातुरौताल: ।

० ० । इति तेवटताल: ।

द्रुताद्रुतौ विरामान्तौ तृतीये ताल: कथ्यते ।

० ० ० इति जलदतिताला ।

लघौ गुरौ च संयुक्ते तृहचितालसंज्ञक: ।

। । ऽ इति धामातिताला ।

द्रुता लघुर्गुरु: प्रोक्तो झम्पतालश्च जायते ।

० । ऽ । । इति झम्पताल: ।

लघुद्रुतो लघुश्चैव सूर्यफाकसुसंज्ञक: ।

। ० । इति सुरफाकूताल: ।

गुरुद्वौ च लघुसंज्ञो चतुर्थतालसंज्ञक: ॥

ऽ ० ० । इति चौताला ।

प्लुतलौ च गुरुर्युक्तौ वृहच्चातुर्थतालक: ।

ऽ । । ऽ इति बड़ाचौताला ।

त्रयो द्रुता लघुरक्तश्चतुरतालसंज्ञक: ।

० ० ० । इति सिधाचौताला ।

लघुर्लघुद्रुतश्चैके लघ्वाद्यठतालसंज्ञक: ।

। ० । इति आड़चौताला ।

लौ द्रौ लघु पुनर्योज्यं पञ्चतालौ विधीयते ।

। । ० ० । इति पञ्चमुखीताल: ।

लघुर्द्रुतो लघुश्चैव द्रुतो लघु: पुनस्तथा ।
पञ्चमंया तालौ प्रोक्ता नादशास्त्रविशारदै: ।

। ० । ० । इति पञ्चमताल: ।

लघुर्द्रुत स्त्रयो युक्ता य: पुनर्लघुषु युज्यते ।
फरताल इमे प्रोक्ता गीतशास्त्रविशारदै: ।

। ० ० ० । इति फरोदस्तताल: ।

लघुद्रुतलघुद्रौ च लघुद्रुश्च प्रदीयते ।
षट्मुखितालसंज्ञा च सङ्गीते परिभाषिता ।

। ० । ० ० । इति षटमुखी ।

लघुचन्द्रो लघुश्चैव द्रुतद्वन्द्वो लघुस्तथा ।
सप्त सुर: तालसंज्ञाश्च सङ्गीते: परिभाषिता: ।

। ((० ० इति सप्तताल: ।

लघुद्रुतो द्रुतश्चैव त्रयद्रुतलघुस्तथा ।
मुख्याष्टताल: विज्ञेय: ख्यातो रागविशारदै: ॥

० । ० । ० । इति अष्टमुखी ताल: ।

द्रुतद्वंद्वलौ चैव चतुराणुलघुस्तथा ।
गणेशतालसंज्ञात: सङ्गीते परिभाषित: ॥

० ० । । ((((। इति गणेशताल: ।

लद्रौ लोद्रौ लघुश्चैव ब्रह्मताल: प्रगीयते ।

। ० । ० ० । ० ० ० । इति ब्रह्मताल: ।

गुरुत्रयो लघुद्रुश्च पुनर्लघु: प्रयुज्यते ।
चतुर्द्रुतलघुश्चैव रुद्रताल: प्रगीयते ॥

ऽ ऽ ऽ । ० । ० ० ० ० । इति रुद्रताल: ।

लघुत्रयद्रुतश्चैव चत्वारो द्रुलघुस्तथा ।
विष्णुतालोऽतिविख्यातो सङ्गीते परिभाषित: ॥

। । । ० । । ० ० ० ० ० । इति विष्णुताल: ।

लघुद्रुतलघु श्चव द्रुतद्वन्द्वलघुस्तथा ।
व्यापकौ द्वौ द्रुतौ गुरुसूर्यतालो निगद्यते ॥

। ० । ० ० । ० ० ऽ इति सर्यताल: ।

गुरू द्वौ वै लघुश्चैव त्रयाणुश्च लघुस्तथा ।
द्रुतत्रयलघुश्चैकपश्चाणुलविरामक: ॥
लक्ष्मीताल इति प्रोक्त: सङ्गीते परिभाषित: ॥

ऽ ० ० । (((। ० ० ० । (((((। इति लक्ष्मीताल: ।

चत्वार्य्यणुद्रुतश्चैक लघुरेव हि धारयेत् ।
गुरुद्वन्द्वप्लुतश्चैव भ्रमणो तालसंज्ञक: ॥

((((० । ऽ ऽ ऽ इति भ्रमणताल: ।

इति तालाध्याय: ।

अथ नृत्याध्याय:

श्रीविष्णुसुखसंदोहं गुरुं दीपकरूपकम् ।
सुवृत्तमक्षरं नत्वा वक्ष्ये नृत्यस्य लक्षणम् ॥

नृत्यभेदमाह—

वाद्यं नृत्यं ताण्डवं च नृत्यलास्यमिमाभिधा: ।
लावो हंसो मयूरश्च हय: कुञ्जर एव च ।
तित्तिर: कुक्कुटो मीनो त्वष्टधा गतयो मता: ॥

अथ ताण्डव:

वीरे रसे महोत्साहो पुरुषो यत्र नृत्यति ।
रौद्रभावरसोत्पत्तिस्तत्ताण्डवमिति स्मृतम् ॥

अथ लास्यम्

यौवनस्त्रीविलासिन्य: कामभावविचक्षणा: ।
यदङ्गहारवैदग्धात् कुर्य्युर्लास्यमुदीरितम् ॥

तथाच संगीतरत्नाकरे (७।३२)

लास्यं तु सुकुमाराङ्गं मकरध्वजवर्द्धनम् ॥

(तथा संगीतमहोदधौ ३।६-१५)—

ईषद्धास्य: प्रसन्नास्यो मुखरागो भवेद्द्विधा ॥
सहजोऽसहजश्चेति प्रसन्न: कान्तिभूषित: ।
स्वाभाविक: प्रसन्नश्च रक्त: स च चतुर्विध: ॥
स्वाभाविक: स्यात् स्वभावा स्वभावेनैव या भवेत् ।
प्रसन्नो मधुर: स स्याच्छृङ्गाराभूतहास्ययो: ॥
रक्त: स्याल्लोहितो वीर: करुणाद्भुतरौद्रयो: ।
गीयमाने ध्रुवपदे गीते ह्यावमनोहरे ॥
नर्त्तनं तनुयात् पात्रं कान्ताहास्यादिदृष्टिजम् ।
नानागतिं लसद्भावो मुखरागादिसंयुत: ॥

सुकुमाराङ्गविन्यासं दन्तद्योतितहावकम् ।
खण्डमानेन रचितं मध्ये मध्ये च कम्पनम् ॥
यत्र नृत्यं भवेदेवं ध्रुवपादं तदा भवेत् ।
प्रायशो मध्यदेशीयो भाषया यत्र धातव: ॥
उद्ग्राहध्रुवकाभोगास्त्रयो भवन्ति हेतव: ।
उद्ग्राहरहितं कंचित् परं त्वाभोगवर्ज्जितम् ॥
उद्ग्राहाभोगरहितमन्वर्थमपरं जगु: ।
स्वरपार्श्वभ्रुविकारा: शृङ्गाराकृतिसूचकम् ।
भस्मादिस्वेदलिप्ताङ्गो विभ्रत्मुण्डशिर:शिखा ॥
भ्राजद्घर्घरिकाजालजङ्घशरीरपेशलम् ।
पञ्चाङ्गकुशलस्तालकलालयविचक्षण: ॥
पञ्चाग्निवोच्चरवाल्यान् यो नृत्यति स धीरधि: ।
वाद्य: प्रबन्धै: कठिनै त्यक्तमेलादिभिस्तथा ॥
गीतैस्तालगतुण्डस्थै: प्रबन्धैश्च ध्रुवादिभि: ।
लास्याङ्गैरन्वितं यत्र नृत्यञ्च द्रुतमानस: ॥
स्वयं गायन्ति वाद्यञ्च त्रिवलीं वादयेत् स्वयम् ।
तत्पात्रं गौड़लोके चेद्वाद्यं तालस्य मन्यते ॥
त्रिवलीं धारणं स्कन्धे ग्राम्यत्वं कुरुते स्त्रिय: ।
अगायत त्वत्कारीरा सैव स्यान्मु खगौण्डली ॥
गौण्डलया मण्डनं प्रोक्तं तद्धि कर्णाटदेशजम् ।
दक्षिणा गायका: सर्व्वं कुशला: गीततत्परा: ॥
मार्गदेशीविभागेन नर्त्तनं द्विविधं स्मृतम् ।
ताण्डव: पुरुषो ज्ञेय: लास्यञ्च स्त्रीविवेरिता ॥

अथ रागनामानि । संगीतरत्नाकरे (२।१।१६-१८)—

श्रीरागनट्टौ बङ्गालो भासमध्यमषाड़वौ ।
रक्तहंस: कोल्हहास: प्रसवो भैरवध्वनि: ॥
मेघराग: सोमरागकामोदौ चाम्रपञ्चम: ।
स्यातां कन्दर्पदेशाख्यौ ककुभान्तश्च कैशिक: ॥
नट्टनारायणश्चेति रागा विंशतिरीरिता: ।

(तत्र व २।१।३६-३१

छेवाटी पिञ्जरीत्येका बोट्टे भाषा तु माङ्गली ।
बाङ्गालो माङ्गली हर्षपुरी मालववेसरी ॥
खञ्जनी गुर्ज्जरी गौड़ी पौराली चार्धवेसरी ।

शुद्धा मालवरूपा च सैन्धव्याभीरिकेत्यमूः ॥
भाषास्त्रयोदश ज्ञेया विभाषे मालवकैशिके ।
विभाषे द्वे तु काम्बोजी तद्वद्देवारवर्धनी ॥
गान्धारपञ्चमे भाषा गान्धारी भिन्नषड्जका ।
देवगान्धारः*कच्छेल्ली स्वरवल्ली निषादिनी ॥
त्रिवणा† मध्यमा शुद्धा दाक्षिणात्या पुलिन्दका
तुम्बुरा षड्जभाषा च कालिन्दी ललिता ततः ॥

तथा च संगीतदर्पणे रागविवेकाध्याये (२।१-५)—

योऽयं ध्वनिविशेषस्तु स्वरवर्णविभूषितः ।
रञ्जको जनचित्तानां स रागः कथितो बुधैः ॥

अथ रागाङ्गम्

रागच्छायानुकारित्वाद्रागाङ्गमिति कथ्यते ।

इति रागाङ्गम्

अथ क्रियाङ्गम्

करुणोत्साहसंयुक्तं क्रियाङ्गं तेन हेतुना ।

इति क्रियाङ्गम् ।

अथ भाषाङ्गम्

भाषाच्छायाश्रिता येन भाषाङ्गं तेन हेतुना ॥

इति भाषाङ्गम्

अथोपाङ्गम्

किञ्चित् छायानुकारित्वादुपाङ्गमिति कथ्यते ।

इत्युपाङ्गम् ।

अथ काकारणा

काकारणा तु कथिता तारस्थानेषु शीघ्रता ।
गमकैर्विविधैर्युक्ता कौशलेन विभूषिता ॥

इति काकारणा ।

अथ मतङ्गमतेन रागाणां त्रैविध्यं दर्शयति —

शुद्धाश्छायालगाः प्रोक्ताः संकीर्णाश्च तथैव च ॥
तत्र शुद्धरागत्वं नाम शास्त्रोक्तनियमाद्रञ्जकत्वं भवति।

छायालगरागत्वं नामान्यच्छायालगत्वेन रक्तिहेतुत्वं भवति। सङ्कीर्णरागत्वं नाम शुद्धच्छायालगमुख्यत्वेन रक्तिहेतुत्वं भवति।

इति कल्लिनाथोक्तं लिखितं ।

(तथा च संगीतदर्पणे २।८-११)—

शिवशक्तिसमायोगाद्रागाणां सम्भवो भवेत् ।
पञ्चास्यात् पञ्च रागाः स्युः षष्ठस्तु गिरिजामुखात् ॥
सद्योवक्त्रात्तु श्रीरागो वामदेवात् वसन्तकः ।
अघोराद्भैरवोऽभूत् तत्पुरुषात् पञ्चमोऽभवत् ॥
ईशानाख्यान्मेघरागो नाट्यारम्भे शिवादभूत् ।
गिरिजाया मुखाल्लास्ये नट्टनारायणोऽभवत् ॥

इति संगीतदर्पणोक्तम् ।

(तथा च संगीतरत्नाकरे २।१।३८-४५)—

श्रीकण्ठिका च बङ्गाली गान्धारी सैन्धवीत्यमूः ।
भाषाः सप्तदश ज्ञेयास्तत्रस्तु विभाषिकाः ॥
पौराली मालवा कालिन्द्यपि देवारवर्धनी ।
वेसरे षाड्वे भाषे द्वे वाह्या वाह्यषाड्वा ॥
विभाषे पार्वती श्रीकण्ठ्यथ मालवपञ्चमे ।
भाषास्तिस्रो वेदवती भाविनी च विभाविनी ॥
ताने तानोद्भवा भाषा भाषा पञ्चमषाड्वे ।
पोता भाषांशकामेकं रेवगुप्ते विदुर्विदुः ॥
विभाषा पल्लवी भासवलिता किरणावली ।
शकाद्यावलितत्येतास्तिस्रस्त्वन्तरभाषिकाः ॥
चतस्रोऽनुक्तजनका ह्रद्देश्यामिमाः स्मृताः ।
एवं षण्णवतिभाषा विभाषा विंशतिः स्मृताः ॥
चतस्रोऽन्तरभाषाः स्युः शार्ङ्गदेवस्य सम्मताः ।
भाषा मुख्या स्वराख्या च देशाख्या चोपरागजा ।
चतुर्विधा मतङ्गोक्ता मुख्यानन्योपजीविनी ।
स्वरदेशाख्यया ख्याता स्वराख्या देशजा क्रमात् ।
अन्योपरागजाताभ्यो याष्टिकेनोदिता: पुनः ।
संकीर्णदेशजामूलाछायामात्रेतिनामभिः

* 'गान्धारवल्ली' इति मुद्रितसंगीतरत्नाकरपाठः ।

† 'त्रवणा' इति मुद्रितरत्नाकरपाठः ।

‡ पञ्चम षाड्वी मता । इति आदर्शपुस्तकपाठः ।

शुद्धाभीरी रगन्ती च त्रिधा मालववेसरी ।
मुख्याः षडिति शेषास्तु सुज्ञाताः स्फुटलक्षणाः
नामसाम्यंतु कासाञ्चिच्छिन्नानामपि लक्ष्मतः ॥

इति ग्रामरागोपरागभाषाविभाषान्तरभाषाविवेकः ।

अथ रागभाषाविभाषा-लक्षणं

(संगीतरत्नाकरे २।२।१——४)

अथ रागाङ्गभाषाङ्गक्रियाङ्गोपाङ्गनिर्णयम् ।
केषाञ्चिन्मतमाश्रित्य कुरुते सोढलात्मजः ॥
रञ्जनाद्रागता भाषा रागाङ्गादेरपीष्यते ।
देशीरागतया प्रोक्तं रागाङ्गादिचतुष्टयम् ॥
प्रसिद्धा ग्रामरागाद्याः केचिद्देशीत्यपीरिताः ।
तत्र पूर्वप्रसिद्धानामुद्देशः क्रियतेऽधुना ॥
शङ्कराभरणो घण्टारव आहंसदीपकौ ।
रीतिः पूर्णाटिका लाटी पल्लवीति बभाषिरे ॥
रागाङ्गान्यष्टगाम्भीरी वेहारी श्रीकोत्पली ।
गोली नाटान्तरी नीलोत्पली छायातरङ्गिणी ॥
गान्धारगतिका रञ्जावित्येकादश मेनिरे ।
भाषाङ्गान्यथ भावक्रीस्वभावक्रीशिवक्रियः ॥
मकरक्रीविनितक्रीकुमुदक्रीदनुक्रियः ।
ओजक्रीन्द्रक्रियो नागकृतिधन्यकृतिस्तथा ॥
विपायक्री क्रियाङ्गानि द्वादशेति जगुर्बुधाः ।
त्रिण्युपाङ्गानि पूर्णाटो देवालश गुरुञ्जिका ॥
चतुस्त्रिंशदिमे रागाः प्राक्प्रसिद्धाः प्रकीर्त्तिताः

संगीतभाष्ये मदङ्गाध्याये —

गीतवादनतत्त्वज्ञश्छिद्राच्छादनपण्डितः ।
ग्रहमोक्षप्रदोषज्ञो गीतनृत्यप्रमाणवित् ॥
न वाद्येन विना यस्माद्गीतं तालं च शोभते ।
तस्मात्साङ्गलक्ष्यमस्माभिर्वाद्यमत्र निगद्यते ॥
गीतं निरूपितं तच्च वाद्याधीनं मतं मया ।
वाद्यं निरूप्यते गीतं नृत्ययोरनुरञ्जकम् ॥
चतुर्व्विधं तत् कथितं ततं सुषिरमेव च ।
अवनद्धं घनं चेति ततस्तत्त्रिगतं भवेत् ॥

सङ्गीतरत्नाकरे (संगीतनारायणे)—

ततानद्धं सुषिरञ्च घनानीति चतुर्व्विधः ।
ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धमुरजादिकम् ।
वंशादिकन्तु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनम् ॥

सङ्गीतदर्पणे—

वीणादिसुषिरं वंशं कोहलादिप्रकीर्त्तितः ।
चर्म्मणानद्धवदनं वाद्यते पटहादिकम् ॥
अवनद्धं घनं प्रोक्तं कांस्यतालादिकं घनम् ।
आलावनी ब्रह्मवीणा किन्नरीति निगद्यते ॥
विपञ्ची वल्लकी ज्येष्ठा चित्रा घोषवती जया ।
हस्तिका कुब्जिका कूर्म्मी सारङ्गी परिवादिनी ॥
त्रिशरी शततन्त्री च नकुलोष्ठी च वंसरी ।
औडुंबरी पिनाकी च निबन्धपुष्कलस्तथा ।

संगीतरत्नाकरे—

वीणा घोषवती चित्रा विपञ्ची परिवादिनी ।
वल्लकी कुब्जिका ज्येष्ठा नकुलोष्ठी च किन्नरी ॥
जया कूर्मी पिनाकी च हस्तिका शततन्त्रिका ।
औटम्बरी च षट्कर्णा पीनो रावणहस्तकः ॥
सारङ्गयालापिनीत्यादिः कुतपास्ततवादकाः ।
महाराष्ट्रान्ध्रकर्म्मीरचौलैर्म्मलयमालवैः ॥
अङ्गवङ्गकलिङ्गाद्यैर्नानाभिनयकोविदैः ।
अङ्गहारप्रयोगज्ञैर्लास्यताण्डवकोविदैः ॥
विचित्रस्थनिकप्रौढैर्विषमेषु सुशिक्षितैः ।
नादस्य कुतपं पात्रैरुत्तमाधममध्यमैः ॥
कुतपानाममीषान्तु समूहो वृन्दमुच्यते ।
ततानद्धं सुषिरञ्च घनानीति चतुर्विधम् ॥
ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धं मुरजादिकम् ।
वंशादिकन्तु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनम् ॥

अथ वाद्याध्यायः

अथ मृदङ्गवाद्याक्षराणि

ताधीथुना तथा धीधी टेकिटिगिदिगनधा ।
तकाधीधीथुं थुं नानाधिररधिररधिलाङ्गधा ॥

कवर्ग क ख ग घ ङा चवर्ग ज झ ञ पुनः।
टवर्गे ट ठ ड ढ णा तवर्गे त थ द ध्न च॥
पवर्गे मस्य संप्रोक्ता अन्तस्था य-र-ल-स्तथा।
एवं वाद्याक्षरा ग्राह्या मृदङ्गाध्याय ईरिताः॥

अथ पर्णसागरमृदङ्गाध्यायः। संगीतरत्नाकरे—

ताधिथुन्नाटेक्किदिधा ता तत्तिथुन्ना तत्तधिधिथुन्थुन्न थुन्नन्नाटेताकिटतकघेदिगनधातकिटधाथुंकिटितातकिट किटतकाधिकिटिकिटितकाथु किटिकिटितकानंकिटि किटितकतकिटिकिटिधुमकिटितकघेदिगिनधा॥ १॥

तकिटिकिटिथुन्थुन्किटितकथुन्थुन्किटतकदि-किटिकिटिथुन्थुन्किटिथुन्थकिटतकथुन्किटिकिटि थुन्थुन्किटथुन्थुन्किटतकनकिटिकिटिथुन्थुन्किट थुन्थन्किटतकाकिटकिटधुमकिटतकगेदिगन्धा॥ २।

तकिटिकिटिधुमकिटिधुमकिटितकदिकिटिकिट धुमकिटिधुमकिटितकथुन्किटिकिटधुमकिटिधुम किटितकमंकिट्किटधुमकिटिधुमकिटितकतकिट किटधमकिटतकगेदिगन्धा॥ ३॥

तकिट्तकिट्थुन्थुन्किटधुम्किटतकदिकिटदि किटथुन्थुन्किटधुम्किटतक्नकिटिकिटिथुन्थुन्किट धुमकिटतकतकिटकिटधुमकतकगेदिगनधा॥ ४॥

तकिटकिटतकतकिटथन्किटतकदिकिटदिकिट तकतकिटथुन्नाकटतकाथुन्किटथुन्किटतकताकट थुन्किटतकनकिटकिटतकतकिटथुन्किटततकिट तकधुमकिटतकघेदिघिन्नधा॥ ५॥

तकिटतकिटतकतकिटधिकिटतकादिकिटदिकिट तकतकिटधिकिटतक्थुन्किटकिटतकत्किटधिकिट तकनकिटकिटतकतकिटधिकिटतकतकिटकिटधुम किटतकघेदिगन्धा॥ ६॥

तकिटतकिटधुम्किटतकिटतकाकिटतकदिकिटि किटधुमकिटितकिटतकाकिटतकथुन्किटिकिटिधुम किटततकाकिटतकनंकिटिकिटधुमकिटत२किटत किटतकतकिट२धुमकिटतकाघेदिगन्धा॥ ७॥

तकिटितकिटितकतकाधुमकिटितकादिकिटिकिटि तकतकाधुमकिटितकथुन्किटकिटतकतकधुमकिटि तका। नंकिटिनंकिटितकातकधुमकिटतकतकिटि किटधुमकिटतकघेदिगन्धा॥ ८॥

तकिटितकिटिधाकिटतधाकिटतकाकिटतकदिकिट दिकिटधाकिटतकधाकिटतकाकिटतकथुन्किटिकिटि धाकिटतकिटतकाकिटतकधाकिटनंकिटधाकिटतधाकिट तकाकिटतकतकिटकिटधुमकिटतकघेदिगन्धा॥ ९॥

तकिटतकिटतकिटतकाकिटतकदिकिटदिकिट तकिटतकाकिटतकथुन्किटकिटतकिटतकाकिटतक् नंकिटनंकिटकिटतकाकिटतकतकिटिकिटिधुमकिटि तकगिदिगन्धा॥ १०॥

ताकिटताकिटतकिटतकाकिटततकाकिटतकाकिट तकाकिटतकादिकिटकादिकिटतकिटतकाकिटतकिट तककिटतकाकिटतकाकिटिनकथुन्किटकिटतकिट तकाकिटतकानंकिटनंकिटतकिटतकिटतकिटतकतकिट तकतकिटधुमकिटतकगिदिगन्धा॥ ११॥

ताधिन्नकधिधिधिन्नकगिदिगिनक तत्तत्तोततताततत धिधिथुन्थुन्नन्नाकिटतकघेदिगघनकिटतकघेदिन्न दिदितोदिदितानत्धिधिथुन्थुन्ननाकिटतकघेदिगन किटतकघेदिघनदिदितोदिदितातत्धिधिथुन्थुन्नन्ना किटतकघेदिगनकिटतकघेदिघनथुन्थुनताथुन्थुनता ततधिधिथुन्थुनंनाकिटतकघेदिघनाकटितकघेदि घननन्नंताननंन्नाततधिधिथुन्थुनंनाकिटतकगिदिघन किटतकगिदिघन्धा॥ १२॥

त्रिकटतकताधागेतिटिधागेदिगन्नागेकिटिकिडन कत्रकडनानधोधागिदिगनन्नगदित्कडांनधात्रिकडक्कि धकडानधातिकडधाताधाधितानधाधाधिनगदितकडां नधातकगिदिगन्धा॥ १३॥

तांत्रकिटभ्रकिटथुन्गिताथारिक्कुतकिटतकाकिटभ्र गड्धागेदिगिन्नंकिटत्रकटतागेदिगिन्नतात्रिकटतागेदिता भ्रगड्धागेदितानंकिटथुन्किटधाधाकिटधुमकिटधा ताड्धाधाधोधाताड्धाधाधोधाताड्धाधाधोधा॥ १४॥

कड़ांनकिटतक्धागेदिगिन्नागेतिटिकिडनक्त्रिकट
तागेदिगिताघड़ांनघिड़्नक्ध्रकटतक्तागेतिटिकिटि
नांकिटिथुन्किटिधगड़धागेदिटिकिटिकड़ांन्घड़ान्धुम
किटतकिटतक्काकिटध्रगड़तागेदिगिताधाताड़धाधाधी
धाधीधाधुमकिटत्वकटतकतागिदिगनधा ॥ १५ ॥

धातागथुन्गाधागेदिगिताधाताकिटतक्धुमकिट
नंकिटघड़ांनक्रड़ांक्रिड़नक्धुमकिटत२किटिकिटतक्
ध्रगड़तक्त्रगड़धागेदिगिन्नतान्ध्रांत्रकटत्वकटनंकिट
नंकिटतकतक्काकिटधुमकिटधाताड़धाधाधीधाधीता
किटतक्थुन्किटथुन्किटतक्धुमकिटत्वकड़तकतातक
धुमकिटितकगिदिगन्नगदिधातकघढ़ांन्घेदिगन्ननगदि
धात्तकधुमकिटगेदिगनधा ॥ १६ ॥

(तथाच संगीतरत्नाकरे ५।२३७)

द्रुतादिरचनाभेदात्तालभेदोऽप्यनेकधा ।
तालानामधुना तेषामुद्देशं संगिरामहे ॥
अणुद्रुतो द्रुतश्चेति विरामद्रुतलस्तथा ।
द्रुविरामौ गुरुश्चेति प्लुतश्चेति यथाक्रमम् ॥
अर्द्धचन्द्राकारस्यादनु इत्यभिधीयते ।
चन्द्रद्रुतं तथा ज्ञेयं द्रुतं चैव द्विविन्दुका ।

। । ऽ ऽ

समाङ्गानि सुतालेऽस्मिन् ज्ञातव्यानि सदा बुधैः ॥
अणुद्रुतो वातजातो द्रुतश्च जलसम्भवः ।
समीर-जलसम्भूतो द्वविरामोऽह कथ्यते ॥
लघुरग्निभवः प्रोक्तः सविरामजलाग्निना ।
गुरुराकाशसम्भूतः प्लुतो धरणीसम्भवः ॥
अणुद्रुते चन्द्रदेवो द्रुते शम्भुर्विधीयते ।
द्वविरामे कुमारः स्याल्लघो देवी स्मृता बुधैः ॥
लविरामे स्मृतो जीवो गुरौ गौरीयुतः शिवः ।
दीप्ते त्रयो विरिञ्चाद्या देवता मुनिभिः स्मृताः ॥
तित्तिरश्चटकश्चैव वकश्चाषश्च कोकिलः ।
वायसः कुक्कुटश्चैव क्रमादुच्चारयत्यमी ॥

अथ ताननामानि

चटपटपुटचाचपट्पितापुत्रसंज्ञकाः ।
सम्पकेंष्टा पुनर्ज्ञेया उदघटो मार्गतालिकाः ॥

(संगीतरत्नाकरे ५।२३८—२५२)

आदितालो द्वितीयश्च तृतीयोऽथ चतुर्थकः ।
पञ्चमो निःशङ्कलीलो दर्पणः सिंहविक्रमः ॥
रतिलीलः सिंहलीलः कन्दर्पो वीरविक्रमः ।
रङ्गः श्रीरङ्गचच्चर्यौ प्रत्यङ्गो यतिलग्नकः ॥
गजलीलो हंसलीलो वर्णभिन्नस्त्रिभिन्नकः ।
(राजचूड़ामणी रङ्गो द्योतो रङ्गप्रदीपकः ॥)
राजतालो वर्णतालः सिंहविक्रीड़ितो जयः ॥
वनमाली हंसनादः सिंहनादश्च कुक्कुटः ।
तुरङ्गलीलः शरभलीलः स्यात् सिंहनन्दनः ।
त्रिभङ्गिरङ्गाभरणो मण्ठकः कोकिलाप्रियः ॥
निःसारुको राजविद्याधरश्च जमङ्गलः ।
मल्लिकामोदविजयानन्दौ क्रीड़ाजयश्रियौ ॥
मकरन्दः कीर्त्तितालः श्रीकीर्त्तिः प्रतिपालकः ।
विजयो विन्दुमाली च समनन्दनमण्ठिकाः ॥
(दीपको दक्षिणो ढेङ्की विषमो वर्णमण्ठिका ।
अभिनन्दोऽनङ्गनान्दो मल्लकङ्कालकन्दुकाः ॥)
एकतालो च कुमुदश्चतुस्तालो च डोम्वली ।
अभङ्गो रायवङ्कोलो वसन्तो लघुशेखरः ॥
प्रतापशेखरो झम्पा गजझम्पश्चतुर्मुखः ।
मदनः प्रतिमण्ठश्च पार्व्वतीलोचनो रतिः ॥
लीलाकरणयत्याख्यौ ललितो गारुड़िस्तथा ।
राजनारायणाख्यश्च लक्ष्मीशो ललितप्रियः ॥
श्रीनन्दनश्च जनको वर्द्धनो रागवर्द्धनः ॥
षट्तालश्चान्तरक्रीड़ा हंसोत्सवविलोकिताः ॥
गजो वर्णयति सिंहः करणः सारसस्तथा ॥
चण्डतालश्चन्द्रकलालयस्कन्दाद्दुतालिकाः ॥
धत्ता द्वन्द्वमुकुन्दौ च कुविन्दश्च कलध्वनिः ॥
गौरी सरस्वती कण्ठाभरणो भग्नसंज्ञकः ।
तालो राजमृगाङ्कश्च राजमार्त्तण्डसंज्ञकः ॥

निःशङ्कः शार्ङ्गदेवश्चेत्येतैः सोढ़लसूनुना ।
देशीतालाः समादिष्टाः विंशत्यभ्यधिकं शतम् ॥

अथ मतान्तरे—

अतोऽपि कथिताः सन्ति देशीतालविशेषतः ।
प्रसिद्धा लक्ष्यमार्गेषु कथ्यन्ते शृणु विस्तरात् ॥
चैत्रतालः कण्टकश्च दृढ़ावान् सन्निपातकः ।
ब्रह्मतालश्चतुस्तालः कुम्भतालस्तथैव च ॥
लक्ष्मीतालश्चार्ज्जुनश्च कुण्डनाभिरतः परम् ।
सन्निधोऽपि महासन्धिः यतिशेखरसंज्ञकः ॥
कल्याणपञ्चधातौ च चन्द्रतालौ द्रुतान्तिकाः ।
जगणो मण्ठकश्चैवैकतालौ परिकीर्त्तिता ॥
यतितालः चाचतालस्तथा ज्ञेयाष्टतालिकाः ।
पृथ्वी कुण्डलिका ज्ञेया पातालकुण्डलिस्तथा ॥
कुण्डली इन्द्रलोकाख्या विष्णुतालस्तथैव च ।
विलम्बे नाष्टतालौ स्यात् झोम्बड़ा सोवड़ा तथा ॥
नीलझोम्बड़कश्चैव तिउटैमस्ततः परः ।
स्वर्णमेरुश्चक्रतालश्चक्रमण्ठस्ततः परः ॥
कुम्भरच शङ्कतालः संयोगश्चतुरस्रकः ।
विद्याधरो मण्डकश्च श्रीविष्णुर्गद्यतालकः ॥
नारायणो नर्त्तकश्च मन्मथो हंससंज्ञकः ।
शरभलील: निःशङ्को यूपो विष्णुमतान्तरे ॥
कङ्कालरतितालौ च महाचित्रः परः स्मृतः ।
विवर्त्तसुलतालश्च परिवर्त्तविवर्त्तितौ ॥
अभङ्गः शेखरो हंसो मृगाङ्कः कुमुदस्तथा ।
कलकण्ठाश्चित्रपुटः देववत् स ततः परम् ॥
उत्सवो विजयश्चैव पश्चाच्चक्रसुदर्शनौ ।
द्विसप्ततिरिमे ताला: कथिता लक्ष्यदृष्टितः ॥
अतः परं प्रवक्ष्यामि द्वाविंशमण्ठिकास्तथा ।
विजयं मालवश्चैव प्रथमः सरसस्तथा ॥
कौलकः परिमण्ठश्च रविचक्रस्तथादितौ ।
विराजो मन्दकश्चैव धनञ्जयजयप्रियौ ॥
श्रीरङ्गो रङ्गमण्ठश्च पवमुखश्च इतीरितः ।
गीर्व्वाणमण्ठकश्चैव विचारः प्रतिमण्ठकः ॥
मल्लो विमल्लकश्चैव विशालो वल्लभस्तथा ।
पुनर्भूं च कलापश्च चित्रमण्ठस्तथा परः ॥
तालाख्यप्रतिमण्ठश्च मुद्रितश्च करालकः ।
वर्णो भङ्गीरमण्ठश्च श्रीरङ्गो भिन्नमण्ठकः ॥
कल्याणमण्ठकश्चैव सङ्कीर्णो मण्ठकः परः ।
शतद्वयमिति प्रोक्तं चतुर्व्विंशतिसंयुतम् ।
तालानां लक्षणं वक्ष्ये तेषां भूरि मताश्रियम् ॥

इति श्रीकृष्णानन्दव्यासदेवात्मजश्रीहीरानन्दव्यासदेव-तदात्मज-
श्रीकृष्णानन्दव्यासदेवरागसागरोद्भवसंगीतरागकल्पद्रुमे
स्वराध्यायतालाध्यायनृत्याध्यायवाद्याध्याय
रागरागिणीविवेकाध्यायः सम्पूर्णः ।

गानाध्यायः

अथ मङ्गलाचरणम्

देवीं वाक्पतिमीश्वरं गणपतिं नत्वा हनुमद्दविम्
सङ्गीतं प्रविचार्य्य भारतहनुमत् सैव वागुम्फितम् ।
इन्द्रप्रस्थसमुद्भवैर्विरचितं यत्तानसेनादिभि-
स्तद्युक्तं प्रकरोमि नादनिलयं श्रीरागकल्पद्रुमम् ॥ १
परब्रह्म नमस्कृत्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम् ।
रागकल्पद्रुमो ग्रन्थः क्रियते रागसागरैः ॥ २
देवीं सरस्वतीं नत्वा गणेशं हरिमीश्वरम् ।
रागकल्पद्रुमो ग्रन्थः क्रियते रागसागरैः ॥ ३

श्रीदामोदरश्रीगिरिधरी नामकगोस्वामीभ्यां श्रीरागसागरसुप्रेरितवाक्य सङ्गीतरागकल्पद्रुमो नाम ग्रन्थसङ्गीतसकलालोड्य नादवेदसुपञ्चमश्चोपवेदः ॥*
इन्द्रप्रस्थमतयुधिष्ठिराद्यैर्निलये पृथ्वादिभिश्च समीक्ष्य तेषां*
सारार्थगर्भं चतुरङ्गयुक्तं गीयेति धातोर्यदि वर्णरूपं ।*
तत्सर्व्वमेकं कृतरागकल्पद्रुमो रागाङ्गनाभेदसुरागिणीनां*
सप्त स्वरास्तालमृदङ्गवाद्यैः स्पष्टीकृतो एष सङ्गीतशास्त्रम्॥*
अमरानन्दो महात्मा श्रुतिस्मृतिनिपुण-
स्तस्यात्मजः श्रीहीरानन्दो
यस्यात्मजः श्रीकृष्णानन्दव्यासदेवनिपुणो वेदवेदाङ्गविज्ञः ॥
वेदार्थे शङ्करोऽपि प्रगाटवपुधरो गानोद्धारः क्रियते
रागसागरैर्विष्णुप्रत्यर्थमिमम् ।*
श्रीनारदतुम्बरुब्रह्मणश्च शिवस्य देवीं सरस्वतीं च ।
विश्वादि गायन्ति सुवेदगीतगान्धर्व्ववेदार्थसुखावबोधम् ॥*

अथ स्वराः

षड्‌र्षभौ च विज्ञेयौ गान्धारो मध्यमस्ततः ।
पञ्चमो धैवतश्चाथ निषादश्चेत्यनुक्रमात् ॥
तेषां संज्ञा सरगमपधनीत्यपरा मता ।
सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामा रागरागिण्योऽदाहृताः ॥
सङ्गीतं ये न जानन्ति ते द्विपादा मृगाः स्मृताः ॥

सङ्गीतसाहित्य-रसानभिज्ञः
ख्यातः पशुः पुच्छविषाणहीनः ।
चरत्यसौ किं तृणमत्ति नो वा
परं पशूनामुपवामहेतुः ॥

न घृते तादृशी प्रीतिर्न धूपे न च भोजने ।
यादृशी चैव गान्धर्व्वैर्वीणावाद्यविशारदैः ॥
सुखिनि सुखनिधानं दुःखितानां विनोदः
श्रवणहृदयहारी मन्मथस्याग्रदूतः ।
अतिचतुरसुरम्यो वल्लभः कामिनीनां
जयति जयति नादः पञ्चमश्चोपवेदः ॥
वीणावादनतत्त्वज्ञो रागविद्याविशारदः ।
मूर्च्छना श्रुतिसम्पन्नो मोक्षमार्गञ्च गच्छति ॥

भगवानुवाच

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

नारद उवाच

के रागाः काश्च रागिण्यः का वेला ऋतवश्च के ।
किं रूपं कथमुद्धारो वद देवप्रसादतः ॥

भगवानुवाच

भैरवो मालकौशश्च हिन्दोलो दीपकस्तथा ।
श्रीरागो मेघरागश्च षडेते पुरुषाः स्मृताः ॥

इति षट्‌रागाः ।

अथ त्रिंशद्रागिण्यः

भैरवी गुर्ज्जरी चैव टोड़ी रामकेली तथा ।
देशिकारास्तु विज्ञेया भैरवस्य वराङ्गनाः ॥

१-३ श्लोकत्रयस्य पाठः न समीचीनः पाठान्तरं १म पृष्ठे द्रष्टव्यम् ।

* आदर्शपुस्तके एतावानेव पाठो दृश्यते । सर्वथाविशुद्धोऽर्थविरहितश्चायं ।

वागीश्वरी च ककुभा पर्य्यङ्का शोभनी तथा ।
खम्भावती पुनर्ज्ञेया मालकौशस्य वल्लभाः ॥
वेलावली वसन्तो च हिन्दोली ललिता तथा ।
मालश्री-सहिता एता हिन्दोलस्य प्रिया इमाः ॥
प्रदीपिका धनाश्री च जयश्री च पलाशिका ।
नाटिका-सहिता एता दीपकस्य वराङ्गनाः ॥
मालवो त्रिवणी गौरा पूर्व्वी आशावरी तथा ।
श्रीरागस्योत्तमाः पञ्च प्रिया एता विनिश्चिताः ॥
मल्लारी मारठो चैव मारङ्गा वड़हंसिका ।
मध्यमादिस्तथा ज्ञेया मेघरागस्य वल्लभाः ॥

इति इन्द्रप्रस्थीयश्रीकृष्णयुधिष्ठिरमतानुयायि-ब्रह्मसंगीतरत्नाकरानुसारेण रागरागिणी-वर्णनम् ।

— ० —

अथ रागभैरवः

गङ्गाधरः शशिकलातिलकस्त्रिनेत्रः
सर्पैर्विभूषिततनुर्गजकृत्तिवासाः ।
भास्वत्त्रिशूलकर एष नृमुण्डधारी
शुभ्राम्बरो जयति भैरव आदिरागः ॥
धैवतांशग्रहन्यासं क्वचित् गान्धारकस्तथा ।
संपूर्णो भैरवः प्रोक्तः क्वचिदौड़वकीर्त्तितः ॥
अथ षड्जांश स-रे-ग-म ।

राग भैरव—तान चौताला

धनिसारेगमपधनिसानिधपमगरेगरेसा । इति अस्थायी ।
मपधनिसारेसागरेसानिधपमगरेसा । इति अन्तरा ।

अथ आभोगः

सारेसा सारेगरेसा सारेगमगरेसा सारेगमपमगरेसा
सारेगमपधपमगरेसा सारेगमपधनिधपमगरेसा
सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसा सानिध
निधप धपम पमग मगरेगरेसा । इति षड्जांशसंपूर्णभैरवः ।

अथ गान्धारांशसंपूर्णभैरवः

सागमगरेसासामगापनिधपमपमगमगरेगरेसाग-
मपधमारेसानिनिसानिनिधसासानिधनिनिधपधधप-
मपपमगममगरेगगरेसारेसा ॥

सप्तसुरसम्पूर्णगीयो सरगमविचारी ॥
सासारेसारेरेरेगरेगमगमगमममपमपपपधपधध
धनिधनिनिनिसानिसासासानिसासानिनिधनिध-
धधपधपपपमपममगमगगरेगरेरेरेसारेसा ॥
सोई गुरु नम नमान ध्यानधरे ॥
अथ कलावन्तो स-रे-ग-म ।

अथ भैरव चौताल

सारेरेगमपधनि सप्तस्वर मो मनमें ऐसे आए ।
आरोही अवरोही सरगम कि ऐसे होत निधपमगरेसा
पुन दुगन कोजे तो ऐसे लीजे सुरनको तव आ
सवनकेमतमें कण्ठको सुधार ॥
धनिसानिसारेसारेगरेगमगमपमपधपधनिधनिमा
सानिधनिधपधपमपमगमगरेगरेसा ॥

अथ दूसरा आभोग

दुगुन सरगम कियो विचार ।
गुरुनपे सिखके स्वरनको उचार ॥
सासारेसासासारेगरेसामासारेगरेसासासारेगमगरेमा ॥
सासारेगमपमगरेसासासारेगमपधपमगरेसासासारेग-
मपधनिधपमगरेसा ॥ सारेगमपधनिसानिधपमगरेसा
निधपमगरेसाधपमगरेसापमगरेसा ।
मगरेसागरेसारेमासासानिनिधनिनिधपधधप मपपमग
ममगरेगगरेसारेसा ॥

अथ तीसरा आभोग

और दुगनकीजे तो ऐसे होत हैं
सवनके श्रवणमें नीके सुहावै ॥
सासारेसारेरेरेगरेगगगमगममममपमपपपधपध-
धधनिधनिनिनिमानिसासासानिसानिनिनिधनि-
धधधपधपपपमपममगमगगगरेगरेरेरेसारेसा ॥
धुरपद मध सदारङ्ग बनाई ॥

अथ औड़व भैरव चौताल

गगगमगसासागमधमगसासामगधनिसानिधमगसा ॥
गमधनिसामगसानिधमगसा ॥

धनिसागसासागमसानिधमगसा ॥
पञ्चमुख पञ्चस्वर मागमधनिसा उचार
शिवमत औडवभैरवप्रकार ॥ इति औडव भैरव ।

भैरव चौताल

निरेमागमपधमानि भैरव पूरन गुणियन गायो ।
सप्तसुर तीनग्राम कोमल मत लेहो
निनिनिधधधपपपममममगगगगरेरेसासाध्यायो ॥

अथ तानसेनादिकृत ध्रुवपदादिगानप्रारम्भः :—

अथ सरस्वती-वन्दना

भैरव चौताल

जै सारदा भवानी भारती विद्यादानी
महावाक्वाणी तोहि ध्यावै ।
सुरनरमुनिमानी तोहिकु त्रिभुवनजानी
जो जाको मनइच्छा सोई सो पूजावै ।
मङ्गला बुधदानी ज्ञानको निधानी
वीणापुस्तकधारणी प्रथम तोहि गावै ।
तानसेन तेरो अस्तुत कहांलो बखाने
सप्तस्वर तीनग्राम रागरङ्गलयअच्छर आवै ॥

२

महावाग्वादिनी सनमुखहूजे अवहूजे हो ।
याहोतें त्रिभुवनमानी यातेतु भवानी
जो जाके मनइच्छा सोई सो पूजे हो ॥
ऋद्ध सिद्ध तुवही पाई ये मात जब तुव
चरणकुजैहो ।
तानसेन यह प्रसाद सांगत जहां तहां जुरत फुरत
तहां तहां रङ्ग रङ्ग को करतू जैहो ॥

३

सरस्वती सुप्रसन्न होय सोकु वाक्वाणी ।
खरज ऋषभ गान्धार मध्यम पञ्चम
धैवत निषाद गुरुमुख आवत तानसानी ॥
रूपको निधानी दयानी विद्यादानी
जगतजननी सारदा सज्जनमनमानी ।
तानसेन मांगे तालस्वर अच्छर रागरङ्ग
संगत सो गावैं इच्छाफलदानी ॥

४

जय सरस्वती गङ्गागणेश ब्रह्माविष्णुमहेश शक्ति-
सूरज सर्वदेव ध्यावैं ।
सप्तस्वर तीनग्राम इक्इस मूरछना
उनचास कोटतान देहो आवै ॥
उपपतिरपत्लागड़ाटरागरागनी
पुत्रवधू सहित कण्ठसमावै ।
कहे वैजूबावरे सर्व्वदेव दया करो
राग रङ्ग ताल लय अच्छर गावै ॥

तु अम्बे आदिभवानी जगमानी सर्व्वानी
सर्व्वकलादि विद्यावरदानी ।
शिवमङ्गे जगदम्बे असुरसंहारण तरणतारण
तान-तालशुद्ध-राग-रङ्ग-अच्छर-देवानी ॥
सप्तस्वर तीनग्राम इकइस मूरछना
उनचास कोटतान तिनके योग जोयसेआनो ।
वैजूबावरो रावरो सेवक यह मांगे
नादविद्या सुरतवान राग सेर गरेसेसानो ॥

६

जै काली कल्याणी खप्रधारणी गिरिजा
घनश्यामा चण्डी चामुण्डा छत्रधारिणी ।
जगजननी ज्वालामुखी आदिजोत अनन्ता देवी
अन्नपूर्णा आनन्दी तरण-तारिणी ॥
जोगिनी जय रक्षाकरणी विन्दुवासनी
ललिता बहुचरा भवानी असुरदलनी महिषासुरमारणी ।
हिमगिरि हिङ्गलाजरानी काश्मीरी सारदा
कामरूकामाख्या तुलजा वैजूभक्त-सुखकारिणी ॥

सर्वाणी सर्वकलाशक्ति सारदा सरस्वती
श्यामा सुन्दरी सुखकरनी दुखहरनी ॥
कामरूकामाख्याकामदायनी काली
कल्याणी दुष्टदरनी ।
कमलवदनी करणकारणी काश्मीररानी
कैलासी कालहरनी ।
परमेश्वरी पार्वती परमपुण्यपावनी
गुनराजदास श्यामवरणी महाकाली तारणतरनी ॥

अथ गणेश-वन्दना

भैरव चौताल

लम्बोदर गजआनन गिरिजासुत गणेश
एकरदन प्रसन्नवदन अरुणभेश ॥
नरनारीगुणी गन्धर्वकिन्नरयच्छतुम्बर
मिलि ब्रह्मा विष्णु आरत पूजावत महेश ॥
अष्टसिद्ध नवनिद्ध मूषकवाहन
विद्यापति तोहि सुमिरत तिनको नितशेष ॥
तानसेनके प्रभु तुमहीकु ध्यावे अविघनरूप
विनायकरूपस्वरूप आदेश ॥

२

पूजरे गणेशको गुणी ।
ऋद्धिसिद्धिके दाता विघनहरणदूनी ॥
जिनधायो तिन पायो मन इच्छाभनी ।
वकसुके प्रभुको ध्यावत सुरनरमुनि ॥

३

तुमहो गणपतदेव बुधदाता शीशधरे गजशुण्ड ।
जेई जेई ध्यावे तेई तेई फल पावे
चन्दनलेप किए भुजदण्ड ॥
सिद्धेश्वरो नाम तुमारो कहियत जे विद्याधर
तीन लोक महँसप्तदीप नवखण्ड ।
तानसेन तुमको नित सुमिरत
सुरनरमुनिगुणी गन्धर्व पण्डित ॥

साधो विद्याधर गुणनिधान गुणदाता
सरस्वती-माताको कर आदेश ।
नमो नमो ऋद्धिसिद्धिके स्वामी सकलविद्याप्रवेश ॥
जो इनको ध्यावे मनइच्छाफल पावे
दूर होत तनते कलेश ।
तानसेनप्रभु तुमहिको ध्यावैं ब्रह्माविष्णुमहेश ॥

५

एगण राजा महाराजा गजानन जे विद्याजगदीश ।
सप्तस्वरसों गाऊं वताऊं सबरागरागनी
पुत्रवधूनसहितछतीश ॥
बाईस सुरत इकईस मूरछना उनचास
कोटतान आवै जगदीश ॥
तानसेनको दीजै छ राग छतीश रागनी
ताललय सङ्गीतमत सोहोय कण्ठप्रवेश ॥

अथ गङ्गाजी-वन्दना

भैरव चौताल

१

जै गङ्गा जगतारनी जगजननी पापहरनी
वेदवरणी वैकुण्ठनिशानी ।
भागीरथी विष्णुपदा पवित्रा त्रिपथगा
जाह्नवी जगपावनी जगजानी ॥

२

इससीस मधविराजत बईलोकपावन
किए जीवजन्तु खगमृगसुरनरमुनिमानी ।
तानसेनप्रभु तेरोयसुतकरता
दाता भक्तजननको मुक्तको वरदानी ॥

अथ महादेववन्दना

भैरव चौताल

१

महादेव आदिदेव देवादिदेव महेश्वर ईश्वर हर ।
नीलकण्ठ गिरिजापति कैलासवासी
शिव शङ्कर भोलानाथ गङ्गाधर ॥

रूप बहुरूप भयानक वाघाम्बर
अम्बर खपरत्रिशूलकर ।
तानसेनके प्रभु दीजे नादविद्या
सङ्गतसो गाऊं बजाऊं वीनाकरधर ॥

अथ सूरजवन्दना

भैरव चौताल

जै सूरज जगचक्षु जगवन्दन
जगत्राता जगत्करता जगन्नाथ ।
आदित्य सविता अरकखगपुषा
गभस्तीमान् भानु दिवाकर जग कारज होय तेरे हाथ ।
ज्ञान ध्यान जप तप तीरथ व्रत
संयम नेम धर्म्म कर्म्म सब उदै होय सनाथ ।
तानसेनपै प्रभु कृपा कीजिए रागरङ्ग-
स्वरनमों निशिदिन गाऊं तेरो गाथ ॥

अथ परब्रह्मवन्दना

राग भैरव —ताल चौताल

निरञ्जन निराकार परब्रह्म परमेश्वर
एकही अनेक होय व्याप्यो विश्वम्भर ।
अलखजोत अविनाशी जोतीरूप जगतारण
जगन्नाथ जगतपति जगजीवन जगधर ॥
वाहिमें सब जीव जंतु सुर नर मुनि गुणी ज्ञानी
नालकमलते ब्रह्मा प्रगटायो औ सतरूपामन्वन्तर ॥
कहे बैजू वही ब्रह्म वही विराटरूप वही
आप अवतार भए चौबीस वपुधर ॥

अथ अनन्तदेवताके वर्णन

भैरव चौताल

१

अनन्त ब्रह्माण्डके नायकवर ब्रह्मश्री श्रीधरमहाराज ।
कृपासिन्धु भक्तपाल सुखकरन कृपाल गरीबनिवाज ॥
यह विनती सुन लीजे तेरो अन्त नहींतू
अनन्त पूजूं तोहिं बांधु भुजकर जाए दुखभाज ॥

बैजूप्रभु आदि अलख अगोचर निरञ्जन निराकार
भक्तकाज कोटिकोटिरूपधरे सज्जन शिरताज ॥

२

माधो मधुसूदन मुकुन्द मुरली धरे मुख मोहन मृदुहास ।
कमलनयन वासुदेव परब्रह्म परमेश्वर विष्णुपूरन आश ॥
नारायण निराकार वनवारी वामन
विठल शङ्ख चक्र गदा पद्म मोहनहैं पास ।
पतित-पावन विरदजाको कृपाल दयाल
भक्तवत्सल मदनरायके नित जिय आस ॥

३

विष्णुचरणजन्म ब्रह्माके कमण्डल
शिवजटा राजत देवी गङ्गे ।
भागीरथीजु सकल जगतारनी भूमभार-उतारनी
अघघनवेली कटाक्षनके तारनतरङ्गे ॥
हरिद्वार प्रयाग सागरवेनी त्रिवेणी
सरस्वती विद्या देनी करत दुखभङ्गे ।
धीरजके प्रभु तुम रोग दोष दूरकरो
पापहरो निरमल करो यह अङ्गे ॥

४

प्रभाकर भास्कर दिनकर दिवाकर भानु प्रगटे विहान ।
तेरे उदैते पाप ताप छुटे कर्म्म धर्म्म
प्रेम नेम होय गुरुज्ञान औ ध्यान ॥
जगमगात जगतपर जगचक्षु
ज्योतिरूप कश्यपसुत जगतके प्रान ।
तानसेनके प्रभु उदै जगतकपाट खुलत
दीजिए विद्या कृपानिधान ॥

५

चन्द्रवदनी मृगनयनी तामधतारका गङ्ग पुतरी
कालिन्दी इह विधि डोरे बनायकीजे तिरवेनी ।
कुटी पीत कण्ठदीपकमुखको जोत होत तामें
गुप्तप्रगट सरस्वती मिलिए न नैनी ॥
सुन्दररूप अनुपमशोभा त्रिभुवन पाप-ताप-हरनी
करत सुखचैनी ॥

तानसेनको करो निरमल तू दाता
भक्तजननको वैकुण्ठ कीनें सैनो ।

६

प्यारे तुही ब्रह्म तुही विष्णु तुही रुद्र तुही शिवशक्ति
तुही सूर्य तुही गणेश ।
जल स्थल पवन पानि तुही तेज तुही अकाश तुहि
अग्नि तुहि ज्योति तुही सुरेश ॥
तुही ऊंच तुही नीच तुही हैं सब होनके बीच
तुही चन्द्र तुही दिनेश ।
तुही एक तुही अनेक गुरु चेला तुही अलेख
बैजू बावरो तोहि सुमिरत तोहिते कटत कलेश ॥

अथ श्रीभगवानके दर्शन

भैरव चौताल

१

प्रथम उठ भोरही राधेकृष्ण कहो
मन जागों होवें सब सिद्ध काज ।
इहलोक परलोकके स्वामी ध्यानधरो ब्रजराज ॥
पतित उद्धारण जनप्रतिपालन
दीनदयाल नाम लेत जाय दुखभाज ।
तानसेन प्रभुको सुमरो प्रातहि जगमें रहै तेरो लाज ॥

ए वंसीनाद सुरसाधके बजाई प्रवीण कान्ह
सप्तस्वरतान मधुरे धुनि ।
श्रवण सुनत कछु सुध न रही आली
भनके परीमेरे कान सुनि सुनि ॥
तन मन रोम रोम व्याकुल भईरी जीत लिए
गन्धर्व नारदमुनि गुनी ।
बैजूके प्रभु नरनारी पशुपच्छी मोहैं
और मोहे सुरनर मुनि ॥

३

मोहनसृष्टिके आधार तनको अब राख लीजिये गोपाल ।
नैन प्रान सुखदीजै तनते दुःख दूर कीजे
इतनो विनती मेरी सुनलीजिए हाल ॥
पतित-पावन करुणासिन्धु दीनदुख-भञ्जन
अनेक-रूप लीलाधारी भक्तवत्सल युगयुग भए कृपाल।
मदनमोहन मधुसूदन मुरारी गज-सुदामा-
द्रौपदी-सहायकारी तानसेन प्रभु भक्तप्रतिपाल ॥

४

ए आज वांसरी बजाई वनमध कौन
ढंग कौन रङ्ग झुकि फुकि ।
सुनत श्रवणसुधिरही नही तनकी भईहौं
बावरी वृन्दावन दिशि हेरि झुकि झुकि ॥
ब्रह्मा वेद पढ़त भूले शिवसमाध माँह डोले
सुर नर मुनि मोहे देवाङ्गना देखे लुकि लुकि ॥
सप्तस्वर तीनग्राम इकइस मूरछनाले तानसेन प्रभु
मुरली बजावत बोलत मोर कोकला कुहुकि कुहुकि ॥

५

जा दिन तें मोहनमुरली बजाई
ता दिनतेंही तन मन गई है बिकाय ॥
सप्त स्वरनको आरोही अवरोही
रस भरी तान सुनाय ।
भूली सुधखान पान सेजहु को सोयबो
चौंक चौंक उठरही मुरझाय ।
मेरोतो जीवन धनहै बलिहारि राखोंगी गरवा लगाय ।

मुरली बजाय रिझायलई मुखमोहनते
गोपी रीझिरही रसताननसों
सुध बुध सब बिसराई
धुनसुन मनमोहे मगन भई देखत हरि आनन ॥
जीव जन्तु पशु पच्छी सुर नर मुनिमोहे
हरे सबके प्रानन ।
बैजू बनवारी वंसी अधरधरि वृन्दावनचन्द
बसकिए सुनतही कानन ॥

७

जै माधव मुकुन्द मुरारी मधुसूदन
मदनमोदन मनरञ्जन मनभावन ।

जगतपति जगन्नाथ जगजीवन
जगवन्दन जगपावन जगप्रगटावन ॥
कृष्ण केशव करुणानाथ कंसारि कंसकाल
कालीनागनाशन कामजलावन ।
बैकुण्ठनाथ बिहारी बद्रो वामन विष्णुवल्लभ
बाराह विठल बैजू बावरे प्राणजियावन ॥

८

प्रथम उठ प्रातही हरि हरि हरि हरि
ररेमनमेरे याते होवे सुफल अष्टयाम ।
इहलोक परलोकके स्वामी वैकुण्ठहोवे विश्राम ॥
दीनदयाल कृपाल भक्तवत्सल भक्तजनन-अभिराम ।
वैजूबावरो रावरो कहायके अबकाहेको
भटकत चौरासी लक्षधामधाम ॥

९

मोहन जागो मनोहर मधुसूदन
मदनमोहन मुरारो माधो मुकुन्द मनभावन ॥
जागो जागो जानराय जगतपति जगजीवन
जादोनाथ यशोदानन्द जगतसुख प्रेमबढ़ावन ॥
जागो एजु कान्ह कुंवर केवल कल्याणराय
जागो ए श्रीकृष्णचन्द्र प्रेमानन्दपावन ॥
जगतके जगैया तुम प्रभु वैजूके स्वामो ।
बलिराम कृष्णजूके भैया पाप नसावन ॥

१०

भोरही भैरवराग आलापेहो प्यारे वंसोआ ६ न ।
खरज ऋषभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत निषादता ६ न ॥
आरोही अवरोही अस्थाई
सञ्चाई तालकाल ओर मा ६ न ।
उरपति रपलाग डांटदेगो मारग तानसेनके सुनो
साहअकबर यह विधि मुरलीमे कोने गा ६ न ॥

११

ए मेरे भागजागे प्रियभोरही सुधलई ।
मैंहतनो भलो मनावतहूं वलमाहो तुमपर बलगई ॥
अधरन अञ्जन महावर भाल मतिगति औरभई ।
तानसेनके प्रभु ठाढ़े रहो बलैया लेहो कह गई तियन ई ॥

१२

भोरही कुञ्जमहलके आङ्गनमध
ललितावीणा बजावत गावत ।
पिय प्यारी सोवत कछु जागत रसभरी तान
सुन सुन सुन्दर मूंदि नैन मुसक्यावत ॥
गौरश्याम अभिराम परस्पर अति
आनन्दकछु कहत न आवत ।
रसिकगोविन्द युगल छवि ऊपर
वनतोरत बारबार बलिजावत ॥

१३

अनत वितमान आएहोजु मेरे ग्रह
अरसोले नैन बैन तोतरात ॥
अञ्जन अधरधरे मोहे पीक लीकतोहे
काहे कौनजात झूठी सौंहैं खात ॥
पेचहु सँवारत पेचहुन आवत
एतेपर तिरछी भौंहैं चितवत गात ॥
नन्ददासप्रभु प्यारीहियमें वसत
यातें भूल नामवाहीको निकसजात ॥

१४

भोर भए आए लाल धरत पग डगमगात ।
पाग लटपटी सीसविराजत नैनउनींदे गति झंपिजात॥
अधरन अञ्जन पीककपोलन
नखके चिह्न देखियत गात ।
चतुर्भुजदासप्रभु गिरिधर न भले
तुम आएहो मोहे देखावत प्रात ॥

१५

रैन गंवाय आएहो मेरे कहाचक ईसो हिकौनी ।
कवन नवल वनितासङ्ग जागे सोखसन्देसो ई दोनी ।
निसजागी सङ्केतसन्देसो नेक पल नहो लोनो ।
प्रेमरङ्गके मनकी न जानो सुख बकवेको कोनो ॥

१६

ते निशा लाल सङ्ग रतमानो
मैं जातूं पग डगमग परतन सूधे ।

शिथिलवसन कटिकेश राजत
आननसुदेश बोलत कछु अटपटात वानी ।
यह छवि मो मनभाई मिटिहै
चञ्चलताई पीकलीक पलक लगानी ।
सुरदास प्रभु रीझिरहे धन्य धन्य नवकुञ्जरानी ॥

१७

मैं जानि जहां रितमानि आएहो
लालन जब चोरिया सुहचानी ।
ऐसे पर अखियां रसमसानी
और पाग लटपटानी भाल जावकरङ्ग चिह्नानि ।
अधर अञ्जनप्रगटानी विनगुन मालवनानी
सब अङ्गअङ्ग उलटे निशानी ॥
सुरदास गुननिधानी धन तियजोतुमको
सुखदानी सङ्गजागत रैनविहानी ॥

१८

ए लाला जीओ जैलों गंग यमुनजल तरनी
धरनी ध्रुवतारो ।
बेगवढ़ो वढ़ होहु विरधलट यसुमति पूत तिहारो ॥
भक्तहित अवतार लियोहै मेटनको भूवभारो ।
धोंधीके प्रभु तुम चिरजीवो ब्रज जन-प्राणअधारो ॥

१९

प्रथम नाम लीजिये प्रातही
हरि हरि हरि हरि हरि हरि
निशिदिन धरि धरि पलपल अष्टयाम ।
यशोदानन्द आनन्दकन्द मधुसूदन
बालमुकुन्द भक्तवत्सल जनविश्राम ॥
दामोदर दयासिन्धु भक्तवत्सल
भगवान वैकुण्ठपति वृन्दावनधाम ॥
बनवारी बैजूप्रभु वद्रीनाथ बिठल
विष्णु वामनाग्रज विश्राम ॥

२०

बानी चारोकेव्योरे सुनलीजेहो
गुनीजन तब पावै यह विद्यासार ।
राजागुवरहारफौजदारखण्डार
दिवान डागुर वकासी नोहार ॥
अचल सुरपञ्चमऔरचलखरवादक
रत ऋषभ मध्यम धैवत निषाद गान्धार ।
सप्ततीन इकइस वाइसो
उनपञ्चासकोट तानसेन आधार ॥

२१

ऐसे कैसेबनेगी प्रीतरीतकी मिलत नाही मनलाय ।
कबहुक देखत वंसीवटपैग्वाल बालमिडराय ।
बिनदेखेकल पल न परत पल सुन्दरश्यामलोभाय ।
प्रेम रङ्ग तन मन धन वारोंविन देखे रहा न जाय ॥

२२

मुरारे त्रिभुवनपते इन्द्रसुरपते शेषनागहैफनपते ।
और उदधि सलिलपते कौस्तुभमणि
रतननपते दिनकरदिननपते कमलापते ।
शशिउडगनपते हनुमानवलनपते ॥
नारदभक्तिनपते साजनमृदङ्गवीनपते ॥
चिर चिरजीवो साह अकबर
नरनपते तानसेनताननपते ॥

२३

मोसो ज्योंअवध वद गए सांझको यह आए भोरभए ।
ऐसो को चतुरसुधर नारजिन
तुम बिरमाए ऐसे सुखदए ।
अधरन अञ्जन कहुँ पीक पलक लीक
और न सोचित हित बहु भांतिन लए ।
तानसेनके प्रभु वहाहीं पाँवधारो
ए जहां कि ए नेह नए ॥

२४

सूरजवंश नमो गुरु इष्ट
हमारे दशरथसुत राजाराम
जानकीनाथ नाथ त्रिभुवनके
मोहन सुन्दर श्याम ॥

लछमण भरत शत्रुघन हनुमान
　　जनकसुताके पूरणकाम ॥
धीरज के प्रभु अतही चतुरहो
　　प्रगटे अयोध्याधाम ॥

२५

सेव्य महाराज रामपदसरोज अति उदार ।
अङ्कुश यव ध्वजा रेख मीन कमल कुलिश
　जगत शेषवन्दित सुर अज महेश
　　सेवत सनकादि चार ॥
　कौशिक मुनि सङ्ग चारि
　पाहन मुनि नारि तारि
भूरि भार भक्त हेत गावत गुनिगुण अपार ॥
　जै जै जै श्रीधनुषधारी
　पवनपुत्र आज्ञाकारी
सीतापति छविनिहारि वलिहारि वारवार ॥

२६

असा नाल कुड़ी कुड़ी गलाङ्कार
टारहंदाप्यारिय औरदेनाल
हंसदा बोलदास देखिजा टानी वे घोलघोल ।
रतदेहाडे ध्यान रहंदातु
साड़ा सोण्णा आवदा नाहीं साडडे कोल ।
मायल करसानुधायल कीना
सावली सुरत निरखहु न लीना चितचोर अमोल ।
भौंह कमान तिरछी चलावदा
नैनादे वानतु सोच लावदा तोल तोल ॥

२७

लोचन घूम रहे हरि सङ्ग रजनी जागत ।
कमल प्रफुल्ल कीनभए डग मगतगात
　ढहै दूर दूर देखत लाज साजन ॥
रतिरस वस कर्ली चसकेचाखे
　हँस हँस कानन कोने लागत ।
जीवन गिरिधरके प्रभु समुद्र-
　तरङ्ग झकोरन छाजत ॥

तोकों प्यारे पठई किधों
　तू आपते आई मनावन ॥
प्राने सुरके सुखकी बतियां
एन होवेरी हो नीके जानतजैसो
　तू मोसोंरी लागी बनावन ॥
या सुखको अब कान नकरहों
अनमिल पिय में कहो न
परत तेरी मो हेत नावन ॥
कहाकहीं राजाराम सों
तोसोंरी पठावे हमारे ग्रह बनावन ॥
तानसेन कहे आवत आपनी औरनको
चितलावत सुहको वात कहलावन ॥

२८

असानुतु छड़ वेमौया औरोनाल हंसदा खेल टारहंदा
गाहेगा है आंवदा क्या साडे कोल ।
रतदेहा मण्ध्यानतु साड़ारहंदा
कवोतो मडेनाल मिठे बोल ॥

२८

छत्र छवि निरत नई भई रीत जैसी
　　सभा आभा वा सुरपतकी ॥
सगण सदन मनसुक्तन रतन छत्र
वरन वरन मन रङ्गन रङ्गनछवि
विसात निरख नर नरेश ताते सुरेश हूते अधकी ॥
और मखमल जरवाकतास तिनके समयाने
असपक कञ्चन खंभ लगे औरन
गजगमगीत खत कैसो कहो न
　　जात उपमा या वखतकी ॥
मोहनसाह किरानसानो साहजहां
जूकोनी रोजदीनो अरवखरव
छीनो गरवीनके गरव तिहू
　　लोकमें चरचा कीरतकी ॥

३१

प्रथम खरज साधो औ रिषभ गांधार
मध्यम पञ्चम धैवत निषाद सुरसम
तीनग्राम शुद्ध अत्तर प्रमाण यह सब
अपने मनमें जब समझ आवै
तब गुणीजनसों नादको चरचा कीजिए।
अकइस मूरछना उनचाश कोटतान
बाइस सुरतते सब अङ्गनसों गाइये
ठीकतान सुरताल सांचो खरनसो सरिगमपधनि
उलट पुलट फेर फेर जांचबूझ समझ कर
धुरपदको धरनविचार कर लीजिए॥
नादसमुद्र अपरम्पार काहुन पायो
याहको भेद वार न पार काहेको
अतिरिस नाहक धसमक करतहो
सबगुणी जन यह विद्या अटपट महाघोर
अति विकट होतनाद ईश्वररूपी
अमृत रसजितना जाको मिले तितनोई पीजिए॥
चलदेवी सरखती तू वा चार कमरधरि
नाद समुद्रमें पैठि डूबनलगी तबतू।
वीकाहिर देधरिकैरतन लगी औरनको-
कहा गिनती कीजिए।
महानादसेन कहै सुनो बड़े बड़े गायन
सबशेखी औ मगरूरी तनमन न करिए
ज्ञान चितधरि गरब तज दीजिए॥

३२

प्रथम गाइये सद्योजाते मुख
सुखसम्पूरण अंश न्यासग्रहस्वर सुधङ्ग।
शेष ग्रीव शशि ललाट भस्म अङ्ग जटा
मुकुट मुण्डमाला सीसगङ्ग॥
मधुमाधवी भैरवी बङ्गाली वरारी
सैन्धवी पञ्चप्रिय प्रचण्ड शोभा लिए सङ्ग।
साधपमगमपमगमपधनि
सारीरीसागमपागमपपप धप धप मगरे साधङ्ग।
दीपक है स्वर यह विधि कहियत भैरव रागप्रसङ्ग॥

३३

सघन वनछायो द्रुमवेली माधोभुवन
अतिप्रकाश वरनवरन पुष्परङ्गलायो॥
कोकला खञ्जन कीर कपोत अति आनन्द-
कारी चहुं ओर झर वरसायो॥
सप्तसुर तीनग्राम इकइस मूर्च्छना
उन्नायुक्त लागडाट कर देखायो।
तानसेन कहे सुनो साहअकवर प्रथम राग भैरव गायो॥

३४

धनबुध पारब्रह्म कीनो जिन अखेवट
ठामो समधर्मते ककुवोजबोन्यो।
सजल धवल पुनगपैठ नवखण्ड
विस्तार जाको शाखा अष्टमेर
मानों दिगपाल जटाठानों
जलछायो पुहुम पवनसानों॥
तैसोबुन्द तिलसोहाय अमीय बुन्दवरषत यातें।
तरङ्गन सस उड़गण जैते फल
पशुपंछी जीवजन्तु कमलासन
अगम दीरघ पुरी वासुदेव नाम जे
हरषियत करतार याविधिजानो॥

३५

एरी प्रात उठेहैं लालन ललनाले
दरपन मुख निरखत आपआपमें हं सबोले।
प्यारीके दृगनदेख प्यारो रीझ थकितभयो
जैसे अलि पङ्कज लेत सुगंध अघ्रान
अघाय एको न इत उतडोले॥

३६

जागतभैरों ज्योतिस्वरूप किरणतें
प्रगट्यो तिमिर घट्यो शशि भयो मन्द।
दिनकर दिनलायो सबके प्रफुलनको
बढ़बढ़ कियो आनन्द॥

जगचक्षु ज्योति प्रकाश प्रतच्छ देव जगवन्द ॥
वैजू वावरे गावरे कहावत काटो जनम मरनके फन्द ॥

३७

प्रथम मञ्जन अञ्जनकर करपकर चीर चार ।
आलीमे दिल लेले कमल बहुतेहु
आभूषण रूपसुधा कण्ठमाल रतन मुक्तनके हार ॥
आही अतिभायो दादरूद कटाक्ष
सलामुन अलकैकन नाहतसे पिय प्यार ॥
तानसेन गर तनजटितसोरह
सिङ्गारकिए नरलोक इन्द्रलोकहु नही नार ॥

३८

गौरीशङ्कर राधाकृष्णको नाम
लीने सकल सिद्धकाम ।
निशिदिनसुमरणसोवत
जागत उठ प्रात कहो सीताराम ।
मीन कच्छप वराह नरसिंह वामनरूप परशुराम ।
हरि हलधर बुध कलङ्की यशोदाधाम ॥
एते प्रभु रक्षपाल खरगसेन शिवकृपाल
हजीये सहाय अष्टयाम ॥

३९

समुष्टिकसेवा चरण रघुनाथको
नित वहतो है जगतारण ।
दीन उधारन करुणासागर
गावत प्यारो श्रुतश्रादि अनाहद कारण ।
सीतारवन विहरत तन कुसान
तेजको होके वाजन साधहितधारण ॥
ज्ञानदास आचरण कमलको वान सदा चितसारण ॥

४०

भोरही भैरवराग अलाप्यो
अहो प्यारे वंशीमे आन ।
खरज गान्धार रिषभ पञ्चम
मध्यम निषाद धैवत तान ॥
आरोही अवरोही अस्थायी
सञ्चाई ताल काल और मान ॥
उरपति रप लाग डांट देशी
मारग तानसेन सुनो साह अकवर प्रमान ॥

प्रथम अलाप ठीक तानशुद्ध
अक्षरसो कीजिये प्रमान ।
सुरताल श्रुतिग्राम मूर्च्छनाको
वानीसो करो गुनी जन गान ।
औरको कह्यो न मानि हिय जिय
हठधरे याहीहै अतिमूढ़ज्ञान
नादहीको करविनान ।
महानादसेन कहे गुणके जानकार
एक आदहोतहै तुम बुझो जान सुजान ॥

४२

एमेरे भाग जागे पिय भोरही सुध लई ।
मैं इतनो भलो मनावत हु वलमाहो तु मपर वलगई ॥
अधरन अञ्जन महावर भाल मत गत और भई ।
तानसेन नेक ठाढ़े रहो वलैया लेहों नित नई ॥

४३

एरीहो रीझ देख भोरही उठके प्यारीकजरा
दृगदोउ करसों लागी मलन ।
पुन या छविसों ऐंडात जँभात नीरवहो
मानो कमलम धते अलकसुत छुटलागी चलन
चन्द्रवदनी मृगनैनी विनदेखे घरी पल कल न ।
तानसेन देख रीझ मगन भए सुन्दर नार अवलन ॥

४४

शुभ नखत तखत वैठो राजत
छाजतहै सबमूलक खलकर्जे विघना किए
सबछत्रधरे ते सब लागे सबसेवाकरन ॥

धन धन चक्रवर्ती नरेश अकबर
दुखहरण तानसेन ऐसो सुरपुरी नर नरेन्द्र नर न

४५

सुनजरभई अपनेप्यारेको
काहेकु चिह्नदुरावत मोर्त तबही जानीचतुराई ।
रात जागि पगि पीतम सङ्ग मोमों छिपावत गात
नैन उनीदे तेरेलेत जंभाई ।
सुन्दर मृगनैनी बोलत पिकबैनी
प्यारी रंगभरी मूरत मनसमाई ।
तानसेन पिय बसकरलीनो
धन धन महारानी सुखदाई ॥

४६

अकबर प्राणनाथ अनाथनको
यहनाथ ए जापै अष्टसिद्ध नव निध पाइये ।
परमदाता ज्ञाता सबहीको मनरञ्जन
यहदुःखभञ्जन कल्पवृक्ष प्रतक्ष धाइये ॥
अन्तरयामी स्वामीजग काज करवेको
ए रस नाल बनाइये ।
जलालदी महम्मद ऐसे दाता किए
तिहुँ लोकमें यश गाइये ॥

४७

सकरगंज गंजबकस सेष फरीद आलमपीर
नींद ऐसेके लीजे निवाज रहे जेगमें लाज जाए तनतेरञ्ज ।
जेइ जेइ माँगीए तेइ तेइ फल पाइये
तनको करत दारिद्रभञ्ज ॥
तानसेन कहे एतही माँगिते
तुमपै जोहो मद तन पुञ्ज ॥

४८

अगज गंज अडंडन डंडतेग वली
अलि मरदान महामरद ।
जे सुभट और काहुसो ना मोरे
जोरे सन्मुखसाहनके आगी खेटकूट किए गरद
एकअन्त दन्तविनले मिले एक भाजगए
गिरिकन्द लतिनहु नींदन परे त्रास दरद ॥
धन धन तज प्रतापतुव जशगाढ़ो
गढ़पति वमो चहुं सरद ॥

४९

जो ताल वहै नबी अलिहुसन
हुसेनके मनमे लाय देखे ।
इमाम जैन लाब दीन इमाम महम्मद ।
वाकर इमाम जाफरसादक परसो
दखलाय देखे ॥
इमाम मुसिकाजम इमाम आली मुसीरजा
इमाम महमदतकीके कदम धायदेखे ॥
इमाम अलीनकी इमाम हसनअसकरी
इमाम महदीके जहुरको जाय देखे ॥

५०

प्रथम मज्जनकर अञ्जन कर करपहरचोरचार ।
अलकन्हु लिल्लाको लव लाएहुं आभुषण ककुसु
जूद कण्ठमाल रजत और मुक्तनके हार ।
अतही अतिभयोहादकदकटाक्ष
सलामनले कमरहत अलापिय प्यार ॥
रवना आतनाफिरदुनोयां हसन तन
तानसेन कहे गीतसागर भयो अपरंपार ॥

५१

बादर अनुहआए सो पिय बिनलागी डराए ।
ऐसी अंधियारी कारी डरपावनी लागत
जियकोभारी तेसमें अवध वचन गए हरि न पाए ॥
दादुर पिक मोर सोर करनलागी
विरही तन लागी दुराए ॥
तानसेनके प्रभु तुम नीके जानो
भली लोनो सुधसो अजहु न आए ॥

५२

बादर भूमि झूमि आए बरन बरन बरसन प्राणप्यारे।
सुनि सुनि घनघोर चातक चकोर मोर
बोलत सुहाए नन्ददुलारे ॥
तैसेई बन कुञ्ज केलि विहरत भुज कण्ठमेलि
अनुरागी जागी टोउ रूप उजारे ॥
सखिजन बलि हारलेत रूपनैनविहारी
मोहे सुहे बसन जमन मनवारे ॥

५३

जहां जहां युग युग भार आय
अपने जनको सहाय।
नानाविध वपुधारे भौर परे भक्तनपर
जगपत सीतापति रामराय।
सेवरी गजगीध व्याध अजामिलसे अगाध
तनक भनक सुनतनाम लीने जमते छुड़ाय ॥
दीनबन्धु बलिहारी रघुनाथ
अशरनशरण कोशलपति क्यो न गाय ॥

५४

रैन गमाय आएहो लालन
कहां जागे सगरो रात बात कहो प्यारे।
नवकिशोर नवलतियासङ्ग जागे
पागे अङ्गअङ्गके चिन्हन्यारेन्यारे ॥
सवनिशा मोहि तलफत बीती
भोरभए आए ललारे ॥
तान तरङ्ग रंग रस भीने कीने
नख चिन्ह भाग जागे आज हमारे ॥

५५

सोहत कामन उत्तमरूप पहरत सवार
चीरओपवदाय कुन्दनअङ्ग ॥
टिकेको कियो उदोत तार
तिमिर फटो भरण परे पाछे सीम-
फूलयुत असमान श्रवण कुण्डल कवरी
चचककटाक्ष आपजोत वम रहोदोज अनङ्ग ॥
दृग अञ्जनदिए खञ्जन भ्रमकरलिए
करदर्पण हारसुखदेत सुखपर्येश्मन
निरखि उडुजात य वरनन गुणीगावें
मानिकहीरा कपोल मुकुलर मुक्तमाल
भुजविनाल कर कमल बाजूबन्द
फुंदन लटक लटक अलियुगसङ्ग ॥
रामकिरण उपज्यो नवल विचित्र
काचुको मधुअनङ्ग अधरसुन्दर लवली
तंग्वा टरनन झनन ठनन अमृतनाभ
औरनलोप पौलारम लेत अतजात
तानसेनके प्रभु साह अकबरसों बन रहे
जैसे पारवती महादेव अरधङ्ग ॥

५६

जिन करो मोसों झूठिझूठिबातें तिहारी
प्रतीत मोहि नेक नहीं आवत ॥
वे तो लंगरकान्ह नाहिन छाड़े अपनी
बान बरबस मनुहार करत मोहि मनावत ॥
नित उठ मोतनके ग्रह जावत मेरे
प्रतक्ष आय लाखनसौंहें खावत ॥
परस परस निजचूक क्षमाकरावत
बारबारको रीसावन या नाहि सोहावत ॥

५७

गावोरे गावो गुणी प्रथमभैरव खरज सुर राग।
दूजे सुरकण्ठ कोमल अति शोच समझ लेहो
निषाद धैवत पञ्चम मध्यम गान्धार रिषभ साध लाग॥
सामगमसागमगसासाधपमगमासानिधमगसा
सानिधनिनिधपधधपमपपमगममगसासानि
धनिधपधपमपमगममगरेसगरेसा ॥
संगीत-रत्नाकर-मतसों लेहो सुधार वाक्वानीसों
रागरङ्गलेहो माग ॥

५८

बरषा रित वनिता बन आई।
नैननमें निरखत लगे सुहाई ॥

कञ्चन कीधि लता अलवेलीसी तरन भई ।
तैसो यह केश श्याम वरन घटाछाई ।
रहसवोले गरजन दशन चमकको धाई ।
वदन ऐसो लागत मानों वदरोके
शशि उदेकीनों सोलह कला सम्पूरन भाई ॥

५९

आवतहो रङ्गरङ्ग यसो पिय भोर ।
दिम्थम्धिरकिटतकदिदिगनधिरकटतकधिरकिटतक
दिदिगमकिरनिकिरणकटतकधिरकटतकदिदिगनधा ॥

६०

नेक ब्रह्मनायक परब्रह्म सोसाहन महाराज ।
कृपासिन्धु भक्तवत्सल पहले सुखकर रचक मेरो लाज ॥
या वनितो कबूल कीजिये तुम जग शिरताज ।
श्रीलक्ष्मीनारायण ऐसे राजावहादुरके
पूरणकर सबै अन्के काम ॥

६१

सुरत शुभट चिन्ह जगे रैन यातें
नैन उनींदे भोरभए आये श्याम मेरे सदन
नख रद छद छाय लागी पागी रसवीर
विहद यातें लखिपरत अरुनवरन वदन ॥
सो भांत गात अरसात बातनमें
अरवरात शयनकरो तुम सेवा पगन ॥
तन मन धन जुगराजदास परवारो
आएजीत समर समरकदन ॥

६२

लालन आजु लखि एक नवल वाल नाचत
सकल तियन मध गतिसुधंग ।
झलकत तन जोवनजिम शशिमध सुरङ्ग ॥
देहवदन हसन दशन दामिनी
द्युतिसम भृकुटि धनुष चितवन
शर मारत मन कुरङ्ग ॥
घेरदारघुघटनलों घाघरो
घुमेरदार चुनरीचटक लसत
भूषण सकल अङ्ग ॥

युगराजदास प्यारे ऐसीतो
मैंन देखी वोलनि चलनि चितकी हरनि
अधरसुधर अमृतवचनि करपदनीरज
सुने वचन सरवस करे रसके तरङ्ग ॥

पहिले झुककै अव चली रिसाय लोगनलाल
मानो वसकीने साहि ए मेलत तुमार ॥
जोरससे रस उपजत तुम इनभांतन रससां
रस उपजावत जे नित नैन-निहार ॥

६४

तरैया नादमहानदको मूरछना गमक
नीर सुरत अगाध तान तरङ्ग ताल तरल वहां
अलापन ओड़ा खाड़ा पूरण धार ।
आरोही अवरोही दांउकुल पुर
अंशन्यासग्राह ग्रह तान भँवर
सरोजवादी विवादी सिवार ॥
नौका ध्रवाज पर राग रागिनी
पथिक चढत उतारत गुनीजन वारपार ॥
हरिदासठाकुर उत्तमनायक धक धुरपदछन्द
गुन वनी पत पतार सङ्गीत गीत अधार ॥

६५

कैते रतन जगतमे उत प्रगटकिए
प्रथमे कामधेन सुर विधने बनाए ।
पुन कीने विष वारुणी अमी श्री सुधाकर
चारोखान चिरवानो परवाजो रथि रथते पाए ॥
धनुष धन्वन्तर ढरन मुरन गजश्रीमणि रम्भा
छन्दधाक ध्रुपद गायनले वसाए ॥
तानसेन कहे कम्बु कमलने हमाउको नन्दन
कल्पद्रुम अकबर पारख पाए ।

६६

अधरनकी लाली कहुं कहुं बनरहीमानो जरीलाल चनि ॥
पियाके मिलवेको आवत कर दरपनले
देखत हस मुसकानी छविभरदैहै दूनि ॥

अति रसाल लाललाल लालडोरे
यह छवि मोसों वरनो न जाय सरस सलूनो ॥
साहसिकन्दर जुलकिरणनसों
मन रितमानो होत जात लाजनतवनो ॥

अहोहो जाय देख पुहुप बिछ रहे
यों लागत मानो तारका मांदसे ।
दम्पत सुरतकर दरपनले देखतहो
भूलरहो भोर दोउ मुखलागि चारुचांदसे ॥
जिनके आभूषणनको देख जोत छाई
जोउ न नैना छोड़ै आंधसे ॥
सो मनचकोरके कारन दूर जजार रहे फांदसे ॥

६८

प्यारनको बिछुवा महजनहीं छौं
भई तुमारे दरश बिन मानो बिन मीन नीर ।
हिए धरत न धीर आँसु करत भोर
रोके नाहो जाय एतो गहर गम्भीर ॥
च्यार दिनमे जाय चढ़ देशमे तेग विजय
वेगमिलोगी आयवीर जवदास
आलमगीर होसो च्यार दृगकोरज
जितो निहारे काजपर आवे वधसीस
तेरो ताजराखतो तुमारे मानो वजीर ॥

६९

अनवनसुवनढूंतें नोके आलम
करें सिङ्गार तु अननमाई ।
कुटोलटे टेढ़ोभोंहपलकन
पोक और लटोभङ्गियाको कहा कहीय न जाई ।

७०

भोरही भैरवराग अलाप सुनायो
नीको नीको नीको तान ॥
षरज ऋषभ गान्धार मध्यम पञ्चम
धैवत निषाद सप्तसुर गान ॥
उरप तिरप लाग डाटदेशीमारग
देखाय अंसन्यास श्रुतिमूर्च्छना ॥
तानसेन कहे सुनो साह अकबर
प्रथमही मुरलीधर प्रमान ॥

७१

नयनको नहिं परत कल कमलनयन
बिन देखे जादोनाथ ब्रजराज ॥
कालिन्दीके तीरभारी भई भीर बल वीर
वासुदेव वनवारीके कारण तजदई लोकलाज ॥
व्याकुल मलिन वदन सदनको न सुधिरही
बुधिहर हरिलीनो कीनो बावरीसो सरो न एको काज ॥
काहेको देरकरो हरि मोरी वेर
वेजूको वेग मिलो प्रभु मनमोहन
माधो सुखनिधान निधानसिरताज ॥

७२

प्यारे तुही ब्रह्मा तुही विष्णु तुही
रुद्र तुही शक्ति तुही गणेश तुही सौरा ।
तुही जल तुही थल तुही पवन तुही अकाश
तुही अधुरा तुही पूरा ॥
तुही छैल तुही अलबेला
तुही रोवत तुही हँसत तुही
उठत बैठत चलत तुही दूरा ॥
तानसेनके प्रभु एकहि अनेकहोय
जगमे व्याप रहो हजूरा ॥

७३

सेवो चरण रघुनाथ कुंवरके सकल जगततारण ।
दीनदयाल करुणासागर गावत चारो
श्रुति आदि अनाहद कारण ॥
सीतानाथ दशरथनन्दन दाशरथी
भक्तिहित स्वरूपधारन ॥
ज्ञानदास अनाथनके कृपासिन्धु
तुही जगत अधारन ॥

७४

कि कर आंखों हाल तेंड़ेनाल नेह
विच्चेजेहा दुखपांदा ।
रतदेहा एहा चन्द जेहा
मुख वेखनथो सानुहो निभांदा ॥

७५

बादर उन्ह आए सो पिय विन लागे डरपाए
एकतो अँधियारोकारी लागत डरावन
तैसेहि अवध वीतन लागे अजहूं न आए ॥
दादुर पिक मोर सोर करन
लागे विरहीतन लागे डराए ॥
तानसेनके प्रभु तुम नीके जानो
भलो सुध लीनो मोरे धाए ॥

७६

भैरौं भयहरता सुखकरता
सवनके अभय वरदाता ;
भैरवो अरधंग अरुण अङ्ग कोटि
इन्दुसम छवि दामिनि दुतिगाता ॥
वामकर खपर त्रशूलधर
गले मुण्डमाल नैना ज्वाल फिरत माता ;
वाणीवरविलास श्यामरामको दीजै
चारो फल अर्थ धर्म्म काम मोक्ष प्रातहोत जगत्राता ॥

७७

मुरली वजाय रिझाय मुखमोहनते
गोपी रीझ रहीरस ताननमों सुध
बुध सब विसराई
धुनसुन मनमोहि मगनभई
देखत हरिआनन ॥
जीवजन्तु पशुपच्छी सुरनर
मुनिमोहलिए सव प्रानन ॥
बैजू वनवारी मुरली अधरधारी
वृन्दावनचन्द वसकिए सुनतही कानन ॥

नैननको नहो परतहै कल कमलनयन
विनदेखे जादोनाथ व्रजराज ।
कालिन्दीके तीर भारी भई भीर वलवीर
वासुदेव वनवारीके कारण तजदई लोकलाज ॥
व्याकुल मलिन वदन सदनको न सुध रही
बुधिहर हरिलीनो कीनो वावरोसो
मरो न एको काज ॥
काहेको देर करी हरि मेरा वेर
वैजूको वेगिमिलो प्रभु मनमोहन
माधो सुखनिधान शिरताज ॥

७९

मोसों जो अवध वद गए सांझके भोरहि आए ।
ऐसी कौन चतुर नार जहा
तुम रसवस किए ऐसे नेहनए ॥
अधरन अञ्जन भाल महावर तिनतिलकठए ॥
तानसेन प्रभु जावोजो जावो नई नार रङ्गए ॥

८०

ऐसे कैसे वनेगो प्रीत रीतको मिलत नाहो मनलाय ;
कवहुं देखत वंशीवटमे ग्वालवाल
सङ्ग गैयन वनवन चराय ॥
कबहुंक तुम कुञ्जनते आवत रहतहो छैल छिपाय ॥
प्रेम रङ्गके प्रभु घरी पल छिन विनदेखे रह्यो न जाय ॥

८१

रैन गंमाय आएहो लालन
कहां जागे सारो रात वात कहो प्यारे ॥
नवकिशोर नवलतिया सङ्गो जागे
पासे अङ्गअङ्गके चिह्न न्यारेन्यारे ॥
सगरी निशा मोहि तलफत वीती
भोर भए आए ललारे ।
तान तरङ्ग रङ्गरस भीने कीने
नखचिह्न भाग जागे आज हमारे ॥

८२

चन्द्रवदनी मृगनयनी हंसगमनी
चलीहै पूजन महादेव ।
करलिए अग्रथार पुहपनके गुथेहार
मुख दीयरा जराए देवनमें देव महादेव ॥
सोलह शिङ्गार वतीसो आभरण
सज नखशिख सुन्दरताई छवि
वरनी न जाय है निरमल मज्जनकर सेव ॥
तानसेनकहै धूप दीप पुष्प पत्र
नैवेद्यले ध्यान लगाय हर हर हर आदिदेव ॥

८३

जिन करो मोसें झूठि झूठि वतियां
तिहारी प्रतित मोहि नेक नहिं आवत ।
वें तो लँगर कान्ह नहि छाड़े
अपनी वान वह सौतिनकं गृह जावत ॥
मेरे प्रतक्ष आयलाखन सोहैं खवावत
पग परम परस निज चूकक्षमा करावत ॥
वारवारको रिसावन तानसेन एनाहीं सोहावत ॥

८४

सोवत चन्द्रवदनी मृगनयनी
पिकवैनी मनहरनी चम्पकवरनी
गजगमनी वनठन वैठि रङ्गमहलमें ।
अधर विम्बधरो दशनन नासिका कीर
भ्रुकुटि धनु तन झलकत प्यारीके
सोना सम मुसक्यात सहलमें ॥

८५

प्रथमनाद सुर सुनी गणपति वुधदाता ।
जाकी कृपाते अनधन लक्ष्मी पालनकरि सवजगमाता
जोइ जोइ आवत मनफल पावत
सव गुणीयन को देत विधाता ॥
तानसेन प्रभु युग युग जीवो
चरणकमल रङ्गराता ॥

८६

शिव शङ्कर सव पिनाकी वामदेव
विरुपाक्ष त्रयलोचन त्रिशूलधारी ।
महादेव महेश्वर ईश्वर वृषभवाहन
मुण्डमाला फुं फुं फुं कारत शेष विषहारी ॥

८७

कौनसों रितमानी सांची कहो मनभावन ।
निशिकं जागे अनुरागे आएहो झुकनलागी
तव झूम झूम आएहो मोहि रिझावन ॥
वचन वनावत वन नहीं आवत
कहेदेत नैनवेन दरसावन ॥
तानसेनके प्रभु वाहीं सिधारो
जहां सारी रैन रहे रति रन जगावन ॥

८८

वेदुल्ला सरीक अल्ला अमो कुदरत
रट दुसरो कौनो रसूल जगत सुहाग
आप करतार करसुत हैदर दीयो नवीको ॥
तुम कर वसो सुधारो उमदको
दीन भजव तुम मदीन इलम आली
वहां हसन हुसेन दोउ करत सेवा वन्दगी ॥
हक आखदीन आंख दसा मुंदवाकर
जाफर काजमरजातको हकीतको न
कौनक वादो न अशकरी आश पूरणमे
हदी महम्मद हादी रदनुमा ॥

८९

है कालिन्दीपति प्रतापवरि
ओधातरी स्वरस्वती मिलभई त्रवेणी ॥
पीछेते आवत यमुना श्यामरूप
भरणा घोररूप वरषत पाषाण
तोरगो मानते चलि जमके वेनी ॥
अरुण वरुण सरस्वती गुप्तप्रगट होत
चन्द्रकिरण ज्योति प्रकाश पर छुवत भुज तेनी ॥

तैसे बनबन तेहु मिलन चली लाल अतिरङ्ग भीनी ॥
भागिरथी तूरी भगत तारण सगर उधारण साराणी ॥
सब भुव पावनपै धार तीरथ प्रयाग
बेतारी जलौधापति धरनी तरनी ॥
तीलों उत्पति नरनारी ब्रह्मा विष्णु शङ्कर
न्हावत करत अस्तुत गावत अरनाद तानसेन गुनी ॥

९०

वरषा ऋतु वनितावन आई ।
नैननिमें निरखत लगी सुहाई ॥
कञ्चनसो तलाअरु अलवेलीसी तरन
नई तैसी यहकेश श्यामवरण छटा छाई ॥
रहस बोल गरजन दशन चमकके धाई ॥
वदन ऐसो लागत मानो वदरी कैसो ॥
चहुं कीनो सोलह कला सम्पूरण भाई ॥

९१

भोरही आए हो लाल देहमहावर
तिलक भाल अरुणनयन अलसाए गात ॥
धन युवती जिन बिरमाए
तुमहिको कुञ्ज जगेहो जहां सारीरात ॥
पलनपीकरस अधर अञ्जनकी
बनरही विनगुण माल लाल चिनात ॥
कङ्कन गड्यो पीठ ऊपर
मुकरले देखो आप मुखराग
झण काहे बनावत सौसौ बात ॥

९२

आस पास सहचरी नूपुर झनकारकतर
चम्पाकी कली मानो फूलबे समानकी ।
सोंधेकी लपटजैबे दपटके अभिरनकी
वृन्दादिक वदन देखि उठत कुलगानकी ॥
झांकत झरोखनके परदा उतार देत
चरण आयलागो शोभा शतभानकी ॥
मिट गयो अमङ्गल भयो मङ्गल किशोरसुर
जगमगाय उठा महल आगी अब जानकी ॥

९३

दोउ अनुरागभरे आए रङ्गभवन
भागधन बिजुलीसी लखि लागत सहलहै ।
बैठे एक आसनपै एकसङ्ग एकरङ्ग
उठ्योनए रतिरङ्ग कोमल कहलहै ॥
एकनले अतर लगाय दीने दोउनपै छिरकत
गुलाब किए पंखे जो वह हलके लहै ॥
और लीने बीन सखीने अलाप कीनो
राग रङ्ग सुरपुर पुञ्जन ते गुञ्जत महलहै ॥

९४

नींदन आवत पिय बिन देखे
मोरी आली कैसे परे अबचैन ।
घरी घरी पलछिन योंहि बीत जात
रहत मारगजोहत नैन ॥

९५

चैन न आवेरी मोको
आली बिन देखे अपन पियको ।
एक पल अन्तर सूझत नाहीं दिन
एकहु कैसे समझाऊं अपने जियको ॥

९६

प्रात उठ चली प्यारीपै आपह
मनावनको नव सत शिङ्गार
किए वारे आभूषण पहिरे बनाए ।
प्रथम मञ्जन असनान कर
अञ्जन चखन दीन्ही अधर पान
सिन्दूर भरे मांग केशर कर कराए ॥
यावक पावन हाथ मेंहदी साह
अकावर सुगन्ध अङ्ग अङ्गलाए ॥
श्वेतसारी पुहुपमाल चोली स्तन
चूड़ीबांह गरे मुक्तमाल सुहाए ॥
सीस फुल श्रवणताटंक भुज बाजूबन्द फन्दसुहाए ॥
नथ बेसर सुधार कनककिङ्किनी क्षुद्रघंटिका
नूपुर बिछवानकी धुनि जे हरि सुनाए ॥

कृष्णजीवन लक्ष्मीरामके प्रभुको
रस वश कर नैनन सों लोभाए ॥

९७

तखत बैठो असनकीनो साहस कबन्ध
पण्डित धरो विचार अचल राज पायो ।
कनकदण्ड चवर छत्र रतन जड़ित
जगमगात सुर नर मुनि गुनी गन्धर्व्व गायो ॥
मृदङ्ग बजाय इन्द्रलोक देखन आयो ॥
ए समै जो वकस गजमुक्ता तरङ्ग देत
अरव खरव जैसे मेघभर लायो ॥
चिर चिरजीवो जलालदीन अकबर
चहुं चकसीस निवायो ॥

९८

माधो मधुसूदन मुकुन्द मुरलीधर मृदुहास ।
कमलनैन वासुदेव प्रवल वे पुरुषोत्तम
परमेश्वर विष्णु पूरण आस ॥
नारायण निराकार वामन विठल लछन
शङ्ख चक्र गदा पद्म सोहतहै पास ॥
पतितपावन विरदजाको दयाप्रतीत
औयमै रचौ मदनरायके नित आस ॥

९९

यशोदानन्द आनन्द कन्द गोविन्द
गिरिधर मुकुन्द मधुसूदन वनवारी ।
बद्रीनाथ वामन विठल वासुदेव
मथुरापति माधो मुरारि ॥
कमलाकान्त केशो कृष्ण कमलनयन
कृपासिन्धु करतार कूरम कल्याण कंसारि ॥
राधावर रणछोड़ रसिकराय रघुनाथ
रमापति रागसागर प्रभु रासविहारी ॥

१००

प्रथम अल्लाहो अकवर कहोरे ।
तू मेरे मन दूजे रसूल चितधर रे ॥
वेचुन वेचगुन वेसुवे वेचसुन परद
पोश दाना विना पाकजातवाहीको याद कर रे ।
ऐसो आलिम करीम करमको करनहार
जो सुध नित लेत तेरी निश वासर रे ॥
हिदायत अजीजको दीजै सम्पत संपत दीन
दुनी कुशल क्षेम तिहारे नामको आधार रे ॥

१०१

मेरे मन अल्ला अल्लाहु रटरे रसनाज्यो करे आय ।
निशि दिन ध्यान ध्यान और जप
मुरसदको यह सोख सीखले समधाय ॥

१०२

हजरत महम्मद रसूल अली वली
मखदुल ख़ाजे हसन वसरी ।
हजरत अवदुल वाहद बेनजैद
फजलवेनय आलम सुलतान
इवराहीम अधम करमकाम कीजै
मोपर साहजी फतुल मरारीहै वेरतुलवसरी ॥

१०३

वेचुन वेचगुन वेसुवे वेन मुन दुसरो
रच्यो महम्मद अचल आखर हकीक ।
मुनकीनो चारो यार वासि पात
वाक रार प्रथम सीदक सावत हजरत
अबूबकर सीदक उमर अमरन
अलहर मुलको पूरदीन पूर
दीनपूर मजव जैसे दरिया अगम अथाह अमीक ॥
कहत सुजान हजरत इमाम
पाक इमान नवी जूको प्राण चाहत
दितिन जीके अली वली साहव करम सेह
हाली करतहै जुलफकार मारफुक
रजीर किए महमदी वलमा कहायो
सवते मनायो वह दुहला शरीक ॥

जल थल वन घन और ब्रजबीथन
आय रोकत आङ्गन बैंड़ो ॥
नकाहुकी कान करत ना डरत
ऐसोहि उचगरो उमैंड़ो ।
प्रभु सुरतकी कहा खोरदीजै
आलीरी पै गोकुल गांवको न्यारोही पैंड़ो ॥

३

एही ग्यान रङ्ग ध्यान रङ्गे मन
रङ्गे सब अङ्गन रङ्गे ।
प्रथम रामकृष्ण रङ्गे रहीम
करीम रङ्गे घट घट ब्रह्मरङ्गे ॥
रोम रोम मनरङ्गे हरिसङ्गरङ्गरङ्गे
जपरङ्गे तपरङ्गे तीरथ-व्रत-नेमरङ्गे
सर्व्वमई अङ्ग अङ्गरङ्गे ।
जीव जन्तु पन्नग पशु एक ईश्वर रङ्गरङ्गे
सुर नर मुनि मङ्गरङ्गे बैजू प्रभु कृपारङ्गरङ्गे ॥

माई काहेको कही अबही जो मोहि
जिन बरजो लाल तनकोरी चितवो ।
मनमोहन प्राणेश्वरकी छवि रीझत
अति मति गति सुध बुध बिसारी
सब अजहुं भूल जैहैरी तोहि सिख देवो ॥
लगनसों फल ताको कहा कहिएरी
अब लोगन सुन्दर सखि भायो प्रेमबीजको बोहैवो ॥
परम रुचि रही साहजहां तिनको पञ्चमरङ्गते सरम
अपबस करके मति गति मनहर लेवो ॥

५

बार बार बरजी मैं तो यह कौन चतुराई ।
ज्यों ज्यों साहकी मया त्यों त्यों सबही
मिल चलिए याहिमें बड़ाई ॥

६

इत भांन उत साह अकबर दो दरस
जो देखे सोई होत पवित्र
इन्दें रजनि मन्द सुरनके बरपावैं गुपत आनन्द ।
वे तिमिरहरण ए दुखभञ्जन
ताकि सौंहें करियत साहदिनों मकरन्द ॥
वह सहस किरणप्रकाश कीनो
अतिबुध श्रेष्ठ मया धर जगवन्द ।
तानसेन कहै कहांलौं अस्तुतकरे
काटनहार विकार दुखदन्द ॥

७

करम कर करीमतू सत्तार गफार अधार वन्दको
रहनुमा तूही पाक परवर दिगार मौला ।
जोड़ जोड़ मांगतहूं तुमपैसोइसोइ सब हुकम होए
सिद्ध सिद्ध नवनिद्ध वही दुनियां
दीन ईमान सहत और जौवन में
सुख सम्पत पाऊं अश्गाऊं नाम तुम
गुन रहीम मौला ॥

८

लाय देखावोरी माई प्यारेको चरण ।
श्याम विरह मोहि व्यापतहै वाहीकी शरण ॥

९

कौनमें रितमानी सांची कहो मनभावन ।
निशि की जागी अनुरागी आंखे
भुकन लागी तब तुम आए मेरे वचन बनावन ॥

१०

महम्मद नवी हबीव अलहक साहमर्दान
अली वली मरद कुफर दारिद्रहरण
हजरत हसन वुजरक इमाम ।
संसारके साहव हुसेन सैयद साहजादे
जैनलाबदीन दीन पर्णी महम्मद बाकर
करतार कीनि मनचिंत करन काम ॥
हजरत जाफर सादक सांची मौदक
इमाम मुसिकाजम हजरत अली
बिन मुसी रजा जाको दरस देखे जाय दारिद्रदाम ॥
हजरत तकी अलीनकी हजरत हसन असगरी

इमाम महम्मद मैंदी साहब जमान
दे सुख सम्पत सन्तत राखो त्रिहुलोकमाम ॥
पीर निजामदीन औलिया तू
सत्तार परवर दिगार करीम रहीम
दरीयाई पीर रोसन गाजीधाम ॥
हैदर रसूल गोम कुतवदीन अल्ला फकीर
तानसेनको दीजै रागरङ्ग तीनग्राम ॥

११

माई काहेको कान्ह अबही जो मोहे
जिन वरजो लाल तन काहे चतुर ।
मदनमोहनेश्वर पारकी प्रीति मनगति सुधविसारे
भूल जाएरी तोहि सुखदाई अतुर ॥

१२

मान काहेको कीजै औराधे रसके कुंवर रसभीजे ।
नवल कुञ्जनमें नागर वनमागर
तेरोही ध्यान लाडली लाडलडाए लीजे ॥

१३

मुरली बाजे राजेहो मुखमोहनके
गोपी रीझ भीजरही रमतानन ।
दूरहित धुनसुन के आई भई मगन मनदे कानन ॥

जनम जनमको मैं मान ठानोंगी
अलिजो छुटाय जानो गिरिधारी
ताहि अवगिनहूँरी चातुर अत ।
अपनो मों हमनो तुम मेरोहु जानत
समझ न सकत गाढ़ो मान होत कौन जुगत ॥

१५

राम हम योंही भले अब योहि भलेहोरा० ।
जो गत गई सो गत आई तुमारी
सेवासों अबमोहि तो रैन दिन यह कामरा० ॥

१६

प्रथम आदेश गुरुको गुरुके परमगुरुको ।
रैन कारन प्रभु एक सहस सखो महिमा
गावै अब यह विधि दूनों दुन अतपति सुरको ॥

१७

अञ्जन रेखता टक लाईरी
लोल मिला वर केलकोए ।
युगल कमल मध ऐसे लागत
मानो सोभा देत मीमलो लोक दिए ॥

१८

लोचन भूम रहेरी हरि सङ्ग
जगत कमलकोन भए मृगज्यों लजायगए
मफरि दुरि देखत खञ्जन भाजत ।
तिय सब केलिचमके
चाखे हंसहंस कानकोने लागत ॥
जीवन गिरिधर प्रभु प्रेमसमुद्र-
तरङ्ग झकोरन साजत ॥

१९

अपनी कहि और पियाकी कहो
एरी तोपैं वात कहीन आवे ।
पिय जिय की न पावै एते परमोहिं
खिजावै दुतीहोके आवे पैं सोहाग न जनावै ।

२०

रैन गवाय आए मेरे प्यारे सब निशि जागत गई
नैननमें नींद भरे आलस जंभात गात
काहू त्रिया रस वस कारलई ॥

२१

लालके सङ्ग ललना रैन जागी और लाललोचन
लागोहि आलोरी मानों वधु पसीठे ।
ता मधपुरी ऐसी शोभा मानों
भवर लपटात उन मध उड़ परे रङ्गम भीठे ॥

ध्यान भौंह पलक मध बरनी
ऐंच खेंच लेगो अतिचतुरायो बान ॥

३९

प्यारी तेरो प्यारो आयो प्यारी
प्यारी बातें कर प्यारेको मनाइये ।
अनेक भांतन कर प्यारेको रिझाइए
आली ऐसो प्यारो कहां घर बैठे पाइये ॥
लाइए समुझाइए कौन भांतन
कर सुखदे बुलाइये ।
साह बहादुर तेरे रसबस भए
अनरस कर कर सौतन हँसाइये ॥

४०

अधरन लालोसों कहुं कहुं रही मानों
धरी लालचूनी ।
पीतम मिलके चीन दरपन ले देखत
याते मुसक्यात छबि भई दूनी ॥

४१

प्रथम नाम लेने मन मेरे अल्लाहो अकबर ।
और जे जे बातें विकार तन मनते दूरकरो ध्यान
येहे जीकर कीजे हरदम एक तकबर ॥
जिन तोको ऐसो कीनो दीनो पीड़प्राण
रच्यो ते क्यौंन वकबर ।
रहीम करीम सत्तार जब्बार सांचो जाके
दीउसमें निज लगो नित खबर ॥

४२

लोचन लाललाल सबनिश जागे हो कौन सङ्ग ।
झपकत प्यारे तुम्हारे और शीतल
देखियतहै अङ्गअङ्ग ॥

४३

या हैदर करारसाहब जुलफकार मोहे निस्तार लोजे
स्मरण जपतहुं तिहारे नामको ।
इतनो अरज सुन लीजे जगमें रख लीजे
लाज काहु कोक कीजे मोहताज अक्लके सम दीजे
आसरखतहु तुमतें कौशरके जामको ॥

४४

दम्पत क्रीड़ा करत अनेक
कौतुक निशा बीती रैनसारी ।
युगलकिशोरी मानों मुखहुन
बोले जबही पिरात तबही कसकत प्यारी ॥
कबहुं लेत हसाय हसाय खिजाय
रिसाय रीझ रीझ हंसत दोउ भागे ॥
यह प्रकार विक्रमसाह रीझ देखो सखीए हारी ॥

४५

तार पखावज बाजे आवज धावज मिलत
पटावज नीको नीको घातसों ।
बीण रव्वाव सुरबीण सुरमन्दर और
तकीतान बीनत कीमतसों ॥

४६

निशि दिन हसत बोलत डोलत तेरोही गुण गाव ।
तें कहाकीनों मजनीरी डर पूजिए गोरी तेरे पाव ॥

मोसों जो अवध बदगए सांझको
भोरही आए ।
ऐसी काहू चतुर नार जहां तुम
रस बश किए ऐसे नेह नए ॥

४८

आजकों जग आए पाए मैंतबही
बात करतही तो तराए ॥
ऐसी कौन त्रिया सङ्ग तुम विरमाए
अबभलो मनावन आए ॥

४९

प्यारे तुही ब्रह्म तुही विष्णु तुही रुद्र
तुही गुरु तुही चेला ।
तुही जल तुही थल तुही प्रबल
तुही अबल तुही गैल तुही अलबेला ॥

तूही ऊंच तूही नींच पापपुण्य
तूही बीच तूहीमो मिला।
तानसेन कहै प्रभु कहालों बखानूं
तूही बहुत तूही अकेला॥

५०

हजरत पीर मूरतजा अलीजी हौं
सेवक तुमारो नितको।
हौं माङ्गत तुमपे इतनो इच्छा देय मेरे छिनको॥

५१

ए डरपावे मोहि यह ज्ञान पिय दिदेश गवनकीनों।
एकतो अंधारीकारी विजुरी चमकं
दूजे दमक दमक विरह जगावे॥

५२

कान्हाते अब घर झगरो पसारो
कैसे होय निरवारो।
यह सब घेरो करत है तेरो रस
अनरस कौन मन्त्र पढ़ डारे॥
मुरली बजाय कीनो मन बोरि
लाज दई तज अपने अपनेमें बिसारो।
तानसेनके प्रभु कहत तुमहि सों तुम जिनों हम हारो॥

कान्ह ओलर आयोहो वन जिम बरसन
लागो रिमि झिमि रस बुन्दन।
मुरलीको धुन मोई गरजन तर
फन तड़ित मुसक्यान दशन
ओप वकपंख ग्रीव रह्यो पुहुप गुन्थन॥

२

हलकिन हलकिन रोवतहै
हरिकहा खिजाई।
हौंजो अकेलीसी करपाई
बहुतही अधकाई जाके असु
अनंत हात धोवतहै माई॥

उमड़ जोवन घन आयोहो ता संग
दामनी क्रान्त मोई दशन झलक
कोकिला ग्रीव किलक मानों वैस वयार लेआई॥
कविझकोर बरसत चहुं ओर कुच धुरवासे
लागत तन इह विध बरषा रित आई॥

८

निसागमपधधपमगरेसानिधपपधनिसारेसा
निधपमधनिसाधनिसा।
मगरेसानिधमानिनिधधपमपपमगमगरेसा॥

भैरव—सुरफाकता

१

एक ॐकार निराकार जाको सब जगमें विस्तार।
यह प्रतच्छ देव भयो प्रतीत ताको सुमरो बारम्बार॥

२

प्रथम उदीपन कैसे होत कौन राग
कौन सुरते आज स्वर जगाइए।
सारेगमपधनिसा सप्तसुरनके
भेद भिन्न भिन्न करके समझाइए॥

रङ्ग जुगतसों गाय सुनावे ताल मूल सुर संगत लाव
दुगन तिगन चौगन सो भेद बजावे
जब लागडाट परमान देखावे॥
अपने मुखते न गुणी कहावे
तालमूलको ब्योरो न पावे।
तानसेन कहै होवे गुनीजन
छत्रपति अकबरको रिझावे॥

हौ ॐकार महादेव शङ्कर तुम
सकल कला पूरण करत आस।

निहचेहीं धरत ध्यान सुमरन रमन
माज देखत दर्शन गई त्रास ॥
हरे दुख दन्द मोहत जटा गङ्ग
कण्ड माल गले सोहे वाघाम्बरवाम ।
हर हर करत हरे पाप मिटे सकल
दुख सन्ताप लहे राग कुमाम ॥
तानसेन सेवा ध्यान कर मन
इच्छा फल पावे होत कैलाम निवास ॥

भैरव—झपताल ४

१

प्रथम नादमूलते उचरे ताल
वन्धानमों गावेजा आवेसो सम परे ।
सप्त स्वर तीन ग्राम इकइस मूर्च्छना
वाइस सुरत उनचास कोट तान भरे ॥
उरपति रप लाग डाट अंशन्यास
ग्रह आनक खानक खगालक उडप खाड़व उचरे
कहे बैजू बावरे सुनोहो गोपाल यह
विद्या अपरम्पार गुण चरचामों लरे ॥

२

एक बल निरङ्कार दूजे बल चन्द
सूरज तीजे बल लोक चौथे वेदप्रकाश ।
पञ्चबल भूत आनम छटए बलो
नारायन सतए बल सागर अठए बल
अष्टभुजो नवए बलो नवकुली
नाग दशए बल अवतार प्रकाश ॥
अग्यारह बल रुद्र एकादश बराह बल
वामन तेरहे बल तईलोक चौदह बल
कहे विद्याप्रकाश ॥
पनरे बल तिथि सोरह बलो सिङ्गार
सत्तरह बल सत्यावती अठारह बल वनस्पति
उनबीस बल पिनाकधर बिसए लच्छो
अकइश बल तानसेन प्रकाश ॥

शिव महादेव त्रिशूल पिनाकधर जाके
जटा मध सुरसरी आगाके विविधभूषण
गिरिजाके सन भाईया कईया अङ्ग अङ्ग अङ्ग्या ॥
ए जगदीशदा स्वहर लिए वृषभवाहन
अतदीयत तदीय अतदीयतर्गे आईया
सदन दोकाईया आईया चतुरङ्ग अङ्गमो
शम्भु नाचइया ईश निराट हैया
तोए ऐऐऐऐया तोओईया ३ शिव ॥

अश्वपति गजपति नरपति भुवपति
चक्रतावली चक्रतारण ।
दारिद्रहारन चिन्तामणि सरज शशि उरगन
भुजबलभीम हर तेरो बाम दान मसान कलोकरन ॥
राज माजाके तुव समान इन्द्र
भण्डारे कुबेर आयो तुव शरण ॥
अपबल बलो अचल रहो जलालदीन
अकबर साह जोगी ता नाम मधु अधरण ॥

५

त्रिविध गामनी त्रिभुलोक उधारणी
तईतापवारणी ततछिन गङ्गे ।
तई देवमणि त्रिस्रोता तारणी पापहरणी
ताहि ताहि तईलोचन तई तवेणी सङ्गे ॥
सुरनदी सुरेश्वरी जाह्नवी गङ्गा
सन्ताकनी त्रिपथगा अङ्गे ।
भागीरथी पवित्रा हरशेखरा
विष्णुपदा सुरदीर्घिका भीषमसुविहङ्गे ॥

६

प्रथम नाद मूल ते उचरे ताल वन्धानमों गावे ।
सप्तसुर तीनग्राम इकइस मूर्च्छना वाइस
सुरत उनचास कोट तान लावे ॥
अंश ग्रहन्यास विकृत द्वादशभेद
सो भरत सङ्गीत हनुमत् जतावे ॥

काहे बैजू बावरे सुनोहो गोपालनायक
ऐसी विद्यासो को लरे पाहन पिग लावे ॥

भैरव—ब्रह्मताल

नील-नीरज-वरन तन श्यामसुन्दर वर
त्रिभङ्ग कटितट पीताम्बर राजत मनि नूपुर
नाचत सुरङ्ग ब्रह्मताल प्रवन्ध थुंनुनु
नुनु नुंनुंनु दिग दिग दिग दिग थेइ थेइ
तथेइ थेइ भुनु नुनु भंना भोंता भां भां आनन्द-
नयनानन्द सम सानिधपमानिनिनि
धपमपमपमपमगरेसारेगगमरे
गरेगमपमपधपिगमगममप
त्रान् तकट भ्रकट् मुकी थं कीत् कीट भें त भां
डिगीडगी स्वररथररवभ्जेटींको
थेइ थेइ तत् तत् थेइ थेइ ताधी लाङ्गधा ॥

भैरव - रुद्रताल

शिव स्वरूप पञ्चानन त्रिपुरारि त्र्यलोचन।
वृषभवाहन जटाजूट चन्द्रभाल सिरगङ्ग अघमोचन ॥
एक कर त्रिशूल एक कर डमरू
अङ्गभ भूतसङ्ग विरोचन
कामदहन कैलासेश्वर राग-रङ्ग-गुण
गावो करो ध्यानसोचन ॥

ब्रह्मताल

१

श्याम प्यारी तेरे नयना अतिही सलोने।
मनमोहन को रस बस कीनों डारो टोने ॥
केहरि कटि कदली जङ्घा नासिका कीर छोने।
श्रीफल उरोजन कमलनयनी तेरी छवि कोने ॥

२

जय जय ब्रह्मा आनन चारो वेद प्रगटकीने।
श्रीभगवान नाभ-कमलते हुए रङ्ग भीने ॥
चार प्रकार जीव अण्डज उद्भिज स्वेदज अङ्गज लीने।
कर कमण्डल हंसवाहन सावित्रीसङ्ग लीने ॥

लक्ष्मीताल

जानीमें जानी जहां रितमानी
श्रीपत श्रीधर प्रणतपाल गोपाल।
अवधवदके मोसे अनत विरम रहे
निय जियभाए कवन वचन प्रतिपाल ॥

रुद्रताल

शिव शिव शिव शिव शङ्कर शम्भो
पशुपति गङ्गाधर उमापति रुद्र नारायनदेव।
नीलकण्ठ त्र्यईश्वर कैलासी काशी निवासी
रूप बहुरूप त्रिशूलधारी भैव ॥

विष्णुताल

चतुर्भुज शङ्ख चक्र गदा पद्म कीट मुकुट सोम
कण्ठ कौस्तुभ मणि साजे।
लक्ष्मीसङ्ग सोहै पीतवसन गरुड़वाहन
जय जय विश्वरूप स्वरूप शोभा राजे ॥
उर भृगुलाञ्छन कमलनयन करुणासागर
जय जयकार सुर नर मुनि करत नमत
अज शिव इन्द्रसमाजे।
श्रीधर श्रीकर श्रीवर लक्ष्मीपति नारायण
नरोत्तम विष्णु त्रइलोकपति तूही जगभ्राजे ॥

भैरव—धमार ताल

दीननाथ मुकुटधरे माथे
माधो झुकरहे कदमको डार।
तक तक गेंद मारत नारिनको
कर गहे झकझोर डारत गरेमार ॥
दामोदर गिरिधर जिन करो ठठोरी
जिन मोरो मुख दूर करो रार ॥

२

तापर तू करन लागीरी यह बात एक
तू वाको कन्त लियो परचाय।
गिनत न काहू अपने आगे ऐसो तेरेही घर आय ॥

निस दिन हंसत बोलत डोलत
रहतेहैं तेरोही गुण गाय ।
ऐसोतें कहा दीनो सजनी भर पूजो एरी तेरे पाय ॥

३

लाल बरसाने भोरही आए ।
कौन बाम हित चितसों चाहे सगरी रयन जगाए ॥
ढिग ढिग काजर फैल रहोहै
जावक अधिक सोहाए ।
तानसेनके प्रभु वहांही सिधारो
नवल तिया मन भाए ॥

४

ऐसे देखियत लालन जागे भाग
हमारे आज रस भीने ।
एक वसन्त जान सबको उतै देखत
ऋपातें कर सुगन्ध नवीने ॥
उदे भए गर्भदोउ औरोते आए
अञ्जन अधर लगाय लीने ।
सदा रङ्ग महम्मद साह छन नायक
यातें मन बस कीने ॥

५

एरी मोंपै वा हरि बिन रहो न जाय
बिन देखे कछु न सुहाय ।
घरी पल छिन युगसे बीततहै
वाको सुरत मन लाय ॥

भैरव—सुरफाकता

१

प्रथम कौन राग कौन सुरत कौन मूर्च्छना
कौन ग्राम कौन सुरनतें आदि खरज गाइए ।
सारेगमपधनिसा सप्त सुरनके भेद
बयान कर समझाइए ॥

२

गन्धर्व्व किन्नर गुणी अकारथ जनम
जात एरी सुर नर मुनि जिन ।
सुनि सुनि घटत वादि जात ऐसे
भूल रहे भर साधनको वहि रैन दिन ॥

—०—

ख्याल

भैरव—तिताला

अब तुम जागो क्यों न मोत पिय रब्बा
हमरी प्रीत तुम सन लागी ।
नींदके मातें साहआलम सूर जनु
बाग वनवा सगरी रैन रङ्ग रस पागी ॥

भैरव—चतुरङ्ग तिताला

चतुरङ्ग रस लिए गावो बजावो मृदङ्ग
तक्धि लाङ्ग धुमकट तक्धा ।
दारा दीम दारा दीम् दीम्तन
ननन तुम् तननन तुम् तननन
सारेगमपधनिसानिधपमगरेसा ॥

भैरव—धीमा तिताला

१

जागे नगरके लोग कैसे आऊं
तोरे ढिगवा अब भई भोर ।
मोत पियरवा अपनो उमगमों
सौतन को भयो जोर ॥

२

झूठे है विश्वास कर मान पाप्रा फेर
हरिभजनसों प्रीत कर ।
कहावत खेलरो ए अनारी चलेहु न जाने
हारतहै बाजी तुम आन बूझि रीत कर ॥

भैरव—जलद तिताला

आए तुम भोर हमारे ।
सांची कहो प्यारे कौनके रैन जागे
डगमग पग धरत धरनीपै
आलस अङ्ग अङ्ग झपकात दृगवारे ॥

भैरव—तिताला

१

नित सुमरन करतहै ए सखि ए तिहारे ग्रहन
मों मन नयनको सुखदीजै ।

महम्मदसाह पिया इतनो मिनती मोरी
सदा रङ्गकी सुन लीजे ॥

२

तुम्हारे मिलनको मैं आई दौर प्यारे
तोरे औरेसे लागी दरशनकी ।
सुन्दर सूरत जबते देखी
तबते तपत गई बरसनकी ॥

३

मैं तुमसे न बोलोंगी प्रीतम प्यारे
तुम औरसों लगाई प्रीत ।
हमसे अवध कर अनत रहत हो
तेरी भंवरकी सी रीत ॥

४

निश जागे रस पागे बतियां नयना घूमघुमारे ।
कौन बालको अधरसुधर मध भए पिया मतवारे ॥
आवन लटक मटक भावनसों लटपटात अङ्गसारे ।
सखि शिङ्गारलो भई बावरी तुम जीते हम हारे ॥

५

महम्मद रसूल अरु बीसौ नबीयनको शिरताज ।
दीनों अलहवलो अलीसो मार कर कीनो
जगतको राज ॥
जिनको नाम दोउ जहांनमें रोशन
रङ्ग रङ्ग आदिलों आज ।
रफीय सफी-कुल आलमको सँवारत दीनके काज ॥

६

मौला करम कर करीम तूही सत्तार जवार ।
आधार बन्देको देहु न्यामत तूही पाक परवरदिगार ॥
जोड़ जोड़ मांगत सोड़ मोड़ हुकुम होत
और दीन इमानसहत और जीवनमुकत सुख सम्पत
पाऊं गाऊं तुअ गुण रहीमही गुनेगार ॥

७

तिन मध खेलत लाल भंवर मानों
फली फुलवारी अधरनकी लाली
बन ठन बनिता आईसो पिय मनभाई ।
एकसों नैन सैन एकसों मीठे बैन
एकनको पाछेसे अंकन भरत छवि भई
दूनो दूजे राग हिंडोल मिल गाई ॥

भैरव—चौताल

१

आज सखी लखी मनमोहनो मूरत माधुरी
सुन्दर चतुर सुजन कान्ह ।
सीस मुकुट श्रवण कुंडल घुंघवारी अलक झलक
चलत चाल ठुनक ठुनक अधरन मुरली बजाई तान ॥
भूली सुध बुध सब गृह काज डार दियो बिसरि गयो
खान पान लखि मनमोहन चतुर सुजान ।
बैजू बावरो रावरी करडारो मोहि
न सुहात आन त्याग दई कुलकान ॥

२

आज सपनेमें सांवरो सलोनो सूरत देखी
सैनन करी मोसों बात ।
तबते मैं बहुत सुख पायो जागत भई परभात ॥
मधुर बचन बोल मदन मन्त्र पढ़ डारो
उन बिन छिन पल कछु न सोहात ।
बैजूके व्रजकी नारी जन्त्र तन्त्र लिखि सारी
कल न परत गात सब दिन रात ॥

३

आलीरी भोर हो आए गिरिधारी
सङ्ग प्यारी कुञ्ज भवन बसे रात ।
श्रीकृष्णराधिका सकल गुनसाधिका
मुदित मन मुसिक्यात ॥
बीरा परस्पर देत सुखनमें
डारत पीक लीक रङ्गभूमिन रङ्गात ।
धोंधीके प्रभु श्यामाश्याम आवत
ललितादिक कहे बात ॥

४

भोरही आएहो मनभावन
कवन नवल तीय सङ्ग जागी ।

अधरन पीक लीक तोतरात बैनन
नैनन सैनन लागे ॥
सांझ अवध बद गए रहे अनतही
सबनिश कहांतुम पागे ।
बलिहारी वारों गिरधारी सुन्दर मुखपै
प्रातही आए मेरे आगे ॥

५

ए मन भोरही केशव कृष्ण कहिए
लइए श्रीहरिनाम ।
गोविन्द गिरिधारी मधुसूदन वनवारी
जगन्नाथ जगकेधाम ॥
मुकुन्द माधो मुरारि विहारी वामन बैकुण्ठ ठाम ।
श्रीबिठल वासुदेव द्वारकानाथ बद्रीनाथ
राम नाम भक्तवत्सल पूरण काम ॥

भैरव—सुरफाक्ताल ।

अब याद कररे बन्दे अल्लाहको
जो कुछ तेरा होगा भला ।
निशि दिन ध्यान करो वाहीको याही तू भान भला ॥

रुद्रताल ।

रुद्रदेव त्रिनयन अरुण जटा पिनाकधर नङ्गे ।
शिवहर गिरिजाधर वर नन्दी वाहन गौर अङ्गे ॥

भैरवी—ताल फरोदस्त

सागमधपमगरेसागरेसानिधपमधनिमारेगरेसा ।
रेगरेसाधपधनिधधनिधधपमगमपधनिमा ॥
रेगरेसारेनिपमगरेगरेगसानिधप
मगमपधनिधपमगरेरेगमगरेसा ॥

भैरव—तिताला ।

१

कहियो प्यारेसों इतनो बिनती मोरी ।
मो जीयत जिनबिसारिए
मैं हौं जनम जनम की चेरी ॥
मोहिं कामसो आय बनीहै जैसे नारन छेरी ।
साह विक्रमके चरण परसत होत वटरजे हेरी ॥

२

कटि पीत पट गहे कंटका अङ्गअङ्गनमें
जाय निशिही खड़े वनमें ।
पटि किधौं कहुंग्वारनसों भई खाई दधि छिड़ाई
ताके शिखरन करण लागेहो तनमें ॥

३

मोहिं तुमारे दरबारको आसरा
मेरी शरम अब तुम रखलीजे ।
इतनी विनती तुमसों करतहौं
मोहिं सुख आनन्द दीजै ॥

४

मौन दीन अनलहक चिस्ती सांचे महरबान
ख्वाज कुतबउद्दीन सेखफरीद मफरगंज ।
महबूब इलाही नाजामदीन तैसेही मुसकल
आमान सेख नसीरउद्दीन दुख भंज ॥

भैरव—जलद तिताला ।

हजरत रसूल मखबूल अपनीकृपातें
मो मन चिन्ता दूर कीजे ।
दीजे बहु भांतिनको आनन्द सदका
अपने मुरसद ऐनका सुखरीजे ॥
तुरत सुधालीजे आय आशाहै दुखदारिद्र
जनमलों जाय पाऊं ईमान औ लाजगुण प्रान
धन सेवकहूं तुहारे हसनैनका सुखभोजे ॥

भैरव—तें वडा ताल

१

गरुड़धर गिरिधर गजाधर सुदरशन चक्रधरणं ।
जय जय माधव मधुसूदनं परमपुरुष पातकहरणं ॥
दैत्यदमन दामोदरं स्तुति अपरंपार दारिद्रदरणं ।
कमलनयन कृपाल केशव कंसअरि करुणाकरणं ॥
विश्वनाथ महीधरन खलदहन कृपाकरणं ।
अहिशायन औ खलवन्धन कालीमर्दन गिरिधरणं ॥

आदीनाथ जगपति जगउद्धारण जगज्जीवन
यमुलार्ज्जुनतरणं ।
अपरंपार अलख निरञ्जन आनन्दघन निस्तरणं ॥
दीननाथ दयालसिन्धु सन्तसिद्ध सेवत सुर
भुवके भार उतारणं ।
भक्तवत्सल धर्म्मरचक करतार कुरम करुणाकरणं ॥
गिरिपतिके प्रभु अगम अगोचर निरञ्जन
निराकार सोई साकार सृष्टकरणं ।

२

तिय प्रवीण परम चतुर मोहन सूरत नागर
रोमरोम सुन्दर ।
नेत्रकमल सुआ नासिका श्रीफल उरोज
कटि केहरि गर्भ गञ्जन पुरन्दर ॥

३

देवमणि दिनमणि भान दिन कहाँसे तिमिर हरत
रैनि तपनि त्रिगुण द्वादश आत्म नेत्र मार्त्तण्ड ।
हस्तरश्मपुषा जगतारण जनचक्षु जगवन्दन
पापहरण प्रचण्ड ॥
सूरज सुर सहस्र रहत तू बैजानपति
अगति तू अगति सप्तदीप नवखण्ड ।
रसनिधान सेवकको दीजे सुदृष्ट कीजे
दीजिए सुर ताल अखण्ड ॥

भैरव —सुरफाकता

प्रजापति द्विजपति आदिदेवपते जगत्पति ब्रह्मा ।
सावित्रीपति चारु निगमपति हंसवाहनपति ब्रह्मा ॥
षड्दर्शन सृगुपति कहियत चतुराननपति
चतुर करमा ।
कर उन्न युक्त याचक जन बैजू नित उठकरे
परकरमा ॥

चउताल

त्रिपुरारि त्रिशूलपाणि शिव शङ्कर सानो ।
डमरु डिम डिम कर नीलकण्ठ फुङ्कत फनेश
चन्द्रभाल कटाक्ष जटा-गङ्गापानो ॥

तिएअवै तिएअवै तियाऐया तिएऐया तिएऐऐया
आआआआआआआआनो ॥

भैरव—सुरफाकता

त्रिपुरारि गरीबनिवाज निवाजन समरथ
पूरि रह्या सब धाय धाय ।
जे तुम्हें ध्यावें मन इच्छाफल पावें
तिहारोही गुण गाय गाय ॥
सुर नर मुनि ध्यान धरतुहैं तिनहूके मन पाय पाय ।
तानसेनके प्रभु तिहारी अस्तुतिकरु
तिहारो ही मन भाय भाय ॥

भैरव—लक्षीताल

जय लक्ष्मी रमा कमला करुणामयी पद्मजा दधितनया ।
जय महाराणी विष्णुपदसेवनी जगज्जननी
जगनिस्तारिणी जगमोहिनी रूपया ए तियाई ॥

भैरव—चौताल

जय लक्ष्मीरमणा कमलाकान्त श्रीधरभूधर
गिरिधर नरहरिरे ।
नारायण नारसिंह नरोत्तम निराकार निरञ्जन
निरधार भक्तवररे ॥

भैरव—झपताल

साधपमगमनिनिधपगमपमगरेसा ।
सारेगमपमगरेसा बाजत रसबीण सारेगमगरेसा ॥
अतिही आनन्द भरे नृत्यकारी नृत्यकरत
उरपति रप लाग ठाट गतिते सुरबीण सारेगमगरेसा ॥
रतन-जड़ित सिंहासन तापर बिराजित
आदिजोत निरङ्कार जगत नाम छायो
मन वच क्रम ध्यावे
रहत सदा चरण शरण युगराज दास गतिले प्रवीण
सारेगमसा ॥

भैरव—टप्पा ताल मध्यमान तिताला

मैंडे वैंडे नुआमीवे तैंडे घोलघतिवे
नित उठ जिंद तपदी रहंदिवे ।

तैंडे खातर अपनेंपराए लोक देसाई
तैंडे नु चह दिवे ॥

भैरव—एकताला

१

सोना तैंडो बांकी अदासो जीयडर दावे
मैंडा पलक तेरो तिरछो तरवार ।
बांको तैंडो भौंह कटीली मनरङ्गवर चस्म खुमार ॥

२

जगतनुपालदा वो रामराम जगतके बिसराम ।
तेरी महिमा कहालों बरनूं पतित पावनहै नाम ॥

३

गरीबनुपालदा वो यार रब गरीबनिवाज ।
तैंडी महरदोमें कि गल आखांमहर मसवदे
दिवो यार रबगरी ॥

भैरव—तिताला

१

बांके नैना वालो आवे मैंको करा ।
मायल कर सानु घायल कीता बुराबुरा
कार पालोआवे ॥

२

पिय मेरे आवत हो रङ्गरङ्गाए ।
धित्ता धिर किट तक् तक् धिर किट तक
धिधि किन् किट् तक् तक् धिलांग
धिधिकनधर मृदङ्ग बजाए ॥

३

पिय तुम वहांही जावो जहां सारी रैन जगाए ।
रातके उनींदे जागे आंख खुमारी हैजू
तुम भलेजु भले सङ्गरङ्ग आए ॥

४

पीत मनकी तुम जानो मोरे हरे
नारायन कृष्ण मनहरण ।
मनरङ्ग सुधबुध जानत हो सब तनकी
जगत पोषण भरण ॥

५

कान्हरे आज मोरो बहियां मरोरी ।
पनियां भरन कैसे जाऊं मोरी सजनी
लाज काज जिय मांझ भरोरी ॥

६

हैं सब घरके जागे प्यारे भोर भई
जिन बांह गहो पाय परूं मैं ।
धीर धरो बलबीर बबाको सोंह करतहौं तुमसों
फेर ऐहों लला जिन आन करो ॥

७

निधनिधपधपमगपमगमगरेगरेसा ।
सारेगमपधनिसासानिधपमगरेसा ॥
धधनिसारेसानिधधनिसारेगम ।
गरेसानिधनिधपधपमगमगरेनि-
सारेगरेसानिधपमग ॥

८

करीम रहीम बन्दए निवाज पाक परवर दिगार ।
जित देखो तित तुही भरम रहो तेरी कुदरतको
कोउ न पावे एराज नियाज ॥

९

हरि मेरे आएरी ब्रजराज मांपर मया कीनी आज ।
धन घरी पल सायत सजनी जित देखूं तित
मोहन प्यारो गए दुख दारिद भाज ॥

१०

हजरत महबूब इलाही निजाम दीन औलिया
जर जरी बकस ।
ख्वाज कुतबउद्दीन सेख फरीद सकरङ्गज अमीर
खुसरो गंजबकस ॥

११

घरी घरीमैं रही निहार मोंपै मयाकर आए आज।
निश दिन तेरो याद तोहिंसों लागो
चित जित तित नित नयो लाग्यो ध्यान तेरो
तुम्हारे आवनतें गए विरह भाज ॥

१२

मौनदीन मौन लाक चिस्ती सांचो मेहरबान।
ख्वाज कुतबउद्दीन सेख फरीद सकरगंज महबूब
इलाही निजामदीन तैंसे हो मुसकल आसान
सेख नसीरदीन सोआव ॥

१३

साहनसाह दीनदुनीके विन अबताल
अल्लाय वली आल्ला।
फजल करम कीजे मोसों आज जप रया वसीया
रसूलिल्ला ॥

१४

रैन गंवाय आए हो मेरे प्यारे सब निश
जागत अलसाई।
नयनमें नींद भरे आलसमें जभात जात
रम बम भए लोभाई ॥

भैरव—ताल सवारी

१

बाजोरे बाजो मन्दिलरा शुभ दिन शुभघरो
लालन घर आज।
सब सखि बनआई करन मङ्गल चार
आज उनके भइला काज ॥

२

दिलकी बिथामैं कासे कहूं जो गुजरे
सो मेरा रब जाने।
मरादरदस्त अन्दर दिल अगर जो गुजरी
सारे हाल पर ॥

भैरव—झमरा

कोयल कुहुके माई मोंढिग लालनको वास बसाई।
यासो ते मोसे बोले ढोलन कहे ना टुक टरे
ढोलन नाई ॥

ब्रह्मताल

थुं नुं नुं नुं नुं नुं नुं नुं दिग् दिग् दिग् दिग्
थेइ थेइ तथेइ तथेइ झनु नुनु झंता झांता
झां झां आनन्द नयनानद सम सानि धपसानि।
निनिधपमपमपमपमगरेसारेरेगरेगमपमपध
निगमगममप ॥

भैरव—ताल पटताल (ध्रुवपद)

बक्स लीजिए मोंको रब रहमान दाता
विधाता तेरो नाम।
सदा रज्जदाता पुर गुन्हेगार तू सत्तार परवर
दिगार धरते दुख दूरकरो देवो आराम ॥

भैरव—पटताल

तू अल्ला साहब तेरी चाहमें होंहो आयो।
जब तेरो नाम लियो सब दुख दारिद्र गमायो ॥
तुही तारण तरन तेरे नाम तें जग दरियाव पैरायो।
लाल प्रभु कहे मोहिं देवो सन्तत सम्पत अनधन
दूधपूत होय मन भायो ॥

ख्याल

भैरव—धीमा तिताला

बिनु अबताल अलो य वली अल्ला।
फजल करम कीजे मों सों आजज पर
या वली या रसूलिल्ला ॥

भैरव तिताला टप्पा

हां वे सोना तेने माखोजा वकसकोनी
और अपनी पनाह दोनी तू सानु अपनारब दोवे ॥
सदारङ्ग सानु यही दवाईदे दान वाब साहेब तू
लाख बरस जिन्दा रखमि तेंड़े पुत तेंडे खेड़े
तेंडे डवरदी करीम लाज सरस सरब दोवे ॥

भैरव—चौताल

१

पिय प्रवीण परम चतुर मोहन-मूरति नागर।
रोम रोम चाहे बरन न जाए मोसों ऐसे
सगुण आगर॥

२

बाजत बीण रबाब किन्नर गावत इन्दर वारी।
तामें कहियत थाटधुन सुथराई
उघटधि लांग तामें मृदङ्ग धुनकारी॥

३

करता तुमको कीनो सब लायक
मेरी मुसकल करो आसान।
जो जो तोहि तक आवै मनइच्छाफल पावै
सब गुणीजनको सुखदाई राजबहादुर
गुननिधान राखत सबको मान॥

४

भोरहि आएहो लाल दे महावर तिलक
भाल अरुण नयन अलसाए गात।
धन युवती जिन विरमाए तुमहिको
जगेहो जहां सारी रात॥
पलकन पीक रेख अधर अञ्जनकी बन रही
बिनगुण माल लाल लजात।
कङ्कन गड़ो पीठ पै प्रीत नूतन कौनसो अतिहो
सो जान पाई चतुराई तिहारी जादोनाथ॥
मुकरले देखियत अपनो आप मुख
रामकृष्ण कहे बनावत मोसों बात॥

५

आस पास सहचरी नूपुर झनन करत
चम्पाकी कली मानों फूलवेश मानकी।
सोंधाकी लपट जैसे दपट देह भौरनकी
विन्दादिक वदन देख उठत कुलगानकी॥
झांकत झरोखन के परदे उधार देखत
आप लागी शोभा सत भानकी॥
मिट गयो अमङ्गल भयो मङ्गल किशोर
सूरज गाय उठो महल जागीजो जानकी॥

६

भोर भए भैरव गावत भर मुरलीमें
श्रीवृन्दावन मध बनवारी।
सप्तस्वर तीनग्राम अकइस मूरछना
लाग ठाट उरपति रपधारी॥
मधु माधवो भैरवी बङ्गाली बगारी सैन्धवी
यह भैरवकी सङ्गनारी।
तानसेनके प्रभु तानन मानन मोह लीनो व्रजनारी॥

७

धन धन मेरे भाग भोर भए आए
लालन सबनिश कहां जागे प्यारे।
आलसवन्त जंभात जात मलीन गात
सांची कहो बात नन्ददुलारे॥
लट पटि पाग खुल रही पेचनमों
अधरन पीक लीक धारे।
तानसेनके प्रभु तुम बहुनायक सांचे
बोल सांझके तिहारे॥

८

तेंड़े नाल लगे दिल सांवल गवरू छदड़े।
छदड़े घोलीयां आसिजां दीयां तेंड़डे॥
रतदेहा मैनु कल नहीं पड़दोरे दडीपातें
तें दडीया मैनु यादे सावल मेडड़े॥
वेश नजर मैनु घायलको तोहुण लीता मनसेनड़े।
मनमस्त वा फकीरा कहे मस्ताने नन्द महरदे
सुत वेखनतुत रसे साडे नेंनडे॥

रागसागर

प्रथम भैरव नीके बश प्यारे भए
रविके उदे आए राम किरिया खात॥

विभस भए देखियत गात उदे प्रकार कौन
तिय ललित बचन बोलतहो तुतरात ॥
बेला बेर बीतगई अली आश पूजगई
देव गरीब निवाज काको भो सङ्गम खटपट भईरात॥
देशाख सुघर तीय सुभा वस्त पहर खड़ो
सुघराई जानि परात ॥
हम आसवारी सारी रैन तुम देव गन्धारी
गावत गुजरी सुन बीती परभात ।
तोरी हमसो प्रीत जौन पुर बसत है
नवल तीय सी देख उन्हे जाय लाचारहो
बहादुर हैरान ॥
जङ्गल जङ्गल ढ़ूढ़त हारी भिभवट जिन करो
मेरे प्यारे आशा जोवत बिहात ॥
सारङ्गनयनी पास जावो मधुमाधवी वरहंसनी
सामन्त प्यारे वृन्दावनमध इहा लङ्कदहात
धन धन श्रीमूलतन मन्त्र पढ़ डारो अबही
पलछिन निरखत तुमको पूरो या वड़भाग गात ॥
जयतश्री वाको पूरब पूरे पुण्यफल जाको
पूरवा लखात ॥
मारवाने टईहै कामकी श्रीमहाराज
गोरी गोरा टकरात ॥
ए मन होत कल्याणको चाहत भूपाल बड़े हमोर
पुरी रातको मोदीयत कर छाया पग डगमगात ।
ऐंड़ात जँभात बहुनायकहोजु कान्हरवागे
केशर कण्ठमाल कौस्तुभ मणि गहना बोन्न सुहात ॥
वाके दरवार में गए बहार करन हिंडोरे
पांचमें बसत हो भंवर नाम कहात ।
बिहागत भई मेरी खंभा पकर ठाढ़ि रहत
बरज्यो दुख बीती मेरी कासे कहूं बात ॥
सो रटना लागी श्याम मेरी जो जो वतियां
करार कर गए सोहनी मोहनी कर घात ॥
मोहिं अहोरी जान गोकुल ग्वालिनको
चाल चलत चलक छांद कहि जात ॥

कपोल कहां पीक लागी जानो हैजु जानो
दीपक चन्द्रप्रकाश भए लीलाम्बर
और आए काल गए अवध दे रात ॥
ए घनश्याम मौला नटवर नरहै वाहीके
गोड़े पग धरात ॥
वांके श्रीविहारी लहर लोम पहाड़पै
कङ्कन गड़ात खण्डिता नायकाकी बात ॥
बैजू बावरो रावरो तू तिहारे रागसागर गावत
तिन तिलक सिर मांझ देखात ॥

अथ आलापाक्षर

सर्व्वरागानामालापक्षरतत्यं

ननरीइनाआननउननउआनामअदतनरी
तरिरानाउननानाआनराननरनुतानाम ॥
अदनतुं आननतूननरीननाआनताननुम
ननुतरीन तानुरीरनानता आननान आनता
नरान तनुमूननननना आननतानुंतन नरीन
तानाननतान तनुंतननुं तनानाआनन
नतून् नननारनाआन ताननरीतानिअनन
ननताननरीन नारीन नानान तुमतुम्
नितना आननरीतननरीता आनरीने
नानतानतुँ नननाननाआनरीतननभान
निननरीतानपननननातताननदरतन
नतानतारण दीलतानुम् नानुनरीआनारि
नरननितनुंनितारण रीततानुतनानु आनुम्
अदनतुनूरि अदतननरीरनन आनामतुनतुम् ॥
अरीततनानरीरनानतीननीन उदत तीन आनन
तानरीनन नरानरीननहउदतनआदतनरी
ररनरानतुमूननतुमूतरणनतनरितनन
आदनउदननतनरीतननतीननीनरीरनानताम् ॥

इति सर्व्वरागालापः ।

अथ ख्याल

भैरव—जलद तिताला

हरि हरि लहो मन मेरे अष्ट प्रहर आनन्द होय तेरे ।
यहलोक परलोक स्वामी जपो निशि दिन सांझ सवेरे ॥

२

रामकृष्ण पूरण परब्रह्म सोई साकार वही निरङ्कार ।
जित तित इत उत वही भरपूर रहो
त्रैलोक्य चराचर घट घट व्याप रहो करतार ॥

रामकृष्ण पूर्ण अवतार सब घट व्याप रहो संसार ।
अखिल ब्रह्माण्डके नायक करता हरता
मोहन मदन मुरार ॥

४

करीम रहीम वन्दे निवाज पाक परवर दिगार ।
जित देखूं तित तूही भरम रहो तेरी कुदरतकी
कोउ न पावें एराजनियाज ॥

५

एक पलछिन कबहूं न बिसरे माई
लालन नित नयनन आगे ठाढ़े रहें ॥
श्रवनन सुन तुरत रस उपज्यो मोमन आगे
सदा रङ्गीले महम्मदसाह कहें मो वन्दीकर ॥

६

भई आलीरी बहार वन प्रन कोयलिया
बोले डारो डार ।
सुगन्ध पवन चली पी ओरते सुखमन्मद मिलेंगो यार ।

७

कौनको डर मोहिं अबतो निडर भई
भईरो भोर ए पिया सोवनदे ।
रात जहां निकसी तो लोग कहेंगे चोर तिहारोसों
नजर लिखा पिया जो होनो सो होवन दे ॥

जागी नगरके लोग अब भई भोर
करत ननदीया सोर ।
कैसे आऊं तोरे ढिग मोता पियवरा
अपनी उमगसों सौतिन को भयो जोर ॥

९

भोरकी चिरिया बोलन लागी कागा बोले
चौंक परी पियआए नहीं औरकी ।
निशा नींद न आवे कल न परत है
वेग दरसवा दीजै पियवा य पूछूं मैं
तोहिं गुसैंया सुनो कर जोरकी ॥

भैरव—चौताला

चतुरङ्ग हरिगुण गावो गावो नीके तान ।
मान और महाजन गुण कीजिए सुर सङ्गत
सो लीजिए तान मान ॥
द्रद्रद्रद्रतु द्रद्रतु तननना रेनारेतारेतदारतददानी ।
धाकड़तक् ताकिट तक धुमकिट तक् ड़ताधाधा
किटधुमकिटगिदिगनधा द्र० ।
पपधधपपधधधनिसमानिधपमगरेसा
सारेगमपधनिसासानिधपमगरेसा द्रु० ॥

भैरव—तिताला

पलक दरियाव मेरा साँई राईको पर्वत
पर्वत को राई करे और करताहै गुसांई ।
जो चाहे सोइ इच्छासो होय
युगराज वही करे सब कुदरत उसिताई ॥

भैरव—धीमा तिताला

आवो कहा मानो जावो जानि वहां जहांके
जाएते धन जाय मन जाय प्रतीत बचन जाय कुलमा ।
नेक न डरे आवागमनपे ऐसे अरे अरे
निरखत खरे सब वरे परे हसन तुमतो
वड़े मनगेरया गुणनते करतहो
तन मन जराय उलमा ॥

१

जाम पिओ जम जम जुलावको लाभ

तनको होवै सेहत जानको।

मुखकिल मेंहिल निकलो चौको लो

दस्तो जो निकले खिलत

वगल मसफरा सौदा दस्त वदस्त हो

आनन्द करो हसन युग युग जीवो॥

३

दरया दरया दरतनदरया ताधिलां गदानी।

तननाद्रुद्रतुंद्रद्रतुंद्रतनातननननननातुंद्रद्रद्रद्रद्रद्रानि

वेतो नबूवत वहार गुलशान् एव कुलसून गारगुलशन॥

भैरव— तिताला

तानदेर तदेनाय लोयलोयाल्लालि

ओननतुंतानदेदानं देनादेना

तानदेरनाधितिलिल्लानारितुम्तदारेदिमतननदिरनु

तननदेरनुं तानदेरतदेतदानी॥

आहेदिम्दिम्धितिलितिल्लाना

तानदेरनादेरनारितदेतदानी॥

जब तलक सोनेमें दमथा दाग दिल जलतारहा।

व चिराक जब घरहुवा मालिकथा

जो चलता रहा ता०॥

२

तोम्तनतानतनदिरनातननननताम्तनना

तारेदानीदोमदीमतननननाननानातारेदानी

दीमदीमतनननननानातारेदानीदीमदीमतनन

नातुंद्रद्रा गेतुम द्रद्रदानीतुंद्रद्रतदारेदानी॥

तारेदानीतदेदानीतदरेदानी दीम दीम तननतनना

तनननननातारेतारेतारेतदरेदानीतदारेतदतदानी॥

३

प्रीतम प्रीतहितें परखको जियत

कैसे कहूँरे निपट अटपटी बात।

सदा रङ्गको यह सुख दीजे ले चलो अपने साथ॥

भैरव—धीमा तिताला

बालमवा तुम बिन अकेली रह न सकतहूं।

आओ घर सूर जन जावो प्यारे सदा रङ्गीले

मन्द हसन मुख मुसकतहूं॥

भैरव—तिताला

तोरी वारी फूल रहोरी वरन वरनके

फूल वहां वलिगाऊं तोरे रङ्गनकी।

जेती कलियां दूजे यौवनको माती और

सबहीको सोहाती वाको तो रखवारी॥

भैरव तिताला चतुरङ्ग

चतुरङ्ग कृष्णगुण गावो रिझावो नन्दलालको

स्वर तान ताल और राग रङ्गमों घरो घरी

पल पल छिन छिन निश दिन हरि सुमरन चित लावो॥

पपममममपपपधनिसासासानिंनिसानिधानि

धपमगरेसा स्वरसो तान सुनावो॥

दिनिलितिल्लानाद्रद्रतुंतननारेतारेतारेदोनतुमतदेनारे

तनादेरेमनदेरेनितनितदेरेतुंतननननतान रिझावो॥

धमकिटद्रिमिकिटिजनकझनकतकड़झिझझनन

इयातियाइयाएयाएयाएयाथुंकड़तकतकधिंकड़

भकथकतकधिलांगतिधाधगड़धिन्नातगड़धिन्नाधिंधि

धागेतिटिधागेदिगिन्नागेकिटिकिड़नकतकड़तान्

तिधातालधातिवाड़धाताधाधितानधाधाधाताड़धिधा

धिधिधिताड़धाधिधिधाम्रृदु मृदुङ्ग बजावो॥

भैरव—एकताला

आज बांसरी बजावे कान्हा कौन

धुन कौन मन्त्र पढ़ फूंक फूंक।

प्रेम भरी तेरे मुख धरी और नरनारी
मिले धुनसुनले सीयरे सांसरी आ०

रब गरीब निवाज महबूब नपालदावे यार ।
तेड़े मेहर दीकी गल आंखों महरम सवदे
दिलहाल दावे

वक्स लीजिए मोंको मौनउद्दीन ख्वाजा
सब जगके तुम राजा ।
ओ शरन तेरी लागी रहतहै दुखदारिद्र सबभाजा ॥

करमकी नजर कीजै ख्वाजा मौनदीन चिस्ती
दीन दुनीको पुस्ती ।
इतनी विनती सुन लीजे सदा रङ्गको दीजे
दया धर्म लाज शरम सुख सम्पत सकल सृष्टन
करे शीश धिस्ती ॥

आज रङ्ग है योगी रङ्गहै सो तुम रङ्ग भीने माध ।
अङ्ग अङ्ग बहुभेष तिहारो अलख जगाए नाद ॥

भैरव—तिताला

मीयां राझाओ मैं तैंड सदके कीती घोल घती ।
सदा रङ्ग झुक मुखड़ावे खेलाजा जानी तेंवा
जु मैनु और सुझदा
मिलणा करणा असोंझललोता मनदा जोवनदाल्लांझा ॥

मैंड़ा वेगुमानी यार मैं तेरो सो दिलवर गुमनी यार ।
अङ्गुरीयां दे पौर पौर छलड़ेवाँह्नो
ल्लमुखड़े पोशल मामले वायाद्या
मोणानु गुजरि सारी रात नीकाजेवा ॥

भैरव—चौताल

वेखन कारण यारनु दिल वगाको
इयाँ नदी दूंगी विच तुलहाल पुराना ।
सदा रङ्ग इस्क सच्चा साराताँ पेरनाम
नभी गमो पारलङ्घ राझणगरलगां ॥

२

जागो क्योंन प्यारे तुम मन मनवा लाग रहिलवा ।
भोर भए चिरिया चुहचानी बोले कगवा कारे
तुम जागे मोरे पियारे अब तो भोर भइलवा ॥

भैरव—तिताला

भए भिनसाक भइलु जागिल पिया मोराए ।
पोह्नो पखेर वाजोरे गजरवा
जगत तरैया छुपाने लागी ॥

२

अब तुम जागो क्योंन मोरे मीत
पियरवा हमारी प्रीत तुम सन लागी ।
नींदके मातें साहआलम सुरजनुमा भव
नुमा सगरी रैन रङ्ग रस पागी ॥

भैरव—चौताल

भए रबि प्रकाश कौन कौनके भवन बसे आए मोरे प्रात ।
डगमगात अरसात जँभात हो वलमा
काहे को छिपात हो गात ॥

२

तूही मेरे दाता मैं तेरे कने जाचूं ।
याचनके याचन कौन जाचों तेरे रङ्ग रूपमे राचूं ॥

३

दरवार धाऊं पाऊं दूध पूत और अनधन
बहु विधि रचके गाऊं ।
मौनदीन प्रवीण जगतारण कारण
मुकता चरण चित लाऊं ॥
आजज जान मान रख लीजे विने सुनाऊं ॥

भैरव—तिताला

अल्लाह करीम रहीम रब रहमान करम
चाहत हौं तेरो ।
दुख जञ्जाल तेरे सरन ते दूर होय सब मेरो ॥

तिन स्वर का ख्याल — सारंग

भैरव

लागि रह्यो नेहरा तुमि सन ए मोरे सइयाँ ।
जौलों घट में प्राण तौलों नहिं छाड़िहौं पइया ॥

२

भोरही मेरे आए सो बलमा सो काहे
वहीको जावो जहां रैन रहे सारी ।
जिन करो मोंसन रङ्गरस की बतियाँ
भूलहु जहाँ तहाँ तिहारी प्यारी ॥

३

सौत तुमसन वो सोती लगाय छतियाँ
मोको करेजवा धरक गई लर लई विदेस जाय ।
वाकी चिन्ता चितमें जो तुमि करो
मितवा हो बलम मोरा जी जब जाय ॥

४

बेलरियां सब भुकरही है हरे हरे
बागमें लोने लोने पतवा ।
एको चम्पा गुलाब फूली और फूली चमेलरियां ॥

भैरव—त्रिवटताल

एमा भोर भई मोरी अँखियन में
मोरे पिया की छवि नित नई ।
साह आज मेरे बदल गए जो कहें सो सब सहिए ॥

२

बीरा बटोहिया मोरे पिया सन इतना
सँदेसवा कहियो मोरा जाय ।
बढ़ियां हेरत नैना मोरे अधीन भइलवा
तुमतो डारी बिसराय ॥

३

तदारेदानीतानुँ दीमतनाउदततननतनारेमादानी ।
नाद्रद्रतुं द्रद्रतिलिल्लानानातदानी ॥

जगत में तनदुरस्त रखियो यही जिसका मजा है ।
अपनी ओरसों अरज करतहूं आगे तिहारी रजा है ॥

भैरव—सुरफाकताल (ध्रुवपद)

पञ्च सप्त साधे गुणी जो न चतुरदिश आदरीया ।
द्वादश मन धन द्वादश नक्षत्र उनके ब्योरे कौन तरिया ॥

भैरव—तिताला

मोहि जान देरे घर कैसे जाऊं निरखतहैं
सब नगर को लोगवा ।
सब रैन अधिक सुख लीनो मोसों थोरी रहोरी निश
काँपत जीय सबन के डर ॥

भैरव—धीमा तिताला

तोरी नगरिया चल बासिहोंमैं सुन सुन
मोरे नाहा बाबुल के देश ना रहिहौं ।
एगुसैयां अबको बेर तुम्हरे कारण
सास ननदको सब कुछ सहिहौं ॥
कान्हकी को गत जाने सो मोरी बात नहीं बूझिए ।
वाकी मुरली बजतही सुधबुध बिसरि जात प्राणते ॥

२

आईरी हौं बावरी प्यारेकी छवि निरख
सुन्दर चतुर नाचत ।
रोम रोम बिरम भयो अतीत सङ्गत सुध
सोच समाचत ॥

भैरव—तिताला

बहुत दिन पाछे पाए दरसन प्यारे को आज ।
निशङ्क हो गरे लगाय लीनो खड़ेही
तजिभट्ट दीनी लोगन की लाज ॥

२

कल अब कैसे परे ए पिया कलते नहि आए मेरे ।
हौं समझाय हारी आली पै यह निलज्ज
जीया फिरत न फेरे ॥

३

पत्तणा वाली यावे वारी बेड़ी हाल देवन्हे लाँवी ।
घिण मजूरी वारी नाकरभेड़ावे मीयां
सिन्ध दीतु पार लङ्घामी वेहाल
वेवेडी हाल देवन्हे लाम्बी ॥

४

डागों देना नवे छेडवे महिंदे माल डाँगा ।
कुजहोर नीमेहि कुजहोर नीम हर मनाही सिरदा ॥

५

अलसिहाँ वेरा आवारी वेकड़ो माणे ।
रातदिन नींदो माती खुमारीसों हो रही
भर भर प्याला म्हांणे पावेहो गड़ोमाणे ॥

६

मैंघुमाइयाणीहभारि दावेलीयां ।
दामण तेड़ा मावुंगल मांड़ा रोजके आततादया ॥

७

मेरा अल्लाभी जाने मोला भीजाने साँइया
अङ्गुलिया दे पोर पोर छलड़े चूड़ीतें भरीहै कलाइया ॥

८

चतुर सुघर सुन्दर प्यारे बिनदेखे
कल न परे घरी घरी पल पल छिन छिन
मेंकूं चातक तुमरी लाग रही ॥

९

ज्ञान ध्यान साहब सुजान तेरो बेग मिलो
मोर मनके भवनवा अवध बदी मोसे जाम ॥

भैरव—तिताला

जागोरे मनमोहन लाल तुमसो बतियाँ भलीबनी ।
तेरे दरस बिन तरसे जीयरा श्रीब्रजपत
गोकुलके धनी ॥

२

श्रो प्यारा मैंतेंडी गल्लड़ियां सुनजियां ।
घोल घुमाई सदकेमे आवा वार वार पाणी मे पीवाँ ।
तनरी ईना तान रीठ आदाम ॥

३

मेरे तो तुही तूही है दाता विधाता रब
रहमान रहीम ।
तोपै इतनो मागत हूं मो मनकी
इच्छा सब पूजिये लाज साज रख लीजिए
करम कीजिए करीम ॥

४

हमन् को परवाह मेरे मस्थ कलंदर पिरछे ।
पानीपत करणाल तेरो तखत चबूतरा मन्दिरछे ॥

५

दरबार दुख दूर करो तन अन्दर तें यादरवा ।
या अली या नबी इतनी अरज सुन लीज्यो
यो जाय कहो ज्यो बोलि कलन्दर सो ॥

६

सुकर कीता अल्ला दरगाह तू
साड़ा साहब मैंड़ा सुमरत उत्तम नाम
जीव दीता शुकर किता ॥
धन धन परवर दिगार वो जिन अपने
बन्देको मानस जनमे दीता मौला अलीजी
करमदी नजर वेखी मेरे रब साँई ।
आसफदौला तू आसरा तेरा औगुन दील जमी भाई

७

या नबी तुम किरपा कीजे मैं गरीब तुम्हारा ।
बहियां पकर पार उतारो मेरा करो निस्तारा ॥

८

गव हस्त साकी या कद है पुरसर वाकुनू ।
दौरे पल वदिरङ्ग नदारद सिताब कुन ॥
जाँ पेशतर के फेश्रालमे फानी शवद
खराब भांरा जेजाम् वादए गुल गुवरा वकुन् ॥

९

प्याला ल्यावो ल्यावो यही लव लाई ।
मदके मतवारे सदा रङ्ग तेरे बलजाई ।
प्रेमका मधवा पीला वो सइयाँ सुखदाई ॥

भैरव—तिताला

माईरी जबतें भनक सुनी पियाके आवनकी।
तबतें माई पलकन ते मग झारूंगी रिझावनकी॥

भैरव—धीमा तिताला

प्रभु दाता सबनके रटरे घरी पल छिन।
जो तू चाहे दूध पूत अनधन लछमी इमान
वाको नाम ले वाको सबको नाम ले रङ्गदाता॥

भैरव—तिताला

औमर लाग रहीरी पिया आवन कही बलमा
पिया आवै के बुलाव मोरा पिय सुखदाई।
सगरी रयन मोहि जागत भईहै
भोर भए तुम आए मैं योंही भलो वो
तिहारे मनभाई॥

२

आई डार भवर नदी में होरासोना।
फूल रही फुलवारी सदा रंगीली कलीयां
रस लेहो चाहोरा॥

भैरव—इकताला

तोरे रंगीले रस भरे देखत कहा जागी सारी रैना।
सब गुनीयनमें तू चतुर चतुराई करत हो
मोसों अब काहे बहकानोरी बैनना॥

२

साजन लागो गरे दुख दूर करो परे।
जो घरी सुख सन बीते सोई क्यांन कीजिए
अच्छे अरगजा ले प्यारे तू मोहे क्योंन भरे॥

३

मैं तो कबहूं न छोडूं तुम्हरे पांय।
जबतें तुम गमन कीनो सुरत न लीनो मोरी
बिरम रहेहो जाय॥

४

प्यारे मोरे आ मंदिरवा झपसानु।
जिंदलगी रहदी निश दिन मेंडी सदा रङ्गतान॥

५

जबतें नन्दनन्दन दृष्ट पड़े आलीरी
मुधरे सघटा भ्रमत तीनरेखा।
नटवर प्रभु वेश धरे अगरूप विशेखा॥

६

कही न जात वाकी मोंसो तोसों निकाई
कहा कहों बलजाई।
मुख निरखत थकत हूं तिहारी बात मोपै
कछू न कहि आई॥
बीर बटोहिया मोरे पिया सनवा
इतना संदेसवा कहियो मोरा जाई॥
बतियां रतियां मोरा मन बस कर लीनो
अबहीं डारो बिसराई॥

७

भरदे मोहु छनड़े हम चाखें तू भर भरदे।
डूंगर माते डूंगर डूंगर तपड़े मोहूं छनड़े
अचण मचण थी एमाड़े नित उदासी नैनड़े॥

८

मैं तो थाने जाने न देश्यां जाने नदेश्यांराज।
घोड़ लारो थारो वाग पकड़ेस्यां अजब रंग करेश्यां मैं॥

९

सखे आंखी मेरे प्यारेनु रातकीथे
वेगुजारी याबेमिया विन मंजुरीवारी।
नाकर झेड़ा वेमीयां फंदडातके दीनो में हारो॥

१०

ते उठ चलणी राझण तेनू जोर चांदानो।
एक वदीमे ठाड़ी वारी बुझत नाहीं एहो
सदा रङ्ग नाल तैनु परे खानो आव दांनो॥

११

मेरे मिया सारी रयन अनत जागो
लोग जरवा बाजत आए।
चन्द उदोत गवन न कीज्ये महम्मदसाह आए॥

१२

आए अलसाने राते माते पियरवा
प्यारे कौन कौन सो श्रुतमानो ।
कौन कौनके रङ्ग राते जुलम करो मइ सन
बलमा जे तुम लुकावत नेह हम जानो ॥

१३

बसूरते इलाही किम तरफकी वस्तियाँ ।
जिनके बिगर देखे आखें तरस्तियां ॥
क्या लाएथे अदम मे क्या लेचले जहांसे
यह मौत जिस दोनो आपसमे हस्तियाँ ।

१४

दीम् दारा दिरदिर तिल लनारउदन
तुम तन तुं तुं तना तुम तना तदरेतना
दिर दिर नादेर देर तननननद्रद्रद्रद्रद्रानो ।
तुम तना नित तुम तनारेदोम्दोम्
द्रत तिला नाद्रत तदोमतननननननद्रद्रद्रद्रदानो ॥
तननन तिगधाति गगनागिड़गिड़
धागि धिन धुन किट किट कि ॥
तिड़ि किड़ तक् तागिदि गनेधे तिड़ किगिड़
धिर तक तगन धा गेति ड़िक्ड़ तक ताम धाधा ड़धा ॥

१५

मोरी आलो जबतें भनक परी पियके आवनकी
पलकनतें मग भारुंगी ।
आनमिले सुरजन मैंलो तन मन धन सब वारुंगी ॥

१६

गरीबानुपालदावो यार रब गरीब निवाज
तेड़रे महरदि मैं किगल आंखां महर
मसाड़ड़े हाल दावो यार ॥

१७

सोआवैं मेरी गलीयां चुन चुन कलीयाँ ।
मानूंगो रलीयां दीन दयाल कृपा करे मोपे
यही बात भलियां ॥

भैरव—जलद

पिय तुम् वहांही जावो जहाँ सारी रैन जागी ।
रातके उनींदे जागे आंख खुमारोहैज्
तुम भलेजु वाहीके रस पागे

भैरव—इकताला

तननाद्रद्रतंद्दनातनदिरनातदानी ।
तनउदतनननननाद्रद्रदीनततननननानतनुमतनुम ।
तदीनयरेतदीयनारेतुमतनननननातननननदोम्
तददमीतदतदानी ॥

भैरव—होरी

मछरीया मेंहदी लागी मेरे लाल हाथनकी
हाँरे कैसी बनीरे लोगवा ।
सदा रङ्ग मिलिया रङ्ग घुलिया माई
इछरीया पूजी मेरे मनकी ॥

भैरव—तिताला

जिद माड़ी यागाँदेनाल लगोवे ।
अदारङ्गन जदमे पावा गरे लगावो
बिन दिठियां में ठगी ॥

२

सची आंखि मेरे प्यारेनु रातकीथे वेगारियां
आप छड़ जांदे वारी नालमही यांदे पेड़डा
तकदीमि हारियां ।
दाद सुणी रब साईं यारव माँड़ी
इस नगरी बीच वे आलम वसदे
महर कीसी विच नाहीं यारवा ॥

भैरव—चौताल

कीतावे करेजा ग्रारदा यारदा गम खाखा ।
कि पुछदेवारी आजज दील वेकरारदा
होती जारी यादे नाल गुजरदा ॥

भैरव—तिताला

मेरे वसन्तकी मुबारकदी ज्यों प्यारे
महबूब निजामदीन औलिया ।
बेला फूले दरवाजे सदा रङ्ग रसिया अम्बवा मौरीला ॥

भैरव—धीमा तिताला

असकर मधुवा भरभर प्याला मोको पिवावे ।
तोरा वलमुवा अवतो मोको भईरी खुमार ।
आप छकोला और चमकीली कोरी सुरैया
सिरवा भर भर ल्यावे ॥

भैरव—तिताला

श्यामसुन्दरको ध्यान रहत निश वासर एरटना ।
यह बिचार कर देख जगतमें हर बिनको अपना ॥

२

को तेरोइ तेरो सगरो सुमरण करले मन राम ।
इन सुरन कामा आठ पहर चौसट घरी ध्याइऐ नाम ॥

३

तोरी नगरीयामें न रहूंगो तूंतो अनत करत रसभोग ।
सदा रंग रस रंग करत हमको दोनों है जोग ॥

४

आजतो रैन जागे आए पियरवा घर मेरे ।
अङ्ग मङ्ग रङ्ग लागे प्रगट दुरावत गात छिन लखे
पल भपकत आए डेरे ॥

५

पलक दरियाव मेरा साँई ।
जो चाहे जुगराज कर छोड कर सब कुदरत उसी ताई ॥

६

भइलो हां बावरो बिन देखे नेंक न सुहाय ।
जबतें गवन कीनो बिदेशवा
भवन न भावत कुछ नहो चाय ॥

७

भइरी बड़ी भोर प्यारे अब जिन बोलो
जानदे घरवा मोय ।
दीपक ज्योति भई पिय राई निरखो नैन उघार
श्याम तुम अब जिनटोके मेरो सौंहै तोय ॥
रस चोरी चोरे निभहतहै जानि बूझि हटना
करिए हरि गुरुजन सध ॥

ब्रजके सब लोगवा सास ननदीया कांहै ।
उघर जायगो रस चरचेंगे ज्ञानदास यहनहीं
कछु बातें प्रगट भए तें दिन दिन अधिक लजोहै ॥

भैरव—धीमा तिताला

अबहूं न आई तुमरो सुन जर लीनो
क्या पिया जो होनी होय सोहोय ।
सदा रङ्ग सुन जर देखिए जोय ॥

२

लङ्गर ककरिया जिन मारो मोरे अङ्गवा लग जाय ।
सुन पावै मोरी सास ननदीया जिन
दौर दौर घर आय ॥

३

साहनसाह दीन दुनीके बिनु अब तालव
अलीयवलो अल्ला ।
अपनी करमकी जोम आजज पर या वसी या
रसूलिल्ला साहनसाह दीन दुनीके भला ॥

४

कमली वाले अनोखे मैंड़े कमलीवाले पर कुरबान ।
छांटो मैंडो जिदड़ोतु सोर वसाडड़ेबन्दे पें मेहरवान ॥

भैरव—झपट (ख्याल

सोयरी बहे पुरवैया बिनहीं गरवाल्लाय पियवा मोरे ।
करहूं मनुहार दोउ करसों करलेहों
बलयां परहूँ पइयां तोरे ॥

भैरव—ताल झमरा

लाल मेरे आएरीहों अपने करसों वारो ।
तन मन धन सब उनकों दीनों और जीवन धन प्यारो ॥

भैरव—एकताला

होंसुर जनवा हमारो और प्यारे प्रीत कोनो नवेला ।
अति दुर्ज्जन बिच छोड़ चलोहे मिलिए तोएक बेला ॥

२

बिजरीया चमके पियाके देश हमको दोजे बिदा ।
इनके मनतें मेरो मनहै या तन रैन मिल जाय सदा ॥

भैरव—एकताला

आएजु आए भोर भलेही सब
निश जागी दृग अनुरागी पागी रङ्गत वोर।
भलेही आवो बैठो बिजन दुराज चक्रत
भए नव कुसुम किशोर।
आनन्दघन रस बसको छवि रहे वान
औरतें भले आए जोर॥

भैरव—अजद

प्यारा मेरा माईरी मोसों करत अनरस।
है कोई हितमो उनही समुझावै
वे ज्योंज्यों मनावत त्यों त्यों होत सरस॥

२

बार बार बरजो मैंतो यह कौन चतुराई।
जामि साहको प्रकृतहो मिल चलिए
अब याहीमें बड़ाई॥

भैरव—ताल धमार बहार

मगमध मेरे मगरे धनीसामरेसानी।
पगमें धरे धरे पगधमधामरे साम रेसानी।
सारे गाममें सगरे मगमें धाम धामपै पधनी।
साध साध पग धरे सदापे मांगे एक नमानी॥

भैरव—एकताला

भवानी विद्या दीजे मोकों।
सुर सङ्ग तैसे गाऊं बजाऊं यातें पूजूं मैं तोकों॥

भैरव—ताल धमार

पगमधरिसानोपरेमपगधरेरे।
रीससमाध होरीगानीमाधमाधमानीधपमगरे॥

२

नैना तेरे रङ्गीलेरे रस भरे देखत कहां जागी सारीरैन।
सब त्रिनयनमें चतुर चतुरायो करत
अब ऐसेहि पहिचानें॥

भैरव एकताला

आली मोहि लागरो औसरवा प्यारेको
सगरी रतियां जाग जाग कीनों भोर।
कोउ करतार सांवरो प्यारा मिलावे
उमगसो वे ज्यों भए चितचोर॥

भैरव तिताला

सोवत नगरमें बोल्यो कोहै बगरमें।
एक डरहै मोहि सास ननदके अलियां
गलियां डगरमें॥
प्रात समै उठे नन्दनन्दन बिरहा भीजत झरमें।
आनन्दघन ब्रज उठेहो सवेरे सास ननदके डरमें॥

२

तुम गुण गाओ मुरलीधर केसो
शिव विरञ्च-सनकादि भेद न पायो।
ज्ञान ध्यान जप तप अठारा पुराणनि नेत नेत गायो॥
लिखत भवानी दिनरात जाके गुणको पारन पायो।
चञ्चल सम प्रभु दृग रसाल सूरतजो हिरदे
बसे तुम गुण गायो॥

३

भोर भइलवा तरसत रस दरशन पाइला लाल तिहारे।
नेह लगिल प्रीतरसकी बतियां करत मोसे
मीठो मीठो प्यारे॥

भैरव पञ्चताला

मैंतो कबहूं न छाड़े तुमरे पाय।
जबतें तुम गवन कीनो सुरत न लीनी
मोरी बिरस रहिले जाय।

होरी ताल

बालमुवा मोरे तुम बिन अकेली रह न सकत।
सुनो घर डर लगत सदा रङ्ग रत॥

भैरव—अजद तिताला

भोर हुवन लागे बल जाऊं प्यारे नींदके माते दुलरवा।
उठ क्योंन बेग बलालु दीजे दरस अखियां
निहाल सुख सुन मोर॥

२

यलो वलो यलो यवि अपने अवितालव।
दीन दुनीमें रोशनी निहारी छविदेत वफपर गालव॥

भैरव---तिताला

साजन लागो गरे दुख दूर करो परे ।
सगरी निशा सुख सन बीत गई क्यौन कोजिए
अछे रङ्गीले प्यारो क्यौनहीं प्यारे तुम मोहूं
क्यौन बाहू भरे ॥

२

प्यारे मोरे अब न जगावो ।
सगरी रैन मोहि तलफत बोतोसियरी सेज जिन लावो ॥

३

धाय धाय दोरम दोरम बाजे मन्दिलरा ।
धाकिट तकधुम् किटतकध धोगनध धोगनधा
धाधा अच्छे बिधन सों परत मान ॥

भैरव— तोम इक्कर

पञ्चमको सुरताको बिस्तारकरे तब गुनी जाने ।
मधसानीसागधानीमागाने ॥

तताला

दोम तदोम तननन उदानो दानो तदानो ।
तिलिलानानंद्रद्रदानो अबतो तेरे दावमें आके फसे
बतादे याद क्या कीजिए दोम् ॥

भैरव—धीमा तिताला

तादिरना तनुम दिरना धितिलाना द्रदानो तादिरना
हुस्ने शजे वमे सजे मारा करदा मीर
दामोरदा हमरङ्ग जामोबुत् गिरिफ्तार मोदीम् ॥

भैरव --एकताला

मो मन तेरे दुख दूर कीजे हजरत फरीद शङ्करगञ्ज।
यह सेवक बिनती करतहै अपनी दयाकर
पार लगावो खेवा जाय रञ्ज ॥

२

मौला अली मुशकिल करो आसान ।
तिहारी मदतको अम्मा रसूल हजरत हुसेन
इमाममौला ॥

भैरव —तिताला

तिलाना मायनेके आरे मन्दर दोस्त तूमोरे तँदानो ।
तूंदर दर फिरे मत तन अन्दर दरद मानतूं मेरेभा
दरद जान मन मानो ॥

२

तनन तनन तान लेत मनन मनन गान करत
तेरे तो तनमें दरद होन् है दोस्त ।
तादिन तुमने तन मन रङ्ग रङ्गे तुम न माने
मनहीं मन ध्यान तुंनमतु मनतुं धनतुं तोस्त ॥

३

तान दिरत देना यली यला यलाले उदानो ।
तुम तान्दिरत देना देना देना
तान देरना धितिलितानातेतुं तदारे दानो
तनन दिरतुनानदेर तदेदानो ॥
आहे दोम दोम धितिलितिलानो
तानदिरनादिरनारेतादानो ।
यललोयलाम ४ यला २ यललललललललले
दरद हगाकेआमदोखोदवलकोपसाद ॥

जद बादशाह मुफत लाए बु
दरस्यादकेकुनम् शोरद रवाहो
अजब कारतुं मुश्किल माजराए ॥

५

द्रद्रदोम द्रद्रदोम हैयाहै जा नंमकन वेबफाइ नितरङ्गसो।
या इलाहो दोन मौला हमोसन यापोरो या
निवाजेना द्रद्रतुं द्रद्रतानरे द्रद्रद्रदानो ॥

भैरव—जलद तिताला

प्रीत मनको तुम सन मोरो हरनारायण ।
अनेकनाम नरहर तुमरो तो रस बतियां
कौन सो कहो मन ॥

२

माइरो मोरो सुन सेज डर लागत पिय बिन मोको
अँखियन नोंद न आवै ।

कौन सौत बिरमाए सजनो अजहुं न आए
मेहरबान पोअब मोहब्बत मैं उनके पहना होले गहे।

३

आनन्द भइल मोरि मनचित आए मोरे पास।
पग परसन नोछावर करहुं सदा
रंगीले बलमा मोरि पूजो मोरि मन की सबही आस॥

भैरव–एकताला

नयना तेरे सबही निश रहम लिए
कायमजंग लालनके सङ्ग जागे।
उनींदे अरसाने कजरारे मद छके
और अति कामरस पागे॥

२

मो पै सुदृष्टि कीजे मनमोहन माधो।
तुमहो सकल देवनके ईश मेरी इच्छा कामना साधो॥

भैरव–जलद तिताला

कौलो दिन बौराउ माई उन बिनक्यों समझत नाहीं।
एहि रात दिन ध्यान करत है मोहिको
कठिन मन तनक समझत नाहीं॥

२

प्यारे मोसों भोरीसी बतियां
करन लागे रसिक रसीले सुरजनवा सोघतीयां।
आजज तुम बिन कल न परत है
कैसे कटे दिन रतीयां॥

३

जानदे छाड़दे मोगरे अचरवा ढीठ लङ्गरवा।
अब निरखे मोरी सास ननदीया करेचवाव
कबहुं बहीयां मरोर लेत कबहुं गरवा
लगाय चरचा करे सब घरके लोगवा॥

४

अब मैंसों कहतहूं प्यारे नेकन मोरी मान।
आहू और कतन जातहो बलमा सदा रङ्गीले
मत रस पागी जान॥

भैरव–जलद तिताला

लङ्गरवा ढीठ हो मोसों कहतहै अनोखी बात।
छाँड़ और मग मेरोही आवत और सखा ले साथ॥

२

प्यारी सुनले मोरी बात अबतो सों
रङ्गरस करिहों साथ।
घरी एक कुञ्जमहल पगधारों हाहा छिन अपराध॥

३

पियरवा घर मोरे अङ्ग सङ्ग रङ्ग लागे
आज तो जागे आए।
प्रगट दुरावत जात चिह्न लखे पल झपकत आए।
ज्ञानदास अब एसेकोन्हो जोतीए ठग पाए॥

भैरव–ताल सवारी

बनवारी आलीरीभोरही बन जातरह्यो
गउअन सङ्ग औचक भेंट भई रीमंग।
रूप सरूप सुभग नटनागर आगर सब गुणसागर
नखशिख रूप सुभग अङ्ग॥

२

रैन जागी बनों सुघर बनाके सङ्ग।
रसभरे देखोरी शुभदिन केसरीया
बागे नीके लागे ललित कहन मोहै हाथ उमङ्ग॥

भैरव–एकताला

दोमतदोमतननन उदानोदानोतदानो
दितोल्लानातदरंदानो।
जहा कोईदादनहो देवेतहाको यादक्या
कीजे अनिफ आनफसे सहीहै॥

भैरव–तिताला

आनन्द भइलि मोरे मन चितमें जुगो
आए मोरे पास।
पग परसन नोछावर करहुं सदारङ्गीले
बालमुवा मोरे पूजो मनकी सबही आस॥

भइरी बड़ी भोर प्यारे अब जिन बोलो
जानदे घरवा मोंहे।
दीपक जोत भई पियराई निरखो नैन उघार
श्याम तुम अब जिन रोको मोंहे तेरी सोंहे॥
रस चोरी चोरी करत हौं मोहन गुरुजन
और सब ब्रजके लोगवा सास ननदीया जोहै।
उघर जायगो रस चरचेंगे ज्ञानदास यह नहीं
कछु बातें प्रगट भएतें दिन दिन अधिक लजोहै॥

३

ऐसो मोरो बतियन पर मन
उरझिए नरहे एरी बस कहो कैसी करू ।
कहा कहौं अंखियनकी रीत बसभई श्याम
छबि निरखि मङ्ग नहीं छबि फिरत न हेरफेरू॥
नैन मूंद रहो सनमुख धर्नो मानत नाहीं काहूको हेरो॥
दास हरि मन बचन काय दाहुं पिय प्यासे
चितवन को दरसन भई प्रीतम में चेरो॥

४

पिय बिन रहो न जाय सजनो घरी घरी
पल छिन निशदिन रट लागि रहे।
औरनके बस भए बलमुवा मोहिसन कबहुं नहिं पूछत
बतियां रतियां रहत उन कैसी करू सहेलो टहे॥

५

बहोत दिना तुम छिप छिप बैठे अब तो हमने पाएहो।
मोमकी चादर मुहु पर लेकर अहमद बन बनआएहो।
अहद शमद मलकुतम हौके सब कुछ तुम्हो कहाएहो।
कहा कहौं मैं कमाल तुमारा यहां
महम्मद नाम धराएहो॥

५

तोमें धाऊं पाऊं हजरत ख्वाजदीन शकरगञ्ज
सुलतान मसायक महबूब इलाही।
निजामदीन औलिया अमीर खुसरो केवल बलजाही॥

भैरव—धीमा तिताला

दानी धिति धीतीलाना तिलिलाना तार तदानी
उदनतुं तनि तनि तनि तनि तत दरदानी।
द्रद्रतुं द्रद्रतुं द्रद्रतुं तननननन उदनतुं तननन
तनं तनं तननारे नारे नारे नारे तुं तदरदानी॥

भैरव—अमद तिताला

छैलवा गागर मोरी उतारो कौन प्यारेरे॥
गगरी उतारत पानी नाहीं छलके मैं बलजाऊं तिहारेरे॥

२

हजरत महबूब इलाहो निजाम दीन औलिया
जरजरी जरबकस।
तहालों बड़ाई करहौं तिहारी पोर मेरे सरसरी
सरको सकस॥

एरी मैंतो रही हौं बदन निहार वापर गई बलिहार।
जहां देखतहौं प्यारो भरपूर रहो
वाको सूरत मूरतको काऊ न पावै पारावार॥

२

आज भोरही आए पिय मेरे घर कौन तिया बिरमाए॥
सब निश बीती गिनत तारे कौन तौया बिरमाए प्यारे॥

३

हो पिया अनत रैन जाग आए।
हमसों अवध बद अनत बिरम रहे जावक भाल लगाए॥

४

लाल तुम आए भोर भइलवा बहुता रस आवे
दरसन पायारे।
नेह लगोला प्रीत लगरहो रसकी बतियां करत
मोंसे मीठी मीठी प्यारे॥

५

भइलारी भोर गजरवा बाजन लागी
आवो बलमा हिल मिल गरवा लागों तोर।
पार परोसन लोगवा जागी सास ननदीया करै सोर॥

माईरी मोरो सूनीसेज डर लागत पिय
बिन मोंकों अँखियन नींद न आए।
कौन सौत बिरमाए सजनो अजहुं न आए घर
महरवान पिय बेमहोब्बत मैं उन दिन लाए॥

भैरव—आड़ा चौताल

प्यारीरी मुख खोल देख बोल रैनतो योंहीं बिहानी
अरी बाला कहा जो कहूं तोरे मुखको बानी।
तूजो बात कहत तोतरानी भोर भए आए
लाल जब चिरियां चुहचुहानी॥

२

अबतो जाने दे मोहे थोरी रैन रही पीउ।
फीको भयो तंबोल बोलन लागे मोरहोवन लागी भोर
सास ननदके डरतें काँपत है मेरो जीउ॥

३

महादेव शिवशङ्कर पिनाकपानि।
आड़म्बर बाघम्बर जटाजूट गङ्गासङ्ग अर्द्धाङ्ग भवानो॥

भैरव—होरी

आएहो भोरही लला मेरे रैन के जागे
नींदके मातं कहूं होरी मनाय मनाय।
उर उलटी माल नैन लाग पीक लाल अधरनपै
काजरको टीको काहे देत यह लच्छण अब
कहा होत बात बनाय॥
तुमहो रसिया ठौर ठौरके रस लेवेको
चसको कैसे जोयत जाय।
याहि सोचमें जोय जातहै मेरो हाहा
तेरे हां कामको नाहीं
रसबेल उनही सङ्ग खेलिए जासों नयो हित लाय॥

२

आएहो मेरे जामनो जागे और
तियाके बैन करत अनोखे।
रसकरो जाय अपनो प्यारी सों कामजङ्गबनआए अबचोखे॥
काम नेह रङ्ग उन सङ्ग उपज्यो जोहै
हितू तिहारे लेखे।
मुकर तकों बलजाँउ वे कहे देतहै
अनुराग जागे नैन देखे॥

३

मुरली बजावै पुन गावै नैन न्यारे हो नचावै यहि बिधि
तियनके मनही रिझावै।
दौर दौर काह्न पनघट होपै आवै घटही दुरावै
रसनामें प्रेम जनावै॥

भैरव—धमार

दिर दिर दिरना तनदिरतदीयनरे दानी तनदिर नादानी
बहार आमद मरा जंजीरद गुलसन ने दवा गंवाइ
न माल ततबी वतीरे मन कुनद॥

भैरव—बसन्त तिताला

कोयल बोले माई मोरे ढिग लालकी बास पाई।
अम्बुवा मोराने टेसुवा फुलाने
मधमाती वसन्त ऋतु आई॥

भैरव—तिताला

कैसे जाउं भईलो भोर निरखत हैं सब नगर की
लुगाई फरोदस्त मोहि जानों घर॥
सब रैन अधिक सुख लीनों मोसों निहारो
रहिलो निश काँपत है सबनके डर॥

२

मोसों नेहरा लागिला रखो सइमन पियरवा
अब जिन तोड़ो।
होंतो बनो रहों चेरो तेरो कैसे जोवन होवे मोकों
तुम जो छोड़ो॥

३

करन रहत हो प्यारे तुम झूठे बैन।
सदा रङ्गीले सुख सम्पत चैन॥

भैरव—झपताल

साग मध पमगरे सागरे सानीधपम धनी सारेगरेसा ।
रेगरे साध पधनी धध पमगम पधनी सारे गरेसारेनीगम
गरेगरे गसानी धपमग मपधनी धपमगरेरे गमगरेसा ॥

भैरव—सवारी

अनी उठो सुतियां यांणी वो रांझणा देमना वणनु
चक्के जीदाड़ी घुमाय घुमाय गलपाय पाय पक्केखाक
पेरीले सिरानु मक्षि समझाय रिझाय भिक्षि ॥

२

अनत जाय बिलम रहिला पीउ ना जानूं
कौन तियाके सङ्ग ।
हमसों अवध बदि औरनमों रङ्ग रस करत फिरत
सखियन से नएनए ढङ्ग ॥

३

टामतना तनदिरना तनदिर दिरना तनदिरना तादानी
यारे मनय लाललेदी० ।
न दिन कों चैन न रातको ख्वाव आंखां में जबसे वो
खान अबाद आंखां में दी० ॥

४

तोरी वारी फूल रही हारे कलियां
महक रहीली सुगन्ध ।
फूल रहीहैं नई नवेलरियांरो सब बरन बरनके अङ्ग ॥

५

द्रुमद्रुम बाजुरे बाजु बाजुरे मन्दिलरा
साजन के घर काज ।
सब सखियन मिल देही मुबारकी
नवल बना पाया राज ॥

६

एरी माई हों पहरूंगी चोलरा हरियाला
चोलरा चोलासो ।
पच रङ्ग पाग में पियाकों अध्याउं सब सोतन घर सालरा

भैरव—ताल झमरा

करत रहत हो प्यारे मोसों तुम नित हित चितके
झूठे झूठे बैन ।
औरनहीं ते जीयकी बात नित उठ गिरह जात
दुरायर करत हो नैन सैन ॥

भैरव—सवारी

राधे तेरेरी आंगन अमृत फलियो डालरीयां ।
असुंअन सींच सींच बोऊंगी अंबुवा वोतो
सोइ बैठि छावरीयां ॥

२

पिउ भोरही आए अति मामन भाए लागत रङ्ग सवाए
जावक तिलक लगाए अधरन अञ्जन लाए
बोलत मधुर सुहाए ॥

३

प्यारे मोरे जिन तोड़ो मोसों नेहरा ।
तुम बिन मोहे कल न परत है भावत नाहीं गेहरा ॥

४

करत रहो प्यारे नित गार ।
अवध बदि निशाके सिधारे आएहो भिनसार ॥

भैरव—धीमा तिताला

साजन लागो गरे दुख दूर करो परे ।
जों धरो सुख सन बाते सोई क्योंन करे अतर सुगन्ध धरे ॥

भैरव - तिताला

बनेके लागारी लागारी टोना ।
जब मेरा नशा बना आवे अकेला पटिया
गुंथावे सुगन्ध सना ॥

भैरव - सवारी

हजरत निजामदीन चिश्तो जर जरो जर बकस पीर ।
जोइ जोइ ध्यावे तेइ तेइ फल पावे
मेरे मनकी मुराद भर दीजे अमीर ॥

२

अनत जाय बिलम रहिला पिउ न जानो
कौन तियाके सङ्ग ।

हमसों अवध बदि कहि औरन सों रसरङ्ग
करत सखियन सों नएनए ढङ्ग ॥
२
तोरी वारी फूल रही कलियां महक रहीली सुगन्ध।
फूल रहो हैं नई नवेलरीयां अब बरन बरनके रङ्ग॥

भैरव · तिताला

भए भोर प्यारे चिरियां बोलन लागी
गावत गुनी भैरव राग।
बन्दीजन बिरदत और गुरुजन पुरजन जागे
बाजत मृदङ्ग धुम किट तक् धिलांग॥
२
भोर भइल आवत मरमानें दरस आधतें लालन आए।
नेह लागिला प्रीतम मेरे बतियां करत मींसों
मीठी चाह॥
३
मन बैरागी मेरा करतार मन बैरागी।
निश दिन सुमरन ध्यान हरिका चरणन में अनुरागी॥
४
जोगीया रावला भोरही आए मेरे।
भिच्चाटें देलें दाबी नाहीं चितावन करत चितेरे॥
५
या अली या नवी मुशकिल करो आसान देहो
मुराद मनकी।
तुम बिन मीत नहीं और न आसरा ऐसे समय मेरो
बांह गहो सुध न रही तनकी॥
६
सगरी रयन के जागे पागे सुघर सुरजनुवा तू बलमा
भोरही भोर मेरेही आए।
हसन और बसन कर लीनो चिरियाँ बोलत
तन मन धन नोछावर कराए॥
७
मेरो जिय गौर करले दाता रब सांई।
दे दिलादे हुकम करदे अन धन ए राम गुसांई॥

राति माती अपनें पियाके सङ्ग एमा कोउ होवै
हमरा दुरजनसो तन डरे।
अनन्द भोगवा करहु मोरे मन रहस रहस कर
अपने पोतमसों काहूसों मोरा जो न डरे॥
९
जाइए सुलतान के वारने।
दिलवर दिलारा आकवत खैर चाहे इमान जके वारने॥
१०
दोउ अनुराग भरे आए रङ्ग भवन भाग
मघवासिभी लखि लागत सहल है।
बैठे एक आसनपै एक सङ्ग एक रङ्ग
उठ्यो न परत अङ्ग कोमल कहल है॥
एकन ले अतर लगायो देव दोउनपै छिरकके
गुलाब कियो बीजलो बहल है।
ले बीन परवीन परवीनो सखि अलाप
समझे सुरपुञ्जनतें गुञ्जत महल है॥
११
श्रीकृष्ण नाम रसना रट सोई धन्य कलि में।
जाके पद पङ्कजकी रेणुकी बलिमैं॥
सोई सुकृत सोई पुनीत सोई कुलवंता।
जाकूं निश दिना रहे कृष्णनाम चिन्ता॥
योग यज्ञ तीरथ व्रत कृष्ण नाम माहीं।
बिना कृष्ण नाम कलि उद्धार और नाहीं॥
सब सुखनको सार कृष्ण कबहुं न बिसरिए।
कृष्ण नाम लेलें भवसागरकों तरिए॥
श्रीगोवर्द्धन धरन प्रभु परम मङ्गलकारी।
उद्धरे जन सूरदास ताकी बलिहारी॥

भैरव · एकताला

कृष्ण नाम भावै मोहि कृष्ण नाम भावै।
बलिहारी ताकी जो कृष्ण नाम गावै॥
बसुधाको सार कृष्ण मेरे मनको आधार।
कृष्ण श्रवण मङ्गल रूप कृष्ण सब बिचार॥

मन्त्रन को मूल कृष्ण हरन सकल खल कृष्ण
ब्रज समुद्र कों बार कृष्ण शिवको आधार ॥
मेरे रसनाको भाग्य कृष्ण मनको सुहाग
कृष्ण सब तन्त्रनको तन्त्र कृष्ण सब मन्त्रन सुधार।
यह रामराय कहत कृष्ण कोंही जपत भगवान
कृष्ण वारंवार ॥

२

हरि हरि हरि कृष्ण कृष्ण राम राम राम।
नारायण नारायण वासुदेव वासुदेव गिरिवरधर
गिरिवरधर श्याम श्याम श्याम ॥
दीनबन्धु दीनबन्धु वैकुण्ठधाम।
होत प्रात बड़ पुनीत लेत हरिको नाम ॥
दामोदर दामोदर चक्रपाणि चक्रपाणि।
नरहर हरिनर हरहरि मुररिपु मुरारी,
मधुसूदन मधुसूदन सांवरे बनवारी,
यमुनाके नीरे तीरे वृन्दावन धाम।
सूरश्याम रटत रहत राधावर नाम।
भोर उठ सुमरन करो होय सबही काम ॥

३

बाँसरी बजाई आज रङ्गसों मुरारी।
शिव समाधि भूलि गई मुनि मन तारी ॥
वेद भणत ब्रह्म भूले भूले ब्रह्मचारी।
सुनतही आनन्द भयो लागीहै करारी ॥
रम्भा सब ताल चूकी भूली नित्यकारी।
जमुना जल उलट बह्यो सुधि न सम्भारी ॥
श्रीवृन्दावन बंसी बाजी तीन लोक प्यारी।
ग्वालबाल मगन भए ब्रजको सब नारी ॥
सुन्दरश्याम मोहनी मूरति नटवर वपुधारी।
सूर किशोर मदनमोहन चरणों बलिहारी ॥

भैरव—तिताला

दध के मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकें।
सीस मुकुट लटा छूटी और छूटी अलकें ॥
सुर नर मुनि द्वार ठाढ़े दरस कारन किलकें।
नाशिका के मोती सोहै बीच लाल ललकें ॥
कटि पिताम्बर मुरली कर श्रवण कुण्डल झलकें।
सूरदास मदनमोहन दरस देहों मलकें ॥

२

भोर केही मेरे भाग जागे साँवरे सजन आया।
सोहनी सूरत भभी अँखिया चढ़ियां रङ्ग सवाया ॥
सोंधे भीने बाल सजनदे सखियाँ गर लाया।
मनदी मुराद पूजिया सब पिय खुशाल पाया ॥
तन मन धन सदके कीती जोवड़ा घोल घुमाया।
सांवली सूरत माधुरी मूरत देख छवि सुख पाया ॥

३

चिरहीनके सुसुहात प्रात जागी दुलही
गुरुजनकी शंक मान भोरही उठ जागी।
रमक झमक आयके यशोदाके पाय लागी।
देत असीस नन्दरानी अवचल सुहागी ॥
चिरञ्जी रहो सुन्दर जोरी निरख निरख हिय सिराई।
श्यामा श्याम छवि देख बलि बलि बलि जाई ॥

४

देखोरी एक बाला योगी मेरे द्वारे आयो है।
दिगम्बर ओढ़े बाघम्बर सीस नाग लिपटायो है ॥
माथे उनके तिलक चन्द्रमा योगी जटा बढ़ायो है।
भीतरतें निकसी नन्दरानी मोतिन थार भरायो है ॥
भिक्षा लेओ जावो आसनकूं बालक मेरो डरायो है।
ना चाहौं तेरी दुनियां दौलत ना चाहौं तेरी माया है ॥
जाओ ले आवो अपनें बालक कों में दरशनकूं धाया है।
पांचबेर परकरमा करके सिंहनाद बजाया है ॥
देवकीनन्दन कंसनिकन्दन नन्दको लाल कहाया है।
श्रवण लाग कुछ मन्त्र सुनाया हंसि बालक किलकाया है।
सूरदास प्रभु दरशन करके शङ्कर नाम बताया है ॥

५

दशरथ सुत देख देख जनकसुता मोही।
धनुष बान कोई चढ़ावे मेरो पति सोही।

सीताजू कहे पिताजी सों धनुष प्रनत होजो ।
ऐसो वर राम साज तिलक को सजो ॥
सीताजू के वचन सुनत सबही मुख मोड्यो ।
तबही तत्काल राम कठिन धनुष तोड्यो ॥
घर घर आनन्द होत अचरज यह कियो बाल ।
तबहीं सीय पाय लाग डारी है गरे जयमाल ॥
जय जय जयकार होत बाजैं बहुबाजा ।
अग्रके स्वामी जीत आए अयोध्या के राजा ॥

६

छानो मानो आवे कान्हों पाछलीरे राते ।
बासलिया में भैरव गावे उठीने परभाते ॥
सम खाई सूती हती नहीं बोलू दूह साथे ।
द्वार उघाड़िके पांय लागी वा मुरली ने साथे ॥
श्या तप कीधा अहीड़े अहीरडानी जाते ।
नरसिया नों स्वामी रीझो अबला ने गाते ॥

७

चीरा फेंटा तुर्रा धरके नाक बुलाकी अधर मटकी ।
मन्द मन्द मुसक्यात कन्हैया कुण्डल चपला सी चटकी ॥
सब तन आछे सजे अभूषण कटि ऊपर जुल्फें लटकी ।
चरनदास सुखदेव कहत हैं चित चोहटमें
मटकी पटकी ॥

८

मोहन मेरी मटको फोरी सुनो यशोदा माई हो ।
एसो लड़को दधिकों फड़चो मागत दूध मलाई हो ॥
मटकी झटक पटक फेर सटको अब नहीं देत धराई हो
लेकर लठिया यशोदा उठी कत तैंने धूम मचाईहो ।
भोरही मोकों देत उलहना सब ग्वालन घर आई हो ।
सुनरी माई बाबा दुहाई बाको दधि नहीं खाई हो ।
सब ग्वालिनी नटखटही हमकों घर पकर ले आई हो ।
तनक मुरलीया टेर दईरे सबकों मत बौराई हो ।
ज्ञानदास बलिहारी छविकी मोहन की चतुराई हो ॥

९

आज सखी मोरे अनन्द भयोहै घरमें मोहन लाधोरी ।
बन जोइ वृन्दावन जोइ जोइ बिरज सब बाधोरी ॥
सतवे मलोए अजब झरोखे वाही तें हरिजी लाधोरी ।
म्हारा तो घरमें मही घनेरो हरि चोर चोर दधि खाधोरी ॥
अपने द्वारमें कबको ठाड़ो बांह पकर हरि साधोरी ।
मीरा के प्रभु गिरिधर मिलियो बिरह बाजने बांधोरी ॥

१०

हलवे हलवे हलवे हरजी माहे मंदिरीए तुमही लोजो ।
माहिरे पलका सूं वाल्हा थारी डगर बहारूंजी ॥
घड़ी घड़ी पल पल छिन छिन निश दिन
थारो रूप निहारूंजी ।
भाव प्रीत नैना तर निरखूं म्हाने वाल्हो लागोजी ॥
नारायण नेतु निरञ्जन नटवरबाहु बखानाजो ।
नरसीनो स्वामी साँवलियो घटघट अन्तर छायाजी ॥

११

बास नहीं त्यां वैष्णव केरो तहां न बसीए बासड़िया ।
जीभ दुली जपमाला नाकरें ते जीभड़लो खासड़िया ॥
सांस उसासे सुमरण ना कर्यो धमण तणाँ ते सासड़ीयाँ ।
नरसैया माए भारे मारी मावड़ली दश मासड़ीयाँ ॥

१२

नवल लाल लाड़ले दोऊ रङ्ग महल जागे ।
घुमत रतनारे नैन मैन के रस पागे ॥
तनकी जोत जगमगात मुखमयंक मानों ।
चिरियन के चुचुहात भोर भयो जानों ॥
आसपास रूपरास सहचरी चहुँ ओरे ।
उमग आयो आनन्द उर जुगल बांह जोरे ॥
अति उदार छवि अपार कौन पै कहि आवै ।
शम्भु शेष शारदा नहीं निगम पार पावै ॥
बोलत अति मधुरे बैन अति सुहावन लागे ।
राम सखि रामसोया आलस सब त्यागे ॥

१३

रामचरण चिह्न चिन्त सब बिध सुख साजे ।
रघुवरके चरण कमल अङ्कन युत निरख अमल
धारे पदचिह्न राम सज्जन हित काजे ॥

रामचरण दाहने सोई सीतापद वामचिह्न
बिंशतीन खास्त काष्ठ कौन श्रीविराजे ॥
हल मूसल सर्पवान अंबराष्ट पद्म जान
बज्र बज्र ऊर्द्धरेख कल्पवृक्ष छाजे ॥
अङ्कुश ध्वज मुकुट चक्र सिंघासन चमरछत्र
पुरुष रेख माला जव दक्षण पदभ्राजे ॥
गोपद घट छित पताक जंबूफल अर्द्धइन्दु
शेष षष्ठकौन नयगदा सुबिंदु राजे ॥
सर्ज शङ्ख सुधाकुन्द त्रिवल मीन पूरणचन्द
बीणा बेणु धनुष तूण हंस चन्द्रकाजे ॥
सीताराम चरणों शुभ चिह्न षष्ठ चालीस नित
चिन्तत शिव नारद सनकादिक अहिराजे ।
रामचरण ध्यान करत गोपदो इव युक्त तरत
बिरति ज्ञान भक्त भरत सजत सत समाजे ॥

१४

राघव भोरही जागे नींद भरी अँखियन मनभावन ।
उठ बैठे फूलन सेज ऊपर कोटिक काम लजावन ॥
मृदु मुसक्यात जम्भात सीता तन झुक झुक पलन मोहावन
राममखे छवि देख बिवस भए कोटि काम सरमावन ॥

भैरव—झपताल

चला चलोका मौदा जगमें भला भलो कर लीजीए ।
सुमिर सुमिर श्रीराधावरकों नाहक बात न छीजीए॥
परमारथ स्वारथ लगके काहू दगा न दीजिए ।
समझ बूझ बलिहारी प्यारे मीत मनोहर कीजिए ॥

भैरव—तिताला

फूलन कों गूथ गूथ पहिरे हैं तन में ।
देखरी अनूपरूप बिहरत है बनमें ॥
शोभित गिरधात अङ्ग लजित लखि ऋतु वसन्त सरस
सन्त निरख निरख ग्वालनके गनमें ।
सुन्दर कपोल लोल तापर कुण्डल अमोल
डोलन अति सुहाई माई दामिनी जो घनमें ।
महा आनन्दित गोपनार भूली सुध छवि निहार
बोलने चलनी अङ्गको झुकनी पदरस गई मनमें ॥

काहे कूं तजिए संसार तजिए अपने कुमत बिकार ।
बासुदेव बद्री वामन बपु बुधवरहि बिहारो ॥
वामदेव बैकुण्ठबिहारी सुमरण करले वारंवार ॥
जिन पायो तिन याही में पायो करले गुरुज्ञान बिचार।
बेद पुराण साधको सङ्गत में जुगराज दास प्रभु नमस्कार॥

३

नित नित नैना बरजो रहीरे ।
फेर फेर उतही आरबार लरजत प्रभु सों परबस भईरे॥
रूपलाल रचि सीख न मानत श्यामश्रोर
एक टक मग निरखत निमिष न लागत नहीं पलरे ।
लागत तोरत जोरत अति दुख उरझ रही कहा सुरझेरे।
ज्ञानदास मोहनकी बतियां चितवन में कछु कर गयोरे ॥

४

पिय प्यारो भोरही भोर निहारे ।
आवत गलबहीयां अलसानें नैना सरमानें
शोभा सदन अपारे ॥
सङ्ग सखी नवरङ्ग रङ्गीली नख सिख रूप सवारे ।
रसिक खुशाल करत निशि बासर कुञ्जनि कुञ्ज बिहारे॥

भैरव—धीमा तिताला

यललो यललुं यल यललतेननना द्रद्रतुं द्रद्रद्रद्र
तदरत दरउत तन तदरत दरदानी ।
महबूब इश्क खूब मारा बहाने
साखत उस्ताद का न्याज औ रङ्गे बहाना साखत त०॥

२

ओट किमार की झांकत हूं री तापर मेरो चवाव करेंगी।
बैरन हैंगी मेरी सौंतिलो ता ऊपरसों मोंट धरेंगी ॥

३

चले हरि धेनु चरावन कूं लकुट ले
कामरीया कारो कांधे पर धरे ।
पीत बसन कसे कटिपे सीस मुकुट कुण्डल दोउ
श्रुतिकपोल मञ्जु मुरली अधरे ॥

सुघर अलकें अलसानें जात उर सोहे
मन मोहे या छबि निरखत माल सुमनकी गरे।
ग्वालबाल गोपी जुगराज दास रस चौपीरस
के पिवारन से सकल जगतके पीउ नंदके घरे॥

भैरव—सिंधु तिताला

जय जगदीश विश्वके स्वामी अखिल लोक आधारा रे।
ध्यान धरे निशि वासर जिनकों चतुरानन त्रिपुरारा रे॥
निगम नित्य निरगुणही गावैं बदत ब्रह्म निरङ्कारा रे।
सोई हरि भुवभार उतारण कारण अलख भए साकारा रे॥
दीनबन्धु धर्म्मके स्थापक सबको करें सम्भारा रे॥
इन्द्रदमनपै किरपा कीनी करन पतित उधारा रे।
उत्कलदेश नीलपर्व्वतहै महोदधिवारि किनारा रे॥
तहां बिराजे बाल पुरुषोत्तम श्रीमहाप्रभुजी प्यारा रे।
श्रीजगन्नाथ बलभद्र सुभद्रा चरणकमल चित धारा रे॥
पास सुदर्शन अरु सत्यभामा पास समुद्र कुमारा रे।
मन्दिर मध्य रत्नसिंहासन तहा प्रभु धरो सिङ्गारा रे।
होय आरती भोग अरोगे रुचिरुचि वारंवारा रे।
श्रीलक्ष्मीजी करें रसोई षटरस बिबिध प्रकारा रे॥
करमाबाई खिचड़ी अरोगावें करि करि के मनुहारा रे।
यह प्रसाद भक्षण जिन कीनों तें नजाय जमद्वारा रे॥
महाप्रसाद देवनको दुर्लभ सोजे करें अहारा रे।
तिनके भाग्य कहालों कहिए तें उतरें भवसों पारा रे॥
कोटि जनम विप्रहो होवै सुख निरखे नरनारा रे।
पतितपावन चरणामृत लिए कटिहै पाप अपारा रे॥
कामी क्रोधी लोभ मोह में मन मति गड़े गवांरा रे।
श्रीवल्लभप्रभुपादकृपा सों सहज तरे संसारा रे॥
आनन्दघन सब सुख के सागर ले हरि कृष्ण निहारा रे।
त्रिभुवन नायक सब सुखदायक गिरिधर प्रभु निहारा रे।

२

जगन्नाथ-बलभद्र-सुभद्रा चरणकमल चित लावो रे।
श्रीसुदर्शन लक्ष्मी सतभामा रत्नसिंहासन शिर नावो रे॥
गरुड़स्तम्भको अद्भुतलीला छप्पनभोगकों ध्यावो रे।
पतितपावन-चरणामृत लेके परिक्रमा दे आवो रे॥
पुरुषोत्तमपुरी को यहि बसवो बड़भागन जिन पायो रे।
श्रीवल्लभप्रभु-चरण-कृपातें गिरिधर यह यश गायो रे॥

मूलतान—तिताला

ए मन मेरो लागोरे श्याम सुन्दरवा सों।
गोकुलचन्द मनोहर मूरत चित अटक्यो वाही
लङ्गरवा सों॥

सिंधु काफी—तिताला

रङ्ग रङ्गीलो प्यारो श्रीजगन्नाथ।
बलभद्र भैया पास बिराजे बीच सहोद्रा साथ।
सुदर्शन और रत्नसिंहासन कर्म्माबाई खिचड़ी हाथ॥
श्रीलक्ष्मीजी करत रसोई साजे कञ्चन थार।
पतितपावन-चरणामृत लेके परिक्रमा दे उतरें पार॥
महाप्रशादको अद्भुत महिमा हृदय-अमृतको धार।
उत्तर दरवाजे श्रीमहाप्रभुजी बिराजे सेवाको सुखसार।
बल्लभ रसिया मोमन बसिया गिरिधर प्राण आधार॥

२

श्रीजगन्नाथ-बलभद्र-सुभद्रा इनके चरण चितलावो रे।
लक्ष्मी-सत्यभामा-श्री सुदर्शन बाल पुरुषोत्तम ध्यावो रे॥
दरसन तें दुख दूर होत हैं रतनसिंहासन शिर नावो रे।
परिक्रमा में सब देव बिराजे दरस परस सुख पावो रे॥
पतितपावन-चरणामृत लेके कोटिन पाप मिटावो रे।
याही पुरीको याही महिमा एकै ब्रह्म बतावो रे॥
श्रीमहाप्रशाद भक्त सों लीजे हर कोई जन लावो रे।
गरुड़स्तम्भ प्रेमसों मिलके कर्म्माबाईको खिचड़ी पावोरे।
मार्कण्डेय समुद्र महोदधि इन्द्रदमन न्हाय आवो रे॥
उत्तरपौर महाप्रभुजी को बैठक वैष्णव जन भावो रे।
श्रीवल्लभ गिरिधर-चरण-कृपातें परमपदार्थ पावो रे॥

आड़ा—होरी

मुरली बजाई वो मेरा प्यारा।
तुझबिन नैना नींद न आवै सुध बिसराई वो मेरा प्यारा।
एकतो बैरन ननद ललागी नित उठ तेरो नाम लगाई
पोर न पाई वो मेरा प्यारा॥

सुन धुन वंसी कलन परे मोहि सुध बुध सब बिसराई ।
तेरे हित बलिहार बिहारी गुरुजन लाज गंवाई
घर अङ्गना न सोहाई होमि० ॥

भैरव—ताल तिवड़ा

गिरिधर नागर हो गति चलत पायन बाजत
नूपुर कणित रुनझुन किंकिन झनकार ।
अङ्ग अङ्ग सुदेश नटवर, बाजत वेणु रसाल व्रजचन्द मुकुटधर,
दिगि दिगि दिगि द्रौं द्रिमिकिटिना
कुकुकुकुत कुकुकु थेइ थेइता गत लेत
सुरत सँवार नन्दकुमार ॥
ततताकिट तालवेवट उघटि तत्ताधीधीथुंथुं
नाना बजतत मृदङ्ग हाव भाव मिलितनता
किटिकिटि तिधा धुमकिटि धीलांग तकधा प्रकार ।
निरत गोपी मण्डलमें सुरपुरनार भई बलिहारी
वृन्दाविपिन करत विहार ॥

भैरव—तिताला

नन्दके ढिटोनाने टोना कियारे
टोना किया कुछ जादू कियारे ।
टुक मुख दिखाय चित चोराय लीनों
तन मन मेरा बस जो कियारे ॥
मन्द मन्द मुसकाय माधुरी बैनन
मृदु बचन बोल लिया
राग रङ्गसों बंसी बजायके चेटक मा कछु
पढ़ जो दियारे ॥

भैरव

जागो रघुनाथ कुंवर पञ्छी बन बोले ।
शशिकिरण शीतल भई चकई पियको मिलन गई
अति सुगन्ध पवन बहे पल्लव द्रुम डोले ॥
प्रात भानु प्रगट भयो जिय जन्तन सुखपायो
मधुप करत गुञ्जार कमलन दल खोले ।
तुलसीदास अति अनन्द निरखके मुखारविन्द
दीननको देत दान भूषण बहु मोले ॥

जागिए कृपानिधान जानराय रामचन्द्र
जननी कहे बारबार भोर भए प्यारे ।
राजीवलोचन बिशाल पीत वापिका मराल
ललित बदन ऊपर मदन कोटि कोटि वारे ।
अरुण उदित बिदित सरवरी तुसंक किरणहीन
दीपजोति अतिमलीन दुत समूह तारे ।
मनहुँ ज्ञान घन प्रकाश बीते सभोग बिलास
आस त्रास तिमरताप तरुण तेज जारे ॥
बोलत खग निकर मुकर मधुरी करि प्रतीत
सुनो धन्य प्राणजीवनधन मेरे तूँ वारे ।
मनहुँ बेद बन्दि मन बदत सुत मागधादि
बिरद बन्धु ताके जय जयति कोट भारे ॥
सुनत बचन प्रिय रसाल जागे अति शिवदयाल
भागे जञ्जाल बिपुल दुख कदम्बतारे ।
तुलसीदास अतिअनन्द निरखके मुखारविन्द
छूटे भ्रमफन्द परम द्वन्द दुख टारे ॥

भैरव—एकताला

कैते सुख होत प्राण राम नाम जपतें ।
मङ्गल मुदित उदित होत कलिमल छल छपतें ॥
किमि चाहत फल रसाल बबुर बीज बुवतें ।
एसोई या जनम जात गाल गुल गपतें ॥
काल कर्मगुण सुभाव सबके सीस तपतें ।
रामनाम महिमा की चरचा छल छबितें ॥
साधन बिन सिद्धि बिकल सकल लोक बकतें ।
पावन होय नाम लेत तुलसी सो अपतें ॥

भैरव—तिताला

देखो री एक बाला जोगी मेरे द्वारे आया है ।
दिगम्बर ओढ़े बाघाम्बर सीस नाग लिपटाया है ।
माथे उनके तिलक चन्द्रमा जोगी जटा बढ़ाया है ॥
भीतरतें निकसी नंदरानी मोतिन थार भराया है ।
भिक्षा लेओ जावो आसनको बालक मेरा डराया है ॥

नाचाहों तेरो दुनियां दौलत नाचाहूं तेरो माया है ।
जाओ ले आओ अपने बालकको मैं दरसनको आया है ॥
ले बालक निकसी नन्दरानी शम्भू दरसन पाया है ।
पांचवेर परकरमा करके सिंघो नाद बजाया है ॥
देवकीनन्दन कंसनिकन्दन नन्दके लाल कहाया है ।
सूरदास प्रभु तुमरे दरशकों जसुमत पलने झुलाया है ॥

चलहु प्राग बुधवर दरसन त्रिवेणी पातकहरनी ।
सुर नर मुनि सब प्रागही आए, मानुष तन तिन दरसन पाए ;
मातपिताको बुरको देखे समझ चले आपन करनी ॥
प्रागराज परकरमा करके भारद्वाजजी कोटि साखी
करूं अस्नान दान कुछ देके माधोजी शङ्करशरनी ।
गङ्गा यमुना सुरसुती ए तीनों सङ्गम भई,
सूरज पुराण भागवत गीता इतनी महिमा शिव बरनी ॥
गङ्गा यमुना घाटबन्धे हैं पातककी दलमल-करनी ।
तुलसीदास प्रभु तुमरे मिलनको कोटि जनमको
भवहरनी ॥

३

शोभा सदन बदन दोउ देखे
नयन मोहनी सैन ठगोरी गुण प्रवीण राग नट भेषे ।
आलस अङ्ग अङ्ग निशि जागी भरे विनोद अपार विशेषे ॥
भूषण बसन मणिन हारावली ललित
नयन काजर छबि रेषे ।
रसिक खुशाल बिलोकत यह सुख
राधावर सुख सार विशेषे ॥

४

आवत कुञ्जनतें पिय प्यारी ।
अति रस भरे उनींदे नयना रूपरशि सुकुमारी ॥
भूषण बसन अङ्ग अङ्ग राजत छबि बनमाल अपारी
रसिक खुशाल करत रस बरषत राधे कुञ्जबिहारी ॥

५

जागिए दशरथकुमार सन्तन सुख दाई ।
सुधि लीजिए कृपा कीजे अपना जान रस रीझे
राजा महाराजा गुणगाहक गुणदाई ॥
भयो प्रात भानु उगो जीव जन्तु सभी जागे
कमलन मुख खोलो मधुप गुञ्ज अति मचाई
तिमिर गयो रजनी को छायो जगमें प्रकाश
चारों दिश सुनियत धुन मङ्गल प्रगटाई ॥
उठ बैठे प्रेमजान रामलला गुणनिधान
जन खुशाल लागो ध्यान चरणन चितलाई ॥

६

जगत में आयके ऐसे भुलाए तुम ऐसे भुलाए ।
अपना रूप आप नहिँ चीन्हा अपनी मायामें
तुम आपो नचाए ॥
खान पानमें मनचित राखे सुरत त्रिया रसमें अटकाए ।
सङ्गत छोड़ असङ्गत बैठे हरिसे भजन करार कर आए ॥
भटक फिरो लोक तीनोंमें हरिसों कबहुं नेह न लाए ।
रसिक खुशाल मिलेंग जबहीं निशदिन
रहो ध्यान हिय लाए ॥

७

भोर भए जागिए नन्दकिशोर ।
गोपीग्वाल कहत मुख खोले लखो हमारी ओर ॥
पहिरो भूषण बसन पियारे पीताम्बर पटछोर ।
निरखो सांकरी खोर वृन्दावन कुञ्जनिकुञ्जन ठौर ॥
उठ बैठे अलसाने नैना मुसकावत चितचोर ।
रसिक खुलाल प्रेम राधावर मांगतहै करजोर ॥

८

उमा अङ्ग उबटनतें प्रगटे श्रीगणराज बिराजे ।
ऊषा सखा सङ्ग सजी सुन्दरी द्वार रखनके काजे ॥
स्नान करनमें जात महलमें घरमें कोई मत आवे ।
द्वारे रोक जतैयो मोंको कहिके कोऊ आवन पावे ॥
नारदमुनि आए तिन रोके शिव समीप द्रुत धाए ।
कुशल पूंछ सुन मुनि हंस बोले किन बालक उपजाए ॥
उमा द्वार रोकनको बैठो घरमें जान न पायो ।
तब पूंछनको आयो शिवजी अचरज तुम्हे सुनायो ॥
तज समाधि शिवमन्दिर आए अन्तर जान न पाए ।
पकड़ जटा बाहनको खींचो बाहुयुद्ध मचाए ॥

पितापुत्र दोउ बारि बूढ़े बल नहिँ कोउ अधकाए।
सगुण निरगुण दोउ ब्रह्म समरमें निरगुण अधिक उकताए॥
त्रिगुणात्मक त्रिशूल चलायो सगुण ब्रह्म शिर छेदाए।
जाय पड़ा शशिके मण्डलमें कन्या भागी जो बचाए॥
उमा नाथ निहार लाजके कैशन अङ्ग छिपाए।
मैं राखे दोउ बाल रोकनको कैसे आवन पाए॥
काहे शङ्कर हम नास उड़ाया रोकत खड़न जो बाला।
कन्या भाग गई सन्मुखसे अबला जाग न बाला॥
उमा कहत कहा तुम बातोंमें रार्त उपजाया।
बालक जिए बिन प्राण तड़ंगो रोवत आंसु दरसाया॥
गणको शिर ल्यावनको पठए भुवनमण्डल नहिँ पाया।
पुनि कहि जोर सोम कोउ ल्यायो दिग्गज सुत शिरलाया॥
परसत हाथ गजानन बोले क्षमा प्रभु मोहि कीजे।
अनजाने अपराध तजि बिन कछु बर दीजे॥
हसि बरदान दिए गणपतिको आप पूरब पुजवाए।
प्रेमरङ्ग प्रभु गणनायकके सुर नर मुनि यश गाए॥

हरि हरि हरि हरि जपनारे।
जब लग प्राण रहत घट भीतर तबलग सब जग अपनारे॥
मात पिता दारा सुख सम्पद वृथा जगतकी कल्पनारे।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि आखिर जगको सपनारे॥

१०

चीरा फेंटा तुर्रा सजके नाक बुलाकी अधरन मुरली छटकी।
मन्दमन्द मुसक्यात कन्हैया कुण्डल झलक चपलासी चटकी॥
सबतन आछे सजे आभूषण कटि ऊपर जुल्फें लटकी।
चरणदास सुखदेव कहतहैं चितचोहट मटकी पटकी॥

भैरव—एकताला

लगो मोहे आन पियारी तीखी सखीरी बोलन चलन चितवन मुसक्यान।
सीस मुकट झुकनी कनक कुण्डल कानन हलकन
लकुट धर धरनकर कञ्चन डगर डगर डगमग पग लखरान॥
रुन झुन पग नूपर बजन घुँघराई अलकन
पलकन पर फैल रही ललकन मनमोदमान।
छल कैसो सुचरित करत बलके जुगराज
निरखि पलकन परन देरी बलकैन बिचार चारपानजान॥

भैरव—तिताला

भूपके भागनको अधिकाई।
टूट्यो धनुष मनोरथ पूज्यो बिधि सब बात बनाई॥
पहरायो जयमाल जानकी युवतिन मङ्गल गाई।
तुलसी सुमन बरषत हरषत सुर सुयश तिहुं पुर छाई॥

राधिकुख लाग सुन्दर अति अनेक कञ्ज मृदु अरुण प्रफुलित गात।
बैठे उठे अलसात नैनन छाई छवि कहत सब नारद शारद महेश॥
झुकरहीं अलकें कपोलन पर झलकें सुन्दर सुवेश।
रामचरणके हिरदे बसो जुग मूरत मधुर प्रवेश॥

३

मोकों प्यार कीनों सुरजन गल बहियां डार।
रंग रङ्गीले सुरजन मोरे आए गले फूलबनों को हार॥
तरैयां छिपान लागी कगवा बोले चौंकपरी पिया भोरको।
निश नींद न आवे कल न परतु है बिगर दरसवा दीजे
कहीं चलत है मोरे गुसैयां तुमपर जोरीको॥

४

गजर फजर नारायण गावे आलस अङ्ग उड़ावेरे।
जासों रैन जरखरो साहबकी साहब पढ़े पढ़ावेरे॥
सब तरह हाजर रहे सदाही दबत राजोना जतावेरे।
दवतर चड़सो तबतर तनमें कमतर फैन कुड़ावेरे॥
परमारथकी बात पूंछतों बड़वा करे बड़ावेरे।
जिनके सङ्गतें दोष उपजे उनसे कुढ़े कुढ़ावेरे॥

लगन सारतें बिघन बिलाए तारे तारे जोड़ावेरे।
दीन कहे मन मगन भजनमें गगन निशान गड़ावेरे॥

५

सोई सन्त कुलवन्त कहावत गावे गोविन्द गीतारे।
नरगावे नारायण सुमरे जे जन जगमें जीतारे॥ टेक
सुरत नुरत कर सब साधना बरतें सकल बिदितारे।
अर्थ गर्थ एक हरि माहीं सहज सुभाव सुनितारे॥
सबही कामतें मरोखा मानें अन्तर नाहीं अनितारे।
जन्तर मन्तर कछुन जाने समझन प्रेम समीतारे॥
ज्यां जैसा त्यां तैसा सबमें परब्रह्म पार पुनीतारे।
परनिन्दा पैसा नहीं चाहै वाञ्छे नाहीं वनितारे॥
सर्व्वे इष्टसों पेखे साहब भरमें सोच न चिन्तारे।
भरना भगाया जलके तांई झलके आधा गीतारे॥
गावे वेदकों जो शास्तर गावें गान गुणीतारे।
दीन कहे सोई तीन लोक पर निरभय अमन अतितारे॥

६

प्रात समय स्नान करनको गङ्गाजीकी धाराहै।
निरमल वचन सुनोह्नो प्राणी पाप कटनको आरा है॥
अमृतजलको पान करो और ध्यानधरो गङ्गाधरको,
नित उन चरणतसों लगाय रहो चित याहीमें निस्ताराहै।
शीश नवाय करो हों विनती पत राखो तुम शरणागतको
अधम उधारन जगनिस्तारन महिमा अपरंपाराहै॥
शिव समान नहिकोउ दाता तीनलोककी तुमही माता
कीट पतङ्गादिक नर पापी सबको तुमने ताराहै॥

७

पतित जन तारो मात गङ्गे पापविनाशनी
ताप उदारनी करुणा कर निस्तारो।
मोह तरी बही भवसागरमें पवन चलत मझ धारो॥
तारण तरण तूही वरदाता नइया पार उतारो॥

८

नीलकण्ठ गिरिजापति शङ्कर शशिशेखर
हर तुव शरणा।
रुण्डमाल समशाननिवासी भक्तजननके असुशरणा॥
व्याघ्राम्बर वृषभवाहन शशीधर भूषण शिरगङ्गाधरना।
कैलाशाचल अचलनिवासी भस्मअङ्ग करुणा करना॥ टेक
चन्द्रहास शशिचन्द्र पिनाकी शूलपाणि डमरु वरणा।
गजमुख-षणमुख-क्रतमुख-दुरमुख नन्दीभृङ्गीसंग
आचरणा॥
भाङ्ग अफीम और आक् धतूरा अमल खाय
आनन्द भरना।
काशीनाथ पशुपति प्रभु मेरे प्रेमरङ्ग प्रभु तुव चरणा॥

९

परब्रह्म ॐकार नारायण पद्मनाभ मधुसूदन राम।
मीन कूर्म्म श्रीयज्ञपुरुष प्रभु नरहरि वामन भार्गवराम॥
श्रीरामचन्द्र-श्रीकृष्णचन्द्र श्रीजगन्नाथ-कल्की परनाम।
अज नारद मुनि सनक शेष शिव ध्रुव प्रह्लाद जपत
हरिनाम।
हनुमान शुक शौनक वल्लभ पौण्डरीक सुर सरनाम॥
तुलसी कवीर नृसिंह तरे अबप्रेम रङ्ग तारक परणाम॥

१०

भोर भए नीको मुख हंसत देखाइए।
रातके दरशके बिछुरे दोउ पलक मेरे
वारि फेरि डारोंनिकु नैन निंदराइए।
कोमल उन्नत बाहु ऊपर अमित भाव मेरो
तेरो छाति छवि अधिक बढ़ाइए।
छितस्वामी गिरधर सकलगुणनिधान कहा कहूं
सुख करि प्राणहीतें पाइए॥

११

जइए वहदेश जहां नन्दनन्दन भेंटिए।
निरखिए मुखकमल कान्तबिरहताप मेटिए॥
सुन्दर मुखरूप सुधा लोचनपुट पीजिए।
लम्पट लव निमिष रहित अचय अचय जीजिए॥
नखशिख मृदु अङ्ग अङ्ग कोमल करपर सीजिए।
यह अनन्यभाव भाव सों भजि मन क्रम वस रसिए॥
रास हास भाव विलास लीला सुख पाइए।

भक्तनके यूथ सहित रस निधि अवगाहए।
इह अभिलाष अन्तर्गत प्राणनाथ पूरिए।
सागर करुणा उदोत त्रिविध ताप चूरिए॥
छिन छिन पल कोटि कल्प बीतत अतिभारी।
परमानन्द कल्प दीनन दुखहारी॥

१२

बिलुलित करपल्लव मृदु बैन। हरषित बहुत आवत धेन॥
कोटिमदन द्युतिश्याम शरीर। बिपिन कल्पतरु यमुनातीर।
दच्छिणचरण चरण परधरे। बामअंग भ्रूकुण्डल चले॥
बहुह चन्दबन धातु प्रवाल। मणिमुक्ता गुञ्जा फलमाल॥
देखन चलहु श्याम नन्दलाल।
ललित त्रिभङ्ग मदनगोपाल॥

१३

तोहि ध्यानलाग्यो सजनीरी।
वारेक दृष्ट परे मनमोहन
देखियत चित्रलिखो सो,
ठाढ़ो मदनसिन्धु जलवृन्दन सो,
रूपनिधान कमललोचन तोहि मिले आजुको रजनी।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर रसिक-युवती-दुखहरनी॥

१४

आखनमें दुराय प्यारो काहे देखन न दीजिए।
हिए लगाई सुख पाई सगुणनिधि पूरण जोई
जोइ जोइ मन इच्छा होय सोइ सोइ क्यों न कीजिए॥
मधुर मधुर बचन कहत श्रवणनि सुर वदीजिए
निर्म्मल प्रभु नन्दनन्दन निरखि निरखि जीजिए॥
एसोही धर्‍यो है दधि बिना मथन किए
देहु यशुमत नेकु अपनो रई॥

१५

जननी जगावत उठो कन्हाई।
प्रगट्यो तरनि करनि गन छाई॥
आवहु चन्दवदन दिखराई।
बार बार जननी बलि जाई॥

सखा द्वार सब तुमही बुलावत।
तुम कारण हम धाए आवत॥
सूर श्याम उठि दरसन दीनो।
मात देखि मुदित मन कीनो॥

भैरव—तिताला

सोहत घूंघरवारे बार।
उरझरहे मुक्ताहल निरवारत बार॥
रतिमानि सङ्ग नन्दनन्दके छूटे बँध कञ्चुकी टूटे हार।
निशिके जागे दोउ नैना उरझि रहे
चलत जोवन मदभार॥
सूर श्याम सङ्ग यह सुख देत रीझि वारंवार॥

—०—

श्रीभागवतसार

भैरव—चौताल

भक्तके थामरेमें उलह्योहै चन्द कहै
जाके द्वादस गोद कहँ ॐकारको जरहै।
तीनसैबतीस जाको शाखा दशो
दिशानमें ज्ञान वैराग दुइ खगनको घरहै॥
पतनी अठारह हजार जाको छत
छायरह्यो ताको छांहबैठ जम तिजको न डरहै
ब्रह्मजल सींचके बढ़ायो माली वनमाली
सो भागवत रूपो ए कल्पतरवरहै॥ १॥
प्रथमें मङ्गलाचरण व्यासकियो चन्दसुतसों
सौनकादि सम्वाद रससों भर्‍योहै।
उत्तरमें अवतार वेदव्यासको सन्ताप
नारद मिलाप निज अलाप उचर्‍योहै॥
भागवत शुकदेवको पढ़ाय विनय
भीसमसे सुत परीछत जनम धर्‍योहै।
कलियुग दण्ड यामें मुनिश्राप गृहत्याग
गङ्गातट जाय शुकजीते प्रश्न कर्‍योहै॥ २॥
प्रथमें अन्तराजा पूंछो जन करे कहा
दुतीय लोक सुष्टु जूने सेव्य हर गायोहै।

अस्थूल रूपमें सबलोकचन्द देवादिक
सह्यो मुक्त क्रममुक्तभेघ सरसायोहै ।
पुनि सप्तऋषि नारद ब्रह्मा सम्वाद कह्या
अनन्त परमभेद करनी समझायोहै ॥
स्वायम्भुके तपसों सबलोक दिखायो नाथ
चतुश्लोको भागवततें तत्वरसायोहै ॥ ३ ॥
तृतीयमें बिदुरजू गृह छोड़ बनगए
उद्धव मिलेहैं तिन प्रभु लीला गाईहै ।
सुनि मैत्रमिले प्रश्नोत्तर रस झिले
ब्रह्माजूसों नानास्तुति सुरचना सुहाईहै ।
बारह अवतार धार हरणाकुश मार
पृथी लाय चन्द करी कर्द्दम सगाईहै ।
कपिल देव प्रगट ह्वै ग्यान वैराग भक्ति
योग कहि माताकी उर मन दृढ़ाईहै ॥ ४ ॥
चतुर्थमें स्वायम्भू मनुके सुताको वंश
पुन दक्षके यज्ञको विध्वंस विस्तार्योहै ।
ध्रुव कोर्त्तमान आन सुन्यो ना सुजान बान
काल सीसचढ़ि बिसाल पनेगु धार्योहै ॥
पृथुको चरित्र सोतो परम पवित्र चन्द
वसुधाको दुही सब जग प्रति प्यार्योहै ।
पुराचीन बिरहसो पुरञ्जनकी कथाकहि
नारदजी दार गृह भक्त मग डार्योहै ॥ ५ ॥
पञ्चममें प्रियव्रतजीको सब बातें नीके
श्रीऋषभ देवजीके चरित्र बखाने हैं ।
आगे शशि भानु और नक्षत्रको गति कहि
बिभूषणको नर्क बहु बिधि दरसानेहैं ॥
भक्तजन जाने जो अवाने चन्द काह्र भांति
सरस प्रताप यश रहत लुभाने हैं ।

* * * *
* * * * ॥ ६ ॥

षष्टममें अजामिलहुसे नाम तारे दक्ष
सुत समुदाय गृह तज वन गयो है ।
इन्द्र अभिमान सुर गुरुको कियोहै शुक्र
असुरन मिल ताको लोक छोन लयोहै ॥
तब विश्वरूप नारायण कवच दय दधि
घृत बज्र निरभय ताहि करि दियोहै ।
वित्रासुर मारो चित्रकेतको उवारोसो
कद्दरको प्रताप चन्दलोक लौं छयोहै ॥ ७ ॥
सप्तममें युधिष्ठिर नारद सम्वाद कह्यो
हिरण्यकशिपु श्रीनृसिंहजीने मारोहै ।
प्रह्लादको चरित्र अहलाद करि गायो मय
रच्यो जो त्रिपुर शिवजीने भेद डारोहै ॥
नृपवर आश्रमके धर्म्म पूंछे मुनि कहै
राजाने प्रह्लाद उत्तर सरस बिचारोहै ।
कृष्णचन्द सदा गृह रहे सब काज करें
आपको भाग्यमें न औरको निहारोहै ॥ ८ ॥
अष्टममें चउदेमनु तामें गज ग्राह मोक्ष
सिन्धु मथ सार काढ कृष्ण मोहनी भए ।
सुरनको सुधा प्याइ बात भई मन भाई
विष पियो शिव नीलकण्ठ छबिसों छए ॥
शुक्रजीको सेवा करि स्वर्ग राज कियो बलि
वामन ह्वै छले तब इन्द्र स्वर्गमें गए ।
सत्यव्रतजीको मत रूप है दिखाइ माया
चन्द हित हरिके चरित्र हैं नए नए ॥ ८ ॥
नवममें पहले सूर्य्यवंशको बरननहै
तामें अम्बरीश महाभागवत भयोहै ॥
औरह्न पुन्यमान अनेक राजापें तिनके
कुतारथको श्रीराम जनम लयोहै ॥
जिनके चरित्र बहुकाहा कहो अल्पबुध
अबचन्द्र वंश ओर चितमेरो गयोहै ॥
तहां यदुकुल माहँ प्रगट होय नोके नेक
कृष्ण भक्ति कारे ताहि आप दर्श दयोहै ॥ १०
दशममें नृपति परिक्षतने चन्द्रसूर्य्य
वंशके नोको भेद पूंछो समझायके ॥
तहां कैसे यदुकुल माँह अंश युत प्रगटे
कृष्णकी कथामें मन रह्यो ललचायके ॥

तब सुक्राचारज ख्याल सुन्दरको
ध्यान धर्‌यो परम छबीलो गयो रोम रोम छायके ॥
फिर रूप सागरतें निकस आरम्भ कियो
सकल समाज दियो छिनमें छकायके ॥ ११ ॥

असुरन भार भूमि गऊरूपधार गई
ब्रह्मा जूसों कह्यो चले देव गण सङ्गलै ।
छीरके समुद्र जाय ध्यान हरिको लगाय
भवानी भई हूं मैं तब केर हित मङ्गलैं ॥
सोई बानी कहि देव चले चन्द आप
वसुदेव पुरे काम कृष्ण अवतरङ्गलैं ।
तहांतें पधारि नन्दभवन आनन्दरूप
सब गोप गोपिन खिलाएहैं उछङ्गलै ॥ १२ ॥
नन्दजी श्रीकृष्ण जनम उत्सव कियोहै
महा गोपी गोप अति आनन्द बढ़ायोहै ।
सात तिलपर्व्वत सुबरन बसन युत गऊदोए
गज अश्व रथ पाय नहीं पायोहै ॥
वेदके बिधान तान गान पकवान ठान
बहुत बधाई ब्रज महामोद छायोहै ।
विधि शिव इन्द्र सनकादिकश्री नारदये
आए ब्रज चन्द पद सोमपे धरायोहै ॥ १३ ॥
पूतनाको मार सकटासुर उधारकर
त्रनावरत गयो घोट छिनहीमें मारोहै ॥
गर्गाचार्य्य छिपहीके नामकरण नीको कियो
दामोदर रूपतें यमुलार्ज्जुन डारोहै ।
वृन्दावन आय बछरानको चराय
बत्सासुर पांयगह डार बकासुर तारोहै ।
बालकन सङ्ग ख्याल करत बिचित्र लाल
अघासुर मोचके बिरद प्रतिपारोहै ॥ १४ ॥
रातहीमें बास खास वल करो प्रात
वन माह छाक छीकनमें लेचले ।
भोर सब वाही भांति बछनके आगे
घर वनकी पुलिन मध्य भोजन करें भले ॥
बछरा जे चरतहैं तिन्हें ब्रह्मा लेगयो
तातें वनढूंढ आए पाए नहि वा थलें ।
तब बच्छ बाल सबलालही प्रगट भए
गोपी गाए केतो मिल्यो सुन्दर यह फलें ॥ १५ ॥
यह लीला देख ब्रह्मा चरणमें आनपरो
अस्तुति छमा कराय गयो सत्यलोकको ।
पयोगण्डवही माझ गाय वन चराय लावें
बाल लीलाके अनेक ख्याल खेल आवें ओकको ॥
कालीको निकार दावानल करपान
प्रलम्बा सुरमार ब्रजजन हरो शोकको ।
वेनुको बजाय गाय बच्छनको सोह चन्द
ब्रजमांह आय सुख देत निज थोकको ॥ १६ ॥
गोपी कृष्णहेत देवी पूजो तहां आय
आप चार हरि वरदे पधारे चावसों ।
छुधा लागी सखनको मथुरा पठाय दए
जोवे विप्र तहां पतनी भांति लाई भावसों ॥
इन्द्र यज्ञ मेटो तातें कोप कर वरसा करो
गोवर्द्धनधार रछा करो निज दावसों ।
गोप अवलाख जान ब्रह्म कुण्ड असनान
ठान लोकहु देखायो पै न भायो ब्रजभावसों ॥ १७ ॥
सरदको रैन भलो फूलो सुखदेन देख
बेनु को बजाय कृषभानुको बुलाईहै ।
सुनतही भुन धाम काम सब छाड़ि दिए
पुन छिनक में आय मिलो प्रीति सरसाईहै ॥
तिनसों जोकरो बातें तेतो नाहि लिखिजाय
रास मिल गात गर्भ लखि छटकाईहै ।
बिरह बिललाई रूप देख सुखपाई
तिन कर मनभाई प्रात घरको पठाईहै ॥ १८ ॥
अब काके वन मांह नन्द पांयलग्यो आप
सर्पको छुड़ाय पुन संखचूड़ मारोहै ।
वंशीको बजाय थिरचर मोद उपजाय
कृषासुर सिङ्ग उखारि कर डारोहै।

जो गोप भेष धार व्योमासुर सब सखाको
कन्दरामें रोके तहाँ मार जस धारोहै ।

* ॥ १९ ॥

कृष्ण वलदेव लेन आए जो अक्रूर भक्त
नन्दजीसों कह्यो राजा कंसने बुलाएहैं ॥
छोटोंके निकट गोपी ठाढ़े दुखरस बूड़े
भोर गाड़ा जोर सबगोप मिलधाएहैं ॥
रजकके पीठ वस्त्र धार कुबजा सम्भार
कुवलीयापीड़ यमलोकको पठाएहैं ॥

* * * *
* * * * ॥ २० ॥

उग्रसेन राजदीनो नन्दजी कोबिदा कीनो
यज्ञोपवीत लीनो अवन्तीगुरुके गए ।
चौंषटही दिननमें विद्या कला सब सीख
गुरु दच्छनामें मृतक पुत्र लायकेंदए ॥
ऊधवको कखो जान गोपिनके समाधान
ब्रजमें पठाए तहाँ प्रेमरङ्गमें छए ॥
अक्रुर घर जाय हस्तिनापुरकों भेज
पाण्डव कहाँहै यह निश्चै सोध केलए ॥ २१ ॥
कंस पतनी गई जरासिन्ध को चढ़ाय भेजो
ताहि सत्रेवार जीत बहो धन लाएहैं ।
अठारहोबेर कालयमन सों भाज
मुचकन्द भक्त साज द्वारिकाको रचाएहैं ॥
रुकमणि आदि आठ व्याही पटरानी
भौमासुर मार राज कन्या सन भाएहै ।
न्यारे न्यारे महलमें चहल पहलमची
रहे पुत्र प्रपुत्र भए तेतो जानतहो गाएहैं ॥ २२
मिथ्या बसुदेव बन दूत प्रभुन पास भेजो
ताहि मार गत दई भक्त बहु भाएहैं ।
नारदके मन्दिर वो आदि असुर सँहारे
भक्त पुनि प्रतिपाल कारज कराएहैं ॥
सुदामाके चरण धुवाय चामर चवाय
भोजन कराय दुख दारिद्र बहाएहैं ।

* * * *
* * * * ॥ २३ ॥

यशोदाको गोद बैठ रामकृष्ण सुखदियो
गोपिनकों समाधान कियो उरलायके ॥
भक्त सुत बोले सबके घरजाय दई
मुनिन सहित भक्ति बहु भायके ॥
सुतनको अमृत कह्यो भृगुजीकी लातसह्यो
ऐसो और कौन जाको शरण लीजे जायके ॥

* * * *
* * * * ॥ २४ ॥

भैरव—तिताला

उठो नन्दकुमार भयो भोर जगावति नन्दरानी ।
झारीके जल वदन पखारो सुत कहि सारङ्गपानी ॥
माखन रोटी अरु मधु मेवा भावै सो लीजेहो आनी ।
सूर श्याम मुख निरखि यशोदा मनहि मन जु सोयानी ॥

२

उठे नन्दलाल सुनत जननी मुखबानी ।
आलसभरे नैन उठे शोभाकी खानी ॥
गोपी जन थकित हिए चितवति सबठाढ़ी ।
नैन करि चकोर चन्द्बदन प्रीत बाढ़ी ॥
मातु जल झारी लिए कमलमुख पर वारी ।
नीरहीके परम करत आलस बिसारी ॥
सखा द्वारे ठाढ़े सब टेरतहैं तुमको ।
यमुना तट चलो श्याम चारण गोधनको ॥
सखा सहित जेवहु वलि भोजन कुछ कीनो ।
सूरश्याम हलधर सङ्ग सखा बोलि लीनों ॥

३

खेलिए अङ्गन छगन मगन कीजिए कलेवा ।
केतेसार दधि ऊपरतें काढ़धरी
पहिर लेहु झुगली फेटा बांध लेहु मेवा ॥
ग्वालनके सङ्ग खेलन जाहु,
खेलनके मिस भूखन लाहु,

कौन परि प्यारे लाल निशदिना कौटेवा।
सूरदास मदनमोहन घरहो
खेलो प्यारे ललन भंवरा चकोर
डोर देहु हंस चकोर परेवा॥

४

मदनमोहन पियकीजे कलेऊ।
दूधमें रोटी छानो माखन मिश्री आनो.
जोड़ जोड़ भावे मोड़ मोड़ लेऊ॥
खांड़ खीर और घृत मिठाई मेवा आप खाहु
और ग्वालनको देऊ।
ब्रजपति पिय फेर खेलको जाउ वन
सुवल श्रीदामको संगकरि लेऊ॥

५

जागिए ब्रजराज कुंवर कमल कोस फूले।
कुमदिनो सुख सकुच रहो भृङ्ग लता भूले॥
तमचुर खग रोर सुनहु बोलत वनराई।
रांभत गौ मधुर नाद बछरा हित धाई॥
विधुमलीन रविप्रकाश गावत ब्रजनारी।
सूरश्याम प्रात उठे अम्बुज करधारी॥

६

प्राणनाथ प्रात भयो जागो बलिजाऊं।
सोनाकरी गोफनसों वेनु मैं गुथाऊं॥
उगत सुर मजोत भई कुलहरि बनाऊं।
पांय बांधूं घूंघरू और नाचवो सिखाऊं॥
सूरदाम मदनमोहन गुण तिहारो गाऊं।
हरष निरख छवि ऊपर वलि वलि जाऊं॥

७

जागिए गोपाल लाल जननी वलिजाई।
उठो तात भयो प्रात रजनीको तिमिर गयो
प्रगटे सब ग्वाल बाल मोहना कन्हाई॥
उठो मेरे आनन्द कन्द गगन चन्द मन्द मन्द
प्रगट्यो असमान भानु कमलनी सुखदाई।
सिङ्गी सबपूरे बैन तुम विना न छूटे धेन
उठो लाल तजो सेज सुन्दर वरराई॥
मुखतें पटदूर कियो यशोदा को दरसदियो
और दधि सब मांगलियो बिधिरस मिठाई।
जेंवत दोउ रामश्याम सकल मङ्गल गुणनिधान
थारमें कछु भूंठ रहो सो मानदास पाई॥

८

श्रीकृष्णजीके ध्यान मेरे निश दिनारी माई।
मनके सहल प्रात कुञ्ज तामें जादौराई॥
सांवरे बदन कोमल चरन नख देखे
सखचौंधि होत पांय नूपुर पैंजनीमो विधिने बनाई।
दाहने पदपद्म तातें टेढ धरत आलोरी
ऐसे चरण दुखके हरण है सदा सुखदाई॥
लाल हजार तारे बिच कञ्चनके तार लगे
काछनी पचरङ्ग तापर किङ्किनी छवि छाई।
वनमाल मुक्तमाल कण्ठन कौस्तुभमणि
पिताम्बर चटक तामें दामिनी दुति पाई॥
बाजुबन्द अङ्गूरी मुंदरीगनको अति चमत्कार
अरुण अधर मधुर सुर मुरली बजाई।
कमल नैन बिमल कान्ति कुण्डल प्रतिविम्ब
होत आनन्दमो मुख मानो रह्योरी मुसकाई॥
घुंघरवारी अलक झलक किए चन्दन खौर
और मोर मुकट सीस धरे बनी सुन्दरताई।
कहे भगवान हित रामराय प्रभुको निहार
आस श्रीगोपाल श्रीगोपाल रसना रटलाई॥

९

श्रीनाथजीको ध्यान मेरे निशि दिनारी माई।
माधुरी मूरत सोहनी सूरत चित्तलियो चुराई॥
लाल पाग लटकी भाल चिबुक जेहर कण्ठमाल
करणफूल मन्द हास लोचन सुखदाई॥
मोरपङ्ख सीस धरे मोतिन को हार गरे
बाजूबन्द पहुँचीन कर मुद्रिका सोहाई।
क्षुद्र घंटिका जेहर नूपुर बिछुआ सुदेश
अङ्ग अङ्ग देखत उर आनन्द न समाई॥

मुरली अधर धरे श्याम ठाढ़े व्रजयुवती माँझ
सप्त सुरन तान गान गोवर्द्धनराई ।
निरख रूप अति अनूप छाके सुर नर विमान
वल्लभ पद किङ्कर दामादर वलिजाई ॥

इति श्रीअमरानन्दव्यासदेव तस्यात्मज श्रीहीरानन्दव्यासदेव तस्यात्मज
श्रीकृष्णानन्दव्यासदेव रागसागरोद्भव सङ्गीतरागकल्पद्रुमे
रागभैरव व्याख्यादि प्रथमराग सम्पूर्णम् ।

रागिणी टोडीध्यानम्

तुषारकुन्दोज्ज्वलदेहयष्टिः काश्मीरकर्पूरविलिप्त देहा ।
विनोदयन्ती हरिणम्वनान्ते वीणाधरा राजति टोड़िकेयं ॥
गान्धारांशग्रहन्यासं क्वचित् धैवत रीरितः ।
सम्पूर्णा टोड़िका ज्ञेया आद्यग्रामे प्रगीयते ॥

रागिणी—टोड़ी धीताल

धनीसागरे सामगरे सानीधप धनीसारे गमगरेसा ।
मम पप धसारे सागरे सा मगरेसा सानीधनीधप
धप मप मग मगरे गरेसा नीधनीसा ॥

२

गरे सानीध माग सामगरे सानी धरेसाग
गम धनी सारेगम गरेसानी धपमग
गग मम पप धसानी सागरेसा मगरेसा नीधप मग ॥
गग मम गगरे सापमग सागरेसानी धध नीनीधप
पधनी धप धगनी धपमपगरे सानीधग ॥

३

टोड़ी रागिनी अलापत गावत ।
बीण बजावत उपवन मृगन रिझावत ॥
गान्धार स्वरग्रह प्रथम मूर्च्छना सम्पूर्ण तान सुनावत।
सप्ततान बाइसो इकईस उनचाशको
तान ताको व्योरी जनावत ॥
उज्वल बसन पहर केसर कर्पूरचर्च्चित रतनन
आभूषण तानसेन तान साजत ॥

मेरे मनमाँह हरिनाम जिन रच्यो
अखिलधाम काम क्रोध तज लोभ बड्यो जात संसार ।
जिन रच्यो स्वर्ग मर्त्य और पाताल
निरञ्जन सोई साकार निशदिन जपले श्रीमुरार ॥
दीनबन्धु दीनानाथ काटत दुखद्वन्द फन्द
ताहि घरी पल छिन न बिसार ।
तानसेन कहे निरमल रहिए भजिए
भगवान मनुष जनम नहीं वारम्वार ॥

५

मेरे तो कृष्णनाम आधार जिन रच्यो
जग पसार लोभ तृष्णा काम क्रोध तजो जञ्जार ।
जिन रच्यो आदि अनन्त भुव आकाश ब्रह्मलोक
निरञ्जन साकार निश्चय कर जपो श्रीहरि मुरार ॥
युग युग भक्त हेत अवतार लेत हैं भक्तन प्राण आधार ।
बैजू बावरे प्रभुको चरण शरण गहिए
मनुष जनम नहीं वारम्वार ॥

६

सारेगम पपधनीनी सप्तसुर कुञ्ज माधेरे बनाए ।
आरोही अवरोही ऐसे सुन लेहीं नीधपम गरेरे साए ॥
दुगन सरिगम की हों पाई
दोउ सरिगमके प्रसादतें नृपरङ्ग ने गाए ।
सारेगगरेरेसामारेगमपमगगरेरेसा
सारेगमपधपममगरेरेसासारेगमपधनीनीधधपप
ममगगगरेरेसानीधपधप
नीधपमगमपधनीधपमगरेगमपध
नीधपमगरेगमपधनीधपमगरेसा
तब यह भेद पावे जबही गुरुनतें सांचो पाए ॥

७

निसगमपपपधगपपधनीनीसा
नीनीधधपपनीधमपपपगगसस ।
नीनीनीधनीसानीनीसानीनीनीसासगागसाधसा
नीधासानीनीधापेसागगसारेधाधानीधा

सनीनीधासानीधापपपगगसस ॥
गमपधनीसारेंसागरेंसामगरेंसानीनीनीनीधधधपपप
मममगगगरेंरेंरेंसासासारेंगमपधनी
सानीधपमगरेंसाधसापसामसागसारेंसा ॥

८

मपधरेंसानीधपमपधपमगरेंरेंसा ।
सासानीनीधधसारेंगरेंगरेंसानीधसा ॥
नीधपमपनीधपमगरेंरेंसा
मधसागमधसारेंगधमगरेंसानी
धनीधपधपमगमगरेंगरेंरेंसानीधपपमरेंसा ॥

९

तेरे तो सरस्वती घटघट पूर रही नाम धरायो वाक्वानी।
जल थल मध पात जाल पा भवानी
यातें कहियत तोको सर्व्वानी ॥
कोटकटानी ग्रष्णानी सप्तदीप प्रमानी ऐसी नवकोटरानी
तानसेनको प्रसाद दीजे भवानी
दयानी कण्ठ पाठ ताल स्वरदे महारानी ॥

१०

धीरे धीरे धीरे मन धीरेही सब कुछ होय ।
धीरे राज धीरे काज धीरे योग धीरे ध्यान
धीरे सुख समाज जोय ॥
धीरे तीरथ धीरे व्रत संयम धीरेही करे
सत्सङ्ग साधके बैठ मनको धीरे राखोय ॥
तानसेन कहे सुनो साह अकबर एतो बड़ो राज
एतो बड़ो बादशाही धीरेहीते पाई सोय ॥

११

देखि इन्द्रलीला इन्द्रसभा इन्द्रहूके दरवार
चकृत भए अचलमुनि ।
दीपकमें अष्टदीप नवदीप सिन्धलदीप ऐसे
दीपे जैसे चन्द्र हीरामणि ॥
एकनको देत दान एकोनको बुलाय लेत
एकनको बकसत जरकसी चीरासुनि ॥
गुणको प्रसाद गाइक राजाराम छत्रपति
जाके घरगुनी करे क्रीड़ाधुनि ॥

१२

प्यारे मन्दरतुम दरतादानी दरदतिलितो
नदानी तदानी तरसे ।
तरनरे तारनरेदरतुंदररेतुंदर तुमरेतुमृतनमृदरसे ॥
कैसो ए भांति चपला सुघरन बोले ऐसे सुन्दरसो सरसे ।
दरदर और दरवार मता आमेरे मन्दर
सुन्दर तरे रतरेर राखूं सुघरसे ॥

१३

मेरेतो हरिनामको आधार जिन रचो संसार
काम क्रोध लोभ महाजञ्जार ।
जिन रच्यो अरस कुरस जिमी आसमान
निरञ्जन निरङ्कार सांचो क्योंन सेवो परवरदिगार ॥
काहेको हूजे गुन्हेगार काहेको लीजे एतोभार
मोई सवाद क्यों न तजिए जाको नाम राजगार ।
प्रभु बिलास कहे पाक साफ रहीए
नयार जनम जीव नहीं बारबार ॥

१४

ज्ञानभूम पर आनन्द घटा गरज गरज बरस
बरस तातें भए बहु बीज अनगिनती ।
चौंप कौंप निकस तार डाेड़ी भई तान अचर पात
यह खेती तबही उपजी जोहो एक रमरती ॥
यह याको मरम जाने जोहोय शेष महायक
के जाने वलि यह कहे सिद्ध जङ्गम योगी जती ।
मदनराय सोहो पै जांच लिए
जामें नादसों गुणए बातें बनतो ॥

१५

रूप-यौवन-गुण-विद्यावर रिझाय लीनो
प्यारे सबही तियनमें बिचित्र धन ।
सब अङ्ग अङ्गनमें प्रचण्डरहो
सम्पूरण यातें तू भावत मन ॥
तोसी तुही तूही बिचित्र और कोउ
नाहन जामें नानाप्रकार पइयत अनतन ।
प्रभु सुजान प्यारेको कर राखो
आन रङ्ग जान न दीनो अनतन ॥

१६

गावो गुणी सुराग सुतान समुद्रासों
सङ्गत रङ्गत लिए सुधबानी ।
बादी समवादी अनबादी बिबादी
तिनकों व्योरो सोच समझ कर लीजे
हँसहँस प्रगटी गुरुते सुख सयानी ॥
सा-रे-ग-म-पध नी गायन साधे चतुरबिनानी ।
सब अङ्ग परखन हार गुरुन गुरु साह जलाल
सकल कला गुरुन गुरु ज्ञानी ॥

१७

गट्पत दलपत देशपत अतसाति
जे गरब अङ्गधोरिही लिए ।
जे सगर बैठे और कुलगन तिनकी
वले सिवार मारजीत लए ॥
चतुरङ्ग दलत तबलया चाल कर धात बलकर
जल पछाड़ प्रबलके देख मद दल खल सों खल
परिखल बलतब बेपग पङ्ख पसार बाजन उड़नको धाए।
तिन पर वरक्षी कोउ बनाय कुलस्थान
उतराय दस्तगो भाले पहरायते गगन धाए ॥
कै कोको जाय सुलगी धाय धायके मारे
भुत गिराय शेर भारी औजाय तिनके प्रमाण
चाख चखाय दए ।
साह मौजदीन महाबली किएहैं
शिकार देख कांपिहैं थिर थिर नर
मर सफरेस लंकेश दृगपाल सब देख तेज भजगए ॥

१८

अनद्रुत द्रुत बिराम लघु लघुबिराम
गुरु पुलित तार लय अतीत अनाघात प्रमाण ।
खरज ऋषभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत निषाद तान॥
निषाद धैवत पञ्चम मध्यम गान्धार ऋषभ खरज गान ॥

१९

तें कहुं देखोरी नन्दकोनन्दन कान्ह
मटको झटकके पटक गयो ।
माँखन चोर चोर मन लीनो कीन्हो नेकु
न डर नट ज्यों उलटके सटक गयो ॥
मारग रोक रहत खोरनमें सांवरो
सूरत माधुरी सूरत नैनटे अटक गयो ।
तानसेनके प्रभु तुम सबहीके नायक
रस गोरसले गटक गयो ॥

२०

ऐसो तोरी सूरत रचपच रचो विधाना
धन धन तुव सुरतें सुन्दर अति सुखकारो ।
स्वर्ग लोक मृत्युलोक पताललोक
नागलोक और नाहिन तुव सम नारो ॥

२१

सङ्गत समुद्र सुभेद उक्तायुक्त सुध बानो तिनहींसें पाइयत ।
सप्तस्वर तीनग्राम इकइस मुरछना
सारङ्ग म-प-प-ध-ध नी करठ गाइयत ॥

२२

आनन्दन आनन्द भयो मेरे रोम रोम
नैनन भर निरखिहैं श्यामा श्याम ।
धन घरी धन पल महूरत धन धन ब्रजबृन्दावन धाम ॥
धन धन मेरो भाग सुहाग धनगुरु
चरण शरण दियो मोहिं ठाम ।
सागर आगर गुण रागरङ्ग नागर
दरश परश भए जीवनमुक्त आराम ॥

२३

धर्म्मसों नीच पाप पापसों नीच क्रोध क्रोधसो नीच लोभ
लोभसों नीच मोहमद मदसो नीच मत्सर कहाइया ।
स्वर्गसो नीच मृत्युलोक मृत्युलोकमें नीच दुष्ट शिरतें
नीच पाव राजसों नीच प्रजा पाइया ॥
ब्राह्मणसों नीच क्षत्री क्षत्रीसों नीच वइश वैश्यसों नीच
शूद्र धनीसों नीच निर्धन वेदसों नीच शास्त्र भाइया ।
देवसों नीच राक्षस समुद्रसों नीच नदीनद कहत
कवि तानत्रत सगुनीसों नीच निरगुनी पाइया ॥

२४

गाऊं राग सभा साहनसाहको जाकों अकबरनाऊं ।

जे नरनरेन्द्र इन्द्रसमान चक्री वक्रीसो होत
कबहुँ नाहि निरखत अष्टसिद्ध नवनिद्ध पाऊं ॥
एक एक सङ्गीत प्रति लच्छ लच्छन करे
और एक निरत कालो जञ्झारो ताण्डव
समान कावकर और छोहुँ गाऊं बजाऊं।
बिनवे व्यास कोउ जानत नाहीं जलालदी
महम्मदको देन आशिर्व्वाद नित आऊं ॥

२५

नादनगर बसायो सुरपति महल छायो
उनचास कोटी तान अच्चर विश्राम पायो।
गीत छन्द तत बीतन घन शिखर कञ्चन ताल
काल्क किवाड़ अलाप ताली छोरापे
पाट नग लगे खरज जञ्जीर लेवट
कुञ्जी तामें ध्रुवपदसों नग छिपायो ॥
आरोही अवरोही अस्थाई सञ्चाई जवार
अरब खरब और करोर मन मिलाय कण्ठल्लायो।
जौहरी मीयां तानसेन गाहक जलालदीन
जिन याको मोल कीनो अकबर पारखी पायो ॥

२६

छत छवि छाजे बिराजे हुमाऊं नखत
बैठो चारों चक जोत आयो दिल्लीवर।
ऐसो छठोलो नर नरेन्द्र नरेश धावत
शत कोस काहू पै न रोको जाय तकबर ॥
राख लई इमर तिमिर लिङ्ग बाबरको
छद्र किरात साहन मन बादसाह ताहि दयो अलहबर
नायक पूरण करत बखान तेरो बाबरसुत
ताको सुत हुमाऊं अकबर सबल नर ॥
अकबरसुत जहांगीर ताको साहजहां
ताको औरङ्गजेब भयो है भुवपर ॥

२७

ज्ञानपति महेश विद्यापति गणेश
प्रथवीपति नरेश बलपति हनुमान।
सरितापति सागर गिरिवरपति सुमेर
राजनपति इन्द्र धर्म्मनपति दान ॥

२८

बाजनपति मृदङ्ग पवनपति पान
पछिनपति गरुड़ भक्तनपति कान्ह।
साहनपति साह दिल्लीपति पातसाह
तानसेनपति अकबर अर्जुनपति बान ॥

२८

हरि बिन और न दूजा समझ मन और न दूजा।
माटी भीतर माटी बाहर माटीको बन रहो कूँजा ॥
यह माटीकी मूरत बाहर भीतर और नहीं सूजा।
जिन जाना तिन कछून जानो अबजाना बूझा ॥

२९

तेरोरी चन्द्रबदन शोभासदन
मदनमोहन मनरस बसकरन।
दरश परश परस्पर उपजत आनन्द अपार
सकल सुखद सब बिध दुख हरण ॥
लालन रीझ भीझ रहे तापर
करत रहत तेरोई गुणवरन।
जानकीदास करत आस सब बिध सुख
व्रजविलास रसिक रासमण्डल रसकरन ॥

३०

पिय प्यारी नाचेरी रास मण्डल मध ललिता
उघटत सङ्गीत तत्ताथुङ्गकट थगड़नांधिल्था
थोधिधिगनधा।
उरपति रपगति भेद बतावत मृदङ्ग बजावत
सखि धाकिटकिट धुमकिट किटधोत्ता ततधिधिगनधा ॥
मधुर मधुर नूपुर धुन बाजत क्कणत
किङ्किनी भुन तनना अदभुत तान केदारेको।
गावत प्यारीको रिझावत बलि बलि
आवत रसिक गोविन्द अभिराम ॥

३१

दियो तुमको विरञ्च अटलराज छत्रपति विक्रम नरेश।
राज समाजसों जसन करो जौलों ध्रुव गङ्गतरण शेष ॥
तोसो तुही और नाहीं भुव मण्डल मध
सकल विद्यागुणनिधान दाता बिधसों काटत जग कलेश।

गन्धर्व्वसेन प्रभु ऐसो परदुखभञ्जन
शकबन्ध रच्यो करतार ज्यों सुरेश ॥

३२

तुही ऋषभ गुणनिधान ग्रन्थ प्रमाण तेरे रस
बसकर लीनो साह जलाल रसाल परम महाजान।
मेनका रम्भा उरबसी और तुमसी
और तीयनकों न गिनें यह्मा तुम्है न समान ॥

३३

हे कृष्णनाम जबते मैं श्रवण सुन्योरी
तबते भूली भवन हौंतो बावरी भई।
भरि भरि आवे नैन चित न रहिक
चैन मुखहू न आवे बैन तनकी दशा कछु और भई ॥
जेतेक नेम धर्म कीनेरी बहु बिधि
अङ्ग अङ्ग भई श्रवणमईरी।
नन्ददास जाके श्रवण सुने यह गत
माधुरी मूरतिहै धों कैसी दईरी ॥

३४

रीझियो रसिक गोपाल विनोदी
तेज अलापी प्यारी अदभुत टोड़ी।
बदन देखि उड़पति नभ थकित
धरखित मनगति भई निगोड़ी ॥
दम्पति सुघर राय चूड़ामणि
केलि कला कौतुक रसकोड़ी
कृष्णदास गिरिधरन बिलोकित
लज्जित मदन लहत नहीं बोड़ी ॥

३५

बहुत प्रसन्न भए पिय प्यारी टोड़ी राग वेणुधरि गायो।
सुर सङ्गीत बन्धान समसुर
ऐसो कछु अदभुत भेद जमायो।
नाना तरङ्ग उपत अनेक बिध
प्रतिछिन औरसों और मिलायो ॥

तैं कहुं देखोरो नन्दनन्दन कान्ह
मटुकी झटकिके पटकि गयो।
माखन चोरो चोरो मन लीन्हों कीनो नेकु न डर
नटज्यों उलटिके सटकि गयो ॥
मारग रोक रहत खोरनमें न जानों
नैन सैनदे अटक गयो।
तानसेनके प्रभु तुम बहुनायक
रस गोरस लै गटकि गयो ॥

३७

बङ्क चितवनि चितै रसिक तन
गुपत प्रीतिको भेद जनायो।
मुखकी रूखाई कैसे घटतहै
हियको प्रेम नहिं दुरत दुरायो ॥
सगबगे अलक बदन पर बिथुरे
यहि बिध लाल रहचटे लायो।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर नागर
नवनिकुञ्ज अपनो करिपायो ॥

३८

आज कौनधों वन चरावत गइयाँ कहाधों भई बड़ी बेर।
बैठे कान्ह सुधि लेहीं क्यों न कौन
बिघ ग्वालन करत अब सेर ॥
वृन्दावन आदि सकल वन ढूंढ़ो जहां गाइनकी टेर।
सूरदास प्रभु रसिक-शिरोमणि कैसे दुराए
दुरत कहा धों डुंगरिन की ओट सुमेर ॥

३९

गोकुलके गुण्डे एक सांवरोसो ढोटा माई
आंखिनके पैड़े पैठि जीके पैंजे पर्य्योहै।
कल न परत छिन अह भयो समवन
तन मन धन प्राण सकल सुख हर्य्योहै ॥
भवन न भावे माई अङ्ग न रह्यो जाई
करो सहाई माई देखो जैसे हाल कर्य्योहै।

सूरदास प्रभु नीके गावत मधुर सुर
मानों मुरलीमें पीयूष रस भर्योहै ॥

४०

अरी यह ढोट कान्हर बोलि न जानै बरबस झगरो ठानै।
जोइ भावत सोइ कहि डारत ऐसो निधरक
नहीं कहुं देख्यो रूप योवन अनुमानै ॥
अङ्ग अङ्गके दान लेन नहीं घरके को पहिचानै।
हम दधि बेचन जातहैं मथुरा मारग रोकि
रहत गहि अञ्चल कंसको आन न मानै ॥
ऐसी बात सम्भारि कहो हरि हम तुमको पहिचानै।
सूरश्याम जो हमसों मांगत सो पैहो
कहुं और तियनपै ए बातें गढ़िबानै ॥

४१

माखनको चोरीतें सीखि करन लागे अब चितकी चोरी।
जाके दृष्टि परै नन्दनन्दन सो व फिरति गाहन डोरी डोरी॥
लोक लाज कुलकानि मेटि करि
वन वन डोलति नवलि किशोरी।
सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि
जबते देखे निगम बानी भई भोरी॥

४२

आधो मुख नीलाम्बरसों ढांकि बिथुरी अलकें सोहै।
एकदिशा मानों मकर चांदनी
एकदिशा घन बिजुरी ऐसे हरि मनमोहै॥
कबहुं करपल्लव निजसों केश निरबारत तिय पाछे लै
डारति निकसति करठेठी मोहन मुख जब जोहै।
सूरदास प्रभुको यह छवि निरखत
त्रिभुवनमें उपमा यह सम कोहै॥

४३

एक कर दर्पण एक कर अचरा कजरा संवारत लालना।
ललना मुखकालिम दूरि करतिहै
उलटि भँवर फिरि कमलन परत॥
सीसफूल अतिराजत नगनि लग्यो
ताकी उपमा कहो शेष सीसमणि मानों वरत।
करणफूल करननिहो सँवारति
अलकें निवारि बन्दन बिन्दु लिलार करत।
सूरश्याम दुरि देखत दर्पणको
मुख एक टकतै पलकहु न टरत॥

४४

कहुं उमड़े घुमड़े गाजत हो पिय
कहुँ बरसत कहुं उघरि जात।
कहुं चमकि चमकि चपला ज्यों चमकत
एकठौर त्यों नहिं ठहरात॥
श्यामघन केशव लछन तुमपै श्याम हो नीके
जानति मेह नेह आडम्बर वृथा प्रात।
मुरारिदास प्रभु तिहारो वामचरण पूजिए
को पतियात कहु किनको कहिबात॥

४५

लाल तुम जासों रहे लपटाय
दुरै कैसे ताको हो सुबास।
चिन्ह सबैजु छिपाई आए रङ्गभरे
पाए बदन और विलास॥
तुम अपनोसों दुराव करत पिय
नैननमें पाइयत जियको हुलास।
चतुरबिहारी हौं क्यौंन जानै ए बातें
तिहारो मैंहूं सेवक रावरो पास॥

४६

लाल सङ्ग रति मानो मैं जानी कहे देत नैना रङ्ग भोए।
चञ्चल अञ्चलमें न समात इतरात
रूप उदधि मानों मीन महावर धोए॥
पलक पीक जगमगात दृगमानिक
मानों जराय लोनें प्रेम पाए।
नन्ददास प्रभु पियके मुख सुखके लोभ
लालच जानतिहौं निशा नेक न सोए॥

४७

तेजु दई ग्वालिन सवांरी नैनन सोहै कजरा
और माथे बेंदो।

तैसोए अलकको झलक दसनको ओप
अधरनको अरुणताई चलत चाल गज गेंदो ॥
छोटो छोटो तरकुली श्रवण बिराजत
पायन महावर हाथन मेंदी ।
चतुरबिहारी गिरिधारी बसकरबेको छाँड़िदई लट फंदो॥

४८

ऐसे कैसे कहियतु है हो कुलवधू
वन इतहि आउधों छोड़ो ।
बरबस रोकत टोकत मोकह
करिहौं कहा रिसाँई कोहै बबाको लोंड़ो ॥
दिन दिन को पैंड़ोरो माई न जानिए
ओथरी और ओंड़ो ।
राजाराम प्रभुतं न होय निय जे होहै तुमही कनोड़ो॥

४९

अबहो डारि देरे इन्डुरीया कन्हाई यामेरे पचरङ्ग पाटको।
हाहा खाति तेरे पइयाँ परति हौं
यह लालच मोहो मथुरानगर हाटको ॥
मेरे सङ्गको दूर निकस गईहों कीनो इह घाटको ।
तान तरङ्ग प्रभु झगरो ठान्यो हंसत लुगाई बाटको ॥

५०

मारगके वागि रातिके जागि छूटे बन्दन अरसात ।
जम्हात बहियाँ गहन आगे आवत सकुचन लागत ॥
छियो छाड़ो अंचरा मोरो भुकिए मैं आनि झुकावत ।
लाखजो जतन करो तऊ न बोलिहौं
लाल ए तुम बातें कबके लावत ।
तानसेन प्रभु रव निरवन तुम महि
खिजाए कहा पावत ॥

५१

गुलाल बरन नैन भएरी ललना ते
सब निशिरङ्ग लियो लालरङ्ग ।
मेरे जान नई नैन पिय मूरति पाई सुभाई तें
झुकिझुकि परतरी मानों पवन तें डोलत
नीरज ऐसी शोभा पाई मोमन सङ्ग ॥

पुनि पलसों पल लगि लगि जगि जगिनैन अरुण भए
जेतुव देखत तिन तिन कोरो आनन्द मापत है
अङ्ग अङ्ग ।
कल्याणके प्रभु गिरिधर तोसों रतिमानी
ज्योंज्यों राखि करि अरधङ्ग ॥

५२

एमन तूजो अपनो सुख चाहत है
घरी घरी पल पल छिन छिन सुमरले श्रीरामनाम ।
जो जग जप तप नेम धर्म्म व्रत सञ्जम
ज्ञान ध्यान गहे दृढ़ हरिचरणन विश्राम ॥
और उपाव नाहीं कलियुग में
कृष्णकृष्ण कहत होय आराम ।
तानसेन प्रभुको चरण शरण गहले
जासों पावै वैकुण्ठधाम ॥

५३

वा दिन कंवल वलि जाएरी जादिन
पीतम तें होय मिलन ।
तन मन धन नोछावर करहूं चरण कमल
पांवड़े बिछाऊंगी नैयन पलन ॥
अनेक दिननमें प्यारे मोहिं मिलिहै
लेऊंगी वलिया दोउ करन ।
तानसेनके प्रभु सुधाको दृष्ट करि मोर मुटको हलन ॥

टोडी—दरबारी

एरी जशोदा द्वारे पुकारे आएहैं
एक योगी मांगत हात पसारो ।
मुखदेखूं तेरे बालकेको मैं यही गुरु ज्ञान बिचारो ॥
जटाजूट वाघम्बर गङ्गशिख बहुरूप
शिव डिम डिम डमरु बजावत सिङ्गीनाद हुङ्कारो ।
काशोबासी कैलासनिवासी दरशन कारण
आएहो गोकुलारो ॥
ल्याई यशोदा पुत्र अँचरा ढाक देख मगन
भए धन धन आज दिन सुखकारो ॥

टोड़ी—चौताल

एमन जब लग नैन प्राण तब लग जोयत
सब काहूको दिदार।
जब लग जीजिए तब लग कीजिए
राग रङ्ग घरी घरी पल पल छिन छिन
जात न लागे बार॥
साँचहो बोलत साँचहो तोलत
साँचहो कीजे बनज बिहार।
तानसेनके प्रभु साँचहोमें रम रहे याते
समझ बूझ देखिए जग सपनो संसार॥

२

परम धरम गोविन्द नाम सुमरण मन बीच निज करम।
योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत भक्ति बिना व्रथा जनम॥
मारग आन भ्रम तौलों जौलों न पाए निगम मरम।
हरि नारायण श्यासदास प्रभुको भजीए
एतजोए भरम॥

३

नीके नीके सुर गाय राग देखाय
प्रथम कपट तज रङ्ग जुगत लाय।
बुधि सरमाय काव्य बनाय खुली मुदी मुद्रा तान सुनाय॥
उतपति रप लाग डाट देखाय।
सप्तस्वर इकईस मुरछना ताको ब्योरो जनाय॥
और सङ्गीत रत्नाकर के सप्तध्याय समुझाय।
तानसेनके प्रभुको रिझाय सङ्गीत विद्या दरसाय।
गुणीनसों गुण चरचा कर परमेश्वरके धरिए पाय॥

४

तैं कहुं देखोरी वनमाली आली वंशी बजाय मन लेगयो।
धुनि सुन कल न परत निशदिन उन बिन नैन
तरसत बिन देखे टोनासों यन्त्र मन्त्र कर गयो॥
जब नहिं देखत छिन न सुहावत भावत नहिं गेह
मेरे नैननमें अटक गयो॥
तानसेन नैननकी मूरत कोटी बार डारों सांवरी
सूरत जिय बसगयो॥

बागे बनाए आएहो पिय लटक
पागकी चटक अटकन मन।
लटक लटक चलत चाल मटक मटक मुसक्यात
अलसाने सरसाने नैनारी नैना नींद न आवे
निपट सौत नेक छवि छलतन॥
तानसेनके प्रभु तुम बहुनायक
रस बस कर लीनो तन मन धन।

६

सौंहें खात तोतरात बात कहत
अरसात आए भए प्रात डगमगात गात।
ऐंड़ात जँभात धकधकात मुरझात
थरथरात भरभरात॥
वहाँजी जावो जहां नवल तिया सङ्गजागे रात।
याहोतें मुसकात मेरो मन मनात बात कहत हंसात
मोहे न सोहात तहांही सिधारिए जाको मन ललचात॥
तानसेनके प्रभु मीठे बचनन बतरात झूठी झूठी
सौंहें खात तेरोसों तेरोसों मैं अब नहीं जात॥

७

रङ्ग गुलाल वरण भईरी नैनसों तेरी
ललनासों सब निश रङ्ग दीने लाल।
जादिन नैन पिय मूरत देखाई बाहरतें
झुक झुक परतहै मानो पठनतें डोरत
नीरज ऐसो शोभा आई मो मन सङ्ग रसाल॥

८

बामकर सोहै धनुष दाहने कर सोहै
शिर छत्र उजरे मुखारविन्द सोई रामचन्द्रहै।
नाथनको नाथ अनाथनको सहाय
जोइ जोइतो बिसारे सोई मतिमन्दहै॥

९

तृष्णाको तज देहु चमा कौन जन करहु
नित दया हियमें धारो।
पापसों राख दूरचित सत्य बचन
मुख बोलो साधु पदवी जीय बिचारो॥

सत्यपुरुषन की सेवा नम्रता अति विस्तारो ।
सब गुणसों आप गुप्त कर तीरथ पग धारो
दुखित पै दया करो ॥
मदको जोतो विद्वान संगत करो अपनी कीर्त्तिकों
प्रति पारो ॥

१०

तूही ब्रह्म तूही विष्णु तूही महादेव
तूही गुरु तूही चेला ।
तूही सोना तूही सोनार तूही कसोटी कसनहार
तूही दीपक तूही मन्दिर तूही मेला तूही अकेला ॥
तूही रैन तूही दिन तूही पर्व्वत तूही पाखान
तूही जल तूही थल तूहीसों मेला ।
तानसेन के प्रभु तूही सबनमें तूही छैला तूही
अलवेला ॥

११

काहेको भटकत फिरत रे मन जपो
हरिनाम जासों काम ।
तीरथ व्रत नेम धर्म्म षटकर्म तज भए एक नाम ॥
कलिकाल और नाहीं एक रह्यो हरि व्योहार
वही जप वही तप वही है धाम ।
कहे बैजूबावरे सुनोहो गुणीजन साँचो संसार सब
एकही है राम ॥

१२

नाम में रूप नाम में विद्या नाम में जप तप
संयम रञ्जन ।
नाम में ज्ञान ध्यान नाम में सुमरन नाम
तिहारो दुख भञ्जन ॥
नामहीतें जल पाखान तारे नामही प्रह्लाद
दुख गए दन्दन ।
नामही अजामेल वैकुण्ठ सिधारे बैजु नाम
पवित्र भञ्जन ॥

१३

मेरो बला आवे जो घरी घरी मोहे खिजावे मनावे ।
एसो लङ्गर ढीट कोउअन देखो सबन छाड़ मोही
सों नेह जनावे ॥
दुरजन में ठाड़ो तिनमें मोहि लजावे सगरी
वियन में मोहे रीस चढ़ावे चञ्चल सस प्रभुतुम
बहुनायक काहू भावे काहू नभावे ॥

१४

रिझावत पियको अनुराग रङ्गकर
अनेक तरङ्गी जेइ जेइ अङ्ग तिन तिन ।
हाव भाव कटाच्छ गुणरूप यह विध सन
मनावत लालको लाल तोहे दीनो सोहाग मन ॥
निपट आतुर चातुर खूब पढावत गावत सुरसुनी
प्रसन्न भई कण्ठ पाठन सुख रङ्गस न भावन ।
चञ्चल ससि प्रभुके अङ्ग सङ्ग अरधङ्ग
रही तोसो सुघर तुँही धन धन ॥

१५

ए गोही गोही राखोरी तै ललनाकों
आली अपने रस बसकर ।
रैन दिना तुही तुही जपो करे पिय सोतनके
लोने प्राणहर ॥
ताहीसों हँसत खेलत मिलत प्राण पियारो
पल पल सकुचन सकुच न रहे गुमान भर ।
अहो धनमान मतिभाग सुहाग तेरो
वे देखे रीझे सुजान सुन जर भर भर ॥

१६

प्रेम नगरको डगर कठिन है जिन जावो कोउ ।
पहले तो मीठे मीठे बैनन बस कर लेत पाछे
अलगपासी देत एसे बट पार नैना बसत ठगी दोउ ॥

१७

मोहत तान नारो राग सुरत देखत सुनत
सबही को मन मोहत ।
मुद्रा घटत उपकटाच्छ अच्छर भरत तोही पै
सो जोहत ॥

जोबन उमगन कुच पै तालका लुभए
ब्रह्म अच्छर शब्द प्रतच्छ सम देखियत उदोहत।
आरोही अवरोही कर रिझायो तै मदनरायकों प्रभु
रस वश कर लीनो लागि मानो कामधेन दोहन॥

१८

बषत यार बषत बली चली तेरे नाम की कर
सुर नर मुनि गुण गन्धर्व कहे नर जहांगीर।
जे अज्ञान तें भए सज्ञान ये दिन दिन धन कल्याण
करत हैं अहो सागर आगर तोको है चलगए तोर॥

१९

तेरे विद्याको थाहा अनुभो जोई
देखियत सोई अदलो।
गुणतो तोमें उपजत है ज्यों कपूर कादलो॥

२०

दशहरा मुबारक होय तुमकों
सम्पत सँपत और सहित समझाऊं।
गीत गाय गाय आनन्द बधाए राजाराम
रहस रहस करगाऊं॥
लङ्काजीत राम घर आए सीता मङ्गल
मिल सखि सोहेला सुनाऊं।
बैजू प्रभु घर आज बधावा भक्ति दान वर पाऊं॥

२१

हिन्दमें आनन्द भयो कोटि दुरजन गए
बैठे तखत बली आलमगीर सानी।
बाजे निशान फहरान सुने गढ़पति
फरर नई गई धाक डर हुकम मानी॥
चले चहुं ओरको ते मिलत कों जोर जोर
आगे चहुं डोला दार सुघर रानी।
अदल अदलो उनसपत अदारङ्ग
कहां लग कहुं जाके कादर करीमकी महरवानी॥

२२

सब साहन साहको साह शिरताज कीनो
विधना जब धरो अकबर नाम।
भूव लोक मध लोक उजारो कर थप्यो
तखत बखत तोहि दीनों अचल करके निहचे
अब जहां सोहत सांचो राज॥

२३

होतहै मध्यम पञ्चम पञ्चम रिषभ धैवत गान्धार।
अदारङ्ग याको व्योरो काहूसों न कहिए
जो जानतहै तिन पायो बड़ो मार॥

२४

राम नाम लेरे नर चेत जगत जान सब सपना
सोवत निश दिन हितकर हरिसों निभावन हार।
जिन नेक धाय पाय प्रेम नेम प्रकार
प्रह्लाद अह्लाद ज्योति जगजीवन आधार॥

२५

प्रथम ॐकार नाद ब्रह्मतें फिर शिव डमरुतें,
उपजे भेद ताहे बरतन लागे नारदादि गुणी।
पहिले खरज दूजे रिषभ तीजे गान्धार चौथे मध्यम
पांचे पञ्चम छटे धैवत साते निषाध ताह धुन सन
भूले सुनो॥
पांचो सुर मिले ताह औड़वे कहन लागे छहो मिले
खाड़व सातो सम्पूरण खरज रिषभ गान्धार मिल
तीनों ग्राम इकईस मुरछना बाईस सुरन लाग
डाट सुनो।
नेम बिरक्त कर कार उनञ्चाश कोटि तान आरोही
अवरोही अस्थायी सञ्चाई तीवर कोमल अतिकोमल
लेले प्राण प्यारी प्यारीकों रिझावत सखि भान
प्राण निरख चक्रत धुन सुनो॥

२६

गोविन्द गोपाल गरुड़गामी
गोपीनाथ गोवर्द्धनधारी गोपमनरञ्जन।
गरव प्रहारी गाढ़ेगुण रूपधारी
गोपति गोकुलनाथ गजके दुखदन्दन॥
गोलोकपति गुसांई गोचारण गुनी मुनिरञ्जन।

गोकुल गवन करन गोमति प्रिय जुगराज दास
ध्यान धरे राधापति भक्तबन्दन ॥

२७

योगीरे बसो तो बसो चित्रकूट
नगर बसो तो अयोध्याधाम ।
सरिता बसोतो बसो सरयूतट नाम जपोतो राजाराम ॥
दशरथनन्दन पतिहै हमारे मरजादा
मारग लह्यो ठाम ।
तुलसीदास रघुनाथ आस एक
चरण कमल गह्यो विश्राम ॥

२८

योगीरे बसो तो बसो गोवर्द्धन
नगर बसो तो मथुराधाम ।
सरिता बसो तो बसो यमुनातट रसना
रटोतो जपो कृष्णनाम ॥
नन्दकेनन्दनपति है हमारे पुष्टलोला
मारगहै छैवनश्याम ।
नन्ददास यदुनाथ आस एक चरणकमल लह्यो विश्राम ॥

२९

कृष्ण मात कृष्णतात है कृष्णबन्धु सखाकृष्ण ।
विद्या कृष्ण द्रव्य कृष्णहै कृष्णहै प्रश्न ॥

३०

दीनदयाल पतितउधारन राम रघुवर
मोसो अधम पतितको सुनिए विनती
कोटि कोटि अपराध भरे मेरे रोम रोममें
कहांलो गनाउं कहत लाज मन महामन्द कौन गिनती ॥
जनम जनम लौं पाप कमायो बाज न आयो
कुमति कुटिल खल निलज शिरोमणि तापर सनमुख
भाषत भनती ।
लक्षण दास भरोसो नएको निज करनीको
सुजश रावरो वेदन गायो गणिका गीध व्याध
गज पाँवर सुनि सबन की विनती ॥

३१

जोरी रामलक्षणको अहेरो जात चले
सङ्गलिए मधि प्राणजानकी ।
जटाको मुकुट मुकट सीस सरको
दण्डकर काँधे मोहत जात सबको
मन निविड़ प्रवेश मानों कानन कहुँ
निलिनो ससि भानको ॥
जुगल कला पूरण रमत प्रकाश करत बिपत
काल सङ्ग लिए निधन करनके हेतु वृन्द जात धानको ।
लक्षण दास धनि धनि भाग सबनके रूप उदधि
वाव्यो ·वन आनन्द रतन खानि मुक्ति लिए कर
धर्म्म दानको ॥

३२

जादिन साधुचरण चल आवत ।
तादिन भाग उदै जुगजुगके सुख देखत प्रगटावत ॥
जाके पदपङ्कजके आगे चार पदारथ ध्यावत ।
अष्टसिद्ध नवनिद्धि सम्पदा सुख समृद्ध ग्रह छावत ॥
भुक्त मुक्त आङ्गनमें डोलत पुलक प्रभाव बढ़ावत ।
दरश सुफलको अवध जगतमें वेद पुरानन गावत ॥
गङ्गादिक तीरथ अवगाहन अवलोकत फल पावत ।
अगनित कलुष कलेस धरे उरविन श्रम सद्य नसावत ॥
तीन लोक दश चारो भवनमें के सुकृत सलिल नवावत ।
दुख दरिद्र दीनता मलिनता दरि दुख दोष बहावत ॥
इहफल सरस आन नहिँ त्रिभुवन कोटि जग सकुचावत ।
सुरतरु कामधेन चिन्तामणि यह अनुचर सङ्ग ल्यावत ॥
जाके पदको रेनु सुअञ्जन हितकर नैन लगावत ।
दूर करत भ्रम तिमिर लोगको अनुभव
अलख लखावत ॥
कहाँलों करु संतको महिमा कविकुल बुध लजावत ।
लक्षणदास दयाकर जगमें हरिजन हरिसो मिलावत ॥

३३

आज दोउ मेरे नैन विवस भए
छवि देख परत नहीं पलकरी ।

कटि पट कसनि लसनि मुक्तावलि
वनमाला झलकनि सुर मुसक्यानि झुकिझुकि
चित चुभरह्यो दोउ अलकरी ॥

३४

वादिन केवल जइएरी जादिन पीतमसों होय मिलन।
तन मन धन सब वारूंगो इन चरणकमल ऊपर
पाँवड़े बिछाऊंगी नैन पलन ॥
कारण मोहन अपनोही गरे डार लेहैं
सरस रस ललित अधारण।
कहे मियां तानसेन कबधों मिले आय
दरस परम इन संयोगन ॥

३५

तुही अम्बे आदि भवानी असुरसंघारनी
आनन्दी दुर्गे भक्तउधारनी महारानी।
उमा शिवा करालबदनी त्रिशूल-शूल-परधरनी
ज्वालामुखी योगमाया जगत-जननी ॥
गौरी गिरिजा सिद्ध-सिद्धदानी करहु कृपा
काली धीरज पर शारदा सरसुती वाकवानी।

३६

कहा जाने सार हमारी गउअनके चरैया।
व्रजबनिता सब बन बन आई भई हैं कुबरी
प्यारी दैया ॥

३७

जबतें राम नाम निस्तार्यो।
चार पहरमें एक घड़ी भजु तोहू हरि जग तार्यो ॥
काशीपुरीमधि गौरीपति शङ्कर ध्यान जो धार्यो।
कीट पतङ्ग तरे सुमरनतें राधोजी यश विस्तार्यो ॥
अजामेल गणिका गृहवासी पुत्रहित नाम पुकार्यो।
गज और गीध तरे सुमरनतें ब्रह्मावेद उचार्यो ॥
परम पुनीत नाम गिरिधरकों हरिजन होय सो धार्यो।
नामदेव कहे सोई सन्त शिरोमणि
चिततें नेक न टार्यो ॥

विठोयो दियो न जाई बेठियो म्हारो ठाकुर
पार परोसन पूछे रेना माछान कोणोने छाई ॥
बिन डांडां विन बांक वकोडां कुण बन्धान बन्धाई।
हरिसों जोर जगतसो तोरें तो बैठियो सहजाई पाई ॥
देवल फेरो दरसन दीधा मृतक धेनु जीवाई।
नामदेव कहे सुनो भाई साधो बैठियाके बलजाई ॥
उमावाई वैठियो दियो न जाई ॥
वैठिया ना गुण गाऊं रेउ ॥

३८

बिपिन मध बिहरतहै पियप्यारी।
नन्दकुमार वृषभानुनन्दिनी
हिलमिल गलबहियां डारी ॥
भूषण बसन ललित अङ्ग सोहनी
दीपत क्रान्त सबविध प्रगटारी।
श्रीमुसकावत कदम तर ठाढ़े
शोभा-सदन अपार मुरारि।
कबहुँ कुञ्ज निकुञ्जन नाहीं
निरख छवि अतुलित पिय प्यारी।
झुक रही ललित लता द्रुमननकी
हरियाली चहुँ दिश वनचारी।
बोलत पंछी लगत सुहाए ख्याल बिलोक अपारी ॥

४०

बिहरत प्यारो प्यारी वृन्दावन छबिछाई।
रास बिलास करत जमुनातट शरद रैन उजियारी ॥
नटवर रूप किए नन्दनन्दन राजत व्रज-वनवारी।
गावत राग रागिनी हिलमिल ख्याल खुशाल अपारी ॥

४१

प्रभु लाल हमको सौंह दिलाके आप सौंह खायके
अब मन चाहत औरनसों करवेको रङ्ग रलियां।
हमतो झूठेसे तुम कछु साँचेसे नजर आवत
अब समुझो बात नहीं भलियां ॥

४२

ॐकार ब्रह्मा उचारो चारहु आनन

तार करन सप्त प्रमाण।

सप्तस्वर तीन ग्राम इकइस मूर्च्छना

बाइस सुरत उनचास कोट तान ॥

आरोही अवरोही अस्थायी सञ्चायी

अंश न्यास ग्रह जान।

औड़व खाड़व सुर सम्पूरन

तानसेन गुरु ज्ञान उर आन ॥

४३

प्रथम ॐकार टेरो ब्रह्म चतुरानन।

जाको अक्षर सब रङ्ग भरपूर रह्यो बाणी तारण तरन ॥

अलख अपार अगम निगम रहत

करत राग रङ्ग उरधार धरन ॥

गुण गुणरहित सगुण निरगुण सब जग आधारन।

बैजू प्रभु आदि योति निरञ्जन निराकार

सूक्ष्म बिराटरूप घट घट व्याप रह्यो नारी नरन ॥

४४

जे जे तुरङ्ग अनेक अमोल मोलए रापत

जिनके झूल लागी जरकसी झीनो।

अनेक रतन नगन बहु भांतिन तिनमें

गज एकन एक नवीनो ॥

षट्ऋतु षट् दरसनके प्रसाद दीनो

हिन्दूपति पातसाह प्रवीनो।

तोसों तुही और नाहीं मेरेजान राजनके राजा

राजा रामचन्द्र अनगनती दानदीनो ॥

४५

जो जो बचन कहतहौंरी तोसों

तेइ तेइ बचत तू मानले सयान।

मेरे कहे तू उठ चलरी ललना

धरेही रहेंगे तेरे जियको गुमान ॥

काल न लागे औरतें तेरो तेरो है जीवन प्राण।

तानसेन तेरो कहालों असुति करे

क्यों तू जान होरही अजान ॥

४६

तेरे विद्याको कहों अचम्भो जोइ जोइ

देखियत सोई अदली।

गुणतो तोमें उपजत है ज्यों कपूर कदली ॥

४७

शुभ दिन शुभ घरी शुभ महूरत

बैठे तखत मुबारक नौरोज।

देशपति और गजपतितें जो गए

पराशन खलवली परी रूम शाम कहूं अनपायो खोज ॥

चार दिशा और तीनो लोकमें

तोसों तुही और दूजो नहीं कोज।

अदण्ड दण्डन अखण्ड खण्डन हाथ जोर

विनती करे साहनसाह पीर गुनी जनको

देत करोरन दान तकत तुमारी मोज ॥

४८

तू साहब मेरा करीम रहीम कहाँलों शुकर करूं तेरा।

सत्तार जव्वार अजीब कुदरत तेरी

जापै सुदृष्ट चाहे नेरा ॥

तू परद पोश दाना बीणा पाक जात तेरी रचना

सब घट घट तेरा बसेरा।

हिदायत आजजको दीजे सन्तत संपत

अपने जान सनुघेरा ॥

४९

बागरके पातसाह हादी सकार वारही

आए तक् दरवार।

मोरी नैवरिया मांझ धारमें तुमही उतारो पार ॥

५०

जो चाहे सो करे तूही तू ऐसो पाक परवर दिगार।

वेचुन वेचगुन वेशुबे वेनमुन कुनफे कुनके कहे कौन

रचना अपनी अपनी सिकार ॥

जीव जन्तु पवन पानी आसमान सब तोहि रटत

तेरेही नाम को लिए आधार।

जबते सुन तबते एक महम्मद नामके कारण

कीने नूर महूर ऐसी रसना कही

जो तेरो बखुत करे हिदायत आजजको दोजे
सम्मत सम्पत दौन दुनों कुशल छेम और चाहत दिदार ॥

५१

सोच कहा रहेहो लाल मनहो मन
अब कौन चितवन आनिचढ़ी ।
नेक हौंहूं सुन पाऊं तो करों उपज चतुर
कोउ नईके पुरानो चढ़ी ॥
वाहि वेग लाय मिलाउ परचे उत मोह्न रखिए
गांठ बांध ऐसो क्योंन होय चतुर कढ़ी ।
सदारङ्ग बलमा मोसोंहो छिपावो जिन
बात जातहै बढ़ी ॥

५२

जब आए आपही मनावन तब समझ
जियमें कैसे धौं घर बैठ रहूं ।
हाहा करत पाँए परत बोलाय लेत
पोर वासों कहा कहूं ॥

५३

कहावे गुनी जो सावे नाद शवद जाल कर थोक गावे ।
मारग देशी कर मूर्च्छना गुण उपजे मनि
सिद्धगुरू माध चावें सो पञ्चन मध दरपावे ॥
उक्ति युक्ति भक्ति मुक्ति गुप्त होवे ध्यान लगावे ।
नव गोपाल नायक अष्टसिद्ध नवनिद्ध जगत मध पावे ॥

५४

आलीरी देखेहो रहिए मोहन प्रीतम पे
कहा चढ़रही रिसौंहै ।
एतो हट काहेको कीजियत बावरो
जो मिले चाहत तेरी मग ठाढ़ो जोहै ॥
तेरो उनको नेह जैसे सोना सोहागा
एकरङ्ग एक सङ्ग सोहै ।
मदनके प्रभुको मगन मन ए न मानेरी
ऐसो कहाँधौं धरि मन गोहै ॥

५५

महादेवदेव देवनपति सुर-ईश्वर
शङ्कर पारवतीपति दुखहरण ।
वामदेव आदिदेव जटाजूट धुरजटो
डमरू बाजत डिम डिम सब सुख करन ॥
रूप बहुरूप भूतनाथ भुवनेश्वर भोलानाथ गौरवरन ।
तानसेनके प्रभु रीझत तुरतही
देत मन इच्छा करे काज अशरण-शरण ॥

५६

पचत गुनी सब धुरपदको कोउ न पावे
बाज बहादुरके अङ्ग ।
छन्द कवित्त धारू खेवट तोहोपै जो बन आवत
जोड़ पावत दरस परस वाके सङ्ग ॥
सङ्गीत-रत्नाकरके लछ लछन भेद हनुमत
कामनाथ भरत जानत मत मतङ्ग ।
ऐसो दाता सुर पूरो राजा रामचन्द
देत करोरन रीझत रागरङ्ग ॥

५७

व्रज गोकुल मथुरा वृन्दावन कुरुछेत्र
हस्तिनापुर हरिद्वार बद्रीनाथ योगध्यानी ।
नैमिसार अयोध्या प्रयाग काशी गया
हरिहर जनकपुर आदिवराह सुखदानी ॥
गङ्गासागर साक्षीगोपाल जगन्नाथ पन्ना·
नृसिंह श्रीरङ्ग रामनाथ पद्मनाभ सारङ्गपाणि ।
बिठलनाथ पुण्डरीक डाकोरनाथ द्वारकाधीश
धरणीधर श्रीनाथजी रूप चतुर्भुज
सागर गुन आगर प्रभु देत इच्छा मनमानी ॥

५८

एकदन्तवक्र लम्बोदर कीरत जाहि बिराजे ।
गणेश गौरीसुत महामुनि महिमासागर
गुरु गणनाथ अविघन राजे ॥
हेरम्ब गणदीपक तुही महातुर उग्रतप
वट चन्द्रमाशीश विनायक जगतके शिरताजे ।

तानसेनको प्रसाद दीजे सकल बुध नवनिधके
सदा दायक नायक जगतके सरे काजे ॥

५९

एकदन्त गजवदन विनायक विघ्नविनाशन है सुखदाई।
लम्बोदर गजानन जगवन्दन शिवसुत
ढुण्ढीराज सब वरदाई ॥
गौरीसुत गणेश मूषिकवाहन फरसाधर
शङ्करसुवन रिद्धसिद्ध नवनिद्ध दाई।
तानसेन तेरी अस्तुत करत काटे कलेश
प्रथम बन्दन करत द्वन्द मिट जाई ॥

६०

आदि पूजो देवगणेश विघन-हरण सुख-करण
गिरिजापुत्र विनायक।
लम्बोदर हैमात्र एकदन्त गजवदन
सिन्दूरवरण सब विधिनायक ॥
मूषिकवाहन हेरम्ब गणपति जाकहँ सुरनर
मुनिगण गन्धर्व्व किन्नर नमो नमो तइदेव
गायक आधीननके वरदायक ॥

६१

प्रथमही आनन्द रच्यो नीको घरी
मङ्गरत पञ्चो शब्द बजाए।
देश देशके याचक जेते आवत तेते पावत
गज तुरङ्ग नग दान मुक्ता बरसाए ॥
अष्टोवरन मध्यनाम ज्योति
अरिनके मारवेको विधिने बनाए।
तानसेन कहे युग युग चिरञ्जीव रहो
राजाराम तेरी यश तिहूं लोक छाए ॥

६२

नादसमुद्र अपरम्पार काहू न पायो पार अपार भेद।
केते गुणी गन्धर्व्व यच्छ किन्नर रचिपचि हार रहे
सुर नर मुनि गुनि चारों वेद ॥
सप्त सुर शब्द ब्रह्म निरञ्जन निरङ्कार
निरभय भेष रचिपचि कर थाके खेद ॥

तानसेन जन आरत विनय करत
धन धन नाद अलख अभेद ॥

६३

तूही एक आदि निरञ्जन निराकार
नादरूप तेरोही पसारो पूरो सब संसार।
अलख अव्यक्त जग-निस्तारन-कर तूही
एक पाकपरवर अपरम्पार ॥
जल थल धरणी धवल तूही पूरण
सकल महीमण्डल तेरोही अधार।
तानसेनको दुख दारिद्र दूर करो
कर्त्ता हरता तू करतार ॥

६४

नादगढ़ मन राजा राज सजत जहां राग
उमराव बैठे दुरजन पर नीके रच्छा करत।
नाना राग रागिणी छतीस तुपक
भर भर धर सोई इकइस मूर्च्छना गीत
नाल धारू धोवा माटा परमाटा चतुरङ्ग
जम्बू राग जलवें पारसी छन्द रच्यो
शत जञ्जाल त्रेवट रामचङ्गो सङ्गीत
दारू तानन गजबांस ढांस झुमरा गोला भरत ॥
सप्त सुर सप्त पौर औड़व खाड़व किवाड़
आरोही अवरोही खाई बनाई
कौल तिलाना कोतवाल ध्रुवपद वजीर
प्रबन्धको निशानी आय लरवेको
धाय विद्याकी लराई लरत।
तानसेन कहे ऐसो अगम अथाह जाको पार न पायो
रचपच हारे काहू न लाग लमीकान पकर पकर धरत ॥

६५

नगरनाद मध चक्र मत चौपर हाट बसायो।
सुरहाटी अच्छर जिनस लेत सुघरन हाथ बिचायो ॥
सुर कोतवाल सुरतले प्यादा गमक गस्त फिरायो।
सुनत भाव सब गुनियन मिलके
तानसेन निरख मँगायो ॥

६६

जो गुणीजन गुरु पावे गावे नीको तान गुणसों रिझावे ।
जब बजावे बीन अच्छो नीको परमाण सोच समझ
तान लेत ध्यान धरत जियामें जब सुर सङ्गत पावे
ढुरन मुरनसों वाको समझ आवे ॥
सप्त तीन इकईस बाइसों लागडाट
खुली मुंदी दरसावे ।
सप्तध्याय सङ्गीत मत करके तब तानसेन
प्रभुको रिझावे ॥

६७

अब बन आई कर सोलहु सिङ्गार
नख सिखलों रम्भासी ए नवल नार ।
आतुर चातुर तुम पिय नीके जानत
लक्ष लक्षन चार भाँति कोक कला प्रवीण सार ॥

६८

प्यारी तेरे नैनन मीन कर लीने हैं नवीने ।
भौंहे कमान नीके तान कमल मृग लज्जित भए
मोहे कटाक्षन कीने ॥

६९

चढ़ो चिरञ्जीव साह अकबर साहनसाह
बादसाह तखत बैठो छत्र फिरे निशान ।
दिल्लीपति तुम नबीजीको नायब अति सुन्दर सुलतान ॥
चारो देश लिए कर जोर कमान
राजा राव उमराव सब मानत तोरी आन ।
कहे मिया तानसेन सुनियो महाजान तुमसे तुमही
और नाहीं दूजो गुणी जननके राखत मान ॥

७०

आपसमें दम्पति दोउ मिल करत सिङ्गार
एक अङ्गोछे पोंछत मुख एक सुधार पाग ।
सब निश जागे प्रेम मधु छाके ताते झुकझुक गरे लगत
यह बनावे हितुअनके जागे भाग ॥

७१

पियके मनमें न नैनन भावे भावे तेरो जोवन नियको ।
तेरे रूप रस बश भयो प्राणपति तो जिय
चाहे आन न काहू तियको ॥
रूप जोवन तोहे दीनो करतार
बनाए आलो कोप ना रहो गर्भ हियको ।
प्रभु विलास नवल लाल रिसाल प्रीत नई
आलीरो आनन्द बढ़ो जियको ॥

७२

तेरो नाम चहुं चक भरपूर रह्यो तुही
दुरत फिरत तुही सबनमें करत किलोल ।
तुही तान तुही मान तुही रोम रोम
रम रह्यो तुही गुन तुही बोले बोल ॥
शेष सहस रसना तेहू स्तुति न कर सकत
तेरो रूप तुही जाने तुही अमोल ।
गुप्त प्रगट तेरी गति तुही जाने
तुही सागर गुण आगर तुही मूंदत तुही खोल ॥

७३

मेरी तो तोहिलों दौर जानत न और ठौर
तेरी रीझ बूझ मोंको और न शरणहै ।
तुही तन तुही मन धन तुही परिवार
तुही मूल वरण है ॥

७४

गोकुल गोचारण गोपाल गरुड़पति
गरुड़गामी गोविन्द गिरिधारी ।
जनार्दन हृषीकेश रङ्गनाथ रणछोड़ वामन बनवारी ॥
जानराय जगतपति जगजीवन जगन्नाथ
माधो मधुसूदन मुकुन्द मुरारि ।
धीरज प्रभु विहारी गोपीनाथ नृत्यकारी ॥
उरपति रपलेत भारी रिझावन गोपनारी
तारण व्रतधारी ॥

७५

श्रीजगन्नाथ रामेश्वर रणछोड़ तीकम
बद्रीनाथ योगध्यानी ।

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका
पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैता मोक्षदानी ॥
पुष्कर प्रयाग अलकानन्दा भागीरथी
गण्डकी सरयू यमुना वेद न बखानी।
इन हूंकी नाम लेत धरत ध्यान
कटत पाप जानकीदास सर्व्व सुखखानी ॥

७६

अति अलसानी रोआली झपक चलन गति मन्द चलन।
मोहनसों मिल आई तबही मैं जानपाई
चतुराई करन लागी चतुर तरन ॥
प्रेमकी चोरी करतरी सजनी कैसे दुरत
तेरी सोंधेकी हरण।
धीरजके प्रभुसों रितमान आई
कोटि काम लागि चमर ढरण ॥

७७

दिनकरतनया तीर परेई रहत
जो जिनको मोहन गोहन लीने।
जिन सङ्ग हंसन खेलन तिन सङ्ग विहार
तिनहीको अपनो कीनें ॥
जिन सङ्ग रास विलास शरद निशि
जिन सङ्ग गावत सुर भीनें।
जीवन गिरिधर अरस परस भए लेत तान रङ्ग भीनें ॥

७८

सप्तसुर तिनग्राम इकईस मूरछना
उनचाश कोटि तान मण्डल मधिगावै।
चारु करन हस्त शिर नैन भेद भांति भांति
उपजत गत निरत करत भृकुटी नचावै ॥

७९

बरणन को कर सकत हरिके गुणानुवाद
शेष सहस्र शुक पावत नाहीं पार।
सनक सनन्दन सनातन सनतकुमार
ब्रह्मा शिव व्यास वारद नारद हाहाहुहु गान्धर्व्व
गावत नित नित नाम सार ॥

सुर नर मुनि सब रच गए पच गए
वाको मरम भेद कोउ न जानत अपरम्पार।
बैजू बावरे प्रभु भक्तवत्सलहै सब जगके करतार ॥

८०

सौंहै सौंहै कत खात बात कहत तोतरात
प्रात आएहो जहाँते अब तहांही क्यों न जात।
चिन्ह देखियतहै गात यातें अरसात जम्भात
याहीतें उपजावत मेरो मन मनावत ॥
अबहु ए न ए कहत न सोहात एक लङ्गर
सो ढीट मन मन मुसक्यात।
विलासके प्रभु परघर गमन छाँड़ो हमसों
अवध बद अनत विरम रहे आएहो मेरे परभात ॥

८१

सीस फूल मांग टीको वेसर मोती डोले करणफूल
श्रवणन नवरोज मानो जुग रवि करत किलोल।
गरें कण्ठसरी भाल बेंदी नख शिख
भूषण नग अमोल ॥
कटि किङ्किनी भुज बाजूबन्द रखरी
नैनन अञ्जन मन्द हसन नख छोल।
वीरबलके प्रभु रीझ थकित भए रस
बस करलीने मोहन नागर रसघोल ॥

८२

परस्पर दम्पत मिल करत सिङ्गार एक
अँगोछाले पोंछत मुख एक सुधारत पेच पाग।
सब निश जागे प्रेम रूप रस मधु छके ताते
झुक झुक गरे लाग लाग ॥
ले दर्पण आपसमें निरखत प्यारी प्यारो
ले वीणा बजावत गावत राग।
तानसेन प्रभु दोनो चिरञ्जीव रहो
देत दरस भक्तनको धन धन धन धन भाग ॥

८३

सङ्गत पङ्गत लिए राग गावत अब गुणी जन
करम अदेख।

सप्तभेदसों अलाप सुनावै तब गुणीयन मन मनावै
साध साधके लेख ॥

८४

अचानक ह्वौं बैठी आय गए पियामैं नको
केतो छल एतो उठि कहा बैठी आप अनकाड़े ।
तुम सब मेरो हितको जानत नाहीं
कोउ भई आए आड़े ॥
जोइ जोइ मन भाए सोइ सोइ कीनो
कबको टेर दीनो ठाड़े ठाड़े ।
साहब असलेम पिया मिल ऐसो कौतुक कीनो
मेरे आभूषणके मोतिन में पढ़ि गाड़े ॥

८५

दिन दिन चिरञ्जीवि रहो राजन
मन राजन जोलों ध्रुव धरण तार ।
मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह वामन परशराम
रामकृष्ण बुध कलंकी मिल रच्छा करत करतार ॥
जौलों गङ्गा यमुना जल तौलों राजकरो
गुणीजन आशीष देत पावत मनवाञ्छित फल चार ।
धन धन ओरंगबहादुर साहजू तेरो प्रताप
सुयश फैल रह्यो जगमें अधिक यश विस्तार ॥

८६

शाकको विक्रम देवेको कुल करण वेद सम नहीं ज्ञान ।
बलको भीम पैजको परशराम वाचाको
युधिष्ठिर तेज प्रतापको भान ॥
इन्द्रसेन राज सूरतको कामदेव मेरु समान ।
तानसेन कहे सुनो साह अकबर
राजनमें राजाराम नन्दन विरह भान ॥

८७

अनुक्रमसों पावै तीवर तरतीवर कोमल
सकारी त्रय भेद सङ्ग लिए सुरताल ।
सप्तसुर तीन ग्राम इकईस मूर्च्छना
उनचास कोट तान अच्छर सुर साचें चाल ॥
औड़व खाड़व सम्पूरन याको
व्योरो बूझवो सङ्गीत बड़ो जाल ।
तान तरङ्ग कहे तुम नीके जानत
समझ कर लीजिए अपने मनमें भुअपाल ॥

८८

धीरे धीरे धीरे कान्ह सीखो परगटह आवन ।
ह्वौंतो अबही जाय कहूंगी नन्दराय सों
बिधितें इमको चलावन ॥
कैसे बल छल बोलके कर भेषधरो जब वामन ।
तान तरङ्ग प्रभु ऐसो ह्वौं न गँवार तुम
मोहि लागी बौरावन ॥

८९

करमको नजर कीजे मोपर
महरबान हजरत मरदान ।
कोउ बन आवत नाहीं मुंह आय परिहै निदान ॥
जेह दुख धरत तुम नामको टेरत
छिनमें होत असान ।
बड़ी बात कहा तुमरे आगे दीजै धन मोहे दान ॥

९०

ऐसे बहुत चले नए नए हुनार ।
ततछिन सीखत रहत विद्याधर वे जो
कहावत जे नहीं समझत जो धन धन मत पार ॥

९१

अनेकप्रकार करम नादसमुद्र अपरम्पार सङ्गीत गुर ।
सप्तसुर तीनग्राम विचार जानिए सुर
रिषभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत निषाद सुर ॥

९२

तनकूप जीवनाद ग्राम लेजो बोले
डोले बारबार अचोसिए ।
तक मान ऐसो विचित्र सब कासिए आरध उरध
दोउ सुरकिए महिमा वृषभान जोत जोरिए ॥
धरत अलाप अच्छर खरज बरण
वर तान फूलसे लागत सींचत निए ।

चारो तुकन उगत जुगत अछोताम दीरघ एहो
लागे मानों तिनको सिखा ओड़व खाड़व
भई मूरछना लिए ॥
सप्तसुर सरिता भई सांचीरभ सन नेत्र कमल सवाद
धरोए करिए घरो घरो पल पल रसना रचनिए ॥

९३

गागर ढार देतहै गारो एते
पर कहूंगी नन्द यशोदा सों ए।
तुम चतुर हम नीके जानत सबन छांड़ लागे
मोसों अहो बातें बन आई करो तोसों ए ॥

९४

जैसे पूरे पूरे कहो तेरेरो अलाप पावत
प्रथम सब गुणी मिल देखो राग सरस।
अस्थायी सञ्चायीको विलोक करत
देखावत जबहीं वाक्‌वाणी परस ॥
मेरे भाग जागेरी अब मैं पायो पीतमको दरस।
होतौं तिहारी भिखारी सबविध जानतहो तुम सरस ॥

९५

नैनन मग जोवत मध भूख पलक न लागेरी ढगए।
जादिनतें बिछुरे प्राणपति तबतें
निश वासर मोको जात सब एक टगए ॥
हों इनके समीपतें कबहुं
न्यारो ना भई न जानों एतो दुख
आलोरी हो विरह सतावेरी अङ्ग अनङ्गए।
अकबरसाह विचित्र भेटोंगी
अहो भरत बजेहैं मों तन मनमथ दगए ॥

९६

रङ्ग रङ्ग है रङ्ग अलहको सकेतो मन रंगले अपनो।
भूप्रकाश रवि शशी एजो
देखियतहै योंज्यों रैनको सपनो ॥
माया मोह लोभ क्रोध तज जियमें
अष्ट याम रख रबको जपनो।
ऐसो सुख न जगतमें दूजो जिन
बूझें सोइ बिध लपनो ॥

९७

रसमसे आयेहो वाके चिह्न भरे
नैन सैन मधुरे बैनन और तोतरात।
अति अरसात जम्भात ऐंड़ात हौजू तुम
शिथिल गात पग डगमगात ॥

९८

जैसे बन आई पिय पीतकी रीत
तासों क्यौंन जाय रित मानिए।
एतो दुराव कित करतहो प्यारो
बातें सबही अब नीकें जानिए ॥

९९

यह युग युग होय तुमको मुबारक ईदको त्योहार।
ऐसेंहो करबो करो लाख बरस लौं
सरोपाव भूषण महोरन और दे दे आसीस भर भर थार ॥

१००

गुणो गन्धर्व्व अस्तुत करत है जान सरोमन।
अङ्ग अङ्गको परछको गुणी जन
सोधतहै तोमें तूहै रार गमन ॥

१०१

शिवशक्ति आनन्दी आदि भवानी
दयानी दयाकोजे दरसन नैनन।
तिहूं लोकमानी शिवानी मृड़ानी एसो प्रताप दीजे
अब दुख कलेश नारहें रहे शरीर सुख चैन ॥

ढंग्री टोड़ी

चक्रवर्ती छत्रपति साहअकबर नर आयोरे नर आयो।
जाके चढ़ेते सेस कलम त्योधरन हलोरी
गरद गगन छायो ॥

२

पिय मनहरनो पै मृगनयनी
मान छांड़ोहो चम्पकवरनी तू विचित्रतरणी।
वे तो नवल लाल हेतसो बुलाय लेत तू चन्द्रमुखी
मेरे जान तरफ तरफ जियंहोत तेरो मरणी ॥

कीनो निहाल लाल सब सौतनमें
रखिहौं हो कर उरमाल ।
तिहारो बानक देख रीझ थकित भई
तन मन प्राण बिसाल ॥

४

अनहद शब्द उपजो मो घटमें ताको
ध्यान धरूं अष्टयाम ।
खरज रिषभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत
निषाद पावै ज्यों अति अभिराम ॥
अर्थ धर्म्म काम मोक्ष चारो पदारथ पाए
जब प्रगटो नाद ब्रह्म महसरूप अनन्द धाम ।
धन धन ज्योतिस्वरूप अचरज कर
और परसे तानसेन कण्ठठाम ॥

५

बज्रासुर चाप प्रगटि छवि प्रकाश और सुर कटाक्ष दमन
मनो मध गजगवनो पियूषअधर वदन इन्द्र धरन ।
मन्द अमन्द परमल वास तेरो लक्ष्मी और जैतो रम्भा
प्राणपति पौरहरण ॥
उदद मादत ततु अरतन कारण
भस्मनाम सुखसङ्ग भई ऐसो चञ्चलता धरन ।
यह लीन प्रकारन लीनो अकबरसाह
कामधेनु लागो अति सेवा करन ॥

६

पिय दरसनके लोभी मेरे नैना बैरागी भए ।
लोकलाज कुलकान तजि डार दई सब सोभा पाए ॥

७

बांकेसुर चोप नित नई भांत न मानो
दयानी गजगन कौन गिने तारागी ।
कूम शाम खुराशान प्रथोतो
जगाए कमठ पीठ खलबलानी ॥

८

आनन्दित आनन्दो पारवती सरस्वती
दुर्गादेवी गङ्गा गुरु अरधंगी ।
चहुं चक आनी मानि सयानी भागीरथी
विद्याधर यमुना त्रवेणी एमातरङ्गी ॥

९

अब्राको तजि देहु क्षमाको भजन करहु मदको जीत
लेहु नित दया हियमें धारि पाप सों राखो दूर चित
सत्य वचन मुखबोल साधु पदवी जीयधारो ।
सतपुरुषनको सेवन करो नम्रता अति विस्तारो
सब गुणसों आप गुप्त विद्वज्जननको सेवा करो
यामे होवे निस्तारो ॥
मान अपमान त्यागो काम क्रोध दुरजनतें
भागो ज्ञान ध्यान अनुरागो हरिनामको उचारो ।
कोमल बचन मुख भाखो एक ब्रह्म सब जग
राखो बैजू प्रभुको घरो पल छिन निश दिन
रटना रटो तातें होय जग उधारो ॥

१०

कालिन्दीके कूल कदमको छैयां
देखो बनवारी वंसी मृदु बजीयतहै ।
सुनत श्रवण वीर धरत न मन धीर
नेक न परत कल वहो भजीयतहै ॥

११

बोल बोल मधुर धुन मुरली बनमें
रचपच कर रङ्ग राग कर रस बस ।
सप्त तीन इकईस बाइसो उनञ्चास सप्तध्याय गान सरस ॥

१२

ए तुम सज सज दल चढ़त जब भूप पर भार होत ।
थर थरात देश देशके गढ़पति सुन धाक धर हरात ॥
जाके चढ़ेते खुर रैन उड़त गगन छिप जात खल बल
परत सिंह छूपे बाजन निशान जब शब्द धहरात ।
देव दानो और रावकतें भाज गए
सब पाताल लोक मढ पीठ कलमलात ॥
सहस सहस कुनफाट कटि चूर चूर भयो थरहरात ।
महाराजाधिराज राजा रामचन्द्रको असवारी होत ।

अश्वदल गजदल पयदल सुन सुन
अकअकात धक धकात ॥
एसो सुरोपूरो तप तेज वोसो वोही दूजो नाहीं
मेरे जान तानसेन गुनीजनको अजाच कीनों
वाकी सूरत मूरत पर खल बल जात ॥

१३

राग रङ्ग सुध मुद्रा सुध अचर
सुध छन्द पदयतहैं साँचे गुरुन सो पावे लेख ।
सुर भेद ताल भेद विचारकें साधे ध्याय ताल ध्याय
वाद्य नृत्य प्रकीरण सङ्गीत शास्त्रको देख ॥
धाकु धुरपद प्रवन्ध छन्द गीत गुमो माटा चतुरङ्ग
त्रेवट तिल्लानी देश विदेश भाषा संस्कृत विशेख ।
कहै वैजूबावरे सुनो हो मेरे गोपाल नायक हिरन बोलावें
पाहन पिघलावें तेरो लाख मेरो एक ॥

बहादुरी—टोड़ी

कान्ह गाय काहे न लेजें हो
बन तट भएहै प्रेम वैराग ।
एसे वीर हो ग्वाल कविकें कहियत
उझकत थिर न रहत अब घरघर नैन सैन कहुँ लाग ॥

२

दीनो करतार तुमें राज साजको
सकल सोभो एसोनाह और कोउ जानो ।
साहब सुजान समझ तानको राखत हो तुम
गुनो आय गावत ए नीको सुध वानी ॥
जानत है नीके भाग आपन बैजू रहत है
रीझ जगत में तुमारी अमीर रावरानी ।
देतहो दान सनमान दुख दारिद्र विड़यन हमरे कारण
कियो तुमहूं को अब साहब किरान सानी ॥

लाचारी—टोड़ी

रूप निरञ्जन अञ्जन रहत ताहि वरनवे कोँ
उदित भए छहो शास्त्र अठारहो पुराण ।

ताको भेद नहीं पावत शिव सनकादिक
ब्रह्मा नारद शेष रटत केउ ब्रह्मा शिव घट व्यापक
कोट कोट ब्रह्माण्ड रचत देखले हों बुधवान ॥
आदि अन्त मध्य वोही ब्रह्मलोक चराचर वाहीको
इच्छाते करत बिनान ।
तानसेनके प्रभु सब जग व्याप रह्यो
पूरण ब्रह्म अविनाशो निरङ्कार अविनाशी भगवान ॥

दरबारी—टोड़ी

तू असमान को दूजो रच्यो नाह न
गुण समर्थ आयोहै धर्मराज गरीबनिवाज ।
तुम सम और कौन महागान गुण निधान
दाता विधाता रचपच विरञ्च ज्ञान समाज ॥
भरण पोषण दुख दारिद्र हरण षट्दरशन
निवास सकल साज ।
तानसेन कहे प्रभु हिंदू सुलतान भक्त
उधारन भगवान तानि प्रगट कियो सकल गुनसाज ॥

२

गावो गणेश महेश सुर हर महादेव ।
जो शिव शङ्कर गिरिजापति पिनाकपाणि कैलासेश्वर ॥

टोड़ी—चौताल

एरी हूं तो लेन आई लालन मया कर बुलाई ।
हौँ जो मनावत तू नहीं मानत कौन वदी एसी निठुराई ॥
मेरो कह्यो तू मान करते तोहै लालनकी दुहाई ॥
उठ चल हिल मिल साहजहाँपे वही तोहि सुखदाई ।
तू अब लागि पियाने पठाई छूटे हार
टूटे हार सखोरी मुख पर आई पिराई ॥

२

वचन निभाइए प्यारे ज्यो मुखतें ए कहै ।
और मेरे करम कर धरसोंह करि और करसों कर गहै ॥

लाचारी—टोड़ी

बाबुलरे हो मोहे दीनो विदेश ।
बोरन मागि अपना देश मोहे मिलनको सन्देश ॥

कव हम आवेंगे काज करनको पियासङ्ग
चलि लिखने जोग मन्देश ।
गुण औगुण मोमें कछु समझ न परतहै
दूर लागत है कैसे निभहैगो वालो वेश ॥
गुड़ीया खिलोना ताकमें धरे रहे
नहीं खेलनको लवलेश ।
हाथी घोड़ा पालको दीनो वहुविध धन दीनो
पालन पोषण कीनो नरेश ॥
देहरी पर्व्वत हो गयो अङ्गना भयो विदेश ।
चली सइयांके सङ्गमें अवतो भयोहै विदेश ।
भई पियके शरण मोरे वावुल गाढ़ो चरण गह्यो परेश ॥

टोडी — चौताल

हमारी सुरत बिसारी बनवारी हों
मरजस दै दै हारी तोहू न भए सपने अपने मुरारि ।
वे मोहन मधुकर ससान अनगन वेलि चित लावत धावत
मो विरहिन विरह व्यापत फनपत धीर धरे न धारी ॥
एसे निठुर निरदईके बस भई जोई कहो सोई
सहो विरह बावरी ।
विलासके प्रभुको हों न पत्याउ जनम छाड़ु
नरहु न्यारी ॥

२

मनहो मनमें तू रार रहो धर आप अपवस करके
सबनते दुराय त्रिराय कर रहोसो अरघट परघट
नैन बताय देत ।
प्राणसुरको प्रीत अति गुपत कियो चाहतरी
तेरे द्रगपालते अबजान जानलेत ॥
जोलो मै न सीखाई तोलों आई नेह
नजर जनम जनम हित समेत ।
तानसेन प्रभुके रङ्ग रङ्गे जे अरण वरण सेत असेत ॥

३

दिन दिन दिन आनन्द करत रहत री
ललना लालनके अङ्गसङ्ग ।
तोहो सों हिलन मिलन तोहो सों प्यार
तोहो सों मनके तरंग ॥
एतो काहेरी तू लजाय दुरत तरुण तेरे
जोवन एसो भायो मम कुन्दन अङ्ग ।
राजाराम रिझाय रखे ते बहु भांतन कर राग रङ्ग ॥

४

जे दिन हो दिन बखशत राजकुंवर
जे कहियत है रवि रथके ।
मै धर राखो खुंधारो बलको सुन ताजो
तुरको अरबो जिनके अब मोल सहगे कोरतके ॥
दूधके दांत न एहो पञ्ज लगे चाखे तोखे
कूदे समरथके ।
वीरभद्र नारायणके लागि रहे धाम षटदर्शन
स्वारथके ॥

टोडी — तिताला

तान तरवार तारको सिपर लिए फिरत गुनो जहाँ तहाँ
जीते सुभट अपने अनुमान जहाँ तहाँ जीतत तुरत ।
सुर कमान बोल बान छूटत जेहि लागत
रीझत जेही सभा जाने विद्याधर सब जुरत ॥
सप्तकके तरकस उचरत सुरत नेजा
असमान् वकतर बाजू लय उपज नई पङ्क वाजू फुरत
तहां सभाके बीच लरत हरदास डागर ज्यों ज्यों कहे
त्यों त्यों सुनो सुघर सुज्ञान अज्ञान आगे फौजे मुरत ॥

२

नित लीजिये नाम बनवारी श्याम हरिभक्त
पूरण काम कृष्ण विष्णु जगतारण ।
जगनिस्तारण जनप्रतिपालन कंसासुरमारण
सन्तउधारण भुवके भारउतारण ॥
मछ कछ वराह नरहर वामन परसराम
राम हलधर नारायण बुध कल्की नानाविध वपुधारण ।
बैजूके प्रभु एकतें अनेक होय बहुरूप बहु भेष धरे
अपने सेवकके जनम-मरण-निवारण ॥

३

मौन-दीन ख्वाजा साह अकबरके दुरजन दूरकरन को
एकछत्र राजा ।
अचल करके तोहि दीनो अष्टसिद्ध नवनिद्ध करो काजा ॥

४

भर भर धर धर आवत गागर नागर
नारिरी कोनके रस मिस केरे ।
औरहि दिननमें एकही बेर जावत पनिया भरन
आज केऊ बेर आय गई एसे कहा भये नन्दके हेरे ॥
जोतू अब सास ननदकी कान करेतो पावे हैकुल डरे ।
हरिदास डागुर प्रभुके कहेते मेरे नैन प्राण सब गए डरे ॥

५

गागर ढार देत है गारो एते पर कहोंगो
नन्द जशोदासों ।
तुम चतुर हम नीके जानत सबत छाड़ लगि
मोसों अच्छो बातें बनाई कर तोसों ॥

६

धीरे धीरे कान्ह सीखो परग्रह आवन ।
होतो अबही जाय कहोंगी नन्दसों यह
बिधसे हमको चलावन ॥
कैसे बल छल बालक कर भेष धरो जब वामन ।
तान तरङ्ग प्रभु एसो हो गवार तुम मोहि
लागि बौरावन ॥

७

एक कर दर्पण एक कर कजरा अचरा गहे सुधारत ।
ललना एक काजलमें दूर करन उठत भोर
मुखकमल परत सीस फूल अति विराजत ॥
नगन जड़त की उपमा जीय भइपै
मेरे जान वेऊ दूर रहे सकुचन लाजत ।
जे कहियत है मानो फुन दुरत हो
तानसेन देखत दुख भाजत ॥

८

अति छबि छाजत है ललना लोचन तिहारे ।
रङ्गरङ्गीले रसाल छबीले सोहत लजीले सोंहे खात जात
झुकोहे कछू उझकोहे एसे सोहन होत हमारे ॥
अदभुत रूप गोप बरनो न जाय कोटिक
काम द्युति सुध बुध बिसारे ।
साह जहाँगीर जान बूझ कर सकुचावत
इन नैननमें रैन बिहारे ॥

९

अति अलसाने मे जाने पिय अनत रङ्गे
जूरङ्गे हो रङ्ग रागके ।
रिझहित काहू पै रीझकसे बाद जानत रसके
बरखाई आज भंवर काहू बागके ॥
दोष तिहारो नाहीं दोष काहू तियाको
तुमें सिखाई सोख अनुरागके ।
तानसेन प्रभु तुम बहुनायक बात
कहा बनावो सुधारो पेच पागके ॥

१०

भान्ति कहो नवनेहो लाल मूरत को
जो बाके भले निश जाग किए नैन लुलाल ।
अधर अञ्जन नख क्षत बनो माला उपटी अङ्ग भरे है
प्यारो बोल तोहै सुखदे आएहो मेरे हाल ॥

११

तान तरङ्ग भर धरिए अच्छर पटरो
क्यों रीझे गुरुनको गुरु साहनसाह अकबर ।
धात मात सोई राखेरो ताको मनआगर
और बुधसागर जाय वार्णोवकबर ॥

१२

प्यारेको प्रकृत जो तुम समझत तेरो
उनको एक गांठी ।
तोहो सो नेह बनआयो दिनही दिनरात
सोते रद भई ज्यो करत ज्यो कपट ढांठी ॥

१३

हे गोविन्द नारायण कृष्ण मुरारि भगवन्त जगदीश
माधो मुकुन्द गोपाल हरि परमेश्वर गोवर्द्धनधारी
मधुसूदन श्याम ।

भक्तवत्सल जगदीश गुसाँई दीनदयाल दामोदर
निरञ्जन रघुनाथ निराकार नरसिंह पतितपावन
धनधन जगतपति जपत जग अष्टयाम ॥

१४

कौन भ्रम भूल्योरे मन अज्ञानी सीखत
न राग रङ्ग तान अक्षर सुधवानी ।
और स्वारथ सों जनम गँवायो
विद्या बात अधिक सयानी ॥
जे साधु गुणी भए तिन कौन गुणकी मत ठानी ।
विलासके प्रभुको जो भलो चाहत
तो मिलाओ तानसेन गुरु ज्ञानी ॥

१५

करालवदनी काली त्रिशूल खपर सोहै
चण्डी असुरसिंघारन कारण ।
महिषासुरमर्द्दनी इन्द्राणी महेश्वरी
मेनकात्मजा उमा कात्यायनी गौरी तरण तारण ॥
नारायणी निरग्रन्था काश्मीर अस्थानी
शिवा रुद्राणी अपरम्पारण ।
नग्र कोटरानी महिमा तुम जगजानी
तानसेन निश दिन सुमरत सङ्कट निवारण ॥

१६

वीणा क्रम आदिनाथ बजायो सोतें
साधो आरानो जगतगुरु सुर नानाविध
विस्तारणको सकल गुणीयनके करन मोहनको ।
और जे बातें तन बीतत घन शिखर गान करे
सङ्ग सोहनको ॥

१७

मेरे नेन न माने हो लालके बेन सुन श्रवण भर ।
एसी कोज केती बार बार आय गई एसे दयाल
कबहुँ न भए जैसे अबके आए ढर ॥

१८

रसमसे आए वाके चिन्ह लिए मोहे
अरुण नेनन मधुरे बेनन और तुतरात ।
अरसात जम्भात एड़ात होजू तुम शिथिल गात
पग डगमगात ॥

१६

धरत धरणी तरुणी मन्द मन्द गौन चेन रैन
करन आई पिय अङ्ग सङ्ग ।
और नख शिख चिन्ह प्रगट देखियत है
बार बार हार मुक्तनसों उरझ रहे अधरन
रङ्ग फीको लागो बलछल अतिही उमङ्ग ॥

२०

वने आभरण और सोहत कण्ठमाल विराजत गरे ।
सीसफूल टेढ़ो और दुकूल नाकबेसर
या शोभा तियगुण कर आगे सरे ॥
तैसी अरुणसारी और अङ्गिया फुलेल भींजो
तामें राजत माथे टीको मुक्ता मांग लरे ।
यह छवि देख रीझे साहजहाँ पिय रीझके अङ्गो भरे ॥
निरत करत रीझ रङ्गभूमिते गहि बहियां
रङ्गमहल ले सिधारे ।
सखी सब रीझ मुसक्याय मुंह फेर रही आपही
हंसत गए रसनिध भरे ॥

२१

साह आलम लुत्फ कियो तोपर सदा ।
बेग उठ चल हिल मिलरी बानक जिन होय नजदा ॥
सबही अङ्गन तूतो भाई बेज हैं गुणरूप सदा ।
साहनसाह महम्मद दिगर गदा ॥

२२

एहों वारोरी हिरदे वार पर ।
झुक झुक मिलई निश श्यामही गई
ताहि काट बाट डारों उनके पाय तर ॥

२३

अनुक्रम विध देख चलरी आली नादसमुद्र
अपरंपार कर सङ्गीत गुरुर ।
समसुर को कर विचार जानियो कहाँधो कौन
खरज रिखभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत निषाध सुर ॥

क्रोध मनकर सप्तध्याय सीखरी स्वराध्याय
रागाध्याय प्रकीर्णाध्याय प्रबन्धाध्याय तालाध्याय
नृत्याध्याय मृदङ्गाध्याय वाद्याध्याय हियधर।
अतक खातक चिरान्तक नेम वृच्छ दुगन ठाह
ताननले शरीर वीण लय ताल भर॥

२४

महम्मदी गोस नसकलीन मेरी तुम मुशकल
करो आसान।
दुनों पीशाह सुरतरा मेरो कर पकरो उरभावन॥
महम्मद अली हसन हुसेनके लइयद मदत
करो जहांन।
समूहको देह अष्टसिद्ध नवनिद्ध राखो मान॥

२५

आयो हसन कायम मीर मयानो।
आए दल बादल सब घहराने माजे ढाल धुजा
फहरानो॥
जब कुतब दिमानो गेहकार वर विरधानो।
निशान वाले वन घन घहराने देश देश पर बन्धानो॥

२६

गगगरे गगरे निहगपपधधपपधनि निधनिनि
धमगमपगपपमगरेसा निगरेसानि धनि
धपमपधधनिमा रेगमधमगरेसा।
निनिधनिनिधगमधनिसाधनिसारे गगरेसानिध
गगगमधधसानिनिरेनिसारेगमपधनिसानिधपमगरेसा॥

२७

नित नबीय नाम निस्तारण तारण जगतउभारण
जगजहाज भुवसागर ह्लतें पारकरन।
गोस कुतबदीन औलीया अम्बिया शेख मसायक
सब पलक माझ तारण तरण॥

दूसरा अन्तरा।

उत्तम मुखते कमल कहत और अलह रसूल
लै लै अलेबर कीनो।
औलोया अम्बिया सेख मसायक पलक मौज
तारण तरनो॥

२८

एसे बहुत चले नए नए हुनर तिन छिन सीखत
रहत हो विद्याधर।
बैजू कहे बात जिय नाहीं समझत को धनवन्त
भयो धरन पर॥

२९

सोई सोई प्यारे पै जो तुम गुणकर रिझावत।
और तियन सब बैठीहैं देव काहूको काव करत
साँचो यहै गावत॥

टोड़ी—धीमा तिताला

देखोरी एक योगी यह भेष किए जपनेको
अष्टफण मुण्डमाला लिए।
जटाजूट गङ्गा जाके वरद वाहन और अम्बर
बाघम्बर त्रिशूल खपर डमरु लिए॥
वीण पिणाक गवरी अरधङ्ग गावत तान बजावत
टोड़ो अलाप किए।
तान तरङ्ग सेवक सेवा शङ्कर चन्द्रमा ललाट आड़ दिए।

देशी टोड़ी

श्रीगङ्गा पातकहरणी करणी मुक्त जननकी।
नारदयानी वैकुण्ठकी निशानी इच्छा पुजवनहार
मननकी॥
ग्रन्थन वरणी उत्तमजल तेरो भुव परसत गत
होत तननकी।
चन्द अस्तुति तेरी कहाँलो बखान करों दाता
याचक गुणीनकी॥

२

कहोजी तु कोनहो कहाँते आए कहाँ कित हो
जावोगे सवेरे।
हम तुमको पहचानत नाहीं न मेरे घर
आवत टेरे॥
लाल पाग पीताम्बर सोहत और वनमाल गरेरे।
तानसेनके प्रभु नेक जो ठाढ़े रहे सब सखियन
मिल हेरे॥

देसी टोड़ी—ताल सवारी

शिव महादेव त्रिशूल पिणाक धरे
जाके भभूत गिरिजा ताके मन भाई—
आआ आआ।
त्रिशूल अर्द्धङ्गीनार गङ्ग सीस देवरैया॥
खपूपर लिए वृषभवाहन किये डमडम डमरु बाजे
बाजे तान रैया।
तार प्रमाण शम्भू नाचे ताण्डव निरत करैया॥

२

अहोजू अनबोले रहिए कौनहु बोलके साँचे।
कौन कौन भाँतन मन मनावत हो याको एक
पांव हूँ नाचे॥
एसी तो बात उन्हीसों जाय करो जहाँ रैन
रहे रङ्ग राचे।
कैतोऊ करो तो कोऊ न पतियाय साहजहां पिय
नेहचे के जाचे॥

३

महम्मद मेरा यसधारे काम संवारे काज
संवारे जगतके।
औलिया अम्बिया और कुतब सब पायन लागे
तखतके॥

देसी—धीमा तिताला

आंखो मेरी जोग रूप किए जपनकों आंसु माला लिए।
वरुणीजटा किए अञ्जनकी सेली लिए निश दिन
रहत मोरे हिए॥

२

एरी हूं तो लेन आई लाल मया कर बुलाई।
होंजो मनावत तू नहीं मानत कौन बदी एती
निठुराई॥
मेरो कह्यो तू मानन करती तोहि लालनकी दुहाई।
उठ चल झिलमिल साहजहांपै वही तोहि सुखदाई।
तू अब लागि पियाने पठाई छूटे बार टूटे हार
सखीरी मुख पर आई पियराई॥

३

आज नयना रसही भरे मतवारे चलत दिगनै
धों कटाच्छ न भारे एसे अलस्त पिया प्यारे।
रूप चतुर मानो मुक्ता संवारे जौवन थिरमें
फिरत ढुरारे नेक छन ठहरारे जतन कर हारे॥
पानप सेत रङ्ग करारे अनुबेधे मन बेधत न्यारे।
यह छवि देख साहबहादुर रीझत थकित भए
जों ससि चकवारे॥

४

अति दुख पायो मेरी अखियन हो प्यारे
जो तुमारे दरस बिन।
और सब अङ्गनते बहुत पिरानी पीर
न सिरानी एक छिन॥
केते उपाय कर हारी उन विरह भई पिय तन।
साहजहां पिय रम रहे अनत पीत और सब सुख
पूजे धन आजको दिन॥

५

दिन दिन मन मेरो अकुलावत है माई।
सूनो भवन मोहे दूनो लागतहै विरहन
अति दुखदाई॥

६

भावत सोई जलालके मनमानी तिय।
और रसबस कर राखो तें साह अकबर पिय॥

७

कटतनरो ननदरो एदिन विकट नन्दनन्दन
मधुपुरीमें विरम रहे।
हँसन दसन सब नैना नींद गई मेरी अञ्जन मञ्जन
बिन चोहर गए चिकट॥

८

जावो पियके देखन को तू सखीरी गई निजधाम।
खेल रचायो अनत जायके बतियाँ करत है वाम॥

टोड़ी चौताल

देवनमें प्रथम ब्रह्म मासनमें प्रथम वैशाख

कार्त्तिक रितुनमें प्रथम वसन्त दिवसमें प्रथम
आदित सो कीजीए।
वेदमें प्रथम श्यामवेद पुराण प्रथम श्रीभागवत
शास्त्र प्रथम व्याकरण रागमें प्रथम भैरव
सो लिख लीजीए॥
सुर प्रथम खरज द्वीप प्रथम जम्बूद्वीप नक्षत्र
प्रथम अश्वनी रास प्रथम मेष कहि दीजीए।
फल प्रथम अरथ गुण प्रथम रजोगुण तत्व प्रथम
आकाश कहत कवि तानवरस सुधा प्रथम पीजीए॥

२

शब्द प्रथम ओङ्कार वर्ण प्रथम आकार
जाति प्रथम ब्राह्मण प्रणाम कर लीजीए।
देव प्रथम नारायण ज्ञानी प्रथम महादेव
क्षमा प्रथम धरणी तेज प्रथम भानु लिख लीजीए॥
नदी प्रथम गङ्गा पर्व्वत प्रथम सुमेर
साज प्रथम वीण भक्तन प्रथम नारद कहि दीजीए।
गीत प्रथम सङ्गीत नरमें प्रथम स्वायम्भुव मनु
राजन प्रथम राजाराम तानन प्रथम तानसेन
उनचास कोटि रस पीजीए॥

३

विद्यामें नाद विकट शास्त्रनमें न्याय विकट गढ़में
लंक विकट लोकमें विकट सुरलोक देव विकट
हर जान।
पशुनमें विकट सिंह मुनिनमे विकट दुरवासा
मणिनमें विकट कौस्तुभमणि पञ्चभूतमें
विकट अग्निमान॥
पक्षिनमें विकट गरुड़ उदधि विकट क्षारोदिक
अवतार विकट नरसिंह मीन विकट मकर गीत
विकट सङ्गीत प्रमाण।
कहत कवि तानवरस सुर विकट नाभि
गायन तान विकट तानसेन जाको सुयश बखान॥

४

वर्णमें पवित्र ब्राह्मण पशुन पवित्र गज
भोजन पवित्र घृतसार।
जलमें पवित्र गङ्गाजल देवनमें पवित्र विष्णु महेश
तृणमें पवित्र कुशतार॥
धातुमें पवित्र सोनो पत्रमें पवित्र तुलसीपत्र
पोहुप में पवित्र पारिजात पक्षिनमें पवित्र हंसप्यार।
कहे कवि तानवर तानन में पवित्र तानसेन
नाममें पवित्र हरिनाम उरधार॥

टोडी—झपताल

पार नहीं पाइए गुणसमुद्र अथाह कौन विध तरीए
कहा करिए कवन भांति जानिए।
मन ज्ञान नेत्रन असुज लागी सुर तान ताल
किस तरह घटमें आनिए॥
जब उठतहै ध्यान अति प्राण डरो जाय चरण धरो
धाय धाय कैसे गर ठानिए।
कहे गुरुज्ञान तानसेन सुरसुती ध्यान धर
अगस्तनी अचपानिए॥

२

धरणीधरण अधरणदाता विधाता विश्वभरण पोषण।
भागवन्त सोभाग तरण तारण भक्तजनको
सकल सुख करण मोखन॥
आदि अन्त तुही रोम रोम रम रह्यो सबमें
तुही चर अचर थावर जङ्गम तोखन।
तानसेन तेरी अस्तुत कैसे करो अलख निरञ्जन
निराकार ध्यान रह्यो तेरो दुरनह बोलन॥

३

ज्ञानवन्तको रस अगम बुधदेनी तू
सबही अङ्गन मानो हंसवाहनी गिरा महावाक्यवाणी।
जोई तोई ध्यावै मनइच्छा फल पावै साधत
कण्ठ प्राणी करत बखानी॥
तोसी तुही और नाहीं विद्यादानी जे साधे आराधे
त्रिहूंलोक जगजानी।
तानसेनको दीजे रागरङ्ग वरवाणी जोलो
गङ्गा धरन ध्रुव पवन पानी॥

यह लराई लरोरे गुणी ज्ञानी सूर समसेर
मजलिस मैदान ।
अलाप चारो तुरङ्ग चढ़के धुरपद नंगी तरवार
तारसो परिकर रसना कटारी काढ़त जब मुख म्यान ॥
छहो राग उमराव नाद गढ़को परीक्षक छत्तीस
भार्य्या तुपक भर धरान ।
धाक बाण धोवा माढा जम्बुसुर दारु तानसेन
यह प्रमाण ॥

५

ज्ञान मदमाते जे नर निश दिना तिनको
कबहूं न होत खुमारी ।
सतके प्याला भर भर पीवत रसना सवाद लेत
ध्यान धरत जाको लागी रहत जिय तारी ॥
मनकर सायन तन करो भाटो पाँचो आत्मा
अग्नि जारी ।
हरिदास डागुरके प्रभु ध्यान धरतही मानो खात
बुन्दय डारी ॥

६

करत तू मदत मरदान औलिया जो कोऊ कैसे
रहे सनमुख अरत ।
एसो धूम न दल मलन मारके विदुराय पवन परताप
कार करके तू मदत ॥

टौड़ी—सुरफाकता

तेरे मनमें केतो गुणरे जेतो होय तेतो प्रकाश कररे ।
काहूं तोसे बार बार मूरख मनरे जोई सुर आवे
सोई ररे ॥
गन्धारको धैवत पञ्चमको ऋषभ खरजको भररे ।
काहे बैजूबावरे सुनोहो गोपालनायक नादविद्या
अथाह काहूसों न अररे ॥

२

दुखनिवारण संसारतारण राखले अपने जनको
ए सुख कारण ए नारायण ।
कंसासुरमारण दैत्यविनुधारण भुवभारउतारण
तिहूंलोक मध राज भरण ॥
अवगत गत तेरी कोऊ न पावे पार गर्व्वहरण
अचलस्वामि पतिततारण ।
एतो बार नजर डारत निवाजत लागे बार
भगवान जनको अपने करन सम्वारण ॥

३

शुभदिन शुभ महूरत महाराजा रामचन्द्रके
कर बांधिए राखो ।
अनेक गुणी गावे पाट पटंवर लाखो ॥
एसो गरीबनिवाज राखत भूप छिनक में कीरत
तिहूंलोकमें जाको ।
षट्दरशन निवास किए सिंहनन्दन चिर चिर जियो
महाराज विष्णुसिंह देत एरापत एराको ॥

शम्भूहररे गङ्गाधररे कामितजन मन चिन्तामणि
कल्पवृक्ष कामधेनु काम सम्पूरण कररे ।
कर त्रिशूल त्रिलोचनरे माल मतिभङ्ग व्याल
वाघंवर अम्बररे ॥
नीलकण्ठ भस्मभूषण फणि गुणी गले मुण्डमाल
मण्डित खट्टाङ्ग खप्पररे ॥
चन्द्रकिरण भुव कुण्डल मण्डित श्रवण अखण्ड
उर पन्नगरे ।
ताण्डव शिवराजत मुखमण्डन भण्डभण्ड भण्डासुर
तान तरङ्गन रे ॥

टौड़ी—झपताल

प्रवलदल भञ्जन विकटग्रहगञ्जन कौन जोधा
संसार होई ।
अमार मार किए अडंड डंडनजे निपट गढ़
ढहन धाक सोई ॥
धरन धरकत धकत धरक गई छाती भुवपाल
द्रुगपाल तिनको चढ़ी रहत नित ओई ।

शाह अकबर डरन तुव दरन थरथर कांपत
रहत अमर हत तुव सम न धीर होई ॥

२

चरण धर धर मेरे गृह लालन भय खाए आए मेरे।
तनके दुख सब दूर गए सुख आए मेरे मेरे ॥
मृदङ्ग बजावहु मङ्गल गावहु भागनहो पाए
कर रहो प्रथमहो जतन बहुतेरे।
शाह औरङ्गजेब प्रीतम अबमें धन जनम कर मानत
जब आँखन भर हेरे ॥

३

माई आज बनो काहा हजला।
देख सूरत मदन लोभाया जोर सुहाया कजला ॥
जदी सारी तन सोहे मुख देखे ससि लजला।
केहरी रङ्ग कुरङ्ग कोमल भई सबननि बन तजला ॥

४

मनही मन प्रेम बढ़ावे आँखनमें लिपटावे काहूको
न जतावे मन्द मन्द मुसुक्यावे एसी हों लखि आई।
भाँति भाँतिके भाव बतावे हितूवन रिझावे हिय में
आनन्द बरसावे अधिक वाको सोभा सोहाई ॥
गुप्त चाहको चोपसों रोम रोम अति काम
जगावे अति ललचावे यह देख पीतको अधिकाई।
एते गुणनपे लालके प्रभु कैसे धीरज धरो
साँची कहत हों तेरी दुहाई ॥

बड़े साहबज़ादा

टोड़ी—चौताल

अरे मन याद अल्लाकी करतू इत बिन
काहे को भटकत है।
अव्वल आखिर जाहर बात न होई है दुबिधामें
काहेको अटकतहै ॥
आपको देखतू आपको प्यारे थोथे धानतू
काहे को भटकतहै।
आसक प्रभु सब सांसको साँसो कोई दिनमें
यहभी सटकतहै ॥

टोड़ी—तिताला

लै ले नाम लैलो काम जनु लैले हुवा था।
तालव मतलूव तालव होय तो प्रेम का जूआ ॥
ममपपधधनिसानिसागरेसानिनिधधपपमम
गगरेसासारेगमपधनिसानिधपमगरेसा ॥

२

परब्रह्म परमेश्वरकी सुरतियां जिय राखरे मन।
पतितपावन दीनबन्धु गुसाँई साँई आपस बनमें
रहो समाई तनमन ॥

३

तननदिरनादीम् तानुम् जानु मनजानान
मनतोम कुन् बेवफाई।
यलालुम् यललुँ यललललुम् यलाल्ली याले यललल
लुम् तदेवा दिम् तान् दिरनादिम् तनादिर नुम् ॥

टोड़ी—झपताला

सर्व्वमणि ब्रह्म ताको रच्यो संसार
पुरुषमणि पुरुषोत्तम अवतार।
वर्णमणि ब्राह्मण नाममणि रामनाम
पुराण मणि भागवत ज्ञान मणि कर विचार ॥
भक्तमणि प्रह्लाद पंछिनमणि गरुड़
बनन मणि वृन्दावन रसिकमणि मुरारि।
तानन मणि प्रभु तानसेन ज्ञानमणि महादेव
प्रेममणि नारद बालकमणि सनतकुमार ॥

टोड़ी गुर्जरी—चौताल

आजको बानक मोहन तेरो प्यारो
बिहारो मोपै बरणी न जाय।
इनको श्यामता उनको गौरता जैसे
सेत बन रहो मानो जो भुयङ्ग धाय ॥
तिहारो पीताम्बर उनको नील दुकूल
ज्यों शशिकुञ्जन घन बीजलि चमकाय।
हरिदासके स्वामी श्यामा कुञ्जविहारी को शोभा
निरखत जो मन जोरे कोटि कवि पार न पाय ॥

गिरिधर गदाधर चक्रधर गोपाल माधव गरुड़पति
गरुड़गामी मुकुन्द माखनहारी तीया।
ऐऐ याते ऐऐ यातीया तीय तीय तीया तीया इया ॥
जगउद्धारण जानकीरमण कृष्णकेशीमथन
कालीनाथन विश्वपाय भक्तान सुखकारी जीया।
पममगममगमामपधमाए नाम गीतको गाइए
सोई तो मारहै संसार सागर भनत गोपाल नाम
कृपा मोख तीया ॥

देश टौड़ी

आई नाररी तू कौनके रस बस सिमकर।
और दिननमें एकही बारत् आवत जातही
पनिया भरनको आज कई बेर आई गई एसे
कहा भएहै नन्दके घर ॥
जो तू सास ननदकी कान न करत आप न कलहकर।
हरिदास डागर ताहि बरजत तू अब भई
है अति निडर ॥

२

घरी घरी तू काहे मेरे आवत माई।
इत उतकी बातैं आन आन मोसों कहत बनाई ॥
तेरे हित चितकी हों नीके जानत पै मानत नाहीं
न कछु लाग लगाई।
साह बहादुरको हौंहो करूं टहल जे उन चाही
सोई लगी में लगाई ॥

देश टौड़ी—सुरफाकता

आज बनत देखी लाली की ललना
कुचकी कसन पर झूम रही रूम रेख।
जदी पाटकी अङ्गिया तन कसी फब रही
चन्द्रवदन अनेक प्रफुलित अम्बुज मुख लेख ॥

२

एसे तुम भरे खेल ख्याल काहूसों निठुराई
काहूसों होत कृपाल।
काहू आय देखाय देत मोतनके भए माल
मन्दिर इतनेही आनन्द रस भयो प्रातकाल ॥
अब मिल गुण मन मानतहौं पाई
धरहु आउ पहुँचाहु चलो तुम गोपाल।
मनमोहन प्यारे मोपै आवत दीन पर
कहावत हो प्रतिपाल ॥

देश टौड़ी—धीमा तिताला

मोसें वैर कीनो मेरी अँखिया नहीं एक
छिन धीरजहू न लीनी।
बहुत दिननकी बिछुरे मिलो पल लाग छतीयाँ
उमग आई असुअन न देखन दीनी ॥

आचारी गीताङ्ग भाषा—तिताला

छोली लोचन हुवैं बले चोली बाघम्बर भए है थोली।
भखे भाङ्ग गोली भूतिसुरपै डोली ॥
नागहार सिठोली सिंहासन मुण्डमालगले रोली
रहे जोत सचोली।
झकवे बिलकन सिंघा रोली नचव
शिव भोली चहुँ चक बंबंबंबोली ॥

टौड़ी—होली

जिना नाल लगन लगी वे सोणा
उसनाल इस्कादा वेडा भरणा।
यार गएनु राझण कहे देवार गएनु हीरा सदारङ्ग
विच दोनो नाहो केणी मझ धाए बीचकी रैणा ॥

टौड़ी—सुरफाकता

पंछिनमणि गरुड़ गजनमणि एरावत
दिननमणि दिवाकर।
गीतनमणि सङ्गीत बनन मणि वृन्दावन
तरुनमणि कल्पतरु ॥
नरनमणि नारायण तारनमणि ध्रुव
तीरथमणि गङ्गा देवनमणि शंकर।
नारिनमणि उरवसी पुष्पनमणि कमल
दास बैजू मणि मुख मुरलीधर ॥

तेरे मनमें केतो गुणरे जेतो होय ते तो
प्रकाश कररे।
हम जाने तुम सुरे पूरे सोई सुर आवे
सोई भररे॥
पायन पाहन पिघलावे हिरण बुलावे जों बरसे
मेह सरसुती वररे।
कहे बैजूबावरे सुनोहो गोपालनायक
मनन कररे धाय गुणी जनके पायन पररे॥

२

तार सुरके भेद गुणी जनको सङ्गति
रहै तो कछु पावे।
सीखत सुनत रहे सदाही ढरनि मुरनि मुद्रा
प्रमाण सो आवे॥
आपही गावे आपही बजावे
तान गीतनके व्यौरे समझावें।
बैजूके प्रभु रस बस करलीने तबही
रीझ रिझावें॥

बहादुरी टोड़ी

कान्हा गाय काहे न लेहो घेर बन तट
भई विरह वैराग।
एसो विरहोग्वाल कबके कहियत उझकत
थिर न रहत घर घर नैन सैन कछु लाग॥

टोड़ी—तिताला

हमारे ललाके सुरङ्ग खिलोना खेलत कृष्ण कन्हैया।
अगर चन्दनको पलनो बनो है डोरा लाल जवाहर जरैया॥
भमरी भोंरा चङ्गा बङ्गा हंस चकोर मोर चिरैया।
तानसेन प्रभु यशमत झुलावे दोउ कर लेत बलैया॥

हमारे बबाके दामोदर छैया ताकी हों लेहों बलैया।
जीवो जागो कोटि वरष लों जोलों ध्रुव
धरण तरण रवि ससि तरैया॥

टोड़ी—झपताल

देवी दया कर दयानी जो तुम ध्यावे
तिन्हे देत सरसमत तो होय परम ज्ञानी।
नग्र कोटरानी ज्वाला भवानी जेतुम
सम सर कोकर सके भवानी॥

२

अति गर्जत नित ते कबहु न बरसत बखिन भाज
जात मखतें यहे सला मुनिनकी कोटि पञ्चन गुनी।
जेजे जान तेते क्या जान जिन जिन नैनन देखो
दिन दिनकी जान भलावे काहू ने काहूके
हेटे गुण मन गणी॥

३

बाघम्बर अम्बर त्रिशूल देवी दयानिधि
आनन्दकरनी।
शेष महेश तेरा नाम जपतहै सन्तनको
दयाल भोजल तरणी॥

टोड़ी—ताल रूपक

इन मालनियोंने झिलमिलके
डोर लायोरी मेरो बारो ढिटोना।
हार छबरीया और फूलनाई चुन चुन बेला
चमेली और मरवादौना॥

२

कलावत बहियाँ और सोहतरी
नागर बनिक बनो पिय ढिग तें।
बाट चलत आली अचरा उघर जात
मनो शशि निकस्योरी घन तें॥

३

लाड़ले बनरा बनरारे चोंक मेहदी
मुझे लावन देरे।
आजकी रैन सोहावनी लागत तरुणी
अङ्गरीयनके रस लेरे॥

टोड़ी—तिताला

बाजे नीकी घंघरीयाँ ठुमकत चाल सहेली।

अनुपम चाल चलत मतङ्ग गत मानों पग
परत पवेली ॥
ज्यों जलमें प्रतिविम्ब देखियत चन्द्रकिरण
तैसी जेहर वेली ।
ते रस बस कियो तानसेन प्रभु खानखाना
पिय पाक अकेली ॥

२

अब कैसे जइएरी माई पनीया भरन
बिच बाट ठाड़ो ग्वाल लिए गैयाँ ।
कन्हैया ना काहूकी कान करत न डरत
दौरिहो आवत उतारत मथनीयाँ ॥

३

जैसो जीत दच्छन सुभट पच्छिम जीत
उत्तर पूरब सब लच्छन बखतवर ।
अगन ईशान वायव नैरत बाजे बजाए निशान
फिरी दुहाई शाहनशाह अकबर वर ॥

टौड़ी—ताल रुपक

फली फूलन अङ्गन माहीं मिलन बनै
जो लाल सों माई ।
सगुन होत आली अचरा फहरात
और फरकत आंख बांई ॥

२

मारगके वागे रातके जागे कूटे बन्दन
अरसात जम्भात बहीयां गहे आगे आवत ।
सकुचन आवत न कुयो अचरा मोहे भकहो
में आन भकावत ॥

टौड़ी—आड़ा चौताला

एसे आज तुमहो कहा अनमने भए हो ।
एसी मोसों कहा चूक परी लालन तुम नए ठए हो ॥

२

मेरी विथा सुन सखीरी मोसों अवध कहि भेजी
आयवेकी अजहूं न आए लाल दरद यह कासे कहों ।
दिनते रैन भई रैन ते दिनभयो देखत पेड़ो अति सूनो
यह उन बिन दई अब अदारङ्ग बिन कैसे रहों ॥

तू जगनिस्तारण आज तो जैसे कृपाकरि
तुम आए अब योही करिए ताही रीत ।
अन्तरजामी अदारङ्गसो सदा राखियो अपनी प्रीत ॥

४

चुलीया में मेरा गात भिरे ए पीतम करन फेरा ।
हों नित नवलासी रही जोरकसी रहै चीरा मेरा ॥

टौड़ी—झपताल

लड़े हसन हुसेन इमाम सैयद
सुभट धूम मची भई जङ्ग ताती ।
खेत विरछाइयो सिंहके छावड़े भले चले
खड़ग व गिरे हाथी ॥
करवला भूमि पर महाभारत भयो
हुए सैयद जब नवी नाती ।
आई जब हूर नूरको तखत ले साहपर
भीस्त कुरवान जाती ।
करे मातम चोदातवक मंजलूमके नालत
कुजीद सदा चलि जाती ॥

२

हों सांचो कहत हों अरे मन यह वो खलक
जिन महम्मदको जो गहो डगर ।
दिनके त्रास इन निमाज करि हँस नैनके सङ्ग धनके
कारण को फारके हो रहै आधीन एसे निडर ॥

टौड़ी—तिताला

नसागगरेमपधपपपममममपनि
धधपधमगगरेरेमपधधमगरे
सानिधपमपधनिसारेगसाधनिरेसा ।
मपपधधनिनिधपधममपधसारे
सानिधपमगरेमपधनिधपपमगरेसा ॥

टौड़ी—रुपक

परब्रह्म परमेश्वर की सुरतीयां जिय राखरे मनमेरे ।
पतितपावन दीनवन्धु गुसांई आपस वनमें
रम रहो रसना रटो नित रोम रोम में रमरहो तेरे ॥

टौड़ी—तिताला

देखे दरबार यह मौन-दीन ख्वाजा
इच्छा पाइए लाइए लीजै नाम मदार मदार।
मेरे तो यह सुमरण नित तुमही हो
आधार करो निस्तार॥

२

शाह अकबरके दुरजन दूर करो मौन-दीन ख्वाजा।
सप्तद्वीप और अष्टदिशा पर हुकम होय
सब मुलक खलक पर और जाय तन मन ते
दुख दारिद्र भाजा॥

३

जासो बनआई पिय पीतकी रीत तासो
कैसे मान ठानिए।
एतो दुराव क्यों करत प्यारी एबातें
तो सब नीके जानिए॥

टौड़ी—चौताल

जोहै पिता रब रहीम करम करो अपनी खलक पर।
एका कीनो औलिया अम्बिया एक कीनो
उमराय तिनको सुख दीनो घरघर॥

२

सुर मुनिगण अस्तुति करतहै तेरो महिमा को जाने।
अङ्ग अङ्गकी परछांई को गुनी
सोधत है तामें तू वैराग माने॥

टौड़ी—रूपक

मिलन बनोरे लालन सो फूलो फुलन अङ्गन माई।
सगुन होत और अचरा फहरात
और फरकत आंख बांई॥

२

इन मालनोयोंने हिलमिल कर डोर
लायोरी मेरे वारो ढिटोना।
हाथ छवरीया फूलन लाई चुन चुन
वेला चमेली और मरुवादोना॥

टौड़ी—झपताल

वाक्वाणी वराही वैष्णवी ब्राह्मी भैरवी दयाली
दयाकर दीजै।
महेश्वरी मैनात्मजा सुरेश्वरी पापनाशिनी
महामाया मृड़ानी तानसेन सेवक पर सुदृष्ट कीजै॥

२

हलहली धरणी कमठ पीठ कल मल गई
गरद उड़ गगन रविते अलोप्यो।
आयोरे शाह गभंगञ्जन अकबर मेरे जान
शाह जलालदीन शाहनशाह दिलीनरेश कोप्यो॥

टौड़ी—रूपक

मदार नूरी नूर बरसावे खलक पर।
अपने जनके तन मन वैनन आनन सुर रागरङ्ग
रस सरस कर॥
जोई गति आवै मन इच्छा फल पावैं धरम धीर
सेति करम रति माथे पर॥

२

मारगके वागे रातके जागे छूटे बंदन
अरसात जम्भान वही आँखन आगे आवत।
सकुकाच न आवत न कुछो छाड़ो अचरा मोपै
झकही में आन झकावत॥

टौड़ी—तिताला

ईद मुबारक होवै जुग जुग नित नित
तुमको महरबान।
सकल विद्या-गुण-निधान अतिही आनन्दकारो देत
गुणीनको आदर मान॥
युग युग जीवो कोटि वरष लों देवो करो नित दान।
तानसेन कहे सुनो शाह अकबर चहुँ चक राज
करो मरदन महा मरदान॥

टौड़ी—रूपक

रवि तू जगमगात ज्योतीस्वरूप ब्रह्माण्ड मई।
निरञ्जन निराकार सहस्रकिरण ब्रह्म तुई॥

टोंड़ी—तिताला

नीके नीके तान सुनाय दरसन देखत मन ललचाय।
प्रथम कपट मिटाय बुधसागर काव्य रचाय
अनेक भाँति गाय बजाय॥

टोंडी—पटताल

कहा कहो कंधौं रहे अब कौन महल सुख कौने
जलाल महम्मद लाल प्यारे मृगनैन।
द्रगन जलभरे सूरत जगी पगी तुम बोलत मलीन बैन॥

२

तूही कहत अब जाय कहां तोसो भूलोकमें
तूही जाने।
राग रङ्ग भले बूझत शुभ अचर तान तार सकल
कलागुण-निधाने॥

टोंड़ी—ताल धमार

मोहन मैंवारी वार डारी नार जिन करो
कपटकी बातें।
रहत ज्ञान ध्यान तिहारे नामको सुमरण है
दिनरातें॥
घड़ी पल छिन रह्यो न जात मोपै करत रहत
तेरी बातें।
तानसेन प्रभु कृपा करो मोपै नेक चितवो चहातें॥

२

लङ्गर बटपार ढीट बनवारी वाकी लङ्गराई
नहीं जाय निलज अधिकाई भयोहै अनेरो।
हों लाजन कछू कहि न सकतहूं वे जो आय देत
गार नार मग रोकत रहत सङ्ग ग्वालबाल लिए
आय गहत पट मेरो॥

३

सलोनी मूरत श्याम लुभान।
आवोरी सखी मिल होरी खेलन को या
छवको मुखध्यान॥
कोउ नाचत सांची गत ले कोउ गावत
कोउ डफ मृदङ्ग उघटान।
कोउ तान तरङ्ग रङ्ग लिए बरषत
करत परस्पर गान॥

४

गावै दे दे तारी एसो बौरानी का नारी।
होरीके मिस टोड़ी गावत उपज करत न्यारी न्यारी॥

५

लाल मदमाते वन वन खेलत फाग।
छिप छिप लुक लुक देतही तारी गावत टोड़ी राग॥
बाजत मृदङ्ग चङ्ग सङ्गतसोँ ठाय भेदको लाग।
सदारङ्ग रिझवार सुनतही होरी लग्यो वारन पाग॥

६

अबके होरीमें प्यारो लरवे को यह समान तैने कीने।
ढफ ढाल नोलासो खड़्ग गहे सौतिनके गुमान
सुभट मारदीने॥
मृदङ्ग तोप गेंदा गुलाल धूम ताको अवाज
ते गरूड़ गढ़ छीने।
महम्मद साहके सुहाग बढ़ो याते अनहितुअनके
झुण्ड मुख मोर फेर दीने॥

७

देखोरी यह आवतहै यह नगरमें
होरी खेलन श्याम सलोना।
छिनमें मन वस करिहै सबनको वाकी
मुरली मेंहै कछु टोना॥
मोर मुकुट कुण्डलकी छवि अरुणनयन
अञ्जन धरे कोना।
रूप देख मन होत वैरागी एसो दरसे
यह नन्दको ढिटोना॥

८

अब कोकिल धूम मचाई अब गोकुल धूम मचाई री।
पिय विदेश मोहे पाई अकेली विरहन जान सताईरी॥
अबके कही न जात जैसी उन कीनी बौरी
करत चढ़ाईरी।
कुहुक कुहुक डरपावत अतही हिय में हूक बढ़ाईरी॥

यह सौत मोरे पाछे परी है कहा करूं हों माईरी।
बोल बोल वाने जब लागत तन मन बेंधत आईरी ॥
बीते वसन्त आयोहै फागुन देत काम अधिकाईरी।
यह वैरन मोरे पाछे लगोहै सदारङ्ग होहु सहाईरी ॥

टोड़ी—धीमा तिताला

अधर धरे वन बाँसुरी बजावे
कान्हमुकुट सीस कटि पीताम्बर सोहै।
साँवरे अङ्ग ढोटा नीको तान
सुनाय सबहीके मन मोहे ॥

टोड़ी—तिताला

कान्हन कर मोसे रारे अबही जायकरों
पुकार लङ्गर झगर दीनी गगरी मोरी डार।
अचरा गहत जात यशोदाजी से
कहोंगी अपने ढोट चपलको सम्भार ॥

२

यह वैरागी रूप धरे भभूत रमाए समाए मेरे मन।
सोवत उठत नैन मनमें ज्ञान ध्यान धर सोई कर सुमरण॥

३

चिकनीया मोरा सङ्ग न छाड़ई
अरे वलम कहा करूं कित जाऊं।
वाट घाट मोहें रोके टोके बरजो नमाने ढोट लङ्गरवा
सुनले वाको सदारङ्गीले महम्मदसा नाऊं ॥

४

उततें कोऊ नहीं आतरी जासे पूछू बातरी।
उन बिन कछु न सोहावे न भांवे सदारङ्ग पिय
कोउ आन मिलावे तलफ तलफ जिय जातरी ॥

५

किरपा करोरे मोपर गुसैंया मनवाञ्छित फल पाऊं।
होंतो सेवक तिहारे दरबारको
याचक मन विच क्रम कर तुमहीको गाऊं ॥

६

प्यारे तुमारी तो रसना पानसी पलटत नित।
पहलेतो सदारङ्ग दिखाय रिझाय लेतहो
पाछे बदलत कित ॥

ताण्डव नाच नचाइरे लैलै उरपति रप लाग डाट।
ताल भेद परण बजावत श्रवण सुहावत
देशी देखावत सदारङ्ग को रिझावत
इन प्रकार निरत गत सांचे यह जानत महेश ॥

८

मोहन सो मन लागीरो।
वंशी धुन सुन भई दिवानो सुध न रहो तनकी,
घरी घरी पल पल छिन छिन सजनो काल न परत
निशदिन हरि बिन मोहि, सावल सो चित पागोरी ॥

९

रुनझुन रुनझुन पैंजनीया बाजत लालनकी
रीझत पशुमत गोद उठावत।
खैलत छटकत मुख देखत हँस दतुली देखावत
झुक चुम्वत मुख कर तें पकरत निरखत नैना
इत उत मटकत ॥
छोड़त धावत और मोहे टेरत जो न गई ढिग
द्रग भरि आवत निकट न लेत चरण कर पटकत।
प्रेमरङ्ग माता सुत विचरत सुर नर मुनि
देख समाज ब्रह्म शिशु अगम निगम जिन
कारण भटकत ॥

१०

मोरे भयोहै परमानन्दरी नन्दनन्दन
पिय आए मोरे घरवा।
तन मन धन नोछावर करहुं परहुं पइयाँ लेहो
वलैया सुर तन सइयाँ आए सजनी मोरे
भइल अति आनन्दरी ॥

११

सुनहु सखी मोहनकी रीत निशदिन और न के
डोलत फिरत घर आय करत मोसो हठ पीत।
छल बल चपल चञ्चल अति आय गई करत
फिरत आली जो मन भाई आई ब्रजकी
गली अब नाहींजाऊं में नैन की सैन चलावत चित ॥

१२

गोविन्द क्योनहीं गावेरे समझ मन मेरे।
सगे न कोऊ संवारत हितू सब जग आन मिले बहुतेरे॥
जाते आन मिले जित तित ते पंछी बसत बसेरे।
होत प्रात उड़जात जहाँ तहाँ कोउ काहुन सङ्ग हेरे॥
भूलो मत व्योहार जगतके आन मोह मद घेरे।
राधावर बलिहार सुमिर पद तू चित चेत सवेरे॥

१३

मन मोहन आवन सुनके मेरे भयोहै परमानन्दरी।
पूजी मन इच्छा मेरे जियकी आए गोकुल-चन्दरी॥
धन धन प्रभुको मात यशोदा धन धन वसुदेव
देवकी जिन जायो गोकुल-चन्दरी।
दास जान कर किरपा कीनी दूर किए दुख द्वन्दरी॥
अपने जनको परन जो राखो एसे हरि गोविन्दरी।
करुणाकर करुणामय स्वामी काट दिए सब फन्दरी।
विष्णुदास प्रभु पतितउद्धारण नाम पायो
किरपासिन्धरी॥

१४

मन्दिलरा मोरा बाजन लागोलो।
आज मोरे घर आनन्द वधाई जिय उमग मन
मन हुलसाईलो॥
श्यामसुन्दर रङ्गमूरत भाईलो सगरी सखी मिल
मङ्गल गाइलो।
धिक धिलाङ्ग २ धुम किट बाजत
मृदङ्ग निरत करो२ तररररररतार बजावे थेइया३॥

१५

तनदिर तनदिर तदीयनरे नागड़धीना धागड़धीना
धाकड़ तकताकड़ तक्धिटतिट तिटकिट तकड़
तकताधा।
तकट धकट धारीतकीण तकीणता
ताणा ताण प्राण प्रकट धकटधा॥

१६

जीवेजी म्हारा लाड़ला जुग जुग
नित नित तुम जीवो करो।
रवि ससिलो चतुर मङ्गल सुघर सङ्गत सो
सदा रङ्ग करो॥

१७

तिलिलानातकदीमदीमतकदीमदीमद्रद्रदीम
दीमतुमतननननननविगनगनगनगनगन
गनगनगतननतननतिग्धेतिग्धे
तिलेलाणातकदीमदीमदीमदीम
नाद्रद्रतिलाणाधितिलाणाआंनिलेलें
लैलाणातिलेलेंलेलेंलेलाणानाद्रद्रतुंद्रद्र
तुमतननननननारेनारेनारे॥

१८

माई मोहे लाज आवे कछू न भावेरी
आली कह न सकत हों मनको विथा।
निश दिन कोलौं मन समझाऊं बहलाऊं
आपन समझन को यो कछूं अब जोथा सोथा॥

१९

झपक बुढ़ाया आइला जोवनवा चलला रस।
दौरीयो नगरके लोगवा यहतो चोर चला घर मूस॥

२०

मलीयारे तोरी बारी फुल रही महकाय।
अबतो मो मनही लालते यों ठहरी कब
मिलेंगे सदारङ्गीले महम्मद शाय॥

२१

वीणा बजावे माईरी गावें नीको तान नएरी
माई यह बाबू का छोहरा।
मद पी भए मद माते लागत है हांसी
औरके करसे लै छीन बजावे॥

२२

राज करो या नगरी में जामे बातनहू के
चबाव चलतहै।
और जो धन्धा छाड़ लोगन को हमरे औगुण
कोही खोज रहतहै॥

२३

जोवनारे ललैया को अति धूमक धाम ।
.वरज्यो न माने काहूको ए चपल वाम जैसे घाम ॥

२४

एमाई जवते मनमोहन देखिला
प्यारा तवतें कछून सुहाय ।
उनके देखे अनदेखे जियामें जोजो आवतहै
सो एकहू कही न जाय ॥

२५

थेतो म्हारे डेरे आइयोजी भीणामारू रसोया
राजकुमार थेतो म्हाणे घणो प्यारो लागो राज ।
हाथ जोर अरज करांसां अपनी करपा कीज्ये
सायबां सेजड़ोया छत माणि मैतो वारने जावाँ ॥

२६

कोणोने विरमायो म्हारो राज,
कोणाने विरमायो हैजो को० ।
हैजो म्हारो सगो ननदलरो वीर म्हारो राज ॥

२७

जोगीवे रावला मंनू भाँवदा ।
इस योगी दोमें वन्दिनो थीवो आवे वास फुलादा ॥

२८

मैतो जाण्यो देनाल करार की तोही कुंडनी
ओलंभे मैंनू देदा वे खलक ।
सुणीयो वेलोका वारो सुणायो वेदे शान्तपदी
सिकदीनु हो यानी कल कहो यानी भलक ॥

२९

मैड़ो आज जीदो वेमीयाँ कोई नहो सुणदा
जिथ वलजाय पुकारा मियां ।
महम्मद शाह सदा रङ्ग दीतु साथाँई कहाणी ए
पै दादनी देदानी हूं कारा मियां ॥

३०

कमली होई ढोला तैंडे नाल मीयाँ वो ।
हाल दिलांदा किसनु आखा महरम नहीं
साड़ा कोई ॥

३१

राजा तेरी मालनीया हार सुधार गन्ध लाई ।
वनरा वनरी कायम दायम नर नारिन मङ्गल गाई ॥

३२

लोक लाज मोहि आवे मोरा जीय चाहे तोरे
ढिगवा बैठ रहों ।
घरी घरी पल पल छिन छिन मोको विरह सतावे
कहा करूं किधर जाऊं वे दुख अतिही सतावे ॥

३३

आजरे महम्मद सा घर अनन्द वधावा
ए मा पूजवल मनके काज ।
कर मन भर पाइला सजनो वनरा वन आइला
भइला सदा रङ्गीलरा मोरा राज ॥

३४

सोणा तुसी नाल असी दिल चावदा हाँवे सोहणा
साँवला मोहणा वंशीवाले मैड़े यार एहाके हाजा
दुड़ाकी तावे मैड़ड़ा प्यारी याहुणको तकसोर
कीती तिम दे कारण साड़ेथा क्योंनही आँवदा ।
कलडा भलडा वांकड़ा तिखड़ा असी तैंड़े कदड़े
जांदीया घोलीयां घोलीयांरे दड़ीयां मैंनू यादड़ीयां
बिन वेखे जीन्द नित तरस दड़ीया वत्तड़ीयाँ
कित्तड़ीया बिनदीठे कल न पड़े दड़ोया नीको
तान गाँवदा वजाँवदा भावदा मन पर चोवदा
गवरू छैल क्यों तरसाँवदा ॥ सो०तं ॥

३५

अला जाने अला जाने नवो अलीको नूर भर
रहो जगतमें हसन हुसेन चैन जीए ।
जेहराके फरजन्द नवीके जिगर गोसे अली
कासिम हो जकोसर के दोउ जाम हम पीए ॥

३६

दीम उद तनन तदरे दिर नादीम उदतनन
धिधीनाधाकिट तकधुम कीटतक् धिलाङ्ग
किड़नक तिरकिड किड़नक धगधेड़नक ।

तधिड़ान् तधिड़ान् धड़ां न धिड़नकतिड़किड़्
नग्दिग् धिड़नक्तिधड़ांनतक्धादीं ॥

३७

तिलीलाणा तक्दीम दीमतकदीम
दीम्तक्दीम दीमदीम तननन्न ।
थिगदिग दिगदिग तननन्न तननन्न
तिगधेग धेग तिलीलाणा तकदीम दीमदीमदीम् ॥
नाद्रदृतिलाणा तिललाणा आआले लेलेलातं
लेले लाणातन १४ धिलां ३ धाति ॥

३८

मोर पियाको बोलाय लावोरी माय जो कोउ मिलो सो
मिलो आप मद्दो वहोर आवननी आवेंगो
मोंसो हो रिसन आइलो लोगवा ले चलई
डोलोया फदाय ।
तुम सन मोरी लागलो पीत
मीत सुरजनवा केंसेक दुरत दुराय ॥

३९

अरे बाबू मया कीजिए फकीर को दरसन
दीजि भिक्कनारे ।
चित लायके करम धरम को दान मान
सुन एमाटी के पूतरारे ॥

४०

गरजके सबजीव न गरजी कहुँ देखन पायो भालो ।
जोलों गरज तोलों ताहि हित चित नित गरज
निकासी जियतं डालो ॥

४१

दिननकी थोरी भोरी आईरे अपने
अचरवनि संभार लेत ।
एसो अलबेली अकेलो काहुको न माने
उत्तर काहु न देत ॥

४२

बरजाइए लोगवा मा ए मिलन न देई पियरवा
कहु कौन भाँत पिवाउ मधवा भर भर सरवा ।
सदारङ्ग विन जीव डरे छतीयाँ भरे
कुमलावन लागे हरवा ॥

४३

यललो यला यला ललले यलायल्लायललले ।
जल्वन मुदी वामा वुन्दो गोयान वुन्दो कुजाई
जाफर पोर सोई मन टेरे रे विदेशीया
वहोरो फिर मिलले ॥

४४

जासन प्रीत लगी मईको ए मा वहीके
विछुरत मोर मन दुखवा होय ।
ढिग सन वाट रेन टारे पल पल छिन छिन होत
न्यारे एसो रे मन भवनवा देखा न कोय ॥

४५

मैनो तैंड़ा पेंड़ा तक दीवे आमीसा डोगलोयां ।
दिल विच लगी तैंड़ो यादवे सोणा मुखड़ा
वेखामी तोमें जोवा मीयां ॥

४६

अतवाजे मन्दर वाजे रोम रोम धुम किट धाय धाय।
कती धीना धुम किट किट धेत् धुम किट
धुम किट धाय धाय ॥

४७

रावरे मन मेरो लीनो रे कान ।
अचानक जाय निकसो हों सकुच भिझको अजान ॥

४८

मन्दिलरा मोरा बाजन लागिला आज मोरे
घर अनन्द वधावो मन उमङ्ग उमङ्ग हुलसैला ।
श्यामसुन्दर रङ्गमूरत ऐलो सगरी सखी मिल
मङ्गल गैलो ॥
तकधिलांग तकधिलाङ्ग धुम किट मृदङ्ग बजत
नृतकारी नृतकारी लो ॥
ततथेई ततथेई थेइया गगरे गगरे सरगमपधनिको
नाद्र तुंन्द्रदानी तुं द्रदानी यललोयलोयललल
लेललेय लललललल अलङ्कार सुनावो तोयाईया
तोयाइयातोया गावो मन्दिलो ॥

४९

काजरवा झमके वाछुरे छाँरे आजरे।
अंखिया भरन आई पलकन लागलोजोमें
एसी जानती करती न्यारोरे ॥

५०

तानुं तन दिर नादीमतननननितनितनारे
तदारेतददानी यललो यलो यललु
यललल्लेतनदिरनातादानो ता।

५१

किठांसी लायो दारु छे वाकड़लो छेजो म्हारो राज।
कौन देशां म्हासो रूस रह्योजी सायवॉ
थारे आवणा म्हाणि काज ॥

५२

सो आनन्द भई प्यारे सब निशी जागी तोरे सङ्ग।
जैसी सोई तैसी रैनकी उनीदो माती
मेरा कहा मानले कौन तिहारो ढङ्ग ॥

५३

आजके दिन मिलन बनीलवा पीतम
आयो घरवाह्यो बार बार डारि फेरी केरी।
वादिन मोको कहतेथे बिसर गइला
जीउ अबका आइला मेरे मन ॥

५४

दिन की विथा मैनु मोरे कासे कहो सहो न जाय।
बहोत समाजं जीया अकुलाय विन देखे रहो न जाय॥

५५

गोकुल गाम को अब जिन जावो माइरो।
वा नगर को पेड़ोइ न्यारो सबसे करत बरजोरी माइरी॥

५६

मीत वासङ्ग लागी लोरे जाको मन मेरो
विन देखे रहो नजाय।
घरी घरी पल पल कल न परत एमा उन
विन कछू न सुहाय ॥

५७

तिलानाद्रतुंद्रतुंतुं तनन ननना द्र-
ना तिलाना देनाना।
निरफतो तरतो विरफतो ख्याले तदन-
जरम् जस्त ताविगुजस्तो चुआवँअरेमन् ॥

५८

तनदिर दिर तारो ललले तदानी
यललोयाललो यलोय ले।
गरचे उरोयानुम् जेदस्ते मुफलसांहै
अनवे मकुन वखते जादन हस्तकस राखल
ते दरवर नबंद ॥

५९

दानी दोम देनत नरे तन उदन
दोम दोम तदोम् तदानी।
नाद्रद्र्धेतलाद्रद्रतददोम्दोम्
तननन दोम् तदोल तना दां ॥

६०

केलके मनसुर तकसे मदमानी।
यरङ्ग अदाकर दयम्गुलसन् तखलसन् तॉवरवादानो ॥

६१

अनुआईरे कौन गांव कोछैल चिकनीयॉ
कुवत गगरी जात मोरी।
हों यमुना जल भरन जात रहो हम सो करत झगरी॥

६२

धुमकिट धिलाङ्ग वाजई मन्दिलरा गावत टोड़ी राग
सप्त सुरनके सङ्गत सो सुन सबही आनन्द कराई।
युग युग जीवो जोलो तोलो गङ्ग यमुनजल
चन्द्र धर ध्रुव भान सलेमा जो पातशाह सुखदाई ॥

टोड़ी—धीमा तिताला

पातुकवा मोरे हमरे सुखको
इतनो जाय कहियो विसर गए सब बतीयाँ।
और सन्देसो इतनो जाय कहियो कहूं
न पठई पतीयाँ ॥

जीवे जी तुमरा लाड़ला जुग जुग नित नित
राज करो कोटि वरसलो महम्मदसा पातसाह।
चकता तोहे नूर सलामत यह असीस
हम तुमको दीनो सब गुणीयन को
दियो करोर चतुर सहित सम्पत सदारङ्ग चाह॥

टोडी—तिताला

सोचीए नितही समसुरनको
सारेगमपधनिनिधपपमगरेसा।
आरोही अवरोही अलटपलट उनचास कोटि तान लीजिए
सुर सङ्गतसो निधनिधपधपधपमपमपमगमगमगरेगरेसा॥

टोडी—आड़ा चौताला

मोरी विथा सुन सखीरी मोसो अवध वदि कहि
आयेदेको अजहूं न आए लला टरट
यह कासे कहों।
दिन ते रैन भई है निगते दिन भयो देखत पैड़े
अतिसूनो गेह उनविन दइया कासे कहो अदारङ्ग सो॥

टोडी—जलद तिताला

ख्वाजिजो तुमतो बड़े पीर अजमेरी दाता
सकल सृष्टि सब ध्यावे तोरे दरवाजवा।
झलमल झलमल झालर झमके
चन्दन किवरीया पीकत दिवाल पीरवा॥

२

प्रभुदाता तू सबन को रब रटरे मन
घरी पल छिन।
रंग राचे हरिके नाम लीजे
जो देत है दूध पूत लछमी अन धन॥

टोडी इकताला

भलही सचित भला हुवा सांची जतावन आए।
कोरन अञ्जन फल रहो है वसन मिलन को
हैं उमंग सो काहे को लज्जित हम पाए॥

टोडी—धीमा तिताला

उदतननननदिरतदोमतननादोमृतानदिरतदानी
तदोमदोमतननननननननारेदोमदोम।
कड़नकतिरकिटकड़नकतिरकिट
तकधिलाङ्गतकधेधाधेधा॥
धातिकिड़नकतिरकिटथाँकतिधाधिरकिट
धुमकिटधिनधाकतिधाधाधिधाकिड़नकतिरकिट
धाकिड़नकतिकिदोधाधेकिड़नकतिरकिटतकधुम
किटधिलाङ्गतकधातिधाधाकिड़नकतिरकिटतक
धुमकिटधिलांगतकधेधाधेधाधाकिटतकधेकिटतक्
तिरकिट्धुमकिटधुमकिटधिलांङ्गकिड़नक
तिकिटतकधा॥ ३॥

टोडी—धीमी ताल

रङ्ग सदा नैनया कबूल रवा वोमें तैनु
जान जुदासा इस्कदा।
याह बलल कलो आपे आप खुदाया लड़क
कुल सुन मदा रङ्ग गदा॥

टोडी—जलद तिताला

भइलो हौरि तुरका के सङ्ग रहीमैं।
हौंतो जातको बामनी रे अरे भला
उनकी प्रीतने मोहि मोही लागमैं॥

टोडी—तिताला

सुघर बना सिर सेहरा मोतीयन का
और सोहे गलसुआ चोलरा।
सब सखियन मिल मङ्गल गाइला सदा
रङ्गीलरा राज दुलारा॥

२

राजा को हम चेरीयाँ बिन दामो की
जनम जनम को हुकम करे हम सोई करें काजा।
हमतो दरस परस के हैं वैरागी मेहर नजरके
जो चाहे तों घरमें आजा॥

धेधेधेदानीकिटतकतकधीना
धिरकिटतकधीनाधुमकिटकिटधिलाङ्गत् कधे।
सम औसङ्ग गतन भेदन धिलाङ्गधिलाङ्गधेधेदानि
धाधाकिटकिटधितकिटधेतलाङ्गधातिधा॥

४

फुलवा बीननहों गईहो बाग में भँवरा रे
बहियां लिपटानि मोरी गैलन छाड़ लई ।
रसका माता सर सवार न बावरोरे
ढिगते मोरे से जीयकी बात लई ॥

५

लागी रे नैना दीवर छीवे ।
चालतु साड़ी ऐड़ी बड़ी भुवे तूसाड़ी तिरछीवे ॥

६

क्यों कर रहोहि मोसो रूसन ननदरी ए ।
एकतो वीरन तेरो कैसे रहतहै नापर
रहे तोह्र ननदरीए ॥

७

रहस नचाव करोगी सो बलमा प्यारेकी सुनो
आवन की भनक ।
मो मनकी इच्छा सब पूजे पियकी सुदिष्ट होय तनक ॥

८

आपना घर भला और आप भली न किसीके
जाइए न इतना दुख पाइये ।
गरज नकदा नेबुना उफताद खुसरो गर कशुद
खूबशुद मरते चरावा लाए चाहे तो बुग जरद ॥

९

वाजी निगाह यार गर यार सबीना खुन सरावे नाव ।
सर सारस मारस बीचस्ते तरफे रावच
पय कर दान्दगर वसनो वरीके गुल दार सबो ॥

१०

ध्यान से उठजावें सब बुराइयां उठ जावे ।
जे तू कर्म करे भावें तू जान न जानरङ्ग
रस तेरा कहावे ॥

११

उदतनदिरनातमुतानदिरतदरेदानि
तमुतननतननननद्रतदरेदानि ।
नाद्रद्रतानाद्रद्रादीमतनदीनातनातानदिरनातो
तननननतनदिरनादीमतनननद्रतदरेदानि ॥

१२

जइहों पियाके देश करिहों सोले सिङ्गरवा ।
ए मोरी मा वहोत दिनन पाछे मोको मिले भुज भरवा ॥

१३

छनन छनन बाजेरे पायलिया सुन घुङ्गरवा
बोले छनक मनक रुन भुन भुन भुन रे ।
छोटे देवरा देवर गोदी के खेले मामी
ननदीया जग गई हंसइरे ॥

१४

मलीया रे तेरी वारी भंवर गुञ्ज रहे ।
सरस गुञ्ज भई उलट पुलट कर में
अदा रङ्ग सुमरन के भावे जिय वसे ॥

१५

अब लों लगई लगन मोरा जियरवा
तुरका के सङ्ग रति मानी ना मानी रति मानी ।
शिर पर दुरजन लोग वहे समझ मोरी आली हमरी
बतीया मानलो पियवा तुम तुरका हम तुरकानी ॥

१६

रव मेके नू जाणा जुदाहसदा शाह
को विछुरे मानस को आन मिलावे ।
कासे पूंछूं कब मिलेंगे अदारङ्ग कौन मिलावे ॥

१७

मजनू जोदा दीठा वेसो मीयां लैलै
नाम दिलभर यारदा ।
दरजाके नीमेंके दर का लैलै नाम पुकारदा ॥

१८

कोउन जाने फकीरवा की बात
दोऊ जगत में आवा गमन रचाई ठाकुर ।
एक आवत एक जात जहाँन में राजा रङ्क
अमीर फकीरा भेद न पावे वाको आकर ॥

१९

कलाली माणी दारूड़ो पिलावे झोंतोरा मद छकोवे ।
सुनरी भगतण प्रेमका मधवा भर भर भर मोहे प्यावे ॥

२०

मेरा जिय चान्दा रेदा मोणामेड़े यारढोला निरमोला।
मै तो तेनू ढूंढ़दी फिरदी सुन मीयाँ
राँझड़ा सदारङ्ग कहि बोला ॥

२१

पनघटवा रोकि ठाड़िला ढोठ लंगरवा कैसे कर
जांऊ पनीया भरन ।
बाट घाट मोंसां करत ठठोली सास ननद
मोरो लागो लड़न ॥

२२

छिकनिया मोरा संगड़ न छांड़े अरे बलमा
कहा करूं कित जांऊ ।
बाट घाटपे रोके बरजा न मानि लंगर तुरकवा
सदा रंग महमदमा वाको नाऊ ।

२३

साजन गलबांहा डार डोलिरी ।
हमरी चुनरोया मोरे पियको पतरोया
उझ रहे कैसे खोलिरी ॥

२४

तेरा सो मेरा मेरा सोहै हैं ।
सोच कहत हूं सदा रङ्ग को कोई पूंछे
म्हों भी दांत तेरे कैहैं ॥

२५

रहस नचाव करोगी आज मोरे आइला पीयरवा ।
मङ्गल गावो चोक पुरावो मोतीयन थार भरावो ०००० ॥

२६

दुनीयां दे कोल डरिए भरिए होते डोर जासो निभहै।
सदा साहवको पहचांन वन्दे मत होजा
अयान रखदा सदा रङ्ग दीअदा ॥

२७

खानम रजा सानू गरे लगादा दिल नु
दुखादी कानोदी वालीयां ।
दुती वेड़ा साड़े वे दुसमन मा पेवे गुजीया सेन चलाँवदा ॥

२८

नैनवा मोरा पकावें यार अपनोरें ।
नंन तेरे गरम भइला याहो पर तोरे ॥

२९

सब निश बरजोरी कर फिरत नित बोलो
ठोलो प्यारे अपनो गाव ।
मेरे तो जियमें जोई आवे सोई करूं
प्यारे दूर तबहो हमारो नाव ॥

३०

राज मैतो तेरो तोवे राज मैतो तेरो
वातड़ोया पहचानो गुमानो ।
मैंतो थारो दासी मायवा जनम जनमरो
थांसो लाग्यो छे म्हारो प्राणरो ॥

टौडो—धीमा तिताला

सुनो छैलवा मोरा चोर मोंसों नित नित काहे छोनत
निश दिन रोकत टोकत मग मध कासों
कहों यह दुख पोर ।
बरबस बहियां मरोरो झक झोरो
लंगर झगर मोंसे रार करतहो मानत हो
हलधर केवोर ॥

टौडो—तिताला

सुनो ननदोया तोरा वोर मदसन नित नित अवध
बदि औरन के जाय कामन कहूं दुख बनोयां ए
दिन रतोया ।
सरवस दै दै हारी जानत सकल नारी कोउ अपने
सपने भए वनवारी ब्रज सरम जात छतोयां मोरो ना
जानो कहूं ब्रज नारी कोऊ लंगर हिलो घतोयो ॥

२

करत रहत नित चोरोयां श्यामसुन्दरवा
नन्दके दुलरवा ।

घरी घरी पल छिन माखन चोरावे
आयके मोरे मन्दिरवा ॥
लटक लटक पग धरत धरन पर उझक उझक
मुख निरखत निशदिन माधुरी मूरत साँवरी सूरत
रस बस कर लेत दुलरवा ।
मोर मुकुट श्रवणन कुण्डल है झलकत
अङ्ग अङ्ग नग भूषण मणि छूम छनन पग नूपुर बाजे
ठुमक चलत गति लेत चरनवा ॥

३

लोक लाज मोहि आवे मोरा जिय तो को
चाहे तोरे ढिगवा बैठ रहूं ।
घरी पल छिन मोको विरहा मतावै
कहां करू मैं किधर जाऊं ॥

४

वनवारी मइकु बंसी सुनावे सुतानन रस छकीयारे ।
सुनिरी सखी प्रेम सो मधुरी रङ्गीली मुरली बजावैरे॥

टप्पो—एकताला

नैया मोरी भई है पुरानी केवट सदा मतवार ।
औघट घाट सूझत नाही तोको आन पड़ी मझधार ॥

टप्पो टोडी—तिताला

योगी भेपलेरे रङ्गको सम्भाल गुणको विस्तार ।
तीवर तर तीवर तमतीवर कोमल
सकारी नीके सुहावत सोच विचार ॥

२

हे दुखभञ्जन श्रीराजा रामचन्द्र रघुनन्दन ।
कैते कीने रङ्ग राव दशासुर दन्द दीनो
रावणके गर्व्व गञ्जन ॥

टोडी—तिताला

माड़े प्यारीया वेदरदी गवकणो
वेगइया विदेश मुदता गुजर गइया ।
कौकराँ केहणु आखाँ साड़ा हाल विरह
दावा न मैनु मारीया ॥

सुन मैड़ा प्यारी यावे बांह गहेकी लाज ।
अपने किएकी सरमत् सानू शरण रहे
की करो राज नियाज ॥

३

सो आनन्द भयो है प्यारे सब निश जागी तोरे सङ्ग ।
जैसी सोई तैसी रैनकी उनीदो मातो
मेरा कहा मानलो कौन तिहारो ढङ्ग ॥

४

आज आइला पिया मिलन बनिलवा हो
तन मन बार बार वार डारो विहारीजो ।
आनन्द भइल मन चीत कारज दुख गइला
सुख पाइलाजो ॥

वेदिन की विथा कासो कहीं कहोन जाय ।
बहुत दिवस भए आए नाहीं जिया अकुलाय
विन देखे रहो न जाय ॥

६

बावल मैंतुरकन भई हाँ तो तुरका के सङ्गवा ।
बारा बरस मेंगङ्गा न्हाई कल्मा सोखो सुनोरे
बांगवा ॥

७

मेरे यार नैण लगा साँवरे संग ।
नैन रङ्ग उनके संगमें भइलो बावरो
याही पर तोरे ताना तरङ्ग ॥

८

साँवलड़ा मानु गरे लगादी मुरली सुना
दानी गावे तान ।
विन वेखे मानु कल नहीं पड़दी मोहन चतुर सुजान॥

९

साँवल तेरी चेरीयाँवे साड़ी वात सुन सइयो
वो गुमानी राज ढोलारे ।
मैंतो थारी दासी जनम जनम की
थासो लागोछे म्हारो काज साथड़ीयाँरे ॥

छूम छननन छूम छननन बिछुआ बाजे
मोरी मइया तेहीं जानी पियको आगम भइल।
दिन चार में सगुन होतहै मोरे तो जो को
सब दुख गइल ॥

११

कलाली मोंको टाकड़ी पिलावे हीं तोरा
मद छकीयारे।
सुनरी भगतण प्रेमका मधुवा भर भर मोहे
छकाविरे ॥ क ॥

१२

मेरा जिय चाहँदा रेंदा सोणा मैंडे यार
ढोला निरमोला।
मैंतो तेनु ढूढ़दी फिरदी सण सोयाँ
राँझा सदारङ्ग कहि बोला लोला ॥

१३

समझ मन गोरख धन्धा।
जिमि आकाश को टोऊ कड़ोया
पाँच पचीस प्रबन्धा।
जादिन ते उरझो सुरझो नहीं याझगरे सनमन्धा ॥

१४

कोऊ न जाने फकीरवा की बात
दोऊ जगतमें आवा गमन बनाई ठाकुर।
बहु रङ्ग बहु भेष बनाए एक एक रङ्ग
सूरत सूरत न्यारे न्यारे चिन्हवा आङ्कुर ॥

टोड़ी—तिताला

माण्डे नाल बोलन छद्यावे ढोलन के हो ढाड़ो
तकसीर कीवा घुंडी खोल।
केही गला मेंड़ी तेंडरे आगे बीती सदके गइया
तेंड़े गबरू साड़े नाल की तानी कोल ॥

टोड़ी—तिताला

अब मोरी बिछुवन मोत पियरवा काहू
सों न कह्यो जाय।
झणक झुनक पग नेवर बाजे कैसेक आऊं में
मितवा तोरे पास सुन पावे ननदीया रिसाय ॥

२

पिय बिछुरे नहीं चैन मोकों बेरो बिरहा
करत बावरो।
नैना नींद न आवे सजनी कैसे कटे दिन औ रजनी
सुन्दरश्याम मनोहर मूरत मिलहै कबवे साँवरो ॥

३

लागी सुरत सखी मोरी पिया नाहीं आए एरी।
कैसेके पियसों जाय मिलोरी अबही दिननकी थोरी ॥

४

घरी घरी पल छिन कल न परत है मोहे
कैसे रहों पिय बिन में अकेली।
सदारङ्ग तुम मनके भवन हो तन मन
बस भइलो नवेलो ॥

५

वारी में वारी एवनवारी तिहारी ऐसी
अनोखी हसन पर।
निरख नैन रस बस भई सकुचन वाकी मोहे कसन पर ॥

६

तूजे मिलणदी चाह रवा बस नहीं चलदा वे।
सोणा साड़ड़े दिल दाह बाल बुझ दावे
इस्क लगा साड़े हाल दावे ॥

७

वन्दे देनाल सोणा करम करीवे।
रङ्ग बरसननु इस्क वगा कमाल घरीवे ॥

टोड़ी— आड़ा तिताला

कब घर आवे मोरा सइयाँ ए बमनारे।
पोथी बांचो सगुन विचारो हाहा करत पर पइयांरे ॥

टोडी—एकताला

अधिक जियसो सुहावा गातो रामही भावे।
या छबि देख हों बावरो भइहों बिन देखे
कछु न सुहावे

न जानू कौन भाँति मिलोगी तिहारी
भँवर कोसी रीत।
आनन्दघन व्रजमोहन प्यारे
ठौर ठौर कहूँ रहे हो ए दई परतीत॥

टोडी—आड़ा चौताला

जा जारे पातंगवा मोरे कंथहु सानु देहे पतीया।
पहेल मुख सन कहियो बतीयां
तुमरा खुदा और जरो जात छतीया॥

टोडी—धीमा तिताला

माइरी धन धन धन व्योहार तेरो हित जानत
सब गुणीजन।
एसे हेतु चतुर छबीली करत न काहु की कान॥

टोडी—जलद तिताला

महम्मदसा के आनन्द बधावरा ए माई
पूजलो मनके काज।
तन मन वारूं वापेरी सजनी सदा रङ्गीले ए राज॥

टोडी—तिताला

मेरी विथा सुन सखीरी कासो कहूं में हाल।
मोंसो अवध बदि कहि भेजी आयवे की
अजहूं न आए लाल॥

टोडी—आड़ा चौताला

मेरे मन याही करे जो अपनो भलो चाहव।
दीन दुनीको मन इच्छा मागो
करीम रहीम सतार दे गोरव॥

टोडी—तिताला

तुरका रङ्गीला छबीला देखत ही मेरो
मन लुवध रहीलवा।
छवि निरखत में एक घरी अति सनपतवा
अमद छपा सुरजनवामिल कर ढोल धरीलवा॥

टोडी—आड़ा चौताला

एरी आली कबकी मनावन गईरी हों पिय
कोपी मोमन में पायो।
निरख निरख परस परस समझ समझ
जबलों देखिला मनहो मनमें समायो॥

२

तेरे आगे पनीया भरोगी रे साजनू
तूतो मत गमन करे।
हाथन जोर करूंगी हाहा पांय परूंगी रे
सुरजनुवारे॥ तूतो म०॥

३

घर जान दे विहानरा होसी है।
पायल मोरी रुनक झुनक बाजे
दुरजन लोक परोसो है॥

४

आनन्द बधावरा सोहलरारे मो इम घर गावो
सब मिल सखी सहेली रहस रहस फूली न समात।
एतू महम्मदसा सदारङ्गीले दरस देख कर जात॥

५

अबतुम मानो मेरी बात प्यारोरी।
महम्मदसा पिया गरे हो लगावो
अदारङ्ग सो तेरे हाथरी॥

६

आज सो दिन छपा करि हो हम जानिएरी।
तू जगनिस्तारन अन्तरयामी अदा रङ्गको
सदारङ्ग कीजिए अपनी पीतरी॥

७

सुघर बनरा बन आयो गावो सखियन
मिल आनन्द बधाव रामा।
शुभ घरी शुभ दिन मोरे घर आइला
चतुर बना रामा॥

८

जा जारे पतङ्गवा मोरे पियासे कहि देहु बतियांरे।
पहले मुखते कहियो तुमरा खुदा हा फिज
तुम बिन सदारङ्गीलो जरोजात छतियाँरे॥

९

प्यारि मैमोंकी मोसे जियकी पीत लागी सरस।
तुमरी बात नेकन मानों लाख बरस॥

१०

जासे तोंह बदनामीया ओछी पीत न
कीजिए प्यारे।
लाखन भटिको झुठालो हारे विहारे
लाजन कारे॥

११

छिक् बावुल कित जनमीरे अरे वल
कित जन्मी जन्मो जन्मीरे।
दान दहेज मब घर वार दीनो ए सुरजन बहियाँ
पकर अपनो ले चले नगरवा रे॥

१२

अब तोरे पाय लागू बन्नमा जोया मोरी सोख मानरे।
हाहा करूं पइयाँ परूं साजनतू
तो मत कहुँ गमन करे॥

१३

मोरो विथा सुन सखीरी मोसों अवध कहे
भेजा आयवे अजहूं न आए लाल दरद कासे कहूं।
दिन ते रैन भई रैनते दिन भयो देखत पेंड़ो अत
सूना भयो उन विन ए दई अदारङ्ग कासे कहूं॥

१४

मलियारे तोरी वारी भँवरवा करत गुञ्जार
भँवर गुञ्जार।
यह सुगन्ध वाके फूलसे उतरे अदा रङ्ग खुसवो
पवन चले शीतल वहार॥

१५

आजसो जसे कृपा करो तो मया कीज्यो
अबही करिए वाही रीत।
तू जगनिस्तारन अन्तरयामी अदारङ्ग
राखिए अपनी पीत॥

टोड़ी—एकताला

सुनवे अलबेला गिरधारी खुला तेनु लहरीया चीरा।
अलकन कुण्डलकी झलक छवि निरखत मन
मोह लीनो और सोहै मुख बीरा॥
श्वेत झगा झीनो अति राजत छाजत अरुण
मुरली उर सोहै जोत हीरा।
कृष्णदास नु आस वेशनदी विन देखे
मन न रहत है धीरा॥

२

न जानू कौन भांति मिलोगे तिहारी
भँवर कीसी रीत।
जित सुगन्ध पावत तित धावत हो
तुम गरज परेके मीत॥
आनन्दघन व्रजमोहन प्यारे ठौर ठौरके रस
चाखतहो कैसे करे परतीत॥

३

करो शिव सङ्करकी नजर निश दिन
घरी घरी पल छिनन।
काशीनाथ विश्वेश्वर दाता, तुम सब जगके विधाता,
तुमही देवो दूध पूत लच्छमी अनन्दघन॥

४

घरी घरी जातरे अवध वृथा तोरी
क्यो नहीं सुमरत राम।
तनते प्रान पयान करत जब कोऊ न आवत काम॥
जे हरि रांचे तेइ नर साँचे कहां लगि
बरनों तिनके नाम।
विष्णुदास प्रभुके सुमरणते पायो परम निजधाम॥

५

बांके बनवारी २ मोहि सानु करत हो हँस हँस
रस भरी बतियां श्रवण सुनत मोहि लगत पियारी।
तेरी वतरावन सुख उपजावन लख लख सों गन्ध
खात थारी गिरिधारी॥

वेखन तैड़ड़ा जीवन मैड़ड़ा जिन्द बस
कीनो हमारी मुरारी।
विष्णुदास पर किरपा कीजो दीजिए
दरशन हों बलिहारी॥

टोड़ी—ब्रह्मताल

कौन टेव परी तिहारी ते पियसो रति मानो।
चतुर सुघर तूही प्यारी एती हट न आनो॥

टोड़ी—पस्ताल

मीठे बोलन ढोलन आएरी सब मन भाए
घर घर मङ्गल गाए।
नैन सराहै देखत भाजे हिल मिल करोंगी बधाए॥

टोड़ी—तिताला

तौं तननननतौतनननतारेदानिउदानिदानि
तदानितारेदानिदीम्।
धीतीलोतीलानालीतीधितीलाना नारेनारे
तारेतारेतदारेदानोदीम्॥

टोड़ी—इकताला

धाय मिलूं जब आवै मोरे घर महम्मद सा
प्यारा गर धाय।
गाय बजाय नीको तानसे मेरा मन बस कर
रङ्गिलवा धाय मृदङ्गसें भेद परे धाकिट् धुमकिट
तक्धितिलानागिड़धाएरेधाय॥

टोड़ी—तिताला

मेरे मन राम राम रटरे जोतू अपनो
भलो चाहे अब।
दीन दुनी की मन इच्छा माङ्गो करीम
रहीम दें गौरब॥

२

करम कीजिए तुम हजरत खाजा तुम
राजनके राजा।
दीन दुनी में नाम तिहारो जपत रहत नित
चरणन तुमरे लागे आजा॥

सोवन देरे प्यारे मोरे सब निश जागी तोरे सङ्ग।
अबही सोईहै रातकीउ नीदी माती हा हा
मोरा कहा मानले प्यारे कौन तिहारो ढङ्ग॥

४

बरजोरी ए लोगवा माई मिलन न देई पियरवा
सानु कौन भाँति पीवाऊं मधवा भर भर सरवा।
एकतो सदारङ्ग वीन वजावै भर आवै
छतीया कुमलावै हरवा॥

५

आछे प्यारे लल पर बल बल जइए।
जोई जोई कहे सोई सोई करिए सजनो बनी
बनावत बहे जो चहुए॥
हजरत मीराजी तिहारे नामको अधरवा।
हमरे तो यह आस रबतेंनु
पाऊं कर राखूं गरेको हरवा॥

टोड़ी तिताला

भीना ह्मारो रसयो राजकुंवार ह्माने
घनो प्यारो लागे राज।
हाथ जोर अरज करासां अवतो साहिव क्रपा
कोज्यो सोभड़ीया रङ्ग मानो मै वारणे जावा थे
ह्मारा सिरताज॥

२

तदेदानो तोमतोमतननन तदीयन
रेनरादगतदेदानितरलेतरलेतरले
उदानिउदानिउदानितदानितदानिदरादरा।
इस्क खुदाने वही दिखलाई वहार जिसका
पार निवार हरगिज इस्क कम नहो ज्यो वाग वहार॥

३

तोरे कारण जग मदकु निश दिन
हित चित सो भरीलवा।
लोक बौरे जानत नाही विन देखे
नहो चैन कैसे रहे सुन्दर मूरत मुख करीलवा॥

प्यारो मोहिसो नितके झगरो करे नितही बढ़ा।
अबवे समझ नें लगीतो लगाही लगा न लगीतो
लगा खुशी वखुशी सोदा बढ़ा॥

५

म्हारे डेरे आजोजी राजेन्द्र आजोजी
राजेन्द्र ऊभी ऊभी जोवा थारी वाटड़ी।
उन विन मोंको कल न परत है
को उनके हित मोसो वातड़ी॥

६

चंगे नैना वाल्रीयानी कुड़ीए सदा रङ्गनु तैड़ी सैन।
काँधिवे गुदरीया जलवे ख्वाल और चुभ जादे वैन॥

७

आजरे महम्मदसा घर आनन्द वधावरा
में पूजोरे मन के काज।
तन मन धन आइला सजनी वनरा आइली
सदा रङ्गीली मोरे आज॥

टोंडी—एकताला

दैया वट दुवर भइलो मड़कु लङ्गरवा
भरन न देत गगरीया।
विहान तोरे सङ्ग कैसे जाऊं सजनी
बीच माझ ठाड़ो सदा रङ्ग उचकैया॥

(शेष० श्रं०)

२

नारी देखहु वैद मोरी कौन काजरे।
विथा पीर कैसे कहूं नातर आवे मोय लाजरे॥

३

माई मैंतो कवन काज आवैला जो जिय डरावैं।
विन देखे साहजहां पिउ कलन परत
निश दिन मोंको कछून भावै॥

४

हर चश्मे तुरादिदन आज दाम कुनम्।
आंक दर गिरदे तो गरदम के तुरा राम कुनम्॥

सुरजन तोरे कारन सबही को बोलो ढोलो सही।
एते पै नसुने न कान धरे यह बात नई भई॥

(निरमोल कृ०)

६

दारादाराअततददानितन७ दारादारातददानि।
तरलेतरलेतदादानिउदानिउदानितदानितदानिदा॥
वरम आरे मा गरीवाँ न चरागे न गुले।
न परेवरवाना वा सदना सदाए बुल बुले॥

(महम्मदश्री कृ०)

७

कोयलिया बोले अंबुवा की डार विरह भरी।
सपने अपने दामनी दमकै
लाल बिन निश चौंक परी डरी॥

८

अनमनो पिया सो रहत है काहे सलोनी नारी।
तोरो मनुहार करत नित मनरङ्ग अपनो रूप निहारि॥

९

सुध साधके बजाई है वीन तंतो सदा रङ्गीले लाल
ऐसो अकलमें सवाद दियो एसो निरमोल।
जबते प्राणेश्वर महादेव कों दीनी तबते कैतेक
रच पच हारे उनचास कोटितान वसुधा करके याको
आदि अन्त तुमही पायो देखायो मन रङ्ग कर
रस डांड़ी को तोल॥

१०

एती वेपरवाही किन वदीवे मोया
दिल लगा तैड़े नाल तेकदर मैड़ी न जानी।
नित रङ्ग करदा और पहचाने औरों नाल
हँस हँस ढोलन यार गुमानी॥

११

साँचे सुरन गाय बजाय लेहों सब विध अपने
गुरुनकी गुणीयन की सङ्गत सों राग परन सप्त सुर
निधपमगरेसा।

गरसासारगरसासारगमगरसा
सारेगमपधनिसानिधपमगरेसासारेसा ।
धाकिटतकधुमकिटतकधिरकिटतक्
तिरकिटतक्धागड़ानदिगनड़धासा ॥

१२

मनुवा मोरा ना रहे कल न परत इतनी
कहत अरज गरज ।
कैसे कर राखो प्राण पिया विन हाँरे
दूजे उमड़ उमड़ घुमड़ गावे गरज गरज ॥

१३

हम योगी परदेशी हमारा गुण औगुण न चित धरिए
जो कछु चूक परी प्यारे तुमही देहो वताय ।
भिच्छा माँगू तोरी नगरीया और डगरिया जानन
पाऊं सदा रङ्गीले महम्मदसा पिया तुमही वाहिको
देहु मिलाय ॥

१४

दीमदाराद्रिद्रितिल्लिलानातानानेतानाताना
द्रिनोमतनमतदरदानिनादिरदिरदानितुमतद्रद्रदानि।
तुमद्रतदरदानिहैयाजानमदीमदीमदीमनिगर गइया
तैनुए न चाहिए मान निए हमानो अनो अनो ननन
साता डाड़ीया कोल साड़े सोहरे जावाँ टुकसु यह
गामनी अनोर माननि ॥

१५

बना व्याहन आया भाया मन सुहाया ।
नूर को सिर छत्र तनायो सिर महबूबी याते
सेहरा बधायो सोयह बड़ भागन पाया ॥

१६

छत्र देश महिम रात वसंती वना आयो
माला डोला घर व्याहन आयो ।
करन दीन असलाम करतार आप पठायो
महम्मद नाम धरायो ॥

१७

कुतवदीन कुतव आलम महबूब इलाही
अपनो करम कीजे खाजेजो ।

१८

मान मनावन आए आपही चल उठके हँसके
क्यों नबोलो लालन सों ।
सुन्दरश्याम सलोनो मूरत कैसे तजो यह डरनन सों ॥

१९

मैडे नाल बोलन छूया पूछन भूल्या काहा
काइर को वगहा मेल ।
इतनी अरज मंडो मनवे तुहि सावे दोस्ता दर दिल ॥

२०

आह एस्ते चस्तेतु माहम तुरा के दरदाम कुनम् ।
आँक दर हरागजतो गर दम राम कुनम् ॥

२१

ननदीया हमी सन झगराई सुनहुरे लोगवा ।
निश दिन मइकु दुवर भईले पिया विन
मन भईले जोगवा ॥

टोडी—तिताला

जिस नाल लगन लगी सुनवे राझा सोणा
जिस नाल इस्क दावे डातरना ।
पार गएनु राझन कहंदे वार गए नु
हीर कहंदे दोनां मझ धार विच तरना ॥

२

मोको लाज वैरन भई अब कैसे
निकसो पियरवा तोरे ढिंगते अगनवा ।
व्याकुल भई जिय कल न परत है
सदा रङ्ग महम्मदसा सुरजनुवा ॥

टोडी—तिताला

जीतनके चढ़ो एक डंका दे चढ़ो चहुँ चक में
जोर कर ढिंग ढेरो ।
जान पड़े बड़े वीर दूर गयो सबन छोड़ गयो निवेरो ॥
सिकार जो कर विकारे धका धक खेंच
कमान हाथ घनेरो ।
छटाछट कटाकट झपक जैसे तैसे चांप
चूरी कर छेंगे ॥

देखोरी एक बालक सुन्दरश्याम सलोनो छोना।
मोर मुकट कोस्तुभमणि कण्ठमें मुरली बजावत
नन्द महरजीके भौंना॥
साँवरी सूरत माधुरी मूरत निरखत ही
डार गयो टोना।
गुणसागर आगर नटनागर करत रागरङ्ग रंग रौना॥

३

सुनतही बुलावन को बाते आँखन के
जोर धाई हों आगे जो रजा।
मनकी फूलन सो अङ्ग अङ्ग अंगको सुलन मलायही
आगे जो वजा॥
सूरत देखाई मन लाई चाही आभरण मजा।
मन वश कर लीनो तानसेन प्रभु रस वश करले लजा॥

देशी—धीमा तिताला

तोरेरे पायन परहुरे प्यारे अनत गवन नहीं कीजिए।
जङ्गल पखेरू घरवा वनाय लीनो
वाहर पाय न दीजिए॥

देशी—जल्द तिताला

फरकोले भुजवा माई अनुआइरो।
मिलने कारण पीने तरसाई जियरवा उन बिन जबर्त
सदा रङ्गीले महम्मद सा को बात पाईरो॥

टोड़ी देशी—तिताला

जब लग छित मोरी गाँठ मुठी तब लग सोदा विकाय।
हाट भई सुनि बासन भरीए ते अरे भला
अब कोई आवे जानि अनजाय॥

टोड़ी—तिताला

भटकत काहे बावरे करम लिखा सोई पाइए।
जोराँची सो साँचो सुमर कहा पछताइए॥

२

गुरु साँचो जिन पायो तिन देशीते
मारग सुधार कण्ठ मानो।
तान प्रस्तार कोजं नेक बूझि सद रस पंगत भेद जानो॥

टोड़ी देशी—तिताला

रङ्गरो वेलरो छितरो बेलरो नवेलरो
म्हारा आलो जाने कह ज्यों समझाय।
छवि तिरछे अबछे सुन सजनी अब वाँसे लिपटाय॥

टोड़ी—तिताला

कुतवदोन ख्वाजा तुम हिन्दके शिरताजा
दीन दुनोमें मेरी रखो लाजा।
करमकी नजर कीजे ख्वाजेजी दुख दारिद्र
मो तनते जाय भाजा॥

२

तुम अपनी नजर करो हम पर ख्वाजा
जो राजो हिन्दके निवाजी सब जगको एक पलमें।
पीर अजमेरी मोन दीन चिस्ती
चिराक नित नित जाउं वल वलमें॥

देशी—खमसा

परसत हो पायनको कुछ बात नई
जिय ठानी एही ठानी प्यारे।
जोई जोई कहिहो सोई सोई करिहों मैं
पायन लागूं तिहारे॥

देशी टोड़ी—जल्द तिताला

दुरजन लोगवारे सब मिल करे चवैया।
सदारङ्ग हमी तुमी करे रस भोगवा वही देश चलैया॥
तुमजो मोसो साँची साँची कहो लाल
सिगरी रयन जगैया।
हमको छोड़ तुम गए सोतन के घर मोसो करत चवैया॥

२

मेरी विनती उनसे जाय कहो पतंगवा।
लिख पतियाँ महम्मद सा कोँ भेजो सदा रङ्गीले
जबर्त न आवो सन्देशवा॥

देशी टोड़ी—एकताला

ए सखी श्यामसुन्दरको विन देखे मोको न आवे चैन।
निश दिन मोकों कल न परत है
कैसे कटे दिन रैन॥

तनरी इना तानरी इनन उधानाम ।
आनननीतननानितानानित नानतानन आनन
तानतननरीइनतरनरीनतनन तौननीन ॥

अथ अन्तरा

अदनतुम नदरतनन तदननान आनरी
तदनरी तानानतदरना ।
तदना आनरीतानरनन तुम तननन तदेत्रा
ताननरीनरनानरनतनुमतौम् ॥

टोड़ी—देशी एकताला

गून्ध गून्ध लावोरी मलनिया फूलोंदे हरवा ।
आज मोरे घर मोहन आए करहूं
फूलो के सिङ्गरवा ॥

देशी टोड़ी—झपताला

एरी मन्दिलरा गह गहो गाजे बाजे ।
रानी यशोदा के पुत्र भयो है श्याम सलोना
आज बधाई नन्द घर बाजे ॥
अतिहो मुदित नर नारी नाचत वीण मृदङ्ग
विविध साज साजे ।
कहालों वरनों भागन की महिमा पूरण ब्रह्म प्रगटे
नाचत नन्द उपनन्द प्रगट भए हरि भक्त न काजे ॥

टोड़ी—एकताला

मोसो तो प्यारे आवन कह गए एते
पर आनके गए ।
वसो तहाँ जहाँ कौनो नेह नए पहले से हित भए ॥

टोड़ी—देशी तिताला

हमहूं छाड़ गए सोतन के घर एरी सुनो ननदीया ।
सदारङ्ग बिन कल न परत है पीसो
मोकों मिलाव ननदीया ॥

२

मधन समय हेतु दूर मेरा प्यारा ।
ज्वलति वपु निदानं जीवना क्या हमारा ॥
रुचिर वसन धारी सुन्दरी यह जो नारी ।
काहे तजे वनवारी मदन पीड़ा यह भारी ॥

देशी टोड़ी—ताल धमार

जिन छुवो मोरा अचरवा अतिहो ढीठ लङ्गरवा ।
यह डर निकसन पाऊं पेंड वावरी जोर
गहे मोरा हरवा ॥

टोड़ी—तिताला

बिछुरे मानस कौन लाय मिलावे अल्लाही मिलावे ।
उनके मिलवे को कासे पूंछू अदारङ्ग यह कौन वतावे ॥

देशी टोड़ी—ताल धमार

वाके रूप रङ्गे मेरे नैन ।
अब हिल मिल होरी खेलोगी गिन होन दुरजन वैन ॥
लोक लाज कुलकान तजूंगी धरूं मान मनमैन ।
गुरुजन दूर करो जियत जब तब कोऊ कहन सकैन ॥

टोड़ी—जलद तिताला

खाजेजी की नौवत बाजे बाजेरे याही दरवाजवा ।
हाजती आवे पावे मुरादवा पुजावे मन के काजवा ॥

(जौनपुरी)

२

याही दरवाजवा ठाढ़ो ले दरवानु
तनक शरण होरे सहवसन भेटवा ।
नवीय चलो महम्मदके सङ्ग वाले चलो
मोरी बहिया पकर अच्छेरे सहवासन भेटवा ॥

३

वेतो आई वसन्तकी मुवारकी देन
सेवकको माय बजाय रिझाय वीन ।
महम्मदसा तेरे दरवार सदा रङ्गीले
काजे निजामदीन ॥

४

प्यारे मोरे लग गरे सोय प्यारे ।
अववे चितमन रूप रिझमन न तन मनाए मदभारे ॥

५

जो संवारो सो अवसंतोरे रङ्ग राती माती होरे ।
ख्वाजे मोनदीन ख्वाजे कुतवदीन निजामदीन
औलीया सङ्ग राती होरे ॥

पियके मिलन न जाइए गाइए बजाइए रिझाइए
धाधाकिट धुमकिट तक धिलाङ्ग ।
तकधिलाङ्गधुमकटताधिलाङ्गतकधातकधा
मृदुमृदङ्ग बजाइए ॥
पपधधपपधधधनिसानिधपमगरेरेसासासारेसा लाग
डाट और उरपति रपमों खरसो नीको मनाइए ।
झनक झनक ववकड़ झंझं झनन धागे
तिटितागे तिटि त्रेवट मजाइए ॥

७

सखीरी बिछुवा मोरा बाजे माई कहां करूं कित जाऊं
सास बुरी मोरी ननद हठीली और कुटंबके
लोगवा जागे सदारङ्गको कैसे रिझाऊं ॥

८

लावोरी मलनीया आछे फुलवनके पोके गरे डारूं हार।
चोवा चन्दन अतर अरगजा और सुगन्धके
बसनवा डार ॥

९

तेरी अटरीया कैसेके आऊं सुमत पियरवा ।
जागे मोरी ननद सास डर लागतहै
और कांपे जियरवा ॥

१०

सास ननदीया जागे मोरी कैसेके आऊं
मितवा नैनन सैनन मोको बुलावे ।
अगर वगर पड़ोसन और कुटंवके
लोगवा मोको खिजावें ॥

टौड़ी—धीमा तिताला

तोरे कारण मैं ढूंढ़ा वृन्दावन तमाम कुञ्जगलीयां सारी।
एक वन ढूंढ़ सकल बन ढूंढ़े कहूं न पायो वनवारी ॥
डगर डगर और वगर वगर में घर घर वनिता
बूझत हारी ।
लगी चटपटी निपट अटपटी विष्णुदास
प्रभु सोंह तिहारी ॥

मोहन तेरे मेरे मिलन की चरचा हो रही ।
डगर डगर और वगर वगर में घर घर
सब वनिता पोरही ॥
पड़ी झकमारन देन ग्वालननारी अनारन
चुपक चुपक तोरही ।
विष्णुदास कोउ कहन सकत है रार करनकों
सब मुख धोरही ॥

टौड़ी—होरी
(शेष)

हमरी सुरङ्ग चुनरीया गहरी वाको रङ्ग ।
हमरे पियकी लाल पगरीया उरझ रहे वाके सङ्ग ।
नयो हुलास नई पीत रीत बूढ़ी वाके अङ्ग ॥

२

सबहीतें वरजोरी करत फिरत
बोली ठोली प्यारे अपनो गांम
मोरे तो जीयमें जोई आवै सोई
कर हों तोहो हमारो नाम ॥

टौड़ी—तिताला

हमारे याही आसरवारी हजरत मीराजी
तुमरे नामको अधरवा ।
मन डोरा तामे गुलाऊं कर राखूं जैसे हरवा ॥

टौड़ी—होरी

ननदरीए एतो कहा मोंसों रूसनो ।
एकतो तोरा वीर मोंसों रूसा रहतहै
तापर एतो हूंसनों ॥

२

सबहीतें बरजोरी करत फिरत नित
बोली ढोली प्यारे अपनो गाम ।
मेरे तो जीयमें जोई आवै सोई करहीं
तबही हमारो नाम ॥

३

दानी तानुमृतनन दिरना ग्रिरावे (दानी ।)
कोनके रोग्रन गरेवाने मुसाहवे मतो पोरे
मनो जवाने मने एस मनरङ्गदानी ॥

आजरे यह आनन्द को दिन प्यारे मेरे
यह आए कैसो नीको छविसों ।
सुघर मालनीया गुन्ध गुन्ध लाई फुली
समात अङ्गन में ढवसों ॥

५

हरवा लेतो रहीरे लागो लो रतन पचासरे लङ्क ।
हाथ जिन लावहुरे रहसन गुन्धोलो हरवा
जोआवहु मोरे पासुरे ए लङ्क ॥

टौड़ी—ताल सवारी

अवमै कैसी करहूं पिया विन छतोयाँ
मोरी धकधकन लागी ।
जागत जागत सब निश बोतो भोर भईलवा
चिरिया चक चकन बोलन लागी ॥

२

कवन देश विलम रई पी नहीं आए
हमरो सुध विसराई ।
हों जानी काहु रस वस भये पतियाँ
लिखन पठाई ॥

टौड़ी सुर्द्दयर— ताल सवारी

गावोरी सोहलरा सब मिल गायन गुणी
निरत करो निरत कारी ।
पिय प्यारा वोहो मिलिया सब दुख भुलिया
सब इच्छा पूजी विधना हमारी ॥

दोमदारा तिन्ना द्रद्रद्रद्र तिल्लरे अहै आता तिल्लरे,
द्रद्रतुंन्नेतिन्निन्नानादोम् दोम् तददोवरेतदानी ।
वरव हर्दतें वुजुदतोंकसरत निसान एस्त ।
आलम वराए जाते जेतोहि देखान एस्त ॥ दोम० ॥

बरवा टौड़ी—आड़ा

मुखड़ा वेखामी वो यारना चिर लावी ।
वोराभाना लमेहो देवेले विद्याया देवे होया साँभवे
वेयार नाचि पई हुणता घर आवी ॥

टौड़ी—सावनी

अब मोरे कन्या आ मिलो एक पल
छिन मोरे सङ्गवा ।
नेह लगीला तुम सन मोरा सुघर महम्मदसा
नेकहु न लागीलो अङ्गवा ॥

टौडी—बहादुरी

कौन गत भईलो मोरी वरजोरी ले गयो
मन चित चोरी ।
मन फेरनकों वरजत हों वरजौ नहो मानत
कैसी यह चोरी और सिरजोरी ॥

२

बावुलरे मोरे हम दोनो विदेशवा वोरन
मागि तुम अपनो देश ।
जब हमरे काज परे के लिख पठहै सन्देश ॥

बरवा —तिताला

कोमलवैन कमलनैन पियकों वदन राजत श्याम ।
भ्रुकुटि कटाच्छन लोयन कोयन मोहत सोहत
आवत गावत भावत मन छविधाम ॥
हेरनि फेरनि टेरनि घेरनि गायन चायन
भायन अभिराम ॥
लछनदास मन्दहास मुखकों विलास
भास लखि लजात कोटिन काम ॥

टौड़ी—गांधारी

भोरकई मिलन बनोलवा मोरी मा प्रीत सङ्ग
बार हस मदोलरा वाजे मन्दिलरा ।
आवो गावो नाचो सब सखी सहेली
सदा रङ्ग गर लाग रहोलवा ॥

२

हजरत खाज कुतवदीन के दरवार वरसे नूर ।
इनहोपे क्यों न मागे सदारङ्ग सकल कष्ट
करे सब दूर ॥

जौनपुरी—धीमा तिताला

बाजीलो झाँझ मन्दरवा हमारे गुसैयाँके
दरवाजवा बिछुवन की झनकार।
बाजत मृदङ्ग चङ्ग रवाब सङ्ग साथ
डफवाको धुनकार ॥

जौनपरी टौड़ी—तिताला

वैरन ननदोया मोरीरे पाछेहो परी रहत।
कहा करूं कित जाऊं सखीरो भली बुरी
सासु से कहत ॥

२

आवो बलमा हमी तुमी तहाँ जईए
जहाँ दुरजन होय न कोय।
घन अमरैया बनो छाड़ाव पिछोरे
सुरजनुवा मोरे रहिला सोय ॥

३

मलियारे तोरो वारो भँमर गुञ्ज रहे सुगन्ध महकाय।
अलसावत अदारङ्ग नम अब वीन कैसे बजाय ॥

४

प्यारे छवि तोरी बसत है जियामें दिन रैन।
वेग दिखाउ माको अपना दरशवा तो जिय होवे चैन ॥

लाचारी टौड़ी—धीमा तिताला

पतंगवारे पिया कने जा पतिया बचा तोरे परिहूं पांय।
इतनी बिनती मोरी सुन लीजोरी
जो बने तो वाको ले आय ॥
भँवरारे मोरा पिय सनवा इतना
सन्देशवा कहियो जाय ॥

लाचारी टौड़ी—फरोदास्त ताल

दरजन खदा नेबुता उफताद खुसरो,
गर कशद खूबशद मस्ते चौरा वालाए बुक जरद ॥

टौड़ी—एकताला

बोयार जिनानु तेनामु सोकतन केहा
अलवेली को करकते।
घायल मायल फिरों दिवानो नैनसांई
देनालरते बन्हा इशक चुको मसलत
विसरोया पछ सले ॥

टौड़ी—आडा एकताला

साजन आवोरे घर भरे बल तुमरे
कारन मोरा जिया तरसईरे।
तुझ पर सरबस वारी जब परसा वईरे ॥

२

प्यारे घर आवरे भरे भला तुमरे
कारन अच्छी नीको सेजरीया बनाईरे।
चितचाह सो हियरे लगाय लेहु रहस रहस
चरण धराईरे ॥

जौनपुरी—जलद तिताला

फरकाई भुजवा बाई मिलने कारण पिया
सङ्ग गईलो।
तरसे तरसे जियरवा उन विन जबते
सदा रङ्गीले महमदसा की बात पाईलो ॥

२

बरजईए लोगवा माई मिलन देई पियरवा
कौन भाति पिवाउं मधवा भर भर सरवा।
सदारङ्ग बिन जीउ डरे जान छतियाँ भरे
कुमलावन लागे हरवा ॥

३

रव्या ० वा ० ॥ सुरस्सना

यललीय लायलाय लललेय लायलायललले।
जलवन मुटो बामा वुदो कुजाइ जाफर पीर
सोई मन टेरंरं बिदेशीया बहोरी फिर मिलले ॥

४

जासन पीत लगी मईको एमा बहो के बिछुरत
मोर मन दुखवा होय।
ढिग सनवा टरे नटारे पलपल छिनछिन होतन
म्यारे एसोरे मनभावना देखा न कोय

५

नादृद्रतनुमृतननननुम् तननननना श्राहे
श्रालाल सेरा बखुन तम्म वेयारे मनस्त
बजपए दीदन श्रौदादन जाँकारे मनस्त ॥

६

(कहरवा)

सोवाडु दरवाजवा ठाड़ो लेके दरबान बातिन
डराए जात ना कोऊ ।
नबी महम्मद कौनो सङ्गवाले चलत मोरी बहियाँ
पकरत बबा छोरे साहब सन भयो भेटवा ॥

७

श्रब मोरी ननदल आगे हाथवा ठाड़ो रे
कङ्करी मार मीत मोको बुलावै ।
बारबार कङ्करी जिन मारो जागई सब घरके
लोगवा पायलिया मोरी बाजे ॥

८

जब सुध श्रावै मोको तुमारी तोरे लग रह्नो पइयाँ ।
जनम जनम सुखवा भईले मौतन सदारङ्ग
सुरजन सईयाँ ॥

९

ख्वाजेजी की नोबत बाजे बाजहुरे यह दरवाजवा ।
हाजती श्रावे धावे पावे मुराद सब पूजे मोरे
मनके काजवा ॥

१०

सोया मूरित भावनी लागे बदरिया बरसे
पियरवा ढिग होजाय ।
देख बदरिया चोकन उमग जियामें हमरे
सदारङ्ग सों मिलाय ॥

११

कान्हजीको ढिठोनवा हँस हस दीनी
कस कस गारीरे ।
जान सुजान मोरे मनको भवतुवा कहा
हम तोरी चेरीरे ॥

१२

मारी रे मारी हन पिचकारी भरभर मारी ।
हौंतो लाजनमें भींज गईरी ए
गुइयां एसो ढीठ वनवारी ॥

१३

दानरे मागे मदसन श्रबहो ढीठ लङ्गरवा
तोरतार डारी सेहरवा ।
नेक नमाने कहनो वरवस झगरो ठाने
मानत नाहीं मिदुरवा ॥

१४

श्रच्छा गुणवन्ता सइयाँ राजेन्द्र माने
श्रालो जाई जेहो होरजा ।
रङ्गरसरी तान रिझास्या जासो नौके गाय बजाय ॥

१५

उदतनदिरनादिरनादीमताना ।
एवन्दगी वाय पैङ्गवर जौन्द गोम
जुर नेस्त बुजुरगो श्रकल नव साल
ताम ग्रीव वदल सनव माल दीदीमतननताना ॥

१६

कान्हा बातो कहूंके दिन बड़े कहूंके राती ।
गङ्ग मिशन छुप लुकमो तासानु
कौनकानो इच्छा चाती ॥

१७

याङ्ग डग मग डग मग डारे याङ्ग न श्रावो ।
पार खड़ा पीउ वार पुकारे नही श्रावो ॥

१८

माछिदी में मछि होइ बेझली वजाय जिन्द
खसले तोही ।
कधी हसो कधी रोई जित वलमाडे
रित वलमुड़ सो मछि मोही मोही मोही ॥

१९

राँझणा नैना दाता रा ।
श्रनो काम नाहो है कामण सइयाँ
श्रखो श्रखो वखो श्रादा सारा ॥

भोग विन तारे कुंतन जरन पादा तारण
वेखदातारा प्यारा वेखणह्वो रवेखि लावन कारण
छड़ आयो तखत छभारातो ॥

२०

वेको माता देवा कोठे गइला रेवेका
भाजा शङ्करा कोठे गइला ।
वम् वम् वम् शङ्ख वाजे सो मुद्र चामेंड़ो
शम्भूजीके शम्भुनन्दन लटपट मैणावे ॥

२१

प्याला मुभ भरदे टोवे मियाँ ।
दोस्त त्यारे मारे दोस्त प्यारे दोस्त
चतुर सुदोस्त ह्मारे प्या० ॥

२२

आयाहो मारुड़ा माहन आया ।
वाँकोइ जोड़ा थाँरा वाँ कोइ वोड़ा सेजड़ीयो रङ्गलाया

२३

वहादुरो खानडो रङ्गमाणि ।
एहों खान तेरा चिरजुग जीवे साहनिवाज रङ्गमाणि ॥

२४

हजरत निजामदीन औलिया माई ।
निशदिन चिराक देहलो खुसरो अमीर वलि वलि जाई

२५

अवतो कहूंन जारे पिउ नगर पराए ।
ए बतियाँ तुम मोसो करो जिन तुम काहेको
देत डराए ॥

२६

अधकवा जियरा लुभानो सुआवा गानोके लागा ।
याछवि देख वावरो भई है वनरा वनीके सङ्ग जागा ॥

२७

एक दमड़ो देहो बुलायके नियत नाम रजाय खुदा ।
याजसवा तोरा अरस कुरसमें भइला
नियत नाम रजाय खुदा ॥

२८

आज रङ्ग मोरी माए रङ्गहै सजन मिलावरा
आनन्द वधावरा मेरे घर ।

निजामदीन औलिया जग उजियारो
जो मागो वर पर सनेह आज वर ॥

२९

राज मैतो तेरीयाँ राज मैतो तेरी वातड़ीया
पहिचानी वो गुमानीडा ।
ह्मे तो थाँरो दासी सायवा जनम जनम
रो थाँसो लागोछे ह्मारो प्राणड़ा ॥

३०

याइ दरवाजवा माई ठाड़िलो दरवानु
वातन के चरण वाला जान देमाइ वा ।
नवीय महम्मद के सङ्गवाले चलोगे
मोरो वहियाँ पकर वाहरे साहवसा भेटवा ॥

३१

अति वैरन ननदीया मोरोरे अरे मोरे पाछे परो रहत ।
मुड़ मुड़ पियाकी वाते सुनतहै वात सुनत सासू सोहत ॥

३२

लेतो ह्मारो खबर न लेवी आमोहि वालियाँ ।
करकन कपाल कोई वासो हर कालेनो वेशवा
सुरझाई तेरीया ॥

३३

महम्मदसा पातसा आज हम सन तुम सन
भेट भइ कजवा असवा चौंक पूजोले ।
जीवउ जागउ कोटि वरसनो भेटवा तुमरे
कायम दायम रहो सदारङ्गके मनके चित पूजोले ॥

जौनपुरी टोडी—होरी ताल ख्या०बा० ।

मूलन लेदा मेड़ोया सारा ।
सेज फुलादी रतवाजूंदी टुक मेनु छोड़ तुपक तुपक
कुका भारा ॥
लोग वेले सुहले विच्चो रङ्ग रलोया करदा नित उठना
लमेहो देले दाव हारा चटपट
चटापट नैना मेंड़ेहो डेरो देरत दे फुहारा ॥

२ ॥ अभी० ॥

सु अब रङ्ग घुलोया माए सजन मिलावरा भइला ।

निजामदीन औलिया सुख आनन्दसो हेला
माए जनम जनम दुख भुलिया ॥

३

यारे मनवे यावेया यारे मन गरलो
आई न जरे कुन्वर मन जाने मन ।
देखे चैन अन देखे चटा पटी कौन्से
कह्न यह दुख जाय यारे मन ॥
नेह्नरे रूमस रस्ता अमदर इशक तोराजी यम्बर
जायतो अए साहवे मन जाने मवाग बहारे मन् ॥

४

यूंसफे दरकारयबा दारम् ।
या पशमे वरम् आआ अए जलेषा हिम्मते
गोया यादरीवाजा वाजानेस्त ॥

५

एरी पिया मोरा कचनसे सोहागा मै मोहागा ।
वोमे में में उनमे रमरहो जों कर मेंटी रङ्ग लागा ॥

६

मेदनी सब आइलो सुन उरस पीरका
ख्वाजे कुतव देहरी ।
शेष मशायक औलीया वन आए
नवीहै रसूल सन रङ्ग वनीला हाकर
रहीम एसाहव हुलसन नजर वमिलिया
एस दरवाजे दरव मेलोया मे ॥

७

मगवा कटोले और कोसकोस नदीया हों
कैसे कर जाऊं या नगरवा ।
गौड़वा पिरानो और अत आयो
भानु दुवर भइला डगरवा ॥

८

सो अरो माई भुमक खेले राजदुलारो ।
सुघर मालनीया गुन्ध गुन्ध लाई बेला
चेमेलीके हरवारो ॥

९

झनन झनन वाजे पायलिया
राजदुलारी डोले आङ्गन वाइ ।
मन मत वारो मतवारो हिंडोरे नैनन छवि
अति छाजइ ॥

१०

(कहरवा)

एरी डफवा वाजन लागे निकस आइरे ।
सब ग्वालवाल मुरलोको धुन सुन मोहेरी
ब्रजमें सब द्वार द्वार निकस आइरे ॥

११

सजनोरी कहा जाने जाने तोरे लोग घरकई ।
खोल किवरीयाँ लेहो ललन कहो वर
मैं हात पकर पायनर परके गई ॥

१२

प्यारे मोरे सुनो नगरोया कोनो
अव भलो मोरी सुध लीनो ।
तव लगे सुखदिन अव लागे दुख दैन
प्यारे मोरे गौर मथरोया कौनो ॥

१३

ख्वाजेजो एसो बड़ो पोर अजमरी
दाता सकल सृष्टिसो वधावा ।
झिल मिल मिल झालर झलके चन्दन किवरोया
पोर कोरे जग मग जग मग जोत सवाई
मगर होल बारे गजवा ॥

१४

रातके अलसानेरी नैना से जरोयां नहो मानेरी गुइयाँ ।
मोरा पिया एसो मद ठरकावे गलोयन
धूम मचावेरी गुइयाँ ॥

जौनपुरी—एकताला

छब तेज महोम रात वसेती वना आयारे ।
लाड्लो वनोका वनरा सुघर वन वना व्याहन आयारे ॥

२

माय कहे मोरा लाडला वना मेरो
हकरोया भर पायारे वना मुरादो पायारे ॥
हाथोको गज मोर केरे भाइयाकी जोरीयाँ
जोरके रे व० सु० ला० व० छव० ॥

लाडोका वनरा आयारे सुघर बना जगाई ।
एलाडोमें नीद गवाइरे सो मैने मातो पाइ
आज मोहाग की रैन जगाई ॥
लाडो मेरी तन केसरीयाए सुचन्दन
भरीया पाय परो गर लाग रहुँगा आई ॥

४

ख्या० त्रा० ।

आवो आवो आवो आवो आवो हो
रनझेटा मुस्क लपेटा गारवो तेडो
लटका पर जिंटकुरवाई जिंटकुरवाई
होर दिम्रानो देमानो गुमानो दिलवर-
जानो दिल जानो ॥

५

(हाफि)

आमिए जरद किमो रागीए आलमवा ओस्त ।
चश्ममे गुलवे खंटा रूप खुर रंवा ओस्त ॥
गरचे मीरी टहना बादसाहा नन्द वले
अमले माने जमानस्तके ख्वातंवा ओस्त ॥

६

टोम टारानानद्रद्रनातंद्रद्रद्रनातादानी आहे
आनाद्रद्रना७टानोशाहम् जे रङ्गे
रुयतो निमवत् कुनम् बगुल गुलगुल सवद
जेगरमे रूवत् चुं चराक गल ॥

कवाग०

बागीकी कहूंके सोभिकी छवकी कहीय न जाय ।
तखत बैठे साह औरङ्गजेव मौरे नैनन रहिए समाय ॥

८

अए आ दोस्त तनदिर तनदिर तनदिर
तादीआतन दिरतादीआतननदिर-
तादिआतादानी उदनतुं द्रद्रद्रनांन तननाआदानी ।
होस मनमु साहवा खेसाँबुरदंद
ईकजकल हामु नूपरे शाबुरदन्द ।
गोयद चरातु दिल वखुबां दादी
वल्लाहके मन्‌दादं एसा वुरदन्द ॥

अस्थाई सुल० निजा० अन्तरा अमी० ।

वधावा आवो गावो मोहलरा खुसरो लोग बुलावो ।
कोटवा कोटवा टौयरे बाक निजामदीनपीर मिलावो ॥

१०

कबीर ०

डग मग डग मग जेउलो उनाउ ।
पार खरापो उमदइरे बुलावे वाव वहे पुरवाउ ॥

११

वेलोत् आव जव जोवे सांइयाँ आवड़े ।
वोयार नेड़े वेखगाहे कारण लगी उभे साहड़े ॥

१२

चांटड़ोयाँ अँखिया मैडड़ो चुक लग गईयाँ
सुतीयाँ पुनु देसाथड़े ।
लड़ सधाने तांउ घड़ गइयाँ किकुर दिहड़े विहावड़े ॥

१३

गंभरणा सोनाल चूक भुमर पाई ।
हावो मैंउा दिकत साड़ड़े हथ असाड़ डोंगली टेवाई ॥
भावा प्यारीयाने नाथें नैना मिलाई ॥

टोडी जौनपुरी—तिताला (कवीर०)

धाय धाय धुम वाजोलो मन्दिला वाजोलो
मोरारे साजनघरका जुमाए ।
धिधिना धिधि किट धुमकिट धिधिगन धिधिगन
धांधांधां धावन परमानसो गत लेत परण
अत सुहाए ॥

टोडी जौनपुरी—ताल एकताला

हों नहीं जइहों तोरे देश सुन्दर तूतो
तुरफा हों वामनोरे ।
एक निठुराई छाड़दे मोतन अब हों तो परहूं
तोरे पायन लङ्गररे ॥

२

कगवा बोल ले माई अरी वोतो याइ अगनवा मैं डोले ।
पियके आवनको भनक सुनिहै कैसे कैसे घुंघट खोले ॥

मयाके पाँव धरिए माए बलमा मोरे
गुण औगुणकी चिन्ता सबही विसारी।
हाँतो तिहारी जनम जनमकी इतनी विनती सुन
लिज्यो मोरी सेवा करो में तुमारी॥

४

याहु चितुश्र चिन्ता माए न करिएरे
होनी होय सो होय।
करम लिखा सोई पाइएरे मेट सके न कोय॥

५

दानो इ दानो काहे बाह्न जनमो हम तुरका सङ्ग
काहे भइलो।
हम तुमरा मुराद पूजाई ए भला सुन्दर सूरत
निरखत कवना रहिलो॥

६

दमीके वेतु रवद जिन्दगो नमे समार।
वियाके खुन जिगर मेंरवमुजि चस्म तरवार॥

७

पइयाँ तोरे लागी रहों जब सुध आवे मोंको तुमारी।
जनम जनम सुख पाइला मोतन अदारङ्ग
सुरजन सइयाँरी॥

८

चन्दोड्या इस्क अनी मेंडे गलपया।
हसन छुटदा तेखेड्गा छुटागें दियागे
दिया जुसागल गया॥

(भोग)

जो जानदी मैंनु पोषण मामलो जासे मैंड़ी हया।
अनो अनो अनो मूलन रखदो चके तेनु जेहे
मैड़ा दिल मुलया॥

९

ख्वाजेजीको नोवत बाजे बाजइरेए दरबारवा।
हाजती आवे मुराद पावे हारे पूजलो मनसा काजवा॥

भवानी दयानी दयाकर अपने सेवक पर
तोय ध्यावे संसार।
अष्टसिद्ध नवनिद्ध देत सबनकों गुणनको अपरंपार॥

११

आज रङ्ग लागिला लागिला रे।
साजन मिलाव राव मिलवा सोबड़ भागन
पाइला गाइला बजाइला।
सब सखी जन मिल सदारङ्ग वर पाइला॥

१२

रातके अरसानि लङ्गरवा सेजरीया नहीं आयो।
काहू कलवरीया मधसेंककायो मन्दर काहू विरमायो॥

१३

मोरे पिया मोंसे ना बोलि कहाली करो कित जाऊं।
है कोई मोरा पियाको मिलावे विनती कर्हूं
परहूं पाऊं॥

१४

अबमें कैसे मिलहों अपने पियांसन ज्यों ज्यों
मनाऊं त्यों रूसोइ जाय।
सुनियोरी मोरी सखी सहेली पिया बिन
कछू न सुहाय॥

१५

सुरजन मोरे कैसे आऊं तोरे पास पायलिया
मोरी बाजे झनक मनक।
देखहो ठाड़ो पार परोसन करहो चवावए प्यारे
रतीयाँ होवन देरे तनक॥

१६

नवरोज तखत मुबारख होवें तुमकों महमदसा
जुग जुग नित नित जशन नयो।
विकामें तो वरदाहमाकार उस खुदविन्द वेतो
निगेदार तो नयो॥

१७

हिन्दनी कबहूं जनन कहोरे तुरका सङ्ग
तुरकानी भइलो।

हमतो मुराद मुराज पूजवनहों अरेबल सुन्दर
मूरत निरखत सुध न रहिलो ॥

टोडी जोनपुरी—ताल सवारी

अबमें तोरे सङ्ग माती हूंरे ।
चुन चुन कलीया सेज बनाउं निजामदीन
औलिया सङ्ग राती हूंरे ॥

२

जाही देश मोरा पीउ बसे मा हों वलगई
वाही देश के मा ।
नेकहू नमिले मिलाय हारे मैं अब नहीं रहिहों देश
पिया विना घड़ी घड़ी पल पल रैन दिना ॥

३

मलया भूम रह्यो मोरे शोके वैरीयाँ ।
हरे हरे पतुवा लूने लूने लागतही वाही के
तोडले धनही धनवा ॥

४

अरे अरे वीनी आओरे ।
वनरो सो रङ्ग लगाओरे ॥

५

अधर चन्दन घसीले पुरो सखियाँ आज मोरे आइए ।
रसलावन गुणवन्त जुरमिल सखियाँ इन सेजरीयाँ
बनाए साहजहाँ पिय अङ्ग अङ्ग सुख पाइए ॥

६

चुनरीयाँ अब देहो रङ्गरेजवा ।
सो बांधनु एसो बांध सीँस सोहै निरखि पियकी
पचरङ्ग पाग ककरेजवा ॥

७

बनी ले घर आया बना जोलो गुञ्जन वही साजन
वनरा व्याहन ।
चोक पुरावो मृदङ्ग बजावो दुलहे दुलहन अब
साजन बनरा व्याहन ॥

८

आज बाजे मन्दिलरा ख्वाजे मोनदीन घर काज
सब सखियन मिल चवर करे पलकन सोँ मगझारो।
हजरत ख्वाजेको विनती करो अपनो जी वारो ॥

फरो०—खमसा

पातक पतीयाँ लेजावो पिया सने मोरोरे ।
हाहा करूं पइयाँ परूं विनती करूं में तोरोरे ॥

अमी०—मुरमा

मुहैयर सलोनी कुड़ीए एहाँ ए सलोनी कुड़ीए
यला यला यला लले ।
अखड़ीयाँ रतनालीयाँ वाल वाँकड़े जुड़े वालीयाँ ॥

मुहै० औ० फरो०

बना नीँदका माता सो प्रेमरस पागा सेज हमारी
हो आवे ए हमारोही आवे ।
लाडो से मान करेदा अनोहावना से मानकरेदा
अबे लटकेदा मोहे भावे ॥

२

(खमसा)

बने लाग गरे बनो के लाग गरे बने लाग गरे ।
आज मिलावा कन्यसोँ सखी ए सब जग दीजे
वार याहन वले रातरी सरफा आपन तन वार डाररे॥

३

पल घटकों सुख लाग रहेगो भूल गयो हो नन्दलाल ।
सदारङ्गीली कुंजनको शोभा कहांलो करोगी
यह ब्रजवाल ॥

४

दोल तोरा जवांही फजल करम बादशाही ।
कादर करीम रहीम रहम तोवर इलाही ताज
शिर देता जमूल कवर सहर माहीं ॥

टोडी जौनपुरी—झपताला

माई आज आवो गावोरी वधावा जम जम इसघर काज।
अपवर तपवर हासो तकतकर दीवान बुदरदीन
पीर प्रथीपतको बस करो राज मोपै सदाआज ॥

जौनपुरी—तिताला गान्धार

सो अबमोरे कन्या अबनको पल छिन मोरे
सङ्गहू लागे ।

नेह लगीलो तुमसे मोरा सुघर मह्म्मद सा लगन
लागिलो अङ्गवा पागे ॥

जौनपुरी—जलद तिताला

रे वटोइया जात मेरो मन हर लीनो ।
घरको और विसर गई गोहन न जानू किहि कोनो ॥

जौनपुरी—तिताला

अबतो कहूं न जारे पिउ वगर पराए ।
ए बतीयाँ तुम मोसों करो जिन तुम काहे को
देत डराए ॥

२

एरी बादर गरज रहे अरे मोरा कन्या घर नहीं आए।
निश अन्धियारो कारी बीजरी चमके मुझ विरहन
को अतिही सताए ।
मोरवा करन लागे शोर बरसन लागे घनघोर
विरह सजाए ॥

३

वेदानावे किकर आँवदे दिनराती ।
इस जवाने दीवे गल सुन जामी भावदा नही
और सङ्गाती ॥

४

नौरोज अबहीलवा शुभ घरी शुभ दिन बैठे तखत
मुबारक हजरत औलिया वलि सादीन पना
भइलो जगत आनन्द दरबार ।
साहसाहनके शिरताज दीन दुनीके सरम काज
नरनारी गावो वजावो ।
तो ऐया३ ऐयातन उदन तुं तनुम् तकात कात
कदि गदि गदिग भननन वाजोरे मन्दिलरा वाज ॥

जौनपुरी—तिताला

मै कैसेके आऊं अपने घरवा दुरजन लोगवा
कहत है ऊंचे नीको इऊं कैसे जाऊं ।
ए मोरा जियाते वस कर लीनो पार परोसन अतिही
चवावे राज करिहों ननद को ढिठोनवा रे
राजा एसो ढीट लङ्गर गरे लागने दे में आऊं ॥

२

मेरे वैरागी भए हो नेना तेरे दरसके लोभो ।
लोक लाज कुल कान तजो है तेरे चरण चित शोभो ॥

जौनपुरी—ताल सवारी

कैसे के आऊं पिया तोरे पास दुरजन
लोग करे हास ।
एक डरहै मोहे सास ननद को री दूजे सौतन के वास ॥

लाचारी टोड़ी —तिताला

आनन्द वधावरा रे चलो आय हिल मिल गाओ बजाओ।
एकते एक सरस भातन तें रङ्ग भाव करे
नन्दरायको रिझाओ ॥

२

पातकवा रे पतीया लेजा तोरे परीहों पांय ।
इतनी विनती सुन लीजे रहसन जोवनवा पोको बुलाय॥

३

मदवा भर ल्याऊंरे कलरीया जो मोरे पिय घर आवे।
मोको भर ल्यावोरे कलरीया रहस रहस गर ल्यावे॥

टोड़ी —आडा धीमा तिताला

वचन निभाइए प्यारे ए सुरजन चित धरिए
करिए निहाल ।
एरी प्रहलन हो नीके जानत तेरेही आलवाल ॥

टोड़ी—धीमा तिताला

धिति लीति लानाद्रद्रतुम् तनुम् यललीय
ललीयल ललललले ।
नाद्रद्रनाद्रद्र दानोतुम् तननननन ॥
धगड़तक धगड़ तकधुम् किटकिटतक् तकड़ धाधा
तान धातिधाधा गतिटि धागे ॥
दिगीना गकिट् किड्नक तानधातिकड़धाता
धाधीतानधाधा ॥

टोड़ी—तिताला

तदीम्तनन तनदिरनातनदिरतदानी धाधा किटतक्
धुमकिट्तक् धुमकिट तक्धि ताकटतक्दिधिना
कड़ान् धुमकिट तक्नगदिनधा ।
नाद्रतनुम्तननउदतननननननारे तारेतनद्रद्रतननारे
तननारे नितनुम् धाकिटतक् धुमकिटतक् धिताकिट
तक् घड़ान्त घड़ान् धिधा धा किड्तक् ॥

टोड़ी—लाचारी

रे मन लाज न आवत तोहि वृथा दिन रामभजन
बिनु बीतत ।
मोह उदधि मह मगन भयो तहँा चिन्तालहरी
न लीतत ॥
श्रवणमें उपदेश कियो गुरुनहो सो वचन प्रीतत ।
ताहि बिसारी कामके फंदन पर्यो लोभ तोहि जीतत ॥
स्वामीसमरथ अतिदयाल प्रभु तेंहो चित
दे नहो चीतत ।
जाको शरण अभय पद पावत यम किङ्कर नहो भीतत ॥
जासु चरण सुमिरि सुखसागर भरत न कबहूं रीतत ।
लछनदास वेद यश गावत युग युग सुयश विनीतत ॥

टोड़ी—तिताला

तरणतारण तुंही अग जगमय तुंही अगम निगम
तुंही व्यापक तुंही अनन्त ।
चर अचरमय तुंही पवन पानी तुंही गुप्त प्रगट तुंही
तुंही निरगुण सगुण अविचल चल आदि अन्त ॥
अबल सबल तुंही स्थूल सूक्ष्म तुंही रजनी दिवस
तुंही सूरज चन्द तुंही तुंही अब अतङ्ग ।
लछनदास नाद तुंही वेद गावत अनुभव भव तुंही
आवत जात तुंही धरणी आकाश तुंही
ध्यावत जेही सन्त ॥

टोड़ी—बहादुरी

तो समरथ साहेबको दिन दिन शरण परेको
अब लाज मेरो ।
विधिहु न लिखी भाल तनक भलाई मोरे तापर
छिन छिन कुमति रहत नित घेरो ॥
मोहपाश बान्ध्यो अङ्ग अङ्ग रचि रचि अपर
पगन परो कठिन माया बैरो ।
लछनदास मन्दमति गति नहीं जानत याते
भुलान्यो मन एते दुख महाराज राम सखे निबेरो ॥

टोड़ी—तिताला

कौन कौन कोमवनि गलिए गए रावरे नामके ।
अधम कोटि कोटि लों तारे कहालों गनाऊं
कहु बड़े केहि कामके ॥
जुग जुग वेदनमें महिमा यह पहु चावत हरिधामके ।
लछनदास छूटे जनम मरणतें अन्त कहे यह रामके ॥

लाचारी टोड़ी—तिताला

एरी कौन बानो परो मेरो आलो बिनु देखे नहीं चैन ।
बासर असन वसन नहीं भावत नींद न आवत नैन ॥
औचक देखो जात वृन्दावन दीरघ पङ्कजनैन ।
लछनदास देख नटवर वर सुन्दर मूरत मैन ॥

टोड़ी—तिताला

मति मन्द मूढ़ मनारे क्योंन रसना राम रट ।
जगत्कारण मुक्तिदायन जनम कोटिन पाप कट ॥
ईस अज सनकादि नारद जपत चारो
निगम जप अरु शास्त्रपट ।
दास लछन ज्ञानदृष्टि विचारि देखो
रमि रह्यो है सकल घट ॥

२

दिल लगा तेड़े नाल नन्दकुमार ।
तेड़ो सूरत वेख वेखे दिल विच नहि रहदा करार ॥
लाज निगोड़ी गुरुजन विच घेरे को गल
आंखा सिरदा भार ।
लछनदास सुझनू चैन न आवे नैन माहो
आंसुले जारजार ॥

३

कन्हैया प्राण मोरे घेरि लै आवो गैयां ।
वेगि जाहु वन देरन लावो सखन सहित दोउ भैया ॥
सांझ होत घर तुरत पधारो अबहि बहुत लरिकैया ।
लछनदास यह श्याम मूरति पर बलि बलिहारी मैया ॥

टोड़ी—ताल बहादुरी

कुञ्ज कुञ्जमें आली उठत उदोर मोर चातक पिक करत
शोर चहुंओर भँवरनको भीर मनभावनो ।
लपटी लपटी रहि ललित लताई तैसो
तरुण तरुण मानो रसरीति उपजावनो ॥

कबके निहोरत लछनदास आसपास तेरी
तो अनोखो जवान अनखानो।
मिलिकर रहिए विलास हास जिय दुखत आई
वसन्त रितु सुखद सुहावनो ॥

देशी—तिताला

मन्द महामूढ़ अज्ञान कूर कुटिल अवतो
शरण राम रावरे निवाहे बने।
अधम निलज्ज खल कुमति कमायो अघ आपने ॥
के जानत अन्तरजामी घट घट कहालो गनावो जु
पाप आपने ॥
गनिका गोध गज अधम अजामिल कोल किरात
पशु आपही सुगति दीनी आगम निगम भने।
लछनदासकी वेर हेरीए क्रपाकी कोर सुन्यो
कबहूं मेंने ॥

टोंड़ी—तिताला

बिहारीलाल को विहसन हँसन बोलन
मेरो मन कर बावरो।
ठमक ठमक धरत चरण थरर धड़ कंपे
छकित भई रोम रोम थकित भई बावरी ॥
लछनदास तरफ तरफ खञ्जनद्रगन सो
लागी उरझावरी ॥

२

जोवन मदमाती ग्रहमें डोले सुख
संपत सो छतीयाँ खोले।
यह लगवा लाल गिरिधर छबिरूप रसिक तन तोले॥
नेत्रन सुनसो देत वानी हँस हँस कर घूंघट खोले।
बरनी न जात ब्रजनिध छब तेरी गांठ धुली गठ खोले॥

३

निरतत है पिय प्यारी।
रासमण्डल सङ्गीत गत लेत सुन्दर बनवारी ॥
तत थेई थेई थेई तत तत तादिगिनग४ झिगिनग२
थोलाङ्ग थोलाङ्ग देदे तारी।
बजत मृदङ्ग तता धिधि थुं थुं ताना किटतक
त्रकट तक् भ्रिकट तकधा परण परत सुखकारी।
राग रङ्गसो मुरली मधुर धुन तुंही राधे
तुंही राधे राधे सहस्रन गोपो निरतकारी ॥

४

काह्न कांधे कामरी हाथ लकुटि लिए गैयन घेरे हो।
वृन्दावनमें धेनु चरावे धोरो धूमर टेरे हो ॥
वंशी बजाय रिझाय लियो मन जहाँ तहाँ
बन बन फेरे हो।
सूरश्याम त्रिभुवनपति मोहन पीताम्बर फेर हेरे हो॥

५

आवतही यमुना भरे पानो श्यामवरण काह्नको
ढोढा निरखि वदन घर गैल भुलानो।
उन मोतन में उनतन चितई तबही तें
उन हाथ बिकानो ॥
उर धक धकि लागि तन व्याकुल मुखसो
फुरति न वानो।
तब कह्यो मोहन मोहनी तू कोहै या
ब्रजमें होमें पहिचानो।
सूरदास प्रभु मोहन देखत जनु वारिध
जलबूंद हिरानो ॥

६

भक्त हेत अवतार धरो।
करम धरमके वसमें नाहीं योग यज्ञ मनमें न करो ॥
दीन गोहारो सुनी श्रवणनि भरि गरव
वचन सुनि छूटे जरो।
भाव अधीन रहो सबही अवरण काह्न ते नेक डरो ॥
ब्रह्मकोट आदिलों व्यापक सबको
सुखदे दुखही हरो।
सूरश्याम तब कहि प्रगटही जहाँ भावत हाँ ते न टरो॥

७

बड़ी है कमलापतिकी ओट।
शरण गए ते पकरो न आये कियो क्रपा को कोट ॥

जाकी सभा एक रस बैठत कौन बड़ो को छोट ।
सुमिर नाम अघे भवभञ्जन कहा पंडित कहा वोट ॥
जदपि कालवलो अति समरथ नाहि न ताकी चोट ।
परमानन्द प्रभु पारस परसतै कनक लोह नही खोट॥

८

जापर कमलाकान्त ढरे ।
लकरी घासको बेचन हारो ता शिर छत्र धरे ॥
विद्यानाथ अविद्या समरथ जो कुछ चाहै सो करे ।
रीतै भरे भरे फिर ढोरे जो चाहै तो फेरि भरे ॥
सिद्धपुरुष अविनाशी समरथ काहू तैं न डरे ।
परमानन्द देढ़ मन सँपति यातैं कछू न टरे ॥

९

ए मेरे मन नैनन रोम रोम मधं कृष्णही रम्यो है ।
कहूं बेचत कहूं लेत गोपाल गोरस सो घर घर
फिरत विकात जात कहूं नीको नेह जम्यो है ॥
गोकुल प्रेमकी पैंठ सुहाई जहां जगजीवन
एसो भम्यो है ।
आनन्दघन अचरज रस शिव शनकादिक शेष
शङ्कर गिरिजा सीस नम्यो है ॥

१०

रे मन जब लग पिण्डप्राण तब लग जग नातो
सबहीन सो व्यवहार ।
जब लग जिए तब लग हरिनाम लीजिए राग रङ्ग
कीजिए यह तन मन नैन प्राण जात न लागे वार ॥
वालापन तरुणापन और वृद्धअवस्था
पुनि पुनि जनम मरण होत संसार ।
तानसेन करले ध्यान विश्वंभरको
यही पूंजी यही जमा यही है सार ॥

११

जाँसो बनआई प्रीत की रीत तासो
क्योन जाई रितमानी ।
एती दुराव कत करत प्यारी एबातें तो
सब नीके जानी ॥
एतें पर आवत उत्तर बनावत खिजावत हो यातें
चतुर सुजानी और न जानतहों निपट अजानी ।
साह अकबर पिया तोय परसत मागत यातें
विनती करूं आनन तनकसी भौंहें तानी ॥

टोडी—चौताल

गे जाको योगी जपत जगत जपत ऋद्धि जपत सिद्ध
जपत ऋषि मुनि गन्धर्व्व जपत आवत नहीं ज्ञान
ध्यान मत गत अपार ।
चन्द्र सूरज इन्द्र जपत, अग्नि पवन पानी जपत
पण्डित गुणी ज्ञानी जपत भूपत नरनार ॥
सती सुर सन्त जपत, पंच्छी जिय जंत जपत
सबही उर अन्त जपत कर कर मनुहार ।
रूप रङ्ग चरण शरण, सङ्कट दुख घोर हरण
आनन्दकन्द दीनवन्धु दशरथसुत रामचन्द
पतितनके तारवेको धारो अवतार ॥

टोडी—तिताला

रे मन कृष्ण सुमरण कररे ।
अघहरण दीन धरन कीरत विस्तरण
निस्तारण जगतको नाम प्रगट कररे ॥
अरे जिन कंस केशी शंखासुर
तारे हरि भेद तन खउर उदररे ।
चतुरभुज शङ्ख-चक्र-पद्म-गदाधरका रायन
गज ग्राहन छुड़ाए भक्तन काज
साज नरसिंह-वपुधर-प्रह्लाद उधररे ॥

टोंडी—ख्याल तिताला

सुरजनु तुम जावो पइयाँ परुंगीरे ।
तन मन धन तुम पर वारो हाहा करूं चरण धरूंगीरे ॥

२

सोए जान तेरे कारण सबनको बोली ठोली जो सहीरी ।
बातें ए सुनाई कौन कौन लरे एसी कोन बात कहीरी ॥

टोंडी—सवारी

सो व्याहन आया रङ्गभीनो वागा गल सोहेरे ।
राता माता रातका सेहरा सीस बंधायोरे
रहस रहस बना बनरी ने हल गायारे ॥

२

गोविन्द गोपाल गरुड़गामी
गोपीनाथ गोवरधनधारी गोपमनरञ्जन।
वंशीधारी गिरिधारी कुञ्जविहारी वहुरूपधारी
कंसारि मुरारि गर्व्वप्रहारी दुष्टगञ्जन॥
मधुसूदन माधव मथुरापति मुक्तेश्वर
मनभावन दुखभञ्जन।
वासुदेव विठ्ठल वनवारी वद्रीनाथ
वौधरूप विष्णु तानसेन भक्त मनमञ्जन॥

३

निति आवै नन्दको छोहरवा मुरली बजावै
मोको रिझावै टौड़ो गावै मनही मिलावै।
श्यामदास मोहि वाहीको आस लगी रहत घरी
पल छिन निश दिन विन देखे नहीं चैन सखी मोहि
वार वार वलि जावै॥

टोड़ी—तिताला

एरी तेरो भाग बड़ो तू सबनमें पिय मन भाई।
देख तेरे रूपको रीझ रहे निश दिन छूटे लगाई॥

२

मेरे बबा के हो दामोदर भैया तेरो मैं लेहो वलैया।
इतनो मागतहो अलह महमद पै कहन
चतुर ललैया॥

टौड़ी—धमार ध्रुवपद

पिय के मन नैन न भावै भावै तेरो वदन नीको।
तेरे रूप रस एसे वस भयो प्राणपति
जो न चाहि आनन काहु तियको॥
रूप जौवन तोहि दीनो करतार
बनाए आली आनन्द सब जियको।
प्रभु विलास नवललाल रिसान लेत
पठई आनन्द सकल तियको॥

टौड़ी—तिताला

मो विथा सुन सखीरी मोसो बात कहि गए
आवनको अजहूं न आए लाल दरद जाय कासे कहों।
दिनते रैन भई रयन ते दिन भयो देखत पैड़ो
एसे सुनो ग्रह उन विन अदारङ्ग मन कासे कहों॥

२

दमदम मदार लाड़िले ख्वाज पीर मेरे
तिनको विथा दूर करो निहोर।
ख्वाज मौतदीन कुतवदीन तुरक मान
राखले तुम अपनो ओर॥

३

दोमवोंदनतननतनदेरनादोमवोदतननतनदोदोता
धिरिकिटतकधुमकिट तक् घड़ान् किडनग तिरकिट
नगदीत धुम्‌किटितक् घड़ानकघड़ानघड़ाकिन
कतिरकिट नगदित धुमकिटितक घड़ांधोधा॥
ओदनउदतनतननदिरनदोम्‌तदारधितोलेतिलाना
केदोमतकनगतिरकटतकधुमकिटकिटतक्
दोदोगननगदोधा॥

इति श्रीअमरानन्द व्यासदेव तस्यात्मज श्रीहीरानन्द व्यासदेव तस्यात्मज
श्रीकृष्णानन्द-व्यासदेव-रागसागरोद्भव सङ्गीत-रागकल्पद्रुमे
टोड़ी देशी-जौनपुरी लाचारी आदि सम्पूर्णम॥

अथ गुर्जरी

श्यामा सुकेशी मलयद्रुमाणां
मृदुल्लसत् पल्लवतल्पमध्ये।
श्रुतिस्वराणां दधती विभागं
तन्त्रिमुखा दक्षिणगुर्ज्जरीयं॥
धनिसागरेसानिधपमगरेमा।
मधनिसामधगसासानिधमगरेसा॥
सगरे गुणोन साधा राग पारन पारा।
धन धन सोनर राग मनधारा॥

गुर्जरी—तिताला

सुमर सुमर मेरे मन रामनाम।
राम राम सुमर सुमर मन धर धर
मन सगरे नर सुरधाम॥

गुर्जरी—चौताल

ए आज भोरही आएहैं कान्हरे गुर्जरो के धाम।
सप्तसुरसो गावत तानन मुरली में गुर्जरी नाम ॥
उरप तिरप लाग डाट आतक खातक स्वरान्तक
ओड़व खाड़व मो रिझावत वाम।
तानसेन प्रभु नित प्रति आनन्द देत
घरघर गोकुल गाम ॥

२

आदि परब्रह्म देवन देव नारायण
निरञ्जन निराकार सोई साकार।
वाहीते त्रइलोक रचना रज सत तम पञ्चभूत
वाहीते अट्ठाइस तत्व जगत पसार ॥
वही आदि वही अन्त वही चराचर मध
भरपूर रहो संसार।
बैजू प्रभु करे सो होय करता अकरता सकल
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड एक एक रोम प्रति ताहि
भजो वारंवार ॥

३

अदभुत अनूप रच पच कर विचार नादमन्दिर बनायो
अनेक भांति वहुप्रकार त्रइदेव मिल ता मध
उनञ्चास कोटि तान अच्छर अस्थान पायो ॥
सप्तसुर मीढी तीन ग्राम खण्ड कीने सुरकना झरोखे
राखे दुरन मुरन् ताके बंदो सुरत सायवान
आगे ज्ञान खंभ अचल अस्थल कर जमायो।
ओड़ो खाड़ो पूर्ण पुस्ति वान रङ्गत अस्तरकारी
तान गरदश हाता सुर ताल शुभ दरवाजे लगायो ॥
उगत जुगत कुफल कुंजी शब्दकी जंजीर लागी
लाग डाट चौकीदार कण्ठ राग राजा राज करायो।
रागिणी पटरानी उपराग खवास आसपास
मुरछल पंखा हिलावते रागरूपरङ्गको समाज
सान सुघर धुरपद सुध मुख गायो ॥

४

मकरकी सङ्क्रान्त कुम्भ मीन मेष वृष मिथुन
करक सिंह कन्या तुला वृश्चिक और धन।
माघ फाल्गुन चैत वैशाख जेठ आषाढ़
श्रावण भादो आश्विन कातिक मृगशिर पोषगन ॥
प्रतिपदा द्वितीया तृतीया चतुर्थी पञ्चमी
षष्ठी सप्तमी अष्टमी नवमी दशमी एकादशी
द्वादशी त्रयोदशी चतुर्दशी पूरणिमा भन।
रवि सोम मङ्गल बुध बृहस्पति शुक्र शनि नामलेत
कटत पाश होत नीके सकल काज तन मन धन ॥

५

महादेव आदिदेव महेश्वर ईश्वर हर।
शम्भु शतकण्ठ कपरदी ईश विरूप डिमरू कर
त्रिपुरारि त्रिलोचन गङ्गाधर ॥
नीलकण्ठ भस्मभूषण वृषभवाहन पारवतीवर।
जटाजूट वहुरूप शिव जोगाम्बरधर
तानसेनको दीजे सुख सम्पतवर ॥

६

जमल विमल विलोल लोन दीरघ तेरेरो
आली ईषदके रङ्ग।
जे मीन मृग खञ्जरीट ते सब वारो तेरी छवि पर
जब जब चित चंदन अधर उपङ्ग ॥
वदनको सम कौन देहों वन आवे अङ्ग।
रीझे अमलेम साह कीनी मया कर अरधङ्ग ॥

७

भान उदोतकरण तिमिरहरण प्रकाशपति
ज्योतीसरूप अपनी दया जनावै।
सप्तदीप नवखण्ड परजोरी किरण तनी तनावै ॥
दृष्टि न जुरत महाप्रताप तेज एसो करतार
दियो जनावै।
साह अकवर प्रभुको प्रसाद व्यापत भयो याते
जग रसाल लेआवै ॥

८

अस्तुत कही न परे जो मोपे जो मोमें एती कहाँ मत।
जानो इतनो जो आजके विधाता ले लै
रूप चतुराई निकाई कोसत ॥

याहीते लेले बहु भाँतिन रचपच बनायो आपत ।
ग्रेष सहजादो मोह यति भए एजाते अधिक प्रथीपत ॥

९

आदि सुरतार दुतिया तृतीया वाद चातुर
निरत साधे गुनी गान ।
द्रुत मध विलम्पत तामें अस्थायी सञ्चारी करमध
चौदल तन सरगमको भेद उनचास कोटि तान
प्रमाण सब भेद बखान ठान ॥

१०

या अल्ला मोमन तू आपसो एसे कर लगा ।
क्योंही नमत तू प्रवीन सुलदे कुमत भगा ॥
जिन तेरो नाम लियो तिनको दुख गयो तू
अध्यान पगा ।
तानसेन माँगे सुख सम्पत सन्तति तानन रङ्गरङ्गा ॥

११

हजरत अलीको सुदिष्ट भली मोपर
जो दुख जाय सबतन तेभाज ।
हों सेवक तिहारो तुम जान पाक करीम
करम कीजे राख लीजे यह जगत में मेरी लाज ॥
बेचुन बेच गुन वे सुभेवे नमुन पाक
जात रियाज न्याज ।
तानसेन रब रहमान करीम रहीम विनती
सुनिए आवाज ॥

१२

सीखी सुनी बातें कोलों रोको जोलों न
आवे गरे की तान ।
जो कुछ जानी तो साधो रङ्गरङ्गके प्रमाण ॥
विनही पढ़े विनही समझे विनही सीखे
कहावत ज्ञान ।
गुरुनगुरु साह जलालदी साह अकबर सब विध जान ॥

१३

याते खरज रिखभ गान्धार पञ्चम धैवत निषाद
औ सप्तसुर तुम मोंके भजेरी गूजरा ।
तीनो ग्राम नायको इकईस मुरछना बाईस
सुरत ताके भेद बूझरी ॥
ओड़व खाड़व सम्पूरण कर दिखावे वादी विवादी
अनवादी संवादी तिनके ब्योरे न्यारे करत आगे
कण्ठ मतको वानी कैसी सूझरी ।
उनचास कोटि तान दिखावे टेग्री मार्ग सोतो
धाय वाके चरण पूजरी ॥

१४

कटा कवाड़ देत करपल्लव वस्तर लिए
अञ्जन सुधारत तिय चाहत अवासरे ।
एक कर दरपण लिए वदन निहारत एसी लागी
मानो नायक दृष्टि परत तब रहे न सुध सम्भारे ॥

१५

तू हठ छोड़ देगी लाल कहे सोई कीजे ।
तेरे रूसे सोत सब फूलत वादही को कत कीजे ॥
अधर कोप किए भृकुटी भोहन तन
असुअन अचरा भीजे ।
साह बहादुर मौ क्योन बनआई जिनकी
मया से जीजे ॥

१६

बातें तेरी चङ्गी अनेक विध तरङ्गीव
अङ्गी सबनको तुही शिरताज ।
चार कवर चार बेश वर आयदन आद सरत गजका
खेलन लागे अवताफ महतानिहन नहोवे सब काज ॥

१७

एरी गंवार ग्वार तू कहा जानेरी गोपिनको मरम ।
कान्धे कामरी और हात लकुट लिए ताको
जिय कहा होत नरम ॥
कटि सोहे पीतवसन डारो फिरत
याहीते जानी जात तेरे धरम ।
तानसेन कहे शबरीको झूंठो खायो
ताके जिय कहा होत सरम ॥

१८

रीमोको चारो जाम जागत बीते तो
एरी हठ छाड़ मान मति मान निवार।
सुरज उपङ्ग दल चकवा चकवी मिले तू मिलिरी
आली देख छन्द वन्दवार॥

१९

आज वन वन मुरली बजावत सुधी सुधी
सुध तानके लिवैया।
कान्धे कमरीया हाथ लकुटीया टेढ़ेही टेढ़े
आवत नन्दको कुवर कन्हैया॥
साँवरी सूरत माधुरी सूरत वृन्दावनके वसैया।
तानसेन प्रभु वनवारी गिरिधारी व्रजविहारी
बलजू के भैया॥

२०

नींद न आवत पिय विन देखे मोरी
आली कैसे परे अब चैन।
घरी घरी पल छिन योंही बीत जात रहत
मारग जोहत नैन॥
विन देखे कल न परतहै मानो मनमोहन है मैन।
अब कवधों मिल है प्राण प्यारो यह प्रभु तानसेन॥

२१

चैनन आवैगो मोकूं आली विन देखे अपने पियकों।
एक पल अन्तर सूझत ना दिन होए कछु
कैसे समझाऊं अपने जियकों॥

२२

प्रात लाए चलिए पियके जियकी अब तोही
पै सुहाग लहए।
जे विध लाल को मन मानैगी तैही तो करिए॥

२३

वादी विवादी संवादी प्रतिवादी तोसे कहत हों आज।
वादी राजा विवादी प्रधान अनवादी सुनसी
कार अरि संवादी रार साज॥

२४

आदिदेव महेश्वर गवरीईश विरूप
आछे गङ्गा जटाजूट।
यह अनुचर वन्दन कर मांगत तेरे पादप्रसादतें
पाऊं राग विस्तार तान उनञ्चास कोट॥
तो समान और नाही अविगत अविनाशी हूं
रहै या भुवलोक मध अटूट।
भोलानाथ भस्मभूषण गङ्गशिखर डिमडिम डमरू बाजे
तानसेन सेवकको दीजे अन धन दूध पूत अखूट॥

२५

कानन मुद्रा मुण्डमाला गरे भस्म विराजे अङ्ग।
कर त्रिशूल चन्द्रमा लिलाट पारवती अरधङ्ग॥
वृषभवाहन शीश जटा सोहत जटाजूट गङ्ग तरङ्ग।
वड़लोचन त्रिशूल खपर डमरू लिए
तानसेन तान गावत रङ्ग॥

२६

तिरछे पिय तन चितवे प्यारी चञ्चल
नैन पेखेहै आछे।
जाकी उपमा मोमन आई मानो मीन
चली जलमीनके पाछे॥

२७

एरी आली आज शुभदिन गावहु मङ्गलचार।
चौक पुरावो मृदङ्ग बजावो रिझावो
बन्धावो बान्धो वन्दनवार॥
गुणी गन्धर्व्व अपसरा किन्नर वीण रवाव
बजे करतार।
धन घरी धन पल महूरत तानसेन प्रभु पर वलिहार॥

२८

शिवशक्ति आनन्दी आदिभवानी दयानी दया
करो दीजे दरस इन नैनन दारिद्रदरन।
तीनो लोकमें जानी मृड़ानी एसो प्रसाद दीजे
दुख द्वन्द दूर होय सुख शरीर आनन्दकरन॥
महामाया भद्रकाली कल्याणी शिवानी
मैनात्मजा दुखहरण।
चण्डमुण्ड महिषासुरमर्द्दिनी तानसेन सेवक
सुखकरन तूही जगतपोषणभरण॥

महादेव देव देवनपति ईश सुरेश नीलकंठ शिव
पंचानन पारवतीपति दुखहरण।
वामदेव महादेव जटाजूट गंग शिखर डिम डिम
डमरू बाजत पुनि रीझन सुखकरण॥
वृषभवाहन जटाजूट गंगशिख बहुरूप द्रुम द्रुम
डमरु बाजि त्रिशूलधरण।
तानसेन शिव शङ्कर दया कीजे भोलानाथ
जगतपोषणभरण॥

३०

वादो संवादो प्रतिवादो तोसा कोहै आज।
सप्तसुर तोनग्राम उनचास कोटि को जहाज॥
उरप तिरप डाट लाग नेम वृत्त आतक खातक
स्वरात्मक साज।
रूपमति प्रभु गुणसागर चौदे विद्या गुणनिधान
महाराज॥

३१

कटाक्ष वाट देत करपल्लव वस्तर लाए अञ्जन सुधार।
अञ्जन किए चाहत एक कर दरपण लिए
वदन निहार॥
कटिके छवि कदलोजंघ शुकनासा पै वार।
तानसेन के प्रभु एसो प्यारो सुन्दर निरख वलिहार॥

३२

तब जानो बड़ा वाको जो करहते कर
दिखलावे विस्तार।
मध्यम पञ्चम पञ्चम धैवत धैवत निषाद
होत है गान्धार॥
गान्धारको मध्यम मध्यमको धैवत धैवतको निषाद
निषादहि रिषभ मधार॥

३३

ताल मूल खरज आदि भरत सङ्गीत कहियत तुम
सब विध गुण पारखो जान।
सुधि विकृत अलङ्कार इकईश मुरछना
रागाङ्ग भाषाङ्ग क्रियाङ्ग उनचास कोटि तान॥

देश देश पर पूरण गुणो उचार करत है
जैसो जाको विद्याके परमान।
औड़व खाड़व सम्पूरण तुम सब विध निपुण
साहजहाँ साह तुम गुणनिधान॥

गुर्जरी—सुरफाकता

धन धन प्यारि जाको सङ्गतमें तू निपुण भइरो।
तू लागिरी तोख चोख बूझन एसे गत लइरो॥
गोत छन्द धाक धुरपद बोन बोन ताल लेत नइरो।
चिर चिर जोयो साह बहादुर जाके सदाराग मइरो॥

२

पाँवड़े पलकनके करो धारो जब
राजबहादुर सोतन धरे चरण।
वार वार डारो सकल आभूषण सोको तो
पियको सुदिष्ट आभरण॥
वन वन माने सो न माने सुधारे पिया अपने करन।
रूपमतिके विछुरनको दुख भूल जाय
सब सुख लिहो आसरन॥

३

मोसो अवध बदि गए गुसाँई रहूँ कवन भांति।
रैन दिना मग जोवत जात एसो कौन
तोय जिन्हि रिझाय कीनो मात॥
अञ्जनधर भाल महावर नवल तिया ललचात।
तानसेन प्रभु वहीं सिधारो जहाँ जागे सारो रात॥

४

तेरे नैन गुलाल वरणजो पियसो रितमानो।
छूटे वार टूटो उरमाला कञ्चुकी दरकानो॥

५

पाप गए तन मनके मेरे परसतही रसूलके चरण।
दुख गए सब सुख आए तेरे शरण॥

६

साह तुरक मान इतनो विनतो सुनियो महरवान।
हमनहो गुनेगार तुम बकसन हार
करो निहाल पाऊं दोन ईमान दान॥

कान्धे कमरी गो अलापके नाचे जमुना तीर नाचे पीछरे
पाँवरे तिले लोई चिना मांगवा ।
वो आलो मृदङ्ग वांमरी बजावे
गोपाल बैन वतरले अनले मुराद मनवा ॥

८

तेरो मो निरत तोहि बन आवे सोचो मोहनराय ।
उरप तिरप लाग डाट सहत सुध अङ्ग देशी दिखाय॥
जेते गुणीयन धन धन अपा अपा कर
पूज तेरे कमलपाय ।
साह बाहादुरके रिझाय अपवग कर
अब करो माई पुरोदाय ॥

गुर्जरी—तिताला

मेरे मन अति हुलास नव दरवार देखवे
को मौन दीन ख्वाजा ।
अपनो रहम करम कर दीजे दरस मोहि
शरण आइवे की तोहि लाजा ॥
जोई जोई धावत ते फल पावत दीन दुनो
आलम निवाजा ।
चिस्ती चिराग लीजे खबरमो आधिनको
सङ्गत बढ़े ज्यो रहे दम ताजा ॥

२

लगगुरु समझ धरे ज्यो कहे ग्रन्थन गुरुन प्रमाण ।
जेहि लग तेहो गुरु लग गुरु विवेक अँछर लख
सोई उलट धरे ज्यो कहे ग्रन्थन गुरुण प्रमाण ॥
मगन नगन जगन तगन भगन सगन यगन नजान ।
छन्द वन्ध प्रवन्ध सङ्गीत मत गोपाल नायक
करत विनान ॥

गुर्जरी—मरफाकता

नमो रट शङ्कर देवा मनरे व्रषभवाहन
तपसी प्रवल ईश्वर महायोग ईशान ।
गङ्गाधर जटाजूट ललाट शशि सोहै हरिध्यान ॥
नीलकण्ठ उरशेष कपालमाला विभूतिभूषण
गरलपान ॥
गवरी अरध्नग डमरू करपिनाक पान ।
धन धन धन महादेव गुणसागर आगर गावत
तानसेन विनान ॥

२

शेष महेश करम कोजे तुमही सिद्ध सिद्धिदाता ।
मनको मनसा पुजवनहार तुमही विधाता ॥

३

हाँरे साहव सांचोही नमत मोरोरे ।
कौन भांति सेवा करहों अबरे गसैयां तोरोरे ॥

टेखत सपनह अपन पायको जते
धन धन धन माई ।
मेरो तो वैरन नोट गई तादिनते जादिन
ते विछुरे सुखदाई ॥
झूठहूं न आई सहाई रस लेत सो मेरे
जानवे को यह कोन सों पाई ।
मो प्रथम प्यारे साहजहां सङ्ग जागतमें
कबहूं वाको बात न चलाई ॥

५

यह विध सो गायो गुणी रिझायो साह विलातको ।
तकिट तक् धुमकिट तक धीधो कट तकधो रोकिट
तक धिधिगनधा मृदङ्ग बजायो ॥

गुर्जरी—झपताल

हादी रहनुमान सतार करम कुनन्दा पाकव
ऐव भुजभर गफूर रहीम करीम गफार ।
यार जा याफता वाल तोफ आई तया कादरनु
सरत या हका यार बमार वीर वकुसीर अलाह
समद दिदार ॥
जम्बुल अजील तेरे तुफुर कान चावे
किताव दीन अबाव कर उमर उसमान
अमर अलीवर ।

हक चारो यार सुजानको दीजे ईमान महम्मद
विन अबदुल अबदुलह विसुतलव सुतलव विनहास
हास वाधन सुनाचारो कुरमी चारो मजवचारो
ईमाम जग ऐर हम रहमल मालिका इमाम शाफ
इससमाई मामनमि वुजरक इमाम आजमए
पैदा कीने विस्तार ॥

२

तू तपतको गत ले चलो तो तेरे वस भयो
तें मनभावन।
तेरो सुहाग भाग अनुराग दिन दिन
वढ़त ज्यों शशिकला लावन ॥
मोते धन लागे जों चन्दजोत उड़गण दुति नमावन।
साहव सुमान पिया वहोनायक वे तुम
अनूप भलो जनावन ॥

३

नारायण हर तुही करतार जगत पालनहार।
तुही आदि अन्त तुही करतार तेरोही विस्तार ॥

गुर्जरी—तिताला

तिमिरहरण प्रभातकर दिनकर तें यशकर
जन मन द्रगमणि विभाकर।
हसम रसम भसम करण पतङ्ग गुपत मे को
मिनिरवान महामार्त्तण्ड महर ॥
तोही तें चन्द तोही तें अग्नि पानी नाग तोही तें
अनेक रङ्ग तोहीतें चोख तोही तोही तें
भोग गत तोही तें छूटत डर।
तेरे उगे तें सब जगे चन्द्र भान विवभान सहवी
सविता कविता तानसेन यह विनती करत
जोलो तू नितही नितरहे जो तू सुरतीलो रहे
छत्रधरे साह अकवर ॥

२

सुरभेट जाने वहुमाने सकल गुणीके गुणी
निपुण पुन कार करि दिखावत।
उनचास कोटि ताननके अनमाने निरखत
ललना मेरो सोरो निपट कपट मेरो प्राण
उनको एकहूँ सुनो या जीयत हियरा फटत ॥

३

तोको लाल पीत रङ्ग दीनो रङ्ग गहरो
जामे नेह कर रेनो।
अनेक रङ्गन तन चूनर कीनो श्याम द्रगभई वैनो ॥

४

पल पल रस राखतहीं रंभा पातुर।
चलत चाल गत देशी सुधङ्ग नेत्रकमल ग्रीव भुजभर॥

५

जवही इशक शरोट अवाज भई कलाम
रूप तेज तव जाय भेद भयो।
ॐकार निरञ्जन अपार जाको विस्तार ब्रह्म पठायो ॥

६

वहुमाने शङ्क गुणीगण भेद जाने।
निपुन पुन पुन कर दिखावें उनचास कोटि ताने ॥

७

पल पल रस राखत रम्भा पातुर।
चलत चाल गत देशी सुधङ्ग नेत्रकमल ग्रीव भुजभर॥

८

तोको गल पीत रङ्ग दीनो रङ्ग रंग
हरो तामे नेह कर रैनो।
अनेक रङ्ग नगन तन चूनर कीनो श्याम द्रगन भई दैनो॥

गुर्जरी—झपताल

चढ़ो दल साज अवनिदल मलनको
धरण प्रताप करण सो यश जगतमें।
जाके बाजे सुन इन्द्र डरप गयो निरास भयो
जो सकल भूपतमें ॥
लंका परो धाक जमहिर हिरानीं कलवलानो
शेष भूमि हलतमें।
साह अकवर छत्रपति नरेश लीनो
सब देश पल झपकतमें ॥

एरी सखी मोहे बतावो पिय मिलवे की जुगत ।
जा प्रकार रीझे न मोहन बलमा कौन भाँति उगत ॥

२

ततकार थुङ्कार धुनि मधुर धुं धुं कात तकिट
तकाथों तकिट तकधुम किट तक गदि गतक
तकधिलाङ्ग धिलाङ्ग धिलाङ्ग धा ।
वीणा सुर गावत उपजावत रङ्गनाद प्रकारके
शास्त्र प्रमाण सप्तसुर साधो सारिगमपधपमगरेसा
सारिगमपधनिधपमगरेसा ॥

गुर्जरी—तिताला

बाजत मृदङ्ग अंग तरङ्गके जामे उठत
अनेक रङ्ग तार तरङ्ग मत गुरुज्ञानके ।
डग डग डिग डिग ढुंकि ढाँकी दिगथो दिगथो दिगि
डगी डगी डुंगी डग डग डां डां वीणा बजो मानके॥

गुर्जरी—धीमा तिताला

एरी माई आज वधावरा साजनुवा घर
अति आनन्द सन बाजीला मोरे मन्दिलवा ।
सुघर मालनीया बीन लाई चतुर मालनीया
गुन्ध गुन्ध लाई वेला चमेलीके हरवा ॥

गुर्जरी—तिताला

तुरका रङ्गीलवा छबीलवा देखतही
वाकी चितवन मोरा मन लोभाय रहिलवा ।
जे घरी मिलही हम तें हितसन मितवा
चन्दन छिपा सुरजनवा मिलकर ढोल धरीलवा ॥

(ख्या० बा०)

२

राँझण आवण छड़दि तोही इशक मचायानी
घुमा अनीमा ।
कोऊ समझावोनु मोड़ले आवोजी मेड़ाकु
कदाले दानी वहुमा अनीमा ॥

३

चार देहाड़े राझण मेहो चारके मेड़ी जिन्द खसलई।

हुण ता मेनु रुठ दाजा दानी सइयो
मेड़ी शिरके हो आण पई ॥

गुर्जरी—जलद तिताला

दोमदारादोमदारातानदिरनदनतुंतनतदानी ।
द्रतुम्२तुंतुंतननननातात्रा७दानी ॥
इशक रावा हुण उल्फत बूंद अज रोजए
अलल तो हमर्त वेह्न्दा वाले लोओ मजनू वस्ताअन् ॥

गुर्जरी—तिताला

एरी तुमी सन् लागी लौ रहे
जीउ पीउ घरी घरी पल पल छिन छिन ।
वेग आवहु चतुर वलमुवा कटिहों रङ्गरस दिन ॥

२

पीउ न पूछे ना करे कछु बात मइसन ।
पाँचो कुतव मुलक मइयांके परसन पायन ॥

३

(मिरजा अबदुल्ला कृत)

रङ्गभीनी दुलहन के मुदरी कर सोहै वरण
वरण अनेक अनूप ।
उमग चाँप सन आई सखीयन मिल बनेरी कई
रीझत थकित भई देख रूप ॥

४

दोमदारा तिलेलाना तुमदिर दिरतदानी ।
नादिर दिरतुमतान दिरनातननतदरे तदतदानी ॥

गुर्जरी—धीमा तिताला

आजरे आनन्द को यह दिन है जो लालन
आए घर मेरे ।
यातें तन मन नैनन अति सुख पायो गए कष्ट सबेरे ॥

२

नाहिन जइहों पनीयाँ भरन ढीट लङ्गरवा
मगवा हो में ठाड़ो रहतहै ।
मेरी तो एकहू न मानत ना सुनत है और कहा
कहूं आलीरी कछु कहिबे को ना कहत है ॥

(मी० जा०)

डरत ना काहूसे एसो निठुर ढीट लङ्गर मग
चलत लीनो अङ्ग भर।
सारी मसकी चोलिया चसकी टीको खसकी
आलीरी अब कैसे जाँउ घर॥

गुर्जरी—तिताला

आली एरी तोरि देखन को सुरजन
उठ क्यों न नींदवा के माते।
भोर भए उठ मन रङ्गीले छबीले जोवन राते॥

२

पियरवा मोरा जियरवा तुमरे मिलन को
अति हुलसायो।
जबते नेह लायो तबते सुधना लीनी मोरी
पीत कियो के बैर बसायो॥

दीमदारा तिल्लेलाना तिल्लेलाना यललीयलली
यलला लाले।
धिति लितिलानालाना दरादीमृदीम्
तनायलालुं यललुं यलल ललेदीं॥

गुर्जरी—होरी ताल (जौवन)

डोरे डोरे फिरत मोहि लागो ढीट लङ्गर बरजो
न माने।
भँवर समान श्याम भयो मोपर सजनीरी भली
बुरी ना पहिचाने॥

गुर्जरी—तिताला

चतुरङ्ग ख्याल अङ्गपरण मिरदंग गति ऐया तराणा
समक सुधा आर धरो।
निरेगमधमगरेगमधनिधसानि रेगगरेसानिनिधनिनिध
निनि धमगरे गमधरे धपरे गमधगधधमगरेसा॥चतु०
दिरनदिरन दीमतुँतन दिरनादीम् उदनितनि
तानतनदिरना दीमृतुम् तदारदानि तुमतननननननदीम
तननननननतदरे दानी। चतु०

द्रुमकट द्रुमकट झनक झनक त्रिकड़ झंझं
झननन तो ऐयातीऐया थमोथमो आमोदया थुं
किटितक्तकथुं किटितकतकधिलाङ्ग धिलाङ्ग
तिकधा नगड़धित्रा नगड़धीत्रा धींधींधाग
तिकटधागदिगनगतिटकंडन नतिर किटतक्तान
धिता गिदिगननगदित् कड़ानध त्रकड़तक्ताँनधीधा
तानधा तिकड़धाता धाधीतानधाधी॥ चतु०॥

गुर्जरी—जौनपुरी

चिरञ्जीव रहे तेरा बालका नित नित आनन्द करो
निश वासर सुनो हो यशोदा सुख सम्पतसों कोटिन
बरसलों राज करो।
श्यामसुन्दर मनमोहन सोहन नन्दनन्दन जगवन्दन
सजनी जोलों ध्रुव धरन शशि भान दिन रजनी
राग रङ्गसो समाज करो॥

२

प्यारी बनरी तेरा प्यारा बनरा अब बन आया। (माई)
मोतीयन चोक पुरावो शीघ्र सेहरा बंधावो
सदा रङ्गीला महम्मद सा वर पाया॥

गुर्जरी—तिताला

एरीहों तो चकित भई लालन को रङ्ग रूप देख।
निशाके जागे भोर भए मेरे आए
और कहा कहूं भेख॥

२

तुम कौन नगरके बसैया क्योंरे तुम
आएहो मेरे बगरवा।
चोर मूसे कोतवाल हंसे दुबर भइलो दुरवा॥

३

सबही में बरजोरी करत रहत नित
बोली ठोली प्यारे अपने गाम।
मेरे तो जिया जोई आवे सोई करहों
तबही हमारो नाम॥

४

सुमहुरे लोगवा ननदोया हम सन झगराई।

जीवन दुवर भइली एमा पिय विन दुवर
भइली जो गँवाई ॥

गुर्जरी—होरी

बाजे घुङ्घरवा मोरे कैसेके मिलो पिय सन माए।
सूरत मूरत देखन कारण जिय हटके भटके
मोरा सदा रङ्गीला मो मनवा जनाए ॥

गुर्जरी—उलट तिताला

रङ्गभीनो दुलहिन कर मुदरी
सोहै वरण वरण अनेक रङ्ग।
सुआ चोला वहोत अनमोला बनरी
अरगजा लिए अङ्ग ॥

गुर्जरी—तिताला

द्रुमतनन दिरना उदन तिलाना नादरेना तदरेदानी।
नाद्रद्र२तुंद्रद्रद्रतननननननतारेतारेदानी ॥

२

तुमी सो लौ लागी रहे पिया घरी घरी
पल पल छिन छिन।
वेगि पाय धरो चतुर वलमा निश दिन दिन ॥

३

नजरन आवदा वेसोणा वेखणदा मैनु चाव घनेरा।
मैतो तैनु ढूंढ़दी फिरदी सोणा
मिया राझण कित वल तेड़ा डेरा ॥

४

कैसेके जाऊं माइरी पनघटवा छैलवा रोके डगर।
अनघट चाल प्रकाशो लङ्गरवा फिरत
रहत वगर वगर ॥

५

प्यारा वनरा आइला छैलवा केसे वनरा अमोल।
कर मन वर पाइलो वनरा बनी वन
आइलो गायो बजायो ढोल ॥

गुर्जरी—एकताला

तोरी छवि मो मन ही भाए अधिक सोहाए।
नरनारी मिल देहो मुबारकी वधाई सुन्दर पिउ
मोहे मिलो गाय वजाय रिझाय सुहागन मिल गाए ॥

गुर्जरी—तिताला

अरगजे वागे करम मो ढिंग तो किधों उठ चल सुन्दर।
छाँड़ तुमरे सङ्ग जाय देखो कौन मोसो
अति सुघर अति चतुर ॥

गुर्जरी—एकताला

वानीम निगाहे यार गदर यार शवी।
ना खुरद शरावे नाव मरसा सवी चश्मे
तर फेरास्तव च पय करद टोगर
बस नोवरोके दिल दासवी ॥

२

तनानाद्रद्रतुमदिरप्नादारेतदरेतदानिदीमत
नानितनातनातननननाद्रतंतनाद्रतंतना
द्रतुतानदरनादरनातरानतनुदरदरना।
तदानी उदानी दानी तुम तननन तुं
निगनिगधुमकिटततिरकीड़ानधोधगनधा ॥

३

अदारङ्ग भलो बात पहिचाने और सुरनके
विस्तार कर जाने श्रवण गहे शीश नवाय हर बार।
तबहे तीन खाई सुर को मधम मधम सुर को सुर
सुर को पञ्चम पञ्चम को रिषभ रिषभ को धैवत
तबही होत धैवत सुरके गान्धार ए देखोरुत भार ॥

४

अललेदीम्तननतुमतननाद्रद्रतुम
तननतुमतनतदरेदानीतदानी।
औरे धितीलेधितिलेतनननननननधिरकटतक
तकधिरकिटतककड़ानधाधीतोलेधोत्ता ॥

गुर्जरी—तिताला

किरपा करोरे मोमन सइयां तन मन धन
नोछावर करहूं परहूं पइयाँ।
महम्मदसा सुजान अब कहि भाग हमारे जागे
लेहु वलैया सुरजन सइयां ॥

२

रङ्गभीनो दुलहन को मुदरी कर सोहै
वरण वरण अनेक रुप।

उमग चोंपसे सुनरी सखी बनआई बनरे
कही देखत थकित भई रङ्ग सरूप ॥

३

पीउ न पूछे बात मदसन कैसे करूंरी माय ।
गुण नहीं मोपें औगुण बहुतेरो धरहै चरण न धाय ॥

४

बन आयारी बनरा बराहन शिर सोहै
फूलनको सेहरा ।
हाथ सोहै कंगना गल सोहै सुआ वागा वनरी मो
लागीलो नेहरा ॥

५

सोमं तोहि पूंछूंगी बामनुवा कब घर
आवे पियरवा मोरा ।
झगवा देहों पगवा देहों और देहों गर हरवा
ऐसे सगुण विचारो नीको सांचे लगन है तोरा ॥

गुर्ज्जरी—झपताल

नादटल कटकआलाप तरवार लिए
ताल छुरी दार और वावन गारो ।
तानकमान और सप्तसुर तरकस मुरछना गोलो
पार मारो ॥

गुर्जरी—तिताला

अनुआइरे जोगनीया भइरे पीउ तोरे कारणवा ।
कानन मुद्रा हाथ खप्पर अङ्ग भभूत लाई
मन मालीके नामको रे अरे भला ज्ञान ध्यान
सुमरणवा ॥

गुर्ज्जरी—ख्याल तिताला

पचरङ्गी गुदरी सोहै मानो लागी प्यारी
वरण वरणके वस्तर गोविन्द जरत गरी ।
नमस्कार मोहि करना तिसनु साह जमाल कर
करम उड़ाई हम कांधे धरी ॥

गुर्ज्जरी—तिताला

सुनावो मोहि ध्यान बाड़ कोरे श्याम प्यारे की बात ।
निश दिन तड़फत नीद न आवत थकित
भयो मेरो गात ॥

इति श्रीअमरानन्द व्यासदेव तस्यात्मज श्रीहीरानन्द-व्यासदेव तस्यात्मज
श्रीकृष्णानन्द-व्यासदेव-रागसागरोद्भव सङ्गीत-रागकल्पद्रुमे
गुर्ज्जरी रागिणी सम्पूर्णम् ॥

गान्धार-राग प्रारम्भः

आदाय वीणा धृत योगपीठो
गङ्गाधरो ध्याननिमग्नचित्तः ।
योगासने मौलिजटा दधानो
गान्धाररागः कथितो मुनीन्द्रैः ॥

गान्धार—चौताल

धपपगगरेमपपधमानिनिधधपपमपपनिनि
धधपपममगगरेरेसा
ममपपपधसासासानिनिसागरेसासानिनि
धपमपनिधपधपमपधसासाधधसाधधपम ॥
निनिनिसारेसागरेसामगरेसामपधसानि
साधनिसानिसारेगमपममपधपधनिधनिसा ।
सानिसानिधधपमगमगरेसाधपमगरेमाम
गरसामगरसागरसा ।
जब सङ्गीत विद्या सीखे गुरुनसो तब यह भेद जाने ॥

२

निधपमगरेमधपमगरेसासासारेसानिनिधपधनिसा
सारेगनिधधधपपधपमगरेसासासारेसानिनिधधसा ।
सासानिनिधपपधधपपधनिसासारेगगग
मपधमगमगरेसानिधनिनिधपधनिसा
निनिधपपगरेनिनिधपेनिधरमगरे ॥
एक सुरके कोटिहैं कोटिन कोटिन के आदि सुरके
विस्तारके वड़ो रूप वड़ो भेद गेधपे धगगरे
रेसासासारेसा ॥

३

धधधपपममगरेममपधसानिधनिधपधपमपम
गरेगरेसानिसा ।

मपधसारेसारेसनिसानिधपरेधपमपनिधपध
पमगरेमपधसारेमनिधनिधपधपमगरेगरेसा ॥

४

मपधरेसानिधपमपधपमगरेरेरेसा ।
सानिधधधसारेगरेगरेसानिधसानिधपमपनिध
पमगरेरेसा ॥

५

सुन्दर तेरे नैन वेणी तीरथ मध अस्नान भौंहे
वङ्क वर निवार ।
इनही में सकल सलीखा इनही में पइयत
परम पुरुष परमेश्वर इनहीमें लीजो निहार ॥

६

कहियो ऊधो तुम जो नेह बीज बो गवन
कीनो माधो विरवा लागो राधा के मन ।
द्रग तारे कूप कीने असुअन जल भार भरे पलकन
सींच सींच यातें और विरवा भयो मघनवन ॥
भूमि हरी भरो रोम रूख वन रहे पाँच बेल
कामकी चढ़ी तिया तन ।
कुच काछो रखवारे फूल फल होन लागे आयके
जो देखिए जीवनधन ॥

७

आज की छविको रस मोहे दीजे प्यारे पाछे
जइए जाको मन ललचात ।
अनत को गोहन नेक बकसीए रहिए जी सब रात॥

८

प्रगट चतुर वरने नारी तेरे किधों खञ्जन कमल
फसे कहे कटाच्छ मात पिता सुख सुखसागर जे
पङ्कज कछाय सरोवर में मीन करत कलोल ।
किधों चन्द हे सुतन गोदन बैठो कजरी भौंहे
डाड़ी कर पुतरी न होय दोउ पल कीनो आलीरी
तामेरो विध अनूप रूप जोवनन छवि तोल ॥

मुख सुख सलिता बिच दोना व फिरत भाव भरी
वरनो चोप सोहत किधों जुग कुरङ्ग
फन्दे हो अञ्जन फंफ खुलन न खोल ।
किधों जुगल मञ्जीर पलक पाट मूंदत खोलत
काम भण्डारो साह आजम के हुकमतें तोल
देत जात बिंब कटाच्छ हीरा मुक्ता हलसों
तोल तोल मोल अमोल ॥

९

सेत असेत तारे जा तारकों निरमल अमल नवल
पुतरी मानो कमलन मासी ।
पूरण चन्दकी छाय परी इन नैन की तपन पै
मञ्ज कहे खञ्जनने दगा देने कासी ॥
कमलनमें मञ्जन छिप करि बोधे रोधे अकबर साह
कों छाजत एक मरम मद अली जुग सार समाती
सो आप आपको अफर उमड़ चल दियो
पठान वरणो धरक भयो नीरज तिन में हठ
कियो दाना को बुध नाटो यह अँखिया जलाल
महम्मद को आरसी ।
तिनमें आपनमें आप नहीं देखो चाहे
मानो हों अञ्जन को मञ्जन से लोभ मम लई
मनमथ तपन कों ए चाई मानो अग्नि वासी ॥

१०

तुमारी असवारी वहो दल भारी के सुनत सोच
भयो अति भुव गिर नाव सुर सिन्ध पावत यह
हम कौन गत चतुर दल चलेंगे जब ।
भुव कहे चलो दल तब हालो दलवर शेषकमठ
व्रषभ दे दें और राखे न सम्भार देहै डार गिरके
जो गड गड़ गफ सेवे चार खोरतार और दव ॥
नभ कहे चल मोहे दूत बराबर पठेहै कंकर
नाहन वाय उड़ाय दए सूर कहे प्रताप तेज जीत लेहै
सुतीर काजे सोतो पान चलो रहो न जाय हैहै सब ।
सुभ नखत वलो वखत वैठो पातसाह साह आलम
जग जीतवेको आएहै अब ॥

११

ध्यायन गायन गाव बाजन बजावत।
आनन्द भयो नरनारी इच्छा भर पावत॥
मुनि कही न परत शोभा सभा तू केहि विध
कमल न दुरावत।
साह औरंगजेब जियो कोटि वरसलों वरस गाठन
को शादी फरमावत॥

१२

जैसो है साधन कोई ना बचाई तैसी एराय
उमराय भूपन की भीर लागत सुहाई।
जैसोई राग रङ्ग सुगन्ध सरसाई दुंदु विछुरत बहो
विध चलत सभा बनआई॥
शुभ घरी तोलों साह आय वैठे रतन जड़ित तखत
साह आनन्दन आनन्द आशीश बढ़ाई।
साह औरङ्गजेब तुम कोटि वरसलों एसेही
करो वरसगाँठ वधाई॥

१३

मलक पुर मलयाबाद मारु मरहठ मुगेर मालवा
महावन मकनपुर मेवात मुलतान मेवाड़ मिसर।
बगदाद बङ्ग बरार बन्दर बदाऊं बुखार बुन्देलखण्ड
बून्दी वृन्दावन विजेपुर और विधनोरपुर॥
समरकन्द सोलापुर सारङ्गपुर सारसन सूरत
समशावाद सीरोज सुन्दरपुर सुरङ्ग सिङ्गलदीप
सेलाज शेखपुर सकरपुर सम्भरसर घर घर।
काशी कमाऊं काबुल कच्छ वा कनोज काशमीर
करोली केदार करवला केगर कोकन शाह आजम
जग जीत अप बस कर लिए मानत दोहाई नर
नरेन्द्र सकल भुव पर॥

१४

वालापन गयोरी अब आयोरी जोवन रोम
रोम की बतीयाँ।
पीतम सों हम खेलें बावरी काहेको
करत धो कपटीयाँ।
वे चतुरनायक रिझाय रहे रहस रहस
सकुच ठटीयाँ॥
वेग मिलो साह बहादुर सो वेजो परे रस हठीयाँ।

१५

सुन्दर अति प्रवीण महाचतुर अचलराज करो
रवि शशि जोलों भूमि पर।
चिर चिरंजो रहो जोलों ध्रुव धरन तरन पवन
पानी राजन मणि राजा रामचन्द्र रघुवर॥
तोसो तुही और दूजो नाहो मेरे जान सब जग
को विश्वम्भर।
तानसेन तेरो अस्तुत कहालो वखाने भक्तवत्सल
तोहे ध्यावत सुर नर मुनिवर॥

१६

अवध इलाहाबाद अजमेर अकबरपुर।
बहराइच बनारस बागर औ बरेलो बोजापुर॥
जौनपुर जलालपुर जगदोशपुर जावलो जालुपुर।
दोल्ली और दारानगर द्रावड़ दानापुर चार अच्छरसे
अहोवो अजवर्क दस्तूर॥

गान्धार—होरी ताल

आजुरे माए गलो गलीयाँ सदारङ्ग
पायो बात भलीयाँ।
सखी सब मिलकर देहो मुबारकबादी ला ला
लागर अलह मिलाई दोउ कर रङ्ग रलीया
सो नकसी ते जलीयाँ॥

गान्धार—चौताल

विछुरे भेंटत भेट किशोर किशोरी।
जों जों होत उजीयारो त्यों त्यों गुरु जन लाजत
लजात पुनि लट पटात निहोर निहोर निहोर॥

गान्धार—ताल धमार

कान्हा छाँड़ देहु अट पटी यह बातें।
निशदिन होरी के मिस मोसे करत रहत हो घातें॥
ले अबीर मुख मीड़ो चाहो आप फिरत छिपातें॥
चतुराई यह कौन बदी हो दृष्टि न आवत तातें॥

मोहन छोरी खेलत डोरे ब्रज में
पिचकारी कर लिए ।
वगर वगर वो ढूंढ़त तोको उठ चलरी हर लिए ॥

३

कर पकर कर खेंच खेंच ले लै जात कुंजन की
ओर सबमें मोहे देखोरी मोहन मधमाती ।
एसो निलज्ज वरजो नहीं माने सब सखीयन
में यह हठ ठाने काम करे अपनो मन भाती ॥

४

रङ्ग मधं प्रेम पगो गगरी सिर धरे सुनार ।
सुगङ्ग सारी सोंधे सो रङ्गे सगरे गाम मध गगरी
सिर धरे सुधार ॥

गान्धार—चौताल

सुन्दर अति नवीन प्रवीण महा चतुर नार
मृगनैनी मनहरनी चम्पकवरनी वार ।
केहरिकटि कदलीजंघ नाभिसरोज श्रीफल उरोज
चन्द्रवदनी शुकनाशिका भौंहधनुष काम ढार ॥
अङ्ग अङ्ग सुघङ्ग पद्मिनी भंवर गुञ्जत सुवास आवत
क्रोध नाहीं शांति सरूप लघु कृश नाहिन
दवी जात बारन के भार ।
धन धन जाको भाग तोसी तिया ता घर
बैजू प्रभु रस वस कर लीने काम जाल डार ॥

२

मुखकमोद वदन मध नैना एसे लागत
मानो जैसे अरुण अरविन्द में पुतरी तोरे ।
चितवनमें यो भ्राजे जैसे भंवर भार कमल डोरे ॥
और दोजो खञ्जरीट उपमा न पावे एसे
दीरघ लोचन तेरे तातें सुन्दर निरमोरे ॥

गान्धार—धमार

आज गईहों नन्दमहरके अदभुत देखो पलना ।
रतनजड़ित मुक्ता झूमत सखी पड़े नवरङ्ग ललना ॥
पीत झगुलीया अतिही वनीया भूषणको छवि
निरखो व्रज वलिना ॥
केशव दास प्रभु नन्दसुवन जबतें देखे कलन
परत मोहि पलना ॥

गान्धार—चौताल

नैन जुगल जुगल मध तारे श्याम अपान
लेत है माई ।
मानो मकर सुगन्ध धवल विशाल डोरे
लालपै रूप छक्यो चित चञ्चल अञ्जन दीने आई ॥
खञ्जन रस लेत उड़उड़ अपने आपनही
विराजत आई ।
कुंकू चंपा पियारे भएहैं पूजत न परछाई ॥
दामिनी सकुच लगाय आकाश गई है छवि
निरखत दरशन जोत दारम हियो दरक दरजाई ।
मारग मृगजे मीन वन गह्यो यातें सनमुख होत लजाई
एसी उजारी प्यारो सुख दाई साह बहादुर पियकी
सवन सरमाई ॥

२

तूं जो अबतो मुख देखन कहत एतो गुमान
गुस्सो करे रीझे ललना भावे ।
बादही बकवो करत पूछत तें उत्तर न देत कंचनकी
सम काचक्यों भावे ॥
माही कसोटीके माह मेरे जान ताही की महिमा
जिसे मनमें रहे आवे ।
रूपमति कहे ताहीको लहनो बाज बहादुरको
रिझावे ॥

३

प्रथम चतुर तूं सयानी री तेरो मान कछु अयानो हो
जो कहत तो सों बतीयां तू ऐसो न बूझो ।
घर घर चाह भयो सब सोंतनको तूं हठ
छाड़ देरी अनोखो नई कहा सूझो ॥
मेरो कह्यो अन्त मेरो गुण मानियत छाड़ो
गुमान सों मूझो ।
उठ चल हिलमिल मेहरवानके प्रभुसों प्रीत कर
परस्पर सकल तियनमें सरस कर राखोगी गुझो ॥

नैनन झपकी झुमी घुम उघेर मून्दे सरसात।
जबतें दरशन पायो श्यामसुन्दरको घरी घरी
कछू न सुहात॥

५

आइए जी आइए मेरे महल।
तन मन धन नोछावर करों जोई वारों सोई सहल॥

६

नैनारी जेसे तोहे दोने करतार एसो ना
दीसत काहू नीको।
श्याम कौन केवल खञ्जन नैन मीन मृग तिनकी
मजाए नाहिन कौन दिन को॥

७

कहाँ जाने बालक दधिको चोरी।
दौरी आवत हाथ नचावत जीभ न करहो थोरी॥

८

तूंजो अपनो मुख दिखावत गहरो
गुमान कररी जो लालन भावें।
बादही वकवो करत पूंछत न उत्तर देत
काञ्चनकी चौकी छवि पावें॥
साहकी कसोटो कमाई मेरे जात ताहीको मैं
मारग सोतन के जिय आवें।
सौंहे किए कहत तोहो को लेन साह
बहादुर को रिझावें॥

९

ए आएरी बादर सन्यासी सावन गुरुसे सीख साख।
एक गजरत एक बरषत ऐक मुनिवर
खिन खिनाख करे मिलन तिनको कहा डर जिनको
वीर नए पाँचो वेलाख॥

१०

वरागी भएरी नैना तरसा मानो भरम लगाय लए।
श्याम पूतरी मानो सिङ्गीनाद अरुण डोर तप तेज ठए॥

११

जोगी भएरी नैन भस्म मुद्रा धाए।
भोरही से तात श्याम सिङ्गीपुर नगरे
मेखली डोरे अरक वरण तापन ताप ताए॥
कोरे वैराग वरणी अलके जटा जोर ठायो
चञ्चल शशिप्रभु तुव रूप नगररी भिच्छा लेन आए॥

१२

आज नौरोज नयो रोज कर दिखायो
इन्द्र नरलोक बनायो।
अकाशटल वारिदल बीजलता कनक खम्भ
बादर साखोसे छायो॥
पोहोपावलो धरन मुरन वरन बिछोना
घन बरसत समान जलधर तनाव तनायो।
बाजन गाजन निशान इन वनिता वन इन्द्र वधू
हाहाहूहू करे गुणोयन यश गायो॥
साहब किरान शाहजहाँ पातसाह झरलायो
जगजे पायो मुक्ताहल ज्यों मेह बरसायो॥

१३

एरोहाँ तो रहसन फूलो अङ्ग न समात
मया कर मेरे आए साहजलाल लाल।
धन धरम धन जर करम मोहे कीनोरी है निहाल॥
तनमनधन नोछावर कीजे वलैया लेहों
कटे जञ्जाल।
चञ्चल शशिप्रभुकी वलवल जैए सुदिष्ट
पर प्रफुलित भई सब बाल॥

१४

विनती मेरी सुन लेहो गोपाल
सब ब्रज तुम विन बेहाल।
तुम प्रतिपाल जगततारण हो सुध लीजे नन्दलाल॥
अधम उधारण निस्तारण कीजे अपने भक्त प्रतिपाल।
चञ्चल शशिप्रभु वेग दरस दीजे कीजे जो मोहे निहाल॥

१५

वश कीने सुन्दर एक विचित्र बाल एरी
विश्वासन तो तन रस माते।
मदन सरूप नेकहो निरखत पियके
कामको रूप लग जाते॥

ज्यों ज्यों वे भेदन ते सरस अति त्यों त्यों तेरो
रूप उजारी चन्द्रकला तें।
दिन दिन दूनो प्रीत बढ़े अति देख एहो
साहजहां पियको निज कृपातें॥

१६

आज नौरोज नयो रोज कर दिखायो
भुवलोक नरलोक इन्द्रलोक बनायो।
सटल बादल वोजल कनकखम्भ वटामान
बेटल छायो बादर समान नवदल तें तनायो॥

१७

गावत सुघर गुणी गन्धर्व सुध मुद्रा सङ्गतसो नाद।
सुश्रुति कला ध्वनी मुरछना पूरण लगे
तब रागकी सवाद॥
रङ्ग लिम रम रूप लय ताल काल लब समान
बर रहे ईट काद महानाद।
सेन कहे ग्राम तान अलङ्कार सब समझके कीजे
गुनीयन सों संवाद॥

१८

तूजो अपनो रुख दिखावत
काहे एतो मान करेगो आली जोलों लाल मन भावे।
बादहो वकवो करत पूछेते उत्तर न देत
कञ्चन सारदा छन्दजो क्यों छावे॥

१९

आइए आइए मेरे महल।
तन मन धन नोछावर करहूं जोई वारों सोई सहल॥

२०

अतीत भएरी नैना मोरे दर्पण मुद्रा धाए।
भस्म भुरंगो दरशन भिच्छा मागनको चाए॥

नैनारी सो तोहे दीने करतार
गुण और दीने पिय मनको।
सोमें कौन कमल खञ्जन मीन मृगशावक
एसी जोत नाहिन कुन्दनको॥

२२

सुन्दररूप अति नैक न न्यारे कीजे।
ता सम सखी कौन बन आवे जहां देखे तें जीजे॥

२३

बिछुरत भेंटत दम्पत दोऊ किशोरी किशोर।
ज्यों ज्यों होत उजियारो त्यों त्यों गुरुजन
लाजन लजात पुनि लटपटात निहोर निहोर निहोर॥

२४

रबकी कुदरत चली हजरत नबी अलिया
पाई सिपत करत करीम की बातें।
पहले अल्ला दूजे पञ्चतत्व पाकहाज दे
इमाम चाहर देमा शुभको बनायो अपनी
जात सफा फयातें॥

२५

जगतपति भरणपोषन शुभ दिन दिन
अविचलधर्म्म राजाधिराज कुलकाज।
चारो जग घेर कीने चकता वनखण्ड
देश देश भक्तवत्सल देत गुणीयनको सकल साज॥

२६

अगर ओड़ोमा अजमेर और अजीमाबाद
आरकट रायन और अरब खण्डमें।
उत्तर आसाम और इलहाबाद और बलिया आजमगढ़
अवध उज्जैन आप आखण्डमें॥
अकबरनगर आमेर अमदाबाद इन्द्रप्रस्थ
एहो प्रचण्डमें।
अमरनगर अमरावती अलकानन्दा एते पुरमें
प्रताप तेरो राजाराम अखण्ड खण्डमें॥

गान्धार—तिताला जल्द ध्रुपद

गोवर्द्धनधारी कृष्णमुरारि सोहत मोहन
मुरली मुख भारी।
जब जब बजावत तब तब रिझावत
मोहत सुर नर नारी॥
वे अति थकित झुकत झुकत व्है रहो धुन सुन
मनमोहत मङ्गोत गत नाचत हँस हँस देत तारी।

धींधीकी प्रभुकी लीला कही न जात मोर मुकट
विराजत धस पताल ले काढ़ लियो नाथ शेषकारी ॥

गान्धार—तिताला

अरी देखत देख रही देख रही मनही मनमें हों माई ।
सुध बुधह्न विसराई कौन अमृतवैन सुनाई
मोपै कछू जात न कहाई ॥

२

मैं निहार देखो शाह अकबर जग पर
रोशन जम्बीर दीदार ।
तुंही धरणीधर तुंही महीप कर राखो साँचो हो
कल्पतर ॥

३

भलेही पै आए हो भले आए मेरे गृह
अङ्गना भलो मान पलकों के करहों पांवड़े ।
पहली सकुच कछू मनमें आनहों मन बिज करम
किए विनती करतहों अब तुम वरुणोनतें
छुहो गुलाल के नावड़े ॥
वेगी चरणकमल नवल धरिए करिए हो मन चीते
कारज पतरोनके जिय अलसा जावड़े ।
अतिसुख पायो नैन प्राण शाह अकबर जो पियके
जिय की हों सब जानत यह ग्रह तज पग मग
डगन धरे आवड़े जांवड़े ॥

गान्धार—ताल रूपक

सुवन शाह अडंड डंडन आयो आयो हो आयो
जीत वलक ।
कर समान लोहरनगर तें लपक झपक लीनो
लगत पलक ॥

२

कठिन माई पियको री नेहरा गेहरा नहीं भावै
रहों नित उदास ।
सवन समान मेरे जान आलो अरध उरध दीज साँस ॥
मोहि जगत रैन चैन नहीं नैनन तातें सुपने हूं में
कहा सो भई सुपने नहो आस ।
तानसेन प्रभु समझ समझ कियो भोग विलास ॥

अडंबर डंबर भूल गयो हो भूल गयो योग ध्यान ।
तब पशुपति निरगुण लखाई सगुणरूप अति
गिरिजा पाई यह सन्त गाई तब रीझ भीझ कर
अरधङ्गी धर वस ज्ञान ॥

४

कहा जानत बालक दधिकी चोरी ।
दौरें आवत हाथ नचावत जीव करो थोरो थोरी ॥

५

तैसी कहत न बानै पिय सों जैसी पिय
मूरत नैनन पीत ।
अति कोट कटाच्छ सब वस करबेकों बहोत कियो
अतिहो अकेले हो लियो सब जीत ॥

गान्धार—तिताला

कहत न आवत जियके हुलास मेरो अँखिया
दारुण भई सुखदाई बहुत रस ।
जैसे ग्रीषमके तपत ताप लाल इतरात माईरो रोम
रोम तन तें आनन्द बरसें यातें होत रमन रस ॥

२

तैसो कहत न बने पिय मोपें जैसो पिय मूरत
जिय बसो चित ।
कोट कटाच्छन सबही को मनरञ्जन अकेलेहो
कर लियो सब जीत ॥

गान्धार—आड़ा चौताला

मेरो योंही जनम जात विहानो ।
जासों बात कामको पूछो सोई कहत दिवानो ॥

२

मौनदीन अजमरी ख्वाजा तुम तन मनतें कष्ट
दूर कीजे ।
तू मनसा पूजवनहार सबकों अष्टसिद्ध नवनिद्ध दीजे ॥

गान्धार—तिताला

आज हरि लिए और अन हिलो गइयाँ एकही
लकुटहो हांको ।

क्यों क्यों रोको मोहन तुम सोई त्यों अनुराग
हम पर देखत मुखोंको ॥
हम जो मनावत कहूं तुम मानन बतीयों गड़वोंको
तृण नहीं चरत वछरा नहीं चोंखत हम कहां जाने
कोहे कहांको ।
तानसेन प्रभु वेग दरस दीजे सब मन्तर पढ़ श्रांको ॥

२

प्यारो प्यारोरी प्यारो प्यारो साहजहां प्यारो निपट ।
हँसत खेलत प्यारो सोवत जागत प्यारो अङ्को
भर प्यारो भिपट ॥

३

शाह अकवर निपट बड़ो ढीठ कर मान तेरो
वेहदह और महम्मद महबूब प्रगट रहम करम
हो मनायो ।
वारगाह विशात ऊंचोहाँ सुन्दर वरवर वरको
इह माने विध अध आसमान बनायो ॥

४

सुनोहो पिय ध्यान धर विथा मोरो कौन सों कहों
और कौन सुने तुमहो अन्तर जामी सुखदायो ।
तिहारो सुदिष्ट तें जनम जीतवे कोफल पायो ॥
सब विध उमेदवार जोलो जियघट कौन
भांतिको नाहींनहीं कामो जनायो ।
जिन चाह उनको सम कोऊ कर सके कैसे
कत राखत लेई जीत निहचे जानत हो तुम मेरे हो
स्वामी करो मनभायो ॥

५

मेरा मन लागि तुमसो तुमसोँ चितलावो ।
यह दिन अङ्ग सङ्ग सङ्गके रङ्गके उमङ्गके हिलन
मिलन रस सकुच छुड़ावो ॥

६

मोहे जागत भरे चेन न रही नैनन तामेंतें सुपने में
करा समाइए ।
तानसेन प्रभु समभ कैसे कीजे भोगविलास कठिन
सुध बुध सबहो लेरी पुनि अमृत भेट सोना दे रतन
जड़ाइए ॥

शुभदिन माई चाहतरो साह तेरो यह चतुराई ।
कबको मनावतहौँ आलो उन कहूं न बतराई ॥

८

होंतो ढूंढ़ फिरिआई माई सगरो
वृन्दावन तोउन पाए नन्दनन्दन ।
चलत पग थके थके दोउ नैना और बोल रसना थको
ना जानो कौन देश गए यशोदानन्दन ॥

९

कछु न आवे जियको हुलास मेरो इच्छा
पूरण भई सुख दई दरस ।
जैसो ग्रीषमको तपन जात सिरात माई
दिल सल्लालो तिन अंक वाम वस रहो वर वरस ॥

१०

नन्द-नन्दना जगवन्दना सुरासुरन मिल
सागर मिल संथना गिरवरधारना हिरण्यकश्यप
हिरण्याच्छ-कंसो कंस-बिदारना ।
मच्छ-कच्छ-वराह-वसुधा-स्थापना-देव-वामना
परसुराम धर-रहराम-रूप रावण-कुम्भकरण मारना ॥
हलधर-मूसल-धारणा बुध कलंको नाथ काला
विदारना ।
शनकादि शेष महेश ध्यानहो धारना गोपो ग्वालबाल
व्रजरक्षक गिरिवरधारणा तियाइयानानोया इया
इयाइया राम-रमणा जगकारणा ॥

गान्धार—आड़ा चौताल

मेरोहो यों जनम जात विहानों जनम जात विहानों।
जाते बात कामको पूंछो सोई कहत दिवाना ॥

२

मोनदीन अजमरो ख्वाजा तुम तन मनतें
कष्ट दूर कोजे ।
तुम मनसा पुजवन हार सबको अष्टसिद्ध
नवनिद्ध दीजे ॥

गान्धार—धीमा तिताला

आएहो जू तुम रससाते चिन्ह भरे प्रतच्छ
देखियत भपकोहि गालन लागो पोक ।

यातें मैं जानी अनत रितमानो साह बहादुर
पिय तिहारे दुकूलन सोहे कजरा लीक ॥

गान्धार—तिताला

मोरी खबरियां लाय देरे मतवारे हमरी
सुध बुध गइली भइली खुमारीयां।
नींद मोरी उचट तब गइली कोउ मधुवा
आन पिवावे जान रङ्गसो कहे हमारीया ॥

२

अबतो नेहा लागीला मोरा हामा लागिला मा
महम्मदसा सुन्दरसन।
अपने में सो पे नोछावर करहूं तन-मन-धन ॥

गान्धार—धीमा तिताला

भोर के मिलन बनिलवा मोरी मा पीतमसनवा
रहम मन्दर बाजे मन्दिलरा।
आवो गावो नाचो सब सखी सहेली
सदारङ्ग गरे लाग भेटलवा ॥

गान्धार—जलद तिताला

बरसे नूर हजरत ख्वाज कुतबदीनके दरबार।
उनही पे क्यो न मांगे सदारङ्ग करत कष्ट सब छार ॥

गान्धार—तिताला

सङ्गवा नहीं छांडो तोरा तुमही ओर निभावो
मोरे मितवा।
बाल संगाती हमरे तुम सइयाँ तुमहूं
जाय नवते कितवा ॥

२

तेरेहो रित बावरो गईरे बुन्दरीया बरसे पियरवा
झरवा डारे अमराइया।
देख बदरीया चोंक परी मनमें हमरे
सदारङ्ग सी मिलाइया ॥

३

तान पहले गुरुनके अङ्गसों कोजिए तबही पाछे
मन रङ्गसों बढ़ाइए ज्ञान-ध्यान-मन।
जितनी सकत होय लैले उपजो उकत जुकत
जो रागरीत और सुरसङ्गतसी दीजीए मन ॥

गान्धार—जलद तिताला

पटभूषण न समात जबते भनक सुनी पियके
आवन कहि प्यारी।
कबहूं आङ्गन कबहूं द्वारे कबहूं अङ्गनवा फिरत
न्यारी न्यारी ॥

गान्धार—तिताला

दानी तनुंतांनतननितनमतनमतननना
तदानि तदरेत दरेदानि नानानाना तारदानी।
दीमदीमदीमदीमतननातदानिदोकदीकतकदीकट
तकधीतलांथुंनाद्रकटतकथुंगाद्रकटतकधानी ॥

२

रैनके जागे आए पियरवा मोरे घर राते माते।
पेच पागके लटपटे सारे नैना अलमाने
बात करत मोसे लजाते ॥

३

तनुमका अन्तरा

दीमदीमदीमदीमतनननातदानितिकिट
धिकिटधिरलाङ्गथुंनाधिरकिटतकथुंनाधिरकिट
तिकदिगनदिगनतानथुंनाधिरकिट
तकतकतदिकटतकथुंथुंनितनुंना० ॥

४

बरजोरीए लोगवा माई मिलन नदे पियरवा सों
कौन भांति पिबाऊं मधवा भरभर सरवा।
सदा रङ्ग विन जीउ उरावे लाज आवे छतीयाँ
कुमलाना हरवा ॥

५

करो दूर दुख दारिद्र साहनके साह
शाह नजफ मुरतजा अली मेरी पीर तुम हरो।
तुमही सबके मनकी इच्छा पूरण करन हार
करतारके प्यारे नवी के दुलारे इतनी विनती
वेग सुनो लाज सरम पर नजर धरो ॥

६

सुनो ननदीया तोरा वीर मईसन नित नित अवध बदो
सौतिनके जाय कौन सुने कासे कहों यह दुख बतियां
एदिन रतीयां।

सर्बस देदें हारो जागत सकल नारी तोज अपनी
सपने भए न बनवारी या ब्रज सरस जार छतियाँ
मोरी न जानो कौन ब्रज नारीकी लाग रही घतीयां ॥

गान्धार—औनपद। तिताला

महमद सा पातसा आज हम सन तुम सन
भेंट भइलो कोटि वरस सुरजनुवा कजवा सब पुजोला
जीवो जागो कोटि वरस लों टोटवा तुमारे
कायम दायम इहै सदा रङ्गीले कर मन चौन सुजोला ॥

गान्धार—तिताला

अंखियां लागी रहत निस दिन प्यारे तिहारे
देखन कों।
घरी पल छिन मोहि जुगसे बीतत हैं
निस दिन छूट पटो लगी रहत मोको ॥

२

बोरि मिलन कहा आये जिय तरसावे मोरा
बीभ रीभ ललसुवा मोरा मन तुमो सन अटके।
एकतो नेवर सोरो पायल बाजे या सर्स वैरी भए
अगर नगरके लोगवा सुन पायल चटकें ॥

३

धाय धाय हम हम मावंचा सहिलरा आंग
मारि मोरारि सुरजन घर काज।
आज बधाई तोको सुहाई गावत मङ्गल साज ॥

४

तारेंदोरगतादानोदोमूततननननरेततदरेदानो।
यललमयल्लमयलायलायललले ॥
ततुसृतानततनानितनुमूनितनुमतनना
नदानितटरतदरत दारेदानिनातारेदानो।
दोमदोमदोमननननितदारेदानितकिटधिकिट
धिलाङ्ग धुलिदिरकटतकथुंनादिरकिटतक्
दिगदिगतानथुंनाधिरकटतक्तकिटधिकिट
तक्तक्थुंथुंधा ॥

५

तुम विन मोरी यह गत भईरी कलन परत घरी पल
छिन मोकों तलफत जीय बहुत दुख सहीरी।
सदारङ्ग जिन जावो बिदेसवा घरवा
बैठ रहो सुख अनिहो पाईरो ॥

६

बीर सोना बरारो सुधार जो मोरो रावें
इन लोगन में नेक न घटाई।
जो तुम एसो यत्नो रे फूंक नीके सुहाग बढ़े
सदारङ्ग सङ्ग सुहागन चाई ॥

७

आवो बलमा हमो तुमो जहां जइए जहां
दुरजन होवे न कोय।
घनी अमरैया ठनी गलबहियां डार पी सों
बहीं सो रहिए होनो होय सो होय ॥

८

मेरा दैरो रङ्गाय बाबुल चोला।
जैसो रङ्गीलो पियको पगरो तैसिहो
मोलो लागे सदारङ्ग अनमोला ॥

गान्धार—... तिताला

साहजहां नगर पिउ सुन्दरवा
आज कौन रङ्ग रस राते।
मद पीए मस्त भए डोलत फिरत इत उत मदमाते ॥

...

अबतो सोरे कान भनकवा परत लो मोरो मा
लालन आए मोर मन्दिरवा।
जब पग धरिहैं आसे दरवाजवा तन मन धन
नोछावर करहूं सदारङ्गीले सुनत भनकवा ॥

अथ आशावरी

श्रीखण्डशैलशिखरे शिखिपुच्छवस्त्रा
मातङ्गमौक्तिकमनोहरहारवल्ली।
आकृष्य चन्दनतरोरुरगं वहन्ती
साशावरी वलयमुज्ज्वलनीलकान्तिः ॥

आशावरी—चौताल

मलयागिरि के बनमें वनिता हरिवल्लभ आनन्द भरी।
हार सुढार गरे गजमातिन मोर पखोवन सारी करी ॥

चन्दनके द्रुमतें गहि नागिनी कैं लरमें गरवानी खरी।
निज देहकी दीपतिहीसों आसावरी
दीपति श्याम घटाकी गरी ॥

२

ओज पहरि चीर छविसों विराजी अति वनी
अङ्ग अङ्ग श्याम नीलवरण सुहावनी।
नागिन लपटी रही तन परचखड सब शीतल
शिखर जल अति मन भावनी ॥
चन्दन को खोर किए बैठी द्रुम तरि वाम
निसधरिगप सुरमें आनन्द बढ़ावनी।
पूर्ण जाति निषाद भवन रति हेम दिन डेढ़ प्रहर
आसावरी कों गावनी ॥

३

मलयागिरि नीरि भरे झरना वनकी छवि
देखत आनन्द भारी।
करमें लिपटाय विहार करै तरुचन्दनतें
गहि नागिनी कारी ॥
गजमोतिनको उर हार बन्यो शिखिपंखन की
शिर शोभित सारी।
निज देहकी दीपतिहीसों आसावरी छिपति
ज्यों श्याम घटारी ॥

४

निसारिमनिधनिसारिमनिधपधसानिधपम-
धनिसानिधपमगमधनिसानिधपमगरिसा।
मपधरिसानिसानिधनिमागरिसामगरिसा-
निधपमधपमगरिसामगरिसानिध ॥

५

धधममरिरिसारिरिरिनिनिसारिमपधपमगरिरि-
सासानिधधमपधसारिरिसानिनिधनिरिसारिसा।
धधसाधपधधधसासासासाधधनिरिसारिसानिधधममरि
रिमपधनिसारिमगमगरिसानिधपमपनिनिधरि-
रिसानिनिधनिरिसामगरिसागरिसा ॥

६

आयोरी जीत राजा रामचन्द्र लङ्कानगर।
जित तित सुनियत चहूं देश बाजे बाजत राजत
आनन्द भयो घर घर ॥
जब कोप कियो चढ़े हनूमान अगवानी कर जो धाए
लङ्केश कांप्यो थर थर।
रावण मार धाय लियो देश दियो विभीषणको
अब सीता लायो रघुवर ॥

७

नवल लाल रिसाल बैठे रङ्गमहल
तुंवर समय वैरन सौत लगाई रिसाल।
प्रति प्राणेश्वर इच्छा करहां पठाई उठ चल
हिल मिलरी हित चित नित करहो निहाल ॥

८

कर उदयाचल अस्ताचल लीनो खड़ग बांध
जलालदीन शिर छत्र धरकर।
तोसो और न दूजो तुंही नरेश भुव पर
तुअ सनमुख जीवन जोरे भुव पर ॥
एसो प्रताप तेज सुरो पुरो सप्तद्वीप नवखण्ड सवल वर।
साहनशाह हुमायूंको नन्दन जगवन्दन जाके नाम
महा निडर ॥

९

देखियत आनन्द होत तिहारे दरस जबहीं।
अष्टसिद्ध नवनिद्ध सुख सँपत सन्तोष पइए तबहीं ॥
सुर नर मुनिजन ध्यान धरे वाको पंडित सो कबहीं।
धन राम कृष्ण आधीनन को देत मन इच्छा-
फल सबही ॥

१०

गौरी ईश्वरी शिवा भवानी आनन्द देजै।
रुद्राणी सर्वाणी सर्वमङ्गला मृडानी मैनका
दारिद्र भंजै ॥
दक्षणी उमा कात्यानी सुवर्णा पार्वती दुर्गाराणी
तिहूं लोकमानी मन विचक्रम तजै।
चण्डिका अम्बिका आरजा गिरिजा मैनकात्मजा
निरमोल सेवकको अनेक विद्या कर सजै।

जो रीझें शाह आजम सुजान नरेन्द्र और होय
सदा सभा में जय ॥

११

तोहिसों शारदा प्रसन्न भई लई मन वीतए।
अपनेंही वस करहों रस रङ्गन सो मेरो जंगतए ॥
तूंही अति रागको तीखु चोख खरी कर जानत
माननए।
और तेरोहो अलाप ध्याय तान तेरोही
अच्चर मन लागतए ॥

१२

आज माईहों आनन्दो आनन्दन मेरे ग्रह
धरे पिय चरण।
अब साँचो पायो पूर्वलो फल मोहे मिलोरो
कामहरण ॥
लट लटके मुख देख दुख गयो अनगन सुख भयो
अमृतवचन।
सुन श्रवण जनम धरी मोकों मिले शाह अकवर
मानों जानोरी पीत परन ॥

१३

तू नोरङ्गी लाल रङ्गीलो जलाल रङ्गीलो वानक
वनक छबीलो।
जाके रसाल रसकों भईरी जे रोम रोम
रसिक रसीलो ॥
तो उन विन निश दिन कबहूं न रहों माई परम
कठोर तिह नेक नेम निरखत अजहूं न लगीलो।
शाह अकवर प्यारो न्यारो न कीजिए और है
मेरो सोत्र सुन धुन काम हठीलो ॥

१४

जल थल में और जहाँ तहाँ इत उत जित तित
नित नित तुंही भर रहो शाहनशाह सतार रब।
तोसों और नाहीं दूजो तोसो तुंही नरेश तुंही
दीन तुंही दुनो तुंही धनी तेरो सरव ॥
ना मोमें जप तप न संयम ना तीरथ व्रत लुवधो दरव।
तानसेनको साहब दुखियनको दुख दूर करन हार
भंजन गरविन को गरव ॥

१५

आलीरी मान जिन कर घड़ी घड़ी निश घटत
मिलवेको वेग उठ चल गरे लाग।
याही वानमें तू अति सुख पइए और रहै तेरोरी
सबनमें आदर महत सोहाग ॥

१६

सोई सुन्दर नारि सकल तियनको रिझावे।
और जो कवि पंडितन के गुण नाम प्रकाशि रस उपजावे ॥

१७

प्रकारन कर रिझाय लीनों प्राणेश्वर विचित्र
अङ्ग अङ्ग अनङ्ग।
मेरे जान यही अच्चर होतहैं अपरागन तातें
सकल तियनमें तोहिसों रङ्ग अनङ्ग ॥

१८

उत्तम लगन शोभा सगुन गिन गिन ब्रह्मा विष्णु
महेश व्यास कीनो शाह औरङ्गजेब जसन तखत
बैठो आनन्दन।
नग खेंच दाम विशाल वर गायन मोहनप्रत
ब्रह्मा रचो तिन मध गायन गुनी जन गावत तिनके
हरत दुखदन्दन ॥
एक नितंत नितंत लास ताण्डव रङ्ग भावन एक वन-
वावत वन्दिक पण्डित कर कवि सरस पूरण चन्दन।
शाह औरङ्गजेव जगत-पीर-हरण लोक तारे
निस्तारे फन्देही रहत दुख दारिद्रके गञ्जन ॥

१९

दूलह आयो अकवर नारि ढिल्ली दुलहिन वरपायो।
चित्रकला विराजत अलमंत घनश्यान फानूस
समार वखत प्रताप जगमगायो ॥
जब भिंगाने ठेल पेल लीनहै दुरजन देश देश
दहेज मगायो।
राखो निशान बजाय घर घर मङ्गल गाय चिर चिर
जीवो हुमायूंको जायो ॥

२०

माइरी महा कठिन भई मिल विछुरेको पीर।

घड़ी घड़ी पल छिन जुगसे बीतन लागे नैनन
भर भर आवत नीर ॥
जबसे प्यारो भयो न्यारो कलना परत मेरो बीर ।
तानसेनके प्रभु वेग आवन कीनो जियरा
धरत नहीं धीर ॥

२१

सोहै उत्तम गढ़ औ रङ्गमहल बनाए तिनहूं में
सुन्दर नारन ।
अति हो रहो और पवनको छबि ऐसी लागतहै
मानो पहिरे हरी सारी फुलवारी आनन पर बन
रहो धरन ॥
और जे छूटतहैं फुहारे मानो अलम बनाए नौछावर
करत तन मन धन ।
डाक भाग जागे दिल्लीके थवगनको सुख दिए शाहपति
पातसा चिरंजीव रहो करोर बरस नरन ॥

२२

सोहै शाहनशो साहब सुलतान औरङ्गजेब शाहीको
जे परम बली महाप्रतापी महाराजान ।
शाहजहां-नन्दनके दरबार भई भीर नृपनकी
अति ते पावत खिलत गुनीजन देत अशीसप्राण ॥
जुग जुग जीवो अकबर-वंश कल्पवृक्ष जगत शिरत्राण ॥

२३

सगुन होत पिय मिलबेको आलीरी ताके लागे
अँखियन ।
प्राणेश्वर कब आवेंगे छोड़ परी सब सखियन ॥
भली भई तुम आवन कीनो तन मन रोम रोम
फूली छतियन ।
शाह बहादुर तुम बहुनायक जागे मेरे करम
भाग रतियन ॥

२४

नैनो उलट रहो छूटे बार टूटे हार फैल रहो
कजरा धुर दरशननके ।
कहांको पटिया दरको दरको डगमगात चलत
चाल धरन पर धकधकनके ॥

धायोरी सजदल रामचन्द्र कर लङ्कानगर ।
समउदधि लङ्घित शेष कमठ दलमलानो महि
डगमग उठत धूर गगन थकित छिपत दिनकर ॥
अरिन दर दरेर चढ़ो महाबली एको कुरो पुरो
अडंड डंडन अखण्ड खण्डन नरदर ।
तेजू प्रभु चले जीत जनकपुरी घर घर निशान
नौबत बाजत आयोहै रघुवंशभूषणवर ॥

२६

प्रथम सुर साध आरोह ते पावै नादको भर्म ।
और इकईस मुरछना बाईस सुरत विकल तान
उनचास कोटि गानको धर्म ॥

२७

प्रात उठ चलरी पियपै तुं सुकुमाल बिसार ।
उलट मारग मध यो चितइरी मानो गजराज
रहत आर ॥
तैसेहि मानो दसन नासो कमल जाके मगन्ध मराल ।
राधाने बहारको देख राजा रामचन्द्र उलटे सो
छबिसों राखिए जियधार ॥

२८

अनेक प्रकारन कर उपाय बस कीने प्राणेश्वर
विचित्र अङ्ग अङ्ग ।
मेरे जिय यह अचरज होतहै उपजत यातें सकल
तियन में तोहीसो रङ्ग ॥

२९

गौरी ईश्वरी सरस्वती भवानी आनंदी और भवानी
शर्वाणी सती मंगला मृड़ानी मैनात्मजा दुख-
दारिद्रहरे जाल ।
अंबिका काली कल्याणी महिषासुरमर्दिनी पारवती
उमा शक्ति करदे वांछित काज करो निहाल ॥

३०

पुन बीमिका दुरतहो तुम अपनों सो कहो
दुराव कतोड़ ललन डरत ।
और काहू बूझत देख धों पीतम एजो अन कहे
देत जो गाजेहो सबै सूरत ॥

असाने नीदन अघाने वाके पीतमसों नैन पाए
यातें थोरे ढरत सूरत ।
असलेम साह येह जान पार मोसो सुधहि बिन
जानो तुरत ॥

३१

लालन तुमसों जो बातें पाई कुअत पैए हाथ एहो
धर सकत माथे ।
लाख करोगी तोहू नाहीं मानोगी तै ताहो पै
सिधारिए पिय जहाँ तुम रैन रहे पीत गाथे ॥
अब आए आतुरहै मोहि मनावन भोरावन
साँझको गए भोर आवत भोरके गएहै आथे ॥

३२

अहो तुम झूंठी झूंठी बातें कथत ज्ञानकी रसना
नाहिन बनत मानत नाहिनरी आली कहूं तूंधों
कहा भयो लाभ ।
दादर निशदिन नाल मूलहै चाहहुन पड्यत है
कैसे पड्यत पद्मनाभ ॥
काहे योगी जपी तपी सन्यासी काहे शेष मगायक
जो इच्छा पूजवे एसो कौन की भयो ज्ञानलाभ ।
शाह अकबरको मन मनाइ जो काहो तुम ताहो के
शीश धरो वसदाभ ॥

३३

तेरी सुर भरन अलाप करत धरत पुनि जानत
मन गान गुणनिधान औरङ्गजेब नर ।
सुगायन गावत बजावत गीत छन्द धरु धुरपद पिय मन
रिझावनकों अब तोसी तु हो अङ्ग अङ्ग सुन्दर ॥
पुनि सङ्ग वर विद्या पड्यत लीनोरी भाग विद्यावर ॥

३४

प्यारे तू मन मेरे तनमें बसत रजनी दिन तोहोसों
जीवन बनत मेरो ।
सोवत सपने अन्तर अनत फिरत तौऊ सङ्ग
लागी रहतहों पिय छाड़त नाहीं औसेरो ॥
नैनकी पुतरीनमें मोहनीमूरत देखवोई
करत तोऊ व्यापत न मोमें काम अनेरो ।
विरहनी नारन तारन अकबरशाह सुजानहो आई
सेवा कारण काहू सोतनके कहेंते अब तुम जिन
मोपर तेजो फेरो ॥

३५

ताल सुर ताल राग निरत अङ्गभाल प्रवन्ध प्रकीरण
अपने रस ।
सुध विकृत नेम विरम ओड़व खाड़व सम्पूरण देशी
मारग तत वीतत घन शिखर बाजत गावत गुनीजन
पानके परस ॥
पूरे यों तेरी अलापत यातें सबसों तिन मिल
देख राग रस ।
आरोही अवरोही अस्थाई सञ्चाईके ब्योरो न्यारे
करजो भई भई वाकबानी वस ॥

३६

मुबारक जगन नौरोज नयो जातें भयो जनम अवण
कोंजो पुनि देखो उठे दिल्लो तखतको ।
कोटि कहत धन हमज्यों इच्छा भई सबनको विधना
राखे राज कायम साह आलम वादसाह प्रथीपतिको ॥
आनन्द हुल्लासन गुणीजन गावत बजावत पावत जरी
सरोपाव तुरङ्ग पावै हम तुमतें समरथ रविरथकों ।
अशीस देत सुरभावन अटल रहे तुमारे अब्बा
कीनों तुमकों सजाई सदा रहो हिम्मतकों ॥

३७

अतिबुध कारीगर रच पचके सुनख्त वखत
वल्ली करन तखत अनुपम बनाए ।
जहाँ लगे रतन जड़ित गुण सबगुणके पुनि चिन्तामणि
कामधेनकों एसे नगनकों कापैं जाय मोल मनाए ॥
सो गावत बजावत निरत कारन लगे जहाँ तहाँ होर
चौर आरायश और नगन जड़ित खंभन नील
जर वाफ तारी तनावन बनाय बनाए ।
शुभघरी साध बन बैठो मध नायक दिल्लीपतकों
जेवदा औरङ्गजेब पातसाहो सबन आशीस दई सब
गुणीनको दुख दारिद्र हनाए ॥

नीलवरण पहरे दुकूल रही घटासों कामन दामन
लगत माधौ रैन ।
जाकी पचरङ्ग किनारी सोई मेरे जान धनक भई
बून्द श्रमजलको और बोलत कोककला वैन ॥
पोहपनके हार छूट रस रहे सोई वग पंथ एसो
लागो मेरे नैन सैन ।
यह छवि देख रीझे तानसेनके प्रभु एसो लागत
मानो सूरत सैन ॥

३९

धन धन तूं चक्रवर्ती नरेश जलालदीन सब देश लिए
किए जेर दुवन अपने खरग किवार ।
सब विध प्रथ्वीपर तुम समान परमान उदयाचल
भरती नेहचे जहाँ तहाँ सकल भूपन पर ॥
तोसों तुँही एक अपवली महा सुभट और
समकौन देखों पटतर ।
जलालदीन महम्मद गाजो चिरञ्जीवो तोलों चन्द्र
मेरु गङ्ग जमना छत्रपति शाहनशाह दारिद्रहर ॥

४०

आलस भरे खड़े हो रङ्गीले रग मगे बानक बनतें ।
तूं जो रिन मान आई पिय पैतें प्रगट लच्छण
देखियत सुख कौनिरो रस परम मनतें ॥

४१

रोजा निमाज कर वन्दगी ईवादत याद
साहबदीनकों सवाद जानो जगतमें तुम सब ।
आयत हदीस सिवाय अब कछू नहीं तुसारे
मुख बीच दोनो हिदायत तुमको रब ॥
पाँचो वखत सङ्ग सुनि न्रात मुसफति लावत कौलो
जिकर फिकर और सब ।
मदत अल्लाह पञ्जतन पाकहाज दे इमाम ईद
मुबारक होय महम्मदसा पातसा तुमकों अब ॥

४२

धन धनरी प्यारी सिगरी नारीन में पिय मानी
रूपनिधान मातङ्गगमनी सारङ्गनैनी सारङ्गरङ्गसमान ॥
परननसों प्रेम नमाने आसक प्रभु प्यारो प्राण सगरे
गुणी गन्धर्व सगरे नाद समुंदरन पान ॥

४३

गगरेसाममपपधधपपममगगरेरेसाधधसासागगरेरे
सानिनिधधपपममममपपधधपपधधपपममगगरेरेसा ।
ममपपपधधमारेरेसासानिनिधधपपममधधमामम
पपधधमासासारेरेममगगरे सासानिनिधधपपमम
गगरेरेसा ॥

४४

या हजरत अली मुरतजा अली पीर दुख दारिद्र
दूर करो मो तनतें ।
जो तुमें ध्यावत सोई फल पावत सदका हँसन
हुसेन औलिया अम्बिया शेख सगायक जिनपे
महर करो अपने करमको सोरनको पीर हरो
सुख सम्पत देहो अब शेर खुदावली रसूलतें ॥

४५

आयो आयोरे वलवन्त छत्रपति दुवन मिलिवो
माई दलमें ।
ज्यों वरषा ऋतु उमगत नारे सूख जात एक पलमें ॥

आसावरी तथा वहार—तीताला

४६

प्रथम मज्जन कीनोरी आली उदियाको दोउ
पटरस लीनो ।
हसन बोलन डोलन मानो सरस्वती लिए बीणा
हुमायुंको नन्दन अकबर वस कीनो ॥

४७

नाहिंदे नबीके असुत हजरत अलीको सकबूल
दीऊ जगके प्यारे चिस्त भोरके ।
दुख दारिद्र दूर करो निश्चय मनमें धरो दरगनके
चकारा मुक्ताधिक भोरके ॥
गुरूहे साधनके दाताहै सन्तनके दयालहे दीनके
एसे पूत नामरपोरके ।
तुमको जानामें आय चरण गह विश्वा वीस पावन
में राखो अपने सीस खाजे मोरके ॥

आशावरी—झपताला

कोज तो मोहि बतावोरी पियसों मानकरवे कोढव।
ए एसे कीजे जामें वे नेक मलीन न होय और
अपनोहूं बात रहे सब ॥
उनको कहा कहों वेतो निपट प्रवीण सकल लाल
अनेक आंखनकी फरकात देख रहे तिनसों
छिप सकें कब।
यह मूल मन आय गई सो तुमसों कहो तातें
सदारङ्ग रीसहु में मरूँ एसो कबहूं अब जब तब ॥

आशावरी—आड़ा चौताला

महागणेश कहत सुख चैन।
भेटत हूं नक्काड़े भावें साह किरान लागे विचकैन ॥
नाम लेत कटत पाप अन धन लच्छमी दैन।
तानसेन सेवक पें कृपा करो ज्यों कल्पवृच्छ कामधेन ॥

२

ढोलन मान न करिए गुमान न करिए।
जिन नाल महोब्बत लइए तासों हित चहिए
प्रीत रीत जिय धरिए ॥

३

कीनो एसो सर तुव कर वर वर वर डर काटे
अपार और दीनो बिड़ार।
सेन भर कमठमानो अरु शेष डगे गोलो सडार ॥
खल कमव्यो इन्द्र गहन मया कीजिए जिय डर
जब सुने बाजे इन्द्र बजावत कोठार।
अनपे बरपा डर बरपायो अधिकर एसो मचो मार ॥
एक गेरन चाहे जाय कनको बाद भजो जातरो लार।
मिटि डार उड़ प्रबल उड़गए जित तित जुरें न
लगत वय पड़त चरण कीरत चल महावलो साह
मौजदीन लीजिए पग पर वार जो जगमें प्रतच्छ
राम अवतार ॥

टोड़ी · तारसाढ़ा

गज घण्टा विभार अरुण सिङ्गार विविधि दुख्तें
उधार सकल रैयामान मरदन त्रैलोकताप
निवार आए।
ससझ अजम झुझार गहे करवर भुजन फिर फिर
दलन विस्तारण दूलह शरण सुस्तार प्राए ॥

आशावरी—ताल रूपक

गगरीया लेदे मोरी पनवट भरन न पाओं
कान्हा हेरी।
उतकल लाज तुंही जानतहै इतए रहनन देरी
हाहा तेरी चेरी एरी ॥

आशावरी—तिताला

रामजू विष्णु दामोदर नारायण कृष्ण
हम गऊ तुम ग्वार गुसांई जनम जनम रखवारे।
कबहूं तो पार उतारो चराइ कैसे प्रभु हमारे ॥

२

चौंक डर ढुर लागी पियके उर देख वेणीको परछांई।
याही बातको आनन्द भयो परे ख्याल मन भावन
तातें गहे किए नाहीं नाहीं ॥

३

बह जाय एसो चलन जो नेकन होत नरम।
यो तोको चाहत पोकों न चाहत फिर पछतायगो
यांही जायसोरी तेरो मरम ॥

४

मेरे नैननहीं लागी रहत पियकी सूरत
सोतो एक पल क्योंहूं नटरे।
मैं नहीं जानू काकू मोहनीसी पट डारो यह मन
धीरज न धरे ॥

५

हजरत एसो होय तुमतें मुझको मिलावो प्यारा।
तुझ कारनमें सब जग वाला विरह सुहाग में गाला
आला आप कुन्दनहै हम नम झाला नेक न करो न्यारा ॥

६

नंजो कर नचाय नचाय बातें करत हो अङ्गुरी धर
अधर भौंहो भइरो सोसों करत चातुरी।
तेजो अपनो दुराव छांड़ नाहिन आलोरी
अब घट ढूंढ़ पइए सच आतुरी ॥

अब नग मंट करत है आली सो मोह खीज लागत तेरे
तो जीमें डोरे एकही तुरो।
उजागर दौलतखाँ सो मिले कपट कर एसी
भांति क्यो जो पतयातुरी ॥

७

तेरो चितिवन हसन वस किए लाल को
नैन मनरी आली रीभ रहे मनमोहन।
कोटि भांति रिझाय बुझाय समभाएरी पै कहूं न
अटकेरी रीझ तेरही अब किए जतन कौन कौन ॥

आसावरी—ताल सुरफाकता

निमारेमनिधपमगरेगरेसानिधपमगरेगरेसा।
मपधरेमानिधपमगरेमपधसाधसारेमगनिधनि
धपमगरेसा ॥

आसावरी—तिताला

हजरत शेष सलेम पीर रोशन जम्मीर
जानत तुमहूं विथा मेरी नीके कर।
या जग बीच सब जानत है हम चेरे
कहावत तुम्र दर ॥
कृपा करो तुम हमहूं पर जैसी करी तुम भावतेपर।
ममृह को देहो अष्टसिद्ध नवनिद्ध राखो
अपनो मान आदर ॥

२

मेरे मन बौराव राखो इन गोविन्द बैनन।
हों पाछे पाछे पछताय रही वेतो अन्तरजामी
स्वामी कहियत है मन वस कीनो सैनन ॥
सूरत ठगोरी मोहे ठग जो चले मो पीर हरण
चितए मोतन सूधे इन नैनन।
तानसेन को प्रभु सुखसागर सुनो वे
देखेही निहचे चैनन ॥

आसावरी—चौताल

आज माई आनन्दो आनन्दन मेरे ग्रह
धरेरी पिय चरण।
अबमें पायो साँचो पूरवलो फल मोहि
मिलेरी कामहरण ॥

नवन लाल रिसाल रङ्ग महल में बैठे तुम्र दरस
बेरना लगाई वाल।
पति प्राणेश्वर अरथ कर हौं पठाई उठ चल हिल
मिलरो हित चित कर हेरो निहाल ॥
एसो गाढ़ो मान कबर्तं कीजिए किन मोतनको
चितवतरो तन तब आपस मन काम सुख रहे
धन धन धन ततकाल।
रस तें अनरस रसाल सो कबर्त मन धरि वेभए
दयाल तोही सों बोलत साह जलाल ॥

३

जहाँ सभा पण्डितन निरत कारो मनरञ्जन
श्रवण दुखभञ्जन कलावन्त कलानिधान।
सुन राजा राणा बादसा राजारामको
जानत चक्रवर्ती जहाँ रिद्ध सिद्ध नवोनिधान ॥

आसावरी—तिताल

सब जगत सरफराज कोनि सरफ को
शाहजहाँ पातसाह बैठे तखत।
राजा राव वस किए किए द्रुगपाल उमराव
भुवलोक मध नर नारियनके जागे वखत ॥

आसावरी—झपताल

ढोलन आवरे आवरे तुझ वेखन दामें तूचावरे।
तुझ विन मुझे कछु सुहावरे और सूरत
उठि है भावर रैन दिना मुझे दरस दिखावरे॥

आसावरी—पटताल

मिठ बोलन ढोलन आएरी मोरे मन भाए।
घर घर मङ्गल गाए नैना सिराए हिल मिल
करोगे वधाए ॥

२

एमोहि रटत गई रैन परी पछिन चापन चलीरी
आप आप मिलीरी।
औरहूं सखी हिलि मिलि रसाल भुँवर दरशन
देखे तो आनन्द भयो रसीली ॥

आशावरी—ताल रूपक

आनन्दन रसदानी तू जालपा भवानी
बुध दानी नग्र कोटरानी।
अतिबुध दृढ़ दे सयानी भुव सुध प्रगटे जो जानो
मनसा तन मन जियमें जानो॥

२

ढोलन गुमान न करिए वेमानी न करिए।
जिन्हा नाल मह्रोव्वत लाई तासों डरिए॥

आशावरी—तिताला

सो पलहूं न भूलेरो माई मोकों अपने
ललनको बतियां।
छविनायक उन जबतें गवन कीनो तलफत कटे
दिन रतियां॥

आशावरी—ताल धमार

काल्ह किन सङ्ग जागे हो रङ्गीले छवीले नन्दलाल।
लट पटी पाग पेच अटपटे चलत डगमगी चाल॥
अञ्जन अधर पीक द्रग सोहे जावक लागे भाल।
विन गुण माल लसत छविनायक तापर मुकरत लाल॥

२

आज तोहे ना छाड़ोंगी मोड़ोंगी मुख में गुलाल।
औचक आन फंट गहे मेरे दे गारी गए काल॥
अपनी और जोर युवतिन सों हंस रस चाखत लाल।
छविनायक अब बस परे मेरे छीनोंगी मुरली माल॥

आशावरी—तिताला

हार गुन्ध लाई मालनिया गरे डार प्यारी पियके।
भर भर थार नार सब वारे छविनायक मोतीय के॥

२

मङ्गलरा गावो सब गुणी कुंवर प्रगट ब्रज लीनो।
जैसो भाग उदे यशुमत को एसो भयो न होनो॥
द्वार द्वार भीर याचक ठाड़ी बचो कहूं न कीनो।
छविनायक नर नारि परस्पर मणिगण वारत सोनो॥

३

श्रीमाता भवानो मोपर दयाकर जगज्जननी दयानी।
तुमसी नहीं कोई सृष्टिमें सुखदानी
महावाक्वाणी कृपानिधानी॥

४

बढ़ैया लावरे आज सुघर घढ़ पलना।
रतन जतन सो जड़ित हिंडोलना झूलत है
यशुमत ललना॥
जो छवि निरखि सकुच श्रुति शारद लघु
लागे सुर आलना।
छविनायक नोछावर करिहै अरब खरब खालना॥

५

मन्दिलरा बाजेरी आज मोरे
घर आनन्द भइलरा माई।
वर पायो सबके मन भायो छविनायक
मिल गावत मङ्गलवा गुणी गावत सुख पाई॥

६

कहा करों आली सो रट मोहे लागोरी पिय पिय।
छविनायक अब विन पिय देखे अकुलाय
आवे मोरा जिय॥

७

सांवरारे तें मन मेरा बस कीनो।
तू जोवन की शोभा कहा कहों
जैसे अञ्जन कजरोटी में भर दीनो॥

८

बहुत दिनन तें भटकत हम तेरी दरगाह
देखन आएहो।
धन जन्म हमारो जो अब तेरी शरण धाएहो॥
अल्लह करम कर पढाए तुमको तन मन
इच्छा फल सब विध के सुख पाएहो।
चिस्तगांव के सेवक कहावत जनमहूंतें तुम जानत
हजरत मोनदीन अब कौनके ढिंग जायेहो॥
एसो कीजे कृपा जासों सुख होय समूह को
सब मिल रहे एक ठौर चाहेहो।
ज्ञान ध्यान बढे या कारन ए पायन पर ने आएहो॥

आशावरी—धीमा तिताला

देखिए दरबार मोनदीन को दीनन नियामत
हो भरो।
जे तोहो ध्यावत ते फल पावत एसो रहम करम
तुमको करोम हो करो॥

आशावरी—तिताला

मोसों करत चतुराई तू जो चायन चायन
करत चातुरो।
बातें करत और अङ्गुरो धरे अधरन
झूठो भईरो दूजे अपनो दुरावत घातरो॥
छोड़त ना अब घूंघट छोड़ पाई याहो
मो खिज लागत तेरो बातरो।
तेरे औ उनके दुलार कहां जात आली उजारे
दौलतखां सों मिल क्या कपट करो एसो
भांतिन कौन पतियातुरो॥

२

होंतो ढूंढ़ फिरो माई सिगरो वृन्दावन
कहूंन पाए नन्दनन्दन।
हेरत हेरत मेरे पांव थक गए ब्रजनाथ कवन
देश गयोरी कामकंदन॥

३

गोविन्द गोकुल ते जो चले बन हममों
अवध वदो गुसांई।
एसेहो निठुर खरेहो भए एकतो दुखित वाम
धामते अकेलो दूजे काम विन प्राण टलमले माई॥

४

कहांधो लगाई एतो वेर हमारे माई गोविन्द न आए
कौनधो अङ्ग लाए कौन दूती विरमाए
पलक के विछुरे ते भएहैं पराए॥

आशावरी—झपताला

मुवारक वादो इशादो होय तुमको
वरष गांठ गांठन को।
चिर चिर जीवो कोटि वरखलों गावो
बजावो ब्रह्मा आरवलको॥

आशावरी—तिताला

मुवारकवाद होय तुमको ब्रह्मा अरवल कोना
ए सोतो वरस गांठ गांठनके वरके।
शुभदिन शुभ महूरत तुला चन्द्रमा नोको वखत
कुम्भको घरके।
चिरञ्जो रहो खानखाना सुजान आशोर्व्वाद
देत नरनारो तिहूं पुरके॥

आशावरी—झपताल

सबलवोर अति सुभट अरि दलनको
चढ़ो दल साज दलवल भारा।
अरिन खलवल परो आवत प्रचण्डन भोम भुजन
ज्यों नाहर मुकारा॥
खेंच खेंच तोरन कमान बोच मचलो भयो
एसो सुरो पुरो टरत नाहि अबजो टारो।
एक घायल भयो एक रनमें घूमत फिरत एसो
कौन जोधा तोसे जङ्ग झारो॥

२

धवल प्रचण्ड वलवण्ड नवधा को नवखण्ड जिह लई
भूमि अडंड डंड जाको धाकको पारन।
औरसे सुभट नरते झटपट पग पटकत सब गए
डरकर वार झटकत बहुत भटकत गरदके गए
खुर तारन॥

आशावरी—तिताला

मेरे नैनहो लागो रहे पियको मूरत
आलो एक पल क्योहूं न टरेरो।
हों न जानत कछु मो पर मोहनो डारो आलो जोलों
नैन देखूं यह मन धोरज न धरेरो॥
वे बहुनायक उनहोंके कारन मो चित यों चाहे
पै औगुण गुण खरे समझेंगो तो मान न करेरो।
यह को नाह देखो समाई आलो रूसे
हमे रसना राजाराम रटेरो॥

२

काहू देखन न देहों एसे पोतम को हों
आलो नित नित केहो।

हौंही राखौंगी तनमें दुराय जाजा भांतिन
अनुरज जाय मो विध केहो ॥

३

तुंही मुराद करो मन भावन।
दिन दिन सुहाग बढ़े लाड़ले दुलहा कोते
अब वसकर पायोहै लाड़ लड़ावन ॥
विनती सुन लीजो कान धर हमारी
अहमदसा बादशाह प्यारे मनभावन।
हौंजो धरतीपे मेघ वरषत तैसे वरसे वरषका चाहिए
मोपरज्यों सावन हरो भगे डह डहो देखो करो
लागी रहों तिहारीहै दावन।
कहत सुरभावन नाम धरो नीको तिहारे
नामते निहाल होत मोमो करोरन वामन ॥

आशावरी—आडा चौताल

ए जित तित सुनीयत वावर वंश जीतो।
अरिनन मार हदमद कोनोंरी दरोया पार खांड़ो
पखारो कियो अपनो चीतो ॥
देश देशनके नरेश कांपत डरपत कहत
जरव जोरके कहा कियो एसो पीतो।
चिर चिर जियो शाह अकवर सवन तोड़
कियो अजीतो ॥

२

एरीए वह हमसों रहन लागी है हमको
माने पहचान नाहीं।
उनको पीतको कछु अन्तर परे ताको
विलग न मानो याही ॥
भूलेहूं न कह्यो जाय कही जब तब दरस परस में
कहूंते हम तुम एसो निबाही।
जैसी कछु निभह्न तैसो तुम देखहु अपने
प्यारे औरङ्गजेब सो तुही कोन दृष्ट जोही ॥

आशावरी—तिताला

आलोरी सकुचन बोल न सको बोली।
हुन लाजन मुसक्याय नाशको यह विध जियते अकेली ॥

आशावरी—तान रुपक

आज बजाई मुरली मनोहरने सुध न रही
कछू मो तन मनमें।
हौं यमुनाजल भरन जातही कान्हा ठाड़ोरी
वृन्दावनमें।
सुध न रही कछु ठगनको अगनमें भूली काम काज
सब घरनमें।
तानसेनके प्रभु तुम बहुनायक मेरो मन मोह्यो
आली मदनमोहनमें ॥

२

चटक चित मिवड़ मिल तज मन नवल चित चढ़त
रूप रङ्ग भरत जगत मनहरत।
प्रथमही आभा मादरत पुनि अरतन कुछ करत
बड़ो बड़ो वार परत ॥
रम ढरत लटपटात थरथरात वे कम भट ह्वै लरत।
एक मारत मरत एको टरत वसरत हेरत गोर
दारिद्र इनको दरत ॥
वही ज्ञान जो में धरत परसत संसार नित तार
मनमें यातें फूलन परत।
तानसेन कहत अकवर अल्ला भरके नाम गाए
एव दरस नहीं सुरत निरत ॥

आशावरी—तिताला

तोहि अति भावेरी शाह औरङ्गजेव उजारो।
दरस देखेते रोमरोम सुख होतहै डर होत हेरो
दुख अधियारो ॥
एक रसना अस्तुति कैसे करों कहो जाय
प्राणहूं ते प्यारो।
राखौंगी हियमें दुराय कर नेक न करहों न्यारो ॥

२

मङ्गल गावत मृदङ्ग बजावत निरत करत हेरो कठतर।
साहिवशाह शाहजहांको अल्ला देहो
लाख वरस गांठ गांठन पर ॥

३

ए साह अकवर तुमसों न बोलो मनमाने हो
नहीं माने।

जे तुमारे औगुन मोहि कैसे भूल गए सोतनकी
बांहो गए गेह आन डोलत सो तो मेरे हियमें
जो भले जाने ॥
अब आवो मोपै मान छिपावन न जाने जोजाने ।
साहजलाल अब कैसे आए हो पीत कर
परछाने पिछाने ॥
४
मोती नन्दनन्दनरी अनबोलही रहूं ।
जेतोहूं बात पूंछतहैं भुराई एसो काहू वार सोतनको
खिजाए प्राण राखूंरी अनरूषक सर
बात मोसे नेक रहूं ॥
आसावरी—सरफाकता
निसारेमनिधपमगरेंगरेंमानिधधपमगरेगरेसा ।
मपधरेंसानिधपमगरेंमपधसाधमारेमगनिधनिधप-
मगरेगरेसा ॥
पपनिधधधनिरेंरेंमानिसारेंरेंसानिनिनिधधमपधधनि-
धधनिसागगरेसा ।
धधनिमानिसारेंरेंसानिनिधधमपमपधनिसानिनिधनि-
धपधपधपमपममपमगमगमगरेगरेंरेंसाम ॥
२
तोरे कारण मोरी सुध विसरनी मोहन
तेरे रूप लोभानी ।
पिया पूंछेंगे तो कहूंगो कहानी जिस घर कँथहै जो
ठकुरानी यार जानी यार जानी ॥
आसावरी—आड़ा चौताल
माईरी जाहरपीर मीरा जाहरपीर मीरा
साह आलम होय सुफल ।
दीदार देखेतो सकल पाप हरत और दीनको वल ॥
२
एरी आली इन लाजन सकुचन बोल न सकों ।
मुसिकाय तन सबकों यह विध जियते
अकेली बकों ॥
आसावरी—ताल रूपक
कैनको छकावै छबीली उमगीली मदकी
भरलाई काई ।
तूं लाल करजाने लाल रसाल पियारे लालको
लपक लातरी जोहै प्रेम सुरा लीक ताई ॥
२
बुरो जिन मानो हो नन्ददुलारे यश्रुमतके
प्राणनके प्यारे जान बुरी बुरी ह्वै जैहै ।
एसी टेव न लगाइए तुम आप बड़े बड़ो लाग
बड़ो प्रताप नीके बोल्यो चाहै सुतो मोमां
जानीनकों को कहै ॥
आसावरी—तिताला
मयाको इष्ट नटरे जातनके हिय लागी ।
वे वहोनायक जहां जात तहां रङ्ग उपजावतहो
अवध वचन मन्न निग्र जागी ॥
२
आपन भोरीहैं भोरीमी बतीयान कर कर मोहन
तोहिते भोगयो ।
हों जो जानत तूं अब निपट जान भोरी तेरो
मरम अबहीं पिय पायो ॥
३
प्याला पिलावे महबूब कलालो जो जावे
तन मन तें खुमारी न्यारो ।
जो बस अङ्गहो रिझाय पुनि अधररस धरले
कौन चखाय साव पावै प्राणेश्वर यारो ॥
आसावरी—ताल रूपक
अल्ला मालो जग लासवास फुलवारी भांति भांति
बहु वरन वरन ।
एक जोगेश्वर एक भस्म किए एक सिद्ध साध
एक उत्तम वरन ॥
आसावरी—तिताला
ए दारू पिलाव कलाली तानसेनकों खुमारी
भई अन्त विहाली ।
दुहाई साहजलालकी प्याला भरभर
पीवाउहो लाल दुलाली ॥

आशावरी—तिताला व झपट

मेरो मन ना रहे मेरा यार वे तुझ बिन
फिरों गली गली बेकरारवे ।
तुझ देखत तन मनतें भई जिय मन हालवे
अब मुझको नेक न विसारवे ॥

आशावरी—तिताला

बहु जाय एसो चलन जो नेक न होय नरम ।
पिय चाहत तुम न चाहत तुम न चाहोगे
नहीं तो फिर एसेही जायगो जनम ॥

२

हरि बिन पापी प्राण गए न गए ।
अब न गए पाछे पछितइहे अब कौन सए ॥

३

पिय बिछुरत न गए मेरे प्राणए नैन कहत
मानो लाग दुख पावन ।
तोउन समझत निलज्ज कठोर जोन फिर
चितए मोमे मनभावन ॥

४

निपट मन मेलो कोनो ललना कहांलों धीरज धरीए ।
औरमों हंसत खेलत सुनीयत है बलमाए
न अनखनरी अनखन ना जान न मरीए ॥

५

घर घर धुन मथन होतहै सुनीयत दुनीया तेरो
गुण मेरी पीत और पियके जैसे कहे ग्रथन ।
जैसी कैसी आन एसी कहत हों तेई तेई आलीरी
जहां तहांलों सुहाग चरचा लागी कटाछन ॥

६

डार देरी इंडुरीया मेरी पचरङ्ग पाटकी ।
पायन परत निहोर करतहूं यह लालच आवे
जो गोकुलनगरके हाटकी ॥

७

झुलावत लालकों बनवारी वारलेत कोर ।
अगर चन्दनको पलनो घड़ाऊं और पचरङ्ग
पाटकी डोर ॥

८

छैलको छकावे छवीलो रङ्गीलोरी
उमगी लाल मधकी भर लाल मुरैया ।
भर भर पिलावो मललीया बिनबिन लावो
मरुवा दोना फुलैया ॥

(अभो०)

९

एसो माई भाग करम मोरा पीव घरके ना करे नाव ।
उन बिन यह गत भइलो दिन दिन
पीरो भइलो कछू न सुहात ॥

(खा०)

१०

तपदीयां सिकदीयां नैन पके जिना जाई
राझण फेर पाए वोसी जाई मैडे मुके ।
यारा दीया अखियां झमन आवण बिन दीठे
यारा दे मुके ।
कोकुर जीवा में जालम लोगां विछोड़े दे लगदे मुके ॥

११

जबतें तुम निठुर गए मोतें तबतें तो
मोरी सुध बुध तनतें गई ।
में निरगुणीके आए मया कर तुम
पूरण भाग मेरे आज भई ॥

१२

तेरेरो गोरे मुख पर कटाछ भरे नैनककी काजर सोहै ।
और कहा कहूं तोरी तो एक नजर मनमोहन
को मन मोहै ॥

आशावरी—जलद तिताला

पल्लो न टाणीया वो दिलवर मैं डावें ।
प्यारे तुमे खड़ी डड़ी कांवखनन जागांवे रावें
आस जगा मेंडे सामणो तेरी तुमें डावे ॥

आशावरी—तिताला

मइयोनी मैं कीकरा माए
जालम आंखि मेंडो लगीवे ।
हाल दिलादी वारी किसनु सुणावा
वावन लगी तेनु तेनु रातो ततीवे ॥

जी तुमारे औगुन मोहि कैसे भूल गए सोतनकी
वांहो गए गेह आन डोलत सो तो मेरे हियमें
जो भले जाने ॥
अब आवो मोपे मान छिपावन न जाने जोजाने ।
साहजलाल अब कैसे आए हो पीत कर
परछाने पिछाने ॥
४
सोतो नन्दनन्दनसे अनबोलही रहे ।
जेतीहूं बात पूछतहै भुराई एसो काह वार सोतनको
खिजाए प्राण राखेरी अनरूपक सर
बात मोसे नेक रहे ॥

आशावरी—सरफाकता

निसारेमनिधपमगरेगरेसानिधधपमगरेगरेसा ।
मपधरेसानिधपमगरेमपधसाधमारेमगनिधनिधप-
मगरेगरेसा ॥
पपनिधधधनिरेरेसानिसारेरेसानिनिनिधधमपधधनि-
धधनिसागगरेसा ।
धधनिसानिमारेरेसानिनिधधमपमपधनिसानिनिधनि
धपधपधपमपममपमगमगमगरेगरेरेसाम ॥
२
तोरे कारण मोरी सुध विसरनो मोहन
तेरे रूप लोभानो ।
पिया पूछेंगे तो कहूंगो कहानो जिस घर कँथहै जो
ठकुरानी यार जानो यार जानो ॥

आशावरी—आड़ा चौताल

माईरी जाहरपीर मीरा जाहरपीर मीरा
साह आलम होय सुफल ।
दीदार देखेतो सकल पाप हरत और दीनको वल ॥
२
एरी आली इन लाजन सकुचन बोल न सकों ।
मुसिक्याय तन सबकों यह विध जियते
अकेली बकों ॥

आशावरी—ताल रूपक

छैलको छकावे छवीलो उमगीलो मदको
भरलाई काई ।
तूं लाल करजाने लाल रसाल पियारे लालको
लपक लातरी जोहै प्रेम सुरा लीक ताई ॥
२
बुरो जिन मानो हो नन्ददुलारे यशुमतके
प्राणनके प्यारे जान बुरो बुरो ह्वै जैहै ।
एसी टेव न लगाइए तुम आप बड़े बड़ो लाग
बड़ो प्रताप नीके बोलो चाहे सूनो मोसों
जानीनकों को कहै ॥

आशावरी—तिताला

मयाको इष्ट नटरे जातनके हिय लागो ।
वे वहोनायक जहां जात तहां रङ्ग उपजावतहो
अवध वचन सब निश जागो ॥
२
आपन भोरीहै भोरीसी बतीयान कर कर मोहन
तोहिते भोरायो ।
हों जो जानत तूं अब निपट जान भोरी तेरो
मरम अबहीं पिय पायो ॥
३
प्याला पिलावे महबूब कलाली जो जावे
तन मन तें खुमारी न्यारो ।
जो बस अङ्गहो रिझाय पुनि अधररस धरले
कौन चखाय साव पावे प्राणेश्वर यारो ॥

आशावरी—ताल रूपक

अल्ला माली जग लासवास फुलवारो भाँति भाँति
बहु वरन वरन ।
एक जोगेश्वर एक भस्म किए एक सिद्ध साध
एक उत्तम वरन ॥

आशावरी—तिताला

ए दारू पिलाव कलाली तानसेनकों खुमारी
भई अन्त विहाली ।
दुहाई साहजलालकी प्याला भरभर
पीवाउहो लाल दुलाली ॥

आशावरी—तिताला ध्रुवपद

मेरो मन ना रहे मेरा यार वे तुझ विन
फिरों गली गली वेकरारवे ।
तुझ देखत तन मनतें भई जिय मन हालवे
अब मुझको नेक न विसारवे ॥

आशावरी—तिताला

बह जाय एसो चलन जो नेक न होय नरम ।
पिय चाहत तुम न चाहत तुम न चाहिरो
नहीं तो फिर एसेही जायगो जनम ॥

२

हरि विन पापी प्राण गए न गए ।
अब न गए पाछे पछितइहै अब कौन मए ॥

३

पिय बिछुरत न गए सङ्ग प्राणए नैन कहत
मानो लागे दुख पावन ।
तोउन समझन निलज्ज कठोर जोन फिर
चितए भोरेसे मनभावन ॥

४

निपट मनमिलो कोनो ललना कहांलों धीरज धरीए ।
औरसों हँसत खेलत सुनीयत है वल्लमाए
न अनखनरो अनखन ना जान न मरीए ॥

घर घर धुन मथन होतहै सुनीयत दुनीया तेरो
गुण मैरी पीत और पियके जैसे कहे ग्रन्थन ।
जैसी कैसी आन एसी कहत हों तेई तेई आलीरी
जहां तहांलों सुहाग चरचा लागी कटाछन ॥

६

डार देरी ईडुरीया मेरी पचरङ्ग पाटकी ।
पायन परन निहोर करतहुं यह लालच आवै
जो गोकुलनगरके हाटकी ॥

७

झुलावत लालकों वनवारी वारलेत कोर ।
अगर चन्दनको पलनो घड़ाऊं और पचरङ्ग
पाटकी डोर ॥

८

छैलको छकावे छवीलो रङ्गीलीरी
उमगी लाल मधकी भर लाल मुरैया ।
भर भर पिलावो मललीया विनविन लावो
मरूवा दौना फुलैया ॥

(अर्भा०)

९

एरी माई भागु करम मोरा पीउ पूंछे ना करे ज्ञान ।
उन विन यह गत भइलो दिन दिन
पीरो भइलो कछू न सुहान ॥

(खुा०)

१०

तपदीयां सिकदीयां नैन पके जिना जाई
राझण फेरे पाए वोसो जाई मैडे मुके ।
यारां दीया अखियां कमन आवण विन दीठे
यारा दे मुके ।
कोकुर जीवा मैं जालम लोगां विछोड़ें दे लगदे मुके ॥

११

जबतें तुम निठुर गए मोतें तबतें तो
मोरी सुध बुध तनतें गई ।
मैं निरगणीके आए मया कर तम
पूरण भाग मेरे आज भई ॥

१२

तेरो गोरे मुख पर कटाच्छ भरे नैनकको काजर सोहै।
और कहा कहूं तोरो तो एक नजर मनमोहन
को मन मोहै ॥

आशावरी—जल्द तिताला

पच्छी न दाणीया वो दिलवर मैं डावें ।
प्यारे तुमे खड़ी डड़ी कांवखतन जाणांवे रावे
आस जग मैडे सामणो तेरो तुमे डावे ॥

आशावरी—तिताला

सइयोनी मैं कीकरा माए
जालम आंखि मैड़ी लगीवे ।
हाल दिलादी वारी किसनु सणावा
वावन लगे तेनु तेनु रातो ततीवे ॥

परी है प्रेमकी गाँठ सजनी छुरगई छुरगई ।
मारग में ठाड़ोरे मोहन दृष्टि अचानक जुरगई ॥

३

नैना लाग चले सङ्ग पियाके आवे रोको घरोरी ।
कहोत मूरख कहां चलेहो नैननकी
गत मानो विधोजे दूतो फेरोरी ॥

४

मैं नहीं जागदी पें डड़ा सुणवे सोणां
मैंड़ड़े कौल तैंड़ा खेड़ा ।
किसनु आँख देखावां एहा नैणांदा उलझेड़ा ।
ढूंढ़दी ढूंढ़दी कमली हुई खजाने दिलदा मैंड़ा ॥

५

मिल बिछुरेन कोरे दुख सह्यो छ
न जायरी विरहन फिरत वावरी ।
तुम विन नीर बहे आँखन ते तवारी
विरहन फिरत वावरी ॥

६

आवो वलमा हमी तुमी तहां जइए
जहां दुरजन होय न कोय ।
घनी अमरैया बनी छांह कर डार पिछोग
सुरजनवा मोरा रहीए आन सोय ॥

७

छजई तुव मन्दिलरा तुम्र दरबार नीजामदीन ।
ऋत आई वसंतकी मुबारकी देन सदारङ्गको
गाय बजाय बीन ॥

८

राम तेरा भला करेगा दिलकी घुंडी खोल ।
साड़ा मन तुमसो लागा जो भामी त्यों बोल ॥

९

मथुराके वासी लोरी लोएरी मेरा अति
लोरोलो सुखरैया ।
चन्दनका घड़ पालना बनाओ रेशम की डोरोया ॥

हांजी म्हारे अङ्गना में चंपा बोई म्हारो राज ।
मै तो थारी दासी जनम जनम को थे म्हारो शिरताज ॥

११

माई आज मेरा ग्वालोया रूस रहोरी ।
अन्न नहीं खांदा दूध नहीं पोदा वार डारू
कान्हादी कमरोया डार दियोरी ॥

१२

भंवरारे पिया सङ्ग जाय इतना सन्देसा मोरा
कहियो जाय ।
तेरे विना मोंको कल न परतहै अब कैसे सुख पाय ॥

१३

जब ते तुम निठुर होगए मोपे तबते मोरो
सुध बुध तनते गई ।
मुझ निरगुणीके आए मया कर तुम पूरण
भागमें आज भई ॥

१४

गोरी तेरो जोवन एसो जैसे भोरकी तरैयां ।
आवत न देख्यो जानत जान्यो जैसे घरनो परछैयां ॥

१५

एसे मुखकी वलैया लेहों मैया सुन्दरश्याम
कन्हैयारे ।
जो मेरे ललाको देखन सकतहै वहकी आखन
लुनरयार ॥

१६

तेरेरो दुलरवा जीवेरे हँसत खेलत दूध पीवै ।
एतना माँगतहों देहो गुसैयां झूलत पलना चिरंजीवै ॥

१७

ढोलन हुण आवणा तैंड़ड़े नाल
ढोलण तैंड़े मिलण दामै नुचाव ।
रात देहा एहा दिल मैंड़ा चाहदा तुसी वेखणनु
हाल वेख मुखकरी सानु निहाल वेहुण आव ॥

आशावरी—एकताला

बंशीमें श्याम मगता बोल बोल सुनावे ।
सुनरी वीर धीर न धरों जी विन देखे न भावे ॥

आशावरी—तिताला

अरे मन लागी याहूते जो अपना हित चित होय ।
दरद बिथा कथा सब कह दीनो तोहै
जोई दुख बाढ़े चल आगे जोय ॥

२

जोगी काके मीत भए जो कोऊ उनसे
हित करै सो बड़ोही नादान ।
विना नाथकी प्रीत और काहू सों न जानत
अदारङ्गकी बात सांचो मान ॥

३

मलीयारे तोरो वारी फूल रहीली सुगन्ध लाय ।
अबतो मो मन लालसा एसो वलमि कव मिलेंगे
सदा रंगिले महम्मद साय ॥

४

मलीयारे तोरो वारी भंवरू गुंज रहे लेत रस
सुगन्ध लियसे ।
खुसवो महक रही उनके अदारङ्ग लागे मन जियसे ॥

५

अर जिन कभो नकिया सो करत अब ।
अदारङ्गजो विधना लिख दीनो सोई भुकतत सब ॥
तै सुनो नाहीं किस्सा जैसों देश तैसों भेश
करिए देश काल चलन वेश ॥

(नुरखां कृत ख्याल)

आशावरी—आड़ा चौताल

प्यारे मुखकी मोसों जियकी वासों
जासों लागी प्रीत सरस ।
कैतोहि सांच बनाव तिहारी बात
एक न मानो लाख रस ॥

आशावरी—तिताला

सावल मैड़ो वात न बूझदा कसनु आंखे माहाल ।
नूर रगुकेहो गलो कह दे इश्क लगाउ नादे नाल ॥

२

वेहख होनो खूब नाहीं प्यारे हमसे
तुमसे परेगा काम ।
जबक्या करोगे जानो याद आवेंगा
सदारङ्गीले आराम ॥

३

जातन लगी सोई तन जान और लोग देत मोहे ताने ।
इश्कको वेदन छूटे अजीज दानलखां
ललालाखां स्याने ॥

आशावरी—होरी ताल

इहाँ कोई जग विच नजर न आदा किसनु हाल सुनावा ।
मनदी मुराद वारी पुनि यानी सइयां
चलो सई जुलमन पीर मनावा ॥

२

अरे अरे सांड़ जोवन तुझ नाईनु और न सो रङ्गराता ।
तिहारो प्रीत पतियारो नाहीं तुमारे और न सो नाता ॥

३

अबतो सेलो गल मेलो हों तो भई पियाको भिखारो ॥
नैन खप्पर दोऊ भए हमारे दरशन भीख निहारो ॥

४

मांझरी आन पड़ो मझ धार नइयां ।
वाव वहे पुरवैया पियको मिलन अब कैसे बनेगो
हमारो पार उतारेंगे दैया ॥

५

द्रतुमद्रतुमतनदोयनरेना आआआआआआ-
नारेतदरेदानी ।
तरललललेदिरतुमतांनदोयनरेनायलालेय-
लालमयललले ॥

६

मोहन मेवारी वारडारी नारी जिन करो
कपटको बात ।
रहत ज्ञान ध्यान तुम्र नामको निन
सुमरनहै दिन रात ॥

७

पहरवा जागरे चोरवा लगोली तोरी वात ।
जागत जागत सब निश बीती चेत पिछली रात ॥

धनरा ढ़ोलीयारे ठावर नैनो जीरा भंवर
सुजान तागा होयतो तोड़ीए कहीं पीत न तोड़ी जाय।
जालक होतो वरजिए कही कैलन वरजो जाय
कुवं होयतो फन्दीए काड़ मगर फाटो न जाय ॥

९

इहां कोई जग बीच नजर न आदा किसनु हाल सुनावां।
मनदी मुरादा वारी पुनीयानी सइयो चलो
सइया गुलशन पीर मनावा ॥

१०

हजरत शेख सलेम चिस्ति पीरको झालरो नूर
ते भरीया।
अम्माके महबूब खुब जहर हीरा मोती
लाल जवाहर जरीया ॥

११

मोरे कथा आन मिलावो पल छिन मोरे सङ्ग्वा।
नेह लगीलो तुमरे सुघर महम्मदसा
नेकन लागीलो अङ्गवा ॥

आशावरी—तिताला

धाय धाय द्रुम बाजेंहो मन्दिलरा बाजे
माई मोरारे माजन घर काज।
बाग वहारको देख सखी आवत हैं
पिया मोरे घर आज ॥

आशावरी—चौताल

देखत देखत सब दिन वीतो तेरे
आवनकी मग पियारे।
निश दिन मोको नींद न आवें न भावें सेज तलफ
तलफ वीतत घरी घरी पल विरह देत तन जारे ॥

आशावरी—होरी ताल

हरवाले तोरे रे लागीलो रतन पच्च सुरङ्गए लगरू।
हाथ जिन लावहु रहस सन गुधोलो हरवा जिन
आवहु मेरे पासरे धगरू ॥

२

होरे डफवा वाजन लागे खेलन आईहै सब ग्वारवार।
तनकही धुन सुन मोह लिए ब्रजमें
नेक रस कर लागे धमार ॥

आशावरी—तिताला

सुनहु सखी मोहनको प्रीति निश दिन औरन डोलत
फिरत घर आय करत हठ मोसों प्रीत।
छल वल चञ्चल चपल अति आय गई करत रहत
आली जोमन आई भाई ब्रजकी गलीयन
अबनहीं जाऊं मैं नैनकी सैन चलावत चित ॥

आशावरी—ताल सवारी

राजदुलारीके गोरे गोरे पायन गुजरीया सोहे।
तापर महावरहूकी लाली न जात मोपे सम्भली
और घुंघरू की झनक मनक मोहै ॥

आशावरी— तिताला

गुजरीको मान याहो ते अति बढ़ो
जे सुघर गुणीके लागो गरे।
औरस रे जुरते झिझकी डरी सकुचि ठाड़ी
कोई जाय परे ए जोय परे ॥

आशावरी— झपताल (धीरे)

कौन सिखाई तोहे लाल एसो नीको ढिटाईकी वानो।
वाट चलत मई अचानक अङ्ग भरज
लीनी न जानो कहा जिय ठानो ॥

२

आयारे अलवेल रा मोरे घर आज।
देखतही प्यारी वाकी सूरत जियरते गई भाज सब लाज ॥

आशावरी—ताल आचारी

मग जात हतो दृग लाग गए
प्यारेको ओर निहारतहो।
दृष्टचार कब होंगेरी सखी मेरे तन
तपत उठो वाको राह हेरतहो ॥

२

होरी खेलन आईहै बनठन चतुर
सुघर हिलमिल के नार।
हमतो चाहत रससों खेलीए वेतो
सबनकों रिझावतहै वारवार ॥

बाजत बीण रबाब मृदङ्ग डफ और बाजत कठतार।
अबीर गुलाल सों मुख मीड़त है बरजोरी देत है गार॥

आसावरी—ताल सवारी

चरखा मुझतें तनदा लब्बो कहाँ हरण
वाला होया मैंडडा हत्ते।
कत्तण तमासा अवे हामें थोन
कुटटा भाल बह्ली मैंडंड मत्थे॥

आसावरी—तिताला

मेरी अँखियनके भूषण गिरिधारी।
बलि बलि जाऊं छबीली छबि पर
अति-आनन्द-सुखकारी॥
परम उदार चतुर-चिन्तामणि दरस-परस-दुखहारी।
अतुल सुभाव तनक तुलसीदल मानत सेवा भारी॥
छितस्वामी गिरिधरन विशद यश गावत कुलनारी।
कहा वरण गुण गाथ नाथके श्रीविट्ठल हृदयविहारी॥

२

मेरी अँखियन देखौ गिरिधर भावै।
कहा कहौं तोसों सुनि सजनी उतहीको उठि धावै॥
मोर मुकुट कानन कुण्डल ललितन गति सब विसरावै
बाजूबन्ध कण्ठमणिभूषण निरखि निरखि सचुपावै॥
छितस्वामी कटि क्षुद्र घण्टिका नूपुर पदही सुनावै।
इह छबि बसत सदा विट्ठल उर सो मन मोद बढ़ावै।

३

मेरे नैन निरखो बान परी।
गिरिधरलाल मुखारविन्द छबि छिन छिन
पीवति खरी॥
पाग सुदेश लाल अति सोहत मोतिनकी दुलरी।
हरि नख उरही विराजत मणिगणजड़ित कण्ठसरी॥
छितस्वामी गोवर्द्धनधर पर वारों तन मनरी।
विट्ठलनाथ निरखिके फूलत तन सुधि सब विसरी॥

४

नैनन निरखो हरिको रूप।
निकसि सकत नहीं लावननिधि तें मानो
पस्यो कोउ कूप॥
छितस्वामी गिरिधरन विराजत नखसिख रूप अनूप।
बिन देखे मोहि कलन परत छिन सुभग
वदन छिनु जप॥

आसावरी—चौताल

हाँ पनिया न जैहों मेरो मटुकी पटक के झटको।
अचानक आय गही मेरे प्यारे मो मङ्गकी सब भूली
भटको सब सटको॥
कालि दुपैरी गईहों कुञ्ज में को जाने मेरे या घटको।
प्रभु कल्याण गिरिधरकी माधुरी सों मेरे मन अटको॥

२

निपट मन मैलो कीनो ललना कहांलो धीरज धरीए।
आँगनसों रमत खेलत होगी ललना
इन अनखरी अनखन मरीए॥

३

भारी भार भरो मन पारन पावत पार।
चिड़िया चोंच चुड़ावन बोझि अब आई मझधार॥
जरी जरजरी करन धारत न फिरन हार।
प्रेमरङ्ग हमबार छूटिको कर पकरो करतार॥

४

कंसके जानो तुमरे गुण अगणित राम।
चार बदनसों ब्रह्मा हारे पांच सीससों ईश
गणत राम॥
सहस शीश सों शेष रूकत नहीं वदन वदन
रसना दो बनत राम।
प्रेमरङ्ग दृढ़भक्ति भाव बल एक जीभ
गुण यशहै अनत राम॥

आसावरी—तिताला

तुम ग्वालवाल सब याहीं छाड़के उठ चलो बरसाने।
गोरस चाहो अघाय खिवाऊंजो विनती प्रभु मन माने॥
जो कहोगे सोई में करोंगी मत मेरी कोऊ सखी जाने।
प्रेमरङ्ग पूरण पुरुषोत्तम ग्वालन आई घर लाने॥

२

हरि हरि भज मन बावरे।
निशदिन घरी घरी पल पल छिन छिन भरम भरम
लख चौरासी मनुस जनम पायो दावरे॥

विविध भाँतिके भोजन तोहै दिए एसे
प्रभु दयालको गावरे।
जानकीदास इस भरतखण्ड सुर वाञ्छित
सो तोहै मिले दावरे॥

३

उनमें हममें भेद नाहीं वेतो कहनेको दूजे कहाए।
कृष्ण समाधि राधिका लीनो राधेकृष्ण समाए॥
उन रङ्गी हम और हम रङ्गी उन वे दोऊ
एकही रङ्गरङ्गाए।
केसर चूनर हम रङ्गी तो वे प्यारी पाग रङ्गाए आए।
उन रीझी भीझी रङ्गरङ्गीहो हसन
हमअपने रङ्ग में भिजाए॥

४

प्रभुमें बड़ो अधम संसारी अन जानत ए
भोग रह्योहूं अपने मतको नारी।
सत्यधरम पितु माता मेरे सोई परम हितकारी॥
शील सन्तोष सखा दोऊ मेरे तिने विशेवत भारी।
काम क्रोध याके दोउ भैया ते घरके अधिकारी॥
तृष्णा बहु भटकत घर घर निश दिन
मिथ्या जनम ज्यों हारी।
आन परो जब कठिन गुंसाई तब यह बात विचारी॥
करि कहा लाज अब मरीए अपनी जांघ उघारी।
सूरदासको हसत कहाहो राखो लाज हमारी॥

५

प्रभु तेरा बचन भरोसा सांचा।
पोषण भरण विश्वम्भर साहब जो कलपे सो काचा॥

६

जब गजराज अटक्यो अजगर सों बली
बहोत दुख पायो।
नाम लेत ताही छिन हरिजी गरुड़ छांड़ छुड़ायो॥
दुशासन जब गही द्रौपदी अबला अतिदुख पायो।
सूरदास प्रभु भक्तवत्सलहैं चरण शरणहो आयो॥

प्रभु तुम बलिसों कहा छल कीनो।
बांधन गए हरि आप बंधाए कौन सयानप कीनो॥
तीन पैंड़ वसुधाके कारण आप सरवस सुख दीनो।
लै लकुटी कर द्वारे ठाड़ो निशदिन रहत अधीनो॥
जो जैसो करे सो पावे तैसो वेद पुराण कहीनो।
सूरदास स्वामिता तजके सेवक नाम सहीनो॥

८

हरि बिन कौन दरिद्र हरे।
कहत सुदामा सुनो सुन्दरी जाको
मिलन मन न विसरे॥
और मीत एसो को जगमें जाको मम को करे।
विपत परे कुशलात न पूंछे बातन हूं विचरे॥
उठि मीसे हंसि तंदुल लीनो मोहन बचन फुरे।
सूरदास स्वामीको महिमा टारो विध न टरे॥

९

जिनके प्रभुको परतीत नाहीं अनरीत
सदा उनके वरते।
शुभबात नहीं निकसे मुखतें सगरो
दिन जान सदा लरतें॥
विषया विष मारग भूल रहे नहीं दान दियो
कबहूं करतें।
भगजीवनहै तुलसी तिनको जर क्यों न
गयो सगरों धरतें॥

१०

मथनीयां दधि समेत छिटकाई।
भूलीसी रह गई चिते उन छिनु न विलोवन पाई॥
आगे ह्वै निकसे नन्दनन्दन नैननकी सैन जनाई।
छाड़ि नेति करतें उठि पाछेही वन धाई॥
लोकलाज अरु वेदमरयादा सब तनतें विसराई।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन मन्द हँसि कठिन ठगोरी माई॥

११

मेरो माई हरि नागरसों नेह।
एकवेर कैसे छूटतहै पूरव बढ्यो सनेह॥

अङ्ग अङ्ग निपुण वन्यो नन्दनन्दन श्यामवरण तन देह ।
जबतें दृष्टि परे यदुनन्दन तबतें बिसर्यो गेह ॥
कोऊ नींदो कोऊ बन्दो मनको गयो सनेह ।
सरिता सिन्धु मिले परमानन्द भयो एक रस नेह ॥

१२

एरी गोपालसों मेरो मन मान्यो कहा करेगो कोउरी ।
अबतो चरणकमल लपटानी जो भावै सो होउरी ॥
माय रिसाय बाप घर मारे हँसे बटाऊ लोगरी ।
अब जीय ऐसो बनआई विधना रच्यो संजोगरी ॥
वरु इहलोक जाओ किन मेरो अरु परलोक
नसाइरी ।
नन्दनन्दन हों तऊ न छांड़ो मिलहों निशान बजाइरी॥
बहुरि यहै तनु धरि कहा पैहों वल्लभ भेष मुरारिरी ।
परमानन्द स्वामी के ऊपर सर्बस दैहों वाररी ॥

१३

चले हरि वच्छ चरावन भाई ।
ऐरे तोपै तें तोक श्रीदामा लीने सङ्ग लगाई ॥
कहत गोपाल सुनोरे गोपो ब्रुन्दावन अनुसरोए ।
मधु मेवा पकवान मिठाई भूख लागे तब खईए ॥
खेलत हसत करत कौतूहल आए यमुनातीर ।
परमानन्ददास को ठाकुर रामकृष्ण दोउ वीर ॥

१४

ध्यावत कान्ह विमल यश तेरो ।
गावत शिव शारद मुनि नारद प्राण जीवन धन मेरो॥
गावत वेद वन्दीजन अहनिशि
अरु मुनि जूथ घनेरो ।
गावत शेष महेश रसना रस रसिक सुखकेरो ॥
गिरिधर पिय गावत व्रजवासी मिले प्रेमके घेरो ।
कृष्णदास हारे दुलरावत श्रीवल्लभ को चेरो ॥

१५

मैया कब बाढ़ेगी चोटी ।
बहुत दिन मोहि दूध पीवत भए हैं
अजहूं अति छोटी ॥
तूंजो कहत बल कैसो वैनी ह्वै है लम्बो मोटो ।
काढ़त गुहत नाग नागनी ज्यों फिरिहै भूमें लोटो ॥
धुप धुप काचो दूध पिवावत देत न माखन रोटो ।
सूर वालरस त्रिभुवन मोहे हरि हलधर को जोटो ॥

१६

चुटिया तेरी बड़ी कोधों मेरी ।
अहो सुबल तुम बैठि भैया हो हम
तुम मापे एके वेरी ॥
लै तिनुका मापन उनको कछु अपनो करत बड़ेरी ।
लेकर कमल दिखावत ग्वालन एसो काहू न केरी ॥
मोको मैया दूध पिवावत ताते होत घनेरी ।
चत्रभुज प्रभु गिरिधर इहि आनन्द नाँचत दैदै फेरी ॥

१७

सुनि मेरो वचन छबीली राधा ।
तें पायो रस सिन्धु अगाधा ॥
तू वृषभान गोपकी बेटी ।
मोहन लाल रसिक हँसि भेंटी ॥
जिहि विरंचि रमापति नाए ।
तापै तें वनफूल बिनाए ॥
जो रस नेति नेति श्रुति भाख्यो ।
ताको तें अधर सुधारस चाख्यो ॥
तेरो रूप कहत नहीं आवै ।
हित हरिवंश कछू यश गावै ॥

१८

हरिके नामको आलस कत करत हैरे
काल फिरत सर साँधे ।
वेर कुबेर न जानत चढ़ो रहतहै काँधे ॥
हीरा बहुत जवाहर साँचे कहा भयो हस्ती दर बांधे।
कहे हरिदास महलमें वनिता बनि ठाढ़ी भई
कछून चलत जब आवत अन्ध की आँधे ॥

१९

देखो इन लोगन की लावनि ।
बूझत नाहीं हरिचरणकमल कों मिथ्या जनम
गवावनि ॥

जब यमदूत आइ घेरत हैं करत आप निभावनि।
कहे हरिदास तबहीं चिरञ्जीवहु
कुञ्जविहारी चितावनि॥

आशावरी—चौताल

हाँ वार डरोंरी जगत व्रजईश शीश
आधे टेढ़ी पगीया ऊपर।
लख तोरतवा लजात युवतीजन
जहाँ सुनीयत चटकत कर॥
तव चन्दन पर रैत पिछौरा अरगजा
भीने रह्यो सुन्दर वर।
कल्याणके प्रभु गिरिधरनलाल छवि
निरख मदन मन मन्द हर॥

आशावरी—तिताला

धरे शीश जटा गङ्ग भस्म भारी अङ्ग कर त्रिशूल
डमरु पिनाक तरुनैत सोहे मुण्डमाल गरे।
फननन फन फुङ्कत शेषनाग गोरी अर्द्धङ्ग अङ्ग रङ्ग
करत सप्त सुर तिन ग्राम सिंहीनाद ओंकार करे॥
भूत पिशाच साथ लिए योगी के भेष किए चन्द्रमा
लल्लाट दिए लेत मन हरे।
अष्टसिद्ध नवनिद्ध को धरत ध्यान सकल सुर नर
मुनि गुणी गन्धर्व्व यक्ष तुवर करत बखान रूप
रङ्ग शिव शङ्कर शरण परे॥

२

नयो नेह नई पीत नईरी हाथन मेहदी
नवल दुलइया चलीरी लटक सों।
नयो हार नयो चीर नयोही जावक दीनो
नए आभूषण सोहत चटकसों॥

३

नाद समुद्र अथाह सुनीयत है
ताके सहल करन को लागे गुणीयनके मन।
अकारको जहाज कीनो तीन ग्राम सप्त सुर ले ले
ताल मूल ते बैठो सौदागर बन॥
इकईस मुरछना बाईस सुर तेतङ्ग
मिलाय भए बन ठन॥
ओड़व खाड़व सम्पूरणको ध्यान विवादी
अङ्गरै औ सन।
अलाप की भमकमों उनचास कोटि तान तुपक
छूटन लागी तानसेन बजन॥

४

शिव शिव शङ्कर हर हर महादेव भोलानाथ
पशुपति पार्वती अर्द्धङ्गे।
अविनाशी कैलाशी वनवासी सन्यासी नाथ शम्भु
स्वामी दिगम्बर योगेश्वर योगेश्वर सुर सिद्धेश्वर
महेश्वर सुरनसुर देवनदेव आदिदेव अनादिपुरुष
निरञ्जन भवभयभञ्जन दुख दन्द यम फन्द
काटन गौराङ्गे॥
नीलो कण्ठ खप्पर डमरु पिनाक कर त्रिशूल ध्वजा सेत
फहरात सिंहीनाद फूंकत अलख जगाए भस्मभूषण
वृषभवाहन वाघाम्बर वसन आसन पद्म राजत
नीलकण्ठ त्रयलोचन मुण्डमाल ग्रीव सोहे
चन्द्रभाल शेष शीश जटाजूट गङ्गे।
रूप रङ्गको प्रसन्न दीजे दरस सरस सुख सम्पति
आनन्द रिद्ध सिद्ध ज्ञान ध्यान भुक्ति मुक्ति ताल अक्षर
नाद विद्यावर अवर गुणीन परसङ्गे॥

इति आशावरी रागिणी सम्पूर्णम॥

मूलतानी धनाश्री

दूर्वादलश्यामतनुर्मनोज्ञा कान्तं लिखन्ती विरहेण दूना।
खेद कपोले दधति दृगम्बु निःश्यन्दनिर्धौतकुचा धनाश्री॥

धनाश्री—चौताल

रतिमन्दिर में ढिग बाग तहाँ जल शीतलता
सरसाय रहे।

तनकी तन पीर मिटावनकों तिय बैठि
कछु दुख नाहीं कहै ॥
मनभावन को सुध आय गई विरहानल
अङ्ग अनङ्ग दहै ।
कवि हीन धनाश्रिरी दीन भई दृगखञ्जन तें
जल धार बहै ॥

सरगीत धनाश्री चौताल

खरज ग्रह मरेगमपधनि पूरण सब सुर लीन ।
तीजे पहर धनाश्री समिर दिवस वर वीन ॥

२

सागमपगमधपमगरेस।रेसानिधपमगरेगमपमगरेसा ।
गमपसानिसागं सानिधपमगमपम। सानिधपमगरेसा ॥

३

सामपधपमगरेसानिनिसागमपधपममपनिसानिधप
मगरेसा ।
मपनिसागरेसामगरेसानिधपधनिनिधपमगमगरेसा ॥

४

नाद भेद को न्यारा कर दिखलावे जो कोउ गुनी
ताहि को जानो सोमानो ।
नाद साहित्य अष्टादशक हिए विहद नाद हैंभेद
तीजे अनाहत नाद चतुरङ्ग नाद यही बाईस सुरत
युगल बाद पहचानो ॥
तन अच्चर वीतत ताल छन्द धन उरप तिरप लाग
डाट आतक खातक स्वरात्मक नेम द्रुत खुलो मुदो
तनरी डना तानरी उनन आ आ नाम जानो ।
निसागमधपमगमगरेगरेसानिरेसानिधपमगरेसागमः
मगसाधरेसानिगधमानिधपममगरेसा मानो ॥

५

सोहत भाँति वार चन्द्रवदन धनकमी बनी ठनी
श्रवण कुण्डल शीश फूल कपोल लोचनरतनारे ।
नैत्रकमल नासिका सुन्दर अधर विद्रुमदशन
दाकमचिवुक सुन्दर सुघर कण्ठकोकिला के
शब्द मों प्यारे ॥
भुज भाय ऐसे उतारे कुच कञ्चन के बनाए
साँचे में ढारे ।
उदर अलप लङ्क छीन कटिकेहरि कदलीजंघ
तानसेन ऐसो प्यारो पर सर्बस वार डारे ॥

६

प्यारो तेरे रूप सुघर गुण पूरण समुद्र भयो तामध
शोभा ऐसो बुध जहाज ।
योवन तरङ्ग लिए कमलाको मुख मानो माता हद
देखो कुण्डल स्वरग चम्बर आना मान हंस लाज ॥
क्रोध को घूंघट किए तामध मत मर्यादा नहीं है
कलङ्क तामें मेरो जान बुध समाज ।
तान तरङ्ग प्रभु निरख अस्तुति कीनो महाजान
बड़ो रानो महाराज ॥

७

ए ईश्वर सांईकों जानत गत जो बोलत
जिन देखो तुम्ह दरस ।
एक निशिदिन पै नाहन निरखत मैं जात अकुलात
कछु न सोहात मन नैन दोऊ जात तरस ॥
भवभञ्जन मनरञ्जन काटन दुख द्वन्द फन्द ऐसो
जगमें व्याप रहो सरस ।
तुंही आदि तुंही अन्त तारण तरण तानसेन
तुंही अरस परस ॥

८

जे गुण विवेक कर साधे ते चतुर अति प्रवीण
हैं रहत नीको ।
तिनमें सुध मङ्गल अति बहोत पढ़यत हैं तार
तानको गहनहीको ॥
मन्द्र सुर तीन ग्राम मुरछना श्रुति कोटि तान
औड़व खाड़व संपूरणहीको ।
वादी समवादी अनवादी विवादी अंस न्यास
तानसेन समझ जी को ॥

९

सोवत उठि रैन रस लेन अति सुन्दर सोहत
वदन प्यारोको ।

ले दर्पण मुख देखत अपने मनमें सोच सकुच वही
नैन होत लजोहै नारीको ॥
सुकमलवदनी मनहरनी मोहनी मूरत पिय रस
रस कर कामआतुर चितहारीकों ।
तानसेन प्रभु सङ्ग रङ्ग रात जागी पायो आलस
जंभात गात निरखे नैन निहारी कों ॥

१०

ए आयो आयो मेरे ग्रह छत्रपति अकबर
मन भायो करम जगायो ।
पाछलो पुण्य मेरो प्रगट भयो यातें अर्थ धर्म काम
मोक्ष मन आयो चारों फल पायो ॥
काहूको न इच्छा रही तेरे दरस देखे पाप नस
धर्मराज अचल कर पठायो ।
तानसेन कहे यह सुनो छत्रपति अकबर
जीवन जनम सफल कर पायो ॥

११

प्रथम नाम करतार को लै तामां
पाप कटत दुख हरत सब होवें नीके काम ।
और जो साह अपरंपार परवर दिगार
उनमो जो नाहीं दूजो जा सकल जगतको लै श्याम ॥
उनको करम समुन्दर ज्यों धरे धीरज
तब होवे आनन्द दिन दिन दूनो देत आराम ।
इतनो कहत हों उनसों रब रहमान इमान
दान पाऊं कहाऊं उनको निशदिन अष्ट याम ॥

१२

जाको पीतम पर दियन हितकर बनाय आवै
ता विरहनको नींद कैसे आवैरी ।
बरषाऋत दादुर मोर चातक चपल घनघोर शरदचांद
चांदनी नाहीं न भावैरी ॥
हेमंत ते अतुल असन वसन शिशिर शीत अरगजा
अबीर ऋतु वसन्त न ग्रीषम न सुहावैरी ।
जाछिन मिले मोहि गुलाबको प्रभु प्यारो तेहि
छिन निरख नैन प्राण जिय सुख पावैरी ॥

तनकी तपत तबही मिटेगी मेरी जब
प्यारे को दृष्टि भर देखोंगी ।
जब दरस पाऊं प्राण जीतमका जनम जीवन
सफल अपनो लेखोंगी ॥
अष्टयाम मोहिको ध्यान रहत वाको
आलो कोलों भेटोंगी ।
तानसेन प्रभु कोऊ आन मिलावै ताके
पावन शीश टेकोंगो ॥

१४

दीजिएजो हमें व्रज बसबो बांसरी न बसे
बांसरी बसाय कान्ह हमें विदा दीजिए ।
बांसरी की टेर सुनत रहो न परत मांझ
कान मन मन तन बसेरो कीजिए ॥
जेते उन सुर गाए तेते हम भेद लाने
जहां राग तहा दाग रोमरोम कीजिए ।
तानसेनके प्रभु मया कीनो मोपर अङ्ग अङ्ग
चीर चीर सिन्दूर माङ्ग दीजिए ॥

१५

आजमें कीनो पिय सहाय रहस माई
सो जहां देखे कुंवर कन्हाई ।
तन मन की तपत तबही गई आली जब मोहि
मिले सुखदाई ॥

१६

दरश देखेते पियको रोम रोम सुख भयो
सोंको दुख गयो जियको ।
अखियनको तारो नेकु न कीजे न्यारो अति सुन्दर
महास्वरूप विधना सवारे धन आजको घड़ी
मेरे लेखे हियको ॥

१७

जहां लग लगन लालन सों तहां लग चित
ललचाऊं ।
कौन मन्त्र मोहन पढ़ डारो अपने
हरि वस करपाऊं ॥

हाहा करों हरिको कैसे देखों साँवरो
सुरत हृदय ल्याऊं।
बैजू बावरे रावरी छुपानें तन मन धन
वार वलिवलि जाऊं॥

१८

आनन्द भयो आज आयो विजय कर घर घर मङ्गलचार।
अनेक गज तुरङ्ग साजे नावत नगारे
बाजे गज तुरङ्ग साजे सवार॥
तत बीतत घन शिखर नानाविध बाजत
सुरपतिके द्वार॥
ब्रह्मा वेद पढ़ें नारदमुनि गावे राजा रामचन्द्र जी कुंवार
तानसेन कहे सुनो शाह अकबर
दशहरा सुफल भई तिथि वार॥

१९

पश्चिम पहाड़ बीच जागे जोत ज्वालामुखी
हेमगिरि हिङ्गलाज गाजे पापनाशिनी।
दक्षिण दिशामें देवी तुलजा त्रिशूल लिए
काश्मीर शारदा बुधको प्रकाशिनी॥
कामरू कमच्छा देवी रोग रोग रच्छा करे
काली कलकत्ते वारो जगतापनाशिनी।
नगरकोट महारानी सज्जनपे दया होय
विन्ध्यके पहाड़में विराजे विन्ध्यवासिनी॥

२०

पाक महम्मद अल्ला रसूल तेराही नूर जहूर।
धन धन परवर्दिगार गुन्हेगार तुवकसन
तूंही जग रमरह्यो भरपूर॥
वेचुन वेच गुन वे शुवे वे नमुन अव्वल
आखर तूंही निकट तूंही दूर।
जित देखू तित तूंही तूंही व्याप रहो जल थल
धरणी अकाश तानसेन तूंही हजूर॥

२१

शिवसुत गणपति तें ज्ञान पावे अनेक प्रकार
जाते अतिही बुध आवे।
गायन विद्या सब निगम मूल चार बाजे
सरवागोसी गावे॥
गिरिजाको नन्दन आनन्दकन्द
जगवन्दन सब देवनमें सोहावे।
लछमणदास पे अपनी मया कीजो
दीजो मन इच्छा फल पावे॥

२२

एकऊधो जोगी जग तजे हम जग जोग दोऊ तजे
जोगीयों को जगतसों कहा करिए प्रतच्छ दरतहैं।
जोगी छेदे कान हम छेदे हीया तन प्राण
योगी साधे पवन हम पवन हारें हरिध्यान धरतहैं॥

२३

मोहन बनो बाल भाल चन्द्र भ्रुवधनुष नैनकमल
श्रवण कुण्डल सुन्दर कपोल विलोकत रंभारे।
नासिका कीर विद्रुम अधर दाड़िम दशन चमक सुन्दर
बीजरीसो चांधत स्वरन लागो कण्ठकोकिलारे॥
ग्रीव कपोत कुच श्रीफल नाभ कटिकेहरि कदली खम्भ
जांघ रचके धरेरी।
तानसेन निरखि निरखि लजित भई आवत
गजमलवाल मनको हरेरी॥

२४

प्रथम नाद ओंकार तीन ग्राम समसुर
गायन गुणीजन कर विचार।
आरोहो अवरोहो अस्थाई सञ्चाई बाणी भेदनें
सहित उचार॥
उनचास कोटितान इकईस मुरछना
बाईस सुर गावत आकार।
भनत गोपालनायक अतिरिसाल निरत रस
लेत अठारह भार॥

२५

दीनबन्धु दीनानाथ याहीतें कहाएहो।
जैसे तुम द्वारकामें द्रोपदीकी टेर सुनो
एसे तुम गज काज नागे पायन धाएहो॥

जैसे तुम गणिकाके औगुण न गिने नाथ ऐसे तुम
भीलनीके झूठे फल खाएहो ॥
जैसे तुम भारतमें भीषमकों प्रण राख्यो और तुम
राजनको बंधते छुटाएहो ।
मेरो बेर एतो देर कान कहाँ मून्द रहे अशरण
शरणनाथ सूरदास मन भाएहो ॥

२६

ए आयो आयो मेरे ग्रह नन्दको नन्दन
मन इच्छा फल पायो ।
कहा कहों मेरे भागको महिमा अर्थ धर्म काम
मोक्ष चारों पदारथ पायो ॥
अनेक पतित उधारे गिरिधर भक्तनके मनभायो ।
बैजू बावरे कहावत चरणकामल चित लायो ॥

२७

जाके बैजयन्ती माला ताके मृगछाला जाके
मुरली अधर डमरू ताके करें ।
जाके जटाजूट गङ्ग त्रिशूल ताके शङ्ख चक्र गदा पद्म
रुंडमुण्डमाला जाके पीताम्बर पटें ॥
वृषभवाहन ताके गौरो अरधङ्ग गरुड़गामी
गोपीनाथ हरिहर रटें ।
बैजू प्रभु हरिहर निशदिन ध्यान धर
काहूदे जगको सब खटपटें ॥

२८

आज देखो करतार नन्दको नन्दन नन्दकुमार
गए पाप ताप दुख जंजार ।
जगके तिमिरहरण आनन्दमई सुखके करन
श्यामसुन्दर मनके भवन मदनमोहन हरि मुरारि ॥
पतितपावन दीनवन्धु काटत कलेश फन्द
सब जगके करतार ।
गुणके सागर आगर नन्दनन्दन गुणी गन्धर्व
नारद तुंबर सुर नर मुनि भजत वारम्वार ॥

२९

लागो हरि निरमोहियो तोहीसों जियको लाग ।
घरमें बैठो कहालो साधो ए विरहा वैराग ॥
अपनो सब डर डार सदा सङ्ग विहरोंगो वन बाग ।
प्राण पपीहानके आनन्दघन उचत कोंहूं न त्याग ॥

३०

विद्या मोहे क्यान गाईए जामों मिलहेंगो नन्दलाल ।
वृन्दावन सघन कुञ्ज रमित नाचत रास बजे मृदङ्ग
ताकट तक ताकट तक धुम [illegible] तक गावत
विविधि ढंढे ताल ॥
सपसुर तीन ग्राम इकईस मूर्छना प्रमाण बंसी सब
टेरन तान थकित सुर मुनि कृषि विमान वरखत
हैं कुसुममाल ।
बैजू प्रभुके साथ तीन लोक [illegible] लियो ब्रह्मा महादेव
ध्यान छोरत चन्द्र सूर्य पवन पानी शेष पताल ॥

३१

विद्या मोहे भलो जामे पइयत हेरो लाल ।
कुञ्जभवनमें आय बैठे रीझ दई मृगछाल ॥
गुरु कृपा प्रगट करोके डोरी बांध आयो नायक
गोपाल ।
बैजूके गाए तें सपसुर भूल गए पिघले पाखान
बूड़े ताल ॥

३२

जे जे कर पूजो धो लागि दरको महाबाणीन ।
पान सोपारी ध्वजा नारीयल दक्षिणा भेंट भवानीन ॥
तेल फुलेल अरगजा अम्बरले चढ़ावो वाकवाणीन ।
तानसेन प्रभु तुमहीको ध्यावे टोजे बुध और वाणीन ॥

३३

कहा करूं उन विन मन जरो जात है अङ्गन वरते
कर मन कियोहै त्रिसार ।
वह सूरत सरन विन देखे भावे न मोहे घर द्वार ॥
इत उत देखत कछु न सोहावत वृथा लगत संसार ।
वेर करतहै दुरजन सब बैजू न भावें मन पियके
अचरज भयोहै व्योहार ॥

३४

छिन करे तासों ना कर रार गरव न कोन्ह्यो रे गुणी ।
गर्भ किए कछु हाथ न आवें भरम गमावत क्यों
आपनो ॥

गीत छन्द धारु धोवा माठा प्रवन्ध चर्चा वनी ।
कहे बैजूनायक सुनिए गोपाललाल रचपच गए
मुरारि मुनी ॥

३५

योवनगर्भ सखी जिन कीजे रह्यो न काहू
पैं और न रहेगो ।
रावण कुम्भकरण हिरणाकुश बड़े बड़े
छत्रपति सूर ढएगो ॥
मधुर रसना से पिय सङ्ग बोलले आगे
पाछे कोईन कहेगो ।
बैजूके साधे मससुर बाजे पिघले
पत्थर मांझ तान्न ढएगो ॥

३६

वृन्दावन ब्रह्म मधुरि मुरली बजाय
गोपी ग्वाल सब मिलि करत प्रशंस ।
उदत उदन मृदङ्ग धुम कट धिधि काटरे
सङ्गीत गीत उचारि कर अवतंस ॥
आरोही अवरोही ढरनि मुरनि प्रमाणसों
आङ्गान न चाढ़े श्रीध्यानांस ॥

३७

नादसमुद्रको पार न पायो सुनियत गुणी कहायो
प्रवन्ध छन्द धारु धुरपद मार्ग देशी हैविधि गायो ।
ब्रह्मा बेद उचारायो सारङ्ग वीरायो भरथ मत
कलिनाथ हनुमत मत सप्ताध्याय गायो ॥
अनेक सृष्टि रचि गए पच गए ब्रह्मा विष्णु
रुद्र महामुनि प्रश्न भए सारङ्ग वीरायो ।
सप्त प्रगट सप्त गुपत नायक गोपाल ध्यायो
तानसेन ताको बैजू पाषाण पिघलायो ॥

३८

दृगन झपक अतिही नीद घेरी
रजनी जगी कवनके सङ्ग ।
अधरन पीक लीक अञ्जन फवि रह्यो
डग मगात धरत चरण शीतल अङ्ग ॥
जावक भाल विशाल विराजत लाजत
जम्भात आलस रङ्ग ।
जानकीदास करत हांस चतुरतिया पिया सङ्ग
अजब ढंग देखो रङ्ग ॥

३९

सोवतही सपने चौंक परी तबही
नैनन उघर गई अब क्या करूंरी ।
पलक मून्द अंबर ढाँक ध्यान लाए
वाहूसे वाको सूरत मिलो अङ्ग भरूंरी ॥
सपने सजन मिलन वस भए
यह नैन वैरी मेरे इनसे लरूंरी ।
साहब सुन्दर मौज बखान अबके जो पिया पावें
आवेंगे मेरे दौर पायन परूंरी ॥

४०

बावरेके सङ्ग साथ बावरी सोभई में बापहू
विवाह दीनो बावरेसो जानके ।
जानोहू न जात कौन गुरू कौन नाथ
लीलो धारी लीलो भेष सर्पविष लपटानके ॥
त्रिशूल खप्पर हाथ नैना जो अघात जात
आडम्बर वाघाम्बर सिङ्गीपुरी आनके ।
बैजू बावरे पै काकोजे रोष अपने करम दोष जीवे
मेरा भोलानाथ भाला में जो लीनो मानके ॥

४१

मन्दिर मुसकात गोरी भारी तिरिया सुनो आली
परम सुन्दर चातुरी ठुमकत चलत चाल गजगतकी ।
रङ्गीली छवीली नार पिय चित वस कीनो
काहूकी कहे न सुने अपने मतकी ॥

४२

तान गजराज ज्ञान कीनो महावत
त्रेवट घण्टा बाँध ताल अङ्कुस भर ।
खरज पाखर डार तीन ग्राम सकल आधार धुरन
मुरन रणसों जीत मारत सब एक एक पर ॥

गीतनादकी असवारी ध्रुपद प्रबन्ध
तुपक त्रेवट तिल्लाना चतुरंग प्यारी सोहत भूपर ।
कहे बैजू नायक उक्त जुक्तकी बुध वजीर
मनराजा राज करत हरिको ध्यान धर ॥

४३

री जाको योगी मुनि जन जपत रिद्ध सिद्ध ऋषि
जपत गुणी गन्धर्व्व नारद शारद जपत अष्टजामरी ।
चन्द्र सूर्य्य जपत इन्द्र पवन पानी अग्नि बरुण
सुर नर मुनि पशु पतङ्ग जपत कर प्रणामरी ॥
सती जती सुर वीर जपत असुर अखिलविश्व
विश्वम्भर जाको नाम सबको विश्रामरी ।
ब्रह्मादिक सनकादिक जपत शिव पार्वतादि
तंही तंही वैजू जपत ब्रह्मको सुखधामरी ॥

४४

आज रच्यो करतार दोऊ बन्ध होय
अवतर्यो उत कश्यप सुत इत हुमायूं को नन्द ।
वे तिमिर हरण तू दुखदारिद्र दूर करण
वाको तेज तेरो तप छिति छायो एकही सङ्ग ॥

४५

महाराजाधिराजनके राजा छत्रपति राजाराम
अचलराज करो कोटि वरषलों यह भूमि पर ।
चिर चिरंजी रहो जोलों ध्रुव धरन
तरन पवन मेरु पानी शशि दिनकर ॥
गुणीजन पण्डित आवें मन इच्छा फल पावें
जावे दुख दारिद्र टर ।
अटल अखण्ड प्रताप रहै यही अशीस देत रागसागर
ख्वाज खिदर कोसी उमर होय नरनरेन्द्रनर ॥

४६

एगाजुद्दीन हैदर पातसाह शाह जमन
पिय कब आवेंगे मेरे घर सजनी ।
चिर चिर जीयो ध्रुव धरन तरन जोलों
मेरु पवन पानी राज करो दिनरजनी ॥
गुणी पण्डित नायक गावे मन इच्छाफल पावे
दुख दारिद्र दूर तजनी ।
अचल राज करो महिमण्डल में देत अशीश
यही रागसागर अविचल रहो मन रजनी ॥

४७

शाहनशाह महाबली सलामत जुग जुग जीवो
गङ्ग यमुन जोलों धार ।
देश देशके गुणी नाम सुन आवत पावत इच्छाको
फल गावत यश जित तित तिहार ॥
एकनकों देत गज तुरङ्ग पट भूषण भूमि भूमि
अतिसोहत उरहार ।
राम रङ्ग इतनोही मागत निशदिन
सरफराज जहांपना वारम्वार ॥

४८

सगरी रतियां मा सगरी रतियां जागली ।
रैन दिना मोहे कल न हरि बिन पलकन
मों पलक लागली ॥

४९

पिया मोसे काहे न बोलोरि आज मोसों
क्यां मोए दे पोठ ।
किन सखियन पिय तुम बिरमाए कौन
धों लगाई दोठ ॥

५०

अबमें आगम पायोरी माईरी पियके आवन कीसो
कुच भुज फरकोनी और आंख बांहो कगवा
सगुनवा सुनाई ।
नीके सगुन सबही होतहैं मन इच्छा पूंजूं में मनको
तानसेन मिले मोहे सुखदाई ॥

५१

इन्दुसे वदन नैनखञ्जन से कण्ठकोकल वचन सुहाई।
नाशा कीर अधर विद्रुम दाड़िम दशन दमकाई ॥
श्रीफल उरोज ग्रीव कपोत वैनो नागनसो झुकी
सुखदाई ।
कटकेहरि कदलीजंघ पदसरोज पद्मासी
तानसेन एसी तें वल वल जाई ॥

५२

ए आज आयो आयो सूरजवंश छत्रपति
राजाराम लङ्कानगर जीत मन इच्छा फल पायो।
आनन्द भयो मेरे आली जीवन जनम सुफल हुवो
चित चायो॥
कीऊ सुकृत मेरो उदय प्रगट्यो प्राप्त चारफल धर्मार्थ
काम मोक्ष निजचरण शरण दासनदास कहवायो।
अनेक पतित उधारे रघुवर गीध व्याध गजगणिका
गौतमनारि खेचर भूचर निशीचर अजामिल
वैकुण्ठ पठायो॥
जाको रटत शिव ब्रह्मादिक सनक सनन्दन
सनातन सनतकुमार बैजूबावरेके प्रभुको
नारद तुंवर गुणी गन्धर्व हाहा हूहू गायो॥

५३

मनको भटक सबही गईरी मेरी आली तबही
दरस पायो वनमाली नटनागरको।
रोम रोम आनन्द भयो तनको दुख दूर गयो
कृष्ण कृष्ण रटना लागी रागसागरको॥

५४

ए सखी नन्दकुमार बालापनमें मेरो मन हर लीनो।
जिय अकुलात और नैननसों नीर जात मेरे
हियको दुख दीनो॥
साँवरो सलोनो श्याम बाट रोक ठाड़ो भयो
मोको बुलाय पास अधरनको रस लीनो।
नैनसों नैन मिलाय हृदयसों हृदय लगाय
तानसेन बंशी बजाय जादूसो कीनो॥

५५

आजु रच्यो करतार दोऊ जग होय प्रगट्यो उत
श्रीकमलापति इत श्रीनन्दजीके नन्दन।
उत सुरन सुखकरन इत भक्तन दुखहरण निरगुण
सरगुण दोऊ स्वरूप एकही बन्दन॥
उत विष्णु वैकुण्ठनाथ इत कृष्ण व्रजकेनाथ उत
मोहनी मोहे ईश इत मोहनीगोपी ईश
गज द्रौपदी काटे कष्ट फन्दन।
उत गदा पद्म धर इत मुरली मुकटधर
बैजू प्रभुको ध्यान धरो जनम मरण जाय सब दंदन॥

५६

आज कान्ह वृन्दावन मुरली बजाई सुखदाईहै।
स्वर्गलोक नरलोक पताललोक सब सुन धुन सुध
बिसराईहै॥
सप्तसुर तीनग्राम इकईस मुरछना बाईस सुरत
उनचास कोटितान रंध्रन में काढ़ीहै।
तानसेनके प्रभु रस बस कर लीनी व्रजवधु घर छोड़
श्यामजपै आईहै॥

५७

कुञ्जन मध रच्यो रास अदभुत गत लिए गोपाल
कुण्डलको झलक देख कोटि मदन ठठक्यो।
अधरतो सुरङ्ग रंग साँवरो सुहाय मङ्ग टेढ़ो छवि
देख देख मेरो मन अटक्यो॥
एरी अब देखो जाय एसिसों कहा बसाय
अलकन की गत निरख शेष नाग सटक्यो।
निरतत सङ्गीतरी ततततथेई ततततथेई त्रिभङ्गी
अङ्गी रङ्गी चाल देख इन्द्रधनुष पटक्यो॥
झनक झुनक नूपुर ठनक रुन झुन रुन झननननननन
सननननन बंशी बाजे मन्द मुख सो मटक्यो॥
रासबिलास सुखको रास भनत बैज सुन गोपाल
यह स्वरूप दरस परस वृन्दावनको सटक्यो॥

५८

काहेको गरब करत गुणी कहायोरे।
गीत छन्द धोवा माठा नीके गाय सुनायोरे॥
गीत सङ्गीत जुगल बन्ध एते राग काहेको गायोरे।
कहे बैजूबावरे सुनहो गोपालनायक झगरत
झगरत जनम गंवायोरे॥

५९

नादसमुद्र पार नहीं पायो सीखत पण्डित कहायो
धारु धुरपद धोवा माठा जुगत गायो।
प्रथम नाद वेद भयो ब्रह्मा वेद उचरायो
शारद नारद तुंवर गन्धर्व हाहाहूहू गायो॥

ब्रह्मा विष्णु रुद्र चायो हनुमतमत भरत भायो
सुर नर मुनि रचपचायो शिव सनकादिक गायो।
कहे बैजू बावरे सुनोहो गोपाललाल सारङ्ग बौरायो
पत्थर मध डूबे ताल पाहन पिघलायो॥

६०

जाके मृगछाला ताके मोतियनकी माला
जाके नाद डमरु जाके सिङ्गी अधरे।
डिम डिम डिम डमरु बाजे जटाजूट गङ्ग छाई
रुण्डमुण्डमाला जाके बाघाम्बर पटरे॥

६१

एजी नाद दरीयाव तापे तन जहाज कीने
उमड़ फिर लागिरी चोंप ढरन।
सुरके वरद वान कीने अचराके बैन तापे
गुणी लागि तान तरन॥
गीत सङ्गीत जुगल वन्ध लेवट तार्के लागि भार भरन।
कहत आधीन प्रवीण सागर समुद्र उतरे पार
बैजू लागि चरन॥

६२

भक्तज्ञान भक्तनकी सेवा करे जब तेरी
भक्ताई सुमरण कर हरिको।
कौन भरम भूलो भटकत फिरत अष्टयाम
याद रख राम कृष्णको पारब्रह्म परमेश्वरको॥
निरञ्जन औ निराकार अलखजोत जगतपति
भक्तवत्सल गिरिवरधरको।
तानसेनके प्रभुको ध्यान धर निश दिन घड़ी घड़ी
छिन छिन वा विश्वम्भरको॥

६३

तनकी तपत बुझावन आए मनभावन कह गए।
यह आवनकी पल पलमें देखत मग
जाते अष्ट याम भए॥

६४

लागी हेरे निरमोहिया तोहिसों जिया की लाग।
घरमें बैठ कहांलो साधों यह विरह वैराग॥

६५

सुनोजी जोगी जती सती जपी तपी सन्यासी सुलतान
यह एक ठौर नहीं रहत इन सबको आवनो जीवनो
भलो ए सब जापर।
औरजो एक ठौर रहे तो कछू न कछू औगुण
होय पै होय यह सांची कहत ए सुघर॥

६६

नादसमुद्र परखन पायो सीखत पण्डित कहायो
धारु धुरपद मार जुगन ठगायो।
सप्त गुपत सप्त प्रगट नायक गोपाल लायो
ब्रह्म वेद उचरायो सारङ्ग बौरायो गायन भाव
तेरो मार जुगन ठगायो॥
जित नित सृष्टि गुणी ब्रह्म भेद रुद्र मुनितों
उपजके गायो पाषाण पिघलायो।
कहे प्रभु तानसेन जिनहो रच पच गायो
तिनहो रिझायो॥

भीमपलासी—चौताल

वा दिन कैसो बने गोर किये न हरिसों प्रेम।
निशदिन ध्यान करले हरिको घड़ी घड़ी पल पल
छिन छिन नित नित कृष्णभजन कर नेम॥

२

बोलीयो न डोलीयो ले आऊंहू प्यारीको
सुनोहो सुघरवर अबहो में जाऊंहूं।
नाननी मनायके तिहारे पास ल्यायके
मधुर बुलायके तो चरण गहाऊंहूं॥
सुनरी सुन्दर नारि काहे करत एती रा
मदन डारत मार चलत पत बुझाऊंहूं॥
मेरी सीख मानकर मान न करो तुम एसे
बैजू प्रभु प्यारे सों बहियां गहाऊंहूं॥

मुलतानी धनाश्री—चौताल

जो है करतार देत सब विधसों ज्ञान अर्थ प्रमाण
तान ताल राग भरमको।
सत युग त्रेता द्वापर हनु भरत मत गत गावत
समझावत नई उपज किए सप्तसुरनको॥

आरोही अवरोही ओड़व खाड़व सम्पूरण
ज्ञान ध्यान अनेक भेद गुरुनकी।
प्रभु गुलाब तब ताहि मानत गुणीजन सुध मुद्रा
सुध वाणी ओप देत गुरुनके चरणको॥

२

सुन धुन मुरलीकी मगन भईहैं सखा सहेली
सब श्यामसुन्दरकी।
एकनतें एक पूछत है कहा भयोरी सुध न रही
गेह की रहोना मन्दिरकी॥
ब्रह्मा वेद बांच भूले भूले ध्यान त्रिपुरारि उलट बहे
नीर थकित रहे उड़गन औ जोत चन्दरकी।
सुर नर मुनि गुणी गन्धर्व उरबसी औ सुरगणा
रसति गति कछु भई नारद किन्नरकी॥

३

दए जो तुरङ्ग मोल अमोल तिनकी जाहिर
जग सगात भयो ले आयोरी जरकसी जीन।
अनेक नगन कौन गिनावे एकन की टौनें
एरापत के सम कैसो तिनमें एक एक बीन बीन॥

झमपनामी—चौताल

संसारतारण तुंही विधाता तिहूंलोक प्रथ्वी
नमो नमो संसार तारण।
असुर सिन्धारण रावण मारि लङ्का गढ़ जारन
तुंही विधाता तिहूंलोक प्रथ्वी नमो नमो संसार तारण॥
कुम्भकरण इन्द्रजीत हिरण्य हिरण्याक्ष रक्तबीज
महिषासुर भस्मागर मारण।
दन्तवक्र शिशुपाल कंस केशी अघा बघा
बैजू प्रभु किए उधारण॥

२

ए चित चैन न परे मोकों चंचल चपल चतुर
चक्रधारी बिन न ऊधो चैन।
तजी सब खान पान निश दिन मोहन ध्यान
भरो भरो पल पल छिन छिन थको मैं गिन दिन।

३

एही सम सुर तीन ग्राम इकईस मुरछना गीत
छन्द धोवा माठा प्रबन्ध त्रेवट तान।
आरोही अवरोही अस्थाई सञ्चाई वादी विवादी
संवादी अनवादी जान॥
षड्ज ऋषभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत
निषाद तान आन।
सारिगमपधनिसानिधपमगरि तानसेन कह्यो
ग्रन्थ प्रमाण॥

४

तेरे नैनन निरखत प्यारी कामबानन मोह मारी।
कञ्ज खञ्ज मृग मीन ते सब वार वार वार डारी॥
सम सर को नाहिन दूजो तिय तो सम मो जिय
भावत भारी।
ऋषि सेन प्रभु मन मांह लीनो कोटि खरब शशि
जोति धारी॥

५

प्रथम आदि ऊंकार तीन ग्राम चवदे सुर जब
जब पावत गुणीजन कर कर विचार।
आरोही अवरोही अस्थाई सञ्चाई चारों बानी
गुबर हारी खण्डारी डागरी नोहार॥
उनञ्चास कोटि तान इकईस मुरछना उरप-
तिरप बाईस सुरत गावत आकार।
भनत गोपाल जानत सङ्गीत पण्डित अति रिसाल
नेम व्रत लेत ढरन सुरन यह विद्या अपरम्पार॥

६

नाद ब्रह्म अपरम्पार किनहूं न पायो पार सीखत
पण्डित कहायो गीत सङ्गीत गुणी जनम
रजोया कै नग लायो।
सात सप्तक गुपत प्रगट तीन सप्तक गोपाल
गायो ब्रह्मा वेद उचरायो सारङ्ग बौरायो मोतिन
माल परायो॥

गरव धर पार चलो वार उलट ठहरायो
देश देशके गुणी सकल सृष्टि महामुनि तेऊ
रच पच गए भेद नहीं पायो ।
तबही बैजू आयो पाहन पिघलायो जिनते पायो
तिनही लुकायो रुग बोलायो गर को हार
गोपालही दिवायो ॥

७

प्रथम नाद रूप गावत सुर ब्रह्मा श्रवण सुनत
उठ धाए गवरी अरधङ्ग ।
महादेव विलास सङ्ग लिए बजावत
मृदङ्ग ततथेई तताथेई थेई तत ता धिलाङ्ग ॥

मुलतानी धनाश्री—चौताल

मन्दिर मध आज ठाड़ो निरख पति प्राणेश्वर सों
तिय पिय के डरप गई तप तेज ।
प्रसेद छूट छूट जात जिय बूड़ बूड़ जात चांक
चौंक परत यातें वदन जोत पियरो भई सौतन मुख
देख देख अलक पलक भई सेज ॥
प्रथम छुट्यो औकास जिय बूड़ बूड़ जात उमग
चौंक परी तामें अपने पायन सम्हाल अकल
विकल परी सेज ॥

२

जा दिनतें बिछुरे नन्दनन्दन तादिन तें सुख नोंद
भर ना सोईरी ।
निश दिन घरी घरी पल पल छिन कल न परत
मोहि एक टक मधुवन मग ओर जोईरी ॥

३

बकशीस देत तुरङ्ग सुखपाल वसन पट रीझ रीझ ।
चिरञ्जीव वरष करोर महाराज चतुर सुजान
आनन्द रसमें भींझ ॥

४

तुव तनमें सुगन्ध मलयागिर सुवास बसे
तन मनसा पवन लहरे लेत
है सुजान सुन्दर सुलक्षण नारि दरशन आनन्द
कारण निकेत ॥

गङ्गाकी तरङ्ग देखि सब जग तरो जात सुर नर
मुनिनको लागत हित चिते ।
केतेक छल लम्पट कायर कपूत पापी तिनहूं के
पाप भाजत किते ॥
ब्रह्मलोक विष्णुलोक रुद्रलोक कथा जाको
जैसी भावना ताके काज सुफल निते ।
गङ्गभक्त आगे पाप रोवे पाप आगे यमदूत
रोवे चित्र औ गुप्त रोवें कादग चित चिते ॥

६

घर घर तें व्रजवनिता जो बन निकसी आज कञ्चन
थार भर भर नग नोछावर करन लालकी ।
सप्त सुर लै गावत कण्ठ कोकिला लाजत उपजत
अति रसाल गमक तान तालकी ॥
मदन-महोत्सव साज समाज गोपानवृन्द मिल
चलत चाल मरालकी ।
तानसेन प्रभु रस वस कर लीनें तिरछी चितिवन
मदन गोपालकी ॥

७

उत्तरा मेंदा रजनी उत्तराय तामत मरी
अति क्रान्ता उदयात ।
सौबीरी हरना कपोलनता संडा मध्य मार्ङ्गी
पौरवी ऋषि कान्तात ॥
नन्दा विशाला सुमुखी विचित्रा रोहिणी अलापनी ज्ञात।
धंधी रसाली निशानी गगमानिनिधा इकईस मुरछना
चेत विख्यात ॥

८

सीखिए विद्या उत्तम साधि गुणी गुनगावो आनन्द
प्रेमको का काहुकी कौन ।
जो इच्छा कर ध्यावें तें फल पावें गुपत
प्रगट निहचे कर पावें ऋषि मौन ॥

९

तेरोरी वदन देखत प्यारेके दृग खञ्जन अति राजत ।
कोटि कला नीके कटाक्षण मन मोह लीनो कपट
रत धीर न धरात ॥

राग ऋषभ—ताल चौताला

चरण धर आएरी मो पर मया कर आली धन
धन मेरे भाग।
धन आजकी घरी धन यह पल महूरत मोंहि लीनो
अपने शरण धन सुहाग॥

मुलतानी बरवा—तिताला

तन नगर हिरदे तखत मन बादशाह मत बजीर
दोऊ सेवक शाहके।
ज्ञान नैन अहेरी श्रवणन जासूस ए द्रग दोऊहैं
अमीर चाहके॥

मुलतानी भीमपलासी—तिताला

माइरी होत कहाँहू समझाए।
नैन प्राण छवि निरख जीत कों मन भयो हाथ पराए॥

बरवा भीमपलासी—तिताला

बोल बोल मुरलीरी मधु वचनी बात कहत
पिय भावनके आवनको।
अवध बदी मनमोहन बलमा मोसों आवनको॥

मुलतानी धनाश्री—तिताला

कौन दिशाहै अजहूं न आए सखीरी हरि न आए।
औरजो जान जिय ध्यान मेरे बसना नाम लियोरी
मानो उनहीं सो मिलाए॥
मृगमद घन सार कुंक चन्दन नहीं ले लाए।
एसी को कृपा करो करन के प्रभु तुम हमहूं मङ्गल गाए
बल या चन्दन कुद्र वरिएटको इन्होंने बनलाए।
तानसेन प्रभु वेग दरस दीजे हमहीं मङ्गल गाए॥

मुलतानी धनाश्री बरवा—तिताला

खञ्जरीट मृग मीठा सांवल दीठा मन मोहावें।
नैन सलोनी काजर देनो इन अँखियन हालवे॥

मुलतानी धनाश्री—तिताला

ब्रह्मगत अपरम्पार न पाऊं।
प्रथ्वी पार पताल ढरा और गगन लों धाऊं॥
जोलों नहाय सुदिष्ट तुम्हारो मन इच्छा फलही पाऊं।
तीरथ प्रयाग सरस्वती त्रवेणी सब तीरथ
होकर गुरुद्वार जाऊं
भागीरथी गौतमी और गङ्गा तानसेन गावै
हरिद्वार चाऊं॥

२

कैसे धीरज धरों ऊधो जोग सिखावन आए।
जिन कानन पिया अपने करनन करनफूल पहिराये॥
तिन कानन माटीके मुन्द्रा मधुकर हाथ पठाये।
वेणी सुभग गही कर अपने चरणन जावक लाए॥
अब हिन लाग रहे कुबजामे निपटही कठिन
मन चाए।
सुन सुन पाती जागकी ऊधो चित स्थिर नहीं पाए।
सूर श्याम विन छिन छिन पल पल घरी
ए नाह सुहाए॥

२

कहा कहूं उन विन मन जरो जातहै अगन बरतें
करमन कियो है बिगार।
बैर करतहैं दुरजन मन्न बेजू न भावें मन पियके
अचरज भयोहै व्योहार॥

मुलतानी भीम पलासी—तिताला

मागतहों तुमपे विधना देउ बकशास।
सकल कष्ट दूर होवे मुक्त होवे शरीर जग विच ईश॥

२

जै जै कर पूजो धौलागढ़को रानीने।
पान सोपारी ध्वजा नारियल पहले भेंट भवानीने॥
तेल फुलेल अरगजा अम्बरले चढ़ावत वाक्वाणीने।
तानसेन यह प्रसाद मागत दीजे बुध और वाणीने॥
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शङ्कर ध्यान समानीने।
वीरबल वंश ब्राह्मणकुलतारण तानसेन वरदानीने॥

मुलतानी धनाश्री—तिताला

धन धन आज सलोनो आली सब मिल बांधो राखो।
मगन करो बिप्रन दे दच्छिणा चिरञ्जीवनको माखो॥

२

कमलनयन कान्हकी शोभा नैनन तें टरेरे।
ऊधोजी आए जोग सिखावनको जञ्जाल करेरे॥

सुन्दर श्याम सलोनी अँखिया कमलवदन कर धरे
गिरवरेरे ।
सूरदास प्रभु अमृत छाड़के को धूर धरेरे ॥

भीमपलासी—ताल रूपक

पिया प्रेमरस छके छके अजहूं न आए मेरे गेह ।
विरह खिलोना टोना भई आलीरी प्राणपतिको
यातें व्याकुल कोनी नेह ॥

मुलतानी—ताल रूपक

आज कान्ह मुरली बजाई है ए बजाईहै ।
दादुर मोर पपीहा बुलाई श्याम बदरीया छाईहै ॥

२

उरज उतङ्ग अभिलाषी श्वेत मैन कञ्चुकी होय
राखी ना कछू चित चोप रङ्ग रेजेमें ।
मोतिनकी माल मलमलवारी सारी झलमल
जोति होत चाँदनो अमेजेमें ॥
विहंसि वदन विमलासो सो अटापे गई देखन
प्रवीण पिय वैनो सुख सेजेमें ।
गर्द भई है यह दरद बतावें कौन शरद मयंक मारी
करद करेजेमें ॥

३

कङ्कण कलित वेंदी नगन जड़ित भाल मोतिनकी
माल गरें सोहै भली भांतिहै ।
चन्दन चढ़ा चारु चाँदनीसो चन्द्रमुखी प्रातही
अन्हायके पधारी घर पाँतिहै ॥
चुनरी विचित्र श्याम सिजक मुवारक जो ढांप नख-
शिखतें निपट सकुचातहै ।
चन्द्रमा लपटके समेटके नखत मानो दीवेश्वरको
प्रणाम किए रैन चली जात है ॥

धनाश्री—तिताला

हरि नाचत गतिले थेई थेई ।
तक थुंगा तक थुंग धिधि किट तक धिलाङ्ग तक
धिलाङ्ग तकथो तोदो माग तोदिगा गधिधि कन
तकधिलाङ्ग तक थेई थेई ॥

पञ्चानन पञ्चराग कह्यो श्रीराग सद्योजात वसन्त
वामदेव तें भैरों अघोरतें पञ्चम तत्पुरुष तें मेघ
कह्यो ईशानतें तापर तान लेत नई नई ।
नारद वीणा बजावें सासा निनिधपगमपधनिमासा
ससानिधपमगरेरेसा जुगराज सकल गुण ताल देत
डमरू धुन ठगन गनिनि गनिनि गनिता
कट तक थेई थेई ॥

भीमपलासी—तिताला

अति गत मंत्र गंम् मम गंम् मगं मम गम मग
ममग अति गत मन्त्र गाइया ।
त्रैलोक भूमि कमलरे हरिकोलरे मल्लोलरे मकरन्द
अइया उदध चन्द्धरो मनमें अति गत मन्त्र गाइया ॥
तडतक भुमगरे जुगलरे ततकाल निरत अपाररे
अधाररे धक गावत नायक गोपालरे राजा राम
चतुर भए अइयारे रे अति गत मन्त्र गाइया ॥

२

रच ब्रह्मा विद्या अमरे अगम निगम कोटि पचहार ।
नाद आदि जोति सुर समुद्र ग्राम त्रैलोक
गुण द्रुगपाल पवन कोटि तान अंग चतुर दिग्नि
धिमि किटि तथा ।
सङ्गीत गादो यश संपूरण रस नवखंड तारनि मेला
रागन दीन दुग्रन हद बाजत ततोया तियेयेयेया ।
कवि कोविद वेद देवा भेवा नितरें अगम निगम साधें
अनुराधो साधक वसुआ धाये गान गन्धर्व गाये तिन
अन्त न पाये कछू न मचुपाए बड़ गोत राग नरन
कर काहूंसों वाद विवाद लघु गुरु प्रसाद कनक
गगर हैया ॥

३

जग मगत जग पर जन भवहर सह कर सब रच्छा
करत अचर चर ।
कनक वसन तन असन अचल अछ अनलन दहन
सम जल थल कर अजर अमर ॥
अज वरद चरणधर परम धरम मन चरण शरण
धर नर हर परम करम यह मरम कर कररररररर ।

अमल कमल कर वदन मदन नम यगकरन मदन
हरण मदन-कदन डर डर।
धर-धरन नगधर जलधर गरभञ्जरण परम परम
करज धरम भवभयडरन मन धर धर॥

मलतानी— तिताला

सजना मेंड़ा मन तड़ो ओर जो तुमो
मिल टांमा डेनाल जोर।
सांचा कहत तोसे मरम इगक्रहे पात कोजे
एक ठोर जेसे कूकत बनके मोर॥

अरिदल मलन जोधा नरदल भाम कर्ण समान।
तङतक झूमन युग लरे तत्काल निरत अपारे
धाक गावत नायकगोपालरे ते ण्या ऐया आइया
आइया आमान॥

मोमपलासी—तिताला

ओ तुम गत मस्तगे उमगे।
मेरे आइया ससगे उसगे उमगे॥
वरचार पड़ेग तुम अङ्गरे। अलो गोल मङ्ग अमोलरे।
मस्तक कुण्डल डूलरे। धाक गावत नायक गोपालरे॥
राजाराम चतुर सुजानरे। तुम चञ्चल अलसुआनरे॥
तिया इया इया तिया गावे तानरे।
आइए आइए इया इया तिया इया तुम मानरे।

मुलतानी धनाश्री— ब्रह्मताल

चन्दे भाला शीश गङ्ग गौरी अरधङ्ग लिलाट भस्म
मुण्डमाला कर पिनाक रैया।
महादेव महाजतो अमरा मन रैया त्रिलोचन
नीलकण्ठ अन्धकरिपुरैया॥
शङ्कर शम्भु त्रिपुरारि डमरु डिम डिम बजैया।
नांचत ताण्डव कैलाशपति रोझत विष्णु रिझैया॥
बैजूनायक सङ्गीत निरतत देवपति रैया।
तिऐ ऐया याया आमो आमो आमो ऐया॥

२

शङ्कर विषधर वृषभवाहन धरे वाघाम्बर धरे मुण्डमाल
गरे कर त्रिशूल धरे त्रिलोचन डमरु पिनाक धरहर।
भूत प्रेत पिशाच सङ्ग सखा धरे फणाधर गङ्गधर
नीलकण्ठ धरे अष्टसिद्ध नवनिद्ध सुख सम्पत
आनन्द धरे हर।

३

कौन टेव परी तिहारी तूं पियासों रिसमानो।
चतुर सुघर मानो तियरो पिय मन मानो॥
एसो रमन ना करो प्यारी एतो हठ ना ठानो।
रङ्गसमुद्रसे रङ्ग करो तुम सुन्दर श्याम लुभानो॥

मुलतानी—झपताल

चलत चितवत जैसो मदन ओ दौर तच पिचकसो
उड़त चहो महजहो उरदलके
योवनको जेव पर लहर लहर कर ठहर
ठहरके छविसों छवि छलके।
उमग उमग अंग अंग न समात दोऊ श्याम
मारो विचमानो बदलासो झलके।
अधर सुघर लालो सौंचत सुमन मालो तेईं अवलोके
अलि मत्रन मालि ललके।

२

दिल्लीपति नरेन्द्र अकबर शाह जाको डर डरे
धरणी पुहुपमाल हलायो।
दलसाज चतुरङ्ग सेना अगाध जहाँ गुण ठनो चढ़
विद्याधर आय आय नाद भेद गायो।
गुणीजन जगतके ताको दियो अघाय तुम प्रताप
सुन धायो।
कहत नायक गोपाल तुम चिरञ्जीव रहो शाह देन
करोरन आवत धाय धाय मृगनाला पहरायो।

मुलतानी—सरफाकता

अति सुघरलाल मेरेहो आए अति सुख पाए भाए
अङ्ग अङ्ग बसाए।
प्राणचरण चेरे प्राणपतिके और नोछावर करो
तिहारे दरस पाए॥

२

शम्भू हररे गङ्गाधररे कामितजन मन चिन्तामणि
कल्पवृक्ष कामधेनु कामासुद पूरण कररे।

कर त्रिशूल तिहूंलोक अनाथनरे मात पिता गततान
पट अम्बररे फणि मणि मुण्डमाल घटकुण्डनरे ॥

३

चन्द्र कुण्ड कुण्ड कुण्डालो अटक जलनाथ नरे ।
डंडडंडडंडडंड नवकुल डंडनरे नीलकण्ठ
भस्मभूषणरे सुर-नर-मुनि आनन्द मौनो
प्रतिपालन कररे ॥

भीमपलासी—ताल झपताल

पैनिसागपमसामगसानिगरेसानिपनिसागपमगसा ।
निसानिसागरेसानिपमपनिसानिपमगरेसानिप ॥

मुलतानी भीमपलासी—सुरफाकता

निनिसागगमपमपधधपपममगमपमगरेसा ॥
पैनिनिनिनिनिमारेसारेसानिसानिपसानिधपमगरेसा ॥

भीमपलासी —ताल रूपक

निगमपमगनिमागमनिनिनिधधपपपममगगरेसा ।
मपनिमपनिमागरेसानिधपमगरेसा ॥
गमपमगनिसागमनिधपधपमगनिसानि-
पमगगनिनिमा ॥

भीमपलासी—चौताल

निमागरसामगरेसानिनिधपमधपमगरेसा ।
मपनिसानिसागनिमामगनिमानिधपमधपमगरेमा ॥

मुलतानी—आड़ा चौताला

कहै कोऊ वाको समझाय माई जे बिन मोरा
जिय अकुलाय ।
निश दिन तलफत बीतत रहो न जाय ॥

मुलतानी - चौताल

ए बालमरे मोरा बालम अनत न जाओगे ।
अङ्ग अङ्ग भर गरवा लगाय मोहे जीवाओगे ॥

मुलतानी —ताल रूपक

यहै वन अचल चलन चलाई कन्हाईरी मो कौन
ठौर मागे दान ।
जो न भई सो अब भईरी सो कौन सयान ॥

मुलतानी—सुरफाकता

मदनमोहन मधुसूदन मुरारि मुरलीधर मनोहर
मकट शीश राजे ।

उपेन्द्र पीताम्बर गरुड़ध्वज इन्द्र व्रज गोविन्द
मुखवंशी धुन बाजे ॥

२

वनिता वन रही सङ्ग लाल ललना सोवत
पलङ्ग पर उजरे वसन ।
औढे रङ्गको अङ्गिया सोहत नैन काजल रेख खुल
रही दाड़िम दशन ॥

मुलतानी—चौताला

भादों निश अँधियारो क्वार महादुख भारो
कात्तिक दिवारो देख मैन तन तायोहै ।
अगहन दहत शरीर पोष पीसा कहो महाके
महीना चन्द्राङ्ग सतायोहै ॥
फाल्गुण पतझार भए चैत अति चिन्ता भई कहत
विहारी वैशाख कहूं छायो है ।
जारवेको जेठ आयो खड्ग ले आषाढ़ धायो
सावनतो आयो पै मनभावन न आयो है ॥

२

मोसों नन्दको सुवन उरझे कैसे कों पनघटवा जाऊं
अब मोरा जिय लरजे ।
और सखीको मनहो न भावे हमहो सों हठ गार
मचावे ब्रजमें भयो यह निपट निडरको नायक वरजे ॥

मुलतानी—तिताला

तुम उन सन हँसि बोले अब जागी छैल जिन सङ्गरात ।
छवि नायक अलसात बात गात तापर कर सोहैं
मकर जात हम जान लई पिय तुमरो घात ॥

२

सखीरी सुरजन नहीं आए मग जोहत बीतो सारी
रैन अब किन सोतन विरमाए ।
डमड़ घुमड़ घन ज्यों ज्यों गरजे त्यों त्यों
सखी मेरा जियरा लरजे छविनायक पिय मिलवे
कारण इन नैनन झर लाए ॥

३

वैरन वरषा ऋत आई बोलन लागी वन विहङ्ग
पपीहा माई पिय विन कछु न सुहाई ।

रिम झिम रिम झिम मेहा बरसे मोरे जिय
देखनको तरसे छबिनायक जो आन मिलावें
दोउ करलेहुं बलाई ॥

मुलतानी धनाश्री—तिताला

सखोरी पीतमकी बतियाँ धरक उठत जियरा
बारबार मोहे नहीं भूले दिन रतियाँ।
जबतें गए मोरी सुधहून लीनो छबिनायक
जिय अकुलाई आवें धड़कत है मोरी छतियाँ ॥

२

सगुन भइलवा पिया मोरे आइला आज मन्दिलरा
बाजुर।
हीरा मोतीयन सों चौक पुरावूं गरे लाय हियरा
हुलसाऊं छबिनायक तन मन सुख उपजो
सुफल भयो सब काजुर ॥

३

बन बाँसुरीया बाजे कलन देत पल लगे न छिनज्यों
निशि बासर घन गाजे।
लागी रहत अधर लालनके बेध हिय सब ब्रजबालनके
छबिनायक अब बस कर निशदिन तुमहो
भई शिरताजे ॥

४

नाददल कटकअलाप कर बार लिए ताल
कुरी दार और ब्रावन गारो।
तान कमान और ससुर तरकस सुरत मरछना
गोलो पार मारो ॥

५

जागनिया भईरे पीउ तोरे कारनवा कानन मुद्रा
हाथ खप्पर अङ्ग सभूत लाई।
मनमालीके नाम कीरे अरे भला ज्ञान ध्यान
सुमरन जाई ॥

६

पचरङ्गी गुदरी सोई मानो लागे प्यारी बरण बरण
बस्तर गोविन्द जरत जरो।
नमस्कार मोहि करना तिसनु सुन शाह जमाल
कर करम उड़ाई हम काँधे धरी ॥

७

सुनावो मोहि ध्यान वाहूं कोरे श्याम प्यारे को बात।
निश दिन तलफत नीद न आवत थाकित भयो
मेरो गात ॥

मुलतानी —सरफाकता

लज्जा नीद तजगो वदनतें चितदे मन समझात।
लछनदास तुम साँची कहत कहूं ओसन प्यास बुझात॥

मुलतानी—एकताला

अब डर लागेरो या यमुना जल जात भरन सुन
मोरी आलीरो यह वनमालो भल।
रोकत चाहत मोरी बंहिया धरत निपट चवाई नहीं
एसो देख्यो नैनन में बडो फन्द करन
लछनदास नित करत कपट छल ॥

२

हम बैरागी विदेशीयारे सखो गुण औगुण न धरत
मनमें जो कछु ध्यान धरे जियमें वाहीमें रही समाय।
नगर नगर डगर डगर जङ्गल जङ्गल फिरत रहत
सदारङ्ग ज्ञान ध्यान को बतियां मांईमें रहे रमाय ॥

मुलतानी तिताला

मन लागो जाको लालसों जाकेई मन को चैन।
इत उत काहे भटकत सजनी ध्यान लगावो
निरखो नैन ॥

मुलतानी—ताल सुमार

प्यारे बिन भर आए दोऊ नैन।
जबतें श्याम गवन कीनो गोकुलतें नाहीं
परतरी चैन ॥
लगे न भूख प्यास न निद्रा मुख आवत नहीं बैन।
बैजू प्रभु कोई आन मिलावै वाको बलिहार
चरन रैन ॥

२

बरज्यो जो अरोए मा वो ढीट लङ्गर चतुर
नैकन माने लागोही आवे मोसों।

तेरो क छून जादेगो मोहि खिजावेगो सब नगरके
लोगदा कैसे देखाउंगो मुह सबकों ॥

मुलतानी — तिताला

दुवर भइलो एमा पियाके कारण एमा जाके विन
देखे कलन परई ।
जबते सुवन गवन कीनो प्यारे नेत बर्तें विरह
धीरज न धरई ॥

मलतानी — ताल धमार

देखियत राधे तेरे नैन वैन मधसों भरे ।
घूंघट ओट वदन राजत मानो बादर चन्द ढरे ॥
जेहर बनो जड़ाव कोरे बिकुवा सुघर घरे ।
कर शृङ्गार पियपै चलो मानो गजगति चरण धरे ॥

लाचारी — धमार

ठाड़ोरो पिकवारे तेरे वोतो बोल सुनावैरो ।
बोल बोल मधुरे सुर बोले याके बोल सुहावैरो ॥

२

लाल कहां रस पागि कहो क्यों न मांचे वैना ।
वदन भाल अधर अञ्जन छवि रञ्जन चुम्बत
एसे नैना ॥
जाके भवन कियो सङ्ग सुख जागत वीती है रैना ।
विन गुण माल दई जिन तुमकों दीनवन्धु सो सैना ॥

३

राखले पाहुनो आज मोहि राखले आज गवन
जिन देहु मैया ।
मिलना होय सो मिल लोरी सजनी काल मिल्न
नहीं हैया ॥
बांह पकर पिया ले जावेंगे जब सङ्ग सहाय न कैया ।
उमर डूंगर हो गयोरे अङ्गना भयोरे विदेश ।
हिल मिललो मेरी भेन भानजी मैं चलो पियाके देश ॥
नैहर में हम खेल गमायो औगुण कमायो अनेक ।
गुण औगुण ले चलह सइयांपै मोहि नाहीं विवेक ॥
रूप सोना घोड़ा हाथी बहोत दिया सइयां लार ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अपने सांईके वलिहार ॥

एरो बन बाजो बांसरोया कैसे रहूं घर दैया ।
कलमलात जियरा मिलवेको है कोई धीर धरैया ॥
गाज लगो यह लाज निगाड़ो करिहै कहा चवैया ।
आनन्दघन पिया उघर मिलोंगो अब डर
करत बलैया ॥

मलतानी — तिताला

पियाके कारण एमा जाके विन देखे कलन परे
एमा दुवरो भई ।
जबते गवन कोनो प्यारे ने तबते विरह एक कल
न परई ॥

मलतानी — ताल धमार

अहो मेरा अचरा गह पकर कहां जावो ।
हाथ न लावो मेरो अङ्गिया कुच पर राजा
कंसको गावो ॥

२

मोरे रामरे कवन घरी गवन कीनो पिऊ ।
एक पल वा दिनते कल न परत है मोरे जीऊ ॥

भीमपलासी — ताल धमार

मैं जोति प्रकाश वारले दियरारे सारङ्ग ।
अनाहत आदि नाद वेदाङ्गगुणकार सङ्गीत साधंग ॥
आदि नाभ कुमार रे मत भङ्गत सो नारद
तुंवर सरस्वती साधङ्ग ।
भनत वैजू बावरे नायक गोपाललाल सब गुणी
यन में असाधङ्ग ॥

भीमपलासी — तिताला

पावत कोऊ नहीं पार सुर नर देव मुनिजन अपार ।
गुणी गन्धर्व किन्नर नाग सेवत सोई सनतकुमार
पायो दाव अबको वार ॥

भीमपलासी — झपताल

सोहलरा जो जाने सो जाने राजा रामके घर ।
इच्छा पूजो भयो आनन्द घर घर वनिता वन आवे
गावे बजावे सुघर सुन्दर वरके घर ॥

२

मुबारक वादो इसादी होवे तुमको ब्रह्मा और वरकी ।
चिर चिरंजी रहो वरस हजारां वरस गांठ गांठनको ॥

भीमपलासी—ताल धमार

रसम से लाल भींजे भाजे घर आए मेरे ।
आँखन भर अबीर जिन डारो हाहा पडूंगोमें
पइयां तोरे ॥

मुलतानी—तिताला

समझत सो चले मूरख निदानरे ।
जगमें दोय दिनके हैं तेरे अभिमानरे ॥
आदि अन्त वोही सबको प्राण रे ।
कर ध्यान रे हरि उर अन्तर घट घटमें समानरे ॥
जल थल भूमि अकाशरे । सब ठौर जाको प्रकाशरे ॥
जाको धरो नित आसरे । सोईहै वैकुण्ठ निवासरे ॥
और विकार दुविधा तजरे । बैजू हरिचरण भजरे ॥
प्रभु होत रजरे । गोपाल भजत जलजरे ॥

२

एनायक बनजारे तू मङ्ग लादे फिरत है इतनो
टांडो भारी मै पूछत हों तोसों ।
कहूंसे भरत कहूंसे बेचत लेत नफा डौढ़ा दूना
हर भरती में धड़ा धड़ा करत मन तापै सेरन होत
यह कौन पनसे रीत बांट तेरे आई त पासङ्ग
याको जो भयो है बड़ो चतुराई और पूरो तुल
रहोहै यह कहदे सब भाव मोसों ॥
कहूं मार महमूल हाकिमको दबे होत नहि आवे
आप वाको बदियां करत फिरे काहू दिन कोऊ
चौकीदार वाको घेर खेप और तेरो पला आन
पकरेगो तब कैसे गौन छुड़ावेगो बिन जगात
या मंडी के थानो गठोयावे आगेहूं निकासे तोहू
अनाज वाको तो तलासो फैल रहोहै कोसों ।
जा साहूकारको पूंजीसे तू या जगत में वनज करतहै
कहावतहै वैपारो वाको भी कछूमें सुध या भूलोहै
निरमूल समझ सो चले टूक जियमें जब काढ़ेगो
वही तेरे हिसाबको देखले वो कोठो में बुलाके लेखो
सिगरो तब तेरो एक न चलेगो वाके आगे अबतो
करत मौज मोहे तो कटेहै दिन रैन दूनो अवसोसों ॥

बनजरवा मोरे कवन देश कवन नगर
कवन ग्राम फिरिला ।
समझ सोच के भला वनज कर जो साहूबसों
साँचा होवै दूना माल भरिला ॥

मुलतानी—होरी ताल

गोकुल गामको छोहरारे वरसाने की नार ।
यह दोऊन मन मोह लियोहै रहे सदारङ्ग निहार ॥

मुलतानी—तिताला

एरे हारे लोगवा मनमें रहोली पिय मिलवेको बात ।
यह दुखवा मैं कासे कहूंरे विन सदारङ्ग
जिया निकस जात ॥

२

ढोलन मेंडे घर आमिवे सोणा सौया तो
मैवी ताडे सदके जावां ।
मुख वेखां तोमें जोवां सदारङ्गोले दरस ताथ्रां पावां ॥

३

डावर नैणी मृगानैणीदा चूड़ा रंग लायारे ।
सुधारंग चुनरी साड़ो देखण को सदा रंगदे
मन भायारे ॥

४

वे ऊधो वा दिनको मैं वारो वारो वारो जासे
मोहन कब घर आसो ।
तन मन धन नोछावर करहूं परहूं पइयां लेहों वलैयां
जादिन मांकों मुख वेख लासो ॥

५

सार हमन गावहुरे मङ्गल चार याहू वनरा आया ।
इच्छरोया सब पूजो मनको सदारङ्गोले
महम्मदसा वर पाया ॥

६

कहा जानोरे अरे कोऊ लोगवा जो कुछ हमरे
मन पर बीतो पीर ।
पिय परदेशवा सन्देशवा न पठाई सदा रङ्ग
उनके गुण गावत धीर ॥

सुरजनवा तोसेरे प्रीत कैसे दुराऊं तुम
मन लागल छिनवा मितवारे मोरे बालमुवा।
सदा रङ्गीला छबीला रङ्ग रस सों करले बतीयां
कहां करेंगे दुरजनवा मनके भवनवा ॥

८

एरी ए माई मैं दुबर भइल पिय कहो
आवनको ए माईलेम।
घरी पल छिन मोहे कलन परत है बिरहा
अतिहो सताइलेम ॥

९

मगवा जात हती एरी एमा मोरा मनहर लीनो।
कोऊ कहे वाको ढीठ लङ्गरवा मैं तेरो कहा कीनो ॥

१०

नैणां माडे अड़ियावे करन लगे जालम जारी यावे।
आमिल सजनारे लगना टुक करले गलड़ीयां
साड़डे नाल हां प्यारी याहावे ॥

११

छन्दुवा बन्दुवा कर गइला कर गइला मोसों कलवा।
जोमें एसा जानती तो काहेको लगावती
उन सङ्ग अपना मनुवा ॥

१२

तेतो कौन नगर को बासी रे जोबनवा
आवत देखो जात न जानो कौन गांव को रीतरे।
तूं जिसमें समावे अच पल होवे चञ्चल होवै
गात बिकुरेत तोहे तरस न आवे क्या तेरी यह पीतरे।

१३

मेरी सुध लीजिए कृष्ण मुरारि मेरे बनवारी।
जनम धरम सब तुमको दियो तुम कहा कियो
सहस्र गोपिन में तुमहो अच पल मोहितो
आस तिहारी ॥
जितनी सुनो न कहो न काहुमे सहो जीयाने सदारी।
बिनती करूं और चरण गहत हों और मोर
मुकट पर वारी ॥

१४

वार वार डारी और वार वार डारोरे तुरकवा
तुमने तो हमको चित से बिसारी रे।
मेरे कहेसे कहा होत है अच पल या बात को सब
जाने नरनारी रे।

१५

नाम साईं का भजरे अच पल नाम साईं का भजरे।
अरे भजरे अरे भजरे अरे० ॥
इसमें तुझको बहुत नफा है ध्यान लगा और
माला जप मायाहो सब तजरे।
गङ्गा जाय जमुना जाय जाय न्हाय त्रिवेणी
सांच की नदी में जो पैठे उनकी पहूं हां धजरे ॥
जङ्गम हो या जोगी हो या कनफटा या सेवरा
इन बातन से कहा होतहै लाख बना तू तजरे।
टोहरे जाया मशीत जाया पढ़ पढ़ देखा पोथी
झूठ बोले ते पाप बढ़तहै सांच बोल कर रजरे ॥
नीमाज पढ़या रोजे रखया उठ उठ पढ़ वजीफा तू
जो सांचे जिन के हैं रबसां उनको यही हजरे।
रामकृष्ण निशदिन सुमरण कर यासों भवपार परे ॥

मलतानी धनाश्री—तिताला

मिठ बोलना केहो तकसीर कीती बावला
झटपट मैंडे नाल बोलना।
अटसट नहीं जणदी नटखट अच पल दिल
दांदी घुंडी खोलना ॥

मलतानी—तिताला

महबूब पायारे हजरत सुलतान निजामदीन औलिया।
सब सखियन मिल देहो मुबारकी रबने
सानु मिलाया ॥

२

एरे मन हरि सुमरण करले निशदिन घरी घरी
पल पल छिन छिन हरिचरण चित धरले।
इत उत जित तित काहे भटकत है सदारङ्ग
रस भरले ॥

मागले महबूब नाल भिचा होंतो तोरे
दरशनको भिखारी ।
बेखणदे मुस्ताक सदारङ्ग लाग रही माई
आस तिहारी ॥

४

कोउ जामन मोरो पीत लागो बाही देश जाउरे ।
यह दुखवा मैं कासैँ कहूं इन ठगीयाने एसी
ठगो चाउरे ॥

५

लोग चवाव करो कितनो सखी प्यारे की प्रीत
कर्रू नहीं न्यारी ।
काहेकों करत इतनी बतीयाँ मोसें तूं माई
कौन सुनो कहे तेरी तू चल अब जारी ॥

६

ऐ साँवरा अच्छी नोको तान बजाई रे ।
समसुरन और तान ग्राम मा मधुर मधुर सखदाईरे ॥

७

बांके नैना वालो याने मेरा मनडा लोभाया मेरो जान
उठ देखि रैन सार सलोनो रस दे भोनर्ड आए जैसे
तेरे नैन सलोने तैसेई कजरा पाया मेरो जान ॥

८

सुरजन सोतन सों उरझो कौन भांति समझाऊं ।
अरी एरी मैं कौन भांति समझाऊं ॥
तुम डार डार के भवरा तुमसो रङ्ग रस कैसे करिए
इत चितवत उत बात करतहो कैसेके बिरमाऊं ।
सदारङ्ग पिया मनके भवनवा वेग दरसवा पाऊं ॥

९

मानु ताने देदीया वेसंदल परीया पञ्जाव
दीयावे लोकां ।
मैवी अयाणी वारो वे नेहा की जाणी मैंडा माणीया
इशक तू साड़े नोका भोको ॥

१०

दिलवर मेरा वे वेगी वाग तमासे क्यों नहीं आया ।
जल विच कमल कमल विच कलीयां तापर
भँवर लोभाया ॥

११

अरे हाँरे वीग आमणारे हाँरे मोरे पीका मिलना
कहो तो मोसे कब होसी
कोइ कहे आज कोइ कहे काल पंछन जोगी ॥

१२

भगवा देहों पगवा देहों और देहों लाल पाग ।
मोतियन थार भर भिचा देहों जो पिया
मिले बड़ भाग ॥

१३

कोनो अल्ला वाको दासी वेगोरा ।
दामा दामा तुम्हारा मनु चाउ भिचाको वेगोरा ॥

१४

वालम नर गई यार निरको करम दानी पला ।
कोई किसीदा वारोवे ठोलन साडा मुझ वेनी
मानोदा मानोदा अला ॥

१५

मोरी ननदो रिसाय कुवो कुंडो नाहीं ।
हांजो निकसो अपने आगनमें दौर मिले गरवाहीं ॥

१६

ननदोया तोरा वीरन मोंकों छाड़ गइला परघरवा ।
यह दुखवा कासे कहूं ननदो निकस जात सइयां
विन जियरवा ॥

१७

मुड़ आसो मैंउदे प्यारे इस दुनिया दा
वेखोवे तमासा ।
इन वे लोगानु देख सदा रङ्गोले दाला
भामर नेदा सासा ॥

१८

गुम चढ़ कड़ी एव तेड़ो कतण वालो जोवे
इसो चरखे चाँच पेसो इसो चरखे खासा ।
साह हुसैन फकीर वाणा दमदाको भर वासा ॥

१९

नौहैन पहरन दऊं मैं सिङ्गार और सभी
पहरूं हरवा ।
बारा बरस पीके सइयां मोरे आइला बीच
पड़ोरे दै मोरे हरवा ॥

जचाँ वचाँ घोखो छड़ो भेजी बाबुल तोहे हस्ती लदा
लदा बाजे गाजेसो पाँचन घोमैले।
पहना बनोयॉन नजर वफत जरी की जरी जरी कर बूटे
वाले को हसली कड़वे चटे वटे भुन भुने छिनृडोला
तासतमामी टोपी कुँडतें ढेर लगावहो कहावत
भईहै लालन अब कहाँ गया घो खिचड़ी मैले॥

२१

कनक सुन्दरीया मोरी घड़ देरे अच्छे वीर सोनरवा।
एसो घड़ ज्यो लोक सरावे दुनो लागे नीको
कुन्दन की जरीया॥

२२

जानिया जियका जञ्जाल।
विन देखे जिय घनो दुख पावे देखे होवे निहाल॥

२३

मै किसनु जाय सुनावां अनमैणा सांवल क्यों
नहीं आया।
जिसदी सूरत साड़े दिल विच बसदी कितहूं
खोजन पाया॥

२४

हांजो ह्यारो राज गुमानो घर हालोरा।
मैतो थारो दासी थे ह्यारा सायवा वाटडो
जोवेछे भालोरा॥

२५

औरामा लो कटतारो रामालो।
प्राणका जीवन पूरण कामा सुध बुध हारो मे विस्रामा।
आत्मा याणी परमा राणा जपले रामालो॥

२६

सुन मोरी देयारी हमरो विथा पियाने
विसार डारी माय।
एहो स्वामी आज की रैन अकेली डर पाऊं मोरे
पिया रहोलो विदेश विलमाय॥

२७

लाल दरवाजे बरा जाय बसो और नगरो।
जोतुम आवो स्वामी हमरी बखरी चन्दन
छिड़कों में तोरो पगरी॥

२८

मीराजी की नौवत बाजे बाजइरे सो याह्न दरवाजवा।
हाजती आवे पावे मुराद सब और
पूजिल मनकाजवा॥

२९

पियाके मे वारो वारी जाऊं खेलूं फागरे।
पियाने छिरक केसर चोलीमें मैंने कुसमी पागरे॥

३०

मइयां मोरे सुरजनवा मधवा पिवावो।
भइलो खुमार मई रहिलो न जाय छकेहो
छकेहो छकावो गरे है लगावो॥

३१

टारातिलारितदानिएतदानि आहे आतन दोमृदारा।
गरतरीकें इश्को गर कजमेखम् वाज मन्मन्
चिकारे कारे माने उर जरे मस्तुन मेन दानम्
वतारे आहेआहे त०॥

३२

दरख वेखन देख मुस्ताक रहें देहा तेंडड़े।
अब मदद होवो असरप पीर पीर अतायहो
गला मानु मुखते दवा देड़डे॥

३३

मेरा वनो अच्छो तेरो वर आवेगा।
सिर मोहे गुजराती चीरा वनरो के मन भावेगा॥

३४

सूतोहै बहुँजनमको अजहूं आखें खोल।
जनम सिरानो जातहै तू क्यों भटकत डोल॥

३५

नेणा साड़े आड़ो यावो करन लगी जालम जारो यावे।
आमिल सजना गले लगना टुक करले गलडोया
साडडे नालहाँ प्यारो यावे॥

३६

जनीया जिया जिया का जञ्जाल ।
विन देखे जिय घनो दुख पावे देखे होवे निहाल ॥

३७

कनक सुन्दरीया मोरी घड़ देरे सोनरवा ।
एसो घड़ जो लोगवा सराहै दूनो लागे नीकी
कुन्दनकी जड़ीया ॥

३८

सदा फकीरा दा मान लेते राम न मानि सोकहे रे दीवाने
अल्ला रहो वाकी कुल विन फानी तेंचो मानि ॥

३९

गुसैयाके रङ्ग मिले चाहे एसा रङ्ग सके ।
उनके रङ्ग विन और कोउन आवे नामेती
देखिए यह रङ्ग छके ॥

४०

हमरो मदत कोज्यो दरवार ।
हम तक आए शरण तुमार ॥
तुमहो दुख दारिद्र विडार ।
जमाल देशा नाल वलोका कीजो हमरा वेड़ा पार ॥

४१

भाड़ीयां वे नेहड़े नाल दोस्तो कर दाजो दर दाँई ।
विपर याहो नालदि लगा रहंदा वे परदावे ॥

४२

हार सुधारलो शाह में तो तेरो मालनी गुन्धलाई ।
वनरा वनरी कायम दायम नरनारो मिल मङ्गल गाई ॥

४३

वलैया लंगी रे मितवा विदेशवा जिन जाय ।
बिन देखे पछन तिहाय विरहा सतावे मन डराय ॥

४४

मोरे सइयां सुन मोरे सन्देशवा वेग ले आवो
पतङ्गवा पतियाँ ।
घरी पल छिन मोहि जुग से बीततहैं
आमिलो वेग सीयरो होय छतीयाँ ॥

४५

मा हमरा वालमुवा लोना सलोना मनभावना
पियवा पाइला ।
शाह आजमको मोहनी मूरत चितवन में लुभाइला ॥

४६

शुभ दिन ए दिन आजहै जे लालन आए मेरे स्थान ।
मोतन को उर टरको पुनि यातेंजो बाढो मेरो मान ॥

४७

एरी मोहि सैनन दे गयो लाल सुनरो सखो मोरी ओर ।
मोतन ले कहि हो गए अबतो महरवान चित चोर ॥

४८

सहस्र गोपो एक कन्हैया जामें देखूं ताहीमें ।
कठिन करत असान जगत जो तन मन धन बलिहारी
वापे धन धन एसे गुण देखे वाहीमें ॥

४९

प्यारे सुरजन सों मिलाहि मोको तोरे पांय लागूं
लेहों ए वलैया राम प्यारे ।
उन विन रहो न जाय महरवान चित चढ़ी सूरत
काम प्यारे ॥

५०

अरे रस माल्नो केरे पचरङ्ग महन्दो लावरे ।
नवीय महम्मद व्याहन चढ़िया मोतियन चोक
पुरावरे ॥

५१

मोरो गत रामहो जानेरे ।
मेरे मनको हरहो जाने घरो घरो पल पल
छिन छिन ध्यानेरे ॥

५२

मेरो गत तेरे हाथ है नाथ ।
सुन्दर श्याम पतितपावन धरिहो माथे हाथ ॥

५३

हम देखिलो लखोलो चोरा जासोरे ।
एकतो अँधेरो रात दूजे दिया न बातो तोजे ना
कोऊ सङ्ग न साथोरे ॥

५४

बार बने तेरे घूंघर वारे।
इस बनरेके शीश सेहरा सोहै दो मोती एक
लाल बनारे ॥

५५

गईरे बालम तोरी सेजरे मेरो लाल मुन्दरीया
नगीनेको।
हाथनकी मुन्दरी गई मेरी गईरे कोल कङ्गनवाको ॥

५६

कुंवे पर भोर भई मोरी गईरे नथुनीयाको गुंज।
नयो कुआटा और नई पनिहारी नयो जोवन नयो रूप॥

५७

बुढ़िया सोच सोच मनमें पछतावत अपने अब क्या
कीजे चरखा हुवा पुराना चलता नाहीं
फेर फेरहो हारी।
डगमगात पटरी दोऊ हिलन लगो सब
गुरीयों मूल लाठ लरजत तकला भुको हतो धरनी
खान तकले वल परी चमर खस कदम सुकड़ी
भई पखड़ीया न्यारी न्यारी ॥
जब था नया अति रङ्गीला और चटकीला नवन
बांधो मनको तार कातो पुनि हौन कुकड़ी
चित दे अटो अटेर नएको गाले कई जोतो माल
सभी न सभाल चुटको पोत टोया दो डाल
अब रीतो पड़ोहै पिटारो।
डरत हूं जब आन बोले उघाहो बालो मांग जो जमा
दाम तब क्या करूंगी मोपै सूत न कपास नहीं गुदड़ी
को आस रहो सखियनके साथ मोज करत नित
योंही उमर गई मैंने मैंने करत अपनो सारो ॥

५८

मत सोच करे मन मेरे वो आप धनो देखत है जैसे
जाको देत तैसोही रख वापै नजर एरे।
कोड़ी कोकन और हाथोको मन जैसो जाको
भाव होय ताही कों तैसे देरे।
वनादा आषुनारो जो रस नादको दाना अदराहै
राव मानद मौज से वाहीको नाम लेरे ॥

मुलतानी—भैरी ताल

चिस्ति चिराग को ढोटारे सब चिस्तीयनको नूर।
राज दुलारो जग उजियारो अल्ला नबी को हसन जहूर ॥

मुलतानी—तिताला

कहा करूं मारो माय नानन मानन वस कर लोनो।
वंशो बजाय रिझाय सदारङ्ग मेरो चित हरि लोनो ॥

२

परदेशी तुम सन कौन करे एसी प्रीत।
आज इहां रहे काल वहां बसे जोगो काको मीत ॥

३

सुध विसराई मोरीरे ना आए आली मानो कौन
औगुणवा।
हर दरशनको लालसा मनमें निशदिन गनत सगुणवा॥
कहा करूं वस नहीं मेरो अब दुख दे गयो दुनवा।
ज्ञानदास वोसो श्याम विलम रहे इत ब्रज कर गयो
सुनवा ॥

४

काहे कों फिरत भ्रम भूलोरे मन।
या घटमें है हरिको बासा आनन्द मङ्गल मूलरे मन॥

५

लागोहो आवै ढोट लङ्गर चतुर न माने वरजो अपनोरे।
नेरो तो कछू न जायगो खिजावेंगे नगरके लोगवा
कैसे देखाउं मुंह सबमेंरे ॥

६

मोरे मन्दिरवा गावोरी बधावरा सुरजन आइला।
इच्छरीया सब भई जिन मनको मनभावता सुरजन
पाइला ॥

७

राझण आयानी बैठा साडड़े कोल।
रे रांझण आया मैंड़े मन भाया कदड़े कीतो हुण बोल॥

८

तेरा मन माने वेसो कहेरे दिवाने सदा फकीरांदी
मानले।

अतन वतन कतन कुडेर वनु तेंड नाल मानले ॥

९

लङ्गरवा ढीट सलोनारे जिन रोकी बाट मेरी।
पनीया भरन हम जात छतौरी सास ननद की चोरी।

१०

अगर चन्दन काम पलना बनाऊं झूल झुलाऊं
लालनीयाँ।
नगन जड़ित हीरा मोती टेहूं पालनीयाँ ॥

११

दान मोयाँ हैऊ वडो रुसम में ह्यारी अना दे हवाले
चाको तामें तेनु बेखो को कि दुख भरणाऐ टाना
मखियों।
खदे महरवानो वेरखवे घगो पल छिन छिन
पहचान वे याहो आन जानीया ॥

१२

वृन्दावनके वासीरे कौन आस कौन जास कौन
करीनो हासुर।
जब लग ध्यान तुमारोरे वस्र मनुवा रहिलो उदास ॥

१३

माई तेरा लाल अयाना रे।
माड़ा कहा मई मानदा नाही लङ्गराई
पङ्गरदा मयामारे ॥

१४

रहस घर समधिन आई। सब साधन मन भाई ॥
समधिन आई सब मन भाई अच्छा कियो है सिङ्गार
ले समधी समधन के डारे गज मोतीयन को हार ॥
समधिन को माकरो अस खिरको समधी आवन जोग
आधा बाहर आधा भीतर सब समधीके लोग ॥
समधिनकी हाथो का भावें अच्छा नोका पूरा।
रङ्ग रङ्गीला और चड़कीला हाथो दाँतका चूरा ॥
समधिन ठाड़ो मरावन लागो समधीके खातर बकरा।
पिछली रात करावन लागो मूंग भात घोड सखरा ॥

१५

वनक बन समधिन आई समधिन के घर काज।
ठाड़ो निश दिन आप करावत अपने घर को साज ॥

१६

अरे माधो तेल ले तेलले फूल ले बेलले चमेलीले।
अतर अरगजा कुमकुमा ले केसर कस्तुरी रङ्ग रेलले ॥

१७

मैंचूड़े ठड़ीयाँ साँई साहब दी सरकारा।
पैरा नंगो मी रांझड़ लालो सब जो उतरो पारा ॥
नड़ फड़ान उन मिलवन कछू नहीं वगदाते
किण लेना संसारा।
एक राझोली होर बढ़ावाँ सरम रहे दरवारा ॥

१८

घर घर मसलत शिर शिर ममलत मन मसलत
दा थानो।
कहे हुसेन फकोर रबाणा विन मसलत उठ जानो ॥

१९

वन वन गई सुरजन मोरि कबहूं नहो तू मोसे
एक पल न्यारे।
घर घर नगर नगर डगर डगर में तुमही देखतहों
वार वार जाऊं वारे ॥

२०

सइयाए मोरे सुरजनुवा भइला खुमार मधुआ पीवावो।
मई रहोलो न जाय छकोहो छकोहो छकावो गरेहि
लगावो ॥

२१

बाजेरे आज मन्दिलरा साजन भयो घर काज।
रङ्ग रङ्गनके विस्तर पहर पहर हितू सब करे
आनन्द मन साज ॥

२२

मोए मेरो मन लागा मारत न हिंडोलना।
गोकुलचन्द उमगमों झूले पहर पीत पीत चोलना ॥

२३

अबतो सुनले बनके टेसुवाँ ते केहि कारण जरवो कोनो।
मैतो कहतहूं वोर वटाऊकेल अधिक दुख
दीनो हम तर बैठके ना सुध मोरी लीनो ॥

२४

अरे मोरे बमनारे सगुण विचार मेरे सइयाँ
को मिलना कहदे कब होवेगा।

घरी घरी पूंछे सदारङ्गीले महम्मदसा दिन
चाव बढ़ावैगा ॥

२५

राजराजेन्द्र म्हारे डेरे चलो राज
खड़ी वाटड़ी जोवंछे म्हारी राजा रानी।
कबको मै ठाड़ी ठाड़ी अरज करेगा वे योंही
रैन विहानी ॥

२६

वेखो सदयो जगमें जीवन असी दरशन पाया।
अवधपुरी मध रामजी दीठा गोकुल कृष्ण जादुराया॥

२७

रेमन यही गनीमत जाजो तुमने पहचाना।
तुमही हमारे वारी हमही तुमारे जो दीपक परवाना॥

२८

एरी गुण मानले वारी चंपे दासां वर।
पीतम के सङ्ग वावरी भई बाजूबन्द वे मूर्ण
रैन दिनारे न दिन गइली भँवर ॥

मलतानी धनाश्री—तिताला

एरी वीर कहा कहिए तोसों लग गई लगन मत
पूंछे मोसों।
रूप दिखाय वावरी कर डारी लग गए नैन
अब का कोसों ॥

२

मोकों बतलायदे भला यहां कोहै तेरा।
तात मात भैया सुत नारी झूंठ जगत वखेरा ॥

३

हरि बहोत ढूंढ़ा नहीं पायारे।
गोकुल ढूंढ़ा वृन्दावन ढूंढ़ा ढूंढ़ी कदमकी छायारे ॥

४

म्हाने बतलावो क्योन राज कांई जियमें ठानी।
योंके कारण मैंतो सेजड़ा बनाई शोक रङ्ग अब
आवो क्योन कांई मन में जानी ॥

५

चकलाई कुड़ेनी धांगर रोटा वहँदा नाहीं।
इस जग बीच कोई नहीं अपना तेड़ा है रव सांईहीं
सोने दानी में महल बनावाँ रूपे दानी छज्जा सदका
शाह हुसेनदा मैड़ानी गड़ खेलन लगा कुड़ेनी ॥

६

मोसं नोके दारवे दिया राम दइलो न जाय।
जबरे दई वाकी साम रिमानी मधवा ऐड़ो ऐड़ो जाय॥

७

मीया तुसी वेखले दुनियादा अजब तमासा देखा।
समझ समझ कर मन में रसीया जादिन पी
पूंछेग लेखा ॥

८

कोई मोहि आन मिलावा पीया।
जो कोई पियाको खबर ले आवे तन मन वारूं जोया॥
जैसे खाल लुहार कोरे सांस लेत विन जोया ॥

९

जिन मोरा बालम मोहा वो कैसे सुख पावेगी।
जो कोऊ काहू कलपावेगी सो अपने आगे आवेगी ॥

१०

बगीयां जान न देहो सइयां दारो जार।
रङ्ग रङ्गीले फलवा बहार तो गुन्धलातो नीका हार ॥

११

देई पछतई दिल तुमको लालन नहीं बूझत हो मेरे
तनकी।
बात कहों जब तोसों प्यारे खोल बतावें अपने
मनकी ॥

१२

मितवा मोकों छैलवा मिले अरी ए मा
कैसे कर जाऊं पनघटवा पनीयाँ भरनकों।
अगर वगर के लोगवा देखे महरवान नहीं
मानत पइयां परनकों ॥

१३

प्यारे सुरजन सों मिलायदे मोकों तोरे परिहों
पइयां लेहों वलैयां रामरे।
विन देखे रहिलो न जाय महरवान चित चढ़ी
सूरत श्यामरे ॥

१४
अब जिन जाय छाय विदेशवा बालमवा
तुम सन लागोला मोरा मन।
तिहारोही ज्ञान ध्यान तिहारोही सुमरण रटना
रटत घरी पल छिन॥

१५
अनि वेखो सइयां अजब तमाशा दीठा।
दिल्लीदा पीर निजामदीन औलिया जम्बुदार मामीठा॥

१६
जानी तोरी चितवन मोहि विसरत नाहीं।
तोखे नैन कजरा रे चुभत मन में दो देखे
एसे कहुं नाहीं॥

१७
उन बिन देखे कल न परत मन मोरी आली घरी घरी
घरी घरी छिन छिन पल पल मेरो मन पिय
मह्नो रहत।
सोवत सपन जागत फिरत निश दिन सुरत रहत
मोरी आली श्यामसुन्दरकी पीत मोरे मनते
नहीं विसरत॥

१८
घर हालो जी चलो म्हारो राज गुमानी।
थेंतो थारो वाटड़लो जोंवा अरज करूंछे महारानी॥

१९
बावरो नारसो मेरो मन लेगई।
सोलह शृङ्गार बत्तीसो आभरण पहरके सुन्दर नैन
सैन देके गई॥

२०
देखो देखो रे मगज अलबेलीका।
गलियन गलियन में फिर आई रस्ता न पाया
हवेलीका॥

२१
सोतनोया सोतन संग उरझो कैसे सुरझाऊं।
एरी वेतो माने न मे कौन भांति समझाऊं॥
एरी एरी मे कैसेके समझाऊं।
कह कह हारी बहो भांतिनसों अनेक जतन कर
सदारङ्गीले बरवस ठानत निश दिन झङ्कझटसा
वर पाऊं॥

२२
मेरो मन ले गीमोरे ए दैया यो बटपार।
चोरा चोरो जात ठग ठग चितवत चारो
जो वस कीनो कन्हैया यों बटपार॥

२३
अबतो सुनले वनके टेसूवा तोरे कारण तें
जरवो कौन।
का पंछत हो बीर बटोइया कल्ह बहोत दुख दीन
अन्तर डेरके मन हर लीनो सुध बुध लीनो छीन॥

२४
वे में चलो वे मेरे बाबुलम्। अपने में साहुरे हू हू हू।
पाय डोलो में लै चल कुंजा बांगु कर लानोया
कू कू कू॥

२५
गमपनिसानिधपमगरेसा। सगमपनिपमपमगरेसा॥

२६
में मिलिवे सोना तैंडे नाल तुझ बिन मैनु न भांवदा।
आंवदा जांवदा मुरली बजांवदा तुझ बिन मैंनु
न मोहांवदा॥

२७
बनरा अजब तरेसों आया।
सिर सोहे पचरङ्गी चीरा बनरा के मन भाया॥

२८
अबतूं जोगी भेषले जग जीवन थोड़ा यारारे।
सीख मानले सदारङ्गकी बहोत कियाहे वखेरारे॥

२९
हां हां हा हां बावरी कैसे डालेगी साज।
म्हारे आगन नीवड़ीरे ता चढ़ बोले काग उड
उड काग सुलच्छणा पिय घर आवे आज॥

३०
में वारीयांवो मैनु तैंडी याद।
ढूंढ़दी फिरदी मिलदा भी नाहीं किसनु करां
फिरियाद॥

घूंघट में मजा मारणी मारणी सालू वालणी ।
सालु वालो बुकड़े वालो अनवठ विछुवा वालणी ॥

३२

जिन्दुड़ो दा साहव वेलुरे ।
प्रेम दिवाणि कोई नहीं संग माथो जब जिंद
चले अकलौर ॥

३३

झनक झुनक मेरो पायल बाजे विछुवा छुम
छननन साजे ।
सेज चढ़त मोरो झांझन हाले मास ननदको लाजे ॥

३४

तेरे माथे दुशाला लालरे बहोत दिनन पर मोरे
पिया आइलो गरवा हो फुलवनको माल ।
हाथोयां चढ कर पिया मोरा आइलो गरवा हो
मोतियन को माल ॥

३५

भँवर कहूं वेलड़ीयाँ वस कोनोरे काहु बागको ।
उन वेलड़ीया फुलो कलियाँ अतहो सुहागको ॥

३६

गोरी तोरे अँगियामें फूला फुलावांसरे ।
मैंने बुलाया तू क्यो न आया अरे मोरा मानले
घुंघटके पासरे ॥

३७

सुन सुनरे सइयाँ मोरे मैं परहों पइयाँ तोरे
परदेशवा जिन गवन करो ।
इतनो विनती महम्मदसा पिय सदारङ्गनि रमको
बतोयां छतीयां विरह दरो विदेशवा पग डग
जिन धरो ॥

३८

सुघर सुन्दरवा वालमुवारे मोको देहो
पायलिया घड़ाय ।
झनक मनक नेवरियाँ बोले विछुवनको झनकार
सदारङ्गीले महम्मदसा पिय रहम रहस गर लाय ॥

३९

अबतो सुनले वनके पपीहा तू पिउ पिउ
पिउ पिउ जिन बोलो ।
सदारङ्ग पिया पातो न पठाई काय रहे अज होलो ॥

४०

अबतो सुनले वनके कगवारे मगवा ।
अगवा आवे पियरवा उठ उड़ जावो अटरवा ॥

४१

आज श्यामसुन्दरवा चितके हरवा सुघर चतुरवा
मनकेभवनवा आवे ।
उन विन कछन माहावे न भावे घरो पल छिन
मोको विरह सतावे ॥
काग उड़ावत वहोयां थक गई निश दिन जुग मम
सेज न चढावे ।
सदारङ्ग भरे कान मनकवा वेग दरसवा दिखावे ॥

४२

अरे मोरे मनके मोतरे मोरे मोत पियरवारे कामन
कहिए दुखवा जाय ।
सदारङ्गीले महम्मदसा पिय जब आवें तब मिलोंगी
धाय ॥

मुलतानी—धीमा तिताला

उन विन मोको कलन परत है सुनरो मोरी
माय घरो पल छिन जुग मम वीतत हैं धरहों
उनके पाय ।
सदारङ्ग विन कछन सुहावे नाहिन भावे मोको
सजनी कैसे रजनी विहाय ॥

मुलतानी—तिताला

तारे दानि तुम ननन दिरना तदोयनरे तदोयनरे
तारदानी ।
यललायलललुमलुमलुमयलायलायललननेनाद्रद्र
तुंद्रद्रतंद्रतनदिरना ॥

२

हरवा गरवा डारुंगी मा जब पिया अइहैं मोर
मन्दिरवा करिहों सोलह सिङ्गरवा ।

जब पइहों मैं पीतम प्यारे सदारङ्गीले छबीले
सुन्दरवा घर पाइन मङ्गल अन्दरवा ॥

३

की करे गुमानी जाँदावे मीया कुकन सकदी
झरदी लोकों तलफ तलफ जिय जान्दा ।
हाल हकीकत माल विर वनु इगकदी रहो
पीहो चान्दा ॥

४

राझण मैंड़ा मिलिया मीया हो की करो रव करो
एसो पावदी गलां ।
सदारङ्ग दी गलां अति सर वर कोतो आगक नु
मिल देनी भला ॥

५

रे मन काहेकों फिरत भ्रम भूल ।
या घटमें है हरिका वासा आनन्द मूरत मूल ॥

६

तुम सङ्ग लाग्यो नेह मितवा जोवना मैं कैसेके दुराऊं
तुमही हमारे वारी हमही तुमारे सदारङ्ग मन
भाऊं ॥

७

सजन मन मोरो प्रीत लागिलो वाहीके देश जाऊंगी
यह दुखवा मैं कासे कहूं पियके चरण रां पाऊंगी ॥

८

सुघर सोनार वाको छोहरा रे मोको देहो
गहनवा घढ़ ।
पहरतही दिन दिन बढ़े सुहाग भाग कौन
सव्व पढ़ ॥

९

लङ्गरीया तोरे सइयां अन बोलना तूक्यों नैना लगावे
हां मोरे ललना जाके पिया परदेश रहतहैं सो
कैसे दिन जावे ॥

१०

एरी मेरो प्यारो आयो नाहीं मोरे घरवा ।
पायन परहूं दूजे डारहों गले हरवा ॥

तेरे नैना आलोरो पियाको मन बौराग्रो ।
काहू सोतन सों बात करत नहीं वह आनन नाहें
भायो ॥

१२

सखीरो पीको पीत अनोखो देखो ।
औरनसों पिय हँसत बोलत हैं हमसों करत है
बतीयां तीखो ॥

१३

सइयां वो मोरा बहीयां मरोरोरे लड़ तोड़ोरे ।
कौन गाँवको ढीट लङ्गरवा कौन गावको रोत प्रीत
करो वरजोरोरे ॥

१४

मैंनो तेंड नामदी वारो वारो जादिया भलावे
सजन साइयां ।
जीवन तेंड़ा चाहोदा विगाणा जोते रहो जग माहीयां ॥

१५

जानो तोरो चितवन मोहो विसरत नाहीं ।
तीखे नैन कजरारे कारे चुभत मनमें ए टोऊ
देखे एसे ना काहीं ॥

१६

अणो कोई देशो वैरावल देशो ।
दासो दासो वारो रावल दासो कौन करे गला दासो ॥

१७

सइयां मोरे माधुरी मूरत मन बसोरो ।
सांवली मूरत रस भरा अँखिया कुण्डल कान लसोरो ॥

१८

तेंडर घोल घतो तानु राहत कादो ठाड़ो आन ।
दोगलां अदारङ्ग तुसो मान ले तेनु खादो असान ॥

१९

सजना दे नालवे माड़ो जिन्द लगो वेमोया ।
याद लगो असानु सहीं दवाई दे दे तूसानू
हावेख मिलावे को कर वेखा वेमोया ॥

दानव चतुरङ्ग दल भाजे ए चण्डिके जबहीं
कोपि खड्ग लै सिन्ध चढ़ी चलत धाय।
ससससगगमपधधपमगगरेसानिधनिधपमगगरेसासारे
रेगममपधधनिनिधधपपमगगगरेरेसा॥
नादर दिरतादी तदारे ततदानिद्रियानारेद्रियानारे
तदारे तदारे नादर दरतोम् दरदरतियाइयातक
धिलाङ्गतक्धा।
धाकिटतक् धुमकिटतक् धित्ताकटतक्दिगदिधाधा
कड़ां कड़ांतक्तरिकिटतकतकुकुभंकतकुकुभङ्गकिण
किणथों गथों गतकतकोटधातकिटनगदिधा।
नवलकिशोर लहो आनन्द सुख मन वाञ्छित
तुव सुयश गाय॥

२१

मेरा बनवारीजी से मेरा मन लागारे।
सोवत जागत विहरत निश दिन तन मन धन रस
पागारे।
आठ पहर और चौसठ घड़ियां हरि हरि लौ लागारे।
कृष्णानन्द आनन्दमें रङ्ग रङ्गे चरणकमल अनुरागारे॥

२२

कान्हर कान्ह करनहो ढिटाई।
आय रोकत पनघट बरबस मोहे देहो नन्द दुहाई॥

२३

एसे कान्हर कहूं नाहीं देखे।
जहां तहां जित तित इत उत चितवत रोकत
नाहीं विवेके॥

२४

मो मन भाएरीमा कान्ह कन्हैया प्यारा।
रैन दिना मन चाहे उनको कबहूं न कीजे न्यारा॥

२५

मृगनैनी राम मड़ा बस कर डारारे।
निरखो भौहे बांकी चितवन नैन कटाक्षन सों मारारे॥

२६

ढोलण मैंडे घर आमोवे सोणा तोभी मैंनेडे
सदके सदके सदके जावां।
रत देहा मैंनु औरन भादा साडड़े और असोम न
चान्दा घोल घुमाइयां जिन्द कदड़कोतो रांझण नु
मो किस विध पावां॥

२७

सुनरे अब मोरे पातकवा इतनो विनतो तोमे
करतहूं सइयांको खबरियां लादेरे।
कहत रजामों विनतो लिख दूजो तू वाको जादेरे॥
मनमोहनकी आन मिलादे जो चाहमो पाना देरे॥
झगवा देहों पगवा देहों और गरेको हरवारे।
जो मेरे पियको वेग मिलावे जोमन इच्छा तू पावेरे॥

२८

गरवा हरवा डा रेंगो मा जो पिय आवे मोरे आङ्गनवा।
चतुर सुघर बालमुवा मोरा कवन देश रहिलवा॥
सदारङ्ग कोई जाय सुनावे उनके कान भनकवा॥

२९

सोतनके मनमें एसो विधना चढ़ आवे मन अब जानो।
तुम हमको विसरायके बैठे किस विध मिलना होय
अजीज दिन उमग जातहै जोवना और बह्यो जात
है पानो॥

३०

दाग तिले दाग तिले तुंद्रतनादारातिलेधितिलि
नितिलिल्लिलेद्रद्रनिलेतारदानि।
द्रद्रद्रद्रतुंद्रतनानारेतारेतदेतनातुम्राधेतलांधुमकिटि
तकधित्ता धादा०॥

३१

दोम दाग तिल्ल तानादिल्ले दाना दारादोमदोम्
नाद्रतुंद्रदरादरादोमतनातदानि।
नारेतारेतटदानिधितिलितिल्लानिनारेतुंद्रतनातदरेतारे
तारेतारेदानि॥

३२

यललोयललुमयल्लायल्लालेयललोयलललल्लोयललल
ललल्लुमल्ललुमरलललुं यालल्लाल्ले।

तिललतिलनतिलतिललललेतललरललरलरलरलर
ललेरालरालउललरललंरलारलायललललललले ॥

३३

तनदेरे२ मनदेरे तन तारणनाथ मन देरे ।
धन धन तेरे तन मन नैन नैननाथ मन देरे ॥
नादरदर नादरदरदरदरतरतरतरतर तन मन मत देरे ।
राम राम ररररररररररतन मन दे मन तन देरे ॥

३४

आहेआहेवाद्रदतिन्ना दारादोमृतनंतनतिन्नातारंदानि ।
तिन्नातुंद्रदिन्नादारादारादोमतिन्नानायललल्लो
यलल्लोयलयाललल्लेनारंदानि ॥

३५

तूं तन मन सों राम लेले ररंर नररे मन मेरी
कह्यो तू मान ।
दर दर भटकत काहे फिरतहै रररररहरि हर नाम
तनदे मनदे धनदे नारायण तूं मान ॥

मूलतानी—एकताला

तोरे परिहों पइयां बछियां मोरी छांड़दे कन्हैया ।
सुन पावें मोरी सास ननदोया करिहैं शोर चवैया ॥

२

याहू दिन गनत गई घड़ी आवत किधौं भई
आधीराती ।
मगरे जोवत सांझ भईहै कर राखूं दियरा न बाती ॥

३

गई गईरी मुरली राधे आज तेरे सङ्ग या मगमें ।
काहे बजाऊं श्यामा काहे गाऊं बंशी विन कल न
पल न दृगमें ॥

४

कैसो तोवा ना कर यार कैसो तोवा पढ़लें अस्तफार ।
कके पक्के करे सवाएरे बड़ीया देले खिलाए जोवन
मीयाँ फकीर रवाणा यही कहे करतार ॥

मूलतानी धनाश्री—एकताला

मन्दिलरा तू बाजरे बाजु मन्दिलरा सब सहेली
मिल वरण वरण वसन साज ।
सात सखी मिल देहो मुबारकी महम्मदसा घर काज॥

मूलतानी—एकताला

वे मीयाँ जब मैनु दरस वेखा अमो तेड़े वेखणदे
मुस्ताक ।
अदारङ्ग दे नाल मिलले मीयाँ करदार बाद जवाव ॥

२

हरगिज नहीं छूटे वागे दिल फसा हुवा मीया
मुझे नसोहत न कर वेफायदा ।
दिलकी मेरे मौलाही जाने इस बन्दगी का यही
कामदा ॥

३

नैनन में आन बान अब कौनसी परीरे ।
निश दिन सोवत पलकन खोलत जब देखूं सूरत
श्याम की खरीरे ।

४

सुन्दरीया नगीने की गई गईरे वालम तेरी सेज ।
सुन्दरी की सुन्दरी गईरे अरे वोती गईरे कगनवा
की कोल ॥

५

मेरा मीयां बड़ा गरीवनिवाज ।
करम रहम सों जगमें राखले पैदा किए की लाज ॥

६

एरी होंनी प्रीत न करिहों काहू सङ्ग दुख दिवैया
मिलेरी ।
रस बतियां कर मन मोह लीनो बीचही छाड़ चलेरी ।

७

सुन मैंड़ा मीया वे पैदा किए की लाज ।
पैदा किया की लाज तू सानु बांह गहेकी लाज ॥

८

नित कहूं तो भलो बुरो लागे आली मेरी बात को
हिए ही न लावे ।
मूरख याको बातमें कछून मवाद योंही अकारण
मान बढ़ावै ॥

मूलतानी—तिताला

आज अचानक सखीने जगाईरी आन कैसी कही
काननरे बोलाईरी ।

सुन्दर बचन सुन्यो तिहारे मुखनकों सुन कर
आनन्द उरन ममाईरी ॥
सासु को सकोच लगे ननदी को डर मोहे छानो
अँधेरोमें छिप कर आईरी ।
श्यामसुन्दर मनमोहन निरखत शरण चरणकमलन
सुख पाईरी ॥

२

धन धन राग धनाश्री धन धन गोकुल गाम ।
धन धन नन्द यशोमति जहां प्रगटे सुन्दरश्याम ॥

३

श्याम मिले तो वृन्दावन जाऊंरे ।
तनकी तपत मेरी तबही बुझिगो नाथ निरखिके में
अति सुख पाऊंरे ॥

४

जाजारे बटोइया में बहोत दुख पायो तेरो वाटरे ।
जबतें गए मोरो सुधहू न लीनी सोतन कीनो घातरे ॥

५

मोरी गईरे नथुनिया को गुंज कंवे पर भोर भई ।
नयोरे दुलहैया नई पनिहारिन नए यार कौन हठई ॥
नयोरे कुवटा नई पनिहारिन नयो जोवन नयो रूप नई ॥

६

जाको मन अल्ला सङ्ग रहे जैसे पाछे पाछे फिरत नरद ।
वो कौन है चलो देखियो हजरत ख्वाजे मोर दरद ॥
जिन भूख प्यास मार राखा वो कहावत जगमें मरद ।
कबहूं होत है सुए बरण हो कबहूं होतहैं जरद ॥

मुलतानी— ताल सवारी

बसर केरे मोताया तेंता मझातप कीनो ।
सुवरणके सङ्ग लायके अधरन को रस लीनो ॥

२

अरे बोरा खिवटोया रे तू मोहि पार उतार ।
बोरा दूंगी पानको और गरे को हार ॥

३

सो घरे अरे मैं सुरजन पाइला रावरे ।
शेख फरीद दीन जाके निजामदीन धन धन भावते
मोहे चावरे

मोरे पियकी खबर सुनाव अरे बमना ।
सगुन विचारो पोथो बांचो मोतो थार भरदूं दछिना ॥

५

दुद्र तिल्ला दारा तिल्ला दारा तिल्ला दोमतानुम् ।
तकड़तकधिकिटधोटोकतानधोधोधाधोधाध्रकटतक
तकोटतकदिगनगधिटोतोटोत्रिगड़ाकोटतकदिग
तगकताधाताणधाधोधाधानाड़धागिदिगनधा ॥

मुलतानी—तिताला

फुलदरे मोरो बारो कोलो करूं रखवारो मात ।
फलबन बांस बसोलो तोरो वारो प्यारे और अतिहो
रसोलो चैत पिछलो रात मोपैं सवारो न जात ॥

मुलतानी—ताल सवारी

कमे के हु स्त कवि दोस्त हक नजर दारद ।
मोह हकीकस्त श्री हामिले बसर दारद ॥

२

बाट बटोइयारे मोरे पिया मन कहियो इतना
मन्देशवा बाहू देग रहे मन लाय ।
तुम विन दुबर भइलो मोरे नाहा कैसे कटे
रतियां कैसे करूं बनियां बाहूको ले आवो राखो
मन समझाय ॥

३

हॉरे गोरो लाल बुलावे ।
तूं काहे अनमनो भईरो उनने मान किए कछू
छाथन आवे ॥
जोतूं उनसे मान करत है मान किए पछिताव ।
जब इश्क रिझावेंगे उनशो तब काहूको कछू न
सुहावे ॥

४

आहे दोम् दारा तिलेतानुम्तनदिरतनदिरनातदिरना
तुम तारेदानि ।
खलकमें गोयद के खुसरो वुत परस्तो मे कुनद
आरे आरे मै कुनवा खलके आलम नेस्त कार ॥

मुलतानी—ताल बरवा फरोदस्त

तुम विन चैन परे नहीं मोकों कैसे रहे वल जाई ।
सूनो भवन अकेलो पल पल जीया घटतहै मेरो
वल्लम जिन गवन करई ॥

मुलतानी—ताल सवारी

बांस केरो वंसोया तेंतो कौन व्रत कोनो ।
मोहनमुख लागके अधरनको रस लीनो ॥
तिननोनातोनूनोनाकतकि धींधींनाधींधींनाधातकड़
धाधोनागदिम्नागतुन्ना ॥

२

मोहन सुन्दरश्याम पिया मो घर आइलो ।
गावो बजावो रिझावो नचावो गुणोजन मङ्गल
गाइलो ॥

मुलतानी धनाश्री—तिताला

अजी म्हारा माधोजी हो थांरो गत जाय न जानो ।
मारण कारण चलो पूतना आंचर जहर लगानो ॥
ताको गत माताको दोनो निज वैकुण्ठ पठानो ।
सतयुगमें एक हरिचन्द राजा बोले सत्यको वानो ॥
ताको एसो निर्धन कोनो भरे नीच घर पानो ।
कोटिन गऊ नित दान जो देतो नृगराजा सो दानो ॥
सोतो किरड कूप में डास्यो थांरो अदभुत वानो ।
बड़े बड़े राजनको बेटो जिनको जोग दृढ़ानो ॥
एक कुवज्या दूजो कंसको दासो ताहे करो पटरानो ।
पांचो पांडव अधिक सनेहो गले हिमालय पानो ॥
दुर्योधन वैकुण्ठ जान कों सो राजा अभिमानो ।
बल राजा वैकुण्ठ जान कों तापर रचना उठानो ।
ताकों तो पताल पठाए आप भए दरवानो ।
जो जाके मन उपजो कामना सो मन माहीं दृढ़ानो ॥
करत राईको पर्वत पर्वत राई करे करता
अकरता दानो ।
जो जाके मन उपजो कामना सो ताहे दिर ठानो ॥
विजय करा जयपुरे मन आनन्द सो तलपूरे रुच मानो ।
परमानन्द सोई भागवत इच्छा सों रचो विधाता आनो ॥

जे नर राम राम रट लावे ।
अंतहु मरन सुध होय ताको बहुरि जनम नहीं आवे ॥
करे सेवा गुरु सिद्ध साधको सुर दुर्लभ पद पावे ।
छविनायक ता जनको महिमा वेद पुराणहु गावे ॥

३

जेवत सोय रघुवर एक सङ्ग ।
गावत गारो आनन्द भारो उबटन तान तरङ्ग ॥
वागो पहर रच्यो मुख वीड़ा आभूषण अङ्गअङ्ग ।
छविनायक पर कृपा कीजे दीजे भक्ति अभङ्ग ॥

४

जा दिन साधुचरण चले आवत ।
तादिन भाग उदै युग युगके मुख देखत प्रगटावत ॥
जाके पद पङ्कजके आगे चार पदारथ ध्यावत ।
अष्टसिद्ध नवनिद्ध सम्पदा सुखसमूह ग्रह छावत ॥
भक्ति मुक्ति आंगनमें डोलत पुलकि प्रभाव बढ़ावत ।
दरस सुफलको अवध जगतमें वेद पुराणन गावत ॥
गङ्गादिक तीरथ अवगाहन अवलोकत फल पावत ।
अगणित कलुष कलेश धरे उर विन श्रमसद्य नसावत ॥
तीनलोक दशचारभुवनके सुकृत सलिल अन्हावत ।
दुख दरिद्र दीनता मलिनता दूरि दुखदो बहावत ॥
इह फल सरिस आन नहीं त्रिभुवन कोटि युग
सकुचावत ।
सुरतरु कामधेनु चिन्तामणि यह अनुचर सङ्ग ल्यावत ॥
जाके पदको रैन सुअञ्जन हितकर नैन लगावत ।
दूर करत भ्रम तिमिर लोकको अनुभव अलख
लखावत ॥
कहांलो करूं सन्तको महिमा कविकुलबुध लजावत ।
लछमणदास दयाकर जगमें हरिजन हरिहि मिलावत ॥

मुलतानी—तिताला

क्यों छैला म्हारो आनके रुकाई बाट जमुनाघाट ।
करेंगो चवाव मोरी पाड़ पड़ोसन सास ननदको नाट ॥

निडर हठीली नन्दमहरकी लोक लाज दई छोड़ गाँठ।
सरस रङ्ग रस दृग उरझानी प्रेम प्रीतकी डाट ॥

२

मुरलीया बाजे मोह भरी अति धुन सुन कलन परे।
अधर सुधा वरषत आली मो तन अति अनुराग भरे॥
दौर दौर कुञ्जन कों जोए देखत नैन ढरे।
नैक चित मनहरत छवीलो सरस रङ्ग रसकरे ॥

मूलतानी—धनाश्री तिताला।

ऊधो गिरिधारीजी सों जाय कहीरे।
विन देखे कल परत न छिन घरी व्रजही आन रहोरे॥
यह वृन्दावन यह कुञ्जलता रास केल मन मान गहोरे।
सूरश्याम कछू नाहिन भावै विरहिनी डूवत बांह गहोरे ॥

मूलतानी—चौताला

मेरे गिरिधारीजी सों काहू कों लरी।
चलरी मैया में तोहि बताऊं जो मोसे झगरी ॥
मेरे गिरिधरके चरणकमल पर वार डारों सगरी।
गोरेसे गात लीलाम्बर पहरे चितवत चपल खरी ॥
तूं तरुणी गिरिधर मेरे बालक कैसेके भुज पकरी।
गिरिधर रोवत असुअन भर भर तू मुसक्यात खरी ॥
गोरीसी भोरी थोरे दिननकी चितवन वस जो करी।
सूरदास प्रभुकी लीला व्रजमें नित नईरी ॥

मूलतानी—तिताला

आछे मेरे ललनाहो एसो अड़न कीजे।
मधुरमेवा पकवान मिठाई जोई भावे सो लीजे ॥
दधि माखन सादो दही वलि मीठा पय पीजे।
कमलनयन जक जिनि करो सो खोजत तन छीजे ॥
सूरश्याम इनके कहे मोपे माँगी सो चन्द कहा दीजे

महाबल कीनो हो व्रजनाथ।
इत मुरली उत गोपीनसों छत उत श्रीगोवर्द्धन हाथ ॥
इत बालक पय पान करतहै उत सुरभी तृण खात।
उत सब बच्छ चरत अपने रङ्ग ग्वाल बजावत पात ॥
कोप्यो इन्द्र महाप्रलयको झरलायो दिन सात।
परमानन्द राख लीनो गोकुल मेटी इन्द्रकी घात ॥

३

केते दिन है जू गए विन देखे।
तरुणकिशोर रसिक नन्दनन्दन कछुक उठत मुख रेखे।
वह चितवन वह हास मनोहर वह वानिक नट भेषे॥

४

भावै तोहि तोड को घनो।
काटे घनें गोखरू डूवे फाटो जात टनो ॥
सिंघ कहा लोखरी को डर एसो ग्रानक बनो।
कुम्भनदास लाल गिरिधर विन कौन रांड़को जनो ॥

मूलतानी धनाश्री - तिताल:

मेरी सुध लीजो हो व्रजराज।
और नहीं जगमें कोउ मेरो तुमही सुधारन काज ॥
गणिका गीध अजामिल तारे औ शिवरी गजराज।
सूर पतित तुम पतित पावन हो वांह गहेकी लाज॥

२

नरसिंह महाप्रभु आरोग।
छप्पन भोग छतीसो व्यंजन नाना विधके भोग ॥
लक्ष्मी भोजन आप सुधारे मनमें बढ़ोत आनन्द।
पनवारो नारद मुनि ल्याए जल भर ल्याई गङ्ग ॥
भाव प्रीति कर भोजन कीजे तुम मेरे प्राण आधार।
अन्तर घटके अन्तरजामी सब विध जानन हार ॥
आरती साज इन्द्र ले आयो खोल दिए पट चोर।
सनक सनन्दन चंवर ढुरावें प्रह्लाद भक्त है तोर ॥
गावत सूरदास यह लीला निजजन हरि भय भोर ॥

३

दूर खेलन जिनि जाओ लालन मेरे हाऊ आयो है।
हाऊ मोहि बताय मैया मोरी हाऊ कैसोहै ॥
तब हँसि बोली कान्हकी माता इनको किने पढ़ायोहै।
जमुनाके तट धेनु चरावत जहाँ सघन बन जाऊं ॥
पैठि पताल कालो नाग नाथ्यो तहाँ न देखे हाऊ।
अब डरपत सुनि सुनि यह बातें कहत हँसत वलदाऊ ॥

सप्त रसातल शेषासन रहे तबकी सुरत भुलाऊं ।
चार वेद ले गयो शंखासुर जलमें रह्यो लुकाऊ ॥
मीन रूप धरिकै जब मार्‍यो तब रह्यो कहां हाऊ ।
मथि समुद्र सुर असुरनके हित मन्दिर जल
विष माऊ ॥
कमठ रूप धरि धरणी पीठ पर सुख पायो सुरराऊ ।
मान समुद्र कियो मटुकिया मेरु कियो प्रवाहू ॥
वासुकी नागको नेती कियो है तोउन देखे हाऊ ।
जब हिरण्याक्ष युद्ध अभिलाष्यो मनमें अति गरभाऊ ।
धरि वाराह रूप रिपु मार्‍यो लै छिति दन्त अग्राऊ ।
विकट रूप अवतार धर्‍यो जब सो प्रह्लाद बचाऊ ॥
धरि नृसिंह जब असुर विदार्‍यो तहां न देख्यो हाऊ ।
बामन रूप धरो बलि छल कर तीन पैंड़ वसुधाऊं ॥
श्रमजल ब्रह्म कमंडल राख्यो दरस चरण परसाऊं ।
मार्‍यो मुनि विनहीं अपराधं कामधेनु लैआऊ ॥
ईकईस बार करी निक्षत्रि छिति तहां न देखो हाऊं ।
राम रूप है रावण मारो दशशिर बीस भुजाऊ ॥
लंका जराय क्षार जब कीनो तहां न हाऊ ।
माटीके मिस वदनन विकार्‍यो जब जननी डर पाऊं ॥
मुख भीतर त्रइलोक दिखायो तोऊ प्रतीत न आऊ ।
नृपति भीमसों युद्ध परस्पर तब यह भाव बनाऊ ॥
तुरत चीर युग टूंक जो कियो धरो एसे त्रिभुवनराऊ ।
भक्त हेत अवतार धर्‍यो अब असुरन मार बहाऊं ॥
सूरदास प्रभु की यह लीला निगम नेत कहि गाऊं ।
कैसो है दूरि खेलन जिनि जाऊ लालन मेरे हाऊ ॥

मुलतानी ताल धमार

गोपाल माई खेलतहैं चौगान ।
लड़का सङ्ग गोकुलके लीने वृन्दावनमें दान ॥
चञ्चल पात नचावत आवत होड़ लगावत पान ।
सबही तन हस्तन चलावत कहत बबाको आन ॥
करत आनन्द निशंक महाबल हरत नृपन को मान ।
परमानन्द दास को ठाकुर गुण अगरो निधान ॥

मुलतानी धनाश्री तिताला

सखा चित चोर नयनकी कोर ।
लाज गई घूंघट पट बिसर्‍यो तज चितए इहि ओर ।
वे सखी सिंघद्वारे नित ठाड़ो लौंखरिक उठो चली भोर ॥
देके सैन मैन रस भारो नागर नन्दकिशोर ।
कमल मीन मृग खञ्जन दे न उपमा को जोर ॥
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर मुख विधु मेरी अंखिया
भई हैं चकोर ।

२

गोपाल माई खेलत हैं चक डोर ।
लड़का सात पचास सङ्ग लीने निपट सांकरी खोर ॥
चढ़ि धौ राह झरोखा झांकत कुँवर हंसत
मुख मोर ।
सुहाई रहे वलैया लीनो कर अञ्चरको छोर ॥
चार नैन भए जब सनमुख सखी लिए चितचोर ।
परमानन्द स्वामी सुखसागर चित लई रति जोर ॥

मुलतानी—तिताला

मोहन लाल के रङ्ग राची ।
मेरे ख्याल परो जिन कोऊ बात दशों दिश माची ॥
कंत अनन्त करो जो कोऊ बात कहीं सुन साची ।
यह जिय जाऊं भले शिर ऊपर मणि कञ्चन
जो पाची ।
श्रीहित-हरिवंश डरों काके डर हौं नाहिन मत
काची ॥

२

रोम रोम रसना जो होती तऊ तोरे गुणन बखाने
न जात
कहा कहों एक जीभ सखीरी बातको बात ॥
भान अमित और शशिहू अमित भए औ
युवतिनको जात ।
हरिदासके स्वामी श्याम कुञ्जविहारी कहत प्यारी
तू राखती प्राणजात ॥

तेरो मन गिरिधर विना न रहैगो ।
बोलैंगी मुरलीको धुन सुनि तुव तन मदन दहैगो ॥
जानोगी तब मानोगी आली प्रेम प्रवाह बहैगो ।
कुंभनदास गोवर्द्धनधर नित उठ कान कहैगो ॥

४

तातें नवधा भक्ति भलो ।
जिन जिन माधो तिन तिनको मति नेकु न
अनत चलो ॥
श्रवण परीक्षत नर राजऋषि कीर्तन करो शुकदेव ।
सुमरण करि प्रह्लाद निर्भय भयो कमला हरिपद सेव ॥
अर्च्चन प्रथु बन्दन सुफलत सूतदास भाव हनुमान ।
सखा भाव अर्जुन वस कीन श्रीपति श्रीभगवान ॥
बलि आतमा समर्पण कीनो हरि राखे अपने पास ।
अति मति प्रेम बढ्यो गोपाल सों बलि परमानन्द दास ॥

५

गोपाल माई नीके फिरावत अंगो ।
भीतर भवन भरे बहु बालक नानाविध बहुरङ्गो ॥
सेह सुभाव डोर खेंचत है लेत उठाय कर सङ्गो ।
कबहूंक डार देत भुव ऊपर कबहूं बजावत जङ्गो ॥
कबहूं करले श्रवण सुनावत उपजावत शब्द तरङ्गो ।
परमानन्द स्वामी मनमोहन खेल चलो सर कङ्गो ॥

६

पनघटवा जान नाहीं पाऊंमें ।
बीचहो नाच नचावत मोहन कैसे जल भर ल्याऊंमें ॥
जो कहिये काहू सों यह गत तो कुल लाज लजाऊंमें ।
नित जुगराज यही मग जैवो कौलों रार बचाऊंमें ।

७

प्रभुजी दीन वचन प्रतिपालो ।
भक्त हेत खंभतें प्रगटे नृसिंहरूप जो धारो ॥
जै जै कार भयो त्रिभुवनमें हिरणाकुश नख उदर
विदारो
हरिदास प्रभु तुम चिरजीयो सब सन्तनको ताप-
निवारो ॥

आली माहि छल गयो छलवा नन्दको कुमार ।
पीत पिछौरी काछनी काछे गल गुञ्जनको हार ॥
प्रीत लगाय करकीने वस नेकन लागी अवार ।
या व्रजनिधकी प्रीत कपटकी भई मारे अङ्गपार ॥

मुलतानी धनाश्री तिताला

मो मेरो मन लेगयो ।
डार ठगोरी वंशीमें कछू मदनमन्त्र पढ़के गयो ॥
प्रीत अटपटी लागी चटपटी चेटक सो चित है गयो ।
वा व्रजनिधकी प्रीत कपटकी लपट झपट दुख
दे गयो ॥

२

पतितपावन प्रभु करुणासिन्धु ऐसो तुम पर वारीवा
विहारीज ।
गणिका गीध अजामिल हस्ती गौतमनारी शिला
तारीजू ॥
तारे पतित अनेक एक तुम अधमउधारण हो
व्रतधारीज ।
ज्ञानकीदास पतितशरण आयो अबकी बार
हमारीज ॥

३

बाजी बाजीरे मोहन तेरी बांसरी ।
सप्त सुरन और तान ग्राम सों गावत राग धनाश्री ॥
श्रवण सुनत सुध रहत न तनकी उठत हूक जैसे पांसरी ।
ज्ञानकीदास मिल हो हरि प्रिय सों कोउ करो क्यान
हांसरी ॥

४

एरी तेरो कौन जाति पनिहारी ।
इत गोकुल उत मथुरा नगरी बीच मिले गिरिधारी ॥
सुन्दरवदन नयनमृग मानो विधाना आप सम्बारी ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर तुम जाते हम हारी ॥

मैनो नेड़े वेखन दो रहंदो मुस्ताक ऐनु तो तेड़ो
तलाक ।

सुन मोहन जेड़ा पंथ निहारत अँखियां भई हैं हलाक ॥
रैन दिन मेनु पल न परत है सहन्दो विरहदो आंच ।
विश्वदास तेड़ा वरदा कहांदा घरो घरा कहांदा भाग्व ॥

७

हमरो तुमको लाज हरि ।
जानत हो हरि अन्तरयामी जो जिय माझ परी ॥
कहै और कछु और कमायो प्रभुजो मों ठगनो करी
अतिप्रपञ्च की मोट बांधके अपने शोश धरी ॥
अपनो आगुण आछोंलो बखानो पल पल घरी घरी ।
सुत वनिता सङ्ग लग लिया है सुध बुध सब विसरी ।
लीजे पार उतार दीनबन्धु अब मेरी नाव भरी ।
कहै नानक अति विरद तिहारो हरि बांह आर पकरी ॥

८

एसो जिनि बोलहु नन्दके लाल ।
बार बार मैं तुम्हें कहत परोहीं फिरि जञ्जाल ॥
छोड़ि देहु अचरा मेरो नोके जानत वैसी बाल ।
यौवन रूप देखि ललचाने अबहीं तें यह ख्याल ॥
तरुणाई तन आवन दीजे कत जिय होत विहाल ।
सूरश्याम उर्ते कर टारहु टूटहिंगे मोतिन माल ॥

९

गिरिवर धर्यो आपने घरको ।
ताहो केवल दान लेत हो राकि रहत हमको ॥
अपनेहो मुख बड़े कहावत हमहूं जानत तुमको ।
एह जानत पुनि गाय चरावन नित प्रति जात रहे हो वनको ॥
मोर मुकट मुरली पीताम्बर देखोयत नतिहो भूषणको ।
सूर कान्ह कामरी हीं जानत हाथ लकुटिया वरको ॥

१०

कह्यो शुक श्रीभागवत विचार ।
हरिकी भक्ति युग युग वर्त्तै आन धरम दिन चार ॥
चिन्ता तजो परीक्षित राजा सुनि सिख सारो हमार ।
कमलनयनकी लीला गावत मिट गए अनेक विकार ॥
खट्वाङ्ग दिलीप महुरत में तरे तुमरे दिन सात आधार ।
एक पलक में काज सुधारे एसे नन्दकुमार ॥
सत दिवस रहे हैं अवधिके सुनि राजा मति भार ।
सतयुग त्रेता तप कीनो द्वापर पूजा सार ॥
भजन करो विश्वास गहो दृढ़ छांड़ो संशय जार ।
एकहो ब्रह्म सकल घट व्यापक पूरण कलियुग अवतार ॥
कहां कहां शिवरीको महिमा ध्रुव प्रह्लादहो तार ।
अजामिल गज गणिका तारो आर अहल्यानार ॥
अष्टादश घट तान चार मिल नेति नेति फुकार ।
सूर भजन करि केवल काजे लज्जा कान निवार ॥

११

जो रस-रसिक कोर मुनि गायो ।
सो रस रटत रहत निशि वासर शेष सहस्र मुख पार न पायो ॥
गावत शिव शारद मुनि नारद कमलनयनको रस यश जो चखायो ।
यद्यपि रमा रहत चरणनि तर निगमनि अगम अगाध बतायो ॥
अरुणतनया तट वंशीवट निकट वृन्दावन विरमि रहायो ।
सो रसरसिक परमानन्द वृषभानुसुता कुच बीच ससायो ॥

१२

पीवो श्रीभागवत सुधारस ।
सावधान श्रवण पुट भरि भरि श्रीगोपाल विमल यश ॥
निगमकल्पतरुको फल परम मृदुल आनन्द लस ।
कठिन ज्ञान गुठली नाहीं जामें करम जाल को निपट नस ॥
अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष पद प्रेम भक्तिको कनक कस ।
काम क्रोध मद लोभ गलित भये सन्त शिरोमणि सर्वस ॥
परमहंस कुल भूषण श्रीशुकवदन-कमल तें पस्यो खस।

खान पान तजि रसिक परोचित पीवत कियो नहीं
आलस ॥
सोई अब प्रगट विराजत भू पर कियो अमृत को
उपहस ।
कहे हरिदास परम यह सुन्दर जो न पीवै सो
महा पस ॥

८

धन्य शुक मुनि भागवत वखान्यों ।
गुरुकी कृपा भई जब पूरण तब रसना कहि गान्यो ॥
धन्य श्याम वृन्दावनको सुख सन्त मया तें जान्यो ।
ज्यों रस रास मङ्ग हरि कीनो वेद नहीं ठहरान्यो ॥
सुर नर मुनि मोहत सब कीनो शिवहि समाधि
भुलान्यो ।
सूरदास तहां नैन बसाए और न कहूं पतिआन्यो ॥

९

व्यास श्रवणको करो प्रणाम ।
जाको नेह सब पुराणनके जीवन प्रगट कियो
भागवत पीवत रस श्रवणन भर भर होत भक्तिनके
पूरण काम ।
मोचन दुख दारिद्र हरत है सुर नर मुनि गावै
गुण गान ॥

१०

नमो नमो श्रीभागवत पुराण ।
महा तिमिर अज्ञान बढ़ो जब प्रगट भयो जग
अदभुत भान ॥
जग जीव निशि सोई अविद्या भयो प्रकाश
विमल विज्ञान ।
फूले अम्बुज श्रोता वक्ता मति गो मन्द मदन
अभिमान ॥
छूटे कठिन करम बन्धनतें मिथ्यो मोह सूझे
सब स्थान ।
दामोदर सुर नर मुनि गावत जैं जैं जैं
श्री कृपानिधान ॥

हमारे धन सरवस भगवतगीता ।
गाय गाय रसना को लड़ाऊं हरिजन हरिरस पीता ॥
श्रीमुखवचन सुनत कुन्ती सुन मन आई परतीता ।
या गीता के पराक्रम सों दुर्योधनदल जीता ॥
जो नर गीता पाठ करत है जगमें रहे न चिन्ता ।
जिनकों कहा मुक्ति को संसार तारे कुटम सहिता ॥
तीन लोक और भवन चतुरदश वेद पुराण मथलीता ।
हृषीकेश प्रभु अघमोचन सतगुरु दए पलीता ॥

१२

कौन बन बाजीहै बांसरीया कैसे रहों घर टैया ।
कलमलाय जियरा मिलवेकों कोहै धीर धरैया ॥
गाज पड़ो यह लाज पै निगोड़ी करहै कहा चवैया ।
अब आनन्दघन सों उघर मिलोंगी अब डर
करेगी बलैया ॥

१३

प्यारे विन भर आए दोऊ नैन ।
जबतें श्याम गवन कीनों गोकुल नाहीं परतरी चैन ॥
एकतो धाम अकेली डरतहों दूजे सतावत मोहि मैन ।
कहा करों कित जाऊं सखीरी चलन सकत
मग पैन ॥

१४

एरी मेरो नाहारो अति चतुर सुघरमें निपट
वेसको वार ।
हों वाके गुण जानत नाहीं अतिही ढीट गवांर ॥
ऊंचा गढ़ ग्वालियर कारे बीच कटोरा ताल ।
रानी खेले हैलु वारे राजा डारे जाल ॥
आठ कुवा नव बावरी रे सोलेहसो पनिहार ।
गोरी तिनिमें कौनसो वाला पनको यार ॥

१५

हरिप्रेमरस छके छके अजहूं न मन अघाए ।
विरह बावरी रहत निशदिन आनन्द उर न समाए ॥

सोवत जागत विहरत हरि हरि याहो पछि छन
चित लाए।
बैजू बावरे प्रभुकों ध्यावत और नहीं मन भाए ॥

मुलतानी - तिताला

पिया प्रेम रस छके छके अजहूं न आए मेरे गेह।
विरह खेलो तारी ना भई आलीगे प्राणपतिकें
यातें व्याकुल कीनो नेह ॥

२

सुहागन सुन्दरी नेक विलम वलि जाऊं।
नेक ठाढ़ी रह जाओ सुहागण सुन्दरी० ॥
कौन गांवके तुम वाट बटोई कौन तिहारो गाम।
कौन बडे भूप कहावत कहा कहियत है नाम ॥
कौन देश तेरो वास सखीरी कौन निहारो ठाम।
कौन कारण नंगे पांय फिरत हो काहे तज्यो है धाम ॥
कौन कारण वन वन विहरत हो उजर गहर गम्भीर।
उत्तर दिशा एक नगर अयोध्या बसे जो सरजू तीर ॥
बड़ेहैं भूप बड़े बहु राजा ए दोऊ सखो वीर।
कटि कसे धनुष कर दोऊ लिए सुन्दर दोहैं तीर ॥
मैं तोहे पूछूं बात सखीरी दोउ मृदु मूरत कौन।
कौन तिहारो नाथ मनोहर कौन अनुज सुख दोन ॥
पीताम्बर कटि पर मोहत है हाथ धनुष दोउ तीर।
गोरसे वदन सखो मोर देवरवा पिय मोर श्याम शरीर ॥
एरी एरी नार सुहाग ए सुन्दरी सब मिल पूछें धाए।
किस कारण तुम वन वन डोलत चलिहैं पिआदे पाय ॥
सासुको सौत पियाको सुहागन सन्तति पियहो पियार।
अपने सुतकों राज तिलक दियो हमकों देशनिकार ॥
इतना बचन जब सुनाहै सखोरी नैन न डारो नीर।
आजको रैन बसो ग्रह मेरे तुम सहित रघुवीर ॥
फिरतो वेर तुमरे अहेहों सखो चउदेवरस विताय।
वन वन फिरत रहत निशिवासर तज वन ग्राम न जाय ॥
तीन जने त्रईलोकके ठाकुर छाड़ चले सुख धाम।
तुलसीदास प्रभु रूप ठगी रही देख पथिक विश्राम ॥

सजनी हैं कोऊ राजकुमार।
पन्थ चलत मृदु पदकमलन पर रूप शील आगार ॥
आगे राजीवनैन श्यामतन शोभित अमित अपार।
डारूं वार अङ्ग अङ्गन प्रति कोटि कोटि शत मार ॥
युगल बीच सुकुमारनारि एक राजत विनहि शिङ्गार
इन्द्र नील हाट के मुक्तामणि जनु पहरे महि हार ॥
पाछे गौर किशोर मनोहर लोचन वदन उदार।
कटि तुनीर तीर वर कर धनु चले हरण छिति भार ॥
अवलोकहु भर नैन विकल जिन होह्र करहु
सोच विचार।
पुनि कहं यह शोभा कहां लोचन देह नेह संसार ॥
सुनि प्रिय वचन चितए हितकें रघुनाथ कृपा
सुख सार।
तुलसीदास प्रभु हरे सबनके मन तन रही नाही
सम्भार ॥

मुलतानी—धनाश्री तिताला

आली कहांके पथिक कहां कोनो रे गवन।
कौन गांव कौन ठांव के वासो किमि कारण तुम
तजेरे भवन ॥
उत्तर दिशा एक नगर अयोध्या नृप दशरथ वसे
देशरे तवन।
पिताके वचन सुनि वन कों सिधारे इमि कारण
हम तजोरे भवन ॥
सोता के वचन सुनि सखा पूछें पुनि पुनि दोयरे
पथिक पोव तेरो है कवन।
सीय मुसकाय बोलो मधुरो बन गोरे रे देवर
पिय सांवरे जवन ॥
पइयां लागूं वलिजाऊं सूरति पर कबहूंक एहो
मग करेंगे अवन।
तुलसी प्रभु विन गेह न भावे मेरो मन हर लीनो
जानकीरमन ॥

करम मति टारीहू न टरे ।
कहाँ वे राहु कहाँ वे रवि शशि आन संयोग परे ॥
गुरु वशिष्ठ मुनि अति ज्ञानी रच पच लगन धरे ।
दशरथ मरण हरण सीताको वन विपतमें विपत परे ॥
रावण जीत कोटि तेतीसो त्रिभुवन राज करे ।
द्रुपदसुताको राजसभामें दुशासन चीर हरे ॥
पाण्डवके हरि हते सारथी तेहुजो बन निकरे ।
हरिचन्दसो को जगदाता सो घर नीच भरे ॥
दुरवासा सों श्राप दिवायो यदुकुल प्रलय करे ।
मित बांध कूप में राखे भावई के वस मरे ॥
कई लक्ष करोड़ गऊ दान जो दीनी नृग किरकिट
योनी परे ।
जोगी छांड़ देश बहु धावें ताहू सङ्ग फिरे ॥
भावी के वस तीनलोक हैं सुर नर देह धरे ।
सूरदास प्रभु लिखी सो ह्वै है काहेकों सोच करे ॥

इति श्रीमुलतानी धनाश्री भीमपलासी
रागिणी सम्पूर्णम् ।

धनाश्री- -चौताल

सुमरण हरिको करोरे जासों होवै भव पार ।
यह सीख जान मान कह्योहै पुराण में भगवान
आप करतार ॥
दीनबन्धु दयासिन्धु पतितपावन आनन्दकन्द
तोसे कहतहों पुकार ।
तानसेन कहे निरमल सदा रहिए नर देही नहीं
बार बार ॥

२

धन धन भाग सुहाग तेरो तूं पियके मन भाई ।
धन जोवन तेरोरी चतुर सुघरनारि जो पिय तेरी
करे मुख सों बड़ाई ॥
धन जनम जीतव धन तरुणताँई ते रस वस कर लिए
पिय सुखदाई ।
धन धन तानसेन प्रभुकों रिझाय लीनो तूँही
सबनमें देत दिखाई ॥

३

लाल मयाके बोलाई सोतन दुख पायो ।
जे मेरो हितू तिनके आनन्द भयो मृदङ्ग बजायो
मन भाए मङ्गल गायो ॥
पियाकी मया मोपे कहिन परत है सब तियन
छांड़ मेरे गृह आयो ।
तानसेन के प्रभु पलकन सों मग झारो जीवन
जनम सुफल करायो ॥

४

धन भाग मेरो धन आवन धन धन पात प्रेम भयो
मन दरस देखत इन अँखियन सोतन इन अङ्ग
सङ्गत विरह गयो टर ।
इन आनन्दन आनन्दो बांटो भईहों इन चरणन
रहन कहत गर वगर अगसर अगसर ॥
जनम जीतव सुफल सखो मदनमोहन मया कीनो
लीनो रस वस कर ।
तानसेन प्रभु सुखकंदैन नैनन सैन न हाव भाव
कटाक्षन सों मोह लीनो जब मिट्यो दुख डर ॥

५

नवरङ्गी अकबर शाह जलाल करिए हो निहाल
आएहो मेरे मया कर कर ।
तन मन धन नोछावर करौं आवन पर तपत
बुझावन और रङ्ग उपजावन पर वलमा हो इन
भांतिन जनम जनम के सब दुख गए सुख पायलीनो
अङ्कम भुज विसाल भर भर ॥

६

सुमरन ताको करो क्यों न जोहै सतार ।
यह सुनले कान और निहचे जान मान एक
पाकपरवरदिगार ॥

जोई जोई ध्यावे सोई मुराद पावे एसोहै गव्वार।
तानसेन कों दीजे अन धन लछमी यह माँगत
बार बार॥

७

मखदूम शेख अमर कागारोर और न्यामत भरपूर।
अष्ट सिद्ध नवसिद्ध देत सबन कों जै तुम गई है
बहोर॥
तेरी दरगाह तक आवें माँगि सोई पावें तेरा हो
रह्यो शोर।
इतनी अरज सुन लीजे तनतें दुख दूर कीजे यह
अरज करे नायक मोर॥

८

अरि कुरङ्गन जिमि भाजत फिरत वन वामके हरि
जब आवन जानत।
अत कार छल कर कारे जिम चिकारे जो दूर
जाए गिरिन में वाहो आन मानत॥
फुनसारनो मोख देत तूं जित लालचो तल
भूमि तन मिलहै प्रबल शाहजहाँ को मानत।
जो मिलत रचा कर तन तनफत अहद शिकारगाह
कर राखो यह ठानत॥

९

हसन हुसेन प्यारे नबी के दुलारे जगत उजारे
शाह मर्दान अली बली।
वेअप वली ना सुन मलकूत जवरूत लाईत
इन मकानन में तिनकी कीरति चली॥

१०

योंही जात जनम अकारथ अचेत चिन्ता कर ताको
जोहै निरञ्जन निराकार सबमें व्यापत ताकों
ध्यान धरत नाहीं अज्ञान मत अजहूं समझ करहै
कछू बाकी॥
जेमन विच कर लौ लाई श्रीधर पद्मनाभ परमेश्वर
की सूरत कों तुम चाहे दाता विधाता और रखि
बन्ध वाकी॥

११

अरुण वरण सेत दुरुन तिहुनरो उनीदे वोथे कुरङ्ग।
जागे पागे अनुरागे एगो अल्लोगे मानो नीरजनैन
दीरघ दिवानी कसत वो चाहत उमाहे उपङ्ग॥
खञ्जन अञ्जन निरञ्जन दौनेरो जमल विमल
विलोल लोयन ढरा ढरारे उतङ्ग।
ग्वालदास पिय लौं लगीहे लजोहें हाय भाय
कटाक्ष तुरङ्ग॥

१२

तुमसों जो बोलत हो लाल ज्यों तुमसों
होय साँचो।
वहाँ ही जाओ जहां होय तिहारो काम अहो मिथारो
प्रीत नीमे के बांचो॥
उनकी प्रकृति रीतहोसे अधीन के जेई भलो
तेंई सोई नाचो।
शाह बहादुर तुम नीके जानत अब तुम बोलवेको
खाँचो॥

१३

बानक है तेरो नीद कोरी रैन गात और मिटो टीको।
यातें मरस भई टरत नाहिन कबहूं शाह जलाल
भाँयोहै जियको॥

१४

आज बदन बदले अधर सधर लागो नैनन पीक।
पीत अदल बदले कीनो ताके बल छल प्रगट
देखिए सो रस भीने कहूं पीक वरण कहूं अरुण
कहूं रह्यो काजर लीक॥

१५

तारण तरण सुमरत पीर जो हौं रिझाऊं शाह
बार बार।
यातें जो कहियत तुमसों जो तुम मनसा पुजावन
हार जेतू अगुण अपार समार॥
जाको सुन जड़ तें होत निहाल एसे रस पारस
जान दूर करन दुख सुधा विस्तार टरे जञ्जार
कलेश मेंटन को आधार।

सूरतप्रशादी माँगि यातैँ जो न्यामत भर पाऊं
सुख सम्पत अमोघ अपरम्पार ॥

१६

या अल्ला हादी रहिमान या रहीमा।
धन धन परवरदिगार बकसन हार सतार जीवार
कादर करीमा ॥
एसी सुमत दे हमकोँ जो तेरी जिकर में रहे
निश दिन करम करीमा।
आनन्द बरस रस बरसे साहब कुमत दूर होय
एसी ही कर या करीमा ॥

१७

सुनजर कीजे मोपर विधना हौं बन्दा गुह्नेगार
तुम बकशन हार साहब सतार।
तुम करीम रहीम रब रहिमान साहब दुख
दारिद्र सब दूर कीजे जब्बार ॥

१८

मेरी तो तकसीर माफ कर यह हजरत शाह मरद
मुरतजा अली पीर कहत हौं कर जोर तुम हार।
अलीजी के प्यारे दुलारे नबी के तुम साहब हो
हसन हुसैन परत न मन वार वार ॥

१९

तिय पिय विनही यों सगकन।
लाल के बिछुरे ते बहोत दुख पायो जों दिया मध
बातो जरसी सकत ॥
चातिक पिक मोर शोर खड़ेहो सनावत सोत
दामनी करत शोश पर लसकत।
जेन खाँन मिले तो भलेही जोवन बने लेहोँ अँको
भर गसकत ॥

२०

कान्ह की कर आँखिरी मत मूरत नामही में देखे।
ज्ञान लेखक ध्यान निशा चित्र चिते श्यामकोँ
हिरदे उरेखे ॥

२१

जाको कहे सरस्वती सो कोऊ देउरी बताय।
जो गुण सुन उन धुन अति मानी गुण केसेके समाय॥
कबहूं न आवे सो गावनहै सया चाय एक रसना
अस्तुति क्यों कर जाय।
जानन मन जान शाह साहब वेगम सुजान धन धन
वाणी रस लराय ॥

२२

नैनन शोश हाथ देखवेकोँ और श्रवण वचन
सुनवेको।
कर छुवन और अङ्गो भर भेंटत सुख पायो यह
घरी जनम लेखवेको ॥
पाछले विरह कोँ दुख दन्द गयो सोतन अनख
मुख पेखवेको।
अकबर शाह पिय सुजान मिले मोकोँ परम
विचित्र यातेँ निघरी सुख विलसवेको ॥

२३

नारन सुमरन मीत जों रिझाऊं साहब वार वार।
यातेँ कहियत तुमसोँ जोतू मनसा पूजावनहार ॥
जेगुण अपार तुम सुनजरतेँ होत निहाल एसे
रस परम अज्ञान दूर करन बुध विधाता भरे जब्बार।
तिनके पैरनको किए जगत आधार सूरतप्रसाद
मागि याहीतेँ न्यामत अमोघ अपरम्पार ॥

२४

वना वनी नोंद भरे होरे बोल खोल में मद सकना।
अरगजे बाग में मरगजे शीतलरज फूल मालकेतकी
कर आभरण जोहे कगना ॥

२५

चतुर पिकार किए कण्ठ भुजवे कोँ पै कोऊ
कोऊ जानत है भजाय।
नाममोँ सब लेत नेम वरस करके सुनावे गाय ॥

२६

चन्दन खोर अङ्ग अङ्ग चढ़ाय अबीर लिए ऐंडो
ऐंडो डोलत पनघटहोँ आपन मन भाय।
बरबस परधन कण्ठ लगाए तोहि सुख भए कहा
होत है उनके दुख पाए और न मानत तेरे भाए ॥

कबहूं तिलक मुद्रा देत कबहूं वागे बनाए नैनन
नेह जनावत वनमें गाय चराए।
हरिदास डागुरके प्रभु इन तिय नेह जनावन
वेणु बजाए॥

२७

तेरो प्यारो ज्ञानगम्भीर बुध प्रकाश एसे भए
जोहै सब विधको।
मन सों मन मिलायो तैं अनेक सुख लेगो जो है
प्रत्यक्ष खांन नवनिध को॥

२८

मन अटल बदलो पान जाय बदलो जायतो बदलो
लाल प्राणपियारेसों पै बदलो नाहीं जात।
वाकी चञ्चलताई निठुरताई सब मो जिय आई
मेरो मन वाके गात॥

२९

तप तेज बल बल बल जाऊं उन पर प्यारे भरे
उजीयारे राजा नरेन्द्र नर।
छितुवन छितूदे मोहे अन छितुवन तन मन दन्द
टहूए अल्लह मिलाए तो इन्द्र वन डर॥

३०

संसारतारण सुमरत पिय जो रीझउ शाह वार वार।
याहीतें कहिये तुमसों तू मनसा पूजावन हार
जे कहैं गुण अपार॥

३१

सुमरण वाको करो काहिन जोहै साहब मतार।
यह सुनलेहो श्रवणन और नेहचे मान आन एक
पाक परवरदिगार॥

३२

मेरे मन याही हरि नाम लेले जासे होवे तेरे
नीके काम।
निशिवासर वाही के सुमरणमें रहीरे और मग पग
जिन धरो सूझे क्योंन धों धाम्रो धाम॥
जोतू एक वार याद करे तोहै याद राखे अष्टयाम।

मदनके साहबको यों पहचानो अलख अखिल नाम
रिद्ध सिद्ध निधिदाता वैकुण्ठधाम॥

३३

तोहै विराजत साजत शीशफूल जट वेसर गुणो
मिल अङ्गोया मोतियन को गजरा।
ऊदे ऊदे वस्तर सोहै कुचन पर कञ्चन खर सर सोहै
सारी जरकसो धजरा॥

प्रगीया धनाश्री—चौताल

इन नैनन लाल के मीठे बैनन एहीं बिकानो।
तिहारे लालनको प्रकृति मनमानी यातें मैं
जान बूझ होत अजानो॥
प्रेम पियाके जियको तुम सब जानत तोसे
कौन सयानो।
तोहो सों रहस सरस शाह जलाल प्यारे को तैं
कौन ठांव रहो ठयानो॥

२

तुव गुण रवि उदै कीनो याही तैं कहत तुमको
आई उदैपुरी।
अनगिन गुण गायन के अलाप विस्तार सुर जोत
दीपक जो तोलों मों विद्या है दुरी॥
जब जब गावत तब तब रससमुद्र लहरें उपजावत
एसो सरस्वती कौन को फुरी।
जानन मन जान शाह औरङ्गजेब रीझ रहे याही तैं
कहत तुमको विद्यारूप चातुरी॥

३

नीको जुनीको तिहारो प्रीत वालम काहा कहो
जाय जैसो वाको बड़ाई है।
जित देखूं तित लागाई डोरे पीत कीधों परछाई
बनाई है॥

४

तुम अवध दे आए लन सों वापे अबहीं इहां
आए होजू मो धन धीर न धरेगी।
बैठ रहेहो और तियनमें वलमा सों यह रीत कैसे
निभैहेगी॥

तुम बिन रह्यो न परत नेकहु मोपे प्यारे ललनारे ।
नेक जो नैनन ओझल होत है तातें रहत जल भारे ॥

६

मोकों तो सब निश गई प्यारे उड़गन गिनत ।
अवध के वचन झूंठे भए पिय आप रहे कहूं अनत ॥

७

पुरी पै गायन तूंही चातुर रङ्ग रह्यो याह ।
और लाग डाट पैग लाल लागी तिनके भेद लेत ठाह ॥

८

शीश पर चीरा बांधे जबहीं कर धराय ।
मत गत होत अरन के अरन पेच सिर काय ॥

९

परमगुणनिधान सब आम पूजी ।
ए नवाव सलामत जंग दिन दुलह गाजी ॥

१०

ए मेरी पत राख लीजे हजरत शेख सलेम पीर ।
अल्लह महम्मद के कारण हो गुलाम आधीन
तिहारो कहावत तुमही जगत निस्तारण वीर ॥

११

पाती आई प्यारे पैंत पढ़ी न जात आलीरी यह
गत जब बांचत बोल सब श्रवण सुरत ।
आवत मनमोहन मुख को यातें जिय हो पिय
और इत आँख निरखवे कों कहत मत ॥
जोलों मूरत रहत आँखियन में तोलों चैन नैना
जल भर आवत तातें देखवे कों कठिन अत ।
कोऊ जाय लालसों कहो निशिवासर विरह विथा
बीतत मोहे प्रभु सुजान प्राणपत ॥

१२

रिसानीसी हों कछुक रिसानी तिहारे रूप
वाल ममोमे समाए है ।
जकी थकी क्यों रहत जात तुमारे उनींदे आए
लख मेरे अङ्ग अलसाएही ॥

दृगन में लाली और असुआ काहे ते प्यारी तुम
बही रङ्ग रचे देख ए चरण सकुचाए हो ।
और कछू जिन बूझो शाह आजम तुमजो जआत
यातें मेरो मन भरमाए हो ॥

१३

शाह आजम आनन्दपत तुम मेरी तो यह गत भई ।
सुध बुध भजी नींद भूख तज गई सब सुखन मोते
आन लई ॥
भूल गए हो सब विसरो विलास रोम मरमको
कहा कहो जैसी विथा कई ।
शाह जलाल चाहत हो पै सवल तें निवल हीं
रही यातें नाह गई ॥

१४

हौं तिहारो विध कर तू विधना मेरे सोई विध
कीजिए जा विध हों सब पूरण मेरी ।
एसी जगत को ईशता करुणानिध करत मो पर
हों वन्दन करत द्वार तेरी ॥
एसो महा अपराधो शरण तेरे को नीके टएसी
मोकों मग न सूझत नैनन तें पाप काटत माकल
तिमिर वेरी ।
छाहे कदका कर महम्मद रसूल रूप कुन्दन आधीन
को जीत घनेरी ॥

१५

एरी तेरे रूप को निकाई मोपे वरणी न जाई ।
रच पच विधना तोहे बनाई उरवसी रम्भा तोरी
सम नाई ॥

१६

श्रवण तराजू कीनी रच पच विधना तोहे राग
जोखत आय गई घटी बढ़ी कहे लीनो परख
परी तान ।
सप्त स्वरनकी जोती विच एक मन मेरो पूरो
तोल कर ध्यान ॥
अक्षर जिनस जवाहर धुरपद कों जल गाहक
जलालदीन अकवर मोल लेत गुणीयम पहचान ॥

पूरीया धनाश्री—तिताला

एरी तेरी सेजकी सुमक्यान मोहन मोह लीनो ।
जाको यश रटत सुनि सजनो सो तेरे आधीनो ॥
औरकी संवार के घर किए रहत है आपुन पो
तज दीनो ।
नन्ददास वाको चितवन मेटोना मो कुछ कीनो ॥

२

तू तो नेक कानदे सुन्दर बांसरी में बजावे तुव नाम ।
पुनि पुनि राधे राधे प्राणेश्वरी वह गावे घनश्याम ॥
तुव नन पर मोजो पन जान ताकों उठ परि रम्भन
सुख को धाम ।
नन्ददास एसे पिय मों की रूठिएरी वल पूरीए
मधुरिपु काम ॥

३

कानकी मुरलिया रङ्गन वरसे रङ्गन वरसे ।
नाद अमृत की नवल घटा घुमड़ी अनुराग ही सरसे ।
सङ्कीरण तान तेरे चपलाकी चमकन धुन व्यापन
धुरवा घुमरसे ।
मोहन मधुप मधुर मल्हारस में आनन्द घर पिय के
अधरन पै परसो याही सुन सुन के मेरे जियरा तरसे ।

धनाश्री होरी—ताल धमार

भलोरी तेरो जोवन ग्वालनीया व्रज में कैसी ऐड़ो
ऐड़ो डोले ।
वाट चलत हंस देत निशङ्क है सूधे मुख हूं न बोले ॥
ग्वालन नारी गँवार बड़ी तू घट घट बतियाँ छोले ।
मस्त भई माने न काहूकी कृष्ण सों करले कलोले ॥

२

गहे पकरो काहे वाथ कान्हजू नन्दके वारे ।
वरज रही वरज्यो नहीं मानत सुन्दर ढोट ललारे ॥

३

मानत नाहिन रसिया गहे पकरो मेरो हाथ ।
शिर तें सारो छीन लई मोरी उधर गए सद गाथ ॥

४

एरी तेरी अङ्गीया पर किन मारी है मूंठी ।
दुरक गई कुच खोल दिखावत एसो बनो ज्यों अङ्गूठी ॥
एरी सुहाग भरी लालन सङ्ग सुख मोजत क्यों रूठी ।
मन में रीझ खीज मुख तें गारी यह विध की
तूं झूठी ॥

५

लाल वस कीनोरी मन मेरो मुरली बजाय बजाय ।
सुध न रही कछू तन की मनकी जवे सुन्दर
दरशन पाय ॥

६

अबतो महम्मदमा पिया घर आए ।
चहल पहल फागकी देखो जित चित
सदारङ्ग बरसाए ॥
चैनन गावो रहस रहस कर लाखन लाखन पाए ।
एक होरी दूजे मिलो पियासों यह छवि
कहियन जाए ॥

७

जोबनधन भाग जगत विच खेलो सखी सब फाग ।
कर मञ्जन तन रूप सवारो चलहु पिया सङ्ग लाग ॥

८

मेरो मन मोह लियो सुन्दर नैन रैन चैन परत
नाहीं यहो वनवारी ।
मेरे तो एक आधार तिहारे नामको गत मत
तुंही गिरिधारी ॥
जप तप नेम व्रत कछू न जानो नाम तेरोही एक
अधारी ।
कृष्णानन्द रङ्ग रस छाके दीजे भक्त रस सुख राग
रङ्ग कर शरण तिहारो ॥

९

कवन गुण कौन मन्त्र पढ़ डारो सांवरे अहो तेरो
मरम न जाने नन्दके बावरे ।
एक व्याकुल एक भई जो बावरी सब व्रज गोकुल
हरहि गावरे ॥
सुन धुन मुरली बाट घाट छल छकोसो रहो अपने
अपने ठावरे ।

प्रेम जान प्रभु डार आए पूँजु तिहारे नन्दके नन्दन
दीज पांव रावरे ॥

राग धनाश्री—एकताला

मेरा मन बौराय बौराय लीनो लङ्गर तुरकवा
अनार नचाय।
थकित भई न रही कछु कहिवेको नई पीत रिझाय॥

२

मन भावन लाड़ लड़ावन रङ्ग उपजावन जगत
जीवावन।
भाग बड़े मवहीके मिल देहों अशीश जी पायो
महम्मद सा अपरम्पार गुण आमोघ पावन॥

३

देखे दरवार ख्वाजे कुतबदीन को पूजे मो मन की
मुराद।
मदत कीने सब औलीया अंबिया और शेख फरीद
दीन अराद॥

४

आया वना लाड़ली वनी व्याहनको सुघर चतुर
सुन्दर वना।
मोतीयनके शीश सेहरा सोहै गल सुआवागा
अति ठना॥

५

नाद्रद्रनंद्रद्रतनातुम् तनतनितनारेत दारेतुम्
तनाद्रनातुम्तनानितदीम् दीम्दीम्तारेतारेदानोदीम्।
नितनुम्तानदिर तदीयन रेतदानो तकिटधकिट
धुमकिटतकनिड़कड़ानधुं निगनिगतगिनधिगिन
धाधाधातिड़किड़धा॥

६

ऋतु आई सांवनकी रिमक झिमक झिम झिम
बुंदरीया वरसे।
या समय मेरो सुहाग भाग पिया सन देखतही
आलीरी सोतें अति तरसे॥

वल वल जाऊं मीता मोरे तोरे रे कारण
लोगवा बुरेरे।
ले चल अपने देश सदारङ्ग पाछे परे निगोड़ेरे॥

८

एरी मेरी लाल [redacted]सुन्दरीया नगीने की जा जारे
वालसुवा की सेझरी।
उंगरी की मुन्दरी गई मोरे हाथ कंगनवा की कोलरी
न भावै चुन्दरी॥

९

महाराजा मुणि नाहक छेड़ोजी नाहक नाहक काई
करोंछो महाराज।
ओघड़ ह्यासों रम क्योंन करो मायवा हम यह
बात तजि॥

१०

तूं जिन तोरहु मोरा हरवा प्यारे हौं तो रिसाय
रहोंगी तुम सन जनम जनम तें न बोलूंगी।
अतही सतावै सास ननदीया मोरी देवै गालियां
करही शोर डोलोंगी॥

धनाश्री—तिताला

तूं तो बोल सांचे मनकी मेरे आगे कबहूं न झूठ
बोलो प्यारी।
वे आप महम्मद चतुर सुघर सदारङ्गीले उनकी है
बात मेरे आगे से फेर फेर वार डारी॥

धनाश्री - एकताला

जिंदड़ी दामा लकवे मेंडे अम्मा माँई असो तेंडे
नाल जीद व्याकुल रहंदी।
तुझ विन मैंनूं होर न भांदा वेसो जो चांदी सोई
कहंदी॥

धनाश्री—तिताला

सुरत विसार दई मेरो काहे तें करुणानिध।
हौं अतिदीन आधीन तिहारो निश दिन तलफत
कहो जीवों किहि विध॥

देत नाहीं दरशन अपनों इतने में कहाँ बढ़त रिद्धि।
रसिक प्रीतम अब जीव जीवावनको नाहीं उपाय
दीजे अधरामृत सिद्धि ॥

२

पठावत नाहीन प्रीतम पतियां प्रीतम पतियाँ।
मेरे कौन अपराध श्याम न एसे निठुर भए भूल
गए वे बतियाँ ॥
जो सुमरो तो दुख दूनो विन सुमरेहू दुख बहु
भतियाँ।
रह्यो न परे विन देखे छिनहू विन देखे विरह दहत
अति छतियाँ ॥
परी पुकारू हाय हाय दई कगे धीरज परी
हरिदि रतियाँ।
तुमहि न बूझे एसी रसिकपिय मानत नाहीं
विन बतियाँ ॥

३

हा मैंडा हाल सदारङ्गीले महम्मदसा प्यारे।
तिखियाँ निगाह भोहों जटियाँ पलकां नाला मीयाँ
सबे जिन्द वकस लेवे कों टारे ॥

४

मान तूं करवो ना जानेरी।
देखने कों उठ चल वेग काहेकों करत एतो गुमानरी ॥

५

सबल वेख लेवे अपनी अपनी वाकी जूड़ेवाली
वाली चवाली।
फिरे लटकेंदी काना सोहै बुंदे वाली ॥

६

मैंडे वेषणदा दिवाणा हो रहो मैंडा हाल
सदारङ्गीले महम्मदसा प्यारे।
तिखीयाँ निगाह भोंहो जटीयां पलका नाला मीयाँ
सबे जिन्द बकस लेवे कों टारे ॥

धनाश्री—एकताला

अरे मन धीरा रहोरे करिए नाहीं उतावली अबहीं।
जैसी बनी तैसी सहिए बावरे समझिए अबकी तबहीं ॥

पियारे तुमारे लाल होठन के लाग रही है
काजर रेख।
कुच मुख पोंछ वेगे आयो कियोही छिजायवेको
एक कीनों यह भेष महम्मदसा सदारङ्गीले
पाछे मोसों बात कीजे पहले तो करमें करले
काहू देख ॥

२

ज्योंई जाको भावर सोतो चाहिए जैसे चन्द विन
चोर चकोर को एक छिन न सराइए।
दीपक पतङ्ग मीन नीर विन सदारङ्ग कैसे कर
जराइए ॥

४

टौनवा मोंको कर देरे जो वस होवे पिया मोरा।
गलेको हार दूंगो कर को कङ्गणवा गुण मानोगी
तोरा ॥

५

माई कुहुक कोयलीया बोलेरे विरहा की तान।
अम्बुवाको डारन महुआ टप टप टपके रोवन
अम्बुवा गदरान ॥

६

सुरजन जिन छाड़िए महम्मदसा पीर हरनको दैहली।
देखत कों सब दुखवा गइला सदारङ्ग तन सुखवा
भइला एसी निभाय लईरो पीत पहली ॥

७

तुमो सन मनुवा लागीला मोरा मितवा सुरजन राज।
मनकी इच्छा पूरण भई मनभावन मिलिया मई
आज भए काज ॥

८

मेरो मन घटत जात घटही में अटके एसी पीतसों।
कोऊ काहू का मरम न जाने महरवान होय
एसी रीतसों ॥

९

एसी हमें कहा परी जो कहीं रङ्ग रस भरे आवो
हमारे घरे।

जावोजी जावो उनी सङ्ग बोलो जिनके लागो गरे ॥

१०

एनी कुड़ीए बांके नैनां वाली ।
अलवेली नवेली नबेली फिरे लट्केदी कानासो सोहै बुंदे वाली ॥

११

सदारङ्ग नित उठ कर लाए दवाई तेनु निरोग रखसी रब साँई ।
काज दुनीयाँदे पुरेथों गुमान न करवे दुनियाँ विच वे कदम दरवे शारद बलाई ॥

१२

रङ्गदेरे मोरो सुरख चुनरीया रङ्गरेजवा लाल ।
आज सुहाग की रैनि चढ़ी है मन वांधे वेश मिशोदीरे खशोका कजरा नैनादा जाल ॥

धनाश्री—ताल सवारी

निरमल वे गावे जो सुध सालङ्क सङ्कीरण के भेद जाने ।
और तिवर कोमल सुध वानो बादी विवादी तें बचाय ओड़व खाड़व सम्पूरण कां पहचानें ॥

२

ए एसो मेहरा कोउ जिन करो जामें जिया दुख होवे ।
देखे चैन विन देखे चटा पटी विरह वेदन जाने न कोय खोवे ॥

३

हरवा हरवा रे ए माहरी गुंध गुंध लाई ।
अब शुभघरी शुभदिन शुभमङ्गरत धन धन धन भाग तिहारे पाई ॥

धनाश्री—एकताला

नैनादा देख मिशोदी रेख सोहै कजरा ।
मृगनैनी सुन्दर अतिप्यारी चन्द्रवदनी हाथ गजरा ॥

२

मृगानैनी थारे मुख पर चन्द वारो डावर नैनी चन्द वारो ।
कुच पर श्रीफल कण्ठ पर कोकिल चालपे हंस वार डारो ॥

धनाश्री—तिताला

चले तुम जावो लङ्गर अपने मगवा सास ननदीया रिसाय ।
सदारङ्ग रङ्ग रसकी बतियाँ करत हो मीठी बात सुनाय ॥

पुरीया धनाश्री—एकताला

ख्वाजे कुतवदीन के देखे दरवार ।
पूजो मोरे मनकी मुराद देवो मुराद सब औलीया अम्बिया शेख फरीद दीदार ॥

२

एरी हौंतो न जाउं न जाउं याहीसों नगर वेतो ठाड़े आगे लङ्गर ।
अब वाह देख भई डर लागत वरवस बइयाँ मरोरत करत भगर ॥

पुरीया धनाश्री—तिताला

बाहों आँख भरके सो अब फरके मा देखा कवधों मिले साँई ।
हमरे मनमें एसो आवत है उमगत रङ्ग अवहीं डाल मिलो गल वाँहो ॥

२

जबसों पीत लागली मन अपना बस कर लीनों सबसों ।
रैन दिना नहीं चैनन नैनन कों विन देखे जीया दुखसों ॥

३

रङ्ग लावे मारु हां वे राजीद लाल पियरवा सजन माडा आया ।
ऊंची थाँड़ी माड़ी ख्यावा अलग भरोखे भोंकीलो मुजरा न पाया ॥

४

हे काई म्हाने हो तकसीर हो सायवाँ वा काँई वाँको वाँको बोल ।

प्राणपति सो म्हाँरा मनडो लाग्यो कह्यो प्रेम की
घुंडी थे खोल ॥

५

जिन्दडी मैंडी राझणवा जुग्देो नजर मिलावे।
बन्दी होमैं विसदी सइयो जो कोई आन के लावे ॥

६

वालमजी मुने सालुडा रङ्गा रङ्गादे ।
सोनेदा हाँस घड़ादे वालमजी म्हाने नथुनीदा
मोती मगादे ॥

७

चूड़ा मैंड़ा रङ्ग लावे मैं नाहीँयाँ देगावे मायाँ ।
दरीयापो चोली अनो तनो में कोकर खोलावे मोयाँ॥

८

आमिल जावे सामी देशोडा विगारणवे ।
बङ्गला छवायदे गायवां खिडकी लगाय दे मनदो
मुराद पुजायणावे ॥

९

चाहो आंखे जरसाँ छल बल कर छैल सो आई ।
छैल छबीला चातुर चित चढ़ सुन्दर पिय काँ मोहाई॥

१०

दीमतनदिरनातदारे तददानो ।
नाद्रद्रदानोतुंद्रद्रदानोतारेदानो ॥
न्याए आशर्के माशूक रमर्भ कि राम न कातवो
हम खवर नेस्त ॥

११

मैंड़ा राँझिनु आन मिलावोनी सइए मीया
ताँडी कुड़ी गला सालु भावदो नाहीं ।
जो कोई खवर मिलांदो बोलावो बन्दी हुइयाँ
विन दामोदो मौला साहीं ॥

१२

वालम आयोरी हम चीनोरी ।
आह आजम पियको मोहनी मूरत चितवन में
कछु कीनोरी ॥

१३

रव में जीवे मैंडा प्यारा जीवे रव तैंडी दरगाह
विच याहो मुरादे मगदी ।
उसदा खेडा सुब सब सावो जान सलामत रख
असाड़ी नित उठ यहो बन्दगी करदी ॥

१४

तननाद्रद्रदीमृनाद्रदीमृतदीमृतननननातनततननननोत
ना२तदरेदानोदानो उदानोदानो तदारेतदारत ।
वियारे वाद गेके मोना योम्रला वरे जार मरोज
राद में याखरचे जाए पहरेज ॥

१५

आहे नाद्रदीम् दिरना दिरना दिरना दिरना
दिरना तदानी ।
खलकमें गोयद के खुसरो बुत परस्ती में कुनद यारे
दयारे मैकुनद वाँ खलके आलम् कारनेस्त ॥

१६

अबतो नेह नजर हो राखे बनी प्यारे ।
तुमरो मया तें जग जीवत नित महम्मदसा
सदारङ्ग कों देत सुख न्यारे ॥

१७

सवल वेखले अपनो अपनो वाको जूडे वाली।
वाली चवाली फिरे लटकेंदी काना सोहे बुन्दे वाली ॥

१८

पियाके खन को इनकार खानेकमन् शवद जिजोहदे
हमचो ।
तेएया वफिस्के हमचो मने ॥

१९

जाजारे अपने मन्दिरवा सुन पावेगी सास ननदीया ।
सुनहो सदारङ्ग तुम कों चाहत है क्या तुम हमकों
छोड़ दीया ॥

२०

मोरे पिय की खबर लावो सगुण विचार करे बमना
पोथो बांचो मोती वारों आवो अङ्गना ॥

२१

कारे श्यामी नैना नाचत कुँवर कृष्ण बनवारी ।
श्रीकड़काकड़कड़कड़तकधिलाङ्ग२तकथुंना ॥

२२

शूः करिला म्हारा जोवनीया विलम्बोरे ।
ए सायवाजी म्हाने नित राजी राखो विरह दे रहो
विश्राम म्हारा प्राणीरे ॥

२३

वे कुमाजा शङ्करा कुढे गइलोरे ।
बं बंबं शङ्ख बाजे सामुद्रचा मेढ़ा शम्भू के शम्भु
नन्दन लट पट मैनारे ॥

२४

अकेला हेर वन्दी आइयो ।
सुलतान सलेम सुरजनवा आइयो बघाड़ मेंको
बघड़ेल बंदी पाइयो ॥

२५

कुड़ी गल्ला कर दाके थाँरो भा मैण छड़ मेंहो
नाल वेले विच रहेंदा ।
तपदो सिकदो साड़ा हाल न सुनावो वे परवाहन
वेखोनी सइयो को करदा ॥

मालश्री—एकताला

नेस्त तुम गुलची बटोयम् दरव वन्द जवा गवा ।
विन सीने गोसे अवाजे बुलबुला वेश नवद ॥

२

अततनृदीमृतदीमृततुमृततुमृतननतनन दिरनदिरन
तदरत दरेदानी आनुआआतदरेतदरेदानो ।
मकाशो देन सवाए नमुरग नाम वरक सेजे वकसीए
मानमें वरद खवरं ॥

३

द्रतुं दिरनातुमतननननदीमतदीमतननतारिदानीदानो
दानीदानीउदानीतदानीदरादरातुमदीरनादीमदोम
तुमतरतददानो ।
नाद्रद्रदानो तुंद्रद्रदानो तददानो दोमदोमतुम
तनदिरना धगिड़धाधोत्ता गिदिगनमगतिटकतकधिट
तकतकधिटितक तकधिटित तड़ानधा ॥

४

करहों सकल शृङ्गार सजनी सुधार आज पिया
घर मोरे आवेंगे ।
दरशन भए श्यामसुन्दरके रोम रोम सुख पावेंगे ॥

५

अततन दिरतदानी उदानीदानीतुमतननतुमद्रेत
दरेदानो ।
तुमद्रेतनातुमद्रेतनननतदरेतन देरेदेरेतुमद्रेतदरेदानी
उदानीदानीतुमतननतुमद्रेद्रद्रदानी ॥

६

एसे कोहे सुरज्ञानो जो मोहे देह बताय मुरछना
ओडवकी केतो ।
सासागगसानीनीपनीनीनमगपमगसागगमपनो
गसासासा ॥

पूर्वीया धनाश्री—तिताला

भला वे मोयाँ मानु मांड कोसो नाल करदा गलाँ ।
इश्क महोब्बतरी एमो रीत ताड़ी सदारङ्ग ढङ्ग
वेखण नु भलाँ ॥

२

विरहा विथा कासें कहोंरी आली मोरे मनकी ।
तनकी तपत अति रहत होए बढ़ क्योंहूँ न जात
याद श्यामघनकी ॥

पूर्वीया धनाश्री—एकताला

आहेदोस्तयारयललो२री आहे दोस्त तानुंतनं
तनदिरना तदानो दोस्त ।
अच्छे महबूब वादो यहो गल्ल आखाँ नाहो छड़दे दोस्त ॥

पूर्वीया धनाश्री—तिताला

पायलिया झनकार मोरीरे झनन मनन बाजे
झनकारो ।
पिय समझाऊं समझत नाहीं सास ननद
देंगी गारी ॥

होरी ख्याल ताल—तिताला

हरि सुमरणकी माला मन पहर कर जिय विचार ।
हरे हरे कुडोया हरे हरे भगता तुलसी गुरीया
लेहों सम्भार ॥

२

घड़ियाले आज मिलोंगी मैं पिया सन अरे तूं
घड़ी न बजारे ।
पोथी बांचो मोती वारो घड़ी घड़ी रैन बढ़ारे ॥

३

भले आएहो बालमा मेरे सुरत जोवाय काह्न
पिया सङ्ग ।
तिहारो यह ढङ्ग देखतही प्रीत को सवाद गयो
अब वाहीतें जाय करो रस रङ्ग ॥

४

तैनु रबदी अमानवे चाहिदड़ा जग दावें तुसी
जीवो जम जम ।
तुसी तखत मुलक अलानें दियो मुबारकी होवी
महम्मदसा मक्के मदीनें के थम थम ॥

५

गोहन लागो रहूं तोरे पायन ज्यों तारन कौ छइयां ।
अरद उरद दोउ दहरीयारे बाट चलत नहीं पइयां ॥

६

सुरजन वेला अल्ला दोंठडे मुख थींवा दिल राजी
वो काजी ।
तुज्जेहा मानु और न दिसदा को कोकरे
मुल्ला काजी ॥
कठड़े मकाम थीवी दिल राजी मेरी तेरी दोस्ती नु
आलम जानें कीकरे मुल्ला काजी दिल राजी ॥

७

ए अब मोरे जियको बात अबरे भुजा को ए ।
जरद वरण भई पिय विन मोरी मा जाय वीतो
जानें सोए ॥

पुरीया धनाश्री—ताल सवारी

होए जामि वारी वारी जांवा म्हारो राजरे थासों
म्हारो मन लाग्यो महाराजरे ।
प्रभु लाल सेज पर सुखवा करो थासों लाग्यो
छे म्हारो काजरे ॥

पुरीया धनाश्री—ताल पांच फरोदस्त

पिउ आइला मोरे मन्दिर सखीरी करिहौं आनन्द
वधावरु ।
सब सखीयन मिल मङ्गल गावो बजावो आनन्द
वधावो मोरे घरु ॥

२

एसो नेहरा जिन लावोरी जासों जिया दुख होवे ।
देखे चैन विन देखे चट पटो यह विध या विधना
अब मोरी सेज न सोवे ॥

पुरीया धनाश्री—आड़ा चौताल

एत् जम जम जम बाजुरे बाज मन्दिलरा साजन
मिलावरा भइला ।
इच्छरीया सब पूजी विधना मेरो यातें भाग बढ़ीला
कष्ट गइला ॥

जयतश्री—ताल चौताल

एरी अब आनन्द भयोरी ब्रजमें श्रीकृष्ण जनम
लियो आज ।
शुभघरी शुभदिन शुभही महूरत प्रगट भए ब्रजराज ॥
ब्रह्मा वेद पढ़त महादेव दर्शन आए नाचत गोपी
ग्वाल नारद वीणा बजाए स्वर साज ।
बैजू नन्द महोत्सव देख मगन भए पूजे मन इच्छा
सुर नर मुनि काज ॥

२

सुफल जनम भयोरी आनन्द गोकुलचन्द वखत
वलि वंश उजियारो ।
नीके दिन नीको घरी महूरत शुभयोग प्रगटे बड़े
भाग नन्ददुलारो ॥
एक नाचत एक मङ्गल गावत एक मृदङ्ग वीणा एक
घन शिखर उचारो ।
एक हरद दूब दधि अच्छत रोरी ले छिरकत बैजू
करत कोलाहल भारो ॥

३

आगन भोर भई ब्रजपति के आज नन्द महोत्सव
आनन्द भयो ।

हरद दूब दधि अक्षत रोरीले छिरकत परस्पर
गावत मङ्गल चार नयो ॥
ब्रह्मा ईश नारद सुर नर मुनि हरषित विमानन
पुष्प बरस रङ्ग ठयो।
धन धन ह्वैजू सन्तन हित प्रगट नन्द जशोदऐ सुख
जो दयो ॥

४

भोर भई आगन ब्रजराजके मङ्गल चार ठयो।
वलिहारी आज यशोदा की हो पुत्र जनम भयो ॥

५

सब ब्रज सुखसमुद्र ह्वै बाढ़ो जो उपजो
गोकुलचन्द सुकन्द।
धुन गरज्यो असोघ मङ्गल यह सुन दूर होत दुख दन्द॥
हरषे द्रुम वेलो नर नारी प्रेमपियुष मयूष आनन्द।
आनन्दघन वरसो सरसो नित सुखधन यशोदा
को नन्द ॥

६

कान्हार जनम भयो हो भीतारवर।
जागत पहरुआ सोय गए टूट गए तारे भर॥
डार छवरीमें ले चले वासुदेव सिंह राह आगे धर।
चरण छुवन को कालिन्द्री ह्व आई हूंकरत तरुवा तर॥

७

हेरी लीला भई और जन्म भयो सो लीला भई।
धन धन धन त्रिहुलोकके ठाकुर उपजे नन्द घर
कान्हर दई ॥

८

प्रसाद दीजे मोकों अपनी दयाकर गुणको वाक्‌वाणी
तिहारो नाम ले गाऊं।
सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मुर्च्छना बाइस सुरतके
भ्योरे पाऊं ॥

९

दए जो तुरङ्ग अनेक अनमोल राजाधिराज
मोतिन के माल जग मग आछे धरे जात सकल
आभूषण जीने।
अनेक गज कौन गिने बहोतन पाए हैं एरापत
से एसे पाए समके सो दए कुंजर नवीन नवीन दोने॥
चहुं रच पच दरशन तुमको प्रसाद दीजे हिन्दूपत
पातसाह अष्ट सिद्ध नव निद्ध लछमी लोने।
जहां जहां जात तहां तहां भूपन डरने हमको
किए अयाचक जान राजा राम छत्रपति मौज
दरीयाव दारिद्रभञ्जन वेद विद्या नवीने ॥

१०

जेते गुणी रच पच हारे पै काउन पावे तेरे भेद
वरन न नाहीं।
और जो निरत भाव कहियत है ते सब लेत अत
गत मत सरस नाहीं ॥
तेरो निरत इन नैनन देखो सेवा गरे जात तोको
जोह चरण माहीं।
दरीयाखॉन पैदे चन्द फिरावनको जो तेह मेरे
जान मोखन को सरस्वती प्यारी तुअ कण्ठ वरणन
चाहीं ॥

११

हे बाज बाजरे मन्दिलरा तू बाज आज ब्रजराजके
घर काज।
नन्दराय घर नीको काज मोतियन चौक पुराय
गावे मधुर धुन साज ॥

१२

ब्रजराज सांवरे मुरलो में गावत नोको तान।
धुन सुनि थकित भए सुर नर मुनि देव गुणि गन्धर्व
चकित ह्वैजू विमान ॥
उरपति रप लाग डाट दूरन सुरन सुर प्रमाण।
तानसेन नैन सैन वैन दैन गायन करत
राग रङ्ग बन्धान ॥

१३

मेरो मन मोह लीनों सुन्दरनैन रैन परत नाहीं
बनवारी।
मेरे तो एक ध्यान तुमारो तुमरी गति तुमहो
जानो अवगत गत गिरिधारी ॥

जप तप नेम कछू न जानूं नागर नन्दकिशोर
अबतो कोटिन कोटि जतन कर हारो।
प्राण प्यारे दरश दीजे सुख सम्पत आनन्द कीजे
तानसेन शरण तेरे रहो कुञ्जविहारो ॥

१४

मेरे नहीं आएहो नन्दलला जाओ क्योंन तिनके
ग्रह जिनके रस बस भए रहे सुख वाई रैन जागे।
धन धन भाग महागनि सरस सुन्दर तिया रङ्ग
अंग अभूषण रङ्ग देखि ब्रजभूप प्रेम पागे ॥
तुमहो गोपालजू बाल जाति अहीर वेपीर
परनारिन सों छिन चितवो तुमरे नैना लागे।
बैजू प्रभु निडर ढोट लङ्गर डगर डगर घर घर
फिरत छैल लागि जावत चित्त रस चाखि सदन तें
सुखसदन देखो बदन ढोलें वागे ॥

१५

यह छिन जिन परसे पाई सारु करी भई तीनकी
मम विध को मुक्त उन मन अतहो आनन्द बाढ़े।
जिन तन देख्यो भर सृटिष्ट को नजर ना हरत
उनके दुख दन्द दाढ़े ॥
ए सो अवल बला जाके वासतें विहूं पूरन अरि काढ़े।
धन अँखियन जो देखा यह महम्मदशाह को
दरस धन रसना गुणहु बाढ़े ॥

१६

एसो निडर है जात सबन तें आगे एसो चसको
परो तोहे काहे होरोतें।
वरजत जेतो नाहीं मानत क्यों हूं डरत नाहीं
श्याम देखत कामदृष्टि चोरोतें ॥
उघर रही अँगिया उर परतें सरक्यो जात
दरडोयो डोरोतें ॥

(न्यामतखां कृत)

१७

अब कित लागी जू खिन खिन टप टप।
अबतें सीख हमारो मानो तुम नाहीं न अरत
परिहै सटपट ॥
हितु बात कों सब समझत है दूर कीजो
यह अट पट।
कठिन समय काम आवत है कुबोल बोल
गुरुजनके सट पट ॥

१८

भालहो में शीशफूल मांगन हो को टीको दियो
भगवान अनेक रङ्गन जवाहर जड़े जाको
जगमगाहट जोत जगत में छाय रहो।
माया मुक्त कर मोहो किनारो में गुन्धाय सजल
तामों जोवन माँग पै चढ़ाय अति विराजत सुन्दर
सुहाग सेज लालको गत भाय रहो ॥
जासों चन्द्रसुखो के मुखचन्द्र सबसों आनन्द
कुशल सुख मोहे लगे अदोत किरण सितारको
बसन भूषण फहराय रहो।
वन ताल तरुणीवर जोरतो सङ्गत बखतके तखत
बैठ सुन छत्र छत्र धरन धर शीतल सङ्ग सब शोभा
की सुगन्ध सो महक रहो ॥

जयतश्री—ताल रूपक

तू चढ़ देरे वीर बढ़ैया पालनो राजदुलारो झूले।
लावन देहों घढ़ावनो और दुख दारिद्र सब भूले ॥

२

हालरो हुलराऊं झूलराऊं कंचन के पालना।
नगन जड़ित को पलनो पचरङ्ग जोती बनो तामें
बत्तीस लछना ॥
रङ्ग भरो नन्दवारो झूलत सब तियन गावे लालना ॥

३

लाला जियो कोटि बरस जग उजारो नन्दको वारो।
रतन जतन कर पायो बड़े भागन सब जगके
उजीयारो ॥

४

दूलह मदनगोपाल राधेजू दुलही।
मनहु श्याम गौर मिल घन उमड़े उत्तम कनक
उलही ॥

जयतश्री—आड़ा चौताला

नन्दमहरके घर आज माई सोहलरा।
यशुमत तपत कूख सिरानी जायो कृष्ण छविलरा॥
धाधा किट धुम किटि किटि मृदङ्ग बजतहै द्वार
मन्दिलरा।
आज बधाई व्रजमें छाई कृष्णानन्द भइलरा॥

२

अचानक आएरी लाल मेरे घर धावतें।
हौं अपनें भवन में ध्यान करतथी मोमनके भावतें॥

(जीवन खां)

जयतश्री—ताल तिताला

नमो नमो गुरु इष्ट हमारे तुँही विद्याधर
तिहूंलोक के पति।
असुरसन्धारन भक्तउद्धारन सीतापति राखले
हनुमत जति॥

२

एरी मेरो वार सुहायारी एरी मेरो लाल खेले द्वार।
सुन्दरवदन मदनमनमोहन प्यारो नन्दकुमार॥
चकई भौंरा चटा वटा लिए बहु फिरावत बार बार।
सप्तलोक और चउदेभवन मध वहो कृष्णानन्द
खिलार॥

३

सगुण विचारहु पियके आवनकों आली वेग
मिलहैके नाहीं।
मग जोहत युग सब बीतें सदा आँखन आगे
फिरत परछाँहीं॥

४

एरी मेरा वगर सुहायारी एरी मेरा लाल खिलवार।
चार पीर चउदेखाँनवा दे करम कियो करतार॥
एक आवत एक जात कार करन कों एक दौरत
चरण गहे धार।
चिश्ति मया कर जगमगाइटन सों सुख जीते
दुख हार॥

हजरत सैयद सलार वाला कहियत है मौज
समुन्दर डार।
श्रवण सुनो मै अपनों गरीवनिवाज दूर करत है
दरिद्र विडार॥

५

आनन्द वधावरा हो मेरे मनभावना हो ख्वाजा
मौन दीन दरवार।
जोई जोई ध्यावें तेई फल पावें विनान कर दूध
पानी न्यारो न्यार॥

६

दीजीए मोहे मगाय नन्दजी अपने कुँवरको
आनन्द बधाई।
गावो बजावो चौक पुरावो आँगन ढोल बजतहै
सुर नर मुनि ध्यान धरत है मन इच्छा फल पाई॥

७

नैली म्हारो पायल बाजेरो ठुमक ठन।
बहोत दिन पाछे आवन भइलवा अब कैसे जाऊं
सवेरे बिछुवा बाजे छन॥

८

जिन छुओ अचरा मोरारे ढीट लङ्गरवा
श्यामसुन्दरवा वरजोरी करत हो मोसे आन।
बाट घाट मई रोकत वरवस बहियाँ मरोरत लङ्गरवा
एसे ढीट नादान॥

९

एरी आज आनन्द भइलवारी इस घर जनम लियो
लालन।
ख्वाज खिदर कोसी उमर बक्स दीनो अल्ला
चिरंजीवो जगपालन॥

१०

एरी अब आनन्द भयोरी लालन आएरी मेरे महल।
तत बीतत घन शिखर मृदङ्ग बजावो ताल तानको
करोगों सहल॥

११

सो एरी आज पिया को मिलावोरी सुनों सखी
व्रजबधू सब साथ।

उन सोतन के जाय रित मानो हमसों करत
झूंठी बात ॥

१२

हमकों देखत रैन बीत गई सगरी अजहूं न आए
पियरवा।

निशदिन सुमरण तिहारो करत हित चित टे
जियरवा ॥

अम्बुजनैनी म्हारो मन भँवर थारो सम्पट।
रूप फूल सुगन्ध चतुराई नृतन कटाक्ष मुखरे
डोलो भाले अब लाडन मकन रस लम्पट ॥

इति पूर्वीया धनाश्री सियाकी धनाश्री जयतश्री
रागिणी सम्पूर्णम्।

रागिणी मालश्री

अथ ध्यान

रक्तोत्पलं हस्ततले दधाना विभावयन्ती तनुदेहवल्ली।
रसालवृक्षस्य तले निषण्णा स्तोकस्मिता सा किल
मालवश्रीः ॥

सवैया

तन कुन्दनकी दुति दूरि करे मुख चन्द महाछवि
छाजत है।

पट लाल प्रवालकी ज्योतिहरे कर कुञ्ज को
फूल विराजत है ॥

विन नेह की बात सुनै मुसकात लजात सखी
सुख छाजत है।

तैसो यह विशाल विशाल तिरे यह मालसिरी
अति राजत है ॥

दोहा

खरजगेह स-ग-म-प-ध-नि खाड़व अतही लसन्त।
वसन्त ऋतु तृतीय पहर मालसिरी सरसन्त ॥

मालश्री—चौताल

सागपगसानिनिधधममगसापसानिधसासासानिध
सासागमगसापमपमगसागमपसानिधमामग
सामागपगमा।

मपधसासानिधसानिधपपमगमपधनिसापधपम
गधासगपगसागमपसानिधमगगसा ॥

२

सुवर्णवरणस्वरूप सो नार रति एकन में अनेक
भाँतिन की बतियां घढ़त।

पहलेही बात तो पढ़ाय लेत पुनि बतराय लेत
जंत्रि लेरो तन्त्रो कढ़त ॥

३

खरज साधि गाऊं मैं श्रवणन सुनहु सुनाऊं।
वेद पढ़ाऊं जोई जोई कहि सोई सोई उचराऊं ॥
भैरव मालकोश हिण्डोल दीपक श्रीरागमेघ
सुरहो लेआऊं।

तानसेन कहे सुनोहो सुघरनर यह विद्या पार
नहीं पाऊं ॥

४

कुच महेश नख क्षत दुतीया को चन्द मुक्तमाल गङ्ग।
अलकमारो लुवध रहो सोई और सोहत अरजन
के सङ्ग ॥

पोहपन के हार पहराई एसो मानो कारो पूजा कर
धरत सपत सोखत रस परस करत अनङ्ग।
एसे विध के पीउ रति रस कीनो शाहजहां राखो
अरधङ्ग ॥

५

कै तिहारो रूप देखो मरम न पायो जियाको।
सुन्दर लोचन कुचकठोर मुखचन्द भौंह धनुष
रंभासी तियाको ॥

६

प्यारी तुम नैनन जोत को समुद्र तामध डोरे एसे
लागत मानो कहीं वर तकत मनोज जाल परोयोहै।

पियचितमीनके पकरवे कों कटाक्ष अञ्जन चारो
लगाय धरोयोहै ।

७

शिक्षा कार अनुकार रंचक भावक गायन तान प्रमाण।
धात मात योग ध्यान इन भेदन भेद ध्यान शरीर
की सुरत मन्त्र बखान ॥
जे अलङ्कार सुर ताल प्रस्तार विस्तार जानत सब
बहु विध अङ्ग अंग सुजान ।
शाह अकबर गुरु न गुरु सङ्गीतकलानिपुणन
किए भए न गान ॥

८

पूरे पूरे काहो गुणीयन मिलके जाय रङ्गभूमिमें
प्रथमही लागरे चरण धरन शरण ।
इन्द्रहुके जा नी रत कारी सो मेरे जान आन वरण
सूर्य सुमरण ॥
चन्द्र विलास को विधना रची प्राण हरण ।
याहीते रस वस भयो रामचन्द कीनो राजाधिराज
छत्रपति धरणी धर तरण ॥

९

वालापन गयो तरुणपन आयो अब थोरे थोरे
भयो गज में मंत ।
ज्ञानमहावत गजवाग लाज किए घूंघट अम्ब्यारी
डारे कुलटाके काम खुमी दंत ॥
पञ्चकला श्रोच की क्षुद्र घण्टिका पायल नें वरु
घुँघरू मन श्रोर हमंत ।
चलहो सखी मिल जइए जहाँ तहाँ बैठे राजा
वीरमशाह मन कन्त ॥

१०

जेते गुणीजन रच पच हारे पैकोउन पावें तेरे
भेद वरण नहीं ।
जे कछु सप्त ववट विकार कहियत है ते सब
लेत घत गत चरण नहीं ॥

११

जाने तार सुर के भेदन को गत साधे असुध को सङ्गत।
श्रौर जे जे सप्त ववट पिकार कहियतु है तिनके
व्योरे उगत जुगत सो एसो भरत के मत पंगत ॥
जानत गीतछन्द धरु धुरपद गावे गुणी बजावे तिनहूं
को बिलौच कर मानत नाही साज रङ्गत ।
शाह अकबर गुरु न गुरु सकलकलासम्पूरण विव
विवेक चित न अङ्गत ॥

१२

जे छिन छिन लगन के समीप रहो एसो घरो लेखे
में गिन लइए ।
सोई तो विचित्र चातुर अधिक सुनिरो जो उनकी
प्रेम प्रकृति लिए रहिए ॥
भाग सोहाग ताहो को गिनारो जासों पिय हँस बोले
जियकी बात कहिए ।
शाह अकबर प्यारेके मन रञ्जन घड़ो घड़ो घड़ो
घड़ो पल पल चहिए ॥

१३

आदि महेश कंचन को छत्र द्वितीया को चन्द
मुक्तामाल गङ्ग ।
अलकें सारो लुवध रहो सोई श्रौर मोह तजो उरझो
जन काके सङ्ग ॥
पोहपनके हार पहराई अरस परस करत अनङ्ग ।
एसो विधके प्रीत रस कीनों शाहजहाँ राखो अरधङ्ग ॥

१४

हो लालन जानियत जासों प्रीत को तुमरी साँचो ।
काहेकों झूठेहो बहरावत पीतम बतियां सुखको
दे काँचो ॥

१५

तेरोरी वदन जोत चन्द्रहु तें अधिक निर्मल
सो समोप लगेहो रहत है मुक्ता ढिंग जैसे पोत ।
प्राणपियारे को प्राण में बसे झूठेहो अवण कारण दोत॥
शाह अकबर छत्रपति रहसन भरी तुव पलक के
श्रोट होत ॥

१६

सागमगमागमगपमधपममगरेपगसानिमगसानि ।
गगमपसारेमागमामगससापमगसागगसागगमपनि-
धपमगनिनिधधपपममगगमगगमगमानि ।

१७

जब करता करम करे तो सब कछू पावे
नाद विद्या सुध सङ्गत श्रावे ।
जान बूझ भूलो फिरेरे क्योन वाहो नाम जा
समरतहो सुर तान गावे ॥
जे नर मुनि गुणि पच पच हारे विना कादर कोउ
ना बतावे । ।
तानसेन प्रभु निशिवासर अब तेरो नाम ध्यावे ॥

मा॰ —ताल सरफाकता

सुर सोच लेत सोहो गायन बजायन निरतकारी
निरत करे इत उत जित नित दृष्टि परे ।
प्रथम अति दृढ़ होय तो पावे साधे विद्या नाना
प्रकारन को अब गुरुन मान मन अत धरे ॥
वितत बजाय वेद रङ्ग उपजाय लेत तान करम
सुधङ्ग गिरहै गीत धारो त्रविध तान दृढ़ लाग
डाट त्रिवट निशङ्क लेत ताल समरे ॥

२

आज को दिन नोकोरी माई मोहि मिले मनभावन।
तन मन धन नैन करोंगो बधाई पायो मै अब
रङ्ग उपजावन ॥

३

दान कर्ण समान भुजपति ज्ञान विक्रम जोत
दीप सधम बुध विनान ।
गोपीचन्द्र को दीनो ए राजा राम रावण मार
सीता गहे लायो चतुर सुजान ॥

४

जबतें बिछुरे मनमोहन बलमा तबते यह अखियाँ
पलहु न लागी ।
सब दिन मग जोय जोय निश उडगन गिन यह
विध जागो ॥

५

अब घरो आवत हैरी लाल माईरी अबधको दिन आज ।
वेग प्रफुलित भयो सुगन्ध मज्जन कर कर आभूषण
वसन बनाय पहरे प्यारी तबहो अरगजा भेटत
लगाए तब होवे मन भावनो काज ॥
यह देखो वे गए मनमोहन बलमा अन्तरयामी
स्वामी कवन वरण कारण विरहन कारण तेरे
अनगन मानो पतितन को दोनो सुखसमाज ।
शाह औरङ्गजेब लोनो गलेहो लगाय कोनो निहाल
तोहे वाल दोनो ढिग विव सुहाग भाग आनन्द राज ॥

६

गावत बजावत गुणीयन आप आपन बन्धन राग
धुन गायन सूझे ।
जे कछू करम ते कहँ गए सङ्कोरण सुर नर मुनि
तिनको तोख चाक बूझे ॥

७

झाड़ो लोचन हुवे वले चोलो वाघम्बर भरे थैलो
भखे भाँग गोलो भूतेश्वर ।
वपु डोलो भभूत गङ्ग मोलो मुक्तामणिहि डोलो
नागहार सङ्ग डोलो सिन्घासन हर ॥
मुंडमाल गल रोलो रहत सचोलो जगवे विन
गुण भंटोलो जन वेशो भोलो चकवे होलो जटा धर ॥

८

सागपगसानिनिधधममगसा ।
पसागरेगगरेसासापपनिनिधपगसा ॥

९

आदिमणि ब्रह्म अवतारमणि कृष्ण युगमणि
सतयुग दिशामणि पूरव सब घट रमण मणि रमैया।
दिवसमणि भास्कर निशामणि चन्द्रमा उडगन
मणि ध्रुव द्वीपनमणि जम्बूद्वीप खण्डनमणि
भरतखण्ड चतुरत हैया ॥

स्वर्गमणि उैकुण्ठ राजनमणि इन्द्र गुरुनमणि
बृहस्पति वेदमणि ब्रह्मा सब जग रचैया ।
हस्तिनमणि ऐरावत विहङ्गमणि वैनतेय पुराणमणि
श्रीभागवत परमहंसमणि शुकदेव कहैया ॥
ध्यानमणि महादेव ध्यानमणि रोम ऋषि आर्वलमणि
मार्कण्ड गिरिनमणि सुमेर थिरैया ।
तरुनमणि कल्पवृक्ष वीरनमणि महावीर सागरमणि
पयसमुद्र सरितामणि विष्णुपदा तीरथमणि
व्रजस्थान हरि प्रगटैया ।
भक्तनमणि प्रह्लाद जतीनमणि लक्ष्मण नारिनमणि
उरवसी तुरङ्गमणि उच्चैश्रवा इन्द्र धाम रहैया ।
रागनमणि भैरव ऋतुनमणि वसन्तऋतु शास्त्रनमणि
वेदान्त रञ्जनमणि सङ्गीत पार न लहैया ॥
ताननमणि तानसेन गायनमणि नारद गन्धर्वनमणि
हाहा हूहू वीणनमणि सरस्वती प्रातहो नाम लहैया ।
स्वरनमणि स्वरजसुर सुरत मणि तीव्रा मूर्च्छना मणि
आनन्दी तिथीनमणि एकादशी उत्तममणि गोविन्द
नामले कृष्णानन्द भवसागर पार परैया ॥

१०

निगमगमागमपपमधपमसगगमपनिधममंगम
सगसागमा ।

११

इतराय न चलिए इतराय न चलिए थोड़ेहो
में थोड़ेहो में गर्भा आं आं आं आं नो ।
सोतन में रहबो कठिन है अयानो शाह अकबर
कों जो रिझावे सो होवे वारे वाणो ।

१२

नाद ब्रह्मको अगाध व्योरो जानत गुणीजन
बखानत याको कोउन पार पाइया ।
सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मुरछना उपजति रघ
लाग डाट राग छत्तीसो तिया इया आई आईया ॥
आरोहो अवरोहो बाईस सुरत उनचास कोटि तान
के विध गाइया ।
कहे नायक बैजू मृदङ्ग भेद ताल ध्याय सङ्गी मत
कहे तिया इया ऐ ऐया ॥

१३

ओदन नाल और विद्या विरद विरमनरे सुमेर
मारण यश तरैया ।
एक गज नाल एक बूंदन घुमरोरे प्रति छवि छाज
तान रूप सुञ्जन तिऐ ऐ ऐ ऐया ॥

१४

विद्या श्रवण सुवर सुन सो दिन दिन हो बढ़े
चांपस उपज लेत ।
जे सुर सोच कर गावत जो लय सो ताल देत ॥

१५

सिपतमणि अल्ला नवीयमणि महम्मद दोउ जगमणि
चतुर्दिश मासूम पीरनमणि मुरतजा अली कान ।
वासरमणि दिनकर रजनीमणि चन्द्र तारनमणि ध्रुव
मलकनमणि जबरइल यह राग जगत में लीनो बीन ॥
पातालमणि शेष शेषमणि अर्दनो अवनिमणि नाभ
नाभमणि अरस अरसमणि कुरस लौहमणि कलमा
तुरङ्गनमणि बुराक गजनमणि एरावत राजनमणि
इन्द्र गिरनमणि सुमेर चञ्चलमणि मीन ।
किताबमणि कुरान दीनमणि कलमा अवदनमणि
आदम कामनहवा रागनमणि भैरों भाषामणि
व्रजकी जोतमणि दीपक दीपकमणि नार दोजक
शीतल मनी भिहिस्त एसी भांत सुजान अस्तुति कीनो ॥

१६

यह कमल कुदरत कादर तेरो रचतही काहा
थकलो यला ।
सबही में छायो याही ते पायो है काल अला ॥
दो दो ते सबही को दोउ आप बनाय राखो लेलेके
महा मरद विल्ला ।
सेन सैन प्रभ पै विल्ला विल्ला तिल्ला सम विल्ला ॥

१७

मै तोहे पूंछूं गायन बजायन कौन गुरु ज्ञान सङ्गी
कौन मूर्च्छना कौन सुर कौन ग्राम विस्तार ।

कौन मूल ताल कौन प्रथम उचार कौन गुरु को
प्रकार ॥
कहाँ राग बसत कहाँ रङ्गत सङ्गत कौन नाड़ी में
पवन धार ।
कहाँ तोख चोख नेम वरस उत्पति रप लाग डाट
आतक खातक औड़व खाड़व सम्पूर्ण तानसेन तत
वितत घन शिखर तार ॥

१८

सर्वमणि अल्ला बडनमणि खुदाई जोतिमणि नूर
थिरतामणि आकाश कारणमणि करता भोगन
मणि भुगतो सृष्टि करन ।
वेदमणि सामवेद मारण उचाटन मणि अथरवण
नादनमणि अनाहत पञ्चम वेद कलमणि कलमन
पुराणमणि भागवत भाषामणि अखि बननमणि
वृन्दावन ॥
आसानमणि अरस कुरस नरनमणि नारायण वृच्छन
मणि कल्पवृच्छ रसिकनमणि रासविहारी भूषणमणि
कौस्तुभ माण ।
सुखमणि सन्तोष लाभनमणि हरिनाम जातमणि
ब्राह्मण धर्ममणि ईमान ताननमणि तानसेन
अखिलमणि भगवान ॥

१९

चिरञ्जीव अवचल मम पर शाहन मणि शाह जलाल।
नर नारी पशु पंच्छी जीव जन्त आशीर्वाद देत
लेत प्रसाद अप अपने होत निहाल ॥
कल्पवृच्छ प्रतच्छ विमोहन धरे तिहुंलोक जानत
क्रम क्रम कर ए हाल जो होवे दयाल ।
कहत गोसी सुनियत शाह सवाल सो कीजे जाको
लगत सोई प्यारो गोपाल ॥

२०

अब गुरु गोरख जागे पागे राग रङ्ग नाँच नाद
सप्त कार नाँचे ।
नारद तुम्बर और शिव भाख्यो गानांग जो पेग भेद
मारग देशी जो सुधङ्ग सङ्गीत गत माँचे ॥

२१

नाद अगाध सम्पूर्ण सोध साध समझ सोच ताल
विस्तार ओंकार ।
सुर संवार सप्त सलिल सुर सुर सों संगत नाद विस्तार ॥
स्वराध्याय रागाध्याय तालाध्याय नृत्याध्याय
प्रकीर्ण प्रवन्धमृदङ्गाध्याय सप्ताध्याय विचार ।
गुणी गन्धर्व्व सुर नर मुनि पच हारी के उन
पायो तानसेन अपरम्पार ॥

२२

कुतकुततकोतकुझुकोझकोलुकोलकोढकोढुंकोगतं ।
टेको टको ढुको ढको डिगो डुगो गतले नट
नटोत थुंके थगतँ ॥
झेंत झेंत झिड़ झिड़द गत लेत ततत्त ताथेई थेई
ताताधिल्लांग थों गतं ।
जनक जनक्र बगड़थुं थेई तत् धागिना धागे
तिटितत्ता धिधोथुन्ना ठग नगखिरर थिरर लेत
उघटत मृदङ्ग तिकड़तकतं ॥

२३

नाद मूल जानत ताल प्रवोण ।
सङ्गीत को व्योरो सो जाने जो धरे कर वीण ॥

मालश्री—ताल तिताला

उन सङ्ग जो समझे अपने गुण को अन समझके
सङ्ग पीत करवो कौन सवाद पीत करिए ।
जानत नाहीं उनको जाने बलाय जान बूझ काहेको
दुख में पड़िए ॥

मालश्री—धीमा तिताला

नारायण माधो विष्णु परमेश्वर भगवन्त अविनाशी ।
कोटि भांतिन को जोत मुकट विराजत पीताम्बर
डारे काशी ॥

मालश्री—तिताला

प्रभुजी अबको बार उवारो ।
दीननाथ दीनदुखभञ्जन है यह विरद तिहारो ॥
अजामेल पे कृपा कीनो नाम लेतही तारो ।
ग्राह मार गज फन्द छुड़ायो वाको कियो विस्तारो ॥

खम्भ फोड़ हिरणाकुश मारो टूंक टूंक कर डारो।
गरभ परीछित रछा कीनी चक्र सुदर्शन चारो॥
दुखदारिद्र तुम हरो सुदामा मनमें कहा विचारो।
ठाकुरदास दास चरणन कोँ याकोँ काहे विसारो॥

२

करत हौं सकल शृङ्गार सजनी सुधार आज पियारे
घर मेरे आवेंगें।
दरशन भए श्यामसुन्दर के रोम रोम सुख पावेंगे॥

३

तुरकेम सितार होई जब तोरो कमान चढ़ाई
तान ताल सुर सङ्गत सो सुनरं दिल सङ्ग।
जबहीं चिल्ला खेंचो उनको नाम लेतो रसना तोरकी
सो लागी पाग गुणीयनके मैदान नैनाके रंग सुनरं
दिल संग॥

४

औगुण बगस मेरे तू कृपा कर करतार।
सुनले इतनो विनति करत हौं तोसों दिन दिन
बढ़े मेरो सरस राग सुर तान अच्छर मोहि तार॥

५

मया के बोलाई लाल सोतिन दुख पायो।
जे तेरी हितू तिनके आनन्द भयो मन भायो सङ्ग
ले गायो॥

६

दरद न जान दावे मीयाँ क्यों नहीं सुणदा मांडड़ी
गलां।
विन वेखे सानु कल नाही पाँदी खकरे तेड़ा भलां॥

७

अबतो आए प्रेमके फन्दे कहाँ गई जो हठ बदोई।
नारि निभाय सूधे ह्वै चलिए मिलिए रङ्ग में जों
पानी की नाई॥

८

बनत रित मान आएरी पिया तिहारी वात में जानी
काहे कों दुराव करत हो मह्म्मदया चिन्ह प्रगट
देखियत एसो मन आनी॥

९

मैड़ी जिद तू सांडे नाल लगो वे मीयाँ मैड़ो वल
वेखन जर भर।
हुण बन्दो तू साड़ा सांई मैड़ी अदा रङ्ग करे मैड़े
नाल तू सुघर॥

१०

आया जोवन धुए दासरो कनाकर अत वाव लगे
उड़ जाँदे।
इश्क दी भाय सों तत्ती बुझदी नाहीं सदारङ्ग
असुआँ नाल एती अगन कोट मरजाँदे॥

११

सुन्दर वदन पर लोयन वार वार परत करत घर
जितमें आलो तेरेहो रूप को निकाई।
अनेक भाँतिनके तू कटाछन करत निशदिन मन वस
करवे कों एरी चतुर तिय एसो वान किन सिखाई॥

१२

एतू अपने मनमें कहा समझो है प्यारो जे तू
पिया के प्यार इतरानी।
इतनी बात तू सुनरी सखीरी हम सुन्दर वे ज्ञानो॥

१३

चरण तक आए हो पीर अता तुमारे द्वार।
करतार तुम सब विध कोनो निस्तार वेको राग
ताल तानसेन मो आज॥

१४

सरस रस रङ्ग रचाइए राजा नन्दकिशोर।
अशीश देत तुमको सब गुणी मिल जियो बरस करोर

१५

एरी सहचरी तेरो मनसा सब गई।
पिया विन वदनद्युति मलिन परी जो मुख पवन
मुकर में मन लई॥

१६

अब मोसों बोलो क्योंरी ए ढोट लङ्गर बर जोरी।
सोतन तें रङ्ग रलीयां करत है मेरो चोरो॥

मालश्री—चौताल

सुधाकर सो मुख वाको उजेरो कैसे कहूं उपमा
याको मोहत हसत वाणी सुधासो ।
सकल कलामें प्रवीण चल लालदृग सुफल करो
जोवन गुण कीजो रूप जोवन मधकी तामें वही
है सरितासो ॥

२

मन कों मार रहिए जोई चाहै सोई करन न दीजे ।
औरको मन बांधवे कारण दरद आपनां मन आप
बांध कर लीजे ॥

मालश्री—धीमा तिताला

मीयां तेनु भांदा वे एहो गलां रूसणदी मानु भांदा
गर भगणदी हांवे ।
होंदा वे करार देदा जार जार वे एक वरो पल
छिन विन यारु वन नहीं सकदीया हांवे ॥

मालश्री—तिताला

बलिहारी महबूब पीरके डग मग आवन पर ।
पग धरत मन हरत इठिलावन ललचावत
मुलकावत रिझावन पर ॥

२

दिल दीवे कलीयां मैंडो नु दिल वर नाल
अंखिदा किसनु सुनावा जाय ।
वेले वीच मैंहो नालो हसदा खेड़े दान पदोनु कथीना
पुछदा उस वे परवाहनु तुसो समझावण माय ॥

३

लम्बी लम्बी जुलफे वालीया मैंड़ा मन लीता ।
ना जाना मैंड़ो भुलदी मा एफे हाजा दुकीता ॥

४

अब तेरे मनमें यह कैसी बात समाई जेतू बात
बात पे झगरावत ।
तूं तो सकल त्रिनयन में सयानी है समझ देख
यह मेरी सीख मान प्रेम रस कीज एसो न धरावत ॥

अबतो मोंकों जानदेरे तुरकवा मोरे मन्दिरमें ।
बाट घाट गलीयन में रोके टोके चतुर ब्रज सुन्दर
मोरे मन्दिरमें ॥

६

एसो सुघर चतुर पिय प्यारे के घर काज आवतरे ।
हो रङ्गीले कहत सदारङ्ग रङ्ग रसरो बातरे ॥

७

मुंदरीया मोरीरे पियरवा कौन के अङ्गरीया में
नहां चीनो ।
प्रेम रीत परतीत न जानू तें मोरी पायल गरको
हरवा छीनो ॥

८

अब मेरे प्यारे बनरे रे बनरी सां हित चित लारे ।
काट मल लाड़लो कों मन मनाय लीजे सुख
दीजे एक बारे ॥

९

अवधि के दिन बीतन लागईला अजहूं न आइला
पिया मो गेह ।
ना जान कौन काज रहे किधों लाए काहू सों नेह ॥

मालश्री—ताल खमसा

धन धन धन भाग तेरो जो तूं सकल त्रियनमें
पिया के मन भाई ।
तोसो रूप जोवन को जोत गुण ज्ञान को आप
तोहो तें उपजत देखियत सुधराई चतुराई ॥

मालश्री—होरी ताल

मेंडे नाल करतू सदारङ्ग दो गलो मान गुमाना ।
जो चाहे तेन उसनु तूं चाहे दुश्मन ताक दास्त
पहचानो ॥

मालश्री—जलद तिताला

बलिहारी महबूब पीर को डगमगे आवन पर ।
पग धरत मन हरत इठिलावत मुसकावत
रिझावन पर ॥

२

प्यारे सुरजनु भूल आए घर मेरे ।
जासों नई लगन लगी तिहारी ताही के जावो सबेरे॥

मालश्री—तिताला

दिमतन दिरना तारे तददानी यल लो यलोयलाललै।
नाद्रद्रतुंद्रद्रतदी अरे तदैतदा आआआआआआनी ॥

२

गोरी गुजरिया दही बिलोवे अपने जोवन के जोरे ।
प्रेम मुदित बालगोपाल यश गावै मन्द मन्द
घन घोरे ॥
नूपुर कङ्कण क्षुद्र घण्टिका रज्जु आकर्षत बाजे ।
मिश्रित धुनि उपजत तिहि औसर देखत शचीपति
लाजे ॥
मङ्गलघोष सदा कौतूहल व्रजन जनम हरि लीनों ।
नन्द यशोमती को सुकृत फल वपु दिखाय सुख दीनो॥
शिव विरञ्चि जाके पद वन्दित सो गोकुल के बासी ।
परमानन्द दासकों ठाकुर पलना झूले सुखरासी ॥

३

कांधे लकुटि धरि नन्द चले वन दोऊ बालक
दोनें आगे ।
रामकृष्ण सों प्रीति निरन्तर सखा पायो बिभागे ॥
पूरब सञ्चित सुकृत रास फल अपनी आँखिन देख्यो।
मो समान अब कोऊ नाहीं जनम सुफल करि लेख्यो॥
खेलन हंसत पंथमें धावत लड़काई की बानी ।
परमानन्द भक्त वस माधौ चार पदारथ दानी ॥

४

एसे माई लड़िकनि सों आदेश कीजे ।
दूरहिते भए दरस देखिए पांय लागि मागि कछु लीजे॥
अबही हरि ढँढोरि मार सब माखन खाय मौन
ह्वै बैठे ।
हौं पचिहारी मेरो कह्यो न मानत विनति करत
जात है ऐंठे ॥
सुनहु यशोदा करतव सुत के चोरी करि करि साधु
कहावे।
यद्यपि एगुण कमलनयनके परमानन्द दास
जिय भावे ॥

५

नाहिन गोकुल बास हमारो ।
वैरी कंस बसे सिर ऊपर नित उठि करे खगारो ॥
गांव गांव प्रति देश देश प्रति लोक लोक प्रति जानी।
इह गोपाल कहाँ ले राखां कहति नन्द की राणी ॥
शकट पूतना तृणावर्त्त तें इहै विधाता राख्यो ।
कैसे मिटे कहो हो संतन गरग वचन तब भाख्यो ॥
यद्यपि परब्रह्म अविनाशी महतारी डर मानें ।
परमानन्द प्रीति है एसो पुनि पुनि व्यास बखाने ॥

६

देखत व्रजनाथवदन चन्द कोटि वारों ।
जलज निकट नैन मीन उपमा विचारों ॥
कुँडल शशि सुर उदित अघटनको घटना ।
कुन्तल अलि माल तामें मुरली कल रटना ॥
जलदकण्ठ सुन्दरतन पीतवसनदामिनी ।
वनमाल शक्र चाप मोही सब भामिनी ॥
मुक्तामणि हार मण्डित तारागणि पाँति ।
परमानन्द स्वामी गोपाल सब विचित्र भांति ॥

७

गाय चराएवे को व्यसनु ।
राधामुख लाय राख्यो नैननिकों रसनु ॥
कबहुँक घर कबहुँक वन खेलन को जसनु ।
परमानन्द प्रभुहि भावे तेरे ए मुख हसनु ॥

८

माई लैन देहु जो मेरे लाले भावें ।
दधि माखन चौगुनों देउगी या सुतके लेखे जाको
जितनो आवे ॥
पलना झूलत कुलदेव आराध्यो जतन जतन वारि
घुटरुवन आवे ।

सर्व्वस ताहि देउंगी जो मेरे नान्हरे गोविन्दे पाँ पाँ चलन सिखावै ॥
यह अभिलाष लेत दिन प्रति कब मेरो मोहन धेनु चरावै ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लालकोँ निरखि निरखि उर नैन सिरावै ॥

९

यशोमती ढूंढति है गोपाले ।
काहू देख्यो मेरो अलक लड़ैतो खेलत हो सङ्ग वाले ॥
इत उत हेरी रहो नहीं पावत सुन्दरश्याम तमाले ।
चकित नैन अतिशय अकुलानी भई भई बेहाले ॥
साँवर वरण पीत सिझगुली कच लर लटकत भाले ।
पग पैंजना कुणित कहुं देख्यो चाल सुराल मराले ॥
घर घर टेरि कहति कहुं देख्यो वरु बूझति गोपी ग्वाले ।
जो मेरे कुगन मगन हो दिखावै ताहि देउं उर माले ॥
काहू व्रजसुन्दरी लेराखी निजग्रह नेह विशाले ।
नन्दरायजूकों आनि दिखावो सुन्दर रूप रसाले ॥
गए प्राण मानो फिरि आए लियो उछंग उताले ।
चूमति नैन शीश मुख ढोड़ी अरु चूमति दोऊ गाले ॥
निज ग्रह आनि करी न्योछावरि तन मन धन तिहि काले ।
चतुर्भुज प्रभु कोँ खेलत जानि जिंवावति गिरिधर लाले ॥

१०

नैन कुरङ्गी रतिरस माते फिरत तरल अनियारे ।
नवलकिशोर श्यामतन धन बन पाएहै नवनिध वारे ॥
नाना वरण भए सुख पोषे श्याम श्वेत रतनारे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन कृपा रङ्ग रङ्ग रङ्ग रुचिर संवारे ॥

११

एकहि औकजए गोपाल ।
अब यह तन जाने नहीं सखी और दूसरी चाल ॥
मात पिता पति वँधु वेद विधि तजे सबै जञ्जाल ।
श्याम स्वरूप चितमें चुभ्यो परिवोते जो बहु काल ॥
गहने मोतिन तोरि जबै हसि चितए नैन विशाल ।
चतुर्भुजदास अटल भए उर घट परसे गिरिधर लाल ॥

१२

तेरे माई लागत होंरी पैयाँ ।
एक टक बात कहो मोहनकी आलीरी लेहूं वलैयाँ ॥
या गोकुल विधि सेँ दिन कौने आप चरावत गैयाँ ।
निघटा निघटत नहीं सजनी घड़ी घड़ी जुग भैयाँ ॥
छिनु व्रजतें बाहर ह्वै बूझत जाय लुगैया ।
गोरज कुरित अलकहु देखो आवत कुँवर कन्हैया ॥
कछून सुहाय ताहि बिनु देखे सुत पति पिता न मैया ।
चतुर्भुज प्रभु देखेही जीजे श्रीगोवरद्धन रैया ॥

१३

युगलवर आवत है गठ जोरे ।
सङ्ग शोभित वृषभानुनन्दिनी ललितादिक तृण तोरे ॥
शीष सेहार बन्यो लालके निरखि हंसत मुख मोरे ।
निरखि हरषि वलिजाई गदाधर छवि न बढ़ी कछु थोरे ॥

१४

हरिको मुख मोहि माई अनु दिन अति भावै ।
चितवनि चित नैननिकौ सबै ज्ञान विसरावै ॥
लाल कों लेले उछंग अधिक लोभ लागै ।
निरखनि न देति निमिष करति ओट आगै ॥
शोभित सुकपोल अधर अलप अलप दशना ।
किलकत इनि किरणनि में ह्वं मोहत मनु रसना ॥
नासिका लोचन विशाल सन्तत सुखकारी ।
सूरदास धन्य भाग देखति नन्दनारी ॥

१५

ललना हो या मुख ऊपर वारि डारी ।
वालकृष्ण लागो मेरी अंखियां रोग वलाय तुमारी ॥
लोचन ललित कपोलनि देखत सच उपजतहै भारी ।
रुचि आनन्द बढ़ावत है अति हसत दै दै किलकारी ॥
लट लटकत भौंहन मसि विन्दु काल सत ललाट छवि न्यारी ।

भौंह नासिका वरणिन आवैं मनहीं मन अति प्यारी॥
अलप दशन अलकल वल बोलन बुझन परत विचारी।
अलकनि बीच त्रसरेणु उड़त मानो विध में बीज
उज्यारी॥
सुन्दरताको पार न पावति निरखि नैंन मतिहारी।
सुरसमुद्र की बूंद भई सब मिलि मन दृष्टि हमारी॥

१६

कहां लगु वरनो सुन्दरताई।
खेलत कुंवर कनक आगन में नैन निरखि सुख पाई॥
कुल्लह लसति श्यामसुन्दरकें बहु विधि रङ्ग बनाई।
मानहुं नवघन ऊपर राजत मघवा धनुष चढाई॥
श्वेत पीत अरु असत लाल मणि लटकन भाल भराई।
मानहुं असुर देव गुरु भूमि जसनि रविसों समुदाई॥
अति मृदेश मृदु चिहुर हरत मनमोहन मुख
वगराई।
मानहुं मञ्जुल कञ्ज ऊपर वर अलि पावलि फिरि
आई॥
दुधदन्त छवि कही न जात कछु अलप तलप झलकाई।
किलकत हंसत दूरत प्रकटित मानो विधुमें विघ
लताई॥
खड़ी वचन देत पूरण सुख अदभुत इह उपमाई।
घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन सूरदास वलिजाई॥

इति मालश्री रागिणी सम्पूर्णम्।

—०—

रागिणी पूरवा—चौताल

मोरमुकट पीतवसन सोहत मोहन नवल छैल
नन्दलाल।
यमुना के तट तट नट ज्यों नाचत गावत तान
रसाल॥
तन मन धन नोछावर करहूं वारूं मोतिन थाल।
तानसेन प्रभु तुमारे दरशकों सुन्दर रूप गोपाल॥

तुह्मारे होत असवार सह नाना राग विस्तार मिल
मुरसलनकार धुंकार बनो रङ्ग उपाय तिन
प्रतिधुन उन सुरपत डर विचार समझ सवारो गुणो
गावत पठाए।
करनान रवन लगो नवदर्पण उड़न मानो असुरन
डर घरन छाड़न लगे अस्तुति करण दुंदवान
दमकन लाग्यो वे मड़ हलन मानो घन गरजन इन
तरफन झांझ झनकत मानों दांत तन गहे इन्द्रमें
घर साल लाए॥
तुरई बाजत यों लागत मानो ऐरावत बोलत आवत
बाजत मानों नरसिंहा नकिरा मानों उचैश्रवा
आदिदे सुर सब लगे हैं नए।
शाह मौजदीन को यह असवारी सुनत दिगा
दुगपाल लङ्केश फनिश छिपो पताल भवन पर
विकराल अरि कांउन ठहराए॥

३

सुआ वागा नोका लागा लागा जागा मारो रंग बनो
के मङ्ग बना।
चौसर गले हार बांध वेले चमेली के विचित्र मालन
गुम्ध गुम्ध लाई और हीरा लाल नग मोति पना॥

४

कहा सीखे हर कान्हार रङ्ग ढङ्ग भरे।
मुरली बजाय रिझाय लई सब ग्वालिन घर घर को
वसके प्राण हरे॥
लटपटो चाल अट पटे पेच डग धरत पग परसत हरे।
जगन्नाथ कवि मोह लियो मन छल वल कपट करे॥

५

देखिए जगमगाहट जित तित जरी सरोपाव
सबहो कों पहराए।
वसन भूषण अनगन धन बहु विधि के दान बरसाए॥

६

रहत न अटके नैन अपनों सो दुराव कियो चाहत
हो वो देत जनाय।

जाके रङ्ग रस रीझि भींझि समझाऊं नाहीं समझत
हिल मिल देत वाही तानसेन बनाय ॥

७

नेकही नैन सैनन टट होलेरो लगाय हर जग ठग।
मन और नैन दोऊ पियके पियके सुखदायक
तज ग्रह कौन को कोउ परत पग डग ॥

८

मीठे मीठे हो मीठे मीठे लागत फरिदो गञ्ज शकर।
सब कोऊ कहत है मीठे मीठे ज्ञान ध्यानकर देखो
शाह अकबर नाम लेत रसना कानों पवित्रकर ॥

९

लाडलो लटक चलत पिय मनसुख अलबेलो।
लटकन में मन अटक्यो लालको गजगत पायल पेलो।
कमल फिरावत नैना दुरावत रीझ रिझावत दासु
गहेलो।
आलो गिरिधर पीय वेणी गुंथनमें साच फूल गुलाव
चमेलो ॥

१०

धरे ढेढो पाग ढेढो चन्द्रिका ढेढे त्रिभङ्गी लाल।
कुण्डल किरण मानों कोटि रवि उदय होत
उर राजत वनमाल ॥
सांवरे वरण पीताम्वर ओढे चलत डगमगी चाल।
वल्लभ वनतें बन ठन आवत सङ्ग लिए ब्रजवाल ॥

११

एहांको हटकि हटकि गाई ठठको ठठको रहो
गोकुल को गलो सब साकरो।
जारी आटारी झरोखनि मोखनि उझकत दौरि
दौरि ठौर ठौर तें परत काजरो ॥
चम्पकलि कुन्दकलि वरषत रसभरो तामें पुनि
देखियत लिखे से आंकुरो।
नन्ददास प्रभु जाके द्वारे जाय ठाड़े होत
तें इते बचन मांगत लटकि लटकि जात काहू से
हां करी काहू ना करी ॥

आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत गाय गोविन्दाको
गायन में बसवोई भावेरो।
गायनके सङ्ग धावे गायनमें सुच पावे गायनको
खुररज अङ्गहो लगावेरो ॥
गायनसों ब्रज छायो वैकुण्ठ विसरायो गायन के
हेत गिरि करले उठावेरो।
योच्छितस्वामी गिरिधारो विठ्ठलेश वपुधारी
ग्वालीया को भेष किए गायनमें आवेरो ॥

१३

मेरे तू जियमें वसति हो नवलप्रिया प्राण प्यारो।
तेरोही दरस परस राग रङ्ग उपजत मान जिनि करे
हाहा हारो ॥
तुंही जोवन तुंही प्राण तुंही सकल गुणनिधान
तो सम कोऊ और नाहीं तोसों छिनकारो।
व्यासको स्वामिनी तेरो सयाते ए पायो है नाम
कुञ्जविहारी ॥

१४

सौंध मों न्हाय बैठो पहिरि पट सुन्दर जहां फुलवारी
तहां सुखवति अलकें।
शोभा कल नख कर केश संवारति मानो उड़गणमें
उड़पति झलकें ॥
विविध शृङ्गार लिए आगे ठाढ़ो प्रियसखा भरि
आयो आनन्द रतिपति दलकें।
हरिदासके स्वामी श्यामा कुञ्जविहारी छवि निरखत
मलकें ॥

१५

केली कला कमनीय किशोर उभे रस पुंजनि
कुञ्जके नेरे।
हास विलास विनोद करो वलि आलो केतो सुख
है हेरे ॥
वेलो के फूल प्रिया गहि पिय पै डारिको उपमा
यो मन मेरे।
नन्ददास मानो सांझ समय बगमाल तमाल को
जात बसेरे ॥

१६

तुव धन कामवेलि अङ्कुर कटाक्ष अधर पल्लव पुहुप
तेरी हसनी ।
श्याम तमाल रसाल सों लिपट और गसीहै प्रेमगसनी।
प्रेमदृष्टि चकोरनि अङ्ग अङ्गछविकी लसनी ।
यह शोभा मोपै कहतन बनि आवै मुरारिदास
प्रभु स्वामिनी गुणकी तो मै वसनी ॥

१७

गायनके पाछे पाछे नटवर वपु काछे मुरली बजावत
आवत हेरी मोहन ।
अतिही छबीले पग धरणी धरत डगमग उपजत
मग लागि जिय सोहन ॥
खरक निकट जान आगे पाय धरत श्याम ठठको
गाय लागी सब गोहन ।
छितस्वामी गिरिधारी विठ्ठलेश वपुधारी आवत
निरखि निरखि गोपी लागी हेरी जोहन ॥

१८

छबीले लालको यह बानक वरणत वरनी न जाय ।
देखत तन मन करी नोछावर आनन्द उर न समाय।
कन्द मूल फल आगे धरके रहत सचल शिर नाय ।
गोविन्द प्रभु पियसों रति मानी पठई रसिक रिझाय॥

१९

आगे कृष्ण पाछे कृष्ण इत कृष्ण उत कृष्ण जित
देखूं तित कृष्ण है मईरी ।
मोरमुकट कुण्डल किरण भरे मुरली मधुर तान
लेत नई नईरी ॥
काछनी काछे लाल उपरना पीतपट तिहि काल
देखनहो शोभा थकित भईरी ।
छितस्वामी गिरिधारी विठ्ठलेश वपुधारी निरखत
छवि अङ्ग अङ्ग ठईरी ॥

२०

धरे बांकी पाग बांकी चन्द्रिका बांके विहारीलाल ।
बांकी चाल चलत बांको गत बांकी मत बांके वचन
रसाल ॥
बांको तिलक बांकी भौंह रेखा बांको पहिरे
गुञ्जमाल ।
बांके कर गोवर्द्धन धर्‌यो बांके भए गोपाल बांकी
है चाल ॥

२१

तेरे मनायवे को गोकोरो लागत मान जोलों
रह्यो प्यारो तोलों लाल ले आउरी ।
और को हस्यो मुख तेरोतो रुखाई आलो सोरह
कलाको पून्यो चन्द विलखाउरी ॥
आङ्गले भरत डग पाछले परत पग एसी छव छड़ि
किधों पांऊं के न पाऊंरी ।
नन्ददास प्रभु प्यारी दोऊतो कठिन भई लाडली
मनाऊं कैधों लालने रिझाऊंरी ॥

२२

बाजोरे आज मंदिलरा साजनघर भयो काज ।
रंग रंगनके बस्तर पहर पहरहो तू सब करे आनंद
मन साज बाज ॥

२३

एरी मै मान कर पछताय रही बहोरी किधों
मिलेगो मनभावन ।
वेजो मनावत पै हौं नहीं मानत जोवन गरभ
अब कहा कीजे लग्यो विरह तन तावन ॥

२४

मन मतङ्ग मदनमद मातो फिरत तिय तरेल के सङ्ग ।
गुरुजन पीलवान सीख आंकुश दै दै हारे तेउन
छाड़त तरङ्ग ॥

२५

ढोला लागो गले मुझहो गले तुझ लागवे
जैसे होय सोतन नजर जदा
बहियां लटकेटी टकेदो चाल जोवन मदा ॥

२६

शुभदिन भई सांचक भई साचक ।
चिर चिर जियो दुलह दुलहिन आशीष देत
सब याचक ॥

२७

आलोरी आए मनभावन
मेरे गृह प्राणजीवावन रङ्ग उपजावन।
शुभघरी शुभदिन शुभहै सायत मनमोहन।
सोहन सुन्दर नन्दनन्दन कीनो आवन॥

२८

करत सब जग काम शुभ होत तबही जब पहले
कहू लेत बिसमिल्ला।
जाने बदत दीन अईत पावत एलम अत बिध कौं
तत छिन पढ़त कल्मा मुल्ला॥
अरम कुरम के लोह कलम के बिध जानत
पहचानो रमनाते ररत फिरत लै के अल्ला।
अरज सनत सो लगावो ध्यान सेवहु हजरत
महम्मद रसूल अल्ला॥

२९

मेरे मन याहू याद हरदम याद कर जो होय
तेरे नीके काम।
निशिवासर वाही के ध्यान में रहीरे ररे अज्ञान
औरमें पग जिन धरे हर्ध कोन जावे दीन धाम॥
ज्योनं एक बार याद करे तो तोय याद रारो अष्टयाम।
मदनराय के साहब की यों पहिचानोए जो छण
में देत अष्टसिद्ध और साम॥

३०

आशिक आशिक महबूब अल्लाह कबहूं
निजामी महबूब।
कबहूंवे तुमारे रङ्ग रस हूं रहत हैं कबहूं तुम
उनके रङ्ग भीने कीने भुवलोक मध इमामी महबूब॥
तुम तन उन मन एसे ह्वे रहे साहब जिन जानो
नजाय मोहित यह बिध कीने सब घट अंतरयामी
महबूब।
रवि शशि कहत है ज्ञान ध्यान धर तुम दर्पण वे
दीदार आपस में निशि दिन करत रहत हैं
शूकरजामी महबूब॥

३१

मै सुनीरी कान भनक लालन के सुध आवनको।
गयो दुख भयो सुख छतीयाँ आनन्द भई सुध पाई
मनभावनको॥

३२

पानप भारे भारे भारे बिन काजर कजरारे
ए द्रग तेरे।
मानो रूपसागरमें नीलकमल युगल फुल
भृकुटी भृङ्ग गुञ्जत एसेरी मन हेरे॥
मीन होन मृग छीन किएते खञ्जन बांधि
किए पग चेरे।
अनियारे उजियारे प्यारी प्यारे तेरे जिन बस कीने
धीरज प्रभु लाल मेरे॥

३३

सब ममूह करिहै तू नर नारी रहमन ले चले
करन लाड़लेकी मङ्गनकी।
महनाईए कारनिए और टकोरन बीण रबाब गारनकी
झांझ झनकारन की॥
बाजत ए धूम धाम धावत याके अनेक दल
गजदल पयदल अश्वदल सङ्गनकी।
तानसेन सब नगर नर नारी प्रफुलित भए गुणीजन
गावत छिरकत अतर गुलाव सुवास आवत
सुगन्धनकी॥

३४

अजहुं न आए मो घर एरी कौनके बिरमरहे लाल।
साँझते अधरात लों मग जोवत जोवन भई बिहाल॥

३५

तुमही औलिया निजामी तुम जानो नीके
अल्लाह जाने तुम नीके नीको बिध नीके रङ्ग वाके
अबूढ़े हो याते जिकर फिकर।
जिकर जाहर सावत करना सुत मलकूत जबरूत
लाहूत मजकूर सुनो कहूं गुपत प्रगट समझत
ताकर राखो याते तिहूं लोक मानत जानत
घर घर हो जौय वर॥

कबहूं अल्ला आशिक होत तुमहूं माशूक कबहूं आशिक
करत रहत अल्लह अल्लह आशिक किए एक पर।
निजामी तुम वे तुम पर रीझ रहे दोऊ रीझ रीझ
रीझत है रीझकी वल जात आनन्द गुन्हेंगार
सर्ब सर॥

३६

शोम सीखत तुम को होय नीके कर निजामदीन
औलिया पवित्र तुमारो मरातव सब मलायक जानत
और खलक खलक के जन अमरत।
निरधनो धनो होत अंधा आंख पावत पूत सपूत दें
तुमारे चरण सुलतान मशायक मोहि दीजे जमैयत
और दीन दुनी को यह आनन्द करत रहत मेहत
पोहत कलहत॥

३७

एसो लियो नाद गढ़ महा तगड़ आरोही अवरोही
अस्ताई सञ्चाई महाविकट निपट अति आगत।
छही राग बुर्ज भए तीसों भार्य्याके कोट इकईस
मूर्च्छना रंग बाईस सुरतके कंगूरे तीके नीके लागत॥
सप्तस्वर सप्तपौर औड़व खाड़व के किवाड़ तामें
करताल चलत गोला ओला भयो धुरपद को चारो
तुक चतुर दिशामें चुनैतो टोनों एसेई वाको
कीनो लियो रङ्ग जल भरि राखे कण्ठ गुणी के
रिसाल लालके गुण पागत।
हरिदास डागुर गुरुन गुरु ज्ञान कहे एसे जैसे
लरे भागरे रच पचे अटूट टूटमें रीझ देत हीरा
मोती रतन फल लागत॥

३८

एरे वलवन्त प्रचण्ड अडंड डंड जाके डर कांपत
नवखण्ड थर थर।
सुनत धाक धक धक होत छाती द्रुगन पालन को
धीर न रहत सकल अरिन जवत गहत कर॥
तुम अपवली भुजवली दलवली जाके चढ़े धरन
धसकत धर धर।
चिर चिर जीवो शाहनशाह अकबर हुमायूंनन्दन
वीरन वीरवर॥

३९

री या तनको मत कर मान मनमें नहीं चाहे
मन मन करत हो मान।
मानो मेरी मति मोहनी माननी मो मति मन में
मानो मत करो मोहन मों मान॥
मुर मुर चितवत मनही मनभावन को माधो
मुकुन्द वेहैं मथुरापति मुरारि नंद दान।
मानरो मान सैनकासो माधुर्थता तानसेन प्रभु
मनमोहन को मान॥

४०

हाकिम हादी हकीम करीम मौला करमको
रहन आवै।
गफूर गफ्फार रहिमान रहीम पाक परवरदिगार
तेरो नाम सब गावै॥

४१

रङ्ग भरे दरस देखत मन इच्छा उपजत रसके
रङ्गीले लाल।
तुम अतिसुखदायक सबलायक लागे प्यारो
जाके निरखत ही दुख दूर होत जञ्जाल॥
रङ्गीले लालको रङ्गीली मूरति एसे विराजत ज्यों
कण्ठमाल।
गुलाबके प्रभुके रस वस कर लीनों मोहनलाल
कृपाल दयाल॥

४२

पमगरेमामगसानि सागरे मपमगरेसा।
मधनिसारे मागरे मामगरे सानिनिधधपपममगरेसा॥

४३

निरेगममममधमगगरेसा।
मधसारेसागरेसामगरेसानिरेममगगमध-
सानिधपमगरेसा॥

४४

रङ्ग रङ्ग के अनेक रङ्ग रङ्गे विधना ताको
वार न पार।

पशु पच्छी सुर नर मुनि परमहंस भांति भांति के
भाड़े बनाए श्वेत पीत श्याम रक्त है करतार ॥
तुँही आदि अन्त तुँही तुँही सब में रम रह्यो
तोहितैं सब जग विस्तार।
एकही अनेक होय व्याप रहो घट घट बैजू प्रभु
निरञ्जन वही साकार ॥

४५

मन राजा चित हस्ती असवार बुध मन्त्री मङ्गले
सोच सैना सवार विद्या देश वस करवे कों चढो अब
पुनि आरम्भ आगें निशान धर रसना तोप बजाय
कुमत मैन दल मार बिड़ार दए सब ॥

४६

तानंतदीयनरेना आतननदानीतनदिरना आनदानी।
उदतनदिरननदीयनरेनातादानी तनदिरदानी
उदननदनता आदानी ॥

४७

मुरलिया कैसे बाजे रस मानो गरजि धौं करे
अमृतवाणी।
अनिहो नाद प्रवाह ताल सुर जिय धारे एसो रस
कहां ते उपजत एसो स्यानो ॥
सप्तस्वर तिनग्राम इकईस मूर्च्छना यह गावत
सब गानो।
तानसेन के प्रभु मुरली अधर धरे जाको तईलोक
राजधानी ॥

४८

लालकी बास आवत हैरी तेरे अङ्ग।
मानो मिल आवत है महम्मदशा सों पूंछत कहत
छित तङ्ग ॥

पूरवी—तिताला

अकबर सर वर देहो उनके नर वर।
हौं न करों अंत न्यारो प्राणपियारे को मेरे
काम दन्द सहेज को अपोरो पहर हर ॥

कन्हैया काह्न देख न देहौं।
पूर्वपुण्य भागन तें पायो निश दिन हिया बिच
थिर कर लेहौं ॥

३

तेरे आलो रूप पियके तनकों खिलोनों निशदिन
लिए रहत सङ्ग।
कबहुँ वागो बनाय कबहुँ बीरो खवाय कबहुं
निरख रीझ दिन दिन बढ़त तरङ्ग ॥
तुँही तन तुँही मन तुँही कर रहो पीय मन
अरधङ्ग।
तानसेन प्रभु प्रवीणके चित चढ़ी एसे जैसे ईश
शीष बसत गङ्ग ॥

४

टोटार पुर नृप एसो जाके दरशकों परसत नैना मेरे
लुवध रहे एसे जैसे चन्द्रकिरण पर चकोर।
एक पल अन्तर रहत न सकों रहौं तुव पायन
समीप तन मन धन जीवन वन दों कोर ॥
जाको अमृतवचन श्रवण सुख होत मेरे प्राण
लेत झकोर।
एसो जोहै तानसेन प्रभु सो दिन दिन सोतन
सो वकोर ॥

५

आयो आयोरे बलवन्त शाह छत्रपति अकबर।
सप्तद्वीप नवखण्ड देश देशान नर नरेन्द्र कांपे
थर थर डर ॥
अश्वदल गजदल पयदल भारी एकसों एक
योधा अजगर।
एक एक औ सुभट सेधा से वे कमान गुरुजन जात
सवर ॥
हुमायूं-को-नन्दन जगवन्दन दुशमन अरिगञ्जन
सुनियत जहां तहां जीतत आवत शाह मौजदीन
को लशकार ॥

पूरवी—ताल रूपक

गुजरीया कञ्चनके गात कञ्चनकी जेहर कञ्चनकी
चोली सब कञ्चन भूषण पहरे।
श्याम वरण पोरी कोरन की लहंगो और ता पर
क्षुद्र घण्टिका लाल चुनी रङ्ग गहरे॥

२

दीदार पायो मैं शाह अकबरको भई निहाल बन्दो।
रोशन जम्बीर पूर नूर भरो देखियत आंखन पूतरीन
हिल मिल करन मानो स्नान किए अमृत नन्दो॥

३

सलोना बड़ो बड़ो आंखन सांवरो सो ढिटोना।
नित उठ आवत जियकी ना जनावत पनघटहो मेरे
सङ्गहो रहत है नैन सैन चातुर मुख मोहना॥

४

तू एकन मानीवे ठोलन अकवर मैं तुझ कारण
क्या क्या न कियो।
और जो कोऊ बातन सुख देत मैं जोवन धन तन
मन ताहि दियो॥

५

तूनो निपट हो कपट कियो हो लाल बलैया बोलै।
मोसों हिय गाढ़ि अलिंगन को यों कञ्चुकी के बंध
खोलै॥

६

तोही जानो मन विच करम कर जो एक नाम
वरहककका।
जे चव दिश मारग तार गत ततोहो परमत जो
मानीए हरिनामका॥

७

ताहि क्यों आवै हो चेन कहांत जावो पिऊ परदेश
गवन कियो।
मन नाहीं न कल निशदिन तपन तन नेक न
अवनन कियो॥

८

गरभीलो अति ऐड़ो भरो कहीं चाल चलत मद
गजको।
मन खिलो वहु पुष्प श्रोण पर कहि कहीं छव धजको॥
गायन सङ्ग आवन मन भावन खेद खेद मुख लपट
नजरको।
मुरली बजाई रिझाई सङ्गके कहा कहीं ब्रजनिधके
सजको॥

९

मेरे आए लाल मयाकर अतिहो मेरो परम सुहाग।
मनहूंके मानो प्राण पियारे यह नैननहो में पइयत
अनुराग॥

१०

आधी रात बाजे मुरलीरी मुरलीरी मुरलीरी
सुरधुन पवन झकोरन।
बाहोंके रङ्ग रात सात मन बिचरे वंग तेरे सुनि एरी
कांन दे दान करोरन॥

११

बजावै मुरली नन्दलाल मन सुख पाए श्रवण सवाद
दरम लिए जो जो प्राण तरसहो।
सास ननद को बहानो करके सुनन आई हेरी
धेनु चरावन के मिसहो॥

१२

जाको लाल परदेश बसे ताहे आवे हा नींद कहांत।
मनहो मथत मैन तनको तपत तन अन तन अन
चैन विकुर जहांत॥

१३

सब निश जागो हौं हो तिहारे सङ्ग अबहो नेक
सोई ए हा हा सावन देहो।
अबहो नेक फेर जगायो चाहत है सो कच्चो नींद
जिन जगाय लेहो॥

१४

तेतो तेतो निपट हो कपट कियो मोसों
लाल बलैया बोले।
गाढ़ि आलिङ्गन को सहे सो कञ्चुकोके वन्ध खोले॥

पूरवी—चौताल

सोहत माहो मरातव मानो पातुर शोभा रव निशान
जा मन कातें निरत छवि सङ्ग गुरु विद विराजे।

गायन सहनाइन अलापन सुनाय अस्तुति गाय भल्यो
सुरसली मिरदङ्गी नैन सङ्ग रङ्ग पर्यो कर नायन
सब दिन उघटन कर्यो ताल धारी झाझी झर
विस्तार मिल तुरङ्गी औ पङ्गी ने सुर छाजे ॥

पूरबी—आड़ा चौताल

अब हरि काहे ब्रजवासी एहैं ब्रजवासी।
गुपत प्रगट जो मरजादा कौल वचन की हांसी ॥

पूरबी तिताला

शाह अकबर को यश कीरत गाऊं रिझाऊं सकल
सृष्टि के मन श्रवणन।
चन्द्रभान कहे गुरु के प्रसाद तें सभा में नित
पाऊं अनन्द मनन ॥

२

तू आली कलन्दर शाह असरफ रीझि तन मन सुख
कण्ठ रस करले।
ज्ञान ध्यान सों पाऊं बजाऊं तेरो अस्तुत रहम रहस
होय समाजेले ॥

पूरबी—धीमा तिताला

पीर निजामी औलिया सब मेरी इच्छा जो भर पूर।
दीन दुनीमें दोन ईमान पाऊंमें आनन्द महत
धनसों काजे हां मामूर ॥

पूरबी—म्याना तिताला

पियरवा की बाम तोमें आवे तू मोहे भावे लग गले
मोरे पिया प्यारो।
तू जिन लौ लाई तासो तुही बड़ भागन गहे
सुलच्छण न्यारो ॥

पूरबी—धीमा तिताला

पिया मोरो नथ गई चोरो तुमही लीनो छीनो।
पूंछेगी सब घरके लोगवा तुमही अचानक लीनो ॥

२

मोजा माणी मैथे माणो गर रसीया रैण समे राणो।
भांगडली पोवो सुख करो मन रङ्गमें सालुडारे
अञ्चल छाणो ॥

पूरबी—तिताला

चरण परसत आनन्द सुख भइला मोरे तन मन।
एसो पीर जरा जरी जर वकसन निजामदीन
औलिया ए धन धन ॥

ननदिरतननदिरनाहैयादोस्ततननदिरतदानि दोस्त
यारे मन सकुन वेबफाई।
हमचे मरगीनो वोशमोल मदा एदरदामें तोया वकुशया
दानादिया अजक पसआ जात कुन् ॥

२

नाजो तेरा चूड़ानो झमकंदा।
चूड़ा तेंडा रङ्ग विरङ्गी वो रङ्ग मुख मोहे पान रङ्गेंदा ॥

३

थारो जोबणरो असभाव माने नहीं विसर राजेन्द्रजी।
चटक भरो थारो सुन्दर सूरत यह जब कब आवे
नैननसो सरजी ॥

४

कान बजाई मुरली तब्रत तनकी भई आन गत।
श्रवण वेंध प्राण मन वेध्यो काममन्त्र भई विबस
भई सुन मेरो मत ॥

५

दिल वहु वुवादो कल फेर देवो साइयां तुसो ज्यो
आशिकानु जाने सदा रस माने।
सुकल वल कुलवे तुसो दान थोणा एहो।
केहा दरद बंदादा हाल पहचाने ॥

६

ए माई आज सो दिन नीको मोहे मिले प्रेमपिया
को सङ्ग।
गयो दुख दन्द होत है आनन्द और वारों नगन
जड़ित गहना रङ्ग ॥

७

जपदे तेंड़ा नाम बंदे डरदे जोई ताड़ो महर
नजर नाल पार उतरदे डरदे हजार बार।
वेशोयंद हाजे मुश्क गुलाब फनो जना मैतो
गुफ नन कमाल वे अदली ॥

मत कर बात वे मीया तु साडडी नाल वे ।
मिल करवे असी तरसादा तू सानु ना चहिए
मीया पालवे ॥

९

अततदीयनरेतादरेदानिदोमनादानितुंदरनातदारेदानि।
पेश सेयद जमने वारे खुदाजा मनुश वद एक परोदन
टासरे दिवारे मेखा हद दिलं ॥

१०

मैडाअल्ला जानेदा मैडे दिलदो बानवे ।
अदारङ्ग यह गला सच कहदे दुख दारिद्र बोच
और कोई नहीं बोसदो जानवे ॥

११

आंदावे नहीं चैन मैनु विन दोठे मइब्बादे आड़नावे
मै कोकरा दिल भर आंख देवे लोक दिवाणो मांगोल
सुनजर प्यारा जो नहीं रहम कदा मैनु साडावे ॥

१२

सुनरी मालिन मेरे पिया कारण करदे फूलन के मोल
पात पात में आप छिपे हैं रूपन के मङ्ग तोल ॥

१३

कगवा बोले मोरो अटरीया सगुन भयो ककू नीको
कुच भुज फरकन लागो आवन कहो तुमहो पियरवा
गले डारूं फूलनको हरवा सुहाग तिहारे कारण
करों सोलह सिङ्गरवा ॥

१४

अब मैं कासे करूं प्रीत प्रीत कोऊ नहीं
जगमें मीत ।
इश्कको कदर कोऊ चातुर जाने मूरख की यही
परतीत ॥

१५

मैनाल बोलदा क्यों नहीं माए इश्कदो बान पइवे ।
रुठड़े तुको होदा जान रङ्ग विरहे दोजा भाल लवे ॥

१६

मै तैड़े वारोयां जावां ढोलन साड़े नाल गलां करोवे।
सदके कोती उथे फन्दो जोथे तू आवणा चल फिरवे॥

१७

तनदिरनातुमनातदोयनरेदोम दोस्त जाने मन दरया।
नाद्रद्रदानितद्रद्रदानिदोमतानु दोस्त जाने मन ॥

१८

देखत फुलवारो वार डारो तुम कौनसे आँख मारो ।
जानो तैतो कदर न जानो हमारो राज करो एसो
झूठो प्रीत तुमारो ॥

१९

देख दरबार गाजो मलार को कष्ट जावे धोवे ।
दरिद्रहरण पीर सुखदाई सबन के मेरो तो
मुराद तुमो तन होवे ॥

२०

मकदूम साहब बिलायत सब विध लायक अल्लाह
रसूल ।
साहब जलाल साहब कमाल घड़ो पल छिन में
केतोई कोनो औलिया चहूं चक्रमें तिहारो धूम ॥

२१

मोरो नइया पार करो रे अब निजामो ।
तुमहो पीर गंभोर ज्ञान अन्तरयामो ॥

२२

कनगुरोया को सुन्दर मोरो देहो मोत पियरवा
मोरे ए पियरवा मोता मोरे ।
जैसो वैदनोया दिरानोया जेठानिया सब मोरो
उन तन मोरा जो डारे वारोरे जाऊं मै तोरे ॥

२३

अबतो तासां लगन लगो नोद क्यों तरसामो ।
पहले तो हंस बस कर लोनो अब जिनि करो
अनोति स्वामो ॥

२४

मैडा ढोलना है नादान हो साँवरे नूर वदो अमान ।
अँखिया तेड़ो वारो वे दिल बोच खूबो काभो तो
कार पहचाँन ॥

२५

मैंडा नेह तुमोसन लागोला मोत पियरवा
सुरजनुवा वलमाँ ।
सदारङ्ग सन हँस बतीयाँ करले रङ्ग रम बलमाँ ॥

२६

पीर चिस्ती हजरत सुलतान निजामदीन
औलिया ए महबूब ।
करतार आप बनायो नूर तेँ मासूम सूरत खूब ॥

२७

तेरी वलैया लेहूँ मनके भवनवा सुरजनवाँर ।
निजामदीन औलिया आपे कहा पढ़ डारो जन्तर
मन्तर टोनवाँर ॥

२८

पियरवा मे तोरेरे मजनवा मोरे वालमुवा
मीत पियरवा ।
जा कारण हमोमन रूस रहो बलमा जाओ
ताही के तुम बसो जियरवा ॥

२९

मेरो मन तुमोसन अटको लालन चरण धरत गत
ठुमक ठुमक नाको चालन ।
ताना थेई थेई निरत करत हो छूम छननननन
घुंघरू बाजे मोह लई ब्रजवालन ॥

३०

एरी मोकों सब सुख दीनोरी दूध पूत और अन धन
लच्मी पिय पायो गोविन्द रङ्ग भीनो ।
अधमउधारण यशविस्तारण कृपाकरण दुखहरण
सुखकरण आजज कों सब लायक कोनों ॥

३१

आज बाज बाजरे मन्दिलरा पियके आवनके काज ।
सात सखी मिल देहोँ वधाई वादी नन्दराय घर
मन चित भइले काज ॥

३२

सवाजी मानें साँगानेरी सालुड़ा मङ्गाय दे ।
घट मालवारा चुड़ला मगायदे अँगिया मैं
अतर दिवायदे ॥

३३

यारी मैँ क्या जोरी पियारे हाँ हाँ हाँ हा हा पियारे ।
मुरली बजाय रिझाय लियो मन गड़े बहिया
झक झोरी पियारे ॥

३४

लङरे मोरी श्याम डंडुरीया कैसेक भरूं जलकी
गगरीया ।
बाट घाट मोहे रोकत टोकत अब न रहोँ तेरी
मथुरा नगरीया ॥

३५

घोलो अलावे कड़ंड मकाम थीं वी दिल राजी ।
[illegible]
दिल राजी ॥

३६

मेहरा मोरे लाडले टावो गुँधलावो मोरी
मालनीया ।
वेला चमेली दौनामरुवा जोहा जुही हार पहरायो
लालनीया ॥

३७

सब सोता मोरे मोती लर गइलो तुमही लोन ।
सुन पावें मो घर के लोगवा कोँन उत्तर हम
देवहो तोरे हार लोने कोन ॥

३८

मत कर बात वे मीयाँ ।
तूं साडड़े नाल मिलकर असोत सादे तू सानु
नाच हो के मीयाँ ॥

३९

मैंड़ी अल्ला जानदा मैंड़ो दिलदी बातवे ।
अदारङ्ग यह गलाँ सच कहदे दुख दरिद्र बीच
और कोई नहीं विश्रदो जातवे ॥

४०

जब निरखूं सुन्दर दरशन तोरा तब व्याकुल हो
चित नित लागी रहेत मूरत नैननमें ।
निशिवासर कलन परत विन देखे सइयाँ घरो पल
एक एक छिनमें ॥

४१

जे कारण हमोसे रूस रहे बलमा ताहो के बस
आए निश बसो एहो।
एती निठुराई काहूसे न कीजे हो पीतम
निपट कपट कर ना हँसोएहो॥

४२

सोहलरा गावो सब मिल सखी सहेलरी साजन
घर काज।
तत्ता धीधी थं थुं ननना तकट तका धिधि किट
तक्धुम तक्धिधिग नधा बाज॥

४३

तोरेरे रङ्ग माती वनरे ए वनरे ए मेरे मैहदी लावन दे।
चंदुवा तनाइला मण्डवा छवाइला सुवासन सब आईलो
बधावा गावन दे॥

४४

जो जो बतीयां कहो हतीं तब कछू नथा पाया मनवा।
एह्न न जाने वेह्न न जाने उन कर भेद बतावा॥

४५

सुलतान निजामदीन औलिया मकदूम चिस्तो
चिराग रङ्ग रङ्गीले पीर घर आनन्द बधाई।
राग जमावें गुणो गायक आवें देश देश तें
मात सुहागन पूरवो गाई॥

४६

तूं जो करले घर अपनो परमेश्वर पास।
और नहीं कोई तेरो छोड़दे सबनको आस॥

४७

मै कुरवान कीती यावे माड़ड मीया जोधे तू वे
पैर धरे नोवे।
जिन्द कुरवान दीती तैड़े नाल विन दीठो या सानु
कलन परे नोवे॥

४८

तोरोरे रङ्ग माती वनरीरे वनरे मैहदी लावनदे।
चन्दवा तनाइला मडवा छवाइला सुवासन सब
आइला रङ्ग बधावा गावनदे॥

४९

को तकसीर पाइवो मैंडी भला यार मुख ह्न न बोलेरो।
विनती मान लेहो जरा विहारो बलिहारो यादे
जियदी गांठन खोलेरो॥

५०

गुजरीया गरवन करारी दै दै दधि को दान।
कबके गोपाल माँगत तोसों इती निठुराई ना कर
मानले अबहीं अजान॥

५१

प्यारे मोरे आवो घरु मैं करूंगी आनन्द वधाई।
शुभ घरी शुभ दिन शुभही महूरत आनन्द मङ्गल गाई॥

५२

हर दम याद करे मौला नाम को जोय धर नित।
अदारङ्ग सांची कहे बात अब तुम सुनहो उनहीं
को जहर जित उत तित॥

५३

सगवा जोहत याह्न बीतत निशदिन आलो
कहा कहीं उन विन रहन सकत मोरा जोऊ।
हमसों अवध वद अनत विरम रहेले पोऊ॥

५४

कगवा बोलइरो तू आगम आवन को पिय कहो
बात आय।
कुछ भुज फरके और आंखि बांहो वेग मिलहो
सों धाय धाय॥

५५

मुंह को तू अति मीठो लागत ए मीसरीरो पीके।
अमृतवचन सोइके लडुआ खात गुप चुपहो रहीलो
कोऊ तियान लागत तेरे नीके॥

५६

एनगरू विगानो तुम जो कहो सो घर आपनोरे
ए नगर गए।
अदारङ्ग दी गल मानोगे में उठवे दानाए॥

५७

वे क्यों नहीं साडडो गलियां यार वे हो भला वे
यार वे आवदा।
ए बातें नहीं भलियां दिलदा भेद ना बदावदा॥

पूरबी—आड़ा चौताल

पियसनवा मोरी मा जो जो बतीयां कही हती
तब वहां कोउ नथा।
एक न जाने वेइ न जाने माइरी उन कर भेद
बताव मता॥

पूरबी—तिताल

करत कोउ कैसे जान मिताई।
बच पच चितवत तोख पोक सी भ्रू कमान दुखदाई॥
प्रीत करी कामर वा सों मै कछू जान भलाई।
वे अँखिया देखन कों तरसत अदारङ्ग एसी कीनी
खोट कमाई॥

२

यांही रे पीया विन एक टक लागी।
निशदिन निरख निरख देख दुख दूनो भइयो
नैन सइयां अनुरागी॥

पूरबी—एकताला

वाको नगर वेतो टोट लङ्गर जिय ना रहे एगी
हौंतो न जाऊंरी।
जबही देखों दूरतें आवत दौर धाय परोहौं पाऊंरी॥

२

दिलीया नगरमें यश गाऊं जै जै हरफ दक्षिणा
के सोई मैं पाऊं।
सुलतान निजामदीन तुमहो प्रवीण हो आधीन
कैसेके रिझाऊं॥

पूरबी—तिताल

मेरी नथ चोरी गइली तुमही लीनो।
जब पूछेंगे नगरके लोगवा तब मैं कैसे करिहों
आचर में छीनो॥

२

आयो भँवर रस ले गयो माली।
आवैगो माली सींचेगो क्यारी तोड़ेगो कलियां
सँवारेगो डाली॥

३

अणो अणो अणो मैंड़ा दिल विच चाक चाक चाक
वाझो चाक।
पुनि यानु लगन अंगो दोने नियां चरखे दोसोर खाक॥
चकिया दीन जरीण निकलवे नोया एहो डाढा
चालाक अणो अणो अणो।
हँजुवा नालो चिकड़ होदा आण नैना नु लगी ताक॥

४

अहेकी हाज टेढ़ा सइयो नीजे जाणदा लख आदाई।
नाहक नजर बिचो गोलिया करले बड़े बड़े
महका दीया भाँई॥
इसदी गल्लां गुझा तु सानू बूझो मैंदी में दीया
क्योंलिही लाई।
जिन देले दोमि वल छाती पाई खेड़ेदी मैंड़ी सिन्द
चाइ माई॥

पूरबी—एकताला

दैरन लाज मेरे पाछे परी हैरी अब में कैसे करूं
मन बौराए।
घरवा न उन विन लगत मेरो मन माधो मूरत
हियमें बसाए॥

२

द्रतुमृद्रद्रनातनमृदिरनाआतारेदानिहैयायारम्
यललीयलीयललललललेद्र।
गरचे पुर आंहकी मम केचे आवुरदी निजाम सोज
खुसरो राव दरगाहत ते याज आंवुरदअम्॥

३

जब निरखों सुन्दर दरशन तोरा तब व्याकुल होवे
चित नित लागी रहे मूरत नैनमें।
निशिवासर कल न परत विन देखे सइयां घरी पल
एक छिनमें॥

४

तिहारो कौन कौन बातन को परेखवा करिहों
बलमा तुमतो हो ठौर ठौर के मनभावन।
तेरो नेह जग उर लाय रहो जैसे बरषाऋत सांवन॥

५

दूरसों मारना वे नजारा।
खलक सांईदा मूल करामदा क्याहै वो किसीका
इजारा॥

मन्दिलरा बाजइरे मोरी माई ।
धाक धिला धिला धीधी कुकुकुकुकुकुकुझांझां ।
आई चंगीतरे लगाई बाजत भेर मृदङ्ग धिकोटिन
किटित कीटित किड़ किड़किड़किड़झांझां ॥

७

मीयाँ मैनू तेरो सूरतदा हेर नहीं दीसदा जोदार
है जग ताई ।
मुजवेनो मीणोदा वोही मेरा साँई राखो मोहे
अपने नेड़े गरे लग जाई ॥

८

एरी माई होंतो जाउं वाही देश जहां मोरा पीय
वालम रङ्गीलो ।
पिय विन मोकों भावे न सुहावे घर आंगन दुवर
भडूलो ॥

९

मै नाल बोलदा क्यों नहीं माए इश्क दीवान पइवे ।
कठड़े तुको छोटा जान रङ्ग भाल लइवे ॥

१०

घर मेरे महबूब निजामदीन आयो माई घर मेरे
आयोरी ।
आज सुहाग को रातरी सदारङ्ग न्यामत लायोरी ॥

११

नथड़ी मङ्गाय दे साजना मोंको मोती डालवा
लगायदे ।
गोरे वदन अति छवि छाने म्हाको मनडा रीझायदे ॥

१२

नथ मुरकानीजो राजीन्द्र ढोला मारु ।
मोती मगायदे सायवा अनमोला बेसर मगायदे
म्हाने अच्छो नीको सारु ॥

१३

मुवारक बांदीया शादीया तोहे दीनो अल्ला रसूल ।
चोक पुरावोनी मङ्गल गावो आनन्द भएहैं कुझल ॥

१४

मै तैड़े वारीयां जावां ढोलन साड़े नाल गला करवे ।
सदके कीती इथे फन्दी वदी जिथे आणा चल फिरवे ॥

पूरवी—तिताला

विन मद पिये मतवारो अँखिया अँखियां वे काँई
अँखिया ।
काहेको अञ्जन डारो सखीरो तेड़े नैन कटारीयां
लखियाँ ॥

२

आयो भँवर रस लेगयो मालो ।
आवेगो माली सींचेगो क्यारी तोड़ेगो कलीयां
सँवारेगो डालो ॥

३

माई अतत दनुतारे दानी अततदनु ।
तातिलेरे तनदीयनरेतुमतननतुमतानन ॥
पँज आदे इश्क लेवा सेपरसाईं परसोदत ताने
मालह्नु मता राजे पियाके नोहझार सो यश ॥

४

खवी वे मीयां यार मीयां मैवारी तेरी वाकी अदा मेरे
दिल विच ।
सोहनी मूरत मद भरी अँखियां जादुड़ा कीता वो
यार एक पल विच ॥

५

पिया महबूब पीर के घर आ मोहे बन्धावो धीर ।
सुलतान निजामदीन औलिया महबूब पीर ॥

६

मेरा दुख दूर कीजिए सुख दीजिए तुम एसे
गरीवनिवाज हजरत सुलतान औलिया ।
तिहारे दरवाजे गुलाम ठाड़े अरज करे या हजरत
महबूब अपने गरीव पर फजल कीजिए दान दिया ॥

७

तदानीतानदीरनुदीमतदीम ।
तदीम सारेगमपधनिसासानिधपमगरेसा ॥
चतुरङ्ग गाइए बजाइए रिझाइए महम्मदसा को
धाकिटतकधुमकिटतकधेतलाङ्गधुमकिटतकधा ॥

है यारे मन यलायलयालललललेतनदिरना उदानी
दानीतदानी।
नादृदीमृतुमद्रदीमृतनदिरनाओदानोदानीतदानो
तदानी॥

९

मारु रङ्ग लावै मारु हांवे मारुरा राजीन्द्र पै
पीयारा सजन मेरे आया।
ऊंची थारो माड़ो मायवा लाख भरोखे भांखोला
मुजरा न पाया॥

१०

कहत थे यों नेह लगी कबहून छूटे।
जावो जू वार हो तुम उनोंके भला सदारङ्ग भूंठे॥

११

हियारेमनयला२लैदोमृतनदृहृदानी।
तननादृद्रतंतननननननननननदोमतननननननन
दृद्रद्रद्रदानी॥

१२

अतना द्रनुम तारेदानी नादानी तादानी अहं याहां।
तानिले२तानाद्रियनरे तुमतनन२ननपंजदये इशक
तलेवाशिपार साहिपारे सुद तातं मतसाल अमृता
राजेय कन जरा सुद॥

१३

मीत सुरजन मोरे तुमरे बिना कल न परेई।
निशिदिन मोकों ध्यान तिहारो सूरत न मोरी
बिसारी रहत ध्यान तेरेई॥

१४

नईरे लगन मोरी लागी।
तेरे रङ्गमें मैं निशिदिन रहत हों रंग पागी॥

१५

दानीदीमतनदिरनातदीमतननतननतदारदानी।
उदननउदननधितिललाअतिलिलानातननन
द्रद्रद्रदानी॥
बुल बुल नयम् किनार जनम् दर दसर दयम परवान
अम् केसो जमोदम वरन यावरम॥

१६

पूरवी मुरीद होवें कुठाड़ी हजरत सुलतान
निजामदीन औलीया पीर महबूब के आगे आयके।
दारन वो खल फुलवन सन भरके सबही बाजन
बाजन लागे कठताल वे हाथ बनायके॥

१७

धन धन रातरीयां सुहाग की प्यारा मोरा
मिलिया मा।
सुलतान निजामदीन मेरे घर आया मो अब रंग
घुलीया मा॥

१८

एरी सखी आनन्द मङ्गल गाऊं अपने लालन
कों गाय बजाय निरत के नीको भांत रिझाऊं।
उघटत सङ्गीत ताथेया ताथैया थैया लामब तांव तत्ता
धीधीथुंथुंनानाधाकिटनकधुमकिटतकघड़ान मृदम्दङ्ग
धाधीगनधा बजाऊं॥

१९

धुमकिटि२बाजेमन्दिलरा तताधाधाथुंथुंनाकिट
तकधुंकिटविकिटतकधा यशुमत जायो कन्हैलरा।
आवो गावो गुणीजन रंग जमावो नन्दमहर घर
आज बधावो मृदुधुन मृदङ्ग बजावो रसीलरा॥

२०

काजर कारे अतिसुकवारे नैन तिहारे प्यारे।
निरखत लगत करत मन बसमें चपल चोंप
अनीयारे॥
माते मदन प्रेमरस बिलसे रति जोते रण भारे।
निधड़क ख्याल खुशाल करत हैं भरे नेह रस सारे॥

पूरवी—चौताल

एसो बनमाली ब्रजचन्द है नवल आली नागर
फुलवारी बन बृन्दाबन लगाई है।
कोई द्रुम ठाड़े कोई भुके कोई चलत फिरत
कोई कोई योधन ऊपर उमग उमगाई है॥
कहूं कहूं उरन में राजत विराजत मेवा कहूं कहूं
फूले फल वेली हरियाई है।

छाय रही अतिहुलास जहां तहां रस विलास
नित प्रत खुशाल श्रीवर दिखलाई है ॥

पूरवी—एकताला।

माई मेरे नैनन वान परोरी।
जादिन नैना श्याम न देखो बिसरत नाही घरीरी ॥
चित बस गई साँवरो सूरत उरतें नाहीं टरीरी।
मीरां हरि के हाथ विकानी सरबस दे निवरीरी ॥

२

वंशी गोपाल की आज बाजे।
अद्भुत तान तरङ्ग मधुर धुन सप्त सुरन सों साजे ॥
लाज धीर कुल कान मान डर सुध बुध श्रवण सुनत
सब भाजे।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम सों मिल सब
ऊपर गाजे ॥

३

रही दोऊ वदन निहार निहार।
फूलन बीनत श्याम सखी उत इत राधा सुकुमार ॥
लता करणमें रह गई इतवितसों कौन सकै निरवार।
नागरी मिल नैन दोऊजन के बड़े ठगन ठगवार ॥

पूरवी—तिताला।

डमरू डफ बाजे और बाजे ताल घुंघरू मुरछङ्ग
वीण रवाब किन्नरी झाँझ मृदङ्ग।
डिम डिम डमरू दारा तवले सारङ्गी सितार तमूरा
तुरही नफीरी मुरली सुरनाय करनाल जीलवन्ध
बक्रानुन कटताल ढोलक जलतरङ्ग सुरमण्डल
मोन ख्याल रङ्ग ॥
राग जहाज पुङ्गी अलगोजा सारङ्ग बंशी वीण बजाय
निरत करत तांडव लास्य गाय कबही एतेरे आगे
अलख रङ्ग।
एकतारा उपङ्ग पैना पोट वेला अरगन तुरही
नृसिंहा मञ्जीरा नादवीण सुरवीण सरस्वतीवीण
तम्बूरवीण हंसराज सरोद स्वरसागर हरि आगे
करत है रागरङ्ग ॥

पूरवी—चौताल

समुझिन परत गति मति राम तिहारी अकथ
कथाकी बात।
जग प्रपञ्च रचि कियो तामें अनेक जीव भिन्न
भिन्न प्रकृतिरूप मायारत मोहवस जन्मत मरत
केते आवत केते जात ॥
योगी यती तपसी तप करत त्यागी ज्ञान कथत
अरू पढ़त विवेक सहित भ्रमण सकत टारी फिरि
फिरि जात अकुलात
लछमणदास जबलोन रावरी कृपा होत तवलो न
सूझि परत काम क्रोध मोह मदलक सेवत
आठोयाम कुमति क्षुधा सोई फल खात ॥

रूपकी

शरणकी लाज करिए महाराज।
कृपासिन्धु प्रभु अन्तरयामी राम गरीवनिवाज ॥
कोटिन अधमतारे छिन माही भये सकल शिरताज।
लछमणदास ठौर निज दीजिये कलिमें नाम जहाज ॥

२

मन मूढ़ न मानत कितो समझावत फिरि फिरि
वाही गैल भ्रमत।
मोह निशामें मातो सोवत जागत काम क्रोध मद
मत्सरताही में मति रुचि उपजावत सांच मानि
जग जानो भ्रमत ॥
ज्यों मतङ्ग मधुरस वस डोलत अरु सांकरी बेड़ी
पायन ज्ञानन अङ्कुस शीश रमत।
लछमणदास न सुरति करत बलराम रावरे पदपङ्कज
में जाको सुर मुनि ईश नमत ॥

पूरवी—एकताला।

तिहारो वान निपट निठुर दया हीं नाहीं करी पहचांन।
हौं भोरो तूनिपट सनेही कौन रची विधना विध आन ॥
अब आनन्दघन घुमड़ भरोसे प्राण पपीहा नदान ॥

२

लहरी मोरी श्याम हड़ रीया कैसेके भरूं मैं जलको
गगरीया।

बाट घाट मोहि रोकत टोकत अब न रहूं तेरो
मथुरा नगरीया ॥

पूरवी—चौताल

काजर कारे अतिसुकमारे नैन तिहारे प्यारे।
निरखत लगत करत मन वसमें चपल चोंप अनियारे ॥
मातें मदन प्रेम रसविलसे रित जीते रणभारे।
निधड़क ख्याल खुशाल करत हैं भरे नेह रस सारे ॥

२

एसो वनमाली ब्रजचन्द है नवल आली नगर
फुलवारी वन वृन्दावन लगाई है।
कोई द्रुम ठाड़े कोई झुके कोई चलत फिरत कोई
योधन ऊपर उमग उमगाई है ॥
कहूं कहूं उरनमें राजत विराजत मेवा कहूं कहूं
फूलि फूल वेली हरियाई है।
छाय रहे अतिहुलास जहां तहां रसविलास नित प्रति
खुशाल ओवर दिखलाई है ॥

पूरवी—एकताला

माई मेरे नैनन बांन परोरी।
जादिन नैना श्याम न देखों बिसरत नाहीं घरोरी ॥
चित बस गई सांवरी सूरत उरतें नाहीं टरोरी।
मीरा हरिके हाथ विकाना सरवस दे निबड़ोरी ॥

२

वंशी गोपाल की आज बाजे।
अदभुत तान तरङ्ग मधुर धुन सप्तसुरन मों माजे ॥
लाज धीर कुलकान मान डर सुध बुध श्रवण सुनत
सब भाजे।
रसिकगोविन्द अभिराम श्यामसों मिल सब ऊपर
गाजे ॥

३

रहे दोऊ वदन निहार निहार।
फूलन वीनत श्याम सखी उत इत राधा सुकुमार ॥
लता करणमें रहगई इत वित सों कौन सके निरवार।
नागरी मिले नैन दोउनके वड़े ठगन ठगवार ॥

पूरवी—तिताला

डमरु डफ बाजे और बाजे ताल घुंघरु मुरछङ्ग
वीण रवाव किन्नरी झांझ मृदङ्ग।
डिम डिम डमरु दारा तबले सारङ्गी सितार
तम्बूरा तुरही नफीरी मुरली सुरनाय करनाल
जोलवन्ध बंबकानुन कटताल ढोलक जलतरङ्ग
सुरमण्डल मीन ख्याल रङ्ग ॥
राग जहाज पुंगी अलगोजा सारङ्गी वंशी वीण
बजाय निरत कर तांडव व्याख्या गाय कवही
एतेरे आगे अलख रङ्ग।
एकतारा उपंग पैना पोट वेला अरगन तुरही नृसिंहा
मजीरा नादवीण सुरवीण सरस्वतीवीण तम्बूरवीण
इसराज सरोदय स्वरसागर हरि आगे करत है
राग रङ्ग ॥

पूरवी—एकताला

जानकी कनकभवन में राजत सङ्ग सहेली।
रूपउजागर सब गुणआगर नागर गरव गहेली ॥
मागन ढिंग बैठ जाय पायन परत धाय बोलत
मधुर सुरवानी बोली।
लछारामदास का नर भज नित नित प्रीति नवेली ॥

पूरवी—तिताला

योगी डारे सेली कर जप माला फिरत श्याम गर राजे।
भस्मअङ्ग अहिमाल विराजे डम डम डमरु बाजे ॥
वाहन वृषभ बसत सब माही जोई करो सोई छाजे।
याछवि की उपमा को कर सके कोटि काम लख लाजे ॥

२

तान तरङ्ग है सप्तसुर रङ्ग जिन लगाम सुध अलापन।
मुरछना गज गाह ताल तरल अदभुत गत हय कल
लेको धुरापन ॥
धारु धुरपद काव्य सजजो ताल सवार गज गमक
निडेशन।
हरिदास डागुर उत्तम नायक जो गुण लहे
गहवाये मन ॥

पूरवी—चौताल

कमलदललोचन गुणनिधान सुजान जानराय
रामचन्द्र सुखसागर अतिदया दुखहरण ।
दुर्वादल श्याम लाग कोट मुकुट विराजत धनुषबाण
सोहत मोहत सबको मन सरजूके तीर तीर डोलत
सखा सङ्ग कोमलचरण ॥
नख शिख भूषण शृङ्गार मनिगण गर मुक्ताहार
केसरिको तिलक भाए कटिपटवर पीतवरण ।
लक्षणदास शीतल नैन अवलोकत नारि नर थकित
होत अङ्ग अङ्ग रघुवर मूरति जगतारणतरण ॥

२

गरुड़ चढ़ि धाए आए गजहि उवार्‍यो वार्‍यो क्षण
माहिं प्रणपालन गोपाल ।
दीनवन्धु करुणामय केशव आरतहरण शरण राखन
निज एसे दीनदयाल ॥
भक्तन लाज काज वपुधारन दुष्टसिनूधारन कारण
युग युग जब कीनों प्रनिपाल ।
लक्षणदास विरद सम्भारण कृष्णकमलदललोचन
स्वामी कीरति विशद विशाल ॥

३

जानकीरमण सुखभवन दुखदवन प्रभु जान शिरोमणि
सूरजकुलमणि राजाधिराज ।
दशरथनन्दन असुरनिकन्दन जगवन्दन प्रण तारन
भंजन युग युग जन राखत लाज ॥
जनक प्रतिपालन कठोरधनुष खण्डन भूपन
मानगञ्जन राज समाज ।
लक्षणदास यश प्रताप तीन लोक चौदहभुवन
गावत यश सुर नर मुनि धन धन राम महाराज ॥

पूरवी—एकताल

सुनो सखी बांसरिया की तान ।
श्रवण सुनत सुध रही न तनकी मोहन मोहे प्राण ॥
घर अङ्गना न सोहावे न भावे विन देखे श्याम सुजान ।
जानकीदास कोई आन मिलावे हरि सब गुणकी खान ॥

छबीली नागरी हरिजो सों मान न कीजे ।
जागे रङ्ग रङ्गो व्रज सगरो ताको मया मो जीजे ॥
काहेकों बड़ो बड़ो सांस लेतहै असुअन अचरा भींजे ।
शङ्कर्षण प्रभु नीलकमलदल मधुकर होय रस पीजे ॥

३

रङ्गीलो रामको अँखिया ।
सुर नर मुनि जन जीवनखञ्जन मनरञ्जन पखीयाँ ॥
कृपाकटाक्ष लक्षण छवि आछि मृग छोना छकीया ।
सुन्दरवदन सुधा सरोवर मध मानहुँ युगल गुरो
झँखीया ॥
प्रेमरङ्ग कारे विन कजरा नैन मिलाय लखीयाँ ॥

४

भली भई आए हरि मेरे ।
हीरङ्ग रलीयाँ आनन्द मानहुं काज भए मन केरे ॥

५

मोकों माई निशिदिन सुरत लागी रहो नित
पियको ।
कहा कहों कित जाऊं सखीरी कासों कहूं
जियको ॥

६

लगी है सांवरे की सैन ।
अति तीखो चुभ रहीरी मनमें परतन कीहूं चैन ॥

७

व्रजके निवासी अरे हरि कान्हा ।
हीरङ्ग रलीय अपनो उमगसों वंशी बजाय मेरो
मन वौरान्हा ॥

८

भाग सुहाग वाहीको बड़ोहै जोई सखी पियके
मन भाई ।
जाको छवि प्यारी लगी पीयकों राखे सदा हियरे
लगाई ॥
वोगुण कौन है कोई बतावे जौन गुणन मन
पियकों रिझाई ॥

जब तक जागत तो पिय रहे सनमुख सोवत
कण्ठ लगाय सुवाई ।
पिय सङ्ग तेरो बन रहे काजम अरु पिय कैसे
बन आई ॥

४

छैलरे मोरो कान डगरीया जानेदे घर कहूं
फूटे न गगरीया ।
तूं छेड़त लोगनके आगे लाज आवत जिय मोरे
मगरीया ॥
जाय छेडो केहु औरको मोहन मोहीसे कहा
तोरो अटको पगरीया ।
देर लगत मोरी सास लड़तहै यही कारण कल
मोसे भगरीया ॥
यह विध जो नित छेड़े तो काजम कैसे रहे बह
मथुरा नगरीया ॥

पूरबी—तिताला

यशोदा अन्त हमारा कर राखोरी राम राम
करलेरो ।
माथे खवरू कर लिए माला नाम साईं का लेरो ॥

२

निगगममपमगममगगरेसा ।
गगमधमारेसानिधपमधनिरेधनिमधगगममगगरेमा ॥

३

लाल तिहारो बतीयन मेरो मन वस कर लीनो ।
जो कछू कहो सो नेक न मानत एतो दुख काहे दीनो ॥

४

पियको खवर मोहे आन सुनावे ।
जारे कगवा तोरी लूंगी बलैया सुख आवे दुख जावे ॥

५

नैनन लागो एरी मेरे तिहारो श्याम सलोना ।
जानकोदास मिले हरि प्रीतम एक सुगन्ध
दूजे सोना ॥

पूरबी—धमार

गोरी तू गर्भ गुमान भरी जोवन मद छकी
डोले आज ।
मदनमोहन सों सैन करतहै छोड़ दई सब लाज ॥

पूरबी—तिताला

मा पइयाँ लागोलो सइयाँ विन रह्योलो न जाय ।
जबतें देश विदेश गइलवा तबतें कछू न सुहाय ॥

२

सुन मोरे नाहा हमसों जिन बोलोरे तुमरे पाय लागूं ।
घरी पल छिन मोहे कलन परतहै रैन दिना मा जागूं ॥

३

एरो हौंतो जाऊं वाही देश पिया जहां मोरा
लोभाइला ।
जबहीं देखो नजर सदारङ्ग चरणनमें जाय
समाइला ॥

४

कनगुरीया की मुन्दरीया मोहे देहो मङ्गाय मात
पियरवा बलमा मोरे अनुयाईरे ।
एकतो वैरन मेरो सास ननदीया दिरानीया जिठानिया
सब मिल हम सन मोरा जियरा डराईरे ॥

५

जो पीऊ दरवजवा लागी ठाड़ो रहूं मैं ठाड़ो
जोऊं वाटड़ी ।
रुणक भुणक बजत बजन वान बसत साज शृङ्गार
पियरवा पिय आवनको वेर भई थाटड़ो ॥

६

भलो भई हरि मेरे आए पूजी इच्छा मनकी ।
हौं रङ्ग रलो मन मनावो साल भए सोतनको ॥
पूरव पुण्य प्रताप तें श्यामसुन्दर देख तपत
गई तनकी ।
रागरङ्ग प्रभु पायो मै अपनो रतन जतन कर
राखो ध्यान उर उनकी ॥

पूरबी—धीमा तिताला

आज चलो माई औलोया पीरके दरवार देखो
पूरबी दुलहिन बन आई कर जोरे गावत राग रङ्ग ।
सुलतान मशायक मानों व्याहन चढ़िया सब प्रथमो
बराती मन रङ्ग वाको धन धन रात रङ्ग सङ्ग ॥

पूरवी—तिताला

मौज दरीया का लेखारे ।
दिलदरियाव सांई नाम खेवटियारे उतरे वो
नाम परेखारे ॥

२

देश देशनको पातुरन तेरो बहुत यश करो ।
तोरे रङ्ग राय तोसीकों पै सरवर बाँधि को धरो ॥

३

करीम रहीम अब चल पातसाही तुम कोनैं
करतारकें ।
धन करम जान आए खिदमतमें तुमारी सब सरम
भट आवत संसारकें ॥
जैसो नीमरूद भूलो आपन तन सम मकरन लागा
सकत आगे साहबको भारकें ।
अहमदशाह राज करो कोटि वरसलौं आलम
हुसैनन के सिपाई सरकारकें ॥

पूरवी—जलद तिताला

मेरे आए लाल मया कर अतिही मेरे परम सुख आज ।
मनहूकी जानी प्राण प्यारे नैननहीं में पइयत लाज ॥

पूरवी—तिताला

पीर निजामदीन औलिया सब मेरी इच्छा दो भरपूर ।
दोऊ जहान मैं दीन ईमान पाऊं आनन्द सहित
धन ज्यों कोजे मामूर ॥

पूरवी—होरी ताल

लाडले बनरे बनरीसे रङ्ग लागा ।
अतिही जोवन मद मातो सब निश जागे बनरी
सों तू पागा ॥

२

बांका सुरजन नैन मिला सांई रब विन दिठडे नाहीं
राजो ।
मेरो तेरो लगन लगी काकरेगा मुल्ला कहा करेगा
काजो ॥

पूरवी—एकताला

मस्त फकीरो रहो लागीरे वैरागी रामारे ।
अङ्ग भभूत गले मृगछाला राम नाम पागोरे ॥

२

नजर भर दूरसे देखनावे अजब तेरे जग बेखनावे ।
खलक रामदा मुलक मोहन क्या कोसोदा वेखणा
नजारा दूरसे मारणावे ॥

पूरवी—ताल धमार

लङ्गरीया गरभ गुमान मत कर पियासों तेरा
जोवनाहै दिन चार ।
तन जोवन अङ्गरोंकि जल ज्यों जातन लागे वार ॥

२

अहो कैसे मानेगो मन तुम अनत जाय रित मानी ।
मुखकी मोह से जियको औरनसे कहा मनमें ठानी ॥

३

अहो कैसे जान पाओगे भर होरीमें कल जो गए
तुम भाग ।
गारी दूंगी दिलाऊं सबनपै सुख मोड़ोगो आज ॥

पूरवी—चौताल

करपै गुलफ धरे तिय दुचित अनमानी करकें
शृङ्गार विरहन ह्वै के बैठिरी ।
पिय पिय रट लागी मग जोहत मोहत रङ्ग
उमंग भरी आलस अङ्ग अङ्ग मरोरत ह्वै कर ऐंठिरी ॥
नखशिखलों आभूषण भूषण जग मग रह्यो पिय
आवनको उमाह नाहन पल नेक लैटिरी ।
बैजू प्रभु मन मानी आय गए वाही छिन धन धन
भाग सुहाग नार अङ्ग सङ्ग भेंटिरी ॥

२

मुरली बजावो रिझावो मनमोहन मधुर मधुर
स्वर तान ।
सप्तोन इकईस बाईसो लाग डाट और मान ॥
ठाह भेद विलम्पत आतक खातक स्वरान्तक औड़व
खाड़व पूर्ण आन ।
तानसेन प्रभु सङ्गीत गतले नृतत करहो सुगान ॥

३

बहुरि बजावो बंशी कान्हर रचक छांहां ।
तेरी मुरली मन मोह लियोहै मधुर बजत यमुना
तट छांहां ॥

माइरी कठिन कठिन कर बिहानी आजकी रैन
मोहे लागीहै काम लूक ।
सुनरी सखी जैसी मोपर बीती गिरद उरद आन दई
चातिक कूक ॥

५

दैरागी आवत मेरे जान ।
जाको मिलन वैराग ढूंढ़ फिरो काहू भेद न पायो
करेहै नित ध्यान ॥

६

काजर कारे अनियारे रतनारे नैन बनो अञ्जन
कजरारे ।
तीख चोंक चटक लागो रहे भौंह कमान तिरछी
चितवन रहत मतवारे ॥

पूरवी—सुरफाकता

तुम रावत गुणीयनको महिमा मान ।
अनेक गज तुरङ्गगण और हीरा नग देत करोरन दान॥
इच्छा पूजवो तुम मेरी मनसाके दानी दान ।
अल्लाह के नजीकी नबीके दुलारे प्यारे पीर मन पोरन
मो आजजकी विनती मन आन ॥

२

सोगत क्यों न लेजो साधि गुरुकी ।
औड़व खाड़व सुर सम्पूरण तान पूरण परत
सांचे सुरकी ॥

३

मै पलन जानन देहों प्यारे कों बहोत दिनन बीते
मेरे आए ।
मेरे जान काम सूरतसों अब शाह विक्रम पाए ॥

४

अकबर गुणसागर गुणविद्याआगर गुणी पावै राग
रङ्ग पाग ।
जर कामर और पट पटपर अनेक लाल हीरा दए
एसे सेत मन्दिरमें रागी अन वैराग ॥

पूरवी—तिताला

हरिनाम बोलले सुगना तेरो जनम सुफल सब होय ।
एक दिन प्राण पिञ्जरातें जब उड़ जायगो तब
कछून बस चलिहै हरिके चरण चित पोय ॥
वृथा जनम जात है तेरो तनके पातक ले धोय ।
बैजू प्रभु परम कृपाल दयाल है पतितपावन है सोय॥

२

है यह माननी मनायवे कों अतिही हुलास जिय
मनहू न माने पिय कैसेक मनाइए ।
बहोतही सौंह दई उठ चल फिर प्यारी वाके पाय पर
धरो सीस नवाइए ॥
माने न मनायो नेक रच पच हारी कैसे कर वाको
समझाइए ।
तानसेन प्रभु प्यारे आप नेक चलिए वल पायन में
शिर नाय विनती कराइए ॥

इति श्रीपूरवी राग सम्पूर्णम ।

अथ मालवः

नितम्बिनीचुम्बितवक्त्रपद्मः
शुकद्युतिकुन्तलवान् प्रमत्तः ।
सङ्केतशालां प्रविशन् प्रदोषे
मालाधरो मालवराग एषः ॥

मालव—चौताल

हारि हमेल सों नीको लागत और गोरे हाथन
चुरी हरी ।
कण्ठ पोति वदनजोति कानन वीरी और वेसरके
सरकी खोर तापर लट पटात लटकत लट सुथरी ॥
भुजमृणाल श्रीफल से कुच कटि केहरीजङ्घ कजरी ।
चन्द्रवदनी शावकनयनी बोलत अमृतवैन धजरी ॥
तानसेन प्रभु रिझाय लायो सोलहु शृङ्गार बत्तीस
आभरण सजरी ॥

भांति भांतिके भरे घड़े एसो वेधना कुंभार।
एकन उत मनवावत एकन मध मनावत एकन
नेक सुनावत एकन राखो खालो कर मिकदार॥
ऐकन देत रीझत एकन लेत रीझत एकनको करोरन
दए एकनको हाथ पर दए मागते भीख हार हार।
एकन को नरक एकनको सरग देत तानसेन प्रभु
रचो संसार॥

मालव—तिताला

जीया अकुलाई आवे आवे मोरी माइरी पीया
गवनको गइलवा।
उन विन मोको विरह दुखवा निशदिन नित भइलवा॥

मालव—एकताला

माई मोहि काहूकी कहा परो अपने पीयको राखोंगी
गरे लगाय।
कोउ लाख कहोतो एकन गिनोरी एरी होंतो देख
रीझ थकि रहो उनको सुभाय॥

मालव गौरी—ताल तिताल

यह माटीकी मूरत यह कुम्भरवाको जान।
जिन जानो तिन कछू अन जानो अन जानो पहिचान॥

मालव गौरी—एकताला

राजा श्रीराम रामचन्द्र।
पतितपावन करुणासिन्धु सेवकको दीज्ये आनन्द॥

राग वांड़ी—चौताल

विरहिन बावरी देग सुध लेहो प्यारे।
जियते कछ कहत वेंनन नेनन झरलाय मग जोहत
पाती न आई रावरी॥
उत्तर बनावत बनहो न आवत यह झक लागी
मोहि पीय पीय बतावरी।
चञ्चल शशि प्रभु विन तन तलफत रहत और निशा
लागत भयावरी॥

२

तुम भएहो पीयचन्द वारको आरसी।
देखत देखत दुराय राखे पीय चतुर तिय तुम महारसो
प्रगट कहे देत तिहारी यह चित रहो चारसो।
जगन्नाथ कवि रायके प्रभु जोवन जोर बहारसो॥

३

प्यारे मेरे आवेंगे ए मनभावन।
समझ बूझ यह बात सदारङ्ग महम्मदसा के घर आवन॥

राग वांड़ी—ताल सवारी

आधी रात मोरवा बोलाई प्रीत मगवन कीनो विदेश।
कहा कहों कौन तीया विरमाए ये ज्यो चित लाय
रहे वाहो देश॥

२

ए सरस्वती कहन आई कहा भयो ज्यो कहूं
पाछे तें बड़ाई लड़ाई लड़ाई।
पूरण गुण नायक ने सिखाई पै तेरोसी तानन गाई
न गाई॥

३

सरस्वती देवी दयानी देवी दया वाकवाणी।
ऋद्ध सिद्ध दानी तुमही मनमानी दे इच्छाहों
विद्याधर राग रङ्ग रस सानी॥

मालव श्रीटंक—झपताल

अतिप्रचण्ड प्रभुप्रेम रचायन तूज्यों चढ़ो राजा
रामचन्द्रे।
निडर निडर तें सबही तें गञ्जन राजनमणि राजेन्द्र
रघुवंशवरे॥

मालव—ताल सुरफाकता।

धमगरेगमगरेरेसानिधमसासारेगमनिधमगरेगम
निधनिससागमनिधमनिमगधमगरेगमगरेरेसानिध।
सासानिनिधमगरेनिधनिधमगरेनिधमधममगिरि
धमगरेनिधमगरेगमगरेरेसानिध॥
सासानिनिधमगरेनिधनिधमगरेनिधमधममगिरि
धमगरेनिधमगरेगकगरेरेसानिध।
सुधवाणी लिए अलापत गीत के प्रमाण नाद को
सुच्छम करे ताको कहीयत है गायक सब बिध
लायक जाको वादी विवादी अनुवादी के बगैरे
न्यारे न्यारे कर दिखलाये तब सगरो जगत रहस
कहत सब गुणीयनके नायक॥

निरेगमगरेनिधनिरेनिधरेनिधमगमधनिधमनिरे

गनिरेगमनिधरेनिरेनिधरेनि ॥

धवलश्री—चौताल

तेरो छवि मोपे बरणो न जात ताहे देख रीझे नर वो नारि ।

उरवसी रम्भा लगन हो लागत और काहे गिन हों सम तिहारी ॥

ऋषभ राग—चौताल

चरण धर आएरी मोपर मया कर आली धन धन मेरे भागरी ।

धन आज को घरी धन यह पल महूरत मोह लीनो अपनो शरणरी ॥

राग गौरी—ताल तिताल

ननदीया चवावन मोरीरे ।

सब घर घर करत फिरत कहत झूंठो साचो काहुके लगाए बुझाए कहा होतहै आली सांच कों कहो आंचरे ॥

२

बाबूकी मन्दिर बाजे नाथ गोरख जागे ।

निज ढिग बैठ तो मै सेवा करोंरे बाबू मदारङ्ग घर काज ॥

मालव—एकताला

यह जग मेला ठेला कहूं गुरु कहूं चेला ।

बाट घाट तीरथ मूरत अतिथ हो विरम रहो गांव गांव ठांव ठांव रव नाम सो सकेला ॥

गौड सारंग—चौताल

माधो मुकुन्द मधुसूदन मुरारि राधापति मनरञ्जन ।

पतितपावन दीनबन्धु काटत दुख द्वन्द फन्द सुदामाके दारिद्रभञ्जन ॥

गौड सारंग—तिताला

एरी अञ्जन विन कजरारे प्यारी तेरे नैन वैन देखेहो मद भरे पीय के प्यारे ।

चञ्चल चातक जों चमकत खञ्जन मीन मृग वार वार डारे ॥

२

जिन करो लरकइयां सइयां रे छाड़दे मोरी बहीयां ।

सास ननदको डरहे महरवान छाड़दे बातें नइया सइयांरे ॥

३

इन सैनन लाल के मीठे वैनन एहीं बिकानो ।

तिहारे लालनकी प्रकृति मन मानो यातें जिन बूझ होत अयानो ॥

गौड सारंग—तिताल

मै मिलोंगी अपने पीयसों मोरी माय करोंगो अनन्द बधावरा ।

मैबंदा तेड़ा नाम सोंइदा तुझ वेखनदा चावरा ॥

मालव—एकताला

समधिन अलख लाडली गहली डोरे भोरे सदारङ्गीले रङ्गमें ।

समधीको वतीयों सुन सुन फूलो अङ्ग नाहीं समाये ॥

२

यह जोवना मोहे भरे मोकों दगा दोए जातरी ।

कारे बार गए घर अपने पल पल सेत समातरो ॥

मालव—तिताला

झुझाय झुमकत झमक गहे कर वार अडन अटलरे ।

भुज पर चंड औ वलवंगड़ डगड़ अडंड डंडन खगड़ अखगड़ खगड़न अटलरे ॥

धारु गावत नायक गोपाल छत्रपति संग्राम झूझरोरे तं अइय याउअं७ अैया अैया अैया तानतोया इया इया आअललरे ॥

भैरव—चौताल

प्रथम खरज सुर साधे सोई गुणी जों सुध मुद्रा वाणी गावे ।

द्रुत मध विलम्बत लघु गुरु पुलित कर दिखावे ॥

सप्तसुर तीन ग्राम एकईस मुरछना बाईस सुरत उन चास कोटितान ताको भेद पावे ।

सरस्वती होय प्रसन्न हो सोई शाहजहांके श्रवणन कों रिझावे ॥

२

मिलावो पियरी पियरी पियरी हौंतो पियरी पियरी
कहत भई पीयरी ।
निशदिन सोचत जात कछून सोहात उमग उमग
छतीयां वरषत असुआन तासों अब निशनीद न
आवे नीयरी ॥

श्रीटंक—चौताल

वंशीधर पिणाकधर गिरिवरधर गङ्गाधर चन्द्रमा
ललाटधर होहो हरिहर ।
सुधाधर विषधर धरणीधर शेषधर चक्रधर त्रिशूलधर
नरहरि शिव शङ्कर ॥
रमाधर उमाधर मुकटधर जटाधर भस्मधर
कुङ्कुमधर पीताम्बरधर व्याघ्राम्बरधर ।
नन्दीधर गरुड़धर कैलाशधर वैकुण्ठधर कहे
बैजू बावरे सुनहु गुणीजन निशदिन हरि हर
ध्यान उर धर ॥

श्रीटंक—तिताल

एरी मैतो आसन गइली पासन गइली लोगवा
धरे मई कों नाम ।
जबते पीउ परदेश गवन कीनो देहरी न दीनो पाव ॥

२

बाज बाजरे गजरवा बाज बाजन लागे आइरे ।
आठ प्रहर चोषट घड़ी एमें कहारे करों दईरे ॥

श्रीराग—तिताल

बाबुलरे सुन मोरी बतीयां हौंतो जइहों पिया के देश ।
रैन दिना मोहे नीद न आवे सदारङ्ग विनु बूढ़े
भइले केश ॥

२

हरि गुण गाय नहीं पारायण गाय नहीं पारायण ।
वेद पुराण सुर सङ्गत को सतसङ्गही तारायण ॥
अड़सठ तीरथ नेम धर्म कर रामचन्द्र ध्यान धरायण ।
केवल राम ब्रुन्दावन जीवन भज नारायण नारायण ॥

३

माईरी ग्वालीया आएरी मेरे ग्रेह ।
तन मन धन सब उन पर वारों उनसों लागो नेह ॥

श्रीराग—आड़ा चौताल

तू देखरी हरिको मग जोहत खरी ।
तुम विन मोकों कठिन बीतत है मिलहै कौन घरी ॥

श्रीटंक—तिताला

घूंघट में मोजो मारणी मारणी सालुवा लड़ीए ।
उड़देय देनमा रसल नीरस दे भौनडे लायो ॥
जैसे तेरे नैन सलोने तैसेई कजरा पाया मेरी जान ॥

जयतिश्री—तिताल

एरी आज आनन्द नन्द महर घर गावहु सखी
मोहलरा ।
यशुमत रानी सखीनीको जायो कृष्ण छबीलरो रारा ॥

२

एरी आज आनन्द भइलवारी सोई सब्वर जनम
लीयो लालन ।
ख्वाजा खिदर कीसी उमर बकस दीनो रब करे पालन ॥

मैनपुरी—तिताल

सो एरी आज पिय को मिलावोरी सुनो सखी ब्रजवधू
सब साथ ।
उन सौतन के जाय रित मानी मोसों करत झूंठी बात ॥

राग दीपक—चौताल

नाद पार किनहू न पायो रच पच नर जनम गवांयो ।
नगन बन्द पवन मन्द सप्त सुरन छायो पटदे दीपक
गायो ॥
काहे को दीवरो काहे को बाती रूपे को दीवरो
सोने की बाती इकईस मुरछना जोत दिखायो ।
आरोही अवरोही बाईस सुरत प्रकाश नायक बैजू
दीपक गायो ॥

प्रदीपकी—रूपक ताल

वल वलरे एसो मङ्गला मेरो अत लड बावरी के
परवार चढ़ चलीयारे ।

कुञ्जभवन सुकैया चतुर गायन दीपक राग जमैयारे।
बैजू नायक प्रदीप गाय चिराक जलइयारे॥

मालश्री—धमार

जोवन मदमाती नारि आवत कुञ्जभवनमें सङ्ग लिए ब्रजराज।
हो हो कर धावत गले लिपटत नेकन आवत लाज॥

श्रीगौरी—चौताल

परसत हरि पांय पांय परम प्रेम जाकों महेश शेष गणेश दिनेश नित नित ध्यावे।
जाकों सनकादि आदि नारद शुक मुनि व्यास अर्थ धर्म्म काम मोच्छ पावे॥
शंख चक्र गदा पद्म धनुष वज्र जम्बूकफल ऊर्द्धरेख त्रिकोण षटकोण अष्टकोण धेनुक जव मीन चन्द्र कल्पवृच्छ चिन्तामणि सोहावें।
विद्विज्जन कुन्नो जे चरण रज जाने रुचिर रुचिर गुण गावे॥

२

धौरी धूसर पीयरी काजर कहि कहि टेरे।
मोर मुकुट शीश श्रवण कुण्डल कटि पीताम्बर पहिरे॥
ग्वाल बाल सखा मण्डलमें आवत ब्रज नेरे।
तानसेन प्रभुगुखरज लपटानो यशुमति निरख सुख हेरे॥

३

कोलीं सहूं एतो पीर सूरत मनमें लागी रहो माई।
दरसन बिन नैन बैरागी अवधको दिन गिनत रसना गुण जपत माई॥

४

धरे टेढ़ो पाग टेढ़ो चन्द्रका टेढ़े त्रिभङ्गी लाल।
टेढ़ो लकुट लिए गायन हटकत सुन्दर नैन विशाल॥

५

लसत पगीया टेढ़ीरी आली टेढ़ो अलक लर लटकत अन।
टेढ़ी चाल चलत चितवन टेढ़ी भृकुटी भङ्ग मटकत अन॥
टेढ़ी तान मुरली में बजावत टेढ़ी लकुट लिए गायन हटकत।
जोवन गिरिधर टेढ़ी युवती देख लेत वलैयां दोउ कर मटकत अन॥

६

अहो विधना तोपे अचरा पसार माँगो जनम जनम दीजे याहो व्रज बसवो।
अहीर की जात समीप नन्द ग्रह घरी घरी घनश्याम हेर हेर हँसवो॥
दधि के दान मिस ब्रजको बिथन में झक झोरत और अङ्ग को परसवो।
छितिस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल शरद रैण रस रास को विलसवो॥

गौरी—तिताल

मुरली वारे सांवरे नेक मारग देहो बतावहो।
भूल परी सङ्केत मधुवन में हौं अबला कित जावहो॥
सङ्गन सहेली फिरत अकेली कितहूं न दीखे गांवहो।
मृगनैनी के बचन सुनत ही हरि आए तिहो ठांवहो॥
आय मिलि अङ्क भर भेंटयो भए हैं भाव तो दावहो।
कहे भगवान हित राम राय प्रभु राधारमण वाको नावहो॥

देशगान्धार—तिताल

डरोए राम सन आईरे यस का हमसन भइलो घोर।
गुमान भरो तुमरो बतीयां सदारङ्ग कहो चोर॥

२

आज मो आवेंगे मेरेरो अगना।
उडरे कागा सगुन भइलवा बिन पियमोहि कलना॥

३

एरो आली अहिनु पग धरत चलनु तोह धरे मोहि नाम।
अबहो मैं नइहर तें आई यह अब जानो ठांम॥

यह गोकुल गांवको पैड़ोई न्यारो निपट चवाई गाम।
मारग मिले नन्द को ढोटा मोहन वाको नाम
कपटी पीत वलिहो श्याम के मोह लेत व्रजवाल ॥

गौरी—तिताला

आवे माई व्रज ललना डर विमोचन।
गौधन सङ्ग कुणित कर मुरली शरद कमलदललोचन ॥
दुख आगे आगे धेनु पाछे नन्दनन्दन कर गहे
कमल फिरावे।
मोर मुकट वैजंती माला कुण्डल झलकत आवे ॥
कटितट लाल काछनी काछे ओढे पीत पिछोरी।
आपुन हसत हंसावत ग्वालन राग अलापत गौरी ॥
तुलसी पत्र पुष्प की माला गुंथ गोपनको पहरावे।
वालगोपाल नन्दजूके ढोटा मधुरीसी वेणु बजावे ॥
वरषत कुसुम देव मुनि हरषित मोहीहैं व्रज की नारी।
कृष्णदास प्रभु रसिक मुकटमणि लाल गोवर्द्धनधारी ॥

२

वनतें आवत गावत गौरी।
हाथ लकुट मउअनके पाछे ढोटा यशुमत कोरी ॥
अटन चढ़ी व्रजवधू निहारत देख रूप भई वौरी।
नन्ददास जिन हरि मुख निरख्यो भाग बड़ो उन कोरी ॥

३

मोहन नेक सुनावो गौरी।
वनतें आवत कुवर कन्हैया पुहपमाल ले दोरी ॥
ग्वाल वाल के मध्य विराजत टेरत भ्रमर धौरी।
परमानन्द प्रभुको छवि निरखत पर गई प्रेम ठगोरी ॥

४

जय शिव ओंकारा भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अरधङ्गी धारा ॥
हर हर हर महादेव ॥ १ ॥
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे शिव पञ्चानन राजे।
हंसासन गरुड़ासन वृषभवाहन छाजे ॥
हर हर हर० ॥ २ ॥
दोय भुज चार भुज दश भुज ते सोहे शिव
दशभज तेसो है।
तीनो रूपनिरन्तर त्रिभुवन जग मोहे ॥
हर हर हर० ॥ ३ ॥
अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी शिव
रु'डमालाधारी।
चन्दन मृगमद चन्दन भाले शुभ कारी ॥
हर हर हर० ॥ ५ ॥
करमें कमंडल सौहै चक्र त्रिशूल धारी शिव चक्र
त्रिशूलधारी।
त्रिपुरारि मुरारि ब्रह्मा कर कमंडलधारी ॥
हर हर हर० ॥
लक्ष्मी औ सावित्री पार्वती शिव सङ्गे शिव पार्व्वती
शिव संग।
गायत्री सावित्री हरि गौरी सङ्गे ॥
हर हर हर० ॥ ६ ॥
सितावर पीताम्वर वाघाम्वर अङ्गे शिव वाघाम्वर अङ्गे।
सनकादिक विभूतादिक भूतादिक सङ्गे ॥
हर हर हर० ॥ ७ ॥
इतिश्री त्रिभुवननाथजी की आरती अन्तर कर गावे
शिव अन्तर कर गावे।
भणत शिवानन्द स्वामी इच्छा फल पावे ॥
हर हर हर० ॥ ८ ॥

श्रीरागध्यान

अष्टादशाब्दः स्मरचारुमूर्त्तिः धीरो लसत्पल्लवकर्णपुरः।
षड्जादिसेव्योऽरुणवस्त्रधारी श्रीराग एषः क्षितिपाल-
मूर्त्तिः ॥

श्रीराग—चौताला

सामानिमामगरे सारेसारेपगममममगसाधानिनिध
सामगरेसागरेसा।
गमधनिपिसानिधसासागरेसानिगरेसारेसानिधप
मगरेसा ॥

श्रीराग—तिताला

निसारेपगममगगरेरेगरेसारेमपनिधधपगममगरे
रेगरेसा।

सारिगमपधनि हेम दिन चोथे पहिर वखान
खरज ग्रह ॥

२

जाति सम्पूरण वसन जु लाल अठारो वरष कामदेव
मूरत भूप समान ।
अमृतवचन कर कमलफूल श्रीराग यह प्रमाण ॥

३

ससरिगमपगमपधानिनिधानिनिधपमगरे ।
मममधधनिसानिसाधानिधपमगरेसारसा ॥

श्रीराग—चौताला

प्रथम नाद सुर साधि आराधे सोई गुणीयन में गावे ।
सप्तसुर तीनग्राम इकईस मूर्च्छना तिनके ब्यौरे
तब कछू पावे ॥
आरोहो अवरोहो उलट पुलट के होत द्रुत मध
विलम्वत आवे ।
तानसेन के प्रभु महा वाक्‌वादिनी प्रसाद तें गान
कण्ठ करावे ॥

२

आज अधिक अलसानि देखीयत लाल लोचन और
रेख काजर अधरन मोहत पान ।
आलस अङ्ग नयो सुख आनन्दन हो कहे देत तूतो
चाहे देख आरत सोहत आरआन ॥

३

पाइये जेह लाल सोई विध करीये काहे कों गुमना
भरीये ।
ता पर मान मया विच पोय को काहूको कहो
कित जिय धरीये ॥
जहां नेक रीझि तहांहो करत हित ऐसे पोतम
से डरीये ।
वहुनायक प्यारो शाहजहां जान सोतन तें वावरो
घरी घरी पल पल छिन छिन अङ्ग सरीये ॥

४

सुनीयत छत्रपति शाहजहां किरान सानी को
चढ़वे की आवाज ।
चढ़त पीठ कलमली दखिण देश दलमली भुवपति
राजा कर जोरे अरज करत हैरो मिलवे को आवाज ॥
कायम रहो जोलों चन्द सूरज गगन तार कोऊ सुनो
आपन फौउज चलवे को कियो हुकुम आवेगे आज ।
दिल्लीपति चिरञ्जीव रहो शाह अकवर महाप्रतापी
जो लों धरन ध्रुव धीरन धरवे को आवाज ॥

५

नरहर नरोत्तम नारायण परब्रह्म पुरुषोत्तम परमेश्वर
अखिलनिरञ्जन अवगति अविनाशी ।
अलख पुरुष आत्माराम आनन्दरूप अगोचर अङ्ग
अंग सकल घट प्रकाशी ॥
जगन्नाथ जोतीस्वरूप जगतपति जगवन्दन जगचक्षु
धीरज प्रभु नन्दनन्दन व्रजके निवासी ।
माधो मधुसूदन मथुरापति मुरारि मनमोहन
मुकुन्द में वासी ॥

६

जैसे गुणी तोधा गावे ढोलन क्योंहो लागा मेरो मन
तुझ नाल लगो रहै परछाई ।
रोम रोम में ते धरहो जैसे कमल अलिके गुण एकन
जानो ॥

७

रैन गई मोहे जागत ललना तिहारोहो मग जोवत ।
नेकहू जो मोरो अखीयां लागी ता छन छन
तुव मूरत के जान में रहत सोवत ॥

८

वतीयां दिन गिनत हारो कठिन भई कर पल्लवरो
कहूं कासेरो यह दुखरे ।
आजहू धीरज अपराधन प्रीत लगाव नहीं जायरे ॥

९

एरी धन निठुर धन मेरी छतियां विन प्रोतम बोभत
विरह घतीया ।
जोलों दरशन देखों प्राणपति को तोलौं आनन्द
सखियां लेहों सखियां ॥

आलीरी एसी प्यास कैसी होत कहा जो भयो पीय
पठाई पतीयाँ।
शाहआलमशा के निठुर मिल कहा ठाकुर होत है
अब दूसरे अब आवतरी वैरन रतीयाँ॥

१०

सोई दिन सोई घरी जो प्यारे सों मिली मोरी अखीया।
सोहत तिलक मो सजन में डाह मारत सोतें देखिया॥

११

लालन दे गए मोकों एक घरी अवध कैसेक मन
बहलाऊं।
ठौर ठौर के रस केलिवे सबके भूषण रङ्ग रङ्ग धराऊं।

१२

भस्म भूषण अङ्ग चर्चित गङ्ग शिखर बहुर रूप शिवजी
गाण्डवर में डमरु बाजत फुंकत फणिश भारी।
योग युगत ज्ञाता शिव मन स्वरूप शङ्कर शतकण्ठ
कण्ठा गर विषनागन वरण राजत पद्मआसन
ध्यान धरत भक्तरूप अवतारी॥
यती शती जङ्गम योगी नबी मन्यासी दुग्धधारी
अघोरी उर्द्धबाहु अवाकार और दूतन गण कर
पिणाक कर आदेश करत है आचारी।
धन धन धन महादेव सिद्धदेव देवन सिद्धसिद्ध दाता
शाहन शाह शाह आजम को होय सुखकारी॥

१३

निपट कर जो दुराव करत मोसों हौं नहीं जानत
पीय अधिक चतुर तुमही और हौंही अयानी।
कोटि यतन करत हैं तिन गुण कर प्यारे तुम्हारे
देखीयत जे करत फिरत घर घर मनमथके वस
जगो तिया अङ्ग सङ्ग रङ्ग करत बहु ज्ञानी॥
अटपटी पाग पेंच लट पटे कोले बोलत मन्द वचन
चक कहत कहानी।
शाहआजम विचित्र छत्रपति की बातें तेऊ मेरे
जान पाई तब त्योंहीं मुवारकना आवत तुमारी
गत हम मन विच क्रम कर पहचानी॥

१४

अवध पीता सङ्ग गुईयां विरह आनन्द खेलत मो
सङ्ग चोपर।
विशात तन मन योवन भवन पर सारे छिन लगन
तापर मोहे अङ्ग धरे सुध बुध गुणपार से बनाय कर॥
ध्यानन चलाय सारे पकाय लाई पीत अवध सब घर
अवध सब घर।
तिनके बांध पंजे छक्के कर ध्यान तक जक जीत
लई पकाय बाजी लाई शाह मौजदीन रूप सुन्दर॥

१५

रस विनोदी गुण गहरत विवेक चिन्तामणि ध्यान
शाहजहाँ जान।
जैजे तारध्याय सुरध्याय रागध्याय तिनके करे
लक्ष लक्षण विद्या प्रमाण॥
वल वल करना उनड़ से देत एसे कोटिन दान।
चिर चिर जीयो छत्रपति प्यारो जोलों भुव ध्रुव रहैं
शशि भान॥

१६

बहोत भावत है वह तुमे कोई नीके कर जानत।
इतनो तोड़ कान करो तुम एसो न बूझिये
जो मेरेही आगे बाड़ को नाम ठानत॥
देया करो अपनी टेक के निकाड़ लाज जीयमें नहीं
आनत।
शाह औरङ्गजेब बहोत भलेहो हौं तोरी जे यो बातें
बखानत॥

१७

देवसभामें गुणी कहिये तेऊ प्रतच्छ देख मे विवेक
करन साहवदी महम्मदी सुलतानके।
भरत मत सङ्गीत दृढ़ काव करन को मत गत
अप अप अङ्ग सर सम छाजाँनके॥

१८

मिल मिल मिल बातें करतहै लाल ललना प्यारी
सों एसे जैसे सब सोतन में कोऊ न जानत।

कबहूं हँस मुसक्याय कटाछन मिलाय कबहूं
दृष्टि डराय करन सों कर पल्लवरी सकल तीयन
के मन कों सकुचन मुख पर नाहन आनत ॥

१९

तू अब विद्याधर भुवलोक में सुनीयत रंचक
ओर ओर सभासें ये देखे पर दच्छिनन तुव शोभा
जग नैनन ।
सप्तस्वर तीनग्राम चारो अङ्ग सम सम्पूरण अलाप
कर रिझावत गावत कोकला कण्ठ बोलत मधुरे बैनन ॥

२०

सदा सेवा करत हैं वे तेतीसो कोटि महादेव तुव
नाम जप तप पार्ब्बतीपति पतितपावन पातक हर
तेतु गन कैसे सुमरत ।
त्रईलोकनाथ शम्भु शङ्कर त्रिशूल धरे तपोभूत
त्रिपुरारि मानो महेश देश देश के नरेश को धावत
जोई जोई मागत सोई सोई पावत है हरिदास
डागर होत सुरत ॥

२१

भस्म अङ्ग गले रुण्डमाला आशा नद दुभावैरी ।
देव देव करत सेवक त्रिशूल बाघाम्बर माथे गंगा
बहावैरी ॥

२२

एतो बेर भई मोकों मनावत तोय आली अजहूं
न उने समझो बतीया पीय के रसकी ।
बेग उठ चल मिल प्यारो पतिप्राणेश्वर पास मलिन
जोति होत है शशिकी ॥

श्रीराग—ताल धमा तिताला

मुरली की धुन सुन चकित भई सब व्रजकी नारी
सुध न रही कछू आपन तन मन धरकी ।
छक छक कर रीझ रीझ कर लेत बलाई कान्हर
हरि की ।
एसे सुरतें बजावत जामें नीके सात सप्तक तान
बिरह भरी सुरकी ।
जिनहो सुन्यो तिनहू सुख पायो तानसेन प्रभु तान
राधावरकी ॥

ए राजा जहां जहां जाइये तहां तहां सुनीयत
तिहारो नाम ।
जेते नर नरेन्द्रपति तुव प्रताप ते उतरे तेरे दर्शनको
लालसा और तुम अस्तुति सुनके श्रवणन पावे
विसराम ॥

श्रीराग—तिताला

चलो जाय सुनै मुरली धुन कान्ह बजावतरी
ए बजावतरी ।
या बनमें अब रीझ रहे सुर नर मुनि मोरमुकट शीश
कर लकुट लिए टेढ़ो टेढ़ो आवतरी ॥

२

चन्द की जोति मलिन होत तेरे आननआदित्य
आगे आलीरी देख दृग मृग खञ्जन बन वास लीने ।
आंखनकी अरुणाई अरविन्दहू नाह पाई सफरी
तो मरता में पाई तैसी है नासिका की निकाई
कापे जात बरनाई बिनती सुरचाईने सबके मन
दास कीने ॥

३

जाको ऊधो एसो सखा कान्ह कैसे समीप भाव
भक्त कछून कहीये ।
योग योगन शुष्कज्ञान रुखोई रहत प्रेम भक्त
सुध नाहिन पइये ॥

४

ए आया आयो रे बलवंत शाह आयो छत्रपति
अकबर ।
सप्तद्वीप और अष्टदिशा नर नरेन्द्र घर घर
थर थर डर ॥
निशदिन कर एक छिन पावे बरण न पावे
लङ्का नगर ।
जहां तहां जीतत फिरत सुनीयत है जलालदीन
महम्मद को लश्कर ॥
शाह हुमायूंको नन्दन चन्दन एक तेग जोधा तकबर ।
तानसैन को निहाल कीजे दीजो कोटिन जरजरी
नजर कमर ॥

चारोग रट एकही बार ते बिसरायो हो बहराम खांन
खांनन खांन ।
प्रथम निजामो शाह कीरत दूजे वेदलशाह सवाई
तीजे राम राजा चौथे वदरो वदर कोसो हलखांनके
देखत चले हार ॥

६

एसो इन्द्रहू के नाहीं जैसे देखी सुढङ्गन फुन गायन ।
गीत सङ्गीत धारु ध्रुपद गाए सुधवाणी सुकण्ठ
भरण रसना रस रसायन ॥

सांझ भई आवोरे तुम आवो हरि गुण नीके
गाय सुनावो ।
नैन प्राण में तुमही बसतहो श्यामसुन्दर दरस
वेग दिखावो ॥

सुध लीजो हो क्रष्णकारे तुम विन गोकुल सूनो ।
नैन चट पटी लागी तुव मूरत विन देखे दुख दूनो ॥

आज बहोत दिनन पाछे सुरत भइरी ।
कौन दिशा धौं अजहूं न आए दइरी ॥

१०

रीत पीतकी जानत नाहीं जानत नाहींन जेतो
संसार रीत पीतकी
को प्रगट पावे को सुध लावे मोनर धनती ॥

मालव—चौताल

शम्भू श्याम जगदीश शिव शिव हर हर पुरुषोत्तम
महेश्वर
शर्व ईशान सर्वव्यापक शूलीश चक्रधर शिखरचन्द
पीतवसन बाघाम्बरधर ॥
मुरारि त्रिपुरारि परम राम परमानन्द पिणाकी
मुरलीधर ।
पशुपति गरुड़ापति विश्वम्भर विश्वपोषण
गुणसागर नागर वर ध्याया करो गोविन्द गिरिजधर ॥

श्रीराग—चौताल

तूतोरी भाग सुहागी तेरे पाँयन की सोंहे दिखाइये ।
तोसी तुंही और दूजी नाहीं जगमें कहो यहो बताइये ॥
तैसो येसज्ञान जित कित तेरेही गुण गाइये ।
बहु मदारङ्ग महाजान सुखदायक तेतो हित चित
मनके जात तिनसों हठ करवो ना चाहिये ॥

मालव—चौताल

भुजंगी लाल तेंदी कीनो दुरङ्गी गातही गात पीत
उमङ्गी ।
कहुंक बोर बोर दरकी दरकी एसो लागत
मेरे जान आली मान काम ओप प्रगटी तन यंगी ॥
और प्रसेद प्रेम अन्न जगमग रह्यो जोवन तोय
भर उमङ्गी ।
याकविसाँ ओप भईरी अकबरशाह और तुम्र
अङ्ग सङ्गी ॥

२

कर विद्या तूंरी जहाँ पढ़ पूरण काम वारत अज्ञान
उगत जुगत विधना भलो ।
प्रगट कर शाह अकबर जगत गुरु जलालदीन
अष्टयाम विनान करत राग रङ्ग महाबलो ॥

३

प्रथम असुति सुनत सुनत मोकों श्रवण सन्तोष भयो
तब तोइन अवलाखन लख सेवा चरण गुरु पोरते
योगायोग ते कर ध्यान ।
ता शब्द भयो शङ्कर ते ब्रह्मलोको पारवती इह विध
विवस राखो विचार याही में पइयत अष्टसिद्ध
नवनिद्ध राखो सुरत करो ज्ञान ॥

४

योग उपज पायो नाम तार विस्तार गुणी ।
प्रथम अङ्गजा तक लौंजाँच किये अङ्ग अङ्ग इह विध
पहिचान कीये सुर नर मुनि ॥

५

ओनम विन सुरचो विद्या ताहो गायवो बजायो
प्रसाद हित आई सुरत ।
खरज याद नहि राखियेत षट् सुर जग मोहे सुआदत ॥

पूरे पूरे हो सकल गुणीन गहै कान।
नारद तुंवरत गाये हाहा हूहू करत अपा अपा
एजव लेत तान॥

७

पाइये जिहि लाल सोई विध करोये काहेको
मान करीये।
तो पर माया मन विच पीयको काहूकी कहो कित
जीय धरीये॥

८

अनूप विराजत विकवा चोंचहात भोर भए चिरीयां इन
बकत अपराध सुन दृढ़।
रूप रैनको भनकार धूम परी शावक जेहर तेहर
जैसे सोमी हिला भलमिलात गज तुरङ्ग कठोर
आनन्द दृढ़॥

९

रागसमुन्द्र तामें थके नर रच पच तेहू न पायो
अन्त पारको।
ज्ञानसाभी कर बुधको नाव पर चढ़ाय मन विचित्र
और साज साजे पतवार को॥

१०

प्रथम मज्जन कर अस्नान अञ्जन दोए लागत
नैनन नीको।
नाक की नथ आनन में विरीअलके फुलेल सिन्दूर
माग माथे केसर टीको॥

११

प्रथम अस्तुति सुन सुन मोकों अवण सन्तोष भयो।
तब तो इन अवलाखन लखवो करत रावरे सुन्दर
चित दरस दियो॥

१२

करत है कवि धुरपद कठिन जोवन तो करिये
सुसेलो तानन सों सङ्गत।
चतुर तुक विचार अघरोटी सों मेरे जान रिसाल रङ्गत॥

१३

ज्ञान बढ़ाइये गुणीयन सों हिल मिल गुण चरचा
कर कर।
फुन भुगत मुकत दयाके गुणी अनगुण गाहक तेई
अब समभ समभ जिय धरिये यह सयान पर
मान तन ते जाय दुख अज्ञान टर टर

१४

नैन तेरे घुमर भए आज विन देखे एमनभावन।
कलन परत मोहेरी एको पल कब होई यो पिया
आवन॥
सुनि कुहुक कोयल को कवधौं होय गर लगावन।
शाह बहादुर तुम बहुनायक कैसे करूँ दिन सावन॥

१५

नवरङ्गी तेई अङ्ग कौनो गुणी काव माध्रे आराध्रे
जो जानें अकबर।
कौन विद्या अतपूरो नर एसो कौन को पूरो सरस्वती
हृद अब अङ्गी वृषभवाहन शेश जटा कर डमरु
त्रिशूल खप्पर चन्द ललाट वाघाम्बर॥
गङ्ग अरधङ्गवरी हिये मुण्डमाला सोहै त्रिलोचन
तुही है हर हर॥
और सुर नर मुनि गुणी गन्धर्व तें तोहि जपत हैं
दूसरतन सेत वलवाय भंवर विसतर तापर हित
निवाजनो बात तानसेनको देहु इच्छाभर॥

१६

वालम कहा करो जो जो सुन्दर वार जोयते उतार
राखो ज्यो वरषाको कमान।
मन पद चित चिलातो चढ़ायौ रङ्ग मैदान रस परम
देखदे रस गोसा देखो सूधं दृगन वान॥
धुनते गूढ़ राखत तुम हित कर इहो सुर वर वेचन
खेंचो आवत गयन इक वाल्ह पदजान।
अपनो कृपा तक बाध सोतनके गुमान निशानो
टीक मार लेहो अचानक आन॥

१७

सब मिल विचार लेहु या बातको सुध ताई सुध
अच्छर तान रागको सङ्गत धरन सुरन में सुन्दर तब
कहिये वाको गायक।

और उगत जुगत काम में धरन धरे अनुप्रायस बेसों
तब धुरपद बिनाय गावे एसो जो होवे सृष्टि अवण
सुखदायक ॥

मालव—तिताल

पार्वतीपति नाथ अनाथ विष्णुनाथ कर
त्रिशूल विराजत ।
वसन भूषण गज चर्म्म कपाल माली पशुपति तांडव
डमरु धुनि गाजत ॥

२

पीय विन नाहीं बनेरी मोकों एक छिनन पल ।
उठ चल वेग मिल सङ्गले मोकों पल पल भए
वरष समान अब रोय रोय भरे जल थल मोपर
मया करके मिल ॥
वे पीय जोय जोय में नाहीं प्रेम गलोहैं चल गई
विरहके छल आनन्द प्रभु विन तन तलफत और हिय
उड लेत चल दल ।

३

गर्व गरबानीरी आयानी मै होत सयानी कहत
कब कियो कहा टेक टेक हो टेका ।
हाती और तोय सबही मथन रीभी पीय चित
बनही तिन तन यातें निपट अधिकानो ॥
पीयको प्रहत लीये जो चलहुं धन तो पावेहिं सुख
अनगन सुवनरी पोत मनमानो कहिमें कौन सवाद
कौन विवाद उठ चल मिल शाह अकबर प्रतपानो ॥

४

न्हान जिन वारखसों सोवत बड़ो वेर नहाय तुम कों
दोष साद दुसमन पे माल ।
इतनो मागत हों येही विधना तुम पेजो जाय कष्ट
जञ्जाल ॥

५

साधन गई मोरे मनकी वालापन तरुणपन
विरधपन आयो ।
भूलो फिरत जोय नाहीं समभत एसो कुमत
आयोही अकारण जनम गवांयो ॥

चतुरङ्गर सेना चलत गज रथ तुरङ्ग पैदलको हूंसो
तेंह आवरण दर दर भुवलोक इन्द्र भाव सम कलेन्द्र
कोप सरस इए न गाजन सन नाद गन गंभीर रमन
अबे मेर राजत अपवली तपवल शाह मर्दान भूमवली
वलकरन प्रताप अपवली कीरत प्रगट छतुभ
जमराजन अटलन अटालआ ।
तिऔऔऔऔतीती आइयेरे तीया तीया पापापा
आकरी करवर कण्ठ लेत और दल भुअवल
अदल डुले ॥

७

आआ आइये लालन अङ्ग सङ्ग रङ्गके तरङ्ग उपजेरी
जब मब निश जगाई ।
सबहीको मनमथ सों तोय जानत नीको के रस वस
आनन्द गातन गाजनो गाई ॥

राग त्रिवण—चौताल

माता जालपा भवानी जाके नगरलोक नरलोक
भुवलोक इन्द्रलोक त्रिभुवनमानी मर्वानी सकल
जगत जानी और दारिद्र भयहरणी महारागी ।
जे मन वच करम कर तुमको ध्यावे तिनकों
बुधदानी एसो प्रसिद्ध महावाक्वाणी ॥
असुरनदलमलन अंब आदिशक्ति सुरनर रटत
रहत गुणी ज्ञानी ।
तानसेन सों मन मानी करम कर तू दया कर दयानी
तान ताल अच्छर दे शारदा भवानी ॥

२

गुणी अकबरकी जो गोष्टके जो जगमें जगमगाय रहो
प्रगट प्रसाधमळूं ।
जिनको गुण हमपै वरनो न जाय एसे विद्या अनेक
सम्पूरण तिनको अस्तुत न आवत कछूं ॥

श्रीराग—चौताल

जेही जेही अग बूभिये तेई तेई सरस नैनखान
गुणनिधान ।

तालध्याय सुरध्याय रागध्यायके भेद जानै सरस्वती
सनमुख सो दीयो हिरदै ज्ञान ॥
लाग डाट उरप तिरप नेम हस्त आनक खानक
स्वरान्तक के ब्योरे पहिचाने ।
सप्तसुर तिनग्राम इकईस मुरछना बाईस सुरत तीवर
तरतीवर कोमल अति कोमल ग्रह अंश न्यास जे
सङ्गीत प्रमाण ॥

अड़ंक—ताल सवारी

काहू को प्रतीत सब डगमगी हो काहू न आए
राजत हैरो ।
प्रताप में जादू रखण कहा चलिहै को नन्दनबीर को
गवैरो ॥

अड़ंक—ताल रूपक

जोगी तेरो सूनो मढ़ैया कोरे ।
उठ गई हाट जोगी नहीं आयो धूनी ज्योंकी त्योंरे ॥

अड़ंक—तिताला

अविरलगञ्जन कामिनीमनरञ्जन हैं तुम्ह दरस ।
एसो चतुर सुजान चौदह विद्यानिधान तुम सजन
में सरस ॥

बारा—तिताला

मालन ल्याई चुनचुन कलियां भर भर डलीयां ।
सहम रस सिकन्दर रहम पुरन्दर एक उड़ावत
वन सनरंगलियां ॥

बाड़ा—चौताल

सुमरण करोरे जाय रब को लै लै नाम ।
मेरो कहो तू मानलेरे छांड़ दे सब लोभ काम ॥

बाड़ा—तिताल

निनिरेगगरेसानिनिनिरेरेमपधमपमगरेपम मानि
पपपममममगगरेगगरेसा ।
गगममसानिरेसससरेगसानिधपधधमपमगरेगगरेसा
रेसारेरेपगरेपमधसारेसागरेसानिधमगधमपमग
गरेगगरेसा ॥

गौरी—ताल रूपक

रेमपनिसारेसानिधपममगरेसानिपनिरेनिसा ।
पनिरेनिरेसामगरेनिरेसारेसानिनिनिधपप
मममतगरेरेसा ॥

सप्तसुर तिनग्राम इकईस मुरछना बाईस सुरत
उनचास कोटि तालके यह प्रमाण बकस प्रभु यह
अथाह विद्यारेनो रे सारे मानि निनि धधपप मम
गगरेरेसा ॥

गौरी—चौताल

हौंहो बैरागी कीनो लागीरे लाल अकबर अनुरागी।
इन सम्बोधन पतियन पतियन पीय बेग मिलन कर
आप तेरी हौंहो गँवार भईन अवध बदो बहुत दुख
दीनो मोहे सुखध त्यागो ॥
उमगपतिको सूरतको ध्यान धरंरी मेरो अखियां
रैन एक टक जागो ।
रैन दिन सुमरण करत रहत हैरो ललना तरैंया
गिनत जात रसना रट लागो ॥

२

दिन गिनत हारी कठिन भई करपल्लवरी अब कौन
सों कहोंरी मैं यह दुख बतीयां ।
कोलों धीरज धरों अपराधन पात नाहन न आइव
होरी धन धन मेरी निठुर छतीयां ॥
जोलों दरशन देहूं प्राणपति की तोलों आनन्द लहों
आलीरी रस सुधाम कैसो जात कहा भयो जो पीय
पठाई पतियां ।
शाह आलम शाहके बिन मिले कहा ठाकुर होतहै
और दूसरे अब आवतरी छैरन रतीयां ॥

३

अपनी सी बहुत दुराव कीयो चाहत हो पीय
सो क्योंहूं नाहिन दुरत ए प्रगट कहे देत अरुणनयन
तुह्मारे हेतु मेरे ।
तीय और हार रह्यो बिन गुण आलो गणको पोठ
पाछे वलया और चिह्नको गिने घनेरे ॥
अब बोले से कहा धौके रहे बोलत नाहीं पीतम
दुचित्त से देखायत अजहू मेरे आँन तुम वाहीके ओसेरे।
हौं जब वरखाण सुन्दर वाको सहज अङ्गो भरण कैसे
देहो तोहुन देखन देहां प्यारे जो सोते कर कर
जाए सी फेरे ॥

आएहैं रितमान अलसाने अपनी प्यारीके सङ्ग ।
हमही कहा दुरावत आन बूझ लेहो नैना भीजे
रस रङ्ग ॥

५

एक कर जानो ते अल्लह दूजे नबी रसूल बरहक ।
पुनि पैदा कीनो चारों इयार पञ्ज तन पाकहाज
दे इमाम एक कीनो औलीया अम्वोया बुजरक ॥

६

देखत मोहन नैन लालके धीरज क्यो हूं न रहैरी ।
जेतो घरी मोहे दरस भयोरी पीतम को ते सुख
कहेन जात मोपैरी पल पल केरी ॥

७

रैन गई मोहे जागत ललना तिहारोही मग जोवत ।
नेकहू जो मेरी अखियां लागत तो छिन छिन तुव
मूरतको ध्यान मेरे चितमें रहत सोवत ॥

८

ए तुव गोहनही लागोरी आलो प्रेम पीया केरी
चलत भूल रहो हेरहों जों बावरी ।
अबके पाछे पछतानिरी मेरे कहा जो होत है
आलो या समय मोहे तो अब एकन भावेरी ॥
अब नैनन जल भर आए ग्रीव लागी लागी रहत
बिछुरत सुध बुध भूलो कोऊ करो उपावरी ।
मोहे अबके मिलें राजा राम तो कबहूंन विसरों
जान करों नोछावरी ॥

९

हो सुभानअल्ला जल जलाल जाहर बात न कुदरत
कमाल ।
धरती अम्बरले ग्रह बनायो नूर सप्तदीपक
जगमगात जगमें धन धन सुरत जमाल ॥

१०

साध रही जिय की जियमें तुम तरल पीया परदेश
सिधारे ।
विधना तोहे वेग बुलाय लियो सङ्ग जाय न सक्योहू
रह्यो मन मारे ॥
चूक कछू जो परी हमते तुम माफ करो वलि जाऊं
तिहारे ।
अनुहार निहारण प्रतच्छ कहीं ये सुपने मत आवो
समीप हमारे ॥

११

प्रथम रस जानले हो सुरहो दूजे अलाप को ज्ञान कर ।
तीजो सुध सङ्गत उचार चाहत उपजको वहस्तावधर ॥

१२

शेख फरीदो गञ्ज शकर जाकर पइयतहै न्यामत
मौज मनको मुराद भर तुअर ।
दोऊ जहाँन कबूल मकबूल अब सेवक सेवा कर
पावत एक पावत तन छिन नाम लेत तरङ्ग एमा
पाटाम्बर वस्तर ॥
सो मनको मुराद तुअवर एक जाहर बातन सों
हिलमिल रहे एते पर सुमरण करें सब नारी नर ।
बात यह जाँन तानसेन विनती कर दोपक छेम
कुशल आनन्द गुणवर ॥

१३

मेरे नैना लाग रहेरी पीय मूरत सों निशदिन
आलो नैना तारे रहत लाल ।
कछू ध्यान धर राखे आनन सब मानें ललनारी
को जाने को पीर मेरी हौं जो कहत इन मधु पुतरीन
आगे लाल ॥

१४

अहो प्यारे कों कौल बचन देहों पीत कीलों जो
एसीही और निभाइये ।
जाते या बढ़े नित घटहू और कहा चाहिये ॥

१५

नव सत शृङ्गार बनाय कर दिखावो मेरे प्यारेको
मेरीछतो छोड़ो छोड़ा ।
कहु न तन लालन कीरहू न देखतहूं हिरदे मध यों
रहै कमल मध डोड़ा ॥

औरजो मेरो सरवरको कोयो चाहत मोह देखो कैसो
खिसानो अखोड़ा ।
शाह विक्रम वे जीय कीले चलेहो तीर वन बिन
गुण गत नहीं अकोड़ा ॥

राग गौरी– पट ताल

पटताल नीको ताल अच्छर धाय चौसट ताल गत
प्रस्तार हो अधार हो मेरे जियको ।
शाह अकबरकों रिझावन पटताल रस लावन और
अनेक भेद उपजावन ॥
ताकिटनकताक्टतऊंधकट्तकधेधोना धाधिन्नाङ्
धाधिन्नाङ्धिकिट धिधिकन धिधिकनधेधिनाकिट
दिगथा ॥

२

जेहो तेहो केह भांत मान मन मनाइये सोहाग
न्याइल्लोको ।
शाह अकबर परसतहो वाको प्राणपतीहै जो घरी
घरी पल पल नित नित चाइल्लीको ॥

३

कैतीक बात यह तेरे आगे जोत मोपर करे कृपा ।
जे अज्ञानी ते ज्ञानी होय निरगुणी गुणीतें गुणी पूरे
करे अपाअपा ॥
जो जामिनके तारो वारो व्रज सलो विष्णु गोवर्द्धन
कराना कर करस कुटिल तेजे दिनकर छिपाया
विलासको मनविलास ॥

४

यह तेरो कौन टेव परीरी मोहे हसत खेलतरो
विलगो ना मान मनावे ।
ऐसी न बझिये प्राणपियारे जो तनक तनक बानन
को दुख पावे ॥

५

झुकन हेरे फेरे करतरी हौं डरतरी तू जिन रहेरो
बिन आई ।
हँसत खेलत कोऊ विलगोन मानूगीरी आली ताहि
शाह जलाल रसाल दुहाई ॥

गौरी—ताल रुपक

द्रगनको हौं मारी मरों एकतो और कहा कहों तोसे
अनोखे जोयको लगनको ।
परवसह्वै रहोना सुरत कछू तनको मनको गाढ़े
परोहै खड़ो आय फासो ज्यों प्रेम फन्दनको ॥

२

लङ्का लई राम जो रावण मार उड़ाय दियो ।
जीत चले घरको बाजे तत वितत शिखर धन राज
विभीषणकों दियो ॥

३

राणा रावर अरिदलगञ्जन भञ्जन इन सुभावरो ।
और जो सनमुखन होत जामों करत सनेह
तन घावरो ॥

४

लैरी अपनी नगर ग्वालन अपनो नगर नित उठ
करत हैरी रार ।
जिन पर तू अभिमान कहोसो वेह गएरी रतह्वै
गौरका डगर ॥

गौरी—झपताल

एजेते दिन अनमिल गए निय पिय बिन मोकों तेते
दिन मेरे आन लेखे ।
औरजो तपत वाके तनके तिनके सुखको अँके भुज
भर चाहत नैन कहे कब देखे ॥
न पीय पाती पठाई न आवन कीनो मेरो एक न भई
होरहो है रखे भेखे ।
असलेमशाह पिय जीको ना समझत जोवन
जात परेखे ॥

२

कान्ह बजावतरी ये बजावतरी चलो जाय सुनें
मुरली धुन ।
मोर मुकट शीश कर लकुट लिए टेढ़ो टेढ़ो आवतहै
बन में रीझ रहै सुर नर मुनि ॥

गौरी—तिताल

दुर दुर मुर मुर जुर जुर नैनन चितवत और
कटाछन चाचर चितवन जहां बैठे हरि मनमोहन
सङ्ग सोहत सखी सुन्दर गोरी ।

अपनो कहे और को न सुनै बातैं सब लेत चुराई
और यह दृष्टि करत दुरन दुराई ॥

मालव—तिताल

अपने करको मुदरीया मोकों देहु मोर करको तूले।
मोकों नीको लागे तोही जिन भावे मांची कहले
मोर शीश कूले ॥

२

ठगोरी डार गयो मोपर माई ऐसो दोट लङ्गर
बटपार ।
जबते कछू न सोहाय तबतैं सदारङ्ग चतुर खिलार॥

३

सोतन गई जल देख अधिक मोपे रैन एश
बरको प्यार ।
आनन्द मङ्गल भयो कोहि सखोरी और राधावर
बलिहार ॥

मालव—एकताल

कासे कहों हौं अपनो दुखवा ज्यों ज्यों निश आवे
त्यों त्यों बढ्यो मनमें अन्देशवा ।
जबतैं पीतम परदेश गवन कीनो तबते न आवे
सन्देशवा ॥

मालव—फारना तिताला

छुम छननननन बाजे घुंघरु और बाजे पायलीया
झननननननन कैसे मिलों गुरुजनवा ।
जागे सदारङ्ग लाज आवत मोरे मन कैसे चलो
ठननननननन ॥

२

ददरा तिम्ने दिरनंउदनतुँतदरे दानी आहे आहा ।
आशकाने खाज गाने विस्तरी अजक दमना शर
निशाने दाग रसत ॥

३

तिहारी अब मोंके दिए फल नित चहीयो
सुने पीर पेरी ।

शाह असरफ बुहली कलन्दर दोज सुख सम्पत
सुन लीजे पीर औलीया अजमेरी ॥

४

एरी हौंतो जाऊं पग परसनकों निजामदीन पीर
औलीयाके आगे आज ।
बाट घाटमें तिहारोई नामहै मोकों फल दीजे आज ॥

५

नाहा ऐसो हंस हंस करोंगी वधाई धूम गजरसों
आया ।
बनाके शीश सेहरा सोहो लाग्न महदो सुघर बनो
मों लोभाया ॥

गौरी—तिताल

अब कैसे कहोंरे लोगवा पीयके ढङ्ग रङ्ग ।
सदारङ्ग लालन बिन देखे निशदिन रहत जगी ॥

२

हौं नित नित मितवासों दिलहै निशदिन ना रहे
पियके बिन घरी पल छिन आली मेरो मन कलन
परतहै छिन नित मितवा ।
सासके त्रास उसांस भरत हौं ननद निगोड़ी दिन
रतीयां छतीयां दहे छिन नित मितवा अवगत
चित लैत इत उत चित नितवा ॥

३

आनन्द जशन दिन दिन मुबारक होय तुमको
नित नित महम्मदशा बादशाह ।
जीवो जागो अशोम फकीरवा सदारङ्ग कीनो दोनें
दुलाहो मन चाह ॥

राग परज—ताल तिताल

मृत मण्डल नहीं जइहों गङ्गा शिव सों कहे ।
शम्भू मृतमण्डलके लोग महा अति अधम विकारी ।
गङ्ग जगतकी माता ताहि वह देहैं गारी ॥
सोच विचार न आवही मूढ़ अधम वे जोव ।
महा अधरमी एसे तिनको दरशन होय गो शीव ॥गंग०॥
गङ्गा उत्तम जीव सोई तेरे दरशन पैहैं ।
पापी पूरण पतित निकट कबहूं नहीं जैहैं ॥

सुमरण भजन करेंगे तेरो लहेंगे लहर तरङ्ग ।
आवा गवन ते रहित होय गए वसत तिहारे सङ्ग ॥ गंग०
शम्भु सत्य कोई नहीं कहिहै असत्य सभी नर भखिहै।
कुलकी वधू निकाल बनमें दासी रखिहै ॥
पिताभक्त कोउ विरला होइहै हरि गुरु सेवा नाहीं।
सुरापान सभी करेंगे कोई विरले तीरथ जाहीं ॥ गंग०॥
शम्भु करिहै करम कुकरम सभी उठ मोपे धोहिहै ।
हुइहै बहोत अपराध आन मोरे सलिलमें बहहिहैं
तिने देख में काँपिहों जैसे सिन्धसों गाय ।
उनके हृदय कल्पेंगे होइहैं दुख अधिकाय ॥ गंग० ॥
गङ्गा मुनि माधो अस्थान तहाँ तुमको ले जैहैं ।
कोटि यज्ञके किए तुरन्त नर सो फल पैहैं ।
सातखण्ड नवदीप में तुम समान नहीं कोय ।
जो नर तेरे आश्रित होंयगे शिवपुर वासी होय ॥ गं०॥
सत्यशरण होय रोह निकट तोहि ध्यान लगावे ।
विमुख जाने न देहों काहूके दरशन पावे ॥
भागीरथ तपस्या कीनी चोबीस गई विताय ।
तिनके पित्र वैकुण्ठ तरेंगे परिहैं तिहारे पांय ॥ गं०॥
शम्भुवचन कर जोरि गङ्गा आगिहैं आई ।
भलो करो भोलानाथ निकटते दूर बहाई ॥
पिछली प्रीत न छाड़िये यही बड़ोंकी रीत ।
एसी प्रीत करो हर हमसों ज्यों बालूकी भीत ॥ गंग॥
महावैष्णव जपी तपी सिद्ध मुनी जो तोमें नहिहैं ।
पातकी जनके पातक तेरे तें दूर सब होजैहैं ॥
अघहरणी वैकुंठनिसैनी किते पतित उधरिहैं ।
जीव जन्त खग पन्नग पशु नर जो परसे सोइ तरिहैं ॥ गं०
शम्भु कुमत कहो नहीं जाई सुमत हर भलो विचारो
तुमरो कछु न दोष करमको रेख हमारो ॥
आज्ञा मांगके चलीहै कलिमें वेग लोजो बोलाय ।
गङ्गादास तिहारे दरसको वार वार बलिजाय ॥ गं०॥

गर्जरी टोड़ी—तिताल

एरी माई आज वधावरा साजनुवा घर अति आनन्दन
सन बाजोलो मोर मन्दिरवा ।
सुघर मालनिया गुन्ध गुन्ध लाई चतुर मालनीया
बीन बीन लाई वेला चमेलीके हरवा ॥

मुलतानी—तिताल

गोकुल गांव को छोहरारे बरसाने की नारि ।
इन दोउन मन मोह लईरी रहो सदारङ्ग निहार ॥

ईमन—तिताल

सुमरण तोरा करीम रहीम रब रहमान ।
हों बन्दा गुन्हेगारतूं वकसनहार और दाता विधाता
सबही कों देत सदारङ्ग को दीजे ईमान ॥

२

आईरी में तोरी नगरीया तुमसों लागीलो मेरो नेहरे।
बाट घाट मग रोकत टोकत बरजोरी गरवा लगावेरे॥

कायानट—ताल तिताल

तोरी दोउ कर बाजे पीतम अतिही नेह बढे दोउ
ओरतें ।
तोरा जीय संकुच मोरा जीय लाजे सदा रसकी
बतीयां श्रवण सुनत दोउ ओरतें ॥

२

जब मिलेगो माई पिय प्यारो तब उनपर वार
वारोंगी रे तन मन धन ।
उन बिन मोकों घर अगना दुवर भइलो अब कहो
कौन कीजिये जतन ॥

वागेश्वरी—तिताल

प्रीति लागली मोरीरे ए सुरजन साईंरी ।
निश चहुं ओर ते विजली चमके सगरी रैन में जागरी॥

मालकोश—तिताल

पीरन जानीरे पीउ देखो तिहारो अनोखो रीत ।
एसे निरमोही भइलवा बलमा अजहुं न आए यह
कहांकी रीत ॥

२

आज मोरे आइला सुमत प्यारे करोंगी सदारङ्ग
से रङ्ग रलीयां ।
अतर अरगजा सुगन्ध बसन पहर फुलवन सेज
बिछाऊं चुन चुन कलियाँ ॥

सोहनी—तिताल

आमिल गलवांही मैनु देराभा।
तेड़े कारण वे ओलंभे रेहदे असी तु साड़दे सुख साभां॥

२

राजण माँड़ीं खवर न लोनी किसनु जाय सुनावां।
जो बीती सो दिल विच बीती नूर रङ्ग ढगड़ो सांसां
लेले रङ्ग जावां॥

२

फरीयदसा नूरबा तेनुकर दावे सुन दावी नाहीं
मेडा ढोलन यार।
दिलदी रदवारी किसनु आँखि मौला जाने नाहीं
देदा दाद॥

केदारा—तिताल

निश नीद न आवे न भावे मोंको पिया विन सेज।
जैसी सदारङ्गीलो चादनी तैसेही अभूषण ते वनिता
बन आई या समय महम्मदसा सुन्दर को कोऊ
देहो मेज॥

२

केती सोखेहो छलवल नटनागर हे नट नागर।
मन भावन मन मोह लियो है निरखत अनेक
कला कर॥

श्याम कल्याण—एकताला

मोर बुलाई सावनको ऋतु वन घन डार डार।
साजन आए मोरेरी अङ्गना लेहों वलैया हों वार वार॥

हमीर—एकताला

मेरा अलवेला मीत पियरवा।
लाड गहेला अतही नवेला सदारंग सब खेल खेला
सोमें कर राखूंगी हार हमेला॥

कान्हरा—तिताल

आवन आगम जानो होंतो पिय को अङ्गवा भुजवा
फरके और फरके आँख बांई।
पायल बाजे बार बार यही सगुण भइलवा
रिम झिम वेग मिलिहै सुरजन सांई॥

होंतो जनम न छाड़ूं तुमको प्रेम पियरवा को सङ्ग।
विधना तोपे इतनो मागत होंरे प्यारे को
कीजिये एक रंग॥

छायानट—तिताल

एरी अब गुंध लावोरी मालनीयाँ इस वनरेके शोश
सेहरा।
लागी लगन सुलतान सालम सों वनरे वनरी सों
लागो नेहरा॥

२

मोरो आँखन आगे ठाड़े रहो।
मोहनो मूरत हिरदे बसोलो मन अवतो
कोऊ लाख कहो॥

विहाग—तिताल

मेरो मन अटक्यो आली वा मूरत के ध्यान।
निशिवासर मोहे पलक न लगत निकसो जात प्राण॥

२

परोहों पांय प्यारे मोरे आजको रैन जिन जगावोरे।
निशदिन जागलो तोरे उमाहे लेहों वलैया हों
वार वाररे॥

विहाग—एकताल

श्याम मोरो आँखन बीच समाय रह्यो लोक जाने
कजरारे।
घूंघट ओट छिपाए न छिपत महरवान प्रेम प्रीतको
झगरारे॥

विहाग—जलद तिताल

आनन्द करो निशदिन मोरे राजा।
बहु भांतिन रङ्ग तुमोसा उपज्या बहातबनेगो साजा॥

पुरीया—तिताल

सुघर बना माई सुघरवना अब बन आयो माई
सुघर वना सब मिल गावो दार बकस पोय प्यारो।
चिर युग जीवो करोर वर सलों शाह आजम को
नन्दन जोलौं धरन ध्रुव तारो॥

राग परज—तिताल

थोरेरे दिनको नवल दुलहैया नयो योवन नयो रङ्ग।
नई प्रीत रीत नए आभूषण शाह आजमके सङ्ग॥

विहाग—अध्द तिताल

नन्ददा नागर नैन सलोना पाँच बरस दानो मनमोहन
अजहूं बड़ डाहोना ।
रसिक प्रीतम विनए जमुन भावे खाना पीना सोना ॥

विहाग—तिताल

जबते देखे नैन भर भर कुंवर श्याम मोहो वा रूप पेर ।
सदारङ्ग बनी वनिता सब निकस ठाड़ो पे ऐ वाको ना
कोऊ सोहोरे ॥

२

एतू मोरारे सुरजनुवा घर आव तोरे कारण मोरा
जीउ तरसाई ।
वटवा छडवाके भेटवा हों बंदोहूं सदारङ्गीले
महम्मद सा जाने ना टेहों फंट गह राखा कर सोहो ॥

३

टरवा देहों मोरे कंथ पिया मोरा नाहीं पास ।
बिछुरे मिले आज सदारङ्गोलरा पूजिले कहो मेरे
मनको आस ॥

४

सुन मोरो सजनोरो करूँगा अनन्द निशदिन वा पिय
आइला मोर भवनवा रहस रहस कर गावहुं
मङ्गलचार ।
हुलसोला चित मगन भइलवा गइलवा दुख दूर
पराय रसिक सजनवा आवन कहिला लावारो
मलनोया हार ॥

विहाग—पटताल

सुन मोरो सजनोरो रहसन गावोरो बधावरा
आइला पिय मोरे मन्दिरवा ।
जनम जनम के सब दुख गइले मोर सजनवा
पियरवा तत वितत घन शिखर बाजोलो बजारवा ॥

विहाग—तिताल

विनरो वालमुवा ए वालमुवा मोरोपे वाहूतें विछुरे
दुवर भइलो अधिक दुख पाए दिन दिन निशदिन
पीरो भईगो जैसे हरदो ।
कुसुमसी भई अधिक दुख पाए दिन दिन निशदिन
पीरो भइलो जैसे हरदो ॥

२

कबहूं न आवत मोरे मन्दिर छैल छबीला चञ्चल
खेलंद्रा निडर सुन्दर परघरवा हरवासे कबहूं
मनके मन्दिरवा ।
इतनो विनती मोरी उन सङ्ग कहियो जाय पातगवारे
औरन सङ्ग तुम हँसत बोलत हो महोते
करत यह ढङ्गवा ॥

३

सुन सुन रे भोरे नाहा तहाँही जा ।
जिन सोतनके रस वस भइला ताहोके रीझा ॥

४

नाहा में दुवर भईलो अबहों कैसे वाके करूं सिङ्गरवा ।
उन विन मोरी यह गत भइलो मोरे नाहा
कनगुरोया को मुन्दरिया सुर आलोवा ॥

५

यह लाडल वनरा वनरो तू लेहो जुलवा तोरे वावुल
लियो मोल ।
शुभघरो शुभदिन पल महूरत रससों घूंघट देत खोल ॥

६

ए मा हौंतो पइयां परहो लेहों वलैयां रहस रहस
कर गरवा लगाओ ।
जोलौं देखूं आवत तोलों पलकन मग भार पायल
सन्दलवा लाओ ॥

७

रैन अँधेरो डरपावे पीया नहीं मोरे पास ।
जबतें पीतम परदेश गवन कोनो तबते आलो टूटो
जात मनको आस ॥

८

मोरी चोलोया सौ सौ वार फरकाई एहरि एमोरे
सुरजनवा वलमा तुमरे मिलन कारण छतीयाँ
धरकाई ।

तन मन धन नोछावर करहूं जीय भर नैन सदारङ्ग
निरखो उनकाँई ॥

९

जग जीवन थोरा थोरा समझ समझ कर देखले।
सीख मानले सदारङ्ग बहोत गई अबतो जोगी भेषले॥

१०

डगर डगर डगर चले आइर तब नीमे धुर ओरको।
जब एसे चले सदारङ्ग तब साह कहावे नातर
मार खाए चार चोरको॥

११

झाँजी मेकी जाणा तेड़ी गला साँई जानदा दिल
विच रखोवे।
हम दम में ताँड़े वारी जावाँ इगकदे गलाँ नाल कोई
बुरा मानदा॥

१२

दिल दी गला किसनु आखें मेड़ार जान दावे मीयाँ।
घट में रोम रोम साँई रव दाढामि वीतिनु आखाँ
वेमीयाँदो॥

१३

अणी वेखोणी माएनी अणीकी होयार झेट डावे दरद।
भूल गया साड़े दल दीगलाँ सुखनी दड़ी कीत
सो सोया॥

१४

माइरी पीया मोरा गुणवंता हेरी गुणवंता।
सबही सखी मिल वाहो के मना लीजिए सबहो
पको मन भावता॥

विहाग—एकताल

बोलरे रङ्गीले वनरे मोसे बोल होवे तूं मोसे बोल।
एक पग ठाड़ो दोउ कर जोरे हँस हँस घूंघट खोल॥
आज वनो से बोल बोल रे रङ्गीले वनरे मो०॥

विहाग—तिताल

दानी उदतनदीरना दामतदीयन रेना आदानी।
नादरदानी तुन्द्रदानी तनातुन्द्रदीम तनन दिरदानी॥

२

मेरी बतीयाँ मानले प्रीतमवा सुरजन साँई।
सदारङ्गीले लालन बिछुर मत करहो अबमे हाहा
करहूं परहूं पाई॥

३

जिन छुवो छतीयाँ मोरी ढीट लङ्गरवा मनहरवा।
बार बार में तोहि समझाऊं चपल छैल चतुर
सुरजनुवा जिन तोरी हरवा॥

४

सुन मोरी सजनीरी रहसन करोंगीव धावरा
आइलो पीय मोर मन्दिरवा।
जनम जनम के सब दुख गइले मोर सुरजनुवा तत
वितत घन शिखर वजवो मन्दिलरा॥

५

सजनीरे अब वीत गइली रजनी।
जागत जागत सब निश बीती भोरहो आए लजनी॥

६

एरीहौं चो क परी पिय आय गएमें मद सों
छकी मोरामा।
और कछू नहीं वन आयो हो घरही जाय लुकोमा॥

७

मन चीते कारज भइले हमरे सखी सहेली गावोरी
आनन्द वधावरा।
आपही आयो लालन मोरे मन्दिरवा हौंतो करहूं
सुखवा रहस रहस कर मन रङ्ग सों अब जनम
जनमके अबतो दुखवा गइलवा॥

विहाग—जलद तिताल

कगवा बोले मोरी अटरीया अरे उड़रे कागा पिय
कब आवे।
कइयो बार तेरो सगुन साचो भयो याहोतें हौं
पियपे उडाऊं॥

विहाग—धीमा तिताल

वालम रे मेरे मनके चीते होवन देहो वन दे कहो
मीत पीयरवा॥

सदारङ्ग जिन जावो विदेशवा सुखदो गलोया
सोवनदे ॥

विहाग—तिताल

अतगत कामनोरी तेरो सुन्दर जोवन मदमातीरी।
खञ्जननैना मृगलोचन मुखते चटक चादनीरी ॥

२

घरी पल छिन विन लालन मोको वीतत निशदिन
एमा जोवन तन मन धन सब करिहु लेखा उन
विन धरोहीं कैसे।
ना डरिहौं नाटरिहौं अपनी बान तें आली नरहों हौं
विन मिलें पीया मन अब बनें जैसे ॥

३

कौन ढङ्ग तोरा सजनीरी कित इतगत उत रात
बीती जात।
छाड़ मान उठ चलरी वलाल उत मोतें लगाय रही
घात ॥

४

दकन दरीया तादानी नादानी मकुनवा मनु अए दोस्त।
माए मपुर गुणा वोहतो दर याये रहमतो जाएके
फजमो तुस्त मिवाशद गुनें हेमा ॥

५

सइयोनी रार्भेटा मेडे छाथना आया। कुक ४ कूकां।
रलाले मेड़ो चस्मा भूलना जा देशकां॥
राति देहा नेर्णो नोदन आवे दम दम उठटो हूकां।
सुहो चोलो हो रसवे सिङ्गारनु लायानी माए लूका॥

६

अणी अमो मेदड़ो मेदड़ो सुहोवे सो कामितो
अब लजाय लगोनो शेनु अणी अणी अणी।
चंड विच्या कुजमें आंख नासिका देवे मुवारकी
मिनी जणी जणी जणी ॥
खुशहे धन्धालो पाय खसालो खोल मिल लगदीया
गलीया धणी।
नोवता बजाय रङ्ग रचाय साहुर डेनु चली जो आवे नो
शोवे खण वणी ॥

कैसे सुख सोवूं नीदड़ीया काम मूरत चित चढ़ी।
सोच सोच सदारङ्ग उकलाया हिय वेदन अति बढ़ी ॥

८

आई आजा नन्दरतिले देरनुम।
जिनहार शोश ए दिल मनवर जमी सुजनु पस माने
कुएतो अजार नेकन ॥

९

आज सजन सङ्ग मिलन वनोलवा लावोरी मलनिया
हरवा।
अच्छी नोकी लड़ मालनिया लावो मध पान अञ्जन
मञ्जन कर पिय सङ्ग मिलहुं आज मिलन वनोलवा॥

१०

जान देरी जान दे तू जोगी काहे के मीत।
गर कथा झोली अंग भभूत रमाए काहू गोरी
सों करत नवप्रीत ॥

११

तदीमतननानितनादिरनातदानितदटानिटोस्त
धिकटतगनधगनगधिताधितगनकड़धानथुंनचुं धिगन
नानधाधाधा।
तुँ तुम्तुम्तननतनदिरनादोमनदटानिदोमधीन धीन
धीनाकड़धाननकटधिकिटधिकिकिटधिनिकटनकधात
धातकटधिगनधितिकटनकधाधिगनानधिगतान
धगड़तकधगदिगन२नगनगकड़धाकड़धाधा
ड़धाड़धाधाधा ॥

१२

प्यारे सुरजनवारे सइसे सजनी रहस रहस रस
बतियां कोनी सौतन तें लुकाय लुकाय छिपाय।
द्रुगनसों द्रुगन जबही मिलाय छित चित दियो
बढ़ाय आली तबतें लागो उन तन मोरा मनुवा ॥

१३

तुमसे मनुवा लागिला सजनीरी मिलिहु भुज भर
गरब श्यामसुन्दर नन्दके दुलरवा।
चितवन में मोरा मन बस कर हर लीनो चतुर
सुघर सदारङ्ग पियरवा ॥

१४

मैंतो तोहे जानन देहों साचो कहो तुम कोन
नगर के वासी।
एसी न कीजे श्याम सांवरे जामें होवे जग हांसी।
तुम तो नये भये ब्रजके ठाकुर हौंतो तिहारी दासी॥

१५

आंखड़िया तेंदड़िया उदनाड़ोया दिसे दड़ोया
सेनड़िया नालाजो दड़ोया से दड़ोया हालवे।
नाले दड़ोया नादे दड़ोया ना बोले दड़ोया ना सुने
दड़ोया राते दड़िया मुवे खवे हसे दड़ियां॥
विन सुरमें कजले दड़िया चमकननु विजले दड़ोया
मोड़े दड़ोया तोड़े दड़ियां।
चोरे दड़िया छिपे दड़ियां कंदे दड़िया कहे दड़िया
मारे दड़िया तारे दड़ियां तड़के दड़ियां दोने ना
विच वसे दड़ियाँ॥

बिहाग—धीमा तिताला

कानरवा हम या कामको नाहीं रे।
तुम चीनत हो तो हम तन चाहो देखत शंकासों
डर नाहीं रे॥

बिहाग—तिताला

सुनरी बहुरी या मोरा मन तुमोसों अटको
अब घर जिन जावो एरी बहुरी।
सांची बात गोपाले भावे जाको सदारङ्ग चाहे ता
सोई बड़ भागके बड़े भागरो॥

२

अब घर जिन जावो मोरे प्यारे तुझ, देखन कों
जिय तरसई।
तुम विन मोकों कल न परत है छतियां धर धरकई॥

३

ऊधो मेरे दुख हरवेकी पाती पठावत हो।
हौंतो भिखारी नन्दलाल दरस के सुखो सलाँ
कासे कहों ऐसे अघात हो॥

आइला पी मोरे मन्दिरवा सुन मोरी सजनी रइमन
गावहु बधावरा।
जनम जनम को सब दुख गइले मो सजनी तत
वितत घन शिखर बाजे बजाय मारा॥

५

मेरो मन अटके आली वा मूरतके ध्यान।
निशवासर मोहे पलकन लागत निकसो जात पिरान॥

६

एरीतू आजावे मेरे पास।
माई उमगत आवे जियरा मोरा निकसत नाहीं सास॥

७

कित लुवधे माई पिय मोरा सुधड़न लोनी ननकवा।
सोच समझ जिय कछू हुलसानो आवनकी अबतो
भनकवा॥

८

कैसे रहिहों सजनी पिया विना मोपे रहा न जाय
घरी घरी पल पल छिन छिन अबतो उन विन देखे
मो मन दुखवा होय।
पइयां लागूं तोरे सजनी चतुर सुघर सुरजन मों
वेग मिलावो मोंको तबहीं गुण मानो तेरो जनम लों
कहे हेतु करहू सोय॥

९

आज जागी मारी रैनकी बनो ह्वै है नैन उनीदो
मोहे सोहे।
धसनमें चन्द्र शरीर झुमकत तापर अभूषण
जगमगात यह सबही मन मोहे॥

१०

गोरी तेरो राज सुहाग कायम दायम रहैगो।
नाकदी नथ दतिदी मशहरो हरी चुरीयां मेंहदी
रङ्गीली और चटकीली जोड़ेपे नमें भूलांगी॥

११

सुरत विसारीरे मेरे पी अनत रहे जाय।
विरहके सिन्ध परी हौं कहा करों उपाय॥

१२

नदीया मझधार नाचे बड़ो अप रूप गोरि ।
अलक थलक मुख सोहे वंशी रस डूब डूब करे रङ्ग
दुति अँखियांरे ॥

१३

फरकन लागी आंख बांही याँ मोरीरि वेग मिलो सइयाँ।
पियको सगुन आवन जो विचारो वमना विनती
करहूं परहूं पइयाँ ॥

१४

माथे धर धर वैरागी नेना मूंद बठ रहोये जोगी
कार्के मोत ।
डार गुदड़ीया गले डारो सङ्ग अङ्ग चलो परदेश
काङ्क से प्रीत न रीत नेना मूंद बैठो रहोये जोगी
कार्के मोत ॥

१५

मेंहदीदा रङ्ग लाल अनो सइयाँ तेंड़े हाथां रे
चङ्गंड देहा ।
महंदी किणवे बणाइयाँ असी तुसाडंड चङ्ग डंवे ॥

१६

एरी तेरी लाल पगीया कैसी नीकी लागे लागेर ।
चतुर वलमा एसी माथे आढ़नो देहा रङ्गाय नातर
पिया जा रीझे सब मिलके एहो व्रजवालर ॥

१७

माल्निया गंध लावोरी सेहरा अरी सेहरा ।
मोतिया मदनवान आर गुलाब केतकी वेला चमेली
केवरा ॥

१८

दरद मदाक परवाह किसदीवे दरद दोदाक रोझा।
मरण जोवन तू एक रजानदा दिठे सदारङ्गीना
ख्याल उनोदा एहो गल बीच बसेंदी ॥

१९

उमगेरी दोऊ बदरा श्याम विना ।
सुनरी सखी पिया सपने में देखे भर आए नीर ढरक
गयो काजरा ॥

रूपमती पी आज बहादुर तज गए गोकुल
मिट गए झगरा ॥
श्याम विना० ॥

विहाग—झमरा ताल

करीम रहीम रब रहमान पाक परदिगार करतार ।
दुख दारिद्र सब दूर करो पाप हरा मा आजज पर
रहम करम की नजर करो सुख देहो सबन के दाता
विधाता वकसन हार ॥

विहाग —तिताल

ननदिरना दोमतदनुतुमतनाद्रदरतारदानी ।
दिरनुम२तानदिर तुम तादारदानी ॥

२

नाद्रि दोम दोम तनन दिरना अनदानी दोम ।
तनुमुदिरना दोमतान दिरनादारे तददानो ना
तददानो ॥

३

तनला द्रद्रतंद्रद्रतानदोरनातन दिरना ना दानी
उदानी दानीतुंमतननत कटधकधुमकिटतकतड
कड़ान् धुमकटतकधा ।
इतिले तिञाना तु तान दिरतुम नितनन दोम दोम
तनुमतानं नातानतुं तन उदन तानतुं तनन न दिरना
किटतक धुमकिटतकतड़कड़ानधा ॥

४

हारे बन्दो हों ताहीके उसोह जहाँ मोरा पीया
देखो बतायरे ।
परघर को सों लेहो नाम माए बात कहारे ॥

५

कैसे रहिहौं सजनी पिया विन मोपे रहाई न जाय
घरी घरी पल पल छिन छिन अवतो उन विन
देखे सो मनवा दुखवा होय ।
पँइया लागूं तोरे सजनी चतुर सुघर सुन्दर सुरजन
सों वेग मिलावो मोकों तउहीं गुण मानो तेरा
जनम लौं जो कहे हेतु करहूं न सोय ॥

दैया भली बात भईरे सुरजन मई आप मनाय
लईरे दैया ।
अति सुख पाईला मोमन मजनो जबतें आइला
सजनो गोकुल गांव को बसैया ॥

७

जबतें बिछुरे लाल अति दुख पायो मोरे तन मनवा ।
अवध वदो हतो उनके आवन को मजनोरो सेत
भए मोरे नैननवा ॥

८

अब मन चीतारे काज भइला मोरे ।
अनर अरगजामों नाहाम्हया मानोगी रातरी हौं अब
मोहे अल्ला मिलावो ॥

९

विलापनमें कैसो अनवनो सुनियेरी मजनो ।
राम राम को नाम लेत मोहि रेन वहिनो ॥
अवध वदो अजहूं नहीं आए ना जानू अचलपको
जियमें कैसो वनो ॥

१०

जिन छुवो छतियां मोरी सुन लङ्गरवा ।
इतनो विनती मोरी मानले महरवान तान वरस सों
कहो परम चतुर पीयरवा ॥

रङ्गीले वनरे मांस बालर अर मांस बाल ।
छोरा मोतियन मुकता जो लगाऊं मोतियन खरी
अनमोल ।
नीजामदीनके आजम दुलहा वनरो लीनो अनमोल ॥

१२

मनचीता कारज भईले आज गावहु मखो सहेलरी
बाजत तुरही मन्दिलरवा ।
द्रुम धाधा किट किट द्रुम किट किट विल गाया ॥

१३

वैरो भए मेरे सब नगरके लोग ।
पिय सों कहा कहों वैधोसखीयां जो गये सखी तोसों
यह कहो कैसेक मन आवे वियोग ॥

१४

किन राखोरी विलमाय धन धनरी मेरो लाल
लडवंता लडवंता ।
बरोंगा इन दूतीयन को जिन नाहीं जान गुणवंता ॥

१५

सुनरी सजनी यह बात आज मोरे नाहा कहीं देख ।
आतन देखो जातन जान्यो जोवन जात परेख ॥

१६

उर बसो मोरो देहो पियरवा ।
जोई जोई कहियो सोई सोई करहों जियरवा ।

१७

हौंतो चढ्ेरा मागू बोलगी ना जागी लगी नाह जाणी ।
मेड़े दिलटी लगी नाहक जाणा मागू बोलती नजानी ॥
होजागू अपणा हमजाती बुभके गल उन हादी माणी ।
चील भपटे बाग तेनु बलले गए मसीनु बूभ विगांणी ॥

१८

ए सनम कार इश्क बाजी नेस्त ।
इश्क बाजी मकुनके वाजी नेस्त ॥

१९

सोयरी बयार बहे पिया विन मोरा अङ्गवा जड़ाय एमा ।
अवध वदो हतो मोरे नाहा विरहा हाथ दईमा ।

२०

हरचन्दके वादे रुज सवजा वागद ।
मस्ती सह माहे मशवो फरदा वागद ॥
खबर लवे श्रो नेह मए तागे जेज जा हुशियार
मुदन नबोव आदा वागद ॥

२१

तदरे दाना तनदिरतनद्रनातदार तह दानी तदीम
दीम तुम तननन दिरना तद तदानी ।
नाद्रद्र तंद्रद्रतनाद तानदिरना तानदिर दिरना
तदरदानी तुम तनन कड़ानधा ॥

२२

प्यारी तेरे नैनन लाल लड़ेते हो लजाय लजाय
कहत हैंरे ।
काहू सग रैन जागो अधरन अञ्जन नैन पीक लागी
आत देखिए यह लच्छण सब देखे तापै एतो मान
जनावत है गरे लागेरे ॥

२३

मैं तोहे जान न देहों साची कहो तुम कौन नगरके
वासी ।
एसो न कीजे श्याम रावरे जामें होवे जग हांसी ॥
तुमतो भये नये ब्रजके ठाकुर हौंतो तिहारो दासी ॥

२४

अरे एहो माईया आजको दिन मोहै नीको
लागतहै अरे ।
कानन वोर पहर नकवेसर माथे तिलक दिए
कनेर कोरे ॥

२५

मीयारे असो तेदड़ वारी जावाँ साड़ा अखड़ोयां
आगे तू सिरावे ।
वाल घुमाई छदके कीती गले लग लग सुखवा सोवे
साड़ो ॥

२६

भाभी सों सनेह लगा जबते तबते तूने दिया
सब विसराय ।
वदनविलोकत मोह लियो मनजीवन जनम
सुख पाय ॥

२७

सो अब सुगन्ध लावोरी अरी एमा ।
हाथों से पहराँ लगाय और रङ्गीलो साथ अरी एमा ॥

२८

तेरे वारने अल्ला जाऊं ।
तुही देवे तुही दिलाये तेरा दिया में पाऊं ॥

२९

दोऊ सोतें हो आज लड़ीहैं लड़ी ।
चूक चूक चतुराई सीखी पिया प्यारी दोऊ
उरझ पड़ी ।
भोर धर नाक अगुरीया बोलतरीरे लाल जड़ी ॥

३०

महदी अति गहो भोनी लावो चोरी वनरेके हाथ ।
सारी रैनमें वनरा बनाई भोर भए दोनो साथ ॥

३१

आलीरी अपना सपना में कासे कहूं जो पिया
देखे हम आज ।
उमगोही आवे मन मिलवेकों सुनो महरवान भूल
गए सब काज ॥

३२

पिया बिछुरण मोरा तोरा एरी गुण मानू गुसैयां
एक पलरे ।
एसो लगन पर उन पर महरवान जैसो चन्द चकोररे ॥

३३

ठकुराणीया अचरा मोरा छोर लई आजान भई
आगम कहा कर नेम धरम सों बात कहो ।
एरी तू कैसे कहत है पनघट में गगरीया मोरी
छय लीनी कैसे छुवे तोरा फकीर होदनीया हतको ॥

३४

हौं निरगुणी भईलो माईरी पीया मोरा गुणवंता ।
शाहजहाँ पिया मोकों बुलावे कैसे जाऊं अरे भला
सबहो के मनवंता ॥

३५

कवन गाँवकी वाट वटोइयारे पूंछूं तोसों बाट यह
पूंछूं तोहे वाट वटोइयारे ।
हौं ब्रजनारी ढूंढ़न निकसी पूंछत लीनो डाटरे ॥

३६

जोबन हमरो जो कोऊ राखेरी माई उसके गरवाँ
लागूं रहस रहस कर ।
सदा न फूले तोरई सदा न सावन होय ।
सदा न जोवन थिर रहे सदा न जीवे कोय ॥

३७

साइंवा अलवेलेनो श्याम चुन चुन लावो कलियां।
सोताहै उठ जाग प्यारे किस वेलेदी मेखड़िया॥

३८

मोरी मा कैसे मिलहों उन तन जाय यह वालम अपनो अटके।
रैन दिना उन विन तलफत हों निश नीदरीया न आवे कहा करहूं जीयरा भटके॥

३९

वीतो सारी रैन साजन आए।
चेरी होंगो तेरो सजनो मोहे आन मिलावे॥

४०

टकवा देहों माए मोरे मीत पियरवा मोरे पास।
विछुरे मिले सदारङ्गीलरा मोरे पुजई मनकी आस॥

विहाग—जल्द तिताल

बावूरे मोमन जिन चित लाव ताहो के देखत हिया हुलास।
एक ठगनी ठगत फिरत है हमो मन रहस विलास॥

२

सपनेमें आए जवते तवते मोरी मा सुख चैन कीरो कल विगर गइलो।
होंजी चाहों सदारङ्ग गहवे कों पकरन इनकोरो पल उधर जइलो॥

३

अरे निरदई लङ्गर मोह लई।
जबते सुनो मुरली धुन श्रवणन सुध बुध विसर गई॥

४

सुर ग्यान ले तिरवट अच्छरसों गावत चतुरङ्ग।
निसा गम नि पामामगमग सासानिनिसानि
पमपसासागामापानिनि सानिपासामगासाममगसा॥
नाद्रद्रतुंद्रद्रद्रद्रतुंतुंतननतननितत‌ददानिकड़धान
कोतीकड़नकतकधुमकिटतक्गिदिगनधागिनग
तिरकटतकधुमकिटतकधेतड़ाङ्गकड़धाधोताधा॥

विहाग—ताल झुमरा

लगन लगीको पीररी वीर कासे कहिये।
धरत न धीर अधीर रहत जिय विन देखे वलवीररी दहिये॥

२

जिन छुवो छतियां मोरी ढीट लङ्गरवा मनहरवा।
वार वार मैं तोहो समझाऊं निरत तम लगी रहत निडरवा॥

ईमन विहाग—झुमरा ताल

आज सोहाग की रात नवलवर पाया वनरे वलैंया लूंगी।
वदन जोत पायन पर झिलमिलात सुखतँवोल वीरो गिन गिन दूंगी॥

विहाग—तिताला

हमरा बावू उमद मनि जन वतलावहु ताहोके देखत जिय हुलास।
हौंतो ठगनो ठगत फिरत रहत ना काहू के निशि पास॥

२

धन धनरी एरी लाल लाड़लो लाड़ लडवँता।
वारोंरो इन दुतीयन कों जिन नाहन समझो गुणवँता॥

३

मोहो वा रूपपै जवते देखो नैनन भर भर कुंवर श्याम।
जब सदारङ्ग विनवत वाम॥

४

विन बुलाए आई झुक आगे पांय परी।
मेरो वला अब तोसों बोले अदारङ्ग उनसे जाके प्रीत करी॥

५

लालके व्रज वानके लोएन अतरलसों अत धाय आरे।
रूप देख जित तित सतल उन विन कछू न सुहाएरे॥

६

लेहो सोतन तुम अपनो पियरवा हम सन करती ताररे।
सेवा करत मो जनम गइलवा तुम जोते हम हारीरे॥

भलो सो वाटड़ीया मेरा सो आवेगो ।
आड़ा वेज सुलतान रसके रसीले सेजरीयां रङ्ग
लावेगो ॥

८

आज सोहाग की रात पिया अपनो में पाऊंगो ।
बहोत दिनन के विछुरे अबमैं पायो पइयां लाग
मनाऊंगो ॥

९

वो राझ मैंडो गलीयाँ जिन याँते पर धरे दाऊ
न्हाजाई योरी वालीया ।
खेड़ोदे सनेह सुन सुन खोल घूंघट अंग लसे
मुख वालीयां ।
नासं तु माड़ो ना तुमी अस माड़ वेमि वन्दड़ी
राँझरणी अनमोलीयां ॥

१०

मेड़ा ढोलारी आज आया सो मेड़ा ढोला आया ।
चन्द्रमुख चांद अङ्ग लिपटाया मो सुरजन मेरे
मन भाया ।
हौंतन मन धन वार वार सखो निरख निरख गरे लाया ।

११

लाड लडंता लडवंता बनरा व्याहन आया ।
बाज मन्दिलराने तूबाज सुन्दर साहब जैन अलावदीन
वर पाया ॥

१२

आयोहे राज दुलारा ओरोए वनरा ।
सातसखो मिल देहो असीम एरी नवल एरोए वनरा ॥

१३

बाजत तुरई मन्दिलरा शिर छत्र धरे व्याहन
आयोरी वना ।
जग उजियारे अलह सवारो निजामदीन औलीया
शिर सेहरा सोहे कर सोहे कगना ॥

१४

बनी मुख खोल देख बोल तिहारो वनरो सुहाग भरोरे ।
गर सोहे सुआचोली कर सोहे चुरीया हरीरे ॥

१५

मोघर आवरे नाहा मैं मन वलिहार कियो ।
कौन मन्त्र पढ़ डारो मोपे वाट चलत मनमोह लियो ॥

१६

भँवरारे तू मण्डलात मण्डलात मोरे पोय कहां बसेरे ।
तुमरो बास तुमहो में आवे तुमरी सुरत मोय भावेरे ॥

१७

सुन्दर रसरूप सुघर वनरोरे घूंघट खोलन दे ।
वर पीयाऽवन आए हँस हँस बोलन बोलन दे ॥

१८

आज कँवार एकारोना जो साहब ठाड़ो रहो
जमुना के तीर ।
पानी एसो पतला और फूल एसो वासरे रानीयो
जो बैठो जमुना तीर ॥

विहाग—आड़ा तिताल

बलहु सुवासरो या मा मेरा मो आवेगा ।
सुलतान दूल्हे रसके रसीले सेजरीया रंग लावेगा ॥

२

मोरे घर कंत वसे एरो सुखियारी ।
मोरा कहा पोया मानत नाहीं अततू बड़ो
बड़ो कहावेरो ॥

३

आहारे वमना सगुन विचार कब घर आवे पोया मोरारे ।
परहों पइयां लेहों वलैया विनती करों आवे
अगनाहों वखरे जागरे ॥०

विहाग—तिताल

पइयां सुगाहोईं कोलों प्याले पइयू वेपरवाही ।
कियो पूर्ण पातसाह सुतड़ीनु छड़गई यूं वेपरवाही ॥
कोती तुल विहाणी मेनु लगण पाण से फूलगदो ।
अङ्गे यार दोसी हुण यार वलोच दाजो न्हाएहो
जुलेया खाक उन्हाए युन होदो ॥

विहाग—जलद तिताल

रमता जोगी आयारे बाबू कहुं गुरु कहुं चेला कहाए।
बामठ में योगी आयही अकेला चेला बहोत कहाए॥
आप गुरू और आपही चेला अपमेंही अलख जन गाए।
बहो दिन तुम छिप छिप बैठे अबतो हमने पाए॥
जमीन आसमान तेरी ताव न लाए मनमें कैसे समाए॥
कहा करूं तारीफ तुम्हारी सब कुछ तुमही कहाए॥
घर आए साहब कदर न जाने होत कहा पछताए।
हीराने ढूढ़ी तखत हभाग रांझा बगले पाए॥
बालही जोबन नैन रसीले प्यारी सूरत मन भाए।
करनअली बलिहारी तेरे तेरेही बल बल जाए॥

विहाग—तिताल

अब सुध लीजे कृष्ण प्यारे तुम बिन गोकुल सूनो।
नैन चटपटी लाग रही है कृष्ण कृष्ण यह धुनि॥

२

बनरे जागरे रैन रहीली नीकी बनरीके गरवा लाग।
खोल घूंघट मुख देख बनोका बनरीके नीके भाग॥

विहाग—जलद तिताल

श्याम बिना उमगेरी दोऊ बदरा।
रूपमती के बाज बहादुर तज दियो गोकुल
मिट गयो झगरा॥

विहाग—तिताल

अरे मन हर सो करले प्रीत करले प्रीत।
माता पिता सो दारा भाई उनकी है यह रीत।
जीवत केहैं सब पीतम अन्त नहीं कोऊ मीत॥

विहाग होरी—ताल तिताल

जा डोरीया पीतम माथे बांधी सो डोरीया क्यों छूट।
जित डोरूं तित एडी डोरू खेचे खेचे टूट॥
रहो न डोरन भरे लोयन बरकी गुड़ीया काकाटे लूट।
यह कहावत सब कोऊ जानत बहीया कूदत भल कूट॥

विहाग—तिताल

अनो मेड़ी सइयानी गारत कीतो विछाहै
सुखादे महले लट लीते सुखीयां ढाले।
दुखोदे जालां पायके कंकटा चुकाय के भाहै
नैणादे ममोले॥
भोग अग लगातण नु दाम दीला मण नु सोनेदे
विद्यो पए फफले।
वेसरम कड़ि विछुवे विद्यो कीते माले वन आए
सपोले॥

२

आज कोयलिया बोलइरे फिरवा देखो बोलन लागो।
पीऊ परदेश अब कौन गयो सदारङ्ग या समय मोपर
विरहन को मन तोरन लागो॥

३

लिखीयां निगाह यार दीजो राजोरो भेड़ाक मानाथा
पलक कीतो चलां दीया।
घायल मायल कर अपना नैनन खुमारीयां वेरतलो
डोर नाल दिलदे घाव मिला टीखे॥

विहाग—जलद तिताल

या शुभरात लाड़ोका बनरा आयारे हांरे आयारे।
रतन जड़ाव का सेहरा गंध सुवासन हीरा मोती
तखत बना शिर छत्र धरायारे॥

२

जा जा तन बुरदी वदरजानो हनोज दरद ही दादा
वदर मानो हनोज।
मुलके दिल कार दिखराव अस्ते गनाज कन्दरीवे
रोना सुलतानो हनोज॥

३

नेहाके रङ्गमें डूब रहो है तन मन सोच विचार।
दिलही गुल देख है आपसमें गुलशनकी वहार॥

विहाग—ताल सवारी

बनो जाग सोहाग की माती शोके रङ्गराती झूलवे
की बारी।
जगभांवता वर तोहे व्याहन आया जागे तोरे भागरी॥

जग जीवन बनरा आया रेमो जिय आज सुहायारे ।
कर कगना विराजे सोहा वागा गरे सोहे मोतियन
को सिर सेहरा बंधाया निरखत ही सब नर नारी के
मन भायारे ॥

विहाग—ताल फरोदस्त

मालीरे तेरे केवरे चढ़ो बास केवरे चढ़ो बास ।
यह बारी अली संवारी महक रही बास अकाम ॥

२

आयारी साथी मुझ घर अबमें कैसे कैसे यश वारूं ।
कैसे के पलकन तें मग झारूं आली कैसेके
गलबहियां डारूं ॥

३

बाला वलन्द अस बगरे सरवे नाज मन कोताह
करद सए उमरदराज मन ।
महमूदरादमें चुव आसरसी उमर मेदा जावत लखो
श्रोमो गुल्फ आया जेमन् ॥

४

आयारी दोदन जोर व्याहन सुघर बनोको चतुर बना
मुसकना सिर सेहरा विराजे सोरी सुगन्ध मना
सोहे जड़ाऊ कर कगना ॥

विहाग—तिताला

तुम हम मिल मध पीवे प्यारे सगरी रैन ।
मो ढिग बैठ बैठ और तोय सङ्ग देखत हो अब
तुम सेन ॥

२

को समझावोनी उसनु रुठडा जांदा दिलदार मांडा ।
विन दिठ सानु कलन पड़ेखा दिल लगा नहीं छूटदा

३

आड़ा वेमेकी जांणा ताड़ड़ी गला सांई जाने दिल
विच रखोवे ।
हमदम तेंड़े वारी जावां तुसी इश्कदी गलां मानले
दिलदी गलां किसनु आखां मांड़ा रब जाने वे मोयावे ।
हालदा महरम सांई रब दाढ़ा इश्क दी गला
पहचानें ॥

५

साड़ा दिल लगावे यार तांड़रे वेखनसु मांड़ो जानवे ।
मेवो अयांनी मेका जांणा इश्कदी गला जेनु ठगा ॥

६

एणी चङ्गड़ी बोलले जिन्द जान्दीया फन्दीया
तांडड़े नालवे ।
इश्क लगाके निभाणा तु करदा साडे नाल ठठोलीया
नेणावा वीयां ॥

७

नाजो रमके झमके आजा नाजो रमत डरी सूरत
देख लाजा ।
तेंडरी सूरत माड़े दिल विच चुभ गई साडड़ो
आस पुजा जाजा ॥

८

दलगानो ढोलन पायाहो रब किताके साडरे दिलदा
भायावो ।
आनन्दघन ब्रजमोहन जानो मोरे पिक गृह
आयाहो ॥

विहाग—चौताल

गणपत विघन हरण गजानन विराजत चन्द्रमा भाल ।
एकदन्त चतुरभुजो आनन्द कारण और गले
सोहत मुक्तमाल ॥
अष्टसिद्ध नवसिद्ध मूसक वाहन विद्यावंत ध्यान
विशाल ।
चञ्चल शशि प्रभु अस्तुति करत है शुभदायक बुधि
क्रपाल ॥

२

अजहूं समझ अजान सुमरले हरिनाम जनम
बीतो जात नेक रहत यह जग सों काम ।
बादिन की सुधि नाहिन तोकों जब घट अब तजेगो
प्राण ॥

लख चौरासी भटक भरमके मनुस शरीर पायो
सज्ञान।
रागी प्रभुको मन वच क्रम कर ररे भवसागर पार
परे नदान॥

३

जनम हमारो अकारथ भयो यह विध जो कबहूं
ना कियो हरसों हेत।
चार दिना के मवादके कारण विसार दियो अन्त
अन्देश अबहूं नाहन चेतत एसो अचेत॥
निशदिन आधीन रख वाहीको आधार जो तोसे
गुन्हेगार एक पलमें हजारन बकस देत।
औगुण छाड़ उनहो को ध्यान धरो तोवे तोहे
अपनो कर लेत॥

४

दुख दूनो दूनो होत सरस देख देख सूनो भवन
मोको माए।
निशदिन सुमरण जपत रहत हों नामके औसेर लाए॥

५

असुअन जल भरे नैन तेरेरी आली देख आवत में
देख अबतें प्रगट भयो तेरा विरह तूरी क्या दुराए।
नहीं जानत तिय अबला पिय बिछुरे की बिथा बड़े
मन तीखयो काम दहाए॥

६

उत्तम गायको गाय गाय सुनाय सब गुणीयन में
साचे सुरनकी उपज सों परत मान।
सुध वानो सुध सबके ध्यौरे न्यारे न्यारे कर दिखलावे
सब पँचनमें वादो बिवादो अनवादो संवादो
करके करत विनान॥

७

परवस कीनोरी मेरो मन इन नैननको कहो
में कहा बिगारोहै।
जब जब दरसन पिय को इन चाह्यो तब तब हीं
हेरो अन बिकायो एवज याको यह पायो
अकाजहो मोह मोज मारे है॥

तीन भिखारी भानुजा को धूप भिखारन चन्द्रमा
भोचेरो जाको चाँदनी भोचेरी।
रुकमण भी चेरो जाको राधिका भी चेरो
जनकसुता आधीन भई तेरो॥
इन्द्रपरी पग धो धो पीवे बिजरी से उजरो कनोड़ी
भई रहेरी।
कहै बैजू बावरे सुनो हो गोपाललाल ऐसो
त्रिया कौनसो जो विधना सवारो॥

८

आज कहा तज बैठो है भूषण एसे अङ्ग कछू
अरसीले।
बोलत बोल रुखाई लिये तुम काहे कुठङ्ग किए
अहमोले॥
कोन कहों दुख प्राण पिया सों असुअन रहे भर
नैन लजीले।
तानसेन सुख होवे जिनके तिनके मनभावन छैल
छबीले॥

१०

तूचल मेरी मान राख आवन को आलीरी।
वैतो तिहारो मग जोवत है अतहीं चतुर सुजान॥
काहूको कही सुनो श्रवणन धरिये करिये जनमन
इतनो वाख्यान।
उठ चल हिल मिल कहत हिदायत नेक कर
कुलकी कान॥

११

पल छिन बीते मोकों निशदिन जबते गवन कीनो
मोरे पिय।
घड़ियां बरस जात जो जिन एते बिरहा महादुख
दिय॥

१२

बाज आज मन्दिल बाज या घर काज नित राज।
हीरे मोतियन को शीश सेहरा बिराजे मनकी
इच्छा सब पूरण भई और सुफल सब काज॥

अलह करम रहम कियो दोज जगरा पल इस्लाज।
नित निशदिन बाजे साज तन मन और दोज
कर और कण्टक सगरे दुख दारिद्र गए भाज॥

१३

रस पागो आई प्यारी पिते मोह भाई।
ठांर ठौरके भूषण भीमन वन रह्यो याते सुहाई॥

१४

मन नहीं चैन परेरो धीरज कैसे धरूमें।
द्रग जलद को प्रवाह बढ़ो याते द्रवए सखी
विरह अमन तपन जरूमें

१५

मेरे मन समझ समझ कर चेत।
जब लग सेवा निहचेकै करो तब लग हरियारो खेत॥
यहतो जनम अकारथ खोया कुहर श्याम भये सेत।
वोर सुजान भरम जिन भूलो कर विधना सों हेत॥

१६

वदन ढांप पौढ़ो नीलपट पहरे रूम रह्यो है प्यारो।
जबही घूंघट पट न्यारो करत पिय मानो होय जात
उजियारो॥
एसे एश खेल परे हैं पीतम विचित्र सहारो।
साह बहादुर निहारो करत मेरो सीख सुन उठ
चल क्यों हारो॥

१७

एन नातोरे बरजों तू नहीं मानत मेरो सीख।
वरज रही वरजो नहीं मानत घर घर मागत
रूप भीख॥
चित चाहत है प्यारेके सरूप को अब कैसे मिल ना
होय देख।
आनन्दघन प्रभु मोहन प्यारे टारे न टरत नहीं
करम रेख॥

१८

कैते बरजोरी लालन को कहो गवन करो तुम जिन।
समूह उनहो को चित है चढ़ेगो जब कैसे कटेगो
निशदिन॥

डर लागत आलो मोहि उनहीं ते बेरस काम ते त्रिन।
जोकोउ उनके आवनको कहो मोको देहो नग मुक्त
हल वाको वह छिन॥

१९

नीलकंज गात सुभग लोचन अनियारोरो।
देखत छवि भूल जात गनत गुण तिहारे सुनरो
सखी कासो कहीं शोभा अति भारोरो॥
जाको छवि देख देख सुर नर मुनि धरत ध्यान
वाही छवि काशी माझ शङ्कर उधारो वाही छविरो।
जनक नगर देख मुनिन ध्यान छूटे वाही छवि धीरज
प्रभु काम कोट वारोरो॥

२०

अब रस राखिये हो कुमत न चलिये चाल।
करही जो चाहिये जो रङ्ग रहे जामें रच पच के
कल्याण कियो नवल लाल॥

२१

संयोगी बिन बिलपंत निशदिन बोलरो कहे सब लोग।
मन गयो मनोहर के सङ्ग छिनसे न रखियो
सो लीनो जोग॥

२२

चढ़ो रहत चित पे वह सूरत बिसर गयो सब भोग।
औषधि न याको नहीं जगतमें विरह एसो रोग॥

२३

कैसे सुख सोवे नीदरोया श्याम सूरत चित
चढ़ी रहत नित।
अवध बढो अजहूं नहीं आए मोहन मीत॥

२४

मान जिनके सुन्दररूप एतो हठ नहीं कीजे हो।
काहूके लगाये बुझाए अवन न धरिये हो रस पीजिहो॥

२५

एक ओढ़नो ओढ़ पौढो तिया पिया प्रेम परजङ्क।
सुरत न सङ्गत रीझ भीजे आपने आपने करत है
निशंक॥

२६

गत गई मत गई बोलवेकी जत गई कुलह्की
पत गई पगी प्रेम भौरसी।
कुल लोक लाज गई नीद भूख घट गई लुटगई
झटदे निपट अधीरसी॥
यमुना के कूल कालसी बजाई बाँसी हाँसी की
जग गीर मुखतें होगई नगीरसी।
आहनके घावन से घायल भयो तन आंखिनतें आंसु
जात ठाडे की वहीरसी॥

२७

मोतियनके मानकनके और लालन के जरी जरी
जीन बनाएरत।
अरबी एराकी ताजी तुरकी कोऊ कोऊ का जमाय
सके एसे मुष्क पग नखनके बसवेमें आएरत॥
जा सकुचन उन लागो श्याम बावरीसी जोरे
बाजि बाजि आप बाजीके चलाएरत।
बर तेह व्यार खुलेतें हजार पाव लाख पाव होत
एक पाव के लगाएरत॥

२८

तूं उठ चल मुह बात तज आना कानी।
बहुतसे घर बसे हैं वह देखो राजा मानो मा ईरानी॥

२९

सोयरी सोयरी पवन चलतहै माई फैल रही चाँदनी
निथरी निथरी।
निशदिन पलहूं न लागत कपोलन लागी अलकें
बिथुरी बिथुरी॥

३०

वालापन तरुणापन गयो आयो है विरध पन
अजहूं समझ मन मेरे।
निशदिन सुमरण वाको कररे जियररे जाको
नाम करीम खरे॥

३१

आलीहौं पूंछत हों तोसों नकरे वैन कहो कैसे
परे चैन वाके मनको।
दुरजन लोग मेरे पाछे परेहैं कोऊ विध नाह वैन
आवे मोकों तज देहों वास वृन्दावनको॥

३२

रुम झुम भर आएरी ने ना तिहारे।
बिथुरीसी अलकें श्यामघनसी लागत झपक झपक
उघरत मेरे जान तारे॥
अरुण वरुण नैना तेरे तामें लाल डोरे तापर अंबुज
वार वार डारे।
कहै मीया तानसेन सुनो शाह अकवर उपमा
कहालों दीजे विन अञ्जन काजरारे॥

३३

एरी अब लुक भजजावो मनमुख होवे पियारे
सों सुरङ्ग भरी कीजिये बतीयाँ।
मान सीख मेरी काहूकी कुमत न लीजिये छाड़
यह हठ चल लिपट लाग पर गुलाल की छतीयां॥
देख तू एसी फुलवारीसी होरही कर अपबस
सुन्दरमें मनाय रही बतीयाँ।
कबके जोवत वाट प्राणेश्वर प्यारो जानबूझके
काहेकों करत है तानसेन प्रभु सों घतीयाँ॥

३४

सो अब मेरी पीर नहीं जाने न माने धरे एकन मनकान।
सोच सकुच काहू को नकरे एसे निपट नदान॥

३५

तरसत रहत मेरो जिय माई पिय विन कहू न सोहाई।
तैसी दामन कुंध चोध घन बोल करत तें मोई
पपीहा बोलत दुख दाई॥

३६

वनरा उनींदा नाहिन आली वनरी के नेह में अखीयाँ
छकरही।
सोंधे सिरो झुकी सुवास ते आली तरुणी वारी
सब महक रही॥
जै सखी पीत पहलेतें वनरे आगे टौन कर झूंठ
साच बहुत कर रही।
उन मानो नकोहूं तब नवलवधू को पीत देखत
सब जक रही॥

३७

अत कछू नाहरे मन अजान अजहूं समझ सपने
लोभ मध क्यों खोवत जनम अपनो।
जादिन पिय ठिंग जायगो तो कहा मुख दिखलायगो
अन्तकै समय यही काम आवेगो हरि नाम जपनो॥

३८

झलक झलक आयो लाल आखनमें नीर सुरत
करे असुअन ढलक ढलक बह गयो कजरारो।
सुख की देह पलक एक में दुबरी भई खलक खलक
करत भूषण और मुकतनके गजरारो॥

३९

भूलो मन भूलो फिरत है अपने घट परघट को
लोभ लगेगो।
इते परंट मेरे पर जैसे पतङ्ग जोनि देखि जलेगो॥
हाथ पाँव आँखि कान जीभ तरुवारे बसहै कोकल
बोलेगो।
लाखनमें तुँही अकेलो तेरोही नाम लेले जपेगो॥

मेरो ध्यान राखिये ऊंधा गुण मानोंगो मैं तेरो।
नेक श्याम को समझावत रहियो तब जानोंगो
वेग करो जो फेरो॥

४१

बादर आएरी लाल पिया विन लागे डरपावन।
एकतो अधेरी कारी विजुरी चमकत उमर घुमड
वरसावन॥
जबते पिया परदेश गवन कीनो तबते विरहा भयो
मोतन तावन।
सावन आया अति झर लावत तानसेन न आए
मनभावन॥

४२

छत्रपति मान राजा तुम चिरञ्जीव रहो जोलों
ध्रुव मेरु तारो।
चहूं देशते गुणीजन आवत तुमपे धावत पावत
मन इच्छा सबही को जग उजियारो॥

तुमसे जो नहीं और कासे जाय कहूं दौर वही
आजज औरत करें मोपे रक्षा करन हारो।
देत करोरन गुणीजननको अजाचक किए तानसेन
प्रतिपारो॥

४३

तनदिरना उदानो तनुमतन दिरना तनदिरना
तनन दिरना दिरना तदानि तनि उदानि दोम।
नाद्रद्रदोमतननदिरनादिरनातननतनदिरनादिरना
दिरनातननाद्रद्रदोम॥

४४

भूलीसी फिरत बौरात कुञ्जनमें एतो कहो मान
प्यारी देख रहोरो घरमें।
तबतो न मानो आन जाती सुनवे को तान
मानत नाहीं आन तरुणाई कैते अब हमे॥
तोड़सी विरह भुवङ्ग हाथ रघुनायजूके रोम रोम
रम रह्यो विष मारो देहमें।
साससी भरन लागी आसरी ढुरण लागी आसरी
निकस आई बांसरी की नेहमें॥

४५

चकित हो रहे नैन तेरे आलीरी निरखत प्यारेकी
यह छबीली छबि।
चन्द्र समान बदन तामध सोहे अञ्जन अधर और
जावक भाल याकी निकाई बरन सके कौन कवि॥
वले पीक तर भुजन औरको चकोरन की छाप दई सब।
रङ्गा रङ्ग के प्रभुके छिननि जामें मनभावत जितही
विकानो अब॥

४६

जिनसों पावे गुण तिनको मानत नहीं।
हो कहांको सयानप एक रख सुजान गुरुनको
ध्यान छाड़ कर अज्ञान

४७

सुमरण कररे यह जिय धररे रबको ले ले नाम।
मेरी कही तू मानलेरे छाड़दे क्रोध और लोभ काम॥

४८

अरज मो गुन्हेगारकी कबूल कीजिये वास्ते
रसूल के मेरे तन मन ते।
मुश्किल मोपे आय परी सुन कीजिये सोधिये
आसान या करीम या रहीम दुख पाप हरनते ॥

४९

मेरो मन नाही बहलियेरी ऊधो श्याम मधुपुरी जात।
कैसेके धीर धरों इन सोचन वह जात हम जानत
हमरो जिय वहरात ॥

५०

कहा तुम गावत हो गायन नादविद्या अति
अपरम्पार।
गीत प्रवन्ध चारु धुरपद को कहो कौन प्रमाण
कंत गुणो रच पच हार ॥
सप्तसुर तिनग्राम इकईस मुरछना बाईस सुरत
उनचास कोटि तान को सम्भार।
कहत बैजू बावरे ताको ढ़ग्न सुरन आरोही अवरोही
अलाप अस्थाई सञ्चाई प्रथम वोँकार ॥

५१

काशी काश्मीर कामरू करनाटक बूंदी बुँदेलखंड।
मालवा मुलतान मेवाड़ खुरासान बल्खबुखार
गोकुल मण्ड ॥
बीजापुर बङ्ग दवदकसान रूम श्याम भरत सम डण्ड।
कहत तानसेन सुनो हुमायूंके नन्दन जलालदीन
अकबर जाके डर डरात ब्रह्माण्ड ॥

५२

इन अखीयन विरह का बेल भई सींच सींच जल
असुअन पानी निशदिन होत नई।
उलहो लता पोहोपन ते अल पताल गई
युगल चिरण को छ्रपाते सब तन ठाठ ठई ॥
मड़ डड़ याडड़ रडा डस्। ड०तड डाजाड़ाभड़ानि ॥

अथ गनागन भेद

५३

मगन नगन अरु भगन गिन यगन चार शुभ दान।
जगन रगन सगन यहि तगन अशुभ पहचाँन ॥
मगन तीन गुरु जानिये नगन तीन लघु होय।
भगन आदि गुरु होतहैं यगन आदि लघु जोय ॥
जगन मधि गुरु होत हैं रङ्गन मधि गुरु पेख।
सगन अन्त गुरु ढूंढ़ले तगन अन्त लघु लेख ॥
भूमि देवता मगन को नगन सुर गहो होय।
जल जानो तुम नगनको चन्द भगन को जोय ॥
सूरज जानो जगनको अगिन रगन को जान।
सगन देवता पवन है तगन अकाश पयान ॥

बिहाग—तिताल

लोग निठर माईया मधुवन के लोग।
वेग पठयदे श्यामसुन्दर को सब ब्रज विरह वियोग ॥
हमना जानत तुम एसो करोगे प्रीत करी किधौं योग।
सूरदास स्वामी तुमारे मिलन को कब बनहैगो संयोग ॥

२

कैसेके सहोँगो माई पिय विन निशदिन दहत
अङ्ग अनङ्ग आग भभूके।
सेज समय सुवास शीतल हँस प्रबल होतहै
या समीरके भुके ॥
वन उपवन ज्यों दामिन कोक चहूं देशत
देतहैं फूके।
शाह कीरत मेरे मनमें यों बसतहै यह डर
डरपत हों जिन लागेरो आंच तन बाइके ॥

३

इन अँखियन मनमे विरहको बेल भई।
सींच सींच जल असुअन पानोरो दिन दिन होत
चाह नई ॥
उलहत पातन नए सो बून्द पताल गई।
तानसेन प्रभु तुमरे दरस विन सब तन छीण भई ॥

४

कठिन जियरारे पिया विन कैसे रहे ते अब न रहों।
गयो न निकस तबही जब ललना चलन चलन कहो ॥
कलन परत एक पल छिन एतो दुख मोपे
न जात सहो।

अपने मरत जीवत दौलतखान विन निशदिन
विरह मनमें रहो ॥

विहाग— आड़ा चौताल

आज आजरे गढ़पति शाह जहाँगीर शाह रिसानो ।
चहुँ चक जाको आन कबूल खुरासान लपक
झपक लीनो पग लागो राजा रानो ॥

विहाग— तिताला

सोहेरी यह गोश सेहरो वनरेके यह ।
मुक्तालरी मुख पर विराजतहै वरणन जात काहुरै ॥

२

है अवला कछू भेदन जाने सेज चढ़ी तब पिया
सों डरो ।
सोवत कंथ जो जाग परे तब कंथन धायके बाँह धरो ॥
दोउश्रनके झकझोरन में अम्बर चूनर करत कूट परो।
कर कामिन दीपक झपक दियो तेहि कारण सुन्दरि
हाथ जरो ॥

३

लोचन चुवत है चेत अचेत देखिमें ।
जो कवल पतर ते तैसेहो सेत धन धन मुक्ता विंब
यह नो देखिमें ॥

४

अङ्गोया लहंगा शोभित वनो मो भले बना ।
चोएकी तोहे तिलक सोहे गरे एसीरो मानो तनो
है तनो ॥
रूप रङ्ग कीतो कहा कहिये अतर अरगजा सों धमनो।
यह छवि देख रीझे शाह बहादुर धनो ॥

५

देख सखी पिय विन नागन कारो रात ।
कबहूं कबहूं जोहोत जुन्हैया मानो उहट लटसी जात ॥

६

तूअब छाड़ दे गलबाँही छाँड़ आनाकानो ।
बहोत हवे घर बसे हम देखे राजा मानो सोई रानो ॥

विहाग—चौताल

एतू देख देखरी प्यारे को उलट रूम रहन ।
मैंजो गई कहाँहै सोतें मेरी आई कहन ॥

२

बैनो रात समय उर परचोनी बहोत लागारो कारो
सोठीरो ।
कहुँ कहुँ पीके भोर भोर लागी मनोहो सुहाग
कारैनो ॥

विहाग—तिताल

अल्लाका नाम जप मन मेरे जो तू चाहे तब हो
तनको आनन्द ।
औगुण जेते करत सो सब छांड़दे बाहू सों चित
लावतो जाय तेरो दुख दंद ॥

२

इन अँखियन को कहो मत जिन भूल करो कोउ
देखो यह परवम करेंगो ।
वेहो अयानो जिनन पहचानो एक पलमें उठाय
यह मन टेगो ॥

३

माईरो तेऊ भलो जे सो सुख अपने सपनेमें पाया
मिलत ।
जादिन ते मेरो नीद हर ले गए वारो इन इन
अँखियन भोरह लागत ॥

४

जोवन क्यों करहो अरे जानिये ।
ते जोवन जग करवा लागत मुझे न भावे को ॥

विहाग—चौताल

चलरी चल चलरी चल लेचलो तो पीयपे मेरो कहा
जो करिये ।
छौंजो हेतु पठाई कित तोसों प्यारे सों कबहूं
न लरिये ॥

विहाग—झपताल

प्यारे देख देख तिहारे आवनकी सब निशि वाट
अबहो सोई है ।

बहोत भावत हो अधिक जीयते वाको पीतम तुम
तबही इतरात उत रात रहे जात उनही उनही
भाँतन तिय मोही है ॥

२

अब सुध लीजे मेरी करीम रहीम हो पतित तुम
पतित उधारनहार करतार ।
और काहूको नहीं आस तुमही करो सहाय दुख
चिन्ता सब जाय सब तनर्त यही रटतहों वार वार ॥

विहाग—जङ्गला

जीवन अब सब जगमें मेरो पिय कीनो जामें वास ।
विलपत छाँड़ गए अब हमको अबलो न बुलाए
अपने पास ॥
सांवरे एतो विसार दियो मोहि नाहीं हतो यह
उनसे आस ।
किधौं एसे फन्द फन्दे जो मिलत सपनेहुन
आवनकी लगी प्यास ॥

विहाग—भरफाकता

आज पियके मिलवे की बात काहू सेतिय सुन आई है।
मनही मन मुसक्यात अधरनमें आनन पर पीत
जनाई है ॥

२

अति मन चाहे देखन को श्यामसुन्दर पिय विन
कल न परत है आली छिन उमगत नित हियमें आय।
जो कृपा करे हर मिलाय तो जिय सुख पाय दुख
द्वन्द दूर होवे तनर्त तब जब अङ्क भरे वो मिले धाय॥

विहाग—चौताल

गई नींद उचट सखी मोवो हरो नेकन आई ।
एक टग रहे पाटी लग मग निरखत तैसो चलत
पवन पुरवाई ॥
वेकल रहत रोम रोम तलफत परी विरह जो
नमाने मोरी माई ।
मीन जल जोई शाहजहाँके दरसन विन अङ्ग अङ्ग
सताई ॥

विहाग—रूपक

नैन सलोनेरी तेरे नैननही हरि वस कियो हरि
वस कियो ।
दीरघ जमाल विमल विलोल कटाछन भर रहे
तापर कजरा दियो ॥
भौँहे धनुष और चन्द सो वदन और कंचन सोतन
तेरो कमलकलिसो उठो हियो ।
तानसेन प्रभु जान बूझ कर बोलवे को नेम लियो ॥

विहाग—तिताला

कान्ह कहूं पाए नहीं हो हरि ।
एक वन ढूंढ़ो सकल वन ढूंढ़ो सो कहूं अन दृष्टन
आएहो हरि ॥

२

कौन उपाय कीजिए सजनीरी छिन छिन हियो
अकुलाय ।
दरसन विन दृग तपत रहत तापे अतिही अन्त न
तन ताय ॥

विहाग—रूपक

ऊधो मोरीरे दुख हरवेको पाती पठाई देखातरे ।
हौंतो भिखारी हो नन्दलाल के दरसन को सखी जल
प्यासे कहूं ओसते अघातनरे ॥

२

ललन परदेश घुमड़ आई श्याम बदरीया महावटकी।
साजन विन मोहे विरह सतावे बुँदरीया न रहे हटकी॥

विहाग—तिताल

अथरवनको भेद जो ज्ञानी सोई जाने ।
सप्तसुर तिनग्राम इकईस सुरछना को सुरत पहचाने॥

२

अल्लहके प्यारे नवी के दुलारे हसन हुसेन जगत
उजियारे ।
तू करीम रहीम समीप बसो रहम गुन्हेगारके
वकसन हारे ॥

३

सदान काहू को रही प्रीतमके गलबाँह ।
ढरती फिरती यों गई ज्यों तरुवरकी छाँह ॥

मेहदी लावन दे बनरे अबही गारी दूंगीरे न डरंगीरे।
कबकी में ठाड़ी ठाड़ी रङ्ग लिए रङ्गमें महारङ्ग
आली रैन बड़ीरे मेरी निद गई है तुज तनरे॥

विहाग—आड़ा तिताला

वदन ढांप पोढ़ी लीला पट पहरे मीस रहीहै प्यारी।
जबही घूंघट पट न्यारो करत पिय मानो जोन लजारी
आरस प्यारी पहरे पीतम परम विचित्र महारी।
शाह अकबर निहोर करत निय है उठ चल हंस
बोल हों वारी॥

२

भांदो कैसे दिनन माई श्याम काहेको आवेंगे।
कोकलाकी कुहुक सुन छाती माती राती भई विरही
आगी ऊधा फूंक फूंक जरावेंगे॥
शाहजहाँ पिया तुम बहुनायक विरहिन के अंसुअन
को तपत बुझावेंगे॥

विहाग—ताल धुपद

एतू देख देख प्यारेका उलट रस रहन।
जा कहूंसे आएहो पूंछो कहाहै साँतें मेरो यह कहन॥

विहाग तिताला

कोटि वरषलों कायम दायम होय अटल दरबार
जामें सरसाईको उनहो कर सकत काहू सङ्ग।
और जो जाको अरजताको ध्यान धरे करत निहाल
सब अङ्ग अङ्ग॥
वेतो निपट प्रवीण अधिक चातुर तिनसों कैसे
छिप सकें अचर तान राग रस रङ्ग।
धन धन विधना जे एसो नर एक बनायो प्रताप वली
एक नवाब सालारजङ्ग॥

विहाग—आड़ा तिताला

है आजरे लोयन रस माते।
तोही सों पीत तोही सों हिलन मिलन तेरेही रङ्ग राते॥

२

वदन ढाँप पोढी लीलो पट पहरे रस रही है प्यारी।
जबही घूंघट पट न्यारो कियो चाहत पिय मानो
है जात उजारी॥

ललनारे परदेश घुमड़ आई श्याम बदरीया महावटको।
एकतो विरह मोहे सतावतरी दूजे बदरिया
नारहे हटको॥

क्यों छैला छल कर दावे देवी मेनु छैला छेल तेनु।
हवे शोरीतु को जाने इश्क दी गला भलावे॥

५

आज इथ्थे रहणारे मीयाँ हाँरे पंछी दिल
मिलाणा जानवे।
शोरी फकीरां दामान लेन दाना रहजांदे ईश्कदी
गला पहचानवे॥

विहाग—तिताला

तेरी यानी वे माही ड़ाइ यार तेरीया गुमानी डाहाँ
वेयार।
ले चल मेनु लख थीं उनादे जिदड़ा माड़ो फेरी यांवे॥

२

मिलजा जानवे जिन्द तोलावो हुण साड़रे नालवे।
दोद निजारंदा मेला ठेला शोरा फकीरों दाखले
मान॥

३

माथों राजी रहणावे मीयाँ भूलदी को नाही मेडा
सोणा मिलना।
तेरे मिलननु मेडा जीय चादे ईश्क दीगलां
चहणावे माड़े मन विश नीके हमसब॥

४

गड़ीयां निमाणी वेसुख देवी वे सुख तेनु हावे।
एही राजी रहे नित तेनु मेंमे मङ्गी तांड़े दरवाजे
देवी मुराद रवाणावे॥

५

साड़े नाल खुशी रहणावे हावें मांड़ा सोणा।
महबूबांदी मान ले गला शोरी भलो बूरी
मर चहणा वे॥

कहोरे कोज वा कपटी की बातें।
श्रवण सुनत सुखहीं मिलन में पूछत हो तातें॥
सजनी तपत मिटाई समरको वाको मिल न करोरो कहांतें।
ब्रजनिध विन मन धीर धरहो कैसे भटकत हो उन साथे॥

७

मिल विछुरन की पीर धीर लगावे सोई जानेरो वीर।
होसा दुहेलोहिरी आलो झेलो सबही शरीर॥
या वेदन छेदन है तनको जों मछलो विन नीर।
अबके फेर मिलावो ब्रजनिध धरहुंगो मन धीर॥

८

मैं तेरो गुण मानोंगो हिता चितचोर मिलायदे।
वा रसीयाके अधर सुधारस हाहा मोय पिवाय दे॥
मै यह तेरो यश कबहूं न भूलहों प्रेम झलको हूक मिटायदे।
ब्रजनिध अङ्ग सङ्ग रङ्ग करहीं अनङ्गहि जग मिटायदे॥

९

ऊधो ककुअन श्याम करो जिन प्रतिपाल करत अद आचक काटत डरोय डरो।
ठग बटपार करत श्रवणनमें यातें वालगरो हम न नित प्रीत उन हरि सन अबहूं आन परो॥
बहु अङ्कुर कुव कुवन्याको लेगो रतन हरो।
भयो ब्रजहीन अजहूंन श्याम विन डार परो तगरो।
जाको चोरता नन्दनन्दन को चढ़ लता वगरो शम्भु आसमान जव फाड़के देहोहे थिगरो॥

१०

ऊधो काहे कों आवत जात।
वेनिरदई पीर नहीं जानत फिर बूझत बात॥
जोगत भई मीन जल निकसत तलफत निशदिन जात
तज तन देह प्राण यह कैसे दरस लोग ललचात॥
जबतें बिछुरि गये नंदनंदन पल पल युग सम जात।
विनति करत मान माधो सुखजी बसैयो नन्दतात॥

११

मत जारे जानो अपनो दरस देखाजा।
चुन चुन लकड़ी चिता चुनाऊं अपने हाथ लगायजा॥
जल बल भई भस्मको ढेरी बदला होतो बूझाय जा।
शाह हुसेन फकीर साँईदा दिल दाग मिटायजा॥

१२

मोकों पिया विना हैमा रैन अंधेरो डरपावे।
घरी घरी पल छिन मोहे कल न परत मो विरहिन आन सतावे।
मदनमोहन विन मदन जगावे तातें कछून मोहावे॥
जानकीदास मीन जैसे जल विन तलफ तलफ मुरझावे॥

१३

जन मन हेरवा खेल भुलानो जननो।
गर्भ जनक जायो मम पायल प्राण तन कौन मयानो॥
घरी पल छिन सुख चूम ललचायो सखीन सङ्ग जाय न यानो।
निशदिन खेल करत गुड़ीयन को सुध न रहो कछू देह अपानो॥
जहां जहां वर व्याहन कों खोजत समझ समझ मन होत गिलानो।
एको गुण ढङ्ग भयो न मोको देखो मोह पिया पहचानो॥
लगन सोधा व्याहन आए सज दुलह बनो रूपको खानो।
देख नगर सारो नर मोहे सादर लेन चले अगवानो॥
चले लिवाय मदन अपनेको द्वार चार आदर बहु कीने भावर परत विप्रवर वाणो।
गांठ जोर सिन्दूर लगावत पानो ग्रहण कीयो निज जानो॥
चले लिवाय मदन अपनेको विछुरत मात बहोत अकुलानो।
सुनो सास दारुण पत मेरो ननदो कठिन करो किलकानो॥

कौन उपाय जनम भर निभवत हंसहो लोग
ससुर अभिमानो ।
सब तें कठिन कलेश रैनदिन मेरो सौत बड़ी
दुखदानो ॥
एक उपाय समझ मन अपनो छिन छिन भरव
पीया घर पानो ।
लछमणदास निभाव करे वे जनम जनम
जिन हाथ विकानो ॥

१४

मृदु धुन वंशो कान्ह बजावे ।
दिसा दुहेलो एरो हेलो सुन सुन मनल लचावे ॥
कलन परत एक पल दरसन विन घर अंगना
न सुहावे ।
जानकीदास श्याम सों मिल हों कोऊ कलङ्क लगावे ॥

१५

वंशो में राग विहाग सुनावे ।
सप्तसुरन और तोन ग्राम मिल मधुर मधुर स्वर गावे ॥
लाग डाट और उरप तिरपसों सुनतहो मनल लचावे ।
कृपा सखी रस वस करलोनि वार वार बल जावे ॥

१६

रव्वका तादिल अहो दिल जानो ढोलन पाया ।
दाभोया आनन्दघन व्रजमोहन प्यारा घर बेठें वर आया ॥

१७

प्यारो पग होरे होरे धररो ।
जो गज चलत सुथररो ॥
अमवट विछुवे पायल बाजे लाग जागे घर घररो ।
लुक छिप चल मिल श्यामसुन्दर सो मेरो कह्यो
अब कररो ॥
विष्णुदास कोई टोक उठेगो मोहे लागत है डररो ॥

१८

मेरो कह्यो मान लेरो मद मातो कहा फिरत इतरातो
श्यामसुन्दर सोरसोया पायो ताहि मिलन नहीं जातो ॥
हों जो मनावत तू नहीं मानत झूंठो सोगन खातो ।
विष्णुदास प्रभु सो मिलवेको सुव धरि हात नम्रातो ॥

१९

छोहरा छाड़ देरे कर मोरारे ।
बाट घाटनोहो रोकत टोकत पनघटवा पनोया
भर जान देरे ॥
एसो लङ्गर ढीट वरजो न माने कहाकीता मेतोरारे ।
पौर पराई जानत नाहो सास ननदको होरे ।
विष्णुदास तोरे पइयाँ परहूं हाहा खात निहोरारे ॥

२०

मेड़ा दिल ले गयावो प्यारा किन वल्ल आय पुकारा ।
सुनरो इयो असीवे दलओता दुख दोता इन यारा ॥
सब निश जगदा पलक नलगदो बैठ रहो लाचारा ।
अभिराम कृष्णदेव ऊपर तन मन धन सब वारा ॥

२१

धुनारा जोगो एक वेरोया सुख बोलेरे ।
कानन कुण्डल गल विच सेलो अवतेरो मन खोलोरे ।
रास रच्यो वंशीवट जमुना तादिन कोनो कोलोरे ।
पूरव जनमको मेहूं गोपो का अधविच पड़गयो
झोलोरे ॥
जगत वन्दो तें तुम करो मोहन अबक्यो बजाऊ ढोलोरे ।
तेरे कारण सब जग त्यागो अब मोहे कर सों लोरे ॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर चेरो भई विन मोलोरे ॥

२२

रासमें खेलत है पिय प्यारो ।
सुभग विलास वृन्दावन कुंजन रास करत वनवारो ॥
बाजत तान मृदङ्ग झालरो श्रीमण्डल सुवल सुखकारो ।
जय जय कार होत वसुधामें गावत है सुर भारो ॥
नृत्यत प्रभु मेरो कालिन्दोतट मण्डलो व्रजनारो ।
चतुर-शिरोमणि युगल जोरो पर सूरदास वलिहारो ॥

२३

हमारे आखन को दोउ तारे ।
राधामोहन मोहन राधा ए दोऊ रूप उजारे ॥
गौर श्याम अभिराम मनोहर व्रज वरसाने वारे ।
शुक सारद नारद वलिहार उपमा वरनत हारे ॥

२४

श्याम तुम मुरली कहांतें पाई।
करत नहीं अधर नते न्यारो कहां ठगोरो लाई॥
एसी दीठ मिलनहो हो गई उनहीके मन भाई।
हम देखत वह पीवत सुधारस देखोगे अधिकाई॥
कहा भयो मुंह लागो हरिके वचन लियो रिझाई।
सूरश्याम को विवस करावत देखत मन ललचाई॥

२५

मोहन प्रीत करी मैं जानी।
दे विश्वास गयो तज मथुरा रति कुब्जा सों मानी॥
कपट भरो यो कारो तन तेरा कपट भरी सब वाणी।
आनन्दघन हित चितकी बात जानतही बिरानी॥

२६

कबीरा बिगडार मोरे भाई तुम त बिगरे राम दोहाई
पारसके सङ्ग लोहा बिगड़ा सों लोहा पारस होजाई॥

२७

सिन्धुके संग सरिता बिगरी सो सरिता सिन्धुहूं जाई।
कोयलके संग कौवा बिगड़ा सो कौवा कोयल हो जाई
साधुजनके सङ्ग कबीरा बिगरा सो कबीरा साधु हो जाई॥

२८

बैठे सुखपाल लाल आवत महलमें।
आगे आगे भीर भारी पीछे असवारी सारी बीचमें
रघुवर चलत चहलमें॥
चुन चुन कलीया में सेज बिछाऊं चोवा चन्दन
चरचो चहलमें।
पोढ़ीय श्रीदशरथराज-कुंवरवर अग्रदास जन
टासी टहलमें॥

२९

पौवाढ़े सुख सेज सीताराम।
प्रभुजीके कनकमन्दिर पुहुप सेज्यों कोटि उदय
भए भान॥
देवता सब चौकी आए सनमुख हे हनुमान।
सरयुके तीर अयोध्यानगरी तहां बिराजे सीताराम॥
कौशिकनन्दन जगत-वन्दन मूरत सुन्दरश्याम।
चोवा चन्दन और अगरजा कनक-डब्बा भर पान॥
दास तुलसी लाल ठाड़े खाना जाद गुलाम॥

३०

पढ़े पढ़े सारङ्गपानी। अखीयां में नींद रमाणी॥
प्रभुजीके मुखड़ जम्भाई। आई है लो देत कोशल्या माई॥
प्रभु धनुष वाण धर दीजे। आवन राङ्गलामें कीजे॥
लछमनजी आज्ञा दीजे। तुम रङ्गमहल सुख कीजे॥
गावे मलूक दिवाणा। मेरी अरज मान भगवाना॥

३१

उनींदे नैन रतनारे राम सोनार चले शीतलजल
कञ्चनको झारी दीपक जोय होवार।
बलि बलि जात कोशल्या माई तन मन वारोंगी वार॥
खावो खाड़ खुरमा अरु मेवा मधु पकवान काथा
चूना लोंग सोपारी।
अरु चावत पानार कटि पर लाल काछनी काछे
ओढ़े पीत पिछोरी।
सकल भवन की शोभा वारों रघुवर जानकी जोरी॥
हास विलास विनोद परस्पर सुधीर रघुवीर।
तुलसीदास आस चरणों की हरहु विषम भवभीर॥

३२

लालनके नैनन निंद घुलानी।
मृदु मुसकाय कहत पिकबैनी यामिनी बहोत बिहानी॥
ललित सेवे ललिता रच राखी रङ्गमहल रजधानी।
रतन परजक मनोहर जोरी सहज गात अरसानी॥
पाय पलोटत रुचिर कर सहचरी अङ्ग अङ्ग पुलकानी।
दासन दास सेन पिय प्यारी रसिक-जनन सुखदानी॥

३३

वंशीवट सखो पुलिन यमुनतट नीको मोहे
नीको लागे चन्द।
शरद सोहाई जामिन भामिन रास रच्यो नन्दनन्द॥
मण्डल निरत करत सब युवती प्रमुदित सकल आनन्द।
जानकीदास विलास रास रस सुख रतिपति भयो मन्द॥

३४

प्यारी आगे चली आगे गह्वर वन भीतर जहां बोले
कोयलरी।

अतिहो विचित्र पुष्प पत्रनकी शय्या रुचि रुचिर
सवाँरी तहाँ तुव मोहिलरी ॥
घरी घरी पल पल तेरीही कहाँनी तुव सग जोड लइरी।
श्रीहरिदासके स्वामी श्यामा कुञ्जविहारी कामवस-
मोह लइरी ॥

३५

रङ्ग भरे लाल रङ्ग भरी राधा रङ्गीलो प्यारी राधा।
एकतन एकमन एकही समान दोऊ नेकहू न न्यारे
होत सकत पल अगाधा ॥
रुचिसों रुचीली भांति नैननिसों में मुसिक्यात
मुसकन में मन बढ़ोहे रङ्ग अगाधा।
तैसेई नवल सखी तैसेई कुञ्जविहारी तैसी मेरो प्राण
प्यारी पजोमन साधा ॥

३६

अङ्ग दुराय चलिए सङ्ग मेरे।
काहे मुख मोन अधर बीट दे दसन दामिनी
चमकत तेरे ॥
तजि नूपुर कटि छुद्र घण्टिका
नाद सुनत खग मृग सब घेरे।
कुंभनदास स्वामिन वेग चलो
नियरे निकट गिरिधरन के नेरे ॥

३७

मधुर मधुर चलत आज की रतिनन्दिनी।
लोचन अलो ललित पलक मन्द मन्द हंसत अलका
सुन्दर मुखकान्ति लसत चन्द नन्दिनी ॥
सौरभ भरि भरि दसन हसत वाग मजन वेश
रूप ठैरी अमरनारी चरण वन्दनी।
मानो तन जलद बसन बरसत रसस सरसन
वल्लभ प्रताप विनय करत हरि कान्दनी ॥

३८

तिहारोही दास अनन्य कहाऊं।
प्रेम भक्ति कर चरण कमल तव उमगि उमगि दुलराऊं ॥
तुमरी दरस परस कर बहु विध तुमको शीश नवाऊं।
तुमरे बसन अभूषन पहरूं रहत तव प्रसादी पाऊं ॥
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम प्रभु
तुम तजि अनत न जाऊं ॥

३९

अद्भुत रास रच्यौरी एहाँ ब्रज युवतिन मध रङ्ग मच्योरी।
यह अद्भुत गान तानही मच्योरी
मुरली मधुर धुनसों जच्योरी ॥
नवरङ्ग अङ्गन सप्त सुर सङ्ग मोहन नवल वर मिल
राधिका दोउ करत निरत सुमोहन जच्योरी।
ढलके अलके हलत वेसर डुरत यौवन मध रच्यो झमक
आवन जमक पावन रमक गिरिधर तन जच्योरी ॥

४०

ये दोऊ आनन्द भरे हैं उमङ्गे दृगन कटाच्छ होत
एक सङ्गे।
नवदामिन घन मोहत अङ्गे बढ़ोहै चौगुनों
रस सुख रङ्गे ॥
रङ्गरस बस दिवस दम्पति सरस सम्पति रस लहे।
ललित भाल विशाल श्रमकण विविध विविध तहाँ
मारुत बहे ॥
उभर नल सों पीतपट दोऊ भूषणादिक जग मगी।
अरगजा और अगर अम्बर अतरसों अङ्ग रङ्ग पगी ॥
देखि सुघर समाज हो रह्यो वो छबि निरख नैनन
बस रह्यो।
यह रासमण्डल सोय काढ़ो हैरी अति आनन्द सौंप
उजास भयो ॥

४१

भए रास मधुर प्रीत सों ललितादिक सुन्द उठटे।
लईई तन तईई थिरक थिरक सुघटे ॥
तकत मृदङ्ग सुरंग थिपिकट थिथिपक्कक्डल्लान थिलाङ्ग
धाकुकुकाकु धिनन धिनन धिड़धांधमंकधा।
बजत बीण मृदङ्ग सहोचङ्ग सुनत अतन मोतन तयो ॥
रमा रंभा शची तरसत जात नहीं कौतिक कह्यो।
हे ब्रजभूमि धूम शोभित भई बरषत सुमन देवधरन
शुभ कई एहाँ दुंदुभी घोर सुहाई कोकल सुर
नवछवि छाई ॥

बिहाग—तिताल

मैं बलिहारी रामको जाको पतित उधारन नाम।
किरीटमुकुट शिरभाल तिलक कटि पीताम्बर
तनश्याम॥
कर सरोज धनु बान बिराजत भुज बिशाल अभिराम।
कमलनयन मूरति साँवरो लख लाजत कोटिन काम॥
शरणागत आरत-जन-पालन अति कृपाल सुख-धाम।
मृदु मुसकानि बाणी करुणामय भक्तजनन-विश्राम॥
मत्तगयँद लजात चलनि पर अङ्ग अङ्ग वर दाम।
लछनदास बिसारो न अस प्रभु निशिदिन घरी पल याम॥

२

निदरीया गई आली हरि बिन मेरे नैननसों।
निश दिन सुरत लगी उनसों मन क्रम बैनन सों॥
कोटि करी बिसरे नहीं घरी पल
भूल गयो चित चैननसों।
लछनदास सुरति सर बेधत पैननसों॥

३

कुञ्ज कुञ्ज दोऊ व्रजराज लाडलो रमत रजनी विमल
अरस परस करत केलो।
रसयुत नखशिख स्वरूप नन्दलाल रसिक भुव वन
विहार सङ्गसङ्ग अमित भए प्रेम खेलो॥
लछनदास सुख विलास छिन छिन अधिकात जात
रजनी बढ़त न ढिगई रसिक दुगनि सुरति वेलो॥

४

रसना बौरी रसमें अनुरागी राम नाम काहे न रटत
आगम निगम सारहो आपन आदि अन्तको बोर
निभावन हेतु जगतको ताहि बिसारत यामें तेरो
कहा घटत॥
जाको जपत शम्भु ब्रह्मादिक रमत सकल घटमों
न विचारत पर अपवाद लागत भूल काम क्रोध मंद
हरत बढत लछनदास भलो जामें सब क्यो न सभारत।
मानो जानो जिय पाप विमोचन कामधेनु सुरतरु
फलदायक सुखद सदा दुखमूल कटत॥

नैन हमारे लागेरी वाही ठौर।
नटवर रूप बन्यो नखशिखलो जात लख्यो आज भोर॥
अङ्ग अङ्ग छवि कहत न आवे शीश मुकट पर मोर।
लछनदास कमलदललोचन सुन्दर नन्दकिशोर॥

६

चाल बांको प्यारी लागोरी मोहनको।
आज अधिक छवि देखी आली गोपन गोहनकी॥
लाजत कोटिकाम भूषण लखि अङ्ग अङ्ग सोहनको।
लछनदास मनमोहत चितवनि बाँको टेढ़ी मोहनको॥

७

शरदसरोवर सुभगअङ्गमें वदनकमल चारु
फूल्योरी माई।
ता ऊपर बैठे जुगल खञ्जन मत्त भए मानो
करत लराई॥
कुञ्चित केश सुदेश सखोरी मधुपनको माला जुरि आई।
कुंभनदास प्रभु गिरिवरधरन लालन
है युवतिन सुखदाई॥

८

तेरे शिर कुसम बिथुरी रह्यो भामिनो शोभा देत
मानो नभनिश तारे।
श्यामअलक छूटो रहीरी वदन पर चन्द्र छिप्यो
मानो बादर कारे॥
मुक्त माल मानो मानसरोवर
कुच चकवा दोऊ न्यारे न्यारे।
कुंभन दास प्रभु गोवर्द्धनधर बस कोने
नन्दलाल प्यारे॥

९

वह देखो बरन भरोखन दोपक
हरि पौढ़े ऊंचो चित्र सारो।
सुन्दर वदन निहारन कारण
राख्यो है बहुत जतन कर प्यारो॥
कण्ठ लगाय भुजदे सिरहाने
अधर अमृत पोवत सुकुमारो।

तन मन मिलो प्राण प्यारे सों

नूतन छवि बाढ़ो अति भारी ॥

कुँभन दास दम्पती सौभाग सीवाँ

जोड़ी भलो बनो एक सारी ।

नव नागरी मनोहर राधे नवलनाल श्रीगोवर्द्धनधारी ॥

१०

आज मेरे धाम आएरी नागर नन्दकिशोर ।

धन दिवस धन रातरी सजनी धन भाग सखी मोर ॥

मङ्गल गावो चौक पुरावो वन्दनवार धावो पौर ।

नन्ददास प्रभु संग रसबस कर जागत करहुं भोर ॥

११

देखो देखोरी नागर नट निरतत कालिन्दी तट

गोपिनके मध राजे मुकुट लटक ।

काछनी किङ्किनी कटि पीताम्बरकी चटक

कुण्डल किरण रवि रथकी अटक ॥

तत थेई ततथेई शब्द सकल उघट

उरप तिरप पेर पगकी पटक ।

रासमें राधे राधे रटत रहे एक टक

नन्ददास गावें तहाँ निपट निटक ॥

१२

मोसों क्यों रूसत है प्यारो मेरे तो तुमही तन मन धन।

मोहन लाल कहत राधा सों मेरेतो तुमही सो नितपन ॥

अब कबहुं जिन मान करेरी यह कहि कहि लागत

उर सोहन ।

छीतस्वामी गिरिधरन अन्तर रति सोई हरे नागरके

गोहन ॥

१३

मोहन मुखारविन्द पर मनमथ कोटिक वारोंरी माई।

जोई जोई अङ्गनि दृष्टि परतहै तेई तेई रहत लुभाई॥

अलक तिलक कुण्डल कपोल छवि

एक रसना मोपे वरणी न जाई ।

गोविन्द प्रभु की वाणिक पर

वलि वलि रसिकचूड़ामणि जाई ॥

१४

माई मोको चन्द लाग्यो दुख देन ।

कहांवे श्याम कहांवे बतियां कहांवे सुखकी रैन ॥

तारे गिनत गिनत हौं होरी टपकन लागे नैन ।

सूरदास प्रभु तिहारे दरस बिन विरहन को नहीं चैन॥

१५

दोऊ मिल करत हैं भावती बतियां ।

गिरिधरलाल कुंवरी राधाके नखमणि अङ्क

लिखित उर छतियाँ ॥

नैसी यों छिटक रह्यो उजियारो

पूरणचन्द शरद की रतियाँ ।

केलि कूपनिधि यमुना श्रीभट वृन्दावन

फूल्यो बहु भतियाँ ॥

१६

सखीरी होत कहा समझाए ।

नैन बैन थकि रहेरी निरखि छवि

मन परो हाथ पराए ॥

गड़े कोर उर बङ्क विलोकन कटतन क्योंहुं कटाए ।

ब्रह्मदास तबहु भले जीवन मोहन वदन दिखाए ॥

१७

बणी सुन्दर श्याम सही ।

मोहन सुभग गोरी श्यामा के चम्पा और जुही ॥

अङ्ग अङ्ग पहराय आभूषण देखोरी मुखही ।

श्री विट्ठल गिरिधरन कहत यों रसको रास तुही ॥

१८

राधे तेरे नैनन किधौं वट पारे ।

नैनवान लागे उर अन्तर घूमत ज्यों मतवारे ॥

अञ्जन दैके पिय मन मोह्यो खंजन नैन सवारे ।

सूरदास प्रभु तुमरे मिलन को नाचत ज्यों नटवारे ॥

१९

मेरी आंखन सों डगर बहारो ।

जो एहो हरी मेरो पीउ पाऊं धारे तन मन प्राण

नैननही वारो ॥

सेज सवारूं चमर ढराऊं मधुर मधुर सुर गाऊं ।
रसिक प्रीतम पिय अबके मिले जो
तो नैननि सों ममझाऊ ॥

२०

माई हौं हरिकी अरु हरि मेरो जिन कोऊ बीच परो।
रस अनरस की हौंहौं ममझौं न टूटे प्रीति मेरो
कोऊ कछु करो ॥
कोटिन छाडां हरिको मङ्गम गुण औगुण या चित धरो।
रसिक प्रीतम सों प्रीत हमारी दुरजन देखि जरो ॥

२१

विन गोपाल नहीं कोऊ अपना ।
कौन पिता माता सुत घरनी
यह सब जग रैनका मपना ।
धन कारण निशदिन भटकत है
वृथा जनम गयो सबहो खपना
अन्त सहाय करे नहीं कोऊ निश्चय काल अगन
मुख झपना ॥
सब तज हरिपद-कमल युगल भज मोह निगुड़ तजि
हरिचरण जपना ।
कहत दास वल्लभ गोवर्द्धन नाथ वल सदा सर्वदा जपना ॥

२२

लग लगि श्रीगोवर्द्धन को रहिये ।
नित प्रति मदनगोपाललालके चरणकमल
चित दइये ॥
मन वच करम ध्यान धरिये नित गोविन्दकुण्ड
में न्हिए ।
रसिक प्रीतम सुख दुखकी बातें श्रीगिरिधाराजी
से कहिये ॥

२३

मोहि वलहै दोऊ ठौरको ।
एक वलहै मोहि हरिभक्तनको दूजे नन्दकिशोर को॥
मन क्रम वचन यह व्रत मेरे नाहिन भरोसो औरको।
छितस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल श्रीवल्लभ कुल
शिरमोरको ॥

बिहाग—चौताल

जेते गुण तेरे नाथ तेते औ गुण मेरे गने नहीं
जात गरुड़ध्वजगामी ।
हौं अपराधी कछु नहीं जानत
कपटी कुटिल कुटिचरकामी ॥
और पतित तुम बहुत उधारे तुम सब जानत
अन्तरजामी ।
कृपाकटाक्ष तरे भवसागर
सूर पतित पतितन में नामी ॥

बिहाग—तिताला

हमारे आखजनके तारे ।
राधामोहन मोहन राधाए दोऊ रूप उजारे ॥
गौर श्याम अभिराम मनोहर व्रज वरसाने वारे ।
शुक शारद नारद वलिहारी उपमा वरणत हारे ।
सूरदास प्रभु निहारे दरस कों वार वार बलिहारे ॥

मत जारे जानो अपना दरस दिखाजा ।
चुन चुन लकड़ी में चिता चुनायधो अपने हाथ
लगाजा ॥
वल जल भई भस्मको ढेर: अदनाकी ता बुझायजा ।
शाह हुसैन फकीर साँइदा कुन्दा खोज मिटाजा ॥

बिहाग—चौताल

चितवन पर मेरा मन वस कीना सांवरे सलोने
तेरे रङ्ग भीनो ।
दीरघ दृगन विलोक कटाक्षन जिन मधकजरा टोनो॥
यन्त्र मन्त्र टोनासो कर कर सुन्दरश्याम सरस प्रवीणो।
सूरश्याम मनोहर सुरत दिन देखि तलफत जों मीनो॥

बिहाग—तिताला

अबतो यही बात मन मानी ।
छाड़ो नहीं श्याम श्यामाकी वृन्दावन राजधानी ॥
भम्यो बहुत लघु धाम विलोकत क्षणभङ्गर
दुखदानी ।
सर्वो परी आनन्द अखंडित सूरदास मरम लपटानी ॥

सो केते दिन हैजु गए विन देखे तरुण किशोर
रसिक नन्दनन्दन कछुक उठत मुख रेखे।
वह चितवन वह हास मनोहर वह वागिक नट भेखे॥
वह शोभा वह क्रान्ति वदनकी कोटिक चंद विशेखे।
श्यामसुन्दर सङ्ग मिल खेलन को आवत
जोयत परेखे॥
कुँभनदास लाल गिरिधर विन जोवन जनम अलेखे॥

विहाग— ताल जयतिर्थी

नींद नहीं आवेगी सजनी विन पीतम मोरे नैन।
नेक पलक नहीं लागल मेरो जागिल मारो रैन॥
एकतो विरहा आन दहे मोहि दूजे सतावे मैन।
रूपरङ्ग जिनके पिउ घरे सोवत हैं सुख चैन॥

विहाग—एकताला

चल बसीये वह गाँव जहाँ न बाजे बाँसरी।
वनन डोलूं कटाऊं बांस सब उपजें न बांस और
बाजे न बाँसरी॥
काहिकों विरह विथा तन उपजे काहिकों नीर
बहात आंसुरी।
रूपरङ्ग देरन दमरी कैसे कैसे दाग मिटाऊं गासुरी॥

२

सइयां मोरे बारोके भंवरा कलीय कलीय रस लीरो।
छाड़त नाहीं सुभाव आपनो कोटि जतन कहि हारो॥
कर जोरे पांय परी बहु भातिन और करी मनुहारो।
रूप रङ्ग करमकी रेखा अरे टारी टरत नाहि टारो॥

३

ज्ञान विज्ञान वेदान्तको कथन जात मथन करि देख
रस नाहीं जीको।
तीर्थ व्रत योग ध्यान श्रमवादहै लोन विन असन
जिम लागे फीको॥
विषय सुख स्वाद दिन चार का पेखना भक्ति निरवैर
नीर पाद ठेको।
होय ब्रह्म प्रति पाद नो प्रेम न गान जिमि हैक
मन कृष्ण नहीं और नीको॥

मोहनी—झपताल

कहो कौन सुखराज परिवार सुख क्षणिकहै क्षणिक
धन धाम स्थिर नाहीं।
क्षण करत भोग संयोग जिहि स्वादको क्षणिक
संसार जेहो काल खाहो॥
क्षणिक यह देह क्षण वन्ध धन जोय सों रहे पुनि
जाय क्षणिक क्षणिक माहो।
क्षणिक सुख लाग दुख सहेतो क्या कृष्ण जन भजहु
सुखसिन्धु सुख अचल ताहो॥

विहाग—तिताल

चरखा जरि बरि जाई ताग नहीं टूटइरे नाहक
सब मरो जाय आग नहीं बुतइरे।
चरखा देहो बनाय बढ़इया मोरा मितहुरे॥
जब लग तेल दीयामें बाती सूझ परे सब लोग।
जर गयो तेल भस्म भई बाती लेचल लेचल होय॥

राग खेमटा— ताल धीमा

बाजी बाजी मोहन तोरी बाँसरीया बाजी
वृन्दावन ओर।
पहरे उलट पुलट सिङ्गरवा तन मन सुध नहीं रही
अब मोर॥

बरवा—एकताला

जहान में देखो ज्ञान बुझाय
अपना कोऊ नाहीं सङ्ग हरि विन साथीरे।
दुनियां दौलत जिनस खजाना मुलक घोड़ा
और हाथीरे॥
जिनोके महल मोतिका जवाहर खंभ सोँ जड़ीया
झमेहै द्वारपे हाथीरे।
तिनके नाहीं सङ्ग कोऊ साथीरे॥
जवाहर दांत में जड़िया। कुन्दन से अङ्ग रङ्ग भरीया॥
जिनोके चमकता हीरा। तिनोको खाय गयो कीरा॥
जिनोके पहरने मलमल। सुगंध फुलेल अङ्ग मलमल॥
परोक्त निरख करते सहल। तेई सब मर गए जल बल॥

मुलतानी—तिताला

प्रभुजी मेरे एकही तुम अधार ।
अब नहीं कोई मेरो वन्धु तुमही हो संसार ॥
तन मन धन सब तुमको अरप्यो
ब्रह्म सम्वन्ध लीनो धार ।
कृष्णानन्द मो रङ्गरंगीहैं वार वार वलिहार ॥

२

हरि विन और नहीं कोई दूजा ।
वही निरञ्जन वही निराकार वही अलख
अगोचर सूझा ॥
वही करता वही हरता जगतके
वही घटघट व्यापक वूझा ।
ब्रह्म सम्वन्ध वही जगत उद्धारण
तन मन धन कृष्णानन्द सों वूझा ॥

विहाग—तिताला

नटवर नाचत है सङ्गीत विवध भाँति गत लई नई ।
बजत मृदङ्ग सरस भेदनसों तकिट धुमकिट तक
धिलाङ्ग तक धुमकिट धिधिकट थेई थेई ॥
तापर पग नूपुर धुन बाजत थरर थरर थोझा
गिन गिन गिन गिन ठा गिन गिन गिन फिरत
चितवत आनन्द मई ।
अवलोकन मुसक्याँन परस्पर थो दिग दिग धदा
धदा थो दिग थादिग धिधि कट थेई ॥

२

वन वन नाचत है पिय प्यारी सखी शरद रैन
उजियारी ।
कुण्डल चमक भुंव मटक चटक मुख कुण्डल अलक
कपोलन पर झलकत ललकत निरख निरख
मुनिमन जुग मैन रूप मनहारी ॥
ठुम ठुम चरण धरत धरणीतल छल वल करत हलत
कुण्डल श्रुति राजत मृगमद तिलक भाल पर
वे हंस देत कर तारी ।
थेई थेई करत सकल गोपीजन उघटत सङ्गीत
थागरी थारी कुकु झन छिन छिन छिन अनुपम
छिन छवि छक कृष्णरङ्ग वलिहारी ॥

३

कौनके गए धाम कहाँधी कोनो विश्राम कासों
वचन बोल आए मेरे ।
कासों करीहै प्रीति कासों धों तारी है रीति कासों
छलवल कोनो को भई भावती कौन युवती के
जाय परे फेरे ॥
कौनि यो पढ़ाय दई वशीकरण मन्त्र मानो सांचो
कहो लाल वाल कैसे घेरे ।
लछनदास धन धन भाग हमारे जाके जाके विकाने
हाथ ताके भए चेरे ॥

४

पिया प्यारी छांड़दे मलवाहीयां ।
रास विलास सकल रस विलसे मृदु मुसकावत
कदमको छाइयां ॥
वरसत नैनन रसमाते नोर करत वस मृदु मुसकाइयाँ ॥
ललित निशारी कपूरन छवि छाई व्रजको सब ठांइयाँ ।
कबहूं छवि निरखत गहकरके कवहूं ठुमक चलत
गत पांइयाँ ।
रसरञ्जित श्रीराधामाधो ख्याल खुशाल करत मन
भाइयाँ ॥

५

मृदु मुसकात नैन अलसाने ।
नन्दनन्दन वृषभानुनन्दिनी भरे नेहरस उर लपटाने ॥
छवि लखि सकुचत रति मनोज गुण निकुंज कुञ्ज
सुख विलस लुभाने ।
बरसत चकरस घुमड़ि घुमड़ विंव शोभित छवि
दामिनि सुहाने ॥
शोभा निरखत ललित निशाको रास विलास कैल
उरझाने ।
ख्याल खुशाल करत त्रिभुवनपति वृन्दावन मध
सब सुखखाने ॥

चितवन चितसे उरझोरी श्रीराधे कुञ्जविहारी ।
रास विलास करत नागरनट गह्वर वंशीवट
यमुना तट जित तित देखत शरदरैन उजियारी ॥
वृन्दावन शोभा बन आई हरियाली द्रुम द्रुम पर छाई
वेली नवेलिन फूल रही फुलवारी ।
वेणु बजावत मृदु मुसकावत रितु लख मदनरूप
लाज खावत ख्याल खुशाल विलोक पिया प्यारी ॥

७

श्याम कहां जान पावोगी लेहो अंग लगाय ।
दाव बना है रसिक खेल में करूंगी सकल मन भाय ॥
उमगो मनमथ चाप मिला क्योन नैनन नैन मिलाय ।
याद बाढ़ी खुशी घरी पल पल में मोहन गोकुलराय ॥

८

कहोगो किन रैन जगाए रङ्गीले छैल मेरे आए ।
हमसे अवध बदी अनत विलम रहे किन सौतन
विलमाए ॥
सांची कहो तुम कौन पियारी होरीके खेले पलाए ।
ख्याल खुशाल भरे नैनन में अबीर गुलाल लगाए ॥

(गोस्वामी श्रीवल्लभजी कृत तान)

९

कहोरी कोऊ वा प्यारीको बात ।
जब सुध आवत वा रूपको मन न रहत मो हाथ ॥
चन्द्रमुखो अनियारे लोचन सुन्दर बने सब गात ।
वल्लभ रसिक मग जावत तेरो उठ चल मेरे साथ ॥

सोहनी—तिताला

लागोरी मेरी श्यामसुन्दर सों प्रीत ।
वेणु बजाय रिझाइरी माकों नाचत गत सङ्गीत ॥
लोकलाज छाड़ि गुरुजन डर मिलिहों होय नचीत ।
एसो दाव करोरी आली वल्लभ को योंहीं जीत ॥

२

सखीरी छवि गोकुलचन्द्र निहार ।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल उरवर गुञ्जन हार ॥
वेणु बजावत मधुरे गावत मोह लई व्रजनारि ।
श्रीवल्लभ पियकी छवि ऊपर कोटिक मनमथ वार ॥

झिंझोटी—तिताला

कमली वाला यार मेड़ावो में तेड़े वारी वारी
जाँदी याँहो ।
गँवक माड़ आजा नन्द दे मेनु रहदा ध्यान तेंडाहो ॥
वल्लभ रसिक सानु दरस वेखाजो प्राण जीवाये मेंडारे ॥

२

रे मन भजिये श्रीगोकुलचन्द ।
इनके सुमरत सब दुख मिटिहै हुइहै सुख
आनन्द कन्द ॥
काहेकों रे तू भटकत डोलत अजहूं समझ मतिमन्द ।
श्रीवल्लभ प्रभुके चरण शरण गहे छाड़ि सकल
छल छन्द ॥

३

छैल छबीलो प्यारो श्रीरणछोड़ ।
भूपति जीत लाए रुक्मिणी शिशुपाल भागि गयो भोड़ ॥
उग्रसेन को राज करावत यादव छप्पन कराड़ ।
वसुदेव देवकी के तुम जीवन वल्लभ कहै कर जोड़ ॥

सोरठ—तिताला

दरसन दीज्ये श्रीगोकुल-चन्द ।
ललित त्रिभङ्ग सांवरे सलोने निरखत मिटे दुख द्वन्द ॥
शेष महेश पार नहीं पावत ग्राह ते उबारे गयन्द ।
श्रीवल्लभ पै किरपा कीज्ये जपत श्रीनन्दनन्द ॥

सोरठ—आड़ा तिताला

देखो सखी प्यारे मीत सुजान ।
जबते दृष्टि पड़ो मो ऊपर विसर गए सुध ज्ञान ॥
यह शोभा कछू कहत न आवे हैं सब गुणको खान ।
है वल्लभ रसीया मो मन बसीया वारों तन मन प्राण ॥

विहाग—जड़ला

कठिन लागी सोई जाने दृग उरझनको पीर ।
को समझे कासों कहै सजनी लगेहै कामके तीर ॥

सुधि आवत छतीयाँ दहै भर भर आवत नीर।
वल्लभ पिय बिन कल न परत है हिये धरत नहीं धीर॥

झिंझोटी—तिताला

जय जय श्री गोकुलेश काटो कलेश सोई।
सात समुद्र सात दिवस प्रलयवृष्टि होई॥
बूड़त व्रज राखि लियो मघवापति खोई।
गोपीग्वाल बच्छ गाय इक टक मुख जोई॥
एसे प्रभु अधम उधार दूसरा न कोई।
अधर गिरि लियो उठाय आनन्द सब सोई॥
सुरपति चलि शरण आयो चरणरेणु धोई।
सुरभी अभिषेक कियो गोविन्द यह नाम दियो
कुसुमनकी वृष्टि करो प्रेमरस जो बोई॥
गर्ग मुनि बांची पत्री नारायण सम होई।
सुनत नन्द हरष भयो वल्लभ पति सोई॥

२

कुञ्ज भवनके द्वार रङ्ग रस माच रह्यो।
रास विलास करत प्यारी प्यारो मुरली मधुर सुर
गाय रह्यो॥
उरप तिरप और लाग डाट सों थेई थेई तता
थेई नाच रह्यो।
वल्लभ युगल नृत्य करत हैं ता धिलाङ्ग गत ताण्डव
लास रह्यो॥

राग सोरठ—तिताल

प्यारी राज मानो जो बात हमारी हूं तो दासी कहाऊं
थारी।
अब जिन अन्तर राखो मोंसों तेरी छवि पर जाऊं
बलिहारी॥
सुघर सलोनी चतुर कहावो चलिये बेग सवारी।
वल्लभ पिय पै किरपा कीजे तुही है बड़ा हितकारी॥

२

तूं तरुणी सुन्दर मन मोहन मुखहू न बोलेरी।
काहे मान कियो तें प्यारी क्यों अब छतियां छोलेरी॥
विरह विथा काहे तन तावे सांचे क्यों नहीं खोलेरी।
पायँ परों मिलो पिय वल्लभ सों प्रेम रङ्ग क्यों न
घोलेरी॥

सोरठ—जलद तिताला

अरे प्यारो जाने देखो जब कोरे।
सुध न रही मो तन कोरे। प्यारो जा०॥
नैन वान लागे उर माहीं माधुरी मूरत चित अटकोरे
प्यारो जा०॥
रति रम्भा सब देख लुभानो शोभा यह जगकोरे।
प्यारो०।
जियको प्यारो वल्लभ साथ न जनम जनम कोरे॥
प्यारो जा०॥

२

सुनहो छबीलो प्यारी रूप भर्‌‌यो छै थारो गात।
धन जोवन को गरव न कीजे चालो करो नैं पीय
सों बात॥
समझाई समुझत नाहीं न सुनो थोड़ी रही अब रात।
वल्लभ पियको जीवन तुंहो वैतो जोड़े छै थांसूं हाथ॥

सोरठ—तिताल

म्हारो मन मोह्यो छै श्रीगोकुलचन्द।
कृपाकर म्हाने अपना आपा काटे सबही फन्द॥
मोहनी सूरत माधुरी मूरत पर वारों कोटिक इन्द।
श्रीवल्लभ प्रभुको छवि निरखत बाढ्यो मन आनन्द॥

काफी—तिताला

कृष्ण नाम है सारारे मूरख नहीं जानो।
विषय वासना भूल रहो है बांध्यो मोह के जालरे॥
वेद पुराण श्रीभागवत भाषत हरि भजि उतरे पाररे।
जप तप तीरथ नेम धरम व्रत श्रीवल्लभराजकुमाररे॥

मुलतानी—तिताला

प्यारो बतियाँ मानले रङ्ग भीनो रतियाँ जाय।
जो दिन जाय आनन्दमें आली सो दिन आवत
हथोयां धाय॥
इतनो अरज मेरी मानले प्यारी प्यारिकों रस
रतीयाँ बताय।

श्रीवल्लभ पियको जीवन प्यारी प्यारे को काहे न
छतीयां लगाय ॥

राग जङ्गला—तिताला

प्यारे को समझायेरि सौ सौ बार ।
इतनी अरज मेरी मानलै प्यारे सति जाय मोतिन
हार ॥
मोतन मनको तुंही मालक राखूं होय को लार ।
लागी लगन छूटे नहीं वल्लभ में तो प्यारी तेरे नाल ॥

कजरी

प्यारी मेरा लुभाना मन तोरे अगना ।
आधीरातके पिछले पहरे प्यारी मैं देखा तोरा सपना ॥
रतन जड़ावके हार बनाऊं कर पहरूं होरे कगना ।
वल्लभ पीय को जीवन तूंही निसदिन नाम तोरा
जपना ॥

राग बरवा—ताल खेमटा

कुआ पानी न जइहों मेरी पतली कमर लचकाय ।
घर बाहर जब निकसूंरी आली
प्यारी देखि देखि मुसकाय ॥
हाथ जोड़ कर बिनती करत है प्यारी हाहाकरे
परे पांय ।
मकुच रहो मैं वासुरी आली प्यारा देखि देखि
ममिकाय ॥

राग बरवा—ताल धमार

प्यारी लागे हो प्यारीजी तोरी छोटी छतीयां
छोटी छतीयां आई बीन मतीयां ।
दरस दिखायके मोह लियो सब तेरे फूल झरत
सुन्दर बतीयां ॥
तो विन छिनन सुहावे न मोकों कैसे कटे प्यारे
दिन रतीयां ।
वल्लभ पीयाको वल्लभ तुंही आलि भई प्यारी
उनमतियां ॥

देश—खेमटा

छबीली प्यारी मन मेरो मोह लियो ।
एकतो सुन्दर वेणी दूजे मोठे नैना वल्लभ चित हर लियो।

बिहाग—खेमटा

प्यारी तेरे नैना जादू भरे मनसुख हरन अरे ।
समझाए समझे नहीं यांते दिन दिन होत
खरे हा खरे ॥
दरसन बिन अकुलात पल छिन घरी घरी कल न परे ।
श्रीवल्लभ पियको प्राण प्यारी दुख मेटे सुख करे ॥

२

पिया मुख जीवत मतवारी भई मैंतो देखतही
सुध भूल गई ।
मैं जानू पिया मोहि मिलेंगे पीयाके मिलन को
हों गई हों जो गई पीया हम जो नई ॥
तन परसो दुख विसरेंगो प्यारे जबतें कंठ
लगाय लई उधन नाह दई ।
श्रीवल्लभ पीयाको प्राणप्यारी जो तन मनमें
प्रेम भई पीया प्रीत नई ॥

सिंधी ठुमरी—ताल तिताला

प्यारे पीया परदेश गमन कियो तबतें मदन मतावेरे ।
जैसो अधराती तैसो जेठ दुपहरी मितवा क्यों
नहीं आवेरे ॥
सास ननद मेरो घरमें नाहीं या समय बन आवेरे ।
तब आनन्द होय मन माहीं जब वल्लभ आन
मिलावरे ॥

२

सजि सिङ्गार प्यारी बन बैठी प्रीतमको चित चाहेरी ।
नख सिख रूप निहार दर्पण में चकित भई
उठि धावेरी ॥
तारे गिनत गिनत में हारी तन में मदन मतावेरी ।
सग जोवत जाती निश सगरी श्रीवल्लभ पिय
कब आवेरी ॥

[illegible]

और सिङ्गार सबै पहरूं बीच पहारे दई मोरे हरवा ।
बारा बरस पाछे सइयाँ मोरे आइला बीच परो दई
मोरे हरवा ॥

विहाग ख्याल—तिताला

नन्दका निगर अतिहो ढिटोना श्याम सलोना
रीझ रिझोना बाको चितवन में है टोना ।
रूप उजागर रसके सागर गुणआगर नटनागर
रसिक प्रीतम मन मोह लियो है मोहे ना भावे
खाना पीना सोना रहना भौना ॥

झिंझोटी—तिताला

तुमसो लागिला मोड़ा मन मनड़ा कलन परत
घरी पल छिन साँवल वालो गोरी हो ।
विरह विथा को में मारी मरत हूं विन देखे जीय
धीर न धरत एरी गोरीहो ॥

टप्पी ठुमरी—ताल तिताला

सांवलीया प्यारा सइयाँ मोरा जावे परदेश ।
गोड़वा में परी परी सइयाँको मनाऊं तुम मत
जावो पी विदेश ॥

२

गढ़ पर किन बहाई नवरङ्गीया ।
राजाभो आए बारो बाबूभी आए आए अमान सिंह
रङ्गीया ॥

जयजयवन्ती—तिताला

प्यारे सुगनारे वारी लिले जाय ।
दाना खाते पानी पीते बोलत मधुर सुहाय ॥
चन्दापुर हम खेती कइलूं सूरजपुर खलीयान ।
एटोक जोवना के बैल बनावूं सइयां कों
करिहों किसान ॥

२

प्यारे मों उमरीयारे योंही बीती जाय ।
आप तो राजा नगर कों सिधारे हम लख जोग पठाय ॥

झिंझोटी—तिताला

नैन कटरीया ने मारारो मेरी जान
नामें मारूं छुरीय कटारीया न बरछी तरवरीया ने मा० ॥

२

धराय देती दोय झूलनी तुम काहे कों रूसो जाय ।
बाबुल विदा करो मोरी काहे कों वलमा रिसाय ।
घरमें भौजी डोलीया सँवारे बाहर चार कहारवा ॥

अब तोह तोहैन पइरूरे करके कगना सइयाँ के
अङ्ग चुभ चुभ जाय ।
लोने सुलोने पी श्याँम सुन्दरवा पीठ नरम पर
चुभ जाय ॥

विहाग—जयजयवन्ती

ढुरक गईरे मोरे सिरको मटको नन्दनन्दन
धर बहीयां झटको ।
जात हती वृन्दावन सजनी लपट झपट गहे
गान खटको ॥

विहाग—जङ्गला

बाजोरे वृन्दावन वंशीहो ।
झनक सुनत सुध बुध सब विसरी लागो प्रेम रङ्गसो हो

२

सुरक गईरे मोरे कालीटी सुरकोरे ।
जावो नन्दलाल पीया हमसे न बोलो गुञ्जा सुरक
गई चुड़ीयाँ करकोरे ॥

मुलतानी—धीमा

मन मोरी सजनी वंशी मधुर सुर वसकी ।
श्रवण सुनत सुध रही नहीं तनकी हंस वस कर
अपवसकी ॥
बात कहत सुनो नन्ददुलारे यह गउअन व्रज
को घेरा ।
एसो समय बहुर नहीं पइयो कदम तरे धर मटकी
बतीयाँ करो रस वसकी ॥

३

मन मोहन मेरी अङ्गीया केसर रङ्ग डारी ।
फागु खेलन आए नन्ददुलारे ग्वाल बाल सब घेरा ॥
भर पिचकारी मोरे मुख पर मारी भींज गई तन
सारी मोरी ॥

राग कालिंगड़ा—तिताला

हमसें नजरीया काहे फेरी हो बालम् ।
हाहा करत हूं पइयाँ परत हूं वारे वारे जाऊं
सौसौ फेरीहो ॥

मुलतानी—तिताला

मइयाँ मोकों सालुडा रङ्गायदे अनमोलनो।
सुनरो रङ्गायदे रङ्गीलो चटकीलो मोवनाको नारो
लगायदे॥

२

दौड़ी दौड़ीरे लागो विछुवा काटारे काटारे काटारे।
आधी रात के असलेमें विछुवा बैठा डवमें आय हाय
उयहय काटारे॥
वैद बुलावो मोरा नाड़ो दिखलावो कड़ कड़ कड़
चुड़ोया बोले हाय हाय उय उय काटारे॥

३

पचरङ्ग महदो ल्यावरे अरे रसमालो के कोहरा।
मनमोहन पोया ल्याहल चढ़ोया अरे नोरा बना
के घर चावरा॥

राग प्रदीप—ताल अधनिमा

चिलम भरत मोरी जरली चुटकोया मइयाँ
निरमोहीयाके साथहो।
आब बहँ पुरवैयारा ननदो गोहटा न सुलमत आगहो॥
नान्हेसे मोरे मइयाँ चिलम शब्दलि जरगई हो
नरम करेजहा।
आगी लगाऊं कायरो तेरे कायरनुवा जहवा
सुरतीयां न हाय हा॥
अगवा सुलगावत हाथ थकोलि पखवा भकझत
कर दीयहो।
बाबा जो दिहले नोमन सोनया माई ल्या दिहल रे
पटोरहो॥
माई जो दिहले चढ़ने कों घोड़वा भाजो
महुरवाके गोठहो।
नोमन सोनवा में नाउिन खैहाँ फट जैहे लहर
पटोर हो॥
भैयाके घोड़वामें नगरकों टैहों भौजोके अपयश
हो रहो।
पाकल पनोवा तूं खाले ननदुईया पोयउ
सुरगइयाका सुधहो॥

हाली वे डोलीया फन्दायदे ननदुइया कंथ चले
बड़ो दूरहो।
बाबा के रोवले गङ्गा बहतहे माई रोवत जल धारहो।
भाईके रोवल भींजल पटुकवा भाजो कठिन कठोर हो॥
भादों नदीया अगम भई सजनी सूझत न आरन
पार हो।
केवट दईजर वादर दोया न बूझे कौन विध
उतरब पारहो॥
निरगुण सिन्दुरा सगायो रे वाबुल सबों मे भरा
तो मागहो।
सांचो भव फिरायोरे वावुल गांठ दई निरङ्कारहो॥
अबके गवनवा फिर नहीं अवनवा भेटों सखा
एक बारहो।
कहे कबीर मोरे नैहर छूटे अपने मइयाके बलिहार हो॥

२

बार बार बृन्दावन जाइबोरो सजनो मोहन
सतावत रारहो।
दधिया के मिस मागे जोवन के दानया केह विध
देहवों मुरारिहो॥
नित प्रति यह मग अवोरे जोवो कमे निभई
करतारहो॥

३

दधिया के भंखल मुवर कन्हैया गहल अचरवा मारहो।
लेकर चोर कदम पर बैठा हम जल मांह उघारो हा॥
नवकचार मेरे दे डालो मोहन कांय जाऊं जनमे
ल्यारो हा॥

प्रदीप—जइंगो

हाथ धनुइया सरे मोहन सान्हा बहुत कुंवर दोनि
साथहो।
मज्जन करत नीर सरजूके सङ्ग साहि लछमन
भ्रात हा॥
छोटे छोटे हाथन छोटो धनुया मारोहे ताड़िका
नाथहो।

छोट जान मत भूलो जनकजी सब बीरनके रघुबीरहो।
तीनलोक वाके उदर बसतहै भवभञ्जन रघुबीर हो॥
सावल बरण वर है हमारा हम वाको अरधङ्ग हो।
भूमि भार उतारण कारण मैं हूं वाको नित सङ्ग हो॥
हर हर बांस मगावो जनकजी ऊंचा छवावो मांड हो।
तिरवेणी का नीर मगावो लगन धरवावो पाँड हो॥
हाथी आवे घोड़ा आवे आवे सब परिवारहो।
झिनवा चलवाके भात करावो विविध मिठाई अपारहो॥
तुलसी दासी मङ्गल गावे व्याह रच्यो जनक द्वारहो।
हीरा रतन जवाहर मोतिन दीनो दान अपारहो॥

देशी ठुमरी—तिताला

सांवली सुरतीया मीठी तोरी बोलीयारे जानो जानोरे।
गङ्गवा नाइले दोए मल्लावरीया कांधे तोरे धोतीयारे
जानो भला जानोरे॥
खिरकी पे बैठल जनुवा मारल नजरवा गुंडवा
तड़फेरे जानो भला मन जानोरे।
सोनेके कटोरवा जनुवा तेलवा फुलेलवा सोनेकी
कङ्गीयारे जानो भला जानोरे॥
मिसीया लगावल जनुवा जीय तड़फवले रे जियरा
मारमरे जानो जानोरे।
तोरेरे कारण जानीया लाटो पाटो चलिहै
बिकुवा बाजारेरे जानोरे॥
आधो आधो रतीया जनुवा पिछलो पहरवा सोवत
कहुके हैं जानो जानोरे।
तोरेरे कारण जनुवा माय बाप तजलूं तुमको न
तजलो ना जानो जानी रे। सां०॥

सांवरीया कहारे सुरतीया पीया मोर भूलगेरे बातरे।
सिखयाके चोरी चोरी चङ्गना कवावत खिरकी
रखतीरे गोरी॥
मोहनाकी थरीयामें जेवना परोसती घोउ ना
छोड़तीरे गोरी।
जेड़वेकी सिरीया सइयां मोरे हंसलेरी गोरी गोरी॥
चुन चुन कलीया सजीया बिछावत रे
सूतविको वेरीया सइयाँ रसिया गोरी गोरी।
पइयां पर परके मनावत रे गोरी॥
मोरे छाँड़के कचरवा पीया मोरवा मडलोरे।
सगरो रयन पीया मिलनो वटोरला रहो
सौदागर पीउरी॥

३

कोरीरे मटकीयामें जमाय रख दीना।
जातू हैरे कान्हा दधियाके भुखल जमाय रखूं दीना
कान्हा॥
कोरी कोरी नदीया में दहीया में जमावूरे की
गड़ुविया हमरी ना कान्हा।
दही मेरो खाए कान्हा मटुकीया मोरी फोरलरे
गिडुवाआ हमरोना कान्हा जमुना बहावलरे
गड़ुविया हमरो ना कान्हा॥
इहि पारे जमुना कान्हा ओहि पार गङ्गारेके तीरा
बिचवाना कान्हा जाइलें सैया नाहिं बिचवाना
कान्हा।
मोलिमे गोपी कान्हा पार उतरले कन्हैया गुजरीयारे
कान्हा रखले लोभायके कहैया गुजरीया कान्हा॥

४

अरे माधो बोलनो उमरीया अब कारे करिएरे माधो।
पोपी पानीके माधो करिला सपनवा रूपवा
दिहलरे माधो अरे माधो॥
जो हैं होती माधो बनकी कोइली शबद
सुनातीरे माधो।
पीया मेरे आत बगीचवा नाके गावतो गोरी
अरे माधो॥

राग कालिङ्गड़ा—ताल जथताला

श्याम बजावत बीणारी आली श्याम बजावत बीणा
कवन विधि देखन जई हरि सजनी श्या०।

करके सिङ्गार पलङ्ग पर बैठी रोम रोम रस भीना ॥
अङ्गियाके बन्ध तरकन लागे जोतन छूटे पसीना ।
आलोरी श्या० ।
आठ मास ना कातिक न्हात शिवका बरत भलाकीना
ए विधना तोरा कहा बिगारा छोटे कंथ मोहे दीना ।
आलो० ॥
अन्न बिना जैसे प्राण दुखित भए जल बिन
तलफत मीना ।
छोटे कँथ की नारि दुखित भई फागुन
मस्तीका महीना ॥
सजनी श्या० ॥

परज तिताला

वैसोरी लागावे राज पानी ।
हौंतो थारो दासी दारी तू माड़ा मायदा अरज
करेछि महारानो ॥

खेमटा—तिताला

मैला दिल मत रक्खो मूरख उजला दिल चाँदनी चौक
दिलकी सफाउकी आई जाम बहेतर दमके हमदम ॥

२

कौन देश देश वे बालमराज बिलम रहेजी ।
इश्क दी वेड़ी वारी ना पहरूं थर थर कांपे माडाजी ॥

परज—धीमा तिताला

मेरा माहीढ़ा झोखे वाली सीया रूड़ा माही झोखे
वाली सीया भूल क्यो गयानो वे मेरा ।
ताँड़ो मिलनदी वारी चाव धनने रीसोरो तूंतो
जोरन जान रमझा वाला मेरा ॥

धनाश्री—ताल जयतिश्री

आज गोकुल में गोपीनाथ कहूं देखे तोको
मोको बतावोरे लोग ।
जोमें जानतो हरि मधुवन जात रखती चरण
धरावोरे लोग ॥
वह शोभा वह रूप मनोहर नटवर वेश
बनावोरे लोग ।
नहि विधना पंख मोहे दीनी उड़के वहां हम
जावेरे लोग ॥

कारे करूं कछु वस नहीं मेरा लोक लाज भई
दुगवोरे लोग ।
कृष्णानन्द में रीझ रहाहों कोऊ वाको
मिलावोरे लोग ॥

राग परज—धीमा तिताला

चञ्चल नैन मतवारे तिहारे क्यों वड़मारे ए दई
मारे कजरारे ।
सीया शोरी तेनु घायलकी तारण अरी
विच डारी मोरे प्यारे ॥

२

सेवारी आज रह जावे संवारी आज गुड़ी रातवे
वीणां कण नहीं रहदा भला वेसीयां ।
सासड़ोया तानु पुत्र भले रामे वन भूलन वेखे
जाव खांता फेरोया पांदे जीवन की थे न लेखे ॥
सासड़ीए समझाय पुरन नहीं उठ जासो पाखे ॥

३

लाल बनोजी जीव महाराज ।
साज केशरोया वागा आया थे म्हारा शिरताज ॥

सोरठ—तिताला

वारी जाऊंरे सांमलिया तुझपे वारना हो ।
मात पिता की बंध छुड़ाई, नन्दराय कीधेनु चराई,
यशोदा भरम भुलानो झूले पालना हो ॥
केशी कंस हतन व्रज रक्षक, अघा बघा तृणावर्त्त भक्षक,
यमलार्ज्जुन और पूतना तारना हो ॥
व्रजमें प्रगट भए हैं जबतें, सबके दुःख गए हैं तबतें,
कूद परे काली दह बिषधर टारना हो ।
इन्द्र रिसाय गयो व्रज ऊपर, कोई न राखन हारो भूपर,
कृपा करो आल्हार कर गिरवर धारणा हो ॥

पहाड़ी—तिताला

दे बताय नन्दलाल प्यारे वंशी कहां विसारी हो ।
मुरली को टेर जगाय बोलावत हमको अति प्यारीहो ॥
हंसी के हिय बलिहारी मोहन सों अधरन
वंशीधारी हो ॥

आज वृन्दावन कान्ह वंशी बजाई।
लोक लाज कुल कान तजी सभी व्रजयुवतिन
उठ धाई॥
रवि शशि थक्यो थक्या जल मारुत भूमण्डल
धुनि छाई।
चकित भए देव ब्रह्मादिक शिवको ध्यान टराई॥
पशु पत्ती अमरा नर मोहे कालिन्दी न बहाई।
कौन मन्त्र पढ़ डार कान्हरते तेरी गति कही
न जाई॥

पहाड़ी—ताल पस्तो

राम कहो राम तेरे मुखमें जबाँ हैं के नाहीं।
जिसको तू कहता है अपना सोभी सुपन है के नाहीं॥
जिसको तू देखे है नजरसे सोभी फजर है के नाहीं।
कुछ नहीं करता है उसको कुछ भी मिलता है के
नाहीं॥
जानाहैं रहनाहै नाहीं कालबनी कयामत के नाहीं।
उलफती महोब्बत इश्क उससे करनाहै के नाहीं॥
हाहा कर कहता हजार दिल तू माने है के नाहीं।
तिफलगी खोके जईफ होके समझै है के नाहीं॥
बे अकल कहता है कल पल तुझे कल है की नाहीं।
नेक नामी की फिकर अबभी करना है के नाहीं॥
लाखोंही इस तख्तये आए हस्मत की हे का नाहीं।
खाक भी पाते नाहीं गवांके हुवेहैं के नाहीं॥
गुलजार चार रोज सिर पर जोहे के नाहीं।
बोलते से बोलो बोल प्रेमरङ्ग है के नाहीं॥

२

मदनमोहन बिन देखेरी सजनी घर अगना
न सोहावे।
जब देखत तब होत चैन जीय बिन देखे अकुलावे॥
चित चढ़ रही है साँवरी सूरत उर ध्यान नहीं आवे।
जानकीदास विलास सकल सुख जो पिय
दरस दिखावे॥

जयजयन्ती—तिताला

मन बसमें नाम जपाय करत रघुबरको अनुराग
अनोखो।
गरभ बासते अपनो कीनो अपनो प्राण तन
मेरो पोखो॥
भोर परे भव टारत तुरतही सुख सम्पत
पहुँचावत चोखो।
प्रेमरङ्ग कियो भगत जगतमें निजपद पावन
को गयो धोखो॥

२

जगमें दीखत कोई नहीं देख सब जग देखा
राम तुमही।
लख चौरासी भेष बनाए जो जैसो तुम तैसे वही॥
जहां जिय जात तहां तुम संग हो जान देत चले
जाहु कहीं।
प्रेम रंग भक्तन सों परते करमनके बस वहत नहीं॥

३

माई आजतो बन वंशी बाजी नन्दकिशोरकी।
एक फिरे दौरी दौरी एक ठाढ़ी बाही ठौरी
एक चली हाली हाली जैसे गत चोरकी॥
एक सखी आवे जावे एक सखी तान गावे एक वस्तर
पहरे आधे साधी ओन चन्द्र चकोरकी।
रास रच्यो व्रज माहीं वृन्दावन तेहो ठाहीं
सूरदास निरखि छवि नित वाही ओरकी॥

४

गेंद चुँगई माई काहूकी न आयके।
करकी मुरली लीनी काहू समय पायके॥
कानन की कुण्डल लीनी मुकट जरायके।
चोरनके भाग जागे येही सुख चोरायके॥
सूरदास मदनमोहन हरिगुण गायके।
वृन्दावन कुञ्जन मध श्यामा श्याम रिझाय के॥

५

वंशी बाजो साँवरे की कालिन्दी के तीरहै माई।
हौं निकसी सिर धर मटकी भरन जमुना नीर माई॥

चल न सकी भूली मैं मगकों व्याकुल भया है शरीर।
प्रेम के वस भई मीरा मजनो तासुन भींजि चीर ॥

६

मान न कोजि अपने पीया सों मान लीजिये
राधा रानी।
तुमतो महाप्रवीण सकल गुण यह विनती मेरी
मान मयानी ॥
विपिनविहारी कुञ्ज बुलावत चित सनेह रितु
तुम उठानी।
करिए ख्याल खुशाल रात दिन राम विनाम
सकल मन मानी ॥

७

राजत कुञ्ज निकुञ्ज भवन में सुख विलसत मिलके
पीया प्यारी।
मोहनी रूप धरे मनमोहन शोभित लोभित लाल
निहारी ॥
लजत फिरत सैन मैन लखि मृदु मुसुकान विंव
मम छवि भारी।
निशदिन रसिक खुशाल करत है भाउन लला
नन्दनन्द अपारी ॥

८

नैन लगे व्रजराज राज से छुटत ना सखी छुटाएरी।
करत चपल रस केलि रात दिन भरे नेह उमगायेरी॥
लख लख ख्याल खुशाल लोभाने अटके टरे न
टराएरी ॥

९

बसत हैं साधनके मन राम।
कामिनके मन काम बसत हैं सूमन के घर दाम ॥

१०

पर गए किधों काहूके पाले सखी गुरू लोगन के
दुरसों दुरगए।
दिया बारतही किवार लगे हरि आए नहीं न
विथा हर गए ॥
अधरात भई मग आए नहीं हमउमर कों मदया
कर गए।
कहो ठाकुर अवध दिन बीततही हरि आवन कीजो
किधर गए ॥

११

बहोत दिन बीतेरी आली अजहूं न आएरी लाल।
जबतें भवन तें गवन कीनो भयो है मन विहाल ॥
नेकन सुरत लई पिय मोरी पाती हू न पठाई हाल।
श्रवण सुनत जगराज दास प्रभु मोहन वचन रसाल॥

१२

सब सखी आस करत प्रीतमकी हमतो निराल
भई वृन्दावन बसके।
जङ्गलमें कुटी डारों वसन उतार डारों अङ्ग में
भभूत डारों दोय कर घसके ॥
आली ऊंचे ऊंचे धाम देख विरह सतावे मोकों
सखी समझाके राखे चोर आंखें कसके ॥

१३

अपने हाथन हांकत रथ को रथ बैठे रणछोड़जी
आये।
लच्छी रथ पर आप सारथी तुरी कलँगी छवि
झलकाये॥
चीरा पटका और अङ्गरखी कलमल कान पटा
कैसेहो आये।
कोखमें वहो भक्त के कारण प्रभु बनिया को भेष
बनाये ॥
झांकत झांकत द्वार लग आये तहीं नरसी जी
नाचत पाये ॥

१४

कौन कहां तें तुम आए कहा तुमारो नाम है।
कौन कौसि के चाकर कहियो कहां तुमारो गांवहै ॥
पुरी द्वारिकासों हम आए नरसी हमें बुलावहै।
चाकर तो नरसीके कहिये साँवलिया साह नामहै ॥

१५

सब विध काज सवाँर विदा भए गोविन्द पियारे ।
पुरके लोग निकट सब ठाड़ो कर जोरे विनती
उन मारे ॥
कहै सुने को बुरो न मानो हम नरसीजी दास तुमारे
सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग भक्तनके आधीन
हैं प्यारे ॥

१६

जगन्नाथ वलभद्र सहोदरा चक्र सुदरसन रटरे ।
ब्रह्मा शेश महेश शारदा पारन पावे भटरे ॥
मच्छ कच्छ वाराह अवतार रूप धारो जों नटरे ।
नरहरि वामन परसराम मुनि रामकृष्ण भए भटरे ॥
मा हिंसा परमोधरम इति वाक्य पर गटरे ।
वृन्दावन के वासी महाप्रभु कलको होय परगटरे ॥

इति श्रीविहागरागः ।

अथ मङ्गलाचरण

श्रीकृष्णाय नमस्तस्मै सच्चिदानन्दमूर्त्तये ।
रूपनामविभेदेन जगत् क्रीड़ति ब्रह्मणि ॥१

या पूर्णचन्द्राधिकसुन्दरास्या
या शुद्धचामीकर-देहकान्ती ।
या कृष्णवक्त्रोत्सवपानमत्ता
श्रीराधिका मङ्गलमातनोतु ॥२

तथा च गीतगोविन्दे (१।१)—

मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै-
र्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय ।
इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्व-कुञ्जद्रुमं
राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहःकेलयः ॥
अंशैः स्वैर्महदादिभिर्महदिदं निर्म्माय विश्वं पुनः
स्तस्मिन्नेव चराचरेऽनुभजतां निश्रेयसप्राप्तये ।
ये ये तु प्रतिभूर्भुवः स्वयमहो नानावतारैः कृता-
स्ते ते हन्त जयन्ति शश्वदजयोः श्रीकृष्णयोः केलयः ॥

अथ भैरवी

संगीतरत्नाकरे—

सरोवरस्थे स्फटिकस्य मण्डपे
सरोरुहैः शङ्करमर्च्चयन्ती ।
वीणाविनोदी कमलायताक्षी
पीताम्बरधारिणी भैरवीयं ॥

तथाच सङ्गीतमकरन्दर्पणे तथा सङ्गीतदर्पणे—

स्फटिकरचितपीठे रम्य कैलासशृङ्गे
विकच-कमलपत्रैरर्चयन्ती महेशं ।
करतलधृतवीणा पीतवर्णा मृगाक्षी
सुकविभिरीयमुक्ता भैरवी भैरवस्त्री ॥

रागिणी भैरवी—ताल चौताल

धनिसासारेगमपधपमगरेसा ।
मपधनिसानिसागरेसामगरेसानिधपमगरेसा ॥

रागिणी भैरवी—ताल धीमा तिताला

सारेगमधपमगमगरेसाधनिसामानिसारेगमगरेसा ।
गमधधनिसामानिधपमपधपमगमनिधनिधपमग ॥

रागिणी भैरवी—ताल तिताला

सारेगमधपमगधधपधमपगमनिधपमग ।
मपधनिसाधसागरेसारेसानिधपमगरेसानिसा ॥

२

निसगमनिधगमगरेसागगरेसानिसाधधनिसारेगम
पमगरेसामगरेसा ।
मममधधनिसानिसाधनिसारेगमपम
गरेसामगरेसानिसा ॥

३

निसारेगमपमनिधपमगरेसा ।
मधनिमारेसागरेसामगरेसानिधपमगरेसा ॥

४

सारेगमपमधनिनिसागरेसामगरेसा ।
निधमपधनिसानिनिधधपपममगगरेरेसा ॥

५

धसामपनिपमनिमरेसा ।
मधनिरेगमपरेनिपमसामधरेसागरेसा ॥

परम पगी रङ्गे मेरे धाम मम मुरारि मेरे राम श्याम।
सुर सुर सरस रङ्ग रङ्गे सगरे नगर में सगरे गाममें
मेरे रङ्ग रङ्गे राम श्याम ॥
निसा सगरी रमे मेरे सङ्ग नाना रस सरस मधुर मधुर
राग रङ्ग मगे मगे सामर नाम ।
धन धन मेरे गेह पधारे प्रेम सामरे धन धन
दिन दिन मेरे सराम ॥

(तथा गीतगोविन्दे ५।३)

रागिणी भैरवी—धीमा तिताला

अस्थायी

हरि हरि याहि माधव याहि केशव मा वद कैतववादम्।
तामनुसर सरसीरुहलोचन या तव हरति विषादम् ॥

अन्तरा

रजनिजनित-गुरु जागर-रागकषायितमलस निमेषं ।
वहति नयनमनुरागमिव स्फुटमुदित-रसाभिनिवेशम् ॥
कज्जल मलिन-विलोचन चुम्बन-विरचित नीलिम-रूपं।
दशन वसन-मरुणं तव कृष्ण तनोति तनोरनुरूपं ॥
वपुरनुहरति तव स्मर सङ्गर-खरनखरक्षतरेखं ।
मरकत शकल कलित कलधौतलिपेरिव रतिजयलेखं ॥
चरणकमल गलदलक्तक सिक्तमिदं तव हृदयमुदारं ।
दर्शयतीव बहिर्मदनद्रुम नवकिसलय परिवारं ॥
दशनपदं भवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदं ।
कथयति कथमधुनापि मया सह तव वपुरेतदभेदं ॥
बहिरिव मलिनतरं तव कृष्ण मनोऽपि भविष्यति नूनम् ।
कथमथ वञ्चयसे जनमनुगतमसमशरज्वरदूनं ॥
भ्रमति भवानबलाकवलाय वनेषु किमत्र विचित्रं ।
प्रथयति पूतनिकैव वधू वध निर्दय बालचरित्रं ॥
श्रीजयदेव भणित रति वञ्चित खण्डित युवति विलापं।
शृणुत सुधामधुरं विबुधा विबुधालयतोऽपि दुरापं ॥

रागिणी भैरवी—तिताला

(गीतगोविन्द ९म सर्ग)

माधवे मा कुरु मानिनि मानमये ॥ (ध्रु)
हरिरभिसरति वहति मृदु पवने ।
किमपरमधिकसुखं सखि भवने ॥१
तालफलादपि गुरुमतिसरसम् ।
किमु विफलीकुरुषे कुचकलशम् ॥२
कति न कथितमिदमनुपदमचिरम् ।
मा परिहर हरिमतिशय-रुचिरम् ॥३
किमिति विषीदसि रोदिषि विकला ।
विहसति युवति-सभा तव सकला ॥४
सजल-नलिनी-दल-शीलित-शयने ।
हरिमवलोकय सफलय नयने ॥५
जनयसि मनसि किमिति गुरुखेदम् ।
शृणु मम वचनमनीहित-भेदम् ॥६
हरिरुपयातु वदतु बहु-मधुरम् ।
किमिति करोषि हृदयमति-विधुरम् ॥७
श्रीजयदेव-भणितमतिललितम् ।
सुखयतु रसिक-जनं हरिचरितम् ॥८

(तत्रैव ५म सर्ग)—

रतिसुख-सारे गतमभिसारे मदन मनोहर-वेशं ।
न कुरु नितम्बिनि गमन विलम्बनमनुसर तं हृदयेशं ॥
धीर-समीरे यमुना-तीरे वसति वने वनमाली ।
गोपी पीन-पयोधर मर्दन चञ्चल कर युगशाली ॥ (ध्रु)
नाम समेतं कृतसङ्केतं वादयते मृदु वेणुं ।
बहु मनुते ननु ते तनु-सङ्गत पवन चलितमपि रेणुं ॥१
पतति पतत्रे विचलति पत्रे शङ्कित भवदुपयानं ।
रचयति शयनं सचकितनयनं पश्यति तव पन्थानं ॥२
मुखरमधीरं त्यज मञ्जीरं रिपुमिव केलिषु लोलं ।
चल सखि कुञ्जं सतिमिरपुञ्जं शीलय नीलनिचोलं ॥३
उरसि मुरारेरुपहित हारे घन इव तरल-बलाके ।
तडिदिव पीते रति विपरीते राजसि सुकृत विपाके ॥४
विगलित वसनं परिहृत रशनं घटय जघनमपिधानं ।
किसलय शयने पङ्कज-नयने निधिमिव हर्षनिधानम् ॥५
हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याति विरामं ।
कुरु मम वचनं सत्वर-रचनं पूरय मधुरिपु-कामं ॥६

श्रीजयदेवे कृत-हरि-सेवे भणति परम-रमणीयं ।
प्रमुदित-हृदयं हरिमति-सदयं नमत सुकृत-कमनीयं॥८

३

पदकल्पद्रुमे—

दामोदर-रति-वर्द्धन-वेशे ।
हरि-निस्कुट-वृन्दा-विपिनेशे ॥
राधे जय जय माधव-दयिते ।
गोकुल-तरुणी-मण्डल-मोहिते ॥
वृषभानूदधि-नवशशिलेखे ।
ललिता-सखीगण-रमित-विशाखे ॥
करुणां कुरु मयि करुणा-भविते ।
सनक-सनातन-वर्णित-चरिते ॥

४

अरे मन किन बातनमें अटको तजत सुभावन सटको ।
साध सङ्गत और कथा भजन कों नाम सुनत हो सटको ॥
निश वासर मतवारोही डोले रूप देख कर मटको ।
रङ्ग रूप यह थिर न रहसी अन्त जायको भटको ॥
तातें तोरे पाय परतहों अब घर घर जिन भटको ।
जोतू चाहे मुक्त आपनो मेंट मदनको खटको ॥
दारा सुत सम्पतिके साथो बिपत पड़े नहीं छटको ।
अन्तसमय कोई काम ना आवे जब यम देगो झटको ॥
काम क्रोध मद लोभ मोहमें आठ प्रहर रहे लटको ।
बारम्बार तोहै समझावों अपनो पूरो हटको ॥
काल बलो तेरे शिर पर खेले तिन सगरो जग गटको
मानुष जनम बहोरि नहीं पावे लाख तरे शिर पटको ।
चलिये वेग विलम्ब न करिये सुख लख वंशोवटको ।
श्यामसुन्दरको सुमरण करले धरले ध्यान मुकुटको ॥
परम पुनीत वृन्दावन बसवो कालिन्दीके तटको ।
विष्णुदास निश्चय कर पावे दरशन नागर नटको ॥

भैरवी—ताल धीमा तिताला

एरी एक सपना मैंने देखा पोढ़त पोढ़त परभात । आज० ।
सुन सजनी मैं तोसों कहत हूं ध्यान लगामेरी बात ॥
झूंठ कहूं तो राम दुहाहो साँची सोंहों तातको खात ।
लाल लाडलो बैठे परस्पर हँस हँस कर बतरात ॥
रबि शशि कोटि वदन को शोभा युगल मूरत लखि मदन लजात ।
जब रजु श्याम शोभा सुखसागर जों घन से दामनि दरसात ॥
अङ्ग अङ्ग भूषण सोहत सुन्दर वेणो निरख नागिन सरमात ।
अलकन देख नाग मुरझायो लोचन पे मिरग लोभात ॥
कटिकेहरि नाशिका शुक श्रवणन के पल जात ।
नख ऐसे दमकत नागन से चमकत अधरन लाल से लगात ॥
पीताम्वर सारी पचरङ्ग पगोया सुरङ्ग परी या रङ्गमें चबात ।
करसों कर जोरें अङ्गुरी मरोरें अङ्गवाइ तोरेले जंभात ॥
अङ्कन भर भर लेत लालजू कुसुमसेजके रहे कुमलात ।
कर विनोद विहार विहारी मन्द मन्द मुसिक्यात ॥
यह सुख देत नींद उचट गई जागत भई तब नजर न आत ।
विष्णुदास प्रभु प्रिया विन देखे निशदिन कछू न सोहात ॥

रागिणी भैरवी—ताल जयतश्री

बार बार समझाय रहो मैं मान लेरे मन मेरो कहोकों ।
सुख दुख सों बीती सों बीतो याद न कर बरबाद बहो कों ॥
एक ब्रह्म देखो सब जगमें छोड़ कपटको गांठ गहोकों ।
जानकी दास सुमर श्रीरघुवर गई सों गई अब राख रहोकों ॥

राम गुमानो साड़ो पीरन बूझ दावो ।
तेंड़े दरस विन व्याकुल रहदे जानकीदास फकीर
न बूझ दावो ॥

भैरवी—तिताला

मन हरिसुमरण सों लागरे अरे और बातन सों
भागरे ।
मानुष जनम वृथा क्यों खोवे जन्म जात जैसें फागरे ॥
या संसार रयनका सपना सोवे कहा अब जागरे ।
विषय वासना स्वाद जगतके सब जियते तू त्यागरे ॥
विष्णुदास सुख जो चाहे हरिचरणन चित पागरे ॥

भैरवी—धीमा तिताला

काई गुना में थारो कियो जो क्यों हमसे दिल
एंच लियोजो ।
कौन लगा रिपु कान तिहारे जिन तुम कों बहकाय
दियोजो ॥
सांच कहो तुमरा मन मोहन को तकसीर लखो
है पियाजो ।
विष्णुदास तेरो वरदी कहाँटो ऐसा न कीजे
कठोर हियाजो ॥

२

बात कहो सांचो मोरे प्यारे आजको रयन कहा
जो सिधारे ।
अञ्जन अधर भाल महावर पीत वसन तज
नीलाम्बर धारे ॥
हार चुभे मोतियन उर ऊपर कङ्कण पीठ प्रगट
चुभारे ।
सूरश्याम प्रभु वहाँही जावो जाके तन मन अङ्ग
लमारे ॥

३

भली रतियाँ सखियाँ आज सुन्दर अङ्गसो अङ्ग
जुरे यदुराई ।
मनमोहन बड़ भागन पाए आज रङ्गीली रात सोहाई ॥
सब विध आस पूजी मोरे मनकी अखिललोकपति
पीतम पाई ।
कृष्णदास की इच्छा पूजी छतियां हरिके हाथ छुवाई ॥

भैरवी—तिताला

कृष्ण नाम सुमरो मन मेरे कटे कलेश दुख पाप
जरे तेरे ।
ब्रह्मके ब्रह्म ईश ईशनके तन मन जपले सांझ सवेरे ॥
यह संसार सार एक नामहै तासों होय भवसागर
पार मेरे ।
सूरदास सुमरण कर निशदिन आनन्द होय शरण
हरि लेरे ॥

भैरवी—ताल जयतश्री

आज सोहाग की रयनरी प्यारी,
क्या सोवे गो मिलने को वारी ।
आए ढोल बजावत बाजन, बनरी ढाप रहो मुख
लाजन ।
खोल घूंघट मुख देखेगा साजन ॥
सिर सोहै सेहरा हाथ सोहै कगना ।
झूमत आवे नोशा मोरे अगना ॥
कहत कबीर हाथ दर्पण लीज्यै,
दरसनमें झुलवा दीज्यै ।
अब मन माने सोई सोई कीज्यै ॥

सइयां बुलावे मैं जइहौं ससुरे जल्दीसे महरा
डोलिया कसरे ।
नैहर के सब लोग छूटत हैं कहा करूं अब कछू
नहीं बसरे ॥
वीरन आवे गरे तरे लागूं फेर मिलन हो न जानू
कसरे ।
चलन हार भईमैं अचानक रहे बाबुल तोरो
नगरी सों बसरे ॥

सात सहेली तापि अकेली सङ्ग नहीं कोऊ एकन
दूसरे।
गवना चाना तुराव लगीहै जो कोऊ रोवे वाको
न हँसरे ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो सइयाँ के महल में
बसहुं सुजगरे ॥

भैरवी—तिताला

जाग पियारी अब क्या सोवे।
रैन गई दिन काहे कों खोवे॥
जिन जागा तिन माणिक पाया।
हम विरहिन सब खोय गमाया॥
पीया चातुर हम मूरख अनारी।
कबहुं न पीया को सेज सवाँरी॥
मैं बौरी बौरापन कीन्हो
कहैं कबीर सुनो मान मनैया।
तज अभिमान मिलैंगे रमैया॥

२

समझ देख मन मीत पीयरवा आशक होय कर
सोना क्या।
रूखा सूखा गमका टुकड़ा फीका और सलोना क्या॥
पाया होतो देखि प्यारे पाय फिर खोना क्या।
सुन्न सेज सो सुन्न को जानि लखोया और बिछौना क्या॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो सीस दीया
तब रोना क्या॥

३

समझ बूझके देखो गुइयाँ भीतर घट को बोलता है।
वल्लभ लाके आपके गुरुको तिन घट भेद को
खोलता है॥
आलम में है आप समाया सो सब घट में बोलता है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो कठिन सके वा बोलता है॥

भैरवी—धीमा तिताला

जो कोई हरि रस गावेगा। सोई परम पद पावेगा॥
ध्रुवजो नाम सुन्यो नारद सों बैठ तपस्या कीन्ही।
प्रभु दयाल भए जब वापे पदवी अटलकी दीन्ही॥
गज को पांव ग्राहने पकरो अर्द्ध नाम हरि लाई।
छाड़ो धाम तजि गरुड़ साँवरे वेगही लियो छुड़ाई॥
अजामिल ने अन्त से सुत धोके नाम ज्यो लीनो।
अघफँदन काटे वाहो छिन वैकुण्ठ वास दीनों॥
लाज द्रौपदी उतरन लागी सुमरे कृष्ण मुरारि।
राख लीजे विरद अपने को बढ़ गयो चीर अपारी॥
गणिका गई सुधाम नामते औगुण गनो प्रभुताई।
सुआ पढ़ावत नाम लियो जब वैकुण्ठ पठाई॥
कुबजा काशी करवट लीनो देहहे मारे गारी।
चौरासी तें छूटगई जब नाम धरायो प्यारी॥
कुन्दनपुरकों आप पधारे रुक्मिणी करत सहाई।
भूप जीत कर रुक्मिणी लाए ऐसे हरि सुखदाई॥
भीलनीके बेर जो खाए बिन हिए नहीं आई।
साँचो प्रीत गोपाल प्यारी सों वैकुण्ठ भुलाई॥
चरणामृत में जहर घोलके राणा पठया जाई।
विलपट कर अमृत कीनो मीरा पिया अघाई॥
जन प्रह्लाद खंभ से बांध्यो ध्यान कस्यो वनवारी।
नरसिंह होय प्रगटे नारायण वेगहि लियो उबारो॥
टीटल भंठी महाभारतमें जहां ठठेरा ख्याही।
घण्टा टूट पड़ा तिन ऊपर रक्षा करी चतुराई॥
धना बीज बाय साधनको कीकर कहा आई।
तिन धरने का जागी नाही इतने गेहूं लाई॥
साध आय उतरे सेनाके टहल करी मन भाई।
जन अपने की इच्छा कारण आप भए हरि नाई॥
दास कबीरा लुकाई डौली विप्रन करी चढ़ाई।
बनजारा को भेष धर हरि बलद ले पहुँचाई॥
वामदेव के भोजन कीनो नामदेव प्रतिज्ञा राखी।
मन्दिर फेर भक्त जिवाई भक्तवत्सल हरि साखी॥
विप्रनि मिल ममसत कीनो जन रैदास सतायो।
सुमरण करके अङ्ग चीरके कनक जनेउ दिखायो॥
परजापति की पतिनी लेके आवे पावक लाई।
भूल गए सुत राख लिए हरि प्यावे दूध बिलाई॥

सङ्कट में एक सङ्कट उपज्यो अरज करी मृगनारी।
नाँचत कूदत चलो मिरगणो उबरो शरण विहारी॥
दुरयोधन के मेवा त्यागे मनकी प्रीत न जानी।
साग विदुर घर भोजन पायो सुखसों रैन विहानी॥
नरसी को हुँडी सिकारी भात हार गर लाए।
झाँझताल बजावन लागे रथ बैठे हरि आए॥
गौतम ऋषि ने शाप दियो अपपतिनी शिला बनाई।
रामचन्द्र चरणन रज लागी सो वैकुण्ठ पठाई॥
पीपा कूद परो सागर में दरसन दिए कन्हाई।
छाप लगाय पठायो बाहर निरखत लोग लुगाई॥
कोप्यो इन्द्र व्रजके ऊपर बरषा कीनो भारी।
गोवर्द्धन करमें प्रभु धारि राखे गिरिवरधारी॥
गेंदखेल मचायो मोहन ले जमुनाजी में डारी।
कालीदह कूदे नन्दनन्दन जाय जगायो काली॥
जिन जिन शरण गही तैतारे नाम कहानौं वरणौं।
विष्णुदास सुखजी तूं चाहे राम नाम ले शरणौं॥

रागिणी भैरवी - ताल रूपकातीन

सब घट व्यापक एसा रामभक्ति मोहे दीजिये।
अज महेश बेद चार, नाम अनन्त को करे उचार,
नारद शारद शेष नाग सुमरण निशदिन कीजिये॥
बालमीक और बेदव्यास ध्रुव प्रह्लाद विभीषण दास
शिवरी केवट खगमें वायस अपनो जन मोहे कीजिये॥
पाराशर पुण्डरीक अम्बरीषा,
शुक शौनकादि ब्रह्मादिक ऋषा,
पाण्डवादि भीषमवन्तिदेवा,
जनक वशिष्ठ शतानन्द सेवा,
एसे ध्यान रस पीजिए।
गणिका गीध अजामिल, सुपच कुबजा के असल
दोनो रूपक सदन कसाई और बदासो पाहन
होय पय पीजिए॥
नामदेव और दास कबीरा, रँका बँका बाई मीरा,
द्रौपदी गज और विदुर सुदामा एसो सुयश लीजिए।
गोविन्द परमानन्द चितस्वामी,
कुँभनदास नन्ददास हरिस्वामी,
कृष्णदास चतुर्भुज दास एसे रसमें भींजिए॥
सूरश्याम सूरज प्रभु दासा, नरसी माधो वामदेवासा,
चरणदास सन्तनको सेवक सेवा में चित कीजिए।
भक्तनाभा मनहै भरपूर, गावे गुदर चरण रज धूर,
दास गरीबो तुलसी सूर गिनती कहाँ लग कीजिए॥

रागिणी भैरवी—ताल तिताला

गङ्गाजीका स्तव

सगरज-तारिणि विश्वविलासिनि भाविनि देव-
सुरेन्द्रनुते।
जलभवजन्म मुरारि-हरार्चित-पाद-सरोरुह-हंसगते॥
कलिकृत-कल्मषनाशिनि तारिणि भक्तजनेष्ट-
भावरते।
जय जय हे हरमौलिविलासिनि पाद-सुधामय-
हंसगते॥
हिमगिरिनन्दिनि नेत्र-कटाक्षदभङ्ग-सुलङ्घित-रोषभरे।
जलामृतरूप-विलासिनि नीरज-विचित्रकराकर-
वल्गु परे॥
चिन्तितन्भूषण-सागरवंशज-भगीरथ-पवित्रकरे।
भवभयभञ्जिनि दुष्टनिसूदिनि करुणाभव-स्वभावगुणे॥
मर्दरिपुशेखरि सुन्दरचारिणि भव्यकपर्दिनि भावगुणे।
शशिधरखण्डविदारित-केवल-भालशिरोधर-पाशचरे॥
त्रिभुवनपालिनि मत्त-मतङ्ग-कुम्भसटाकुल-भृङ्गवरे।
सुरवधू-गात्र-विलेपित-कुङ्कुम-कर्द्दम-शोभित-
पिङ्गकरे॥
हेमगिरिकान्त-दुकूल-विभूषित-शोभित-तारक-
हारयुते।
सितमकरस्थित-पादसरोरुह-सौरभ-षट्पद-मत्त-वृते॥
करिवरकुम्भकुचाग्र-विराजित-कञ्चुक-विद्रुम वज्रयुते।
भवजल-दुस्तर-मग्नजनार्चित-पापसमूलकदूरीकृते॥
पतितमहातुर-दुष्करसञ्चर-तूल-महानल-भावगते।

अतिकरुणामयि विश्वविलासिनि शारदचन्द्रकला-
भगते।
विधिहरिरुद्र-सुरवर-किन्नर-भालसकुङ्कुम-पादगते।
तव जल-विचिदुरत्ययनाशिनि पातकतारिणि केलिरते॥
सुरवरलोकपवित्रविधायिनि हिमनख-प्रभु-भेद-नुते।
जगदुत्पत्त्यस्थितिसंहृतिकारिणि कलिकलाभव-
तापहरे॥
सुरहर-विष्णुपदोद्भव-पातकजाल-विनाशिनि मूर्त्तिवरे
भवजनताप-सदागतिपातकजालनिवारिणि शैलकरे॥
तवतटवासिविलासित-वामनयोगिजनार्पिततोरवरे।
सुरवरकामिनी कुङ्कुम-चन्दन-पुष्पफलार्चित-नीर-वरे॥
कलिभयनाशिनि-सेवकपोषिणि दुष्टजनैऽर्पित-
भक्तिकरे॥
भवे महावर्त्ते विषमविषये पन्नगगणैः प्रकीर्णे
तापानां वितयजलधौ मोहनिलये महामोहान्धाख्ये
विगतशरणे पापजटिले महामाये गङ्गे
चरणकमले देहि शरणम्॥
श्रुतौ श्रद्धां बद्धा गुरुचरणवाक्यामृतरसं
मुहुः पीत्वा गङ्गे परमपदयानामलिखितम्॥
शुचि प्रातः मायं यदि पठति नित्यं तव तटे
सुपुष्पैरेकान्ते तव पदनिलये याति विलयम्॥
इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं गङ्गापुष्पाञ्जलिस्तोत्राष्टपदं समाप्तम्।

रागिणी भैरवी—ताल चौताल

अस्थायी

दीजे कृपाल दयाल हमको तिहारो भक्ति
निजचरण शरण करतार।
तुँही आदि तुँही अन्त तुँही निरगुण तुँही सगुण
तुँही है जगत आधार॥

आभोग

एकही अनेक होय व्यापो है जगतमें नानारूप
रङ्ग नाम भेद बहुत प्रकार।
कहुँ जल स्थल कहुँ पर्व्वत कहुँ पखान कहुँ सुर
असुर नाग पशु पंछी कहुँ रङ्गराग सागर होय कहुँ
नर कहुँ नार॥

कुटिल कुन्तल कुण्डल काछिनि कान्ति कुवलय भासरे।
किँवे कुञ्चिताधर कुमुद-कौमुदी कुन्द कैरव हासरे॥
कान्ह कालिन्दीकूल काननं कुञ्जे कुञ्जरराजरे।
किँवे कामिनी-कुच-कुमकुमाञ्चित-कामकोटि
विराजरे॥
कनक किङ्किणी कङ्कनाद कुण्डलाञ्चित अंशरे।
केलि कोकिल कण्ठ कुण्ठक काकली कृत वंशरे॥
केशरीकटि कम्बु कन्दर कुञ्ज केशर दामरे।
कलिकाल कालीय कवले कम्पित दास गोविन्द
नामरे॥

३

तारणी श्रीयमुना श्याम कमलदलनयनी।
दरस परस दोष दूर होत है अघकाटन कौं कैनी॥
सात समुद्रकौं भेंट करतहै भक्ति मुक्तिकी निसैनी।
शरण आए गुण गावत नित प्रति वल्लभ कौं वाञ्छित
फल देनी॥

४

अचलराज करो कोटि वरस लौं चिरञ्जीव रहो
यशुमत तेरो लाल दरस देख भए निहाल मैं जागो
सुख पायो मेरे जिय आनन्द भयो उरन समात है।
जौलों ध्रुव धरणि तारो जीवे तेरो राजदुलारो तोलौं
रवि शशि सुमेर गगन पवन पानी लोमश कोसो
आवल होय यह अशीश दे जात है॥
डिम डिम डमरु बजाए सिङ्गी नाद कर मुखसे गाए
महादेवजी दरशन पाए अलख की छवि निरख
मन्द मन्द मुसक्यातहै।
पाँच वार फेरी कर कछु श्रवण लाग मन्त्र धर
बैजू नाथ कैलाशके वासी प्रेम मगन नाचे ताण्डव लासो
तकथं गात कड़्थुं गा निरतत अपने मन सुख पातहै॥

५

बड़े बड़े नैन लाल लाल डोरे कारे कारे भौंरा नीके
मँड़रातहैं।

अतिरस चातुर भएहैं तियाके वस जाके द्रग देखे
मीन खञ्जन लजातहैं ॥
जोलों देखियत सखो तोलों पाइयत सुख देहके
दरद दुख तेह मिटि जातहैं ।
लाल गिरिधर पिय नीचो नजर किये लाजके जहाज
मानो मोतो भरे जातहैं ॥

६

नाद अगाध बहोत गए हैं साध सुर नर गुणी गन्धर्ब्ब
रच पच गए सिद्ध समार ।
काहून पायो पार कर कर थाके विचार कमल
अम्ब तर शिवश्रवण धार अञ्जनीनन्दन कहे उचार
सरस्वती तरन लगी हिय में दो तुंवा डार ॥
सप्तसुर तिनग्राम इकईस मूर्च्छना बाईस सुरत
उनञ्चास काटतान अंग न्यास विकृत धार ।
छैराग छत्तीस रागिणी ओड़व खाड़व के भेद सुध मुद्रा
सुध वाणी तानसेन करी विनान जाको सूझत
न आरापार ॥

७

चातकचकोर-चक्रवाक-चञ्चरीककुलकाकलि-कलाप-
कलिकाकलोक-कमलं ।
दरदर-विन्दुविन्दुगन्धवन्धगन्धवाहमन्दमन्द
तुलित-लता-विशेष-विमलं ॥
वृन्दावनमनुचलितालिवालिशतया मादधान-
मृतुवल्लभमकरन्द-सकलं ।
सुन्दर-शिरोमणि-मुकुन्दमरविन्दमुखमंतरेण
हन्त नैव यातु जीवनमलं ॥

८

अतिसुख देनी एरी सजनी प्यारेकी मिठीं मिठीं बतियाँ
लागत मोहे अङ्ग अङ्ग रोम रोम रहीयत सोहाग ए।
प्रेमभरी रङ्गरूप रसभरी दोजकी सौंह कहत हौं मैं
तोहै मैं वाहे चाहे वे मोहे मिलिहैं श्याम पूजाए
होनी होय सो होए ॥

करत फिरत मीत मेरो तेरो करताहै राम
गरीबनिवाज ।
सप्तद्वीप तिहुँलोक सकल मध भर तिहारो हिएको
छतराज ॥
लखचौरासी जीव जौन जेते चराचर सबन को काज।
दास श्याम करन शरण आयो राखो सबन को लाज ॥

१०

अचलराज करो कोटि वरसलों चिरञ्जीव रहो
राजाधिराज राजा रामचन्द ।
जोलों ध्रुव धरणी तरुण पवन पानी गगन मेरु लोमश
कोसी आरवल होय मार्कण्डेय आदि ऋषि आशीष
देत जोलों जगमें भान इन्द ॥
गुणी गन्धर्ब्ब किन्नर गावे नारद मुनि वीणा बजावे
ब्रह्मा वेदधुनि करे अमङ्गल सब दूर होवे दुख
दन्द फन्द ।
सिंहासन बैठे शुभघरी शुभदिन शुभपल महूरत
शुभनक्षत्र साध अमृतयोग शुभचन्द रागसागर
मन भयो आनन्द ॥

११

दीजो दीदार होवे करार मन कों तुमहो जगत
के आधार ।
अलख जोत निरङ्कार रच्यो अखिल सरदार भक्ति
मुक्ति दातार तुमहो मधुसूदन मुरारि ॥
तिहारी गति अपरम्पार एकही अनेक ह्वै व्यापो
संसार तुंहो ब्रह्मा विष्णु त्रिपुरारि ।
तुंहो आदि तुंहो अन्त तुंहो सब जग भरपूर रह्यो
रागसागर के प्रभु निरञ्जन निरविकार ॥

१२

सुन्दरमृगनयनी कामिनी रूतत मानत पतिसङ्ग ।
भुज पर शीश कपोल दशन सध कुच पर कञ्चुकी तङ्ग॥
जाँघन पर जाँघ मुख तँबोल अधरन पर टपकत रङ्ग ।
यह भाँविन के सुखदे सुखले रङ्ग लावो लाज केल अङ्ग ॥

१३

मेरी सुध लीजो तुमही सबेरी हरि गोपाल तुम
मत कीजो देरी।
मन इच्छा सबही पूरण करो हरि मोहि आसरो
शरण हूं तेरी ॥
गीध व्याध गज गणिका अजामिलादिक पतित तुम
तारे काहे भूलेहो हमरो बेरी।
रागसागर प्रभु आसरो तिहारो चरणकमल में
चित उरझेरी ॥

१४

अचलराज करो लाख वरस लों कायम रहो
महम्मदशा अकबरशा पातशाह कों सोहत छत्र
तखत सब देश देश तें लीजे खेरात।
अनेक जशन नोरोज करोर करोर होए एसेही
जैसेही शुभ नखत जागे सब दुनिया के भए मनके
काज चात ॥

१५

भेदन सुर सप्त सुरनके पावे जब तब गुरुनकी सेवा
करे जीव अपनेकों।
साँचे गुरुन सों सीखे जो आवे विद्या नीकी तोकों
गुरु ज्ञान ध्यान कर वाह्नकों मन में तब गुणीयन
कहे वाकों ॥

१६

आज मेरे भाग जागे पिय भोरहीं सुध लई।
इतनो भई निहाल पिय तुमपे वल वल गई ॥
तन मन प्राण तुमहो निश दिन तुमरे रङ्ग रङ्गई।
तानसेन प्रभु तुम चतुर शिरोमणि रस वस
तिहारे भई ॥

१६

बीतत हम पर जैसे हो हमसों कहत हो रावरे।
काहे तुझे और पहचाने हम जानत जहाँ जावरे ॥
रैन दिना मोहे कलन परत है तूं तूं लो लावरे।
शाह बहादुर तुम बहोनायक हमसों भए लड़ वावरे॥

तखत बैठो महाबलो ईश्वर होय अवतार।
देश देश के सेवा करतहैं वकसत कञ्चन थार ॥
जोई आवत सोई फल पावत मन इच्छा पूरण आधार
तानसेन कहै शाह जलालदीन अकबर गुणिजननके
काज करन कों कियो करतार ॥

१८

रास मका सधु रागन तासु सदा वसो मैनन वे हरसों।
राज मका निशिवासर से रसता लखसों अखियाँ
सरसों ॥
राम रचौ रसुजाल जहाँजर विषना हलधखे रससों।
रागमें श्याम लसें रचि हासन सों रस ले वसके
मतसों ॥
मारस वाणी सरा समरा सिसी राम सरामन वा
रससों।
मातन सागो हँसे रस चैन नचै रस में हरि सानन सों॥
मास बड़े महतारि कहाई इच्छा करि नाह बड़ो
वस सों।
माग रचे रमसें सुनिबो समवेनि रुसो सुरचे रङ्गसों॥

भैरवी चौताष्टक-- चौताला

१६

पँचदस साधो गुणी चतुर दिश दरिया।
द्वादश विन घन विचित्र पिगके गरजत सप्तध्याय
तिरोया।
सप्तस्वर तीनग्राम इकईस सुरछना बाइस सुरत
खरीया ॥
उरप तिरप लाग डाट अतित अनाघात विरीया।
आतक खातक स्वरान्तक औड़व खाड़व सम्पूर्ण
बैजू करीया ॥

२०

चन्द्वदन प्यारी बैठि सिङ्गार करत हैमचौकी
मध्य प्यारी धरे भूषण साज।

नृत्यकार निरत करत समसुरन होत गान ता बिच
प्यारी लीनो मोठी तान बजत साज ॥

२१

भए रवि उदै होत आए हो भैरवी से लागत
भए रमणी वस प्यारे।
भैरवी तान मुरली में बजावो रिझावो वाही
बिया रैन के जागे नन्ददुलारे ॥

भैरवी—धीमा तिताला

अधम उधारनी जय श्रीगङ्गा।
दरस परस अघ दूर होत हैं सदा रहत शिवके
सहसङ्गा॥
वामन चरण परसके धाए सगरवंश पावन भए अङ्गा।
वल्लभ निहाल भए जबही तें छवि निरखत मन
उठत तरङ्गा॥

२

प्यारो मुसक्यान लियो मन मोही।
प्यारो आज जोही प्यारी तुह्मारी वोही॥
प्यारी छवि देखि चकित भयो चन्दा तो पटतर नहीं
है कोई।
प्राणजीवन मुरारि वस प्यारी पिय हिय तो
गलमाला पोई॥
प्रेमकथा जानि सोई वल्लभ जापर बीती होई॥

भैरवी—जल्द तिताला

प्यारो तेरे मनमें क्या जो मोहाई।
रत्ती रत्ती जोड़ी बढ़ात दिनन ते तोड़त लाज न आई॥
निरमोही हो रही वेदरदी यह सिख कौन सिखाई।
तेरे जियको तूं जाने प्यारी वल्लभ और निभाई॥

भैरवी तिताला

दिलजान मोरो जानो तोसों लागी अँखियाँ निमानी।
तेरो ध्यान निशिवासर मेरे तैं क्या मन में ठानो॥
अपनो जानके किरपा कीजे नेकहु दया उर आनो।
वल्लभ पियको जीवन कहिये सदा रहूं गुणगानी॥

भैरवी—जल्द तिताला

किसनू कहीरे मैंड़ी जाई दीलों दी गला।
सोनेदे अँदर हूकें उठदी बिरह सतावे मैनु आई दिला॥
रात देहाड़े कल नहीं पड़दी उसनु वेखणदी चाई।
वल्लभ पियको प्राण पियारो वेगि मिलोरी मैनु धाई॥

भैरवी—तिताला

सजन बिन बहुत रहीरे पछिताई।
मैंड़ा दिलवर रूसि रहाहै कोई लावोनी समुझाई॥
कहीरे दशा सब नाड़े तनदी बरव रात दिन जाई।
वल्लभ पिय पर रीझ रही हौं उस बिन कुछ न सोहाई॥

२

प्यारा मेरा सुनदा भी नाहीं फिरियाद।
बिरहदी मारी मैं बन बन कूकों वल्लभ करदा
नाहीं याद॥

भैरवी—ताल खेमटा

प्यारी ना जानू जादूसा क्यारे किया तन मन रस वस
कर जो लिया।
नैनवान दिये उर माहीं मोने घायल वे मार किया॥
रैन दिना तलफत जिय मेरा बिन देखे कल नाहीं
हिया।
वल्लभ पिय पर किरपा कीजे दरस दिखावो
सुख पावे जिया॥

२

प्यारी जान सफरी ज्यों तलफे हिया।
प्यारी मिले सुख पावे जिया॥
महाकठिन बीती निशि सगरी सुमरण करत विहान
किया।
तुंही प्राण तुंही ध्यान एक तन मन धन सबही
प्यारी तोहे दिया॥
प्यारे जियको प्यारो वल्लभ तो समान नहीं कोई
तिया॥

भैरवी—सुरफाक्ता

तननननन तन दिरना तदानी दोस्त।
नादृद्रदानी तंद्रद्र धितलाँ तुंद्रद्रदानी॥

जो में कभी आवे जाइ जारे मित्रवार ।
पास बैठा जिसे चाहे जगा न दीजे यार ॥

भैरवी—तिताला

मित्र बिछोहो अतिहो कठिन है वे जिन दे करतारी ।
जब सुधि आवे प्यारे तेरो बरसतहै नैन वारी ॥
काठ रुखे तन व्यापत प्यारे युग बिछुरे मरे सारे ।
वल्लभ पिय अब मिलहै प्यारो सदा रहूंगो लारे ॥

भैरवी—जयतश्री

होरी खेलनकों प्यारो आवोने हमारी गलीरे ।
केसर रङ्ग उड़ावों मन मान्यो फूली गुलाब की कलीरे ॥
अबीर गुलाल की उमड़ घुमड़में घूंघट ओट चलीरे ।
प्यारे पियको प्यारो वल्लभ अङ्ग सों अङ्ग मिलीरे ॥

भैरवी—तिताला

प्यारी चलोनी निकुञ्ज वने रङ्ग ठने तत बीतत
घिखर बजाय घने ।
सप्त तीन इकईस बाईसो छत्तीस छत्तीस गाय गुणे ॥

भैरवी—लक्ष्मीताल

वारी वनवारी बृन्दावन सखीपति सखापति करत
रास गोपाल ।
नृत्यकारी झनकारी बजे गत ध्रुमङ्ग कट धिधिक
धुम तक तकट तान ताधा ॥

भैरवी—गणेशताल नव

मनमोहन मनमानो यातें तू प्रवीण सयानो ।
सुन्दरवदन चन्द्रकला लजानो तोसो तुहीं तिया
और नाहीं तिहूंलोक सानो ॥
तानसेन चिर चिर जीवो एसो प्रीत रहो जोलों
जमुन गङ्ग पानी ॥

भैरवी—रुद्रताल

आरे श्याम मोरे घर तू मनमोहन मेरे मनको प्यारे ।
तुम बिन मोकों कलना परत है मुरली टेर सुनारे ॥

भैरवी—चौताला

उठ भोर चल किधों मेरे आँगन प्यारे कौन तियन
सङ्ग सरसाने आए होजू ।
चञ्चल चरण गतिमन्द चलन देख दृगन मिले मेरो
होयरा सिराए होजू ॥
जोई करो तुम निडर अनत जाय सरस रङ्ग रस
मनके भाए होजू ।
जाहिकों भाग ताहो अङ्ग लाय लई अनत विलँबे
जाय कहूं मन ललचाए होजू ॥

भैरवी—ताल रूपक

बना व्याह ले चल्यो माई चन्द्रमुखी बनरी कों
घरले आय ।
सूनो मन्दिर कहे वाको हमारो अपनो अपनो
घर बसाय ॥

२

आदेश कर गुरुकों जो गुरुनके गुरुकों ब्रह्म
गुरु कों तामों सप्तसुर तीन ग्राम आवे सुरभरकों ।
इकईस मूर्च्छना उनचास कोटि तान अस्थाई सञ्चाई
अलंकार बैजू प्रभुके चरण धरकों ॥

भैरवी—ताल सवारी

फुलवन सेज बनैहूं करिहूं सिङ्गार पिया मिलो
भावतो मोहे आज ।
गावोरी बधावा सब सखियन मिल सङ्गत सों मेरे
घर रच्यो काज ॥

२

आहे नाद्रदीमदीमतन दिरनायललीयललीयला
यल्लायललेतनजे आशकतां वेगस्तम्वरके याव
विस्तादये मनचुं हुवावे तावेरा ॥

३

बेरव्वा मेनु आसरा तुसाड़ा वे रखले साडडो लाज ।
रैन दिना मेनु ध्यान तुसाड़ा रहंदा मेरा मीयाँ
और नहीं कोई काज ॥
चौना मस्ता नादरा आतस नजर कर के अजवद
मस्तोयस आतस नजर कर ॥

भैरवी—चौताला

सारेगमगरेसारेनिधरेसानिधसासानिधनिधपधप
मपमगमगरेसारेसा ।

गमपमधसामानिधपधनिसागरेमामगरेसासा
मानिनिनिधधपपपममममगगगरेरेरेरेसा ॥

भैरवी—धीमा तिताला

धनिसारेगमधधपममगमगरेसागगरेसाधनिसामानि
सारेगमगरेसा ।
गगमधधनिसागमानिधपधपममपधपमगम
निधनिधपमग ॥

भैरवी—तिताला

निनिनिमगमधनिधगमगरेमागगरेमामगरेसानिमा
धधनिमारेगमपमगरेसामगरेसा ।
मममधपधनिसानिसानीसाधनिमारेगमधप
मगरेमगरेसा ॥
मपमपमधसानिसागरेसानिधपगमगरेसागरेसा ।
मासानिमानिनिनिधनिधधपधपपपमपममगम
गगगरेगरे ॥

२

मसारेगमपधनिधपमगरेसा ।
निधनिधमधनिमासानिधपमगरेसा ॥

३

साँचो कहो हमसे मनमोहन आज कहाँ मारो
रैन जगे हो ।
रङ्ग रङ्गीली अँखियां कहुं देखो कौन रङ्गीलीके
रङ्ग रङ्गे हो ॥
मोतीयन हार चुभे उर ऊपर याहो तें काहूके अङ्ग
लगेहो ।
सूरश्याम तुम वहांही जावो तन मन काहूके प्राण
पगे हो ॥

४

आज सोहाग भलो रतियां छतियां व्रजनाथके
हाथ कुवाई ।
मैं बड़ भागिन हूं तिहुँलोकमें तीनलोकपति
पोतम पाई ॥
देख सखी मुनि मनसों न देखत सो देखत मेरो
गात लोभाई ।
कुवरकों वर वरजोर न माई बसाई मेरे तन
सुन्दरताई ॥
एक नेकन भई कितियां बतियाँ सखियन उमांम समाई ।
रूप अनूप सुधानिध राधा मङ्ग केल प्रेमरङ्ग रमाई ॥

भैरवी—ताल पञ्चमुखी

ताण्डव-नृत्यत-पिणाकपाणि-डिमि-डिमि-डमरु-
वर्षित-वर्णम् ।
जगदीशात्मजः शृणोति शब्दं श्रुति-पटलध्वं
पायूषपानम् ॥
सुरर्षिसिद्धचारण-गायक-यक्ष-रक्ष-विद्याधर-पानम् ।
सनकादिकस्मृतिसारविचारं मुनिराजर्षि-
समाधिध्यानम् ॥
नारदवीणाविद्याविशारद-शारदाश्रयति मुखाम्बुज-
पानम् ।
यक्षपतिविस्मृतिस्वरहस्यः गोविन्दगौरसन्निधि-
पानम् ॥
स्थावरजङ्गमगतिप्रतिबद्धमस्मिताकाशजलाशये
शयानम् ।
सरीसृपार्पितसर्पतिमर्पजड़वजगति जगद्गतो भानम् ॥
आनन्द-उद्गम-विष्णुपरायणचित्तचक्रधरचलायमानम् ।
षट्पद-निर्मितशिवश्रुतिसारं प्रेमरङ्गकृतनित्य-
स्नानम् ॥

भैरवी—तिताला

राम नाम जपले मन मेरे कटत पाप एक छिनमें
तेरे ।
परब्रह्म जगदीश गुँसाई रसना रटले साँझ सवेरे ॥
धन जोवन कछु थिर न रहेंगे कोटि उपाय करो •
बहुतेरे ।
सूरके प्रभु अन्तरयामी ठाकुर हम दास हैं तेरे ॥

२

बेड़ा पार करोवो रामा कठिन धार पार करोवो ।
भवसागरको दीनदयाल दशरथके लाला शरणागत
कोला धरोवो ॥

गीध व्याध गज गणिका तारी श्रीवरी गौतमनारी तरीवो।
जानकीदास निवाणि नू रखले साड़ो जिंद तेरे वार परीवो॥

३

वारवार समझाऊं रे मन क्यों नहीं राम कहै।
विना हरिभक्त जगत दुख पावे शिर यमदण्ड सहै॥
ज्यो चाहै आराम नाम जपतो सुखसों निभहै।
वेद को भेद ज्ञान ज्ञाननकों जानकीदास यहै॥

भैरवी—जयतश्री

वार वार समझावत हूं तोहै मान लेरे मन तू मेरो कहीकों।
दुख सुख सो बीती सो बीती याद न कर वरवाद वहीकों॥
एक ब्रह्म देखो सब जगमें छाड़ कपटकी गाँठ गहीकों।
जानकीदास सुमिर श्रीरघुवरकों गईसो गई अब राख रहीकों॥

भैरवी—धीमा तिताला

गावते हरिकों यश प्राणी ते जग में धन धन गुणी ज्ञानी।
सोई सुखिया सोई वड़ भागी जिनकी प्रीत राममों लागी॥
सोई पण्डित सोई दानी मीठे वचन सबन सों बोले तेजन जगमें निर्भे डोले ते कुलमें ते परम सुथानी।
प्रभुपदरति मन वच क्रम जिनकी चरण धूल राखु शिर तिनकी जानकी दास परमहितमानी॥

२

कृष्णगुमानी मेरे मन वस दावे।
इस जगमें वारो और नहीं भाँदा निशदिन उर विच वही लसदावे॥
वही ध्यान वही मान वही सब वही तन मन धन कुटंब वसदावे।
प्राणपति परमेश्वर श्रीहरि नन्दनन्दन मृदु मुख हसदावे॥

खान पान जग बीच नहीं नादा और सुरत दिल विच नहीं धसदावे।
कृष्णरसिक रङ्ग मूरत वसीली गावत हरि हरि हरि यश दावे

३

राम गुमानी साड़ी पो नजर बूझदावे।
तैंड़े दरस विन व्याकुल रहंदे जानकी दास फकीरन बुझदावे॥

भैरवी—तिताल

राधे वंशी किन लीनी चोर।
चञ्चल चपल नारि एक सुन्दर अबही गई याही ओर॥
हाहा मोय बतावो प्यारी विनती करूं कर जोर।
जानकीदास कों आस पुजावो निरख द्रगनकी कोर॥

२

श्यामसुन्दर गिरिधारी वनवारी धुन वंशी फेर बजावरे।
जैसी बजाई वादिन प्यारे तैसी तान सुनावरे॥
ग्वाल वाल सब सखा सङ्गले मेरी गलियाँ विच आवरे।
जानकीदास रसिक ब्रजमोहन भुज भर कण्ठ लगावरे॥

भैरवी—जङ्गला

लगाय दे मोई झुझाने झुझाने बेड़ा पार।
गहरीभी नदियाँ वारा नाव पुरानी आन पड़ी बिच धार॥

२

मैंतो जोयनु वो तेरा समझाय रहो।
बार बार जोयरा मानत नाहीं समझ समझ पछताय रहो।
जानकीदास श्याम वेदरदो बार बार वलिहार गई॥

भैरवी—तिताला

यारदा मुखडा मेनु भाँदानी भाँदा वे साँवल साड़ो वल आँवदानो जाँदावे।
जानकीदास सोहनी सूरत नजर पड़ी जबसे वो मूरत गल लगणीनु जो चाँदनी चाँह दाव॥
वंशी बजावदा छैला जोर नागर नन्दकिशोर।
विन वेखे कलन परतहै क्या सब क्या भोर॥

चेरी न तेरी न तेरे बबाकी घेरी गली में क्या पैर
लडैहो।
जोतुम चाहत चाखन माखन सो तुम माखन
नेक न पैहो॥
कंस के राज में धूम नहीं बरीआई बबाकी सौंह
बूँद न देहौं।
टूटेगो हार हजार को तब नन्द यशोदा समेत
बिकेहौं॥

भैरवी—जड़ला

तेरे साथ लागि मोरे नैनरी।
कहा करूं कछू बन नहीं आवे बीत जात
सारी रातरी॥

भैरवी-- ताल एकताला

नैना वो तेडा जालमजोर।
रैन देहा मेनु ध्यान तुसाड़ा वे सोना तुही तूही सब
ओर।
जानकीदास निमानेनु रखले आमिल नन्दकिशोर॥

२

प्यारावो सोना सांवलयार।
तेंरे दरस विन कल नहीं पड़दी रैन देहा वेकरार॥
दरस वेखाजा माड़ी आस पूजाजा मै तुझ पर
वलिहार।
जानकीदास निमाने नु रखले दे अपना दीदार॥

३

मिल जानाहो प्यारा नन्दकिशोर।
वेख नजर भर घायल कीता बाँके नैनाँ दी कोर॥
तेंड़े दरस विन फिरावे दिवानो ढूंढ़दी फिरा चहुँ
ओर।
जानकीदास वेख तुसी हरखां जैसे चांद चकोर॥

२

वे साँवलडा यार लागी तो ओर निभाना।
तेड़े मिलननु सब जग चाँदा विन दीठीयाँ दा दिवाना॥

विन वेखे वारी नैनादी झरी वरसांवदे दरसदी पोस
मिलावना।
प्रेमरङ्ग मग दानी वो नित नित नेहडा वो मन भावना॥

भैरवी—जलद तिताला

रघुवर बेडा मैंनु पार लगायदे।
भवजल थल दानि वे पारन मिलदा भवदे पार
पहा चायद॥

भैरवी—तिताला

पावन नाम तुमारो रघुवर मोसे पतित कों तारो।
जल थल चल चहुं दिश मन चिपटत सब दृग दोष
निहारो॥
प्रेमरङ्ग रङ्गे घनश्याम के लगे तन रङ्ग पियारो॥

२

वेड़ा पार लगाय दे मेरा माँझीवाला माझिधारमें
वयार बहावत मत पतवार फेरादे।
सतगुरुको गुण लगन सकात है सम दम दण्ड
दिखायदे॥
प्रेमरङ्ग भवसागर उतरत निजपदथाह थँभायदे।

३

सुमिरन राम सुमिरन सुमिरन जो साधन काम
साधन साधन जो।
जगत जो धाम जगत जो जगत जो भगत जो नाम
भगत जो॥
मतकर साम मतकर मतकर जोंलग तन दाम
लगतन लगतन जो।
निशदिन जाम निशदिन निशदिन जो रङ्ग तन चाम
प्रेमरङ्ग रङ्ग तन रङ्ग तनजो॥

भैरवी—धीमा तिताला

पशुघने व्रजकुञ्जवने व्रजदार मनोहर वंशधरम्।
रम्भुसमुत्थित धैवतराग-विमोहित देवत दैत्य नरम्॥
मान मपा कुरङ्गछवि लच्च चलं सकलं हरिरूपवरम्।
विश्ववियोगी जनाभ्ररंदुसहा किंशुक जाल सरम्॥

तिव्येया तिव्येया त्वं द्रग गड़दाँ गड़दाँ केलि
विलास राधावरम् ॥

२

कृष्णलला शरणागत तेरो राख लाज अपने जन केरो।
अशरण शरण तोकों जग जाने नित दीनदयाल
दया कर हेरो ॥
दूजो और न कौन समर्थ है जाके नाम कटे भववेरो।
कृष्णरङ्ग प्रभु प्रणतिपाल सुनि तरिये कटाक्ष कमल
दृग फेरो ॥

२

भलो भली भाँतिहै जो मेरे कहे लागो है।
मन राम नामकों सुभाय अनुरागो है ॥
राम नाम मोदकसुधा सनेह पागो है।
पाय परतोष तीन द्वार द्वार माँगो है ॥
राम नाम को प्रभाव जान जूड़ो आगो है।
सहित सहाय कलिकाल भीरु भागो है ॥
राम नाम कल्पतरु जोई जोई मागो है।
तुलसी स्वारथ परमारथ न खाँगो है ॥

भैरवी—गजल्ला

हरिनाम भजो थोरी जिन्दगी।
अवसर बीत पीछे पछतैहो यमपुर जैहो गरे फँदगी ॥
निशिवासर हरिनाम उचारो तजो मनुवा कपट
रिंदगी।
कृष्णदास जगमें जो कहावो दूर करो सब छल
छिंदगी ॥

२

कृष्ण भजो तोहे कृष्ण दुहाई और न दूजो तोहे सहाई।
द्रोपदसुता की लज्जा राखो डूबत गज ग्राह आन
छुड़ाई ॥
खँभ फार हिरणाकुश मार्यो प्रहलाद भक्त हित
नरहरि आई।
शङ्ख चक्र गदा पद्म लिए हरि अपनें जनको और
निभाई ॥

भैरवी—धीमा तिताला

टप्पा

भोला भोला मुखड़ा जानी यारदा एक पल नहीं
भुलदा की कराँ दिल दुख दावो मीयाँ।
रात देहा मेनु ध्यान तुसाड़ा वो मीयाँ तुसी घरी
घरी क्यों रूसदा मीयाँ ॥

भैरवी—झपताला

तेंड़ो भुवे कालीयाँवे आड़िया सुनिवे नैनादी नोक
संभाल आद्या सुनि तेंड़ो।
वहमस्त मुरावसद पेच ताव गिरह दाद शवरावये
आफताप तेंड़ो ॥

भैरवी—धीमा तिताला

झोखों वाले मियाँवे विरहदी सार न कमलावे।
मैं तत्ती दाको उन ज्योमत दे हालवे ॥

२

सांवले हो मुरली वाले हो रावरे हो कान्ह।
प्रेम उमगी उमगाई नेक भली वीण बजाई हो प्राण ॥

३

खेड़ों दा पर वेला भला मियावे सानू चकाज वों
जवाँ भादा कोइवे।
विछोनु सुनु वेले वल खेड़े वे मियाँ सानु चाक जवा
नाद कोईवे ॥

भैरवी—धीमा एकताला

मानु भाँदी गलियाँ वे सोनें दी मानुआँ।
जावो नो कोई वे मुडले आवो मियाँ राँझे विना
जिन्द वे कलियाँ ॥

२

तेनु समझाय रहो दिलवर वेखन कारण
लोकोदियाँ वदियाँ सहेंदे।
इश्कदी गला समझदा नाहों नादम् हाल सुनाये
केहनु ॥

३

साँवलियादी जोर महोव्वत इश्कदे नाल दिल
माँड़े लगदी।

इश्क लगा करके छूटदा भी नाहीं मेंड़ा मियाँ तेरे
रखे नहीं रहदो ॥

४

जालम् जारिया वे रब्बा जारीयाँदे नाल गुजारीया
दोठीया जमानेदो कुड़ियारीयाँ।
मनो करो उस निधड़ेनु भावना साडरी गलो तू
क्यों नहीं आँव दारीयाँ ॥
लाल चोरा हाथ सब्ज छड़ो वेखां कोई नैनादो आन
मारीयाँ।
तू तबीब दिल्दा साड़े सोरी मियाँ महोदे थांग
चल चंगी साड़ो इश्कदो बोमारीया ॥

५

दिल मजनु कीता हम फरेमस्तहो कूबकु सहरा
बसेरा लैलो।
मदहोशो से शोरी ने जिस दम लब् लब् अप शुभ
रिनयलो ॥

६

नई नई नए न्याज सों भरो ऐसो सोज गुदा जिसे
कोन फूंके हरे कदममें दम साज मियाँ।
नए दर्द तिहो सदायना इसे बोले शोरी हर दम
बोले परो परो ॥

७

राँझेदे नाल करार मेरावे कोकरां जो नहीं
लगदा मेरा।
राँझेदो सूरत मेरे मन पर बसदो वे मियाँ राँझेदे
नाल मन पग दावे।
आशिक उसे मत जान जो बदनाम न होवे ॥
दोवाना वोहो है जिसे आराम न होवे।
रवा तेगो निगाह उमोखको गर दम रहे बाकी
तड़फा करे विसमिल जो अगर काम न होवे ॥

८

तकके चलाई सानू साँग विरहदो नैनो वाले मियाँ।
दिलते आ लगी शोरो दिल रह गया उचकके
लाई मियाँ ॥

दोने ना देनी आगे वे सिपाईडा मेरा मीयाँ तू
राजो रहना मेरीयाँ।
आप न आवे वारी वे ना लिख भेजे मेरा मियाँ
सुख बसे मुलतान वे सिपाइडा मेरीयां ॥

१०

मस्ति सहेरा में जा मोस्त कोजिये पोजिए पियाला
मद होशोका मस्तो।
सनम् अपने अपने दिलमें शोरी है हजूर मोजूद
हस्ती ॥

११

तेड़े मिलनदा चाववे मेनु आमि पियारा वे मियाँ
डर दियाँ वदनामी कूल तेड़ी।
तेड़े कारणमें सब कुछ छड़ियां वरदिवाँ विन दामोदी
अनमोल तेड़ी ॥

१२

मदशानु भूल क्यों गया वे महिदे चावन चाक।
आप छड़ जांदे नाल मेहिदे शोरी मियाँ माहिनु
उड़ो कनियाँ वे पेड़े दियांनो उड़दो खाक ॥

१३

आमिल राझा जानवे आमिल मैंतो ताड़े सदके
कोतो यार गुमानोड़ा।
आशिक तें माशूक करम करे साडरी जान इस जग
विच जोवन महमानड़ा ॥

भैरवी—जड़ला

होवे ढोला मन पर चांदिया झग सिया लेदो जटियाँ।
आँखि लड़ादियां भोंवा मटकोंदो चित चढ़ जांदिया॥

भैरवी—धीमा तिताला

इश्कदा फन्दा क्योंकर छूट दावे भला कोई
बतलावन मेनु।
आप छाड़ लगी लड़ तेरी वे मियाँ कभी तो दरस
वेखावन मेनु ॥

२

सोना वेदरदीया रवे मानु तो रहंदा तेडा प्यारवे।
तुझ विन ग्रोरी मैनु कल नहीं पड़दी साड़ी लेदा
क्यों नहीं सारवे ॥

३

टपाटप कार सादी गाँठ प्रेमकी घूंट पीवे सोई जाने।
इश्कदा गुलफूल ग्रोरी खुशवो आँदी जब चढ़ जाँदी
दमदी ओर ॥
मियाँवे छोड़ क्यों चला नैनी नैना तकदी चुपकीती।
झट पई तैंड़ी चाकरी खेड़ांदी ग्रोरी जोजांदी मै
तेड़ा भला ॥

भैरवी—अड्डा

चुमल बसेदे वो मीयाँ नाकर झेड़ा खेड़ोदे कोलवे।
ग्रोरी तू तो बदमामल हाँहाँ वेफन्दी विच साथों
मत बोलवे ॥

भैरवी—धीमा तिताला

किवीं तू मेड़डा दरद गवाँवी यारवे।
राझण मेड़ा वारी वे मेराझे दिवे मेरी मिया तेरी
भलाई सैला जीवी मीठी तू साड़डा दरद
गवाँवी यारवे ॥

२

चोरा चंपदावो वालमजो वस पाया कीसोदे ग्रोरी
सिर तेरे।
चम्पेदा माना वेसाणा वम पइयाँ वे मैं तेड़े सोणा
जो नहीं लगदा ग्रोरी कीकरा बहानावे॥

३

लाला लड़के भड़के झगड़के आए भोर भए मेरे
चढ़के।
डगमग पग ढिग धरत धरणि पर बात बनावत
हौ घढ़ घढ़के ॥

४

प्यारा तोसाड़े नाल नहीं मिलनावे जावोनी
समझावो उसनु कोई।
तुझ विन जिन्दड़ी मैंड़ी वे कल रहदी ग्रोरी.
ल्यावोनी समझा उसनु कोज ॥

५

माहिया दे तुमाहिया वे की गुजरी साड़ी हालवे।
बीच पङ्गुरा दोवे पइवे तरफेदी मेरा मियाँ
मुई पई दमनाई ॥

६

लाला वाला जोवन कोसो दावे रति रहजा जोवन
वालावो।
गुलवी लाला बाग बहारां विगुल विना फरमानी
दावे दाग जिगर विच कालाला ॥

७

राँझा मैनू न विसारी मैंतो तोडे सदके कीती यार
गुमानीड़ा।
एही गला पछावदी मेड़ी दिल विच कारिया
मानून विसारियाँ ॥

८

सइयांदे मरदान वे बून्दी तखत मकान चहल तन।
पञ्च तन पाक दोवे जारत चलियाँ रोशन सकल
जहान चहलतन ॥

९

मानिवे वसँति यारवे चोरा करीदा शिर देवन
आया तुरी जरीदा सोने हरीवे।
मुखड़ा तेड़ा बाग बहारांदा ग्रोरी सोणा जम जम
मुवारक वादीवे जानो ॥

१०

लाइयाँ वे मैनु लाइयाँ कइयाँ तू तंगा सैला लाइयाँ।
राँझा तू तखत हझारांदा साइयाँ हो रसिया
लेदो जाइयाँ ॥

११

फूलीं साँझी वेख वहार दावे सोणा सोणा लगदा
मुखड़ा जानो यारदा।
ग्रोरी हजार गुल लालाना फरमान दिवे सदके
कीती सदके जाँदी प्यारदा ॥

१२

जालम मुखडा परीदा पाया तैनो जोर लगदा
तबहे दार।
गोरीदे सरदार यार परियादा कर गइयाँ परियाँ
शिरथे साया॥

१३

भोको वेखण जाँदियाँ वे रंभेटा तैडियावे।
राभण मिलिया मैंनु वे सब दुख भूलिया गोरी
फुली अङ्गन समादियांवे॥

१४

मिरजा जानवे जिन्द तोलाइ हुन तेड़ड़े नाल।
दिदनो जारेदा मेला ठेला गोरो मियां गरीबोंदा
रखले मान॥

१५

मुखड़ा सोणीदा परी पैर कर पायावे।
भलो लगदो गोरो यारांदो सेनवे॥

१६

जानो जियरातें बाजू साड़ा भूलदा नाहीं मानुले
भो सँभाल।
अखियाँ लग खटकंदो भटकदा दिल कीता कोल
तँड़े नाल॥

१७

ठग ठगीले नैना तेरे लेंदे साड़े भला क्यों दिलनू।
एकतो दिल वारो वेते ठगलो तावे मियाँ दूजे नहीं
होंदा मिलनू॥

१८

दिल नहीं लगदा वे आद्या तुझनु वेखों तो जीवों।
वेमियाँ तुसी जोंदा रहियो लाख वरसलों
अदारङ्गनु पार उतार ठण्डा पानी पीवों॥

१९

मिलना हो तो मिलजा ढोलन क्यों कुड़ेलावे।
साड़ी मैं देख चुको तेड़े नित दे वायदे सुनवे राँभा
विरह सानु रहदावे॥

२०

वोमियाँ जानी रब तेड़ा भला करे कभीतो आमि
माँड़डे कोल।
वन्दी होवी तेड़े विन दामोदी गुण मीत गले
लगनेदा सानु देह मुड़ वोल॥

२१

जाले वेदरदा नाल पाले सुन मेरे सदारङ्ग अल्ला वाले।
दोस्ती कीती क्या कहूं में पे दुशमनके विपदा न डाले॥

२२

मै किस गुण उसनू समझावे दरद मेरो गल
नहीं मानदा।
अपनी तो आप जाने परवो किसीदा भला बुरा
नहीं मानदा॥

२३

मुहोब्बत लगीवे मियां कीकरों मैंड़े तेड़े नाल तुसी
जानदा नाहीं।
महम्मदसा पिया सदारङ्गीले जोरधि गाना में ठगी॥

२४

वे तेड़े वेखण दावो मेड़े साँइयाँ मैनु चाव घनेरा।
कहा करूं कित जाऊं सखीरो दरद अबतो
इश्कने घेरा॥
याद लगी तैंड़ी मिया तू भी करदा याद के नाहीं।
दरद क्या हुई याँरातें जोर दस्त गरेवाहीं॥

२५

अपने जियकी वोथा तूही जानदा मेड़ा हाल।
तुम सिवामें कासे कहूं तुही समस्त प्रतिपाल॥

२६

वेखण कारण यारनु दिल ठगा दिल वगा यारनूको
इयां डूंगो बोच थल्ला।
पुराणा इश्कदा सोई सजा पार लगा
राँझण गले लगले॥

२७

वेड़ा वदनामिवो मैनु मैंड़ा सयानु सलार दावे।
वेला चमेलो दवना मरुवा गले फुलांदा हार दानिवे॥

छड़के न जानावे मैनु मेरा मह्नर मया रस पाही ।
रैन देहा मेनु ध्यान तुसाड़ा नेहड़ा लगातो निभाहो।

२९

प्यारेदी कोई ल्यावो खबराँ जोवन जादा रखो
साड़ी अबराँ ।
रैन गुजरे मान उड़िकानि खड़ियाँ दिन गुजरे
मैनु कहराँ वे जबराँ ॥

३०

वेदरदाँदा वालो तुसाड़ा वो सवाजो माँडिवे ।
कोई किसोदा वारिवे कोई किसोदा मेरा मियाँ
असनो मानोदावे ॥

३१

चम्बेदो डालियाँ बोवां बहाराँदे नाल भलियाँ वे रब
मिले तोमैं वारियाँ ।
मुखड़ा तैंड़ा वारीवे अजब बहारदा शोरी मियाँ
कानाँ सोहै बून्दे वालियाँ ॥

३२

दिर दिर दोम दोम दोम तननन तननन यललल
यललललले ।
लगाहै इश्क प्यारेका जिगर में छूटता नाहीं
मिलावो साँईकों अपना एहो जोवन हमाराहै ॥

३३

मै जानू मेरा जीव जानें लोक दिवानें क्या जाने ।
कासे कहूं आलो कोई न जानें मेरी दिलदो दाद
खुदा जाने ॥

३४

साँतो कित ल्याईयावे मैनु साङ्ग भलो नैना
वाले मियाँ ।
जँग शियाले मैनू चोरी गइयाँ मेरा मियाँ चकवीवा
नैना वाले मियाँ ॥

३५

आमिलवे प्यारा साँवल मैंड़ड़े मे भा चला सोना
नाल ताडडड़े ।

ताँना भो देंदा वारो मैना भी देंदा मैंड़ा कष्वा
सदके कोतो जिन्द मैंड़डे ॥

३६

सानूवो कारण लोथो फकोरो गरज नहाँ कछु तेरोयाँ
निमेरियाँ ।
शाल दुशाला मैंड़े मन नहीं भावे कर्म लिखो साड़े
कामर कारियाँ ॥

३७

कोई यार मझाँ लाइयाँ वे मैनू मेड़ा प्यारा
मनमोहन साँवलावे ।
इश्क लगा तैंड़ावे कित वल छूटदा हो तुम हर
मयर कन्हाई ॥

३८

झोखोंनू सँभाल वेछाड़ मह्नो घर आमिमवे ।
थारो चोरे वालियाँ वे वाबुल साड़ा चाक छांड़ मेंहो
रावे ऐसो तो माड़ड़ो कोलवे ॥

३९

यार नालवे दिलदार नालवे मियाँ आशिकानु
तलव टौटार नालवे।
हाथों सोना पैरां सोना गल सोनेना सोना नाल सोना॥

४०

आएछो म्हारे डेरे वो मनमोहन नन्ददे गुमानो
छला यारवे ।
काँई मनुहार करा म्हारे सायवा झोना लोना मोना
करले म्हासूं प्यारवे ॥

सिन्धु भैरवी—ताल तिताला

सोनेनू आन मिलामि ताँड़ड़े कुरवान कोती ।
वस रहो ताँरो सूरत मन पर ते मेड़ो जिन्द खुश
कर लोती ॥

भैरवी बहार—ताल तिताला

लालाना फरमान इश्क दे जनु में पोछे रस ताई ।
वेवाबुल शोरो आए दिन बहारदे इश्क न कोता सार॥

२

सोनियादो वहार वेसाड़े नाल किती मैंड़े यारवे ।
बिन वेखे कल न पड़दो सुनवे मेड़े प्यारवे ॥

भाँदावे साड़े दिलनु महेरम यारदे निजारेदो गमजा।
वेखतो गोरो छुनवितो रमभ तुभ नैना दिया गमभा॥

भैरवी—धीमा तिताला

दरदीम तदोम तदोम तुम तनन तनन तनदिरना
तनदिरना तनदिरना दानि दानि दोस्त।
नाद्रद्र तंन्द्रद्र तनन तदीयनरे तदियनरे तदियनरे
नाद्रद्र तनन दिरना दानि॥

२

बोल मेड़े नाल बोलवे प्यारा बोल मेड़े नाल बोल।
मैंतो तेरी सोवो एक लग देशाँ में दो लग देशा
भावन देशाँ तोल॥
रांझण मेड़ा वारीवे मेंरा भनदा लोकादो का जोर॥

३

वेखोनो माड़ी सइयाँ होर राँझेदा को मान।
इश्क लाल महोव्वत सब जग छूटा क्या अपना क्या
विगान।
लटक चाल चले वारीवे मुड़के न वेखे मेरी जान एही
महबूबदो आन॥

४

राँझेदा मैंनु दाग लगावे सुन लोजे खेड़े वालो
नीकुड़ोए।
विन वेखा सानु कल नहीं पड़दो हो रमियाँलो
मङ्ग जुड़िए॥

५

को बहारांदे नाल चम्पदो ड़ालियाँ क्यारियाँ।
खिल रहियाँ गुलजारीयाँ हाँहारे वे वणजारा तोमें
वारियाँ॥
केवड़ा चम्पा चमेली गुलाब फूल रहो अपनो उमग
से जब प्यारा मिले तो वन्दो थारीयाँ॥

६

नाजा महरम नाजा वे कभो तो साडड़े मन मान
गलावे आजा।
तू गोरोदो कसम मतकर समभ रमभ दिलजा॥

जोथे चलो उथे लेचल मैंनु मैंभी चलाँ तेंड़े
नाल मेरा प्यारा।
महोव्वत लगी तेंड़े साथ गोरी मियाँ ज्यों भामि त्यों
पाल मेंडा प्यारा॥

तूं आपो नाहोया मियदावे भूल गई सुध मेंडी
तेनु सोनावे।
तुभ जेहा मेंनु होरन दिसदा तूतो महरम दिलदावे॥

९

मेरा महो वालोयाँ वे मियाँ।
मैहोदे कारण वे चाक सेहोडा बो मीयाँ बूटा बूटा
कर पालियाँ॥

१०

सेंदोयाँ देनो वेले तुमेड़ा साँइयाँ आन मिले तोमैं
जोवाँवे।
सुणनो होरे राँभा तखत हभारेंदा साँई चाक
मेहोदा मभो वालावे॥

११

आदम् आदम् आदम् दम्दे दम् विना नाहीं
किसी कमदे।
किभरवासा मेनुं जोदड़ोदा प्यारा ए जोगी जग
विच रमदे॥

१२

काँई गुन्हा में थाँको कियोछे मानु बताय दो
सायबा राजा।
कोटा भी देशाँ थाने बून्दो भी देशाँ थासो लग्यो छे॰
म्हाको काजा राजा॥

१३

माथोड़ा महानु साथ भी भाँना हम परदेशो
लोग विगाना।
इस गलियाँ विच आँदानो जाँदा अपना सो अपना
विगाना सो विगाना॥

१४

नाम लैलीदा क्यों लीता मजनू मीयाँ सहरा सहरा
हुए मस्त।
चीना आशीक सुन्द जाएके हर दम् मे रवद
होश मजनु अहस्त मे गोयद मुवारक बादर गोस्त॥

१५

भलीया साड़ीयाँ बनो तांड़े हतां विच खुवदा छला।
हाथो मेहदो पावाँ मेहदी किये जे तरहाँ दारनो
घनी भला॥

१६

प्यारका उठ पीवो प्याला।
शोरी को नशेमें अबहका बहका फिरे मस्त प्याला॥

१७

नामदा नामदा नामदा मेनु आसरा हभांदा वे मेनु।
तुझ विन मेड़ा औरन कोई शोरी तहां तद जबदानु॥

भैरवी—धीमा एकताला

वे सोणेदि मेनु भाँदी गलीयाँ।
राज पीयारा मेडा दरद न जानसिवे मीयाँ राँझदे
नाल रहाँदो वे कलो याँ।
वे जावोनी कोई मुड़ले आवो खबराँ राँझ विना
नहीं भलीयाँ॥

२

देखोरी मोरी गुइयाँ कजरवा देख।
पाँनादी लाली वारिवे अजब सोहावदी देख
मिस्सी देख॥

३

सीपाई माँरी अरज सुनजाइयो हो जानि वालेहो।
कबकोमें ठाड़ी ठाड़ी अरज करशाँ इतनी अरज
माड़ी मानबो॥

भैरवी—धीमा तिताला

बे नजारा महर मन जानीयाँ वेतेड़ो वलालु
कभी तुसाड़ा मांन।
तेनु शोरी एक दम हठ मत कर नजा प्यारा लगनावे
कीतानी कौल करार।

गहरी नदीया वारी वे थेलड़ा पुराणा मोला
लगावे बेड़ा पार॥

२

ताँड़े विछुड़े मोहे चैनन आवे क्यों छांड़ चला परदेश।
मुसलमान साजने दिल न जाए खेश।
नेसहा सना सुद बकशो चु असनाए खेश नेस्त॥

३

वालम याना नालवे कमलो अपी लायानी पछतावणा
लगीयानी मत वे जीवे लाख वरसहो तू मेड़ा
साईयांजो।
रात देहा महोब्बत सुख साड़ी लगा रहदा
ध्यान तेड़ावेजो॥

४

लखा तेड़ा चुभदा दिल विच गुमानोड़ा यार मीयाँ।
चंपे जेहा तेड़ा रङ्ग विरङ्गीला सोणा आँखा विन
वेखे सानु कल नहीं पड़दाँ साँवल मेनु भायानि
खेड़ा सला आँबाँदो फाँकाँ॥

५

रब्वा मिलामी सोणा यार मिले।
आठ पहर मेनुवे ध्यान तुसाड़ा मेरा मीयां मौला
करे तुसी जीन्दा रहियो एहो मांग दियां दोहाई
सोणा यार मिले॥

भैरवी—तिताला

माहोड़ा ठग बजारदा ओमेनुदा।
वंदी तेड़ो याद तेरी सोगी मांनोड़ा हो तूतो दिलवर
हजारदा॥

२

जानोजीयरा ते बाजूवे मीयाँ मांडे महरम दानी
विसे मालावे।
अखियां लड़ खटकेंदी भटकदा दिलको कल भरे
पारवे मीयाँवे॥

भैरवी—धीमा तिताला

अली वेमीयां नैनो दगा भर भागा ।
घायल कीता साडे दिलनु मीयां ईश्क लगा
गोरी यीं ठग लीता ॥

भैरवी—एकताला

किन फूकीयांवे मीयाँ तेंड़े कानो वीच एही गला
भूंठीयां माचीयां ।
मन्दीर मन्दीर वारी वी ध्यान तुमाडा वी मीयां
नाहक मैंडो जिन्द लुटीयां ॥

२

जादू कीता वो मीयां घरी पल छिन नहीं कटदी ।
तुझ विन जिन्द वे कल रहटीं इश्क लगा ठग लीता

३

मैंतो तेंड़ी बातन मानी तुमी आमिल मोहन
नन्द दे गुमानी ।
रैन दिना मैनु ध्यान तुमाड़ा वो श्याम एक घरी
पल छिन कलन परत जानी ॥

४

वे मियाँ तेनु कीतावे यार जीन्द मैंडी कुरवान ।
तुसाड़ी बन्दियाँ भलो नहीं लगदी गुण मीत
रवनु मान ॥

भैरवी—धीमा तिताला

काशिद भेज भेज मन रखना ।
तेंड़ी जुदाई मैनु भली नहीं लगदी इस दुनियाँ
बिच कोई नहीं अपना ॥

२

दिन वहारांदे भांदावे महबूबा तानु जम जम ।
गुलफल मियाँ गुलशन विच तेरे बुल बुल बोले
चहचहा बागवहारां गुलाला नाल मान दे नर गम ॥

३

गोरी बागबहार यारको शीवत कारण हमको
रङ्ग भर दीजे ।
क्योंजी पीवो प्याला सजन इस कैफीयत का नशा
प्यारे कीजे ॥

चढ़ताजी तुरङ्ग तुरंग तें मेरा मीयाँ चलीयाँ सकार
सहरा गस्तनु मजदे सुबू ।
हमा आइ न सहेरा सरे खुद निहाद वर कफसरे
मन फिदा हैरा है विसियार मेहो खुाद ॥

५

अमी तेंड़े सदके कीतो जानी मिल जावे मिलजा ।
घोल घुमाई मेड़ा साँवला आजा ॥

६

दरदीमतदीमतदीमतुमतननतननतनादीरना
तनदीरनातनदीरनादानिदानिदीस्त ।
नाद्रद्रतंद्रद्रतननतदीयनरेतदीयनरेतदीयनरे
नाद्रद्रतननदिरनादानि ॥

७

हीर राँझिदा की माणावे अनि वेखो सइयों मेड़ीयां ।
लटक चाल चले वारीबे मुड़कें न वेख मेरी जान एहो
महवूबादी आन ॥

८

चलो नेणानु भाल वेमीया जालम जटिये पंजाबदी
वे मेरा मीयाँ ।
जोतूं चाँदा इश्कन् जंग शियाले जाय जंग शोयाले
दी जटणी रखेंगे विलमाय ॥

भैरवी—झपताल

छावें माँनु भांदिया जटीयाँ भीवें कालीयां ।
घूंघर वाले तेंड़े मुख पर सोहे झमक रहा कानों
विच वालीयाँ ॥

भैरवी—तिताला

हीर राँझदा नुवे सइयां वेखोगी ।
सावत साँई अल्ला का जीवो होगी की करेगा कोई ॥

२

जिन जारे बालम सेजड़ीयां सुतड़ीनु आनके जगाई ।
हाहा करूं तोरे पइयां प ं पति करत निठुराई ॥

३

नित दिन नजारा नैनादा तेड़ा भला लगदा मैनु
टुक मुखडा वेखामी ।

अजव खुमार भरे भुख रही अखियां निमानि
दे घर आमी ॥

भैरवी—धीमा तिताला

प्यारा वो घर आमि सबेरे खाय गया गम ते.।
वे गुमानोड़ा ।
उठ शोरी मिल जारत करिए भूल करो कभो भी
फेरा गुमानीड़ा ॥

तेंड़ी याद मेंनु हरदम दिल में तुझ विन नहीं
किसी नाल लगदे ।
गुजर गई गुजरान शोरी मीयाँ होय जोगी इस
जगमें रमदे ॥

३

आओ सजन हिल मिल जुल रहिये जगमें जीवन
थोरारे बलमा ।
तुम्ही हमारे वारो हमो तुमारे जिय मोरा मन
तोरारे बलमा ॥

४

सइयां वेलो आँखो दूर न जा सदे लोग विगानेरे ।
मिन्नत करदी में खड़ोयां सोणावे साँई करे मुड़ आवोरे।

५

सुनवे जालम यार बस कोतावे जिन्द मेंड़रोण ।
नेह लगा कर वे भूल क्यों गया मेरा मोयांको हुइयां
जिन्द मेडरोणु ॥

६

मेरा मुजरा लोजोजी सिपाइड़ा अपनी गला
से दो नेंनादे ।
सलाम दस्तसे करना मौजूद रहे मेरा दिल चाहे तो
मन रङ्गलो ॥

७

तारन वालावे आसरा मैनु तेरा ।
देवी मुराद मेंड़ो वे मुश्किल करो आसान रव्वजो
पीर मेरा ॥

भाँदावे साड़े दिलनु महरम् यारदे निजारेदा गमजा।
वेखतो शोरी हुण बीतो रम गइयां नेणा दिया गमजा ॥

९

राबीनु चलत गिरूँ में तो ताँड़ी लेवां बलाई ।
जँग सियालेदी जालम जटो मेनु विलमाई ॥

१०

अपने खेंरादो दो नेंणादोमें मैंतो मनदी
रहदीयाँ मान।
घूंघर वाले बाल तोड़े मुख पर सोहै पलका तीर
भोंवे कमान ॥

११

माही यारदी वेखी वहारणु वेमें भूल गईयां रात
वहारनू।
जोमें जानती कित वनफुल खिलोना में जानती
गुलजान ॥

१२

उस परीदा नाम लेले दिल दिवाना होगया ।
जो गया मुल्के अदमको सो वहीं का हो रहा ॥
फेर उसे इस मुल्कमें दुसवार आना हो गया ।
जो लिखा किस्मत का शोरी होना था सो हो गया ॥

१३

साजन सानू मिलि मेंड़े इलाही वाँके सजने नु दिल
समझा की बेकदरादे नाल जागो रात सारी।
में भी याणी वारी नेह की जाना साँची गलाँ साँची
आँख आँखी भला ॥

१४

माड़े रतीयन लग्दा जोयरा महरवान हो मीयाँ हाँवे।
ते कहदियाँ मांड़े साहवाने वेखो मोरा रब्ब जान दावे॥

१५

हाँवे मेनु किसी दे नाल ।
गम नाहीं सायवा मेनुड़ा दे नाल ॥

१६

प्यारियाँबे नहोरेनीयाँ निरखियाँ बे मेरीयाँ ।
आप छड़ जाँदा वारी नाल मेहोदे आजज कीती
इन राँझेटी कठियानी मेरीयाँ ॥

१७

साथीडा विलंभावे राजी रहणा माड़ा ।
ढूंढ़टी फिरेदा वारी हुई दिवानो आन मिलावो
माँड़ा वालोड़ा साथीड़ा ॥

१८

रब्बावे माड़ी जीन्दडीदे नाल जहानवे ।
मदत होवी शहर कुल आलम मदतगा मरदानवे ॥

१९

साड़े साथीड़े न ल्यावी हो माड़े माहोड़ेनु ल्यावो ।
हाथ रङ्ग भर मलटी मेड़ेवालेनु ल्यावो राँझेटी
सूरत अजब करेगाँ दुलहा ते लाल बनावो ॥

२०

आमी वोख नैनानु भूले आडावो ।
राँझेटी सूरत सब जग भाँदी मेरा मियाँ लह सकल
हनि भाँदा ॥

२१

नैना चोरोदा जारोदा न लाईये वेयां मानोड़ा होवे
दरद नहीं मान परवत हादी मदा सुध विसराई ।
अति भौंवन मोड़ो तनक भनक सुनत श्रवण मुरली
सुखदाई सप्तसुरन गति मत सुध विसराई ॥

२२

तारण जग माँई साँइयाँ वे समझ मन भाइयाँ ।
यह दुनीयादा मेला ठेला कोई किसीदा नाहोयाँ ॥

२३

वे गुमानो यार दिलवर माहिड़ा यारमें तेरीया तेरीयाँ ।
ले चल मेनु तेंड़डे नालो जिन्दड़ो वारी वारी फेरियाँ ॥

२४

वेमे घोलियाँ घोली दानी गुमानो मियाँवे कोकराँ ।
मेडा वस नहीं चलदा मुझ वेनो मानोदा ॥

२५

वे महर मयाना हाँ सोणावे महर मयाणा में वारो
माड़ा रतो पल लगदा जोयरा ।
कहदोया माँड़े सायवानु वे माड़ा रब जानदे हियरा ॥

२६

या रब्बा माँड़ा दोस्त मिलामी कोकराँ जनहो
मान दावे सजन साँइनु मिलो माड़े इलाहीया
बकस सजनानु गल समझावो वेकदरादे नाले
जागो निशि सारी ।
मैंभो अयानो वारोवे नेह की जाँन मोयाँ सांचो गला
आँखि मेवारो ॥

२७

सैयो निमाही जादावे माहिदा रख वालो माड़ा
आंख लड़ाँदा सरमादा जाँदा नेहडा तुसा कित
गुण लाया ।
सकुचदीयाँ कहदियाँ उमगदी गला तेंड़ड़े कारणमें
इश्क किया नेह वे मोयाँ ॥

२८

वेमियाँ तेड़े मुखड़े दी लेवाँ बलइयाँ तूभी तखत
हजारेदा साइयाँ हिरमिया लेंदी जाइयाँ ।
तकीया लगाया परदा जोरा जोरी भांए तु पलका
तीर चलादियाँ ।
घायल मायल कर के वो अपनो नैन खुमारीयाँ देरत
नालीयाँ डोरे वाव सेलादीयाँ ॥

२९

रैदड़ियाँ तेदड़ियाँ मेनु यादड़ियाँ नुबे सोणा मोलेरे ।
यानी घलड़ियाँ छदड़ियाँ निकतड़ियाँ मजो दड़ोयाँ
दीतडीयाँ कुरवानड़ियाँ मीवे सोणारे ॥

३०

पलके दड़ियाँ लटके दडीयाँ झमके दड़ियाँ अलके
दड़ियाँ ।
भौंबा तीर चले दड़ियाँ मरटके दड़ियाँ हसे दड़ियां
लसे दड़ियां साड़े जीय बसे दड़ियां ॥

३१

भला मैने रीझीया मैनु इश्कदावे नशा आशिकनु
होया यारवे मैनु संभाल।
कैफीयतदी वगन्ना मानले वे अचपल सर सारीयां
होइँया वेकमाल ॥

३२

जेतुजांदा तेड़े नाले जोन्द जान्दीया जाने वाले यारवे।
मत जाना नैणांहि निभाना अचपल कदीया
सरमादियावे ॥

३३

जिसदा दिल वेकरार उसनु कहें सुने नाल कद
होदा करार।
भला मैतो आपो समझादियाँ सुन मेरा अचपल एक
अनार सदवीमार ॥

३४

गरीबांदी हाय बुरी होंदीं विन जानवे नादान वे
न जान मेरा प्यारा।
जिसनु लग जादी बला अचपल यही तो किम्सा
सारा ॥

३५

फ़रियाद रब्बा दरद न कीता माड़े हालदावे
सँभालना मांई।
अचपल फन्द विच फन्दे गइयां मेंड़ो अरज
तुझ तांई ॥

३६

दिल मेड़ा आँखोंसे करां टोना करां तो कोकरां
इस दिनमणि।
वारीवे बनदी नाहीं अचपल कितवल आँखों में
जो धरानो ॥

३७

लाल हुसेन अल्लह मलामटा मोजदा दिल विच
समझ के पाल।
हाल काल रह्नी न उसको चिट्ठी औकात थोरी
उसनु भो देख भाल ॥

३८

या करीम या रहीम तेड़े कारण मेडी निगाह
चाहिये तो होंवे निस्तार मेड़ावे।
तेरो वे परवाहियों से मेड़ा जी डरे तू बड़ा
गफूर रहीमवे ॥

३९

साहबकों साचा जानोजी साहबकों साचानु और
कहतो क्या मानू।
एक मागे एक ठाड़ो रहो एकन कों वो देत सभी
वे हत भगवान साहब और कैसे न पहचाँनू ॥
एक कहे एक चुप रहे और एक करोरन देत सोचत
सोचत साच करूं तो दिल में नित यह ठानू।
एक वीज में क्या क्या उपजे आँखों सेति देख डाल
फूल फल पात अचपल क्या क्या और बखानू ॥

४०

मतवाला जोवनदी सदा वेइथे रहणा साँवलड़ा बाँके
नैना वाला चाल चलत मतवाला ॥
गजचाला वंशीदी ताँन सुनावो नन्दलाला ॥

४१

दमका सब आदम से नाता दम में आता दम्में जाता।
अपना नगरमें कोई नहीं दिसदा रब सों नेह करो
दिनराता ॥

४२

सुनहुरे लोगवा ननदीया हमीसन झगराई।
निशि दिन मोकों दुवर भइले पीया विन
मन जो गवांई ॥

४३

मन मेरो लीनोरे रावरे कान्ह।
अचानक जा निकसो कहो सच कुच झझको हो
अजान ॥

४४

मैंतो फन्दी वे फन्दा तेरोयाँवे मेड़े दानियावे।
आपन आवे वारी ना लिख भेजें वे न पढ़े में तकदी
तकदी तेरोयाँवे ॥

४५

दिलवर मेंड़डी गली तुसी कर फेरा बहाल
दिलाँदा वारी।
वे किसनु सुनावा मेरा मियाँ चुप रहदे लाचारी॥

४६

सुनवे जालिम यार वसकीतो वेगोद में ड़रोनु।
नेह लगाकर वे भूल क्यों गया मेरा मीयाँ कोहुइयाँ
वेरे मेड़ीनु॥

४७

हमतो तेरे देखन के गरजो मरजी जैसी कीजिये
हमतो तेड़े वेखण वारे।
करोजो हुकम करो हौं बन्दगी हमतो गुलाम
तिहारे नजरकों देखन हारे॥
ऐसा न जान मुर्फ सुजान टान मांहो हम जिन्द करे
कुरवान नजरके देखन वारे॥

४८

वे मृगानैनी तारण साँई अल्ला।
इस जगमें वारी कोई नहीं अपना मुझवे
गरीवान्दा अल्ला॥

४९

वेखोनी यह कौन हो दावे।
महोयांदा रब वाला आंखि लगांदा मरझांदा जांदावे॥
चोरी सो गरो मानु वेख वेख जादा कमलो यार
खिगाँनावे॥

५०

भला हुआ उमर गुजर गई करदा वो गरूर जोवनदा
सइयाँ माड़ो जान सलामत नोका रङ्ग नहीं मिलदा॥

५१

यारे मन यलायनले दोमतनुँ तानुम दिरना
आतानु दोमतननदनु मकुन वेवफाई।
टुक खुदा सों डर प्यारे सोणा यारे मन॥
दिलवर चोन जुलफ कमन्दे तो वस्तए।
मवर मनज का जोर मकुन दिल शिकस्तए॥
मखने न करदे एमक सेरन कोस्तए।
मंजूर मन हमीको आशको रूहे गस्तेए॥

५२

विरहदोवे जटोयाँ दावे मीया जादूगर सुनवे
मीयां सांग।
शोरीनु की इश्क लगाकर के तब लेचला मार थांग॥

५३

प्यारेदे मन चाव घनेरे जो मिल जामी सानु
सांझ सवेरे।
साँई माँड़ा मानु आन मिलामी औसरताँ नाल मानु
सांझ सवेरे॥

५४

सोणावो सानु मिलजा प्यारा गम नही खांदा
सांई वेगुमानोड़ा।
साँई दे नाल नित अरज मेड़डी असरतां नाल
प्यारा असमाना॥

५५

हाँ वे खूब परीवे मेड़े हाथ परी नैनन सोहै तेरे
गात परी।
गले सोहे तँड़े मोतीयाँदी माला शोक दिल
देवे तू साथ परो॥

५६

तँड़ी भूदें कालीयांवे आडा नैनादी नोक सम्भाल।
विन देखे कलन पड़दो ज्यों भामो त्यों पाल॥

५७

वे खाय गया गम तेरा में तेरोसा यार झोखां वालीयाँ।
मेहोदे कारण वे छाड़ चला मोयाँ रांझा कोन सोहे
वुन्दे वालीयाँ॥

५८

वोमें बारो वोमेवारो मेवारो मेरा मीयाँ वोमेवारी
मेवारो मेवारो मेरा मीयाँ।
नैन जटो दे तरकस तार कलेजे कारी वो मीयां
रांझण हुवाहै फँकोर वो सोयालि मेरा मियाँ॥

५९

माहुड़ा वालम यानामें तेरो सोमा।
कसम नवोदो मत मानले शोरोका हुइया हुण
तेंड़े आगेमां॥

६०

भँवर मत तोड़ कलियाँ फसले नो बहार वे रस भरिये।
मदियोमो बो लाला दे चार दाग जिगर पर मलीए॥
शोक रंग हजार गुल नैनादी निरगस कभो चित
चोरिये॥

६१

जीवोजी थाँसो म्हारो मनडो लागो वेससी ताया।
पुनुदा दिल हुइयां ढूंढ़िया वेले सुख पाया॥

६२

करदा गरूर जोवन दानी के रङ्ग नहीं मिलदा
साड़े नाल सँइयो दिल चांदा।
लेलर नम नैमु मुझ से मैं कभी कैवार तुझे
कोलो में भलंगा॥

६३

वे मियां विरहदोमैं नहीं जानदी साड़े दिलादा
तुझे नहीं मौनदानी।
जो तू चला वारी वे चलन न देशाँ मेरा मोयां पलड़ा
पकड़े में खड़ीयानी॥

६४

यार अदा मेनू मुखड़ा भाँड़ा वहार दाइया पार बू
महक रही है।
गुलशने ये शोरी वहका फिरे मस्त बुलबुल
चहक रहोहै॥

६५

नैनी नैना तकती चपको तोवे मोयां छांड़ क्यों चला।
भटपई चाक चाकरी खेड़ाँदो शोरी जाजादो
तेरा भला॥

६६

वे माहीयां वे नैनी सार वे यह मुराद माँगी।
वे माहीयां आवन आस पुरी सानु हौंभो तो
ाद माँगी॥

६७

मेनु तेड़ड़े वेखनदी थांगरे।
चढ़ वेखां वारी रावांनु वरदावे सोणा रव सुनले
साडी चांगरे॥

६८

आयानी संभाल वो राझण यार की हुइयाँ तेनू यार।
होरनी मानोनुको पूछदा पोक दिलदो हुइयाँ सार॥

६९

आज बजाई कान्हा बांसरी निकसत नहीं मेरी
प्राण सांसरी।
वंशी बजाय मेरो मन हरलीनो बहो जात मेरे
नेणा आंसुरी॥
मुरलीको धुन सुन भई हौं दिवानो विकल भई
गड़ो हिये मेरे फांसरी।
रसि रङ्ग रस बस करलियो लग गई मेरे मन
प्रेम गांसरी॥

७०

जो मरजी मेड़े यारदी वो जों सोई सोई मेनु करना
मरजो मरजो।
सांचो कहना सुखो रहना शोरो मियां भलो नहीं
खुदगरजो॥

७१

दिलदा महरम कोई नहीं मिलिया कासे कहुं या
दिलदी अरजो।
सब जग देखा कोई नहीं अपना जो मिलिया मोई
अरजो गरजो॥

भैरवी—अड्डा

विरहदी नोके मै सेदोयां तेड़ो भोखां वालोयां।
कभीतो आन मिलो रब दाड़ा नहींतो गड़ तकेदियां॥

भैरवी—धीमा तिताला

भला कोई बतलावना मेनु इश्कदा फन्दा क्योंकर
छुटदावे।
कोई ततीनू छुड़वारी वेलगो लड़ते तड़िये मोयां
कधा तू दरस वेखावनावे॥

२

दूर न जा वसेदे लोग विगाने सइयां नवेलिया वे।
मिन्नत करदो वारी वे पइयां न पड़दिवों मोयां रव करे
तुसो मुड़ आवे॥

कदर न जाने दरकदर मोयां क्या जादूडा
कोतावे दिलनु ।
वेखननु मूरतताक जो मेरा इश्क लगा मन लीता
दिलनु ॥

४

चल उठ कर दीद निजार मोयाँ दीद निजारेदाँ
आंवदा जाँदा मोयां ।
बाग बहारानोवे वेखण चलिये हो मोयां मेड़ा दिलवर
आवदा बजार मोयां ॥

५

करना होय सो करले प्यारे नहींतों जनम जात दिन
रैन सवारे ।
सगरो उमर बीत जइहै छिन पल माँझ विनस
होजारे ॥
धन जोवन कुछ थिर नहीं है चेतना हो तो चेत
सवारे ।
मनरङ्ग प्रभु मत भूल जमन सङ्ग काहे को सिरपर
लेत तू भारे ॥

६

साथीडा मेरा और निभाना हम परदेशी मुल्क
विगाना ।
इस गलियां विच आँदानि जाँदा शोरो अपना सो
अपना विगाना सो विगाना ॥

७

परखले परखायले एमोयां देखना दीदार याराँदा ।
खोटा खरा पहचाँन शोरी मीयाँ सोई गनोमत
ईमान प्याराँदा ॥

८

कोजाल माँड़ीवे मोयाँ जो किसदी यारोदा ले
विसडड़े नाल न जानू नाल न जानू की करवे ।
मुख वेखाँ तेड़ा साँवरो या मेंड़ो जाने जिदड़ो दिवानी
मेंड़ा जी डरवे ॥

दरकदी आइयोरे जानी मेनुभी दरस दिखाइयोरे ।
तुझ कारण वारीवे जोग कमाया मेंड़ा क्षणदिल
दोत बुझाइयोरे ॥
तुझ विन देखे माई कल न परतहै आकर
हित सों जगाइयोरे ।
सरसाई मनभाई कर कर अचपल पीय घर
आइयोरे ॥

१०

कदो मिल जाना यार नदाना तुझ कारण दिल
अतिसुख पाना ।
जो गत लिखो सो प्राण पगी सब सुन्दर रूप निमाना ॥

११

जादूड़ा कमाल कीतावे ।
इश्क लगा मेड़ा जो तरसाँदा हाल जिगर
पर बीतावे ॥

१२

कौन गति भई मोरो आन न मिले पोय मोकों ।
उन विन कल न परे पल छिन कैसे रैन विहाय आन
मिले पीया मोकों ॥

१३

मार चला क्यों छोड़ चलारे मजनू इश्क गरीबां
क्यों मोयाँ ।
या खुदा याद सुन मेरीदा है फिरियाद शोरो मियाँ ॥

१४

खेड़ाँदा पर वेला वे भला मोयाँ वेसानु चाक चाक
जवाँ भाँदा कोइवे ।
आदानी जाँदा साड़े घरवे शेरा लगो महोब्बत पाकवे ॥

१५

ए चतुरङ्ग सुघङ्ग मन गाइये गुणियन सुरजनन
रिझाइये मनमें संकोचन न लाइये ।
धाकिट तकधुम किटतक गिदिगन धेतलां२
धइ दोम द्रद्रद्र दोम चतु० ॥
सारेगमपधनिसानिधपमगरेसासारेसारेगरेगरो
गमगमगमपमपमपधपधनिधानिधानिसा ॥

१६

चतुरङ्ग सबे मिल गावो गुणी तरना तेवट ख्याल
सरिगम श्रमो श्रँयती श्रँ श्रँ या श्रमो श्रँ श्रँ या।
धधपपपपपधधनिनिनिनिसासासासानिनिधधपप
ममगममगरेसा तकट तक ताधकट तक ताधा
गेदिन नुतान धातकट धकट यँताता दिकुकु
झेझे धाताड़ा धाधा धोधा धा ताड़ धाता दि धाधा
तड धाता गिदिगनं धा ॥

१७

केही कूड़ी गलाँ करदा साड़े नाल मियाँ वे श्रसो
तो तालब तेड़े मोयाँ।
तुझ विना होरन दिसदा विन वेखे नाहीं चैन जियाँ॥

१८

छांवे ढोला मन परचाँदोयां।
श्राँख लडांदी भोंवा मटकांदो चित चढ़ जादोयाँ ॥

भैरवी अड़ना—होरी

जिस घड़ी तेड़े फन्द विच पइयों जबसे
या लगा तेड़ा ध्यान।
जबतो तोरे दाव में जायके फसे सैयाँ हम श्राह के
ताक नाहीं कैसे करे फरीयाद ॥

भैरवी—धीमा तिताला

मैंड़ा प्यारा झम झम झम झमके बाला सोहना
मोहनानो साँवलड़ा श्रायानो।
सावली सूरत साड़े मन पर बसदो मनदो
श्रास पुजयानो ॥

भैरवी—तिताला

द्रुनाद्रुना तुम तन उदन तुम तननन उदनत तुम
तननन नित नतनतुना द्रद्रद्रत दानितन तु द्रद्रद्रत
दानो ताद्रद्रतु तारेदानि तारदानि तारे दानि तुंतन
उदन तुमनन उदतननन मतं।
सुन्दर चतुरङ्ग बनाय के राग राग रूप स्वरूप
श्रति विवट तिलाना गावो सरिगम चतुरङ्ग धा
किट तिक तिकट तकधुम किट नगदिति कड़ानु
गिधि गन धातुं तुम तनमतन ॥

सारेगमधपमगधनिनिधनिनिसागसानिनिधपमग।
सारेसारेगरेगमरेगमपधनिधनिसानिधपमगरेसा ॥

भैरवी—धीमा तिताला

दोतेना देनो जागे वेसपाईड़ा तू राजी रहना।
नैनाँ तुमाड़े वारोवे वरछोदो नोकों वे मोयां
इश्क दे नाल सानु बहाना।
तू गोरी तू सानु भलावे जो तरसाँदा नेह लगाकर
को सानु दहणा ॥

२

बालम याना नाल साड़ा दिल लगियाँवे।
कमलोतू श्रा पिलायोनि पछतावण नेह लगियाँनो
जालवे ॥

३

वोमें कोकरां श्ररजो जोसांई तेरो मरजो।
नवाज सुजात दोल साई सलामत मेरा मोयाँ
श्राशक रङ्ग तेरो गरजो ॥

४

श्रादम श्रादम श्रादम दमदा इस दुनोया विच कोई
नहीं कमदा।
नहीं भरोसा घरो पल छिनदा नाथन दिल जोगो
होकर रमदा ॥

५

चल फिर करदोद निजार दे श्राया गादा महरम
दम दमदे।
सोरखे गुजरो गुजरान शोदरो दे भाल परोसे
एक नजरदे ॥

६

मारत नैनादो भुलोयाँवे मोयां।
नैन लड़ेदे लड़लड़ जादे गम जामा ते नैनादो
वालोयां ॥

७

उठ गोरो मिल जारत चलना भले बुरे दोदभो
करना।

नेह लगा करके तरसांदा देखो तेरी चाल नदाना ॥
इस गलीयां बिच आना जाना कुछ तो समझो यार
नदाना ।

८

बाग बहाँरा दामको सुन तो सोना यार यावे ।
तेंड़े कारण चमन बनाया चल शोरी सुन प्यारी यावे ॥

भैरवी—जङ्गला

अम्बुवाकी डारी डारी कोयल बोलेरी ।
कोयल बोले शब्द सुनावे एकविकी तेरी बारी ॥
अनवट बिछुवा पायल बाजे चलने की गतिरी ॥

भैरवी—धीमा तिताला

देखो मोरी गुइया मोकों लाखन गारी दोनोरी
बरजोगे ।
मोरो दधिरस चाखो तापर हरवा लोनोरी ॥

भैरवी—जलद तिताला

आबतही रङ्ग रङ्गाय सो पीय मोर ।
सगरी रैन जागे रस पागे हावन लागो भोर ॥

भैरवी—झपताल

तानु द्रनातन दिरना तदर दानो ।
नाद्र नाद्र दीम दाम दाम दीम तननन उदत तिला
तान दिरना तदर दानो ॥

भैरवी—धीमा तिताला

मेरी अरज करो मानु साणा नाल ।
जिस दिन मोला मेरा हाकिम होवे फजल करो तोमें
भी निहाल ॥

भैरवी—झपताल

यारां सुनो तेरी भुवां कालीयाँवे ।
चंदा जैसा तेंडा मुख वेखावणवे सूरतदा जिन
करो मानवे ॥

भैरवी—धीमा तिताला

तानदिर तदेनो दोम दिरना दिरना दोम यारमल
लियललियललीयललललले ।
धितिलितीलाना दढतिलातालले तिलीलानातदेना ॥

खुद राह दररि राहाके आमो दोर कोल वलके फसान
टारहो मिलिलातिला लीता लत ललले ॥

२

रावो काजी कजाक की कर शावे ।
मन सारा वेमीयां गर्भ कोलों
मेराजी इस खेडांदीवे ॥

३

दिलवरीयां नाल वे सजणा यारां मैंतो फन्दीया
वन्दीयां तेरीयाँवे ।
और किसनू में जानदीभी नाहीं यावे तेरो
तो शरमा दीयावे ॥

४

आगुमानी यार प्रेम तेंड़े घोलघती ।
तुझ विना मेनु कल न पईंदो आधरती ॥

५

एमनु भदियाँ जटीयां भंव कालीयांवे ।
घूंघर वाला सोणा मूरख बिचा वह झमक रहो
कानां वालीयांवे ॥
मीयां मेनू छाड़कों चलानुनो नाल तकदो
चो पकतीवे ।
बटपई खड़ चाकरी कर दे शोरी जाजा दावे
ताड़ा भलीवे ॥

मिश्री भैरवी ताल तिताला

मैंतो मर चुको तेनु शोरो चक सानु क्यों
देदा जबाव ।
तूभी तो जानदे शुबा मियां मेरी उमदी प्रीति लगरही
तेनूको होय शवाव ॥

भैरवी—धीमा तिताला

आदमी बन आया ढोला आदमी बन आयावे ।
हाविल काविल किसका बेटा आदम किसदा
जायावे ॥
बलिहारीमें जिसकी जो ऊपरदा गोद खिलायावे ॥

तूक्यों रोदी यानी छोरे रॉंज नोकर चाकर तेरे ।
तन फूंकदा दुखदा गाहक शोरो चाव रहदी या
धीरे धीरे ॥

३

चाह करे वाको चाकरो कीजे ।
नाहीं करे वाको नाम न लीजिये ॥
आचपेको चाहे ताको आपह्न चाहिये ।
आपह्न न चाहे ताकों आपहुन चाहिये ॥

४

भैरवी प्यारे भोरही गाई श्यामसुन्दर ले वंशी बजाई।
सप्तस्वर ताल तीन ग्रामले मधुर मधुर धैवत
गृह लाई ॥

५

ओमेनु रेदी तेड़ी आशा तैंड़ी ओमाहोड़ा
ठग बजारदा ।
गुमानीडा तुसी शोरी दिलवर अजब सोरदा ॥

६

लिया एव सन्त तुम मुराक दीजँग्रा प्यारो निजाम
दीन औलीया महबूद यार यासाँई ।
जद वेली चढ़ी चदरवासों सदा रङ्गीले अम्बुवा
बौराई ॥

७

यारो दम अदम बिच आया जद आदम नाम धराया।
आतेहो जग बिच नाम धराया सुख दुख दो फल
पाया ॥
गठरी बांध बोझ रख शिर पर दुनियादार कहाया ।
दुनियादारी लागो प्यारी भारो बोझ उठाया ।
गठरी फेंक बोझ दे शिरतें जहाँ के तहाँ समाया ॥

८

मातें नैना वालियाँ वेमियाँ नैना लड़ादे लड़भिड़
जाँदे गमजाँ ।
शोरी तूँभी तोरतो समझ मियाँ को हुइयाँ उनानु
विरमातें ॥

वालिनी जटीवे तेंड़ो वालियाँ थो जिँद वालियाँ
वालियाँवि ।
मुखड़ा तैंड़ा बेवाग वहारोनोवे मन्दल भोनो ताँड़ी
पटोवे ताँड़ी वालो ॥

१०

समझ मियाँ वे दिलवर सोणा हाँवे इशक दिया
हाँ हाँ रमझा ।
शोरी रमझ नजारे वालां मैंभी मुशताक उठदिया
हाँ हाँ रमझा ॥

११

अणी मैंड़ा नाज करेंदा नाजुक नाज मियाँ झम् झम् ।
सुरख पेच तुर्रा जरीदा शोरी मुख वदेंदा
झमकडेंदा झम झमोदा झम् झम् ॥

१२

जानैं वाला वेसोनावे मेराभो साथ निभाहोये मैंनु
भी ले चल नाल सोणावे।
तुझ जेहा मान् कोई नहीं अपना मैंड़ा सोणा
किसनु सुनावे साड़ा हाल सोणावे ॥

१३

तूं आपी नाहीं मिलदा वे भूल मई सुध साड़ड़ो
सजना ।
अखड़ीयाँ सानु मिलादेमी नाहीं या आपी सरमाँ
दियाँ ॥

भैरवी—जङ्गला

पालना गढ़ देरे बढ़ैया ।
अगर चन्दन कों पलनों बनाऊँ झूलत कृष्ण कन्हैया ॥
मोतियन को पलनो बन्यो है सुन्दर रतन जड़ैया ।
सूरदास प्रभु पलना झूले यशुमत लेत बलैया ॥

२

मेरा राज बंशी वाला वे काहे कों प्रीत लगाई ।
प्रीत लगाय चले मधुवन कों छाड़त लाज न आई ॥
दौलत छोड़ी दुनियां छोड़ी छोड़दो पत साँई ॥

भैरवी—धीमा तिताला

पार करिवे बेड़ा पार करिवे बेड़ाभो औगुण
गारो दावे।
सांवत साँई तेड़ो आस पूजामि बाँह गहेका लाज
करिवे ॥

भैरवी—तिताला

यार खड़ावो दिलदार खड़ावो सूरतदा मतवाला
खड़ाहो।
तें मेरा प्यारा दिलदा महरम तेंड़े मिलननु
मुश्ताक खड़ावो ॥

भैरवी—जल्द तिताला

लैलो लैलो करदा फिर मजनू आपो लैलो होरहा।
आपो लैलो आपो मजन आपो लैलादो चेरियाँ
होरहा ॥

२

मेरे पासरो पिया न आएरे।
क्यारे करूँ कछू वस नहीं आवे निकसत नहीं
जिय साँसरे ॥

३

मइयां रमझाँ लाइयां वे मंनु मेरा महरम यार
सिपाई।
रैन देहा मानु ध्यान तुसाड़ा आसरा लगाहै
तुझ ताँई ॥

४

मैंतो कमलिनो हुइयां साड़ी मेंड़ा हाकिम हुइयां
माँड़ी को तकसोर।
अम्माभो मारे बारो वाबूल झड़के मियाँ वोरन
दे दासानू धोर ॥

५

मैंतो तैनु आँख बिरहदो राझनावे।
ढूंढ़दो फिरेंदो वारोवे मिलदा भो नाहीं मेरा
सोणा मर्दक कोतो जिन्द मेरोवे ॥

६

तोड़न कों कलियाँरे चलो धन हमरो वारोरे
हमारो वारो।
नेह लगा तेंड़ा घूम घुमेरा घुरपटने दो सारो।
अनवट गढ़ादे विछुवा मँगादे पाँयलको झनकारो ॥

७

फुलबगियाँ में कौंन गुण जाऊंरे।
वेला चमेलो का मैं बंगला लगाऊं चुन चुन
कलियां बनाऊंरे ॥

८

नैना वाले मेवा मैनू वस कोतानि।
औरोदा दिल वे घायल कोता इश्क लगाय
मन लोतानि ॥

९

आवारे मोरे सइयाँ डोलियाँ ले आव।
चोक पुराऊं मङ्गल गाओं पिया मिलनकों चाव ॥

१०

एसो ताल वसोणा दोदारदो।
जिन गलाँ थे वारो चुपके सोयों असो चाकर
ताँड़े प्यारदो ॥

११

जानो यार गवरू न जारे।
चुभ गइयाँ साड़े दिल बिच सूरत जोवन जातहै रख
आवरू भला न जारे ॥

१२

दिलनु कैसे समझावे जानो यार।
नेह लगा वारो वे नजर न आँदा मेरा मियाँ महरम
तुसाडड़ो न पाई मेंड़ा यार ॥

१३

छोड़ चलावे करके बदनामो।
चोरो चोरो आँदा वारो छिप छिप रहदा नाहक
नेहड़ा लगामो ॥

१४

रूसे कन्हैया कों मनावोरे ग्वालिन मगरूरो।
रूसे कन्हैया जूड़ो कदम को छइयाँ मुरलो बजाय
मन मोहोरो ॥

१५

वे मैंड़ो दिल भर देंदा कभीतो टाद।
मौला मेरा काजभी होसो पकड़ कराँ फिरीयाद॥

१६

सोणा चीरे वालो यानो वो मियाँ।
श्रौतुँ को गल करि नाल मदारङ्ग दे हालनु मैंनु
हंस हंस मुख वेखला मियाँ॥

१७

रब फकीरों दी एहो गुजरानवे।
भलो बुरो शिर ऊपर झलदे शोरी गरीबोंदा मानवे॥

१८

सोणा वेमियाँ कोइइयाँ माड़े हालदी तदवीर।
इश्कों जाल वारी वे कोकर छूटदा हाल नहीं
तदवीर तकदीर॥

१९

रांझा वेमै तैंड़े सदके कीतो वो गुमानीड़ा
मैंनू न विसारणा।
निंग भरके निभाई हैला राझण वाले हो लगदे
तीर जिगर बिच भी मारणा॥

२०

के वरजोर लगा नैं नोदा।
उठ दियाँ हुका वारीवे कंकों नैना वाले वस नहीं
चलदा दिल भर यारदा॥

२१

चीरा चँपेदा वो जालम जो शिर तेरे चीरा
बँधवाया आया।
पचरङ्ग शिर चीरा सोहे बिच रङ्गोवो दुशाला
एक रङ्ग लख पटका सोहे लाल खड़ा मतवाला।
काँनुदा बून्दावाला मोतियाँदो माला इस बनरी
मन भाया॥

२२

पिया बोलो नाहीं सोवत निदियाँ जगाई अटरिया।
सगरी रैन मोहे तलफत बीती मरहूं खाय कटरिया॥

२३

दाग दिलों बिच दे गयो जानी।
जङ्गल ढूंढ़ा वारीवे वेला भी ढूंढ़ा मेरा मियाँ ढूंढ़त
ढूंढ़त भईहों दिवानी॥

२४

तेरे जोवना ने धूम मचाई।
उमगे जोवन सावन भादों नदिया जोर बहाई॥

२५

कहा करूं मोरो आली नहीं पाए वनमाली।
कुञ्ज कुञ्ज वन विथन डोलत ढूंढ़त भइहौं विहाली॥

२६

राँझनु मनावन चलिया हीर अकेलड़ो।
मनदी मुराद पुजावींनि साँई मेड़े रब्बा जिथे
राझण तिथे होवे साडि मेलड़ी॥

२७

नैना अन्ता लगाय कहो वोर आइरे।
सालू सरस कसूंमो अँगिया शिर की गागर
कहीं तोड़ आईरे॥

२८

एमैं कैसेके मनाऊं अपने बालमको वोतो रूसोई
जाय वो रूसोई जाए।
वालि देश भोलाड शोकरङ्ग जों जों सुलझाऊं
त्योंत्यों उलझोई जाए॥

२९

होंवे दिलवर मैंडडो गली कर फेरावे।
हाल दिलोंदा वारी किसनूं सुनावां मैंड़ा मियाँ
चुप रहदे लाचार भलावे॥

३०

गागरिया चटकाई राम सइयाँ मोरीरे।
कहत लैलो मजनु को कसम नहीं खाने को बहीयाँ
पकर झकझोरी सइयाँ मोरी मैं ठाड़ी करत
निहोरीरे॥

३१

मारूजीसे कहियो मेरो जैम्री जैम्री कृष्णा।
थारे विना माने काँईन सूझै थांके मिलनरी
हो तृष्णा॥

३२

कैसेके समझाऊं अपने साँवल कों ज्यो ज्यों बोलाऊं
त्यों त्यों रूसोई जाय।
रसिक रङ्ग पिया मनके भवनवा उन विन जिय
तरसाय॥

३३

पनिया भरन कैसें जाऊं मोरि रामा सिरतें उतार
लीनो गगरिया मोरी।
बाट घाट मोहे रोकत टोकत काहूको न मानु
मैंतो होउंगी तोरी॥

३४

जानी मेरावे महबूबाँदो गल्ल मानले।
मुखड़ा तेड़ा वारी बाग वहारों शुभ रङ्गनु
तू पहचानले

३५

देगयो मोहि सेनमें गारी वसकी रसीली पीत की प्यारी।
लुक छुपके वोतो टोरोहों आवे सुनो सखियाँ
यह विनती हमारी॥
सगरे व्रज में है वोमोहन शोक रङ्ग देखा
चतुर खिलारी॥

३६

मोहनावे आमिल मेडड़े नाल।
ताँड़े कारण जिन्द तपदी रहदी इश्क तुसाड़ा पाल॥

३७

दिवानी रहदी जादूड़ा जालमजोर।
किस रसियालि ने जादूड़ा कीता राझण
हिरदी ओर॥

३८

पीया कों देहो मिलाय आनन्दी माई।
तैनु भी ध्यावे वारी जम्बुदे राजा दिन दिन जोत
सवाई॥

३९

हँस हँस मुख ताड़ा भला मैनु लगदा
महबूबाँदो गलाँ मान ले जानी मेरा।
मुखड़ा ताँड़ा वारीवे बाग बहाराँदा मियाँ पचरङ्गनु
तूं पहचानले जानी मेरा॥

४०

सोनावे मियाँ की छंड़याँ साड़े दिलांदी तदवीर।
इश्कदी फँदा वारीरे छुटदा नाहीं मेरा मियाँ हाल
नहीं तावीर॥

४१

जान वन्दिदा राँझा भलावे मैनु।
हिरनी मानीनू आमिल खेंडेनू॥

४२

तू अचरा सम्भालरी सालूवाली।
बड़ी बड़ी अखियाँ कजरा सोहै घूंघट में मुसकानी॥
चलो पनघटवारी है कोई गाम दिवानी।
आगे चली जैसे मङ्गल हाथी बीचमें मस्तानी॥

४३

अच्छो नीको कजरा देके का जियरा मार डरिहो।
बड़ो बड़ो अँखियन कजरा सोहै तीखो चितवन
मोहे मार डरिहो॥

४४

राम नजर लगी मैं चलत रहोली मगवा।
सारीरे मसक गई वहियांरे लचक गई छूट परे मोरी
अङ्गूठिया को नगवा॥

४५

प्यारी प्यारी बतियाँ करके जीयरा लोभाय लीनो।
लाख कहो पिया एकन मानो सनमुख होके बुलाय
लीनो॥

४६

मौलासे मैं मङ्गदी रहदी अमानवे।
भला जान वाले तोरे शरमदी अमानवे॥
दूर गया वारी वेख वरन लीतो मौला मिलावे आनवे॥

४७

बड़ी बड़ी अंखियन कजरा दीनों घूंघट में मुसक्यातरी।
गोरे मुखपर बिंदिया सोहै घूंघट में लजातरी॥

४८

मस्तानु कोई पूंछे वे यार जिसनु इश्क तिसनू कतण केहा।
घायल मायल फिरे दिवानो नैन साँइदे नालर
तेरे लगा इश्क छूटो मसलत विसर गइयाँ पंजे सेतें
जिनानु इश्क तिनानू कतण केहा॥

भैरवी—खेमटा

वंशी सुनतेही अङ्गवा में लग गईरे मोकों सुनायदे वंशीरे।
वंशी सुनाय मुख दिखलादे व्रन्दावन दौरी में गईरे॥

भैरवी—एकताला

तुम आए मेरे बालम रैन कहीं जागे।
सगरो रयन मोहे तलफत बीतो भोर भए गर लागे॥

२

कैसी बाजो वंशो यमुना तीर।
मुरली की धुन सुन भईहों बावरी सुध बुध गई है शरीर॥

भैरवी—जल्द तिताला

अङ्गीया मोरी मसक गई राज।
इस अङ्गिया में लाल लगोहै छुवो न लगावो हाथ ब्रजराज॥

२

सङ्ग सोवे मोरी बलायरे बलम तोरे।
ऊंची अटरिया चन्दन किवरिया देखत जिय घबरायरे॥

३

पिया मोरे गवना ले आएरे।
चार कहार मिल डोलिया ले आए आए वरात ले गएरे॥

कन्हैया मोरे यमुनामें कूद परे।
कूद पताल कालो नाग नाथ्यो फण पर नृत्य करे॥

५

कन्हैया तोरी मुरली बाजोरे।
साँवली सूरत देख सखो मन भए राजोरे॥
जहाँपना तुम युग युग जीवो रैयत राजोरे॥

६

व्याहन आया मा लाडलो बनोका बना।
मुसकना शिर सेहरा विराजे हीरा लगे मोती पना॥

७

मोमा बैदरदो यारवे मानु तो रहदा तेंड़ा प्यारवे।
तुझ विन शोरो मैनु कल नहीं पड़दो साड़ो लेंदा क्यों नहीं सारवे॥

भैरवी—तिताला

यारदा गम खा खा कंवे कोतावे कलेजा फाड़दा।
मदारङ्गदो गलां कोई नहीं जानदा चेरी दे नाल गुजारदां॥

भैरवी—मध्यलयी

जब तुम हमते एक स्वरूप।
हमारा तुमरा एकही रूप॥
जब आया काया में सांसा।
तुम भए ठाकुर हम भए दासा॥

भैरवी—जल्द तिताला

कहत प्रहलाद पिता सों मेरे तो आधार नाम।
षमड़ बगड़ पाँड़े कहा पढ़ावै हमतो पढ़व राम नाम॥
विन हरिभजन मुक्त कहो कैसे जगजीवन विश्राम।
पढ़त पढ़ावत पण्डित थाक्यो कहों नृपत सों जाय॥
ब लड़कन को पढ़वो भुलानो ताल मिरदङ्ग बजाय।
इतना बचन सुना ज्यों असुरपति बाँध्यो खम्भ सों लाय॥
खड़ग निकास ठाड़ भयो ऊपर कहाँ हरि तेरा सहाय
आंधर पिता सूझे नहीं तोकों जल थल व्यापत राम।

मोमें तोमें खड्ग खम्भ में कोकर सके संग्राम ॥
नरसिंहरूप धर्‍यो हरि जबहीं निकस्यो खम्भा फार।
हिरणाकुशको उदर विदार सूरदास को उबार ॥

२

मद मतवारो पिय जागे न जगायरे ।
पइयाँ परतहूं विनती करत हूं जागत नहीं सइयाँ
मोरे जगायरे ।
सोवत है सुख नींदन आवे मोहन गरवां लगाय
मोरा जिय तरसायरे ॥

३

मोरी प्रीत की रीत न जानीरे ।
सगरी रयन मोहे तलफत वीती सइयां निदरद
पहचानीरे ॥

४

सुध सारी मोरी सइयाँ विसराय डारीरे ।
उनसों मेरा नैन लगत है चरणको में लेहो
बलिहारीरे ॥

५

कैसेन प्रीति लगाई मेरा सब ठौर पियारा ।
प्रीत तें संसार बनोहै प्रीत छांड़ कहा जाई नहीं
वासों छुटकारा ॥
विरह अगिनमें जरतहूं निशदिन वाहीने चिनगी
लगाई जो दिन दिन हो अङ्गारा ।
साहब आप बचो नहीं प्रीतसों और कैसेंक
बचाइ रहे कोउ कैसे न्यारा ॥
आदिअन्त सब प्रीत से बांधो फन्द यह कसे छुटाई
अरे मारारे मारा ।
प्रीति लगाय मुख मूंदे कायम पीऊ जो करत
निठुराई मेरा करो सहारा ॥

६

धाका धोको जनम जात मन जाग कहा रहा
सोईरे ।
चार दिना का जीवन जगमें अमर भया नहीं कोईरे ॥
अपने अपने सब स्वारथके मात पिता सुत जोईरे ।
सोते इनको सङ्गत करके वृथा अवस्था खोईरे ॥
यह सुखहै सपने को सम्पति छिनमें जात
विछोईरे ।
तासों अबही चेत बावरे डार हिये मिल धोईरे ॥
गुरु कृपा कर तोहे बतायो राखो न कुछ गोईरे ।
छबि नायक हरिनाम भजे बिन मुक्त कहूं नहीं
होईरे ॥

कजरवा देके हम पछितानो ।
पिय बिन कौन सिङ्गार कजरा को जब हम
सोचइ ठानो ॥
एक दिन अँखियाँ मोरी खजुवारी औषधि जानके
कजरा दीना तिहूंपै सास रिसानो ।
करिए ते हरीये क्योंकर भरिए जीयहि जियमें
मानो ।
कायम पियाको अपने मैं पाऊं मेरे गुण औगुण
जानो ॥

बैठ रहूं तो रहे ठिग बैठो जो कहूं जाऊं तो
आगेही धावे।
सोय रहूं सपने में सतावे चौंक उठो हंस कंठ लगावे॥
मौन रहूं तो रहै घट भीतर बोल उठो उर माह
समावे ।
मङ्ग मुरारि रहे निशिवासर हाथ पसारूं तो हाथन
आवे ॥

९

मेरो मन लागो राधारमण सों ।
जगमें और कछु न माहावे छोड़ी प्रीति सखी और
सबनसों ॥
तन मन धन अरपन सब कीनों नेह लगायो
सुन्दरघनसों ।
घरी घरी पल छिन निशदिन रस रटना राधाकृष्ण
कहोंमें प्रणसों ॥

वह वृन्दावन वह वंशीवट वह यमुनातट कुञ्जनवनसों
वह गिरि गोवर्द्धन तरहटी मानसीगङ्गा
राधाकुण्डनसों ॥
वह नन्दगाँव वह बरसानो चरणपहाड़ी वह
महावनसों ।
वह गोकुलहै धाम हमारो वल्लभ रङ्ग रङ्गयो
मैं रङ्गनसों ॥

भैरवी—ठुमरी

परवत बाँस मँगाव मोरे बावुल नोका मेड़ा
छवावोरी।
सोना दीना रूपा दीना बावुल दिल दरियावरी ॥
हाथी दीना घोड़ा दीना दीना बहोत मन चावरी ।
डोलीया फन्दाय पिया ले चलेहैं तव सङ्ग कोई नहीं
आवरी ॥
गुड़िया खिलौना ताक में रह गए नहीं खेलन
को दावरी ।
निजामदीन औलीया बहियाँ पकर चले धरिहों
नीके पावरी ॥

भैरवी—जलद तिताला

मेरो मनडो लगो हरिचरणनसों सखी अब
मोपे रह्यो नहीं जायरी ।
निशवासर मोहे कलन परत है विन दरसन
तरसायरी ॥

२

मेरो लगन लगी प्रीतमसों सजनी यह दुख
कासो मैं जाय कहों ।
निश दिन मोकों कलन परत है विन देखे पीयाके
मैं कैसे रहों॥

३

तन मन धन मोहन पे वारों मोहेकों उन विन कछून
सोहातरे ।
घरी घरी पल पल छिन छिन निश दिन युग सम
सखी मोहे जातरे ॥
कुण्डल चमक चटक भृकुटी मटक अति मुकटलट
अटकी दृग पीत पट वंशीवट कट निकट यमुना
तट मधुर मुरली सुर सुहातरे।
श्रवण सुनत सुर नर पशु पंछी मोहे यमुनानीर
उलट बहत भए ऐसी वंशी बजातरे ।
रागरङ्ग सुधङ्ग अङ्ग सों बजत सुर सम्पूरण गत मत
सों रागसागर प्रभु आन मिलो हरि तुम विन जुग
नहीं भातरे ॥

४

तुम जागो मोरे बालम रयनीया बीती जातरे ।
भोर भए नैहर कों जाना छुटिहै मोरा साथरे ॥
करो चैनकी रतियाँ बतियां मिलेन ऐसी घातरे ।
अवसर बीते मिलन न बनीहै हो जइहै परभातरे ॥
कहत कबीर राम सुमरन करो नातो फिर पछतातरे॥

५

बंसिया काहे कों बजाई सोवत जगाई मोरी नींद
गँवाई ।
चौंक उठी घरसों चली जब उमग दोउ नैन ॥
कुंज कुंज पूंछत सखी कौन बजावत वैन ।
कोउ तो देहो बताई ॥
वंशी हो गंसी लगी बेधन कियो शरीर ।
नन्दमहर को लाड़लो हरे हमारी पीर ॥
यह दुख सह्यो न जाई ॥
एक कहै सुनरी सखी खोटी जात अहीर ॥
कहवे को मनमोहना हैगो बडो वे पीर ।
घर घर करे छल छाई ॥
मोर मुकट शिर पर धरे गल डाले वनमाल ।
त्रिभङ्गी जादू भरी देखत रूप विशाल ॥
ढूंढ़े हूं नहीं पाई ॥
कित जाऊं पाऊं श्याम को दीजिए मोहे बताय ।
दास नारायण चरण तर रहूं सदा लपटाय ॥
अबतो दरस देखाई ॥

चढ़ियावे लाडल बनरा संदल भीनो रात।
बाँकोई थारो कमर कटारो बाँकोई तेरो साथ।
शिर सोहे जरकसी चीरा सज कमानो हाथ॥
मोहन बनरा बन ठन आया कोटिक काम लजात।
श्यामा श्याम दोउ छवि ऊपर राग रङ्ग वलिजात॥

७

सखीरो आज वंशी बाजो है वनमें।
सुन धुन विरह भई तन मनमें॥
नाजाऊं कछु जादू कियो है।
मेरो मन सखारा हरि जो लियो है॥
तान बान कस बेधो हियो है।
सरवस आली मैं जो दियो है॥
मुकट लटक पीताम्बर कटितट।
भौंहैं मटक ठाडे वंशीवट नट॥
वृन्दावन कुञ्जन वनवारो।
छवि निरखत राग रङ्ग वलिहारी॥

८

छैल छबीला रङ्ग रङ्गीला श्यामसुन्दर है गातरी।
पाँच वरषके मनमोहनवा ढोट लङ्गरवा मनके भवनवा
सुन्दर चतुर सुघर नन्दनन्दन बोलत मधुरी बातरी॥
रुन झुन रुन झुन पैंजनी बाजत पग नूपुर अतिही
धुन छाजत ठुमक ठुमक पग धरत धरणी पर
नन्द यशोदा मन भातरी।
बाललीला व्रज केलि विहारन सुर नर मुनि जस भए
निहारन परब्रह्म शिशुरूप निरख छवि रागसागर
वलि जातरी॥

विरहको तानें सुनाइयो नहीं वंशी बजाइयो
नहीं गाइयो नहीं मेरे मनकों लोभाइयो॥
वंशी की धुन सुन भई हौं बावरी बोलत धुन सखी
कहै बावरी विरहकी जरीकों जराइयों॥

वृन्दावन की विथनमें चल करी वंशी सुनी
मनमोहन की सुन्दरश्याम कमलदलनैना वंशी
अधर धरी मुख वैना इन्द्रवधू सब वस करी
विसराइयो॥

१०

मोपे यह दुख सहिलो नजाय वेदरदी।
इश्कदे कारण मैंतो मरदी कर आए सैल बंगाल
मुलक पर शुक रङ्ग आशक गरजी॥

११

भोर भइल आइल मोर प्यारे कित जागल सब
रतीयाँरे।
मई कई अवध बद कतउ विलम रहे बोलल झूठी
बतीयाँरे॥
अधरण अंजन भाल महावर उर नख दोहन
छतीयाँरे।
डगमग ते पग धरत धरणि पर हममों करत हो
घतीयाँरे॥
वहीं जावो तहां रैन जगहो जिन सिखलाई
मतीयाँरे।
राग रङ्ग तुम भूल परेहो कहां सीखे यह
लतीयाँरे॥

१२

सुन्दरश्याम कमलदलनैनन सैनन बैनन मोहोरी।
छिन छिन घरी घरी पल पल निशदिन मनमोहनवा
ढोट लङ्गरवा चतुर सुघर लङ्गर वनवारी नटनागर
गुणआगर सागर जित देखो तित वोहोरी।
बंसरी बजाय रिझाय धायके गाय गाय व्रजवनिता
सबही हँस हँस कर वस कर नन्दनन्दन निरख
नरख छवि जोहोरी॥

१३

भोर भए उठ जाग मेरे प्यारे कहाँ नीदँमें सोएरे।
सबही वयस अकारथ खोई महा मोह में मोहेरे॥
जैसी करणी वैसी भरणी दर्पण ले मुख जोहेरे।

बार बार अवसर नहीं पैहे वृथा उमर क्यों खोएरे ॥
हरिसङ्गत हरिसुमरण कीजे दया दीनता सब मोहैरे।
हरि भज लीजे बिलम न कीजे हरि बिन जगमें
कोईरे ॥

१४

मैंतो रहो अटरीया निरखतरो वनवारो गिरधारी
के आवनको।
हरि बिन कछू मोहे कलन परत है घरी घरी पल पल
छिन छिन निश दिन जबतें भनक सुनी मनभावनकी ॥

१५

वनवारी गिरिधारी मोहन मनडा लिए जातरी।
एसो मन्त्र पढ़ो वंशीमें छिन पल जुगन मोहातरी
मनमोहनवा श्यामसुन्दरवा रागरङ्ग वलिजातरी ॥

भैरवी—जयतश्री

सुनहो बात मोरी सखीय सहेलरी।
पियाके देश मैंतो चलीहूं अकेलरी ॥
को जाने मिलना कब होई।
यह नैहरवा मेरा दिन दोई ॥
पियाले डोलीया दुआरवा में आए।
बाजन बहोविध सकल बजाए ॥
बाबुल विदा करो मोहे वेगी।
हारेकी चार करे सब नेगी ॥
सइयाँ का देश बहुत नगिचाना।
अब छुटा नैहर हम जाना ॥
कागत होहो मोरी ससुरारी।
ज्यो पूछे कुछ बुध विहारी ॥

२

यहरे यौवनवा मोरा दिन दशरे कहारे करु
कुछ नहीं मोरा वसरे।
चोलीया मैली चुनरीया पुरानो का ले जइहूं सखी
अब ससुरे ॥
पिया ले डोलीया गवनवा कों आए सङ्ग लिए नेगी
सरवसरे।
बुधविहारी मैं चेरो तुम्हारी औगुण हारीकों
अबके वकसरे ॥

३

झाँझरी मोरो नैया पार करो।
गुण नहीं एक औगुण बहोतेरो छोटी नइया बड़
भार भरो ॥
विना दोए कोउ पार न जैहो खेवनवारे कों
याद करो।
गावे गुदर मेरो नाव तेरे कर आपन जान
निभाव करो ॥

४

अलवेला वे छैला नन्दके गुमानी तेरी वात मेरे
मन मानी।
तुंही जीवनधन तुंही तन मन तुंही रोम रोम
रहीरे जानी।
अलबेली का जीयरा मानेना आन मिलो अलवेला
मेरा जानी तुंही जीवनधन हो प्राणी ॥

५

मनरे यहां नहीं कछू तेरा यांहो कहत मेरा मेरा।
किसकी मढ़ी और किसका मण्डप झूठा
जगत बखेड़ा ॥
कौन कौन यहां आयके वस गए वहांर न कीनो फेरा॥
धन माया सपने की सम्पति तापर गरब घनेरा।
कोउन राखे घरी एक घरमें जब आवे अंत बेरा ॥
शाहपना कहे यह वाणी ज्यों बूझे प्रभु केरा।
जगो बूझा सो पार उतर गया चढ़ सतगुरु केबेरा ॥

६

दारु लगोरे करेजवा अरेहो रसीयाको पकड़
मँगावोरे।
महुवा की दारू लगी करेजवा अम्बुवाकी फांक
चुसावोरे ॥

७

आवो सइयाँ हमी तुमी गरे लागी।
भोर कैसे होगा मिलनवा पी ॥

भैरवी—जल्द तिताला

मोरे बाबुल दीनो गवनवारे।
मैंतो चलीहूं सइयाँ के नगरवारे॥
मिललोरी मोरी सखीय सहेलरी फिरन होइ है मिलनवा।
नैहर में हम बयस गमाई सासुरे भएहै चलनवा॥
न्हाय धोयके वस्तर पहरे शीतल तिलक चन्दनवा।
चार कहार मिल डोलीया ले आए हिल मिल लगी रोवनवा॥
गुण औगुण मोमें एको नहीं कहा कहों पीय सनवा।
कहत कबीर सुनोरी दुलहिन पीय के धरले चरणवा॥

२

समझ बूझ के देखो गुइयाँ भीतर यह को बोलताहै।
बलबल जाऊं अपने गुरूको जिन यह भेद बतायाहै॥
आदममेंवो आपो आप समाया जिन ढूंढा तिन पायाहै।
कहै कबीर सुनो भाई साधो कपट को भेद खोलताहै॥

३

जब तक सीनेमें दमथा दागदिल जलता रहा।
बे चिराग यह घर हुआ मालिक जो था चलता रहा॥

४

चेत नामका अबहीं सबेरा है काई जगमें देखा तेरा॥
इधर उधर जीय काहे भटकावत कोई है जगमें देखो तेरा॥

५

हारन जी को भूल न पीको आनन्द होय काज मन केरा।
सुरत लगायके घटही में देखो दूर नहीं साँई निपटहै नेरा॥

६

कछू कहे न गए समझाय मोरे लाल जोबन हमसे बिदा मांगेरे।
काहाके हाथ लिखों में पाती काहाके हाथ सन्देशवारे
अब को बार मिलले मोरेप्यारे राखो सरम हमारीरे॥

नित नईरे नई प्रीत नई।
नई सखी नई कान्ह नई प्रीत भई॥

८

साँवरे हाथ बिकानी सँइयों मैंतो भईहौं दिवानी।
मेरे मन बसो सोहनी सूरत लोग कहैं बौरानी॥

९

बालनी अलबेली ने कीनो बिहाल अरी।
झांकेको झकाई देखेगो याके मनमें लग गई बिरहा को भाल अरी॥

१०

मैंतो राह कों भूलीहों सइयां।
इस नगरी का सगरो गलीन में कैसीहै भूल भूलैयां॥
इधर उधर जो मत भटकावे पो न मिले गलबहीयां।
बाह गहेको लाजतो कीजो छांदो परे तोरे पइयाँ॥

११

सइयां बोलो तो बोलो ननदीया क्यां बोले।
अपने नैहरको मैं कहा कहीं सजनी बाबुल मोतीयन तोले॥

१२

राम दिनवा चारी मईकों जानदे नैहरवा।
सासूजीके पूतवा ननदजूके बिरना जुदा सुत चोलीयाँ भींजे रैनपसीनवा॥

१३

बारे करेजवा को बिरहा सतावेरे।
कासे कहूं मोरा जो तरसतहै यासों वेदरदीको कोऊ जाके लावेरे॥

१४

राजदुलारा बनरा व्याहन आयारे।
यासों बना मेरा जोबन बारा बनरीके मन भायारे॥

१५

चलो मेला लगा है बगीया में ढूंढ़न जाऊंरी।
यासों पीया बगीयामें मिले बरजोरी गरवा लगाऊंरी॥

१६

अनीए सइयोंने मोरी खबर न लीनीरे ।
उस बिन मैंतो जरत मरतयाह समय याद
नहीं कीनीरे ॥

१७

बिरहा चेन देतन मइकों आलो जीय घबरावतहै।
प्रीतकी जो कोउ नाम लेतहै या समय पीया
याद आवतहै ॥

१८

बीरारे बटोइया सन्देशा लेता जाइयोरे ।
पूरव जाइयो पच्छिम जाइयो नेम धरममें रहियोरे ॥

१९

बिलखाय गयो गोरी को वदनवा राम गोरी
को कौजि जौवनवा।
जालोकी कुड़ती बनात की नारी तापर
दमकें निम्बुवा ॥

भैरवी—जयतश्री

जिन्दडीदे नाल वे करार वे मेरा मीयां।
आँदा जांदा दम किसनु आखे जोरहदा
वे करार वे मेरा मीयां ॥

२

मोरी बारो निंदिया जगाय दईरे ।
एकतो निंदिया रसकी रसीली छतीयां सइयां ने
लगाय लईरे ॥

भैरवी—आनन्द तिताला

तोरे आगे मोरी अखियां लगाई जानी ।
छोटे देवरा मोरे गोदीके खिलेया अङ्गना में
बालम फिर फिर जाय जानी ॥

भैरवी—जयतश्री

गोरी जायरी वदनवा समेटेरी ।
गोरे वदन का छविहै निराली घूंघट में मुख फेरेरी ॥

भैरवी—आनन्द तिताला

जानो तोरे रङ्गमें मैं मातीरे ।
बांह पकर पीया ले चलेहो कोउ नहीं सङ्ग साथीरे ॥

कीती वेपरवाही यावी मेरो जान भलावी नैना वाले ।
प्यासे नैना नजारे नू तरसदे शोरो मियां टुक
मुखड़ा वेखलाइयोरे ॥

३

म्हारो डेंश्री जैश्री रामाले ।
रामा लेरे कृष्णालेवे वैकुण्ठे सुख धामादे ॥

४

जैश्री रामा जय श्रीकृष्णा सुन्दर मूरत श्यामारे ।
वृन्दावनका कुञ्ज गलीनमें मिल गए घनश्यामारे ।
रामाभी तारे कृष्णाभी तारे पाया अचल विश्रामारे ॥

५

गोपीनाथ प्यारे रजा तोरेरे ।
दरस दिखावो तपत बुझावो विनती सुनो
प्रभु मोरेरे ॥

६

श्रीश्यामा प्यारी दे डारोनि बंशी हमारीरे ।
इस बंशीमें मेरा प्राण बसतहै सो बंशी गई चोरीरे ॥

७

श्यामा श्यामा करदा फिरे कृष्णा आपहि श्यामा
होरहा प्यारा ।
आपही श्यामा आपही कृष्णा आपही रिझावन
हारा न्यारा ॥

८

मोरा बैरन ननदीया जगाय गईरे ।
नींदका माती सोय रही झिझक उठी इठलाय गईरे

९

अरज करो साई सानें नाल साड़ो ।
निशि दिन तनू में खड़ो उड़ो
का कर्म करोतो मेहांवी निहाल साड़ो ॥

१०

सइयांने मोकों गारी दीनी गोकुलमें रस रहिहौं ।
राम दुहाई गङ्गाकी किरीया सइयांके पइयां
परी रहिहौं ॥

दुखमें हरिकों सब भजे, सुखमें भजे न कोय।
सुखमें हरिकों भजे तो दुख काहेकों होय॥

११

पवन झर लागीरो गुइयाँ।
उमगत बदरा बरसत मेहा भींजे मेरो सारीरे दैया॥
खोलो पीया चन्दन किवड़ीयां बरोटबामें
ठाड़ीरे गुइयां।
चमकत बिजुरी बरसत मेहा अरे जान भींजेगो
मोरी सारीरे गुइयां॥

भैरवी—जयतश्री

गोरीया मिङ्गरवा करके सइयां कों विलमायोरे।
आज जान कों ढूंढन निकसी मोतनीया गरवा
लगायोरे॥

२

भोर भये तुम आए मनमोहन कहा बनावत बातरे।
बंदनमाल विराजत मुख पर सबहो हो चिन्ह
लखातरे॥
विनगुण माल मरगजे वागे सोहत चन्द दुरातरे।
धोंधो के प्रभु वहांहा जावो जहां जगे सारो रातरे॥

३

बेणो गून्ध कहा कोउ जाने मेरामो तेरो मों राधे।
बिच बिच सेत पीतरातं सोहत फूल को करि सके
तिहारोसो राधे॥
बैठे रसिक सवांरन बारन कोमल कर ककईसों
राधे।
हरिदासके स्वामी श्यामा नख सिखलों गुंथनहीं
सोराधे॥

४

मोर मुकटको लटककी चटक मन देख निपट
लोभाय गयो।
नन्दकिशोर और कँजनकी नैनन सैन बुलाय गयो॥

५

मेरा राझा मियां न जामी परदेश।
मेरा मारू ढोला न जामी परदेश॥

राँझे दे कारण वे कमलिनी हुंईयाँ ढूंढ़ फिरी
चहुँदेश।
बाबुल भड़के वारी वीरन भांदे छूटे लम्बड़े
साड़े केश॥

६

मेरा मारू ढोला कहीं गया परदेश।
जङ्गल ढूंढ़ा वारोवे वेला भा ढूंढ़ा मेरा मियां ढूंढ़
फिरी चहुँदेश॥

भैरवी—जल्द तिताला

अरो मेरा प्यारा मिले तो मैं पंज तनकी बलजाऊं।
पँजतन पाकदुवाज दे नाँग्राकों टोना चढ़ाऊँ॥

२

जान जान प्यारा क्योंकर आवे चैन।
रेंदे मीयां वेकल परे दिन रैन॥

३

नजर नहीं आंदा प्यारा मेराभी दिल रहदां वेकराररे।
बाबुल आधीन वारो वे याद बिच रहदे नित
रहदों तेरा ध्यानरे॥

४

एसो ताल व सोना टोटारदो।
जेन गलाँ थे वारो वे चुपकर आंदेवो मियाँ असो
चाकर तेंडो प्यारदो॥

५

वेसोणा मेंतो तकदो रहदो राइयां।
दूर गया वारो वे खबर नलोतो वे मोयां मोला मिलावे
मेंडा साँइयां॥

६

आयोजी आज म्हारे डेरेवे।
तांडे कारण मेंड़ो जोडड़ो तपेदो वस पइयाँ हुण
तेरेवे॥

७

तेरे कारण वारो बाग लगाया रे मीयाँ वेखो जाँनो
यार वे बाग बहारां।
बिच महबूबांदा बङ्गला वेखों जानो यारवे इश्क
कोताहै जहारां॥

रामा जोगीरा बना बन ठन मेरा ।
शीश गङ्गाधरे भभूत जटाधरे मौजूद पीया मेरा ॥

९

कोई आन मिलावोनी बंशी वाले श्याम पियारेनू ।
मन्द मुसक्यावन बाँकी चितवन सोहे सइयों
दरस दिलावोनी मेनू ॥

१०

माड़ी की तकसीर सोणा मेड़ा माहीड़ा।
दिलदी दरद वारी वे कोई नहीं पूछदा असीक्यों
भूलामि साईंड़ा ॥

११

मेंड़ो जान सुजान सोजान बैन बजावरे ।
मैतो थारी दासी तू मेंड़ा साहवा आज रहो
म्हारे डेरे काजरे ॥

१२

मेंड़ो सइयां उसवे राँझन मेंड़े घर आयोनी ।
रांझणदी मे लेवों बलाइयां वे मनदो मुरादें
भर पायोनी ॥

१३

असो तेंड़े मिलनेदी रहदीं मुश्ताक भला मेँड़ा
सांवला यार ।
रैन देहा मेनु ध्यान तुमाड़ा आन मिलो साड़े यार ॥

१४

बांलीयां किन झमकाइयां मेरी यावे ।
कांनो बिच करनफूल सोहै मेरा प्यारी चूड़ी
भरोवे कलाइयाँ ॥

१५

सजन बोले नाहो मेंड़ो फरोयांदवे ।
सबसे छोड़ी लगी लड़ तेंड़े ज्यों भावे त्यों पालवे ॥

१६

साँई तेंड़ा भला करे बाँके नैना वालियाँ ।
नैनादी वरछी वारीवे भौंह कमान तिरछी
कर मुझे मारीयां ॥

१७

राँझा मेंनु प्यार करेदा मैं राँझादे लायक नाहियाँ ।
राँझा मेरा वारी मैं राझेदी रांझा मेंड़ा प्यारियां ॥

१८

मेरा मियाँ जिन्दड़ीदे नाल वेकरार वे ।
जीद तो तेँड़े वस पई नाहक इश्क लगाकर
हुई बीमारवे ॥

१९

मैंतो भूलियां भी नाहीयां मेंड़ा राँझनानोवे ।
दूर गया वारो वे खवर न लीतो मौला मिलावे मैँड़ा
साँइयानी ॥

२०

बलखाय गयो गोरीका बदनवा राम गोरी
का छोजे जोवनवा ।
जाल को कुड़ती बनातकी नारी तापर तोरे निम्बुवा ॥

२१

सोणा यार वेदरदी आमिलवे ।
जो तू तखत हजारेदा सोई हो रसीयां लेदीका
मिलवे ॥

२२

जाने वाले यार आमिल वो मेंड़ो जान ।
जो तूजादे ताँड़े नाल जिन्द जादियां राझण
मेंड़ा प्राण ॥

२३

बलमा तैने कैसी जगाई सारो रात ।
क्यारी करूँ कित जाऊँ सखीरो पलकन
लागी परभात ॥

२४

साँई मेंड़ा राझा केतोक वसे दूर ।
आपन आवेना लिख भेजे आमिल मेंड़ड़े हजूर ॥

२५

कोयल बोले सब रङ्ग बगीया मेरे ।
इस बगीया में लाल लगेहैं देखनकों जोय लगीयारे ॥

२६

कोयल बोले अम्बुवा की डारी डारी ।
तेरे कारण वे बाग लगाया सींचत माली
क्यारी क्यारी ॥

२७

अम्बुवा पर झूमर डारोरी ।
डारी डारी कोयल कुहुके कुहुक लागी वाकी प्यारोरी ॥

२८

राँझनसों में लागी सजनो छोड़ा सकल जहानवे ।
बाबुल वैन भई सब छोड़े जोडा राझन साथ
पहचानवे ॥

२९

तदरदानो दोम तनन तन दिरना नादरतूं दरदिर
दिरदिरदिरतदारतददानो ।
नादरद्रद्रतूं द्रद्रद्रतेतन्नाँ धुमकिटतकधा ॥

३०

रात सइयाँ से न बोली पछितानोरे ।
सुनियोरी मेरी सखी सहेली सइयाँ मोरे
निपट अनारोरे ॥

३१

मोपे यह दुख सहो नहीं जायरे वेदरदो ।
इश्कदे कारण में तो मरदोवे ।
छड़िया शहर बङ्गाल मुल्क पकड़ गुजरात
एरी एरी देया शोक रङ्ग आशक गर जोवे ॥

३२

साँवरेनुमें मिलने चलीयां तोत्थे नैना लगेंवे ।
सखी सहेली हिल मिल चलियाँ हाथ चम्पेदी
कलीयांवे ॥

३३

रसिया वेदरदी में पनिया न जइहूँरे ।
घर मेरा दूर गगर शिर भारी यमुना को रेतो
में खड़ोरे लजैहूँरे ॥

३४

सइयां रात तेरे गरे लागमें बड़ो चैनसों सोईरे ।
उठो हाथ मल मल पछितानो नींद चैन सब खोईरे ॥

३५

युग युग जीवे मेरा सावलानो ।
तेरो सूरतदी में बार बार गई तुझ विन मेरा
रावलानो ॥

३६

करवटोयाँ सइयाँ नैना लगाय जालम जोररे ।
सगरो रयन मोहे तलफत बोती इतने में
होगई भोररे ॥

३७

सइयाँ के आवनको भनक सुनी हमरही डगरीया
ताकतरी ।
घरी घरी पल पल छिन कलन परत है निशदिन
मगमें झांकतरी ॥

३८

सखी कहीं अगवा नचावत हथनी ।
यामत जानो बालरूप ब्रजसागर सिन्धु जिन
कियो मथनी ॥
खेलत गेंन्द गिरो यमुना में पैठ पताल काली
नाग नथनी ।
गए शिशुपाल हारि ग्रह अपने लई चढ़ाय रुक्मिणी
मम रथनो ॥
अज महेश जाको ढूंढ़त थाक्यो भूल मत जावा
कियो एक कथनी ।
गावे गूदर मत बालक जानो कंस मारे केश
गहे हथनी ॥

३९

रयनीया भईली भोररे तुम आयोरे कन्हैया घरवा ।
हमसों अवध वद अनत विलम रहे कवन तिया
मनहरवा ॥

४०

वाके दरस को जिय ललचावे ।
मनमें रहे और नजर न आवे ॥
हाफिज अधीन वासों कैसे बन आवे ।

बात सुनावे और गात छिपावे ॥

४१

हरिसों ध्यान भुलायारे बाबा ।
हरिमें हरिको सुमरण करले जिन यह भेद बताया ॥
पाँच चोर तेरे सङ्ग लगाहै चोर चोर धन खाया ।
जो जागा सो माणिक पाया मूरख सोय गमाया ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरि सुमरण चित लाया ॥

४२

काहे दियो दुख तैं मोरा जीयरा ।
घरी पल छिन मोहे कलन परत है जान वारूँ तोपे तन मन जीयरा ॥

४३

सइयां उमगे जीवन नहीं आएरे ।
मैं रात जान पीया सपने में देखे भोर होत नहीं पाएरे ॥

४४

बिंदीया मोरी कन्हैया लीनी छीन ।
यमुनाके नीरे तीरे नन्दकोरो लाला ठाड़ो बजावे बीण ॥

४५

इडुंगीया मोरी कन्हैया लीनी छीन ।
ग्वाल बाल सब सखा सहेली बनमें बजावत बीण ॥

४६

उन विन सजनी कैसे कटे दिन रतीयाँ ।
विरह वियोग मोसे सहो न जावे पीयाको सुनाओ मोको बतीयां ॥

भैरवी—खेमटा

सोते में नींद उचट गई रतीयां मैना जाने पी किधर गयोरे ।
आपन आवे ना लिख भेजे पतीयां में कैसेक पठहूँ सन्देशवारे ॥

करके नादान तेरो दोस्ती इन्तजारी में मेरो तो जान गईरे ।
झांकत निरखत सब निश बीती कवन नवल तीया बिलमाय लईरे ॥

३

मोरे सइयाँ ने चकवा सों प्रीत करी अपनेसे मुझको बिगानो करी ।
जोमै जानती शादी न करती एसी दोस्ती सोंमैं जियसों जरी ॥

४

बनरे कों कहियो बुलाले मुझे क्या दिल से मुझको भूल परे ।
उमगो जीवन अब रहत है नहीं मदन सतावे तेरे पाय जो परे ॥

भैरवी—ठुमरी

उन विन सजनी कैसे कटे दिन रतीयांरे ।
विरहा वियोग मोसे सहो नहीं जावे पीयाको सुनावो मोकों बतायांरे ॥

भैरवी—खेमटा

विरहाको मातो सताइयो नहो जराइयो नहो ।
सास मोरी गोदे ननद देती ताने वालमका जीयरा जराइयो नहो ॥

२

चरखला ते मोरी नींद गवाई ।
सोने रूपेदा चरखा बनाती इश्क दे तार लगाई ॥
सगरी उमर मेरी चरखेनी कतियां साहब मान बढ़ाई ।
शाह हुसेन फकीर रवाणा विन मसलत उठजाई ॥

भैरवी—जलद तिताला।

बीरारे बटोइया सन्देश लेता जाइयोरे ।
पूरब जाइयो पच्छिम जाइयो नेक नजर सों आइयोरे ॥

दाव लगी करेजवा जानीवा कौं पकार मगावोरे ।
महुवा कोदारू कारी लगत है अम्बुवाकी फांक
चखावोरे ॥

३

मैना जानू सइयां कैसे नीका लागारी ।
रसिया सइयां मेरे मनही मैं बसदा सारी
रतियां छतियां गरवा मेरे लागारी ॥

४

मेरी कैसे कटे दिन रतियां सइयां बिन मोकों
कलन परत ।
वेग लेजावो कोऊ मेरी पतियां चञ्चल तोरे विन
कल नहीं परत ॥

५

कहा करूँ कित जाऊँ मारा दंयारो वारे करेजवा
निकसोई जावे ।
हित करके में सुख नहो पायो कौन घरोते प्रोतमें
कीनो चञ्चल मोरा दुखका दिवैया मोपे तो
कछू बन नहीं आवे ॥

सिन्धु भैरवी—ताल छपका

मान करे नामाने मन मोरा वस कोनो बंसी वालेने ।
एसी बजाई बंसी वादिन वाने मन हर लीनो कारो
कामर वालेने ॥

भैरवी पहाड़ी—दादरा ताल तिताला

विसरत नाहीं यह बांको ओढ़न पटसाज मटकन
कटि लटकन लट ।
झूमन झूलन झमक भूषण मुक्तन श्रवणन नैनन
कोलाज खटकन चट हट कनहट ।
हेरनि मुख फेरनि टेरनि जन राम सखोन के सङ्गके
काज झटकन पट सटकन झट ॥

भैरवी—खेमटा

अलके बिथुरी उतलानी लली ।
देखो चली यह जात गली ॥
वसनके सम लग जो सुधारत हरि कञ्चुकी दली मली ।
अरुणनयन जन राम निरख वह अरसानी छवि
लगी भली ॥

भैरवी—सिन्धु काफी

उन विन कल नहीं एक घरी कहो कैसे बीते
दिनरात । सखो अब० ।
वेग मिलनकी रीत सुधारो गिन गिन रैन बिहात ॥ अब०
सपनेमें कहूँ देख परत मन भावन की यह गात ।
कब ह्वै है फिरि फिरि बात भांत । सब उ० ।
सुन्दर छवि चौंक परत जनराम झझक फेर बचन न
कहो जात ॥ अरी तब उ० ॥

२

नवल ललो एक जातरी लचकत यह मगमें ।
हेरनि हंसन वसन तें छिन छिन बन ठन छवि
दरसातरी ॥
उझकन वह इठलात निरख जन राम कियोसो
घात मन फसनों डग मग में ॥

राग लुम—ताल खेमटा

गोरे गोरे अमल कपोलन पर दूनो दुत अरुण
रेख सरसत ।
लटपटात मुख वैन सग वगे नैनन में नई छवि
वरसत ॥
कछु एक अधरन परत ललन परत कछु कछु
नई दरसत ।
यह निरखत रूप जन राम ललोकों अंचर
खोल पवन परसत ॥

मूलतानी—खेमटा

दिन दिन नैनन और मनकी वान नई दरसत ।
दोष उन्हे नाहीं विछुरनमें निश दिन नहीं टरत
मूरत तिहुँ असुअन जल वरषत ॥
मन नित उत जन राम रहत जापै अति अकुलात
सो मिलवे को तरसत ॥

विहारी—खेमटा

चञ्चल मन अटको यह चितवन द्रग कोरनमें ।
बन्ध कञ्चुको कसन फिर देखन मन उरझाय लियो
वह मसकन अङ्ग मोरनमें ॥
झझकन मुख फेरन मटकन हेरन लख जाय फसो
बरबस इन चित चोरनमें ।
श्रवणन लोल कपोलन पर डोलन निरखत जन राम
अधरन की औरनमें ॥

खम्भाइची—खेमटा दादरा

गोरी तेरे गोरे गोरे मुख पर सोंधे सुगन्ध सनो
लट लटकत ।
नई सुघर समेट झट पट अट पटो यह बात सखी
तोह नाहीं डर यारो देखत लालन मन अटकत ॥
जबतें देख लियो जन राम वो छवि निशदिन
छिन छिन गिन गिन कर तोरी गलीन में नित
नित भटकत ॥

देश—खेमटा

गोरी तेरो वान ठगोरी परो फिर फिर मुसिक्यात ।
बाट बटोही चलन नपावत अटक.रहों नहीं जात ॥
मान कहो जन राम अरी अबहै यह घात ।
(इति रामसहाय क्रत नवरत्नगीत) ॥

भैरवी—खेमटा

घड़ो हंसके बोले घड़ो होवे खफा एसे वेदरदोको
दोस्ती क्या ।
मेरो कहो तु मानत नाहों तेरे रूसे मेरा
होवेगा क्या ॥

२

इंतजारो में हाय मेरो जान गईरे करके नदान
तेरो दोस्ती में ।
आपतो सइयाँ सौतन सङ्ग सोवे मेरो गिनत तरैयाँ
विहान भईरे ॥

मोरे सइयांने चकवे किसी प्रोत किया अपने से
मुझको विगाना किया ।
जोमें जानती प्रोत न करती नाहक दिल जग्रो
मैंने दिया ॥

४

दरबजवा टटिया लागिला सइयाँ हमारे विदेश
गइला ।
बांको डुमनिया कोँ कोज समझावे नैना से नैना
मिलाविला ॥

५

मेरा दिल जग्रो थामा घबराना हुआ मैंने जाना
जनीया जादू किया ।
जादू कियारे टोना कियारे चितवनमें मन जो हरके
लिया ॥

६

बंशी वालेनें मेरो मन हरलीनोंरे ले चलो
ब्रजके बङ्गलेमें ।
गोकुल ढूंढ़ वृन्दावन ढूंढ़ो ढूंढ़ फिरोहौं जङ्गल में ॥

भैरवी—एकताला

भला वो बंशो वाला मुखड़ा नेंड़ा ओर ।
चन्द सूरज सों सदके कीत वारे काम करोर ॥
मन व्याकुल तन शिथल चलत नाहीं नैन तकत
वाही ओर ।
बुध विहारो मैं वलिहारो जलदो कोजे गोर ॥

२

यह कहियो जाय समधन से करे जोवनको तैयारी ।
हम सब मिलकरके आवेंगे करें तेरो खातरदारी ॥

भैरवी—जल्द तिताला

चमकता माथे पै बैना ।
बताती है हमें सैना बने है क्या तेरे नैना ॥

३

भिरे हैं मस्त मतवारो ।
चलेहैं चाल ठुमकसे बजे:तेरे विछुवे झाझन पड़े हैं,
चौंक सब साजनके सुन बिछुवन को झनकारो ॥

चमन में इश्क सामुसान होगा बागबां रसीया,
कैमें समधन किस्ता चु'गा हमेशाँ चाहसे क्यारो ॥

४

बंशीया काहेकों बजाईहै कान्ह,
बंशिया बजाय मन मोह लियो मेरो ।
बंशीया बजाय बजाय मधुर सुर वस कीनों
मेरो प्राण ॥
तेरी बंशिया असत्रम कीनों विसर गयो गुरु ज्ञान॥
घर अङ्गनान सोहाई है कान्ह ॥१॥
तेरी बंशीया बाँसको हम व्रज युवती जीव ।
बंशिया में कछु जादू पढ़त हो साची कहो मेरे पीव ॥
अधर रहो रहत लगाई है सदा बंशी कान्ह ॥२॥
यह बंशिया बैरन भई बेधत सकल शरीर ।
भए बेदरदी क्रष्ण साँवरा आखिर जात अहीर ॥
टेरन लेत बुलाई है मोहे कान्ह ॥३॥
याव्रजको बसबो अब छाड़े करें अवर पुरवास ।
बाँक वरस कहै राधा गोरी करा यहाँ तुम रास ॥
यह ब्रज छैला छाई रहो है कान्ह ॥४॥

५

नैना काहेकों लगाया नैना लगाय परदेश चले ।
नैना लगाय चले दूर देशाँ सुनाजू श्याम सुजान ।
तुम विन देखे कलन परत है तलफतहै नित प्राण ॥
जोयरा काहे कों लगाया नैना ॥१॥
हँस निज अङ्ग कस गतले बाँको किया चलाकी पीव ।
अनो दार यह तनय पाय सिर फेंक वेध लियो जीव॥
सैना काहे कों चलाया नैना ॥२॥
तब नहीं पीर भई कुछ हमको अब बड़ भयो कलेश ।
तुमि हारकों जान नैना कों छैला कौन दियो उपदेश ॥
विरहा हमको सताया० ॥३॥
बाँकवरस कहै राधा व्याकुल करत क्रष्ण सों बात ।
क्षणित भई छिनमें अति गोरी श्याम वरण भयो गात ॥
एसी मुरली काहे को बजाई० ॥४॥

पतिया लिखन पठाईहै सइयाँ करी निठुराई सुरत
विसराई मोरी ।
विरह व्याकुल कीनो राधा कों रटत रहत नित पीव ।
पीय निरदइया खबर न लीनों तलफतहै मेरा जीव॥
किन सौतन विलमाई मोरे सइयाँ करी० ॥१॥
मै पतीयाँ लिखिहूं सखी निरखत करे न मोरी बार ।
ले मसि भाजन लेखनी कर सुमिर विरह अनुसार ॥
विरहा मति बौराई मोरी० ॥२॥
पतीयां लपेट लई विन अङ्क को दियो ऊधवके हाथ ।
और सन्देशा सब लिखोहै यह न लिख्यो ज्यो साथ ॥
यह दुख कहियो जाई० ॥३॥
गयो उलङ्ग दीनो हरि हाथ न यह दुख कहो
कर जोरी ।
तब तकों जानीन निज तिय हिय गति जान्यां लखो
पतीयाँ कोरी ॥
उठ चले क्रष्ण कन्हाईहै सइयाँ क० ॥४॥
आए लाल ठाड़े भए राधा निज रहदार ।
राधा तुम मम प्राण पियारी तुमहो प्राण आधार ॥
भुज भरि लियो है लगाई है क० ॥५॥
वाँक वरस कहै राधा श्याम दोउ करें एक सङ्ग रास ।
जो यह ध्यान करे लहै वृन्दावन बास ।
मुरली को धुनि व्रजछाईहै गुइयाँ क० ॥

७

वंशी में जादू डारे मेरा मोहना जन्त्र मन्त्र कर
मन वस कीनों ।
मधुर तान सुनाय बंशी में मोह लियो मेरा प्राण ।
आन ध्यान मनमें नहीं सजनी रटत रहा नित कान्ह ॥
कौन तन्त्र पढ़ दीनो मेरे मोहना ॥१॥
मन मतङ्ग मानि नहीं मदनमस्त गम्भीर ।
दोहरो ते हरि चाहरो परो प्रेम जञ्जीर ॥
अङ्कुश देदे हारी मेरे मोहना ॥२॥
शक ताल पटतर भयो हँसा कहुं नजाय ।

बांधे पिछली प्रीतके कह्लर चुंग चुंग खाय ॥
इन मोतियन पर वारो मेरे मोहना ॥
मारीए मर जाइये छूट परे जञ्जाल।
एसा मरना को भला दिन में सोसो बार ॥
मरनेकी गत न्यारी मेरे मोहना ॥३ ॥
भँवरा बैठे डाल पर कली कली रसले।
काँटा लागा प्रेमका बार फेर जीयदे ॥
लग गई प्रेम कटारी मेरे मोहना ॥
प्रेम कटारी मारके रह्यो कबीरा सोय।
मरने कोगत औरहै घायलकी गत और ॥
घायल कों पल भारी मेरे मोहना ॥

८

जादू काहेकों कियारे साँवरे मुरली वाले यार।
जन्त्र मन्त्र जादू टोना कर कर वेधा तन मन हिया।
साँवरो सूरत माधुरी मूरत सरवस में अब दिया ॥
वेग दरसदे पियारे साँवरे ॥
दया करो गुण मान दइके अब कोई बूझे पीर।
दई बनाई सो मोहनी मूरत धरो जात नहीं धीर ॥
घाव लगी हृदय कारी सांवरे० ॥
घाव लगी कारे हिरदे में कौन सुने दुख मोर।
कह्योतो कह्यो बनत नहीं मोसे चुप रहो बालम और ॥
अब मान ले दईके सँवारे० ॥
एक नजर दिखलावो मूरत हूं मैतो वलिहारो।
नित सङ्ग रहो सजनी सुन्दर रूप निहारो ॥
मोकों विरह सतावे प्यारे सांवरे ॥

९

काहे कों प्रीत दुराईरे ऊधो प्रीत दुराय परदेश
गवन कीनों।
अचल राज कुब्जा को दीनों हमकों व्रज को बास।
हम को जोग करन कों कुंजन कुब्जा कों कैलाश ॥
कौन से मंत्र पढ़ाईरे ॥
यश अपयश दोऊ होतहै ऊधो कबहुंक
अवसर पाय।
सोने छुय माटी भई हाथ कछ नहीं आय ॥
विधि से नाह बसाईरे ॥
कहे करे सो नीतहै सतवन्नान की बात।
अचल मेरू ध्रुव नाटरे टरे न पुरुषकी साख ॥
सोई जग रहत बड़ाईरे ॥
एक वेर दया करहु गोकुल पर वँशी देहो बजाय।
आस सुआस लगी गोपाल को इनकों देहो जिवाय ॥
तब व्रज बजत वधाईरे ॥
सोवत जागत ज्ञान ध्यानमें अब करहु हरि जोग।
वे गुदर मेरी दीनता व्याकुल व्रज के लोग ॥
दरसन देहु दिखाईरे ऊधो प्रीत लगाय० ॥

१०

चेटक काहे कों कियारे साँवला जुलफाँ वाला यार।
मानो लटकी नागनीरे वास कीयो है शीश।
ताछवि मेरे उर विच लहरे क्यों जीओ जगदीश ॥
अब मोरे जीयकों जियाबहुरे साँवला जुलफा० ।
जन्त्र मन्त्र एको नहीं लागे कर हारी सब जोग।
व्रह्मा इश्क छूटे नहींरे छूटे न करमके भोग ॥
मोरे मनकों चाहोरे सा० ।
जब सुध आवे तिरछी चितवन लहर देत तन गोत।
लोग कहे व्रज कहा भयोरी अजब तमासा होत ॥
अब गुणीवेद बोलावो सां० ॥
एक सुभावको औषधि नाहीं जानत है सब कोय।
छूटे न कबहूँ जनम मरीरे दाग विरह तन धोय ॥
कोटिन करो उपायरेसाँ० ॥
गावे गूदर छवि मोहनी लागी कारी घाव।
एक सखी सबसे कहे चुप कर भेद बताव ॥
मोहन आन मिलाउरेसा० ॥

१२

जगमें बाँटत यारी अरे मन मानत नाहीं।
देखो जग व्यवहार यह इन्द्रजाल विस्तार।
अन्त न आवे काम कछू होत होयेमें साल ॥
भजले अवध विहानदीरे।

भजन हेत यह सुभग जनम पायो नर अवतार ।
विषय वासना परहरो भूलो सब जञ्जार ॥
सा सब्र सुरत विसारोरे ॥
हरि पदरत विनु जगत दुखो
सुख हरि भजन सों होय ।
जीवन नर जगधन सोई प्रेम लगा चित सोय ॥
दिन दिन आनन्द कारोरे म० ।
बहोत गई थोरी रही अजहुं सुरत सभार ।
सर्व्व जात हरि सुमरण विनु कलमें नहीं उबार ॥
फिर फिर कहत पुकारोरे म० ॥

भैरवी—दूसरी

अरे मन कहाँरे भुलानो राम सनेही विसरे ।
जो विसरावन सो हितकारो दृढ़ उपदेश करे ॥
छिन छिन खबर लेत सन्तनका कर शरचाप धरे ।
नित उठ सङ्ग किया विषयन को तीनो ताप जरे ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह वस माया हो करत मरे ।
सुन्दरवदन कमलदललोचन देखत पतित तरे ॥
आठ मास गरभमें पाल्यो ताको सुध न करे ।
रामदीन के बन्धन काटे करुणासील भरे ॥

भैरवी—अद्ध तिताला

जादू टोना काहेको कीयारे रावरे हो वंशीवाले कान्ह ।
तड़फ तड़फ बाङ्ग सङ्कबाते बात गई मोरो रेन ।
कहा करूं कछू वस नहीं मेरो विन देखे नहीं चैन ॥
अरो वाको विरह सतायारे सांवले हो ॥
सुहेदा क्या पहरना छूट पड़ रङ्ग जाय ।
आशकदा क्या मारना झड़क दोए मर जाय ॥
मुखड़ा काहे को छिपायारे सा० ॥
सोनी होतो करूं रखवारो माता राखं पिरोय ।
बाला जोवन कैसे राखूं दिन दिन मैला होय ॥
विरहा काहेको सतायारे सा० ॥

२

कित गए कुंवर कन्हाई मोरो आलो सुरत भुलाई
मेरो सुध विसराई ।
नेन सैन देहमें बुलाई हम आई व्रज मांह ।
उन हरि हमसे एसो कीनो छाड़ गए वन मांह ॥
मोरा आलो अब हम कितहो जाहो मा० ॥
वा कान्हा सों परसके जरत आजलों देह ।
इन मनमोहन एसो कीनो भलो निवाह्यो नेह ॥
सुध बुध सबही गमाई मोरो आलो ।
हम हरि कों ढूंढ़त फिरे यावन आधोरेन ।
प्राण हमारो लेगए सखो कलन परतहै चैन ॥
बांक वरस समझाई मोरो आलो करो निठुराई सु० ॥

३

भगतन क्या नैना झमकावे रूपा पहरके रूप
दिखावे ।
सोना पहर रिझावे गले डाले तुलसो को माला
तीन लोक ललचावे ॥
धरतो बरस अम्बर धावे मेंड़क ताल बजावे ।
कपड़ा पहर करगधा नाचे ऊंट विसुनपद गावे ॥
बैठा सिन्ध जो पाय पलोटे घूंस विलोरो लावे ।
मूसा मूसो मङ्गल गावे भेंसा अर्थ बतावे ॥
रूख चढ़े मछरो फल तोरे कछुआ बिन बिन लावे ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो याको भेद बतावे ॥

४

सइयां मोसे जिन बोलो गगरोया गइलो फूटरे ।
होहा करत हूं पइयां परत हूँ मोरो सरक गई
छूटरे ॥
आह करे तो जग जले वाग जंगल सब जल जाय ।
पापा जियरा ऐसा जला वाके तिसमें आह नसमाय ॥

५

रात सइयां तोरे गरे लागमें बड़ो चैनसों सोईरे ।
बालापनमें खेल गमायो सारो उमर योंही खोईरे ॥
अब पछताने कहा हात है असुअनते मुख धोईरे ॥

६

वास नहीं तहां वैष्णव केरो तहां न बसोये वासड़ियाँ ।
जीभड़ला जप माला ना करे ते जीभड़लो खासड़ीयां ॥

बांधे पिछलो प्रीतके कङ्कर चुंग चुंग खाय ॥
इन मोतियन पर वारी मेरे मोहना ॥
मारीए मर जाइये छूट परे जञ्जाल ।
एसा मरना को भला दिन में सोसो बार ॥
मरनेको गत न्यारी मेरे मोहना ॥३ ॥
भँवरा बैठे डाल पर कली कली रसले ।
कांटा लागा प्रेमका बार फेर जीयदे ॥
लग गई प्रेम कटारी मेरे मोहना ॥
प्रेम कटारी मारके रह्यो कबीरा सोय ।
मरने कोगत औरहै घायलकी गत और ॥
घायल कों पल भारो मेरे मोहना ॥

८

जाद काहेकों कियारे सँवरे मुरली बाले यार ।
जन्त्र मन्त्र जादू टोना कर कर वेधा तन मन हिया ।
सांवरी सूरत माधुरी मूरत सरवस में अब दिया ॥
वेग दरसदे पियारे सँवरे ॥
दया करो गुण मान दइके अब कोई बूझे पीर ।
दई बनाई सो मोहनो मूरत धरो जात नहीं धीर ॥
घाव लगी हृदय कारी सांवरे० ॥
घाव लगी कारे हिरदे में कौन सुने दुख मोर ।
कहोतो कह्यो बनत नहीं मोसे चुप रहो वालम और ॥
अब मान ले दईके सँवारे० ॥
एक नजर दिखलावो मूरत हूं मैतो वलिहारो ।
नित सङ्ग रहो सजनी सुन्दर रूप निहारो ॥
मोकों विरह सतावे प्यारे सांवरे ॥

९

काहे कों प्रीत दुराईरे ऊधो प्रीत दुराय परदेश गवन कीनों ।
अचल राज कुब्जा को दीनों हमकों व्रज को बास ।
हम को जोग करन कों कुंजन कुब्जा कों कैलाश ॥
कौन से मंत्र पढ़ाईरे ॥
यश अपयश दोज होतहै ऊधो कबहुंक अवसर पाय ।
सोने छुय माटी भई हाथ कछ नहीं आय ॥
विधि से नाह बसाईरे ॥
कहे करे सो नीतहै सतवन्नान की बात ।
अचल मेरू ध्रुव नाटरे टरे न पुरुषको साख ॥
सोई जग रहत बड़ाईरे ॥
एक वेर दया करहु गोकुल पर वँशी देहो बजाय ।
श्वास सुश्वास लगी गोपाल को इनकों देहो जिवाय ॥
तब व्रज बजत वधाईरे ॥
सोवत जागत ज्ञान ध्यानमें अब करहु हरि जोग ।
वे गुदर मेरो दीनता व्याकुल व्रज के लोग ॥
दरसन देहु दिखाईरे ऊधो प्रीत लगाय० ॥

१०

चेटक काहे कों कियारे सँवला जुलफाँ वाला यार ।
मानो लटको नागनोरे वास कोयो है शीश ।
ताछवि मेरे उर विच लहरे क्यों जोओ जगदीश ॥
अब मोरे जीयकों जियावहुरे सँवला जुलफा० ।
जन्त्र मन्त्र एको नहीं लागे कर हारो सब जोग ।
ब्रह्मा इश्क छूटे नहींरे छूटे न करमके भोग ॥
मोरे मनकों चाहोरे सा० ।
जब सुध आवे तिरछी चितवन लहर देत तन गोत ।
लोग कहे व्रज कहा भयोरी अजब तमाशा होत ॥
अब गुणीवैद बोलावो सां० ॥
एक सुभावकी औषधि नाहीं जानत है सब कोय ।
छूटे न कबहूं जनम मरीरे दाग विरह तन धोय ॥
कोटिन करो उपायरेसां० ॥
गावे गूदर छवि मोहनो लागी कारो घाव ।
एक सखी सबसे कहे चुप कर भेद बताव ॥
मोहन आन मिलाउरेसा० ॥

१२

जगमें बाँटत यारो अरे मन मानत नाहीं ।
देखो जग व्यवहार यह इन्द्रजाल विस्तार ।
अन्त न आवे काम कछू होत होयेमें साल ॥
भजले अवध विहानरोरे ।

भजन हेत यह सुभग जनम पायो नर अवतार।
विषय वासना परहरो भूलो सब जञ्जार ॥
सो सब सुरत विसारीरे ॥
हरि पदरत विनु जगत दुखी
सुख हरि भजन सों होय।
जीवन नर जगधन सोई प्रेम लगा चित सोय ॥
दिन दिन आनन्द कारीरे म०।
बहोत गई थोरी रही अजहूं सुरत सँभार।
सर्व्व जात हरि सुमरण विनु कलमें नहीं उबार ॥
फिर फिर कहत पुकारीरे म० ॥

भैरवी—दूसरी

अरे मन कहांरे भुलानो राम सनेही विसरे।
जो विसरावन सों छिनकारो दृढ़ उपदेश करे ॥
छिन छिन खबर लेत सन्तनकी कर शरचाप धरे।
नित उठ सङ्ग किया विषयन को तीनो ताप जरे ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह वस माया हो करत मरे।
सुन्दरवदन कमलदललोचन देखत पतित तरे ॥
आठ मास गरभमें पाल्यो ताको सुध न करे।
रामदीन के बन्धन काटे करुणाशील भरे ॥

भैरवी—जलद तिताला

जादू टोना काहेको कीयारे रावरे हो वंशीवाले कान्ह।
तड़फ तड़फ बाहू सङ्गवाले बीत गई मोरी रैन।
कहा करूं कछू वस नहीं मेरो बिन देखे नहीं चैन ॥
अरा वाकी विरह सतायारे सांवले हो ॥
सुहेदा क्या पहरना बूंद पड़ रङ्ग जाय।
आशकदा क्या मारना झड़क टीए मर जाय ॥
मुखड़ा काहे को छिपायारे सा० ॥
सोनो होतो करूं रखवारो मोती राखूं पिरोय।
बाला जोवन कैसे राखूं दिन दिन मैला होय ॥
विरहा काहेको सतायारे सा० ॥

२

कित गए कुंवर कन्हाई मोरी आली सुरत भुलाई
मेरी सुध विसराई।
नैन सैन देहमें बुलाई हम आई व्रज मांह।
उन हरि हमसे एसो कीनो छाड़ गए वन मांह ॥
मोरी आली अब हम कितहो जाहीं मा० ॥
वा कान्हा सों परसके जरत आजलों देह।
इन मनमोहन एसो कीन्हो भलो निवाह्यो नेह ॥
सुध बुध सबही गमाई मोरी आली।
हम हरि कों ढूंढ़त फिरें याबन आधारैन।
प्राण हमारो लेगए सखो कलन परतहै चैन ॥
बांक वरस समभाई मोरी आली करी निठुराई सु० ॥

३

भगतन क्या नैना झमकावे रूपा पहरके रूप
दिखावे।
सोना पहर रिझावे गले डाले तुलसी की माला
तीन लोक ललचावे ॥
धरती बरस अम्बर धावे मेंड़क ताल बजावे।
कपड़ा पहर करगधा नाचे ऊंट विसुनपद गावे ॥
बैठा सिन्ध जो पाय पलोटे घूंस विलोरो लावे।
मूसा मूसा मङ्गल गावे भैंसा अर्थ बतावे ॥
रूख चढ़े मछरी फल तोरे कछुआ बिन बिन लावे।
कहै कबीर सुनो भाई साधो याकी भेद बतावे ॥

४

सइयाँ मोसे जिन बोलो गगरीया गइलो फूटरे।
हाहा करत हूँ पइयां परत हूँ मोरा मटक गई
छूटरे ॥
आह करूं तो जग जले वारो जंगल सब जल जाय।
पापी जियरा ऐसा जला वारो तिसमें आह नसमाय ॥

५

रात सइयाँ तोरे गरे लागमें बड़ो चैनसों सोईरे।
बालापनमें खेल गमायो सारी उमर योंही खोईरे ॥
अब पछताने कहा होत है असुअनते मुख धोईरे ॥

६

वास नहीं तहाँ वैष्णव केरो तहां न बसीये बासड़ियाँ।
जीभड़ला जप माला ना करे ते जीभड़लो खासड़ीयां ॥

सास उसासे सुमरण न कस्यो धमन तनाते सासड़ीयां।
भने नरसैया भारे मागे मावड़लो दश मासडियां॥

७

मोरे सइयांके यौवनवा करत जोर अरी एहा सूनो सेजमें करत शोर।
जालको अङ्गोया मसकन लागो उमग आए दोउअनके तोर॥
यह दोउ यौवना सइयांको खिलोना कहवाँ छिपाऊं यह अङ्गके चोर।
सारो अवधमें बैठ गमाई तड़फ तड़फ जाय भया है भोर॥
योगीन होके में भस्म चढ़ाऊँ पीयको में ढूंढ़ू वनको ओर।
गावे गुदर प्रीतम वस नाहीं जनम गमायो कहि मोर मोर॥

८

मोरी नईरे लगनीया लागीरे सांवरे कन्हैया सों मैं पागीरे।
सौतनके सङ्ग दुमह भयाहै वैरिन परोसन बागीरे॥
ताविच दतो अचानक आई नैन मिलाकर भागीरे।
जाकर भेद कहो सौतन से तुमसे प्रीत प्रभु त्यागीरे॥
जाके रहत प्रभु वाहोर तरे हम रहवे चरणन लागीरे।
गावे गूदर यह भाव दूतीकों पानीमें लावे आगीरे॥

भैरवी—जयतश्री

मैं तुझसे पुछूं अहा विदेशी कौन और कहाँ के हो।
इस दुनियां में रहना नाहों टेढ़े होके बाँकेहो॥
आतेहो तुम रात लागे क्या कुछ छूटा तुमसे वहाँहो।
होश हुवे पर याद करोगे अचपल इहां के नहीं वहांके हो॥

२

जाग पीयारी अब क्या सोवै।
रैन गई दिन काहे कों खोवै॥
जिन जागा तिन माणिक पाया।
हम विरहिन सब सोय गमाया॥
पीया चतुर हम मूरख अनारी।
कबहूं पीयाकी सेजन सवांरी॥
मैंबोरी बौरापन कीना।
भर यौवन पीया अपना न चीना॥
कहत कबीर तन मन रस रहीये।
तज अभिमान हरिशरण जइये॥

भैरवी—अद्ध तिताला

सुनो जो हैवान भोला डमरु बजावे।
छे राग छत्तीस रागिणी नाना रङ्ग उपजावे॥
सप्त तीन वारी इकईस सुध सुन सुरमुनि ध्यान लगावे।
जानकीदास वारी हमकों निरखत हरख हिय सुख पावे॥

२

देवीदा भवन सुहावना सुफ[illegible] दरम देखावना।
पान मिठाई तेरे जारत च[illegible] भ[illegible] सो जो माँगो माई पावना॥
विन्ध्य पहाड़ां विच बसना तुं माइ[illegible] भोलो मा निश दिन [illegible]जन वधावना।
प्रेमरङ्ग दासनु आस तुं साड़ो भोला[illegible]ा चरण कमल परसावना॥

३

तैनु वेले दोछा वाले जावाँ अनी भली गोरी एनो।
फँदाय डोलो मैनु लेचल खेड़ेनु कित वलकूक सुनावानो॥

४

सखी सासरहै बड़ी दूररे।
चलत चलत थक रहो मोरे साहब पायन पर गई धूररे॥
एसो गुण ढङ्ग सीखो नहीं नैहर का लेहवर मिलव हजूररे।
कहै गूदर दोउ रङ्ग बरोबर मुख पर वरसत नूररे॥

शामेर बँधु कौथा गइलो रहोलो के मने घोर ।
जेखुनो तेखुनो पीरीति करोलो रहोलो अङ्ग भोर ॥

६

शिव तोकों बुलावे चलोनी गारो सइयों ।
सप्त सुरन और तीन ग्राम मां रागरङ्ग उपजइयो ॥

७

नेहरवा रूमल जाय हारेमें कहा करूं रामा ।
सोवत थो मैं कदमको छइयां सब सखीयनके साथ ।
बोलत सुने गवनेके लोगवा हाथ पसारे जात ॥

८

एरी एरी मतवरवा मइकुं भर भर मधवा पिलावें ।
आप पीवें मइकों पियावें दैया मोहे लुभावें ॥

भैरवी—खेमटा

हारे वेदरदो डुमनीया मेरे डुमरेकों किया खराबरे ।
आगे आगे डुमरा पीछे डुमनीया बङ्गलेमें बोतल
शराबरे ॥

भैरवी—तिताला

छाड़ मस्जिद आमी मवेरा भोखान सँभाल वे ।
असी तुसाड़ड़े कोलवेमें माहो तेड़े नालवे ॥
बाबुल देशा चाकरे वोरन देशा चाकवे ॥
रहदो महोबत पाकछा० ॥

२

आँजादा महरम हम दम चल फिर कर दीद
निजारेंदा ।
खुश गुजरो गुजरान शोरो मियाँ नाज परीदा
एक नजारेदा ॥

३

को मजाल साड़डी वे जो किसुदो यारोदा नाम लेना
जानो की करेजा ।
दरस वेखामो तो मैं जीवों सिपाहड़ा नदानावे
जिन्दड़ी दिवानी माड़ाजो डरेंदा ॥

दिन बहारोंदे यारदा सानु आंदे वे महबूबों
कोंना तेड़ड़े आदे भमभम ।
वेला गुल फूल मोयां गुलशनों विच तेरे बुलबुल ॥
बागबहार गुलालाना फरमान दे निरगसे गुलखिल ।
आय जोबावरो यांको जांदे आंदा जांदा
जमजम जोवे साड़ा हमदम ॥

भैरव—जल्द तिताला

तोंड़ी याद लगीवे माड़ा प्यारावे ।
हुणतो शोरा किथेनूल दीयां जङ्ग सोया लेवालावे ॥

२

महो वाला मांड़ो खबरन लोतोवे ।
आप जांदा वारो वे नाल महोदे साड़ो खबर
विसार दोतीवे ॥

भैरवी—तिताला

तेज नजरा नजरांदा वेनैना वाले करदा मोयां ।
चश्मे वदर क्या खूब लगदा शोरो नामें खुदा ॥

२

बालम तोरे सङ्ग मोये हमरो बलाय ।
ऊंचो अटरिया चन्दन किवरियाँ देखत जीय
घवराय ॥

भैरवी—एकताला

रावला में तेरी सोंवे मेनूं न विसारना ।
तपदी सुखेदी वारोवे मुदत गुजारोवे तू मेनू
न विसारना ॥

भैरवी—जल्द तिताला

अङ्गीया मोरी मसक गई कौन ।
उमगी यौवन मोरे पाया घर नाहीं एसे कर्मके हीन ॥

२

सइयाँ न छूवो छतीयाँ बैरन भईरे ।
कहत निरंदर कि गरवा लगावे लुटगई
दुलरो तिलरीरे ॥

भैरवी—तिताला

कौन खड़ा मेरो जान नीबू तरे।
छोटे छोटे नीबुला अधिक रसीले छविरस
लियो नदान ॥

भैरवी—जल्द तिताला

नैहरवा कसल जाय हारे मैं कहा करूं रामा।
सोवतथी मैं कदमकी छईयाँ सब सखीयनके साथ ॥
बोलत सुनै गवनैके लोगवा हाथ पसारे जात ॥

२

एरी एरी मतवरवा मइकुँ भर भर मधवा पीलावे।
आप पीवे मईकों पियावे दैया मोहे लुभावे ॥

भैरवी झेमटा

हारे वेदरदी डुमनीया मेरे डुमरे कों किया
खरावरे।
आगे आगे डुमरा पीछे डुमनीया बंगलेमें
बोतल शराबरे ॥

भैरवी—तिताला

झूंठी काया माया का तू क्या गुमान करताहै।
जोतू काया मलमल धोवे, सोभी तेरे सङ्ग न होवे,
लोक कुटुम्ब सब ठाढ़े रोवे, तन माटोमें परताहै ॥
माया पाय भया अभिमानो, इतवित चितवत
त्योरी तानो,
सङ्ग न चाले कोड़ो कानो, नाहक पच
पच मरता है।
जानकोदास साँई जन साचा जो साहेबके रङ्गमें रांचा,
निर्भै होके जगमें नाचा, सो भवसागर तरता है ॥

२

भैरवी अर्द्धङ्ग जाके वृषभ वाहन डमरू मृदङ्ग साज।
माधव रङ्ग उमाधव शम्भु देवनके शिरताज ॥

३

रामरस पीवत जन विरले।
झूंठो भक्ती सुवानै कोनी बोलत बंध परे ॥
साची भक्त पपीहानै कोनी बोलत विन पकरे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरि हरि हरि उचरे ॥

फेर वंशी बाजीरी सजनी।
वृन्दावन द्रुम कुञ्जनमें सखी लाजगई तजनी ॥
गुरुजन पुरजन सोवत छाड़े छाड़ दई लजनी।
चाँदनी रात छिटक रही तारे बह्योत गई रजनी ॥
सूरदास स्वामी तेरे दरसकों चरणकमल भजनी ॥

५

राम भजे तेई बड़ा साहहै नाह भजे तोहै बड़ा चोर।
तन मन धन कछू थिर न रहेगा काहे कों हुआये
एता कठोर ॥
तेई धनवंत तेई सुखवंता कृष्ण नाम कहे निश भोर ॥
काम क्रोध लोभ मोहमें विषय वासना लागी डोर।
सूरदास प्रभु सुमरण करले नहीं तो जावोगे
यमका पोर ॥

६

रामको जाने सांई धन धन है।
उत्तम चारो वरण कहावत वाकों जाने सो उत्तम
वरण है।
उदै अस्त तक राव कहावे वाको न जाने तो सब
निरधन है ॥
छार लगाय भेष कर नाना भटकत फिरत माह को
वन है।
गावे गूदर गुरू मोहि सिखायो बाको जाने सो
वाहो कों जनहै ॥

७

अबहीं कछु ऊंचो नितम्बहो अबहो कटको कनो
फोरतहो।
अबहीं उरमांह उरोज नहीं अबहीं कित अंग
मरोरत हो ॥
अबहीं कछु मोहन भाव नहीं अबहो दृगते
दृग जोरतहो।
वृषभानुसुता अब मान भरो अबही रसमें
विष घोरतहो ॥

मार चले मेरे मरम कटारी ।
मृदु मुसकाय बजाय बांसुरी दिल लीतावे
बांकेविहारी ॥
इश्क लगाकर कित वलजादा तुम विन कौन करे
दिलदारी ।
सांवलीसूरत मनमोहनीमूरत रूप रङ्ग तन मन
वलिहारी ॥

९

नहीं भूलदी थारी याद विहारी ।
घड़ी पल छिन मारी जिंद तरसावे यार क्यों नहीं
आंदा गेल हमारी ॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा तलफ तलफ
सारी रैन गुजारी ।
न्याज भरा मुखड़ा वेख लाजा रूप रङ्ग तुसी
दरस भिखारी ॥

१०

मेरे ऊधो जाय कहो माधव सों प्रणाम ।
कहा ऐसी चूक परी है हमसे जो तज दियो व्रजधाम ॥
सुनीयत भई कुवजा पटरानी चलाय चामके दाम ।
ये बातें सोहत सब हरिको अब वाही से काम ॥
जो बीतत तैसो सब कहियो जैसो सहावे राम ।
रूप रङ्ग समझोगे वादिन आय भेटोगे श्याम ॥

११

तन दिरना तुम् तना तनना द्रद्रद्रतुद्रद्रद्रतननतनन ।
मिसाले आवले अएवा यह क्या जिन्दगानी है ।
जिसी के पांव पड़ते हैं विसीको गिरानी है ॥

भैरवी—जल्द तिताला

कैसी वंशी बाजी यमुनाजीके तीर ।
मुरली सुन सुन भईहौं बावरी सुध बुध गईहै
शरीर

मन अन्तही लगाय कहीं बीर आई

सिरकी गगरीया सालुरे सरस कुसमका
लहंगा कहो चुनरी कहां फार आई ॥

३

रोवत आज वाल यशोदाको ।
ललित खिलोना ल्याईहै लालपै मचले फिरत
आंगन वो नन्दको ॥
उठाय लेत गिरि परत धरणि पर मरमन जाने
तनको मनको ।
उठीहै रिसाय नन्दको रानी राज करो या लरकों ॥
नन्दकों बहीयां पकर दिखलावत मैनन मांगत
चन्दकलापे नन्दकों ।
कंचन थार वार भर लयाई पकर लेहो अहो नन्दकों ॥
सूरदास छवि देख मगन भए यह सुख होत व्रजको
सखीनकों ॥

४

मोरे सइयांने पठई बुलायरे ।
मोकों सइयां ने पठई बुलाइ पठाय छूटा घर
बाबुलदा आजरे ॥

भैरवी—खेमटा

मिललोरो असि सखीय सहेलड़ो देदे साड़े गलबांह ।
बालपनमें खेल गमायो अब पीयर खेलदो चांह ॥
कबीर चलो चलो सब कोऊ कहै मोहै अंदेशो और ।
साहबसे परचे नहीं बैठोगीके ठौर ॥

भैरवी—जयतश्री

चिठोयाँ दरद फराकों वालीयां असि गोंसे
बजब चाइयां ।
बांचन वाल्या सचो आखोंवे मीयां तेरीयाँ अजुआ
क्यों भर आइयां ॥
दोषको देवे अमाए वावे मैंनु वहद तलोकां लाइयां ।
पिया विछोड़ा उन्हों दोस्तो नालों जद रजक महारो
चाइयां ॥

२

कारो सांघ रंझेटे मारो साड़े मुड कलेजे रडके ।
ज्यों भोंचाल पवन गड़ड़ां शिर तत्तोदे कड़के ॥

मा मैनु लख ताने दें दी वीर बोलेंदे लड़के ।
अत्तण वत्तण नदे दाया सइयाँ जनो जगो मेनु भड़के ॥

३

जिस तन लगी सोई तन जानै कै जाने ज्वल लाई ।
मैंजाना मैंडा दिबुर जाने तुमी विचिन आवो कांई ॥
जुवारो यांदे गुएना जुग असाँ सिर मिर बाजो लाई ।
कावुल यार मिले तीथों वाँचंगो नहीं तो घोल घुमाई ॥

४

पंथ असाड़े कोई पावन रखो असो लखिलो
गहसाया ।
इश्कनु गरदे अन्दरनु असि शिरदे पैर चलाया ॥
मत्थे वेंदो हत्थों मेंहदो अखियां कज्जल पाया ।
छकें छवोले छैल पर वल्लभ रसिक कहाया ॥

५

गम् फराक कोता बोच बँगला दर यार ढुँढ़ाया हुरबा ।
इश्क चन्द्रो हुन जगसावन अत्तन वहन
बजाया हुरबा ॥
ठंडी ठंडो छाइयाँ अंजुनो थोयां सूले बहुत
सताया हुरबा ।
हुमहो मदो कौन विचारे सइयों अनु हाल
बन जाया हुरबा ॥

६

खोलत वीवां पटियाँतु अलड़े घावन छेड़ ।
जेंतु दरद मिटावना तोरुठडा साजन मेल ॥

७

अयत विंब उठजा घर मत कुवे मैडा हाथ ।
चढ़े इश्क देके कहै उतर शिरदे हाथ ॥
इश्क खेतसों नाटरे आवै बैठ उसास ।
ज्वश्म चोटसे शिर उड़े धड़ चाले शावास ॥
चलनाहै रहना नहीं चलना विसवा बोस ।
अहम्मद सहेज सुहाग पे कौन गुंधावे शोश ॥

८

तनको तनक सराय में किनहू ना पायो चैन ।
ग्राम नगारा कूंचका बाजतहै दिन रैन ॥
को रूप छवि देखके चित न रहा एक ठोर ।
अहमद अपने मोतको वह चितवन कछु और ॥

भैरवी—रूपक

देखो ऊधो बजो कहीं वोण ।
कान्ह कों ढूंढ़न निकसो राधिका सब सखोन
सङ्ग लीन ॥

२

नजानू रसिया कैसे होके लागारोमें नाजानू ।
गोरा पारवतीके आगे सुहाग माङ्गत गइयाँ
चोवा चन्दन होके लागारो मैना जान ॥

३

सालु वाला तूं अचरा सँभालरो ।
जेहर तेहर अनुवट विकुवा उर मातोनको मालरो ॥

भैरवी—जल्द तिताला

कान्ह वंशो बजाय मन ले गयोरो ।
श्रवण सुनत मोरो सुध वुध विसरो चितवनमें
कछु दे गयोरो ॥

२

देखो मोरो गुइयाँ मइकुं लाखों गारो दोनोरे ।
अङ्गरो पकर मोरा पौंचा पकर लोनो
बहोयाँ पकर रस लोनोरे ॥

भैरवी—एकताला

अनो वेखो सइयों होर राँझेंटा कोमान ।
लटक चाल चलेंदे भुड़के यहो महबूबोंदो आन ॥

भैरवी—जयतश्री

सइयाँरे मतवरवा मइकुं वार वार वरजो ।
आप पोवे और मईकुं पिलावे माने नहीं अरजो ॥

२

अम्बुवा पर भ्रमर डारोरे ।
सब रस पिया वन वन मिलवन बन आए गारो
देत मोहो प्यारोरे ॥

३

साँवरे हो सइयाँ तुम सन लागल मेरो जियरवा ।
तुम विन मइकुं सुहावेन भावे ढोट लङ्गरवा मोत
पोयरवा ॥

निश दिन घरी पल छिन आन बसो मार होयरा ।

भैरवी—जलद तिताला

तुम आवो मोरे सइयाँ लागो हूँ तोरे पइयाँ ।
भवन भवन के मोत पोयरवा ढोट लङ्गरवा अतिहो
चतुरवा सुरजनुवा ए गुसैयाँ ॥

२

साँवरेने सुरत विसारो मोरोरे ।
विन देखे मोरे कलन परत है आन मिलो
गिरिधारोरे ॥

३

तू मेरा वे साँई सुरजन यार ।
तुझ बिना मैनु कलन पड़ेंदो विन दोठे सांझ सवेरा ॥

भैरवी—तिताला

प्यारावे झरलाई इश्क धगाना दे विच दानोया ।
इश्कदो खेतो वारोरे हासल भरना मैड़ा सोना
जो भामो त्यों मानोया ॥

२

जादूगर मोयां करदा फिरदानो मेड़ो सइयाँ ।
सोहनो सूरत वे रसभरो अँखोया साडडा दिल
फन्द गइयां ॥

भैरवी—जल्द तिताला

सांवला तोरे आगे मोरे नैन लजानो ।
सोहनो सूरत देख लोभानो लोक कहै दिवानो ॥

२

रैनके उनोंदे कहीं जागो मोरे बालम ।
सगरो रयन मोहे तलफत बोतो भोर भए
घर लागो मोरे बालम ॥

३

कोयल बोले शब्द एक बगीयामें ।
उस बगोयामें एक फूल लगेहैं जो सइयाँ तोरो
पगीयामें ॥

४

सांवलदा मुखड़ा मैनु भांदानो भादावे साड़ोवल
आंदानो जांदावे ।

जानकोदास सोहनो सूरत नजर पड़ा जबसे वह
मूरत गल लगनेनु जोय चांदाना चाहदाँनोवे ॥

५

वंशो बजावदा छैला जोर नागर नन्दकिशोर ।
श्रवण सुनत सुध बुध सब विसरी वा यमुनाको ओर ॥

६

मानले मारो अरजो गुमानोड़ा मैं तेंड़े वारो गई
सांवलड़ा ।
दिलदा महरम कोई नहीं मिलिया जो मिलिया
सो गरजा गुमानोड़ा ॥ मैं तेंड़े वारो० ॥

७

रैन किथे गुजार आइयाँ मेरो यावे ।
तुझ विना मैनुवे वेकल रहदोवे जाओ तेड़े चेरेंदो
में चेरोयांवे ॥

भैरवी—जयतिश्री

रात प्यारे सों न बोलो पछतानोवे ।
सइयाँ मोरा मैं सइयाँ को सजनो सइयों के रङ्गमेंमे
सानोवे ॥

२

कजरवा मैं न देहों सइयाँ हो दगाबाज ।
गोरोके आंखन कजरा सोहै सांवरो के मुख पर पान ॥

३

तू आपो नाहों मिलदावे भूल गइयां सुध मेड़ो
तेंनु सोना ।
तुझ जेहा मैंनु औरन दिसदा तू तो महरम दिलदा
हाँवे सोना ॥

४

कहाँदो दुनोयां कहाँदा दिवाणा खेड़े तु करदा
साथों जोर धिगाना ।
शकरगंज वारोवे लखांदा दाता पारों देवे
सानु नैन पिराना ॥

भैरवी—जल्द तिताला

रब फकोरांदो यहो गुजरानवे ।
भलो बुरो शिर ऊपर सहदे शोरो गरोबांदो
तुसो मानवे ॥

कासे कहूँ मैं दिलदी अरजो
वे मरजी जासे दिल मानेवे।
दिलदा महरम कोई नहीं मिलिया जो मिलिया
सो गरजी॥

३

वे रांझे तेंडी गला माड़ा मनुड़ा चाहेरांझे वंदी
हों रहीयां।
भूल गया मेंड़ी सुध बुध सारी टुक टुक कहेंदां
ओरी मियां॥

४

एसोरी कजरवा मोपें दियोह्न न जाय॥
इस कजरे से मोरी आंख लजायमा।
नैन बैन मुख मोहो दे गयो कजरा मोरा नैना
लजायमा॥

भैरवी—खेमटा

मुख चुम्वा न देहों बिना झूलनीको बिना झूलनीरे
बिना झूलनी।
बड़े बड़े मोती गुंधावेला झूलनी वारी मारे
नजर भाला॥

भैरवी—जलद तिताला

अब कैसे लाज रहो दई मोरी श्याम सुन्दर मोरी
बहियाँ गहेरी।
बरबस आय झटक लई चूनर मोतीन लर
टूट गई अब०॥

२

सुन एरी बैरी केको मैं बात सहूँ मनमोहन बिन
पलन रहूं।
सास बुरी मोरो ननद हठीली सइयाँके विरह जरूं॥
मेरे तो जीयमें ऐसी बसतहै यमुनामें कूद परूं॥

३

राँझा मेंनु गाली देदानो वे ततीदा सिखलाया।
काढ़ कलेजा वारी वे हाजर कीतावे आखर
पूत पराया॥

मोरी छोटी ननदीया बैरन भईरे।
काहेकों रार करतहो रंगीले हमर तो जिय कपट
नाहींरे॥

भवानी तोरे मन्दिर पान चढ़ैहों।
जो भवानी मोरे मनसा पूजे सोनेके छत्र चढ़ैहों॥

५

रात सइयाँसे न बोली पछतानीरे।
सगरी रयन मोहे तलफत बीती भोर भए
अलसानीरे॥

६

सइयाँ मोरी डोलीया ले आवोरे।
चार कहार मिल डोलिया ले आए मैंतो चली
पीयाके पासरे॥

७

मैंतो पनिया भरन कैसे जाऊं मोरी ननदी
देखो यमुनामें बाज रही बांसरी।
बाँसरी बजावत जियरा ललचावत निकसत नाहीं
जिय सांसरी॥

८

कन्हैया मड़कु गागे दीनो गोकुल में छिप रहिहौं।
बाबुलकी सों विनकी सों सइयाँकी कसम न खैहों॥

९

तुम तनन दिरना तदर दानी यललो यलायल ला
यललललो।
दीम दीम तनातनना तननारे धिति लितिलाना
दिग्दिग् थों किट धागड़ान धिकिटक धाँधाँ
धिलाङ्धा॥

१०

दीम् तनुम् तनंदिरना दानी नाद्रद्र तुंद्रद्रतुंतदार
तद्रदानी।
धितिलो धितिलो तिलो लाना तनुम् तादेरनादेरना
तदेरना तददानी॥

भैरवी—जल्द एकताला

छदड़े जाँदीयाँ हम तैड़ीये रांझना यार ।
दरददा मारूड़ा क्यों नहीं आयारे राँझना यार ॥
चलो सइयों अमी वेखन जाइये राँझन जोगी होंदाँ ।
कानन कुण्डल गल विच सेल्ही होर होर कहे गंदा ॥
चलो सइयों अमि वेखन जाइये राँझा सूली चढ़दा ।
सूली चढ़दा खिल खिल हंसदा मोती लालन डरदा ॥
चलो सइयों अमि वेखन चलिये राँझन देना हटी ।
दध विकांदा टहा विकांदा सास निमानी खटी ॥
चलो सइयाँ अमी वेखन जाइये राझन दे चोवरां ।
हीरनी मानो इटे ढांदो राँझन ढोंदे गारां ॥
चलो सइयाँ अमी वेखन जाइये राँझन देनी घरों ।
दूध बेठके उमर गुजर गई राँझन कातानी फेरों ॥

२

यार तेँ जेवे रंझेरा दरद दांदा छदड़े जांदीयां ।
सइयां प्यारा किन विलमाया यारन आया वेखो
टारूँ राँझा मेहीयाँ आइयाँ ॥
मानु दिलांदे अन्दर कुछ नहीं भाया कोकराँ माड़े
मजना वे तेड़े नाल राजी हुइयां ।
राँझेदे सोहागदी असिवी रङ्गरलीयाँ ॥
दस्त मजन नाल जिन्द लगाया मेड़ा रांदो जंद भलियां।
नन्दरानी तेरा वालाना वे कुड़ो गलां मोमों
करे तोभा मैं चुप करहो रहिस्याँ ॥

३

सुनरी यशोदा फिरयाद करो तकसोर सुनो अपने
सुतको ।
हौं दधि वेचन जात वृन्दावन बांह पकर हम
झटको ॥
लाजकी बात कहाँलों कहूं सखीयां मुसकाय मवे
मटको ।
दधि माखन खाय लुटाय दीयो चित चोहटमैं
मटको पटको ॥
तुम ग्वालिननारि गवांर बड़ी कोउ जानत ना
तुमरे टरको ।
दस बीस मिलो वनको जो चलो तुम केल
करो अपने हटको ॥
केल करो रस कुंजन मैं दया मोसों कहा
मटको पटको ।
बाँसरी जो बजो नन्दनन्दनकी सुनके घनघोर
हिये खटको ॥
कुलकान तजो वनको जो भजो हरि दोमत नाहीं
फिरो भटको ।
मो भागन भेंट भई सजनो सुधि भूलि गई अपने
घटको ॥
छवि देखि नया रसिया नटको चित चोहट में
मटको पटको ॥

४

आवतहो रसके चसके तुम जानत हो रस होत
कहाहै ।
नेक रहो मणि भौंजन देउ दिना दशके अलवेले
ललाहो ॥
तेंतके मंत वेहो दिन आवत ग्वालनके तुम सङ्ग
सखाहो ।
लेहो कहा इन बातनमें घर जाओ लला अबहीं
लरकाहो ॥

५

आईहो आज नई व्रजमें कछु नैन नचायके रार
मचैहो ।
चाहतहो हमसों छलके दधि बेचन जावो सो जानन
पैहो ॥
लेहों चुकाय सबै रसखान तबै पाछे मनमें पछतैहो ।
जोतुम होउ बड़े घरकी इठलाती कहाहो
जगाति नदेहो ॥

६

कहा करूँ मोरा गुइयाँ बलम लरकैयां निकस गयो ।
अपने सइयाँ को मैं ढूंढ़न निकसो फूल परे वहो
ठइयाँ ॥

वारे वालम सइयां चोठो न भेजी रोवत हमरी
वलैया ॥

७

सोवत नींदोया जगाई अटरीया पीया बोलोनारे।
आए अचानक बांह गहोरी ठरीहुँ नकड़ीहु'
कटरियारे ॥
जो पीया मासों बोले नहीं मरिहों रसको कटरियारे॥

८

नजानूरी कहाँ भूल आई बिछुवा।
हौं यमुना जल भरन जातरही रातको जागो
भुलाय आई बिछुवा ॥

९

सांवलेका मेरा जीय चांदा और नहीं मेरे
मनमें भांदा।
लोक लाज कुलकान तजो सब एहो रूप
मोहि चांदा ॥
सूतोथो मैं अपने मन्दिरमें सजनो आय कर
वंशी बजांदा।
चौंक पड़ोमें उझक कर देखूं नैनन रूप लोभांदा ॥
रसिक रङ्ग अङ्ग सङ्ग रङ्गरातो वारवार मेरे आंदा ॥

१०

जाहो जुहो में कन्हैया बिराजे गुल लालोमें राधा
प्यारोरे।
चंपेमें चतुर्भुज गुलमब्बोमें विहारो दौनामरुबेमें
गिरिवरधारीरे ॥
गेंदामें गरुड़ध्वज चमेलोमें चक्रधर मेरे बेला में
वंशीधर वारोरे।
बांकवरस कहे वैजंती में वांकेविहारो मेरे
कमल में कमलोधारीरे ॥

भैरवी—जलद तिताला

सपने में गरवा लाग रहोमें।
वांकवरस कहे सुख लूटत रही चौंक उठी अब
सोच रहीमें ॥

विरहिया सैन चलावे नैना लगावे का जिय
ललचावे।
वांकवरस कहे बंसोया बजावे हँसि हँसि गरवा
लगावे ॥

३

जबतें भई मैं तो पीयको सोहागन तबतें चहे जाय
गमन चलनकों।
कर सिङ्गार मन्दिर निज बैठो आशा लगो मोरे
पीयके चरणकों।
अब जाय चाहे गवन चलनकों थारो रह्या दिन गरवा
लगनकों ॥

४

उमड़ घेरो घन कारो बदरिया कैसो करूं घर नाहीं
पियारे।
वांकवरस कहे मोहनो मूरत बिन देखे नहीं
चैन जियारे ॥

५

गोरी बालारो जोवनवा छिपाय लेरो।
वाँकवरस कहे तेरोरो जोवन एसो पीया का जिय
ललचाय रहोरी ॥

६

सइयाँ ल्यावोरी जोवनवा को मातोरे।
वाँकवरस कहे अजहुंन आए पिया कैसे कटे
दिन रातोरे ॥

७

तेरी बंशो मधुर सुर बाज रहो धुन गाज रहो।
बंशीवट कट निकट यमुनातट सप्तसुर तीन ग्राम कहै॥

८

अंचरा सँभालरी सालू वाली।
तू गोरीके मुखपर अचरा सोहै नैना लगे मोहे
प्यारनी ॥

रब्बा साड़े भाग जागी प्यारा घर आयानो ।
मनमोहन सोहन मृदुबोलन अखीयाँ बीच
समायानो ॥

१०

कितो वे परवाहीवां मेरो जान भला वे नैना वाले ।
दुखीदे नैना नजारैन तरसदे शागो मियां मुखड़ा
वेखलाजा रहदियाँ वेकरारे ॥

११

एखन रजनी आछे बल कोथा जावे प्राण ।
चञ्चल होयेछ केन हवे निशि अवसान ॥
कमल उदित हृदये, रजनी प्रकाशिये,
शशी जावे निज स्थान ॥

१२

मारो कैसे कटे दिन रतायां सइयां बिन मांकों
कलन परत ।
वेग लेजावो कोउ मेरो पतियां चञ्चल तोरे बिन
कल नहीं परत ॥

१३

कहा करूं कित जाऊँ मोरो दैया वारा करेजवा
निकसोई जावे ।
हित करके मैं सुख नहिं पायो कौन वरोते प्रीत
में कीना चञ्चल मेरा दुख का देवेया मोपे तो कछू
बन नहीं आवे ॥

१४

नींद गइलो पिया बिन मोरो सजनी कलसे
बेकल भई सारो रात ।
चौंक चौंक परूं खाब ख्याल में नागर समोहे
आन जगाई ॥ कलसे बे० ॥

१५

बेकल रही तोरे बिन सारो रात विरहा जगाई
मोहे नींद की मातो ।
तुमतो चञ्चल सौतनके सङ्गातो हौं एसो जरो
जैसो दीपक बातो ॥

१६

मोसे मोसे नाहीं अटक कन्हैया ताहे जानत हां
नन्दके नटखट ।
लपट झपट कर चूनर झटकत चटकत हो गिरको
मटको पटक ॥

१७

मतकोई करियो गुमानरे केला बड़े बड़े छत्रपति
गएहैं अकेला ।
कालके हाथ कमान रहत है वाल तरुण
विरध सकेला ॥

१८

जटो तेरे जादू नैना जुलम करे देनो ।
भर भर बाण वागे विरहके मारे वे मियां आशिक
चोट सहे देनो ॥

१९

बांको भोंहै नैना कारे रंदे मतवारेनो ।
एक तो जटो तेरे नैन रसोले भर भर वाकों मारेनो ॥

२०

मेरा गौना लेने कों आयारो ।
तुझ जेहा मानु और न दिसदा मैं तुझकों चाहानो ॥

२१

जननी मैं नजीवूं बिन राम ।
कपटी कुटिल कुबुध कुचालो आग लगो तेरे गाम ॥
सुर नर मुनि सब दोष देतहैं भलो नकोनों यह काम ।
राम लछन सीय वनकों सिधारे नृपति गए सुरधाम ॥
प्रात होत हमहूं वन जैवे अब घर है केकाम ।
वार वार विनती करूं मैं नोको न कियो काम ॥
रघुवरचरणकमलनयन विन मोहि नहीं विसरामैं ।
तुलसीदास प्रभु तुमारे दरसकों भए विधाता वाम ॥

भैरवी—जयतश्री

सावलियाँ भावको भूखो ।
दुरयोधन का मेवा त्यागी साग विदुर घर रूखो ॥
शिवरोके बेर सुदामाके तन्दुल भर भर मुट्ठो बूकों ।

गजके काज पियादो धायो कियो ग्राह दो टूंको ॥
करमाबाईको खोचरी अरोग्यो रूखो सूखो गिन्यो
न सूखो ।
नन्दके घर नवनिध राजें अहीरड़े घर ढूंको ॥
सोलासहसरगत आठ पटरानी कुवजा नाहीं न मूको ।
नरसीको स्वामी सामलिया औसर कबहूं न चूको ॥

२

कान्हा तेरे औलंभ हारो ।
दूध दही घृत माखन मेरे और मिठाई सारो ॥
यामारग जिन जावो कुँवरजो हौं तूने राखूंछूं वारो ।
रूंभो हारो और विहारो झूंठो विरज कोनारो ॥
तूतो ब्रजको ठाकुर कृष्णजीको थारो वलिहारो ।
नरसैयाको स्वामी सामलियो मानले विनति हमारो ॥

३

वार वार नित नई भईरी ।
आम कोडार कोयल एक बोले समुझ समुझ
पछताय रहीरी ॥
जानकोदास आस चरणनकी गई सोगई
अब राख रहीरी ॥

भैरवी—एकताला

नैना वाले मियातू कीनो लाई माड़े हाल दिलाँदिवो।
इशक लगाके मन लेगया शोरा आवो तुमड़ो जिंद
खिला दीवो ॥

२

'राम राम राम कहुरे मेरे मन ।
दुखहरन सुखकरन उन चरण गहुरे मेरे मन ॥
जगमें जो जनम पाय साध सङ्ग रहुरे ।
काम क्रोध लोभ त्याग हरिके चरण गहुरे ॥
ऊंचो नीचो बात कहै सबको तुम सहुरे ।
नैति-धर्म्म कामते तुम शीतलचरण लहुरे ॥

भैरवी—आड़ाचौताल

गदाए बादशाए मुफ़ला राए ।
किशतो दर श्याम मेकुनम शोर दरवाहे
अजब कारे तुम शकल माजराए ॥

भैरवी—एकताला

तोरे रङ्गमें मैं मातीरे ।
बांह पकर पिया लेचले कोई सङ्गन साथीरे ॥

भैरवी—जल्द तिताला

तेरे दरसन की बान पड़गई मोकों ।
बाट चलत मोहो रोकत टोकत सुन्दर वाकी आन॥

२

काजर नदेहों मैयाँ दगावाज ।
गोरी के मुखपर कजरा मोहे सांवरी के नैना लाज ॥

३

असोताल व सोना दो दारदा ।
जिंद गलातो वारो चुप कर रहना आशिक रहदों
देंते प्यारदो ॥

४

तुझको देख ललचायरे जियरवा।
सुन्दरवदनो मृगलोचनोरे निशदिन लागो तोहोसों
होयरवा ॥

५

एरी लाज करन भईरी ।
क्यों कर देखन पाऊं सुन्दरश्याम को एलाज कहे
यह नेह कहाहै नेह कहे यह लाज जरोरी ॥

भैरव—फरोदस्त

आहेना दूदोम तदोम तदोयन रे तदरदानो तुम
तननन तारेदानो ।
तदोयन तदोयन तुँ तनननन आहे दोस्तयललेयल
यलले ॥

राग भैरव—ताल सवारी

बरजो मोरो बहियां गहे कन्हाई ।
अगन बिच झगरत नित नित धाय,
लङ्गरढोट कह्यो नहीं मानत धाय धाय,
लपट गहीरो कासे कहों यह बतियां सुनाय माई॥

एरी मैंतो जागी सारी रात भोर भए पिय आए मेरे।
कहाँधौं रति मानी उन विन सुध बुध भूलो मेरो।
पियको मुख देखत जब छिन लछन जबहीं
पहिचानो प्यारे मैंतो वैन विनोरो ॥

भैरवी—जलद तिताला

गुणी गायन चतुरङ्ग गावोरो गावो अङ्ग चारिसों
सरिगम त्रिवट तिल्लाना।
सानिनि सानि मानि धपम ममगगमम धधरे मारे
सा मारिगम गमपधनि सानिधपमगरेमा मानि मानि
सानि मानि मानि यलल्लोमयलल्लोमयल्लोयलल्लल ॥
द्रुद्रुद्रुतननननदामदारादोमदामदोमननदेरना
देरनातदोमदामतदोमतदामतननननंकिटिकिटिता
किटिकिटिकिटिथुंकिटिकिटिक्रांक्रांतक्रांतधुमकिटधा
धुमकिटधा धाधाधाधाधाधाधोनाक्रांक्रांक्रांधुमकिटि
तक्रांक्रांत ॥

भैरवी—तिताला

पनीया न पो वारी दातमों लोरा जियरा तोरे डरेरे।
कूकर कुइयां पताल जल पानी भरत भरत मोरी
कमर ढरेरे ॥

२

बांसरी बजाई जादू डारारे सांवलोयाने।
सुनरी सखीमें क्या कहूं तोरा कौन मन्त्र पढ़
डारारे सावलोयाने ॥

३

मोसो बोलदा क्योंनहीं बोलियां किस वेलिदामें
खड़ोयांवे।
तेंड़ो सूरत मेंड़े मन बिच बसोया असि हाजर वन्दो
तेरोयां किस वेलिदोमें खड़ोयांवे ॥ मो० ॥

४

सो मोरे सइयां भींजे लाल लहरीयारे।
चमकत बिजुरी वरसत मेहा भींजे मोरी लाल
चुनरीयारे ॥

अटरीया पिया बोला नाहीं सोवत नीदीया जगाई।
हमरे बलम मोरो कदर नजानो मरोहों डरोहों नाहीं ॥

६

बोलन लागी चिरियां वे भए फजरवा बाजे गजरवा
हरि सुमरणको विरियांवे।
सोवत सोवत सब निश बीतो चेत पीछली विरियांवे ॥

७

मुरली बजाई भली मनमोहनने।
मुरली बजावत सब रङ्ग भीने कलन परत घरी
पल छिन तनमें ॥

८

दिल बिच गुमानीडा यार मियां लाखा तेड़ा छुभदा।
चंपा जेहा तेड़ा रंग वेरङ्गी सोणा आँखा आवांदो
फाँक खुवटा ॥

९

मौला वारे मियां रखले दामन नाल।
चरण लगेदा लाज तुसानु जो चाहे करो पाल ॥

भैरवी—जलद तिताला

बालियां किन झमकाई मेरो यांवे।
बावुल दा वेरो वे वोरन दोवे तेरो सोंमें नहीं
खादियाँवे ॥

२

पलमें छोत विहान सांको नोको सावनदे।
निश सङ्ग जागा बलमा तोरे उसाहे अबतो मोरी
सोख मानले ॥

३

सइयां तोरे आगे मोरी अंखिया लजाय।
छोटे देवरा मोरो गोदीके खिलोना उन विन रहोलो
नजाय ॥

४

सोवत काहेको जगाई पिया निरखो नाहीं नजरिया।
जो पिया हमसे रार करोगे मरहुं नटरोहूं फजरिया ॥

५

रे पनियाको केसेके काज कन्हैया तेंने पनघट घेरो।
वाट घाट रोकत नित टोकत बहियां पकर झकझोरो ॥

भैरवी—जयतश्री

मैनुतो तलब दीदारदी यारदी भलावे मे।
नाकोई बोला वारीवे नाकोई पुछदा वो मियां
शोरी नवरङ्गीला मेनु प्यार दीवे ॥ मैनु० ॥

२

छदड़ जादीयां में तेड़ेवे गबरू यार दोददा माड़ा
सांवल साईयांवे।
में हुइयां आइयां यारन आया कभीतो करजा
माड़े फेरीयाँवे ॥
लकड़ी जल कोयला भयो, कोयला जल भई राख।
पापी जियरा एसा जलो, कोयला भईन राख ॥

भैरवी—ताल द तिताला

दिल जोरोदे नाल गुजरार आईयां वे वोवां।
सगरो रयन सानु तलफत वीतो भोर भए सानु
गर लाईयांवे वीवां ॥ दि० ॥

२

चलो सखीहे सहेलड़ी साँवलेनु मनावन।
सइयों सखी मिलवी मायके लावो विन टोठे कल
नाहन ॥ सा० ॥

३

तेंदड़ीयाँ रदड़ीयाँ मेनु यादड़ोया निवे सोनियालें
वेदड़ोयां वले दड़ियां सेनड़ियां करें दड़ियां पूछे
दड़ियां नोमाड़डीयां हालडियां। नीवे।
घोलड़ीयाँ नीवतड़ियां कितड़ियाँ नोकदड़ियाँ
जिंददि तड़ियाँना करवानड़ियाँ नीवे ॥
आँखड़ियां मरमें दड़ियां नालगते दड़ियाँ
नो नोदड़ियाँ जाले दड़ियाँ सबरात तड़ियाँ नीवे ॥

४

मौला तेनु चङ्गी रखे चङ्गे नैना वालीयांवे।
तेड़ो सूरतदामें भए दिवाना चाल चले मतवालीयाँवे ॥

५

वंशी वाले सोना रखले सानु नाल।
विन दोठे मेनु कल नहीं पड़दो विन वेखेहो वे विहाल ॥

मैंतो वावरो नो हुइयाँ सांवल जाँदे विदेश।
जङ्गल जङ्गल फिरदी दिवानो कर जोगनदा भेश ॥

(अथ व्रजनिधके)

भैरवी—ताल धमार

आज रसमसे आए जो मेरे गेह कहो तो डगन
डगमगे पग धरत हो नैन रङ्गीले रसीले।
अतिहो बनावत हो अब वह बातें देखो पाग पेच सौहैं
ढीले ॥
सब निशि सुरत रङ्ग में राते तातें कपट करत हो
मनमोहन रहे मौन गसीले।
अब रस प्रीत रीत व्रजनिधजू कहाँ सोखेहो छलवल
घात छवीले ॥

भैरवी—जयजिश्री

आए जु आए प्राणपियारे रूप छके रस वस
मतवारे।
जामनो जगे पगे भामिनो सङ्ग रहे नसस से अरुण
नैन तिहारे ॥
पीक लीक शोभित कपोल अञ्जन अधर असबुंदन
जल छाय छवि भारे।
व्रजनिध मदनदेव प्रज्वल करले भोरहो इत भले पधारे ॥

भैरवी—रेखता ताल पस्तो

दरद काभी दरद डारा दिल मैंतो धरो।
वेदरद होना नहीं नजरमें फिर क्याकरों ॥
तुमरं नहीं है भाव कोऊ जोयो या मरो।
अवतो रहोमको कोजेर मेरे दुख सब हरो ॥
व्रजनिध वेजोर हौयके मैन पोर हरो।
इश्क रङ्ग रङ्ग सूरत के रङ्गमें रहौं नित भरों ॥

भैरवी—धीमा तिताला

सोणा वंशीवालड़े वे प्यारा जीतू फलज करो
मेड़ा साइयां।
कंकदी फिरदी वारी नजरन आँदा माड़ो सूरत
विसारोयांवे ॥ सो० ॥

सोणा चारे वालीयांवे सोणा श्रो तोकों गल करो
साड़े नाल।
सदारङ्गनु वारी हँस हँस मुख वेखलामी ज्यों
भामी त्यों पाल ॥

भैरवी—जलद तिताला

सांवरेदे नाल सानु हिलि मिलि रहिये।
सुन्दरश्याम चरणन चित टइये ॥
जोदमहै सो श्याम रङ्ग रङ्गीये।
औरांदे नाल नाहीं चित लइये ॥

२

नाल ढोलनदे हिल मिल रहोये एजग जोवन मीठा
बोलनावे ढोलना।
चोलो चुनो मानु माप्यानें भेजो और पढ़े सुवा
चालना वे ढोलना ॥

३

हो नैना वालियाँ नानु मुख वेखलाव।
रैन दिना मैनु कलन परत है तेड़े वेखन दे चाव ॥

४

जोगना में हुइयाँनो रांझेदे उसो नाल।
जोगो रांझा जोगण हारे इश्कदा पाया जञ्जाल ॥

५

जोगण हुइयांनो हुई तजि खेड़ादे वाम ते एसे
मोहिनो मोनायां देवास्ते।
तखत हजारा वारो सब कछु बसदे देखे क्या देखे
तब वल रास्ते ॥

भैरवी—धोमा तिताला

मेहर नजर नाल श्राश्रा बल वेखियाँ कितो तेड़ियां।
चारो सोणा किस वेलेदो में कूकदो खड़ियां हुना
हुइयां देदो तेड़ियां ॥

भैरवी—जलद तिताला

खस खस की टटिया बांध श्राजे वलम मेरे जानो।
टटियाके श्रोट मेरे नैन लगी हैं सुन्दररूप लुभानो ॥

२

बङ्गलवाको टटिया बांध श्राए वलमा देख डरानो।
टटिया बांध मेरे नैन लगेहैं फेंक लकड़ीया मारो ॥

३

जोवो लाख बरस जीवो लाख बरस हो तूं माड़ा
साइयाँ सोणा खेड़ा सलामत तेड़ावे।
रात देहा मह्वोब्बत तुसाड़ो लगा रहदा ध्यान तेंडावे ॥

४

रातके उनीदे नैना काहेकों जगाईवे।
नामें बोलो नामें चालो विरहा श्रान सताईवे ॥

भैरवी—तिताला

मेरा प्यारावे चारे वाला यार मेरावे मन लेगया।
साड़े दरद वारी किसनु सुनावे मेड़ा जिदड़ोनु
दुख देगया ॥

भैरवी—जलद तिताला

चाहोयांवे मानु चाहोयाँ तुहींतो सांवल साँई
चाहियाँ।
साँवला तुसाड़े वारो गोकुलदे साईयाँ राधे कीरतदो
जाईयां तुहो तो सांवल साई चाहोयां ॥

२

लाईयां वेमेनु लाइयां कहोयां तू तंगा छेजो
लाईयां वेमेनु०।
रांझा तू तखत हजारेदा साइयां हिरसोया लेदो
जाईयां वेमेनु० ॥

३

बसदे लोग विगाने सईयां नवेलियावे टूरन जासो।
मिन्नत करदो वारो वे पायन पड़दो मेंड़ा साना
रब कर मुड़ श्रासो ॥

४

सौला मिलावे मेरो श्रोर खुशो साथ दिखावे।
तेरो कसम बेज देत दिल रङ्गहद वेकरार श्रोर
कभी न मिलनेके दुख उसके सब में सहे भला श्रने जोसे
वह जोता रहे ॥

यार दावे निजारा दमदा मैंतो साड़े नाल पड़ीया
मेड़ा मीयांवे।
दे दीदार जमाल करदे तेड़े मिलननु चावमें दमदा
अदारङ्ग मेड़ो गला नहीं मान दावे॥

६

अबमें राम राम कहि टेरों।
मेरे मन लागो उनहींसों सीतापतिपद हेरों॥
चरणसरोज श्रवणमन मेरो भुज अङ्कुश सुख केरो।
तानसेन प्रभु तुम बन्नीनायक इन तरवन पर फेरों॥

भैरवी मध्यमान—तिताला

क्यों जो पीवां प्यालो सजन अत कैफोहद कान
साह्डि प्यारे।
उदोतसेन लोगोंदी बदनामी सह देवे प्यारे॥

२

फेर कहदा मैनुवे छलिया छलिया।
आंवदा जांवदा हाय दुख देला उदोत उसनुमें
इहा कद टोवलीया॥

३

कौन गत भईलो मोरो आनन मिल पीया मोकों।
उन विन कलन परत घरी पल छिन करैके रैन
बिहाय मोकों॥

४

इश्क लगा जादूड़ा कमाल कीतावे।
मेड़ा जो तरसाया अब जिगर पर बीतावे॥

भैरवी—रूपका

रात सईयां तारे गरे लाग में बड़ी चैन सों सोईरे।
वालापनमें खेल गमायो मारो उमर योंही खोईरे॥

भैरवी—जलद तिताला

उठी हाथ मलमल पछितानी रैन चैन सब वहोईरे।
अब पछताए कहा होतहै असुअन सों मुख धोईरे॥

२

सजन सकारे चल बसे, मोसे पूछीन बात।
सोवत सों रोवत उठी, पाटो पटकत छात॥

देदरदांदी लगा दिल एवे कीजाने इश्कां दाग जालम।
उदेत उनसों तू नहीं मिले तेनु याद करे वेग
मिलजा जालम॥

४

टपाटपका रसकी गांठ प्रेमका घूंट पीवे सोई जाने।
इश्कदा गुल फुल शोरी मियां खुशवु आंदा जब चढ़
जांदी दमदो आने॥

५

विरहदा जानो यार वे मैंतो मरदीयां खाँदिम
तेरा झुकाझुक नैनादा तीर।
शोरीदे मैनु रब देखमो जांदे जांदे रति झुक झुक
नैनादा तीर॥

६

रे मारो गत मैनु तेड़े कारन लवेला कांटा बेंदीया
महदे विछानो।
जागदो जागदो छुनको आँखि लगई शोरी गलांदी
थां सोया सयानो॥

भैरवी—तिताला

नैनों नैन तकदो चुपकोंनो मीयांवे छांड़ क्यों चला।
झटपई चक चाकरी खेड़ादा शोरी जान दिया
तेंड़ा भला॥

२

दो नैना वेनो आगे वेसपाईड़ा तू राजो रहना सरीयां।
आपन आवे वारी वे लिखना भेजे मेरा सोणा
सुख बसे मुलतान॥

भैरवी—जलद तिताला

हांवे ढोला मन पर वीदोया हाहांवे जङ्ग मीया
लेटा जटिया हांवे॥ ढो०।
आखे लड़ाँदो भौंरा मटकँदो चित चढ़ जांदीयां
हावे॥ ढो०॥

भैरवी—तिताला

देदा क्यों नहीं दाद वेसाहब मेरेवे।
रैन दिना मैनु ध्यान तुसाड़ा वे किस नाल करें
फिरियादवे॥

भैरवी—जलद तिताला

अजब तरह की बातें हैं जो हमसे तुमसे दिल लगाया
फेर बेवफाई की।
समझ लेतू अपने दिलकी बातें हम सानु फिर
निठुराईकी॥

भैरवी—धीमा आड़ा तिताला

मस्तनु कोई पूंछेदे जिनादे इश्क कीता हड़ केहा।
घायल मायल ढूंढ़दी फिरदा दिवाना साँईदे
नाल रता॥
लगदा इश्क छुरी मसलत उघर गइयाँ पजा गर्ता॥

भैरवी—एकताला

किन फकियां बेआयां तेंडे काना बीच एहो गाला
झुठीयां साड़ायां।
बीच पगरादो वे पाई तरफेदीयाँ मायां मुड पइयां
दम नाहीयां॥

२

इस हालमें कहून लिखव मेरो तुम साहब में
चेरा तेरो।
हाल हवाल कोजरो खबर तुमी पार करो अब नाव
अड़ मेरी॥

३

मीयां दमके रङ्ग चमके झम झम झमके वालीयां।
शिर सोहे पल्लू जरजरीदा लिननु देखत भलो लगदो
वालियां॥

भैरवी—जलद तिताला

तू सोवोरी सोब तिया मइयां के सङ्गरे जायरे।
जबसे सइयां मोसे मिलके बिछुर गए तबतें मोरी
छतीयांरे॥

भैरवी—धीमा तिताला

मैंनु दरस दिखाजा दरकदि आइयोरे जानी।
तुझ कारण बातरी जोग कमाया सोणा दिलदी
तपत बुझाइयो॥
तुझ बिन देखे मोहे कलन परत है आकर छितसों
लगाइयो।

सरसाई मनभाई कर कर अचपल पीय घर
आइयो रे जानी०॥

२

तेंडी भुवें कालीयां वे आद्या सुनो नैनादी
नोक सभाल।
वहँ मस्त मुरि वसद पेच ताव गिरहँ दाद गवरामशे
आप तब॥

भैरवी—तिताला

तेंड़ो अखड़ियाँ मेरो मन हरलोनो देखतही सुन
दशरथ ललवा।
हौंतो भई बावरीसी अब डार दियो पढ़के कछु
छलवा॥
फिरिहौं सङ्ग तुव बदन बिलोकत तानटरस वेपुर
गुरुजन वलवा।
गमसर वे छवि देख विवस भई कलन परत घरो
घरी छिन पलवा॥

२

समझ बूझ अर खोज पायारे आशिक होकर सोना
क्यारे।
पाया होय सो करले सौदा पाय पाकर खोना क्यारे।
गुल वहो जरो गुलही पहिचाने काट काट
फिर बोना क्यारे॥
रूखा सूखा गमका टुकड़ा फीका रस अलोना क्यारे।
शाहासैन फकीर साईंदा शीश दिया तब रोना
क्यारे॥

३

तेंड़े नाल वो तुसी जानन जान मेड़ा जान दिल लाया।
मीयां मुखड़ा वेखनन् जो तरसे मेड़ा गवरू आधीन
को सताया॥

४

नैन करेंदे सैनरवा हांवे हो दिल कीता वे चैन।
गवरू आधीन नाल पीत लगा कर यार रहन लगी
दुख देन॥

लेहव पियरवाके बिन दीठे मेड़ आनो क्योंकर
आवे चैन।
गवरू आधीन तेड़ी याद विच रहदी कलना परे
दिन रैन ॥

७

मैनुभी लेचल नाल में तेरोया जिंदोति वेहाल
मेरीयांवे।
गवरू आधीन वारीवे कलनपरेदो नित रहदा वारो
अब ध्यान तेरो यांवे ॥

भैरवी—धीमा तिताला

सुध काहे मोरी पीयाने विसराय डारीरे।
ववरू आधीन सुनो मोरे वालम नेहा लगाय
हम मन हारीरे ॥

पीया काहे मोरी पीरन जानीरे।
ववरू आधीन तोसों मौ सौ कहो प्यारा तें मोरी
नेक नहीं मानीरे ॥

२

मैंड़ा जिन्दड़ो तैंपर वारीवे असी विरहदी वारोवे।
ववरू आधीन दीठे हुन तैंड़े तीर निगह लगा
कारीवे ॥

भैरवी—तिताला

जीयकी विथा मैं तोसे कहियाँ तें मोरी नेक
नमानीरे।
समझ सोचले मनमें सइयाँ मेरी प्रेम कहानीरे ॥
ववरू आधीन अब मन लागो तोसों तुम मोरो
नेक न मानीरे ॥

भैरवी—धीमा तिताला

बकस गुन्हाँ साँई अल्ला तैंड़ि बन्दो हुइयाँ।
तुंही करीम तुंही रहीम तेंरे हात निवाह मेरीयाँ॥

२

क्योंसोणा मैंड़े प्यारा छंतो दुतो नाल रैन गुजारे।
आशक जिंदवार फेर डारे रङ्ग भीने यह कहे
कहे हारे॥ |

नहीं डरदे दिल दुखवनवारे शिर पर चलदे नित
करदे आरे ग्यारे॥

भैरवी—जलद तिताला

मैने तैंड़े घोली घति कोतियाँ जिंद कुर्बान।
मालपा कर साकु घायल कीता सुनवे महबूब सुजान॥

भैरवी सिंधी—धीमा तिताला

मानु तलब दीदारदो यारदो मैनु।
जंग सियालेनी वे राँझन मिलीयाँ मीयाँ आँखे
दीठो मानु प्यार दीयाँ मैनु॥

२

सोंणा यार मिले मैंड़ा रवावे मिलामो।
आठ पहर मानुवे ध्यान तुमाड़ा वे मियाँ मौला
करें तुसि जिन्दा रहोयो यही माँगदो दुहाई॥ सोँ० ॥

३

एमन मैरे श्याम हरोरी गुइयाँ।
मुरली की धुन सुन भईहूं बावरो मन अटको कोऊ
लाख कहोरी दैया॥ एमन०॥

४

साँवलीया ने जादूडारा मेरा बाजूबन्द खुल खुल
जायरे सा०।
जादू डाला तूने भला कियारे अचरा खुल
जायरे साँ०॥

चलो मेला लगाहै बगीयामें ढूंढ़न जाऊंरो।
इस बगीया में पिया मिलेंगे हँस हँस गरवा
लगाऊंरो॥ चलोमें०॥

६

मन मांचोई सुमरन करले हरिके चरण चित
रखले। एमन०।
काहे कों भटकत फिरत बावरे हरिके चरण तूँ
धरले॥ एमन०॥

भैरवी—जलद तिताला

साँईमें सचा पाया जद अपना इश्क लगायारी
गुइयाँ। मैंसा०।

दुनीया दौलत माल खजाना नाहक भरम गमायारी
दईया॥ मैंसा० ॥

२

कोई दीजो विरहदा कंगना एरो मैंतो ढाडी
विरहकी मातीरे। को०।
इस कंगनमें लाल लगीहैं हीरा लगे मोति पवारो॥
कोईदो० ॥

भैरवी सिंधी—धीमा तिताला

साँवलियादो जोर मोहब्बत इश्कांदे नाल आंखें
माड़ी लगदी।
नेहा लगा कर मैनु भूल क्यों गयावे मेरा मोयां
तेरे रखे नहीं रहदो॥ भलावे मा० ॥

२

नैनादा साई भला लगदा सजन साई
भला लगदा प्यार नैना तेड़ा नदाना वेनिजारा।
आखेनु समझावे दिल वर हौंदा हौंदा क्यों नहीं
दम दमदा गुजारा॥

३

बींवा वे माड़ो दुखांदो कान्होदो वालीयाँ गाड़ो
हौले हौले छेड़ बींवावे।
कणका पकीयाँरे घर कामननो आएना घर ढोला
वारी आमादे जाए जोवे वेखेवे उथे लोक पराए॥
चहुं ओर वेले वेखड़ोनि कूंकांए मैनू लेचल अपने
नाल वोवांवे मैंतेंडे नाल राजो हुइयाँ।
बोल पपीहारो तू सावन आए चहुं ओर मोर बोले
कूक सुनाए राह मुसाफिरानू घर भेज वोवां
में झुक रहियाँ चंपेदी डालियां॥
पड़दीयाँ धूपा वो साड़ा जोय दुखेदे रब रब कहै
असी सान्ह कूकें देई हुये साड़ा जोथे धत कैंदे
आमिल हीरदे नाले रायांवे गवरू तैड़े नाल राजो
हुइयां।
ढोले वगदियां एहो मुरादे मगदीयाँ इनकानुगो ही
लिखन हारेनु पगदीयाँ जिन्दड़ीयाँ असो तैड़े
नाल लदीयाँ॥
ज्योंज्यों घन गरजे त्योंत्यों जीयरा लरजे दीयाँ
बीबाँवे तैड़ी वाटड़ो खड़ो जोवाँ सोणा हीर नाल
दिल पगीयाँ।
एकतो अंधेरी दूजे रातो कालीयाँ मान करेंदे घर केथा
वालीयाँ॥
आमि आमि वेतू मैड़ा चन्दा चोलीदा लड़कन
मैड़े सीने में बन्धा ढोलन दे चला नवें वगदीयाँ।
छुरीयाँ साड़े दिलदे अन्तर मानु लगदीयां नोकुरीयाँ॥
कँथ विछोड़ो दूजे रैन कालियाँ खड़ोनि कूँकैदी मैं
चंपेदी डालियाँ।
साड़ा दिल लगा तेड़े नाल बींवावे
मैं झुक रहियाँ विरछोदो डालिया गारिहो० ॥

सिन्धु भैरवी—तिताला

सखी अपना पियामैं पाया।
सच्चा इश्क लगायारी गुइयाँ॥ मैं० ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह सब दूरही डार बहाया।
सोवत जागत विहरत निशदिन हरिचरणन चित
लायारी सखी०
कृष्णानन्द मै रङ्ग रहोहूं यह गुरूने भेद बतायारी॥

२

धुन सुन घरन सुहायरो गुइया वंशो बजावे
बाकों मारूड़ा।
सप्ततीन इक्कईस मूरछना लाग डॉट बजावे॥
सुर नर मुनि सब भएहैं शिव सनकादिक सुख पावे।
कृष्णानन्द में मगन भएहैं मुरली रसिक सुनावे॥

३

बीबावे माड़ी बातड़िया सुन जाइयो छलड़ा भलड़ा
बाँकड़ा तिखड़ा निकड़ा सांवलड़ा सोना वे॥ माड़ीवा०
तैदड़ी सूरत सारे मन वश गइयाँ रङ्गड़ा चुनड़ा
मारूड़ा ढोलना बोबावे० ॥

सिन्धु भैरवी—एकताला

एरो गुइयाँ अपने करम कोयाकी सोच पोत
मानो जैसो ओस।

हम तुमको क्या समुझावें आसी अब काहूकों
दोष ॥

२

मैं क्या जानू प्रीत करी पछताईरे ।
बेकदर बलमा मोरी कदर न जानी आईरे कछुन मै
पाईरे ॥

३

पिय प्यारेको गरवा लगाय रखती ।
मेरा कहा एक मानत नाहीं ठाड़ी रहां माला जपती ॥

४

अरी एरी गुइयाँ लागी कलेजे फाँस निकसत नाहीं
मेरो सांस ।
नैन थकित भए धंधुरू तन मन भयो सुकास ॥

सिन्धु भैरवी—तिताला

एरी भौजी दारूड़ा पिलावै बांका मारूड़ा ।
सोनेरी सुराही पानेटा प्याला गरवा लगावै
नीक मारूड़ा ॥

२

जादू जादूरे सांवलीया नैना वालीयां ।
तेरो जुलफें सोहे घुंघर वालिया तेंडी बांकी भौहैं
मुझे मारियाँ ॥
तेंडी लटक चाल पर वारी सांवलवा रंगाई तेरो
चितवन तिरछी मुझे प्यारीयां ॥

३

रङ्ग रङ्गावे गुले अतर चमनमेल किन खिल
गया ना फरमा मेरे मनमें ।
गुले लाल गुलेना फरमा हजारा गुले हमचूं हमचूं
गुले सोनानका नजारा ॥
जोतो आपो हजारो दिलवर हजरी राग बीच
गुलशन औ गुलदारा ॥
नूरदे नूरदेखा नूरदे अल्लाहनू चोर देखे तू
सूरतदा प्यारा ।
लेकिन जिसके तनमें लागे सोई जाने सागरो
का जैडा वस गया मेरे तनमें ॥

राति कोरा राति कोरा राती कोरारे ।
राती गोरा राति भोरा राति चोरारे ॥
रङ्ग रङ्गके रङ्ग में रङ्ग बोरारे ।
राति कलियां रङ्ग रलीयां रङ्ग भौंरारे ॥

५

राति जागे राति पागे राति भौंगरे ।
राति माते जाए नींदें के भांगरे ॥
मदको लोया रङ्गरलिया मलिया मलियारे ।
छवि लागे भलियाँ रलियाँ मलिया भौंगरे ॥

सिन्धु भैरवी धीमा तिताला

हे सखी सुध श्याम की आई कहा करों जिय
थिर न रहाई ।
सोवत चोंक परी पलंगमें तलफ तलफ सारी
रैन बिहाई ॥
ना कोई ऐसा हितू हमारो जासों वेदन
कहीं सुनाई ।
छवि नायक जो आन मिलावै ताके दोउ कर लेउ
बलाई ॥

भैरवी ठुमरी—तिताला

आवो पियरवा वेग दरसदे क्यों तरसावे मोहेरे ।
तलफत तलफत कैसे कटें निश दिन जबसे गए
बिछोहेरे ॥
कहा करूं कछु वश नहीं मेरो ना जीए धीरज
छोहेरे ।
छविनायक पर कृपा मिलो जो नैनन राखे लोहेरे ॥

भैरवी—जयतश्री

मिथ्या जनम जात जग माहीं ।
जो सुख लाग भ्रमत हो निश दिन सो सुख
जों तरवरको छांहीं ।
अबहूं चेत हेत कर हरिसों सुर नर मुनि जाको
ध्यान धराहीं ॥

छबि नायक संशय सब मिटिहै अभय करैंगे
गहे दोउ बाँही ॥

भैरवी—झालीया ताल

कर याद खाकी दम बदम निश दिन घरी घरी
पल छिन हर दम।
टेढ़ी घड़ी विसराय डार वही राखै लाज शरम ॥

सुमरण कर हरि का दम बदम जामें रहै तेरो
लाज शरम।
घरी घरी पल पल छिन छिन निश दिन मनन
बिसारो परो हरदम ॥

भैरवी—ताल जत फारसी

चुँने वाजम होरिमा महरू आमि वतुख वहरमद।
रङ्ग आमेज वखूबी कर दम रूये गुलें रुखे लालेरा ॥
मे पाशंवर अराजे खवाँ अतर अम्बार गुलालेरा।
अज मएना बाव मंदेशा वोमो शमे वोस
कौनारा मद ॥
होरिमा महरू आमि० ॥

२

कल कुछ जो आय गई यारो तुममें बैठ बैठ कुछ
मोको लहर मेरे मनके अन्दर।
चला गया धुनमें अपनी उस परी के घर के सहन
के अन्दर ॥
देखा रूसाप तन तन तनके अन्दर कमक डामकया
जारथा चितवनके अन्दर।
दिल कों मौज भई देख देख कर वदनके अन्दर ॥

३

धन घरी धन पल धनहो महूरत धन धन
आजको वेलो।
धन वृन्दावन धन वंशीवट धन यमुना करतहै केलो ॥
कृष्णानन्द रङ्गमें रङ्ग गई रहोहं आप अकेलो ॥

भैरवी—तिताला

अब लग रहे अचेत चेत मन छाड़ जगतको आशारे।
यह तन अपना अचलन जानो ज्यों घुलजात
बतासारे ॥
सुत बनिता सों नेह जो कीन्हों पहिरो मलमल
खासारे।
कोटि जतन कर कर धन जोड़ो सङ्ग न जैहै मासारे ॥
बहु बिध चुन चुन महल चुनावत करहु इहांको
लासारे।
सो सब मिथ्या जान बावरे पल पल पलटे सांसारे ॥
एक आवत एक जात चलले अब यह जग यहो
तमासारे।
छबिनायक हरिनाम भजन बिन होइहैं
यमपुर बाशारे ॥

२

बाँसरी कन्हइयाने बजाई आली आजरी।
तनक भनक सुनत सुध न रहो तन विसर गई
गृह काजरी ॥
छूटो संयम खान पान और टूटी गुरुजन लाजरो।
छबिनायक अधरन बस निश दिवस कानि व्रजराजरो ॥

(बंगला गान)

भैरवी तथा बरवा—ताल तिताला

ओर ओ गोकुलोवासी, कैमोने बजावो बाँसो।
तुमि अन्तरे बजावे बाँसो, आमार अन्तरे
पशिलो आशो ॥
चूड़ाय मयूरपांखा मुखे मृदु मधु हांसा।
एकि अनङ्ग शयत हये कदंबेर डाले बांशो ॥
वेणुर वेणोर वहैये एसब व्रजवासो।
दुकुल हराइ तार यमुनार कुले आशो ॥

२

अरेहो काला आमार मनतो मानेना।
एकते चिकनो काला, गले शोभे बनमाला,
हाथे शोभे मोहन बांशो, मुखे मृदु मधु हाँसिरे ॥

३

श्यामेर बंशो किहोले घोरे रोह तेना दिल।

सुनि जे श्यामेर बाँशो, मोने होइलो उदासो,
कुलो मानो सबे गेलो, बांशी कुलो नासोलो ॥

४

सखोहे प्राण आमार विरहवा चंना आर ।
बाँसरो सुनिला सजनि दिवस रजनी रुदन कोरिछि
वार ॥

५

आर केंधोना राधा प्यारो तुमार एलो वंशीधारो ।
जार लागे दिवा निशि रुदन कोरोते बोसो
सनमुखे धाइये देखो मोहन वंशोधारो ॥

भैरवी तथा सोरठ—जलद तिताला

कि अपरूपो हेरिलाम जमुना तटे ।
गजे रूप देखे छिपटे, सेइ वंशो बटे बटे ॥
त्रिभङ्ग अङ्ग हेरिए, अनङ्ग अङ्ग छाड़िए,
आसे बुझिलो काये कोटीतटे पीतपटे ।
मोनो होइलो व्याकुलो, आर नारहे गोकुलो
आशु सदुपाय बोलो केमोने घटना रटे ॥

भैरवी तथा भीमपलासी—तिताला

लागिलो नयने मोने किखने ।
नवीन किशोर सुन्दर अइ सोई यमुना पुलिने ॥
आरतो किछु भालो लागेना बुझिना रहे कुले
मुरलो सने चल्लित चरण बांधे चरणे ।
पदे पदे आरोपिये त्रिभङ्ग अङ्ग हेलाइये
इन्दीवरो निन्दोए नीलम्बरने ॥
नटवर बेशे मृदु हांसो मोनासे सखो राखो केमोने ।
आरो ताहे राखो शर सन्धाने ॥

७

भालो बांसो बोले तेइ कि एतो दुख दिले ।
अबला सबला पाये पाथारे भसाइले तेइकि एते
दुख दिले ॥

भैरवी—एकताल

बामा हरो हृदि परे विहरे केरे ।
हेरा उलङ्गे दज सङ्गे रङ्गे रण करे ॥
लोलो रसना भीषण दशना खारो असि करे ।
ईषत् हासे दिक् प्रकाशे असुर संहारे ॥
अरो गिरधरा वराभयकरा घोरो रव करा
पीनो पयोधरा श्याम अङ्गे आगित धरा वदन विस्तरे ॥
चन्द्रभाल मुण्डमाल गलित चिकुरे ।
दानव गर्व छोड़ेलो खर्व आशुतोस हरे ॥

सिन्धी भैरवी—तिताला

हृदि पद्मासने केरे विहरे मा भैरवो ।
चतुर्भुजा अक्षपूता माला वरमा भैरवो ॥
रक्तवर्णा त्रिनैना मुण्डमालाइ भूषणम् ।
भाले खण्ड शशी प्रतिपदे प्रभा करे रवि ॥
मुने मुने मनोयोग करो यहो मनोयोग जदि हे
अयोग जोग शिव होइये पदे रवो ॥

भैरवी—जलद तिताला

भीष्मजननी भागीरथी मा गंगेगो ।
तारण कारण भवभयतारण स्थावर जङ्गम
कीट पतङ्गेगो ॥
हरिद्वारावती अतिद्रुतगती अनुमनी धन गङ्गेगो।
सगर सन्तति जारे दिते गति विरह सागर सङ्गेगो ॥
कारणवारणी पतितउधारणी नारायणी द्रुव शङ्गेगो।
कलुखे कातर काला कलेवर पड़े शच पाप तरङ्गेगो ॥

२

भैरवी भवतारिणी भागीरथी भवानी भवरानी ।
भवसिमन्तिनी भवसी भीषणा रूपिणी तुमसी
भूप वेष्टाहिनी भवभयभञ्जनी ॥

भैरवी—धीमा तिताला

कामली बोलोडा कोरे साटा ।
सुखा सुचीनाहि दूशे नाम लोते कोनो माते
वाधाको मोन ॥
आशो दीवे निशि कोरिला भ्रमन
तबतो न गईला तुमार विषय येभोधा ॥

२

परे जो परेरोपरे वृथा ए जतन कोरे आपनो
भाविए पोरे आघातो प्राणो पोरे।

परे शोभा वीए पोरे सुखी हों परसरे एहान भावो नको

अस्तरे किहवे एद्दार परे ॥

सिन्धी भैरवी—ताल तिताला

राधाकृष्ण गावोरे काहे को भुलानो मन ।

कूकर सूकर खर जौन जिनावर हो वागो चोरासो

सों छूटना अब पायाहै मनुषतन ।

बालापन बालसङ्ग तरुण तरुणोसङ्ग ऐसेहो

बितायो प्राणो लागो अब चोखेपन ॥

जगत स्वारथ साचा तेरो साथो कोऊ नाहीं

मृगतृष्णा नोर जानो दारा सुत धाम धन ।

सो करे सहाई कोनो संतनके सुख दानो

सुनके शरण आयो कृष्ण रङ्ग दोनजन ॥

सिन्धी भैरवी—ताल जयतश्री

मिलवेकों मेरा जीय चाहेरे तुम आन मिलो

मेरे प्यारे ।

कहा करूं कछू कहन सकतहूं इतनो अरज मेरो

मानोरे ॥ तुम आ० ॥

भैरवी—तिताला

मियां मेंतो चाल पहचानोरे तेज नजरसों

जानो मियां ।

सूने पाएन दहन से तेरे दुशनाम तमाम जभो

शेल भाने अपना तो किया काम तमाम मियां ॥

सिन्धी भैरवी—तिताला

सांवले माईहों दिवानो तोरे जोवना को सांझ

सबेरे ढूंढ़ फिरोहूं कुंज गलीन वृन्दाबनको ।

काहा चाहत उसवो दरदो को खबर नरखे जो

काहू चनको कभो हलाहल कभो है अमृत

यासन पूंछ इन चितवनको ॥

२

तेरो चितवनको मेंवारो बांकेरे सिपैया ।

यासं तोरे देखत चितवत बरछो लगो जैसे कारोरे ॥

३

गरवां लगायले सइयां न मानोगो न मानोगो ।

मेरे पोया तोसे ध्यान लगाहै बरबस बहियां

भकभोर ठानोगो ॥

४

हारे वींबाबे रजवाड़े का जाना छांड़दे हा जटोरज० ।

रजवाड़दा जालम जटियां जाय बसा रजेबाड़े

सोणावे ॥ र० ॥

५

राणाजो मेंतो गिरिधररा गुण गास्यां ।

तुमारो ता प्राण चरणामृतरो नित उठ देवल जास्यां ॥

गुरुप्रताप साधरो सङ्गत सहजहो तर जास्यां ।

मोराके प्रभु गिरिधरनागर चरणकमल लिपटांस्या ॥

६

सदके जादा याइन तेंडेवे सांवलायार ।

वंशो बजावदा गाय नचांवदा करदा सानु प्यार ॥

७

कोयल बोले शब्द इस बगोयामें ।

इस बगोयांमें फूल लगेहैं जो सइयां तोरे पगोयामें ॥

८

चोरेवालायार मेरा मन लेगयो हो ।

दरद साड़ा वाको किसनु सुनावे मेड़ो जिदंड़ो

ने दुख देगयो ॥

९

भाल मेंड़ो जानवे तेंड़रे कारण लानवे ।

इत महबूबांदो बात बनेंदो वे मोयां एहि गलामें

तोचङ्गो वैठोले ढेगन यारवे ॥

भैरवी—धीमा तिताला

फूलो संभिखे बेखू बहारदा वेसोगा सोणो

लगदा मुखड़ा जानो यारदा ।

शोरो हजार गुलना फरमानोदे सदके कोतो

सदके जानो ॥

२

जानो जोयरातें बाजवे मोयां माड़े महरदानों

भो संभालवे ।

आँखि लड़ खटकदो भटकदा दिल कीता कलेजेरे
पारवे ॥

२

मेरे पीयाने भेजो गवनवारे अबन होय अबनवारे।
मिलली मोरी एसखी सहेली फिरन बनीहै
मिलनवारे ॥

सिन्धी भैरवी—ताल धमार

झोखानु सँभालवे छाड़ मैंडो धुर आमि सवेरे
असो तुसाड्ड़े कोलवे में तेड़ेरे नालवे।
बावुल सद्दा चाकवे वीरन सद्दा चाकवे असो
तुसाड़ारे कोलवे में मोंडो तेड़ो चालवे ॥

इति श्रीभैरवी रागिणी सम्पूर्णा:।

झिंझोटी—ताल चौताला

आलीरी भूम भूम झुक झुकपरत भूमि पर
घूम घूम।
दृष्टि परे नन्दनन्दन जबते मनमें परीरी मेरे
काम धूम ॥
कलन परे निशिदिन घरी पल छिन हेली मारत
विरह उमग दूम।
जानकीदास प्रभु श्यामसुन्दर बिन अतहो बेदन
रूम रूम ॥

२

सुन्दर छवि छाजत राजत मोहन कहा कहों
रूपकी निकाई मोसों बरनी नजाई आली एसे
श्याम कन्हाई।
श्रवण कुण्डल मकराकृत कटि पीतवसन हाथ लकुट
मुख मुरली मधुरधुन गावत अति सुहाई ॥
सम स्वरन और तीन ग्रामले बाईस सुरत उनचास
कोटि तान लाग डाट लखाई।
ओड़व खाड़व सम्पूर्ण आतक खातक खारातक
बादी बिवादी सवादी अनुवादी तानबेन लेरिझाई ॥

सुन्दरबदन पै लोयन बार बार परत करत घर जोयमें
आली तेरे रूपको निकाई।
गुलफको सफाई कहूँ ग्रीवको गुलाई
कुचनको सुन्दरताईके कटिको छोणताई निरखत
ही सबनके मनदास कीनें यही अद्भुत चित्र कर तार
बनाई ॥

४

तुम्हारी प्रीत ऊधो पूरब जनमकी मनहु भयो मोरे
जीयके गरजी।
बहुतकदे वश सङ्ग रहे ऊधो सङ्गको बिछुरो
हमहूं भई मरजी ॥
अगम निगम जो भरोई रहतहै आघटे न बढ़े
तो लेउ नरजो।
सूरदास प्रभु बहुर कहांलो तन तन भयो ब्योंत
मन भयो दरजी ॥

विष्णुपद झिंझोटी—धीमा तिताला

कुबजाने जादू डारा निरमोहिया श्याम हमारारे।
निशदिन चलत रहत नहीं राखे इन नैनन जल
धारारे ॥
अबये प्राण कैसे के राखूं बिछुरत प्राण पियारारे।
ऊधो तबते कलन परतहै जबते कान्ह सिधारारे ॥
अबतो मधुबन जाय लेआवो सुन्दर नन्ददुलारारे।
सूरदास प्रभु आन मिलावो तन मन धन सब वारारे॥

झिंझोटी—ताल तिताला

सांवला मैनु भांवदा।
सोहना सूरत रङ्ग भरो मूरत नैनादो सैन चलांदा॥
आंदा जादा बेण बजांदा वे साड़ा दिल ललचांवदा।
जानकीदास नन्दनन्दनदी छवि लखि लखि सुख
पाँवदा ॥

२

एते दिन नहीं पायावे तेड़ा मरम।
जगमें दोष कौन कों दीजे दोष लिख्या साड़े करम॥

दरस दिखायजा प्रीतमप्यारे लोक धरेंगा साड़ा भरम।
प्रेम दिवाना कहे मस्ताना देव दरस कर धरम ॥

३

मझोब्बत बाँसरी वालेसों जोरोरे ।
लोक कहत कारी कामर वारो मेरो लाख करोरी ॥
लोकलाज कुलकान सबनको ले यमुना में बोरी।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको अविचल रहों
यह जोरी ॥

४

रघुवरलाला पोताम्बरवाला हो ।
क्रोट मुकुट मकराकृत कुण्डल उर मोतिनको माला॥
साँवलीसूरत मोहनीमूरत सुन्दरनैन-विशाला ।
जानकीदासको शरण राखले निज-भक्तन-प्रतिपाला॥

५

तेरो दंगोने जुलम किया वे ।
तानकमान बिरहने मारे वेधा तन मन होया ॥
वेदरदी तोको दरद न आया मैं क्या तेरा लिया ।
जानकीदास सांस अध शरूकत जीया तो जीया न
जीयाहो ॥

६

कोई दम बोल देंदो असनाइयां ।
माय बाप भाई कुटम्ब कवीला सङ्ग चले कोऊ
नाहीयां ॥
नरतन पाय भजे नहीं हरिकों नालत उमर्क ताइयां।
बार बार अवसर नहीं पावै नाहक जनम गवाइयां ॥
हरि भज लीजे कपट तज दोजे और नहीं जग माहीयां।
कहत कबीर सुनो भाई साधो जिम ढूंढ़ा तिन पाइयां॥

७

भलावे घर कोथे नीवे समझ नदानीयां ।
एवी एवी राहे कीथूथे जाँदड़े न दीठा मेड़ा प्यारियां
मीर मूलक सुलतानीयां ॥
आपही पाले आपही मारे जवराईल बहानीया ।
शाह हुसेन फकीर रवाना मैड़ा प्यारियाँ विन
मसलत उठ जानीयां ॥

८

अजब अचंभा दुनीयादावे ।
तरह तरह का रङ्ग बनाहै जैसे चमन गुलसुनीयादा ॥
कर हरिभजन मनुषतन पायो दात पूरवला
पुनोयांदा ।
जानकीदास लखे कोई बिरला होय चेला गुरु
गुणीयाँदा ॥

९

यार तेंड़ी गला जबही याद आदीयांहो ।
जानकीदास खामरु करहदो अखीयां जल बरसौं दीया ॥

१०

बिलम रहे पीया कोने देश ।
जारे पथिकवा लेआवो पतियां पीयको सुनावो
सन्देश ॥
बीतो अवध अजहूं नहीं आए खेत भए शिरकेश ।
जानकीदास श्याम मिलवेकों करूं जोगनको भेश ॥

११

दुनियाँदा अजव अचंभा दम गनीमत जानवे ।
नातू पवन नातू माटो है तू कौन पहचान ॥
होगए भूप रूप घन सूरे रह गया नाम निशान ।
समझ खेल कर केल जगतमें जानकीदास तज मान ॥

१२

सइयोंनी मैं साँवल ते नाल सङ्ग सोइवे ।
कीकहों सखी रतीयांदी बतियां श्यामसुन्दर
मन मोहिवे ॥

१३

एरी मेडे नैना लगे नटनागर नन्दलालसों ।
वंशी बजादा वारी जोय ललचांदा साड़े दिलनु
चेटक लाँवदा ॥
जानकीदासदे मन विच भाँवदा चञ्चल नैन
विशालसों० ॥

१४

मत मारोहो प्यारा नैनवा निदरदी केला मेड़ो जान।

जानकीदास निमानु रखले सुन्दरश्याम सुजान
अरज गरीबाँदी मान ॥

१५

तैंडी वंशी सितम करैंदीहो सांवला मनहर लेदीवो
भला ।
जन्त्र मन्त्र जादू टोना पढ़ पढ़ जीवड़ा बशकर
लेदीहो ॥
जो सोऊंतो नीद न आवे औचक चौंक पवैंदीहो ।
जानकीदास दरस विन अखीयां पल पल जल
बरसैंदीहो ॥

१६

वंशीवालेने मन वश कीयो रसभरो तान सुनाय
जादू करके ।
निरत करत मनहरत सखिनको कृष्ण मोर मुकट
शिर धर के ॥
देख रूप छवि चकित भई सजनी नैन कमल
चित हरके ।
जानकीदास आस दरसनकी चाकर श्यामसुन्दरके ॥

१७

मदनमोहन चितचोर भएरी अब ।
अब कछु और और ढंग दीसत छलबल करत
कठोर भयोरी ॥
सीखे श्याम आँखन में चोरी देखत देखत और ।
जानकीदास व्रजतिय यों कोनी जैसे चन्द चकोर ॥

१८

साधो भाई ठाकुर मेरा यार ।
ठाकुर मेरा में ठाकुरका ठाकुरका अखत्यार ॥
सबघट पूरण पूर रहा है बाग बहार गुलजार ।
जानकीदास हरि हरि भज हरदम तर भवसागर पार ॥

१९

रङ्गीला छैलातें जादूड़ा मोपै डारारे ।
रस भरी तान सुनाय वंशीमें बश कीनो प्राण
हमारारे ॥
तेरी जान विच आन फसीहों हँसी करै जग सारा ।
जानकीदास की आश यहीहै एक पल होयन न्यारा ॥

२०

जो दम है सो वाहवा प्यारे ।
तज सकल जग भरम समझ जारे ॥
जानकीदास सोई नर धन धन जो पल छिन नहीं
नाम विसारे ॥

२१

अबतो अति जीय मगन भयो मेरो भलो बात
बन आई ।
सुन्दर-नरतन जनम-विप्रग्रह रामभक्ति-निधि पाई ॥
भवसागर तैं बूढ़त राखो जमकी त्रास मिटाई ।
जानकीदास को भले भाग सो गुरु नृसिंह सुखदाई ॥

२२

बदरा वैरी झूम झूम आए सजनी उमड़ घुमड़
जल बरस गरज घनघोर ।
पवन चलत सननननननननन दहत विरहतन
पीया विन निशदिन चमक चपल चहुँ ओर ॥
कहा करिए कित जाय सखीरी तरसतहै जिय मोर ।
जानकीदास प्रभु मदनमोहन विन एकहो जान मोहि
घरी घरी पल छिन मदन कसकत कर जोर ॥

२३

प्रीत कर किन किन सुख पायो ।
प्रीत करी पतङ्ग दीपक सों सरबस अङ्ग जरायो ॥
प्रीत ज्यो कीनी हिरन राग सों मनमुख शायक खायो ।
झख रसना सों प्रीत करी तब काँटो कण्ठ फंसायो ॥
गज गजनी सों प्रीत करी तब एसो डील बँधायो ।
प्रीत जो कीनी ब्रह्म जीवसों आपुहो जीव कहायो ॥
धनसों प्रीत करी जिन जिन तन सरप रूप धरायो ।
लोक कुटम्बसों प्रीत करी तब होय भूत डर पायो ॥
देखत सुनत प्रीतकी बातें मेरो मनहू डरायो ।
गोपिन कीनी प्रीत कृष्णसों रोवत जन्म गंवायो ॥
प्रीत किए सुख होय अचलित गुरु कहै मन हरखायो ।

जानकीदास सुखसागरमें जिन रामकृष्ण हित लायो ॥

२४

अचँभा कौनसों मैं कहूं।
मैं नहीं जानू मैं कौनहीं तापै कहीं मैहूं ॥
मैं भूला और सब जग भूला समुझ समुझ चुप रहूं।
जानकीदास कीं आश नामको जप तप मगन मैंहूं ॥

२५

हरमें हरका झलका झमका।
याविध यह छवि रहत निहारत नाश भयो भ्रम
तमका ॥
गोविन्दयों विचार गोविन्दको यह लहजाहै दमका ॥

२६

यमुना किनारे किनारे मोहन धेनु चरावैं।
कारी कारी पीरी पीरी धोरी धोरी धूमर लेले
नाम बुलावैं ॥
सङ्ग सखा सब ग्वाल बाल मिलि मधुर मधुर
स्वर गावैं।
बलिहारी बल साँवल ऊपर सुर नर पार न पावैं ॥

२७

राजै श्रीकृष्ण जनमदिन घर घर मङ्गल गाजै।
नाचत गावत मङ्गल मुदितमन मृदङ्ग मधुर धुन
गाजै ॥
हरद दूध दही छिरक परस्पर आनन्द मङ्गल
साजै ॥ राजै श्रीकृष्ण ज० ।
जैजै धुन उचरत सुर विचरत बलिहारी दिन
आजै ॥ राजै श्रीकृष्णज० ।

२८

मैं अवधूत हूं जोगीया मैंतो देखन को आया
तेरा लाल।
अलख-निरञ्जन प्रगट भए हैं मोहन-मदन-गोपाल ॥
धन तेरो भाग सोहाग है रानी धन धन गोपी ग्वाल।
तीनलोक का साहेब मेरा देख भए हैं निहाल ॥
काशीबासी शिवहै सन्यासी सुमरो तीनो काल।
यह मेरा मैं उनकारी माई पुरुषोत्तम प्रतिपाल ॥

२९

मोहन मुरारि बेड़ा पार लगाओवो।
नदीया गहरी वारी नाव झाँझरी आन पड़ी
मझधारीहो ॥
तिहारीहो ज्ञान ध्यान तिहाराई सुमरन विनती
सुनली हमारीहो।
भवदरीया अति-गहर-गंभीरा सूझतन पारावारीहो ॥
हम पतित तुम पतितपावन युग युग भक्त उवारीहो।
चन्द्रसखी भज बालकृष्णछवि तन मन धन
बलिहारीहो ॥

३०

मेरो मन हरि-चितवन उरझानो।
फेरत कमल द्वार हूं निकसो दरसन कर
सिङ्गार भुलानो।
अरुणअधर दशनन-दुतिराजत साँवलो-सूरत
फिर फिर मुसकानो ॥
यह रस मगन होत निशिवासर हार जीत कबहुँ
नहीं मानों।
सूरदास चित मगन होत ज्यों हँसि चितवन और
हियरो लुभानो ॥

३१

कृष्णचन्द्र गोपाल अबतो तेरे हाथ निवाह।
मोर मुकुट वैजयन्ती माला पीताम्बर फहराय ॥
दीन जान मोहि दरसन दीजे सुजान मोपे किरपा
कीजे सूर पतित अपनो कर लीजे बांह गहेकी लाज ॥

३२

तुम बिन कौन हरै मोरी पोर।
जानत हो अन्तर की बातें मुनि-मन-रञ्जन-धीर ॥
दीनदयाल कहावत हौ तुम सुन्दरश्याम-शरीर।
रामलला निजदास जानके कृपा करौ रघुबीर ॥

३३

तुम तजि कौन नृपत पै जाऊं।

मदनगोपाल मण्डली-मोहन सकल भुवन
जाको ठाऊं ॥
तुम दाता समर्थ तिहूंपुरके जगके दीए अघाऊं।
परमानन्द दासके ठाकुर मनवाञ्छित फल पाऊं ॥

३४

राम-रङ्ग रङ्गे सोई जाने।
महरम होय रसिक पहचाने।
अमल चढ़ेको औरन सूझत निशिदिन रघुबरके
गुण गावै ॥
तन मन धन जन राम निहारैं एसोई मनको
मनावै तो मानैं।
प्रेम-रङ्ग सतगुरु-पदरज हो जीयनहीं रामके
रूप समाने ॥

३५

जो कोऊ वृन्दावन-रस चाखें।
खारी लागे खाँड़ गुखोपरा आन देशको दाखें।
अन्न ममान मूल नहीं औषधि लोभ दिखावै लाखें ॥
भूखे रहे और पावै भाजी निरखि रहैं द्रुम साखें।
जन गोविन्द वलवीर बिहारी जो वृन्दावन राणी राखैं॥

३६

औसर बार बार नहीं आवै।
जो जानौ सो करो भलाई कल कोऊ दुख न पावै॥
गोधन जोबन सबही झूंठो कोऊ काम न आवैं।
तन छूटे धन कौन कामको काहेकों कृपण कहावै ॥
जाको मन ठाकुर सो साँचो ताको झूंठन भावै।
सूरदास प्रभु तिहारे दरसकों विमल विमल यश गावै ॥

३७

कदम तरे गावै गिरिधारी मुरली बजावै वनवारी।
मोहत सुर भरि धरि अधरन पर तान लेत अति प्यारी ॥
ढवन त्रिभङ्गी मोहन रङ्गो धरत उक्ति न्यारी न्यारी।
लछनदास मोहनी बँशी घाव करत उर कारी ॥

३८

राम शरण भज भावत नीको।
जाको शरण अभयपद पावत जगत बासना लागत
फीको ॥
विषय मनोरथ में चित लागो करत भरोसोया
जड़ जीको।
तारीदे भागैगो छिनमें तन ज्यों गिरै करार नदीको ॥
यह संसार विषहुतें अति विष चाखत हितकर
जान अमीको।
हरिसों विमुख न जानत खलमति सन्त प्राण
सुख-दायक हीको ॥
त्याग मूढ़ मन कपट कुमारग मन वच क्रम
अबदे प्रण टीको।
लछनदास सकल झूंठो लखि साँचो एक शरण
सीयपीको ॥

३९

सानु वृन्दावन जानाहो भला।
लाख कहै कोई एक न मानो विन मसलत उठ
जाना वरसाना नन्दगाम बतलाना ॥
उठ चल मिल ऊधो श्यामसुन्दरसों चीरघाट
यमुनाजीका न्हाना ॥

४०

आज मोहि मिल गयो श्याम विहारी।
श्यामा तेरी हमन बोलन मुसकानि पर वारी ॥
मोर-मुकुट कटि काछनिकाछे चितवनको
छवि न्यारी।
राजबहादुर सांवलो मूरत चितवनपे गई वारी ॥

४१

जबतें मन परतीत भईरी।
दिन दिन औगुण छूटन लागे उपजी प्रीत नईरी।
थोरे वणिज बहोत विभव बाटी उपज न लागी
लाल मईरी ॥
अगम निगम दोऊ खोज निरंतर राम-नाम गुरु मूल
दईरी।

तुलसी भजन साधकी सङ्गत रहइ तिर्विकार
सों दूर भईरी ॥

४२

तन अभिमानी मसभ्रनदे।
आठ पहर नित चढ़ी रहत है मौत तोरे कन्धे ॥
आवत जात सकल सुर नर मुनि करम डोर बन्धे।
जानकीदास सुमिर श्रीरघुवर छोड़ कपट धन्धे ॥

४३

आज नागरी किशोर भावत विचित्र जोर कहा कहों
अङ्ग अङ्ग परम माधुरी।
करत केल कंठमिल बाहुदण्ड गण्ड गण्ड परस्पर
सरस रास विलास मण्डली जुरी ॥
श्यामसुन्दर विहार बाँसुरी मृदङ्ग तार मधुर पांखन्
पराग दिवानी चुरी।
देखत ब्रह्मादि ईश आज निरतनि सुधंग चाल वार
फेर देत प्राण देहसों दुरी ॥

झिंझौटी—ताल एकताला

राम जनम अवध पुरी सरयू के तीरे।
असुर सब शंक कियो जादिन जनम राम लियो
लङ्कापति कम्प गयो धरत नाहीं धीरे ॥
सुरनर मुनि हरष होत अवध मानो देख जोत
मङ्गल सबकर कोलाहल दरशन रघुवीरे।
गावत गुणि गन्धर्व मिल ऊंचे सुर कर जों लग दर
दरयाव सिन्धु निरमल होनीरे ॥

झिंझौटी—ताल तिताला

प्यारे रघुवर क्योंन रहो यांहो।
घर रहो सोय करे गलबाँहो ॥
प्रभु वन गमन अचल जब ठानो।
वचन कहत कौशल्या राणी ॥
राज त्याग सों कछून डरानो।
विरह विथा व्याकुल भई बाँणी ॥
जहाँ तुम जननी वाहों वाहीं।
तुम विन जीवन नाहीं ॥
उत प्रभु इत मेरो जीय जावे।
जल विन मीन को कौन जिवावे ॥
दुर्व्वल गौ बछरा धावे।
खाँन पान कछु सुध नहीं पावे ॥
माता पिता सम वेद बखाने।
सोते वचनसों नृप ललचाने ॥
भरत राजके काज लोभाने।
प्रेम रङ्ग मोहे मार पराने ॥

२

हरिके सङ्ग ऐसी तवन गईरी।
तवन मोहे पाछे पछितानी प्रीति पुरानी विपत नईरी ॥
जब जाती कंचन हो रहती अब माटीके मोल भईरी।
मेरे सङ्गकी सब मन आई हों भई बावरी सकुच
रहोरी ॥
जारों लाज इन छतिन कों जिन सों ऐसी तवन
कहोरी।
सूरदास प्रभु तिहारे दरसको जनम सिरानो
यांहो रहोरी ॥

३

जगन्नाथ मन मोह लियोरी।
घर अङ्गना मोहे कछुन सुहावे लोकलाज सब
छोड़ दियोरी।
नीलचक्र पर ध्वजा विराजे परसतहो आनन्द भयोरी ॥
साँवली सूरत पर रज लपटानी लाल दुशाला
ओढ़ लियोरी।
श्रीवलभद्र सहोद्रा सङ्ग लिए कृष्णदास वलिहार
कियोरी ॥

झिंझौटी—एकताल

जबते मोहि नन्दनन्दन दृष्टी परे माई।
कहा कहों सुन्दरताई वरणीइ नजाई ॥
कुण्डल की झलकनि कपोलन पर झाँई।
मनहु मीन सरवर तज मकर मिलन आई ॥
भ्रुकुटि कुटिल चपल-नैन चितवन में टौना।
खञ्जन औ मधुप मीन भूले मृग छौना ॥

अधर सधर मधुर सखी मन्द मन्द हाँसी ।
दसन दमक दामिनि दुति चमकत चपलासी ॥
चारु चिवुक नासिक शुक ग्रीव तीन रेखा ।
नटवर प्रभु भेष धरे रूप जग विशेखा ॥
क्षुद्र घण्टिका अनूप नूपुर अति सुहाई ।
गिरिधर प्रभु अङ्ग अङ्ग मीराँ वलिजाई ॥

२

मेरे गिरिधर गोपाल और नहीं कोई ।
मैंतो आई भक्त जाँन जगत देख मोही ॥
असुअन जल सींच सींच प्रेम वेल बोई ।
जाके शिर मोर-मुकट मेरो पति सोई ॥
शङ्ख चक्र गदा पद्म कण्ठ माल जोई ।
साधन सङ्ग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥
छाछमें सों घृत काढ्यो जानै सब कोई ।
मीराँ प्रभु लगन लगी हानी होय सो होई ॥

झिंझौटी—ताल तिताला

जय जय सीतापते दशरथनन्दन राम ।
राजीव लोचन भवभय-मोचन मुनि-जन-मन-विश्राम ॥
करधनु-शायक और वरदायक सुन्दर हैं अभिराम ।
जन-उधार वलिहार पार किये पँहुचायो निजधाम ॥

२

अचलत तेरो नाव माझी गुण राम विनावे ।
ममता मोह पड़ो जल गहरे तृष्णा तरंग कुदावे ॥
कामवाम कर पवन झकोरे करिहौ कवन उपाव ।
जीवलिहार पार गयो चाहै रसना रघुपति गाव ॥

३

लोक अयाना हरि नहीं जानावे ।
तन तरुणाई भूल मत जियरा थिर नरहै काई रावन राणा ॥
आये मिले सब सजन सङ्गाती स्वारथ लागे सयाणा ।
चलती वेर कोउ सङ्ग न चलि है उठि गए हाकिम लुटि गए थाना ॥
काज सँभाल्यो जिन हरि चीन्हा और भूलि पछताणा ।
अवध घटे दिन वादि गँवाए सिर पर काल पयाँणा ॥
कोट उपाव किये नहीं छूटे आखिर मरणा जीय ललचाना ।
राधावर सुमरो वलिहारी जे हरि रूप समाना ॥

४

गोविन्द गायले सुख पायले जो जीय चाहै भला ।
राजा रंक फकीर मीर क्या लग रहो चली चला ॥
गुरु उपदेश नाम-नौका गहि मेरी मान सला ।
नाहीं तो मझधारहै बूड़िहै आगम याते कर हरि मीत मला ॥
सपनेको व्योहार जगत को सब तू क्यों जात छला ॥
याते समुझि साध सङ्ग करने हरिसों रङ्ग मिला ।
पूरण-चन्द्र आनन्द भज व्रजपति उरधार नन्दलला ॥

५

मिलो क्यौंन प्यारी दे गलवाहीं ।
कौल असाड़ा कीया महरदे यार कदमदी छाँई ॥
सुरत तू साड़ी दिल विच वसदी न्यारा कीया न जाई ।
एकवार हँसि बोल वलिहारि तो जीवन जग माँहीं ॥

६

आज रामजी कों राखो विलमाए ।
राम चले लछमन भए साथी सीतहुं सङ्ग लाए ।
ठाड़ी कौशिल्या रुदन करत है विनति करत सुनाए ॥
एसो कठिन कठोर प्रधान जिन रथते राम गमाए ।
तुलसी दास प्रभुको कोउ ल्यावो दशरथ प्राण जीवाए ॥

७

इस दमदा मैं नू कोवे भरोसा आया आया आयान आया ।
सोच विचार करो मत मन में जिसनू ढूंढ़ा उसनू पाया ॥
या संसार रैन का सपना कहीं देखा कहीं न दिखाया ।
नानक हरि यशके पद परवे निशदिन रामचरण चितलाया ॥

८

जादिन मन पंछो उड़ जैये ।
तादिन तेरे तन तरवर को सुखपात झर जैये ।
यह देहो को गरभन कोजे स्यार काग गोध खैये ॥
तीन नाम तन वोष्टा कर्म्म ह्वै मातर खाक उड़ैये ।
कँह वह नीर कहाँ वह शोभा कहां रूप रङ्ग दिखइये ॥
जिन लोगन सों नेह करतहै तेहो देख घिनैये ।
घरके कहत सबेरे काढ़ो भूत होय घर खैये ॥
जिन पूतन को बहुप्रतपाल्यो देवो देव मनैये ।
तेईले बांस दोयो खोपरो में सोस फार बिखरैये ॥
अजहूं मूढ़ करो सतसङ्गत सन्तनिमें कछु पैये ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो आवा गमन नसैये ॥

९

चेतन मानले मेरी बतीयाँ ।
यह देहो तेरे सङ्गन चलिहै क्या पोषत दिन रतीयाँ ॥
जो हिंसा कर नरक परौगे आंच सहोगे ततीयाँ ।
बिन भगवान कोई नहीं अपना यही सचहै मतीयाँ ॥
काम क्रोध मद मोह झकोले बहा जातहै घतीयाँ ।
सूरदास प्रभु कों रटले तू हरि सुमरण में रतियाँ ॥

झिंझौटी—जलद तिताला

रङ्गीला छैला वंशी बजाय जादू कोतावे ।
रङ्ग भरो तान सुनाय श्रवण मग साड़ा दिल
हर लीतावे ॥
रत्त देहा मेनू हौरन भाँदा तेड़े नाल जित दीतावे ।
बलिहारोयां वारियाँ तुझ ऊपर मेड़े मोहन मीतावे ॥

२

भला घर कित्थेनी समझ नदानीया ।
एवी एवी राहे कित्थे जादेडे नदीठा मेरा प्यारा
राजा रंक सुलतांनोया ॥
आपही मारे वारी आपही जिलावे जबराइल
बहानीयाँ ।
शाह हुसैन फकीर रवाना बिन मसलत उठ जानीयाँ ॥

झिंझौटी—तिताला

साड़ा डेरा कित्थेनी समझ मन माहीयाँ ।
वोही पाले वोही मारे वोही वोही घट घट ठाइयाँ ॥
राईको पर्व्वत पर्व्वत राई सागर रङ्ग मिलाइयां ॥

२

तेड़ा घर इत्थे नहींरे नदानीयाँ ।
राजा रंक अमोर महाजन चला जात सुलतांनोया ॥
आपही पाले आपही संहारे आपही रङ्ग निमानीयाँ ।
एक आदा एक जांदा सगर बिन मसलत
उठ जानीयाँ ॥

३

मिलनाहो दिलवर महबूब ।
कीत कोल करार मिलनदाजो कीता सो खूब ।
बलिहारी हँस बोल विहारो तीन लोकके भूब ॥

४

महो वालाहो वंशो फेर बजाव ।
अरज हमारो सुनहु विहारो बलिहारी चाहै
जीव जिवाव ॥

५

इस तनदावे गुमान न करना साहब कोलो पल
पल डरना ।
वेख सभी जग चलदाइ जांदा जानकीदास
ते नू भी मरना ॥

६

क्षमा करो अपराध हमारो पाहि पाहि सोयपति
सोय प्यारे ।
नन्दनन्दन दुख-भञ्जन जगतके भक्त हेत युग युग
वपु धारे ॥
जब जब दुष्ट भए या जगमें चक्र धनुष गदा खड्ग सों
मारे ।
जानकीदास को शरण राख ल्यो जगन्नाथ जगके
उजियारे ॥

अब हम फेर भए लरिका।
बालक जान करे हित सब जग शरण लिया हरिका॥
जानत नाहीं पहिचानत नाहीं कौन कहां सौं आया।
जानकीदास अँचभा अद्भुत सत्गुरु भेद बताया॥

झिंझोटी—जल्द तिताला

तेरो बंशीने कहर कीयारे।
भ्रुकुटी कमान दृष्टि सर मारत वेधत प्राण पीयारे॥
निरमोहिया मानत नहीं सजनी कठिन कठोर हियारे।
कृष्णदास रस प्रेम प्रीत को पीया पीया सो पीयारे॥

२

मैया मेरी बंशी कहा भई।
प्रातही धेनु चरावत मधुवन दाऊ मोहि दई।
कैधौं बन बिसराय गई है कि कोई ग्वाल लई॥
बंशी लेहों तो बन जैहों हारि यह टेर कही।
कृष्ण दास मोहि गोधन की सौं लैदेउ और नई॥

३

मोपर डार गयो हरि टौना।
बंशी बजाय आय गहर मेरे सुन्दर-श्याम-सलोना॥
एक समय दधि मागत मोपै पत्र लिए कर दोना।
ब्रह्मदास मोहे छले जातहै नन्दमहरिको छौना॥

४

तेरी बंशी कहर कियारे।
सुर कमान कस तान बान हंस मार विकल जिय कियावे॥
रहिन सकत अब देह गेहमें चाहत मिलन पीयावे।
जानकीदास सांस तन ये सब मिल जब गाय जियावे॥

५

दुनीया लंडो झूंठी है हो यार।
मतलब होका इसका प्यार॥
जोकोई इसके रहै भरोसे सोउ सबको होगा खार।
जानकीदास दया सतगुरुकी निश दिन पल छिन सुमरो करतार॥

झिंझोटी—तिताला

लोभी लोभ भरम भरमाया झूंठा जग लालच मों लोभाया।
कच्चे कांच चमकत चिपटे राम-रतन अनमोल गमाया॥
कोटि जन्मके जतन तन पाया ख्वाबन सोवन को नहीं आया।
प्रेम रङ्ग प्रभु तोहि जिवाया जान मूरख विष विषय क्यों खाया॥

झिंझोटी—जल्द तिताला

सुनीयत कान्ह ले जानेको आयो अक्रूर नहीं अति क्रूर कहायो।
मत रजनी परभात करे तू मो सोंपो सो दाँव लगायो॥
गाज परे कोई एक ऊपर लख आप नगुण सूनो घर आयो।
प्रेमरङ्ग यशुमत दुखित अति व्रजजीवन परदेश चलायो॥

झिंझोटी—तिताला

एक ओरको प्रीत कठिनकी।
तान सुनाय बधिक मृग वेधत अलि अटकायो कलो कमलनकी॥
मत्त गयंद फंद मानुषके मीन मीत गुटिका निगलनकी।
दीपक देख पतङ्ग अङ्ग जरे एकको एक बान मरनकी॥
मानुषको पाँचो एक तनमें अचरज सुध राखत जिय तनकी।
मन वच कर्म समर्पण कीने प्रेम रङ्ग प्रभु मीत मिलनकी॥

डिम डिम डमरू बाला लाला लाल पीयाला पीवै
मतवाला वाला।
लटीयाँ विच कालीयाँ काला कानो विच मुद्रा डाला
गले बिच सेलो माला॥
संतोदां तू रखने वाला दुष्टां देदा देग निकाला,
जिसनु चाँहदा तिसनू करदा वो निहाला।
प्रेम रङ्गदा दिल चरणी भाला भैरों भवदा तारण
वाला ईश पूरो रखवाला॥ ला०॥

झिंझौटी—ताल एकताला

नेक चितवो नेक हँसवोरी गोरो।
टेढ़ी बातें तैंनू किन सिखलाइयाँ मनमोहन
मन धसवो॥
मान किये अब नाहीं बनैगी एक कुञ्जको बसवो।
नित प्रति छवि विथिन वृन्दावन निशदिन को
याँ निकिसवो॥
सुन्दर-श्याम कमल-दलनैना मन्द मन्दहै हँसवो।
कृपा सखो करिके छिपिहै यत्त राम विलास विलसवो॥

झिंझौटी—तिताला

हरो हरो वंशी बजावै हरो।
हरे हरे वसन आभूषण हरे हरे उर वनमाला हरो॥
हरो हरो भूमि लता सब हरो हरो द्रुम कुञ्जन सन
हरो हरो।
जानकीदास हरोको छवि निरखत सखीयन को मति
हरो हरो॥

२

प्रभु तुम भक्त वत्सल निज जनके जो जैसा तैसे तिनके।
तीन लोक के लोभसे इन्द्रने विप्र किये जोचनके॥
वेद सुनाय किये बस बलिकों मन वाञ्छित मागनके।
दोय चरण भर भई त्रिलोकी तीसरा और चाहनके॥
बलिको धरम बंधनसों बांधे धर थर दीनधरनके।
सुतल धसायो प्रेमरङ्ग प्रभुको राखे द्वार रोकनके॥

क्या रघुवर तेरा चेरा चाकर जोई जोई चाहन
सोई करावत।
बिन मरजी अरजी नहीं सुनदा बिन चीठो नहीं
चरण चलावत॥
तन मन धन गुरुसों छिनवाए पोषन प्राण
दिए पावत।
प्रेम रङ्ग मत प्रीत करो कोई नेह लगी फल
एसेही पावत॥

४

खासी खिजमत पाया सोना राम मनेहो।
सतगुरु सङ्ग समाज बांहुबल चरण-कमल परसाया॥
धर्म्म कर्म्म टोउ भेंट देवाई भक्तो मा ले मोल उढ़ाया।
प्रेम रङ्ग दशकत निजकर कर हाजिर रहो
फरमाया॥

५

भरत भइया हो कपि सों उरण हम नाहीं।
सौ योजन मरयाद सिन्धको कूद गये छिन माँहो॥
लंका जार सीय सुध लाये नेक गर्भ जाय नाहीं।
लछमन वीर पर्यो धरणीमें सकल सखा बिलखाहीं॥
दोनो गिर सजीवन लायो आन दई मुख माँहो॥
पैठ पताल तार जमकातरले प्रगट्या पल माहीं।
फेरी दुहाई रामचन्द्रको राज मकरध्वज पाई॥
ज्यो नहोते हनुमत से योधा का ल्यावें जग माँहो।
तुलसीदास दासन को महिमा सोयपति निज
मुख गाई॥

६

मन भयोरे सेलानो भजन बनत नाहीं।
खाने कोतो अच्छा नीका और ठंण्डा पानो॥
पानको गिलोरो चहिये और पोक दानो।
हाथो घोड़ा रथ चहिये और तंबू आसमानो॥
सेज तो अनूठो चहिये और रूपवंतो राणी।
किलातो अटूट चहिये और महलानो॥

पूत तो सपूत चहिये कुलकी निशानी ॥
अरब खरब द्रव्य चहिये और कुल शानो ।
कहै गङ्गादास दुनोयाँ मायामें भुलानो ॥

७

हाटड़ोवे छाड़ चला बनजारा ।
इस हाटड़ो विच सब कुछ सौदा कोई नहीं
परखन हारा ॥
इस हाटड़ो विच सात समुद्र हैं कोई मीठा कोई खारा।
इस हाटड़ो बीच महल ओसाड़ो सबका
होगया गारा ॥
इस हाटड़ो बिच नौ दरवाजे दशमा धरम द्वारा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो भजलो राम आधारा ॥

८

ऊधो जाके माथे भाग ।
बिलपत छांड़ सकल ब्रजयुवती चेरो चपल सुहाग ॥
आए जोगको वेलि लगाँवन काट प्रेमके गांठ ।
कुबजाकों पटरानी कीनो हमकों देत वैराग ॥
लौंड़ो को अब डौड़ी बाजो बन्धो श्यास-अनुराग ।
निलज्ज भए दोऊ खेलत हैं बारामासो फाग ॥
भलो मोहाया साथ बनीहै राज हंस और काग ।
सूरदास प्रभु ऊख छाड़के चतुर चिचोरत आग ॥

९

न नित्यं लभते सुखं न नित्यं लभते दुःखम् ।
सुखातरं दुखं प्राप्तम् दुःखान्तरं सुखं ध्रुवं ॥
यहो समझ सुन मेड़े मन यार ॥

१०

छो चोरे वाले गवरू यार फिर गई वंशी को दुहाई ।
ब्रज गलोयाँ गलोयाँ ब्रजजोवन होय रहे
हिरदे कन्हाई ॥

११

भोंकावालेनु घलेया जानवे सनेहा साड़ो ।
घर आजा वर सांवलड़ावे सोयालोनु विरह सतादा
रहदा तेड़ा ध्यान ॥

१२

महरम यार मेरो तेरो अँखिया लग
गइयाँ सांवरे सुनवे ।
लोकांदी बदनामी थे मत डर गोरी कम आदी
अपनो धुनवे ॥

झिंझोटी—धीमा तिताला

झम झम झमके बाल्लानो लाल पोयाला कलालो
मद भरके ।
लट छटोलो जोर चमक चमकेदो नेड़े गोरो साया
रखड़ा मत वाला ॥

२

कालड़ो धारा मन पर बस रहोयाँवे आडा ।
नूर परेंदा वारावे खेड़ा अजब सुहावना मन रङ्ग
रङ्ग रङ्गोला बहारांवे याड़ा ॥

३

मतवारे नैना मिलावनन् अनो आरानो तैड़ा माना।
गोरोनू ले साथ मोयाँवे नटोयानू विरमाना ॥

४

परोयाँदा झूमर परो जात भलावे ।
कोई हँसदो कोई बाल्दो करेंदा केल कोई
छिपावत गात ॥

५

जोंद लोतो नैना नाल मोयाँवे ।
सानु फन्द का विरहदा जान मोयाँवे ।
चञ्चल नजर सहर भर मारो सानु कोता विहालवे ॥

६

वो मृगनैनो क्योंजोवल मा थारेहो ।
अति कजरारे प्राण हरे प्यारे रजने आप सँवारे हो ॥

७

छैलादा खेमिवे नाल भरोयाँ तैड़े बागेदो डारोयां
झूम रहोयाँ ।
जोथे निजारा रहदा महबूबांदा मनरंगा निथे
अंखोयां भर निरखेड़े परोयाँ ॥

८

कब लावेंरजो रैणदो ।
मिलन चलो गलवांहो गोविन्द पत राखे
भगवानदो ॥ क० ॥

९

माँड़े विछुरेनु मिलाँदे रव्वां एहोतो तुझमे सुरादे
मङ्गदो रहदो ।
छच्चल विन ैनु चैनन आँदा टुक मुखड़ा वेखना
जादे ॥ रव्वा० ॥

१०

मुखड़ा वेखला जावे महबूबां कभातो माड़ा वल
आजावे ।
इश्कदो गलां तुसो मानले बोच चलदो वानादी
तपत-बुझा जावे ॥

११

[illegible]

दिलन भांदिया ।
आँदिया जाँदिया चाँदिया गोरोनु साड़े दिल बिच
भाँदिया ॥

१२

माहोड़ा भूलोयाँवे क्यों मैनु सुनो एबेदरदो हत
बिच कोपया
किन सिखदोतो छुण दूता रङ्ग तुसानु रङ्ग भाने
तैं नाहक दिलनु लगाया ।

१३

भलावे राजो रहना कबने ततो ताँन विरहदे ।
गोरो सम्भल मंभाल महबूबांदे अगोरत दम दमले ॥

१४

भलावे जादूगर मोयाँ केहा सहर कीता सेन
कर करके ।
भावे तू जानन जाँन गोरो ोतो बचोया मर मरके ॥
धिङ्गाने वालोयाँवे करदोयाँ नेड़ा जोरा जोरो
कमला जाँनके ।
मैनु मारन खीलोतें करन मजाका लग गइयाँ गोरो
टपेदो तान तानके ॥

१५

राँझेदे मिलनदी तंगवे मैनु ।
जिथे वाज घड़ो रहदोयाँ नैन हटोले सङ्गवे मैनु ॥

१६

विलमाया जालम जटोने ।
सुनवे महबूबां कोतो वेपरवाहो करदा
समझाया जालम जटोने ॥
भले लगदे तैड़े नैन गोरो मोयाँ आशिकनू को
सताया ॥ वि० ॥

१७

आव पियारा मिलजा मिलजा कित वेलेदी
मैखड़ोयां कूकां ।
तकदो राह बूहे तू गोरा नजरन आँदा चारे वाला ॥

१८

राँझेदा मुलक मोहावना भलोयाँवे ।
एकतो राझा मोठा बोलत जब्बदो घाटो सोनो
सोम बलायावे ॥

१९

वारोयाँ इश्क राँझेदो नगरोयाँवे उमगनु नित
घर लावे ।
चाकर हाजर होके रहना भला मोयाँ गोरानू ले
साथ सोणाको करनो तुसो नौकरो वैनावे दूजे
बज देनो ढोल ॥ चा० ॥

२०

फिरक्यों शरमादे वे जानो यार दिलभो लेजांदे ।
खुल रहदो चाकरो चलदा नाहीं गोरो यारदा
शिर पैंचवे ॥

झिंझौटी—तिताला

सोणा माहो वालोयाँ मैंतो ताड़े वारो जाँ ।
विन दोठे वारोवे बेकल रहदोरे मोयाँ मैं तैनु प्यार
करँ दोयाँ ॥ सो० ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

वारोवे सोहावना मुखड़ा तैंड़ा मानु भाँदा
भाँदावे सोहावना ।

इश्कदी गलाँ हाँ कोकरदा ओरो माड़े दिल
विच भांवना ॥

झिंझोटी—तिताला

हाँवि मैं कोकराँवि रावल मझड़ीया छड़ गइयां ।
जिनादे नाल एमांवि वालापन खोया सो
सइयाँ लद गइयाँ ॥

२

राहै राहै वेराहै राहै वेजादीयां नीमै ।
अनी कहो दिद्दानी महरम यार छैल छवीले जानदै
गवक नीमं ॥

झिंझोटी—धीमा तिताला

ऐसी कमली नाल वे चाकर दो नैनादी तेरेवो
सिपाहिडा यारवे ।
विन देखे मानु कल नहीं पइदी चाह रहैंदी
नित मेरे ॥

२

अरेहां मैंतो सङ्गीया राजा मैंतो सङ्गीया राजा
मैं तो सङ्गीया ॥
अंखो भरो तेरी कहु रे काजरदी नभरी कैसी उतरी
और दिनामें पीउकं जाँदे भला जानै क्योंजो
मैंतो मंगीया ।
राजा हमारेने बाग लगाया अरु पके हनु दारू
नहींतो मानु हटड़ी देदे नहीं तो मानु पथड़ी
जादू मैतो संगीया ॥

झिंझोटी—तिताला

रांझा राहनू तकैंदी परगइयाँ ।
कब घर आवे वारीवे राझन मेरा ढोलन मेरा वेमोयाँ
ढूंढ़ फिरी मेहो वालिनु पर गइयाँ ॥

२

सइयाँ मैड़ा नन्दनन्दन व्रजके बसैया बागादानी
सनेहा ।
सब सखीयन मिल चली नन्दके मोहन मांगोदे
चादे छांदे साड़े नालदे निसाड़ा बठे सनेहा ॥

नूरपुरी झिंझोटी पहाड़ी—तिताला

तेड़ा खेड़ा अजब सोहावणा जटीनुवो कालियां
कानां सोहै बुंदे वालीयां ।
नूरपुरेदा वारीवै पुर अजब मोहावणा वीवाँ चाल
चलं मतवालीयां ॥

२

मृदु मृदङ्ग बाजत आज वेखो सइयाँ ।
तकृटधि क्रिटि तक् धुमकिटिधिधिकन बाजत मृदङ्ग
धुमकिटिधा ॥
त्रिकटधा धिकटधा धिधिगन त्रिकट तकताधा ।
तकिटतकाकिटतकधतातातकधुंकिटतकिनागीस्तो
थरोकोथुंगोंनोतेंतमेंतमेंतरिलटुगोनाँगीनाँगाठुङ्गो
थादुगदुगदुगगेदीगनधिधिगननगदितधिटकिटतिट
किटिगिदिगनधाधाधाधा ॥

नूरपुरी झिंझोटी—धीमा तिताला

ओजी झलकैदीयाँ परीयां नैनादीके छीयांवि
लगन लगीओ ।
नूर शहर दीयांवि ठंडड़ी छइयां मेरा मांयाँ विचवेमैं
वारी चन्दा विचवे महबूबांदा थाना ॥

२

ओजी झलकै दीयां परियां नैनादा ।
टेढ़ा घाटा वारीवे विखरा पेड़ावो चढ़के सोणा
तोरवल पहदे मेरे सोणा गोदो तेरे वालक
यानावे मोया ॥

२

पर्व्वत तेरा: मोहावना राजाजी ।
सुखवे वसे राजा ओनगर तेरोओतू जोवी मैड़े
मनभावना राजाजी ॥

झिंझोटी—तिताला

जम्बूदा पहाड़ वेख लाजा सोणा जम्बूदीवे कला
राहैं पानो असी लाय कलेजे में धाय याड़ा ।
सतवे सहेलीयां सबे हुन चालीयां उतरो रावीदे घाट
झनकार सोथाट सभी वेल धाय याड़ा ॥

जोनर बंबंबं शिव शिव रटे।
र होत तन ताप तुरतहि आनन्द उर प्रगटे॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

वंशी बजावे नन्ददे गुमानी ढैलावे।
सुन्दर-श्याम-मदन-मनमोहन उर वैजँती माल॥
वंशी बजावेदी तान सुनावे सुन्दर नैन विशाल।
कृष्ण रसिक मन मोह लियोहै मोहन-मदन-गोपाल॥

२

कान्हने बांसुरी बजाईरे मुरली की टेर सुनाईरे।
मुरली की धुन सुन भई बावरी सुध बुध सब
विसराईरे॥

३

दाखा भूरयांवे छांवे।
राह मुमाफरानु घर भेज उठदो मैं वेरीयांवे॥

झिंझौटी—तिताला

मैकिथ्थे टुढ़ेंदी आईयांवे मैं किथ्थे गोरीदा
कगणा यारवे।
नथनीदा मोती फौजदार बनोछे कजरा थानेदारवे॥
मैं इथ्थे० ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

वोशोरीया परोहै तिहारे वसमा दिलोंदा दरद
कोई जाने।
दर्द बन्दी दर्द वेदानारा रहो दर्द आशिकके पहचाने।
तेड़ा ध्यान लगा उमगसे जब इशकांदो
रमज पहचाने॥

२

सांवलड़ानी वेगुजरदी नाहीं गुजरान।
रात दिना मैनु ध्यान तुसाड़ा भला बुरा पहिचान॥

३

असल सीयालीदा चूंड़ा रङ्ग लाना।
रावीदे पारों रांझेंदा डेरा अङ्ग सीयाली रङ्ग थाना॥

४

मैं ममइयां तेड़े नाल मैं भूली माड़ी जान।
कबकी मैं ठाड़ी ठाड़ी अरज कराआंवे मीयां
इतनी अरज मैंड़ी मान॥

५

वोमैं बन्दीया आपनै चाकदी मोज माहीदा
दिल राखदी।
रांझण मैंड़ा वारी वेमैनु मिले मौज मिया तैंनूभी
गल आंखदी॥

६

जिन्द दिवाने तेनु वोपरी रमझ अदाए सिख लाइयां
नाज भरी।
मनदी मुराद तेंड़ी नित रब देवे और तुसी मौज
करो घरोए घरी॥

७

गुमानी मोयांवे नेह लगा तेंड़े नाल।
अपनी मौजसे असा दामन लगा तेंड़े तुंभी मैनु
चितसे न निकाल॥

८

मोया रांझे मैंड़ें नाल बोल आवे कर महर नजर
दिलदी घुंडी खोल।
अपनी मौजसे तुझ पर रहदी एदिन रात असी घोल॥

९

भलीयांवे नैना वालोयां असी तेंड़े नाल दिल लीता
सालु वालोयां।
मायल करसानुवे घायल कीता तिरछी चितवन
भालीयां॥

१०

एरे हांरे जादू करके मेरो मनहरके अपने वशमें
करके जाओ कहां अबसरके।
कहु अखीयां तोरे पायन परके शोम नीहरके सोय
रहों टुक लगकर गरके दिलवर जानो झिगरके॥

११

यार लगी तेरे नैनादी अदा मैनु प्यारी।
दूर दूर जांदा नेड़े नहीं आंदा आशिक रङ्ग फकीर
गरीब सांवरी सूरतदे बलीहारी॥

१२

हो रव्वाहे मैं वारीयां मैड़े प्यारेनु कोई समभाणा।
देशडा पराया मुलक विगाना बन्दोनु साथ निभाना ॥

१३

मेरा मैंहो रांझाको किम गुण लिया थारे देश ।
तख्त हजारेदा वेगवरु जदाना नूरपरेनू छाड़ चला परदेश ॥

भिंझौटी—जल्द तिताला

लाखा बार सदा समझायानीवे ।
साड़ो गल्ला वारोवे एक नहीं मानदा शुभ रङ्ग कहदा हजारवे ॥

भिंझौटी—तिताला

जटोदे नैन सँभाल जादूड़ा मतडार ।
नैन तुसाड़े वारो बरछोदो नोकें मेरा प्यारा लगदे वेख साड़े नाल ॥

२

समझाले मन अपना परो जोगोड़ा चाहने नाल तैंड़ा निरभाव करो प्यारे ।
एती मगरूरीना कर जोवनदो अपने उमगसे मोहनो प्यारो इस दुनीया एक पलदा सपनारे ॥

३

क्यों रव्वा वेखनदो दिवानियाँवे तैंड़े नाल इश्क पाया।
जोगो बनके सब जग ढूंढ़ा अजहूंन जोगोदा भेद आया ॥

४

इश्क सिपाहीयाँदे नाल लगावे बिन देखे नहीं चैन रव्वावे ।
नैनादा हाँसिल इश्कोंदी बेड़ो छैलातू बाग तमासे नजा कलियां गुण भरोयांवे ॥

५

जानो मियाँ तुसाड़ो गल्ल सुन जावे ।
याद रहदियाँ जुलफों वारे तखत हजारे दावे ॥
तेरो मारो मरेदोवे जानोइ दरसन वेखा बनावे ।
इशकदा हासिल शोरो यहो भरदो विन वेखे वेकरार दमनावे ॥

६

लगे चकाला रूपो अमर अन्तरे ।
पित धरवाका जूड़ा मुरलो अधरे ॥
तड़ित जड़ो आभा रूप किम्वा मनो लोभा प्रभाकर शशि धरणि खरे ॥ अन्तरे० ॥

७

तैंड़ा इतना मान गुमान भला गोरो सुनवे ।
नूरपुरेदा लहँगा सोहे लावन छापेदार ।
आखाँ तेरे कजरा सोहे चलो मुसाफिर मार ॥
भला गों० ॥

सुखांदा सुखांदा नाजान जावे राहरास यार छुनक सर्वे निगह मोयाँवे ।
मानूतो रहंदो शोरो येहो फिकरवे तिरदे दुखांदा नाजावे ॥

९

जोर नहीं चलदा सैड़ावे जालो यावदे आगे विछाना ।
क्योंशोरो अरमान चाखदे मिलजेदा एक दम आपो आणा मिल जाना ॥

सुखांदा सुखांदा मानु राझदा मिलनावं ।
शोरो तैंनु कसम समझ वतलाणा दुख चन्दड़ा कोथिये पालावे ॥

११

नैन सोयाइयांदे जोर जोर जड़ेंदे लड़जांदे रव्वांदे गम।
ओशोरो मैंभो सुनीयां कहीं शोर निजारदो जिथे महबूबां वोथे तूंभी रमजा ॥

१२

मैंनु चुभदे रहदे तोरवे अँखि बहादे नोरवे ।
अति रङ्ग नेह खड़ो पुकारांदो जङ्ग सोयालेदो होरवे॥

१३

छियरे मिलनेदो मैंनु आसवे बैरन भई मोरो सासवे।
अतिरङ्ग विन कैसे मन समझाऊं नेह रङ्ग विन जीयरा उदासवे ॥

१४

तेज निजारेदा गमजाँवे तेजना वाले सोयाँ
हमने समझा ।
गिलगुलका काल वाले यार मेरे शोरीदे मन
विच रमजा ॥

१५

चीरा बलदार बाँधो शौख मेरो जानवे ।
तेरेतो चोरेने वारावे सब जग मांझा सोरा सोयां
इश्कादा बड़ा जञ्जालवे ॥

१६

तेरावे सोयां पलकादी कुछ कही नजाय कज अबरु ।
चुश्त चालाँकियांदे नाल सन मेरा छोन शोक रङ्ग
कज गबरु ॥

१७

बो लोकाँगे जाँदिया खेड़ा पुंछदो राँझेनु कोई
बतलावे ।
तानुतो इश्क पाया नाल सखियांदे रङ्ग भोने इन
गलादा गम खादियांवे ॥

१८

बनशोका माई राता चोलरा ।
जोकुछ मांभा बदन को सेड़ा जान सुखड़ा
तुसाड़ा परोदा ॥

१९

दीठोयांवे पाक सैंताड़ो यह दोस्ती नहो वालेचाकवे।
परियां मरदो क्योंनहीं देखदा रङ्ग भोने इन गलान
रहियां ताक्वे ॥

२०

अच्छा गुमानीडावे मैं तेंडे वेखणदी मुश्ताक
रहँदो दिल जानो ।
यमुना तीरथ गोरी चलो उमगसे भरके घड़ा
घडुला पानो ॥

२१

विरहानु संभालवे गुझो गूझो सूला आशिकदे
होंधो पार ।
नाकर भेड़ा शोक रङ्ग सुन लेनी अरज निहार ॥

२२

मिलायां सानु राँझणावे हैंतो तेरा राजो यार ।
इश्कदो मसलतदा कौन होंदा काजो शोक रङ्ग
इश्कका जो यार ॥

२३

मैं चुकोयां नेह लगायके प्यारे तेड़े नाल एसो
महोयांदे कोलवे।
रम रहा एमो गरोबांदो खबर लेदा होर
निमानोदोवे ।
जिन्द फेर देवो राता रङ्ग भोना योंहो चावनके
साडो जिन्दरू कोतोवे ॥

२४

महोयां चराँवदा होयार ।
होर मोयाले तेनु रब उड़ो कदो आजिज दिल
तुसी नेड़े नहीं आँदा वेयार ॥

२५

माड़ो यार तेड़े नाल वेमोयां लग गइयाँवे जालम
अखोयां ।
इश्क छिपाया छिपदाभो नाहीं आजिज दिल नाल
फन्द यों वेमोयाँ ॥

२६

तुसोन जासो सेडा प्यारियाँ आशिकानु रोदे छड़के ।
जिन्द तुसाड़ो रङ्ग भोने सुनवे महबूबाँभो रमणावो
आजाना भानु मुड़के ॥

२७

जिन्द लगो तेड़े नाल सोयाँवे ।
वेखनदा मुश्ताक माड़े आजिज दिल नहीं जानदा
सेडा हाल सोयाँ ॥

२८

यार जाने बाको आगो यार होंदा बार बार ।
अगर दरआशको खाँई मेरा यार न्याउदा विन मया
दस्त वरदार रङ्ग भोने तबही करां शुंकरह आर॥

२९

रहदो रहदोवे आस रहदो भला भला विदेशी तेड़े
फिर आवनदो ।

कोई जाय लेआवो बिसनु मछली जेहा तड़फे रङ्ग
भीने गुञ्जदी फिरूं जगंल बिच आमो मेंडे पास॥

३०

छेडे चाकरी मेंकरदियां हो नाहोयाँ।
ओरीदा मैनु दम गनीमत मिलना राँभेदे नाल
सुख पाइयां॥

३१

मुलक गुजरात दानी गोरी एदा।
उमगे जोवनदा तेंड़े धोबां पइयां मुजरा पहली रात
दानी गोरी एदानी० ॥

३२

वे जालम आलम मरदानीरे तोखे नेना संभाल।
नजर तुमाड़ी तिरछी वरछोरे मोयां उमग दिलदीं
वेख भाल॥

३३

एलटक चलेंदडी ठुमक चलेदड़ी होजूड़े वालोदा
जोवन जोरनो जोरनो भला गोरी।
नयन दिल नाल करदीं मुजाका कानो बिच सोहे
वुन्दे वालोयां भला गोरी॥

३४

लगीयांवे म्हाड़ाहे रैनाजी।
हाँरे सायबांवे नोंको लागे चाँदनी हाँजी मैड़ा यार
खाड़ा तांड़े बगीयाजो॥

३५

दुपट्टे वाले बोमीयाँ मोहो माहो मेड़ी जान।
दमन लगेदो वारो शरम तुसानु ज्यों भामी त्यों पाल॥

३६

मेंशरमादीयाँवे तेंड़े नाल गला करोदीयाँ।
बाबुलदी सोंवीरमकी सौं मेरा मीयाँ मैं तेंड़ी कसम
नहीं खइयाँ॥

३७

मैनहीं जाँनदी सजनावे।
बसदी मे राज पुरेदीयां तू साहब मेरा मैं पहचानवे॥

३८

राँझा जानवे मैं तक आइया।
राँझण मिले मेनुमें वारणे जाँदी कर रही सौत
बुराइयाँ॥

३९

क्या बाला बतलावे लाला तेरे गले विच
मोहनमाला।
क्या कलीयाँ कछनार को सोहे तूतो फुल गुला
लालाला॥

४०

साँवलीयाने जादू डारारे।
एकतो विरहिनी विरहकी माती दूजे मन बस
कीया हमारारे॥

४१

सावलड़ा प्राणवे आन मिलावो सुझनु मेंड़ो जानवे।
उस विन दीठे कलन पड़दी क्या संझा क्या विहानवे॥

४२

देदा क्यों नहीं दादवे माड़ी।
मेंखड़ी करां फिरीयादबो तेंड़ी॥
बाबको मैं ठाड़ी ठाड़ी अरज कराशाँ बंदीदा मानो
फिरियादवे॥

४३

गोकुल मधिवे तेंड़ी गोर गलीयाँ।
अलीयां मिलीयां भलीयां हिलीयां चलीयां कुञ्ज
गलो रलीयाँ॥

४४

मेरा माहीया वेवालम याँणा नाल सहीयां साड़ीयांणो
नाल नेह लगणदा सेलवे।
बेपरवाही नाकर नाल मवीदे गरोव तेड़े असी
आगेको होणावे॥

४५

क्यों भुलीयांवे यार याद मेंड़ीयां होमरीवाँदे
रमदे लोकां।
आपन आवे वारीवे नाखिख भेजें कीहुइयां तेड़
मिखदेनो मिखदे

४६

पवनम लगीं तेंड़े नेड़े वो सजन साँईं तू मेंड़ावे।
जिन्द डरावीपे टोसन लागी अङ्गसीयालेदे खेड़ेवो

४७

मेंवारी वेमीया सोनेदा जमाल।
अंग सोयले मैंनु छोड़ कित जाँदा मेरा मियाँ बुझदा
क्यों नहीं हाल॥

४८

भना सानु मिलकर जाणावे मिलकर जाना॥
जानी सिपाई मिल०।
मुशताक नजर नजराँदे नालशोरोंदा कौन ठिकाना॥

४९

मेंड़ी तेंड़ो लगन लगीवो लोक दिवानी हसदावे।
बाँकं नैणादे यारोदे नाल केहड़ाहो जीय डरदा
इशकतेडरे नाल हँसदा जीय वसदावे॥

५०

जालम जटीवे नैणावाले जटीवें।
चलो सइयाँ असी वेखन जइये राझण वाली हटी॥
हीरणी मानी इटेठींदी राझण ढोदा मटी॥

५१

वरकनदा जानु रब्ब मेंड़ाना वाला।
वरकनदाँ जादाकेहीं असी नाल हुइयाँ पोदे
लड़ाइया वारी सोणा लड़दे अपने लाजेनु
रब्ब मुडवे लाव॥

५२

आगम तेंड़ावे मेंड़ी जान मेड़ावे सुजाहोला साँई।
आशक रङ्ग तेंनूवे देंदावाइयां मेरा मोया लाख
वार जांदे सिपाई दिलदो मुराद भरपाई॥

५३

मेड़ा डोगर दानीवे मेंनुले निराला रखदावो।
सब जग जाँदा तेंनू घर घर वणादे मेरा मोयाँ नाल
मगोंदे कालेपठावो॥

५४

निरत रहदी तेंड़ी याद मेरा साँवला प्यारावे।
कितवल वेखाँ वारीवे कितवल जाँदा किसनु कराँ
फिरियादवे॥

५५

साँवला आजानी मेंड़ा मन चाहे तेंड़े मिलननु
आमिल गुमानी गोरी।
चाल चलत कुढ़ियांना सजन मोतीयाँदा दाना गो०।
सात सखी मिल पानीयानु चलीयां असाँवी
पनीयांनु जानागो०॥

५६

चूड़ा नाजो झमकेनी लाल लवाँ विच दाँत जावाँ
हरख मिसीदी दमकेनी।
हाथाँ विच महदी लाल रचरही अखीयाँदा कजरा
मेड़ी जान का नाद बूंदा वाला दमकेनी॥

५७

राज करे तेड़ा चहनाबो तू लोकाँ नाल मिलदा
साथो करदा रहणा॥
कैला इशकदीयाँ झाँकी किरतेनु नोशा बना मेरा मियाँ
अणीयाना तू सयाना॥

५८

समझत रमझे हजार मोयाँवे इश्क टोयाँ हाँहाँवे।
इनवे महबूबाँदी अखीयाँ बिचवे असी खमाराँ मोयाँ॥

५९

जिन्द मेड़ी तरसेंदी तेड़े कारण ढोला तू मिलावन
मेड़े होहोहो हो सुभे।
असीये गरीबाँदे तू अदारङ्गदे देखी सइयों
असो हालवे॥

६०

दाखा भूलियाँनीवे राह मुसाफिरानु घर भेज
सकदीमें डरीयाँ।
थोड़े पानियाँमें मछली तड़फेंदो राजा तेरे चाकरानु
लिखदी मैं चोरीयांवे॥

६१

मानले पियारावे साड़डे दिलांदो गलाँ।
चोरी चोरी आदा वारीवे छिपकर जाँदाहो मेरा
मोयाँ ढूंढ़दा फिरदा इश्क निराला॥

६२

परो रहँदी याद घरी घरी ।
शोरी फकीरांदा जीय मिला मुश्ताक मिलणनु इश्क
लगा भरी भरी ॥

६३

साँवली सूरत ताड़ो मन भाँवदी ।
जोतू चला वारीवे जानन देशांवे मीयाँ नेह लगा
शरमावदी ॥

६४

छोड़ेला हुकमादीं बन्दी ताँडी ।
ताँड़े हुकम विन पल नहीं कटदी शोरी सी सौगँटे
मैंतेड़ी खाँदी ॥

६५

जटियादीहु देन कमाल मियाँ ।
शोरी सिर पर पचरङ्गी चीरा पान खाए मुखड लाल ॥
चश्मो विच रैंदी तैड़ी याद जसटी प्यारी लगदीवे
तैड़ो अदा ॥ जटी० ॥
भावे तू जानन जान शोरी मीँया साधु दिलाँदी
फिरिया ॥ मी० ॥

६६

प्रीत करणी तोसो असानवे निभाना छैला मुश्किलवे ।
हथाँ देदीनु वारीवे रूस रूस जाँदे वो नित नित
करदे मौनवे ॥

६७

भूलड़ीनु राह बतलामीवो ।
जग सियालेदीवे राह बतलायजा मेरा मीँया राँझेदा
दरद देखामीवो ॥

६८

मेंड़ी कमलीदे लवड़े झवड़े वाला सइयों ।
अतर गुलाब भरे मुँह महकैदे वोमींया नथा
विच मोती लालवे ॥

६९

मैनु दरद श्रोमाये हुण कसम नबोदी खाँदीयांवे ।
खेड़ेदे झेड़े मालवे तुसी लड़ादांवे तैंनु चश्म जबरे
मत श्रांदे माये ॥

७०

नीमानीदा चूड़ा रङ्ग लागावे ।
अब्बदा चूड़ा वारीवे रावीदा थाना विछुड़ा दोस्त
मिलानावे ॥

७१

तैड़े वेखनदा मैंनु चाहवे गुमानीदा सोना तैड़े देश
चलना जरूरवे ।
आपन आवे वारीवे नालिख भेंजे वोमियाँ कधीतो
दरस वेखावनावे ॥

७२

साँई साँई जाँनदा मेरा मोयां ।
भेद दिलांदी वारीवे मौलाई जाने वोमींया तूको दर्दे
पहचानदा मेरा मियाँ ॥

७३

वेखनदो दिवानीयांवे मैंतो तैड़े ।
जावोनी कोई मुड़ले आवो होर जटी सुख पादीयावे

७४

डावर नैनी तू माड़े डेरे आवोनी ।
रैन देहा मैनु ध्याने तुसाड़ा वो नैनीदा मुल्क
बसावोनी ॥

७५

मैं वारी सोंना तैड़े मिलनादे चाव ।
कदीतो मौलावे दरस देखावे मेरा सोणा मेहर करी
घर आव ॥

७६

चीरे वालाहो छैला यार मैंनु भांदावे माही वाला ।
सोनेदी सुराहो वारी मीनेदा प्याला वे आप पोवे
मैंनु पिलावे शोरो मतवाला ॥ हो छैला० ॥

झिंझोटी—धीमा तिताला

काकरेजो चीरे वाला मीँया ।
शाल दुशाला वारीवे मोतीयांदी मालावे कानो
सोहै बूंदे वाला ॥

२

चख विँगानी चाकरी वेहा जिर होकर
रहेना मीयांवे ।

वेखनदे सुरताक शोरो मियाँ कोकरणा तुसो
नोकरीवे ॥

३

मैड़ो तेड़ो नहो बनदोवे बनदोवे ।
वारो सोना ते मैड़ा कोतवालवे मैड़ा तेड़ां न्याव
करदोवे करदोवे ॥

४

इश्क लगावे ढोनन यारदावे मियांवे मंनु तारणा ।
हांहां वे हांहां हंहंहूं इश्क० ॥

झिंझौटी—तिताला

राभां मानु अखो वेखला जादू तोदे कौन सोना
इरादा क्योंवे ।
राभन मैड़ा वारोवे मैं राभनदो वो मोया इन क्यों
तुसी चोरी छोड़ जादा मोयांवे ॥

२

आमिलवे मानु यार मैड़ावे शुजाहोजा साई ।
आठ प्रहर वारोवे तैड़ो याद बिच रहदा अशिक
रङ्ग मुरादें भरपाई ॥

३

सुनवे मोहन यार मेरो तेरो दोस्तो लग गइयां रावरे ।
आपन आवे वारोवो नालिख भेजो
वन्दोदा कौन हवालरे ॥

४

मैड़ो वातड़िया सुन जइयो हो भला जाने
वाले मियाँ ।
तूतो छैला वारो वे तोर हजर ढुर ढुरके मेरा मोया
मेरी एक नमानोवे भला जानें० ॥

५

दिवाने चेटक लाया वोचेटक लाया को फल पायावो ।
अदारङ्गदो वारोरे मिमत पूजोयांरे विछुड़ा साजन
साईने मिलायावो ॥

६

बोल सुनाय जावे सइयो सानु भांदे भांदे ।
अहर पूनेदे बिचवे आजम वेखदेवो मोयांको शोरो
शरमादे जांदे ॥

७

दिल रखना राजोवे फकोरांदा प्यारा नोवो ।
आपन आवे वारो नालिख भेजे हो मोयां शोरो
शरोरांदा नजारांदा चाकर प्यारा नोवो ॥

८

जाने वाले मेरो वातड़ियां सुन जाइयो आइयोहो ।
मैंभो तो चाकर रहदे शोरो मियाँ फजल करो तुसो
आइयो जाइयो ॥

९

छड़दोता भिभिकणा राँभेदे कारण वोमोयां ।
आपन आवे वारो ना लिख भेजे कमलेदा
कौन ठिकाना ॥

१०

मानुको जाने मैनु भलावो कमला नदाना ।
मैंभो या नोरा वारो नेहको जाने पूछन लोतो कोई
रखन सयाना ॥

११

माहि ड़ावे मैड़ो जान ।
जमुनाके नोरे तोरे गऊ चरावे वंशो
वजावे गावे तान ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

आन पड़ो ताड़े इश्कोदे फन्द बिच मारोया
जालम मारोयारे ।
कोकरा साड़ा बस नहीं चलदा सभो गलसु
मैंहारोयांवे ॥

झिंझौटी—तिताला

सावलो सूरत ताड़ो मन भावदो ।
जोतू चला वारोवे जानन देशो मोयाँ
नेह लगा शरमाँवदो ॥

२

होछैला हुकमादो बंदो ।
ताड़े हुकम बिन पल नहीं कटदो
शारो सौ सौगंद तेरो खांदो ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

निमानीदी मानवे रांझेदानी घर
आवनावे घर आवना ॥
तखत हजारादे वो हाकिम हुइयाँवे सोणा ग्रोरी
कदी तू बंदोनु दरस देखावणा बीबांघर आवना ॥

२

रांझे रांझे मैनू सब कोई आखो हीरण आखो कोईवे ॥
रांझण मैंड़ा वारीवे मैंरा झनदो रांझे ग्रिरदा सांईवे ॥

झिंझौटी— तिताला

वेखनदी दोवानी योवे जटी पञ्जाबी मैंतो तेंड़े ।
जावोमी कोई मुड़ आवो होर जटो सुख पांदोया
याने जटी पञ्जाबी मैंतो तेड़े ॥

२

काग्रिदा कित्थो सों आयावे ।
खबर रांझेदी वारी मिलनेदी लइयां इत्थे सों आयावे ॥

नजा सानु नजावे महेरम यार हुनक
मरें दीयां सुखादां सुखांदा सानु मैंनुतो ॥
साड्ड़ो सलामवे क्योंकरदा नीचो नजरा नैनावाले ।
क्योंहोंदा दिल विच खफा मैंतो
तैंड़ी बोलीदे गुलाम वेतो ॥

करदो वेयाद करदो ।
ग्रोरी उठदा दिल विच धुंआ विरहांदी मैंतो मरदी ॥
दो नैनादो रमजा वालियाँ नैना साड़े फन्द नैनोवे ॥
नैना तुसाड़े वारो वरदोदो नोकावे
जित फन्दे तित फन्दे बन अनो हांवे
तेड़ा चाह महल फिरदेनी हुण देखण आदे ॥
किग्रोरी तुसी मिलदा क्योनहीं को हुइयां
साड़ो गुजर गइयां वे ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

गुन्हेगार भलावे सोना तेड़ावो ।
अरज बन्दोदी सुनदा क्यो नहीं दिलवर यार
दिखादा तू मेंड़ावो ॥

दानीतून मन मतन दिरना आहे
तनदिरना तन दिरनां तननादर तुंदर ॥
दरि दरि दरि दरि तदारत दरदानीतन ।
नदोदे जुलफ माशूकाँ कुदम मिसकीण तुराँ बांहे रतन
कि चिरा आग्रिक परेचाँ ग्रोरी मेदानो तनु ॥

३

दोम्तननतनदिरनातदरदानोदो० ।
आहे ना तनदिरनातनदिरनातदरदा० ॥
तेरे वजारमे यार क्यों करन बिगरे सौदा एक नहीं
उस फलन आजरताहै कंखरीदार कई तारदानीत० ॥

४

तूतो साड़े नाल करदा सोणा रमजा गमजा ।
कितवल जांदा वारीवे कितवल कहुंका रांझेनु बोल
सुनादे हमजा ॥

५

तूं क्या जानदानी वेसोणावे साड़ड़े दिलादे महरम ।
वोग्रोरो सानु मुख विख लाजा नहींतो रहदा
साड़ा भरम ॥

६

वन्द पहचानेहो वाला वेयानांवे ।
राजा तोड़े हाथीयां पाइयां पार वताड़े जोन लगा
भूलो वोरानवे आनावे ॥

७

सजनादे नाल वोजिन्द लगीवे महोब्वत श्यामसों ।
नैन मिलाये महरदे मोहन वलिहारि यादो जिन्द
ठगोवो ॥

८

नैना नजारादे न्याज परोदावे ।
किस बहाने आजा म्हारे डेरे सिरसे बांधे
चारी जरीदा ॥

९

सइयोनी मैकों बोताड़े इश्कदी झालावे ।
नापग उठदा वारी वेना जिन्द कुट दोहत विच
चुभदोयाँ भालावे ॥

दिल जानी मैंड़ा ढोलना ।
जिन्द मैंड़ो तैं डेघोलोनी कितो पीय पायो
आनमोलना ॥

११

हरि बिन को जानं प्रगट कोन्यो नहीं प्रेम ।
मनही मनमें मूंद राखिये जप तप ध्यान और नेम ॥

झिंझौटी—तिताला

परियाँदे चाकर चाह करंदे तंनु इशकदी कारण
आखरके ।
सानु लगा दिल लगा शोरी मीयाँ इशक लगा मानु
आशिकदे ॥

२

धिगांन वालीयाँवो करदायाँ नैनावालियाँ वोकदीयाँ
नैना जोरा जोरा कमला जान के मानु मीयाँ ॥
मेरड़ कोलो तूं करना मजांका लगदोयाँ शोरोदा
टप्पा गानी मियाँ० ॥

३

दावन लगी गुजरातदा एगी गोरीए ।
दावन लगी वारीवे नैन तुसाड़ेवो मीयाँ नैना चलीं
तेरे साथदा ॥ गो० ॥

४

अपना लटकेंदड़ा साटर भला ।
सथ कुड़ी मिल पानीनु चलीदा शिरदे गागर अला ॥

५

जमुना जल भरन चलो पनिहारी जोबन मदमातो
सूरत न्यारी न्यारो ।
भर भर घड़ा शिर ऊपर धरके बोल बोल ऐसो
मोहनीको डारी अलप वयस वारी मार हंसे
देदे तारी ॥

६

यशोदा तेरो कान्हने मोकों कैसो गारो दीनो
कालिन्दीके तीररे ।
बाट चलत बरजोरी मोरी बहियां मरोरी
कैसे धरूं जिय धीररे ॥

मिलकर आवावे मीयाँ मेरावो यार सिपाई सानु ।
आपन आवे वारीवे ना लिख भेजें मीयाँ सांवरो सूरत
वेख लाजा सानु ॥
ढोलन मत जावो साडी गलां जी तरसांदा सुनवे
मियाँ खेड़े नूवे सानु ॥

८

फन्दा क्यों कर छूटै मेरो जान मेरावो मैंवारी सांयवां।
सिर पर गागर वारीवे पग ठुमक ठुमक रस ले
गयो ॥ सा० ॥

९

लगीयां जबावन देदीयां वो छैला जोबन अखीयांवे ।
तिखीयाँदा तीराँवो तबदी कोरां जोगरांदी घाव
करैंदीयां याद लगी माड़ा प्यारावे ॥

१०

मैं क्योंकर मन समझाऊंगी ।
आवो सइयाँ गल लगजा रमझो वाला यार छिप
रहियां परगइयां ॥

११

तुझ देखनदा चाव मैंवे सानुड़ा ।
इतनी अरज शोरो मानले मानुड़ा ॥

१२

याद लग रहंदी माड़ी रहंदे कदम ।
वांक बरस कहै कोई नहीं दोसदा कासे करूँ
फरायाद कोनसो देदा मांड़ा दाद ॥

१३

चारां बाँधनुदा बांवलामोवो मोयँवा ।
बगल सोहे जामदानोदा बूटा मुख सोहे तांड़े
पानादा बीरा ॥

१४

कित समझाय रहो नाजा मैंड़ा माहोड़ा ।
शोरीदा झगड़ा मिवेर कोई नहीं जाने मीयां
जाने नैना वालीयां ॥

१५

खड़ियाँनी मैंकूकानी आमिल कालड़ी धाड़ा ।
वाजपीयारे कामन मिलियां कौन लेवो मेड़ी सारां ॥

१६

तीखे नैन सँभालवो बाँके नैन सँभाल आलम जालम
वसदानो ओओ ओती ।
नैन तुसाड़ेवे बरछी तिरछीवे जित लगे तित पार ॥

१७

कजरान दिया तैंने कहर कीयावे ।
ये सोहन तैंने सब मोहा तन मन धन प्यारे तुमकों
दीयावे ॥

१८

वोमें बन्दीया अपने चाकदो साथ माहीदा दिल
राखवोमें० ।
राभन मेड़ा वारीवे मैनु मिले मौज मीयां तेनुवो
यही गल आखदो वो० ॥

१९

जिन्द दिवाने मैनु वो पगी रमभि अदाए सिखलाईयाँ
नाज भरी ।
मनदी मुराद तेड़ी नित रव देंदे और तुसी मौज
करो घरी घरी ॥

२०

वो गुमानी मीयांवो नेह लगा तेड़े नाल ।
अपनी मौजसे असी दामन लगी तेंड़े भी मैनू
चितसे न बिकाल ॥

२१

मीयां राँभे मेड़े नाल बोल अब कर मेहर नजर
दिलदी घुलुडी खोल ।
अपनी मौजसे तू जप रहंदी दिनराती असी
घोल ॥ अब क० ॥

२२

मूरख समुझ देख मन माहीं ।
दृष्ट पदारथ जहां लग देखौ तीनकाल सो नाहीं ॥
जगजीवन अनेकन भाँति अबतो न एक आँहो ।
केहरि कूप निरख निज छाया तिहमें कूद पराँई ॥
मोह प्रताप कहां लग वरणों आगम निगम कहांई ।
रामप्रसाद राम सुमरण कर जनम मरण मिट जाई ॥

२३

ऐसो गात अकारथ गारो ।
करी न प्रीत कमला लाचनसों जनम ज्वा ज्योंहारो ॥
विलसत विष वासना निशदिन फूट गई सब चारो ।
अब लागे पछताय पाय दुख दोन दई को मारो ॥
नेकी बदी विचार न कीनो परमार्थ न पारो ।
सन्तदास स्वारथ अपनेको बांध चला शिर भारो ॥

२४

अब तुम देखन लगे मेरी करनी ।
धरणी व्याय रहो तब कोरत सुख सुख नौबत भरनी ॥
वरणी वेद पुराण कविन मिल फिर न गयो कहुं शरनी
अब तुम लगो कहन व्रजजीवन जैसो
तेरी तानी तंगो मेरी भरनी ॥

२५

आज मोहे मिलगयो श्याम-विहारो ।
श्यामा तेरी हसन बोलन मुसकान पर वारो ॥
मोर मुकट कटि काछनी काछे चितवनको छवि न्यारो ।
राज बहादुर साँवरी मूरत चितमें बस गई प्यारो ॥

२६

मोहि निपट कठिन दिन बीते माईरो में कैसो करूं ।
ओसन प्यास मिटै नहीं सजनी घरो पल छिन
युग सम भरूँ ॥
दया सखो घन श्याम लाल विन विरहा
अगन में गरूँ ॥

२७

ऊधो हमरे करमनहीं को दोष ।
ऐसो प्रीत ढरगई लालनकी जैसे मोती अरु ओस ॥
ऐसो चन्द्र मुखीसी कुवरी नहीं कृष्णको दोष ॥
सूरदास यह भाग हमारे मिटत न जोय को
रोष ॥ ऊधो० ॥

२८

मैड़ा माह्येड़ावो कहाँ चला मैनु मार ।
तैड़े दरस बिन बेकल होंदो सुनदा नाहीं पुकार ॥

२९

नेक चलो नन्दरानो वहाँलग ॥
देखा अपने सुतके कौतुक दूध पिलावत पानो ।
हमरे शिरको सुरङ्ग चुनरिया लेगो रसमें सानो ॥
अनरस रीत कहा कहूँ तुमसे दिखरावत है ज्ञानी ।
केती समुझाऊं समझत नाहीं अपनी बातें ठानी ॥
सूरदास जलदको बरषा थोरे में इतरानो ॥

३०

मैड़ा दिल तैं लीताजी यार ।
जानकीदास सहबूब साँवला दृष्ट कटाक्ष निहार ॥

३१

जिस माहबने पैदा किया उसदीया याद न भुलामोवो ।
जानकीदास सुफल तब नर तन हरदम
हरिगुण गामोवो ॥

३२

गूजरी पानोड़ा भरे हो मदमाती ।
रेशम डोरी वारी सोनेदा गडुवा रतन जड़ांवकी
ईडुरी उमगसे रस भरी गगर शीश धर वो मद० ॥

३३

साँचो जांनो सइयां की बानो ।
रामनामको प्रीत जगतमें लछमनदास सिंघ
के मन मानो ।

३४

देख आज आली व्रजराज कंवर आवे ।
केसर को तिलक भाल वारिज लोचन विशाल
मंजु गुंजमाल गले मुरली को बजावे ॥
कम्बुकण्ठ अति अनूप नटवर जलद रूप
भुज सुख पर सदन वदन मदन कुल लजावे ॥
बरणत सुर नर महेश दिनपति गौरी गणेश
हरिके चरणनकी महिमा सूरदास गावे ॥

३५

श्याम मन मानो भई कुबजा पटरानो ।
तीन लोक नाहीं कोई कुबरीके समको ॥
उनको वर आसन सिंघासन पाटंवर पहरायो
हमकों लिख भेजी पातो योग के रसमको ।
उनको सुख सेज्या औ पान दान सुख सो सब
हमकों वो भेजी पोटली भसमको ॥
सूरदास हरि वाहि चरणनको कहै व्रज गोपी आई
खरचो खसमको ॥

३६

राधे कृष्ण गोविन्द गोपाल वनवारी ।
मदन-मोहन मनहरन मनोहर माधो मधुसूदन
मुकुन्द मुरारी ॥
हरे हरे हरे हरे हरे हरे हरे हरे हरे ॥

३७

मुलक विगाना करदोयां मैंड़ा सइयां ।
देश पराया वारोरे काई नहीं अपना
नजर लगी तैड़े नाल ॥

झिंझौटी—तिताला

छड़जानवे तैड़ा देश जोर धिगाना तैड़ा नहीं भांवदा ।
ऊँचे पर्व्वत राँझा वसदा हेटल बसे जग सारा ॥
राँझा मानु पतीयां न भेजें मैनु प्यारा कोल
जानवे जरूर ॥

२

पंछीनीय कौन होंदा कमला यार धिगाना
करदा कमला यार ।
धिगानो मानु छड़ सोंई आदा नैनांद कजरा
संभालनी ॥

३

मेरा मन मोहलियो अछो बनो ।
दाँतोदी मिस्सी वारी अजब बनो मेरा मीयाँ
पांनोदा वरो रङ्ग लालनो ।
एकतो विरहिनी विरह सतावे दूजे जादू डालानो ।

दिया कैसे कटेगी कठिन रतियां प्रीतम
पाई मैंने एक रतियाँ ।
कासिद भेज मैं वाकों बुलाऊं शोक रङ्ग गाऊंगी
मैं गुण गतियाँ ॥

५

वाला वाला परो तेरा जोबनवारे ।
छातांदी मरूंदी होंठादी लाली नैनादा सुरमा
कालारी ॥

६

रैन किथे गुजार आइयाँवे बोवीरे ।
आलस वसव अङ्ग दीठे मैनु नैना लाल सुधार
आइयांवे ॥

७

पनीयां कैसे भरों छोटी ननदोरे ।
भारी गागर शिर सम्भरत नाहीं अचरा कैसे केधरों ।

८

लागीलो म्हारो नेह बंसीवाले सांवरे सों ।
देखत छवि मोरी बहीयाँ मरोरी सांवरी सुरत
प्यारी मन बसी ॥ एह० ॥

९

माथे सोहै वेदनी झुलनीया रतनारी सइयाँ ।
इतना पहर गोरी चढ़ीले अटारी
हाथ लिए करवा गंगाजल पानी ।
सांवन भांदो की निशि अन्धियारी पीछले पहर
गोरी चढ़ीरे अटारी ॥

१०

वारीरे सनेहिया पिया दखन सिधारे ।
कैसे करू मोरी आलीरी जोबन भए मतवारे ॥

११

परदेशी यारे मोकों छड़के न जा नैना
नीमानी तेरी जुलरी ।
भौंह कमान चढ़ी गोशे पर तक तक मारत बान
सनैयारे ॥

१२

निरधन के धन माधो मेरे ।
बारंबार निरख सुख पात तजत नहीं पल आधो ॥
क्षणक्षण परसत अङ्ग मिलावत प्रेम प्रीत गांठ बांधो ।
निशिदिन चन्दचकोरकी छवि मिटत परसकी साधो ॥
कृष्णानन्द प्रेमरस माते छूट्यो जगत को बाधो ॥

१३

राम नाम जपता नाहीं किस भरवासो सोवेरे ।
झूंठी माया झूंठी काया वृथा जनम क्यों खोवेरे ॥
कृष्णानन्द कहतहैं फिर फिर नैन खोल क्योंन जोवेरे ॥

१४

बालम रूसोहै कैसे करूं मोरी आलोरो ।
मन मोहन सों बिछुरत गोया तीर लगा जैसे कारीरी ॥

१५

मोतीयाँदा गजराहो जी म्हारा सायबाँ ।
इस गजरे में लाल लगोहैं और मगायदे हीरा पनरा ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

मैं तोहे पूंछो ननदोइया मोराया मोरीरे ननदीके
पीयरवा ।
में जो गई थी गङ्गा न्हाने मोरीरे सांवल बंसी
बजाईवो ॥

सिन्धी ठुमरी—तिताला

सइयां मोसे रूसोरी कोई जाके मनाले ।
चुन चुन कलियां मैं सेज बनाऊं रहस रहस
गरे लावोंरी ॥

झिंझोटी—धीमा तिताला

बालम राजरे बांका मेरा मारूड़ा ।
तांड़े कारणवे मैं सब कुछ छड़ीयांवे रूस रहे
कौन काज हांजो महाराज ॥

२

सही न जात चितवन की चोटें ।
भई व्याकुल सब गोकुल नगरीरी सितम कियो
यशुमत के ढोटें ॥
जिन नहीं देखी मोहनी मूरत सोहै निपट
कारमनको खो ।

हमहीं अकेलो घायल नाहीं काजम केते
पड़े वाके द्वारे लोटें ॥

३

अबे हांवे मैनु किसीदे नाल कम नहीं अबे हांवे
सोनावे ।
आमिलो ठाड़े बेपरवाहो सोना बातों तो नात बानीवे॥

४

आन बसावो नगरीया हमरो ।
बाट चलत मोहे दुबर भईलो छेकोहै डगरीया हमरो।
दुखको फुहार परत है देखो भींज न पावे
चुनरीया हमरो ॥
तुम छोड़ कायम केहको पुकारूं कोउन
सुनत गुहरीया हमरो ।
यही अरज हैतुरावकी हजरत पार लगावो
नावरीया हमरो ॥

५

भलावामें कब लग जीवां प्रीत लागी जा तेरे नाल ।
किम निरमोहियाने बंसुरी बजाई
पड़ोहों विरहदे जाल ॥

६

जैश्री राधावल्लभ नमो नमो ।
कुञ्ज कुञ्ज द्रुम लता लता तर विहरत
दोउ सदा समो ॥
वृन्दावन यमुनाके कूल वरिन वसन्त जहां तहां जमो।
कोउ कर सके छित आनन्द यह गुण गावत
तन मेरो रमो ॥

७

सांवरेको सहबूब नजर भर देखूंगा मैं खूब ।
शङ्खचक्र गदा पद्म विराजे कुण्डल मोतिन लूंग ॥
सुर नर मुनि ब्रह्मादिक सेवत गावत नारद तूंब ।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत मिटगई मनकी हूब॥

८

दाऊ कृष्ण यशोदा मैया हरषित गोद खिलावे ।
नाना भांति खिलौना लेले गोविन्द लाड़ लड़ावे ॥
ब्रह्मा जाको पार न पावे शिव सनकादिक ध्यावे ।
वाको यशुमति मेरो मेरो पलना मांहि झुलावे ॥
तीन लोक जाके मुख मांही इन्द्र करत सेवकाई ।
वाको यशोमति दूध पिलावे मुख चुम्बत बलजाई ॥
कुम्भ करण रावण जिन मारे खरदूषण दुखदाई ।
वाको यशोमति लूण उतारे नजर लगेगी कन्हाई ॥
निराकार-पूरण-भगवान भक्तवत्सल-सुखदाई ।
अहो भाग व्रजराज महरके खेलत कुंवर कन्हाई ॥
बाललीला नित कब लग वरणूं व्रजमण्डल सुखदाई ।
जैत सखी रङ्ग मोही मोहन वार वार बलजाई ॥

झिंझौटी—तिताला

तेरे बांके नैनानि मुझे मारा वो बेदरदा
तुसी आन मिलावो ।
बांको भोंहें तिरछी चितवन घायल कर कर डारावो॥

२

खड़ी पुकारूँ रब तुही रब तुही मोरे पिया
समझे न नादान ।
चुन चुन कलियाँ मैं सेजियाँ बिछाऊं सेजीया न
आवे मूरख नादान ॥

३

श्यामा मैंनूं फुलांदा गजरा मगायदे ।
चम्पा चमेली नरगस मरुवा जाफर माना गुल्लाला
गुलाबाँदो फलीयाँ लगायदे ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

मधुबनहोंते आई पाती मधुबन० ।
सुन्दर-श्याम कान्ह लिख पठाई आय सुनो मोरी माई॥
अपने अपने गृहतें दौरी ले पाती उर लाई ।
नैना निरखि के नीर बहत हैं प्रेम त्रिया न बुझाई ॥
कहा करें सूनो या गोकुल हरि बिन कछु न सुहाई ।
सूरदास प्रभु कौन चूकतें श्याम सुरत बिसराई ॥

२

सुख सोवे कुमारिका चोर नले तेरो मटोयारे ।
झूठो माया झूठो काया झूठोहै सब बटोयारे ॥

जो आया सो सबही जायगा राजा रङ्क घट घटोंरारे
क्या ले आया बन्दा क्या ले जायगा मरके सटियांरे ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो मटोयामें
मिलगई मटोयारे ॥

झिंझोटी—तिताला

इनमें कौन राधिका रानी।
पूछतहैं रुक्मिणि सखियनसों प्रेम वचन मृदुवानी ॥
नीलाम्बर जाके उर सोहे मुख पर लट लपटानी।
सोई वृषभानुसुता कहियतहै दे अञ्चल मुसकानी ॥
रसके बस कोने मन मोहन सुनके नारि मृदुलबानी।
इह अँखिया दरसनको प्यासी जैसे मीन बिन पानी ॥
शिव ब्रह्मा जाको पार न पावै सो महारानी।
सूरदास प्रभुसों जाय कहियो हरिके हाथ बिकानी ॥

२

मेरे मन बसो लालनको आँन।
तिरछी तकन त्रिभङ्ग चलन की ऐंड़ो बेंड़ो बाँन ॥
मोर मुकट अलबेलो फेंटो पीताम्बर फहरान।
हरिदयाल पुरुषोत्तम प्रभुकी मृदु-मीठी मुसक्यान ॥

३

कौन गुना दधि लूटोरे कान्ह मोरो।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें धर बहियाँ झकझोरो ॥
या ब्रजमें कोई हितू हमारो लोक कहै सब झूंठो।
लपट झपट मोरो बहीयाँ मरोरो गिरको गागर फूटो।
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छबि हाहा करत छूटो ॥

झिंझोटी मिश्र जगंला—तिताला

पीयारो श्याम वियोगी मधुकर।
बिछुरन भए मिलन कब ह्वै हैं नदी नाव
संयोगी ॥ मधु० ॥
नन्दनन्दन मधुवनहो सिधारे अन्त बटाउ लोगी। म०।
देखत लोग हँसैया सारे यह सुख सम्पतिके सोगी ॥
मुंह पीरो कारो तन मधुकर कलीय कलीय रस भोगी।
सूरदास कब ब्रज फिरि अइहैं कहिहों प्रभु संग
जोगी ॥ म० ॥

झिंझोटी—धीमा तिताला

सखीरी श्याम बिना ब्रज सूनो।
भरमत चित रहत उदास नित बार बार सिर धूनो।
यही अँदेश रहत नित ऊधो यही बात तुम गुनो ॥
सोवत कैसे एक सेज पर कृष्ण कूबरी दोनो।
किधों लिये फिरत वे साथी कोधों खाट खटोनो ॥
कोधों नायक होतहै कुबजा मोहन होत नगीनो।
सूरदास प्रभु कब ब्रज अइहैं मिल बिछुरन हरि कोनो ॥

झिंझोटी सिन्धी—तिताला

जैजन ऊधो मोहन विसारै ताहे न बिसारूँ छिन
पाव घरी।
जो मोहन भजे भजों में वाकों यही टेक मेरो
पार परो ॥
वो मेरो मैं उनको ऊधो भक्त हितमें देह धरो।
काटों मैं अजनम जनमके फन्दा बायलै राखों
वैकुण्ठ पुरी ॥
ध्रुव प्रहलाद रैन दिन ध्यावें गुपत रह्योसो प्रगट करी।
भारतमें भरदुलका आँड़ा राख लीया गज घण्ट तरी ॥
सुमरण कीनो द्रौपदी राणी चीर बढ़ाए आप हरी।
दुर्योधन की दुष्ट सभामें दुःशासन विपत्ति करी ॥
अम्बरीष घर गए दुर्वासा चक्र सुदर्शन भ्रमत फिरी।
सूर श्याम गजराज उबारे कृपा-सिन्धु गोपाल-हरी ॥

झिंझोटी—जलद तिताला

आज जगत सों नाता छूटा हुलस हुलस जम लूटोरे।
खाट पकर वाकी माता रोवे देहो चढ़े संग भाईरे ॥
लट छिटकाए वाकी तिरिया रोवे हँस अकेला जाईरे।
कच्चा कोट पक्का दरवाजा जिसोमें माल खजानारे ॥
जिसको दौलत जाकी सुपरत कर रह जाय
नाम परायारे ॥

झिंझोटी जङ्गला—तिताला

बलमा उतारले गगरीया हमरो।
हार गई तन मनसों सगरो ॥
एक वैरन मोरी सास ननदिया दूजे वैरन मोरो
सगरो नगरो।

चाहकी डोर लगीहै हिरदै में फिसरो भई
रमरोया हमरी ॥
हमरी भरी गागर समटे नहीं मांसां मोहन लेहा
खबरोया हमरी ।
छोड़ चरण अब कहाँ जाए काजम चरण अटको
पगरिया हमरो ॥

२

जै नारायण ब्रह्म परायण श्रीपति कमला कान्तं ।
नाम अनन्त कहां लगि वरणो शेषन पार लहन्तं ॥
मच्छ कच्छ शूकर नर हर प्रभु वामन रूप धरन्तं ।
परशुराम अरु रामचन्द्र होय लीला कोटि करन्तं ॥
ह्वै बलभद्र सब दैत संहारे कंसके केश गहन्तं ।
जगन्नाथ जगमग चिंता बैठेहैं निवन्तं ॥
कलपीक होय कलंक ज्यों हरिये जग दर्श गुणवन्तं ।
दशमस्कन्ध भागवत गावैं रूप शरण भगवन्तं ॥
परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम आगम निगम भनन्तं ।
सूरदास प्रभुको पावन पावत अलख अनादि अनन्तं ॥

झिंझौटी —धीमा तिताला

जापर दीनानाथ हरि हरि कीजो कृपानोधि ।
राजा कौन बड़ो रावणतें गरबहो गर्व्व हय्यहो ॥
रंक कुलो जो विप्रसुदामा आप समान कय्योहो ।
कौन खरूप अधिक सोतातें राम वियोग पय्योहो ॥
कौन कुरूप अधिक कुब्जरोसों हरिसुन्दर रूप कय्योहो ।
जोगो कौन बड़ो शंकरतें मोहनी देख डय्योहो ॥
वीर कौन हनुमतसे योधा लङ्का खोज कय्योहो ।
तेल सिन्दूर चरवैरे नाथ हरि भागन आन बस्योहो ॥
अरजुन भीम युधिष्ठिर राजा नकुल सहदेव बस्योहो ।
दुःशासन द्रौपदी चीर खैंच्यो ताको वसन पय्योहो ॥
अम्बरीष घर गए दुरवासा आन सराप धय्योहो ।
चक्र सुदर्शन जारवे कारण जहाँ तहाँ भ्रमत
फिय्योहो ॥
गरब कियो रत नागर सागर मुनी आचमन कय्योहो ।
सूरदास प्रभु गरब छाँड़के हरिचरणन चित धय्योहो ॥

झिंझौटी—तिताला

विरहाने आन सताई मोहे जग बीच करन सुहाईरो ।
खान पान सबही हम त्यागे घर अङ्गनान सोहाईरो ॥

२

रस भरोया महराज मोहिको आन सुनाई बांसुरीरो ।
सुनत बांसुरी भई दिवानी निकसत नाहीं साँसुरी ॥
सिसकत है जोय निकसत नाहीं लगो करेजे फांसुरी ।
शाहा छैल अनोखे कायम काहे करावत हाँसुरी ॥

दूसरी —तिताला

बंशी कों बजायके जाय तरसावतरे दैया ।
मोर मुकट पीताम्बर सोहे लिये लकुटिया हाथरे ॥
गउअनके पाछे मन मोहन आछे आवतरे दैया ।
चकईसो मन भयो हमारा डोरा उनके हाथरे दै० ।
घूमतहैं निशदिन याही विध जैसे आप घुमावतरे दै०॥
भाई बन्धु सब लोग कुटुमरा झूठा इनका साथरे ।
बुध विहारी तुम बिन कोई कामन आवतरे दैया ॥

२

हरिसों प्रीत लगाले काहे भटकत फिरे मनुवा ।
यह संसार रैनका सपना कोई नहीं अपना
माथोरे मनुवा ॥
निशिदिन हरिको सुमरण करले चरण-कमल चित
अटकतरे ।
काम क्रोध मद लोभ मोहको दूरहि तें सब पटकतरे ॥
राम नाम विश्वास भरोसो ताको काल न गटकतरे ।
लोक कुटुम्ब भाई सुत बनिता मतलबही
धन गटकतरे ॥
अन्त समय कोई काम न आवे धरा रहत सब
लटकतरे ।
हरि भज लीजे अबेर न कीजे शुभ दिन कर झटकतरे॥
कृष्ण सनेही चित धर येही बारबार तोहि हटकतरे ॥

झिंझौटी—तिताला

तोसों नैन लगाय रोरो अपने नैना गवाँवतरे ।
तू जित चाहे उत विरम रहेहो हाफ़िज कैसे पावतरे ॥

नैनवा तोसेँ लागोरी बिन देखे नहीं रहत नैनवा० ।
घरी छिन पल एक भोर भएकी द्वारे ठाढ़ी तनक
साँवलिया देख नै० ॥
सास लड़े ससुरा गरियावे ननदी अधिक रिसाय ।
बिन देखे साँवलिया तेरे पल भर रह्यो नजाय ॥
जो तुम मिले तो सब मिले छूट जाय जञ्जाल ।
नहीं तो जियरा जातहै बुध विहारीलाल ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

श्रीगोवर्द्धन नाथ हमारे गिरिवर धार्‌यो हाथ परेरे ।
भक्तन के रक्षपाल महाप्रभु इन्द्रको गर्व्व हर्‌योरे ॥
श्रीनवनीत प्रिया अति सुन्दर यशोदाजीके
प्राणपियारे ।
वाल विनोद करत अङ्गना में गोपीजन प्राणप्रियारे॥
श्रीमथुरानाथ मनोरथ पूरण श्रीविट्ठलनाथ
विराजत भारे ।
द्वारकानाथ दीनके वन्धु गोकुलनाथ गोप रखवारे ॥
गोकुलचन्द्र महारस पूरण सब गोपीजन
में रास रच्योरे ।
देखत चन्द लज्जित होय ठाढ़े सुर नर मुनि
तप भूलेरे ॥
मदनमोहन सुन्दर-शुभकारी पीतपटधारी
कुञ्ज-विहारीरे ।
माथे मुकुट मुरली कर राजत यमुना पुलिन विहारीरे॥
कल्याणराय परिपूरण कामहै वालकृष्ण आनन्द
सुख कारीरे ।
गोपाललाल रघुनाथ श्यामघन सूरदास हरिको
वलिहारीरे ॥
शिव सनकादिक नारद शारद ब्रह्मा शेष नित ध्यावेरे।
द्वादशस्कन्ध भागवत लीला व्यास विमल यश गावेरे ॥

२

नैन मिलावत श्याम तेरी चितवनने मन मोहि लिया।
हँस मुसकान लखान कबोले उमग होये
दिल आतीहै ।
लीजो उरसे लगाय साजन यही बात मन भातीहै ॥
देख मरोरन भौंहैं कमान शर पलकोंने
क्या काम किया ।
जुलफें छूटी मुखड़े ऊपर इश्कका जाल बिछाय दिया ॥
तेरे देखनके खातर ऐसा मैं सामान बनायाहै ।
अजब आन चित बसी तुमारी और नजर न आयाहै ॥
बुन्दावाला तेरे कानो में मुखड़ेमें तेरे पान सजा ।
गलेमें मोहनमाल विराजै प्रेम प्रीत का बना सजा ॥
उरझे प्राण जो सुरझत नाहीं अपना बस किया होया ।
जबसे देखी हमन तेरेको ख्याल खुशालने जो दिया ॥
प्रेम प्रीत का बना सजा बनाये तेसी उमँग खोयारी ।
है जीको जान ले साँवल रङ्ग बलिहारी ॥

३

श्रीरघुनाथ दयाके सागर चरण पर्‌यो कमलाकान्तं ।
आगम निगम जेही भनत नेत कहि वरनू कहा
अनन्तं ॥
सुर नर मुनि हित जनम लीनो हरि अज अविनाशी
अचिन्तं ॥
करहुं मगाय हेम रथ सुन्दर तापर आप चढ़न्तं ।
खैंचैं तहाँ सखा लघु नागर हरि वहु विधि विहसन्तं ॥
वाल विनोद करत अङ्गनामें काग भुशुण्ड चुगन्तं ।
अवधपुरी दशरथ नृप मन्दिर लीला नित्य करन्तं ॥
धन्य कौशिल्या धन्य भानुकुल जहाँ प्रभु नित्य रमन्तं ।
राम प्रसाद वैश्य यश वरणत जेही श्री भगवन्तं ॥

४

चन्द्र खेलौना लैहौं मैया मोरो ।
जइहुँ सचल लोटिहुँ छिति ऊपर तेरी गोद न ऐहौं ॥
धौरीको पय पानन करिहौं वेणी सिरन गुथैहौं ।
ह्वैहों लाड़लो नन्द बबाको तेरो सुत न ह्वैहों ॥
आगे आव बात सुन मेरी बलदाउन जनैहौं ।
अति लोनो शशि हुते सुन्दर नवल दुलहैया विवैहौं॥
रो मैयामैं दुलहा ह्वै हौं अबही व्याहन जैहौं ।
सूरदास वैकुण्ठ पथमें मुदित सुमङ्गल गैहौं ॥

श्रीयमुना तीर देनारे तू नीके कर असनान जोई जोई
ध्यावे सोई सोई पावे पान फूल दूध धार चढ़ावे
करदे भवको पार ।
महारानी तीनो लोकमें जानी, वेद पुराण
कथामें बखानी, विष्णुदास बैकुण्ठ निशानी बेग
करो उधार ॥

६

हमसे नेह छोड़ फिर कहीं नेह लगावत दैया ।
हमरी आँख बचाय अवर कहीं आँख लगावतरे दैया ॥
हा हा करके अपनी सभामें बुलावतहैं अलसावतहैं
हम बैठतहीं उठ जात अवर कहीं न रसावतरे दैया ।
इम जगमें जैसे काठ पुतरिया जाको यह निजधारसे
नाचतहै दिन रैन उन्हीं कों नाच नचावतरे दैया ॥
या संसार में कोई पियारा देखो हृदे विचारके के
जाको देत न साथ कबहुँ कों फेर रोलावतरे दैया ।
सहज सहज जग तजके कायम साहिबसों
मनवा लगाले वाके सरनमें जात तुमी फिरको
भटकावतरे दैया ॥

७

कन्हैया मेरो गागर भर देहो ।
अजी भला भरके सिर पर धर देहो ।
हमारे सङ्ग की दूर निकस गई सास ननद कोडर देहो ॥
हौं यमुना जल भरन जात रही बहियां पकर
मोहि घर देहो ।
चन्द्रसखी हित बाल कृष्ण छवि चरण-कमल
तेरे पर देहो ॥

झिंझोटी—एकताला

भला जोगीया गहे लीनी मोरी बहीयां ।
सुध बुध हमारी बिसर गई सगरी देखतही वाको
परछइयाँ ।
कहा हमही उन हाथ बिकानी चेरी भई हमरी
सब गुइयाँ ॥
रहत सहत काहूके घरमें जबसे बसों मोरे
होयके ठइयाँ ।
है तेरे हाथ दरस कायमके लागूं तुराबमें तेरो पइयाँ ॥

२

कहिन गए कछु मोसे सइयाँ ।
आए अबेर सबेर सिधारे रह गई मनकी मनमें गुइयाँ ।
कैसे तुराब पियाके भूखे वेतो बसें मोरे होयके ठइयाँ ॥

३

आएन मोहन मन भावन ब्रज भयो बनको उभावन ।
जबसे सिधारे द्वारका मोहन सदा रहत नैन
नित सावन ॥
छूटी आस मिलन काज बसे तनसे कहा भए
दरसन पावन ।
प्रीत जोर के तोर द्वारका ऊधोजी आए
योग सिखावन ॥
जोग हमारे वियोगके आगे कौन काज
काहे चित लावन ।
तेरोहि ज्ञान अनूठा कायम योग वियोग दोउनको
भुलावन ॥

झिंझोटी—तिताला

एसो या मनवा दुवर भइलो ठौर ठौर मोहे दे
भटकाय ।
कबहूं तो जाय लटकनमें लटके कबहूं तो
जुलफ़नमें उरझाय ॥
ऐसे रूप सजनके देखे कायम सुध बुध जात हेराय ॥

२

अनो मालिना अनो मोले मैंड़ा भोना बालक भोले ।
काम क्रोध मद लोभ मोहके कैसेहो झकझोले ॥
अगर चन्दनके पालने झुलाऊं रेशम पाटपटोले ।
बालापन हंस खेल गमाया तरुणीपन बस होले ॥
बिरध भयो जब हेरन लाग्यो यमके राख मनोले ।
अबतो आतो जातो झोटा देतो थपक थपक
सुख झोले ॥

काफी—तिताला

कैसे जीऊँरी माई मन हर लीनो श्याम सुजान।
हौं यमुना जल भरन जात रही उततें आवत कान्ह।
चितवतही हँस दियो सखी बतो लग्यो नैनको बान॥
व्याकुल फिरी गिरी गागरलैं छूट गयो कुल कान।
बिसरत नाहीं सखी वह चितवन जाहि लगी सोई जान॥
जाय कहौं वही नन्दनन्दनसौं दीजे दरसन दान।
नाहीं तो चलन चहत या तनसौं यदा सखीको प्रान॥

झिंझौटी सिन्धी—तिताला

विषय वासना के बस मगन छोड़लोरे मन।
सिखानेको बोले भोलो विषय भेद भूले पड़लो
परम निधि हारा एलो वृथा बांचो धिग जीवन॥

८

छिनमें होत विहानरी सखी सावनदे।
सगरी रैनमें तोरे संग जगी नातर इतनी सइयाँ मानले॥

झिंझौटी—तिताला

नाचीछे आन भरे मन मोहनी रासकोरे।
वेद वदति ब्रह्मम्ह लोई अन्तरे तनोइले कीनो
त्रिलोचनरी होमामझे चरण धरे मारे॥

२

नलेता चित चोराय निगर नन्ददे।
रस भीना रङ्ग रङ्गीलरा मीठी बोली सुनाय॥
कान्ह ग्वालीया सोहना दिल विच रहा समाय।
केवलराम वृन्दावनमें खड़े सूरतदे वलि जाय॥

३

नाजी नाजी नाजो मोसें नाजी बोलो कानुड़ा।
हाथ नलागावो साड़ा मैला होदा गात। वलमा॥
जावोजी जावोजी तुम कुँवर कन्हाई जो गरलाई मनभाई सारी रात॥
जिनहोंके ढिंग वस यह सुख कीनो रहस रस भरी बात। वलमा०॥

विष्णुदास प्रभु समझो मनमें तूतो हैगा छारी छारी मैछूं पात पात॥ वलमा॥

४

हरिजीसों कहिये मोरी।
ऊधोजी पाँय पड़े तुमारे चितदे अब कान ककोरी।
यह जाय कहियो श्यामसुन्दरसौं अवध गए कर थोरी॥

५

अबतो मनुवा लागिलो तुमीसन पिउ वेगही गरे लगाय लीजिए।
जो जो चाहिए सोसो कीज्यो पै ए गवन को नाम न लीजीए॥

६

तन खोय अबही जाए भजन विनु नर बावरे हरि शरणन लीनो।
कहा कीनो जनम समूह विषय वस बीनो राम भजनमें न चित दीनो॥
सुत पितु मातु वन्धु धनकों धाय धाय नहीं कल लीनो।
गउ दधि उलंघ उठावे हाथ गिरि तिनहूं को काल ग्रास कीनो।
भगवान दास नहीं कोई अपना अबतो हरिके शरणमें चित दीनो॥

७

आज महरके भयोहे जगाती।
छीन लेहु लकुट कामरी मूरख ग्वालिनी महीको माती।
दधि लुटाय छीन लेहौं मन तेरो कर मींजत रहिहों पछताती॥
जाकर कहिहौं कंसरावसे पकड़ मगाऊं तेरो जनम सङ्गाती।
असुर-संघारण जन-प्रति-पालन मात यशोदाको पूतन नाती॥
मारो कंस शंशय जिन जानी को समान अहोरको जाती।
तब डर वस प्रभु चरण गह्योहै तब सर्वंग लगायो छाती॥

अज महेश सुर नर मुनि गन्धर्व जाकों रटत
करत दिन राती ।
गावे गूदर सोकियो वन क्रीड़ा जो भावे मन चोर
सोहाती ॥

८

प्रभु व्रज हमको जानेन कोउ ।
गोपिन छांड़ भये कुवजा वस कोकिल काग
बराबर दोउ ।
वृथा भई सब कथा कहांनो राजनीति जग रह्योन सोउ ॥
ऊंच नोच चेरी पटरानो जात न बोय सिन्धु वीच धोय ।
गावे गूदर आनन्द करो तुम हमको विरह दुख
होउ सोहोउ ॥

९

ऊधो वचन सुनावो अमोसे ।
कहे सनेह मेरो प्राणपतिके आनन्द होय विरह
गमोसे ॥
भोजन भवन वसन तन भूषण सब हमकोहै
तुमरी कमोसे ।
गावे गूदर एक अरजी मेरी दरस देखावो
जगत रमोसे ॥

१०

अबके राखले भगवान मैं अनाथ बैठो हम डारो
पारद साधे वान ।
तरे पारधो वाँन साधो ऊपर उड़तर सुचान ।
दोउ भोर भयो दुख भारो कौन उचारे प्राण ॥
राम कहत प्रह्लाद उबारे साखो निगमजो पुराण ।
हरि सुमरथ विष डस्यो पारधो करते छूटा वान ॥
मनको दुवोधा छांड़ देहो तुम सुमरो श्रीभगवान ।
सूरदास सर लगो चुचाने जैजे कृपानिधान ॥

११

रसना क्यों भूली हरिनाम ।
एया देहो को गरवन करिये जों बादलको घाम ॥
षटरस भोजन स्वाद बतावे क्रोधो कपटो काम ।
गङ्गाधरके अन्तरयामो सोधे आत्माराम ॥

१२

बावरो भई मेरो जान ऊधो मैं बावरो भई ।
अरे ऊधो कोहै कान कहाँको वासो कहाँकोहै
पहिचाँन ।
काके कहे कौन सन्देसो लैआए कासों कहीं
हित जान ॥
अरे ऊधो अपनो रीझ अनूठो गावे ऊधो भंवर रहे
रस सान ।
अब यह वेल फरे के सूके वाय कहा हित हान ॥
अरे ऊधो वेनजाय हरे मन मोरे राग रागिनो गान ।
जैसे वधिक विचारत नाहीं मारतहै सर तान ॥
अरे ऊधो पिया विन प्राण प्राण हरिपतसों विन
दांधे वन्ध जान ।
जब श्रीकृष्ण पूतना मारो सूर सदा येही ध्यान ॥

१३

नेह नगरको राह बतादो ।
जिनसों नेह लगाहै तिनसों सुनरो सखो मुझे
श्यामको मिलादो ।
ख्याल खुशाल उमग उर छाए इतनो खबर मोरो
पियाकों बतादो ॥

१४

कासों कहिये कहोन जात ।
प्रोत खुशाल अपार श्यामको गूढ़ मते कोबात ॥

१५

जैतुलसी गोविन्द पो प्यारो ।
गुण अनन्त को वरण सके कवि महिमा अगम तिहारो ॥
कृपासिन्धु सकल जग जानत पूजत नर अरु नारो ।
पावत ज्ञान ध्यान अरु सब सुख नौ निध सिद्ध अपारो ॥
भगत मुकतहो आन परापत श्रोपत वर सुख सीरो ।
प्रेम खुशाल बढ़ावो घरो पल राधावर पर वलिहारो ॥

झिंझौटी—जल्द तिताला

श्याम पनघटवा ठाड़ारो जईहूं मैंइहां यमुनाजोके तीर ।
चञ्चल चपल छैल नन्दनन्दन भानर तो रङ्ग गाढ़ो ।
ख्याल खुशाल करत अलवेला अङ्ग अङ्ग योवन बाढ़ो ॥

नैन छबीले गुइयां रसके रसोलेरी।
कजरा दीए करत कमनैती भौंह धनक पल वान कमोलेरो।
रसीया ख्याल खुशाल नेहके लखत लगत रसिकन अरसोलेरो॥

झिंझौटी—तिताला

अरी बिन लाइयो फुलवारियाँ।
राधा मोहन रूप मनोहर आनन कान्ति अपारियां॥
सांझी ललित बनाई नागर गावत मङ्गल चारियाँ।
यह सुख शोभा निरख मगो जन ख्याल खुशाल अपारियां॥

नए नेहकी नई चितवनियां।
चपल हैंस जोवन की मातों पलक तोर भौंहैं चढ़ी कमनियाँ।
ख्याल खुशाल भरे नैनमें छलत छलन मोहनी मुसकानियाँ॥

झिंझौटी—जल्द तिताला

कुंवर कन्हाईरो दूले रसाया।
कर कंगना केसरीया वागा मोर मुकट छबि बरणी नजाई॥
रास विहार महा शोभा सुख बाढ़ रह्यो अति देत दिखाईरो।
सङ्ग दुलही वृषभानुदुलरी गलबांहीयां दिये मृदु मुसकाईरो॥
जूथ जुवतवी नागर अलवेली निरखत मुख लेत लुभाईरो।
रसिक खुशाल जोवन फल दाता देख भेष मन मदन लजाईरो॥

झिंझौटी—तिताला

भरे नेह मतवारे नैना।
निरखत ख्याल खुशाल लुभावत बिन लपटे पिया परतन चैना॥
पीया प्यारी लगी तेरी अखीयाँ जोवन केमदमें मतवारी।
मोहनी ख्याल खुशाल विलोकनि नैनन नेहकी उरझ अपारी॥

२

कुमर कैसा मागत दान दहीको।
उमगाई परत रुकत नहीं रोकाई मानो डर कहीको॥
काहूके सिखाए भुलाए काहू केरो अपना चाह चहीको।
कैसे ख्याल खुशाल करनहो बसते एक ठाहींको॥

झिंझौटी—जल्द तिताला

बैठे राम राज मन भावत।
मङ्गल धुनि चहुँ ओर अवधमें सुर नर मुनि गुण गावत॥
अस्तुति करत ब्रह्मा ऋषि नारद शङ्कर प्रेम बढ़ावत।
दुरत चंवर चंवर युगल बरसे छबि कञ्चन आवत॥
सकल सिद्ध दाता प्रभु महिमा वरणत निगम सुनावत।
सुन सुन श्रवण उदार सुयश यश उर आनन्द प्रगटावत॥
भरत शत्रुघन लछमन भाई भेंट अनेक दिखावत।
रघुकुल कमल दिनेश विलोकत जन खुशाल फल पावत॥

झिंझौटी—तिताला

निरखत नारी सकल मिथिलापुर व्याह समय दम्पति छबि नैनन।
काम कोटि शोभा नहीं पावत विधु लाजत गत लखेन दैनन।
मोहत हास विलास भरे गुण मन रुच करन अरु बैनन॥
करत नेवछावर युगल परस्पर रसिक लेत भरभर सुख चैनन।
ख्याल कुशाल दसों दिशि लखियत सुर नर मुनि प्रसन्न चित चैनन॥

झिंझौटी ठुमरी—तिताला

झूम झूम घिर घिर घन नाचे सङ्ग लिए दामिनी
चपलासी लख लख मोरन शोर मचाए।
बोलत पी पी पिया पपिया हाखुसी उमग
तन चौंप बढ़ाए ॥

झिंझौटी—जलद तिताला

वंशी वाला श्याम मैंडे आदानी साड़े नाल हँसदा
लुभाँदानी।
गान पट ऊधमी नन्दमहरदा नैन सैन मिला दानी ॥
करदानी वस साड़े ख्याल पड़ा रहदा पल पल मन
ललचाँदानी।
चाहत सकल खुशी अपनीको बातें कहदा सुना दानी ॥

२

बदरा झुमर लाइयाँ आए घिर घिर कैरी।
एक अन्धियारी कारी निश सावनकी मोरन
शोर मचाइया ॥
पीपी कहत पपिहा धावत पवन चलत पुरवाइया।
ख्याल खुशाल श्याम मिलनेकों कोयल कूक सुनाइया॥

झिंझौटी ठुमरी—तिताला

बगीयानीवे तेरे नैन निजारे।
आमिल मेरे यार पियारे ॥
मीठी यानी ख्याल खुशाल देखारे।
नन्दमहरिके कुंवर दुलारे ॥

२

कहाँ बजाईरे कान्हा वृन्दावन मांझ बँसुरीया।
भनक परी श्रवणनमें सखीरी तू रस छविकन छकाई।
बाढ़ी चाह रुकत नहीं रोके देखन कुमर कन्हाई ॥
नए नेहकी उरझन सजनी कापर वरणी जाई।
ख्याल खुशाल करत ब्रज मोहन कुञ्ज कुञ्ज छवि छाई॥

झिंझौटी—तिताला

राधावर कुञ्ज विहारी दूले रूप मोहनी छाई वृन्दा
विपिन मझारी।
निरखत मोहि रही ब्रजवनिता अङ्ग अङ्ग सुकुमारी॥
कुञ्ज कुञ्ज में केल करत ख्याल खुशाल अपारी ॥

२

ताँनू तकदी आइयां सोणा मैंड़े जानी।
हो रहीयां मुश्ताक निजारेदी नए नए नेह
उरझाइयाँ ॥

३

नाल तुसाड़े नेह लगाहै जगमें कौन सखीरी जोए
फारी गोपिया।
यह दुख देखके कठिन सखीरी मुंह अपना पपीहा
ने मूंद लिया॥

४

श्यामकारे मन भाइया।
विलसे ख्याल खुशाल कुञ्जनमें यही चित
रचि चाहिया ॥

५

वारी वैस नन्दलाल मिलै तो घरी घरी पल पल
लिपटाऊं।
अरे अरे लाला उमग भरो रति छतीयन लखि
मदन गोपाल ॥
लावे बुलायनी सइयों विरहिन वेहाल ॥

६

अरे अरे लाल नए नेहको बतियाँ पिया कहियो जाय,
कहा कहत गिरिधरजू कुछ कहो सुनाय ॥
अरे अरे लाला प्रीत बढ़ी हिय सजनो ज्यों चन्द चकोर,
विन देखे जिय व्याकुल नन्दकिशोर।
मदन चौंप जिय उमगी उत पिय मचलाय
कैसे कोजो सजनी दुख सहोन जाय ॥

७

अरे अरे लाला पिय चतुराई।
देखो सखी नैन मिलाय कौन मानकी रितुहै जो
कहो सुनाय ॥
अरे अरे लाला वो चितवन नहीं विसरै मनहो
समुझाय।
ले आवो पिया वेग बुलाय मिलें आय पिया
गिरधर हित भगत बढ़ाय ख्याल खुशाल बढ़ाय
ब्रज मधु दरसाय ॥

पियको पियारी छवि देखोई कोच्छे सोहनी सूरत
मोहनी मूरत अधरसुधा रस हिल मिल लीजे।
ख्याल खुशाल रात दिनको करोयम जगत जननको
यही सोख दोजे॥

९

रङ्ग रङ्गीलो तेरो जोड़ो हो प्यारी लागे।
तेसेही राम लखन दोउ भैया तैसेही दोऊ अरोही॥
चरण कमल पर मेहदी राजत कर सोहै कङ्गन
डोरी हो।
पाबनरे की छवि पर कानर वारों मैं काम करोरोहो॥

१०

मदसों भरो इतरात गुजरोया।
ऐंडो बेंडो फिरत कुञ्जनमें देखत नाहीं भरके
नजरोया॥
हरिसें भेंट भई कुञ्जनमें मानो पूरण राज उजरोया।
घरसों निकसो गोपाल दरसकों भूल गई हाट
बजरोया॥

११

एमाजो कोंमें पाय पर देतो चूक पड़ो भई मोमें एतो।
डोलिया फँदाय पिया ले चले मोंकों नाता छूटा
नेहर सेतो॥
जो जनतोरे बैठ विदेशवा चलतको बेर दावन
गहि लेतो।
कहा होत अबके पछताए अवसर गयो तबे
नहीं चेतो॥
अब पिय विन जिय तलफत जैसे जल छूटो मोन
आय परो रेतो।
जान कहतहै प्राण कोई दममें पियको विछुर
जीऊंमें केतो॥
विनतो बहोत बहोत कर थकोमैं पियके आवनके
नेतो।
तब मनरो मैं चलतको कायम अब जिय जातहै
मोरा सेतो॥

झिंझोटी सिन्धी—तिताला

वेस गई मोरी नैहर सेतो।
हेतके बीज येखेत बियारे उपजो विथा जर जाय
यह खेतो।
कारके प्रीत सब मोत विछुर गए नेहके मिले दिन
चारके नेतो॥
प्रीत करत सुध गई विछुरनको अबतो कहा होत
जो चेतो।
दिल मिलके परदेश चले गये जोबस होत जाने
कब देतो॥
अब कोई जगमें प्रीत करो जिन मानो बात
हमारी एतो।
आप तरों जग तारों कायम प्रीत लगाऊं
सुसाहेब सेतो॥

झिंझोटी—तिताला

मोसें नेह लगाया चाहत है फेर छुड़ावतरे देया।
हमारी आँख बचाय अवरसे आँख लगावतरे देया॥
हाहा करजो अपनी सभामें लाऊँ तो अलसावतहै
बैठे नहीं उठ जात और कहीं रैन गमावतरे देया।
यह जगमें है जोई पियारा वाकों देखा वही सुभाव
जाकों देत हँसाय वाहीकों फेर रोलावतरे देया॥
है जग जैसे काठ पुतलिया बूझो मनमें विचार के
नाँचतहै दिन रैन वहीजो नाच नचावतरे देया।
सहज सहज जग तजदे कायम साहेबसे मनुआ
लगा वाको शरणमें आयके फेरको बहकावतरे देया॥

२

अरो मैं पियासों प्रीत न करतो।
यह दुख मोपै काहे कों पड़ता प्रेमके पेड़े ज्यों पाँव
नधरतो॥
मोह जरायो विरहा अगनमें ज्यों पखो दोपकमें
जरतो।
अब पछताये होत कहा कायम मनमोहनके
चरणन परतो॥

३

बिछुरत नहीहै वार जगतका मेलारे ।
आखर चलनाहै छिन माहों एक दिन साँझ सबेरारे ॥
मतकर मोह तनक जीवन पर नाकर धन सँकेलारे ।
सबही धरा रहत धरणी पर जब जिय जात अकेलारे ॥
अपनो अपनी गरज कारण कुटुम भयो है भेलारे ।
इनमें ना हरि बिन कोई तेरा हस्तराम दुहेलारे ॥

४

बूझ नहीं मन तहांन जइये ।
आदर घटत अनादर होई कँचन बसत तअइये ॥
जानत नाहीं मरमको बातें गुन्हा पान नहीं कहिये ।
हरि विमुख जगमें नर सोई ताको सङ्ग न पइये ॥
खर कूकर कौवाको नाहीं ताके सङ्ग क्या लइये ।
कहै कबीर बलिहारी ताका हरिचरणन चित दइये ॥

५

सब जग धन्धाहै धन्धा पहचानत प्रभुका वन्दा ।
पुत्रादिक मित्रादिक असो महामोहका फन्दा ॥
तन धन काम कारणे केते मूरख पच पच मरदा ।
मैं मेरा तैं तेरा करता आप खजावे अन्धा पर निन्दा ॥
अपवाद ईरषा किसके काज करन्दा ।
छिन छिन कालतकावे तुझको मारेगा मति मन्दा ॥
वेपरवाह बन्दगी करना रहेन सदा स्वछन्दा ।
हस्त राम हरिभज भव तरणा जानोसो जानन्दा ॥

६

लिखोसो विधि नाहीं टरे ।
कहाँ शशि सूर कहाँवो राहु सनमुख आन अरे ।
पण्डित व्यास वशिष्ठ आदिदे लिखि लिखि लगन धरे ॥
दशरथ मरन हरन सियाको वनमें विपति परे ।
भीषम करण द्रोण भीमा ढिंग तासों नाहीं डरे ॥
भरी सभामें द्रोपद सुताको पट दुःशासन पकरे ।
सुर नर मुनि असुर पन्नग सब भावी वसही परे ॥
तीनलोक चवदा रतन मध कर्मगतही अनुसरे ।
सूर श्याम चाहै सो करिहै वृथाक्यों भ्रमत फिरे ॥

७

सालिगराम सुनो विनती मोरो यह वरदान दया कर पाऊं ।
प्रात समय उठ मज्जन कर कर प्रेम सहित प्रभुको अन्हवाऊं ॥
धूप दीप चन्दन तुलसीदल भाँति भाँतिके पुष्प चढ़ाऊं ।
आप जाय सिंघासन बेठे घंटा शङ्ख मृदङ्ग बजाऊं ॥
एक बून्द चरणामृत पाऊं पित्रनको वैकुण्ठ पठाऊं ।
जोकुछ मिलत सहजमें अब दिन भोग लगाय फिर जूंठन पाऊं ॥
जँह लग पाप कियो दुनीयांमें परिक्रमाके माथे बहाऊं ।
छूट जात डर भवसागरको सब देखत वैकुण्ठ सिधाऊं ॥
अंबरदास कहै कर जोरे प्रभु दासनको दास कहाऊं ॥

८

राम कृष्ण वासुदेव हरे हरे कहो मन ।
केशव यादव जय वंशीधर देवकीनन्दन कर मुरलीधर चक्रपाणि मन ।
मोहन मधुसूदन पारब्रह्म परमेश्वर ब्रजपति कंस-निकन्दन पीताम्बरधर ॥
माधव दीन-बन्धु करुणामय माया-पति मुकुन्द मनोहर ॥
हित परख रमारथ श्रीनन्दनन्दन दीनदयाल दयानिध चिन्तामणि मणि-मानस अन सकल धर ॥

९

देखो राम नामकी माया ।
यह जगमें आयके कोऊ नहीं उबरा जैन नारि फसाया ।
विषया तनको कौन चलावे सुर नर मुनि सबही नचाया ॥
आवत जात फिर फिर आवत ऐसा फेर लगाया ।
कहै कबीर तेरो वलजाऊं ऐसो जाल बिछाया ॥

तुम तज कौन नृपतिपै जाऊं।
मदन-गोपाल मण्डलो-मोहन सकल भुवन
जाको ठाऊं।
तुम दाता समरथ तिहुंपुरकं जाके दिए अघाऊं॥
तुमही छोड़ और कित जाचूं पर हाथ कहा बिकाऊं।
परमानन्द दासको ठाकुर मन वाञ्छित फल पाऊं॥

११

मैं तो महीदे कारण लुटीयाँ मैड़े माहीड़ावे।
जावोनी कोई मुड़ले आवो मैड़ा मीयाँ इश्क लगा
जिन्द फन्दीया मैड़ावे॥

१२

ब्रजकी रजमैं भई क्योंन बीर।
परी रहत गोकुल की डगरमें उड़ उड़ लागत
श्याम शरीर॥
सुर नर मुनि ब्रह्मादिक दुर्लभ श्रवण सुनत
वंशीवट तीर।
चन्द्र सखी हित वालक्रष्णछवि मिलगए मोहन
मिट गई पीर॥

१३

मन लाग्यो कान्हा अनोखेसे।
साँवली सूरत मोहि लियो मन मोहनवा नीकेसे।
गुरु जन पूरं रसिक विहारी वेखनदे तन तोखेसे॥

१४

वारी श्यामा इहि कुञ्ज मग आयजा।
पीतम नैन चकोर चखतहैं वदन चन्द दरसायजा॥
मुखतें नेक निवारी नोलपट छविसों
मुरि मुसिकायजा।
नागर नवल किशोर लाल पर चितवन रस
बरसायजा॥

१५

अखियाँ कृष्ण मिलनको प्यासो।
आपतो जाय द्वारका छाये लोक करत मेरो हाँसो।
आमको डार कोयलिया बोले बोलत शब्द उदासो॥
मेरेतो मनमें ऐसो आवतहै कर बहरूंगी कासी।
मीराँके प्रभु गिरिधर नागर चरण-कमलकी दासी॥

१६

रघुवर कौने वन जाऊं मेरो गोदीरे वालकवा।
रोवे हरण गोद लिए वालक एक ओर वधिका
शिकार।
सर लिये एक ओर व्याधा एक ओर जाल फन्दाय॥
अब नीकें वन्ध भुवङ्गम व्याधा आवे जाल उड़ाय।
विषधर डसो वधिकसों तबही मृग बहोत हरषाय॥
उठी हिरनी हिरण और वालवा यह गत लखीन जाय।
धन धन धन प्रभु सूरके स्वामी राख लिये शरणाय॥

झिंझोटी—धीमा तिताला

प्रीत कर कौनहूं सुखन लह्यो।
प्रीत जगोकरी पतङ्ग दीपकसों अपनो तनजो दह्यो॥
अलिसुत प्रीत करी जलसुतसों सम्पुट वास रह्यो।
सारङ्ग प्रीत करी नादसों सनमुख वान सह्यो॥
हमजरों प्रीत करी नन्दनन्दन सों चलत कछून कह्यो।
सूरदास प्रभु तुमारे दरसकों यह जाय सोच रह्यो॥

२

वोदधिदानो कानुड़ा मैड़ा जान।
यमुनाके नोरे तीरे बंसरी बजावे गावै नीका तान॥
घर अगनान सोहावेन भावै वस कर लीने मेरे प्राण।
विष्णु दास कों कलन परत दिन देखे तेरो आन॥

३

जोवनदा साड़े माँगदा मसूलनी कौन कीता वट
वालनी।
जोवनदा कार किसने लगाया सुन सुध वुध गई
भूलनी॥
गोकुल गांवका रहना छांड़ो कालिन्दीका कूलनी।
विष्णु दास न पास वसनदा धरम नहीं निरमूलनी॥

झिंझोटी—तिताला

किन दई इसनू हाकिमी जोवनदा कान्हा
माँगदा जगातनी।

जोवन जगात सुनी नहीं कबहूं इह अचरजकी
बातनो ॥
त्याग करो यह ब्रजको बसवो चैन नहीं दिन रातनो।
ठंडो राम सुख कैसे पइए इन लोचन जिय जातनो ॥

२

सांवलड़ा जोवनदा साड़े हासल मांग दानो।
आंदे जादे इस राहदे अन्दर किसनू न लीता
जगातनो ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

सतगुरु आर जग जंजाल कृपा कर कर किए निहाल।
करही बांध किया जिन सेवक नाम सुनायो श्रीगोपाल॥
ओंकारको तिलक बतायो नाम जपनको तुलसी माल।
पूजाको सब रीत बताई एसे किरिया करो त्रिकाल ॥
तिमिर दूर कर ज्ञान दिखायो घटमें दीपक दोनो बाल।
महानभावके पद बतलाए समय समयके सुन्दर ख्याल॥
सप्त सुरन और तान ग्राम भलो राग रागिनी औ
सुरताल।
ऐसे ठंडा राम गुरु स्वामी विष्णुदासको करो
प्रतिपाल ॥

झिंझौटी—तिताला

श्याम तेरी बंसी में जबतें सुना।
सुर नर मुनि थकित भएहैं श्रवण परी जब धुनी ॥
स्वर्ग लोकतें रम्भा आई नारद गन्धर्व गुणी।
सप्त सुरनसों तान मधुर धुनि राग सागर में
लीनी दूनी ॥

२

कान्हा तैंने बंसी बजाय जादू डारारे।
जन्त्र मन्त्र टोना पढ़ पढ़के वस कियो
जियरा हमारारे ॥

३

नदीया किनारे किनारे गोरीया सुधारे बार।
इततें आए कृष्ण सांवरा उततें आई ग्वारि।
रङ्ग रसावतें पूछन लागे कौन पुरुषको नारि ॥

४

पिया बिन कैसे कटे दिन रतियां।
विरह अगिन मोहि आन दहतहै फटी जातहै
छतियां ॥

५

जोगी बिन आज मढ़ैया सूनी।
कित गए आसन धूनी तजके कहां अलख भनी ॥

६

गुमानी नन्ददे छैला साड़े नाल कदीतो बोलवो।
भूख गई निशा नींद न आवे छिनडे नोकी
जिन्द घोलवो ॥
निठुराइयां तेनु किन बतलाइयां दिलदी घुंडी खोलवो।
सुखदाई महबूब पियारे बिन दामा लीती मोलवो ॥

७

सांवला यार सितम करंदे बांके नैना तेड़े जालम
जोरवे।
अकथ कहानी जानी तेड़े हुसनदी जोवनदी
अजब मरोरवे ॥
लोग दिवाना मैनु देदा बुगड़यां इश्कांदा पर गया
शोरवे।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम तुम जादूगरहो
चित चोरवे ॥

८

तोरी चितवनदी कारि करैया।
निरमोहिया तू छलिया कन्हैया ॥
तिरछी चितवन लग गई कारी देखनको अब कोहै
महैया।
कायम छिन पल कलन परतहै राखु शरण तेरी
लेत बलैया ॥

९

बनवारी बंसीया लागी तोरी प्यारी।
वृन्दावनमें खड़ो राधा प्यारी अखियां लागी मतवारी
विरहिन लागी जिया विहारी ॥

कलालोरी मइकों मधवा पिलावे कला० ।
हाथको कङ्गना दूंगो गलेको हरवा दूंगो अच्छी नोकी भरदे गुलालो ॥

११

सदा समझाय रहियाँवे लाखों बार ।
महोदे कारणवे ढूंढ़न चलियाँवे खड़ावे उड़ोकाँ रावी पार ॥

१२

मन गइयाँ तैड़े नालमें भूली मैड़ो जान ।
नैना तुसाड़े बाड़ो वरछोदो नोकों ज्यों भामोत्यों पाल ॥

१३

लाड़ो थारो भाग चम्पेदा माणावे ।
बागभी तेरा वारो बगोचाभो तेरा बोच महबूबाँदा थानावे ॥

१४

तैड़ेवे कारण वे मैड़ा बागाँदा वासीवे ।
वागभी तेरा वारो बगोचाभो तेरा तू बागाँदा साइयावे ॥

१५

भला जाने वाले मैड़ो सुरत विसराईवे ।
जिस तन लागे वारो सोई तन जाने मैड़ा सोणा तू क्यों जाने पोर पराईवे ॥

१६

नैना ताड़े जोर विरहियाहो ।
कबको मैं ठाड़ो ठाड़ो अरज कराऊँ इतनो अरज मेरो मानलेहो ॥

१७

फँदा क्योंकर छुटदा मेरी जानवे ।
छनीवे मैंवारो छैला सिर पर गागर भरो ठुमक ठुमक पग रखना जानवे ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

अनो झाँहावे रङ्ग झुर मटड़ा ।
साथों कुड़ोयां मिल पनियाँनु चलियां उधर गयो तेरो घंघटरा ॥

रबा माड़ो सुनवे गरीबांदो भला ।
विछुड़ेनु कोई आन मिलामो रब करे तेड़ा भला ॥

झिंझौटी—तिताला

बेरावलियां तू मैड़ो गलाँ माणवे ।
बाबुल खेड़े वारोवे जम जम बसदे वो मोयां खेड़ादे खेत बबूलवे ॥

२

बलमा एसो बांसरोया तैने काहेकों बजाई ।
वह गामको नाम न जानू जहाँ उपजी यह बांसरो ।
श्रवण सुनत सुध बुध सब विसरो लेत निशासे सांसरो ॥

३

कहै केवट प्रभुसों मत छुवो पाँवसों नाई ।
सुनोयत पाथर नारि करोहै मेरो यहो कमाई ॥
कठवत माहे चरण धराए गोद लिये बैठाई ।
डरत डरत पर पार उतारे रोझे श्रीरघुराई ॥
कर भूषण उतराई दोनो ताहि कर नहीं लाई ।
नाई सों नाई न लेत मुड़ाई क्यों मलाहसों मल्हाई ॥
तुम तारत भवसागर जनकों हम उतारत धर नाई ।
प्रेम रङ्ग प्रभु ककुअन दोनो हंस मलाह गरे लाई ॥

४

लगन मोरो लागो पियसों ।
जबरे लगो तब लगत न जानो मन बस गई जियसों ।
कृष्णानन्द भईमें बावरो रोम रोम हियसों ॥

५

जो सइयाँ चले परदेश गवन विष खाय रहिहौंरे ।
सास बुरो मोरो ननद चवैया उमग दिलको मैं ना कहियोंरे ॥

६

कान्हा काँधे कामरिया और शिर पर मुकट कटि पोताम्बर हाथ लकुटिया छाजे ।
अधर धरे वंशो मनमोहन सप्त सुरनसों गाजे ॥

७

सुरत मोरी मोहनसों अटको ।

जबते चोट सरोज भएहो व्याकुल फिरौं भटको ।
वंशीवटके निकट हरि ठाड़े छीन लई मटको ॥
दुरजन लोक चवाव करतहैं सास ननद हटको ।
ब्रह्मदास छवि कहा बखाने वा नागर नटको ॥

८

बिरहिया आज मइकों बिरह जनायोरे ।
विरहाको मातो बन बन डोलौं कतहूं खोज
नहीं पायोरे ॥

९

रजवाड़ेका जाना छोड़दे ।
सइयां इतनो अरज मोरो मानले ॥

१०

मन हर लीनो मेरो इन साँवलियाने मोपे डारके
प्रेम प्रीतको फेरो ।
बिन देखे मोहे कलन परतहै सुनरो सखो कैसो करिये
वाको तो सूरत छवि हित चितमें बसतहै नैनमें
फिरत रहत घरी पल छिन अब नहीं छूटे अपनो
मौजसे कोउ कहा बहुतेरो ॥

११

अरे तू न जायरे जोबनवा ।
कैसे कर राखूं मैं अपने मोजसों मनमोहन पिया
नहीं घरवा ॥
कलन परत घरी पल छिन सखो मोहै मदन कदन
अति जदन करतहै मनवा ।
हित चित मोत नित बसे नहीं नेड़े छतीयां उमग
धक धक करे सजनी नींद नहीं आवे पिया बिन विरह
सतावे मइकों सूनो भवन लागे डरवा ॥

१२

साँवलियारे मोरी नरम कलैयां जिन तोरो ।
हौं जमुना जल भरन गई साँवलियारे ॥
अरे हाँरे मोरी भरीरे गगरीया जिन कुवो साँवलियारे ।
माधोदास गुण गावहिं मैं तो चरण-कमल वलहारो
साँवलियारे ॥

१३

हाँरे मोरे माथेकी गगरोया ढुरकाय डारोरे ।
दधि मेरो खायो मटकिया फोरो नरम कलाई
चटकाय डारोरे ॥

१४

सइयां मत जाइयो विदेशवा मोरा जोबनहै मनवार।
हाहा करतहौं पइयाँ परतहौं विनतो सुनले सइयाँ
हमार ॥ मत जा० ॥

१५

मुरलिया बाजो बनमें ।
आधो अधो रतियाँ टेर सुनावे कुञ्जलता घनमें ।
तोखो तान आन मनमथको वेध रहे तनमें ॥
निरतत अङ्ग त्रिभङ्ग साँवरा गोपिन के गनमें ।
कृष्णरङ्ग सखो सरवस वारे आनन्दहै मनमें ॥
हरे बांसको बांसुरो, निकसो परवत फोर ।
जोमें एसो जानतो, लेतो तार मरोर ॥

१६

रसीया नागर कान्ह कोथा गइलोरे वँधु ।
आमार नागरी आइलो वँधु खाइलो नागर पान ।
बैठन देवो शीतलपाटो जोवन देवो दान ॥

झिंझौटी भूपाली—तिताला

तुम पार लगाय देहो कन्हैया मोरो नैयाहो ।
तुमहो ठाकुर तुमहो परमेश्वर तुमहो राम रमैयाहो।
तुमहो जगत उधारण तारण विनती करूं परूं
पैयाँहो ॥
तुमहो तुम दोगत मत्र ओरे तुम विन कौन
रखैयाहो ।
कृष्ण सनेहो मैं तेरो वल जाऊं भवसागर पार
करैयांहो॥

झिंझौटी—तिताला

नन्दनन्दन बुलावैरो कदम तरे चल सजनो ।
सुन्दर वदन मदन-मन-मोहन मृदु धुन वंशो बजावै॥
तुम विन श्रोवृषभानुनन्दिनो उन मन और नभावे ।
राधा राधा नाम रटत मुख जानकीदास सुख पावे ॥

नैन बिरछिया तोरे पियारे।
अनियारो उजियारे कजरारे चञ्चल नैना अतिरतनारे॥

३

नजानो कोने बजाई मुरलीमें एसी तान।
जबही भनक परी बिरहाकी बीरन भूल गई
गुरु ज्ञान॥

रातके सइयाँ तुम कहाँ कहाँ जागे भोर भए तुम
आए मेरे आगे।
कवन नवलतिया रम बस कीने कर लीनो
भाल महावर नैन अनुरागे॥

५

मदकी गागे ढोनीगे सुन ननदीया वीर तिहारा।
ना मैं बोली ना मैं चाली मदनवान मोहिको मारा॥

६

रमैया मोरीरे नैया लगाय दीजे पार।
भवसागर अपार बहतहै प्राची बहै बियार।
औघट घाट नावहै झांझरी केवटहै मतवार॥

सुध नहीं लीनो हमारो सइयाँ मोरा कौन
देशवा गए।
कौन जतन मोहै खबर सुनावो बल बल जाऊं
तिहारी सजनी कौन देशवा गए॥

८

चुरीयाँ चुभ गईरे मोरी नरम कलैयारे।
ना पहनो मोरी सास रिसाई सइयाँके करेजवामें
चुभ गईरे॥

९

गईरे सागर पनीयाकी।
गागर भर हमड़ी चलीरे सागर, चिकनी माटी पग
रपट गयो घइल फट गयो सासु ननद कहै मातीरे॥

१०

आगे ठाड़े मनमोहन सोहन यमुना पानी नजइहूं।
मटकी झटकी भू में पटकी नैनन सैननदे अटकी
तन मन वस सब भइहूं॥

११

उन बिन जियरा निकसोई जात कोऊ सइयाँ
कों नहीं मिलात।
चञ्चल बिन मोहि कल न परतहै कैसे कटिहों
दिन रात॥

१२

पिया बिन वन फिरूं अकेली साथ नहीं कोई
सङ्ग सहेली।
सिन्ध रीछ बटपार वन मेंहाफिज नहीं कोई पास
सजन मैं० नवेली चलहूं अलबेली॥

१३

अब मोहि तारणको बारो सुन लीजे अरज हमारो
गिरिधारो।
लख चौरासी भटकत भटकत आए शरण तुमारो॥

१४

बस गयो बस गयो बस गयोरी मन मोहन मन मेरे।
छवि देखत जीयरा निकस गयोरी॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा चितवन में जिय
धस गयोरी।
काजिम रोम रोम तन भेरे नन्दको लाल बिलस गयोरी॥

१५

छवि देखत मन मेरो अमनायोरी।
लोक लाज सब जीसे निकस गई जबसे श्याम मन
बस गयोरी॥
कोउ कहत मोहि भई बावरी कोउ देख मोहि
हँस गयोरी।
नित प्रति देखहु कायम हम कहँ दरसन अपना
बकस गयोरी॥

१६

भुरमरदा मैंड़ी लटियाँदा माड़ें सेनावे।
रात देहा मैंनु वे ध्यान तुसाड़ावे मांदल भोनो तेंड़ी
पटीयाँदा माड़ा साहबांवे॥

१७

मन मैंड़ा चाहे तेनू मांहें असी बंदीयांवे।
दोशन तेड़ी ले'दे बलाइयाँवे तेड़ही आन मैनु
भांदीयां साइयांवे॥

१८

राझन साड़ी गली आव हीर मो जीव जिवावे।
कित वल जांदा वारीवे कितवल बसदावे कैसेके
मन समभावे॥

१९

तांड़ेवे कारणवे आयानी माड़ा बागांदा वासीवे।
बाग भी तेरा बगीचा भी तेरा तू बांगादा साँईके॥

२०

बांके नैनाका मारा भला म्हाका राज।
एकतो नैना वारीवे वेख नजर भर देखे आवे लाज॥

२१

आवना म्हाके देश साँवला बनवारी।
म्हारे थारे मिलनरो मनमें रहिछे आन मिलो गिरधारी॥

२२

वंशी वालाहो आजा म्हाके देश।
थारे कारण में ढूंढ फिरोंहूं कर जोगणरो भेश।
घर घर वन वन नगर नगरमें आय मिलो वाली वेश॥

२३

अंमा वालगोविन्दा पर गुटो टयु चूड़ चूड़।
पीर गुटो टयु वालमुकुन्द पुन चूड़ चूड़ मासुर
पुड़ पुड़॥

२४

लाग गईलोरे हमारे नैना एक कङ्करवाकी चोट।
तिरछी चितवन देखके वस किये प्राण हमारे॥ ला०

२५

भर गए नदीय उमग गए नरवा अब कैसे घर जाऊं
मोरी ननदुल।
उमगी जोवना भएहैं सागर अब कैसे राखूं एमोरो
गुइयाँ॥

२६

अँखो अंखी लगाय लिए जायरे देखो देखो लुगैया
गवाँररे।
अनवट सोहै बिछुवा सोहै चलत कमर लचकायरे॥

२७

वंशी बजतहो करेजे में लग गईरे बाजो बाजो
मोहन तेरी बाँसरीया।
तान वानसों मारत लेत निकासे साँसरीयाँ॥

२८

एस बागके मेले में चलकर यार देखो तमाशा
परियांका।
ठंडी हवाहै छाई खड़ाहै मोती भील पे यार क्याहै
बहार॥ दे०॥

२९

विरहिया आज मोहिको विरह सताबेरे।
वृन्दावनको कुंज गलीन में मृदुधुन वंशी बजावेरे॥

३०

मोहन प्रीत लगाए हँस मधुर वेणु बजाए।
जन्तर मन्तर जादू पढ़ पढ़ मधुर मधुर सुर गाए॥

३१

गोरी सलोना तेरो कोऊ नहीं तेरे साथ।
मनमोहन सों प्रीत तू करले भुज भरले तू बाथ॥

३२

पिय सङ्ग लागारो जिय सारा मेरा।
कासे कहूं में आज पियाने औचकहो मोहि घेरा॥

३३

में भूली नेहा लगोवो नेहा लाया।
जिथ्थे जोर नजारा लगदा तिथ्थे दिलनु अड़ाया।
सङ्गले जावो ढूंढ़ पहाँचावो बड़ा भार उठाया॥
रव नाल नेहडा कीता असानु जोवनदा सुख पाया।
भजन तेंड़ा बाज बनाहो आशिक नाम धराया॥

३४

साजन लेगये मदको लेगये रतियाँ भुलाय।
जान विना हम व्याकुल सजनो उन विन कछून सुहाय॥

३५

ननदोरी सइयाँ काहेकों रिसायो ।
बाट तकत रैन बीत गई न जानु जाय कहाँ ठहरायो ॥

३६

देयामें कहा करूँ सइयाँ कोन गुण उतरूँगो पार ।
पहेलारो टिकोरा लागा मारा गुइयाँ चेतको आईरे बहार ॥

३७

मोरो पियाके आवनको कोन कहे अब कोन कहे ।
वेजो गए एसे फेर न आए मदन कदन अब मोहि दहे ॥

३८

माधो केशन सों डगर बुहरतो माधो ।
जोमें जानतो सइयां मोरे आइलो फुलवन सेजियो बिछावतो माधो ॥

३९

नजरोया का मारना जावें ।
रे बरछाका मारा वारी काई दम जावे नैनाका मारा मरजावे बिचारा ।
औषधि मूल एक नहीं लागे कृष्णानन्द रूप मतवारा ॥

४०

सइयां मोरो अंगुरी मुरक गईरे ।
एक डरहे मोहि सास ननदका चोलाया मसक गईरे ॥

४१

सइयां नेक नीके बोलो जियरा जइहै रिसाय ।
अन्त कन्थको काउ न जाने देखत मन ललचाय ॥

४२

तोरा मोरा जियरा एकरे जानो ।
जानो मिले दिलदार गुमानी प्रीतकी रीत न छानारे जानो ॥

४३

अलकें तोरी घूँघरवाली अरे बनवारोहो ।
वृन्दाबनमें खड़ो राधा प्यारा चाल चले मतवालो मदकों लागे नीको प्यारो ॥

४४

पनीयाँ ना जइहोंरे मोरी जुलम कर गई जेठनिया ।
सिर पर घड़ा घड़े पर झारो पतलो कमर लचकनिया ॥ मे० ॥

४५

पनघटमें ना जइहोंरे मासे मोहन करत बरजोरो ।
बाट घाट मग रोकत टोकत झक झोरत बइयाँ मोरो ॥

४६

ढेड़ा माहोड़ावे कूडे बोल न बोल ।
अवध बदो वारो अजहूं नहीं आए कोतानो साडे कौल ॥

४७

साड़ी गलो आँमो वामाणा ।
नैनादी तपत बुझासोवो माणा ॥
आवेङ्ग अमा मुश्ताक तर्रे देवे माथो काई टपेदो नाम सुणामोवो सोणा ॥

झिंझोटी—मध्य लय

लेगया जियरा लोभाय जा नम लेगयो हमरा ।
है काइ यह दुखका बटैया याको काउ जा समझाय ॥

झिंझोटी—धीमा तिताला

रसिया जोबन वाला मेरा प्यारावे ।
सिर साहे सेहरा हाथ साहे कंगना जावे राजदुलारा मेरा प्यारावे ॥

झिंझोटी—तिताला

घुंघर वाला बाला मेरा बनरावे ।
मुसकना सिरवे सेहरा विराजे बे अच्छो बनो घर आया ॥

२

भोलडे वालां नालां सइयों दिल लगायांवे ।
छलड़ा भलड़ा तिखड़ा वाँकड़ा सभा रतां जगायांवे ॥

३

सांवल प्यारावे आमिल मेंड़े नाल ।
तुझ जेहा मेनू कारन दिसदा ज्या भामा त्यों पाल ॥

४

ढोलन प्यारावे आमो माड़े देश ।
तेड़े खातर वे जागन इइयों छुटे लावड़े साड़े केश ॥

साड़ी की तकसीर मोयाँ रांझावे ।
ज्या तू छाड़ कर मैनू गया विच्च अवेड़े रव वरण
लीतो फिर कर यों कहदा हारवे ॥

६

बंशी नीको बजाव मोहन प्यारावे ।
जन्त्र मन्त्र टोना जादू करके वर अङ्गना न सोहावे ॥

७

ना देहौं बदनामी कजरारे ।
ए कजरा मेरे नैहरमें आया जर जर मरे मोरी
ननद जेठानोरे ॥

८

तं मोरी मसकाय डारी अँगिया ।
जावो जल्लालदान हमसे न बोलो तुम नाहीं मोरी
कुच तोर डारी अँगिया ॥

९

तोहे रास कन्हैयारे दिखाई ।
कोट बार रजी नहीं मानो देख मोहन मोरी लाख
लोकन में लाज गमाई ॥

१०

भर भुज मसको देयारे ।
जात हती मैं अपनी सौजसे नाजानू इधरसे आए
अचानक मारग घेरो मेरो ढोट कन्हैयारे ॥

११

पानीड़ा भरेरे मदमाती गुजरिया ।
रेशम डोरो मानिदा गगरा रतन जड़ाऊ की इंडुरीया
उमगसे रस भरे गागर शोश धरे सो मदमाती
गुजरिया ॥

१२

ए मैं तेरे विन वेकल भई सारी रैन ।
सगरो रैन मोहे तलफत बोतो सइयाँ नहीं
आयो सुख देन ।
कृष्णानन्द मोहे हृदय लगावहे बोल अमृत के दैन ॥

१३

नोका लागना अच्छा गावे जियरा मोरा मानत
नाहीं अब तुम जाबोरे ।
बाटके बटाइया पइयाँ तोरो लागूं इतना सन्देसवा
ले पहुँचाबोरे ॥

१४

बालमने चल मइकों डालीया फन्दाय ।
नैहर में मोरा है कोई ऐसा मखियन जाय सुनाय ॥

१५

गोरी लट छाड़ देरा तेरा लटायामें काला नाग ।
कालेके काटे हमजा बचारे अपने मइयांके भाग ॥

१६

बनरा मेरा अच्छा नीको लागारे ।
चुन चुन कलियां मैं सेज बनाऊं रहस रहस
गरे लागारे ॥

१७

बलमा मोरे उचट गइलो मोरो नींद हो ।
जानैं एसो जानतो प्रीत न करतो बिन देखे नहीं
चैनहो ॥

१८

एरोए मैं तोरे बिन वेकल भई सारी रात ।
सगरो रयन मोहे तलफत बीतो सइयां नहीं
आए मेरे पास ॥

१९

रावलोको कोई न मोरा लग गई प्रेम कटारा ।
काई बाले रामा रामा काई बोले हरि हरि वे नदंया
तू काहे बैरिन भईरो ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

अरे बाँके यार कहाँ लेना जाइयारे ।
पाँव मोरा भारी चल न सकतई ऊंचे अटरिया
चढ़ाए लिए जाइयोरे ॥

झिंझौटी—तिताला

कलालोरो मइको मधवा पिलाई ।
हाथ का कँगना दूंगी गलेका हार दूंगा अच्छो नीको
भरदे गुलाली राम ॥

जागी सारी रात बनरा जोवेरे भलावे ।
बनाके खातिर वारीवे बाग लगायावे मीयाँ या बनरो
रङ्ग भीनावे ॥

३

तू की जाने वेदिलाँदी मेरीयांवे ।
जा तन लगे सोई तन जाने दिलनु भोर नहीं सेरोयांवे ।

४

कटारी जिन मारो सइयां कारो लग जैहै ।
एकतो कटारी दूजे विरहने मारो तीसरी कटारी
मोरे कारो लग जैहै ॥

५

ढोलन सानु जटियांदे नेड़े नहीं जानारे ।
ऊँग सोयालेंदी जालम जटीयाँ तेनु राखे विलमायावे
इस देसको जालम जटीयां जंग सोयालेंदी थानावे ॥

झिंझौटी भपाली—तिताला

अब जल भरन न जाऊंरी ननदीया ।
जैसी बात हरि कीनी मोसौं तोसों कहत सकुचाऊंरी
जब जब आवत याद बात वह समुझ समुझ
पछताऊंरी ।
जानकोदास कैसे बनहै यह अन्याव तेरे गांवरी ॥

झिंझौटी—तिताला

सइयाँ की सेजिया में कैसे कैसे जाऊं लोक दहनवा
जागेरी गुइयाँ ।
कृष्णानन्द पहिर बैठो मैं रङ्ग रङ्ग के बागेरी गुइयां॥

२

'मोरा गवन लिए जाय वदरीमें सुनियेरी ।
मोरी वगर परोसन हितकी जाय कहो गोकुल नगरी

३

भीनड़े वालड़ा वाला मेरा बनरावे ।
हंसकने सिररे सेहरा विराजे अच्छो बनो घर
लाया मेरा बनरावे ॥

बनी बना संग भ्रज ववनोरे ।
कुसम सेहरा शीश दोउनके चांद सूरज मिलगई मगनी ॥

५

सइयाँ निरमोहिया मैं कौन मग जाऊं ।
नैहरकी मैं राह न जानत भूल गईहों वा गाऊं ।
कहाँ नाते लाए तुम मोकों जानतही नहीं नाऊं ॥
ऊंच नोच पथहै सब जगको परत नहींहै पाऊं ।
जगतनाथ को लाए जहांसे पहुंचावो वहीं ठाऊं ॥

६

लागा झकोरा प्रेमका गोरी सोय गईरे ।
सासुजीको बोलन बोलोरो कोयलिया डर लागेछे
मैं मोह गईरे ॥

७

जो नहीं लगदावे रावला मेराजो ।
खेड़ेनु छड़वेके कितवल चलोयांबे मोयां जित वल
वस दानो रांझणाजो ॥

८

नाहीं करत मोरी बहियां मरोरो यह तोरो
वर जोरीरे ।
अंगुरी पकरत पहुंचा पकरा वोहो कहावत तोरीरे॥
गोरो ठठोलो मोसन छोरो कोऊ जानो छोरीरे ।
हाफिज तुरक मिल अङ्गुरी मरोरी गाननको कहा
पोरीरे ॥

९

वाकों कौन नगरमें ढूंढूं वाकों कौन डगरमें पूंछूं
वाकों कौन वगरमें पाऊं वाकों कोऊ बताउरे ।
नगर डगर वगरमें नाहीं हाफिज उत विरम रहो
सांई कोऊ ढूंढ़न पाए वोतो आपो चाहै आएरे ॥

१०

वैरन बँसीया बाजीरे नींद उचट गई सइयां हमरो ।
हरे बांसको बांसरीरे कोई मोहनके मुख लागीरे ।
कृष्णानन्द निशि वासर टेरत अबतो तू बड़ भागीरे ॥

बोले मोर पपीहा प्यारे चुड़ीयां कड़की मुड़कीरे।
कृष्णानन्द रहत रस माते श्याम घटाहै जुड़कीरे॥

११

अपनेरो मन्दिरसें निकसो सइयांकी मैं चोरीरे।
सासकी न मानूं ननदकी न मानूं मानूं जेठानीया
तोरीरे।
कृष्णानन्द एक नहीं मानूं श्यामसुन्दर मन वोरीरे॥

१२

वारी वारीरे सांवलीया तेरी तानकी गानकी तेरी
मान की तेरी टुमक चलन तिरछानकी।
छुम छननन पग नूपुर बाजे तुम तननन मुरली धुन
गाजे सननन सन पवन चलतहै पूर्वानकी कुर्व्वानकी
बलिहारी गो तेरे वारी मेरे प्यारेकी तेरे आनकी॥

१३

खड़ीवे उड़ीकाँ तेरी आन भला भला माही वाला।
जङ्गल जंगल वे ढूंड़ती फिरी मेरा मियाँ कलन
पड़ें जो मेरी जान॥

१४

तोरी चितवन दुख दीनो मोरे सइयां।
विनती करतहूं तोरो पइयां परत हूं तापर मानत
नहीं मोरे सइयाँ॥

१५

बस गई सइयाँ सेतोरे मा।
हितकी बीज ज्यों खेत बिथारो उपजे विथा जरजाय
यह खेतो।
हिल मिलके परदेश चले गए नाहक मिले दिन
चारको नेतो॥
अब कोऊ जगमें प्रीत करो मत मानो बात
हमारो एतो।
आप तरो जग तारो कायम नेह लगाऊ
सुसाहब सेतो॥

१६

कौन लियो रतियां मोरा जियरा।
सुपने में बालम आए सखोरी बहु भांतन सुख दीन,
किन दई मारेने आन जगाई पीय सों लीनो मोहे छीन,
बिन देखे तलफत मोरा हियरा॥
नाम न जानो ठाम न जानो ऐसे रहे अनचीन,
नाजानू कैसी थी सूरत चित मोरो हर लीन,
है साँवरधी मोरा पिय पियरा।
ऐसे पियाको को दिखलावे अलख लखो नहीं जाय,
जो बाके नगर की राह बतावे कायम लागे पाँय,
दूर देशहै वाको नियरा॥

१७

मोरा गवनवा करदे आगे होनी होय सो होय
मेरी जान।
आँम पके अँमली और नीबू और महुवा टपकत
मदरान॥

१८

झमका तेरा नैनादा वाह वाहरे।
किन वल आँदा वारीवे कितवल जादा मेरा मीयाँ
सोणा आपी आपी खुल खुल जायरे॥

१९

वंशी बजाय लिये जाय हो रिझाय बुझाय
सांवलिया सलोना।
मोर मुकट कुण्डल राजे चितवनमें किया टोना टोना
जान ढोना॥

२०

तेड़ी झँझटोने जुल्म कियावे अहो मुरली मैं गाय तान।
सप्त सुरन इकईस मुरछना मोह लिया मेरा प्राण॥

२१

वृन्दावन देखन कों चलो मेड़ी जान।
जहाँ कुञ्ज गलिन वटवंशी कदमकी ठइयां शीतल
छइयां मधुर मधु बाजे वंशी तान॥

२२

वंशी वाले मोहन मेरा प्राणरी।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल उर वैजन्ती मालरी॥

२३

मोरे प्यारे पिया मोसों न बोलारे ।
धाय धाय मोरे गरवाँ लगतहो कहा कोनमें तोरारे ॥

२४

जियरा मार डारोरे तेरो जालको मछरीया ।
नदीया किनारे बगुला बेठा मछरी चुंग चुंग खाय ।
सींगी ने जब काँटा मारा तलफ तलफ जिय जाय ॥

२५

लगत बुरा यारवे दिल तरसावणा ।
साड़े नाल दोस्ती कीती मुद्दत निभाय देदोही
दिलाँदा तपत बुझावणा ॥

२६

साँवलड़ा मेड़े आँदा आँदा मेड़ो जान ।
गाँवदा बजावदाँ मेड़े डेरे आँवदा रहस रहस
गर लावदा चाँवदा मेड़ो जान ॥

२७

छाँडदे गुमानीरा ढोला म्हारे डेरे कामछे ।
म्हारे अङ्गन वारोवे चम्पेदा विरला वे चन्द्रसखो
म्हारो नामछे ।
जो थारे मन वारोवे मिलनेदो आश मेरा सोणा
यमुना किनारे म्हारा गामछे ॥

२८

माँडी को तकसीर वेजालम यार ।
ताडी खातिर वारोवे बाग लगायावे मोयां विच विच
बोया गुलनार ॥

२९

रवा मेडी सुनवे नोमानोदा भला ।
दूर गया वारोवे खबर न लोतो मियाँ रवा मिलामो
तो भला भला ॥

३०

तू मेडी गला माणवे रावल यार ।
रावल खेड़े वारोवे झम झम बसदा वो मोयां सुखसे
बसें तेड़े नाल ॥

३१

मदमातो जोवन वालियाँ ।
अपने बोवां सङ्ग रतियाँनी मतियाँ बाबुल देदा
गालियाँ ॥

३२

लाड़ों थारे भाग चँपेदा मानावे ।
बाग लगोचावे धन फुलवारोवे बोच महबूबांदा थाना ।
तेड़े आँगनवे चँपेदा विरला केसरोया रङ्ग माणा ॥

३३

रस भोनोया जोवन वालियाँरे ।
सजनोदे कारण रतियाँदो बतियाँ राझण
देगए गालियाँरे ॥

३४

ये कजरा मेरो बैरो भयोरो ।
एकजरा मो नैहरसे आयो जर जर मरे मोरो ननद
जेठानोया कजरा देत मोहे देर भयोरो तेहो छिन
पिय परदेश गयोरो ॥

३५

चलोरे जात मदमातो गोरो ।
आगे जातहै कान्हर कारे पोछे जातहै राधा गोरो ॥

३६

सिपाई बांके जटोयांदा नेहड़ा मत लाइयोरे ।
मेरा कहा तू मानत नाहीं फेर पाछे पछताइयोरे ॥

३७

तू की जानेंवे दिलांदो मेरोयांवे ।
ऐंडो ऐंडो बातें वारो वेकाई नई जानदावे मोयां
इश्क रङ्गन नाल पगोयांवे ॥

३८

कुञ्ज गलोनमें खड़ो राधा प्यारो ।
शिर पर मटको खड़ारे पुकारे दहो लो दहोलो ब्रज
वासो के लालारे ॥

३९

कारो कामरो वाला मेरो मन लिये जायरे ।
साँवलो सूरत वारोवे मन पर बसदोवे छण वेखन
न जिय धायरे ॥

४०

तोरी चितवन दोधौं कारे करैया ।
घूंघर वालो अलक भौंह टेढ़ो वलिहारो जाऊं तेरे मनके हरैया ॥

४१

कन्हैया हो नैणा ँाड़े जोर सांवलड़ा नोवाने ।
सूना पांवदा साड़े घर आंवदा खाँवदा माखन चोर ॥
वेख नजर भर घायल कोता हुण लीता चित चोर ।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत बांके हगणदो कोर ॥

४२

सिपैया हो नैना तेरे जोर ।
कबको में ठाड़ा ठाड़ो अरज करेगां इतनो अरज मेरो तेरो ओर ॥

४३

बिलैया हो नैणा तेरे जोर ।
सूना पावे घर नहीं आवे खावे मूसा तोर ॥

४४

जागी सारी रात बनरा जोवैजो भलावो ।
बनाके खातिरवे बाग लगाया बोमोयां इस बनरी रङ्ग भीनावो ॥

४५

मोरे पियाकों किन बिलमायो ।
सगरो रयन मोहे तलफत बोतो भोर भइल भल आयो ॥

४६

बोबां माड़ी जान गुमानो लट खोलना ।
लटजां खोले वारोवे बालोंदा खेड़ा किस तरह हँस बोलना ॥

४७

काशी शहर निमाना चल बसणावे ।
मणिकर्णिका पञ्चगङ्गा माधो रामघाटदा छाणा ॥
स्नान-खान अघ-हानि मुक्ति तहां सेवत राजा राणा ।
योगी जतो और विप्र सन्यासो बांचत वेद पुराणा ॥
घर घर कामधेनु चिन्तामणि दूध भातदा खाना ।
दास ऊधो आनन्द वन मूले रामचरण चित लाना ॥

४८

जगन्नाथ मन मोह लियोरे ।
घर अँगना मोहै कछु मन भावै लोक लाज सब छोड़ दियोरे ।
नील चक्र पर ध्वजा विराजे परसतही आनन्द भयोरे ॥
साँवरा सूरत पर रज लपटानो लाल दुशाला ओढ़ लियोरे ।
श्रीवलभद्र सहोदरा सङ्ग लिये कृष्णदास वलिहार कियोरे ॥

४९

शरण रघुवोरदो मैं गइयाँहो ।
जोई धावत सोई पावत तुमकों मन वच क्रम फुल पइयां ॥
रैन दिना मैंनु कलन परेंदोयाँ पीर हरो पऊं पइयाँ ।
राम सखे छवि निरख मगन भए वार वार बल जैयाँ ॥

५०

अब तुम कब सुमरोगे राम ।
वालापनमें खेल गमायो ज्वान भए बहु काम ॥
वृद्ध भए तन कम्पन लागी बोत गए अवसान ।
कहत कबोर सुनो भाई साधो जे बोलो सोताराम ॥

५१

भिछा फकीरांदो ल्यावनावो ।
हाजर होयतो भेज दिवानो नातर फेर पकावणा ॥
रूखा सूखा मैं नहीं खाँवदा ताजा माल खिलावणा ।
शाह हुसेन फकीर रवाणा बोले वचन सुहावना ॥

५२

कन्हैया मोह लई माहि रस भरो तान सुनाय ।
वृन्दावनको कुञ्ज गलिनमें मधुरोसो बैन बजाय ॥
मुकटको लटक और भृकुटो मटकसों नैनन सैन चलाय ।
राम रङ्ग रस बस कर लोनो सुन्दर छविहो दिखाय ॥

५३

श्याम नैनादो चोटवे लागो मेरेवो ।
जबते कृपा करो नन्दनन्दन मिट गई कर्मदो खोटवो ॥

लख चौरासी भटकत भटकत श्यामशरण आई ओटवो।
आनन्दघन घनश्याम मोहे मिल गए मनमें न रहो
कछु टोट हो॥

५४

श्याम नैनादी चोटवों लागो माड़ेवे।
जबते कृपा करी रघुनन्दन मिटगई दिलकी खोट।
आनन्दघन पियके मिलवेकों क्या घूंघटकी ओट॥

५५

बिना रघुवरहो मेरी हरे कौन पीर।
सोच मिटावन सुख उपजावन राम लछन दोऊ बीर॥
अमृत-सिन्धु आनन्द अवध-पति विहरत सरयू तीर।
गाय बजाय रिझावत ऊधो निर्म्मल होत शरीर॥

५६

मिलनावो प्यारावे महबूब।
बलिहारी मनमोहन प्यारे जो कीता सो खब॥

५७

लाजे गरवाँ लगाय प्यारारे।
निरख रही सुन्दर सुख तेरे बाँके नैना दरस देखायारे॥

५८

शीश मुकट मुरली कर राधे जब सोहै।
निरतत यमुनाके तीर सखीयनके गोहै।
बांसुरी बजावत मुसकावत सब भोंहैं॥
बरणन मैं कौन करों जगत छैल कोहै।
रामदास चरणन छवि बार बार जोहै॥

५९

पनिया भरत छैला लावो मोंकों घर तिया।
सखियनके सङ्ग कबहूँ न बोलै पाय अकेली लावै
मेरो छतियाँ।
और कहत कही नहीं आवै रामदास मुरलीवालेकी
बतियाँ॥

६०

है पूरण अवतार सजनी।
धन धन गोपी ग्वाल वृन्दावन हरि सङ्ग करत विहार
सजनी।
धर्म्म हेत अवतार लियोहै प्रभु हरण प्रथीको भार॥
देखतहै नर नारी झरोखन सों छवि वारम्बार।
भगवान दास धन नन्द यशोदा जाके खेलतहैं हरि द्वार॥

६१

रसीया मत बौराई कौन गुण उतरूंगी पार।
रैन अँधेरी बिजुरी:चमकै लजत जियरा हमार॥
मकरीकें कहा तारहै साहब दोनो तार।
जोवो चाहे तारवे तो तारत लगे न बार॥

६२

श्याम मोरे नैननमें अब बसोहो रहत दिन रात।
भेद प्रेमका का कहै वजहन कहवेको नहीं बात।
मदन मोहन पिया हिरदे बसतहैं कबहूं नहीं
बिसरात॥

६३

मैं अपने प्रीतमसे लेहों चुनरीया रङ्गाय रङ्गाय।
लाख जतनतें विनती करके जोवनाको उमग दिखाय
दिखाय दिखाय।
लग गये यह नैना वजहन अब नहीं जियरा
लजाय लजाय लजाय॥

६४

घूंघट कौन करै मैंतो ना करूं मधु मतवार।
आठ पहर सङ्ग छाड़त नाहीं ऐसो ढीट खिलार।
आप पीवै वजहन मोकों पिलावै देखत हंसे मार॥

६५

बात वोही जो गुरूने कही।
घट घट आपो आप बिराजे नैना खोलके देखा सही।
भटकततो तबहोलों वजहन जबलों दुवधा
जिय में रही॥

६६

बना बन आयारी माई नवल बनीको।
हाथ कँगणा सिर सेहरा बिराजे मुखड़ा अधिक
सुहायारी माई।
धन धन भाग बनीको वजहन एसो सुघर वर
पायोरी माई॥

६७

चोरवा जोवन मेरो ताकैरो गुइयाँ।
दिन दिए चोरवा सेंध देतहै अब रख लाज मेरो
राखेरो गुइयां॥

६८

एसी रङ्गो रङ्गरेजवा चुनरिया।
उपजो ज्ञान पहिरतहीं हिरदे सूझ परी अब
प्रेम डगरिया।
भटकत हतो सो छूट गई वजहन पिय पायेमें
अपनी नगरिया॥

६९

बालम तोरे नैनाहैं जोर।
शीलके काजर कबहूंजो लागे सब जगमें मचे शोर।
वजहन कहत यह बातहै ऐसो जैसे देत कोऊ
बोरमें बोर॥

७०

इन नैननना कोउ समुझावत।
ठौर कुठौर देखत कछु नहीं नाहक मेरा
जियवा फसावत।
ऐसो उपाय सुनो नहीं वजहन ज्यों जल भीतर
आग लगावत॥

७१

कान्हा ऐसी बांसुरीया तैने काहेकों बजाई आज।
जबतें भनक परी श्रवणनमें भूल गए सब काज॥
व्याकुल होके निकसी मन्दिरसों तनक न आई लाज।
वहरे गाँवको नाम बतावो जहाँ केहैं वो बांस॥
विरह विथा कासे कहौं जाऊं मैं केहके पास।
अब वजहन कहा होत है अब लगी करेजे फाँस॥

७२

मुरलिया बाजी कौनो ओर।
एरी सखी कोऊ मोहे बतावो वह बैरन चित चोर।
भनक सुन्यो देख्यो नहीं वजहन याही ते व्याकुल
चित मोर॥

पिया अपने जोवनके माते।
हमसें प्रीति लगाय औरन ढिग निश वासर रहे जाते।
आगेसे ऐसा जो जनते वजहन काहेकों जियरा फंसाते॥

७४

विरहका लागे जब वान।
कटु बोली सुनियो होय काहे न भूलजा वाके गुण ज्ञान।
वजहन यह सब लोग नगरके नाहक मोपर करतहैं
तान॥

७५

छोड़ गुरुके चरण कहाँ जाऊं।
हरिके शरण निशि दिन उर ध्याऊं।
जाकी कृपाते घटही अपनेमें वजहन देखूं
हरि मूरत ध्यान चित चाहूं॥

७६

लाज मेरो रखेंगे भगवान।
सुख सम्पति देहैं माहैं जगमें आखर मुक्तनदान॥

७७

थारे नैनानि जादू कियारे।
एकतो नैना आपते काफर तापर एसो टोनो काजर
तबहोतो अधिक जुलम कियारे।
वजहन इत वित माड़ा मन मोह लियारे॥

७८

लाग गईरे मोकों काहूकी नजरोया।
करके सिङ्गार सुनोरी सजनी नाहक चढ़ीथी
मैं ऐसे अटरोया।
नाजानो कैसो नजरहै वजहन विरहने मारो केंधों
प्रेम कटरोया॥

दोहा

वजहन राग तुम सब कहे ओठमरो कहो पचीस।
एक नजरोया ऐसो कहो सो लेत निकासे स्वांस॥

७९

मोहुकों मधवा पिवादे सइयाँ।
आप रहत हो सदा मतवारो वजहन तुमारो
परतहैं पइयाँ॥

८०

पनघट कैसे ले जाऊं गगरीया।
जित देखूं तित ठाड़ेहैं व्रजहन मोहन प्यारा रोकै आन डगरीया॥

८१

हरि बिन गाये गाना धूर।
दोनो बराबर सुन व्रजजीवन जैसा सुघर वैसा कूर॥

८२

क्या जानि म्हारी पीर वेदरदी कन्हैयावे।
यमुनाके नीरे तीरे गऊअ चरावै साँवल सुघर शरीरवे॥

झिंझौटी—जल्द तिताला

कहा करें ननदी सइयाँ नहीं आयोरी।
सगरी रैन मैं उन विन जागी मइसों कछुन बतायोरी॥

२

मेरे सइयाँको कौन बिलमायो।
पीर हमारी उनहूं न जानी रहस वहस गर लायोरी॥

झिंझौटी—तिताला

वारी सनेहिया मोरी उन सङ्ग लागोरी।
रैन दिना वारीवे मोहे कछु नहीं भावे उनहींके रङ्ग पागोरी॥

झिंझौटी काफी—तिताला

लटकैंदड़ी साहरड़े चलीरे।
साहरड़ेदा मुकलाऊं आए लै चले मैनू पुर पराइयां।
बाबुल मैनु दायज दीता एक अठे न कल्लो भाइयां॥
तं मर जोइयाँ आइयां देह विदा मैनु मवे सिधाइयाँ।
बाबुल मैनु देर विछोड़ा कीलड़ी मय चली रवा डोली मैंधीता हरडेल थो ना कोई सङ्गो ना कोई साथी शोहर अपनेदी महर मनाइयां॥
कीकुरहो सा भलो जेहा कीता कर्म्म कमाइयां।
धर मस्तक पैले रवा ले ग्वाया शाह हुसैन सबे भलीया चँगीयामें इकलो मिलाइयां॥

झिंझौटी—तिताला

ऊधो ब्रज मोहे बिसरत नाहीं।
वंशी वट यमुना जल अचवन और कदमकी छाँही॥
लेसुर भीतर कनक दोहनी खरक दुहावन जाईं।
ग्वाल बाल सब केल करत हैं हँस हँस दे गलबाँही॥
जब हम मधपुरीको सिधारे आवतही सकुचाईं।
सूरदास मोहि यही अचंभो अब व्रज वसत के नाहीं॥

२

एसीरी जनम जर जाय जग आयके।
कोऊ पूजे देवी देवता देव जो मनायके॥
जेहिने जनम दियो तेही बिसरायके।
कोऊ चढ़ावै भैंसी भेड़ी मुरग मगायके॥
निज काया पोखवेको पर जी सतायके।
भलो चाहै अन धन दे बिप्र बुलायके॥
कोई गरे फाँसी डारे डगर चलायके।
कोई खाए लड्डु पेड़ा पुरीया मगायके॥
साधो खाय रूखा सूखा हरि गुण गायके।
कहै कबीर हरि भजो सुनर तन पायके॥

३

चौक अचानक घरतें निकसी देख परी सूरत मोहनको।
भूल गई सगरी सुध घरको॥

झिंझौटी जंगला—तिताला

इन वंशी वाले साँवरेने मेरा मन मोह लिया।
मोहनी सूरत रस भरी मूरत तन मन वस कर लिया॥

२

चलो जा मोरी ननदी लागूं तोरे पइयां।
आगे आगे ननदी चले पीछे ननदोइया जाके पीछे मैं चलो मोरे पाछे सइयां॥

३

मारो मरूंरे मैं तो दर्द छिगुरीयाको।
कृष्णानन्द कोई नहीं बुझदा वेदन व्यापो सजीवन मुरियाको॥

४

साँवलीया नहीं आयोरे किन बिलमायो।
यास पिया जो मोसों बिछुरके जियरा सतायो॥

मोरा जियरा दहला जायरे ।
रात विरात अँधेरे उजियाले यास पकड़ चमटायरे ॥

६

जोवनवा हमरा जायरे ।
कासे कहूं विपता विरह कोयास पिया नहीं आयारे ॥

७

जियरा ललचाय तोरे मतवारे नैना ।
कृष्णानन्द को आन मिलो अब बोल अमृतके बैना ॥

८

कैसे भरूं मोरे रामरे मैं गगरी ।
पनवट ढोट नगरवाकी नगरी ॥
घूंघटकी आटहीं ठाड़ो सातन बहियाँ पसार
मोसें झगरी ।
इत गोकुल उत मथुरा नगरी बोच उमग एक
कान्हबाको मोसों डगरी ॥

९

नैनाहे निजारे नाज मेरा मन मोहारे ।
शुभ रङ्ग पिया तुम चिर जुग जोवो अचल रहो
वारे थारेरे ॥

१०

मारे मइयांरे तोरी बोलीयाँका मारा ।
कहा करूं कछू वस नहीं मेरा निशदिन जरूं बोलो
ठोलीयाँका जारा ॥

११

जिय घबराय सखो मइयां नहीं आए मोरा ।
कहा करूं कुछ वस नहीं मेरो कान सखो विलमाए
पिय मोरा ॥

१२

मेरा मन लागि हांरे ।
कोई विरहिया वेर पुकारे विरही वेर पुकारे ॥

१३

मैं वनज करेंदोयाँ थारो बनरावे ।
हाथ कँगन सिर सेहरा गुंधो बनरा थारो मालिन
छुड़यांवे अजो कांई उतरां सासू थारे बागवे ॥

१४

दरद बतादे ननदो वाला जियरा मोरारो ।
माम मोरी वैरण ननद हठोली मइयां पइयां लगेरो ॥

१५

राधा प्यारी मन मोह लियो मेरा नैनवा तामें लागेरो ।
चन्द्रवदनी मृगनैनि श्यामा तन मन रसमें पागेरो ॥

१६

सइयोंनो से ढूंढ़ डर जावां सजणादे कारणे ।
जङ्गल ढूंढ़ा वारीवे वेला भी ढूंढ़ा मेरा सौंया ढूंढ़ा
शहर विगाना ॥

१७

इश्क कूंचेसे जालम लेजा मोहे बाग मेरे ।
सुरग्व चीरा मोहे रङ्गादे माहे जु तफे नागनारे ।
तेरे तो कूंचेमें जालिम देखो हाय न्याजुनोरे ॥

१८

वेखलो यार परोयांनु सब कोई चाँहदानो ।
हीरा मोती लाल जवाहर बामल दिल विच
भांदियानी ॥

१९

ए लङ्गरवा भरन न देरे कुएं परंरे पानीड़ा ।
चूनर झटक मोरा अचरा पकर लीना साम सुने तो
क्या वालेगा मथ पांवे शोक रङ्ग जानोड़ा ॥

२०

मन मोह लियारे सजना विसार नैणा नाल ।
दिलदो विथा मैं कासे कहुं शोक रङ्ग मानदा भी नहीं
वो मेंतो हाल ॥

२१

क्यों मारदा यार बोलीयां ।
अस्सी हजार बन्दोयां तेरीयां क्यों बोलदा यार ॥ बो०॥
ऊंचो अटरियां चन्दन किबरोयाँ हांरे जिसमें बसे
छल वलिया यार । बो० ।
ऊंचे चौवारा पलङ्ग बिछाया तामें पवन चलत
पूरवैया यार ॥ बो० ॥

२२

मुरलिया वाले आन मिले तौ भला।
तेड़े कारण मैंड़ा जिय तरसतहै आन मिलो
यहीहै सला॥

२३

गले मूंगेको हार गोरे वदन पर गोदना।
तेरी ढोमनीया कारीरे गोरी कपड़े पहरेहैं लाल॥

२४

हाँरे कान्हा तोरे रङ्ग भीनो मोरो चुनरो अरे हाँरे।
सेज सुती वारी नींद न आवे रहिहूं हौं नैना मूंदरो।
सोतीथी मैं नींदकी माँती अब न सोऊं तेरी सेजरो॥

२५

पर देशिया वालम मेरारे भुक गरदा मोरे लागरे।
बारा वरस पर पिय मोरे आये नींदके मांते जागरे।
कृष्णानन्द अरज इतनी मोरो आज खुल्यो है भागरे॥

२६

मोती माला मेरो कान्हा छोड़त न करसे।
अच्छो मोठी वात कहकै लायो मोहे घरसे॥
एसा विश्वासघाती मोरे नैना सरसे।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिन में जन शिव दीन विकाने
राधा वरसे॥

पंजू—तिताला

बांकारे बेदरदी सइयां मेरो कह्यो मानै ना।
हमसों अवध बदो अनत रात बसे दिलको विथा
मेरो सखो वोती जानै ना॥

२

सइयों मोसें इश्क लगा नन्दलालरे।
चञ्चल चपल सुघर मनमोहन चञ्चल नैना विशालरे॥

३

को पतियां ले जायरे विदेशवा लगन लगी मोरो।
एक पार गंगा वारो एक पार यमुना बीच बालम
तेरा गांवरे॥

४

बोलियाँ न बोले आधी रात पपोहा प्यारे।
प्रीतम पियाको कोई समुझावो डोलिया ले आवो
पइयां परहूं चलहूं साथरे॥

५

मेरा वाला जोवन योंही जायरी हौंतो पिया कछू
देखा न भाला।
उसरे पियाकी मैं कासे कहूं सजनी कानो सोहे
बुँदेवारा।
चञ्चल सइयां तोरा इश्क निराला ना जाने
वैसा जादू डारा॥

६

मेरा सोच नहीं जियरा जायरी गुइयां।
ऐसे बेदरदी वालमसे कछुन बसायरी।
उमग दिल की कासे कहूं सजनी समुझ समुझ
पछितायरी॥

७

एरी मेरा बांका सनेही यार।
आँख लगाय दिल घायल कीता जांदा चोरी यार।
तीखड़ा बांकड़ा भलड़ा छलड़ा मिठड़ा दिठड़ा
सांवलड़ा मेड़ा यार॥

८

सइयाँको वेग बोलाय मोरी ननदी नींद न आवै सारी
रतियां मइकों।
ना जानू कहाँ उरझे रङ्गीले धरक गइलो मोरी
छतियां ननदी॥

राग बरवा—तिताला

मेरे कान्हाने देखो मुरली बजाय मन दस
कीनो मोरा।
मुरलीको धुन रे जबते सुनोरी सुध बुध गई विसराय।
तन मन वारूंगे अपनो जाको जो कोई कान्हकी
मुरली आन सुनाय॥
लाज शरम सब छाड़ सखीरी तिय कुल शरम गमाय।
कान्ह कान्ह रटना लागीहै कान्ह विन कछू न सुहाय॥

झिंझौटी पीलू—तिताला

ननदोई लालारे सइयांके दरद दिवानी भई।
सगरी रैन मोहि तलफत बीती नाहक मेरी
जवानी गई॥
कृष्णानन्द अब आन मिलो मोहि मैं तेरी
बलिहारी गई॥

२

मोरा जिय तरसतहै कान्हरो मिजाजी।
सब सङ्ग प्रीत करो मेरी सखियां परवस भई
मैं तेरे ललाजी॥

३

छदड़े जाँदीया हुण तेरीवे राँझणा यार।
चलो सइयां असा वेखन जइये राझा जोगी होंदा।
कानन कुण्डल गल विच सेलो हीर हार कहि रोंदा॥
वेराझ० ॥
चलो सइयां असो देखन जइए राँझेदा चौबारा।
हीर निमानी टेढ़ेदो राझाँ ढांदा गारा॥
सबर परो इन कहारां पै ज्यों खड़ो न कीतो डोलो।
ओरोंदे नाल में हिल मिल चलियां राँझेदे नाल
नहीं बोलो॥
चलो सइयां असो वेखन जइये राझा सूली चढ़दा।
सूली चढ़दा खिल खिल हँसदा मौतों नाल न डरदा॥
वेलो वेलो सब कोई आंखे रैभो आखाँ वेलो।
निकस भँवर जब बाहर बैठा सूली पईहि हवेलो॥
चलो सइयां असो वेखन जइये राँझेदिया पोलो।
ना कोई सङ्गी ना कोई साथी ना कोई मीठो बोलो॥

४

आनन्द भयोरी आनन्द भयोरी मनमोहन मेरे
घर आइलो।
आवो गावो नाचो सब सखी सहेली सदारङ्ग
पिया पाइलो॥

५

माड़ा मन मोह लियारे इस सँवलियादी अखियाँ।
कलन पईंदो विन देखे सानु ध्यान रहँदा दिन
रतियां सखियां॥

देखो सोणा गङ्ग धारे दाङ्गाणा।
हाथमें चौमुख काँधे धोती करन चले गङ्गा असनान
काशीमें ह्नाणा॥

७

बोलियां न बोले आधी रात एहो।
अपने सइयाँको मैं बल बल गइयाँ डोलिया फन्दाय
लियो साथ एहो॥

८

मोरे गरवा फुलवनको हरवा।
रात चोर चोरो आन कर डार गयो प्यारसे सुन्दर
मीत पियरवा॥
होंतो ऐसी नींदको मातो करवटोयां न लई
सारो रतवा।
नेक जागती जो अपनो मौजसे न छोड़ती में उनको
अचरवा॥

९

कौन जानेरी सखी मनको बात विरानी।
भलो बुरो बीततहै जापे वोही वहि पहिचानो॥
मार विरहको सोई जाने जाके लगी तन माने।
मौज इस राहमें बहोत गएहैं मल मल हाथ सयाने॥

१०

हरि सावलिया गिरिधारी गणिका दोनोरे तार।
आठ जाम नित नाम पुकारे सांचो प्रीत गोपाल भावे
भवसागर उतरे पार॥

११

भला वोई सांवले वंशी वाले मेरे प्रीतम प्यारे मोहे
दरसन दीजरो जग उजियारे।
जा दिनते मथुराको सिधारे रैन बीतो गिनते
मोहि तारे॥

१२

एरी मोरा बांको सिरोही वाला यार।
रण चमके तरवारिया सारी फौजारा सिरदार॥
आजा तू आजा जदे चोरेदी झलक दिखाजा यार।

बांकोइ घोड़ा ताँड़ो बांकोइ जाड़ा बांकोइ कमर
कटार ॥

१३

जमना सांचो कहियोरे मोरे पिया मिलन को आस।
जो मोरे पिया बेग आवें मोतियन थार भरेहौं
तू तेरे साच ॥

१४

छोटो ननदो कुवा पानो न जाय नेना लगाय कोई
ले जायगा ।
सोनेका गडुवा गङ्गा जल पानो कोई पो लेगा
ननदोया नजाय ।
चुन चुन कलियाँ में सेज बिछाऊं आवोरे जानो
सेज हमार ॥

१५

मद छकियाँदे राज मोहे ना पिलावो दारुड़ा ।
मैतो थाशों अरज कराछाँ अमलारां बांका मारुड़ा ॥

१६

पहरो लहरको चूनरो ककरेजिया जानो डारो उतार।
जालीको कुरतो अतलसको अङ्गिया सोहै गोरो
तेरा जोबनारो जैसे बाग के अनार ॥

१७

दरकाय गई छतियाँ दिन रतियाँ ।
सास ननद मोरो वैर बिसाहै सौतन आन परो बतियाँ॥

१८

मदके छके मतवारे नेना बालम छैल छलबलो चाल।
चाँदशा मुखडा नेन रसोले घूंघर वाले बाल ॥

१९

सारे जगतको फाँस लियोहै जुलफोंके डाले जालरे ।
दांतामें बांके मिस्सो रचोहै होठहैं पानो लालरे ।
कहत मदतअलो दरस दे अपने करदे मोहे
निहालरे ॥

२०

दाहो लागे मेरे करेजवा ।
मोरे मैं कैसे आयो सन्देशवा हमको चुनरो
पियको खेसवा ॥

२१

बांसुरिया बैरन मोरोरे सांवलिया तेरे नेनवा ।
जबतें भनक परो श्रवणन में रहत नहीं मन चैनवा ।
कहै गुदर दोउ रङ्ग बराबर आन बजावे रैनवा ॥

२२

अरे मोरे गोहनवा लागोरे ये मुरलो वाला साँवला ।
सगरो रयन माहे तलफत बोतो भोर भए
आए मोहनवा ॥

२३

तेरा जोवनवा हाकिम मांगे सुनरो अराए गुलबदनो।
आधा मांगे काजो मुल्ला आधा कुतवाल सारा मांगे
गामके हाकिम सुना अनोखो बाल ॥

२४

अखियाँ न्यारो लगो बन बाला पपोहरा सेत ।
हरे हरे बनके मोरलारे तारा बलैयां लेत ॥
अपने पहर बालम ना तारो बलैयाँ देत ॥

झिंझौटी—जल्द तिताला

कैसे भरूं मोरे रामरे में गगरो पनघट बीच
नगरवाको झगरो ।
ओट घूंघटको उठाय लई उमगसे सौतन बहियाँ
पसार मोसें झगरा ॥

पीलू—तिताला

कजरा ढुरि ढुरि जाय सिपाइड़ा आंख लगा मन
मोह लिया मोरा ।
साँवरे वदन गोरो अपने उमगसे कैसेके समझाय॥सि०॥

२

लेगयो जियरा लुभाय जालम लेगयो हमरा।
है कोऊ हमरे दुखका बटैया यार उसका जिय
समझाय ॥

३

बांकारे बेदरदो सइयां रात मन लेगयो ।
नामैं नानो यास पियाको दाग मोहे दे गयो ॥

४

सइयाँ मोरा अनमोला मोतोला ।
बिरहाको पोर कबहूं न छुटाइरे लेऊं तेरो बला ॥

भला भला वेराजो रहना मेरो जानवे ।
आड़ियाँ मेंता मोहो मेरो जानवे ।
तुझ विन मेंड़ा और न काई तुहो असाड़ा प्राणवे ॥

६

थारेतो नैनाने विलमाया मेरो जानवे ।
बांकोइ जोड़ा तेरो बांकोइ घोड़ा बांकोइ
कमर कटारवे ॥

७

नैनादो तेरी कहाँ बान परोवे ।
बान परो निशदिन आँख रहोवे ॥
दूर दूर जाँदा वारो मेंड़े नहीं आँदा तेड़े चरणन
चित धरोवे ॥

८

जावांदे सांवलडा मोणा म्हारे डेरे कामके ।
मेंड़े आगण वारोवे चम्पेदा विरवा मेरा प्यारोया
सांवलो सखो म्हारो नामके ॥
जो तेड़े मनमें वारोवे मिलनेदो आश मेंड़े सोणा
यमुनादे तीर म्हारो गामके ।
देव कृष्ण प्रभु रस वस कर लई ज्ञानध्यान तेरो
अष्टजामके ॥

रेखता—तिताला

देखो देखो जी म्हारो अखियाँने क्या काम किया ।
पहले तो आप लड़ो फिर मुझे बदनाम किया ॥
जादू किया टोना किया दिया मुझे पानके बीच ।
शितम नैनाने किया सुधि न रहो शरीरके बीच ॥
मालो तू रोक रुपेया ले बागां में जाने दे रे ।
मेरा जानो पड़ा घायल पट्टो लगाने दे रे ॥

झिंझौटी—तिताला

जोवन जोर भए मोरी को पतियाँ ले जाय ।
सइया हमारे परदेश गवन कियो जियरा
निकसो जाय ॥

२

मोरे करेजवा लग जारे लगजा मोरे बालम ।
जो पिया हमसे रूस रहैंरे प्रेम गांठ मोरी खुलजायरे
खुलजाय मोरे बालम ॥

३

आजरे बधावा बने लाड़ले घर गाओ माई ।
वालके घर व्याह रच्या बृट नामदो तेल चढावो आके
बनेको गाइये बजाइये रिझाइये माई ॥

पील—तिताला

जादू जादू कहदा मैं नहीं जानदो ।
प्रेम नगरदा हाट लगाहै गोरा दिल पहिचानदो ॥

२

मोसें नेह लगाय गयोरे बालम ।
याम पिया तुम एक घराको काहे मनाय गयोरे
बालम ॥

३

कारे बदरा डरावें सइकों निंदोया न आवे ।
एकतो अँधेरा दूजे विरह सतावे ताजे पापोरे पपीहा
पीउ पीउ बोल सुनावे ॥

४

एरी एरी गुइयाँ नैणा लागे ।
जब जब छूटे तब तब दुखदाई मन पागे ॥

५

म्हारो लावो लोक नातोरे चूरम चूरा वोआणारजो ।
शोणादा केशिना आवे रूपेदा कोशोण आणारजो ॥

झिंझौटी—होरी ताल

कक पीवश्यां हो राजाजी समुद्रको झालोले ।
भूलो पनिहारो काँई पानोनू चलियाँ होजो थारे
पानोरे गदलो गदलो राजाजी० ॥

२

ये माझारा लो सायबां नोवे राव राजारा कोकरो पर
मैंने रंग डारा ।
मड़ोरा डोरा देशमें लगावे लाल पटोंदियाँ वेडोरा ॥

झिंझौटी पील—तिताला

सइयाँ मांड़े बांसरीदो तान लागोरे ।
डुपतो ठाड़ो साड़े घर अन्दर कान भनक सुन भागोरे ॥

जावोरी जावो बसनिया प्यारी नैनासें मारे
नजारा जान।
भागल पुरकी सकरी गलियां जामें बसे
कलबरीया जान।
भर भर मधवा मदकों पिलावे आप न पीवे थोरा
पनिया जान॥

झिंझौटी– धीमा तिताला

सोणावे मानलै माडड़ा गला दिल रहंदा वेकरारवे।
इश्कदी रमझ समझ ले आशी तरवा करे तैंडा भला
मियांवे॥

२

परी तेंडा मेनु निजारा भावदा अमी तेंडे नाल
दिल चांवदा।
नजक आधीन मत विमार दिलसे इश्क लगा कर
चारी चोरी आवदा॥

३

छड़ खेडोंदे चाकरीवो मैंतो करदियाँ नाहियाँवे।
शोरीदा मेनु दम गनीगत मिलनो सानु कदणा
राँझेदा नोकरीवे॥

४

दिल भर जानी प्यारावो मेड़ा माथीडा सोणा एनडा
वाहीडा छलडा भलड़ा तिखड़ा बांकड़ा नैना वाला
मतवाला सांवला वो छैला।
मस्त मद होशी सर सार सिरिदा जनुदा सजनु जालम
इश्क दरद वेपरवाह रङ्ग भोनें सितम गर
माशूक मेहा वाला वो छैला॥

५

नैना लगी ताडे नाल जादूगर मियाँवे।
बरछीदा मारा वारीवे कोई दम जीवे नैनादा मारा
मरजायवे॥

६

जानदा जानदा मौला मेरा दिलदी पिउनें किन
राखो विलमाय।
कोई नहीं जाने जिन रङ्ग सब कुछ पहिचानो इश्कदी
बात निवाह॥

७

सोणा मही वालियाँ में ताँडे ढूँढदे जावाँ।
वही जानें सदारङ्ग पहिचानें जिन रङ्ग सब कुछ
पहिचाँनें इश्कदो बात निभावां॥

झिंझौटी –तिताला

भूल क्यों गयावे मेंडो यादवे सोणा।
याद तेंडो यारी दिल विच बसदी किससे करूं फिरियाद॥

२

तेनु हुसनदी कसम मेड़ा माहिड़ा हुसणोदा
झमका वेखलाजा।
दिलदे अन्दर चाह लगी मेरा मियां इश्कदा शोरणी
चमकाजा॥

३

रैण किथे गुजारावे सुनता गलाँ मेंडो यार सिपाई।
जो लगाना किसीसे भला नाहीं इस जग विच शोरी
मियाँ ना कर किसीका बुराई॥

४

जारे जारे जा पिया मोसोंना बोलोरे।
जावोरे रसीया नींदके माते उरझ रहे कहूं और
घुँडो ना खोलोरे॥

५

तुरकवाने गारी दई दईरे।
नामें बोलो सायवा ना मैं चालो मोसों करत
बरजोरीरे॥

६

जियरा न भावेरो एरीए मेरो अली गुइयाँ।
योगन होइयुं पियाके कारण लागा प्रीतका चसका॥

७

देशीड़ा विगाणा अब नहीं रहणावे।
सौतन का मोहे डरहै सइयाँ भलो बुरो सब सहणावे॥

सुख बसोयो तैड़ा खेड़ा सांवल प्यारावे।
सोहनी सूरत वारीवे माधुरी मूरत वो असी वेखलामो
ताँड़ा डेरा ॥ सा० ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

रात रहजा जाने वाले टुकबो दरस दिखायजा।
मैंतो तेंड़ो हाजर बन्दो तू मेड़ा साहबा मेहरदो
नजर कर आयजा ॥

२

गबरू यार नाजों बन्दोदा दिल रखणा सोंणावे
रात रहजा।
ग़ोरी कितवल रहंदा तैंड़े कारण मेड़ी जिन्दड़ोदो
तपत बुझाजा ॥

३

नथड़ी झोखाँ खाँदी भला यारवे।
नजर न आँदा ग़ोरी कितवल रहंदा साड़े कारण
माड़ो जिन्दड़ो तपाँदी ॥ भ० ॥

४

खड़ियानी मैं कूकाँ नोवे कुड़ुकावे आमिल
कालड़ो धाराँ।
बाज पियारेका मन मिलिया कौन मिले मेड़ो साराँ॥

५

सजनावे में नहीं जानदो।
बसदो में राज पुरेनू तू साहब मेरा मानदो ॥

६

मानु भांदोवे सोहनी सूरत तेंड़ोवे।
रैन देहा झेनुवे ध्यान तुसाड़ा मेड़ा मियाँ कभोतो
दरस दिखा दोवे ॥

७

बस भीनीयाँ जोवन वालियाँ।
साँईंदे रङ्ग रतियाँनी मतियाँ बिच मुखड़ा
बोड़ा लालियां ॥
होरदे कारण राँझे दिवाणा राँझण देदे गालियाँ।
सजनादे कारण भई दिवानी राँझण देंदा गालियां॥

तेनु कहंदोयावे जानो रेदोयाँ याद ताँड़ो।
कहि गला तेंनु आखाँ जिन्द रङ्ग मानले भला तू माड़ो ॥

रावलिया तूँ साड़ो गलाँ मानवे।
राँझण खेड़े वारीवे जम जम बसदे वे दे खेत
बँबूलवे ॥

१०

बनो मेरा मन मोह लिया चूड़ा अजब बहारां दानो।
इश्कदो गला वारीवे मानदा भो नाहीं में कोकराँ
समझावोनो ॥

११

योगी बिना आज मढ़ैया सूनो।
औरोंदे नाल वारी हंसदा बोलदा मैड़े नेड़े सद्दयों
अनामनो॥

१२

गोरो तेरे कानों बिच बुन्दावालावे।
दाँतादो मिस्सो तेंड़े अजब सोहावदो गर सोहे
मोतियांदो मालावे ॥

१३

होरनु कोई आनके मिलोमो चौंकावे।
या रब्बा राँझेदा वेलोवे होरदा मुलक पञ्जाब
आखाँवे ॥

झिंझौटी—तिताला

रेरेग सारे मगरे सारेसा।
सारे मरे गरे सानि धनि धप मगरेसा ॥
मगपपधनिसानिधपमगरेमधपमगरेसा।
ममपपधनिधपमपसासासानिधपपनिधपमगसा ॥

२

मन राजो रहना मन मतोए।
रैन देहा सुखसों गुजर गइयां बिन दोठे सानु कलम
पतोए ॥

३

रासमण्डल मध सखो नितंत बनवारो।

करसे कर जोरि श्याम गोपीगण ठौर ठौर बीच
मोहन राजत छवि कोटि कामवारी ॥

झिंझौटी—एकताला

पञ्चवटी परमकुटी पातनसों छाई ।
जहाँ निवास जाय किया जानकी रघुराई ।
कञ्चनको मृग निहार, बाली मिथिलाकुमार,
याको मृगछाला प्रभु मेरे मन भाई ॥
सुनत वचन धनुष धार, लछमन उठि खबरदार,
या बनमें डोलत बहु निशिचर समुदाई ।
घेरो मृग दूर जाय, कीना अनुज न उपाय,
हाहा करुणानिधान माया की सुनाई ॥
लछमन उठि जाहु वीर, सङ्कटमें परोहै भीर,
बरबस पठए अन्त नाहीं न भलाई ।
लङ्कापति दियो जाय जानकी दिखाई ॥
सूनो भवन राम देख दारुण दुख पाई ।
प्रगट दुरत डरत जात, मुकुट छवि लखि सकात,
फिरि फिरि प्रभु निरखि जात जीवन सुखदाई ॥
निशिचर मारीच नीच, निर्त्तत धनुष नस बीच,
मारे सन्ध्या निदान प्राण खग पठाई ।
तुलसी प्रभु दीनबन्धु, करुणा-आनन्द-सिन्धु,
आरत प्रण-तारत निगमागम यश गाई ॥

२

सीतापति रामचन्द्र रघुपति रघुराई हो ।
रसना रस नाम लेत, सन्तनकों दरस देत,
विहँसत मुख-चन्द मन्द सुन्दर-सुखदाई ॥
दसन दमक दुति रसाल, अयन बैन दृग विशाल,
भ्रकुटी मनो धनुष कोर नासिका सोहाई ।
केशरको तिलक भाल, मानो रवि प्रात काल,
श्रवणकुण्डल झलमलात रतिपति छवि छाई ॥
मोतिन की गले माल, तारा गण गण निहार,
मानो गिरि शिखर तीर सुरसरि चलि आई ।
साँवरो त्रिभङ्ग अङ्ग, काछे कछ कटिनि खंग,
मानो माया की छवि आपी बन आई ॥

सुर नर मुनि सकल देव, शिव विरञ्च करत सेव,
कीरत ब्रह्मण्ड खण्ड तीन लोक गाई ।
सखा सहित सरय तीर, बैठे रघुवंश वीर,
हरषि निरखि तुलसीदास चरणन रज पाई ॥

३

कलयुगके तारवेकों गङ्गाजी आई ।
जटा जूट शीश धरे शङ्कर कहाई ॥

४

जबतें मोहि जगन्नाथ दृष्टि परे माई ।
अरुण खम्भ गरुड़ खम्भ सिन्धु पौर झाई ।
मन्दिरकी शोभा कछु बरणीइ न जाई ॥
मङ्गलाकी दरस देख आनन्द होजाई ।
जैजै श्री जगन्नाथ सहोदरा बल भाई ॥
थाल भोग लगनेकी बिरियाँ जब आई ।
उखड़ा श्री दूध भोग प्रभुजीने खाई ॥
महाप्रसाद भोग खात आरती मजाई ।
अपने प्रभु नाशिका पर मोतिन लटकाई ॥
बीचमें सुभद्रा सोहै दाहिने बल सोहाई ।
बांए हाथ लक्ष्मी छवि बरणीइ न जाई ॥
मारकण्डेय वटेकृष्ण रोहिणी सुख दाई ।
इन्द्रदमन स्नान करत पाप सब नसाई ॥
महोदधि चक्रतीरथ गङ्गा गति पाई ।
मीराके प्रभु जगन्नाथ चरणन बलजाई ॥

५

कृष्ण जनम यमुना तीरे भक्तन सुखदाई ।
भादों मास कृष्ण पच्छ अष्टमी रोहिणी नचत्र शुभ घरी
शुभ पल मङ्गल बुधवासर सुहाई ॥
मथुरामें जनम लियो, वसुदेव को दरस दियो,
शङ्ख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज दिखाई ।
नन्दके आनन्द भयो, यशोदाने गोद लियो,
ग्वाल बाल नाचत सब गावतहैं बधाई ॥
निर्तत सङ्गीत गीतन नई नई, तान लेत ठाड़े तततथेई थेई,
ताधिलाङ्ग मृदु मृदङ्ग बजाई ।

सप्तस्वरन तीन ग्राम बाईस सुरत मुर्च्छान उनचास
कोटि तान ब्रजानन्द गाई ॥

झिंझोटी—धीमा तिताला

परियाँ तेरो जुलफांमें केते आलम जालम बसदावे ।
पतलो कमर लंबे बाल नैनादा कजरा भौवें टेढ़ो
बान भर कसदावे ॥

झिंझोटी—तिताला

तेंड़े कारणवे बागोंदा बासोवे ।
बागभी तेरा बगीचा भी तेरा बीच महबूबाँदा बङ्गलावे

२

सदा समझाइयोवे लाखों बार ।
महांदे कारणवे ढूंढ़न निकसो खड़ो उड़ोकों
रावी पार ॥

३

पियकी बतियाँरे जिय में लग गइयांरे।
जो पिया हमसे रूस रहेंगे लेतो मैं छतियां लगाय
पियकी घतियाँरे ॥

४

झूलनो खोय गई बालम मोकों लावो मगाय ।
लाख टकेको झूलनो गढ़ावो देख सब ललचाय ॥

५

बोल सुनाय जावे सानु भाँदे भाँदे ।
शहर पूना बिच आलम बसदा क्यों गोरी
शरमाँदे जांदे ॥

६

जँगधोयाले नू ले चलना दम हंसके ।
ओ यारो हांदो दिल मायल हंसके ॥

७

माहीड़ा बालम याधा में तेरो सीं सइयों साड़े जाने
नहीं नेह लगणदो सारवे ।
बेपरवाह ना करणा बनबोदे गरीब यों प्यारवे ॥

८

प्यारा राझांवे मैंड़ोकी तकसीर ।
जो तू छाड़ कर मेनु गया बिच अबेडे खबर न लीनी
फिर कर यों कहदी हीर ॥

आज रहो घर मेरे हो सइयां ।
घरको महरोया मनइं न भावे चोरी का गुड़ मीठा हो॥

१०

छैल मोरे डेरे आज अइयोरे ।
सोहनी सूरत माधुरी मूरत सुन्दर दरस दिखैयोरे ॥

११

छैल मोरी नाजुक बहियांरे।
नई झूलना अंगावा सूरत को मोती लगयांरे ॥

१२

बँगुरी मुरक गईरे सइयाँ मारी ।
अङ्गुरी पकरत मोरा पहुं चा पकरे बहियाँ पकर
रस लीनोरी ॥

झिंझोटी—खेमटा ताल

वंशी बाजी सो मेरे मन बस गईरे लेजा बिरजको वासी ।
सुन्दर-श्याम मनोहर-मूरत मोहन-मधुर सुख हांसी ॥

झिंझोटी—तिताला

गोपी गोपाललाल रास मण्डल माहीं ।
तत थेई थेई सुधङ्ग निर्तत गनवाहीं ॥
द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मृदङ्ग झननननन नूपुर रङ्ग धृगड़ता
धृगड़ता धिलाङ्ग उघटत रस माहीं ।
श्रीराधा मुख शरद चन्द, पोंछत श्रम-जल-बुन्द
श्रीगिरिधर लटकि लटकि करत मुकट छांहीं ॥
बीच लाल बीच बाल, प्रति प्रति प्रति दुति रसाल,
ठुमकत गति अति उताल रीझ प्राण वारो ।
देखत थकित यमुना नीर, खग मृग द्रुम तट गंभीर,
बलि बलिजाय सूरदास रास सुख निहारो ॥

झिंझोटी—एकताला

तेरो रमन बोलन श्याम मेरे मन बनिया ।
यमनाके नीरे कान, वंशीमें बजावे तान,
मुरली मधुर अधर धरे सुन्दर छवि लसिया ।
केसर को तिलक भाल, वैजंती गरे माल,
चमकत कुण्डल कपोल काछनी कटि कसिया ॥

मोर मुकट पीत वसन कुञ्ज कुञ्ज रास करैं सुर नर
मुनि ध्यान धरैं ऐसे हरि रसिया।
कहै युमराज दास सुन लीजो महाराज आज नैननमें
निरखि निरखि हिय जियमें धसिया॥

२

झुमक चलत राम जबहिं बाजत पैजनियाँ।
किलकत उठ चलत धाय, परत भूमि लट पटाय,
धाय मोद गोद लेत दशरथकी रनियाँ।
अञ्चल रज अङ्ग झार, विविधि भांतिसों दुलार,
तन मन धन वारि डारौं कहत मृदु बचनियाँ॥
मोदक मेवा रसाल, मन माने लेहु लाल,
और देहुं रुचिर पानी कञ्चन झुन झुनियाँ।
उपमा शशि कम्बु कण्ठ ग्रीवा त्रय रेख रुचिर
कुटिल चिकुर मधुर वचन मन्दसी हसनियाँ॥
शोभा अद्भुत अपार, को कवि अस वरन हार,
कहि न सकहि शेष जाके सहस द्वै रसनियाँ।
कृष्णरङ्ग रघुवर छवि पट तरको दीजे काहि रघुवरकी
छवि समान रघुवर छवि बनियाँ॥

३

वृन्दावन बीच विदित विहरत वनमाली।
सङ्ग सुभग सोहै वृषभानुजा रसाली॥
अंब नीम जांमनी जम्भीरो, सरस सीताफल पीपरो,
वट पाकरो अशोक ताल झाली।
करवारो कर हरि कदम्ब वकुल कञ्ज कांस कटहर
बहेरो बेर बड़हरे बहाली॥
आँवरे अतूत अघट आमली आचार जहाँ उनये
अनार बेली मोरसिरी हाली।
नीबू नारङ्गियां बिजोरे औ छोहारे भलीदाख देवदार
भोजपत्र हाली॥
सहजनो अगस्तीया अनेक भांति देखिये
सो फालसे पलास कहूं ठौर नाहीं खाली॥
हरसिङ्गार मालती सुगन्ध रायपा और जहाँ चन्दनकी
लपट झपट तुलसीकी डाली।
नारियल पुङ्गीफल कैंकरो खजूर धव गूगली गुलाब
जामन झूमरो बकाली॥
कौन भांति कहि सके अठारो भार वनस्पति
कालिन्दीके कूल पवन बहे त्रिविधि चाली।
गेंदा गुलदावरी गुलाव गुलाबांस जहाँ गुलतुर्रा
गुलमेहदी गड़हरा गुवाली॥
केतकी चमेल रायवेल रायसोन जुही केवड़ो सदा
वसन्त दुपहरी तमाली।
मोगरा पाण्डूर करण सदा गुलाव सुष्ट गन्ध अनेक
पुष्प लता शोभित सुगन्ध लपट चाली॥
कोकला कपोत मोर, क्रीड़त हंस औ चकोर,
शोर कुञ्ज पुञ्ज भ्रमतहै पपीहा डंगाली।
बोलही सुहाए बोल, झिनन मिनन करत शोर,
सभी जात जीव जन्तु सुखीहैं सुधाली॥
चिन्तामणि भूमि और महिमाको नहीं पार
कृष्ण राधिका विहार भक्ति जहाँ माली।
जाको यश वेद गावै, सुर नर मुनि सकल ध्यावै,
बड़े बड़े नर भक्तराज बहुतहैं बङ्गाली॥
लालकृष्ण जाको रज चाहतहैं ब्रह्मा शिव सन्तनके
चरण शरण काली मा कराली।
सोई बड़ भागी यह लीचत श्रीवृन्दावन राग सागर
गान करत तीनसौ साठ ताली॥

४

रुक्मणि मोहि ब्रज विसरत नाहीं।
वह क्रीड़ा वह केलि यमुना तट शीतल कदमकी छाँहीं॥
गोप-वधूके भुजा कण्ठधर विहरत कुञ्जन माहीं।
और विनोद कहां लगि वरणौं मो मुख वरणो न जाहीं॥
सुरभी सुत औ नन्द यशोदा चितते न विसराहीं।
सुत हित जान हमै प्रति पाल्यो बिछुरे विपत सराहीं॥
यद्यपि सुख-निधान द्वारावती ब्रजको समहै नाहीं।
सूरदास मोहन सुन्दर-घन समझ समझ पछितांहीं॥

५

रुक्मणि ब्रज मोहि विसरत नाहीं।

हंस-सुता कूलनीको शोभा अरु कुञ्जनकी छाँहीं ॥
बैसुरभी गोवत्स दोहनी खरिक दुहावन जाँही।
ग्वाल बाल मिल करत कुलाहल निर्त्तत गहि
गलबांही ॥
लीला बहुत भाँत हम कीनी यशुमति नन्द निवाही।
जब जब सुरति होत वा सुखकी मन उमगत तन मांहीं॥
यह द्वारिका कञ्चनकी रचीहै मणि मुक्ताहल तांहीं।
सूरदास प्रभु सुमिर सुमिर सुख फिर फिर
पछितांहीं ॥

इति श्रीरागसागरोद्भव रागकल्पद्रुमे झिंझौटी समाप्तः।

अथ जंगला राग लिख्यते

राग जंगला—ताल तिताला

अनि मैंड़ी सइयां आइयो कुञ्ज गलिनमें साँवल
मुरली बजाँवदा।
मुरली बजाँवदा तान सुनावदा साड़ा दिल ललचाँवदा॥
रास रच्यो वृन्दावन मोहन मधुर मधुर स्वर गाँवदा।
रसिक छैल कृष्णानन्द प्यारे निरख निरख सुख पाँवदा॥

२

मोहि वंशीवालाने नाल अनीवो मैं वृन्दावन जाँवां।
सोहनी सूरत रस भरी अखियां वेखतहो सुख पावां॥
वंशीदी धुन सुन भईहूं असी बावरी घर अङ्गना
न सुहावां।
कृष्णानन्द मैं रङ्ग गइयाँ सइयां बार बार बल जावां॥

३

वेखो वेखो मैंड़ी जानवे मोगा साँवल चतुर सुजान।
तैंड़ा चितवन मोह लीता मन एती अरज मैंड़ी मान॥
गृह अङ्गना कछु नेक न भावै विन देखे चैन न प्राण।
कृष्णानन्द आनन्द होय तब दरसदे श्याम सुजान॥

४

तू कब लग होगो ख्यानीरी नादान गजरे वाली।
जगजीवन सुख जानौ, यह मेरी कही तुम मानौ,
तू क्या एसी रहैगी वाली भोलीरो। नां० ॥

एक सगुन यह कीजे, जरा लाग गले लग लीजे,
जामें दिन दिन होवे बहालीरी।
नयो जोवन नयो रूप रंगहै नए लाल मन मानीरी॥

५

वृन्दावनदे कान्ह मेरी श्यामसुन्दर अनमोलनो।
सुघर चतुर मन-मोहन मन मोहा उसदे मदके
कीती जिन्द घोलनी॥

६

मोहन मैं तैड़े वारी जाँवाँ वंशी बजायजा।
सप्त तीन इकईस बाईसो नीको नीको तान सुनायजा॥
सुन्दर-श्याम कमल-दल-लोचन सानु मुख वेखलायजा।
कृष्णानन्द आनन्दके रङ्गमें मधुर मधुर सुर गायजा॥

७

नेहा लागा तैड़े नाल सुनो मदन-गोपाल।
काछनी कटि श्री पट पीताम्बर कर मुरली
श्रवण कुण्डल घुंघरारी अलकैं झलकैं नैन कमल
भाल विशाल॥

८

ऐसे भएहो छैल छिकनिया।
नन्द बाबा तेरो व्रजरैया माई तेरी वो यशोदा रनियाँ।
गुञ्जकीमाल बीच मोतिन मणिया मोर पङ्ख शिर कट
तेरे तनियां॥

९

रघुवर जानकी रस माँते।
वन प्रमोदमें विहरत दोउ हँस हँस करत रसीली बातें॥
कहुं कहुं ठाढ़े होत नवल पिय झुक झुक गहत
द्रुमनको पाँतें।
लै सुमनन सियकों सिंगारत बिच बिच श्याम
श्वेत पितराते॥
श्रुति कीरति विमलादि नागरी सिखवत कोक
कलाकी घातें।
जयराम हित मृदु मुसक्याते गहि लीन्हो
मिथुलाके नाते॥

१०

श्याम रङ्ग भीनी श्रीराधे।

लखि लालन आनन्द अतिबाढ़ो फूल अङ्ग भर लीनी।
श्रीराधे॥
याहीके सुखमें सुख पावत परम सुरसिक प्रवीनी।
श्रीहरिदासी ललित केलि हित हँस सबन बधाई दीनी॥
श्रीराधे॥

११

जिनकी लगन रामसे नाही।
सो नर खर शूकर कूकर सम वृथा जियत जग माहीं॥
कहा भए बड़ कुलके जनमें ज्ञान हीन बुध नाही।
जैसे फूल उजार में फूले वृथा लागि झरजाही॥
सुन्दर रूप उजागर आगर गुणीय गुण गरवाही।
विनु हरि भजन इँदारुनके फल छुवत हाथ करुवांहीं।
सुन्दर अति करतूति रुचि आछी सुन्दर बहुत सलोनि।
तुलसीदास अनुराग ज्ञान विन व्यंजन सभी अलोनि॥

१२

तेरे नैनानि जुलम कियारे।
भौंहैं कमान कटाच्छन वेधा आहे गरीबांदा हियारे॥
रहदे मस्त मद्दा मतवारे खञ्जन मधजो पियारे।
आनन्द-घन व्रज मोहन जानी मन मोह असाड़ा
लियारे॥

१३

गोरी तेड़ा हुसन पञ्जावदा वे सुरमा पांवन सिखिनीवे।
थोड़ाभी सुरमा वारी हुसन चंगेड़ा मिस्रोदे कारण
रुसीवे॥

१४

सांवला मैनु दरस दिखाजावे साड़े घर आयजा।
बिन वेखे मानु कल नहीं पड़दी साड़े दिलदी तपत
बुझायजा॥
रैन देहा मैनु चैन नहीं एक पल निमानीनु वंशी
सुनायजा।
कृष्णानन्द सदके तेड़े गइयां टुक मुखड़ा वेखलायजा॥

१५

साँवलड़ा मैनू भाँदानी भाँदावे साड़ो वल
आदानी जाँदा।
वंशी बजावदा वारी तान सुनावदा माड़ा जोव
ललचाँवदा॥
वेख लुभानी तैड़ी मोहनी मूरत मैं तेड़े कुरवानदां।
कृष्णानन्ददी आस पुजावदाँ मुरली मधुर सुनावदा॥

१६

साँवलड़ा नीवे मैनु नेक निहार।
जानकी दास दिवानेनु रखले घायल करदें पुकार॥

१७

सोणा ढेड़ी आंखेंनी फरकैंदी श्याम सलोना घर आवे
प्रीतम प्यारावे।
राजबहादुर मोहन प्यारा समुझ नयन जल ढरके॥
सुनीरी श्याम॥

१८

सुनीनी सइयों नीका सगुण भयाहै मानु दरस वेखावे।
सोहनी सूरत रङ्ग भरी अखियां मुरली मधुर बजावे।
कृष्णानन्ददी आस पुजावी ताड़ेही यश नित गावे॥

१९

नाजी केहडानी कूड़ कमाया नेहडा लगायानी।
नेह लगायाको फल पाया नाहक भरम गमाया॥
तेड़ी सूरत देख सब जग माहे कृष्णानन्दनू रङ्ग
दिखलाया॥

२०

वेदरदा मैं पीलीनो हुइयांवे पीलीनी हुइयाँवे।
पीलीनो हुइयां कालीनो हुइयाँ ज्यों सावन फूली तुरैयां॥
चंद चढ़ा कुलवे आलम वेखे वे सोणा मैं वेख
तुझ तुइयाँ।
विन वेखी सानु कल नहीं पड़दी कृष्णानन्द ँ रङ्ग
गइयां॥

२१

मोही चोरे वालड़ेदे नालनी मैं खेड़े जावां।
अङ्गूरीयादे बिच पुर पुर छलड़े अनीवी मैं
भ्रमर पावां।
मायल कर सानु घायल कीना कृष्णानन्द तैड़े घोल
घुमावां॥

२२

तैड़े गलां पइयांवे मैड़ीयाँ लजावे।
लाख गुन्हा बख्शेतेरा भी कोतावे खेड़ा झेड़ावे मैनु तजा।
कृष्णानन्दनु का गला आँखदा सूरत दिखाय तैड़ी धजा॥

२३

यार मैंर्ये कैसा जादू डालावे।
जन्त्र मन्त्र टौना पढ़ पढ़ कृष्णानन्द बस कर डालावे॥

२४

गोरी तैड़ा हुसन पञ्जाबदा बेसुरमा पावन सोखोनी।
थोड़ाभी सुरमा वारो हुसन चंगेड़ा दातांदी मिस्सी तैड़े नीको।
कृष्णानन्ददे दिल बिच बसदो और सौतन दीठो फीकी॥

२५

इस जिन्दगीदा की भरोसावे।
इस जोवनदा मान न करिये सोणा पाणीदे बीच बतासा
कृष्णानन्द कृष्णमन रङ्ग लियो जग झूंठा तमासावे॥

२६

लोकां मानु ताने न देंदेवो।
राँझण मैड़ा यार में राझणदी खेड़े माड़ी खुचर करें देवो॥
तानेभी दे दं वारो मानोभी देंदे साँवल नाल दिल मानेंहो।
कृष्णानन्द रङ्गीलो मूरत तन मन धन परचानेंहो॥

२७

मैड़ी सइयों कोई नहीं जानदा वे साँवलेदे मिलनदा मामला।
जो कोई हाकिमवे उसनु सुनावे वे मेरा मियां इश्क पया साड़ा कामला।
कधीतो मौला मेरावे काजीभी होसी मेरा मियां पकड़ करेसाँ फिरयादला॥
बाबुल झड़के वोरण भाँदादे सास ननददे हामला।
कृष्णानन्दमें दिल बस गइयाँ विन वेखे नहीं कामला॥

सोणा मैड़े नैड़ेनो आजावो मुख वेखला जावो।
नैड़ी नहीं आँदा जिय ललचादा दिन भर अखियाँ घुमाय जावो।
श्रीकृष्णानन्ददे दिल बिच बसदे मनदी आस पुजाय जावो॥

२९

कहा चेटक दे गयावे यार मैनु।
जंत्र मंत्र जादू टौना पढ़ पढ़ जोवड़ा बसकर ले गयावे घर मैनु॥

३०

वगदीभी रावी बीच पाटोयाँलसां सरणा कबूलवे।
यारन दिसा आँखो मैड़े ढाललनु वे किन विलमायावे॥

३१

सोणा मैड़े नैड़ेनो आजावा मुरली मधुर बजायजा।
तैड़ी मुरली मैड़े मन बस गइयां नीकी तान सुनायजा॥
कृष्णानन्दनु दरस वेखायजा दिलदी आस पुजायजा॥

३२

मैड़ा परदेशी दूर न जावो।
नेह लगाकरवे छड़ किन जाँदा रब तैनू मुड़ ल्यावो॥
विछुड़ेनु काई रबही मिलावें कृष्णानन्द वेग आवो॥

३३

साँवलड़ा मैड़ा मोह लिया मनड़ावे।
छलडानो भलड़ानो तिखड़ानो बाँकड़ा कृष्णानन्दनो कड़ा कान्हड़ावे॥

जंगला—तिताला रूपका

सुगना राम नगरके बासी।
रामनगरमें जनम लियोहै मरनरनकी कासी।
कृष्णानन्द प्रेम रस माते छूट गई चौरासी॥

जंगला—तिताला

अंखियां न लागेरे बनवारी।
जबते ते देखो मोहनो मूरत बिसरी सुरत हमारी।
कृष्णानन्द भई अब चेरी हौं तेरी वलिहारी॥

वह देखो बांसरी बजतहै बनमें।
सुन धुन श्रवणन कल न परतहै लाग रही तन मनमें।
कृष्णानन्द निरख सुधि भूली अधरनकी फरकनमें॥

२

यहां कोई बांसरी हो बजीथी।
नएरी बांसकी नईरी बाँसरिया साँवले अधर सजीथी॥
कृष्णानन्दजी से सुनी गोपी कुल मरयाद तजीथी॥

श्याम मोरा कौन दिवस व्रज अइहै।
यहि अभिलाष रहतहै नितप्रति घर घर मङ्गल गइहै।
कृष्णानन्द अङ्ग अङ्गन पर वारी नेवछावरि जइहैं॥

५

मैंतेरे पर वारी साँवरे मैं।
लैके चीर कदम पर बैठे हम जल माँझ उघारी।
कृष्णानन्द देहु अब अँवर विनती सुनहु मुरारी॥

६

बधाई बाजत आज सुहाई।
प्रगट भए नन्दके नन्दन सखी मिल मङ्गल गाई।
कृष्णानन्द मगन व्रज वीथिन आनन्द उर न समाई॥

ललना झूलत सुन्दर पलना।
अगर चन्दनको पलना गढ़योहै भुलावत व्रजकी ललना
कृष्णानन्द निरखि सुधि भूली याही रङ्ग में रङ्गना॥

जङ्गला—तिताला रूपक

विदेशी मोरे आज आवेंगे।
सुनियांरी मोरी लहुरी ननदोया करकत है मोरी
अङ्गीया तिन्हें हुलसावेंगे।
कृष्णानन्द पिया मोहि मिलके हरषि सेज सुख पावेंगे॥

२

हमसे कौन बहाने बोलो।
बारा बरस पीछे सइयाँ मोरा आइलो हँस हँस
घूंघट खोलो।
कृष्णानन्द यहै विनती मोरी रस समुद्र मोहि घोलो॥

गोरी तेरा लाद चला बनजरवा।
इस नगरीके दस दरवाजा निकसा जात मन हरवा।
कृष्णानन्द नेह तू करले त्यागि सब घर बरवा॥

४

मइको ले न गए भी भर नजरवा।
धुर ढाकेको सारी मगाई पटने ग्रहरको हरवा।
कृष्णानन्द मैं ठेठी विसरत कैसो नेह नगरवा॥

५

गोरी तेरे नैनो में जादू समाना।
बारा बरसके वारे जोवनवा तेरा बरस रङ्ग साना॥
तिरछी चितवन करत बावरी तिल तिल
करत न छाना।
कृष्णानन्द अरज मोरी सुनिके करहु जान पहिचाना॥

६

नींद भरे गोरीके नैना एजी अलसाने एजी मरमाने
नैना नींद।
प्रेमरङ्ग मद झुकि झुकि आवत उघरत ना सुख देना।
कृष्णानन्द निरखि छवि नीको पावत मन सुख चैना॥

७

फुलवन सेज बिछाई मोरा सइयाँ।
हँस हँस लाग गरे मोरे सइयाँ।
कृष्णानन्द हिये मोहि लावहु हाहा करत परे पइयाँ॥

८

कैसा बनारे विरहका वँगना।
भए बमना मोरे पोथी बांचो कब आवें सइयां
मोरे अङ्गना।
कृष्णानन्द व्याह प्रीतम सङ्ग एक पल छांड़ो में सङ्गना॥

९

गोरी तेरा जोवना सदा नहीं रहिहै।
यह जोवना तरवर की छइयां ढरत ढरत ढर जैहै॥
जोवना पर मत मान करै तू माटी के मोल बिकैहै।
कृष्णानन्द राख जिय मेरो फिर पाछे पछितैहै॥

१०

कहा जाने भूलनीका मोलरे मुरख।
यह भूलनी मोरे मइकेसे आई हीरा लगी अनमोलरे मुरख॥

११

बालम तोरी लाली उतर गई किन रसीया रस लीनोरे।
बालम तुम बनके मोरवा बोलत मन हर लीनोरे॥
बालम तुम चिन्ता न मानों हँसना मोरा सुभाव।
बालम तुम बनके बहेलिया कहा जानो झूलनाको दाव॥
बालम तुम कंइया न झाको गिरि परिहौं लगिहै चोट।
बालम तुमको लैया लेऊँ है छिप रहो देहलीको ओट॥
जोवन दोनो गांढ़ा में कस गए छूटेता लूटें बजार।
जोवन दोनो नेहरके पाले जूझन चले ससुरार॥
सेजरोया पर कुश्ती भई जसे लंका लड़े हनुमान।
जैसे महा भारत कुरु क्षेत्रमें लरे हैं दुरयोधन अभिमान॥

१२

रासमें नाचत थेई थेई तताथेई।
श्यामाश्याम मिल सङ्गीत उघटत ताधोलाङ्ग ताधोलाङ्ग तता थेई थेई।
तक थुंगा तगड़ थुंगा थाधाता धिल्लाङ्ग तक थोता धिलाङ्ग तकथेई थेई ताधिट किट धिकिट तक गिदि गनधा थेई॥

१३

मेरा बांका सिरोही वालाजो मोरा।
बाँकाई घोड़ा तेरा बांकाई जोड़ा बाँकाई कमर कटारा जो मोरा।
कृष्णानन्द बांको चाल चलतहै बाँकोई ओढ़े दुशाला मोरा॥

१४

देरो देरो यशोदा दक्षिणा तेरे पुत्र भयोहै सुलक्षणा।
कृष्णपक्ष भादों निशि आठें शुभ रोहिणी बुध सुलगना॥
कृष्णानन्द असी सत ठाढ़ो वलिहारो तेरे बछना॥

१५

मेरा प्यारा सांवलियारे तेंडी सूरतदो वलिहारो।
गिरिधारी बनवारी प्यारा सांवलियारे तेंडी सूरतदी वलिहारो॥
विन वेखे कल परत न एक पल खड़ी कूकां जन गिरिधारी बनवारी। प्या०॥
वंशी बजावदा तान सुनावदा मनमोहन मुरारि।
कृष्णानन्द धुन छाय रहोहै मुरली शब्द सुखकारी बनवारी॥ प्या०॥

१६

अनी ऐसा सांवल साड़ा दिल लगावे।

नाल पगावे॥

१७

मेरा परदेशी रावला कोई जानवे।
पार करावे दूतांदा बेडा वेग मिलो मुझे आनवे॥

१८

प्यारा मोसों भलो निभाई प्रीतहो प्यारे मिल विछुड़े नहीं चैनवे।
आपन आवे वारोवे ना लिख भेजें मेंडा माणा कौन गांवको रीत प्यारा०॥

१९

में ढूंढ़ फिरेदो कोईतो बतादे जित्थे मेरा रांझन बसदावे।
चेरीमें उसदो मियां राझण मिलादे साड़े जिय कमकेदावे॥

२०

मै तर गइयां रांझा सानुको आखदा।
पांच रुपैया पानोदा बोड़ा मुजरा सारी रातदा॥
सबोदे चावल महिशीका दूध यह खाना माड़े यारदा।
सवा मोहरदो नथ घड़ादे बेसर नाल लटकेंदा॥

२१

वंशी वालेसों लागा म्हारा नेहड़ा।

मोर मुकट पीताम्बर सोहै और सोहै शिर सेहरा ॥
साँवली सूरत माधुरी मूरत कुञ्जनमें बसे गेहरा ।
लछमणदासको यही विनती लिख लोज्यो मेरा चेहरा ॥

२२

तैड़ी मैड़ो रब न तोड़े दोस्ती किन किसीको
किसमत न मोड़े ।
सदके जाइये रखड़ादे कौलदो जिनसे ढूंढ़ना रब
फेर जोड़े ॥

२३

तैड़ो मैड़ो दोस्ती साँवलड़ा लोक अयानो नहीं जाने।
गुम मतदो बातरी सजनो और दिवाने ॥
कहा पहिचाने तुही तन मन धन सम्पति तुही
तोहीतें मन माने।
कृष्णानन्द मैं रङ्ग रहे हैं और रङ्ग नहीं ठाने ॥

२४

भूलदोभी नाहीं मैड़ा सोणा तेंडरो मैनु याद ।
कल न पड़ेदी एक पल विन देखे मानदावे माड़ी
फिरियाद ॥

२५

कसम कोनोरे साँवलियाने ।
गोरी गोरी बहियाँ हरी हरी चुरियां बहियाँ पकर
रस लोनोरे ।
कृष्णानन्द हियो परिपूरण प्रेम सहित करि दोनोरे॥

२६

साँवलिया से नैना लागोरे।
वादिन देहौं बताय जौन दिन प्रेम प्रीतमें पागोरे ॥
जबसे निरखी सोहनो सूरत तन मनमें रस जागोरे ।
कृष्णानन्द रहत नहिं रोके चरण कमल अनुरागोरे।

२७

जोवनवा तोरे कारण ।
जोमें जनती सइयाँ रूसैहैं करती मैं सेज संवारण ॥
जोमें जनती सइयाँ मोरे ऐहैं कतती नाना सूत ।
अपने सइयाँकी पगिया बनौती जैसे गुलबवाको फूल
जोमें जनती सइयां मेरे ऐहैं रखतोमैं सब्ज कमान ।
अगल बगल दोय तरकस रखतो जावनाको करतो
निशान ॥
जोवन जोवन आवै पियासों जोवन मधुर सुर बोल ।
जो वे न आवें सेज ऊपर मोरो विरथा जोवन अनमोल ॥

२८

सुन भारत भैया हौं कपिसौं उरिण हम नाहों ।
शत योजन मरयाद समुद्रको कूद गए छिन माहों ।
लंक प्रज्वाल सिया सुध लायो गरभ नाहीं मन मांहीं ॥
पैठ पताल तारो रसातल राख लिए गहि बांहों ।
जो न होते हनुमतसे योधा को लावत जग माहों ॥
सकतो बान लगे लछमनके बैठे मन पछिताहों ।
जायदोना गिर सजोवन लायो लछमन सुखजो पाई॥
वचन भङ्ग कबहूं नहीं कोनो जहाँ पठयो तहाँ जाई।
तुलसो दास हनुमतको महिमा आपति श्रीमुख गाई॥

२९

गोपाल पियारे तैंने भला जो किया ।
खड़ावे पियासो तैंड़ो आँखड़ीयानु जोव जिवावन
दरस दिया ॥
उमर दराज़ गरोबांदो बस्तो कितवे महरम
सवाब लिया ।
आनन्दघन ब्रज जोवन जानो कुरबानो मुख देख जिया ॥

३०

वृन्दावन चलो सजनो मनमोहन बुलावैरो ।
सप्त सुरन और तोन ग्रामसें मृदुधुन वंशो बजावे ॥
सुन्दर-श्याम कमल-दल-लोचन देखतही सुख पावे ।
नाम रटतहै राधे राधे सूर श्याम मन भावे ॥

३१

रसीया तोरो बातन मोरा जियरा जात जरो ।
बाट चलत मोहे रोकत टोकत जित देखो तित खरो॥
रसिया० ॥
आवत जात तू मोहि सतावत निशदिन रहत अड़ो ।
रसिया० ॥
कितनो कहतहूं मानत नाहीं काहेको बैर परो ॥

सङ्गको सखी मोरी लोग नगरके सब मिल नाम धरी।
कृष्णानन्द कहतमैं फिर फिर यह अब चितते न टरी॥

३२

रामाह्नो हिरदै विसरामाह्नो।
रतन सिन्घासन रघुवर बैठे बांये अङ्ग जानकी भामाह्नो॥
भरत शत्रुघन चम्बर ढुरावैं सनमुख करजोरें
हनुमानाह्नो।
तुलसी दास प्रभु शरणी आए मन-मन्दिर में करो
विसरामाह्नो॥

३३

मोहन मोह लियो मनड़ारो।
शोभा सिन्धु सोहनो सूरत जित देखों तित ओहीरो॥
आँखड़ल्याँ थारो सेन पियारो जानकी दास उर वास
कियोरो॥

३४

चलो सखी राम देखनको नृप दशरथ के आँगण।
सङ्ग सखा मिल चारों भाई खेलत आँख मिचावन॥
शत्रुघन खुटवा हाथ बैठे कमल-नयन गए
आँख मुदावन।
छोटे लछमन छिपत छोरलो छिपे सखा पकरावन॥
कहत सखा प्रभु पास न आवो अँधियारो उजियारो
करावन।
प्रेम रङ्ग प्रभुकों सब पकरत तन दुति दमक दिखावन

३५

मेरा राम रमैया निश दिन मनकों रमावत।
धर्म्मादिक फल मुफतमें पावत प्रीत सनेह बढ़ावत॥
जाग्रत स्वप्न सुसुप्ति तुरीयमें जागत मोहे सुआवत।
ऐसे नाथ अनाथने पाए रीझ रीझ गुण गावत॥
विमुखको विमुख कराय दुरावत सन्तको सङ्ग लगावत।
प्रेमरङ्ग प्रभुसों रङ्ग लागत बिन मागे पद पावत॥

३६

गिरिजा-पति पतितनकों तारो।
मेरो ओर निहारो शङ्कर शरणागत को उधारो॥
बस काशी में शिव शम्भू भव बंधनतें टारो।
प्रेमरङ्ग प्रभु भोले भूपति कोटि जनम अब जारो॥

३७

रघुवर तैड़े नाल तन मन वारदीयाँ घर आयजावो।
सन्तनके धन राम कहेंदे लोभदी जाल छुटायजा॥
पार न जाना पया विच सागर ज्ञान जहाँ जचायजा।
प्रेम रङ्ग प्रभु करण धारयत भवदे पार पोंहचायजा॥

३८

साँवलड़ा मन भाया सइयों साड़ड़े नाल।
जींदड़ी साड़ी घोली घती छंदड़े गइयाँ इशकदा
पइयाँ जञ्जाल॥

३९

दिल विच तैड़रानू रस मादा।
राती देहा सानू वान पइयेहो जोरा जोर धिगाना।
कृष्ण गोविन्द बिनु होर न दिसदा रखदे नाल लुभाणा॥

४०

नारीहू न जाने बैदा निपट अनारीरे।
लाल पलङ्ग पर जरद बिछौना प्रेमको कटारी मेरे
हिया विच मारीरे।
द्वारकामें एक वैद बसतहै तासों मोरी यारी तुम घर
जाओ बैदा मोहे रोग भारीरे॥
मीराने गिरिधर मिलावो यही अरज हमारीरे।
बूंटी तो झूंठी भई औषधि विहारीरे॥

४१

कान्हड़ो मिजाजी सइयां माने नहीं मेरी गलां।
रत देहा चन्द चकोर जेहा कल नहीं पांदी घड़ी
एक पलां॥

४२

वंशी गोपाल की आज बाजे।
अद्भुत तान तरङ्ग मधुर धुन सप्तसुरनसों गाजे॥
लाज धीर कुल कानमान डर श्रवण सुनत सब भाजे।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम छवि देखत
मनमथ लाजे॥

४३

दिलांदे महरम सांवलियार दरस दिखाय जावो।
बांसुरी अधर धर बजावत नाचत गावत यमुना निकट
साँवलो सूरत माधुरी मूरत हिरदे मैं समाय जावो॥
ऊंघन कछन कटि पीताम्बर कानन कुण्डल शीशमुकट
घुँघरवाली अलक झलक नैनन में समाय जावो।
जानकीदासनु तेड्डी आस निशदिन पल खांस खांस
सपने टुक दरस पामी सकल दुख नसाय जावो॥

४४

मान न करिये वंशी वाला याद करेंदा।
मुख नहीं बोले पलक न खोले नैनन छिन छिन
नीर झरेंदा॥
तेरी रङ्गदारी अङ्ग पर जरद दुपट्टा प्याराले धरेंदा।
ब्रजनिधनु आली तुझ बिन निशदिन घड़ी पल छिन
नहीं चैन परेंदा॥

४५

रे जग झूठा समझ मन माहियाँवे।
नाल जनादे वारो नेह लगाया नाल चले कोउ
नाहियाँवे॥
यार जिनानु प्यार तू करदा सो जाले तेरे तांइयाँवे।
जानकी दास प्रीत ऐसी जगकी जैसी ठगकी
मिठाइयांवे॥

४६

थारेंवे नैनादे नाल मैंतो ठगीयाँवे।
इश्क लगा वारीवे छिपदाभी नाहीं जाहर कीता
इन अँखियाँवे॥

४७

भला मैड़ा सोणा नैनादे नाल निभायदे।
तिरछी भौंहें नैन तकेंदे बरछीदो नोकों एढ़ी टेढ़ी
निगाहां लगायदे

४८

फन्दड़े जादानी दूरवे दिलांदे नेड़े बसदा हजूर
सोणावे।
छिक पुनड़ेनु आनके मिला मिस्सीदी सूरत झरवे॥

४९

चला जांदड़ावे जोबन आपनावे।
जोबन जांदा वारीवे फेर नहीं आंवदा नाहक उमर
गमावदांवे।
इस जोबनदावे मान न करनावो मियाँ हंस हँस
बांह झड़कदांवे॥

५०

दिलांदे नेड़े बसदा मेड़ा सोणा अँखियादे
कोलानी दूरवे।
रोभदा बाड़ा बिच सब कुछ जमदा मेरा मियाँ
खेड़ेनी खेत बंबूरवे॥

५१

पाँनाया जावे अलबेली पनिहारनी जान।
तेड़े घड़ेदा वो ठंडा पानी साड़े दिलांदा टुक
प्यास बुझाजा जान॥

५२

गोरी तेड़ी आंखड़ी अखियाँ रतनारियाँ।
साड़े दिल भूलेंदो जालो याँवे॥

५३

वोमैं पुंछदो आइयाँ इत्थे।
जङ्गल ढूंढा वारी बेलाभी ढूंढा रङ्गदा रङ्गदा डेरा कित्थे॥

५४

साँई रबा मैड़ा न्याव करो।
गहरी वो नदिया नाव पुरानी मेहर नजर मैंनु पार करो॥

५५

प्यारा तेड़े मिलनेदो मैंनु चाव आमिल सोणावे।
नेहड़ा लगाय गया तुसी मैड़े नाल मेहर करो
घर आववे॥

५६

राह तकेंदेनीवे मुद्दतें गुजर गइयाँ कीतानी
कौल करार।
रैन देहा मानु ध्यान तुसाड़ा मेरा मियाँ साड़ा
दिल बेकरार॥

५७

छैला मुद्दताँ गुजर गइयाँवो ।
गुजर गइयाँ गइयां यनी यनी यनी यनीवो ।
तैंड़े मिलननूवे सगुण मनादो मेरा मियाँ हाल
बेहाल हुइयाँ नीवो ॥

५८

मेरा ढाकमा मैंतो भूलीरे मेरे ढाकमा भूलीरे भूली
तेरी चालमें ।
जङ्गल ढूंढ़ा सारोवे बेलाभी ढूंढ़दा मैंभो लो चड़ीए
राजो रखणा ।
मेरा मियाँ खेड़ेनो खेड़ेवो में रोलो वा मेरे ढाकमां ॥

५९

भला तू मेरा थाँनेदार ।
आयानी सावन वे मन परचावन वो मियाँ बाजुबन्द
बूटेदार ॥

६०

पनियान् कितवल जावाँ दिवरानिया कुंवा पर
आसन जोगी दानियां ॥
चार मिलेवो मैनु साहब न जादे एक मिला
दाढ़ी जार जिठानियां ।
एकतो जोगो मैनु कामन मिलोया मैं शरमांदा
वेमर मर जादो वा दिरानियाँ ॥

६१

यारदो मैनु तलब दीदारदो ।
रोशन शाह तेनु देदे दवाइयाँ वे मियाँ गला कोतीयाँ
मैनु प्यारदो ॥

६२

भला मेरा बुन्दि चोरे बाला दोस्त मिलामी वो ।
चोरे वालानी मानकरदा जादुड़ान् मुड़के ले आमीवो।

६३

गोरी तेरा बालक युग युग जीवेवो ।
गोरीदे आँगणवे सगुण सोहावण हँसत खेलत
दूध पोवेवो ॥

६४

अगो मा भवन चलो आनन्दोके दरसन पावना ।
परस चलो परसाय चलो बे अनो मेड़ा गोदी
बालक याना ॥

६५

साड़ी रंगाय देरे बलमा मोकों ।
साड़ी रङ्गायदे पचरङ्ग चुनरी और रङ्गायदे गुलनारी
किनारीरे ॥

६६

मेरा एही झगड़ा वो मोतोड़ा मगायदे ।
सोणेकी मोहे नथनी गढ़ायदे दो मोती एक लाल
चुन्नी लगायदे ॥

६७

रसहो में बोले मोरे पिया रसियारे ।
अपने पियाको में ढूंढन निकसी याही नगरको बसिया ॥

६८

मैं देखो पियकी चतुराईवे ।
औरन से पिया हँसत बोलत हैं हमसे करत निठुराई ॥
हमसों अवध बद अनत विलम रहे मोरा जियरा
तरसाई ।
चन्द्रसखो हित बाल कृष्ण छवि रहत चरणन
चित लाई ॥

६९

काहे श्याम मेरो सुरत विसराई ।
जबतें बिछुरे प्राण पियारे अब लग खबर न पाई ॥
वेदरदा कुछ दरद न आयावे क्या जाने पोर पराई ।
ऊधादास आश चरणनको आन मिलो यदुराई ॥

७०

गोविन्दा तोमों नैन लगी बिन देखे रहिलो न जाय ।
लियो चुराय चिते चित मेरो घर अगना न सोहाय ॥
जानकोदास कों दरसन दीजे टुक मृदु मुर मुसक्याय ॥

७१

हा सुघर बना मेरावे लाल बना ।
बनाके सिर वारी शेहरा विराजे होरा लगे मोती पन्ना ॥

७२

लख लीब्योरी गोविन्द आँवदा।
गोविन्द आँवदा मेड़े मन भाँवदा मधुरो वेणु बजाँवदा

७३

वो बजाई मोहन मुरलीको टेर।
सुन धुन चौंक परी कानन में ब्रजवनिता लई घेर॥

७४

इन नैनोंने लाज गवाँई।
राजबहादुर मोहन प्यारे मधुरो वेणु बजाई॥

७५

राज मारे नथुनोंदा मोती लाल।
साँवल साज समाज पहरे वलिहारियाँ तेरे काज॥

७६

सानुकी पायावे किसोदे नाल।
वेदरदाँदा हाकम म्हारा मियां बुझदा क्यों नहीं हाल।

७७

बकस गुणा मेरे बेलिया यार।
माशूकदा रङ्ग फूल गुलाबो आशिकदा रङ्ग तेलिया।

७८

तैं मन लीतारे वंशी बजायके।
वंशी तेड़ो मोहनोरे पड़ोहै काना बिच आयके॥
मगकरी न करवे महरदे जोवनदा मद पायके।
वलिहारियां क्यों नेह लगाया लगाया तो और
निभायके॥

७९

मेरा बालपनेदा यार कन्हैया।
खेलत गेंद गिरो यमुनामें सङ्गही कूद पड़ैया॥
पैठ पताल काली नाग नाथ्यो फण फण निरत
करैया रे कन्हैया।
इन्द्र कोप कियो ब्रज ऊपर छिनमें देत वहैया॥
गिरिगोवर्द्धन नख पर धार्यो ब्रजको करत सहैया।
प्रात समय यमुनाजी न्हाते लेकर चीर कदम चढ़ैया॥
वरुणलोकतें पिता ले आए यशुमत लेत बलैया।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत बार बार वल गैया॥

नजर भर देखण देरे महबूब।
राम लछमन भरत शत्रुघन अवध नगरके भूप॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहै सोहै कलङ्गी खूब।
शङ्ख चक्र गदा पद्म विराजै जगतारणके रूप॥
तीन लोकके नायक कहिये अदभुत आनन्द स्वरूप।
ऊधोदास आश चरणनको शोभा अतिही अनूप॥

८१

साँवरेने लीतावे जादुड़ा साँवले।
वंशी बजायके मेरा मन लीता दासदे दिल बिच
मोहन जीता॥

८२

सइयोंनी मैड़ा राँझा केतिक दूर मैड़ा दिलदानो
महरम साँई रबा पुंछ पुंछ हारो रात सारो।
जो मियाँ राँझा वारो वे सुझनु चाहै नेह निभायवो
दिल भारो॥

८३

निजारा जटीयांदा यारवे।
शीश शोरी मान समुझ साँई फन फुन मारा
लटीयांदा यारवे॥

८४

जोमैं जानदोवे साड़े नाल नेहरा मैं नहियाँ करदो।
जोमैं जानदो ऐसाभो होंदा मेरा मियां इश्कदे
फन्दे मैं नहियां पड़दो॥

८५

जिन्द घोलीदा निजारे नालवे सोणा।
दोस्तीदे नाल सुख पाया महम्मदसा ऐसो तेरो बातें
भोलो भोलोवे॥

८६

छदड़े जाँदोया हुण तेरेवो मेरी जान।
मिन्नत करदो में सगुण मनादियाँवे कब घर आवे
बालम मेड़े डेरेवो जा०॥

सिन्धी जंगला—तिताला

जटो मुख वेखलाजा सानु वे कभीतो आनके।
छोर रंझेदो शोरो रहो महोब्बत पायके॥

२

खेड़ोंदो चाकरी मैंकरदियाँ हो नाहियाँ।
शोरोदा मैनु दम गनीमत मिलना चेराखान
गवाइयाँ॥

३

भूलिए चाहना चाहनी कहँ देवे तू को जानें चाहनेदी
सारवो।
साड़ा दिल लगं तो तू जान किसोदे रमझानु असाँतो
करदा बहाना॥

जंगला—तिताला

मुड़ आमो वो साड़ड़े कौलवे छैला।
शोरो मैं तैनु चाँहदा मङ्गभो नारहो महलाँ महलाँ॥

जंगला सिन्धी—तिताला

छैला मान न करिये रखडादे नाल डरिये।
उठ शोरो मिल प्याला पाले समझ समझ
पग धरिये॥

२

जटोदे नैना सँभाल।
घायल मायल दिलथे होंदा जुलफों वारो जटो हटो॥

३

लगदा बाग बहारवो वेखड़ा आंदे हजार।
मुख गुलाब नरगसे चश्मा सम्भल जानो सँभाल॥

४

अटक रहे दिल प्यारेदे नाल सेनु मिलना जरूरवे।
ले चल ऊधो वारो श्यामसुन्दर जहाँ मथुरा केतिक
दूरवे॥
जबके गए भए वाहोके कुवजाके रङ्ग जूरवे।
कृष्णानन्द वारो तुमरे दरसकों रह गया कूर अक्रूरवे॥

जंगला—तिताला

बना पर वारोरे आज वारो वारो वारडारो दिन
दुलहे नन्द लाल।
कुसुम सेहरा शोश दोउनके झुमके मोती लाल॥
रङ्ग भोना केसरिया वागा चलत मतगज चाल।
छवि निरखत वलिहार दोउनको नैना होत निहाल॥

२

वंशोके बजैया वंशो फेर बजावरे।
वही तान वही ध्यान वही सुर वही गान सुनावरे॥
नटनागर नाचत ता थैया मेरे आँगन आवरे।
वलिहारो सूरत पर वारो मोहन कण्ठ मिलावरे॥

३

रसिया नाचत है वन माँहो।
वृन्दाविपिन पुलिन यमुनातट रास कदम्बको छाँई।
सुन्दर-श्याम बजाई मुरलिया राधा सों गलवाहों।
नागरिया नैनन में बसतहै चरण कमल वल जाई॥

४

तू गयावे नेह लगाय।
व्रजमोहन सों लगा लगनियाँ वंशोदो तान बजाय॥
इश्क साड़े जाल पाया तैं सूरत खूब दिखाय।
चितै चित चोरो बहारो वलिहारो मुसकाय॥

५

साँवलो सूरत साड़े मनमें बसोवो।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै मुरलो मुख पर लसो॥
देख लुभानो सइयाँ मोहनो मूरत उसदे फन्दड़े फसी।
पुरुषोत्तम दे नाल विमोहो बांको चितवन हँसो॥

६

अरे मन हरि बिन कोई नहीं तेरा।
चार दिननको प्रोत जगतमें आखर जङ्गल डेरा॥
जगमें कोऊ कछु सङ्ग न चाले जिस्से कहै तू मेरा मेरा।
जानकी दास प्रोत तज जगको हो रघुवरका चेरा॥

७

सुख आनन्द भए आनन्दोके दरसन पाए।
दरसन पाए अतिमन भाए सब दुख रोग जलाए॥
जाग्रति जोत जगत में जाहर वड़ भागन लख पाए।
जानकोदास जप तप सिद्धि बिन सहजहो सन्त कहाए॥

कठिन लगन की प्रीतरे लागे सोई जाने ।
घायल मायल फिरदो दिवानी रांभण बिना कोई
माने नहीं माने क्या करे बेद सयानेरे लगी सोई० ॥

जंगला—एकताला

लङ्गर लरकवा नैन सैन दे बेणु बजाय बस कीनोरे ।
मुकटकी लटक चटक भृकुटिनकी कर धर
मुरली लीनोरे ॥
बृन्दावनकी कुञ्जगलिनमें गउअनकी ठठ कीनोरे ।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत श्याम-सुन्दर
रङ्ग भीनोरे ॥

२

सुन्दर चतुर सुघर बालमुवा तेरे वेखनदा चाहवे ।
मेरा जिय चाहै तेरे मिलनकू महर करो घर आवरे ॥
श्याम-सुन्दरवा नन्दके दुलरवा मेरा मन ललचावबे ।
पुरुषोत्तम प्रभु लङ्गर लरकवा मधुर मधुर सुर गावबे ॥

जंगला—तिताला

झूठेही दोष लगावत माई मेरे ।
हौं वाको घर कबहुं न देख्यो दैन उराहन आवत ॥
जहाँ मैं फिरत गैल ग्वालन सङ्ग तहाँतें पकरि मगावत ।
सब ग्वालिन मिल घेर लियो है बरबस मोहि नचावत ॥
तोसों झूठ साँचके कारण मुख दधि लेप लगावत ।
कर गहि पकरत चोरकी नाईं तोकों आन दिखावत ॥
श्यामकी भेद मरम नहीं जानत बातही बहुत
बनावत ।
सूरदास यह चाल अट पटो बहुत यसुदहि भावत ॥

२

नीबी लपक गहो यदुराई ।
जब कर कमल धरो श्रीफल पर परो है धरनि पर आई ।
ततछिन रुदन करत यदु-नन्दन मनसों बात बनाई ।
एसी ढीट देत नहीं ग्वालिन राख्यो गेंद चुराई ॥
तब अस विहँसिके कह्यो ग्वालिनी मोपे नाहिं कन्हाई
जहाँ जहाँ खेल कियो कुञ्जनमें तहाँ चल देहूं बताई ॥

बाल विनोद परम सुत केरे महरि चली मुसकाई ।
सूरदास यह रसिक शिरोमणि को जाने यह भाई ॥

३

युगल छवि दृगन माँझ अटकी ।
दै गलबाँही कदम तरे ठाढ़े वा वंशीवटकी ॥
ऐसो ध्यान बसत हिरदेमें अब क्यों डोले भटकी ।
मनकी मनही कृष्णरङ्ग जाने को जाने घटकी ॥

४

मो सम कौन कुटिल खल कामी ।
तुमसें कहा छिपो करुणामय सबके अन्तरयामी ॥
जे तन दियो ताहि बिसरावत एसो नून हरामी ।
भर भर द्रोह विषेकों धावत जैसे सूकर ग्रामी ॥
सुन सतसङ्ग होत जिय आलस विषयन सङ्ग बिसरामी ।
श्रीहरि चरण छांड़ विमुखनकी निशदिन करत
गुलामी ॥
पापो पतित अधम अपराधी सब पतितनमें नामी ।
सूरदास प्रभु अधर उधारण सुनियो श्रीपति स्वामी ॥

५

माधो अस तुमारि यह माया ।
करि उपाय पचि मरिय तरिय नहीं जब लगि करहु
न दाया ॥
सुनिय गुणिय समुझिय समुझाइये दशा हृदय
नहीं आवे ।
जेहि अनुभव विनु मोह जनित दारुण भव विपति
सतावे ॥
ब्रह्म पीयूष मधुर शीतल जोपै मनसों रस पावे ।
तौकत मृग जल रूप विषेको रण निशि वासर धावे ॥
जेहिके भवन विमल चिन्तामणि सो कत काँच बटोरै ।
सपनै परवस परे जागि देखत कहि जाइ निहोरै ॥
ज्ञान भक्ति साधन अनेक सब सत्य झूठ कछु नाहीं ।
तुलसीदास हरि कृपा मिटै भ्रम यह भरोस
मन माहीं ॥

ऊधो कहा करव ले पाती।
जब लग नाहिं गोपाले देखौं बिरह जरावत छाती॥
निमिष एक विसरत नहीं हमको उदय चन्द्रकी राती
सूरश्यामसों यों जाय कहियो बतियां ठकुर सुहाती॥

७

उनकों व्रज बसबो नहीं भावे।
वहां वे भूप भए त्रिभुवनके यहांको लाल कहावे॥
वहां वे बैठें सिंहासन आसन यहां क्यों बच्छ चरावे।
वहां वे पहिरे पाट पटम्बर यहाँ क्यों कमरी शुचि पावे॥
नन्द यशोदा बिन बिसराये हमरी कौन चलावे।
सूरदास प्रभु बड़े निरदई पतियाँ लिख न पठावे॥

८

मन्दिर देख डरे रे सुदामा।
यहां रही मोरी राम मढ़ैया सो कोउ नृप उतरे॥
यहां उहाँ कर फिरो सुदामा मनमें सोच करे।
ठाढ़ी झरोखे परम सुन्दरी ताके द्वारे अड़े॥
पहली पौर गज हस्ती राजत दुसरो तुरङ्ग खड़े।
तिसरी पौर विश्वकर्म्मा राजत रतन जड़ाउ जड़े॥
चारि पदार्थ भए भवनमें दीनानाथ ढरे।
सूरदास वलि जाऊं चरणकी यदुवर शरण परे॥

९

अपनेको आपुहीतें विसर्यो।
जैसे स्वान काँचके मन्दिर भ्रम भ्रम भूंस मर्योरे॥
ज्यों मृगा तजी नाभि आपनी बन बन भ्रमत फिर्यो।
तैसे नरके निकट नारायण कबहुँ न सूझ पर्यो॥
जैसे फटकशिलाके देखत गज दन्तसों जाय भिर्यो।
ज्यों केहरि प्रतविम्ब निरख छवि कूप में कूद पर्यो॥
जस मरकट मुट्ठी नहीं छांड़त द्वारे द्वारे फिर्यो।
सूरदास नलनीको सुअना कहो कौने पकर्यो॥

जंगला—एकताला

केते दिन हरि सुमरण बिन खोए।
परनिन्दा रसनाके रसमें अपने परतर बोए॥
विविध बनाव कियो या तनको मल मल वस्तर धोए।
तिलक बनाय चले स्वामी ह्वै विषइनके मुख जोए॥
काल अचानक झपटत शिर पर ब्रह्मादिक सब रोए।
सूर अधमको कौन चलावे उदर भरे पर सोए॥

२

कहत नर आगे जपवों राम।
बीचै भई औरको औरे परो कालसों काम।
बालापन खेलत सब बीत्यो जोवन जोरत दाम॥
जरा-जोवन जब तन आय घेरो गृह सुत धन धाम।
सूरदास कैसे छूटेंगे बिना लिए हरिनाम॥

३

तुम बिन नाथ सुने को मेरो।
काम क्रोध रस लोभ मोह वश निशदिन रहतहै घेरो।
दूसर दीन-बन्धु कोउ नाहीं तासों अरज करत यह चेरो॥
नन्दलाल बिहाल बहुतहीं पाहि पाहि शरणागत तेरो।
सोणादासी आस चरणनको कृपाकटाक्ष प्रभु तन चित हेरो॥

४

कोउ क्या जाने अस रामगति रामगति परमेश्वरगति।
नारायण नर करत जगत जड़ चूको रूप धर पारवती॥
कहै माता कर जोर राम तहाँ कहाँ छोड़्यो शिवनाथ जती।
दक्षसुता तहां भ्रमित लजित भई गई महिमा सब लाज रती॥
गौरी बौरी ह्वै बन ढूंढ़ै जहां देखो तहां प्राणपति।
बरज्यो ईश तब एक न मान्यो कौन बौरायो ज्ञानमती॥
कहो माता दहिने बैठायो या तन भेंट न होत सती।
यज्ञ विध्वंस कियो जाय पिताको गावै गुदर जिय जान हती॥

जंगला—तिताला

अरे मन असो क्यों न करो रामनाथ चितमें धरो।
रहत विकल विष आलस पिये पुन पुन वाही भरो॥

मन पछतैहै अवसर बीत जइहै जब शिर आन परी।
गावै गुदर तज शोक सकल भय करले हरी हरी॥

२

अरे मन मानत नाहीं कह्यो भवजल जात बह्यो।
बार बार चौरासी भटकत नाना भोग सह्यो।
आवे न त्रास बास यम-याचन पुनिपुनि अनल दह्यो॥
आवागवन निवारत नाहीं गुरु पद चरण गह्यो।
गावै गुदर मन चेत अजहूं करजो कुछ रह्यो सो रह्यो॥

३

मरम तेरो का जानो हो।
थाके आदि अन्त सब पढ़ पढ़ कला नहीं पहचानोहो।
नाम अनन्त सबही ठहरायो कहत वेद मुख वाणीहो।
पायो न थाह अथाह रह्यो सब नारद शेष भवानी हो।
अमित कला करि जगत दिखायो माया तेरी दिवानी हो॥
जहां पुण्य तहाँ पाप विराजै विष अमृत सम मानीहो।
जहां गुण एक औगुण बहुतेरो जहां लाभ तहां हानी हो॥
व्यापक सब घट न्यारो निश दिन छवि तेरो अरुझानी हो।
गावै गुदर सब बीचहो रहैगो कहाँ तक सारङ्गपाणी हो॥

४

चौरे वाला सांवलड़ा मैड़ा प्यारावे वंशी बजाय रिझाय लई।
बंसरी अधर धर बजावदा मनमोहन मैड़े मन भाँवदावे॥

५

जबते बजाई हरि बांसुरी हो दैया।
एक एक मुखते बाक न आवै एक एक भरो दृग आँसुरी हो।
घरी घरी पल छिन कल न परत जियलग गई प्रेमकी फांसुरीहो॥
जानत मोहन तेरो मैं चेरो काहेको बजावो ब्रज हांसुरी हो।
गावै गूदर कल बिन देखे नहीं हरि लीनो तन मन सांसुरीहो॥

६

किन्ने बजाई वंशी मदन मरोर।
जब धुन सुनी आई मुरली की थिर न रहत जिय मोर॥
ग्रहते निकसो लोक लाज तज फिरतहैरो ढूंढ़त सब ओर।
गावै गूदर यह कला विहारी भली ठगी दिल मोर॥

७

आज सलोनो रूप बनेको।
छवि निरखत रवि शशि भए लजित वारूं मैं कोटिन भूप बनेको॥
गणतारा नग जड़ित मौल शिर चमकत मौज अनूप बनेको।
गावै गूदर दशरथ सुत नन्दन व्यापक सकल स्वरूप बनेको॥

८

कियो किरतार्थ कुवजा श्याम।
गोपिन छांड़ि दियो गोकुलमें ताकों दियो द्वारका धाम।
गरल पान कर गयो शम्भु नीलकण्ठ भयो सिरनाम॥
दास विभीषणको कर गहि कर लंका राज दियो तेहो राम।
दास कसाई सदन बखानो जामें बसो सालिगराम॥
राज नेत कविजन यों सराहत करता अकरता है हरि श्याम।
गावै गूदर मन वच क्रम सुमरो रसना कहै ले आठों याम॥

६

बस राम कियो देखो देखो शिवरो।
जो पद सेवत बीत्यो कल्पयुग सो पद मारग सहज लियो॥

ताफल खायो झूंठो प्रेम वश आप समीपते धाम दियो।
गावै गूदर धन भाग भीलनी नाम अमी रस घोल पियो॥

१०

छवि निरखत रामहुँलखन जोरी।
मिथला जनकपुर आनन्द भयोहै जबतें राम धनुष तोरी॥
राजा जनक उर अपने बिनवत धन विधि राखि परन मोरी।
गावै गूदर भयो सीय स्वयम्बर कहत जनक अस कर जोरी॥

११

सखी बन केश सवाँरत हो।
जगपति आप बलकर गहे कर ले शशि पर वारतहो॥
जो नख गह्यो गोवर्द्धन गिरिवर ता नखसे निरवारतहो।
ताछवि सुर मुनि सपने जोहत सो सुर-पुर-पति मान निवारतहो॥

१२

मुरलिया कौनें ख्याल परी।
काज करत सुन हार थकी इत उत पगन धरी॥
नवल वधु ब्रजयुवती जन सबमें प्रीतही प्रगट करी।
नागरी हरिकी वंशी धुन सुन प्रेमजाल सकरी॥

१३

कहाँ प्रभु विलम रहे सारी राती।
लटपटि पाग जुलफ घुंघरारी सोहै उनींदे रस भरे राती।
डग मगात पग धरत चलत मग साठ परी सब कोमल गाती॥
रहत अवर कहुं कहत अवर कछु हमसे झूंठ हजारों बाती॥
कहत हाँस ब्रज होत हमारी छवि तिहारी कुछ कही नहीं जाती।
गावै गुदर मैं कहि कहि थाकी यह सब करतव तुमै सोहाती॥

१४

दिवस भयो राज गरवाँ छांड़ो।
जागीहै मेरो सास ननदीया आवे नैना बिच लाज॥
कहु कहु प्यारे रातको बनियां क्या क्या सुखके साज।
गावै गुदर पुनि गरवां लगावै तुम मेरे शिरताज॥

१५

सोवत सङ्ग जागी मोहन प्यारे।
नई नवेली रस भरी अँखियाँ खञ्जन उर बिच लागे॥
चोरी कियो पहचानतहूं मैं झूंठ कहो कोई आगे।
गावै गूदर प्रभु वहाँ रहो तुम नई नेह जहाँ लागे॥

१६

कलेजे म्हारे बांसुरीको धुन लागी।
हौं अपने ग्रह काज करत रही श्रवण सुनत उठ भागी॥
खान पानकी सुधि न सखीरी कलन पड़े निशि जागी।
रैन दिना गिरिधरन लालके मीरा रहै रङ्ग पागी॥

१७

कन्हैया तोसें बार बार कहियां वो वंशीको टेर सुनावो।
बांके बिहारी तेरो चितवन प्यारी नैनासे नैना मिलाय जावो॥
ख्याल खुशाल प्रेमके भरे रहो हिय उमग उमगाय जावो॥

१८

राधा मेरी प्यारियाँवो कोई सइयां कोई लाके मिलावो।
मोहनी मूरत सोहनी मूरत कबहूं नहोवे न्यारियांवों।
चञ्चल चपल अनोखे नैना ख्याल खुशाल अपारियाँवो॥

१९

चलो सखी देख आमिवो मोहन नन्दका दुलारावो।
ठाढ़े कदम तरे वंशी बजावे छैला प्राण हमारावो॥
ललित बिभङ्गी कान्हा छवीला रसका रसीला मेरा प्यारावो।
नैनन सैन मैन गुण भर रहे ख्याल खुशाल अपारावो॥

२०

लागी नैना श्याम तिहारेवो नैना बसे आय हमारेवो।
मेरे मोहनी मोहन नागर चञ्चल चपल सुकवारे॥
नेह लगोहै उमग उठोहै सुनियो नन्ददुलारे।
पल पल ख्याल खुशाल सिखावत प्रेम प्रीत उरभारे॥

२१

शरण तक आयोमें श्रीराणी ऊंवे आदि भवानी।
तीन लोकमें जोत विराजै धर्म्मधुजा भगवानी॥
घट घट पूर रही महामाया महिमा वेद बखानी।
जन खुशाल पर किरपा कीजे दीजे भक्ति प्रमानी॥

२२

कैसा चेटक लाया वो प्यारेवो वंशीको टेर सुनाके।
सुनवे मोहन प्राण पियारे नैनासे नैन मिलाके॥
माधुरी मूरत चितवन बांकी रति रस छकन छकाके।
रसिक खुशाल छैल अलवेले बातें कहत लुभाके॥

२३

प्यारे बिन देखे नहीं चैनरे मोहन मोसें भली
निभाई प्रीतहो।
आपतो जाय द्वारका छाए ऐसी करो विपरीत॥
लिख लिख पतिटॉ बतियां घतियां आन दहतहै चीत।
पुरुषोत्तम प्रभु वेग दरसदो आन मिलो मोहे मीत॥

२४

अणी मेरा लाल बना घर आयानी।
रङ्ग रङ्गीला बारो छैल छवोला सांवल मेंड़े
मन भायानी॥
श्रीब्रजराज दुलारे प्यारे बड़ भागिन सानु पायानी।
हीरा रतन शिर सेहरा सोहै पुरुषोत्तम मन भायानी॥

२५

आज सइयों सँवल साड़े घर आयानी।
हाँथ लकुटियां कांधे कामरिया पीताम्बर सोहायानी॥

२६

रेमन काहे सिखावतरे।
चारों वेद भेद सब तीरथ उर बिच एक न आवतरे।
मूरख ज्ञान सदा दृढ़ नाहीं थकि रहे ब्रह्मा
लिखावतरे॥
जस अन्धरेको अन्ध मिलेहैं वैसो पंथ बतावतरे।
गावै गुदर ज्ञान सजीवन अवगत अलख लखावतरे॥

२७

अरे मन तजदे कुमत विकार।
या नगरी बिच पाँच मुसाफिर बसत पचीसहो धार।
तीन जगातीया जगको खायो मत भङ्गीत भगवान॥
कठिन नयन सर लाग्यो भाई माया बनीहै कमान।
याधन हो काहु नहीं तोर झुकी झुकी रहे गहेहै कान॥
अपना किया हम पायो भाई जो कुछ कियो नादान।
तैसी जग बिच फैल रहीहै करणी करम विवान॥
या नैननसे देखो भाई सुनि सुनि अपने कान।
गावै गुदर सत-गुरु वलिहारी गावो गोविन्द गुण तान॥

२८

हमारो वंशी प्यारी तुमदो वृषभानु-दुलारी।
हमक्या जाने प्यारे तुम देखो जहाँ विसारी॥
कहां दुराई साँची बतावो मुरली प्राण पियारी।
वह मुरली बहु सुन्दर मोरी प्रिया सोंह तिहारी॥
हम नहीं ललन विलोकी मुरली कहां भूले कहि ठारी।
पूछतहो क्यों छैल छवीले कोजाने कहां डारी॥
वो वंशी मोहें नेक न विसरे दीज्यो वेग बतारी।
अब न छिपावो साँची बतावो विनती करूं तिहारी॥
नहीं जाने तुम कहां धरीहै बांसुरी श्रीगिरधारी।
बार बार क्या पूछतहौजो मनमोहन बनवारी॥
या वंशीने त्रिभुवन मोहे कहाँ लग कहूं विचारी।
तुमतो गुण नहीं जानी याके सुर नर मुनि हित कारी॥
हम नहीं श्याम छिपावैं मुरली तुमसे कुञ्जविहारी।
साँची कहैं मुरलिया हमने नहीं देखो नैन निहारी॥
यह मुरली मेरी ललित मोहनी सो तुम
राखो लुकारी।
बन बन माह बजावों याको तुमरेही गुण गारी॥
सो सब साँची कहो कुंवरजी हम क्या जाने नारी।

यह गुण या मुरलीके माहीं सुन मोही व्रजनारी ॥
हंस मुसकाय दई तब मुरली प्यारी पिया बतारी ।
छह खुशाल लाल मुरली लीनी नए नेह उरधारी ॥

२९

साँकर खोल लङ्गरवा पीतम मिलेंके नाह ।
आपतो पार उतर गए हमको छाड़े मझ धार ॥
अन समझन के बहोत मत समझनको मत एक ।
रजब निशाना एक है तारन्दाज अनेक ॥
मूरखके मन बांबीहै, निकसत वचन भुवङ्ग ।
जाको औषधि मौनहै, काल न करत प्रसङ्ग ॥

३०

देखोरी छबि राम बदनकी ।
कोटि कोटि दामन दरपन दुति निन्दित
क्रान्त कपोल रदनकी ॥
नासा मृदु मुसक्यान माधुरी मन्द करी अति घुमड़
मदनकी ।
फब रह्यो क्रीट मुकट झालर सिर मनहुं फांस दृग
मीन फन्दनकी ॥
चोरत चित भ्रुकुटी दृग शोभा कुण्डल-कपोल
खौर-चन्दनकी ।
राम सखि छबि कह्यो न परत जब सुध न रही तब
वमन सदनकी ॥

३१

अरी मोंमे दरद दिवानी दरद न जाने कोय ।
घायल की गत घायल जाने जाएं बीती होय ॥
सूली ऊपर सेज हमारी किम विध रहिये सोय ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर बैद सांवरा होय ॥

३२

भईरे मैं राम दिवानीरे कृष्ण दिवानीरे ।
आगे लशकर पाछे डेरा, जित देखूं तित साहिब मेरा ॥
कोरा घड़ा गङ्गा जल पानी ।
जोरे पीवे सो होय निर्व्वानी ॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल रज लपटानी ॥

भईरे मैं राम दिवानीरे ।
जो कोईहो राम दिवाना पावे सोई पद निर्व्वानी ॥
लोक लाज शोभा कुल तजके तन मनकी सुध बिसरानी ।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर आमिल मोहे सारङ्ग पानी ॥

अथ पुरुषोत्तमजी कृत भजन ।

३४

लगनादा पंथ निराला ।
जिनके लगे श्यामसों नैना सदा रहै मतवाला ॥
जिसके भाग खुले इस कलिमें तिसनू यही खियाला ।
पुरुषोत्तम प्रभु प्रेम दिवाना मस्त रहै मतवाला ॥

३५

साँवल तैंड़े नैन सलोने ।
खञ्जन मीन मृग विवस किएहैं अनियारे बंकलोने ॥
जो देखत है सोई मोहत है कहा भयोहै टोने ।
पुरुषोत्तम प्रभु निरखि मगन भई लाग रहो चरणोनें ॥

३६

हो रसवादो प्यारे कान्ह ।
साँवरी सूरत माधुरी मूरतहो तेरे कुर्व्वान ॥
बाट घाट माहिं रोकत टोकत सुन्दर चतुर सुजान ।
पुरुषोत्तम प्रभु निरखि मगन भई देवो करो
सुख दान ॥

३७

साँवल प्यारावे मैंड़ी जान ।
जब तुसों वेखां तब असी जीवां नातर फिरां दिवाना ॥
देख लुभाना तैड़ी मोहनी सूरत मैंड़े जीवन प्राण ।
पुरुषोत्तम प्रभु मोहन प्यारे देवो करो सुखदान ॥

३८

छैलवा रोक रह्योछि म्हारी डगरा ।
मैं दधि बेचन जात मधुपुरी पकर खैंचा मेरा अँचरा ॥
कहा कहौं कछु कहत न आवे राज करी यह बगरा ।
पुरुषोत्तम प्रभु मोहन नागर मोह रह्यो व्रज सगरा ॥

३९

प्यारी लागे हो व्रजको डगर ।
श्याम-सुन्दर पिया खेलन निकसे नित नित याही बगर ॥

लुक लुक खेलें आँख मिचावन चलो चरण पहारी वगर।
पुरुषोत्तम प्रभुको छबि निरखत मोह लियो व्रज सगर॥

४०

चलोजो सब गोवर्द्धनको डगर।
श्याम अचानक मिलहो आयके गोपालपुराकी वगर॥
साँझ समय गउअन कों घेरत श्याम ढाकको ठिगर।
पुरुषोत्तम प्रभुको छबि निरखत रहो चरण तर सगर॥

४१

लालन बस गए नेनन मेरे।
जैसे चन्द चकोर चाहतहै हौं चाहत मुख तेरे॥
वैरी लोग चवाव करतहैं कहा जानेवे अनेरे।
पुरुषोत्तम प्रभुको छबि निरखत भए बिन मोलके चेरे॥

जङ्गला—एकताला

देखनदे ऐसे छैल गुमानो।
श्याम सलोना रूप रिझोना मन्द मन्द मुर मुर मुसक्यानो॥
मुरली बजाय रिझाय लियो मन मोह लईहै सब व्रजजानो।
पुरुषोत्तम वलिहार लियोहै हौं तो यह चरणन लपटानो॥

२

दरशनदे मोहे श्याम केश वारे।
घूंघर वारी झलकें मुख ऊपर हँस चितवो वलि जाऊं ललारे॥
छबोली लटक अधर धरो मुरली मोहि लियोहै प्राण हमारे।
पुरुषोत्तम प्रभुको छबि निरखत भुज भर मिले मोहे नन्ददुलारे॥

३

कौन भरन मोरी जाय वो गगरिया।
लङ्गर ढीट अहीरके छोहरा जिन मोरी रोकीहै आनके डगरिया॥
वृन्दावनको कुञ्जगलिनमें पकर अँचरा मोरी लेत बलैया।
पुरुषोत्तम प्रभु मुकुट धरे ठाड़े हौं वलगई ऐसे छैल छिकनिया॥

जङ्गला—तिताला

भलावे मेरे साँवलेने सुध विसराई।
जबतें विछुरे मोहन प्यारे हाहा खबर न पाई॥
विरह विकट वाको रहत जो कहा जाने पोर पराई।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत वेग मिलो यदुराई॥

२

इतना मान न करना जानो।
यह जोवनदा कारे भरोसा सबसों हिलमिल रहना॥ जानो०॥
जगत चवाव भय्यो दुरमतसों जोई कहे सोई सहना।
पुरुषोत्तम मेरो यही आशहै चरण-कमल निज गहना॥ जानो०॥

३

कछू कहो मेरी महोब्बत लगो।
वेणु बजायके मन हर लीनो विरहदे नाल पगो॥
सुन्दर-श्याम सलोनो सखियां नेह लगा जिन्द ठगो।
पुरुषोत्तम प्रभु मोहन प्यारे दशा दिश दुख भागो॥

४

पाक सूरत तेड़ो बनो साँवरे लगे नैनादे बानवे।
भौंह कमान चढ़ाय रहतहै मारत तिरछो तानवे॥
लगी कलेजे चुभी हमारे घायल कीतो कानवे।
पुरुषोत्तम महबूब साँवलो मानोदे जोवन प्राणवे॥

५

साँवरेने टोना कीता।
अब कैसे रहवो घर भावे नैनादे नाल मन लीता॥
शिर सोहै लट पटा फेंटा पीत पिछोरी दीता।
पुरुषोत्तम प्रभु वेणु बजावे यह व्रज-जन सब मीता॥

६

मेरे मन लाग रह्यो गोपाल।
छिन विन देखे कल न परतहै चञ्चल नैन विशाल॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहै उर गजमुक्ता माल।
सदा रहो मेरे पुरुषोत्तम तुमही परम कृपाल॥

अमारे घेर श्यामाटे नथो आवोछो।
एनी पेरे आख्या मूंकरोछो मनड़ म्हारूं ललचावोछो ॥
छाना माना जावो आवो गोठड़लो मनावोछो।
पुरुषोत्तम प्रभु वृन्दावननी वाटे मुरली मधुर
वजावोछो ॥

८

तैंड़े दरसदी हो दिवानियाँवे।
टुक मुखड़ा वेखलावो मुझको सुध बुध सब
हिरानियाँवे ॥
तुझ बिन जीवन कैसे बनिहै समझ देखो मन
मानियाँवे।
रङ्ग रस करी हाँ पुरुषोत्तम प्यारे साड़े दिलदे
जानियाँवे ॥

९

प्यारे तैंड़े दरस बिन बेहाल।
वेग आय महबूब साँवरे टुक मुखड़ा दिखावो रसाल ॥
नोकी मुरली सुनावो जानो विरह पाया मंनु जाल।
पुरुषोत्तम मन-मोहन मैंड़े राखो चरणादे नाल ॥

१०

प्यारे मोहे कृपा करो निहाल।
दरस देख हौं मोहो साँवरे साँकरो खोर
मिले नन्दलाल ॥
भेंटो अङ्ग सकल मन मोहन कोमल पुलकत
अङ्ग रसाल।
पुरुषोत्तम प्रभु यह सुख विलसत पहराई वनमाल ॥

११

जियकी बात रङ्गोलोइ जाने।
जाके जिय बसो यह मूरति सोई ताकों पहिचाने ॥
काहूको न माने न जाने काहूको बहो विध कहौ
सयाने।
पुरुषोत्तम प्रभु रूप साँवरे जनम जनम पहिचाने ॥

१२

मनतो मोहन बस पर गयोरे।
कछुन सोहाय नेक बिन देखे टोना सो कछु कर गयोरे ॥
मृदु मुसकाय बजाय वेणु धुन नैनसो नैनन लड़ गयोरे।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत प्रेम-सुधा हिय
भर गयोरे ॥

काफी—तिताला

डार गयोरी गले मोहन फाँसी।
विरहको मारो बन बन डोलौं करवट जाय मैं
लेहौं काशी ॥
अम्बको डार कोयलिया बोले मेरो मरण साँवरेको
हाँसी।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर तुम मोरे ठाकुर मैं तेरो
दासी ॥

२

मान मनायो राधा प्यारी।
दोउ कर जोर करतहैं विनती आगे लिए सखी
ललितारी ॥
मान सरोवर मान कर बैठी कुञ्जन कुञ्ज लतारी।
पुरुषोत्तम प्रभु सखी भेष धर चले मोहन पिय
गिरवरधारी ॥

जंगला—तिताला

रास रच्यो वृन्दावन बनवारी।
वंशीवट कुञ्जन यमुनातट मनमोहन पिय रसिक
विहारी ॥
निरत करत मन हरत सखिनको उपजत रङ्ग तरङ्ग
अति भारी।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत व्रजजन बार बार
बलिहारी ॥

२

वंशीवारेने चेटक लायावो।
मोहनी तान बजाय रागमें ताल स्वरन मन भायावो ॥
देखके रूप ठगो मन-मोहन नैनादा सैन चलायावो।
पुरुषोत्तम प्रभु सांवरे गवरू मन मोहन मन भायावो॥

३

चल्यो जारे कान्हा अब तुम काहे लगावत दान।
हौं दधि बेचन जात वृन्दावन मानत नहीं नन्द आन॥

सुन्दर-श्याम मनोहर-मूरत उलटी चाल रहे ठान।
पुरुषोत्तम मग रोक रह्योहै नन्दमहरिको कान्ह ॥

जंगला—एकताला

कौन करै तोहि छैल छिकनीया।
नन्द बाबा तेरो व्रजको रैया मातहै तेरी यशोदा रनियाँ॥
गुञ्जकोमाल विच पाँचकी मणिया मोर पखा
शिरकट तेरे तनियाँ।
व्रजजीवन प्रभु मोहन प्यारे जगतको धनी हमारो
बनियाँ ॥

२

मोहन मुसक्यान लगे सोई जाने।
ठाढ़ी हतीमैं अपनी पौरमें औचक निकस्यो आनवा
हैरानवा हँसन माधुरी लागि मनमथ-वान
सखो कोई घाव न जाने ॥
घायल भई मृगी ज्यों डोलूं परी भूमि पर आन,
यन्त्र मन्त्र औषधि ल्यावो भूलो सबही अपान,
करो कोई यतन सयाने।
छूट रहो अलकें घुंघरवारी कुण्डल झलकत कान,
जानतहै वे पीर हमारो युगल सखीके प्राण,
कही कोऊ भेट न जाने ॥

३

बंशी धुन बाज रहीहै तट यमुनाके तीर।
चलो सखी मिल देखन जइये बजाईहै बलवीर॥
श्रवण सुनत ग्रह ग्रह तें निकसी पहर विविध रङ्ग चीर।
जाय मिली पुरुषोत्तम प्रभुसों करत सकल सुख धीर ॥

४

कहियो वैड़े दिल जानीसों।
विरहदी अगन बुझत नाहीं बिन नैनादे पानीसों॥
जोगकी कथा कहा कहीं जाे अब लग दरस
दिवानीमों।
पुरुषोत्तम प्रभुसों मन मान्यो सुरत खूब दिवानीसों॥

५

मधुवनिया श्याम हमारा।
आय अचानक नित प्रति निकसत गउअनको रखवारा॥
घर घरतें सब कोउ चले आवत मग रोकत कान्हा प्यारा।
पुरुषोत्तम मनमोहन जानो व्रजजन-प्राण-अधारा ॥

६

बल बल जाँदोयाँवि तैड़ो मुखड़ेदो।
गवरू सोणा नन्दमहरदे बंशीदो तान सुना दियाँवि
तैड़ो ॥
मायल कर सानु घायल कीता नैनाजो चोट चला दियाँ।
राग सागर रस रतियाँनी मतियाँ साड़ा जीय
ललचाँदियाँ ॥

जंगला—तिताला

रोहणी नन्दन जय जय जय।
हल मूषल नित धरेंही रहत हैं असुर-दुष्ट-निकन्दन ॥
लटपटी पाग विघूर्णित लोचन देखे दरस मिटै
दुख-फन्दन।
कुण्डल झलक कपोलन ऊपर पुरुषोत्तम कियो
पदवन्दन ॥

२

बलदेव विहारीजय जय जय।
घूमत अरुण रस भरे लोचन लटपटे चिकुरको छवि
भारी ॥
कुण्डल एक मनोहर राजत अलकन झलक सोहत
घुंघरारी।
हल मूषल नित धरेंही रहतहैं दुष्ट-संहारन
भक्तन तारी ॥
सुर नर मुनि जाको यश गावत शारद ब्रह्मा वेद उचारी।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत आनन्द भक्तन-
सुखकारी ॥

३

नैनन भर निरखो श्रीबलराम।
रोहन विरह निकन्दन भक्तजन पूरण काम॥
हल मूसल नित धरेही रहतहैं पूरवै सबही काम।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत अङ्ग अङ्ग अभिराम॥

४

भजलेरे मन रोहिणी-नन्दन।

हल मूषल नित धरेही रहतहैं दुष्ट-दलन
असुर-निकन्दन ॥
शिव ब्रह्मादि अरु रुद्रादि ध्यावत सनक सनन्दन।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत चरण-कमल-
रज-बन्दन ॥

५

ब्रजमें श्रीदाऊजी आप विराजैं।
जिनको श्रीमुख निरख मनोहर कोटिकही अघ भाजैं॥
अङ्ग अङ्ग प्रति अमित माधुरी दरसही मनमथ लाजै।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत भक्तनके सुख काजै॥

६

जय जय जय बलराम पियारे।
लटपटी पाग केसरिया वागो अरुण नैन घूमत
मतवारे ॥
भक्तनकी रक्षाके कारण हल मूषल नित आप कर धारे।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत तन मन धन कीनो
वलिहारे ॥

७

सुन्दर श्याम बलराम सुखदाई।
हल मूषल आयुध कर मांहि कृष्ण ललाके हैं बड़े भाई॥
रसमाते उनमत्त फिरतहैं भृङ्गा घूम घुमाई।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत बार बार बलिजाई॥

८

अरे मन क्यों न भया अपनारे देख जगत सपनारे।
सुन्दर रूप देख लोभानाहो तुम हुआ जग सपनारे।
जप तप योग यज्ञ व्रत संयम कर थाके कथनारे॥
बिना भक्ति भगवान है दुर्लभ वृथा जगमें क्यों खपनारे।
कृष्णदास दासनके ऊधो हरि हरि हरि जपनारे॥

९

ओसोया कद्यो मट्टोदा डेरारे।
नेम धरम तू करले बन्दे शिर पर जमदा फेरारे॥
तात मात भाई सुत बन्धु इनमें कोई नहीं तेरारे।
ऊधोदास आश नटवरको चरण-कमल चित चेरारे॥

१०

देखो कुड़ी दुनियाँदा अजब तमाशा।
कौड़ी कौड़ी कर पैसा भी कीना जोड़ा लाख पचासा॥
जोड़ जोड़ एक ढेरहो कीन्हा सङ्ग न चला रति मासा।
बालूकी भीत पवनदा थंभा याको कब लग आशा॥
नर देहीका गुमान न करिए पानीदे बीच बतासा।
जटा बढ़ाय कर भए सन्यासी मगन फिरें जैसे भैंसा॥
चमरी ऊपर भस्म लगावे मनमें पैसाइ पंसा।
जैसी करणी वैसी भरणी ऊधो हरि जैसा कों तैसा॥

११

मेरी महारानी राधा राधा राणी ए श्रीराधारानी।
जाके बलसे मैं सबसों तोरी लोक लाज कुलकानी॥
प्राण-जीवन धन लाल विहारन वार पिऊं नित पानी।
भगवत मुदितनकों मन मोहन टहल पाई मन मानी॥

१२

वंशी गोपालकी आज बाजै।
अद्भुत तान तरङ्ग मधुर धुन सप्तसुरनसों साजै॥
लाज काज मान डर श्रवणन सुनत सब अघ भाजै।
रसिक गोविन्द अभिराम श्यामसों मिल सब
ऊपर राजै॥

१३

लगनकी चोंप चटपटी जानत जगमें कोय।
परजो गयो मन प्रेम जालमें क्योंकर निकस न होय॥
परवस परे दुरे नहीं सजनी कहा समुझाऊं तोय।
हरसराम हरि हाथ बिकाने इन दृग कपटा दोय॥

१४

बनवारी दंदा गालियांहों।
नन्द-दुलारे महरदे छैला हम ग्वालिन तुम ग्वालिया॥
तुम तो अकेले रहो व्रज महियाँ हौं दश वास नवेलियाँ।
नाच नचावों छौनले मुरली श्यामदास दे तालियाँ॥

१५

बालपनेदा मैंड़ा यार कन्हैया।
खेलत गेंद गिरी यमुनामें सङ्गही कूद परैया।

पैठ पताल कालो नाग नाथ्यो फन फन निरत करैया ॥
इन्द्र कोप कियो ब्रज ऊपर छिनमें देत बहैया ।
गिरि गोवर्द्धन नख पर धार्यो ब्रजको करत सहैया ॥
प्रात समय कालिन्दी न्हाने सङ्ग सखा बल भैया ।
वरुण लोकतें पिता ले आए यशुमत लेत बलैया ॥
ग्वाल बाल सब सखा मण्डली मुरली नाद गवैया ।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत चरण-कमल बल गैया॥

१६

मो मन लीता वो वंशी बजायके ।
वंशी तैंडी मोहनी पड़ी कानो बिच आय ॥
मगरूरी न करवे महबूबां जोवनदा मद पाय ।
वलिहारी क्यों नेह लगाया लाया तो और निभाव ॥

१७

सम कौन करै अवध विहाहाहाहाहारीको ।
भूतल भार उतार महीको सन्त जननके हितकारी ॥
सागर सत नामतें बांध्यो गौतम नारि शिला तारी ।
रावणके दश मस्तक छेदे वीस भुजा न्यारी डारी ॥
शिव विरञ्च सनकादिक सेवत इन्द्रादिक आज्ञा कारी ।
दास ऊधो लखि रङ्ग भरो मूरत कमल-नयन
सारङ्ग धारी ॥

१८

क्यों श्याम मेरो सुरत विसराई ।
जबतें बिछुरे प्राण पियारे अब लग खबर न पाई ॥
वेदरदान् दरद न आवे क्या जाने पीर पराई ।
ऊधोदास आश चरणनकी आय मिलो यदुराई ॥

१९

खेलत कन्हैया यशुमत अगनामें ।
ठुमक ठुमक पग धरत चलत डग लटकत
चाल चलैया ।
पीताम्वरको डारे अँगुलिया ता छवि कही न जैया ॥
वसुदेव देवकी कारण जनम बन्ध छुड़ैया ।
उग्रसेनकों राज दियो है ता छिन कंस हनैया ॥
नथुनी जाय कीनों यमुनीकों गिरवर नखके धरैया ।
डूबत ग्वाल उबार लियो है ता सुख इन्द्र लजैया ॥
जो सुख आदि वैकुण्ठ मैं नाहीं सो सुख ब्रजमें करैया ।
गावे गदर जाको ध्यान न ब्रह्मा ग्वालिन गोद खिलैया ॥

२०

मोहीरी नन्दनन्दन मोहीरो ।
शोभा सिन्धु मोहनी सूरत जित देखों तित ओहीरी ॥
कँचन लकुट दियेरी भुज तन शोश पीताम्बर खोईरी ।
जानकी दास मिलौंगी प्रभुसों कछु होय कछ देउ
तोहीरी ॥

२१

रासमें मोहनी मोहना श्याम सखी बन आई ।
गोरी कान बने नटवर वपु वंशी सरस बजाई ॥
भानु सुता जब कान्ह बने नन्दनन्दन राधाउ
बन आई ।
राधा कान्ह कान्ह राधाकी जानकीदास बलजाई ॥

२२

ऐसे समय पिया रसिक रास संग हंसवो नहीं
चाहियेरी प्यारी ।
चन्द्र-प्रकाश रास मण्डल में तुम बिन सकल विकल
बनवारी ॥
तुमरे साथ इतरात जातहैं माने अरज ब्रषभानु-
दुलारी ।
तब उठ मिली प्रिया प्रीतमसों जानकीदास वलिहार
वलिहारी ॥

२३

बनड़ा जोगी भला बन आयावो ।
माथे चन्द जटा गङ्ग विराजै शीश शेषको छायावो ॥
सुर नर मुनि गुणि गन्धर्व्व गावे वेद न भेद न पायावो ।
जानकीदास याको ध्यान धरतहो मनवाञ्छित फल
पायावो ॥

२४

कलि-मलहरणी गङ्गा महारणीजू ।
विष्णुचरण जल ब्रह्म कमण्डली शङ्कर शिर
भागीरथी आनीजू ॥

स्नान, पान, परसत जल, दरसत, पतित पुनीत होत गति न्यानीजू।
जानकीदास सप्त श्रुति गावें कहें स्तुति जाकी अमित कहाँनीजू

२५

जिनके प्रिय न राम वैदेही।
तजिये ताहि कोट वैरी सम जदपि परम सनेही ॥
पिता तजे प्रह्लाद, विभीषण बन्धु, भरत महतारी।
गुरु बल, ब्रजवनिता पति, त्यागे भए जग मङ्गलकारी ॥
नातो नेह जाहीसों कीजे सुहृद सजन जहाँलों।
अञ्जन कहा आँख जो फोरे बहोत कहूं कहाँलों ॥
तुलसीदास सब भाँति पूजिये प्राणनहूतें प्यारो।
जासों होय सनेह रामसों सोई मतो हमारो ॥

२६

तेंने कहीं देखारे मेरा वंशी वाला एरो सखी।
वन वन ढूंढ़ फिरत मेरी सजनी मेरे पैरन पर गए छालारी ॥ कहीं ॥
तन मनकी सुधि भूली भवनमें वेरन वंशी जादू डाला।
जबसों भनक परी मेरे श्रवणन मोही सब ब्रज वाला ॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा ना जान कैसा चेटक डाला।
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि कब मिलिहैं नन्दलाला ॥

२७

गाइये गणपति जगवन्दन।
शङ्कर सुवन भवानीके नन्दन ॥
सिद्धि-सदन गज-वदन विनायक।
कृपासिन्धु सुन्दर सब लायक ॥
मोदक प्रिय मुद मङ्गलदाता।
विद्या-वारिधि बुद्धिविधाता ॥
माँगत तुलसीदास कर जोरे।
बसहु राम सीय मानस मोरे ॥

२८

मन पछतैहै अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाय हरिपद भज कर्म्म वचन अरु हियतें।
सहस-बाहु दश-वदन आदि नृप बचे न काल बलीतें।
हम हम कर धन धाम सँवारे अन्त चले उठ रीते ॥
सुत वनितादि जान स्वारथ रत न कर नेह सबहीतें।
अन्तहु तोहि तजेंगे पाँवर तू न तजे अब हीतें ॥
अब नाथहीं अनुराग जाग जड़ त्याग दुराशा जियतें।
बूझे न काम-अग्नि तुलसी कहुँ विषय भोग बहु घीतें ॥

२९

सुमिर सनेहसों तू राम नाम रायकों।
ठाँव अरु निठाँवरीको सखा असहाय कों ॥
भागहै अभागहूको गुण गुण-हीनकों।
गाहक गरीबको दयाल दानी दीनका ॥
कुल अकुलीनकों सुन्यो है वेद साखीहै।
पाङ्गुरे को हाथ पांय आँधरे को आँखीहै ॥
माय बाप भूखेको आधार निराधार को।
सेतु भवसागर को हेतु सुखसारकों ॥
पतित पावन राम नामसो न दूसरो।
सुमिर सुभूमि भयो तुलसीसो ऊसरो ॥

३०

जागो जागो जीव जड़ जोह जग जामिनी।
देह गेह नेह जानो जैसे घन दामिनी ॥
सोवत सपनेहो सहै संसृत सन्तापरे।
बूढ़ो मृग वारी खायो जेवरी को साँपरे ॥
कहै वेद बुध तूं तो बूझ मन माहीरे।
दोष दुख सपनेके जागेही पै जाहीरे ॥
तुलसी जागी ते जाही ताप तिहूं तापरे।
राम नाम सूचो रुचि सहज सुभायरे ॥

३१

सुन मन मूढ़ सिखावन मेरो।
हरिपद विमुख कहुँ न लयो सुख शठ यह समुझ सबेरो ॥
बिछुरे शशि रवि मन नयननते पावत दुख बहुतेरो।
भ्रमित भ्रमित निश दिवस गगन महँ तहँ रिपु राहु बड़ेरो ॥

यद्यपि अति पुनीत सुर-सरित तिहुँपुर सुयश घनेरो।
तजि चरण अजहूं न मिटत नित बहिबो ताहू केरो॥
छूटे न विपति भजे बिनु रघुपति श्रुति सन्देह निवेरो।
तुलसीदास सब आश छाड़ि करि होहु रामको चेरो॥

१२

जानकी-जीवनकी बल जैहों।
चितु कहै रामसिया-पद परिहरि अवन कहीं चलि जइहौं॥
उपजी उर प्रतीत सपनेहूं सुख पद विमुख न पइहौं।
मन समेत या तनके बासी नइहै सिखावन दैहौं॥
श्रवणन और कथा नहीं सुनिहौं रसना और न गैहौं।
रोकिहूँ नैन विलोकत औरहो शीश ईशहो नैहौं॥
नातो नेह नाथसों करी सब नातें नेह बहैहौं।
है छर भार ताहि तुलसी जग जाको दास कहैहौं॥

१३

माधो मोह फाँस क्यों छूटे।
बाहर कोटि उपाय करिये अभ्यन्तर ग्रन्थि न टूटै॥
घृत पूरण कराह अन्तरगत शशि प्रतिबिम्ब दिखावै।
ईंधन अनल लगाई कल्पशत औंटत नाश न पावै॥
तरु कोटर महँ बस विहङ्ग तरु काटे मरै न जैसे।
साधन करिये विचारहीन मन शुद्ध होइ नहीं तैसे॥
अन्तर मलिन विषय मन अति तनु पावन करिय हमारे।
मर इहँ उरग अनेक यत्न वलमीक विविध विधि मारे॥
तुलसीदास हरि गुरु करुणा बिन विमल विवेक न होई।
बिन विवेक संसार घोर निधि पार न पावै कोई॥

१४

मैं हरि पतित पावन सुने।
हम पतित तुम पतितपावन दोउ बाणिक बने॥
व्याध गणिका गज अजामिल साखी निगमन भने।
और अधम अनेक तारे जात कापै गने॥
जानी नाम अजान लीने नरक यमपुर मने।
दास तुलसी शरण आयो राखिये आपने॥

१५

जोपै राम नाम रति होतो।
तौ कत त्रिविध-शूल निशिवासर सहतें विपति नसोतो॥
जो सन्तोष सुधा निशि वासर सपनेहूँ कबहुँक पावै।
तौ कत विषय विलोकि झूंठि जल मन कुरङ्ग ज्यों धावै॥
जो श्रीपति महिमा विचारि उर भजतें भाव बढ़ाए।
तौ कत द्वार द्वार कूकर ज्यों फिरतें पेट खुलाए॥
जे लोलुप भए दास आशके ते सबहीके चेरे।
प्रभु विश्वास आश जीती जिनतें सेवक हरि केरे॥
नहीं एको आचरण भजनको विनय करतहौं तातें।
कीजे कृपा दास तुलसी पर नाथ नामके नातें॥

१६

जोपै रहनी रामसों नाहीं।
तौ नर खर कूकर सूकर से जाय जियत जग माहीं॥
काम क्रोध मद लोभ नींद भय भूख प्यास सबहीके।
मनुज देह सुर साधु सराहत सोतो नेह सिय-पीके॥
सूर सुजान सपूत सुलक्षण गणियत गुण गरुआई।
बिन हरि भजन इंद्रायनके फल तजै न करुँ करुआई॥
कीरति कुल करतूति भूति भलि शील स्वरूप सलोने।
तुलसी प्रभु अनुराग रहित जैसे सालन साग अलोने॥

१७

अब कोउ कैसी कहो दिल लागा।
नन्द-नन्दन ब्रजराज कुमरसों ज्यों कँचन मिल्योहै सुहागा॥
अबतो बिछुरो न जाय मोरी सजनी ज्यों ब्राह्मण गल धागा।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत चरण-कमल चित पागा॥

जंगला—एकताला

दुख लागे अरु हाँसी साधो अजब जमाना आयाहै।
उलटा चलन चला दुनियाँमें जासों जी घबड़ाया है।
मुट्ठी चून साध के आँचे कहै नाज नहीं आयाहै॥
करज काढ़के बहोत माल दे वेश्या हाथ बिकायाहै।
कथा होय जहां ऊंघे श्रोता वक्ता मूड़ पचायाहै॥
चरणामृतकी घूंट न पीवे मधु चाखन छवि आयाहै।
भाग वलो कोउ भागव चाहे गंजा बहोत उड़ायाहै॥
भरो भागका राम-नाम-रस जासों प्रेम लगायाहै।
मात पिताको शंक न मानें ससुरा बड़ा ठहरायाहै॥
दुनिया दौलत माल खजाना नाहक भरम डोलायाहै
कहै कबीर सुनो भाई साधो सतगुरु भेद बताया है॥

जंगला—तिताला

हरि हरि बोलना दिलोंदी घुंडी खोलना।
हरि हरि कहत सकल अघ भाजे सुफल भए ते नर-
चोलना॥

दोहा

संस्कृतके अर्थ को तुलसी पाक संयोग।
भाषा पनवारे बिना हरिहि न लागे भोग॥
जिन हरि मन विध बड़ कियो नाहिन गुमान
को लेश।
भार धरे सब जगतको तोऊ कहावत शेष॥
मन मूंसा पँगुल भयो पियारा भयो हरि नाम।
रजब रत्ती नहीं चल सके रह्यो ठामको ठाम॥

२

मोरी नैया किनारे ले आवोरे पिया मिलनेको जाऊरे।
गङ्गा यमुना और घाघरा इनका यही सुभाव।
चाँद सुरज को जोत चमके नजर न आवे पार॥

३

मैंतो रहदियाँ ताड़े कारणवे।
औरांदे नाल सानु हँसदा बोलदा मैं नाल घुंडी नाहीं
खोलदा दुख सहदियाँवे॥

नैनादे नाल मैंतो ठगीवे ठगी मेरी जानवे।
इश्क छिपाया वारोवे छिपदा भी नाहिंरवे मोना
इश्कदी बान पड़ी मेंडी जानवे॥

५

वंशी में लिए जायरे जिय नैन लगाए साँवलिया।
सुनत बांसुरी भई दिवानी सूझत नाहीं डगरिया॥
घरी पल छिन मोहे कछू न सुहावे रस बस करि गए
बावरिया।
नैना से मारे जाएरे साँवलिया पिया बावरिया॥

६

साँनु निशदा निजारा नैनादा प्यारा लगेवो।
मुखड़ा वेखलाजा सूरत मैंड़े जानी तेरा अजब भरेहै
खुमार।
टुक दरस वेखावना साँनु सरस रङ्ग बलिहार॥

७

नैना रतनारे कारे अनियारीको रङ्गा देनी वारेए माले
काम भूपदे।
खञ्जन कमल मीन घोलो घोलो घते प्रेमदे परमाते
भौंरा छके रूपदे॥
हिलणेनो मिलणेनो हजो वेलो खिलणेनो विरहदो
तपत बुझावणेनो।
धूपदो टोणेनो एटोंने लोंने लोंनेनो सलोंनेनो नन्ददे
ढिठोने देनो सरस रङ्ग रङ्ग होणे अनूपदे॥

८

दरद बतायदे ननदी वाला जियरा मोरारो।
एक वैरन मोरी सास ननदिया दूजे नगरके लोगवारी॥

९

दिलदा दिलथीं कहनावे साथी चुप रहना पया मैंनु
नितदा सहाणा।
दुशमन जा अपनो ढूंढ़ निकाला हम नेह नजरते
दिल सल मोलहो लीता वन थन दिल आँखिनु
नितदा कहाना सहाणा॥

पीलू जंगला—तिताला

छड़दे जाँदियाँ हुण तैड़ेवो मैड़ी जान ।
राह तकेंदोलु मिलजा सोंनावे कदीतो पामी घरफेरे वो मैड़ी जान ॥

पीलू—तिताला

छड़दे गइयांवे में तुझ पर वे मेरे यार ।
पंडित पूछेंदो सगुन मनादो कभो तो आजा साड़े डेरे मैंड़े वो यार ॥

२

नन्दके नन्दन व्रजराज कुंवरने देखोरी मेरो मन हर लीनो ।
तिरछो चितवन विसरत नाहीं साँवरो सूरत जादूसो कछु कीनो ॥

३

रैन बिदा होने लागीरे मोता मोरे ।
मन हरवाके कोहरा उठत भुनसरवा गरे लागो ।
सगरो रैन माहि तलफत बीतो छोड़ वहियाँ तोसों पागी ॥

४

तेंने मेरो प्रीत तज डारोरे सुरजनवा ।
बड़ो बड़ो अँखियन तिरछा चितवन हँस कस बस कर डारोरे ।
कृष्णानन्दन कृपा कर मिलना हों तेरो वलिहारोरे ॥

५

सांवलो सूरत मन बस गईरे ना जानू कछु जादूसा कीनोरे ।
जन्त्र मन्त्र टोना पढ़ पढ़के वंशी बजाय जिय हर लीनोरे ॥

६

रैन कारियाँवे डरावनी लागे ।
घर मेरा दूर गगर सिर भारी हिल मिल पनियाँ जात सखोरी ठाड़ो कन्हैया पनघट आगे ॥

७

मोरा जिय तरसाए ऊधो ल्यावो बलवीर ।
बीते बारह मासरी सजनो मथुरा यमुना तीर ॥

सांवलड़ावे गुजर गई गुजरान ।
रात देहा मैनू ध्यान तुसाड़ा भला बुरा पहिचान ॥
कृष्णानन्द प्रेम मद छाके करत अमीरस पान ॥

९

मेरी जान मौजकी दुलरी ।
दुलरी गुंथावन में जो गईरे पटुवे मारो सेन ॥

१०

जियोरो जियो बसनिया प्यारो दूरसे मारो निजारा जान ।
निजारा मारै सैन चलावै छतियनसों लगावै ज्वान ॥

११

गरजत बादर चौंक परी ।
पीर करीम में वलिहारी जइये जिन मोहे दई मुराद भरी ॥

१२

भागलपुरको ऊंचो डकनिया नीचे बसे कनवरिया जान ।
अच्छे अच्छे मधवा हमको पिलावे बाला जोवनवाको अच्छो रिझैया जान ॥

१३

आज बनोका गवन होना ।
चार जने मिल चले विवाहन घर ढूंढ़े बनरा मिलाना ॥

१४

जालम यार झाँड़ा का तकसारवे ।
ताना भी देंदा वारावे माना भी देंदा मेरा मियां मिलणा हनी तुमो जोवांवे ॥

१५

सांवरे में नहीं जाँदावे लोका मानु ।
साहरे घर अलवत जाना सेज चढ़े जाना शरमादोवे ।
नदिया गहरो नाव पुरानो सांवरे पार पहुंचामोवे ॥

जंगला—पीलू तिताला

तोरे नैनवाको बान भूलत नहींरे ।
बड़ो बड़ो अँखियन कजरा दीनो मोहे तेरो बांको चितवनियाँ विसरत नाहींरे ॥

पीलू—तिताला

जियरा मोरा घबरायरो आली मानत नहीं ।
का मैं करूं कछू बनत नहीं है यासों पियाहै रिसायरो ॥
आली॰ मा॰ ॥

जंगला—पीलू तिताला

एकसों मन लग गयो गुइयाँ ।
रातको मइकों आके अचानक यास नाम कोउ ठग
गयो गुइयां ॥

१

कोऊ बैरन लीनो लुभाय बालम रूंस गयो ।
यास पियाको किन बिलमायो भोर भई नहीं आयो ॥

पीलू—तिताला

मन भायाहै बांको मेरा याररो ।
यास पिया घर जाऊंगी ननदी मैंका बुलायदे कहाररो ॥

२

गरवाँ लगायले सइयां जाऊं तोंगे वारो ।
बरछी न मार मोइको नजरको कारो काहेकों
यास पिया देतहै गारो ॥

३

कहाँ रहे तुम रात बालम ।
सगरो रैन यास तलफत बीतो कहेको नहीं कछु बात
बात बात बालम ॥

४

मैं काहे न छोड़ हट जा काऊ देखें न बालम ।
यास चुमट मोरा जियका लेहै देखे मइकों न सता ॥
को॰ ॥

५

मैं कहा करूं गुइयाँ जियरा रहा नहीं जाय ।
यासके बिछुरे कल नहो एक पल बिरहा मइकुं सताय ॥

६

शरमाय जाय बालम मोरी अखियाँ ।
यास पिया तोगे चाहत कारण तान देतहै सब सखियाँ ॥

७

जोबना दिखाय दीना घूंघट खोल लुभाय लीनो ।
अखियां मिलायके और शरमायके यास पियाको
लोभाय लीनो ॥

सइयाँ हो रूंस गयो मोसों न बोला न बोलो न बोलोरे ।
यास पियाने रातको मोरा जिया व्याकुल आके कियो
मइकोंरे ॥

८

पिया मइसों न बोले जिय तरसायारे ।
चाँदसा मुखड़ा देखायके क्यों छिपायारे ॥
हाथ न मइकुं तुम लगावो देखो खबरा पायारे ।
देख लिया मैंने तेरा कौल औए करार यास जुदाई
तेरोने मुझे मार डालारे ॥

१०

कासे नेह लगायोरी यास पिया नहीं आए ननदो ।
जागत जागत भई व्याकुल किन बैरण बिलमायोरी ॥

११

आरे आजानी प्यारे जानी छिटक रही चाँदनी ।
नदिया किनारे लागो फुलवारो यास मिल बैठे
वारो ॥ जा॰

१२

आज बधायो सोहायोरा प्रगट भए ब्रजराज ब्रजमें ।
सब सखियन मिल मङ्गल गावो नन्दलाल वर पायारो ॥

कासे कहूं दुख अपना दइंरा प्रात करो किधो
रोत नईरो ।
इन निरमोहियासे काम पड़ोहै आँख लगा
ऐता जियसें गईरो ।
कृष्णानन्द रहत मनको मन कहत बनत नहिं जात
सहोरी ॥

१४

नाजो खड़ियेंवे उचट गई नींदड़ो सारो नींदड़ीवे
नींदड़ी ।
ऊंचा नोचा पोपलवे पिंगानो पया मेरो जानवे झोखे
देदो सानु होरनोवे सानु होरनो ॥

१५

नथनीदा मोती झलके।
गोरिया रातकी जागी लागी नाहीं पलकें॥
नैना लगी तेरे मनभावनसों भौहैं कमान वान
कपोलन अलकें॥

१६

मजेही मजेमें मेरो सब रस लीनोरे लाल कीनो बावरे।
रस बस कर मोसें नैन लगाए जादू टौना कछु
कीनोरे बावरे॥

जंगला—तिताला

साँवरा मन भाँवदा वेखो सइयोंनी शेलो वाला
अखियाँ लड़ांदा जाँदावे।
साँवरेदे मुख देनीवे लेवाँ बलाँइयोंवो मियाँ तू मेरे
घर आँदा शेलो वाला॥

२

मन मोहलियारे रब्बारे मैं कूकेंदी आगन कीथे।
सजनादी सार नैना नाल दिलदी विथा मैं कासे कहूं
शोक रङ्ग मानदाभी नाहीं हाले आशिक दिल
बस नईथे॥

३

दरद बतादे ननदी जाय जियरा मोरा।
सास मोरी वैरन ननद हठीली सइयाँ पइयां लागूं
मैं तोरे॥

४

बेड़ा बालावे कदीतो साँवल वेकदर मानु
मत छेड़वे।
तरके रहंदी वारी होभीतो आइदावे मियाँ सो कभी
तो चाक रंझेटा शोरीवे।
एती बात बनायके पीके पास गई जब छवि देखी
पियकी सगरी भूल गईवे॥

जंगला धनाश्री—तिताला

रे मन भूलो भूलो कहुँ डोलत आदि अन्त हरि वही।
इतबित चितवत ठौर ठौर नित मैंने तोसें लाख कही॥

जंगला—ताल पश्तो

गर हमने दिल सनमको दिया फिर किसीको क्या।
इसलाम छोड़ कुफर लिया फिर किसीको क्या।
आप कियाथा अपने गरेबांको हमने चीक आपो
सिया सिया न सिया फिरकि०॥
क्या जाने किसके गममेहै आँखे तुमारी लाल गर
हमने तो नशा पिया फि०।
अपनी तो जिन्दगी भला भिमले इवावहै जो
खिजर लाख बरस जिया फिर किसीको क्या॥

पीलू—धीमा तिताला

वेनिजारा नैना साड़ो जान तेड़े नाल लगदानी
भूलदानीवे।
नजर गुजर थी छलकदी बचके सोणा सजन साँई
चल फिरके उठ चलीवे॥

पीलू—तिताला

हाँवे ढोला मानले हाँवे ढोला मानले मैंतो तानु
आँख नहीं समझाँवे।
भिच्चा देंदा वारी लेंदा भी नाहीं मेरा मियां
सूरतदा मतवाला हाँदे ढो०॥

२

तारणावे मियां मैतु तारणा सोणा तेड़ो लटक
चालदी मैं वारीवे बीवां मैं०।
सोहनी सूरत वेमन पर बस दीवे मियां तू मैनु न
विसारना वे बीवां मैं०॥

३

उठ दिया हूंकीं पल पल सानु पल पल सानु।
दरद बतादेनीवे सुनवे बीवां मेरा मियांकी कहाँ
जिन्द वेकल रहदियां हूंकां पल पल सानु पल सानु

४

सोणा मैनु तारणा वे तेरो लटक चाल पर वारी।
सुन पावे कोई माल मुकद्दम सुन पावे पटवारी॥
साहन सुला हाकिम ढूंढ़ा शिर पर गठरी भारी॥

५

तेरो लबियां छावावे हवेवे तू वड्डो चीरे वाले तू वो हवे ।
जो तू भूखा इश्कदावे तू दाहापड़ो क्यों नवो हवे ॥

६

बाड़ोदा ठंढड़ा लगदा पानी ।
सात कुवा नव बावरारि सालासे पनिहार ।
जिसमें गोरी कौनसारि बालापन को यार ॥

७

कुँवे परि पानीड़ा लङ्गरवा भरन न देरि ।
चूनर झटक मोरा अंचरा पकर लीनो सास सुनै तो कहा बालँगी सुन पावे शोक रङ्ग जानोरि ॥

८

को पतियाँ ले जायरि विदेशवा लगन लगी मारो ।
एक पार गङ्गा एक पार यमुना बीचबालम का गाम॥

जंगला— तिताला

हेरी मोहि छल गयो नन्दको बिहारी पनघटवा जान न दे ।
मारग रोकत ऐड़ो डोले नैन सैन रसले ॥
ए व्रज मोहन छैल छबीला पनियां भरन न दे ।
सरस रङ्ग रङ्गीलो रसीला चितवन वस करले ॥

२

रब्बा मैड़े प्यारेनु मिलामो फन्दड़े जांदानो दूरवे ।
जो कोई प्यारा मैड़ावे आनके मिलामो नातर मरना कबूलवे ॥

३

मोतीड़ा मगादे मोरा यही झगड़ावे ।
इस मोतियनको लड़ मोरो लटके मारंगी नैना घुमाये यही झगड़ावे ॥

४

साँवलावे तुसी मुख वेख लाजावे मैड़ो मनदो आश पुजाजावे ।
तुझ बिना मैनु कल नहीं पड़दी कदी तो दरस वेखाजा॥

५

मैड़ा दुख दूर करिवो रब्ब साँई असी तैड़ा लेवा बलाई ।
सदारङ्ग तैड़े जांदे वारी तुझ बिन और न कोई मैड़ा साँई ॥

६

मुलक मुलतानदा मइयों मैंड़ा ।
वेखानो असी वसजा तू मानु साणा या भला लगदा मुलतानदा मैड़ा मइयोंनो ॥

पीलू—एकताला

मार गयो चितवनकी बानहा नैना मेरे ।
एक एक बार मरे सब हम ताहर चितवनमें तजि परानहो ॥
आ रब बचाय दुरजनको हमको मारत ढूंढ ढूंढ पहचानहो ।
बार करों सकुचौं जोतनको कायम सब जियसों कुरबानहो ॥

जंगला—धीमा तिताला

मूरत माधुरी मेरे मन बसारे ।
देखतहीं सुख भयो मेरे प्राण चितवा मृदु मुख हंसोरे॥
छैल छबीले मोहना प्यारे श्रवणन कुण्डल लसोरे ।
कृष्णानन्द आनन्दसों निरखत यो वृन्दावन बसोरे ॥

जंगला—तिताला

नैनानि जुलम कियावो श्याम तेरे ।
भौंवें कमान बान कटाछन वेधा गरीबांदा हियावे ॥
यही रहँदे महामतवारे खञ्जन मध जो पिया ।
आनन्दघन व्रजमोहन जाना मन मान पकड़ लिया ॥

२

भाती माला मेरो कान्हा छोड़त न गरसे ।
मोठो मीठी बातें कहैके लाए मोहि घरसे ॥
ऐसो विश्वासघाती मारो नैना सरसे ।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलीनमें जन शिवदीन बिकाने राधावरसे ॥

मूलतानी तथा जंगला—तिताला

२

धिग जोवन ना प्रभु जाना हो।
ऐसेहो ऐसे दिन खोए तुम कैसे हो चतुर सुजानाहो।
करले हेत लाल मोहनसों मधुर मधुर सुर गानाहो॥
जोवन जब सुफल होयगो हरिके हाथ बिकानाहो।
सूरदास भगवान भजन बिन फिर पाछे पछतानाहो॥

मिस्र भैरवी—ताल तिताला

तेरे होठोंदी बोड़ी लालियाँ कानों सोहैं तेड़े वालियाँ।
सोणावे०।
साड़ा दिल लेंदी जुलफें वालियाँ सोणीवे तांड़ेहो॥
जेहर तेहर अनवट बिछुवा माथे सोहै बेंदो लालियाँ।
सोणावे०।
मायल घायल दिलनु कीता तेड़ी सोहनी सूरत मतवालियाँ॥
मोणावे०।

जंगला—एकताला

सांवलिया मेड़े प्राणहो सांवलिया असी जानरे।
माथे मुकुट मुरली कर राजे सुन्दर वदन टेढ़ी भौंह कमानरे।
दीरघ नैन तिरछी कटाछे मानो लगत मैनके बानरे॥
केशर तिलक गल माल विराजे कुण्डल झलकें कानरे।
मृदु मुसक्यान अलबेली पगिया गावतहै नीकी तानरे॥
एक बार हँस बोल पियारे राखो हमारो मानरे।
कृष्णरङ्ग सखी दोउ कर जोरे माँगतहैं दरसन दानरे॥

जंगला—तिताला

विहारीलाला ठाड़ेहैं यमुनाके तीर।
भूषण मणिगण अङ्ग विराजें सुन्दर-श्याम-शरीर॥
मधुर मधुर धुन मुरली बाजे सुनि मन धरत न धीर।
कृष्णरङ्ग सखी हौं लखि आई तूं चल हो मोरी बीर॥

जंगला—एकताला

अधर धरी मोहन बांसुरिया।
सोवत चौंक परी मैं सेज पर तानन बेध गई पाँसुरिया॥
जो जैसे सो तैसेई धाई डार दियो गरे प्रेम फाँसुरिया।
कृष्णरङ्ग प्रभुके मिलवेकों कुलकी लाज करी नासुरिया॥

२

मन अटको छबि नागरनटको।
केशर खौर मुकुट माथे पर उर बनमाल विराजत टटको।
मृदु मुसक्यान भौंहकी मरोरन नाक बुलाक हिलन हिय खटको॥
वंशी अधर मधुर धुन बाजत, झुमक लेत गति अम्बर झटको।
कृष्णरङ्ग प्रभु सङ्ग फिरौं बन अब न रहों काहूकी हटको॥

जंगला—तिताला

जावादे गुमानीड़ा कृष्णा म्हारे डेरे कामछे।
इत गोकुल उत मथुरा नगरी यमुना किनारे म्हारो गामछे॥
म्हारे आँगन तुलसीको बिरवा सांवरो सखी म्हारो नामछे।
जानी नहीं तो पूंछ लीज्यो कुञ्ज द्रुमन म्हारो धामछे॥
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि श्रीराधा म्हारो नामछे।
कुञ्ज भवनमें ढूंढ़त डोलों रट म्हाने बतावो कहाँ श्यामछे॥

२

जिन्द अटकी प्यारेदे नाल मानु मिलना जरूरवे।
ले चल ऊधो श्याम सुन्दर जहाँ मथुरा केतिक दूरवे॥

मूलतानी—तिताला

थारा ढोलिया चाकर रहस्याँ पवा मारूजोमें।
म्हारे तो थारो चाव घनोछे थारी दासी मैं होश्याँ॥

२

बलमा मैं न्यारो होंगीरे बङ्गला छवायदे जांहो रावटीरे।
सास लरे घर ननद हठीली दिवरा दे मोहि गारीरे॥

जंगला—धीमा तिताला

मेरा आलम परी परी दिल जांदा।
मुख बीड़ावे बाजुबन्द और चूड़ा औ जो चाहे तेरे मिलनेनु मोरी कल नहीं एक घरी घरी पलदा॥

पीलू—तिताला

सुनरे बटोइया बात बोरा कद आवेंगी ।
बरसन लागी मेघवा सावनके निशि अँधियारो कारो
रात ॥ कद० ॥

२

सखो पिया बिन कठिन बोतत सारो रात ।
कासे कहुं और कौन सुने है मोरे जियको बात ।
वैरो बिरहा पोछे पड़ोहै ना कोऊ सङ्ग न साथ ॥

३

सइयाँ रङ्गरेजवाने मइकुं गारो दोनोरे ।
सुहेको रङ्गाई बारा सब कुछ मागे जो मागे सोई
दोनोरे सइयाँ ॥

४

तासुको अङ्गिया मोरोरे देवरा लोभानो ।
तासुको अङ्गोया जरद किनारो रेशम लागो डोरोरे ॥

पीलू—एकताला

बांके नैना कहाँ लेके जाऊंरे ।
जाके कहो मोरे वारे सइयाँसों हमरा गवन लेइ
जायरे ॥

२

थारो वलिहारो वे लाड़लोका बनवारो ।
गिर साहे गुजरातावे चोरा कलङ्गो रतन जरकसो
भारो ॥

३

वारोवे लायोरो दग्धोदार पंखा मेरावो ।
इम पँखेदो में लेवाँ बलाइयाँ वे मियाँ देदा ठंडो
हवा वारो ॥

पीलू—धीमा तिताला

नैना तेरे मतवारियाँ वारो तेड़े जोवनदावे ।
होठोंदो मिस्सियाँ पांवो धड़ियां डोरे तेड़े डोरे तेड़े
कारे वारो तांड़े जोवनदावे वारो तेड़े मतवारे ॥

२

गारो न दूंगी सुनेंगी लोगवारे ।
बोलो ठोलो होरहो ठठोलो धर बहियां झकझोलो ॥

पीलू—तिताला

कंगना चुभो चुभो जाय गोरे हाँथन ।
छल्ला माजूं मुदरो माजूं और माजूं गलेका हार ॥
झलक माजूं जोवना माजूं चन्द सूरज तोरा जार ॥

२

मसक मसक मेरो सब रसलोनोरे राम कोनो बावरे।
सगरो रयन मोहे तलफत बोतो भोर भए गरे लाग
लोनोरे राम कोनो बावरे ॥

३

लाल डोरा कुसुम रङ्ग बारारो ए डोरारे ।
सांझ भई पिया अजहूं न आए सावन भादोंको
भोरारे ॥

४

सइयां मइकुं बुलावे नदिया उतरूंगो पाररे ।
गहरावे नदोया नाव पुरानावे कैसेके उतरूंगो पाररे ॥

इति श्री अंगना पीलू रागिणी ।

श्रीकृष्णाय नमः ।

रागसागरसंग्रह-कृत ।

रागिणी सिन्धु—तिताला टप्पा

वोपरो जादोंदे परे बन बन आंदेहो मियाँ परना
मार सकदे परमाना आ समरू तेरे रूबरू ।
परियां देवो परे परो उड़ न सकदायां ओरोदेनो
टप्पे नु तेरेरो आबरू ॥

२

नाजुक मुखड़ा नाजुक नजर निजारे नैनवे परोदा ।
तेरे मुश्ताक होभो ओरो मियां गिर तुर्रा जरोदा ॥

सिन्धु—धीमा तिताला

करदा मैंड़े नाल दिन भर यार दिलवरियां केला
जोर जोर ।
हम दम कोई किसोदा वारो कोई किसोदो ओर ॥

२

वेपरवाहोदो तेंदड़ो रहँदो याद मियांवे ।
ओरो आपेनू क्यों करदा बरवाद मियांदे ॥

नजारा जटियांदा यारवे ।
श्रोख माड़ी मानले समभ सांई पुन पुन सकदा
मार लटियांदा यारवे ॥

भैरवी सिन्धु—तिताला

आंदावे साड़े दिलनु महरम यारदे निजारंदा गमजा।
वेखवे शोरा हुनवो तो गुमज गुजे नैनादियां समभा ॥

सिन्धु—तिताला

मुड़ आमि माड़ड़े कौलवे छैलदे।
शोरा मैं तैनू चांदियां तुसी कभो न रहो मेला मेलावे॥

२

तैड़ीवे गुमानोहा भलो लगदो दिलनु दिलवर समझा।
मंह महताब सितारे चश्मा शोरो तेरा शोख
निगाहदे सदके हमजा ॥

३

वेखमें भूल गइयां नैनोदे निजार दियांरे समभां ।
शोरो तैनु वेख रहियाँ आँदो जाँदो गुंजा गमभां ॥

४

वेदरदी यारवे नेड़े क्यों नहीं आंदा जांदा सुन भला ।
यार यारांदा को करिए गला शोरो अजब तेरंदा
रशम चला ॥

५

आशोसादे मत भूल पुन यारदा मिलनाहो मियां ।
शोरो मेरा तेरो मिलन गनोमत लाय पुनि यारदा
मिलना ॥

६

अखा मिलादे मैड़े सांवरेनु ।
बिन दीठे मैनु चैन न आंदावे आंख लगी नहीं छूटदी॥

७

दिल रखना राजी जानो यार फकीरांदा ।
होंदा सोदा किस नींद प्यारा शोरो दिल बिच बात
सांच सबदे शरीरांदा ॥

८

चल फिर करदे दोद निजारा प्यारियाँ सोणी सजदा।
शोरो इस वोच आंदे जांदे करदे टप्पेदा रजदा ॥

आजटी सानु मानले मरजा देखा गम तेरा मैं तेरी सौं।
लोकोंदो बदनामो थों डरमत शोरीनु अपना गम
खाँदो मैं तेरीसौं ॥

१०

आ पियारा मिलजा किस वेलेदो मैं खड़ियाँ ।
तकदो राह बूएनु शारा नहीं मिलदा चोरे वाला ॥

११

करदावे याद करदो आड़ा वे मैं तक रहियां बूएनु
दरद वालियाँ ।
शोरो आपे नु क्यों करदा बरबाद मियां॥

१२

क्यों रुठड़ा जांदा वे हावे राजी रहना मिलजा मैंनु
तकसोर साड़ो माफ कर राजी रहनावे ।
आवन उरेनु जावन परेनु शारा इस गला आंदा जांदा
सवेरा चाहनावे ॥

१३

आवोजो मिरजा जान माड़े डेरे आजा बांकिसे ज्वान ।
शोरोदे सरदार यार परियाँ करे दियां मिजमानो
काई टप्पेदी सुन लाज्यो तान ॥

१४

दिल लगा रहँदा यार तुझ बिन कमला इश्का बिच
अपना हेर फेर ।
सदके कीतो जिन्द असाड़ड़ो उथे हम दम जिथे तुम
आवो दिलवर चल फिर ॥

१५

भाटांनी जरोवे योवनड़ा सोई मैं तो तैड़े वेखन कारण
हुण कमला।
नेह लगाकर तू कित जांदा सदारङ्गो ने मिल गए
पीतम प्यारे हुण कमला ॥

१६

हरदम् आंदा जांदा दम् जब तूं कहांदा आदम् ।
इदड़ी तादम में आन कर अदमनु चश्चल नहियां
भूलना खबर वनु ॥

१७

सीधे पैंड़े थों नाहीं विसरवे हरदम रब्बा ध्यान करें।
हस्ती मस्तीमें भूलन चञ्चल हंस रकावी रख दिल पर
डरे॥

१८

तेरे विरहदे मारे हरदम भरदे आहदे नारे।
हुशन महबूबांदा वेख ताव न आंदी चञ्चल नैन
जिनादे कारे॥

१९

सुनवे देरदा महबूबां यार मतदी दुख मैड़े दिलनु।
नाहक जिन्दड़ीको सतावो चञ्चल आशिकनु
पल कल देनु॥

२०

निजारा जरा आ वेखलाजा जान किसे वेलेदी राह
तकेंदियांवे।
दिल रहँदा मुश्ताक वेखनदा तेड़े नाजुक मुखड़ेदे
चञ्चल छदड़े जाँदावे॥

२१

तुझ विन रैन नहीं कटदी पल पल आँखि उचटदी।
नजर मिला चञ्चल चट चेटकदी॥

२२

वेखणनु जिन्द भटकदी केहो करा थों माहीड़ा।
जाय कहो चञ्चल दे नाल कोई याद तुसाड़ी
आन आन खटकदो॥

२३

आदमदे बीच दम जान मियां दम दमके दम महमान।
क्या दमका भरोसाहै वकीलें सौदा दम कुछहै हरेक
दममें कुछहै चञ्चल कौसो जिन्दगो परमान॥

२४

कौवीं विरते पे गुमान योंहीं जांदो एक पल बीच जान।
गुजर गई गुजरान तेड़ी चञ्चल क्या खेड़ा क्या मैदान।
क्यों गोरी तूतो मिलदा नाहीं आहे मुखड़ा बाग-
बहार माहीड़ा॥

२५

माहीड़ा बालम यानावे मइयों साड़ा जानो नहीं
नेह लगयादी सार।
क्यों गोरी तू मिलदा नाहीं आये मुखड़ा बाग बहार।
वेपरवाहो ना करना नबोदे गरीबां तारे तो आगी
को हायारे यार॥

२६

वे लाल लड़कें लटियाँ थंको समझ लाग लगाई।
रमझ समझ गोरी छुटदा नाहीं विरह दाद लाई॥

२७

जानीदा मिलनावे प्यारेदा मिलनावे मियाँ मैनु
दम गनीमतहो जांदा।
आँजादे दुख भूल जाँदे गोरी नेह लगा सब कारांदा॥

२८

गुजारा दमदा दमदे नाल किमी तरे हो जांदावे
गुजारा।
अमरदाको मरदा गोरी तूभी तो क्यों करदा सोच
विचारा॥

२९

मिरजा छैला वे मियां तैंनो लौंतो मैंड़ो जा खबरां।
भलाहो या रब तैनु आमिलो तैंनो लौंतो मैड़ो जोरवी
जबरां॥

३०

चाकदा राजो रहना रखना राजो काम मेरा
मैं तो चाकर।
गोरी हो गम दम मेरा मैं कोकरां तेरो दौलत कुछ
पाकर॥

३१

चलाई हो नैना वाले मियां साँग।
गोरी मैं तोड़ूंगी विरहदो थाँग॥

३२

क्यों रूठा यारवो मियां तकसोर साडी माफ करो
राजी रखना मैनु।

खुशरङ्ग शोरी यार साड़डा हारि नाहकदो गलां शिर
पर न धरो ॥

३३

ओजटोदे जादू नैना सहर चलांदे तीर नजरदे गुजरदे
पारावार मियांवे।
तादे तुफान कमान भवांदो अटक मटक शोरो
दिलले जांदा सरकार ॥

३४

यागुमानो यारवे नाजाना कर मोहो मैं ततोदा कौन
संभालन वाला।
आशोरो टप्पा गा दिल बहलाजा यार ॥

३५

सोणावे गल लगजा ढोलन यार गुमानो।
तुझ पर सदारङ्ग ने एती अरमल कीती दुतवल वेख
तैंड़े दरस बिना नैनादो मिझमानो ॥

सिन्धु धीमा—तिताला

सुकर गुजारियाँवे मैं तो रब ड़ाढेदो।
या रवा आन मिले महबूब साड़ड़ा कर्म कीती लाख
हजारियाँवे मै तोरब० ॥

२

बेड़ा तेड़ा पार करांवे माड़ा माँइयाँवे।
गहरोवे नदो वारी थालवे पुराणा सोणा आन पड़ो
मझधारियाँवे ॥

३

तैड़ी आन भाँदोवे मैं तेड़ी माहो वाले यार मैनु।
जङ्ग सियालेदो होर सियालो हम दम दिलवर दिल
वरदानियां मैनु ॥

४

कौन खड़ा दरवाजड़े वेखों सइयों हालनो।
एसी आई ताड़े वेखन कारण अदारङ्गदी
गला मानले ॥

५

अटको ढोलनदे नाल आँखि साड़ी खटकदोवे।
याराँ दुखदे नैनादे निजारे सजन नाल साड़ो
खटकदोवे ॥

सुख राँझेदा शोरो भूलदा भो नाहों आईयां मैं तखत
हजारयों होर भटकदोवे ॥

६

मैं तैनु आँखदोवे सांई मैड़ा वालोवे।
घोल घुमाई जिन्द सदके कीता तेज निजारा में
ताकदो सांई मैड़ा ॥ वा०

सिन्धु—तिताला

धारां वाला तारणाजी पोर मेरा।
देवो मुराद मेड़ो वे मुश्किल करो असान आसरा
रब तेरा ॥

२

मिलजा छैलावे नदानियां तेनु लोतो साड़ो जोरानो
खबराँ।
भला हूंइयाँ रब तेनु आखां दिल मिला आशरो आयोनो

३

भला वेदरदो यारवे।
यारदा को करिए गला शोरो अजब तरहदा रसम
चलावे।

४

वेसोणा तेनु लेवां बलाइयां।
जोवे मेरा मियां हांवे दोस्तवो दुशमन पे माल
शोरो फकोरांदा साया ॥

५

आपियारे मिलजा रहंदिया मुश्ताक चावण तेरे
वेमियाँ।
शोरी मियां रहँदे हर दम बेबांक तेड़े मिलनदा प्यारा ॥

सिन्धु—धीमा तिताला

जादू जादू कहंदे मैं नहीं जानदो।
अपने नैनादे जादू जानदो शोरो मुश्ताक मन
मानदो ॥

२

मैंतो तेड़ो बन्दोहो रहियाँवे भावे तू जान न जान
गुमानोड़ा।
नेहा लगाकर जिन्द तरसेदियाँ इतनो अरज मेरो
मानले गुमानोड़ा।

गले लग नैनू जो तरसांदियां इतनी अरज मेरी
मानले गुमानीड़ा ॥

सिन्धु—तिताला

जानी यारदे आगे धिगाना जोर नहीं चलदानावे ।
सुन गोरी उर मान चावदे मिल रहँदे एक दिन
आपो आन मिल जानावे ॥

२

मैं वारी छोड़ियां मन परचे दियांवे नैनों भला जटो
जोर जोर ।
लेचल उथे जिथे महबूबांदा थाना आदियां शोगा
टप्पेदे गोरीदे शोर ॥

३

जटो मूँ वेखलाजा सानु कदी आनकेरे ।
होर रांझेदो गोरी रही महोब्बत पाकरें ॥

४

यानिजारा जटियांदा जोर निजारा ।
बिन वेखे कल न पड़दी दमदा गुजारा ॥

५

भांदावे महबूब पियारावे आशिक रहंदा तेड़ा
मुश्ताक पाक ।
दिल लगा रहँदा यार नदाना मियां दिल विच
रहदा गोरी महबूबांदा झमका ॥

६

विरहइया यार माहा वेशोनो सजदे मिरजा जानवे ।
लखपरियां मुश्ताक रहँदो मिलननु गोरीदे नाल उस
दाहादा प्यारवे ॥

७

कीकरां हुन नजर नहीं आंदा गुमानीड़ा दिलवर
ढूंढियावे जङ्गल बहार ।
बेलेनु होर गईथी गोरी रांझेने दीठी उसदी बहार ॥

८

थारी वे नैनादे नाल मैंतो ठगियांवे ।
इश्क लगा वारी छुटदा भी नाहीं वेमियां जाहर
कीता इन अखियाँ ॥

नैन मियाँसों ना अटके ।
दीद निजारेदा मेला ठेला गोरी भूल गइयाँ सब खटके ॥

१०

रमझ नजारेदी गमजाँ नजरां वाले तेज तेज ।
वेखन जार थीं दिल भूला भूला जांदा गोरी मैंतो
करदियां परहेज ॥

११

नैना जोड़ीदा चोरीदावे गुमानीड़ा ।
धरम नाहीं भावे मान पर्व्वत दिसदावे गुमानीड़ा
मैंतो मुख न मोड़ीदोचोरी दावे ॥

१२

राज वालम राज रहना माड़े डेरेवे ।
कबकी फिरेंदी वारी बाटड़ो तकंदीं हांवे शोकरङ्गतें
क्या कीती ॥

१३

गलाँ आनके सुनाओरे प्यारेदे मिलनदी ।
रति दरद देहा दरसादियाँ दुखदा हम पामीवे ॥

१४

अनी वेखो सइयों सांवला खड़ाहै बाटमें ।
सोहनी सूरत रसभरी अँखिया सब सखियाँदे बाटमें ॥

१५

प्यारी लागोवो तिहारो अँखियांवो ।
अनियारो कारो कजरारो व्रजमोहन हम लाखियाँवो ॥
कमल कुरङ्ग मीन खञ्जनसे कीलो पलोटत पाखियाँवो ।
हरिदयाल सुर चख प्रतिपालन दाननके प्रण राखियाँ ॥

१६

मेरे मन गड़ो लालन को आन ।
तीखी तकन त्रिभङ्ग चलनकी ऐंड़ो बैंड़ो बान ॥
मोर मुकट अलबेली फेंटो पीताम्बर फहरान ।
हरिदयाल पुरुषोत्तम प्रभुकी सुर मीठी मुसक्यान ॥

१७

मन मोही मोही वेचोरे वालडेने ।

सुरङ्ग पेचा वारी अजव बन्धा मेरा सोणा चीरेदी
अजव वहार तुरेदो अजव वहार ॥

१८
मैड्डी जान सानु आमिलवे।
जोतू तखत हजारेदा सायबावे मियां रखले
गरीवांदा मान सानु ॥

१९
वेमियाँ तैड़ी वेलो जिन्दरदा साईं साईं।
जिथे तू कदम धरो उथे ततो कबकोमें ठाढ़ी ठाढ़ी
तैड़े दरसन मेरा मियाँ लेदी बलाईं॥

२०
मैं तो तैनु चाहदो फिरियाद आड़ीयाँवे।
हो निजारा मेरो जान तैड़ा भला लगदा न भूलदावे॥
नजर गुजरनु तलाकदे मेरे साईयाँ उठकर मिलवे ॥

२१
पतरह लोका सोहै नरम झीनवा।
तन सुकुमार मेरे मनह्रो लुभावे अरे अरे दरस
लालचो भए नैनवा ॥
बोलदा क्यों नहीं वेढोला जागदा क्यों नहीं वेढोला।
तोरा शवद सुनके बेकरार ना आई तैड़े सूरतदी
मैं भईहूं दिवानो मैड़ा मनड़ा तैड़े नाल लोभानो
वेढोला ॥

२२
दिलदी घंडो नहीं खोलदा बे ढोला।
तन बन्दूक मन जामगी चक मक पो के नैन।
ये जोरावर माने नहीं लगे पलीता देन वे ढोला० ॥

२३
भला जाने वाले मैं तो तैड़ी लेऊंगी वलाई सानु दरस
देखाजा।
कबकी मैं ठाढ़ी वारी तकदो तेरे जमालनु मेरा मियाँ
नैनीनू लगरहो गरडी लगाजा ॥

२४
थाँसो लाग्योजी म्हारो मनड़ो बालमराज।
कांई गुन्हारे म्हासों बोलो क्यों न राजिन्दर हंस रहे
कौन काज ॥

२५
मन मोहि लियारे रबवे में कूकदो डोलूं आँगण इथे
सजना विसार नैना नाल।
दिलदी विथा मैं कासे कहूं शोकरङ्ग मानदा नाहीं
वेतो जानदा विहाल आशिकदा जिथे स० ॥

२६
तू मैड़े नेड़े आजा साँवल प्यारा साड़े आंगन फेरा पामो।
तुझ बिना मैंनु चार न भांदा साँवलो सूरत वेखामो
मैड़ा मोहन प्यारा सानु दरस दिखामो तू मैड़े नेड़े० ॥

२७
एरीमैं कैसे करूंरी अरो मेरा मनड़ा साँवलड़ा
लिए जाय।
सोहनी सूरत माधुरी मूरत साड़े दिलमें रहे समाय॥

२८
बाँकड़ाजो म्हारो राज छलड़ा भलड़ा तीखड़ा
नोकड़ा माड़ा गबरू यार।
छदके गईयाँ असी घोलइघतो साँवलेदे रङ्गराती
दे रङ्गारतीनों मति साड़े नाल करदानो प्यार ॥

२९
मेरा गुमानीड़ा कभीतो मुख बेखलामो दरस देखलामो।
एकबार मिले तो मैं लाख लाख वारी मोतोनु गरेहो
लगामो दरसांदे नाल पामो ॥

३०
याद करदो रहंदोवे आड़ानो में तक रहियाँ भूरे वाले
समझनु डरदीवे।
शोरी उठदा दिल बिच विरहदा धुंवा मैं तो मरदीवे॥

३१
फकोराँ आज रम रहणावे फकीरावे मेरा तो थाना
महबूबांदा मियां।
दीद निजारेदा मेला ठेला शोरी तुं भीतो
मायल खुबांदा ॥

३२
घोल घुमादियाँ जांदिया मियाँ हुण मैंतो तारे पीत
झरोखे गुमानो जांदियां।

गल न सुने सुनलदी माने ना मैं तवे महबूब देख साइयाँवे गुमानी ॥

३३

मिलकर जानावे जाना दिलांदी बेपरवाह गरीबां हाँ सोणा ।
एक पियासा साड़े ख्याल शोरी दिल खोणा ॥

३४

जपदियाँ तेरा नाम साइयांवे ।
ताँनिभी देदा वारीवे मानदाभी देदां वे मियाँ पुनु पुनु करके कंकदी आइयाँवे ॥

३५

नैन लगा अब कैसे छूटे तूटत बड़ा दुख देतरी देया गुइँया ।
जब लागे तब लगत न जाने अब लागे दुख देन सनैया ॥

३६

नजारा साँवरेदा जटियांदा यारवे ।
सीख साड़ी मानले समझ साइयां शोरी फेर सदके जादियां ॥

३७

विलोचनियांवे काजो रखणा तूरवे ।
मैंडी तैंडी दोस्ती अल्ला जाने नबीय रसूलवे ॥

३८

मैंकी जानी ताँड़ी गलाँ कीकर पूछा यार माड़ड़े ।
तुझ जेहा मानु और नहीं दिसदा ढूंढ फिरी सब आई थलाँ भलाँवे ॥
मेड़ा यार नहीं मानदा प्यारा मेंड़ड़ी गला मैं कोकराँ ।
आपन आवे वारो ना लिख भेजे वेमियां ढूंढ़ फिरी सब नलाँ तलाँवे ॥

३९

ठाली लँबिया छावो वोहावे मेरी जान ।
वोहवे वोहो चीरे वाले वोहवे तू वोहवे ॥
ना मैं व्याही ना मैं सङ्गी ना मैं ऋँखी दीठा सोबे ठाढ़ी लँबी० ॥

४०

जटी तेड़ा देखणा दुश्मन होया ।
जिन्दा आँख लगी माड़ी जबते महोब्बत तू खुलदा नहीं मैन इश्कदा पेखना ॥

४१

जीथे माड़ा रांझन बसदावे मैं ढूंढ़दी फिरेदी कोई बता देवे ।
चेरी मैं उसदी मियाँ रांझण मिले तो मैं वारियांवे ॥

४२

छड़दे साड़ड़ी बांह मैं तो अपने घर जाँ मिरजा मैं तो डर गइयां हुन ।
वन्दिरवा बिच मत कर भेड़ा वेखन लोग लगा हुन वन्दिया हुनतो जामी हुन साड़ी घर आमी क्यों ॥

४३

मैं तो चाकर चाहदा रहणा राजी कामन मेरा ।
शोरी होश दम मेरा मैं क्यों कर छाँड़, कुछ तेरो दौलत पाकर मैं तो चा० ॥

४४

आसरावे मैनु दमदावे महरम यारदा जीवें तू जम जम ।
शोरी जग बिच तुहो तुमाड़ा रती भूला ॥ म०

४५

जानी कोकरदा मेंड़ा गबरू ।
वेखणानु मुश्ताक तेड़े शोरी रखले सोनी साड़ी अबरू

४६

याद करदो वे याद करदियाँ डावो मैं तक रहियां गुणा गुण बेदरदा वाला ।
शोरी उठदा दिल बिच विरहदा दमामा मैंतो मरदो फरियाद करदो ॥

४७

मानु न छेड़ मियां तेंडी वान पई मेंड़े दिलवर मेंड़े ।
तेड़े इश्क दे कारण बदनामी में लीतो पाक नजर तैनु किन सिखलाइयाँवे आपना आप निवेरवे ॥

४८

लगदा बाग बहार तेड़ा मुखड़ा मैड़ो जानवे ।
मुख गुलाबो नरगिस नैना साँवला यारवे

४९

डार भंवरादो शोणा आई बहार सजनदे मुख वेखननु।
गुल फूले रङ्ग विरङ्ग दे फुलेवे अजब ढङ्गदे फूले दोठो
सोनो वसंत बहार ॥

५०

वे मियाँ मन रखणा राजो जानो वेफकोरांदा ।
भाँदा खूब सोंदा सुख नींद प्यारा दिल बिच बादशा
शोरो शब्द शरोरांदा ॥

५१

फकीरी करणावे राजी रहणा हरदम वदम सोणा ।
भलो बुरो सब सहदे शिर पर इश्क रङ्ग वरदे माल
रङ्ग रङ्गनावे ॥
दिशनो यारवे मियाँ मैंनु शहर पूनेदा भजोयाँ वे मियाँ ।
भलावे मैंकड़दोता गम तेरा दुना देखेड़े बस होरहो
रवादो महरवानियाँवे ताड़ा ॥

५२

आन मिलामो मैड़े सोनेनु वेयार ।
जिस दिन मोजा मैंड़ावे काजा भो हासो मैंड़ा मियां
पकर करां फिरयाद वे मेड़े यार ॥

५३

मैंता मरदो वेयाद करदो सोणा मैं तो बेदरदांदे नाल
डरदो।
शोरो उठदा दिल बिच लहरां इशकदो खेड़ा भरदो ॥

५४

कमला वाले वे मेरावे किन विलमाया हांहां हांवे
लोका ।
जा पूंछोंदो मैं अपने रांझेनु जा आनके मिलामो ॥

५५

मैंनु तेड़ो आन भाँदोवें मैं तेरो माहो वाले यार ।
जंग शियालेदो होरसियानो हमदम दिलवर
दिलवर-दानो यार मैनु तं ॥

५६

पीत लगाकर को सुख पाया हांवे लोकों ।
यार मेरा सो नहीं आया किन दूतां विलमाया हां
वे याना मैं तो भूलो भूलो सोणावे पो० ॥

५७

नए रङ्ग जोरदावे मांड़ा तूं ।
दिल ठग लोता तेज निजारे न दोठोयाँ तूं शोरी यार
मेनु वसे कोता मेंड़ा तूं ।

५८

मैनु प्यारो तुंहो लगदांवे वंशोवाले मेरा यार ।
नन्दमहरदे तुहो हरदम तुहो दिलवर सांवलावे ॥

५९

साड़े नैण मियाँ सोणा अटके ।
दोद निजारेदा मेला ठेला शोरो भूल गइयाँ सब
खटके ॥

६०

ना सतामो तू ना सतामोवे ।
वेदरदा वाले दिलनु वेदरदां मियां चङ्गड़े दिलनुक्रो
दुख लाया वेमियाँ तू भो तो ना सुख पामो
सतामोवे ॥

६१

मैनु तेड़ो याद आंदो वेगवरू सोणा महरदे ।
तुझ विना मैंनु कल नहीं एक पल कृष्णानन्द तुंहो
भाँदोवे ॥

६२

पोत लगाकर शोणा वे मियां ।
हांवे लोकावे यार मेरा शो नहीं आया हांवो लोकां ॥

६३

याना मैंतो भूलो भूलो सोणावे ॥
बिन दोठे चैन न पाँदो सुन मोहनावे ॥

६४

न बतामो तू ना बतामो अपना भेद सुन वंशोवाले ।
किथे गुजारो रैन पियारो भोर भए गर लामो ॥

६५

तेज तेज नजरांवाला करदा रमझ नजारेदो गमझां।
वेख नजारेथों दिल भूला भला जांदा यारी में तो
करदियां परहेज ॥

६६

छांवे नैना जोरोदा जोरोदावे गुमानोड़ा छांवे।
छोर नहीं भावे मन पर बसदावे गुमानोड़ा तुसी
मुखनी मोरदावे ॥

६७

नैना वाले यार मियां तैं तों मेड़ो खबर न लोतो।
कभो तो आन मिलो सोणा दिल भर मैनु दाढा प्यारावे ॥

६८

बेदरदा वे पर वाहनो छाँहाँ सचो आँखो साड़ड़ो बेवन्द।
गिरु गारे नदो वारो वेथेलड़ा पुराणावे मियां केहा
गस्त मिलानो छाँहां ॥

६९

अल्लादी महरबानिया मेड़े ग्रोणिनु वे यार।
जिस दिन मोला मेड़ा काजो भो छासो वे मेरा मियां
मदत पोर जहाँनिया मे॰ ॥

७०

में मोहो मोहो मोहो तेरो चालवे दुपट्टे वाले।
दामन लगो वारो शरम तुसानु ज्यों भामो त्यों
पालवे दुपट्टे ॥
जात न लगो वारोवे सांई तन जाने और क्या जाने
टालवे ॥

७१

चाकर माहो वालोयांदे चाकर रहणावे।
सोहनो सूरत वे रसभरो अंखियां वेचाल चले
मतवालियाँ ॥

७२

जादू जादू करदा मैं नहीं जानदो।
सांवलो सूरत रसभरो अंखियां चाल चले मतवालिया।
मुखड़ा तेड़ा अजब बहारांदा अचपल इश्क महोब्बत
मानदो ॥

७३

धनवारो म्हारो राज वालोरे।
मैंतो थारो दासो वारो थें म्हाड़ा सायबा नेह लगा
प्रतिपालोरे ॥

७४

सजदे ग्रोनो चल फिर करदा दोद निजारा परियांदा
मियां।
ग्रोरो तो इस ग्रोच भाँदा जांदा करदा टप्पेदा नारा ॥

७५

मानु न विसार यार वेमुझ वेनो मानदो कोगुन्हावे।
मैनु छोड़ लागो लड़ तेरा आन असो तू देदा सानु
पोरोदा पना ॥

७६

अँखियां साड़ो खटको अटका ढोलन यार दुख देन
नाल सजन नाल साड़ो खटको।
मुख राँझनदा ग्रोरो भूनदा नाहीं छवदा नाहीं
आइयां में तखत हजारेदा छोर भटको ॥

सिन्धु काफी—तिताला

अलवेलेड़ावे केसर भिन्नानो मैं जादियाँ श्याम
मनावनन्।
गड़दे मोणारा सोणिदा कंगणा मान करेनो ग्रावनान ॥

सिन्धु—तिताला

ला मेरे बनरे रङ्ग घना मातियांदो माला लाइयो।
कँगना लाइयो वारो बाजुबन्द लाईयो नथुनो लाइयो
अनमोलनो ॥

२

चोरे वाला माँड़ा गबरू दस्त कटोरा दहोडार।
याड़ा वे ये मनावन चलियां आधो रातो रावोदे किनारे ॥

३

साड़े नाल करदो तूतो रमझां गमजां।
कई कोतो साड़े नाल समझां तूतो साड़ा करदो
ग्रोनो रमझां गमजां ॥

४

नैना सांवलियांदे जोर जोर लगदे लरजे गरजे
गम खांदे।

ग्रोरी फकीरांदी वे यह गुजरांदी वेमियां आशरम
मत तुम रम रहोरे ॥

५

ढोलन मिलजा मैनु आई मैं तेड़ी लेवाँ बलाई।
कबकी मैं बाटड़ी तकेंदी मेंड़ो लाज शरम रखले
जग माँई ॥

६

यारवे की गुन्हा कीता तेड़ा साँवला न भुलामी।
हमसे अवधबद अनत विलम रहंदा किसनु गर लामी॥

सिन्धु—धीमा तिताला

मजारा झँगदा कर देवे परियाँ जिहियाँ जटियाँ
नाल नेहा जड़दे।
चन्द्र जेहो अखी भलिटाँ दिल बिच बसेदियां
इश्कदे लहरें विच तरदे ॥

सिन्धु—तिताला

काली बोलो काली बोलो काली बोलो काली।
तुही सुख आनन्द तुही सुख सम्पति भक्त जननु
प्रति-पाली बोलो काली काली ॥

सिन्धु काफी—तिताला

हो फकीराँ विरम रहना वेदाँ फकीराँ वे मेरेतो थाना
महबूबांदा।
दीद निजारेदा मेला ठेला ग्रोरी तुंभी तो मायल
खुवाँदा ॥

सिन्धु—तिताला

विरहोदे नैना मियांवे नहीं छुटदे।
बिन दीठे मैनु चैन नहीं आँदा ग्रोरीजि वेखींते मुठड़े॥

२

मैं तैनु आँखदी ग्रोणा मेड़ा वालीवे।
घोल घुमाई जिन्द सदके कीती ग्रोरी तेज निजारा
ताकदी ग्रोणा मेड़ा वाली ॥

३

आसरा मैनु दमदा महरम यार जीवे जम जम यार।
ग्रोरी जग बिच यार असाड़रा रती भूलाया न गमदा॥

ग्रोनिजारा नैनादा साँई गरे लगजा पियारा मेड़ड़ीदा
जानिया।
अखीनु दिल भर तुसाड़ड़ा उनाको नहीं होना गुजारा॥

५

सोने मैनु हांहां बिन दीठे नहीं परदी कलवे।
रसीयानु कोई आन मिलावे गोई मुश्कलवो अगर
न गोई मुश्किल ॥

६

बना बराइन आया सलोना।
सारी रैनका आज राता माता जागा सारी रैन ॥

७

चक्खाँ यारांदा तेनु आन पया बिन मिले न रहँदी
मेंड़ी जान।
सची कहना सुखी रहना ग्रोरी दिल भला अपने
बस कीना जा० ॥

८

भलावि तू जानन जान गुमानीड़ा मैं तो तेड़ी वन्दिया
हो रहियां।
गर लगण नू जो तरसदे ग्रोरो इतो अरज मोरी
मानले गुमानीड़ा ॥

९

भला वेदरदो यारवे करदा क्यों दिलभर असाड़रे नाल।
यारदाको करिए गलाँ ग्रोरी अजब तरेदा रशम चला॥

१०

संवलके पैर धरीवे लैली सहरा मजनूदा।
लैली दिलदा मायल होणा ग्रोरी मियां सुन मजनु
नाम जिन होटाँ ॥

११

आजा छाली राज राजी रहणा माइडे डेरेवो।
मैं तो तैनु दवाइयाँ देदी वागी जादी सौ सौ फेरीवे ॥

१२

मेड़ा दुख दरद वे दूर करीवे मेड़े साँई।
असी तेरी वो लेवाँ बलाई अदारू सबनु भाड़ वेखा
कोई नहीं तुसाड़ड़ी दाई ॥

१३

निजारा जटियांदा यारवे सजन समझो समझा
दिलवर दिलनु ।
तूं तो साड़े नाल करदावे रमझां केहो कीती साड़े
नाल न समझा दि० ॥

१४

अनी सइयों मान करेदा लटकेदड़ा झम झम
झमके वाला ।
ऐड़ो बेंड़ो जुलफों वाला चोरा जरद सुनेहरी गज
मोतियांदी माला ॥

१५

मान न करिये रबडाढ़े कौलों डरिये छैला ।
दिवानी झोखां तेड़ी वे राँझा क्यों सोनेदा छल्ला
क्या रूपेदा छल्लो वेछैला ॥

१६

लेचल नाल वोमियाँ राँझा मेनु हाँवे मियाँ दुख गए
सुख माँझावे ।
माड़ड़ी खबर विलोचनादे माड़डे बेखबर मियांवे ॥

१७

उठ चढ़ी वारी वेख्यां वेसोदागर ।
इंदर जेहो होरे पुन जेहेथो ला मांड़ड़ी खबर ॥

१८

मौजा वाले मियाँ मेनु लहराँ तेरी भांदो याद
जब जाँदा दिल भूला भूला ।
मैं तो तेनु आखर होरती ठम मियाँ मिरजा मुगला ।
दाम महेरमनो सुनोदे बुरो ए बला इश्कदावे आखर
गुल खिला मियाँ पर खोला ॥

सिन्धु टप्पा—तिताला

ओकारेनो सइयों घूंघरवारे बाल सजनदे बिसीयर
कालेनो सइयों ।
आशिकदा दिल लड़कर करेंदे घाले मालेनी सइयों ॥
घुड़रदो कोई नहीं गुददो उमगवे कारे मतवारे
अति भारेनो सइयों ॥

सिन्धु—तिताला

अहो सनम महरम यार मैंको जानु तेरो गलाँ ।
दूर गएनु साँई मिलावे आन मिलो तो मैं चलौं भला ॥

२

आँगन फेरा पाजावे साँवल यार ।
जङ्गल ढूंढ़ा वारो वेला भी ढूंढ़ा तूं कित विलम
रहोला यार ॥

३

यार सानु आमिलोवे मैंतो तांड़ड़ो लेवाँ बलाइयाँ ।
दूर गयानो वारो बेखबर न लोतो वेमियां बिन
दोठोयाँ दुख बादियाँ ॥

४

बसदी रहँदो दिलवर नाल लाई महमत हित चित
सों मियां ।
दिलदो गला मैं किसनु करां तेरो वेवफाईका ।
जहाँ मैं नाम न ले तेरो आशिनाईका ॥

५

अरज मिजाजोड़ा मानले मेरो चोरा बांधनुदा
वन्ध लामोवे बोवांवे ।
गले सोहै जामदानोदा बूटा मुख सोहे तांड़े
पानोदा बोराबे ॥

६

आइयांवे सोनेदो में ढूंढ़दी ढूंढ़दी ।
कांई करे तांझमें दिलभर दिलनुँ आँख लगो मेनु
छिपदो छिपदो ॥

७

लगियाँ जवाब न देदियांवे ।
तोखोयांदो तबलाँदो को राँझि जिगरांदो घाव
करां दियांवे ॥
नेना मत मारबे मैं आपो मरजादियांवे ।
नेना तुसाड़े वेबरछोदो नोके गुजर जांदो आर पारवे ॥

८

माहोदे नाल चलेस्यां पुनदे नाल चलेस्यां ।

मोरी भोली वारी वेखेद्यो वाली अलड़ो भलड़ो साँई
माहोदे दस्त रङ्गेस्यां वेपुनदे दस्त रङ्गेस्यां ॥
तेड़े जिन्द आहो माँड़े कोकराँवे वेलियां ॥

९

रहँदी याद मियांवे बेपरवाहोदी तैंदडोवे ।
ग्रोरी आपनु करदा वेख मियां बरबाद मियांवे ॥

१०

सुन आई बहार सजनदे मुख वेखननु माहोड़ा
बेडार भंवरादी ।
फूल फूले रङ्ग बेरङ्गदे फूले बेढङ्ग देंदीठो सोनो
बसंत सब रांदी ॥

सिन्धु—एकताला

नाकर फेरामैं बन्दीदा कौन सभालन वाला
यार गुमानी यारवे नाजा ।
यार ग्रोरी कोई टप्पा गाय कर दिल बहलाय जा ॥

२

झमका नाज निजारेदा भांदा नैन मिलाकर क्यों
शरमांदा ।
ख्याल खुशाल भरे दिल जानी क्यों नहीं नाल हमारे
आंदा ॥

३

नन्दमहर घर आज बधाई ।
प्रगटे गोकुलचन्द मनोहर शोभा कान्त सकल-
जग छाई ॥
नाचत गोपी-ग्वाल सकल मिल गावत मङ्गल मोद
बढ़ाई ।
पाए फल जीवनके सब व्रजजन ख्याल खुशाल प्रभु
लछन लखाई ॥

४

किन मुख अबीर गुलाल लगाए ।
रङ्ग डारे केशर रङ्ग प्यारे मनसिज उमग उमग
उर लाए ॥
बातें सकल प्रेमकी कह कह कहोजी कहाँ रैन जगाए ।
ख्याल खुशाल सभी सिखलाए चञ्चल चपल छैल
मन भाए ॥

होरी खेले ब्रज गोरीयांवो ।
सङ्ग लिए नन्दराय लाड़लो प्रेमरङ्गमें बोरियांवो ।
कोई गावत कोई रीझ रिझावत कोई चतुर कोई
भोरियांवो ॥
झुम झुम तक तक तान चलावत हँसत परस्पर चित
चोरियाँवो ।
करत खुशाल श्याम सुन्दरमें पावो प्रेमको डोरियाँवो ॥

६

पतित पावन सालिगराम ।
ठाकुर नाम कहावत त्रिभुवन सुन्दर-मूरत-श्याम ॥
धोइ पीवत चरणामृत जे नर नरक न गति अभिराम ।
लछनदास कल्पतरु कलिमें देत अभय-पद-धाम ॥

७

रामकृष्ण वासुदेव दामोदर दीनवन्धु दयासिन्धु
करुणानिधि मोहन वनवारी ।
मधुसूदन मुरलीधर माधव जगजीवन प्रभु कमल-
नैन राधापति गोविन्द गिरिधारी ॥
अच्युत गोपाल कान्ह चिन्तामणि चक्रपाणि विट्ठल
भगवन्त विष्णु केशव कंसारी ।
नारायण पद्मनाभ हृषिकेश परमेश्वर गरुड़ध्वज हरि-
मुकुन्द सुखकारी ॥
गोपीवल्लभ मुरारि त्रिकम भगवान भक्त-वत्सल
कल्याण कुँवर श्याम ब्रजविहारी ।
गोकुलेश चैनराय पुरुषोत्तम यज्ञ पुरुष नित्यानन्द
जगत-गुरु जनार्दन दनुजारि ॥
राघव रघुवीर रङ्गनाथ प्राणनाथ स्वामी श्रीपति
रघुनाथ योग ध्यान रावणारि ।
जानकीश कौशलेन्द्र मनरञ्जन यादवेन्द्र नटनागर
नन्दलाल यदुपति असुरारि ॥
विश्वम्भर धरणीधर परमानन्दजी उपेन्द्र ब्रजपति
रघुनन्दन रणछोर दैत्यारि ।
रघुवर जगदीश पुण्डरीक अच्च कमलापति बनमालि
जगतपति किशोर दानवारि ॥

निर्गुण चैतन्य ब्रह्म अव्यक्त अज निरञ्जन विभुव्यापक
ब्रह्मण्य ज्योति अविगति अविकारी।
पारब्रह्म नित्यानन्द निर्विकार विश्वरूप ईश्वर
अविनाशी वैकुण्ठ विश्वकारी॥
मच्छ कच्छ शूकर नरसिंह वामन परशुराम धनुर्धर
बलिराम विबुध यज्ञ विटोडारी।
कल्की मनु व्यास हंस यज्ञ ऋषभ हय ग्रीव बद्रीपति
कपिलदत्त सनकादिक चारी॥
प्रथु अनन्त धन्वन्तरि दुष्टदलन जानराय गुप्त प्रगट
चतुर्विंश लीलावतारी।
नामावली सुखविलास लक्षन दामानुदास अज्ञ-
अल्प-बुद्धि चरण शरण परि पुकारी॥

८

बड़ी बड़ी अँखीयन वारी माँगि लग्यो अति प्यारी।
टीरघ कोरि हेरत मोरि ता बिच अञ्जन कारी॥
बिसरै कंजल जात जात दुरी डोरे अरुण रङ्गजारी।
लच्मणदास कठिन वाकी चितवनी मानो ढरकत
पारी॥

९

द्रगण लागो आज मेरे साँवरो सलोनी सुन्दर मूरत
बांकी चितवन प्यारी।
चमक चलनि चञ्चल चपल मोर मुसकन पिय
प्यारेकी न्यारी॥
थिर न रहत तन मन धन घरी पल छिन आलीही
बस कीनो लाल विहारी।
लच्मणदास तलफ तलफ नहीं बिसरत कठिन
पीर कारी॥

१०

हरिजनके चरणकी जो करे बन्दगी।
जगत-ज्वाल प्रबल-जाल तपत उर कराल काल,कोह,
मोह, भ्रम, विषाद, कटे गंदगी॥
मत्सर, जञ्जाल, आल बाल, सघन घेर रहे काटत
नहीं बार काम छलित छन्दगी।
सजन अनुकूल मूल अङ्कुश भए हरि प्रसूल राज त्याग
जावे घट फैल फन्दगी॥
भक्तनको खास दास करत रहत सुखविलास जमकी
नहीं त्रास बास घटे मन्दगी।
लच्मणदास तोहिसे ल्यावे विश्वास आश भक्त मुक्त
पावे आवे अमन्दगी॥

११

बेसर कौनकी अति नीकी।
छोड़ परी लल्लना औ लाले चोंप बढ़ी अति जीकी॥
दाँव बदो ललिताके आगे कौन ललित कौन फीकी।
चतुर विहारी बिलगि जिन मानो धारनी
अधिक ललाकी॥

१२

वे कहा जाने पीर पराई।
सुन्दर-श्याम कमल-दल-लोचन हरि हलधरके भाई॥
मुख मुरली शिर मोर-पखावा बन बन धेनु चराई।
जे जमुना जल रङ्ग रङ्गहै अजहु गई तकराई॥
वे भूलेहैं देखि कूबरी हम सब गईं भुलाई।
सूरज चातक बूंद भईहैं हेरत रहे हेराई॥

सिन्ध काफी—तिताला

भूनदे फकीरांदे दानेनी तुसी।
दाने असाड़े भूनन देंदो असांयां फकीर निमानेनी॥
दानानो लेंदो तू फकांगी लेंदो लड़दिए जोर
धिगानेनी।
माह हुसैन फकीर खांदा जङ्गल तंबु तेनेनी॥

२

तनदिरना दोमननुम् ननम् या तरानो तुमने खूब
बनाया नादरना दर और अन्तर सुन्दर धरमधुर
बनाया पर सुन आके कहियो सनम्।
मौज नेहचे रख मनमें दरजमे हिजर मकुनना
हो फरियाद केदो सजदा आम् फालके फरियादरसे
में आयद जब आवे तेतू यहां गाना हो होके बेगम्॥

सिन्धु अर्थ सहित—तिताला

तन अन्दर तन मन्दिरमें रख ज्ञान ध्यान धर आहे
आहे जानो मन दर तन धररे देना नादर दर नारे
नारे आ जिन जिन तन तेतुं नारे नाता तोर तोर
रर हर हर हर हर ।
नारे नारे नारे नारे तारे तारे तारे तूरें झूंठे नर
धधा धारे ॥
तनदर तनदररे देनारे झूंठे धंधे धारे धारे मिथ्या
जग-जंजारे तज डारे मतवारे नर नारायण नित नित
रर रर नरहर गिरिवर ध्यान अन्दरमें ज्ञान धर धर ॥

२

वंशो वारेने टेरो यमुना तीरवे ।
सप्तसुरन बिध तीन तान लेत गंभीरवे ॥
सुन धुन विकल भई ब्रजवनिता सुध न रहीहै शरीरवे
रूप रङ्ग प्रभु रस वस कर लीनी मुरली बजाई सखी
बलवीरवे ॥

३

कैसे बनेगो यह ब्रजको बसवो ।
सुन्दर-श्याम नाम नन्दनन्दन रोकत मग नहीं देत
निकसवो ॥
भुज भर भरत ना डरत काहूसों मेरो मरन
लोगनको हँसवो ।
जानकीदास हार याते मानो सीखे श्याम उर द्रग
मन धंसवो ॥

सिन्धु—एकताला

कैसेके बनेगो भरवो पनियाको ।
भरन न देत लेत गहे गागर रहोन कौन काँधे
कनियाँ को ॥
बाट घाट मग रोकत डोरे ऐसो ढोट नन्द रनियाँको।
युगल सखी प्रभु माधुरी मूरत में न आवत अनियाँको।

२

रघुनाथदे चरणदा नेह लगा साड़ावे ।
तैनु करुणानिध कहेंदे नाम जपदा तेंडावे ॥
आठ पहर तेड़े याद बिच रहंदे प्रेम रङ्गदी लाज रखीवे
मानु भरोसा एक शरणदावे ॥

३

नहीं करणावे दुनियाँदी आशा ।
दुनियाँदी आशा ओसका पानी पिया चाहे सो जाए
पियासा ॥
जानकीदास आश कर उसको जिसकी माया जगत-
प्रकाशा ॥

४

गुण औगुण मेरो तुम न निहारो ।
दीनदयाल लालदशरथके पतितपावनहै विरद तिहारो ॥
गीध व्याध गज गणिका तारी गौतम-नारी अजामिल
तारो ।
आए शरण चरण यह यश सुन जानकीदास अधीन
तुमारो ॥

५

चोट बुरीवे नैनादी यारवे ।
जिस तन लगी सोई तन जाने हरदम आय पुकारवे ॥
बिन वेखे सानु कल नहीं पड़दी पल पल जीवदा
बेकरारवे ।
जानकीदास निमानेनु रखले दे सांवल अपनी
दीदारवे ॥

६

आज बधाईयाँ माई अवध नगरमें ।
राणी कौशल्या सुत जायो मङ्गलचार होत घर घरमें ॥
अतिआनन्द भई पुरवनिता कञ्चन-थार रोचन
लिए करमें ।
जानकीदासको आश भई पूरी गावत आवत डगर
डगरमें ॥

७

द्रगनमें लाग गयो मोरे सांवरे ।
सलूनी सुन्दर मूरत बांको चितवनि तिरछी नैन वारे॥
लछनदास तलफ तलफ नहीं बिछुरत घड़ी पल
छिन प्यारे ॥

लाग्यो मन विपिन-विलासी सों ।
मृदु मुसक्यात जात कुञ्जनमें डारि नेह डोर गल फाँसीसों ॥
सुन्दर-श्याम मोहनी मूरत कहियतहै गोकुल-बासीसों ।
जानकीदास रसिक ब्रजमोहन कीनो बिना मोलकी दासीसों ॥

९

नमोस्तुते वृषभानु दुलारी ।
महिमा अगम निगम क्या बरनै अखिल लोक एक ब्रह्म मुरारि ॥
अतिउदार त्रिभुवनके दाता मोहनी मूरत रसिक-अपारी ।
ख्याल खुशाल सकल बन आए नाम नेत श्रीराधा-प्यारी ॥

१०

जै श्रीराधा प्राण पियारी ।
राजा महाराज त्रिभुवनकेहो बृन्दावन कुञ्ज-विहारी ॥
सेवक पर नित प्रसन्न रहतहो देत सिद्ध नौनिद्ध अपारी ।
ख्याल खुशाल निधान ज्ञानके ध्यानी ध्यान भगत उपकारी ॥

११

अनोखे छैला इश्क लगा तैड़े नाल ।
नैनन भरी मोहनी मोहन दिठीयानी ख्याल खुशाल ॥

१२

हठ नहीं कीजे मान लीजेनी हठीली प्यारी ॥
वचन अधीन मदनमोहन पिया यह अयणन सुन लीजे पिया प्यारी ॥

१३

अति सुकुमारी मिल मोहन सुख दीजे ।
मिलो खुशाल श्याम तन भावन अधर-सुधारस लीजे ।

१४

मोररी चहुँ ओर बोलन लागे ।
काली घटा दामिनी दमकावत तैसोय पवन झकोरे ॥
पिया कहत पपीहा कोयल कूकत है बरजोर ।
उलहे गुण चित प्रेम प्रीतके निरखन नन्दकिशोर ॥

१५

नेह कामनु लग रहा चसका कब होहै मेरा यार बसका ।
ख्याल खुशाल भरे नैननमें देखनकों सोणा सोलह बरसका ॥

१६

नेह कियातो तू जानोनो वाले ।
नैन मिलाकर सीने लगाले ॥
ख्याल खु शाल दिखावनी माने वंशी बजाकर जीव जिवाले ॥

१७

देख नजर भरवो मेरे प्यारे ।
घायलहै तेरे नैनाके मारे ॥
लाग रहो गले हमारे दिलवर ख्याल खुशालोंसे होना जुदारे ॥

१८

जपदियाँ तेरा नाम साईंयाँवे ।
ताने भी देंदा वारीवे झड़केभी देंदा वेमियाँ पुन पुन करदे मुखदो आइयाँवे ॥

१९

नजारा जटियाँदा यारवे ।
सोख तांड़ो मानले समझ साइयाँ शोरो फिर मकदे मेरे यारवे ।

२०

मियाँ तैनु किन सिखलाइयाँ विरहदी चोरा चोरो ।
गलांवे मियाँ चोरो चारो आंदा छिप छिप जांदा मानदा नाहीं गलां शोरो ॥

२१

छैला जोर जोर करदा माँड़े नाल दिलवरियाँ दिलवर साड़रे नालवे ।
हम दमकर दिलवर कोई किसीदा किस दीवे ॥

२२

झम झम झमके वालानी मान करेंदा लटकेंदड़ा ।
ऐंड़ी बेंड़ी जुलफें घूंघरवाला चीरा जरीदा
सोनहरी गल मोतियाँदो माला लटकेंदड़ा ॥

२३

इश्क लगाकर मारणा आशिकनु कोजनु अपना
जानके ।
तीखी अदा तानुवे किन सिखलाइयाँ शोरीन योंही
जीवे कर डारनी ॥

सिन्धु—धीमा तिताला

यार अज्ञाविमें तेरियाँ तेरी माड़े सायवांवे ।
पार पुनदेवे डेरेनु आयादे मियां सकरवा ठानीमें
तेरी तेरीवां० ॥

२

प्यारेनु जी चाँदावे हाँजी दिलदा महरमनु ही अल्ला ।
एसा गम खाना शोरी तुहीं वेहरदम करिए
नई नई चाह ॥

३

मांरे राझणनु इश्कदी बान पई विच झेले कोई
ल्यावोनी ।
हीर निमानीदा साँवला सजन मैनु आन मिलावोनी ॥

४

रङ्गीली सेजां मचल रह्योजो म्हारो राज ।
तू म्हारे डेरे आइलो साहबां जोवन भरीलो
साहबा राज ॥

५

आइयो बलमराज माड़े डेरेवे ।
मैतो ैनु देदो दुहाइयां वारो जांदे सौसौ फेरे रहना
मांड़े डेरेवे ॥

६

गगरी मोरी काङ्क फोर डारीरे ।
रसिया छैल छवीलो नन्दकोहै यह बड़ झगरारीरे ॥

सिन्धु—तिताला

विजली चमको देखरी यह पीरकी ।
छाई घटा नैननमें नामदार बरस रही थम थमके ॥

२

नाहक जी तरसाया अनी मेरावो ।
आपन आवे वारो वे ना लिख भेजें मियाँ सांवली
सूरत देखलाजा अनी मेरावो ॥

३

बदनामी कजरा ना देहोंरे ।
ए कजरा मेरे मइकैसे आया जल जल मरे गुइयाँ
ननद जेठानीरे ॥

४

तैंड़ी याद लगीरे मैंड़ा प्यारा रैनका ।
मैं क्यों कर मन समझाँऊं आवे सइयाँ गलेलगजा ॥

५

मेरा रावलावो मैं तो माहींदो कारण लुटियाँ ।
जावोनी कोई मुड़ ले आवो हीर निमानीदा छुटियाँ ॥

६

हीरेनु कोई आनके मिलामो लोकाँ ।
यारवा कोईवो आनके मिलावे मेरा मियाँ हीर
राँझेदा गुमानी रङ्गभीना लोकाँ ॥

७

बना तेरा सेहरा गुंध गुंध ल्याई सेहरा गुंध ल्याईरे ।
हाथन मैंहदी पायन मेंहदी मेंहदी रङ्ग लायोरे ॥

८

खटका रहंदा दिलनु यार जब लग नहीं मिलदा
मेरा प्यारा ।
इश्क महोब्बत नाल उमगजा जुलफों नाल अटका
रहदा मेरा प्यारा ॥

९

दारुड़ोवो पीव न अपनाहो मारुड़ा नाई झकलाई
छुपछे ।
सङ्ग मधको भरा चङ्गड़ा सौतन राते माते कछियो
करछे आज लालन घरवे रूड़ाछे ॥

१०

नजारांदा ढोल फन्द नैनादी ।
एक चंदा दूजी गरजो नैना आन पड़ी बस तेरी ॥

११

याद लग रहंदो माँड़ी रखदो कदम ।

बांक बरस कहे कोई नहों दीना कासों करू'
फ़िरियाद कौन सेदेंदा माड़ी दाद ॥

१२

साँईदी आशा वोसुन रहना नरको शरण सुन क्या
मन गहना ।

बांक बरस कहे मुझे राम वे दुनियाँदा रोगसे कछु
नहों सहना ॥

१३

साँइयाँ तू माड़रे बेलीवो ।

आरत जोबन रात माते महबूबां पोराँदे सदारङ्ग
औरफिरांदियाँ नवेलियांवे ॥

सिन्धु काफ़ी—तिताला

लोटत आङ्गनमें लला मचले नन्दजीके पारब्रह्म
रज अङ्ग भरे ।

इन्दु, विन्दु, छवि देख महाप्रभु मांगत महरिसों
अरुण अरे ॥

ग्वाल बाल सब आनि खिलौना आपन आपन
आन धरे ।

लेत नहीं माँगत शशि तारे सुनत रोष जिय डरन डरे॥

चूम चाट उर लेत यशोदा थिर न रहत प्रभु गोद परे ।

लोटियन करत लटूरियाँ लटकत लपट झपट
हरि होत खरे ॥

रोय रोय हंस देत छिनक छिन लोग गोकुलके
मुदित भरे ।

सूरदास बलिजात यशोमति आय जोगिया शिर
चन्दधरे ॥

२

बारी बारी जावाँ असी प्यारेनु मनावाँ ।
हाँहाँ हाँ हाँ वा ।

बेसर जेहर पायल बिछुवा अतर गुलाब बहावां ॥

३

दुखके फन्द परोगे मत करो काहू सङ्ग प्रीत ।

कमलके भीतर भँवर मुदानो चार जाम गई बीत ॥

जीव दियोपै पातन काढ्यो बुरी प्रीतकी रीत ।

सोषादासो विलासी सांवरो कब मिलहो मोहन मीत ॥

४

अलबेलड़ावे केसर भीनानी मैं जादियां
शाम मनावणनु ।

गड़दे सोनीड़ा सोनेदा गजरा मोल करे नोशावना ॥

५

नैन माहींदे तारनें वो भला सानु मारणे ।

की करो कोथे जावों जातो मेरी सइयों किस विध
कहर गुजारने ॥

६

झिड़ाती नेड़ावे कमलीदे नाल ।

राह चलेंदे तैंनु देदे दवाइयाँ सुखानो वसे तेंड़ा खेंड़ा
मैंड़ा वो तू बूझवे बेहाल ॥

७

लाज सनेह पड़ो झगड़ोरी ।

लाज कहै यह नेह कहा है नेह कहे यह
लाज जरोरी ॥

झगरत झगरत सब निश बीती निपट्यो नहीं आयो
फजरोरी ।

चन्द्रसखी यह लाज बाट है आखर नेह बड़ो गरोरी ॥

८

वंशी बजाय दृग सैन चलाय नन्दलाला जान ठगोवे ।

बिन बेधे सानु कल नहीं पइदो जानकीदास हरि
प्रेम पगोवे ॥

९

पयावे साड़े दिलांदा एहो सुभाव ।

और रूप जग बिच नहीं भाँवदा रामरूप वेखणदा
चाव ॥

लागी लगन छूटे नहीं सजनी करो कोई कोटि उपाव।

जानकीदास घनश्याम मिलनदी यह तन रहोके जाय॥

१०

मन लागोजी श्यामा-श्याम विलासीसों ।

भोर भए निशि बीत गई सब रविकरकिरण प्रकाशी॥

पँछी जागी बोलन लागी दरसन भए अविनाशीसों।
युगल छवीले छवि पर बल गई चन्द सखीसी दासीसों॥

११

घूंघटको पट खोलरे तोकों राम मिलेगो।
सब घट रमता राम रमैया कटुक वचन मत बोलरे॥
धन जोवनको गर्व न कीजे भूंठा पचरङ्ग चोलरे।
सूना मन्दिरमें दीपक बालले आशाकों मत डोलरे॥
जोग जुगत सुरङ्ग महल पिया पायो अनमोलरे।
कहै कबीर आनन्द भएहैं बाजत अनहद ढोलरे॥

१२

तोरे मुख पर नागण उरझ रही सुरझायजा वे
महरम यार।
उरझत सुरझत गोकुल नगरी इन नैननमें लाजरे म०॥

१३

मनमोहना मेरो मन हर लीनोरे मन हरलीनों मेरो
चित हर लीनो।
आपतो जाय कदम चढ़ बैठे वसन हरे सब
तेरे भईहों आधीनो॥

सिन्धु काफ़ी रेख़ता—तिताला

मनमोहनका मुख देखतही मेरे नयनमें छवि छायरही।
तन छीण भयो मत हीन भई मन हेरत आप हिराय
रही॥
अब सोच किये कहा होत सखी जब प्रेम फन्दे
बिच आय रही।
मुखसे अचरा जब दूर कियो जब जोतमें जोत
समाय रही॥

सिन्धु काफ़ी—तिताला

कृष्ण कथा रसरे मधुर बहु।
सेवी लाघी सेवीतो राजन परी कहींही न मरे॥
जा यार सयानें संसारत्वनो पाई चोखा निसरे।
अमृत फलसे फलित भइली दैहिक ताप सरे॥

२

दीजे दान गोपी करत श्याम झगरारी।
या मारग नित आवो जावो बेचनकों दहियारी॥
दान हमारो देतन ग्वालिन जात चलीकर चोरी।
कैसो दान होतहै दधिको काननहू न सुनोरी॥
दान दिये बिन जान न पैहो नन्दराइको छोरी।
काहेकों रार बढ़ावत ग्वालिन जोवनको मदजोरी॥
तुमतो ढोटा नन्दरायको हम वृषभानुकिशोरी।
सूधी गैल चलोजा लाल मतकर बतिया भोरी॥
या व्रजमें बसत रहत बावरी एसे जान कहोरी।
देउ चुकाय अभी सब दिनकी चाहत बास बसोरी॥
छोटे गात बात बड़ी बोला बहोत करो जिन थोरी।
जोकहुं कंसराय सुन पावै जान परे बरजोरी॥
ग्वालिन गारि सभारिन बोले डारं मटकी फोरी।
वरुण कुबेर इन्द्र जाय डरपे कंस बापरो कोरी॥
यह सुनि सकुच ग्वालिनी सनमुख ले माखन कर-जोरी।
सुन्दर-श्याम विहंस कर लीनो बाँध प्रेमकी डोरी॥
यह जो चरित सुनै और सुमरै ताको भाग बड़ोरी।
कृष्णरङ्ग दधिलीला गावै ले सुख सिन्धु हलोरी॥

३

लगी श्याम-तन धूर सुहावन।
मानहुं बह्यो जमुन-जल ऊपर सुभग सलिल
सुरसरी जगपावन।
मचलि परे नृपके गोदीते झपट जसुमत हँसि
लगीहै उठावन॥
मानत नाहीं तबहुं कनियाँतें धरणी लोट पग
ठुमकी बजावन।
उड़गन चन्द्र मागत बरीआइ देहो जननी मोहि
आन खिलावन॥
मणि खँभन प्रतिविम्ब लखावत तबहों बन्धुचारो
उठ धावन।
हरिप्रसाद उर बसहु राम-पद अरुण-कमल अघ आघ
नसावन॥

४

को जानै मिलना कब होहो।
यातैं हिलमिल हरि भज लीजे कीजे गरभ गुमान
न कोई॥

नरतन पाइ विचारहुरे मन कृष्णानन्द सिखावत
जोई ॥

५

आलीरी अति राजत अलकें।
मैं सुक मृदुल मनोरथ मुखपर गोपद-रज छबीली
छवि छलकें ॥
लटकन लटक रहे अधरन पर ताकी छिलन छिए
बिच हलकें ।
जुगल सखी ऐसे प्रभुहो मिलनकी निशदिन
रहत छिए बिच ललकें ॥
अतिशय क्रान्त कनक कुण्डलकी लगी लगी लोल
कपोलन झलकें ।
देखत बनत बरण नहीं आवत तन मन हरत
परत नहीं पलकें ॥

६

जावाँदेरा इस साँवरेसों कौन बोले ।
हमरी ओरसे औरको हमसे झूंठी बात लगावत डोले।
प्रीतकी रीत कछुअ न जानो छाछ बराबर माखन
तोले ॥
और सखियनसों हँस हँस बोले कपटी कपटकी
गाँठ न खोले ।
सूरश्याम राधे मुख मोरे मत भूले कहुं गुजरभोले ॥

७

गोपाल पियारे तेंने भलावे कियारे ।
खड़ीवो पियासो तेंडा अखड़ीयां न जोव जिवावन
दरस दियारे ॥
उमरदराज, गरीबांदी दोस्ती है दिल महरम
सबाब लियारे ।
आनन्दघन ब्रजजीवन जानी कुरबानी मुख वेख
जियारे ॥

८

सुन एरी सखी आज विलम रहे कहुं कान्हा ।
हमकों कहत तुम पलँग बिछावो उनको बात
हम माना ॥
आवन दे पिया अपनो बार कहुं नित उठ ठग ठग
जाना ।
सोलह सिङ्गार बत्तीसो आभरण अङ्ग सजे मन ताना ॥
हंसत खेलत ब्रजकी सखियनसों अरी बतो करिहै
बहाना ।
सुन्दर-श्याम कमल-दल-लोचन नन्दमहरजूको
छोंना ॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहत कुण्डल झलकत काना ।
साँवरे मुखपर तिलक विराजे जामो लग्यो मेरो प्राना ॥
वंशी बजावत गावत नाके माहे हमारे प्राणा ।
सूरदास स्वामी तेरे दरसको चरण-कमल लगो
ध्याना ॥

९

मेरा मेरावे गोरीदा जानीवे ।
पलकांदे नाल बहारो गलियाँ सेज राझणदी ।
मैं बिछाऊं कलियां ।
नेह लगाकर ढ़ढ़ो मैं गलियां वे आवेगा साजन
माँड़े रङ्ग रलियां वेखो सइयोंना गोरीदा जा० ॥

१०

ठगो ठगो मन मेरो जियरा ।
रात देहा मानुवे ध्यान तुसाड़ावे टुक सुखड़ा
वेख लायजा हियरा ॥

११

बोल सुनाय जावे सइयाँ सानु भांदे भांदे ।
सहर पुन बीच वेलाभो भांदे सुन शोरो शरमादे जांदे ॥

१२

माड़ो जिन्दनीनु कल नाहीं पेंदी तेंडरे देखणदे
मैनु तांड़े महाल भया असानु ।
का दर जाने सचाए अता महम्मद इश्कदा भेड़ा
अगाहे वेदरदांदे दिलनु ॥

१३

होजटोदे जादु नैनां ।
सैन चलांदे तीर नजरदे गुजरदे पारावार सोणा ॥

तोदा तो फाँन कमान भौंनो अटके अटक खटक
दिल ले जांदा श रो सरकार सोना ॥

सिन्धु—तिताला

मोहो मोहो मोहो तेरो चालवे दुपट्टे वारे ।
दावन लगो वारोवे शरम तुसानु सानु ज्यों
भामी त्यों पालरे ॥

सिन्धु धीमा—तिताला ।

ओ छैला मानु न छेड़वे केहो वान पइ सुन दिलवर
मेरे ।
इशकदे कारण बदनामो लोतो पाक नजरते
सिखलाइयाँ अपनो अपनो बेर हो० ॥

सिन्धु—तिताला

मे तेड़ियाँवे नेना वाले यार ।
माँड़ो गइयाँ जिन्द तेरो लख फेरोयाँवे यार ॥

२

गुमानो चीरे वाले यार मैं तेरियाँवे लाग गइयां
सद विरहदी ।
चीरेवालेनु आनके मिलामो शोरो बार बार जिन्द
लख फेरियाँ ॥

३

याजटो मुशताकमें तेरो कदो तू साँवल करो फेरा ।
कदो तू आन मिलो रब साइया कदो तू कर साड़े
आंगन फेरा ॥

४

जप दियां तेरा नाम जानोवे ।
रेन देहा मेनु ध्यान तुसाड़ा वे मियाँ पुन पुन कहक
दोयां आइयां ॥

५

साँग चलाँदियाँवे नैनावाले मियाँ ।
शोरो मानु लग गइयां साँग विरहदो ॥
भूल जावे साड़ा दुख वेतुसो करम करो रब साँइया।
करम करो तुसा फल करोवो शोरोनू आनके
मिलायजा ॥

६

मैं तो जानदो भी नहियां तैंड़े खेड़ा किस गुण लाया
साथो अपना नेड़ा ।
तूं अपने मैं अपने खेड़ेदा मनरङ्ग किसनु भले
लगदा विरहदा उलझेड़ा ॥

७

तुसी आजा साड़ी जान सियाँवे ।
बांके नैनादो रमझा माहोड़ावे ॥
की होया साड़े नाल मियाँवे
आँखो लगो तेड़े नालवे बाँके नैनाँदो० ॥

८

करदोवे याद करदो आड़ावे मैं तक रहियाँ
बूहेनु दरद वाले यार ।
शोरो उठदा दिल बिच धुआँ बिरहदा मैं तो मरदो० ॥

९

रखिए लाज रुद्रानोजो मेरो ।
आदि जनमको तारण तुं हो याते तू सर्व्वानो भवानो ॥

१०

मुलक मौलादानो वेराँभण जानो यारवे भलोवे
मिया ।
नो बहार साँई जोवानो तुं माँहुवे सुख बसे
सुलतान भलावे ॥

११

माहोदे नाल चलेस्याँ तु साँरो जिन्द मोहोवे
माँड़ो कटदाँवे मैं भूलोवे ।
मौलो मैंड़ो थान ते तलवट नानो वेपुन दस्त रङ्गस्यां
मे वारोवे ॥

१२

बिलोचो माड़ो जानवे कुहाड़ा मैंडो जानवे
मै मोहोवे माड़े यार ।
आमिलो तो जोवाँ माँड़ड़ा यार नाहों नाहों तो
फिरां दिवानो मेड़े प्राणवे ।

१३

इश्क लगा कर वेपरवाह होदे नाहियाँवे ।

दिल भीतर बना आँदा शारो बिखियाँ रखियाँ
पाक महोब्बतवे ॥

१४

भूलदेवो विरोहोदे नेन सियाँवे नाहियाँ ।
चन्द जहां मुखड़ा बाग बहार वेमियाँ शोरा
उसदे उकदे नाहियाँ खुल देवे मियाँ ॥

१५

नैनन जोरदीवे सोड़ा दिल ठग लोतावे ।
तेज नजारेनु दिठोया तू शारा यार मैनु बस कोतावे ॥

१६

भला बेदरदो यार करदा क्यों दिलवर माड़ड़े
नाल जरों भासो त्यों पाल ।
बिन दोठे मानु कल न पड़ेदो मोहन मदनगोपाल ॥

१७

माहावालावे कटोतु सांवल वेख जरा मनु मत
छेड़ मियाँरे ।
तरतर विनुवे मैं भी तु आइयाँ मियाँ मोणा
कर चाक रंझेटा शारो मियाँवे ।

१८

नजारा झगदा करदावे परियाँ जहरिया जटिया
नाल नैन लड़दे ।
चन्द्र जेहो अखो भलियां दिल विच वसेदियाँ
इशकांदे लहरा बिच तरसंदे ॥

१९

रंझेटा मानु आमिलो सोणा जिन्द जाना ।
तैड़े कारण वारो सब कुछ छडियां बिन वेखे इशक
बहानो ॥

२०

सुध लाग रहो तेरे आवनको ।
छाय रहे तुम जाय विदेशवा आय गई ऋतु
सावनको ॥

२१

तरगइयां राभाँवितभो दिलदा साझांवे यार ।
वेखण गए मुड़ आप वेखणोमा कोई सङ्ग सनेहा
वेयार ॥

आशिकानु माशूक मिलोगा फिर घर आवन
केहावे यार ॥

२२

लाग लगामो वे लड़के में जटोको समझाई ।
निरको भौंह नैनन तक मारो इश्कदा साँग चलाई ॥

सिन्धु—धामा तिताला

ढालन मद साजिए माड़ो धालोवे उमर
केशर भीनो माड़ो चोलो ।
सइचूरो बदस्ते आनगारे नाजना दादम ।
वसाखे सन्दला पेचो इमारे अमरा दादं ॥

२

ताड़ो याद रहंदो लावे रहंदावे भला गुमाना ।
तेरे मोहदे जालम यारके इश्कदाहो मनुहो सेंदावे
भला गुमानो ताँड़ो ॥

सिन्धु काफी—तिताला

ललित ललन संग बिच मुसुकावे ।
निरखत वृन्दावनको शोभा नवल-द्रुमन फल फूल
लखावे ॥
बोलत पंछो रङ्ग रङ्गके कुञ्ज निकुञ्ज विशाल दिखावे ।
बन कुसुमित अवनो सुख राजत दुति ऋतुराज लख
सकुचावे ॥
गावत सङ्ग सखो मधुरे सुर वोणा मृदङ्ग कानन बजावे ।
यह सुख यह सुख केल विलोकत दम्पति निशदिन
ख्याल खुशाल सोहावे ॥

सिन्धु—तिताला

ओराधे मुख इन्दु उजारो ।
छाय रहो छवि वृन्दावनमें कुञ्ज-निकुञ्ज ललित
प्रगटारो ॥
कोवरने कवि निजमुख महिमा पावत न भेद वेद
बिचारो ।
त्रिभुवन नायकके जोवन-धन मोहनो सकल विश्व-
उजियारो ॥

बस होरहे चराचर जाके सो वृषभानु-कुमार-दुलारो।
ख्याल खुशाल सकल सुखदाता मूरत मोहनी नैन
निहारो॥

२

विपिन-विहार करत पो वो प्यारी।
कुञ्ज कुञ्ज छवि पुञ्ज विलोकित फूल रही जित तित
फुलवारी॥
नवल वेश नई नेह उलझ रहे ऋतु रसविलस
विलास अपारी।
मृदु मुसकात कदम तले ठाड़े रूप-रास
गलबहियां डारी॥
अति उनमत्त नयन-रस वरसत अङ्ग अङ्ग राजत
सुकुमारी।
ख्याल खुशाल विलोकित चहुं दिशि मोहनी
मूरत मदन-मुरारि॥

सिन्धु, धौमा—तिताला

सुनो श्रीवृन्दावन वासी।
यह विनती सेवक अपनेकी प्रभु सर्व्वज्ञ सकल-
गुणराशी॥
दरस लालसा ललित देखनकी अन्तरयामी
प्राण-हुलासी।
अति-उदार तिहुं लोक-उजागर त्रिभुवन-नायक
विपिन विलासी॥
सब बरणे गुण सकल तुम्हारे शेष, शारदा, जिनकी
राशी।
वेगही होहु प्रसन्न मनोहर रसिक खुशाल हिरदेके
निवासी॥

सिन्धु काफी—तिताला

मुरली मोहन अधर धरे वृन्दावन चन्द्रास करे।
बोले सब हरे हरे गावत सखी रङ्ग भरे॥
मधुर मृदङ्ग मुरली तान सप्त सुरन सुरन स्वर बखान।
बाईस सुरत मूर्छना युत ताल काल युगत प्रमाण॥

सिन्धु—तिताला

रजनी विरहनि वियोगो राधाकर लीने ए सारङ्गी
बजावत
हरिसुति होन ताम रिपु पति बिन ता अरि बँधुही
तू नहीं आवत।
हाहा लिखि मदन काग लिखो कोयल लखि
पन्नग मरतही भरमावत॥

२

ऊधो हरिसों कहियो सन्देश।
नन्दराय दृग सजल रहतहैं यशुमत अधिक कलेश॥
गोपी ग्वाल सबहैं व्याकुल तज्यो चाहत यह देश।
सब सुध आवत कुञ्ज भवनकी मोर पंखको भेश॥
सुरपत कोप कियो ब्रज ऊपर नखपर धस्यो नगेश।
सोतो गुण समझ समझ नहीं बिसरत हरिप्रसाद
परमेश॥

३

पैजनियां पग पाँय मनोहर।
चलत श्यामघन बाजत राजत निरख विनोद मगन
मोहे सुर॥
अरु मन मुदित यशोदा रनिया पाछे फिरें गहे
अङ्गुली कर।
मानो धेनु बन छाँड़ि बच्छ हित प्रेम पुलको पय
श्रवत पयोधर॥
कुण्डल लोल कपोल विराजत लटकत ललित लटैयां
भुवपर।
सूरदास अवलोकनको सुख किलकत हँसत
गोपाल याके घर॥

सिन्धु काफी—तिताला

भजहु बहुत सुख होय रामकृष्ण नामकों।
राम लियो औतार अयोध्यापुरी सुहाई।
मथुरा कृष्णको जनम गोकुल रहस बनाई॥
राम धुक्कक दिनके बीतेहति ताड़का जाय।
कृष्ण पूतनाको वध कीनो अनमुखही लगाय॥

राम जनकपुर जाय सहजही शिवधनु तोड़्यो ।
कृष्ण पैठ पाताल नागधरके मन मोड़्यो ॥
राम जीत परशुरामकों सीय व्याही बजाय ।
कृष्ण रुक्मिणि व्याह ले आये शिशुपाल लजाय ॥
राम देवतन काज पिताके वचन सिधाऱ्यो ।
कृष्णतो अक, बक, तृणावर्त्त आदि कंस मारयो ॥
रामचरणके रेणुतें तरी अहिल्यानारी ।
कृष्ण आप कुवरीसों रीझे भई सखियनमें प्यारी ॥
राम निषादहो तार प्रेम अतिसे सुख दीनो ।
कृष्ण अहीरन बाल झूंठन सब लीनो ॥
राम बसे पञ्चवटीमें लछमन सीय समेत ।
कृष्ण जगतको भार उतारयो भेंटे कुल कुरखेत ॥
मारे रामजी खरदूषणकों त्रिशिरासुर बहोत खाय ।
हतो कृष्णजी जरासिन्धे वेगे सबा खेत चढ़ाय ॥
राम किये बहु सखा भालु बन्दर समुदाय ।
कृष्णतो वृन्दावन गोप गोपिन रिझाय ॥
राम-कृपा हनुमान पर बुधि बल कहो न जाई ।
कृष्ण अरजुन रथ पर बैठो भारत दियो जिताई ॥
सागर बांध्या राजजाममें कटक उतारयो ।
कृष्ण गोवर्द्धन आदि इन्द्रले वृजही उबारयो ॥
राम रावणही मारके लङ्का विभीषण पाय ।
कृष्ण कंस निकंसकर उग्रसेन बैठाय ॥
राम अनुज सीय सहित यूथ निजपुर पग धारयो ।
कृष्ण मथुरातें चले द्वारका जाय सवारयो ॥
राम कृष्ण औतारकों विरला पावे भेद ।
भीषमकों बल एक ब्रह्महै नाम उपामन देव ॥

सिन्धु—तिताला

एजानीड़ा तोरे बसमें मैं आईरे ।
हो हो हो ।
आपतो जाय कदम पर बैठे अबतो तेरो सबही
बन आईरे ॥

२

कौन बातको कोजे परेखो ।
ना हरि जात न पाँत हमारे कहाँ माने दुख लीजे ॥
बसुदेवजी देवकुलके दीपक बन्दो जिन बिलमाए ।
नन्दनन्दन गोपीजनवल्लभ ना हरि कान्ह कहाए ॥
नाहिन जोरे चन्द्रिका माथे अरु नाहीं बनमाला ।
अब सुनियत भूपने भूपत सुन्दर-श्याम-तमाला ॥
अब नाहिन घर बनको नातो बसत एकही अङ्ग ।
सूरदास मिटगई सगाई वा मुरलीके सङ्ग ॥

३

तेरे नामका अधारा तेरे० ।
भक्तनको पक्ष कीनो आन खंभ फारा ।
हिरणाकुशको मार प्रह्लादको उबारा ॥
मेरो मेरो करत फिरे रैन दिन बिसारा ।
राम नामसो टेक और धन्धका पसारा ॥
गेंद कारण कूद परे कालो नाग नाथा ।
हस्तीके दन्त तोड़ कंसको पछाड़ा ॥
द्रौपदीको लाज करो अखे चार बाढ़ा ।
भीलनीके बेर कुए कोना निस्तारा ॥
दुष्टियोंको मारके सन्तोंको उबारा ।
लङ्का गढ़ घेरे राज छिनकमें बिगारा ॥
सूरदास सुरत लागो रामजी रखवारा ।
मोर-मुकुट शीश धरे नन्दकादुलारा ॥

४

भज मन त्रिभुवन-नाथ मुरारि ।
भूलो फिरत असार जगतमें हरि सनेह सुख-
ललित बिसारी ॥
जाके चरण-शरणकी महिमा गावत चवदेभवन
मझारी ।
तेहो चरण-शरण क्यों न आवे त्याग कुमत मन
सुमत विचारी ॥
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक नारद शारद
पावे न पारो ।
ऐसे प्रभुहो विसार कहाहै हो खुशाल प्रिय
कञ्ज-बिहारी ॥

५

एकही ब्रह्म सकल जग छायो।
देखत सब कोई चीन्हत नाहीं वेद विधाता
पार न पायो॥
जाको लीला अपरंपारी सांई-वृजराज कुमार कहायो।
रूप मोहनो नाम कन्हाई सुयश सकल लोकनमें
गायो॥
दीन-दयाल महासुखदाता भक्त हेत आकर प्रगटायो।
निशदिन ख्याल खुशाल करतहैं जाको ध्यान
ध्यान लगायो॥

६

कौन ले गयोरी मेरी दधिकी मथनियाँ।
ढूंढ़न चली गोपी ग्वाल सङ्ग केते जनियाँ।
जाय लख्यो नन्द-गृह यशोदाजोकी कनियां॥
कोमल वदन चरण कमल बाजें पैजनियां।
कटि-किङ्कणी लसे नौंक नाकमें नथुनियां॥
सर्व्वं जीत जात लख्यो पीत वसन तनियाँ।
रूप देख भूल गयो माँगोवे मथनियाँ॥

७

अँखियाँ बार बार तरसे बिन देखे बालम बाँका।
हाहारी मोकों या विरहा पीड़ित आय आतंका॥
दिन नहीं चैन सखी एको पल उठत इश्क और दाहे
दमंका।
हस्तराम हरि परस बिन मिटत न चाँप चमंका॥

८

तेरेने ताहो स्वरूप निगम नेत गावे।
भक्तन वस श्याम-सुन्दर देह धार आवे॥
योगी, मुनि, ज्ञानी, ध्यानी, सुपनें नहीं पावे।
नन्दघरनी पकरकें बाँधके नचावे॥
गोपीजन प्रेम आतुर सङ्ग लिए डोले।
मुरलीमें नाद सुनि गृह तज बन डोले॥
सुस्मृति शास्त्र पुराण करतहैं विचारी।
परमानन्द प्रेम कथा सबनसों न्यारी॥

९

बस जो न करो ऐसेको नन्दके।
मानहु श्याम-भुवङ्ग डसी शशिवदन बिलोकी
हँसी मंदके॥
गोकुलकी सुध नेक नहीं दरसे दृग गोकुलके चन्दके।
धीर न धीर परे तनकों तनकों न संभार पड़े छन्दके॥
यन्त्र मन्त्र कछु न लगे कुछ नहीं होत दिए बन्धके।
युगल सखी न करो न करो न परो न परो अकरे
फन्दके॥

१०

प्रीतकीरी यह रीत निराली है।
कोजाने वृजनवलसुन्दरीको नन्दलाल विहारीहै॥
कोजाने सरसतिय चढ़ीजे पतिके काज लाज तज-
डारी है।
प्रेम मगन जब भई पियासों जरी बरी भस्म भई
पिय प्यारी है॥
गूंगाकी गति गूंगे जाने क्या जाने कोउ वैद
अनारीहै।
युगल जानत बालकको वेदन कहा जाने कोउ
बांझ बिचारीहै॥

सिन्धु काफी—तिताला

भजले राम सवेरा हो मन।
जनमत बढ़त घटत तन छिन छिन निशदिन होत
अबेरा हो मन०॥
अजहुँ न चेतत अन्ध भयो मूढ़ आगम होत अँधेरा।
धन परिवार काम न ऐहै होइहै कूंच जब डेराहो०॥
तब कहा करिहो प्रीतम प्यारे जब जम देहिहै तरेरा।
गावैं गूदर जब आन बजो शिर बस न चलो कुछ तेरा॥

२

जाके राम न लागे अन्तरहो।
वेद पुराण शास्त्र पढ़ पढ़ योग युगत सब जन्तर हो।
अबतें कह्यो समभाय सतगुरु भूल गयो सब
मंतरहो॥

पाँच पचीस तीनकों मारे तब घर बैठो सतन्तरहो ।
गावै सूदर गोविन्द गुरु बलिहारी साध सङ्गत कर
निरन्तरहो ॥

३

मन मस्त भया तब क्यों बोले ।
घटता था जब चढ़ा है तराजू पूरा भया तब क्यों तोले ॥
हंसा पायो मानसरोवर मोती तज कङ्करको क्यों ले ।
तेरा साँई है तू माहो बाहर नैनाको खोले ॥
इधर उधर काहे भटकत मनुवा कृष्ण भजन अनमोले।
सूर सागर नित भरोई रहतहै ताल तलैयामेंरे
क्यों डोले ॥

४

कुञ्जनमध निरतत वृषभानकी दुलारी ।
वृजवनितन कियो साज, सङ्ग लिए कृष्णराज,
हिलमिल सब नाचत गावत पुहमो पग धारो ।
भूषण बहुभाँत कियो, शीश मुकट तिलक दियो,
उपमा छवि कौन कहे रवि शशि कोन न्यारो ॥
बाँसुरीकी सुनत बोल, चवदे भवन गयो डोल,
अज, महेश, शेष, शारद, गयो ध्यान हारो ।
गोकलके धनहैं भाग, जनम कृष्ण लियो लाग,
गावत सूदर वेद चार कहत वारो वारो ॥

५

भजले सीताराम अब तेरो दाव बन्यो है ।
लख चौरासी भ्रम भ्रम आयो कबहुँ न पायो विश्राम
मात, पिता, दारा, सुत, बंधु, कोइ न आवै तेरे काम
चरणदासचरणनकोचेरो रामोजो सारेगो तेरे काम ॥

६

रामचन्द्र-पद भजवे लायक भजवे लायक सब सुख-
दायक ।
अभय करण भव-तरण पोत ढिग युग युग साखी ।
वेदके वायक ॥
चिन्तत चरण सकल फल करत व्यापक सबहो
पाप नशायक ।
भक्तनकी रक्षाके कारण निशदिन लिए रहत
कर शायक ॥
गौतमघरनि, गज, ग्राह, तारण शरण विभीषण
कपि जो सहायक ।
सेवा अल्प मेरु सम मानत करुणासिन्धु अयोध्या-
नायक ॥
शिव सनकादिक वेणुधरशारद शेष विमल यश
गायक ।
जानकीरमण भक्तवत्सल हरि अग्रदास उर आनन्द-
दायक ॥

७

कहां लग हरिको मैं करूं बड़ाई ।
मोते सेज लात रिषि मारो उठे सँभार चरण लपटाई ॥
कुलिश कठोर हिरदो अति मेरो कोमल चरणकमल
रिषिराई ।
सेना सहित करत प्रभु अस्तुति प्रेम मगन नैनन
झरलाई ॥
नैनासों प्रभु रहो निरखि सुख गदगद-कण्ठ वचन
नहीं आई ।
युगलदास सुख कहत पुकारि भजहु गोपालप्रिया
सुखदाई ॥

८

कैसेके बिलोऊं गहे रह्योरी मथनियां ।
छोटे छोटे चरण छोटा भुज ननियां ॥
वदनपे छींटे पड़ी शोभा अधिक बनियां ।
हाथन हरिके कड़वा सोहै पायन पैजनियां ॥
रूपके सुघर सुन्दर नाकमें नथुनियां ॥
घुंघरू बन धावे छैलो ठुमक धरनियां ।
देखोरी अनोखो सखो वृजमें चिकनियां ॥
सूरदास बलगई नन्दजूको रनियां ।
वार फेर यशुमति पोवैहैरो पनियां ॥

सिन्धु काफी ठुमरी—तिताला

मानहो जान कनै दोनारे बालमुवा ।

परदेशीकी प्रीत फूंसका तापनारे दिया करेजवा
काट तोजभो न आपना ॥
नदिया किनारे जुल्हरिया क्यों बोईरे, भुट्टा लेगया
चोर ठठेरवा यों खड़ा जान० ।
चाल जल बर जाय ताल नहीं टूटिहैरे
व्याहो खसम मरजाय यार नहीं छुटिहै॥ जा०॥

सिन्धु—तिताला

बंशी तान मानसों बजे ब्रन्दावन मध रास करे ।
श्रवण सुनत सुर नर मुनि ध्यान टारे थकित मुनि
तीन लोक मोह लिए सुख-विलास आनन्द भरे ॥
सप्तसुर तीनग्राम इकईस मूर्च्छना उरप तिरप
लाग डाट धरे ।
कृष्णानन्द आनन्दमें सुन धुन ब्रह्मादिक मन हरे ॥

२

भवसागरके भटक फेरनमें प्रभुजी तुमको भूल रहो ।
काम, क्रोध, मद, लोभ,मोहके झकझोरनमें
झूल रहो ॥
वृथा कथा बकवाद विरहको इनसों मिलत फूल रहो।
तिहारे चरण शरण बिन ब्रजनिध योंहो इत उत
डोल रहो ॥

३

लेखोरी भरि लोचन लाहु ।
सखी सयानी एक मिथिलापुरकी घर घर सीख
देत सब काहु ॥
ना फिर राम जनकपुर ऐहै ना हम नगर अयोध्या
जाहु ।
दुइये दरस दुर्लभ दम्पतिको समझ फिर मन
पछताहु ॥
बाहिन हगी टार इहि औसर नारि पुरुष सबहो न
निवाहु ।
मनहु कामना करि परिपूरण फिरि न होइ उर
अन्तर दाहु ॥
ब्रह्मा ईश सकल सुख राजत रामसिया कर
विदित बिवाहु ।

हरषे गगन सुमन सुर बरषे सकल भुवन भर रहा
उछाहु ॥
सुखसागर रघुवंश उजागर तिनहु देख चकृत चाहु ।
तुलसीदास बड़ भाग वाहीको चितवत जात
जानकी-नाहु ॥

४

सदा वाहिमां वाहिमां शरण रामं ।
निर्विकार, निजानन्द, निरवधो विमोहन, निखलानं
तनित अवध धामं ॥
अखिल, अखिलेश, अव्यक्त, व्यापक, बीरज, सर्व्वगति
सर्व्वरति, सर्व्वपालं ।
दीनपति, दयापाल, कदवननिशिचराकाल, काल
कालक कहियत करालं ॥
गुणी गुणवन्त, गुणपालं, गुणदायक, गुरुन-गुरु,
सर्व्वज्ञ ईश, ईशं ।
सच्चिदानन्द, सदरूप, संशय हरण, कोशलानन्द,
आनन्द भेशं ॥
देव देवादि जग-उदित पावन विरद रङ्कत राव
कोनो जेहो अधीनो ।
राम कीना प्रणत अवधपति नाथको आपनो
जान मोहो शरण लीनो ॥

५

अलक एक बहुरङ्गो सांई हरघटमें बाको परछांई ।
जहां देखो तहां रूपहै न्यारा, ऐसाहै बहुरङ्गो प्यारा॥

दोहा

वजहन कहै तो कहा कहै कहिवेको नहीं बात ।
समुद्र समायो बून्दमें यह अचरज बड़ो दिखात ॥१॥
वे बिन गुरु भेद काहु न पाया, धरतीसे आकाशलों
धाया ।
पहले प्रीत गुरुसे करे, प्रेम डगरमें पग तब धरे ॥

दोहा

बिन गुण गुरु वजहनजो कोई लेतहै वसन रङ्गाय ।
यह निजके तुम जानियो वह दोज ओरतें जाय ॥२।
ते तब योग तेरा बन ऐहै जब बेरो बन दुविधा जइहै।

वही तो मनमें कपटकी ठाटी, जहों सब खेल
किया है माटी ॥
दोहा
जो मनकी महिमय छूटे, श्रो तँतैका बन्धे तार।
वजहन साहब अबही मिलत, नेक न लागे बार ॥३॥
से सावत होय ध्यान ज्यों लागे,
आपुही आप भरम सब भागे,
अजपा जाप तू जपरे भाई, छूट जाय दर्पणकी काई ॥
दोहा
वजहन कहत सो जाप कर, बैठ रहो ध्यान लगाय।
सुरत निरत वह राखिये, वृथा श्वांस नहिं जाय ॥४॥
जीम जुगतमें और बतैहों,
जब तोहै एकलाहै कहीं पैहों ।
अबही तो वा सङ्ग नहीं छूटे,
दिन दुपहेर जिन पेड़े लूटे ॥
दोहा
कहने कों तो पांचहैं, औहैं वे पूरे तीस।
उनहींको कारण ना मिले, अबहोंलों जगदीश ॥५॥
हे हद भरया भूलहै तेरो, एक बात न मानि मेरो,
अबलों तो ऐसा होय जाता।
जैसे कोऊ भला मदमाता ॥
दोहा
कहां गईथी बुध तेरी, औ कहां गया था चेत।
ऐसी काया पायके, जो हरिसे किया न हेत ॥६॥
खूं खूं विन्द क्या कहिहै न्यारे,
मूंद देख तो दशों दवारे,
सुन परिहै अनहदका बाजा,
परजाते होय जइहै राजा ॥
दोहा
सबे साज तनमें बजे, औ ऐसे मचेहैं राग।
वजहन जाकों सुन परे, बड़ेहैं वाकेभाग ॥७॥
दाल दया मनमें जो राखे, प्रेमका रस कैसे ना चाखे,
बिन मद पिए होय मतवाला,
निशिवासर वो करे नजारा ॥

दोहा
झूठे जगतमें आयके, करिए ना तू अभिमान।
दया धर्म ना छांड़िए, जबलों घटमें प्राण ॥८॥
जाल जोंक जबलों नहीं आवें,
तितनो चाहे कोउ मन भटकावें ॥
हिरदे लगे न प्रेमकी गांसी, कैसे मिलें कहो अविनाशी ॥
तेरे राजमें ऐसा खोला, जैसा कुछ मन सुरसों बोला,
सोसब सुने रहे तू कोरा, जान परत मथरे कोई चोरा ॥
दोहा
लाजकों काजर नैनन तू, क्यों नहिं डारे धोय।
वजहन कहत कैसे भला, दरसन पीको होय ॥९॥
जे जुर देख जो भूला रहिये, सगरो वैस अकारथ जइहै।
प्रेम भट्ठाका मद पीव चाखा,
मिट जइहै सब मनका धोखा ॥
दोहा
वहांसे कहा कहि आया हुथा, इहां किया क्या आय,
झूठी माया देखके, एसा गया भुलाय ॥१०॥
सीन सहजका सोखले लटका,
काहेकों फिरत है इतउत भटका,
सोच न करहु अबहोंहै सबेरा,
त्रिकुटी कोटमें करदे डेरा ॥
दोहा
लाख जतन का जतनहै, वजहन दिया बताय।
जो सांई कृपा करे तो, सभी बात बन जाय ॥११॥
शीन शोर तनमें है जइका, अबहोलों न चीने बहोका,
दिन भर लिखा करत है पाटो,
सांझ भएते दे सोवत टाटी ॥
दोहा
साहसे कुछ परचे नहीं, चोरनसे व्यवहार।
वजहन कैसे देख तो, भूल रहा संसार ॥१२॥
स्वाद सबूरी साथकों चहिए,
कठिन परे काहूते न कहिए,
जासों समझे अपने मन महीं,
होना वही जो चाहै सांई ॥

दोहा

आसन मारके बैठ रहो, मनमें रख तू धीर ।
साइके परताप तें, करदे हैं सब धीर ॥१३॥
ज़ाद ज़रूरत इतना कीजे, निशदिन नाम हरिका लीजे,
मैंतो मनमें यही विचारा, तब हुइहै तेरा निस्तारा ॥

दोहा

वजहन जगतमें आयके, जामें होय कुछ ज्ञान ।
हरिको नाम सुमरण करे, अलीसों राखे ध्यान॥१४॥
तोय तालिब तुइ कहांहै पूरा, प्रेमनगरका नाघे ना धूरा,
वहीके आगे औरहै चलना,
सहज नहीं साहबका मिलना ॥

दोहा

पीर नगरकों पहुंचके, नबी नगर कों जाय ।
तो वे वजहन घटहीके अन्दर, हरका गाम देखाय॥१५
ज़ोय जाहिर वतान है वही, वही वही सबही वही,
जेइ अपने मनमें यह बूझा, हर हरमें हर वाकों सूझा

दोहा

प्रेमकी नदी गहरो बड़ी, भजो कोउ उतरो पार ।
आशिक औ माशूकमें, तब रहो कौन विचार ॥१६॥
एन इश्कका पेड़ा न्यारा, वहाँ दूजेका नहीं गुजारा,
शीश काटके हाथ जो धरे, तब दरशन वो पीके करे॥

दोहा

गली साँकरी वहोतहै, औ वैरीहै सब गाँम ।
ठोकर कुमत बचायके, सँभलके धरिये पाँव ॥१७॥
गैन गफ़रने खेल बिगारा, देख पराण पीतम प्यारा,
औरइ बात न रहत है राजी, कैसा हारा जाता है बाजी।

दोहा

बाजीमें कहो कहा रहा, अगले रखाहै दांव ।
बरजोरी जीता चाहतहै, साहबका जप नाम ॥१८॥
फ़ फ़मान तलका ऐहै, कामुखले घर पियके जइहै,
वादिनका कुछ सोचन कीने,
हरिका नाम कबहुं न लीने ॥

दोहा

आगे कहे तो ना सुने, अबहुं कहतहों चेत ।
एकदिन फिर पछतायगो, चिड़ियां चुंग गई खेत॥१९

काफ़ कौल तेराहै झूंठा, ओज्यो ठग्ग देखो तीन अनठा,
सुना किया साधनकी वाणी,
तेपर अबही लुभवा न ज्ञानी ॥

दोहा

जो मतका हीना भया, वहकी कोन कहै है बात ।
पहलेतो सोचत नहीं पाछेकों पछतात ॥२०॥
गाफ़ करम उन बड़ाहै कीना,
मानुष जनम ऐसाहै दीना,
आप छिपे औौर ताहै उबारा,
यहतो मनमें सोच गँवारा ॥

दोहा

वेइका बदला एकहै, सो मैं देऊं बताय ।
हरि हेरत तोय चाहिये, पहले आप हेराय ॥२१॥
लाम लोभको छाड़दे बातें,
मैं जो कही यह सीखले घातें,
असल ठगीहै पियसे जोड तोरा,
चन्द्रको जैसे चाहे चकोरा ॥

दोहा

जोतू प्रेमके रङ्गमें, तन मन लेइ रङ्गाय ।
पहलेही बोरमें देखिये, लोभ किधर धौं जाय ॥२२॥
मीम महोव्वत चहिये मनमें, घरमें रहे रहे चाह बनमें,
गले परी जब प्रेमकी फांसी,
कहाँकी अयोध्या कहाँकी काशी ॥

दोहा

जाके हिरदे लगतहै, वजहन प्रेमकी बाण ।
छूट जातहै सब टंटम्, औ भूल जात है ज्ञान ॥२३॥
नून नहीं ज्यों जाकों जगमें, आपही आप रमाहै सबमें,
हित चितमों सुनले यह बैना,
खुल जैहैं तोरे ध्यानके नैना ॥

दोहा

वजहन कहत मो बूझले, यही राख तुइ बूझ ।
एकदिन याही बूझतें, होय जइहै फिर सूझ ॥२४॥
वावही एक यारहै तेरा, तेहको गली किए न फेरा,
दुरजनधे सो मीत बनाए, समझा ना मेरे समझाए ॥

दोहा

मैं जाना था चतुरहै, हैतू बड़ा नदान ।
कितनोउ समझावत रह्यो, एकउ कियो नकाम ॥२५
हे हादो ऐसा तू पाये, वाहुते अपना चित न लगाए,
करिए हियसों वाहे अधिकारी,
देखिए क्या गति होय तिहारी ॥

दोहा

इहाँके हारे हारहै, और इहाँके जीत जीत ।
वजहन कहत सो मानले, साहबसें कर पीत ॥२६॥
ए यारो हरसे जो करना,यह अक्षर हिरदे बिच धरना,
बनत बनत बन जैहै एसा,कोई दिनन मन सूरथ जैसा,
वजहन अक्षर ऐसे कहेहैं, साधनके हथियार ।
विरहाके मैदानमें, पतिके राखनहार ॥२७॥

इति श्रीवजहन साहब कृत अलफ बे सम्पूर्णम् ।

सिन्धु मूलतानी—तिताला

रात कहो पिया कहाँ तुम जागे ।
काहेकों हमसे छिपावत हो अब अल्से नैन कहींहैं
लागे ।
एसी निठुराई न चहिये वजहन और नहीं कुछ
कहतहों आगे ॥

भीमपलासी—तिताला

लागलो ओशेर माए मोहे कब घर आवें पियरवा
मई देश ।
बन बनवा डोरे डोरे करहूं जोगनियाका भेश ॥

सिन्धु मूलतानी—तिताला

पोयके मिल भईरे लोगवा ए पतिगवा अजहूं न
आये सन्देशवा ।
घरो पल छिन मोहे कल न पड़तहै वेग दरस
दीजो मोहे उन बिन रहे अन्देशवा ॥

२

मैं कैसे जानूरे काहूके मनकी ।
अपनी अपनी और निभालो वा क्याही जाने
काहूके मनकी ॥

किन ठगीयाने मोहे ठगोरे डारो ठगोरो ।
जानत नाही पहचानत नाहीं जोवना उमगसें
बोले मुरली धुन कोनी बोरो ॥

४

दोउ अटके नैन हमारे मनमोहन मुरली वालेसे ।
लोक कहै तुम लाज करो क्यों न लगगई तब लाज
कहाँरे ॥
सटारङ्ग पिय सब गुण पूरे अनेक जतन करि हारे ॥

मलतानी—एकताला

आनके मिलामोवे दोस्ते दिलेयार
सजन मैं तो तेरो हाजर बन्दो तूतो मेंड़ा माई वेदो० ॥

२

मतवारो दारुड़ा पिवावे बराजोरीरे ।
नहीं नहीं करेछे में जासों रहस रहस गरे लावेरे ॥

३

अँखियाँ तू काहूको न भईरी ।
यहं प्रसिद्ध संसार कहानी कहत पुकार कहीरी ॥
कहिये कहा ऊंखीली बरजी तोड़ गई नागरीदास
लाल गिरिधर कर मोमन बांध दईरी ॥

मलतानी काफी—तिताला

मोरी गत रामजी चाहिरे ।
तुम बिन मोकों कलनपरत है घर अँगना न
सोहावेरे ॥
कहा करों कछु बस नहीं मेरो रैन दिना नहीं भावेरे।
रूप रसिकसों यों जाय कहियो बेग दरस देखावेरे ॥

२

जप जपरे मन कालो अभय सर्व्वानी सर्व्वानी वानी ।
त्रिपुर सुन्दरी श्यामा,विमला विमल जगजननी भवानी॥
प्रेमानन्दे भज तुमि भुल नारे मन जपरे जपरे ।
तारा नाम शुभ नाम विष्णु पद भुलना
भुलनारे नारे नारे ॥

६

तेरा यार तेरे नैननमें आशिक क्यारे ढूंढ़े बन बनमें ।
ज्यों कस्तूरी मृगमें बसतहै आशिक तेरे तनमें ॥

मायामें तू भूल्यो फिरतहै मत चूके साधनमें।
कृपानिधान तेरो गुण जावे ज्यों मुखड़ा दरपनमें ॥

४

प्रभु-विमुखनकों मुख कबहुँ न देखावो राम।
जाके सङ्गतें दुरमत पाप उपजे सपनेहु न दरस
दिखलावे राम ॥

मूलतानी—धीमा तिताला

सदा फकीरांदी मानले तेरो मन माने सो कर हाँवे
दिवाने।
हर बिन कोउ जग काम न आवे यह जिय तन मन
ठानले ॥

मूलतानी—तिताला

जीन्द ठगीवे मियाँ यार नदाना नाल ठगी।
कीकरां बारी की समझांवो यारदे नाल मैंतो पगी ॥

२

अब मोरे जियकी भटक गई।
चमकी जोत निर्गुणकी हियमें मनकी अंधेरी
सटक गई ॥
सहज दृष्ट हमरी लागी और सबही शिर पटक गई।
ऐसी दया जो रहे कायमपर फिर सब जियकी
खटक गई ॥

३

हरिकों न भजे नरतनकों पाय।
जिन युगन युगन कीनीहै सहाय ॥
जिन ग्राहते गज लीनो छुड़ाय।
दियो वसन द्रौपदीको बढ़ाय ॥
दारिद्र सुदामाको दियो बहाई।
जेही बल विष पीगई मीराबाई ॥
जिन गिरत गिरत प्रह्लाद राख।
हिरनाकुश मार्‍यो वेद साख ॥
जिन दुरयोधनकी त्यागी दाख।
झूंठे शिवरी फल हितसों चाख ॥
जिन गीधे गति दीनी अपार।
गौतम-तिय तारी चरण धार ॥
जिन दण्डकवनको हरो भार।
सब मार असुर किए सुर सुखार ॥
जिन विधकी मति दीनी भुलाय।
थाके ब्रजके बच्छ दिए चुराय ॥
जिन कालो दहसों नागनाथ।
किए निरत फनपे धर हाथ माथ ॥
पूतना प्राण पीय पयके साथ।
कृष्णानन्द गए शरणनाथ ॥

४

धृगजीवन जगे ना हरि जानोरे।
एसेही इतउत दिन खोए तू कैसेहो चतुर सयानोरे ॥
करले हेत मीत मोहनसों का पीछे पछतानोरे।
जीवन धन सबही बन ऊहे हरिके हाथ बिकानोरे ॥

५

मोहन जानदे मोहे जलजानो।
रोकत टोकत बाटघाट मोहे कैसे भरूं में पानी ॥
अचरा पकरत झकझोरहो नन्दको करत हों कानी।
सूरदास यह ब्रज कैसे बसों करतहों आनकी आनी ॥

६

मेरे मन रामजी गोविन्द गावेरे।
सोवत जागत बिहरत निशदिन हरि बिन कुछन
सोहावेरे ॥
कहा करेगी लोभ काम क्रोध ज्ञान ध्यानकों जगावेरे।
कृष्ण रसिकके चरण कमल पर बार बार बलि जावेरे ॥

७

मैं करोंगी अनन्द बधाए हो पिया घर आए।
सङ्ग लगावे सखी व सहेली हुवे सकल मन भाए ॥
नितप्रति ख्याल खुशाल करोंगी श्यामसुन्दर
वर पाए हो।
आए उमड़ घुमड़ वरसनको हो बदरा धूम मचाएहो ॥
बोलत मोर पपीहा पी पी कोयल शब्द सुनाए हो।
हरियालो द्रुमद्रुम वृन्दावन ख्याल खुशाल लोभाएहो ॥

८

मेरे गिरधारीजीसों काहे लरी।
चलरी मैया मैं तोहे बताऊं जो मोसे झगरी।

मैरोरी गिरधर असुवन रोवे तू मुसकात खरो ॥
तू लरयो गिरिधर मैरा वारो कैसेके भुज पकरो।
सुन्दर-वदन नील-पट ओढ़े चञ्चल चपल अरो ॥
मैरोरी गिरिधर बन बन डोले हाथ लिए लकरी ॥
सूरदास या मारग ब्रजमें कहा कैसे निबरो ॥

इति मिश्र-काफी सम्पूर्णम्।

श्रीकृष्णाय नमः।

मूलतानी ठुमरी—तिताला

आज मोहन पाऊं सजनी जागूं सगरी रातहो।
बमनाके लावत सगुना मनावत कब घर आवे साँवल
लोनि लोनि गातहो ॥
पलङ्ग बिछाय आई, दियरा जगाय आई,
एक टक ठाड़ी चितवत बतियां जातहो।
प्रेमरङ्ग प्रभु सङ्ग रंगमा रंगोगो तन मन धन सब वारों
छिन पल युगमों मोहे न सोहातहो ॥

२

रामसुन्दर श्याम मोरे अखियन आगे डोलहुहो।
धावत चलत ठाड़े बैठत सूतत सूपनै रसिक
हसनिया मुहवाँ मीठा बोली बोलहुहो ॥
कवन भजन जोगनसों पाऊं पाऊं कवन करम मोरे
माया टटिया खोलहुहो।
बसत करेजवा हरे मोरे छैलो औ प्रेम रङ्ग
लागल जियरा रूप तप तोर नाम अमोलहुहो ॥

३

मोरी गली नहीं आवतरे।
घर घर फिरत रहत मनमोहन हमरा जिय
तरसावतरे ॥
अवर सखिनसों रसकी बतियां हमसों नजर
छिपावतरे।
जिन काजे मोहन बस कीनों उन्हीं मिले सुख
पावतरे ॥

प्रीत लगाय मोहि मारारे।
दिन नहिं चैन रैन नहिं निदिया कौन मन्त्र पढ़
डारारे ॥
जो कोई मानुष मिलके बिछुरे कैसे जीवे बिचारारे।
जिन काजे मोहन बस कीना प्रेमकी जीत अखाड़ारे ॥

५

मैंतो अपने सइयाँ सङ्ग मातीरे।
भर भर प्याला देत अमीरस लटक चलत बहु भाँतीरे।
जो कोई वाकी चरचा करि है सउब ना दिन रातीरे
गावे गूदर गुरु जिन मोहे लिख दीनो जो मोरे
जनम सँघातीरे ॥

६

गहे कोई बाँह निबाहतरे।
चारों जुगमें साथ साईं हैं नेक बड़ोंको चाहतरे ॥
कञ्चन काँच और झूठ सांच जग निरमल अनलके
डाहतरे।
गावे गूदर है पुरुष सोई जग सों हमङ्कै चित
चाहतरे ॥

७

कारीसा कामरी लेके कहांचल्योरे जोगिया।
कानन कुण्डल गले मृगछाला कवन नगरको
है तू भोगिया ॥
एसे नैना लगाय मुझे मारारे मोन मिरग बसकर
डारारे।
घायलको गत घायल जाने क्या जाने बेद बिचारारे ॥

८

निबुला मैं तोर लाई मैं तोर लाई मलियाके बाग।
छोटे छोटे निबुला नरम कलियां देखलो नाहीं मोहे
चोरिया लगाई ॥

९

गोरीया दिननकी थोरी तैं मेरो मन मोहेरी।
गोरी गोरी बहियां हरो हरो चुरियाँ दाँतन मीसी
हाथन मेहंदी माथे टिकुलिया सोहेरी ॥

१०

साँवलाजीह्हो म्हे जान्यो थारो जान।
रतमानो परभातड़ो आया झूठा करोछो बखान॥
प्रगट पुकार करोछे कजरा पाक लोक अधरान।
इनमें झूठ नहीं तिलजो कांई रङ्गीला प्रीतमरो आन॥

११

कवन बचन विलमावतरे ऊधो।
जे पद सेवत बीत कल्प युग सो कुबजा उर लावतरे॥
जो सुख ब्रह्मलोकमें नाहीं सो कुबरी सुख पावतरे।
सगरे ब्रजको राज दियो है हमें लिख योग पठावतरे॥
जबते हरिमुख मोर तोर लियो है तबते भवन नहीं भावतरे।
गावे सूदर में कहि कहि थाको सो बस कबहूं न आवतरे॥

मूलतानी—तिताला

तेरो गति अपरंपार।
अतिप्रचण्ड जिन रच्यो ब्रह्मण्ड आदज्योति निरञ्जन निराकार॥
जाको कोउ न पायो पाररे।
निगम गावै पार न पावै ब्रह्मा मुख उचरे॥
ध्यान धरे वाको पञ्चानन श्रीपति यश अति अभय भक्त दातार॥

२

मन रामकृष्ण रामकृष्ण ध्यावरे सोई।
महाजप कररे जे हरि प्रसन्न होवेंगे।
मन वच क्रमसों याद कररे ज्ञान करो भवपार परोरे।
प्यारेरे करुणा-सागर तिन पालो सब संसाररे एसे मधुसूदन मुरारिरे॥

मूलतानी ठुमरी—तिताला

मोरो गलो पाँय फेर जाहो।
हथिया चढ़ कर आए मारे बालम लोक जाने उमरावहो॥

२

भई सगन हम जानोरे।
जो तुम रसिया बोलो बालो तुमहूं ते नारि सयानीहो॥

३

मैं गवने नहीं जैहौं राम।
जो गवनेको बात चलै है तापर टोना चलैहौं राम॥

मूलतानी—तिताला

वंसो बजाय जादू डाररे।
मुरलोको धुन सुन भइहूं बावरो बस कियो प्राण हमारारे॥

२

कारोरे बदरिया राम कसो उमड़ आई।
साँवनको ऋतु आई पिया मिलन धाई अरे बहे पुरवैया मनभावन बिना सूना मन्दिरवाहा राम॥कैसो·

मूलतानी ठुमरी—तिताला

उमगो उमगो आवे गोरिया जियरा हमारहो।
कहा करूं कछु बस नहीं मेरो तन कारो मन पियरा हमारहो॥
कृष्णानन्द रुकत नहीं रोके मोहलियो हंस हियरा हमारहो॥

२

परदेसिया मित्र हमारहो तोरे गरवा लागूंगो।
आधो आधो रतियां पिछले पहरवा सोय सोय मैं जागूंगो॥ तोरे०

३

कोई जाय कहो मेरे पोसोंरे कोई।
तुम बिन मोको कल न परत है आ मिलो अपने जीसोंरे कोई॥

४

हरिजीसों मिलना कैसे होय।
पाँच पहर धंधेमें बीते तीन पहर गए सोय॥
बालपनो में खेल गमायो तरुणपनो नारो सङ्ग सोय।
वृद्ध भए चिन्ता बहु बाढ़ी गए जनम सब खोय॥

आगे पीछे नाहन चेत्यो मया-मोहमें गयो विलोय ।
मीरांके प्रभु गिरिधर भज ले हानो होय सो होय ॥

५

चेटक देदे मारा राम ।
जन्त्र मन्त्र जादू करके मन बस कियो हमारा राम॥

मूलतानी—तिताला

सुतड़ोनु आनके जगाई म्हारा राम कौन हमारो बैरो
हौं अपनो निंदियामें सोवत थो धर बहियां मसकाई
म्हारा राम को० ॥

२

यार सांवलिया लगजारे इन नैननपर ।
नैना तेरे बहुत रसीले नेक दरस दिखाय मन पग जारे॥

३

मोरी गईरे नथुनियाको गुच्छ कुंवेपर भोर भई ।
नयारे कुअटवा नई पनिहारिन नयो जोवन नया रूप॥
नयारे दुलहा नईरो दुलहिन नयो नारिको नेह ॥

४

गई गईरे बलम तोरो सेजरे मोरी लाल मुंदरिया
नगीनेको ।
मुन्दरोको मुन्दरो गई गई कंगनवाको कोलरे मोरो०॥

५

जाजारे बटोइया तोरो बाटरे में बहुत दुख पायो ।
जबते गए मोरो सुधहु न लीनो सौतन कोनो घातरे ॥

६

मोहे चेटक देदे मारा राम ।
निसदिन मोकूं सुहावे न भावे कौन बिपतमें डारा
राम ।
आठ पहर लौ लागो क्या करे ब्रह्मानन्द विचारा
राम ॥

७

नैन झरोखे लाग रहा दिल दोउ तेरेरे दोउ मेरे
राम ॥
सांवलो सूरत रस भरो अँखियां रैन भँवर रसवास
लहो० ।

कहाँ प्रभु बिलम रहे सारो रातो ।
लटपटो पाग जुलफ सिर उरझी अँखिया नींद
भरी रसमातो ॥
डगमगात पग धरत चलत मग सांट परो मब
कोमल गातो ।
रहत अवर कहुं कहत अवर कछु हमसों झूठ
हजारा बातो ॥
कहत हांस हुज होत हमारो छबि तिहारो कछु
कहो न जातो ।
गावे गूदर मैं कहे कहे थाको यह सब करतब
तुमहिं सोहातो॥

९

अबतो सुनले बनके टेसुवा अब केह कारनते जलतो
कोनो ।
कहा पूछत हो वीर बराट छैल अधिक दुख दीन
अत्तर बठ मन मोरा बस कान सुधहू न लीनो ॥

१०

एसो कवन लगन लगाईरे भंवरू ।
मैतो सुखसों माने नहीं पाइरे भंवरू ॥
रसदो गला तेरो कौन जाने शोकरङ्ग वोही जाने
जाको नाम गबरू ॥

११

मैं कैसे आऊंगे बैरन मोरो जागे ।
देखत है मोरो सास ननदिया मिलन न देहीं
शोकरङ्गसे करहि चवाव ।

१२

तेरे झंझटमें चकडोर फिरे तेरे नैननमें चतुराई ।
नीको सुन्दर यहि चतुर नारिने बाट चलत आंखलड़ाई
आनबान तेरा ज्ञान ध्यान सबही दुरस्त चलाके
शोकरङ्ग यह रेख मिस्सी दो दाँतनको सफाई ।

१३

मेरे तेरे झगरेका कौन है काजो मेरा दिल तोसे
राजो तू मोसे राजो ।

इन लोगनको मैं वारूं तुमपर जो तू आशिक दिल
भगवावे शोकरङ्ग यह देख मिस्सीदी दांतनकी
सफाई ॥

१४

एरी मैं तो न जानूं थी नेहा यह कैसा होता जब
से हमपर दुख पया तबते यह गलां पहचानो।
लोक लाज मैं तो सुनी थी और काहूंसों कहोन
जाय शोकरङ्ग दारू उसकी जो बतावै उसका मैं
तो गुण मानूंगी।

१५

सिर देदे हारो तैने न जानो सार हमारोरे।
नित दम तेंनु ए गंवार देदे गारोरे ॥
हितसों बिसारी मोहि चितसों बिसारी नीको काम
कछु नहीं कीनो शोकरङ्ग यही सोच बोच रैन
गुजारो ॥

१६

तैने मनलेके मन मेरो कहा कीनोरे।
एक मैंने मन लेके और काहूको न दीनोरे ॥
मन भी लीनो तन भी लीनो शुभ रङ्ग पियामें एक
इम बाकी रहो सो भी मेरो छीनोरे।

१७

तैड़ा दिल तैनु चाहदाने दा यारवे टुक मुखड़ा
वेखलाजा दिल मेड़ाते
दूर दूर जांदा वारो नेड़े नहो आंदा और सङ्ग
रहांदा तेड़ा प्यार ॥

१८

खबर नहिं पाई प्यारेरे।
तबके गए भए वाहीके जीवन प्राण हमारे ॥

१९

कोउ आन मिलावो पीउरेको।
वारिरे सनैया मोरे जनम संघाति आन मिलावो
मोरे जीउरेको ॥

२०

नित माहो तैड़े बलिहारी तैनु मालदाड़े देके ता
हाजेड़ा मेड़ानो
शाह हुसैन मैड़े वागो आया देख जवा पसन्द
पाया नेहड़ानो ॥

२१

मैंतो तेड़ो बंदिया मियां तू नहीं पुछदा मेड़ा हाल।
चोंचकदे घर धीयानो घनोया कोहु इयां होरदे नाल ॥

२२

सलोना टोना कर गयोरी आली मदन मोहन
घनश्याम।
श्याम सलोना रूप रिझोना मोहत कोटिकाम ॥
निशदिन रहत बिसूरत मनमें भूलो तन धन धाम।
कृष्णानन्द भयो चितचेरो रटति रहत नित नाम ॥

२३

मनतू राम नाम सुमरोरे सबही पाप बहाय।
वा दिन तेरो कोई नहींरे आखर राम सहाय ॥

२४

रब नाल नेह लगा फकीरोदोउ नमु रबा बिनु
हूर नहीं दिसदा।
रहत ध्यान ध्यान हरदम उसदा तजा संसार बिखदा।

२५

समधन हम तेरे डारेंगे नवलखा हार।
अपनो उमँगसे करावन लागी घरको कार ॥

२६

अबतो बाबुल मोरे मैं तोरे ढिगवा बैठ रहूंगी।
जो कोई हमसों एक कहेगा मैंवो लाख कहूंगी ॥

२७

अति धूमधाम अरे बनमालिया बंसी बजायरो।
सप्त सुरन अतिजोर प्रेमरस फुकत मन्त्र पढ़डारो ॥

२८

पतिढिगवा सोगी पतियांले जावो मोरे पियके पासुरे।
पिया बिछरण मोहि चैन न आवे तिहारे मिलनको
रहत मोहि आसुरे ॥

२९

कांह मनमें ठानी मेवारीयांको राज महाने बतलावो।
वाका माकड़ा राजदुलारा सङ्ग अजोज दोन अरज
करे रोत पोत भयो थांको ॥

२०

बांधु डोरियां मेरी नीलासी बनो तेरो वर आवेंगे।
डोरा जो तेरा पाटका सोहे ज्यों गोरे हाथ किया
यह सुहागण लगाइया तेरे झुलवेको बहार॥

२१

देवरा छोटल माई आप छोटल और मइसन
करे ठठोलियाँ।
वरजो एसा नहीं कैसे नहीं माने देख उनको
सुभाउरे मैंतो उनसन कछु न कहा हमहूं देहों
गारियाँ॥

२२

आसन बासन पास न गइलो लोगवा धरइ मोहि नाम
कहा करूं कित जाऊं मोरी सजनी छांड़ देहों
यह गाम॥

२३

जोगी तेरारे मरम नहिं पायारे।
कानन कुण्डल गल बिच शैली घर घर अलख
जगायारे॥

२४

माई पिया काहे न बोलत हैं अब मोसों क्यों दे
सोयो पीठ।
किनरे तिया जिन तुम बिलमाए किनरे लगाई दीठ॥

२५

अरे मन भूला भूला कहांरे आदि अन्त वही वही।
जित तित इत उत नित चित रम रहा राम रमैया
है सही॥

२६

जनम जनमको फल पायो मैं आज पियाके मिलनतें।
सुनरी सजनी आज मेरे दुख दारिद्र गए तनतें॥

२७

लागलो चौसेर माए मोहे कब घर आवें पियरवा
वाही देश।
बन बनवा डोलूं ए करहुं जोगनियाको भेश॥

सजन बिदेश गए मोरी कोज न पतियाँ ले आवहुरे।
सो मोरी०।
पार भी गङ्गा पार भी जमुना बिच बालमुवाका
घरबाहुरे॥

३९

माही वाला दिल ले जांदावे कोकरां साड़ा मन भांदावे।
आधी रतियाँ पहरदा तड़का भोरहि आण जगांदावे॥

४०

रसना नाथ नाथ कहि बोल।
काहे मन बकवाद करत है क्षण क्षण वाह डोल॥

४१

छांड़दे कान्हर मैं गारो दूंगी।
एक तो सहूंगी दूजो न सहूंगी तीजी बुरी मोरी सास
ननदिया बहुरि फिर आऊंगी॥

४२

बंगलवा थारो देश छांड़ गयोरे परदेशवा।
तुम बिन मइकूं कल न परत है कैसेके रैन बिहाय॥
आठ पहर चौंसठ घड़ी करहीं जोगण भेश धाय॥

४३

नेक नहीं परदापोसोरो मा कैसे निभहै नेह
जनाबनरो।
छांड़ दीतीवे तेंडी सब जगदी रीत ब्रजको लोग
लुगाई बनाबनरो॥

४४

मुड़ आमो साड़ड़े कोलवे इस दुनियांदा देख तमासा।
इस दुनिया बिच एसाइ दिसदा जीवनेदा धोखा
मरनेदा सांसा॥

४५

बावरी नारि सो मेरो मन ले गई।
करके सिंगार ठाड़ो भई है बिरहा कामको चोट॥
नैनन नीर बहन लागे ठाड़ी खड़ो मोसो छोट।
बिरह बिथा भई मेंपर ठाढ़ी देहलीदी ओट॥

४६

दारातिले तदारे तनदिर दानी दोम तनना द्रुद्र
तुद्रुद्रुद्रुद्र तदरे द्रुद्र दानी ।
बसूरते तबते कमतरो करी खुदा तोराकसीद बदर
सकला मसीद ॥

४७

दानी दोम तनन तन दिरना तन दिरना दिरना दोमतन् ।
दानी उदतन उद तननन तना दानी दारादोम् दोम
तननन तिलातु द्रुतदारे तददानी ॥

४८

अबतो सुनले बनकेरे सुवा अब तो केहु कारण
तेजरवो कौन ।
कहा पूंछतहो बोर बटोही छैल अधिक दुख दौन ॥
अन्तर बैठ मन मोरा बस कोनो सुधहू न लोन ॥

४९

उदन दोमतनन तनदिरना तनना तनना नित ननन
नारे नित ननारे नारे ।
तनतुं मितनन नितननुं मतननमित तनन नारे ॥

५०

बाजो बाजोरे मोहन तेरो बाँसुरो ।
सप्तसुरन और तीनग्रामसों गावत राग धनासिरो ॥
श्रवण सुनत सुध रहत न तनको उठत हूक
जैसे पॉसुरो ।
जानकीदास मिलहु हरि प्रियसो काज कारो
क्यों न हाँसुरो ॥

५१

मैंतो तुमपर वारोरो मुरारोजो पतितपावन
प्रभु करुणासिन्धु ।
गृधिका गोध अजामिल हस्तो गौतम-नारि-शिला
तारोजो ॥
तारे पतित अनेक एक तुम अधम-उधारण हो
व्रतधारोजो ।
जानकीदास पतित शरण आयो अबकी बार
हमारी बनवारोजो ॥

५२

जा जारे भँवरा दूर दूर ।
तेरोही अङ्ग रङ्ग है उनको उन मेरो मन कियो
चूर चूर ॥
जब लग तरुण फल महकत है तब लग रहत
हजूर जूर ।
सूरश्याम हरि मतलबी मधुकर लेत कलिन-रस
घूर घूर ॥

५३

तमाशा अजब नगरका देख ।
पाँच पचीस जात बसे जामें राजा भेष अलेख ॥
राजा इसमें है सबलायक जिसमें मोन न मेख ।
जानकीदास लिखा गुरु गमसो आतम सुख विसेख ॥

५४

बेदरदो महबूब छांदेवे सङ्गसे भी दिल सक्ताइना देवे ।
जानकीदास जा इन बस परदे तन मन धन सब
खोदे रोदे बे ॥

५५

अंजनोनन्दन बुध बलदाई ।
अरुण वरणतन रविका किरण मानो तेजपुञ्ज
अधिकाई ॥
गति मति अति त्रिभुवनपति निरखत निज सुख
करत बड़ाई ॥
हठके हठोले तोड़े वज्रके कोले जानकीदासके सहाई ॥

५६

ठाढ़ो ठाढ़ोरे कदमको छंयां ।
होमैं ठाढ़ी देखों अपनी पवरसों तू जो कहती
नहियां ॥
अब कैसे धोर धरों मोरो सजनी रह्यो न जात घर
महियां ।
प्राणपियासों मिलहों निडर ह्वै डार प्रीतम
गलबहियां ॥

५७

समझत नहीं मूरख नदान प्यारे दिन दोयका इतना गुमान।
राजकाज समाज सकल सुजान सुपन समान ॥
सुर नर मुनि छत्रपति गति गरद भए मशान।
जानकीदास विलास करि हरि आपही भगवान ॥

५८

राम रंगीला बना जनकनन्दिनी बनी।
निरखत चन्द वदन चकोर ज्यों सब नरनारी घनी ॥
आनंद भयोरी जनक दशरथ नृप हरषित भए मिथिलापुरधनी।
गावोरी मिल लछनदास सब यह भली बात बनी ॥

५९

दरस माहि दीजे आरबुबीर।
दास जानके करुना कीजे धरा जात नहिं धीर।
वा दिनको कुछ सुरत करो जब बढ़ा द्रौपदी चीर ॥
जगन्नाथका बार सांवरे काहे भए बेपीर ॥

६०

अब मोरी राखो लाज मुरारी।
सङ्कटमें एक सङ्कट उपजो कहै मरगसो नारी॥
और कछू हम जानत नाहीं आए शरण तिहारी ॥
उलट पवन जब बाबर जरियो स्वान चल्यो गिर झारी॥
नाचन कूदन मृगनी लागी चरनकमलपर वारी।
सूर श्याम प्रभु अवगत लीला आपहि आपु सँवारी ॥

६१

हमरी तुमकूं लाज हरी।
जानत हौ प्रभु अन्तरयामी जो जिय मांह परी ॥
कहत और कुछ और कमायो प्रभुजीसे ठगिन करी।
अत परपञ्च मोट बाँधिके अपने सीस धरी ॥
अपनो औगुण कहालों बखानो पल पल घरी घरी।
सुत बनिता संग मोह लियो है सुध बुध सब बिसरी॥
कीजे पार उतार दीनबंधु अब मोरी नाव भरी।
कहै नानक बिरद तिहारो वाही ओट पकरी ॥

६२

जीवनकों जिन्दगीको व्योहार।
माता पिता भाई सुत बन्धु और पुन ग्रहको नार ॥
देस कोस पुर ग्राम नगर किये जहाँ तहाँ सुख प्यार।
अन्त समै कोउ काम न आवै त्यागे प्रेत पुकार ॥
अबहूं चेत मूढ़ तू मनमें करले सोच विचार।
कृष्णानन्द भजहि गधाबर सिखवत बारंबार ॥

मियां धनाश्री

ठगियारे अरे हाँरे मइ कइ डार ठगोरो एँहा मइको कानन परत सब निस जनिया।
ए धन दिल्ली धन दुलहा ख्वाजे कुनबदीन वर पाया ॥
मेरे जान याते करतार तोको सुहाग भाग बढ़ाया ॥

२

अब तो नेह नजर हो राखो ये बने प्यारे।
तुम्हारी दयाते जग जीवन नित महम्मद सा रँगीले लाल सबको सुख देत नयारे ॥

३

सइयो मेनु मुसकल होया आखण जिहा भेकातण।
मित प्यारे बल नित चस्मा ना रहमण हाल न जाण दियां सायण ॥

४

वेसाड़ा हाल रखनु मालम कोइ आखे मेनु कमली हुई कोइ आखे मजन आलम ॥

५

आजको दिन शुभदिन मेरे लेखेरो आलो जी बन बन आएरो लाल मेरे मन्दिर।
बिधाना तोपे एसो मांगत हों एसो मेह बरसे जी हारेलो घरते जहार न जाय श्यामसुन्दर ॥

६

आरे बरमणारे मोरेरे पियाको खबर सुनावो सगुन बिचार।
पोथी बाँचो मोतो वारों दछना देहों रतन मन भर थार ॥

तैंडे देखणदा दीवाना सचा साईं तुसी करदा
बेपरवाही मियां मोणा ।
तू बी सच्चा वाग्र उसदे नाल गुमानी मियां तैंड़े
जोबन साँड़ा मनभाणा ॥

मूलतानी—तिताला

आशक मारा पड़ावे जालम तेरी गरम निगाहकों
अदाका ।
सोता बखबर ले एती पर मेरी पूछत नहियाँ
सुना जाहिहाल सदारङ्ग गदाका ॥

२

साधो मनका मान त्यागो ।
कामक्रोध सङ्गत दुरजनकी तातें अहनिश भागो ॥
सुखदुख दोनों समकर जानो और मान अपमाना ।
हरष शोकतें रहें अतीता तिन जग तत्त पहँचाना ॥
असुत निन्दा दोउ त्यागो खोजो पदनिर्वाना ।
जन-नानक यह खेला कठन है किनहूं गुरमुख जाना॥

३

साधो रचना राम बनाइ गए एक बिनसे एक
अस्थिर मानि अचरज लिख नहिं जाई ।
काम क्रोध मोह बस प्राणी हरि मूरत बिसराई ॥
झूठा तन साचा कर जानि ज्यों बादरकी छाई ।
जन-नानक जानो जग मिथ्या रहो राम शरण लाई॥

४

साधो यह मन गह्यो न जाई चञ्चल तृष्णा सङ्ग
बसत है यातें थिर न रहाई ।
कठन क्रोध घटहीके भीतर जेहि सुध सब बिसराई॥
रतन ज्ञान सबको हरि लीनो ताको कुछ न बिसाई ।
जोगी जतन करत सब हारे गुनी गुन गाई ॥
जन-नानक हरि भए दयाल तो सब बिधि बन जाई ।

५

कोउ माइ भलो मन समझावे ।
वेद पुरान साधसंग सुनि कर निमिख न हरिगुण गावे॥
दुर्लभ देह पाय मानुषको बिरथा जनम गँवावे ।
माया मोह महासङ्कट बन तासों रुचि उपजावे ॥
अन्तर बाहर सदासङ्ग प्रभु तासों नेह न लावे ।
नानक मुकत ताह तुम मानो जेहि घट राम समावे ॥

६

मनरे कहा भयो तू बौरा ।
अहनिश औध घटे नहीं जानत भयो लोभ सँग हौरा॥
जो तन तें अपनो कर मान्यो अरु सुन्दर ग्रहनार ।
इनमें कुछ तेरोरे नाहीं देखो सोच बिचार ॥
रतन जतन अपनेतें छाड्यो गोविन्द गत नहीं जानी ॥
निमष न प्रेम भयो चरनन सों बिरथा अवध बिसरानी।
कहे नानक सोई नर सुखिया राम नाम गुण गावे ॥
और सकल जग माया मोह्या निर्भय पद नहिं पावे ।

७

साधो गोविंदके गुण गावो ।
मानुष जनम अमोलख पायो बिरथा काहे गँवावो ॥
पतित पुनीत दीनबन्धु हरि शरण ताह तुम आवो ।
गजको त्रास मिट्यो तिहि सुमरन तुम काहे
बिसरावो ॥
तज अभिमान मोह माया पुनि भजन राम चितलावो
नानक कहत मुक्तपन्थ यह गुरमुख हो तुम पावो ॥

८

भूल्यो मन माया उरझाय कैसेके समझाऊं राम ।
जों जों करम कियो लालच बस आपतें आप
बंधायो राम ॥
संग स्वामीसों जान्यों नाहीं बन खोजनको धायो ।
रतन राम घट हीके भितर ताको ज्ञान न पायो ॥
नानक प्रभु भगवन्त भजन बिनु बिरथा जनम गँवायो॥

९

काहौं कहा अपनी अधमाई ।
उरझो रहो कनक कामिनि रस नहिं कीरत
प्रभु गाई ॥

जग झूठेको साँचा जानके तैसोउ रूप उपजाई।
दीनबन्धुको सुमरन करले सदा होत सहाई॥
मगन रह्यो मायामें निशिदिन छूटी न मनकी काई।
कहै नानक अब नाहीं अनतगति बिन हरिको
शरणाई॥

१०

रेनर यह सांचो जिय धारो।
सकल जगतहै जैसे सुपना बिनसत लगत न बार॥
बालूभीत बनाय रचपच रहत नहीं दिनचार।
तैसोही यह सुख मायाको उरझ रहेरो गँवार॥
अजहूं समझ कछु बिगर गयो ना भजले नाम मुरारि।
कहै नानक निज मत साधनको भाष्यो ताहि पुकार॥

११

जो नर दुखमें दुख नहीं माना।
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके कञ्चन माटो जाना॥
नाहीं निन्दा अस्तुति जाके लोभ मोह अभिमाना।
हरष शोकते रहै अतीता नाहिन मान अपमाना॥
काम क्रोध और लोभ मोहते जामें नाहीं रहै ठाना।
नानक हरियश गावो निशदिन करले गुरुके ध्याना॥

यह जग मीत न देख्या काई
सकल जगत अपने सुख लाग्या दुखमें सङ्ग न होई॥
दारा मीत पूत सम्बन्धी सगरे धनसे लागे।
जबहीं निरधन देख्यो नरको सङ्ग छांड़ि सब भागे॥
कहां कहा यह नर बौरेको इनसों नेह लगायो।
दीनानाथ सकल भयभञ्जन यश ताको बिसरायो॥
स्वान पूंछ ज्यों होय न सूधो जतन बहुत मैं कीनो।
नानक लाज बिरदकी राखो नाम तिहारो लीनो॥

मुलतानी—आड़ा चौताला

अबही तुम करमें दर्पण ले देखहु प्यारे पाछे और
कोजो जाय
वाहीके जावो जाके रँग राते हो आय॥
मुकरत काहे बलमाहो भला गुण मानो जो
लुका लुकत सो हम पाय।

रूपक ख्याल तिताला

लालको लगन कैसे छूटे॥
लाख जतन कर मन समझाऊं पै बालेपनकी
प्रीत लगी कैसे खूटे।
कृष्णरसिक नेक न मानत बरबस हिल मिल जूटे॥

मुलतानी—तिताला

साधो भाई सोई साधु परवाना।
हरिको भजन हरिको माला हरि हरि हरि लवलीना॥

२

मिल लीनो मेंड़ो महेलड़ियां असीसा हरड़े घर जावों।
अम्मा सानुदाज रँगाये एक चोली एक चुन्नी
गबरू साड़े लैने आये अखियाँ भर भर रुन्नी॥

३

हम देखोली लालन संग जातोरे।
सुरंग चुनरिया जरद किनरिया यह जोबन
मदमातोरे॥

४

हरवा गरवा डारोंगी मा जो पाय आवे मोरे मँदिरवा।
चतुर सुघर बालमवा सौंरे कवन देश रहिनवा।
सदारङ्ग कोई आन मिलावे उनके परसु चरणवा॥

५

रब खैबा लगामो पारवे आजम नियट गरोबाँदा।
तौड़े महरदो में कोगल्ल आँखों तू सांई माहब मत्तारवे॥

६

मगरो रतियाँ जागलो मा पियके सङ्ग में पागलो।
जागलो जागलो जागलोमा० ॥
रैन दिना रुड़कं कल न महरबान पलकनमों
पलक न लागलोमा०॥

७

राज मितवा बालम मोरारे।
अपने सइयांको मैं सपनेमें देखो लाग कहे मोहि बौरारे॥

मुलतानी—तान मवारी

मोपै कान्हड़ाने गाढ़ो रङ्ग माहारे मोपै
कान्हड़ाने गाढ़ो रङ्ग डारोरे।
कहत सकतई एरी सखी मापै गा०॥

मुलतानी—तिताला

माईरी अचरज यह जग जीवणा।
रसभरी मूरत रँग वरमाइलो अमृत पियाला
भर पीवणा॥

२

प्रभुजी मैंने एकही तुमकूँ जाना।
और जग नाहीं पहिचाना॥
तुमही आदि अन्तही तुमही तुमहीते सब प्रगटाना।
जीव जन्तु पशु पन्नग सुर नर तुमही अँतर मनमाना।
कृष्णानन्द हरि सर्व भूतनमें ब्रह्मरूप ह्वै समाना॥

३

प्रभु मैं कछु नाहिं दोष विचारो।
हौं तो आयो शरण तुम्हारो अपनो विरद हरि पारो॥
ना मोमें ज्ञान ध्यान ना सुमरण अज्ञान फिरत
मतवारो।
कृष्णानन्द एक भरोसो चरणको भवसागर पार
उतारो॥

(अथ ऊधौजीको विदा बद्रिकाश्रमसें)

केदारो—तिताला

तुमारो बचन न मेट्यो जाई।
परमनाथ कृपाल परम-सुजान जादोराई॥
कहत पठवत बद्रिकाश्रम गूढ़ ज्ञान सिखाई।
सकुचि साहस करत मनपं चलत परत न पाई॥
पताकाके दण्ड जोतन लियो सङ्ग लगाई।
कहा कहहिं चित चरण सन्मुख वसन पवन नसाई॥
मेरे हिया हिरदयके गुण कठिन सकल सुभाई।
सूर सूखे वचन सुनि सुनि हियो खण्डन थाई॥

२

करुणा-सिन्धु कृपाल हरिसों हौं कहा कहौं।
प्रभु अन्तरयामी जानत सब यह सुनि सोचि रहौं॥
आयसु देत शाहु बद्रीबन कह्यो सो कियो चहौं।
बिनु मन बुद्धि जड़ देह दयानिध कैसे ले निबहौं॥
समुझि आपनो करणी गुसाँई काहे न सूल सहौं।
मैं यहि ज्ञान छलो व्रजयुवती कियो सो क्यों न लहौं॥
प्रगट पाप तन ताप सूर प्रभु काहे पर हठहि गहौं।
अब उर बीच विवेक अनल भरि विरह बिथाकों दहौं॥

(प्रभासलीला उपरान्त अर्जुन द्वारकासे हस्तिनापुर आये)

मुलतानी—तिताला

हरि बिन को पूरे मेरो स्वारथ।
मोड़त हाथ शोश कर पटकत रुदन करत नृपपारथ॥
थाके हस्त चरण गति थाकी अरु थाके पुरुषारथ।
पांच बान शङ्करके दीने ते पुनि गये अकारथ॥
जाके सङ्ग सेतु बँध कीनो अरु जीत्याहा भारथ।
चलि नहिं सकत सूरके प्रभु बिन घट नहिं प्राण
पदारथ॥

धनाश्री—तिताला

कहाँलों गनं गुण कान्ह तुम्हारे।
कृपा करी पाँचो पाण्डवपं जहाँ तहां सब काज संवारे॥
कालकूट लाखागृह राखे पन्नग गये उबारे॥
गोह बेधपन करो प्रगट करि गुपतहोसों रिपु मारे।
करखत सभा द्रुपदतनयाको अम्बर आपु सवारे॥
कौरव कुल संघारि दियो सुखये सब काज तिहारे।
असुर जाति नृप किये आप बस पारथके रखवारे॥
भारतसिन्धु कृपाको हित करि खेइत पार उतारे।
सूरदास कुन्ती यश बरणत हरि मतलोक सिधारे॥

(ध्रुवको माताकी शिक्षा)

राग नट—तिताला

रे सुत बिन गोविन्द काउ नाहीं।
तुव दुख दूर करन कारणको ऋँ रिधि निधि
सब चाँहो।
शिव बिरञ्चि सुर नाग मनुज मुनि तिनहूँको
गति मन अवगांहो॥
जगतपिता जगदीश शरण बिनु अनथ अनाथ
न कहूं समांही।
और उपाय सोधि सब देखे तृणसो अगन
मेघकी छांही॥

सूरदास भगवन्त भजन बिन कोटि करहु तो
दुःख न जांही ।

२

ध्रुव ने छ मास तपस्या कीनी ।
वासुदेव भगवन्त नमो नमो यह कहि कहि रसना
रंगभीनो ॥
शुष्क पत्र तरुवरके खाये जल औ पवन भक्ष प्रण लीनो
सखि नारद मुनि उपदेश दियोहै गुह्यज्ञान
मन लयो प्रवीनो ॥
निशदिन हरिको ध्यान धर्यो दृढ़ तत्त्वध्यान
हृदयमें चीनो ।
सूरश्याम प्रभु शीघ्र प्रसन्न भये अचल राजहरि
ध्रुवको दीनो ॥

धनाश्री—तिताला

यशोदा लरकाकों समझावा ।
हार तोर औ बहियां मरोरत जमुना जल भरन
न पावो ॥
कंकर मारत जलहो डारत तिरछो नैन नचावो ।
कृष्णानन्द प्रभु ढीठ लंगरवा पूत अनोखो पावो ॥

२

मेरो माई सांवोसों मन मान्यो ।
और नहीं जगमें मोहि प्यारो ज्यों माना मोहागहो
कान्यो ॥
लोकलाज कुलकान तजो में जबतें भनक परो कान्यो ।
दोनदयाल कृष्ण रसिकहै वेद पुराण बख्यान्यो ॥

३

यशोदा चञ्चल तेरो पूत ।
आनन्दो व्रज भीतर डोलत करत अटपटे सूत ॥
दही दूध घृत ले आगे करि जहाँ जहा धरो दुराई ।
अँधियारे घर कोउ न जाने तहां पहिले ही धाई ॥
गोरसके सब भाजन फोरे माखन खाइ चोराई ।
लरिकनके कर कान मरोरे तहांते चले कुवाई ॥
बांटि देत है बनचरनिकों कौतुक करे विनोद
विचारी ।
परमानन्द प्रभु गोपीवल्लभ भावे मदनमुरारि ॥

ठाड़ी बूझति नैन बिशालै ।
ताहि यशोदा सिखवन लागो त्रिभुवन गुरु गोपालै ॥
बला लेउँ कत घरजात पराए दूध दहीको चोरो ।
ऐसोइ ग्वालि कहति है सासों माट दोहनो फोरो ॥
जिनि पतिया तू इनको बातें युवती सुभाव न जाई ।
जो हम पांच करें काहूको बाबा नन्द दुहाई ॥
खेलत हुते जहाँ रङ्ग अपने झूठे दोष लगावें ।
परमानन्द दास यह बूझि कौन बात जिय भावे ॥

५

विहरत वृन्दावन गोविन्द ।
गोपमण्डली मध्य विराजत श्याम मनोहर
पूरणचन्द ॥
बरहा पीड़ दाम गुञ्जामणि पीत करनिका श्रवण
बिराजनो ।
लोचन लोल कपोल मचिकन सुन्दर वेणु मधुर
धुनि बाजनो ॥
गावत नाचत आनंद मूरत नटवरगति नाना रसरूप ।
बरणत गोपी पावन लीला गोप भेष परमानंदरूप ॥

६

बने विशाल कँवलदलनैन ।
तामें अति चारु विलोकनि गूढ़ भाव सुचित अलिसैन ।
वदनसरोज निकट कुञ्चित बालत मधुर मनोहर बैन ॥
मदन नृपतिको देश महामद बुद्धिबल बसि न
सकत उर चैन ।
सूरदास प्रभु दूत दिनहि दिन पठवत कपट
चुनौती दैन ॥

७

मैना मानत नाहीं बरजों ।
इनके लिए सखी सुनि मेरो बाहिर रहत न बरजों ॥
यद्यपि मात पिता पति त्रासत तऊ न मानत हरजों ।
ह्वां आधान भई सङ्ग डोलत पर्यो पराये कर जों ॥
बिन देखे चटपटोसी लागत मानहु मूंड़ परो परजों ।
को पावे मेरे सुनहु धो सूरश्यामसों बरजों ॥

बनी बन आवत मदनगोपाल ।
नृत्यत हँसत हँसावत किलकत मङ्ग मुदित व्रजबाल ॥
वेणु सुरभ्र उपचंग चङ्ग मुख चलत विविध सुरताल ।
बाज अनेक वेणु रवसों मिलि रणित किङ्कणी जाल ॥
यमुनातटके निकट वंशीवट मन्दसमीर सुढाल ।
राका रजनी विमल शरद शशि क्रीड़त नँदको लाल ॥
श्याम सघनतन कनक पीत-पट उर लखित वनमाल
परमानन्द प्रभु रसिक-शिरोमणि चञ्चल-नैन विशाल ।

९

लाल आज खेलत सुरंग खिलौना ।
कामशब्द उघटत है पपिहा बङ्गी मधुर मिलौना ॥
प्रेम घुमेंड़ लेत हैं फिरकी भमना मन हुसलौना ।
चट्टाबट्टा चौंकत चकई छितज़ मबन्हो करौना ॥
भुमिरि भूमि भुकि बाट देखत हथ बङ्गी मनुज फिरौना ।
परमानन्द ध्यान भक्तनको सब व्रजकैर निरौना ॥

विकल व्रजनाथ-वियोगिनो नारि ।
हा हा नाथ अनाथ करहु जिनि बोलत बांह पसारि ॥
हरिके लाड़ गई जोवनके मर्को न वचन सँभारि ।
जनियत है अपराध हमारो नहीं कुछ दोष मुरारि ॥
ढूंढ़ति बाट घाट गिरिगह्वर उरभि नैन जलधारि ।
सूरदास अभिमान देहके बैठो सर्वस हारि ॥

११

यशोदा तेरो भलो हियो है माई ।
कमल-नैन माखनके कारण बांध्यो उखल लाई ॥
जो सम्पदा देव-मुनि-दुर्लभ सपने न देत देखाई ।
याहोते तूं गर्व्व भुलानो घर बैठे निधि पाई ॥
काहूको सुत रोवत सुनिके दौर लेत हिय लाई ।
अब अपने घरके लरकासों कहा एतो निठुराई ॥
बार बार जल लोचन भरि भरि चितवत कुंवर कन्हाई
कहा करों बलि जाँउ छोरतो तेरीये सौंह देवाई ॥

जो मूरत जल थलमें व्यापक निगम न खोजत पाई ।
सो मूरत तेरे आँगनमें कर दे ताल नचाई ॥
सुरपालक-हरि असुर-संघारक त्रिभुवन जाहि डराई ।
सूरदास प्रभुको यह लीला निगम नेति कहि गाई ॥

१२

रथ पर हँसत लसत पिय प्यारी ।
सङ्ग सखी रागन सुर गावत बाजत साज मिलारी ॥
भुभ रहे घन अति छवि बाढ़ो पवन सुगन्ध निहारी ।
छवि राजत राधा वर विधु सम ख्याल खुशाल अपारी ।

१३

जय जय जय वृषभान-नन्दिनी ।
तीन लोकमें दिखो जोत है लखत तिमिर मिटजात कन्दनी ॥
योगमायासे सृष्ट रचाई कृपा करत जब दुख निकन्दनी ।
रसिक खुशाल सभी बन आवे नाम लेत भवभ्रम निकन्दनी ॥

१४

जनकनन्दिनी दशरथ नन्दन जेंवत अति सुख पावत ।
चहुँ दिशि घेरे मिथिलापुरकी नारि मधुर सुर गावत ॥
आनन्द बढ़्यो युगल छवि निरखत अतिसे प्रेम बढ़ावत ।
गारी देत नाम ले इत उत सुनत श्रवण-मन भावत ॥
मङ्गल मूरति सिय रघुवरको दोउ छवि नैन समावत ।
गोरी-श्याम मनोहर जोरी लखि रति मदन लजावत ॥
अचवायो करकमलन छितमों मुख तम्बोल खवावत ।
लच्छनदास प्राण निवछावर करत सुगन्ध लगावत ॥

१५

लेहुगी नैननको लाह ।
अति माधुरताई अङ्ग अङ्गकी निरखो करि मन चाह ॥
कोटि काम छवि कहि मन लाजत कहुं पावत नहिं थाह ।
लच्छनदास भयो नख सिखलों रूप उदधि अवगाह ॥

१६

श्याम प्यारे मोरे मैं कबको टेरत आवो।
लगत प्रपञ्च लगत नहिं नीको निज मुखरूप देखावो
दाता तीन लोकके तुमही ज्ञान ध्यान बतलावो।
जगतनिवासी व्रजके वासी ख्याल खुशाल सुनावो॥

१७

मैं करहुं आनन्द बधाये मोरे पिय घर आए।
जागे सखीरी भाग हमारे विरहा दुःख गँवाए॥
ख्याल खुशाल भरे अङ्ग अङ्गमें मनवांछित फल पाए

१८

निश दिन आनन्द भइलवा मोरे श्यामसुन्दर घर आए।
सदारङ्ग पिय मनके भवनवा रहसन गरवा लगाए॥

१९

सखी को राजकुमारी एरी मोहि मिल गयो मारग जात
जटा मुकट कोदण्ड चढ़ाए साँवर गोरे गात॥
उत्तर दिशाते आवत सजनी दक्षन दिशाको जात।
आज रहो याही वन माहो बहुरि चलोगे प्रात॥
चलरी सखी मैं तोहि बताओं कन्द-मूल-फल खात।
निपट निसङ्क फिरत वनमाहो काहसों न डरात॥
सङ्ग नार सुकमार सखीरी हों पूछो एक बात।
नैनन हँसि उन सैन बतायो एक देवर एक नाथ।
तीनजने तिहुँ लोकको शोभा दृग देखत न अघात॥
रामचन्द्रकी छबपर कान्हर बिनही मोल बिकात॥

२०

मेरो अलबेलो राजकुमार।
नव सरोज-लोचन रतनारे लम्बी जुल्फें बार।
हों सखी देखे कनक-भवनमें पहरे नव सरहार॥
रामचन्द्रकी छबपर कान्हर बार-बार बलिहार।

२१

आली मोरे छल गयो छैलवा नन्दको कुमार।
पीत पिछोरी काछनी काछे गल गुञ्जनको हार॥
प्रीत लगाय करोरी बेबस नेक न लगी अबार।
या व्रजनिधकी प्रीत कपटकी भई मोरे अँगपार॥

मेरो मन ले गयो, सो मेरा मन ले गयो।
डार ठगोरी वंशीमें कुछ मदनमन्त्र पढ़के गयो॥
लगी चटपटी प्रीत अटपटी चेटकसों चित छ्वै गयो।
वा व्रजनिधकी प्रीत कपटकी लपट झपट दुख
दे गयो॥

२३

पैजनियाँ पग पाय मनोहर।
चलत श्याम धन बाजत राजत निरखि विनोद
मगन मोहे सुर॥
अरु मन मुदित जशोदा जननी पाछे फिरति गहे,
अँगुरी कर।
मनहुँ धेनु तृण छोड़ि बच्छहित प्रेम पुलकि
पय स्रवत पयोधर।
कुण्डल लोल कपोल विराजत लटकन ललित
लुटरिया भुवपर॥
सूर-श्याम अवलोकनको सुख बलकत बाल गोपाल
याकै घर।

२४

आछे मेरे सांवरे हो ऐसी रारि न कीजे।
मधु मेवा पकवान मिठाई जो भावै सो लीजे॥
मद्य माखन ताजो दह्यो अत मीठा पय पीजे।
हठ न करो बलिजाउ यशोदा खोजत खाजत छीजे॥
आनि बतावत अनसही बातें बलि द्रौभ कौन पतीजे।
सूर-श्याम हठि चन्दहि माँगत चन्द कहांते दीजे॥

२५

यशोदा कान्हहुँते दधि प्यारो।
डारि न देति मथनिया रीता तरमन नन्ददुलारो॥
दुध दह्यो माखन ले वारो जाहि करति तू गारो।
कुम्हिलानो मुखचन्द देखि छवि काहे न नैन निहारो।
ब्रह्मा शिव मुनि ध्यान न पावत सो व्रजगाइन चारो।
सूर-श्यामका बलि बलि जइए जीवन प्राण हमारो॥

२६

कानको कनछेदनो हाथ सुहाई भेली गुड़की।

विधि विहसत हरि हेरि हेरि गति यशोमतिकेर
धकधकी उरको ॥
रोचन भर ले देन सोहसे श्रवण निकट अतही
चातुरको।
कञ्चनको हे दूर मगाँई लिए कहा कहे छेदन
आतुरको ॥
लोचन भरि-भरि दोउ माताके कनछेदन देखत
जीमुरकी ।
रोवत देखि जननी अकुलानी लियो तुरत
नौवाको भुरको ॥
हँसत नन्द युवती सब विहँसी झमकि चली
छवि भोतर ढ़रको ।
सूरदास नंद करत बधाई अति आनँद बाला व्रजपुरको ॥

२७

हरि छवि देखि नैन ललचाने ।
एकटक रहे चकोर चन्द ज्यों निमिष बिसरि ठहराने ॥
मेरो कह्यो सुनत नहिं श्रवणनि लोकलाज न लजाने।
गए अकुलाय धाय मा देखत नेकहु नाहिं सकाने ॥
जैसे सुभट जात रन सनमुख लरत न कबहुँ पराने।
सूरदास ऐसे हो इनके श्याम रङ्ग लपटाने ॥

२८

आपुन चढ़े कदमपर धाई ।
वदन सकोरि भौंह मोरत है हाँक देत करि
नन्द दुहाई ॥
जाय कही मैयाके आगे लेहु सबै मिलि मोहि बंधाई।
मोको जुरो मारन जब आई तब दोनो गुंडरो
पटकाई ॥
एसे करि मोको तुम पायो मानो इनको मैं करो
चेराई ।
सूर-श्याम वो दिन बिसराए जब बांधेते औखल धाई॥

२९

मोहन मानो मनायो मेरो ।
हौं बलिहारी कमल-नयनको नेकु चिते मुख फेरो ॥
माखन खाहु लेहु मुख मुरली ग्वालन बालन टेरो ॥
जोरी करिके जोर आपनो न्यारो गैयां घेरो ।
कारो कहि कहि मोह खिजावत नहीं बरजत
वल अधिक अनेरो ॥
इन्द्रनोलमणिसो तनसुन्दर कहा जाने बल चेरो ।
मेरो सुत शिरताज सबनको सबते कान्ह बड़ेरो ॥
परमानन्द भोर भयो गावे विसद विमल यश तेरो ॥

३०

वदन निहारत है नंदरानी ।
कोटि काम शत कोटि चन्द्रमा कोटिक रवि वारति
जिय जानी ॥
शिव विरिञ्चि जाको पार न पावत शेष सहस
गावत रसनारी ।
गोद खिलावति महरि यशोदा परमानन्द किये
बलिहारी ॥

३१

आजु नोको बनी राधिका नागरी ।
व्रजयुवति यूथमें रूप अति चतुराई शोल सिङ्गार
गुण सबनितें आगरी ।
कमल दक्षन भुजा वाम भुज अंश सखी गावति
सरस मिलि मधुर सुर रागरी ॥
सकल विद्याविदित हँसि हरिवंश हित मिलित
नवकुञ्जवर श्याम बड़ भागरी ॥

३२

हौं चरणनको चेरो राम ।
नहीं और अवलम्ब जगतमें प्रबल पक्ष मोहे तेरो राम॥
पाऊं निज परतच्छ प्रमादो दास आहु कहि
टेरो राम ॥
भक्त अनेक एक मैं किङ्कर कृपा-दृगन मोहे हेरो राम ॥
काम क्रोध मद गलित गयँदको शान्ति छमा पथ
फेरो राम ।
प्रेमरङ्ग प्रभु पायके लायक दीजो निज पद डेरो राम ॥

३३

घुटरुन राम चलत निज आँगन झनन झनन
पैजनिया बाजी ।

पाछे लछमन धाय धरत पद ता पाछे त्योंही
भरत शत्रुघन ॥
जननी तीन उचकि मुख चुम्बत छिनमें चारो छैल
बिचरण ।
रामचरण तिहुँ पकरन ढवरत मानहु वेद वादन
तत पावन ॥
नृप आए अतिकौतिक पाये भरत शत्रुघन गोदमें
आवन ।
प्रेमरङ्ग प्रभु राम लछमन लखि पीठ पें जाय बैठे
दोउ कांधन ॥

३४

राम मोहि कवन औगुण बिसरायो ।
पुण्य पापसों देह बनत है तैसो जनम हम पायो ॥
सब जन चाहत सुख पावनको दुखकों किन उपजायो ।
पूर्व जनमके करम कार तुम अब मोहे काहे सतायो ॥
आप अशुभ औ शुभ कराय प्रभु निज अज्ञान सुवायो ।
प्रेमरङ्ग निजपद करि आशा निशदिन तुअ
यश गायो

३५

पनघटवा जान नहीं पाऊं मैं ।
जैसोइ नाच नचावत मोहन तैसोइ जल भर ल्याऊं मैं ॥
जो कहिए काहूसों या गत तो कुललाज लजाऊं मैं ॥
नित युगराज जाहि मग जइयो कहांलों रार
बचाऊं मैं ।

३६

राम मैंड़ो औगुण चित न धरो ।
औगुणहारोने औगुण कीना आपुन फजल करो ॥
अपनी ओर निभाहे बनत है जाको कर पकरो ।
रूपमती पिया बाजबहादुर अब मेरो सुधरो ॥

३७

राम बिना मैं देखो तेरा सङ्ग नाहिं कोउ साथीरे ।
छत्रपति और योध महीपति हारे भ्रमत हाथीरे ॥
कर अभिमान रामसों बिमुख मायाके रङ्ग रातीरे ।
धर्मराय जब लेखो मागे फाटेगो तब छातीरे ॥

मधुकर प्रभुसों यह जाय कहियो यह जाय
दीजो पातीरे ।
चरणशरण परताप निहारे प्रेम तरे गुजरातीरे ॥

३८

रावण जीत राम घर आए ।
अवधपुरीमें शोभा छाए तिहूंलोक गुण गाए ॥
राजत राज-सिंघासन बैठे युगलरूप मन भाए ।
निरखत सभा समाज जहां तहं प्रेम मनोरथ पाए ॥
आनँद धुन प्रगटाय रही पुर मङ्गल-मोद बढ़ाए ।
रसिक खुशाल बिलोकत निश दिन जीवनके फल पाए ॥

३९

विहरत जगन्नाथ सुखदाई ।
पुरी माह निरखत नरनारी त्रिभुवनकी छवि छाई ॥
भक्त हेत बहु लीला धारी उपमा बरनि न जाई ।
रसिक खुशाल मकल सुख बिलसत जीवनके
फल पाई ॥

४०

ललित लतननतरे डोलो व्रजावे नन्दकिशोर
पियारा हमारा ।
सुन सखी देख भेष नटनागर नैन मैन गुण भरे
अपारा ॥
हास बिलास हुलास प्रेमके मोहनी मूरत कुमर
दुलारा ।
निश दिन ध्यान खुशाल करत है यशुमतलाल
कृपाल निहारा ॥

४१

दर्शन दीजे त्रिभुवनपाली ।
त्रिभुवन-नायक बहु सुखदायक बिलम करो
मत हाली ।
अति उदार गति अगम निगमके रसिकनके रस
ख्याली ॥
श्रीकमलापति व्रजके वासी कर खुशाल प्रतिपाली ॥

४२

राधाराणीके बोलनपे मैं वारियाँ ।

गुण अपार कोई पार न पावत मेरे सकल रस सारियाँ ॥
जा बस करत रसिक मनमोहन यों अञ्जन छवि धारियाँ।
ख्याल खुशालके छैल छबीले लखत करत बस प्यारियाँ ॥

४३

देख मन गङ्गाकी धारा।
प्रगट भई हरिके चरणनते सकल लोक निस्तारा ॥
कातिक माह बिराजत अति छवि घाटन घाट अपारा
आरति करत सकल नरनारी जय जय कहत पुकारा॥
चार पदारथ भक्तनके घर होत न लागत बारा।
ख्याल खुशाल सभी बन आए भाई भगत उदारा ॥

४४

सखी मेरे बनमें बसी है मोहनी मूरत आय।
ऋतु रस माह किलोल करत है आनँद उर उमगाय॥
नैन सैन से मन चितचोरत रँग रहे रङ्ग लुभाय।
ख्याल खुशाल करत बस निरखत प्रेम प्रीत उरझाय

४५

कैसे धीर धरू ऊधो तुम योग सिखावन आए।
एक समय हरि अपने करनन करणफूल पहराए ॥
ता करनन माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पठाए।
चीर चोर चित चोर चोर दधि चोरो करहु न पाए ॥
पिछली प्रीत कहा भई ऊधो अब गुरुज्ञान लिखाए।
वेणी हार गुहे कर अपने एड़ियन जावक लाए ॥
शरद समय वृन्दावन मोहन रास विलास कराए।
लागी लगन कैसे छूटे सजनी चित हरि नेजु चुराए ॥
जैसे चकोर चन्द्रको निरखत एकटग रहत लगाए।
हरि जो हमसों प्रीतसु करके मधुवनको जो सिधाए ॥
तलफत जल बिन मीन ज्यों ऊधो कैसेके जीव जिवाए।
कहा कहिये सखी श्यामसुन्दरसों हमरी सुरत बिसराए ॥
कबहुँ धों सुध करत गोकुलकी यशोमती और नन्दराए।।
ग्वाल बाल गउ बच्छ लता घन सबहि रहे मुरझाए ॥
सूर श्यामको वेग ले आवो जो चहो प्राण जिवाए।

४६

मैं तो तेरी साँवरी सूरतपर वारी वनवारीरे ॥
वारी वारी वार डारी गिरधारी चितते मोह न बिसारीरे ॥
निशदिन ज्ञान ध्यान सुमरण तेरो घड़ी पल छिन याद लगी हरि तिहारीरे।
क्रीट मुकट मकराकृत कुण्डल शङ्ख चक्र गदा पद्मके धारीरे ॥
सांवरी सूरत रस भरी मूरत ज़ुल्फें सोहै घूँघरवारीरे।
ब्रह्मादिक नारद शनकादिक शत-सहस्र मुख किरत उचारीरे ॥
ध्रुव प्रह्लाद अंबरीष विभीषण गौतम नारशिलाको तारीरे।
शुक नारद भीषम श्रुतदेवा रटत रहत गोविन्द मुरारिरे ॥
गीध औ व्याध अजामिल हस्ती शिवरी नार गणिकाहु उधारीरे।
रङ्का बङ्का पीपा नामा नाभ धना रैदास सूँ ऊ गंवारीरे॥
तारे अनेक एक तुम श्रीपत सन्तनके सुखकारीरे।
भूचर खेचर जलचर बनचर नीच ऊंच न विचारीरे॥
अबकी बेर करुणाके सागर दीनदयाल सत्यव्रतधारीरे।
देवकृष्ण प्रभु रागसागरको भवसागर करो पारीरे ॥

४७

मनरे तूं धीरज क्यों न धरे।
जाके शिर रघुनाथ विराजे कारज सबही सरे ॥
एक हज़ार वरसके भीतर ऐसो जोग परे।
म्लेच्छ तेजको ऐसे जारे जैसे कीट जरे ॥
दक्षिण फौज बहुरि व्रज आवै एकछत राज करे।
थोरे दिवस आप आपनमें युद्धहि युद्ध मरे ॥
इन्द्रजित रावणको बेटो पूरब जनम धरे।
हरवर पुत्र पुवार घर प्रगटे दिल्लीराज करे ॥

महाबली बलवन्त फौज सो महिपर छत फिरै ॥
असी बरस लग सतजुग बरतें धरमकी वेल फरै ।
तुलसिदास रघुनाथ कृपातें दुष्टन नाश करै ॥

४७

निरख मन माधुरी अनूप ।
मेरे कहे तू मान सोहागन छवि है सुधारस रूप ॥
अति परवीण महागुण-वाले सकल भुवनके भूप ।
लछीराम प्रभु-कृष्णसों मिलले छांह गने मत धूप

४८

एरी बन बाजी बाँसुरिया कैसे रहौं घर देया ।
कलमलात जियरा मिलबेकों है कोई धीर धरैया ॥
आग लगी यह लाज निगोड़ी करिहै कहा चबैया ।
आनंदघन पिया उघर मिलोंगी अब डर करत
बलैया ॥

४९

चञ्चल मन माने नहिं मेरा कैसेके समझाऊं राम ।
गजमां उदर शुचो सुख विषयन भोगत नाहिं
अघाऊं राम ॥
दस इन्द्री तांके बस डोलत तज धीरज कँग
धाऊं राम ।
तनको जतन कारन धन अनको जित-तितमां
घर ल्याऊं राम ॥
मत सङ्गत गत सुन सज्जन मुख चरण-शरण कब
आऊं राम ।
प्रेमरङ्ग प्रभुको पदपावन पावन पावन पाऊं राम ॥

५०

बाधे तेरो बदन विराजत नोको ।
जब तूं इतउत बङ्क विलोकनि होत निशापति फोको ॥
भृकुटी धनुष नैन सर साधे शिर केशरको टीको ।
मनु घूंघट पटमें दुरि बैठो पारिधि रतिपति होको ॥
गतिमें मत्त नाग ज्यों नागरि करै कहति होलोको ।
सूरदास प्रभु विविधि भांति करि मन रिझयो
हरि पीको ॥

५१

साँवरे जिनकर भोरहि रार ।
अपया-सुता तासु पति ऊपर जलसुत नेक निवार ॥
सुरभि सुताको नेक न मानत ढोठो भयो मुरारि ।
कालनेम मधु-कैटभ ऊपर तासों करो पुकार ॥
दधि रस चाहो तो लेहु साँवरे दूं छकरेहु उतार ।
गणपति पिता तासु वैरी रस देहै नँदको नारि ॥
इतनो सुनत गेंद गहि मारी सुनत मातको गार ।
रहसत बिहँसत चले कुञ्जनमें सूरदास बलिहार ॥

अरे बीर कहा कहिये तोसों लगगई लगन मत
पूंछ मोसों ।
बिन देखे घनश्याम लालके मरी जात वह
आपहिसों ॥
कौन सुनै कासों कहुँ सजनी लाज गई अब कोसों ।
विष्णुदास जल मीन पियासी काम चले नहिँ ओसों ॥

५३

मैं तो तांडे बेखणदो रहँदो मुश्ताक् सैन तो तेड़ो
तलाख ।
सुन मोहना तैंडा पंथ निहारत अरु जोयां
भई है हलाख ॥
रैन दिना चैन कल न परत है मैंहदो विरहँदो सलाख ।
विष्णुदास तैंड़ी वरदो कँहादो घरो घरो कहँदो
भाख ॥

५४

मेरो प्रीत गोविंदमां नाहिं घटै मैं तो मोल
मांग लई जिय साखों ।
चित सुमरण करौं नैन अवलोकन स्रवण वाणी
रस यश पूर राखों ।
मनमय करों चरण हिरदे धरों रसना रामनाम
अमृत चाखों ॥
साध सङ्गत बिना भाव न उपजे भाव बिन भक्ति न
होय तोरो ।

कहै रयदास एक विनती हरि पत राखो अब राम
मोरो ॥

५५

कन्हुवां टनुवां कर गइला सुन सुन मोरी मा ।
ऐसा जो मैं जादू जानती क्यों लाती उन सनबा मनुवा ॥
बैठी थी मैं अपने भवनवा आय गयो श्याम मोर
आँगनवा ।
विष्णुदास प्रभु वंशी बजावे डार गयो मनमथके
बनुवा ॥

५६

तैंने मोरी सुरत बिसारी बनवारीरे ।
निशदिन तुम बिन चैन न आवै सुनियो अरज हमारी
गिरिधारीरे ॥
वह चितवन वह कान्ति वदनकी कृष्णानन्द जाउँ
बलिहारीरे ॥

५७

पियाके मिलनको सगुण बिचार ।
लीन्हो जनम करम जेहि कारण समझ समझ मन
बारंबार ।
भोर मोय सुख क्रिया नानाविध पाप पुण्य भयो
उरको हार ॥
निशिदिन गहत रहत उर भीतर बस नहिं कोउ
निठुर करतार ।
गावै गूदर मैं जोगन होकर निशिदिन ढूंढ़त
हरिको द्वार ॥

५८

मनुवा हरि सुमिरणको बान ।
गुरुमुख वाक साधुको सङ्गति भजले सारंगपान ॥
काहेको इतउत मन भटकावत छोड़ कपटको खान ।
गावै गूदर सब जगहै स्वारथी कोउ मत अपना जान ॥

५९

कँहवा हो उलझ रहे पीउ ।
आवै न चैन उन बिन देखे तलफ तलफ रहे जीउ ॥
गावै गूदर मेरी विनती निशिदिन आय बसो मेरे हीउ ॥

६०

पिउको रे हाल न पायो ।
जो सब गए भए उहनीके कोज बहुरि न आयो ॥
नहिं जानो सुख क्यारे भयो वहँ जोरे गयो सो छायो ।
गावै गूदर मोहि अचरज याहीसों गुरुने ज्ञान
बतायो ॥

६१

दिल बस कोनावे वंशीवाले ।
सोहो ज़ुलफें सितम करेदियां नैनावे रतनाले ॥
दिलदा दरद साड़ां तू नहीं जानदा जिंदड़ी लगीहै
गोपाले ।
रसिक गोविंद अभिराम श्याम सुन इश्क़
घने घर घाले ॥

६२

साँवलाजो हों जानो थागे जान ।
थेउ लगाना किटड़े विनन्या पगड़े देखायो मुख आन ॥
प्रकट पुकार करत नख छतियाँ पोक लोक अथरान ।
इनमें भूंठ नहीं तिल जितनो रंग लागो तन वारो
आन ॥

धनाश्री तथा सहाना—ताल जत

सलोना टोना लगी बनरेकों तें कच्चे घड़े भरे पानो ।
हाहा कर कर पइयां पर पर उनहीको हों कुरबानो ॥
मापता हाथां ज़मीन फिरे यहतो अपने अलीके
मदरानो ।
कों अब आँख लगा लू चाटे खशीसे यह जाने
तब आँख लगानो ॥

धनाश्री—तिताला

बिन दामोका गुलाम कहायो यह साहबज़ादा
नौशेरानो ।
कान पकर जब सामने आया तो बातें कामरू जानो ॥
दिलको अँगूठोमें पुतलोका इश्क बँध इश्कको
आगमें फंकानो ।
एसो सोनेको चौकोपै आँखोंको मसनद पलकोंसे
झाड़ बिछानो ॥

चौकी हो गर एसो मशनद हो एसी पलकोंसेही
झरानो।
भला ऐसो क्यों बात न कहिये ऐसो बनरी रैन
बिठानो ॥
एसो अँगोठी आगे इश्कबँध एसाहो तो क्यों न
कहानो।
एक दाना जले मनर लाटले दोनोको अब
ना गहानो ॥
वहाँ प्यारो बनोको बैठावे बना हाथ बाँधे खड़ा रहे
आनो।
भला एसो जग जरा कहिये न क्यों एसो बनरी परे न
बैठानो ॥
एसे बांध बूँध कर कीना अनो गुलाम शाह
हासानो।
अकबर देहरो बैठो सलाम करे एसे टोनिसे देहरी
चढ़ानो ॥

धनाश्री—एकताला

नन्दके फरजन्दजोके मुखड़ा खुब चन्द।
हसन-मन्द दशन-कुन्द जोत कोटि चन्द।
ब्रज-निध आनन्द-कन्द अङ्ग अङ्ग अति-सुगन्ध ॥

मुलतानी—तिताला

अब तो हरि नाम लौ लागो साधो।
सब जगके यह माखन-चोरा नाम धरो बैरागो ॥
कहाँ छोड़ो मोहन मुरलीको कहाँ छोड़ो सब गोपी।
अब मूड़ मुड़ायके धुरकट बाँध्यो माथे मोहन टोपी ॥
मात यशोदा माखन-कारण हाथे बाँध्यो दाम।
नवलकिशोरा भए नव गोरा चेतन वाको नाम ॥
पीताम्बरके भाव दिखावे कटि काछनी कसे।
दाम भक्तके दासो मोराँ रसना कृष्ण बसे ॥

मूलतानी—ताल पश्तो

साड़े घरतु क्यों नहीं आँवदा सांवल तिरछे नैनावाले।
मायल कर सानू घायल कीता ओ फरजन्द नन्दवाले ॥
गबरू मोहना मोहना प्यारा सूरतदा मतवाले।
कृष्णानन्दनू रसवस कीता प्यारीयां मुरलीवाले ॥

धनाश्री—आड़ा चौताला

बालमरे ए बालम अनत न जा अनत न जाइरे।
आँखो भर कर गरे लगावो माहि जियाव जियावहुरे ॥

मूलतानी—आड़ा चौताला

कोऊ कहे वाको समझाय।
माईरी वा बिन मोरा जियरा अकुलाय ॥
निशिदिन बीतत रहे उन समझाय ॥

२

कवन देश गइला मोरा बालमरे लागवा मो अरे
बल वाहु देशके बलिहारीरे।
सो एरो माई उन बिन कल क्यों न परे मदारङ्ग
बीत गई ले जोगवा ॥

मुलतानी—तिताला

तेरो सूरत हो लागे प्यारो।
मनमोहन मुरलीवाले कान्ह चाल चलत हो अति
मतवारो ॥
तेरो तान सुन त्रिभुवन माहि तेने मोहीं ब्रजकी
नारी।
कृष्णानन्द प्रभु वृन्दावनमें रास रच्योहै अतिहो भारो ॥

२

पीतडोरी हो मनते न बिसरे।
लोन होय रहे मोनके संग ज्यों सूरज चन्द
चकोरो हो ॥

३

तोरे माथे हो दुशाला लाल।
सुभग चौतनी सुन्दर राजत गाथे ऊपर शाल ॥

४

सइयाँ हो गुमानी हो गँजवा न पीओ।
दिल्ली शहरका गँजवा मगाया चिलम मगाई
मुलतानी हो ॥

मूलतानी ठुमरी—तिताला

विरहाने घेरी हो एरी एरी मोहि ।
अगल बगल सब लोग बसतहैं बीच मड़ैया मेरी हो ॥

२

गरगजवा न जैहों एरी एरी सखी ।
सास मोरी सोवे ननद मोरी जागे सइयां ले
आँख लजानी हो घर गवना न जैहों एरी एरी सखी ॥

मूलतानी—तिताला

देखहु न पायो गुजर गई रातो ।
मनमोहन बिन कल न परतहै उमगि उमगि आवै
मोरी छातो ।
कृष्णानन्द रटत निशि बासर अखियां रहत
नेह-रस-मातो ॥

२

ऐसे गूजरगढ़में अकेलो ना रहूंगी लाल ।
एकतो सास बैरी दुसरे ननद बैरी तीजे पिया
बिछुरन न सहूंगी लाल ॥

धानी—ताल खेमटा

जिन जावो वाही ओर सांचो कहों सुन बावरिया ।
यमुना-तीर बसत कुञ्जनमें सांवरो चितचोर ॥
तुमहो मानी अपने जोवनकी गरब न करतो थोर ।
वह हँसके मन मोह लेतहै चितवनकी कोर ॥

२

धन रोय रोय अँखियां लाली भई ।
लाली भई रे गुलाली भई ॥
मैं जो जानी पिया मइकूं मनइहैं उलटा मनावन
मैं जो गई ।
सांवन भादोंकी निशि अँधियारी दरकन छतिया
लाली भई ॥

३

लेजा लेजा चोर तोपर गाज परो ।
सारी भी ले गए लहंगा भी ले गए अँगिया ले गए
सोहाग भरो ले० ॥

लेजा बेदरदी बालमुवा मइकूं ले जारे ।
बारा बरस पिया बालारे जोबनवा तेरा बरस मोहे
ले जारे ॥

५

रघुवर नैना लगाय कहां जायगा ।
काहेको तेरो नाव नेवरिया काहेको पतवारियां ॥र०॥

६

महाराजा बनिनिया गौने चली ।
अरे हौं ठाड़ो रहीरे ॥ म० ॥
नैनो रोवे वारो मुख हँसैरे छटकाने खाईहै पछाड़ ।
आए बनिया ले चले गवने नैहर हो गए पहाड़ ॥
अरे हौं ठाड़ो रहीरे ॥ म० ॥

७

बारे करेजवामें लग जारे लग जा मोरे बालम ।
जो पिया हमसे हंस रहतहैं प्रेम गांठ मोसे
खोलजारे खोलजा मोरे० ॥

८

हमारा दिल रखले गोरी तेरा जोबनहै दिनचार ।
दिल्ली शहरको अँगिया मगाई लगीहै गोट किनार ॥

९

आमिल माहीयांवे लगीयांदे फन्दे रत्ते ।
माड़े नालो वारांवे कौन चङ्गरी नैन तेनूं कामन घत्ते ॥

धानी—तिताला

का करले मोरे मारे राम श्याम मोपे ।
टोना करले जादू करले और करले रसवस तोपे ॥

२

सांवला का करले मोपे ।
जादूरे बस कइल मेरो मान ॥
जादू भी किया टोना भी किया तन मन धन सब
हर लइलरे ॥

३

नई आई सुघर पनिहार कुवटा उमड़ रहो ।
ना मैं गोरिया सांचेकी ढारी ना मैं गढ़िले सोनार
कुवटा उ० ॥

धानी मिश्र—तिताला

फिर बोली आधीरात कोयलिया फिर बोलीरे।
सांझ न बोली सकारे बोली बोली अंबुवाकी
डार कोलिया० ॥

धानी—ताल खेमटा

लाला बाला परी तेरा जोवन वारी।
हाथोंदी मिस्सी वारी होठोंदो लाली आखोंदा सुरमा
अच्छा पालारी ॥

झिंझोटी—तिताला

नीका लागारे मेरा मेरो सइयां।
चुन चुन कलियां में सेज बनावती रहस रहस
गर पागा० ॥

धानी—ताल खेमटा

भींजे भींजे दावनरे उमगो सावन।
सुनरे बटोइया लिखलूं सँदेशवा पिया मोर कब
घर आवनरे० ॥

देश—तिताला

का मनमें किया हो राज छोजा ए सुन सइयां हो जो।
म्हारो लहरां लागोंहो आवै ॥
कामन कर बन हम चलो सजनी देवरानि पकरी
बांह जादू किया हो राज ॥
धुर भादोंकी रैन अंधेरी रिम झिम रिम झिम
बरसे पानी।
पाय ठाढ़ी पग टुमकके बाजे त्रिकुवनको झनकारन
साज टोना कियाहो राज ॥

धानी—ताल खेमटा

द्र द्र दोम दोम ततुम तन दिरना तन दिरना तारदानी
धितोली तिल्लाना तिलिलाना तननारे तनना तनना
तनना दर तुंदर दर दिर दिर दिर दिर तदार
तददानी ॥

२

सूरत दोदम् वले न गोयम् नमे गोयम नमे पोयम्।
कसे मरा पुरसद बिगोए बिरादर उरा बे गफ्तमके
जोयम ॥
इं चुनींदा न मदरवीनो श्रो मह्नारबुद आए नदानं
किए गोयम् ॥

३

तुसो शामिल मेड़ड़े नेड़ेवे इश्कदो पई उलझेड़े बेजान।
असी तेड़े छदड़े छदड़े जांदियां घोलियां घोलियां
प्यारियां ॥
रेंदड़ियां तेंदड़ियां मैनू यादड़ियां नोगोलड़ीयां
नोवत्तड़ियां छदड़ियां नोकोत्तड़ियां जीदड़ियां
दित्तड़ियां।
कुरबानड़ियां छलड़ा भलड़ा बाँकड़ा तीखड़ा
मेड़ड़ा प्राण ॥

४

जान जान मै ना जइहों तोरे साथो।
यार पियाते लाख जतन कोनो छिप छिप आऊं
में राती ॥

५

जान मेरे जान जादू कर गया सइयां हो बेईमान।
हम जानी पिया ओर निभावोगे नइया चढ़त गुण
काट गया बेईमान ॥

६

जामदानीको सारी पहरके मेरे मिरजाको लियो
लुभायरे।
बड़ो बड़ो अंखियां लम्बे लम्बे बाल चाल चले जैसे
पूरी छिनाल मिरजाको मन लियो हरके ॥

७

दिल आपो लगा कर मारारे मैं तोरा कहा किया जान।
पोत करी कछु और बसायो कहा करें कछु कहा
न मान ॥

८

जान कजरा दियो कछु थोरारे कजरेका मुजरा
खोल मेरो जान।
इस कजरेको खूब सिलाई जरा मुखसों तो कछु
बोल बोल० ॥

लागोरे सांवन बालम कोयल बोले मदमातो।
जावो सखो मोरे पियाको ले आवो उनको लगेहों
मैं छातो॥

१०

नैना लगाय जियरा ले गयोरे। जा०॥
देख न तोरे बड़ा-बड़ा अरमान॥
हमरा बालमने सुधहू न लोनो पिया बिन
हियरा निकस गयो जान॥

११

मैंना जइहुं पिया हुआ जोबनरे।
इस गांवके ऐंठेरो गैंठे केशर क्यारो खेत।
हमहूं रंगाई चुनरोरे सइयाँ रङ्गायो खेस॥

१२

बेकल होय होय जाय जींद मोरो राम जबते सखो
पिया मोरा बिछुरोरो।
चञ्चल सइयां कोउ वेग मिलावो होंतो दरस बिन
दरदको मारो मरोंरो॥

मुलतानी—खेमटा ताल

तुम कौन प्रोत कोनो मेरो ओर।
नई करो तुम मोसे रोन॥
चकवा चकवो बिछुरे रैन परे तुम चञ्चल बिछुरत
मोसें भोर॥

धानी—खेमटा ताल

मोरे पिया बिना जो घवरावे मैं कहा करूं कित
जाऊं सखोरो।
उन बिन मइकों तलफत बोतत चञ्चल बिरहा सतावे॥

२

छांड़दे देवरा मैं मारो जइहूँ मारो जइहूँ निकासो
जइहूं।
सास ननद मोरो जनमको बैरन इन बातनमें लाज
गमइहूँ॥

३

सुआ सारी हमारी रँगायदे रे।
ऊपर लगादे किनारी मेरो जान।
याम पिया तोरी वारोमैं जाऊं,
छतियांसे छतियां लगायदे रे॥

४

तोरी अँखियां लजानो मोकूं मार डारोमरे।
शाह आज़म पिया मनमें बसतहैं तन मन जियरा
वार डारोरे॥

मुलतानी—खेमटा

ऊधो सांचो सांचो कहियो हरि कब आवेंगे।
जोग पठायो के आवन हूं कह्यो कै कहीं मधुवन
छावेंगे॥
जान परो अब सब चतुराई ऐसेहो प्रोत निभावेंगे।
एवृन्दावन ए वंशोवट माधुरोसो बंग बजावेंगे॥
अब तुम ऊधोजो माधोजोसों कहियो व्रज सुख
कब दिखलावेंगे।
कबहूं सुरत करत या बनको लोला राम रचावेंगे॥
गोपोनाथ सकल जग जानत क्या कुबजानाथ कहावेंगे।
यह सुख ख्याल खुगाल देखाके अब क्या जो तरसावेंगे॥

खम्बा—तिताला

श्रोराधे राधे राधे।
तुम बिन मोको कल न परतहै बिन देखे पल आधे॥
हा हा हो वृषभानुनन्दिनो कहत दाऊकर बाधे।
जानकोदास निरख हिय हरषत दम्पति-रूप अगाधे॥

धानी—तिताला

रे बालम बिन कैसे कटे मोरो रात।
दिन भारो निशिकारो पिया बिन ऐसे ऐसेहो दिन जात॥
भावे न भवन न भोजन न खावन बिन मनभावन
नाहिँ सोहात।
जान बूझ प्रोतम निरमोहो तनक न पूंछो बात॥

२

सइयां निशि जागे गुइयां हमारा संगातो मैं सोवूं
निदियाको मातो।
प्रेम बिना दरसन कैसे पइहों पड़ गई बोच भरमको
टाटो॥

है कोउ ऐसा बेचूं मैं निंदिया यादई मारो जो
मोल बिकाती ॥
जो पिया चाहे सोवत जगावे अन पिया चाहे
कामन माटी ।
सो कामन सोए उठ जागे अपने पियाको लगाए
लूं छाती ॥

३

सइयां गहिलोनो गुइयां टोउ मेरो बहियां ।
अपनी ओरको शरमहै तुमको नेह निभावो
परूं मैं पइयां ॥
गुण औगुण सब माफ करो मैंतो समझत हूं कछु
अब नइयां ।
छप्परसिकमां प्रीत लगीहै चरण-कमलमें है मेरा
ठइयां ॥

४

वंशी बजाके हो मिलाके नैन अरी मन मोहारो
नन्दकुमार ।
ललित त्रिभङ्गी ठाढे कदम तर हो देखत ब्रजको
बहार ॥
वंसी बजाके हो मिलाके० ॥
छाय रहो छवि ख्याल खुशालदो वो जोबन उमगे
अपार ॥

५

कुञ्ज भवन पिय प्यारो अरी दोउ आवेरी भोरहि भोर।
गलबहियां दिये मुसकाते श्याम सङ्ग राजत सांवल गोर॥
ख्याल खुशाल विलास विलस रहो राधे नन्दकिशोर॥

६

रङ्ग रङ्ग फूल खिलाई लाई आईहो बागबहार।
बेला चमेली फूली गुलाब सेवती बूटा बूटा गुलजार॥
ख्याल खुशाल करत श्रीराधे सङ्गले नन्दकुमार॥

७

छलबल कर जांदावे सजणा फेरे मुड़आसीवे
साडडे नाल ।
तैडे बेखणदी वांन पइयां सोणा दिलादां महरम
नन्दलाल ॥
क्या एसो चूक पइयाँ यारवे दिखलावो ख्याल खुशाल।
नेह नगरको डगरने अहमद उलटो चाल घायल
फिर फिर मारोए खूनो फिरे खुशाल ॥

धनाश्री—तिताला

भंजंगी संदेशवा उड़रे कागा राह बतादे ।
लिख लिख पतियां सगुण मनावों लागारी अँदेशवा ॥

२

अरे मोरे बाबुल मड़हा छाइयेरे ।
हरे हरे बांस कटावे बाबुल पानन मड़हा छाय ।
मड़हा ऊपर कलसा राजत देखो राजा-राय ॥

३

इथे ढूंढ़ेदी आइयांवे मेरा सांवल यार ।
जङ्गल ढूंढा बेला ढूंढा ढूंढ फिरा मोहन मतवार ॥

धनाश्री - तिताला

बोबो मोड़कारो तूंतो पानीमें कीड़ानो ।
कौवा तेरा भाई भतीजा, चील तेरा दिवरानो ।
बगुला तेरो लहुरो देवरा, ताको देख लजानो ॥
चूहा आशिक संग पदमनी, मेढ़क ताल बजावे ।
कमर बांधके गधा नाचे, ऊंट विष्णुपद गावे ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, यह पदहै निरबाना ।
यह पदको जो निन्दा करिहै, ताको नरक निदाना ॥

२

मोरो तोरो बारे सनैया ।
आठ महीना पिया बाहर रमतहै चार महीना घरवारी।
तैं जो पिया परदेश गवन कोनो घर दावन भई ठाढ़ो॥

३

कैसे कट दिन रात बिसर गया ।
एक तो अंधेरी रातो दूसरे दिया न बातो तीसरे
तिरियाको जात ॥

धनाश्री—तिताला

गोराया जांएरे दखिनवा बोल कगवा ना साइनवा ।

छींकत पानीन् में चलीरी तट जमुनापर ठाढ़ोरी
मनमोहनवा ॥

धानी—तिताला

छोटे देवरा तोरे पइयां परूं बिनती मानो मोर।
लपक झपक मोरी बहियां गहि लीनो मोसें न बोलो
कहा मानोना ॥

२

भइलो साँझहो घरवा न आइलरे कन्हैया।
चार पहर दिन मग जोवत भई कौनधामवा रहिलों
मांझहो ॥

३

गोरिया देतीरे नैननवा भर काजररे।
सास मोरी बेदर्दी दर्द न जाने आधी आधी रतियां
पठावल पनियां सागररे।

४

पिया बिन जोबना मैं कैसे राखूं राम।
सुनियोरी मोरी बगर परोसन अचपल पिया घर नाह।
किन बिलमायो यह दुख मोपे सहिलो न जाय ॥

५

तोड़ी सारे जगतसों जोड़ी तुमसों पोत।
तापर भी तुम ना मिलो अजब तिहारो रीत ॥

६

कोई जाय कहो मोरे पियारे बालमसों तुम
बिन रहिलो न जाय सजनो।
कल न परत तुम बिन मोकूं मोहन दिन बीतो अब
भई रजनो ॥

७

हांरे सुवा बसियारे करले भाटोंको सैल।
बारा बरस पाछे सइयां मोरे आइलो नैनामें
रखती मैं मैल ॥

८

प्रीत लगी तेरे नील बालम चलिहों के नाहीं।
जो मैं जनतो सइयां मेरे अइहैं रखती मैं जोवना
बनाय ॥

मोरी तोरी अंखियां लगी लेजा लेजा बालमुवाके साथ।
छोटासा देवरा मोरा गोदीके खेलैया नैना लगे
सिपैया तेरे साथ ॥

मुलतानी—तिताला

नोबूला मैं तोसे न बोलूंरे वेसर अटको डार।
एकतो नोबूला काट कटोला दूसरे रसोलो ताड़ाँ यार ॥

२

भटकत कौन फिरेरे गुसैंया मोरे।
कोटिन तोरथ मनहींके अन्दर काहेकों भरम
करेरे गुसै० ॥

धानी—तिताला

फुलबरीया बीनन गईलो अरी ए ननदोया हमरे
मन्दिरवा।
रायवेली चमेली चम्पा दवनामरुवा गुलाब केतको
सोसनजाई जुही नरगस शौक रङ्ग डारो हरवा ॥

२

छोटे देवरा मोंसे बोलोना तोरे पइयां परूं मैं
अरज करूं।
छोटेहो देवरा छोटे लरकैया छोटे जोवना मैं
कैसे भरूं ॥

३

बाव बहत पुरवैयाके सइयां मोरे सोवे यह पुरवैया।
मोरा बैरन सइयां नहीं जागे ॥
अम्बाकी डारो पदड़ खड़ो गोरा बैराग भरो।
क्यों तारे नहीं यार डर कै क्या तेरो सास बुरो ॥
न मोरे नैहर डर न मोरो सास बुरो।
तूं चलो जारे बोर बटोई तुझे मेरो क्या परो ॥
जोमैं बनकी कोयलिया मैं बन बन रहतोरे।
जो पिया जावे शिकारकों में शबद सुनातोरे ॥
जोमैं जालकी मछरीया जल जल रहतोरे।
जो पीया जावैं न्हानेकों मैं पइयां छुहातोरे ॥

बादरवा गरजे गरजे पिया सौतनिया गइलोरे।
एक अँधियारी दूजी बिजुरी चमकै पिया बिन हिया
मोरा लरजैसो० ॥

५

या कैसे कटै दिन रैन बालम तुम बिन सइकुं।
एकहु घरी मांहि कल न परतहै यासों गयो सुख चैन।
कासे कहूं बिपत बिरहाका फूट बहै दोउ नैन ॥

६

इहवां तो बन्धवे दुलहे फाटोसी पगड़िया चल मोरे
नैहरवा तोके सिरवा बन्धावूं।
इहवां पहरवे दुलहै जामा पुराणवा चल मोरे
नैहरवा खासा मलमलकेहैं जामवा सइयां।
इहांतो उढ़वे दुलहे फाटोसा दुपट्टा चल मोरे
नैहरवा तोके चद्दर उढ़ावूं॥
इहवां तो खावे दुलहे टूटे मूटे बसना चल मोरे
नैहरवा खासा साग मगैहूं।
इहवां तो मिलत न फूटे टूटे लोटवा चल मोरे
नैहरवा खासा झारावा मगहूं दुलहे मोरे० ॥
इहवां तोकों नहीं मिलत बिछौना चलो मोरे
नैहरवा खासा सेजिया बिछैहूं दुलहु मोरे०।
इहवां तो सोब दुलहे हाथको उटगनो चल मोरे
नैहरवा तोहे तकीया बनैहूं॥
इहवां तोके नहीं लागत बहरिया चलो मैं तोके
बोजनवा डुलैहूं।
इहवां तो देखवे दुलहै उजरी गढ़ैया चल मोरे
नैहरवा खासा बगीया लगैहूं॥
इहवां तो बन्धवे टूटोसी छपरिया चलो मोरे नैहरवा
खासा भवनवा छवैहूं।
छोटासा देवरा मोरे करमके लिखिया दुलहे
ओहो गुनवामें सहोंरे तोरी बोलिया॥

राग बरवा—तिताला

सइयां बिन ससुरेमें नैहरको बासोहो।
मात पिता घर लग नहीं मोरे हो अचरच आवै
मोहो हांसो॥
पांच पचीसको मन्दिर छाया सइयां नहीं देखों
मैंतो ढूंढ़त उदासो।
गावें गूदर गुरु मोहि लखायो तबतें जो भई मैंतो
चरणको दासीहो॥

२

सइयाँ बिनु नीको नहीं नैहरका रहना।
वारे ब्याह रूप जिन दीना पाँच पचीस पहरायो
मोहि गहना॥
इतना पहर धन चलली ससुरवा सइयां
निरमोहिया जो माने मोरि कहना।
दीन चारि रसनाके कारण गावें गूदर दुख तापर
बड़ सहना॥

सांवनी बरवा—ताल रूपक

अबके सावन सइयाँ अबइहो लेहों चुनरी रङ्गाय।
देख देख कारे बदराको जियरा अधिक हुलसाय।
व्याकुल रहतहों निशिदिन को पतियां लेजाय॥
ज्ञानहोके खंभ बनावतो टोहु ध्यानको डोरी लगाय।
झुलवा झूलोंगो बजहन पियसङ्ग पञ्चतनके गुण गाय॥

२

सइयाँ जो मोरे घर आवैहो दियला मैं घीके जराय।
सावन मास सोहावन पिया बिन रहो ना जाय।
झुलना झूलूं त्यों बालम सङ्ग चूनर लेतो रङ्गाय॥
झम झम आवै ज्योंज्यों बदरा त्यों त्यों जियरा डराय।
आस न छांडो बजहन कहतहै साहेब तेराहै सहाय॥

३

अबके सावन स्वामी घर रहो मूरख गँवार।
दामनी दमके जियरा लरजइ हो बरसेहै बरषा बहार॥
सांप न छाड़इ कछुकी, नदिया छाड़े न करार।
चतुर ना छांड़े वाला जोवन, जोबनको सुखसार॥
पइयां परत बजहन सिखवत बिलसहि कर
सुख प्यार॥

बीजुरी चमकै जियरा लरजइहो सइयाँ नहीं आए हमार।
कारी कारी घटा आगन छाईहो कासों कहीं मैं पुकार।
नान्ही नान्ही बून्द मेहा बरसै हो कोयल टेरत गोहार॥
कासों कहौं सन्देशवाहो काम करत तन गार।
अबकी बार घर आवहु वजहन ओर निहार॥

५

एरीए में भींजत उन बिन कबको खड़ी बिरह सतावत घरोरे घरी एरी।
सपनेमें आय मोरो मन लेगया दे गयोरे मोतियनकी लरी एरी० ॥
बिन रसिया जियरवा उमड़ोहो आवै लाग रही असुअनकी भरी अरीए में भी० ॥

६

करकी सुनत मोरा जिया धरके चमक चमक बीजरी करकेरे।
बौरी फिरतहूं तुम बिन रसीया लोगवा हंसत मोरे हिरकेरे ॥
कृष्णानन्द चुभी चितवन तोरी निशिवासर मोरे हिय खरकेरे ॥

मल्हार—तिताला

अच्छा नीका टोना लागे साँवरेको रस बस होय मेरे जानो।
अब हाहा कर कर पइयाँ पर पर बनरोंके हा कुरहानो।
जन्तर मन्तर जादू करके बनरो हाथ बिकानो॥
करखा कहा सुनहै कहा बनरा बस भए आनो।
नाचता हाथों ज़मान फिरे यहतो अपनाः बनोके भए मानो॥
बनरोंसे अब आंख लगावत निरखत भएहैं लजानो।
बिन दामोंका गुलाम कहाया कामकू मन्त्र पढ़ानो॥
दिलको अङ्गूठीमें पुंतलीका इस वस्त ईशककी आग लगानो।
सोनेकी चौकी पर आंखकी मसनद पलकोंसे सेज बिछानो॥
कान पकर कर सामने आया हाजिरहै फरमानो।
कृष्णरसिकको रस बस करलिए राधे हाथ बिकानो॥

बरवा—तिताला

नैनवा लगाए लिए जायहो बलमा मोरे।
सगरी रयन मोहे तलफत बीतो तलफ तलफ जिय जायहो बलमा॥

२

सइयाँ मोरे वारीका भँवरा कटोली अँखिया।
बीत गयो सावन पीय नहीं आवन तलफ तलफ जिय जात॥

३

पातर मोरी करहैयां वा जानदे बालम मैं फेर ऐहों।
हमरे घरके लोग सब जागतका बदनाम करैयाहो।
अबकी बार मोहे जानदे वजहन तोरे मैं लागूं पइयाँहो॥

४

भेजंगी सन्देशवारे उड़वे कागा राह बतादे।
लिख लिख पतियाँ में सगुन मनातो जा भँवरा वाहु देशवारे॥

५

हमारे तीरथ कौन करे।
मनमें गङ्गा मनमें जमुना भटकत कौन फिरे॥

६

जियरा मोरा लाग रह्योरे रे जइहूं बजारे बजार।
गङ्गा पूजा देवी पूजो और पूजा भैरवनाथ॥

बिहारी—तिताला

लेचल बजारे बजार मोरा जियरा न मानै ननदी।
छोटा ननदी छोटिहो दिवरा छोटिहो चारों कहार॥

पीलू—तिताला

हरि हरि बोलनावे जगमें जोबनहै दिनचार।
जो आया सो सबहो जायगा देखो समझ साच बिचार॥
आप स्वारथीहै सब दुनिया झूठाहै संसार।
जानकीदास आशचरणनको छूट गया जञ्जार॥

बरवा—तिताला

समुझ समुझ मन गुरुकी बचनियां।
जबतें सतगुरु साँच न पाया तीनलोक कहुँ मिले न
शरणियाँ॥
अनभो उदित मुदित घटहीमें निरख निरख छवि
जाए वरणियां।
गावे गूदर संगय भागो जबतें पुरुष चले आप धनियाँ॥

झिंझोटी—ताल खेमटा

एसा किसका होय एसा मगन मन मेरा।
हरि गुरु संत कृपा करी मोपर मिटगया भरम
अँधेरा॥
असन वसन और खान पान सुख शुचि हरिचरणन केरा।
जानकीदास आश भई पूरी भया हजूरी चेरा॥

पीलू—तिताला

मेरो न बनो महाराज शरण आए सबको बनो।
ध्रुवको बनो प्रह्लादको बनो अम्बरीष गजराज॥
शिवरीको बनो अहिल्याको बनो गीध व्याध खगराज।
शुक, नारद, भीष्म, अनदेवा, द्रुपदाको रखीहै लाज॥
शिव, ब्रह्मा, इन्द्रादि, देवता रटत रहत धर्मराज।
पाराशर, पुण्डरीक, व्यासजी, भीष्म, सुदामा, द्विजराज॥
हनुमान, सुत सौनक, वल्लभ, सुग्रीव, ऋषिराज।
रङ्का, बङ्का, पीपा, नामा, सेना, धनाके, किए काज॥
मदनारे दास मीरांबाई कृपा करी व्रजराज।
ब्राह्मण, चत्री, वणिज, अंत्यज, बनचर, निशिचर-राज।
और अनेक पतित तारे तुम कहांलों गिनों मेरे राज।
ऐसाई तेरो निहारो सूर प्रभु जांह गहेकी लाज॥

जंगला—तिताला

मैं हरि पतित-पावन सुने।
हम पतित तुम पतित-पावन दोनो बानक बने॥
गीध, गणिका, गज, अजामिल, साखी निगम भने।
और अधम अनेक तारे जात कापे गने॥
जाम नाम अजान लीनो नरक यमपुर मने।
दास तुलसी शरण आयो राखिए अपने॥

पीलू—तिताला

तेरो मेरोरे जियरा मिल जाय राम।
सकर खटोलना पर दोय सुतवैया कसमसरे
मोपै रहिलो न जाय राम॥

२

तोरा मोरा जियरा अब जारल कौनसो बाटो राम।
हरिनामको रोटो करले आगे शहर नहीं कोई
घाटी राम॥
धर्मराय जब लेखा मागे त्रिवेणीके घाटो राम।
कहत कबीर सुनो भाई साधो;माटीमें मिल गई
माटी राम॥

३

मोहन बसे कृष्ण मेरो कौन नगरीया।
गोकुल ढूंढ़ो बृन्दावन ढूंढ़ो किनहूं न पाई खोज
खबरीया॥

४

मैं देतोरे कजरवा पिया परदेशवा।
कगवाके हाथवा मैं भेजतो सन्देशवा पिय नहीं
आए जिया भयोरे अन्देशवा॥

५

दे कजरा झमकावतरे बांके नैना जोबनाके माते।
सनरङ्गसा पिया गरवा लगावो इनउत काहे
भरमावतरे॥

६

नींद गईनी मारो पिया बिन सजनो कलसे बेकल भई।
चौंप चौंप ख्वाव ख्यालमें नागर रस माहे आन
जगावे ननदो॥

७

मैनु छेड़ना वे काह्न भनक सुनेगा यार।
सुन पावे काई माल मुकद्दम सुन पावे पटवारी।
शाह इसका काजी होटा सिर पर गठड़ी भारी॥

८

तोरे नैनवा दिवाना छुटत नाहीरे।
बड़ो बड़ो अंखीयनमें लाल लाल डारे तेरो सांवरी
सूरत भूलत नाहीरे॥

देश—तिताला

मइको न जगावो सइयां निंदीया लागीरे।
बारे बरस पर सइयां मोरे आइलो पइयां तोरे
लागूं ॥ स० ॥

बरवा—तिताला

बन्धावो म्हारो धीर एरी सखी सॉवन आयो।
भर गए ताल तलैया मोरे सजनी बरसन लागो मेह
उनआई बादरो देरनीया भीजे म्हारो चोलोरे ॥

२

मींया मैनु तारणावो मैनु तारणा।
सोणा तेड़े लटक चाल पर मैवारी० ॥

३

सेवत चरण गुरु धन जगभागु।
कोटिन तीरथन जेही बसे चरणन मह त्रवेणी और
मकर प्रयागु।
दरसन किए अघ गएहु सबही कलमष देखत सबही
खोयो।
तेही.आगि चौरासी भ्रम गयो चारियुग रज द्रग करि
धोयो।
गावै गूदर प्रभु जेहि मति दीनी गुरु-मरजाद
करणसों लागु ॥

४

राम नाम गुण जात न वरणो।
शेष, महेश, शारदा, कृपासिन्ध कहांतक करणी।
हारे आदि अन्त सुर नर मुनि जोजो जनम लियो
यह धरणी ॥
सहस अठाशी नौनाथ सिद्ध योग जुगत कर हारे
हरनी।
चारउ वेद भेद रघुपतिको गावो गूदर सब भए शरणी॥

५

सईयां हमारे पठवल एक चोलो।
तामें पांच तीन नव बूटे पहीन पहीन धन भइ
अनमोलो।
सो चोलोया हम तन मन पहीना सो बन्दोया मोरे
सतगुरु खोलो।
भयो विहार वजहन कर सजनो गुण औगुण चढ़
ज्ञानको डोलो।
गावे गूदर धनीया ससुरे तनो छुट गइला ताना माना
नैहरको बोलो ॥

६

कुबजासे वचन कहुं हरि सोठो।
उर बीच गाढ़ो कुवरी पोठो ॥
कहेहु वचन प्रभु सनमुख ठाड़े वे चेरीको जात
हात जग ढोटो।
गावे गूदर कहिं दास होत ब्रज-दासीके दास भये
हो वसीठो।

७

जनम जनम की प्रीत परोखो।
तब चेरी पटरानी भई है बिधि बड़ भाग राख
ताहि लीखो ॥
सूर्पनखा भंग कियो दियो और तन भई सवत
अमिय विच बोखो।
गावै गूदर कहो मरजादा प्रभु बमकियो कवन
गुण सीखो ॥

८

चलहुके चलहु दुलहे मोरे नैहरवा में तोके लेके ना
अलग होयके रहवूं दुलहे।
इहवां तो खावे दुलहे रूखो सूखो रोटिया चल मोरे
नैहरवा खासा भिनवा भतवा खवैहूं ॥
इहवां तो खावे दुलहे टूटे फूटे पनवा चल मोरे
नैहरवा खासा बिरवा लगैहूं।
इहावातों रहवे दुलहे टूटे फूटे घरवा चल मोरे
नैहरवा खासा बङ्गला छवैहूं ॥
यहांतो सुहवे दुलहे टूटोसी सुपेतीया चल मोरे
नैहरवा तोंके पलंग बिछैहूं।
दूनोरे जोवन असकार खम्भवा गढ़ैहूं आधी रातीया
तोकों झुलवा झुलैहूं ॥

बरवा ठुमरी—तिताला

काहे जियरा हमार हो कमि भूमि आवे।
आपन आवे वारी ना लिख भेजे जब सुध आवे
पीतम प्यारहो ॥
जबके गए भए वांहीके हमारी सुरत बिसारहो।
रागरङ्ग प्रभु ... नमिलो मन्हे बारबार बलिहार हो ॥

२

देखहु न पायो गुजर गई राती।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलानमें मोहन मिले तो लगाय
लूंगी छाती ॥
सुन्दर-श्याम कमल-दल-नैना सांई मेरे जनम
जनमको सङ्घाती।
रागरङ्ग प्रभु मुरली बजावे मधुर मधुर सुर लागतहै
सुहाती ॥

३

रैण रही थारी मोरे सइयां नहीं आएहो।
सगरी रैन मांहि जागत बीती कवन नवल तिया पिया
बिलमाए हो ॥

४

मोहल्यूं जोबनवांकी पार सइयां कैसे धरिहौं धोर।
आधीरात भयाजलोरे घटमें बरसत नीर ॥
पीउ पीउ रटत पपीहरा बोलत मोर गमोर ॥ सइयाँ०।

५

मैंतो आऊं आधीराती तेरा मांझा कुबूंला।
तुमहो मेरे मनमें बसनहो तुमहो मेरे जनम जनमके
सङ्घाती ॥

६

गइलो निशिवा भइलो दिवसवा मोरे सइयां नहीं
आएहो।
मनमें अन्देशवा आलो न सन्देशवा केशवा अनत
बहसवाहो ॥

७

रैन विदा होने लागीरे मीता मोरे।
जैसेहो मैं उनीदी तैसोही जागो हो ललना मोरे ॥
उठ भिनसारवा गरवा लागो हा ललना मोरे ॥

जंगला—तिताला

छल्ला मेरा यारदा निशानो वेखा सइयों।
इस छल्लेदे होग नग जड़ाया बार बार पावां पानो ॥

बरवा—ब्रह्मताल

बोलन लागी हमसों कान्ह याहा ब्रजमें।
तू कौन हैरो कहा तेरा नाम कहदे मो आगे ॥

बरवा ठुमरी—तिताला

मोरा बादरवा गरजेरे पिय परदेशवा मोरे सपनवाहो
गए रामरे।
आगरेको लहंगा बुढ़ानपुरको छींट,
पटनेको मोहनमाला हीराके बीच ॥
मोरे जोयरवा लरजेरे ॥

२

मैं मरों दरदकी माती अटरिया कैसे जाऊंरीमैं०।
सेज चढ़त बाजे घुंघरू जागे जागे नगरके लोगरी ॥

३

चलत वदन कुमलाय गया मेरे सइयाँने पूंछो बातरी।
अपने सइयांका मैं ढूंढ़न निकसी सङ्ग नहीं कोउ साथरी॥

मिश्र बरवा—तिताला

पनघटवा कैसे जाऊंरी बीरा ठाड़ो मोहन
मग बाटमें।
निशिदिन मइकुं रोकत टोकत हाट बाट औ घाटमें।

२

मोरे सइयांका किन बिलमायारे मैं ठाड़ी नगरके
बाटमें ॥
अपने सइयांको मैं जग ढूंढी ढूंढी यमुना घाटमें।
अरेमैं ठाड़ी ठाड़ी गोकुलके घाटमें ॥

३

मोरे सइयां मिल्या नहीं आजरी मेरा रह्यो जियरा
घबरायके।
ढूंढ़त ढूंढ़त मैंजो फिरीरे सइयां न आया बगरायके।
मिलवेको मेरा जिय चाहैरे तू आन मिलो मोरे
जानो ॥

धानी—तिताला

मोकों मिलेरे कृष्णनवन कन्हैया।
बरसानेको ग्वालिनोरे घर घर देहि जनाय।
चलो सबै मिल गोकुलारे गोरस बहोत बेचाय॥
गोरस रस बनायके धर मटकोकों शीश।
ता मारगमें मैं गईरे आय मिले जगदीश॥
आवत इग नहीं देखियारे ग्वाल सखा लिए साथ।
सिर मटको डगमग भई जब डाल्यो दधियै हाथ॥
कोई अंबर काई करगहे काई मागै दधि दान।
कोई कहै तुम बन बसोरे कोई मारे द्रगसान॥
सुनो सखी दधिको बेचवी इह चरित्र बन कान्ह।
गावै गूदर कर जोरके तब मैं भईहै आधीन॥

बरवा—तिताला

सनमुख रामचरण गहे लीनों।
आवत केवट देखे दूरते धन विधि भाग आज मोहि दीनों।
चढ़इ न देत नाव पद बिन धोये जोयमें न डरत महाप्रण कीनों॥
प्रभु मुसकाय निरख धींवरकों आपन जान भक्त कर दीनों।
धन धन भाग निखाद सुरसरितट अमोघ जनम जग मोनों॥
आमिष भोजन आमिष वचन तेहि सन्त बराबर कियो प्रवीणों।
गावै गूदर यह प्रभु मरजादा तारनो तरह जात मतहोनों॥

बरवा ठुमरी—तिताला

कह्यो कथा सब अकथ कहानो।
पायो न भेद वेद, ब्रह्मा, नारद, शारद, ईश, भवानो॥
पायो न आदि अन्त वनि बाको रचना कियो जग जन सुन वानो
गावै गूदर यह प्रभु योग माया थाके सबै बुद्धि और ज्ञानो॥

मोहे लग्यो विरह बैराग अबमें जोगन भई।
चारों वेद भेदसे पूंछे तीरथ कोटि गई।
भेष अभेषको कियो नानाविध सब बचन कह्यो॥
सहस्र अट्ठासो नाथ नवो सिद्ध सब हरि एक पंथ लह्यो।
गावै गूदर गह्यो नाम हरीको जो गुरु ज्ञान दई॥

३

अरी मैं होवूंरे जोगनिया सइयां हेरोरे।
वसन रङ्गाय तन भस्म चढ़ाऊं नगर नगर करूं फेरोरे॥
विवसह्यो वस आवत नाहीं छलबल कियो बहुतेरोरे।
गावै गूदर कोई पियाकों मिलावै पइयां परूं होवूं चेरोरे॥

४

मैं सइयांको जगाऊं सारो रतियांरे।
निशिदिन नैना मैं जोबना सम्हारूं सइयां रूसल कौन बतियांरे॥
सारो अवधमें बैठ गवांई तबहूं न लागे मोरो छतियांरे॥

५

राधे तोम तोम तोम तोम तोम तोम तोम प्राण पियारो राधे तुम।
रटत रहूं तुव नाम रैन दिन करूं तिहारो ध्यान।
तुम बिन मोंको कल न परतहै तुम मेरी जोवन-प्राण समान॥
निरख जिऊं मुखचन्द निहारो हो वृषभानु-दुलारो।
एकवार हंस हेरो मोतन जानकीदास बलिहारो॥

६

हरि कुवजा विलमावतरे कौनसो रोझपरो सांवरेको।
आपतो जाय द्वारका बैठा ब्रजयुवतिन तरसावतरे॥
जा कुंजन मग एक सङ्ग रहस्या सो कहुं नजर न आवतरे।
गावै गूदर सब करतब ऊधो अब हमकों भरमावतरे॥

७

गोरीया धोरे धर गगरीया छलकोय न जाय।

सुकृत पुराकृत पुण्य-पुञ्जसों भरपायो अधिकाय ॥
नहीं सम्भार धरत सुन सजनी फिर जइहै ढरकाय ॥

८

चमक गईलो बीजलीसी गोरीयारे ।
एक बैरन मोरी सास ननदिया सहलो न जाय
बोलीया ठोलियारे ॥

पील ठुमरी—तिताला

सइयां परदेशवा रे लिखतीरे कगदवा ।
सास बुरी मोरी ननदी हठीली सौतनके बोल मोरे
सालेरे करेजवा ॥

२

गोरीया बदन लचकावतरे सांवरे सलोनवा मोहनीया ।
कदलीसो जनुघ सुवा नासा सोहै छतियां नरियल
मोहलिया ॥

३

नई नई प्रीत लगावतरे सांवलोया गिरधारी नन्दको ।
हौं यमुना जलभरन जात जब नैनकी सैन चलावतरे ॥
सुन्दररूप भूप मनमोहन बंशी मधुर बजावतरे ।
राग रङ्ग प्रभु चरण धरे कर बैकुण्ठसों सुख पावतरे ॥

४

हरि भज विलम न कररे लालची मनुवा ।
या संसार काठ किवाड़ो समझ समझ पग धररे ॥
गुरुप्रसाद साधुकी सङ्गत परदारा परहररे ।
नानकदास नामदा बेड़ा तेह चढ़ि पार उतररे ॥

बरवा ठुमरी—तिताला

तोरी बान परी हांरे सांवलोया हो ।
बहियां पकर मेरो सब रस लीनो सास ननदी
मोसों झगरो ॥

बरवा—तिताला

अरेरे कन्हैया हो अङ्ग मोरे छुइ छुइ जाय ।
अङ्ग मोरे छुइ कुञ्जन बन गएहु केह द्रुम रहेहु
छिपाय ॥
ढूंढ़त सुर नर मुनि जन थाक्यो कोउकर गहेलो
न जाय ।
गावे गूदर विनती सुन मोरो दरसन देहु दिखाय ॥

कोयलीयारे बोले चम्पुवाकी डार ।
हरी हरी कलियां फुलन बगवा बोल मधरो बचनोयां
उचार ॥

२

अरे दुरमतिहांरे गुरु बिन कौन सुधारे ।
गुरवाटी और नाम औषधि पावत त्रविध दुख जारे ।
अन्धकार मिटगयो सकल भो ज्ञानको दीपक बारे ॥
सूझ परो तहां परम जोतरे पांच पचीस गहै मारे ।
गावे गूदर मांहे मत दीजो आवागमन निवारे ॥

४

नींदरो न आवे सारी रात मोरे बालम ।
मोरे पिछवारे पीपरका बिरवा तकत रहो सारो
रात जात ॥

५

तोरो नैनवादो वान छुटत नाहींरे ।
बड़ो बड़ो अँखीयन कजरा दाना तारो सांवरो सुरत
बिसरत नाहींरे ॥

पील ठुमरी—तिताला

मैनु छेड़नावे कोई भनक सुनेगा यार ।
सुन पावे कोई माल मुकद्दम सुन पावे पटवारी ॥
साहनशाह हाकिम मेरे सिरपे गठड़ी भारी ॥

विहारी—तिताला

उठ जागरी गोरी तेरो अँखीया हैंगी खुमार भरी ।
नाजुक रङ्ग तोरे हँस हँस कहँदा फिर फिर देख
तुमकोरी ॥

बरवा ठुमरी—तिताला

नोहुरी बुहारती अङ्गवारे रसमातल गोरीया ।
नैवल बुहारती पोय मोरा आइलो मं चढ़गई
पियाको नजरोया ॥

२

सांवलोया मोरा जीयरा लगाए लिए जाय ।
सपनेमें पिया तोरे गरवा लगतहों कहा करों मैं तेरो
पिया निरदेया काहे भईलवा मेरा मन गएहै बिकाय ॥

मिरजा तोरे अङ्गना सासू जाने नहींदे।
पायल मोरो रुणभुण बाजे छोटी ननदी नहीं आनेदे॥

४

फरकतहै मोरी बांह पिया तोरे गरवा लागूंगी।
हंस मुख पीयको मैं सपनेमें देखे जोय होत
सांय सांय॥

बरवा—तिताला

गुरु दीना वारोर यह अन्ध कूप संसार।
मायाके रङ्ग रची सब दुनिया नहीं सूझ पड़त करतार।
पुरुष पुराण बसे घट भीतर तिनकाके ओट पहार॥
मृगाके नाभमें कस्तूरी बसतहै सूंघत भ्रमत उजार।
कहै कबीर सुन भाई साधो छूट जात भ्रम जार॥

२

गुरुमुख वचन अमो सम लाग्यो।
धन गुरुगोविन्दको पद दीनो जनम जनम युग
संशय भागो॥
तबते मन मोर सुमत भयोहु मोर तोर मम मद
धन त्यागो।
गावै गूदर गुरु अनहद-प्याला पावत भक्ति उठ
अनहद जागो॥

३

गुरु आशिक मोहे दीएउ सिखावन।
गुरुपद-रेणु जो कोन सुमेरु कोतक पतित
जग तरिगया पावन॥
गुरुमुख मन्त्र तन्त्र अरि माया रुचित वसत जहां
प्रभु मन भावन।
गावे गूदर कियो रहित गवने पुन युग युग जनम
बहुरि जनहो आवन॥

४

बिन गुरुज्ञान सकल भ्रम होई।
जब गुरु दीनो नाम सजीवन आदि अन्त ताके
पूछे न कोई॥

दीयोहु अमीपुर वस नीको गाऊं जाहि नहों
दुख तहां सुख होई।
गावै गूदर पद छुवत कमल कर अन्धकार मिट
दुबधा धोई॥

५

बिन गुरुपंथ सूझे जग नाहों।
गुरु-पद-रज दृग भयो सुअञ्जन जबते साहिब देखो
सब माहों॥
तीनलोक जो शोक विमोचन सारे बसत उर अपने
माहों।
गावें गूदर सब रतन पदारथ अन्त समय हरि-
पद तहां जाई॥

६

दुलहिन तोरे रजवा वैरन भईरे।
बिन देखे दुलरु नेक न भावे सुखवा भईलै अजवा॥
मास मछरिया मनहु न भावे आर गेहुँवाका रोटा।
जाका पीया नित उठ चाहे वाको कमर छोटा॥

७

बोलै अम्बुवाको डार भला सुगायारे।
हरे हरे सुगोयाके लाल लाल ठोरवा कोन विरछ
तर छुइयां॥

८

हमरो कोउ न सुने जीयरा पराए वसमें।
सास ननदी मारो जनमको वैरन सइया सोतन रसमें।
कृष्णानन्द विहरत निशिदिन तन पर्यो कसमसमें॥

९

सुमतीयारे हरि बिन कोऊ काम न आवे।
हरि गुरु संत कृपा कर तब सहजहा भवपार पहुंचावे॥

१०

नैहरवे कोउ नहीं आए सुन मोरो सजनीरो।
सास ननद मारो जनमको वैरन दाहत दिन अरु
रजनीरो॥

११

बदरवा गरजे राम सइयां नहों आए सपनवा होय
गये रामरे।

आगत जागत सब निशि बीती कौन तिया पिय
विलमाए राम ॥

११

शिवजो जोगियारे सोतारामकों मिलायदे।
काशीमें विश्वनाथ विराजे भवदे पार पहुंचायदे॥
कृष्णानन्द यह अरज करतहै भवदे पार पहोंचायदे॥

बरवा—एकताला

सांवलीया तोरे कारण जिय जाय।
पातर रहल्युं पातर गइल्युं जैसे कुमटाकी डोर॥
अपने सइयांकों पनीया पीलावल्युं बिन लोटवा
बिन डोर।
बिन देखे कल पल न परत कछु रहेहैं हो नैननमें छाय॥

२

सांवलिया तोरे कारण जिय जाय।
हाहा करत परत तोरो पइयां बहुत भांत समुझाय।
लोक कुटुम्ब हम सबही त्यागो तो तेरे नहीं भाय॥
औरन सों पिय हंसत बोलत हैं मोहि राखत
बहिलाय।
किन सौतिनके रसबस पागे हमसों नेह लगाय॥
दिन नहिं चैन रैन नहि निद्रा विरह दौन बौराय।
तन मन प्राण नोछावर कीन्हो और न कछु सुहाय॥
तूं बेदरद दरद नहिं जानत क्यों चितवत मतराय।
कृष्णानन्द अरज मोरी सुनिए मदनमोहन चित लाय॥

बरवा—खेमटा

लगनीया लागोरी मोरी गुइयाँ।
एकतो नई मैं नैहरते आई दूजे लाज सइयाँकी पाई॥

बरवा—ठुमरी

सुन मोरी सजनोरी वह सूरत अब नाहीं।
जबते गए सइयाँ भए वहींके बिरह बढ़ो मन माहीं॥
कृष्णानन्द ओं एकबार मिलावे जाके बल बल जाहीं॥

२

परो सुन दैय। सइयांहो मोहि मिलो अब आन।
बिन देखे जिय चैन न परो पल विरहा बढ़ो अब
प्राण॥

कृष्ण रसिक बिन कछु न सुहावे अब मेरो राखो
मान॥

बरवा—तिताला

मोरे बलमूरे उठत जोवनवा में पोर।
दिवस बीते अजहूं न आए कैसे धरूं जिय धीर॥
कृष्णानन्द अरज मोरी सुनिये मदन कियो तन भोर॥

२

निज पिया परदेशीया हो बिछुरन लागे।
कौन भरम भूला रहोलो नैहरवाहो कित बसाऊं,
कहले पियाको सुरतिया हो बिछुरन लागे॥

३

काहेकों प्रीत लगाईहो हम सानु।
हम जानो पिया और निभाहोगे पर बीचही
रार मचाइहो॥

४

वैरन भई पिया बिन कारोरे कोयलिया।
जब सुध आवे तोरो आधी आधी रतियाँ विरहा
सतावे दरकावे छतियां॥

बरवा—कहरवा

ढूंढ़ लावोरी वंशी ढूंढ़ लावोरे गई गई श्यामा
तोरे ढिंग।
या वंशीया मोरे प्राण-जीवन-धन घरी पल छिन
वंशी नहीं भावो॥

२

रात सइयाँ पायल मोरी बाजे।
सास मोरी सोवे ननद मोरी जागे ससुरो बरटवा ठाढ़ो॥

बरवा—दादरा

नजराय गईरे बालम तोरे अगवा।
वैद बुलावो मोरी नाड़ी देखलावो॥
सोनेको चिराद मोरा होरा कङ्गना तोरा लाख रुपैया
मोरा बाला जोवना॥

कालिङ्गड़ा—दादरा

लपक झपक पानी भरके चलो छम छम छम छम
करके।

यार खड़ा दिलदार जरा देखो नजारा भरके हांरे
चलो० ॥

२

कैसी कैसी आन नई नई देखलाइयाँ।
सब आने तेरी मोमन भावै सही न जाय एतेरी
निठुराइयाँ ॥
सनमुख ठाड़े तेरे प्यारे मुर मुर देख देख तेरो
मुसकाइयां।
जुलफ हो दई मारे नागने छूटन जो केतेइ सिखाइयाँ।
बीच फसे हमहु एकबार मोहे भए कर छुटाइयाँ।
ध्यान लगावे कायम साहेबसे कब तक करोहै
सबको भलाइयाँ ॥

बरवा -कहरवा

मेरा मन कैसा फँसाय गया जुलमो।
रस वस नैना लगाय गया जुलमी ॥
अपने मन्दिरमें रहो सुख चैनसों आय आय जियको
सताय गया जुलमो।
सहज सहज घर आय आय मेरे चित मन लेके
उड़ाय गया जुलमी ॥
नेह लगा झिलमिलके जियमें भलो भली भांतन
समाय गया जुलमो।
अब सो डरे जोड प्रोतसे कायम अस कछु रीत
सिखाय गया जुलमो ॥

बरवा—खेमटा

हारेसे बालम फिरगए राम राम।
सोतोथो मैं नोदको माती चितवनमें कछु
कर गएरे राम ॥
या निंदोया वैरन भई मोरी घर अङ्गनासे नींदको
माती सोय गई अङ्गनासे चले गएरे राम।
कृष्णानन्द दरस देहु मोहे सांवरी मूरत मन बस
गए राम ॥

देश बिहारी—एकताला

सुन प्यारोरी वंशो गईहै चोरो।
लई होय तो बतायदे राधे जोवन-प्राण मोरो ॥
काहेसे गाऊं काहेसे बजाऊं सुन वृषभानु-किशोरो।
कृष्णानन्द डोलत कुञ्जनमें राग रङ्गको पूरो ॥

देश—ठुमरी

काहे लई मोरो चोर कन्हेयारे।
लेकर चोर कदम चढ़ बैठो सुनो हलधरके वीर ॥
का मरो जातहो लाजको मारो कैसे तजहो नीर।
जो कहो सोई करिहुं मोहन कृष्णरसिक अहीर ॥

बरवा—कहरवा

मैं तरुणी मोरे सइयां नदान।
पांच मोहरको गैयां मगावल अरो दुधवा पिलाय मैं
करलं सयान ॥

कालिङ्गरा—कहरवा

बांके मिरजामें टुल्री लूंगो।
टुलरी तिलरो चालरीरे चम्पा गलेका हार।
टुलरो गढ़ावन मैं जो गईरी पटवाने मारो सान ॥

झिंझोटी—कहरवा

मिरजा साहेब तोरी गलियांरे मोरा हायरा हराना।
मैंने कहा मिरजा राखो सिपंया मिरजाने राखा
पतरीया ॥
जब आई लड़नेको शिरोया खिड़कोमे भागो पतरोया ॥

कालिङ्गरा - कहरवा

चलो राजा महराव करेको झोलपे।
फिरंगोका डेरा लाल लाल कुड़तो तिलगंवाका
पहरा बकराको झोलपे ॥

बिहारी—कहरवा

नदिया किनारे लगो जान गुदरा।
जालोको कुड़तो कलिङ्गन्दरेका लहंगा रतन जड़ाव
सइयाँ लेदे मुन्दरो ॥

जङ्गला—कहरवा

पायाहो ता दे महाराज बाजुबन्ध छूटा पलंग पर।
सुन पावे मोरो सास ननदिया देवरा सुने आवे
मानहे लाज ॥

२

लड़का रोवै पलङ्गपर बहियां छोड़ो महाराज।
मस्त भए पिया मानत नाहीं जागत भोर भइयाँ॥

बरवा—कहरवा

मै बनोयानो सइयाँ मोरा बनोयारे।
मै बेचौं साग पात सइयां बेचें धनोया मनियारे॥

२

भवसागर मोहे पार उतार।
लख चौरासो भटकत भटकत हरि आएहो शरण तुमार॥
फिरत फिरत माला भई पूरी चरण सुमिरतें जिन मोहे टार।
कृष्णानन्दको आश भई पूरो भक्तवत्सल प्रभु होजो मुरारि॥

झिंझौटी भुपाली—कहरवा

तोहोको देख ललचायरे गोरोया।
बारा बरसको कामनोरे छतियां उमग उठ आईरे॥ गो०॥

२

कौन लियो मन लियो मेरो एरो छलबलोया।
बांको चितवन चितए आलो तन मन धनवा दियो छलबलोया॥

३

किन छलोयो मेरा रतियां जियरवा।
सुन्दर-श्याम सपन हम देखो जाहि सुध दहकत हमरो हियरवा॥
तेहुको छवि देखत में भूलो पियरा जान पड़ा न सबरवा।
जागत नोर बहत अखोयनतें अब असुअन नित भींजे अँचरवा॥
जग आय एसो पोत कहुं देखो यह विध काहुको, लागो न हरवा।
मनसा फल पिया बिसके कायम तोरे गर लाग्योहै मनको हरवा॥

४

रात सइयाँ मोरे मन बस गयोरो सजनो।
मोहनो सूरत रसभरो मूरत मन्द मन्द मुख हंस गयो सजनो॥
अपने सइयाँको मैं बलि बलिहारो कृष्णरसिकमां भई सखो लजनो॥

५

सांवरके साथमें चलो जइहुँ सजनो कहा करेंगे
दुरजन पुरजन निशिदिन वाहोके शरण रमि रहिहं।
घरो पल छिन मोहे कल न परतहै तन मन रस बस भइहं सजनो॥
कृष्णरसिकके हाथ बिकानो मन माने सो करिहैं सजनो॥

बरवा—कहरवा

सइयों बसायोहै चोर नगरोया में।
आप तो सइयाँ आवत नाहीं चोरवा भईल दुखमोर॥
नैहर सासुर दोनों भुलाने न कछु तोर न मोर।
गावै गूदर ये बात दोनों दोम रह गए नाता तोर॥

२

सन्त सदा उपदेश बतावत केश सभो सिर खेत भएहैं।
ते ममता अजहूं नहीं त्यागो कालने आन सन्देसे दिएहैं॥
काल चला उठ मूरख तेरेहो देखत केते गयेहैं।
सुन्दर क्यों नहीं राम सम्भालत क्यों जगमें थिर कौन रहै है॥

आसा—तिताला

रे तिसना तू अजहूं न अघानो।
चौदेहो लोग अहार किएते सात समुन्दर पिए पुन पानो।
जहाँ तहाँ तू ताकत डोलत काढ़त आँख डरावत प्राणो॥
धन्य कुचावत जोभ हलावत याहोतें डायन जानो।
सुन्दर खात भई केते दिनहै तिसना तू अजहूं न अघानो॥

बरवा—कहरवा

दाह देगए मोरे करेजवा ।
मोरे मइकेसे आए सन्देशवा हमर्क चूरी पोके खेसवा ॥

डमरा—कहरवा

पातर मोरी करहैयाँ लहंगवा भू लोटेरे ।
खड़ी जनीया अरज करतहै सुनो सइयाँ मोरी बात।
घरकी जोरु गँवायर्क तुम सोवत पतरीयाके साथ ॥

बरवा—कहरवा

मेरे महरवा मोरी डोलीया फन्दाय ।
त्रिकुटी चढ़कर देखन लागी केतीक दूर मोर पीय कर गांव ॥
इस डोलीयामें दस दरवजवा चार कहार मिल घर पहुँचाय ।
कहत गोपालदास कहरवा चरण कमलकी मैं वलि वलि जाय ॥

२

जारे कुँवर टुक दरस देखाय ।
जो जनती करिया कपटीहै व्रज माखनमें देती न खाय॥
कारे भँवर रस कदर ना जाने सब फूलनमें रह्यो लुभाय ।
खगपति कवि तोरी रीझि समझती सब सखी लेती कुँवर बनाय ॥

३

मइकुँ लेचल देवरा अगम कुँइया ।
अम्बुवाकी बगीया पुड़ोया पकावती सिजोया बिछावती लुटावती भुंइया ॥

४

लागत वैरी बोलरी कोयलिया तेरे ।
जो मोरे श्यामकों आज मिलावे तो तेरे बोल अमोलरी॥
उठ उड़ जा मधुवन पीयर पै छलीयनकी छतीयां छोलरे ।
प्रेमरङ्ग तिन घर सोहली विरह-विथा मत खोलरे ॥

राम भजन मोहि श्रवण सुनावो ।
सुनत पापके ताप नसावत तन मनके सब कलुष बहावो ॥
नाम कहत सब काम होतहै दुरदिनकी दुरबुध दुरावो ।
रामचरण पद-पावन चाहो प्रेमरङ्ग प्रभु लगन लगावो ॥

६

चल मनरे तिरवेणी न्हाय ।
कोटि जनमके पाप कटत हैं भारद्वाजके दरसन भाय ।
मकर मासमें परे अमावस ब्रह्मादिकको मन ललचाय॥
जो तिरवेणीमें देहो बुड़की सुरपुरलोक वैकुण्ठे जाय।
पूरणानन्द आश रघुवरकी पितरनकी वैकुण्ठ पठाय ॥

७

ले चलरे जहाँ अपना न होय ।
घरमें छाड़ल पुरुष पुरना दिन चार पइहुँ जोय ।
जब हम चललों अपने ससुरवा गरवां लगाय हित मित ले रोय ॥
तोरे कारण हम धन माया तन मन दोनों दिहलो खोय ।
इन पाँचोहो कजरा लगावल सइयाँ मिलन गए सब धोय ॥
और देश बालम ओरे मढ़ैयारे हम तुम अब रहवे सोय ।
गावै गूदर सब झूंठ सनेया समुझ बूझ सङ्ग जैहै न कोय ॥

८

प्रभुसे मिलना कैसे होय ।
पांच पहर धन्धेमें बीते तीन प्रहर रहेहै सोय ॥
मानुष जनम अमोलख पायो सो तैं सबहो डाखो खोय।
मीराके प्रभु गिरिधर भजीये होनी होयसो अबही होय ॥

नेहरवाहो मोंसे रहीलो न जाय ।
जब सुध आवे बारे बलमको गिनत गिनत दिन
रैन बिताय ।
रहत अन्देश सन्देश न पावत नई लगन भई
एरी बलाय ।
पचरङ्ग चुनरी मैली भइली पिय बिन विरह
विपत रही छाय ।
भिक्षुकके सब ध्यान बतावत बिन सइयां मोहे कछू
न सुहाय ॥

दादरा—बरवा

एकबार फेर जालम वंशी जो बजाव ।
वंशीको धुन सुन भईहौं बावरो तन मनको जानी
काहे तरसाव जालम एक० ॥
जनम जनमको चेरो होतहूं, अबहो लिखत बजहन
जो तू लिखाव ॥

२

मधुवा मोहे पिवाव मोरे जालम इतनो बात
मानले बालम् ।
प्रेमकी भटी देखो देखके ललचावत जियरा वेगो
छकाव इतनीबा० ।
मेरी तेरी प्रीत सब जानतहैं अब न छिपत बजहन
कितनो छिपाव ॥

२

मेरे मन बस गए बनवारी बनमाली ।
रामकृष्ण निशिदिन सुमरण करो तन मन धन
सबही में वारी ॥

बरवा—कहरवा

ध्यान धरो सांईंते अपना ।
गुणको बात समुझो कछु बूझो औगुण देहो विसार,
गौने के दिन नेड़े आए अब नेहरको चलना ॥
साँच बात बूझो ते याहो फेर जगत सुख सपना ॥

बरवा—दादरा

मैंतो पियसों चूनरो रंगाऊंगो ।
करजोरके विनतो करके जोवनको उमग देखाऊंगो ॥
जादिन पायो मन्दिर बिच बजहन लाख जतनसे
रिझाऊंगो ॥

जङ्गला—दादरा

बालम लेहो खबरिया हमारो ।
प्रेम गगरोया शिर धर लोनी सागर दूर और बोझा
भारो ॥
डगमग पांव परत अब बालम अब घाटहै निशि
अँधियारो ।
सङ्गको सखो सब दूर निकस गई बजहनको नित
आश तिहारो ॥

२

यह कैसो कैसो मुरली बजाई आज कान्ह ।
भनक सुनत हिरदे बिच मोरे लगो गयो जैसे बान ॥
बहोत सखियनको यही गत बजहत जिन जिन
सुनो याको तान ॥

बरवा—ठुमरो

मोह लई मोहे भरत गगरोया ।
आयो कान्ह गउन सङ्ग पनघट एसो बजाई वाने
बैरन बंसरोया ॥
जगतपे गागर कुए बिच करवा हाथको हाथमें
रह गई रसरोया ।
अब बजहन कछु बन नहों आवैरो गल बिच पड़
गई प्रेम फसरोया ॥

टुंग—दादरा

सुने नहीं जात मोंसे ननदोके बचनवा सोख न पायो
नैहरवा ।
भेज दियो एसो जलदोरे गवनवासु० ॥
कैसे होय बाजो पिया बजहन ना मोंमें रूप नएसोरी
जोबनवा ॥

बरवा—कहरवा

बिन मधु पिए मोसें रहिलो न जाय ।

नेह कियो कलबरवाके सङ्ग नगरके लोग याते
अधिक रिसात ॥
जबते भयो मतवारो वजहन घटही में सूरत पीकी
दिखात ।

जङ्गला—भैरवी

मैंतो कौन जतनसों रिझाऊं राम अपने पियाको
पावों तो सजनी ।
लाजही लाजमें दैस बीत गई अब बैठा पछताऊं
मारे राम ॥
लाख सिङ्गार करोंमें वजहन नइरी जोवन कहां
पाऊं राम ॥

झिंझोटी कहरवा—तिताला

अवहूं ना तुम चेतरे मन अबहूं ना तुम चेतरे ।
सङ्गके मीत सब छाड़े जातहैं औ छाड़ गएहैं
केतरे मन ॥
गवनेके दिन नेरे आवतहैं कबहूं तो नाम साहिब
का तुम लेतरे० ।
झूंठे जगतमें कायसों रे खि भूल रहे वजहन हो एतरे० ॥

सिन्धु—जङ्गला

का मुखले घर पीके जाऊं ।
नेहरमें कछु ढङ्ग नहीं सीख्यो गवनेके बाजन बाज
चलेहैं अङ्गनामें ठाढ़ी ठाढ़ी लजाऊं ।
नगरके लोग फरकेलों सङ्गहो आगे कोउ परि
है न पाऊं ।
लागि उनके चरणको आशा वजहन वाको
मोहन नाऊं ॥

बरवा—सावन

अबतो रङ्गेहूं चटक चुनरीया जो पिया आवे मोरो
नगरीया ।
ज्ञानको रङ्ग ध्यान को बूंदा जेहूँ सोहै वजहन
उनको पगरीया ॥

पीलू

जैसे पानी रङ्गमें डारे रूपकों खोय ।
एसे जे मनमोहन ते मिले सो मनमोहन होय ॥

पूरवी—एकताला

नैया मोरो हरिजो लगावेंगे पार ।
एसो और कहो कौन दूजो चतुर सुघर खेवनहार ॥
गहरो नदो तो कहा भयो वजहन मनमें हरिजो
विचार ॥

२

क्या सांई तुमते है दूर सुनो साधोहै हजूर ।
यह ठाटी दुविधाको टूटे दरसन पावो जरूर ॥
बात वही सांचीहै वजहन जो बोला मन सूर ॥

मूलतानी—धनाश्री

साधो भाई सांई साध परवोणा ।
हरिको सुमरण हरिको माला हरि हरि हरि हरि
चोना ॥
हरिको ज्ञान ध्यान जग हरिको हरिसों और
न भोना ।
कृष्णरसिक रङ्ग हरि सङ्ग गाता हरिचरणन चितदीना ॥

परज

श्याम तोरे मधमें होली भई नंदद्वारमें ।
देख दिखि फिर जेहि कारण सो पायो अब घटमें ॥
काहको छिपावो काहुते वजहन देख रहो रङ्ग
घटघटमें ॥

जोगिया

जिस देश मेरा प्यारा बसदावे वाहो देशमें मों
जाऊंगो ।
पिया योगीया तो मैं भई योगीनिया अङ्ग भभूत
रमाऊंगो ॥
निपटहै व्याकुल मन मेरो वजहन जबलों दरस नहीं
पाऊंगो ॥

२

प्यारानो गरूर करदा मानु असोता बन्दोया हजूर ।
तुझ वाजु दूजा होर न दिसदा तुहो तुहो सबदे
अन्दर जहूर ॥

भैरवी—जङ्गला

बरछो कहो यह नहीं ना यह तीरन बान ।
याहो में एक मरोरहै सो धर धर खेंचत प्राण ॥

भैरवी—ठुमरी

सांवलिया देखो कैसी चलाईहै सैन ।
मोह लियो मन मेरो सखीरी कल न परत दिन रैन ॥
अब वजहन क्यों क्या बन आवै लगगए जब नैन ॥

बरवा—ठुमरी

सांवलीया प्यारे मोको सुनादे रंगी तान ।
जैसो बजाई वादिन मोहन ममसुरन बन्धान ॥

बरवा

मन हर लियो मेरो मुरली बजाय ।
नाम कन्हया ब्रजको बसैया एसो ढीट बात कछू न बसाय ॥
ताकी चाल मोको छवि वजहन कैसे न यह जियरवा लुभाय ॥

बरवा—कहरवा

तोरी चितवन बिन चा..वै सइयां ।
चितवतरी मोरा राम बस ..र ..ना छाड़ छाड़ छाड़े मोरी बहियां ॥
एरी पियुकी प्रीत कहा वजहन आवहै घर ... पावनहैं पइयां ॥

बि...

...ज परत आ लागर ... ।
मोहि कारण ... वजा के घरमें छाइदे ... शिकरा पावमें ॥
मान ... जिन उनहाके सब नाग ।
दोरमें कहतहैं चोरो ... मानसे ...हैं ... ॥
सात समुन्दर तनमें वजहन परतहै मोहि दिखाय ।
सुरत निरतसों पनीया भरहों गुरुके चरण चित लाय ॥

बरवा

बालमरे मोहि गरवां लगाय ।
हित चित मित कर जित तित नित तोसो बिन मोहि कछु न सुहाय ॥

बिहारी

मोती भरनिके पानी राम पीलेहो ।
आइलो सइयां करिहै सिकारवा एड़ा गेंडा चिल पाड़ा बाग मारीलो ॥

सोरठ

पपीहा पापी सोवन नहीं देत ।
जबही पलक लागन पै होतहै तबहीं जगावत चित ॥
एसी हूक उठत हिरदे बिच नाम जो पियाको लेत ।
एक घरी चैन परै नहीं वजहन करके बिदेशगोयासों हेत ॥

देश०

चितवत नाहीं मेरी ओर एराए सें ना जानुं काहे ।
चार दिनाका जोबनहै वजहन तापर इतनो मरोर एरोए में जा० ॥
अरे पपीहा कलवरे तोहि सिखावत कौन ।
बैठा ऊंठा ... पर ... छिरकत लौन ॥
आठ पहर पिउ पिउ रटत तूं जानत पिउ दूर ।
जान परत कबहूं नहीं तोको मिलना भरपूर ॥

जौनपुरी—ताल जत्

तूं कैसे ... भए सनतूं ।
... दिखावत जाके यह भिम भूल गई सुध बुध सारी ।
... निरखो ... प्यारो ॥
... सूरत अनारो ।
एक ... तिसो बनलाऊं बन ... बिहारो ॥
गुरु ... नेह लगावले ... दीनो है बहुभारो ।
... लाजको ... कोजे ... लाज करारो ॥
... लादनको बोझाहै अधिकारो ।
सुरतको डोर ... से न छूटे ... बाटहै न्यारो ॥
जो ... उभारो ।
पर्मके टोर ... कानाए जात हमारो ॥
पाँचाको जार ५ ... डाटके निडरहो चलना अगारो ।
वजहन कहत तोहि सोच काहेको पँजतनहै रखवारो ॥

ठुमरी—सिन्धु

मनमोहनको देखत रहिए एसो मेरा जिय चाहतरे ।
दूर नहीं बसदा घटहोमें कबहूं नजर न आवतरे ॥
जबते लाग लगाहै वजहन और कोऊ नहीं भावतरे ॥

बिहारी

अरे मन तू जो भयोहै चाकर ।
सिपायगीरीकी जो बातें कठिनहैं सीखले मोसों आकर ॥
कोजो बताऊं सोई कोजे दिन दिन बढ़ोहै कृपाकर ।
दयाकी गिरहन मनको बखतर ज्ञानको ढाल लाकर ॥
नाम अभूषण पहरले जाकर गुरुको ओट किला कर ।
निगमके वचनको धरो ध्यान नित कुबुद्धि दूर तजै जाकर ॥
ले तरवार गुरुके वचनको ध्यानसों बांधिए तापर ।
प्रेम-कटारो हाथमें रखीए ज्ञानको शीश पागर ॥
पाँच पचीस पढ़ेहैं उपाई वे नित बसतहैं पांजर ।
पाँचको मार पचीसको घरमें सुनतेही पड़ोहै मागर ।
अजपा जापकों सास उसासकों त्रिकुटी कूटमें लाकर ।
वजहन कहत अपने साहिबकों देखाकर निशिवासर ॥

२

अपनी चुनरीया पियकी पगरीया एकही रङ्ग रङ्गइए ।
एक स्वरूप सकल अङ्गङ्गजे दुविधा भरम गमइए ॥
एहो प्रेम गगरीया शीश धरो जब तब काहेको लजइए ।
घूँघट तें मुख खोलके सजनी ध्यानको डोर लगइए ॥
निरमल होत सुकर्म रामसों जो वजहन भर पइए ।
सागर तो गागर घर लायके जगतको प्यासकों बुझइए ॥

कलिङ्गरा

सोवत बहुत दिन बीता जाग मन मीता ।
काया भीतर पाँच निवाती इनसे कोउ नहीं जीता ॥
काम क्रोध मद लोभ लहर गावत भगवतगीता ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो आधे राम आधे सीता ॥

२

विलम न करीये हरिके भजनको ।
करत पलकमें और नाहिन भरो सीतनको ॥
आय बन्योहै औसर नीको करले मनोरथ मनको ।
बार बार सुमिरि गुण पूरण सुनि यश आनन्दघनको ॥

तादिन काजर देहों सखीरी ।
जादिन नन्दनन्दनके नैना अपने नैना मिलैहों ॥
करों न तिलक तंबोल तरो न वसन पलटि न पहरैहों ।
करों हटतार सिङ्गार सबनको कङ्गना पात बधैहों ॥

बरवा—कहरवा

अबतो जीय एसो बनआइ भूले अनत चितै नहीं देहों ।
परमानन्द प्रभु याही परिखो अब बारबार लजैहों ॥

२

कहा करै वैकुण्ठहो जाय ।
जहां नहीं कुञ्जलता अलो कोकिल मन्द सुगन्ध न वायु बहाय ॥
नहीं वहां सुनीयत श्रवणन वंशीधुन कृष्ण न पुरत अधर लगाय ।
सारस हंस मोर नहीं बोलत तहांको बसवो कौनकों सोहाय ॥
नहीं वहाँ व्रज वृन्दावन वीथन गोपीनन्दन यशोदा माय ।
गोविन्द प्रभु गोपी चरणनको व्रजरज तजि वहाँ जाय बलाय ॥

३

जहां मोरे नैनवे उरझाय अस सूरत नहीं परत लखाय ।
तसका जग मिस लाग गई हिय छिन पल तनको सरक न जाय ॥
लगत डरा जिऊं सूरत वारिसों छूट न जाय कहूं सुरत लगाय ।
फिर देखा वही सूरत वाला रही सूरतमा आप समाय ॥
यह विध जो लोभहै काहूकों मैं जानो वही लीन लोभाय ।
घुसरहे कहां काजम आपही अपने रूप रही उरझाय ॥

४

तेरे दरसनको बानरे पड़गई मोकों ।
बेग दरस दे नन्दके लाड़ले तुमही मेरे प्राणरे ॥

भग मन जीवे करैली लजाय ।
कारे करीं कहीं कहांलौं आई रतनसो जनम जो
चले गवांय ।
शिर पर आई काल नियराई पियके वचन सुनि
हियरा डराय ॥
कर जोर विनती करीं जब भाई जोवन मोचको
करनो उपाय ।
छिन एक दगडोया राखो विलमाई पिछलो बकायामें
देवीं चुकाय ॥
यहाँको कहल कछु काम न आई सनमुख वचन
कहा कहो जाय ।
गावे गूदर कछु बन नहीं आई धरकत हियते हिले
डगीयाय ॥

६

लचकाव मोरे बालम अबहो उमरको थोरोरे ।
एक पतली दूजि जोवनवा जाना बेदरदीया न
मोरीरे ॥
चमा करो रस होने दे बालम ... करो
बरजोरीरे ।
गावे गूदर हाहा कर हारो पइयां परीं बहियां
मरोरोरे ॥

७

हम न मरव मरोहै संसार ।
हमका मिला जियावन हार ॥
हम न मरव मरना पहचाना ।
वोहो मरे जो जिन राम न जाना ॥
हरि मरहै तो हमहु मरवो ।
हरि न मरे तो हम काहे मरवो ॥
कहै कबीर मरेगा सोई ।
जा घरमें हरि नाम न होई ॥

८

मोरी लूंगी लटकनो भींजेरे भींजे सिपैयाके जोरा
भलामली होयेरे ।
नामें पहरूं कङ्गना मोरे सइयां मोरे निकस गए
पटना हाय कहा करूंरे० ।
नामें पहरूं उदा मोरे सइयां महलमें कूदा
धमाका होयरे ॥
नामें पहरूं चोलो मोरे सइयां चलावे गोलो टहाका
होयरे ।
नामें सोऊं उमारे मोरे सइयां ठाड़े पिछवारे
लखालखो होयरे ॥
नामें पहरूं आरसोय हथिया मरदको तरसों गजब
होय जायेरे ।
अब न पहरूंमें चुनरो मेरे सइयां निकस गयो दूरि में
हाय कहा कोनारे ॥

बिहाग

ऊधो मनमोहनको लावोरे उन बिना नहीं सुहावैरे ।
जियको चटापटो मनको तलावलो उन बिना
पलन पल नहीं भावेरे ॥
कुबजाके रसवस भए मोहन लाज सकुच नहीं
आवैरे ॥
विरह वियोग हम तलफत निशिदिन रहे रहे जीय
घबरावैरे ॥
सूरश्यामसों कबधौं मिलावो छिन युग सम मोहे
जावैरे ।

जोगिया—रेख्ता

तेरे हम जोरका प्यारे बयां कीजे तो क्या कीजे ।
लगा दिल छूट नहीं सकता पिया कीजे तो क्या कीजे ॥
महीने से गुजरते हैं नहीं आतेहो हम कूंचे में,
बताओ दिलके अपने हम निशां कीजे ता क्या कीजे ।
लगा दिल इश्कसे आतिश जलताहै तन बदन मेरा,
जो हालत अब गुजरताहै अयां कीजे ता क्या कीजे ॥
फसा दिल जुल्फ पेंचामें गई सब भूलदां नाई,
भला सुन तो अरे जालिम इहां कीजे तो क्या कीजे ।
शरावे शौकमें सरसार वजहंन अब हुआ ऐसा,
जहांमें होरहा एसा नेहा कीजे तो क्या कीजे ॥

हरिको न सुरत विसारिएहो।
खेतीको जो मन चाहतहै बौहरसों कर यारो।
बीज बिसहरा नीके देहै जुगत बतैहै न्यारो॥
चहुँ दिश बिन इरूंधके अनहद जरबको चलइ कुदारो।
ज्ञान ध्यान के बैलनतें फिर मेरोही सवारो॥
हेतको बीज खेत बिथारो मानलो बात हमारो।
दयाको सागर होय रहो पूरण करो सुचैनो भारो॥
खेत बढ़ो औ पाक गयो जब तबतें यह रखवारो।
पाँच चोर खेतके खतई उनके गुरु अधिकारो॥
काट माड़े उसायके वेगी पेते करो तयारो।
हाकिमका देले जो बाँचे घरको भरे बुखारो॥
भूखा दूखा जो कोई आवै सब जगकौं नरनारो।
बेरागी प्रसायदे वजहन जाए बात तिहारो॥

२

बनत बनत बन जैहै तेरो।
अपने साहेबसों नेह लगावो ठनत ठनन ठन जैहै।
गुरुके वचनको मथन कर वजहन छनत छनत छन जैहै॥

जोगिया

रङ्ग वोहीजो पियकों भावै और रङ्ग क्या करनारे।
बसन तू सबही रङ्गावत वजहन बहुत कठिन मन रङ्गनारे॥

२

वोही रङ्ग रङ्गाऊंगी जो जो रङ्गको पीको पाग।
एकतो रङ्गरङ्ग हरिको वजहन दूजे अपने मनकी लाग

३

उनहीं हरिकों पायारे साधो।
हरि हेरत आप हिरायारे साधो॥
आशिक आप माशूकहै आपही आपो आप लुभायारे साधो।

४

बलिहारीमें अपने गुरुके जिन यह भेद बताया।
समझ समझ देखाजो वजहन मूंदे समुद समाया॥

एसी मुरली बजाई श्याम मेरो मत बौराई।
जबतें भनक परो श्रवणनमें तबतें नैनन नींद न आई।
भोजन भूषण विसर गयो सगरो बन बन फिरत हौं धाई॥
विरह विथा यह सुनोरी सखीरी तापर अपनो छवि न देखाई।
वाहूके नैन लगी काहूं सङ्ग जब जाने पीर पराई॥
जात अहीर पीर नहीं जाने सीखोहै इतनो निठुराई।
लागी लागी तो लगी रहे वजहन कबहूं तो गरवा लगाई॥

६

घट घट आप समायारे साधो।
जो तुरक कहे तो आप नहीं हिन्दु न आप कहाया।
सब मेंहै औ सबतें न्यारा कैसा भेद छिपाया॥
कहीं काजी कहीं आपो मुल्ला अपनेहो न्याव चुकाया।
कहीं वामनहो पत्रा बांचे पंडित नाम धराया॥
कहूं माशूक कहूं भयो आशिक आपहो आप लुभाया।
कहीं लैला बन बैठा मन्दिरमें कहूं मजनू बन आया॥
आपो रङ्ग आपहो रंगरेजवा आपहो बसन रङ्गाया।
गुरुको दयातें देखा जो वजहन दूजा कोउ न पाया॥

षट्राग

जिन साहेबसों प्रीत जरो कोनो उनहीं कछु पायारे।
जाके जनम दुविधा में बीते राम मिले नहीं मायारे॥
अपनो अपनो समझहै न्यारो जाको समझ यह आयारे।
माल मुलक सबही उन छांड़े चित साईंसों लायारे॥
झूठे जगतमें आयके ए मन काहेसों देख भुलायारे।
और किसीका क्या कहे वजहन संग न होत यह कायारे॥

जयजयवन्ती

रङ्गरेजवा तोरी चेरोमें होंगो ए रङ्ग रङ्गदे चुनरीया मेरो।

नैहरमें जो बीती सो बीती अपने सुनो गवनेको
खबरीया।
देखन वजहन रीभ रहे पिय अब मोहे बुलावै
अपनो नगरीया ॥

विहारी

बटोहिया तू जागत रहियो मानियो मोरी बात।
या नगरीमें चोर चोरोंकी ठाड़े हैं लगाए घात॥
सुरतकी चौकी ध्यानको पेड़ा वजहन बहै दिनरात॥

ठुमरी

मइकुँ चलत अवधमवा राम जदुवा कइ लारि।
सारीया मचक गई अङ्गीया लसक गई टूट परे
करको कङ्गनवारा०।
अहमद अलो मोपै जादू डारो अब कहा करिहौं मैं
कौन जतनवारा०॥

दादरा

राम राजीव-लोचन मेरे नैना लगी।
खान पानमें ज्ञान ध्यान में रोम रोम तन मन पगी॥
कोउ कहै भुव भरनको भेपहै कोउ कहे अनुराग जगी
प्रेमरङ्ग एकरङ्ग निहारत दुरजन देख विमुख भगी॥

— दादरा

वंशी गरजत गरव गुमान भरी।
अति मगरूर भई है जबतें तबतें मोहन अधर धरी॥
देत न चैन रैन दिन सजनी ब्रजवनितनके वैर परी।
तानके वाण विरह शिर मारै जानकीदास तन
घरी घरी॥

२

गोरिया बोलत नहीं गरव गुमान भरी।
कर सिङ्गार मद नैन उनरी मानो सिरोही पै धार धरी॥

बरवा

मन अटको छवि नागरनटकी।
केसर खौर मुकुट माथे पर उर बनमाल विराजत
टटकी।
मृदु मुसक्यान भौंहकी मोरन नाक बुलाक हलन
हिय खटकी॥

वंशी अधर मधुर धुन बाजत भूमकि लेत गत
अम्बर झटकी।
कृष्णरङ्ग प्रभु सङ्ग फिरों बन अब न रहौं काहूको
हटकी॥

बरवा — दादरा

वंशी न बजाव एसे मार डारो जालम वंशी०।
वंशीको अगनसों निपट जरो जात मोर जोवना
जरा जरे जीको जराव एसे०॥
एना बैना विष भरे औ वेधत करेजवा चैन नहीं
रैन दिना इतना न सतावजा०।
कारी घाव खाय खाय निकस क्यों न जात जीव
कौन कहे घाव पर घाव न लगावरेए०॥
एक तोरा चितवनमें का कीनो बावरी दूजे वंशी
फूंक फूंक जादू न चलाव।
मोहन मुख बांसरी कायम मिल बैठोरी तेरे बांके
बीच निपट एसे बनाव॥

विहारी

सूरज मुख पनीयाँ न जावाँ मोरी बेटीया का रङ्ग
जर जाय।
मोरेरी आगन तुलसीको बिरवा ठाड़ो जपूं सीताराम॥

२

छतियनसे लगायले हमारे बलमा।
बहियां सों बहियां और पइयां सो पइयां नैननसों
नैन निरखो पल पलमा॥

३

जगतमें आयके एसे भुलाए।
अपना रूप आप नहीं चीना अपनी मायामें तुम
आपो नचाए॥
सङ्गत छोड़ कुसङ्गत बैठे हरसे भजन करार कर आए।
खान पानमें मन चित राखें सुरत त्रिया मुखमें अटकाए॥
भटकत फिरे लोक तीनोंमें सतप्रभुसे नेह न लाए।
ख्याल खुशाल मिलेंगे जबही निशिदिन रहो ध्यान
जो लाए॥

बंशी न बजावो प्यारे काहे मार डारो।
तेरी बंशीमें जान फसीहै हंसीय करे जग सारो।
राग रङ्गमें मोह लियोहै कृष्णानन्द न बिसारो॥

बिहाग

आज मोहे भवन न भावै मनभावन जो रिसाय।
निशिदिन बीतो भूषण भोजन दूजे नींद न आवै॥
जेहो कारण मोरी यह गत बजहन ताहे न कोऊ
मिलावै॥

बिहारी

गागरीया भरन कैसे जाऊं बाटमें ठाड़ो ब्रजराज।
एसे निठुरसों डरतहां मैं बजहन जाको न काहूको
लाज॥

२

सुन्दर पाती तुम भेजो लागि रहो मोहे आस।
तुम बिन मोरी यह गत प्यारे तनमें रहो नहीं मास॥
बजहन कोहै ध्यान तुमीसों जबलग घटमें साँस॥

अरे मन कब भूला भूला राहय अबहू तू टुक चेत।
सगरो जनम बजहन एसोई बीतो हरिसों कियो न हेत॥

४

बाबूल तोरी चेरी हूं रहिहों अबहो नैहर मोहे राख।
वारी बैस ढङ्ग नहीं सीख्यो नाहीं आदर ससुरे न पइहों॥
सास ननदीया होतहै बैरण उनके बोल कबलों सहिहों।
सनमुख होत पियाके बजहन बिन गुण ज्ञान लजैहों।

५

बटोई तोरी चेरी न छूटहीं चित माँईसों लाव।
नगर में होय कौन निकसैगी चोरवा पंजतनके गुण गाव॥
अपनो बीतो बजहन तोहे सिखावत हरिचरणन
चित लाव॥

६

घने दिन बीतेरो आली पिया मेरे नहीं आए।
कासे कहूँ कित जाऊं सखीरो कौन देशमें छाए॥
एसो समझ परतहै बजहन उन कहीं नैन लगाए॥

छाड़ो म्हारो गैलवारे उनहींके ढिंग जावो।
सगरो रैन जहां चैन कियोहै नयो नयो नेह लगावो॥
विरह छिपाए छिपात नहीं बजहन लाख जतन तें
छिपावो॥

८

नयो मेरो जोबन पिया बिन योंही जात।
कहा करों कित जाऊं मैं बजहन कैसे कहूं यह बात॥

९

श्याम तोरी मूरत चितसे बिसरत नाहीं सारो रात।
देश बसो परदेश बराबर बजहन यह कैसो बात॥

१०

दुलहिन तोहे पिया घर चलना।
करले सिङ्गार नैहरमें सजनी कोई नहीं अपना॥
बालापन सब खेल गमायो तरुण भई अब मानले
कहना।
जब अइहै पिया तोहे लेनको तब नहीं चेत रहेगो
इतना॥
मात पिता यह लोक कुटुम्ब सब दान दहेज दे
चाहे जितना।
वादिनको कोउ नहीं सङ्गी गुण औगुण जब
पूंछेंगे ललना॥
लाज सकोचको ओढ़ले चूनर नेम धरमको पहरले
गहना।
बाट घाट घूंघट न खोलिये लाख जतनको काहेको
चितना॥
जो यह जतन बजहन बतलावत सो चितलिय हिये
बिच रखना।
सास ननद जामें बोलो न बोले और रीझ रहे देखत
छबि दखना॥

अलैया—अड्डाना

जग चतुरा हमहो बौराए।
काग भसुण्ड गरुड़ समझाए सो कलयुग हम
देखन आए।

धरमही देख अगनसे लागी पापही पाप रहे लपटाये॥
माया कारण निशिदिन धाए रामरतन अनमोल
गमाए।
कहै कबीर सुनो भाई साधो रामनाम रसना रटलाए॥

२

ना जानू मेरी कहा गति होई सगरी दैस
अकारथ खोई।
ज्ञान ध्यान मन कछु नहीं कीनों पाँव पसारके
निशिदिन सोई॥
आगेतें वजहन शोच न आयो समभ समभ पाछे
अब रोई॥

३

कहो बलमा सारी रैन कहाँ गमाई।
हमसे अवध बदि अनत बिलम रहे भोर होत छवि
आन दिखाई॥
अब जानो में भेद यों वजहन नई नई तुम कहुँ
लाग लगाई॥

४

नैया मोरो हरि तुमही खिवैया तुमरी कृपाते पार
लगैया।
गहरो नदीया नाव पुरानो पार करो बलभद्रजके भैया॥
अजामिल, गज, गणिका, तारो शिवरी, अहल्या,
द्रौपदी, लाज रखैया।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर बार बार तुमरे बल गइया।

५

साँवरेसों नैन लागेहो।
रैन दिना मोहे न भावे हरिचरण चित पागे हो॥
साँवरेसों नैना हो०।

६

अबधौं कैसी बने मोरी दैया॥
हों निरगुणी और पिया गुणवंता जगतके
लोग हँसैया०।
वजहन जाय कुठोर परो मन साँई है सुधके लेवैया॥

भैरवी—तिताला

ए करतार ए काज तिहारो याहो पलमें निस्तारो।
कहतहै मीरन सब जग देखा हर हरमें हरहै
हर न्यारो॥

आसावरी—तिताला

साहब मेराहै बड़ो रङ्गी उस बड़ोरङ्गीके हों बलजाई।
जहां तहां सब घट रमरहो हरघटमें हरिजीको
परछांई॥
आपही लाला आपहो मियां आपो सेवक आपो
गुसाँई।
महम्मदसा पिया श्याम-सुन्दरकों जोलों जिओं तोलों
यश गाऊं॥

दोहा

ऊंचा गढ़ वैरागका, पँछी पहुंचे रोय।
घना चढ़के गिरपड़े, बिरला पहुंचे कोय॥
परी कसोटी प्रेमको, झूठा ठके न कोय।
साचा भी वोही टिके, जो वारा वानी होय॥

घाटा—तिताला

पतझर भइलो रामा गई चैतको बहार मोरे रामाहो।
नई चोंप कुपल भईलो नई नईहै रङ्ग बहार
मोरे रामाहो॥

२

अबही गइलो रामा नैहरतें भल ससुरा मोरे रामाहो।
सुनरे ननदोके वीरना मोरा लाग जियरा तुमसों
होरामा॥

३

हमरो ननदोका वीरना लागल तुमसे मोरे हितवा
होरामा।
बोलेरे पपोहा पिउ पिउ जों जां सुध आवे मोरे
मितवाहो रामा॥

कालिंगड़ा—कहरवा

बनरा माई अधिक सजीला।
तबहीते सब जग देखन धायो सुघर बनीको व्याहन
आयो धूम गजरसों छैल छबीला॥

अमानत अलीके वंशमें एसो इनायत अली बना
रङ्ग रङ्गीला ॥

झिंझोटी—तिताला

इठलात गुजरोया मदसों भरो ।
ऐंड़ी बेंड़ी चलो जातहै चितवत नहीं वोजो भरके
नजरोया ॥

अलैया

बनरो सिङ्गार तू करने न पाई गवनेको अचानक
भईहै अवाई ।
नैहरमें खेलत रहो निशिदिन सगरो अकारथ वैस
गमाई ॥
यह सब लागहै सङ्गको सखीनकी बहक गई
उनको बहकाई ।
अब कहा जतन बतावै वजहन सनमुख पियके
जो होय न हँसाई ॥

२

साँच कहों तो हमही दिवाने जिन हरि जपा वो
चतुर सयाने ।
एसो सुन्दर काया पायके माया मोहमें रहे लुभाने ॥
सगरो खेत तो चिरियां चुंग गई कहा होत अबजो
पछताने ।
अब वजहन कछु बन न अइहै चलनके दिनहैं आये
नगिचाने ॥

३

जादिन गवनेकी पाती अइहै सोच सोच बौरो पछतैहै।
अबही चेत मानले कहनो औसर एसो बहुरि न पइहै॥
नेह नैहरमें करले पाया सो सनमुख होत न जियरा
लजैहै ।
एजगमें जाको मीतहै जानत सो वजहन कोऊ
सङ्ग न जइहै ॥

जङ्गला—भैरव

मोहे कोनी सांवलियाने बावरो कासे कहूं मैं
जियको हाल ।
जा तन लगे सोई तन जाने जाको विरहको घावरो ॥
विरहको सागर सूझत नाहीं भइहूं भवको
मैं नावरो ।
मेरे मन बसो साँवरो सूरत अब पत रहोके जावरो ॥
नहों रोवत नहों हँसत पुरजन लखि सौतन
लगायो दावरो ।
गावै गूदर उर बसहु बिहारी वाको छवि सखी
मोहे भावेरो ॥

१

मोरे आज गवनवाको रातरो कवन सरूप सँवारूं
सखी ।
जब सनमुख होइहूं पोतमसों कैसे करूंगो मैं बातरो।
जो सुख कियो भयो दुख आखिर मेरे जिय कछू न
सोहातरो ॥
मिलनेको आई सखी सहेली भई सइयांके मैं साथरो।
गावै गूदर मोरे नैहर छूटा अब सासुरको मैं जातरो॥

२

मोरे करहु गवनवाको साजरो आज सन्देसा आयो
सइयांको ।
नैहरमें हम खेल गमायो सासुरको बड़ लाजरो ।
नौ रतन ले मांग सँवारो जिन पिया कवने काजरो ॥
सासुरमें धौं कहा सुख पैहै मोरे छूटा नैहरका राजरो।
गावै गूदर जो पिया नहों राजो तो नैहर आछो मैं
बाजरो ॥

४

करूं कुवजासों प्रीतरो देया गोपिन छाड़ दियो
गोकुलमें ।
अबतो बोच पर्यो धवलागिरि भयो बटाऊ मीतरो ॥
एकैक श्वास सहस दुख नाना कहाँ लग गने गनितरो।
गावै गूदर प्रभु कुबजा पाया बड़ो समर रण जीतरो॥

अथ बारह मास

बरवा—देश

ऊधो भोरही मधुपुर जाव कन्हैयाको ले आवहुहो ।

शीतल चन्दन अङ्ग लगाए कामनि करत सिङ्गार ।
बहुत दिनन भए पिय नहीं आए लाग्यो मास असाढ़ ॥
कन्हैया० ॥
एकतो ऊधो वारी वैसोया, दुसरे पिया परदेश ।
तीसरे मेहा रिमझिम बरसे, सावन अधिक अन्देश ॥
भादों ऊधो मेह बरस गयो, निशि अंधियारी रात ।
बादर गरजे बिजली चमके, थर थर कांपे गात ॥
कुंवारहो असनो आग लगाए, पिय नहीं आए मोर ।
अबकी बारजो पिय मोर अइहैं, जियत न पावे
जिय मोर ॥
कातिक पूरणमासी ऊधो, सब सखी गङ्गा न्हाय ।
हम एसो अबला परम सुन्दरी, केहके जोहनवा
जाय ॥
अगहन ऊधो ठाड़ी आगन, बहुविध उपजै काम ।
चकइ चकवा केलि करतहैं, हम विरहिनहैं वाम ॥
पोसहो ऊधो पुहवा पड़ गए, भीजत अङ्गके चीर ।
यमुना किनारे वंशी बजती, सुधि आवन नैनन नीर ॥
माघहो ऊधो पवन झकोरे, पो बिन जाड़ न जाय ।
अबकी बेर जो पिय मोरे अइहैं, रखिहौं हियरे
लगाय ॥
फागुन फगुवा होगए ऊधो, पिय नहीं आए मोर ।
अबकी बारजो पिय मोर अइहैं, खेलौंमें रंग झकोर ॥
चैते ऊधो टेसू फूले, भंवरा अधिक लुभाय ।
का भंवरा फिर लोटे पोटे, यह दुख सहिय न जाय ।
वैशाखे ऊधो बंसवा कटावतो, रचि रचि बङ्गला
छवाय ॥
यह दुख परे सौत कुबरीपर, जिन हरि राखे
बिलमाय ॥
जेठ मास हरि आए मेरे, गाए बारह मास ।
सूरदास प्रभु तुमरे दरसकों, पूजे मनकी आस ॥

जङ्गला–पीलू

याद तुं साड़ो रहंदोवे झोखा वाले यार ।
यासमैं तेड़े कारण माहीड़ा क्या क्या दुख सहंदोवे ॥
यादनु भुलांदोनु वेखा माड़ो सइयों ।
खेड़ा खेड़ा वारी वे यासदे कारण ढूंढ़दो पूछदो
वेखन आइयां ॥

३

प्यारा नजर न आयानो आए माड़े भागना ।
सजन मिलाव सब मिल गावो यासदे नाल रहे
माड़ा सुहागिनो ॥

४

सांवलिया प्यारा माड़ो जानवे ।
यासदे दिल विच बरछादो नोंकों चुभदा तेड़ो आनवे ॥

५

बोवों मैनु नैनादा झमका वेखला जावे ।
यास रतो मैनु कल नहीं आंदो सांझ भई चान्दसा
मुखड़ा वेखला जावे ॥

६

जालम जानवे अच्छा मेंड़ा माहीड़ावे ।
यास मैनु तेड़ो गलां भांदियां जोंद कीतो कुरबानवे ॥

७

माहो वाला मांड़े मन भावांरे ।
नैनादो झमक वेखाकर बोशां यासदो जोंद
तरसांवांरे ॥

८

मेंड़ो जिंद लगो राझणसां मइयों कित वल ढूंढ़न
असीं चलां ।
होर न सुझनु भावै न सुहावे बिन ढाठे महोवालेदा
गलां ॥

९

राझण नहीं आयोरे कितवल ढूंढ़न जावांनो ।
राझण मेंड़ा वारो में राझणदो रांझा मेंड़े मन
भायानो ॥

१०

ऐश बाग के मेले में चलकर यार देखो तमाशा
परियांका ।

ठंडी हवाहै छाई, घटाहै मोती झील पै यास
है क्याही बहार ॥

पील्

मेरा बाला-जोवन योंही जाय परदेशी पिया नहीं आए
नामें जानू यास पियाको किन वैरन बिलमाए ॥

२

रहे सदा सलामत जम जमसे।
मेरा नबाव वजीर आगा मोतुमद्दौला सखी बहादुर
यासहै चेत रहा तमसे ॥

३

सदा रहै जमजम अहे राज।
जहांपना मेरे शाह जमनका रहै यह कायम
तखत और ताज ॥
मशरक से मगरतक यास करे जो दिलमें अपने क़यास
नहीं है सानी कोई आज ॥

४

सांवन आए पिया नहीं आए मोरा बाला जोवन
योंही जाय।
देखो आली आम्र बेदरदी कबलग जीय तरसाय ॥

५

मोहे सांवनवा सइयां बिन भावैना।
कैसेक काटूं अँधेरी रतियां यास पिया जो आवैना ॥

६

मइको जरद चुनरीया रङ्गादोजी आई वसन्त
बहार पिया।
यास पिया तुमपे वारी में जावां बरजोरी गरवां
लगालोजी आई० ॥

जंगला

क्या तैंने धूम मचाईरे मेरे कुंवर कन्हैया।
भर पिचकारी मोहे यास न मारो दूंगीमें राम
दुहाईरे ॥

पील्

सारी रङ्गमें ओ कन्हैया।
भरडारो चुनरीया यास नाहक क्यों सतावत मेरे
होरी खेलेया।

ए सखी आमिल होरी खेलें आए पिया मोरे द्वार।
बरजोरी यासको गरवा लगावो गलबहियां कर हार॥
अबीर गुलालकी छाई घटाए रङ्गको परत फुहार।
सारी चुनरीया रङ्गसे भीजो ए होरीकी आई बहार॥

२

मेरी रङ्गसे भिंजोई चुनरीयारी लाजकी मारी मैं
कह न सकों।
यास पीया कछु विनती न माने ऐंचतहै मोरी
फरीयारी ॥

जङ्गला

नयोरे कन्हैया सब सखियां मिल खेलो धमार।
नयो आयो फागुन नयोरे समान नयो रङ्ग मच्योहै
मुखसे मले सब अबीर गुलाल॥
यास पिया मोरा होरी खेलतहै नयोहै ऋतु और
नयोहै साल ॥

भैरवी

अनीए सइयांने मेरी खबर न लीनीरे।
उस बिन मैंतो जरत मरत हूं यासने कोउ वैरी
खबर न लीनीरे ॥

२

विरह चैन देत नहीं मइको आली जिय घबरावतहै।
पीतका जो कोज नामहै लेवत यास पिया याद
आवतहै ॥

३

मोंसे पीत लगायके दगा दीनोरे।
कासे कहूं विपता विरहाकी मोरो सइयांने याद
भुलादीनोरे ॥

पील्—रूपका

कासे कहूं दुख अपना दई प्रीत नईके रीत नई।
एक नजर देखलाय मोहे मारा केहु जतन फेर
सुधि न लई ॥
अस निरदईसों काम परोहे आंख लगा मैं जियसों
गई।

प्रीत लगायके वासों जगमें नाहक मैं बदनाम भई।
हाहा तुराव परों तोरो पइयाँ काजमसे कर मोरी मुई॥

२

कान्ह कुँवरके कारण राधा तनसों भई पियरो दुवरी।
जबतें सिधारे द्वारका मोहन सूनी भई सब गोकुल नगरी।
राणी पुरानी भई वैरागन राज करत अनोखो कुबरी॥
जर जरके मर मरके सखियाँ कुहुकतहै दई कहा करी।
किन बिलमायो तुराव पियारे भूल गयो जो सुध हमरी॥

अड्डाना—तिताला

बिरहा मोकों सहो नहीं जाय।
नेह छिपाए अधिक बाढ़तहै यह दुख हाय कहो नहीं जाय।
कैसे तुराव उघरन देखे बिन देखे तो रहो नहीं जाय॥

२

नींद गई मेरी तुझ बिन जालम्।
तेरे आए पिया जिया सुख पाए यास तू आजा एक दिन जालम्॥

३

रात मन लेगयो बांको बेदरदी सइयाँ।
नाम न जानो यास पियाको हियरा में दाग सखो देगयो॥

४

गुजर गई सारी रैनरी नहीं आए सइयां।
भोर भई मोहे रोवत यास पियाकों किन बिलमायो गुइयां॥

५

बालमा जियरा लुभायके देखो नहिं आवतहै गुइयाँ।
रैन अंधेरी सेज अकेली यास पिया नहीं पास कासे कहूं विपता बिरहाकी जिया कल पावतहै गुइयाँ॥

छाडो ना मै लागूं पइयां नींदकी मैं माती सइयां।
छोड़त छोड़त रैन गुजारियाँ यास न मरोरे बहियां॥

७

मोंसे न बोलो जावोजो मैं मारी दरदकी।
यास पिया बिन कल नहों मइकुं पइयां कोउ पर लावोजी॥

८

रात पिया तुम आयके मोरा जियरवा लगाए गए।
यास पिया फिर सुधहु न लोनो काहे सुरत दिखलायके॥

९

जहाँ जागि रहे सारी रात बालम वहों जारे।
यास पिया तुम मइसों न बोलो बोलो वाहोके साथ॥

१०

जावो पियाको कोउ लावो जो मोरा जिय कल पावे
यासके हंसे जोहै व्याकुल ल्यावो पियाको देखलावो जी मोरा०॥

११

मोरे माथेको बेंदोया जियरा लोभाय।
यासको देख भुमर खाऊं मेरा यार सांवलोया जियरा लोभाय॥

१२

तेरे वारी गई कहा मानले मेरा तू अचरा छांड़देरे।
यास यह तेरो नेहको बातें एसे नहीं कोउ जानले मे०॥

१३

काहे छेड़े तुरकवा मैं ना बोलूं।
शुभ महूरत ठाड़ो रहतहै यास आस छाड़दे अंचरवा मैं ना बोलूं॥

१४

बिरहा मइकुं छेड़ेरे मैं आपी मरत हूं।
नेहको चितवन यास तुमहोसे बारोहूं मत फेरेरे॥

पीलू।

सइयांरे मोरा तुम बिन जिय घबराय।
कबहूं देहरिया कबहूं अटरीया जातहूं मन परचाय॥

यास बिना मोहे देसवा विदेसवा नैनन कछू न सोहाय ॥

२

बांकोरे छैलाको दैया मोरा जिया चाहे ।
मोहे चितवनकी बरछी वो मारे यासको देखो दैया मोरा जिया चाहे ॥

३

आवतहै पिया बार बार चोरो चोरो ।
यास पिया मोहे सोने नहीं देतहै मइसे करतहै जोरा जोरी ॥

४

तेरा बाला जोबनवा सितम करे ।
यासकों तेरो बात न भावत तेरा हाथ कगनवा सितम करे ॥

५

जोबनवा मेरा जायरो ।
रैन दिना मोहे ध्यान रहतहै यास पिया नहीं आएरो ॥

नाहक मइसे सखी यह करतहै छेड़ा छेड़ारो ।
यासहै मेरो बाटको घेरत आनके मैरा फेरारो ॥

७

काहेरे मइकुँ सइयां पइयां में तोरो लागूं ।
सास ननद मोरो यास देखतहै और देखतहै गुइयां पइयां० ॥

कासे करूं फिरयादरो पिया मोरे बोलत नाहीं ।
यास पियाने जासे मोरा एसो भुलादोनो यादरो० ॥

मोरा सांवरे पियासे दैया अँखियां लगी ।
राह चलत मइको यासहै टोकत एसे बलमासे काहे दइया अँखिया० ॥

१०

तेरा कहा जायगा यार कोई मर जायगा हारे ।
यास पिया बिन दिल तड़फतहै कबतक आयगा यार ॥

भुलाई करको कङ्गनवा भलारो ओमें केसेके घर जाऊं ।
बहियाँ पकर मोरी लाज गँवाई यास न चलत अगनवा भला ॥

१२

छेड़न मइकुँ जायरे देखन चोउ देखले ।
यास न मइकों भी चले देखन चोउ देखले ॥

१३

मेरा मन लिए जाय बांके नैना वाला ।
छुटी भुवें और साँवरी सूरत दासको देखे सरमाए बांके नैना वाला ॥

काफी—बारहमास।

पठयो तुम नारि रैन बन बालक संग ।
चैत अयोध्या जन्मे है राम चन्दनसों लिपवायो धाम,
गज मोतियनमो चौक पुराय, सोनेको कलस दियो धरवाय, धरे घट मन्दिर ॥
बैसाख ऋतु ग्रीष्म लाग, पवन चलत जैसे वज्रसमान,
जैसे जल बिन तलफत मीन, लागत मेरो कोकई कोन, दियो दुख दारुण ॥
जेठ मास न लागत अङ्ग, राम लछमन सीता संग,
राम चरणपद कमल समान, जरतहैं धरती औ असमान, चलें तामें कैसें ॥
असाढ़ मास गरजे चहु ओर, रहत विहंगम कुहकत मोर, बिलखे कौशिल्या अवधपुर धाम,
भींजत हुइहैं लखमन राम, खड़े तरुवर तरे ॥
साँवनमें सरसाने नीर, कैसे धरें कौशिल्या धीर,
भइ पट गुञ्जत फिरत भुवङ्ग, राम लछमन और सीता सङ्ग, रैन अँधोयारे ॥
भादों गरजे मेघ अपार, अहको गया सगरो संसार,
बड़े बड़े बून्दन बरसत नीर, भींजत हुइहैं सोया रघुवीर, झमक झमक झर लागी ॥
लागोरो सखो मास कुंवार, धरम करे सगरो संसार,

जो घर होते ऐसे राम, विप्र जिमावतो देतो दान,
थार भर कंचन ॥
लागोरी सखी कातिक मास, गड़है करेजे दुखको फाँस,
घर घर मानिक बारत नारि, हमारी अयोध्या
करी अंधियार, कियो ककईने ॥
अगहन करतो कुँवर सिङ्गार, कपड़े सियवतो
सोनेके तार, कटि पीताम्बर कुण्डल बाय,
चीरा जरकसी देतो बन्धाय, गरे बेजन्ती ॥
पोस मास ऋतु व्याप्यो जाड़, रैन भई खांड़ेको धार,
कुश आसन कैसे रहिहैं राम, कैसे करिहैं बनविश्राम,
जनक सेजरीमें ॥
माघ मास ऋतु लागो बसन्त, कैसे जियऊं
बिना भगवन्त, रामचरण सिर गूंदो मीर,
भारत ठाढ़े ढुरावें चम्वर, बसन्त मनाऊं ॥
फागुनमें अधिकान्यो रङ्ग, चोवा चन्दन लगावत अङ्ग,
भारत बैठे धारे अबीर, कापर छिरकों बिना रघुबीर,
कासों कैसो ॥
जो गावे यह बारो मास, सो पावे बैकुण्ठको बास,
कहत भवानी अवधपुर धाम, हरते आए श्रीलछमन राम,
मिलो कौशिल्या ॥

धीन

तोको जान न देऊंगो यार रोतो गर लागोंगो ।
तेरी सूरत मेरे नैनमें बसत है मन बस कर पागोंगो ॥

परज—अन्

बारहमासा

सनेहो रघुनन्दन के ।
वैशाख अशोक समीपा ।
सिय ध्यावें रघुकुलदीपा ।
प्रभुको बहु भांति पुकारो ।
सुधि लीजो बेग हमारो ॥ सनेहो० ॥
सखो जेठ मास दिन बाढ़े ।
मोर पिया बिन लागत गाढ़े ॥
त्रिजटासों कहत जटारो ।
कब आवेंगे बेग खरारो ॥ सनेहो० ॥
सखो बरषा समें निहारो ।
नभमण्डल कारो बटारो ॥
आषाढ़ मास बरसायो ।
सखो दशरथ सुत कहुँ छायो ॥ सनेहो० ॥
सखो सावनको घनघोर ।
पिक चातिककी अति शोर ॥
बरबुन्द बरसो घन गरजे ।
मोरे प्यारे बिना जिय लरजे ॥ सनेहो० ॥
सखो भाँदो रैन अँधेरो ।
बरसे बीजुरी चमकेरो ॥
रघुवर अजहूं नहीं आए ।
सुनि त्रिजटा कहि समुझाए ॥ सनेहो० ॥
सखो कुआर मास हनुमाना ।
हमते कुशल बखाना ॥
विजय दशमो जो प्रभु आवें ।
तबको सोहा जीवन पावें ॥ सनेहो० ॥
सखो कात्तिक मास दिवारो ।
हनुमान प्रभुपै सिधारे ।
हरि सेवत मन तन मारे ।
सब मिल पूजिहैं सुरारि ॥ सनेहो० ॥
सखो आयो अगहन मास ।
सोको मिलनेकी हरि आस ॥
रघुनाथको खबर जो पाए ।
सुना लछमन बचन सुनाए ॥ सनेहो० ॥
सखो पोस मास दिन छोटे ।
मोरे पिया बिन लागत खोटे ॥
दिन भूख नींद नहीं रजनी ।
रघुनाथ कहां अब सजनी ॥ सनेहो० ॥
सखो आयो माघ सहोना ।
पिय क्यों निठुराई लोना ॥
सखो यों कहे प्रभु आयो ।

रिपुते संग्राम मचायो ॥ सनेहो० ॥
सखी फागुन भईहै चढ़ाई ।
दशकन्ध हन्यो रघुराई ॥
जब सीता राम मिलाई ।
सुर नर मुनि जन सुख पाई ॥ सनेहो० ॥
सखी चैत्र मास सोहाई ।
अवध गए रघुराई ॥
भयो रामराज सियरानी ।
दियो तुलसीदास सुखदानी ॥ सनेहो० ॥

परज—जङ्गला

तुमही मेरे बन्धुहो और जगत सब धन्धुहो ।
तुमही मात पिता सुत भाई तुम बिन अन्धुहो ॥

टोड़ी—लूम

मोरही हरि गुण गावो ।
सुफल मन चावोहो अनेक जनमते मनुष तन पावो॥
लख चौरासी अन्त जपत जपत माला भई पूरी
रण सुसुमेर पावो ।

काफी—जत्

आलीरी उन श्यामसुन्दर बिन मैं न जिऊंगी ।
अगमन लाग्यो अगहन मास, सब सखियाँ मिल
करत हुलास, हमरे श्याम रहे छाय विदेश,
लिखत न चिठीय न पठयो सन्देश ॥
पूस मास तन व्यापत शीत, कबधों मिलिहै
सामरो मीत, बिन पिय जियको जाड़ न जाय
सिसिक सिसिक सारी रैन विहाय ॥
माघ मास ऋतु लागी बसन्त, अजहूं न आए
हमारे कन्त, कासे कहूं सखी जियकी बात
बिपत बटावन कोउ न लखात ॥
फागुन रङ्ग रचै सब कोय, हम सब रैन गवांवै रोय,
धन धन धन कुबरीको भाग, हमरे श्याम सङ्ग
खेलैं फाग ॥
चैत मास तन कुसुमति केश ।
हम जानी पिय अइहैं विशेष ॥
कठिन कठोर हियके श्याम ।
रहेहैं लोभाय सवतियाके धाम ॥
तपन लागी बैशाख जो बीर ।
छिन छिन छोजत गोरीको शरीर ॥
उठिए करेजे बिरहा दवार ।
पिय बिन यागत भईहै हमार ॥
जेठ चलत अति तात लपाट ।
कैसेके चलिहै बलम मोरे बाट ॥
सब सखी सोहै भवन सुख खाट ।
हम धन पकरें किवारको पाट ॥
गाढ़ असाढ़ मेघ चहुँ ओर ।
बोलत पपीहा नाचत कल मोर ॥
सबके पिया घर आएहैं धाय ।
हमरे श्याम रहे द्वारका छाय ॥
सावन सब सखी झूलैं हिण्डोर ।
पिया बिन लरजत हियरा मोर ॥
कासे कहूं सखी जिय समुझाय ।
बिछुरे श्याम कोउ आन मिलाय ॥
भादों गरजत घन गम्भीर ।
भरि आई नदीया उमग चले नीर ॥
चमकत बीजुली डरपे जीउ ।
आन मिलावो सखी मेरे पीउ ॥
क्वार कमलदल प्रफुलित ताल ।
आवन हार भए नन्दलाल ॥
उमगत छतियां जनावत नेह ।
पुलकित रोम शीतल भई देह ॥
कातिक करम करै सब कोय ।
तुलसी पूजै निहोर निहोय ॥
हमरे श्यामको मिलिहै धाय ।
सूरदास चरणन बल जाय ॥

खम्माइची—तिताला

कब लग आसो प्रीतम प्याराहो साँवला यार ।
आयो असाढ़ कान्ह नहीं आयो सुनरी सखी
क्या करिएहो ॥

उमड़ घुमड़ चहुँ दिश घन आए पिय बिन कैसे
भरिएहो ॥
सावन ऋतु वरषाकी झरीयाँ।
गरज गरज घन बरसे चमक रहो चपला चहुं दिसतें
जायके कहे कोउ हरसे ॥
भादों मास घटा गहरावे मोरन शोर मचाएहो ।
यह पावस रित बीतन लागो कान्ह कुँवर नहीं
आएहो ॥
क्वार मास ऋत जमुना न्हाई वृन्दावन छवि छाई ।
अजहूं न पी मधुवनसे आए एसो सुध बिसराई ॥
कातिक मास कालिन्दीकूल सब सखी मिलन न्हावे ।
बिन मनमोहन लगत न नीको सुख समूह व्रज छावे ॥
अगहन मास ऋत शीतल व्रजमें लागत अधिक
पियारी ।
बिन नन्दनन्दन कुञ्ज कुञ्ज सुख त्रिभुवन नाह
मझारी ॥
पूस मास हरि बिन न सुहावे विरहा धूम मचाईहो ।
जारी रहो बुलालो पियको मधुवनते सुखदाईहो ॥
माघ मास व्रज फूल फूल रहे वृन्दावन चहुं ओरोहो
जाबे कोई मधुवनतें ल्यावे नन्दकुँवर चितचोरोहो ॥
फागुन मास रह्यो व्रज सगरो द्रुम द्रुम फूल खिलाई ।
जनु कब आवेंगे मधुवनतें व्रज नन्दकुँवर उरधाई ॥
चैत मास वृन्दावन शोभा बनमाला ले आवेहो ।
विरहा पीर मिटावो तनकी मोहनो रूप दिखावेहो ॥
मास वैशाख न लगत सुहावन बिन नन्दनन्दन
प्यारेहो ।
बिन दरसन मन धीर न आवे सुनिहो नन्ददुलारेहो ॥
जेठ मास यह रित ग्रीषमकी जब पियको सुध आवे ।
ख्याल खुशाल करन चित चाहे कुँवर कान्ह
मनभावेहो ॥

खम्भाइची—ठुमरी

कैसी करूं सजनीरी चितवनीया तिरछी तोरीरे ।
भौंहैं कमान बानन तक मारी रसबस कियो मोहे
गोरीरे ॥
कटि केहर कदली जनघा श्रीफलसी छतियाँ जोरीरे ।
इश्क रङ्गमें रङ्ग रहेहैं मारत मदन मरोरीरे ॥

घाटा—तिताला

साँवरेसों यारी कीजे दीजे मनुवा लगाय ।
जाकों नाम अधम उधारन गावे मुनि समुदाय ॥
भवसागर तर्यो जो चाहे नाहीं और उपाय ।
जानकीदास प्रभु सब सुख हुइयाँ दीना गुरुने बताय ॥

२

हमरी सुध बालम अजहूं न लई ।
आयो वसन्त कन्थ घर नाहीं जोबन आन दहो ॥
अरे इनजा कोई कुलकसो लागे छिन छिन जात तहो ।
जानकीदास पीर प्रीतमकी नाहिन जात सहो ॥

३

जमुनाके तीरवा कन्हैया खेले गैयन के पास ।
मोरवाके पर सिर धरे करे केल विलास ॥
मुरली बजावे गावे बाले बोले बतियन हास ।
प्रेमरस अनङ्ग हरावे शशि कोटि प्रकाश ॥

४

मइयां बसे कौन नगरीया हो रामा ।
जोगन होके मैं बन बन ढूंढ़ं हरेक पूछूं डगरीया
हो रामा ॥
आछे दिन पाछे पछताने कोनो न शाच अगरीया ।
गावे गूदर गुरु मिले भांत जासे बनी सगरीया
हो रामा ॥

५

सोअत चुभी चुभी जाय मोरे रामा मइयाँ मोर
कुसुमी वोढावल ।
ताहेरो कुसुमियाको चुनरी रङ्गावत पहरत सब दुख
जाय मोरे रामा ॥
सोरे पहिर धन चली अटरीया ननदीके जिय
ललचाय मोरे रामा ।
गावे गूदर पिय आपन मैं पायो रहसल गरवा
लगाय मोरे रामा ॥

अरे फुलली कुसुमीयाहो ननदुल सइयाँ बिन।
सइयाँरे विदेशवा गइला अरे रखतो जोवना हो॥
अरे चोली बन्ध तरकन लागी अरे भुल नहीं
विदेशवाहो।
गावै गूदर कहा करिहो मोरी ननदुल अरे बोतलो
समैयाहो ननदुल०॥

७

मेरो तो जोवन राधा बिन देखे नहीं चैन।
पइयां परों मैं तेरो ललिताओ प्यारो लेन॥
मोसे चूक परीहै कैसे रूसोहै सुख देन।
धीरज प्यारीकों देखे शीतल भए नैन॥

विरहा रामप्रसादजीका

कहरवा

श्रीगणेशको सुमरण कर कर भाई।
मोरेरे पुन श्रीय देवी मनाय गावतहूं में विरहा
सुन्दर दोउ मिल होउ सहाय भाइ लोगवा॥
वरणन करो जगत हित कारण भाई मोरेरे सकल
सुनहु चितलाई।
इहाँ सुयश परलोक होय सुख कृपा करहिं रघुराई।
कहा बौरानो आय जगत मा भाई॥
कियो द्रव्य पर नेह जैसे असन बनावत षटरस
डारि तामेरे हा०।
मोहकों मित्र देत तहीं यमपुर ताहे मले विधि मार।
ज्ञान अगनके प्रगट करहु तुम भ्रमको डारहु जार॥
भव कपास तरु अति सब शाखा हरिहै ताका मूल।
दिष्ट पदारथ जहाँ लग बरनो निरखो तो न अहे
सब तूल।
श्रीप्रह्लाद तरे भवसागर भाई मोरेरे केवल भजन
प्रताप।
शील स्वरूपा अहिल्या तरगई छूट गयो मुनि
श्राप॥
श्रुति सिद्धान्त व्यासको सम्मति बहुरि मुनिन मत सार।
पढ़ने निवृत्ति शास्त्र कहे नित उठि गीता करहु
बिचार॥

त्रिया पुरुष जो यहको गावे भाई होय जलदो
भव पार।
रामप्रसाद वैश्य कहे सबतें मानउ कहा हमार॥

अङ्गरेजी अहंग

डीयर यङ्ग मोर बट बान गौड टू आई एम ग्रे
ओ माइ डोयर ओलाउं हीयर माइडो०।
जपु यौर वर्डस नो मैन कैनसी धाँधाँधाँधाँधाम
ढंढंढुंद्रद्रधाँधाँधाँधुँधुँ॥

सरगम २

पधसासाधपनीधपमगरेसापधसारेधपगगरेरेसा।
इंगलिशमैन व्हैरो गुड मैन व्हैरो बैड विलायत मैन
गिल आवे गोरा तरिलल्लल्॥
तरिलल्लल्लल्लल्वरग शाना वर गनान इट गुट
लोटटाम् टूमडाम् धूमधाँधाँधाँ॥
सांगप्टेर सो इट बक्केद लेलना फरमावे वरगे।
माई गौड ग्वइ लौडे बक नट।
इन तइयनु बौनवे॥
बट इनदो बाई जाफदो लारड्॥

अनोहो ड़ाड़ कलामन तकिया फरियाद।
वेश कंपर रख तंरख ते आए सनावर वरो अरो
फैन मिक बंबे
रख तोरं बे नाफरजान दड़फतो दड़फता अनो
होना फरदी ड़ाड़ कला अनोहों॥

४

पपधधसासाधपपधनिसारेरेधपगममगरेसा।
पधसाधपधपमगगमगरेसा॥
धसाधधपमधनिसाधपधपमगगमगरेसा।
धधपधधसानिधपरेगमगसा मसा ममा धधनिधप॥
पसारे सामपधरेसानिगरेसानिगरेसानिधपमगरे सारे
सारे सासानिधपममगरेसासारेगमपधानि सासानि
सानि धनिधपधपमपमगमगमगरेगरेगरेसरेसा।
सारेगमपमपमगमगगगरेसासारेरेगमपगगममपपध
धनिधधपधसानिनिधधपपममगगरेसा॥

देरी जेड़ल टान टु मिरोविंस नाड निग्रर इज जगान
ट फाइट फौर दी जौरज दी थर्ड ।

६

वरं गंवे गिडि गोरा बाजे वाह्रा हाहाहा एवाहर
हरिशवे जास मंजस्तोर माला कमला मोमन
सा कमले तरि ललल अङ्गरेज माननरी गुट मानन गुट
मानए फैयर गलतरिलललललल गिलशावे
गोरा धुधुधांधांधां ॥
धांधांधांधांधांधांधां माल बुरुक सों वोत गेरेरो
मोरो मोरो तो मेरो तोर ॥

७

राम दिलांदा महरम मेरा इथे उथे भरवासा तेंड़ा ।
कूड़े लोक बूराइयां वेखदे भटपए नाल कोसाड़ा भेड़ा ॥
याद तुसाड़ड़ो भूलदा नाहीं भांवदा भोनाहो सानु
भीर बखेड़ा ।
प्रेम रङ्ग नाल पाक महोब्बत नेह नगरदा औघट पेंड़ा ॥

८

राम कहो तन नाहक तोड़त जब लग जगमें
जानत जोड़त ।
छिन भंगुर तनसों क्या नाता तूहीं छोड़ नहीं तुझको
छोड़त ।
लाख करोर तात सुत कोने फिर क्यों वाहो करनको
दौड़त ॥
मम अहङ्कार मूल भवतरुको डार डार पैवंद जोड़त।
प्रेमरङ्ग अनङ्ग रङ्ग तज मर जनम न सन्त मुंह
मोड़त ॥

९

ताजवे ताजनो बनो बनो बनो बादए दिल शावुगो ।
वर्जे हैयत कर खुरो गरन मुदाम मए खूरो बाद
बखुरव याद भोता० ।
खुशनशोव ह्निलवतें दस्त वगीर बादए वोस
सोता बकाम जोता० ॥

शाहद दिल कुशाए मनमें कुनद अजनदाए मनू नक्
न गुल जरङ्ग बूता० ।
बादसबा बुबु गजरो बरसरे कुया परो किसएवो
हाफिज़ वगो ॥

घाटा—ताल तिताला

गईरे कुसुमके खेलवा सुध भाई बालम तोरो
मोरोरे रामा ।
जोमें जनतीऊं सइयां मोरे अइहैं बगियामें तम्बू
तनावत्यूं ॥

१

पोषनी चिरैया रामा उड़ो गईलो कौन देश मोरे
रामाहो।
दाना खातो पानो पोतो बोलिया बोले अनमाल ॥

२

कुवरो कवन तप कोनो बस भए भगवान मोरे राम।
हाड़तो हिमाले गाले काशोमें करवट लेऊंरो ॥
प्रयागे तपस्या कोनो जाते काया सुधरो उवरो ॥

३

कौन बन ढूंढूं तोहे आज सनेया कौन बनहो रामा ।
एक बन ढूंढ़ सकल बन ढूंढ़ा पात पात डार डार
सइयां कौन बनहो ॥

४

चैतको आईलो बाहार मोरे सइयां लौटल नाहीं ।
नयो जोवन नई चोंप कोंप तरु नई नई कलोयां बहार ॥

५

वंशोया बजावो मोरे रामाहो बाहुरे कन्दमवाके तरे ।
वंशोयाको बाजा सुनो मोसें रहिलो न जाय मोरे
रामाहो ॥

६

पोयरो न पहरों रामा आई चैतको बहार मोरे रामा।
एकतो अङ्गवाको पातर दूजे सइयांहै नदान ॥
अतलस लहंगा पहरूं अङ्गाया पहरूं बूटेदार
मोरेहो रामा ॥

कहरवा

देखोरी छवि मदनगोपाल ।
कीट मुकट मकराकृत कुण्डल उर सोहे
बैजन्ती माल ॥
शीश मुकट मकराकृत कुण्डल निरतत आवत
मदनगोपाल ।
सूरदास प्रभु तुमारे दरसकों जनम जनमका भयो
निहाल ॥

२

साईं मोकों साज दियो एक डोलवा ।
चार कहार मिल चारि जतन कर जहाँ उतार
तहाँ दिसो न दुवरवा ।
रूखन बिरखन जहाँ मन्दिरन छाया छिन एक
धूप निवारिले कहरवा ॥
आवत जात बहुत दिन लागे फिर नहीं आव बहुरि
नैहरवा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो निकर गए प्राण
रहगये लोलवा साईं ॥

३

लागो मोरी प्रीत थोड़े दिननकी दड़ीयां में भारू
बमना जिन मोरो माने लगन धरदीन ।
क्या करूं इन माय बापको जिन मोरे वारे निंदा
करदीन ॥

४

कङ्गनवा लेदे मोल बालम पइयाँ परूं ।
आगे कङ्गना पाछे कङ्गना बीच मोतियनकी कोररे ॥

५

जड़ा निबियाको शीतल छइयाँ उदासी मैं ठाड़ो
बालमरे मैं उदासी ठाड़ो ॥
मेरे सइयां चले चाकरिया सगुन ले ठाड़ो ।
मोरे सइयांके ढल तरवरीया कमरसे लागो ॥
मोरे सइयां बिछुवा सेजरीया दगा देके भागो ।
मोरे सइयांके हाथ रूपे मा भपट गरे लागो ॥

तोरा बड़ा गुण मानूं दूर देशीया मोकों सङ्गवा
लायदे ।
कोठे उपर कोठरीरे, जिसमें काला नाग ।
काले के काटेसे बचो, अपने सइयांके भाग ॥

७

हल बइयां जुमनी चलत मुसाफ़िर बिलमाईरे ।
अपने उसरवा जुमनो कुटन लागो धान
थोर पछ कौन बहुत मारे सान ॥
हाथ में लड्डू बजारमें खड़ो जुमनोको जोरन बाबसे
लड़ो ॥

८

नन्दकुमार चरावत गइयांरे ।
जगकारण तारण भवसागरसे गोपन सङ्ग दूध दुहैया ।
जाके चरण-धूल जग-पावनतें हरि जमुना मांझ
धनहैया ॥
जाको जगत भरण पोषण कहै नितहीसे प्रभु
प्रमदनतें दधि मगैया ।
रामप्रसाद अघए अधमन मै हरि अहैत तव लेहु
बलैया ॥

भहंग—नेपाल बोली

ना बोलौ वरू ऊंवु लाल बोलो ना सुनो ।
ऊखा लोकाचो सो पानो गोंगन पात पोउला ॥
पिया मोरा परदेश जोवन काश लाइ देउला ।
काठमांड़ाको खूरो पानो भांत गांवको भाला
पाटनको रामलो मैजो जोवनको धार बोलो ॥

फ़ारसी

या महम्मद परवो अरहक् शोकक कलवो अग्शानो
मज़लूमो इलहाम कलाम् फ़सीहा ।
अलज कर नबी इलमो पाय सग् बोलो द मजनू
खलक् पूरसी ॥
इंचो वृन्द गुफ़ाद सगाहे गाहे कुय लैलो रफ्त बंद ॥

कश्मीरी

यत मोयत मोयत मोहाल वाजी मारीयतभो आरवल
भ्यानो यतमो।
वाग सम्याने गिलास फूलो यहैहार वलभ्याने यतमो॥

काफी

कान्होड़े कामणगारे कीनो मूने घैलोरे।
वंशी वजाड़े वान मोहनीनी मन्त्र मेलोरे॥
आठ पहर आंख लागी आंसुड़ाना एलोरे।
सारा रैना सुध गई श्यामाटे मन मांड़े लोधं कोधो
घेला इलोरे॥
मननी वात तो तूं श्यूंरे जाणे आम्या तारूं मारूं
चरचा करेछे छैलो पैलोरे॥
नरसीनो स्वामी सांवलीयो तारो म्हारो वात सब
जगमें फैलोरे॥

मलैया

सारेसारेगमपमगमरे सामारेगम पगमपधनि
धपपपधनिसासानिधपमगरेसा।
सानिसासानिसारेसानिधपनिधनिधपधपमपममगरे
गरे सासारे सामारे गम पधनिसानिधपमगरेसा॥

काफी

विषय वासनाय कीनो मगन हुइलोरे मन।
सेखानेकी बोली आइलो विषय भेद भुले गेलो
परमनिधि हाराइलो वृथा बांचो धोग जीवन॥

२

ताए कोशोमा एगो जाए परवस प्राण तारएको।
जगन्नाथ महाप्रभु किवा मन्त्र जानो सातस पचाश
कोस डारोया लगाय आनगो जाए॥

धनाश्री

होरी बोल होरी बोलो हकाशोमा बाजार गोविन्द
होरी भजहे।
टेरेरे राम२ टेरेरे टेरेरे टेरेरे टेरेरे टेरेह॥
हरि भजहे नागा ठाकुरहो० ढीला ढालाहो० छेल
सांपैयाहो०॥

सिन्धु

वँधु आमार प्राणरोवोर तामिर उमिर पिरितो करि
कामा सङ्गे लागोलो आमार भ्यानरे वँधु०।
मधुर वंशी बजाइलो कान्हर कारारे॥
जमुनार तोरे ठाकुर वंशी गान करिलो राखिले
तुमारो आवे जादुर डारारे॥

२

आमार बाड़ी एसो कानाइ गायो मधुर तान।
आमार बाड़ी एसा वँधु खाया नागरपान॥
बोसते दिवा शोतल पाटो जौवन दिवा दान॥

दक्षिणी

विषय त्यजा भजा श्रीरामया।
विष भक्षुणीया एकबार मरे कोटि कोटि जन्मया
लया लया लया॥
कामिनी ऊपर धरीत्य ताहेंमतो आयुष्य जाइ
लया लया लया।
देवराव भणे श्रीगुरु लापुसा संसारीन फसा फसा
फसाया॥

काहरवा

मेरे मन बसगई मूरत गोपाल।
विसरत नेक टरत नहीं टारे मृदु-मुसक्यान अनोखो
चाल॥
मुकट लटक कुण्डल कहा बरनो कल कपोल भुज
अतिहो विशाल।
मृगमद हसन दमन दामिन द्युति बांको चितवन
बांको उर साल॥
सुन्दर-वदन मदन लागत अति चन्दन-खौर विराजत
भाल।
कटि-किङ्कणी बाजत पग नूपुर छम छम छननन
गर बनमाल॥
मधुर मधुर धुन मुरली अधर धर बाजत गावत तान
रसाल।
थुक थुक थुक थुक तातता तथेइ थेइ निरत करत
सरस रस ख्याल॥

नारद शारद ब्रह्मा शुक शङ्कर मोहे अतुवन शेष पताल।
रूप रङ्ग छपा कर कानर दरस दियो भयो मगन निहाल॥

पील्

झूंठी काया मायाका तू क्या गुमान करता है।
जो तू काया मलमल धोवे, सोभी तेरे साथ न होवे,
लोक कुटुम्ब सब ठाड़ा रोवे, तन माटीमें पड़ता है॥
माया पाय भया अभिमानी, इत उत चितवे तिबरा तानी, सज्जन चाले कौड़ा कानी, नाहक पच पच मरता है।
जानको दास सोई जन साचा, जो साहेबके रङ्गमें रांचा,
निर्भे होके जगमें नाचा, वो भवसागर तरताहै॥

कहरवा

मोर-मुकट वाको कुण्डल कान मेरो मन लेगयो श्याम सुजान।
बांको चितवनोया नयना-रतनार तिलक केसरको मोहे लिलार॥
बोलन हसन मन्द मुसिक्यान चलन लटकालो बरनो नहीं जाय।
हरिजन कहत कठिन एक बात महा मुख शोभा नहीं लजात॥

२

देखो देखो बालम चतुरैया हमार टमरोमें तीन कौड़ो फेर ले आय।
टमरो हलवैयाके टोन सासूजोको लड्डू ननदजोको पेड़ा सइयांको सोरा चटाय लाई॥
टमरो सोनरबाको टोन सासूजोकौं टुलरो ननदजाको तिलरो सइयांजोके कडुआ घड़ाय लाई।
टमरो रंगरेजवाको टोनो सासूजोको चुनरो ननदजोको पियरो सइयांजोको चोरा बन्धाय लाई॥
देखो देखो बलम चतुराई।

१

जमाना खोटा कजरा राखो छिपाय॥
कापर पहरूं हरो हरो चुरोयां कापर करूँ सिङ्गार बलम मोरा छोटा॥

बरवा

लहरोया मोरो भींजे भींजे मारे बालम परदेशरो।
हमरो भींजे सुरङ्ग चुनरोया सइयांके लट पागरो॥

बरवा—कहरवा

मोरे ललुवा दुधवा डारे कान्ह नोको नजर लगो।
एक दमड़ीके पनवा मगायन तापर लिखदई टुनवा॥
पियाका सङ्ग मोहे नोका न लागे यार बिना घर सुनवा।

२

पिया मोर बड़ निरमोहिया कजरा न दे।
खानेको तो दोन झानवाके चांवर मागेका दई
पुतान सुतइका दोहन लालोर पलंगोया खेचई झिलंगाके बाद॥

३

करहैया राज मारो पिराय केला दरद नहीं जाने।
टिकुलो हिरानो गुमार अयोध्या न्हाय आइ गुइयाँ॥
सूरजकुण्ड में टिकुला हिरानो ढूंढ़ लागो अपना अपरार॥

४

चल मन मेरे काशी बस जाय।
मणिकर्णिका पंचगंगा माधो श्रीगोपाललालके दरसन पाय॥
जनम जनमके पाप कटतहैं आवागमन फेर नहीं आय।
कृष्णासनेही निज करले चरणकमल बन बल जाय॥

५

लागे वृन्दावन नोको आलो मोहे।
घर घर ठाकुर सेवा बिराजे दरसन गोविन्दजूको।
रतन सिंहासन बिराजे मुकुट धरे तुलसोको॥
बंशीवट जमुना सुन्दर सब व्रजकाहे टीको।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण-छवि औ सब जग लागत फीको॥

भजन बिन काहेकों देह धरो ।
काम क्रोध मद मोह लोभमें वृथा उमर गुजरो ॥
ना हरि भजन गुरुको सेवा साधु सङ्गत न करो ।
नौ मास गरभमें राखि मैया भार भरो ॥
निशिदिन सोवत जागत विहरत कहेला हरो हरो ।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको गुरु बिन सूझ न परो ॥

७

अब मोहो पिया मिले ब्रह्म ज्ञानो ।
घट घट व्यापक सबसों न्यारा एसे अन्तरजामो ।
कुमति जराय करो में काजर चढ़त प्रेम-रस वानो ॥
एसा रूप करो क्यों न विरहिन तो पियके मन मानो
सहज सिङ्गार चित्र करो चोवर सुरत निरत
करि बानो ॥
शील सन्तोष पूरहो दोउ कङ्कन दृढ़ रहो प्रेम दिवानो
एसा साहेब कहुं न देखा कबोर हरिके चरण
लपटानो ॥

देश बिहारो—तिताला

रघवा छाय गइल बघवारे भकुवा रामनाम चित
धरिला।
जाहि जपन प्रह्लादवा नारदवा परासर पुण्डरोकवारे ॥
व्यास अम्बरोषवा शुक शौणकवा भोष्म आदि अनेकवा
रुक्माङ्गद अर्जुनवाके रथ हकवा वशिष्ठ औ
विभोषण लङ्का दहलवारे ॥
ध्यान धरल शेषवा ए गणेशवा शारद ब्रह्मा ईशवा ।
कृष्ण रसिकवाके कारणवो राम भइलवा परल
रहो कतहुं शरण रहोलवारे ॥

तैलङ्गी बोली

२

मे सुन सुतो मङ्ग पोइ नाड़ ।
मेमु मोहन बंशी चेपो पाई नाड़ ॥
पोकुल सोपारो आकुल पान। मुकु नाक औ चुवुल कान
रमुछाती कड़पु पेट नटु । मक मरहै ताके हेटु ॥

नोउमा वाड़ नाउमें वाड़ नो मानो कगार
चोक्कु नारा लेड़ ।
आड़ वाड़ आलस्य मेंदो पान सोपारो आकुल
पोकुल ॥

तिलंग—तिताला

साँवरेदी सुरत मानु भाँदोवे मेड़ी सइयाँवे ।
बिन दोठीया सानु कल नहीं पड़दो चित चढ़
जाँदो झूमर पाँदीरे ।

२

आवना माड़े रे नाल गवरुवे ।
तेड़ो सुरतदो मैं दिवानो भई ज्यों भामा त्यों पालवे
गवरु या० ॥

३

रांझ रांझा कूकदो आइयां इत्थे हीर निमानो
कहदो यार कित्थे ।
सदारङ्ग दे नाल गुजर गइयां बसदा रांझण जित्थे वे ॥

४

साँवला प्यारावे श्यामा प्यारोरे ।
युगलछवि माड़े मन बस गइयां वृन्दावन छवि
निहारवे ॥

५

बदनामो दैंडा जग सारावे सांवरे गवरूवे ।
कुड़े लोक बुराइयां दंदे साड़ो राख अबरूवे ॥

झिंझोटी—बिहारो

मेरे डेरे आवो हे रसिया ।
बिन देखे मोहे कल न परतहै तुहो मन बसिया ॥
तेरो सुरतदो मैं भईहौं दिवानो मेरे मन बसोया ।
कृष्णानन्द रङ्गोलो मूरत तन मनमें धंसिया ॥

२

तुम्हार मन मैला न छोय डारो गले बिच बहियाँ ।
लोक लाज कुल नेक न सकुचत मैं बरजन तुम
मानत नहियाँ ।
मैं तन रोम रोम बलिहारी श्याम निरखि तेरो
परछँहियाँ ॥

नैन बसत निशिवासर छैला कसकत रहत हियके
मह्यिाँ।
मन मोह्यो मनमोहन प्यारे कृष्णानन्द चरण गहि
रहियां ॥

कालिङ्गडा

नजरिया लागी मोरी गुईयां।
वंशीवट अरु तट यमुनाके श्यामसुन्दर रस पागी।
निशिवासर मोहि कल न परतहै लोक कुटुम्ब
भय भागी ॥
वह चितवन मुसकान अधरन लखि अब भयो
मन वैरागी।
मोह्यो मन मनमोहन प्यारे कृष्णानन्द अनुरागी ॥

२

बाँसरीया बाजीरी मोरी गुइयाँ।
आधी आधी रात पहरके तड़के श्रवण सुनत उठ
भाजीरी ॥
श्रवण सुनत कल परत न छिन मोहे तन मन
विरहा दाजीरी।
कृष्ण रसिक रस बस करडारी सप्त स्वरनसों साजीरी ॥
मोरी० ॥

राग—ठुमरी

रङ्ग भीना बनरा जागारे।
खोल घूंघट मुख देख बनीका घूंघट में मन लागारे ॥

२

क्यों रहंदी होर माड़े सायबों वे।
इस कारण वे पातल वेली वे राझणदे मन धीर ॥

३

हुसना के जानी मेरावे।
मैंने बुलाया वारी चन्ददे चाँदणी वे आया मसालोंदे
नाल जानी० ॥

४

नैनादा झमका तैंतो लेंदा मेरी जानवो।
इस कारण मैं ढूंढ़न निकसी इश्क रैंदामैं लेंदा
मेरी जा० ॥

५

साड़ी वल वेखवे मैं तैड़े छंदड़े जाँदीया।
सदके कीती सदके जादी खोल घुमाई जिन्द मेरीयाँ ॥

६

मुरलीया वालेसों मन लागो।
मोर मुकट पीताम्बर सोहे गले बैजन्ती माला सों० ॥

७

इस नगरीकी नई रीत मुख देखेकी प्रीत।
अन्तकाल कोइ काहूका नाहीं जगमें याही अनीत ॥

८

चूड़ा लटकैंदड़ा नोकुड़ीए लाला घूंघरवाला
ताड़ायार।
इन अङ्गुलियांदेनी पुर पुर छलड़े मैंदोदा रङ्ग कुड़ां ॥

९

चोलीदा बन्ध सीनावे सवाजी मांड़ावे।
चोली तेड़ी अजब कसादीवे केसरदा रङ्ग भीनावे ॥

१०

लङ्गर बटपार हमसों न बोलो।
बहियाँ मरोरी झक झोरी मोकों हंस हंस घूंघट खोलो ॥

११

आज रङ्ग भींना बनरा मेरे घर आया।
केसरीया बागा अङ्ग सोहे भागनतें पाया ॥

१२

अच्छा बना लाड़लेहो सुघर बना।
नाम न जानूं ठाम न जानूं बरबस घूंघट खोलो ॥

१३

हमसों करत नित रार प्यारे।
औरनसे रङ्ग रसकी बतियाँ मोसें करत तकरार
नन्ददुलारे ॥
कृष्णानन्द मन माने सो करले मनमोहन बलिहार
जियारे ॥

१४

सखीए:क्यों नहीं हुण सुण सुचदी।
दिलांदे मुश्ताक पुनु बिलोचदी ॥

राग मझगारा लुम—एकताला

एसोए सोनो केहोया सुचदो दिलदो मुश्ताक
पुनदे उसदो ॥
फन्दोयावो मुसाफिर कित तेंड़ा रव वर सुनी बुखारेदे
कंचदो।

ईमन—तिताला

मन लालनको लहकन लागी देखो सखी गोरीका
सिङ्गरवा।
अब रङ्गसों लाई मनोब्वत चञ्चल अचपल मन पागो

गारा—तिताला

लेहु सौतन तुम अपनो पियरवा नाहक मोरो बांह
गहोरो।
सेवा करत मोरा जनम गइलवा तुम जीते हम
हारी पियरवा ॥

२

मैं पिया पायाना चाँदनी रात।
चाँदनी रात छिटक रहे तारे निरमोहिया हम साथ ॥

३

आज सलोनी रातमें पिया पायानी।
सात सखी मिल मङ्गल गायानी हँस हँस गरवा
लगायानी ॥

४

देखत अङ्गीया मोरोरे देवरा लोभाया।
तासकी अङ्गीया बनातकी नारी रेशम लागी डोरीरे ॥

५

मोहन घर आयानी आज हमारे।
सब सखियन मिल मङ्गल गाया मोतियन चौक
पुरायानी आज० ॥

६

आज सनेही मोको नीको न लागेरे बारे
सनेया मोको० ।
को समझाऊं समझत नाहीं ढूंढ़ फिरो चहुं बागे ॥

७

आयानो मेड़ा जीवन जोगावे।
मैंने बुलाया बारो चांदके चाँदने आया मशालोंदे नाल॥

आगन मेंडे आयानो मो मेंड़ा सइयों।
चन्दन चौको बारोवे आन धरो मेंड़ा मिया हरां
मङ्गल गायानो मेंडो० ॥

९

चोलीदा बंध सोनावे मबाजों माड़ेवे।
चोलो तेड़ावे अजब कमोदावे केसरदा रङ्ग भोना ॥

१०

अच्छा बनावे मेंड़ा रङ्गाला बनावे।
शिर सोहै बारोवे जरकसो चोरा होरा लगे मोतो
पना ॥

११

नोचल गोशेन भूसर पावां।
राझण जागो वारो मैं जोगियानो अङ्ग भभूत रमावां॥
रांझा मेड़ा बारोवे मैं रांझेदो सोणा रांझेदे सदके
मैं जावां ॥

१२

वेखो सइयों काशिद आयानो।
मैंतो अजब तरे गल पूछां दिलबरदो ॥
याद करेंदा रहंदो अपनो उमगसों हाल नहीं
साड़ा कभी तो दरस देखां ॥

१३

कन्हैया मोरा गागर ढोरोहो।
हौं जमुना जल भरन जात रही बहियां मरोर
झकझोरीहो ॥
कृष्णानन्द छैल मदमाता बरबस करत ठठोरीहो ॥

१४

माननो मनायो न माने मनमाहन मनमानो।
घूंघट पट खोलत नाहीं बोले अनगन ठनगन ठानो॥

१५

अनो रङ्ग झुरमठदा अणा हांवे।
सात सखी मिल पनीयांनु चलोयां उघर गयो तेरा
घूंघटड़ा ।

१६

माड़ा जीवन जोगा होवे आया भाइयांदे नाल बेहारवा ।

मैंने बुलाया बना चन्दादे चाँदनी आया चिरागोंदे नाल ॥

१७

नैनादा झमका तूतीं लेंदो मेरा जानवे ।

इश्कदे कारणवे ढूंढ़न निकसो महरम यार मिलेदीं ॥

गारा—धीमा तिताला

मौला करे तुसो जोवाँ माड़ो जानवे ।

मुखड़ा तेड़ा बाँग बहारों बार बार पानो पीवां तुसो जावां माड़ोजां० ॥

२

तबीब दिलांदा साजावे यार तरगइयां हांवे ।

वेखणदे मुण यार रखामोना कोउ सङ्ग सनेहावे ॥

आशिकानु माशूक मिलोया फेर घर आंवणा केहा ॥

३

चूड़ा लटकेंदड़ा नोकुड़ोए लेंदा तेंड़ा घूम घुमाला घाघरानो ।

अङ्गरोयादे पुर पुर छलड़े मैं टोटा रङ्ग गूंड़ा ॥

गारा—तिताला

झूमर पावानो चल गोशेनू ।

रांझाण जोगो वारो मैं जोगियानो अङ्ग भभूत रमावानो चलगो० ॥

गारा—धीमा तिताला

चाक कोथाइ दानो याड़ा माड़ो सुतड़ीनु सभालन देंदा भलावे ।

सेज सुतोनो मैं ओघर गइयाँ यारवेके शरम रखे रब साँइया ॥

२

पार खड़ावे पुकारे सोमैं केसे आऊं डब्बर भरोला ।

बोर मलाइके हमारी नेबरोया रसोया पार लगावे ॥

बलैया—धीमा तिताला

भलो निभाई यारवे रब करे तेंड़ा भला भलावे ।

जिस दिन मौला मेड़ा काजो भी हासा मियाँ पक्कर खड़ो तेरा पल्ला ॥

बलैया—तिताला

सितम करेंदोया नैना वालियां हांहांवे ।

चङ्गड़े दिलनु घायल कोता जोरा धिगणां दुख सहंदोया हांहांवे ॥

बलैया—धीमा तिताला

भूलोया मैनु सम्भालवे क्यों झड़केदा मैंनु ।

तुझ देहा मैंनु कोई नहीं दिसदा मेरा मियां लाइयांदे इश्कदो भालवे ॥

२

तांड़ो बला जाने जा गुजरो साड़े दिल बिच माहिड़ा।

मेड़ो लड़ छाड़ तुसो औरनु मिलदा रहंदा रांझा सानु आँखदा सहो मयाणाजा ॥

३

सोना लाईवे सोना गबरू ते लाल कहंदे हुण लाई सुनदावे ।

मैं कोकरां कितबल जावांवे मियां हांहांवे ॥

आठ पहर तैनु कहेंदे रहंदे रुठड़े जालम नहीं मिलाँदा गल मानजे सों ॥

४

रहो रहोवे दिलबर रहो रांझेणा बात सुहो सहांवे ।

घोल घतो कुर्व्वान कोतो अपनें उमगदो सहोवे ॥

बलैया कसूर—तिताला

सानुभो पया उलझेड़ावे तेरे नेनादे नाल मेड़ो माहोड़ा ।

तुझ बिन जिन्द बेकल होंदो रहंदो सङ्ग तुसाड़ड़े खेड़ावे ॥

बलैया—तिताला

हालनो मैं किसनु आँवे कदर न जानदा बेकदर मायाँ।

जो तू मेड़ो वारो कदर न जानो मेड़ा मियाँ नेह लगाके मैं भुलोयां ।

राझण मेड़ा वारोवे मैंभो राझणदो मियाँ इश्कदा पई जँजालवे ॥

चलैया—जलद तिताला

जम जम जोवांवे माड़े माहोड़ा तानु अल्लादो अमानवे ।
जोतू माडी वारोवे कदर न जानदावे मियाँ नेह
लगाके मैं भुलोयां मियाँवे ॥

चलैया—धीमा तिताला

मैं नहीं जानदोवे यार मैं नहीं जानदोवो ।
रझेटा साड़ड़े आँदाका ग़रमाँदा ॥
कुल असाड़े वारोवे दूतोंदा बेड़ावे मियां
लख बदोयाको भरमांदा ॥

१

अंखोयार तूतो मिलजा साड़े रङ्ग नाल भलो नहों
साड़े नाल ।
सहरानु छड़के उठचल हमदम ज्यों भामो त्यों पाल ॥

२

चाकनु कोई आन मिलामो सइयोंनो ।
सुन मैंड़ा काजो वे दिल मैंड़ा राजो मियां लाई
महोब्बत पाक ॥

चलैया—कमर धीमा तिताला

जादू जादू कहंदे मैं नहीं जानदे भला अपने
नैनादा जादू जानदी ।
जैसोयानी वारोवे शहर करदे अचपल नाल उणा
सङ्ग मुठा लेजांदे भला ॥

चलैया—धीमा तिताला

तैंतो मैंड़ो जिन्द माहोरे मोहो चोरे वालियाँ ।
वक्सनदो एक गल्ल सुन जामो वे मियां लाख
बदनामो शिर सहोवे सहो चोरे वाले ॥

२

रात किथे गुजारोयाँवे सोनाधो गड़दे लड़के
चस्मादे कोलवे ।
कोठे उपरवे पालन पइयां वेखे राझणदा शिवा ॥
बिछड़ो यार मिलदे नाहीं नोवे गाहड़ोया सुन जावो
भलावे रात किथे ॥

असुआ बोरदे वे कड़ेह वाले ।
इश्कदो रैनो वारोवे मूलन मिलदो मियां रङ्ग
घणि घणा बोरके ॥

४

बूझदा नाहीरे हाल राँझण बेपरवाहियाँ करदा ।
मछरोया वाँगु पाइ तरफेंदो रव्वा ईश्कदा लगा
सानु जालवे ॥

५

मैंतो चाल पहचानो हांवे नेनादे चङ्गड़े दाखड़ोदा
हो यार सानु ।
तननन ताक तन ग़बर दिलनुवे काकरां जारो
तूं तां हाँ हाँहाँ ॥
भलावे महबूब पियारा भलावे आशक रहंदा ताड़ा
मुश्ताक पाकवे ।
दिल लगा रहंदा यारा नदाना मियां दिन बिच
रहंदा शोरो महबूबांदा झमका ॥

६

सेदोयांवे मियां तेड़े इश्कदो नोकां झोकां
झांके यारवे मियां ।
हाल दिलादां मैंड़ा रवहो जानदा किमनु वेखा
कितवल कूकां यारवे ॥

७

सोना मैंड़ो जानवे मैं तड़े वारो जावां ।
जोतू चला वारोवे मेनु भी ले चला यार जिन्द रहोवे॥

८

एशवा अजहूं न पाया मैंड़ो जानवे ।
जानाबु वरतो पुग दिगरन दार पेश जान जाम्बु वर ॥

९

मारा मियां मूरज दिगरतोदानो दोस्त ।
तुसाड़े गरे आ लगोवे दिलबर इश्कदा लाग लगोवे॥

१०

मियां साजन आइला भला मेरो जानवे ।
जिन्दड़ो मैंड़ो बसनाहों साजन वे वैरण भई सारो रात॥

११

चाकनु कोई याका मिलामी वेश्रान मिले तोमैं जोवांवे।
रखा कौवे ईतुकी भड़केवा मीयां लाइ महोवत पाकनु॥

राग सरपड़दा—धीमा तिताला

दो नैना मांड़े लगीवे तुसाड़े नाल सुनवे माड़े माहिड़ा।
चश्म मनवा चश्मतो दश्मानैतो जाए दिगर मन तमासा एतो बिनमतो तमासा अए दिगर॥

खमैया—धीमा तिताला

खटीती तानु बड़ाइयां वे साइयां माड़ेवे।
तू हाकिम महबूब नगरदा मियाँ लोग तेनु देदो दुहाइयां वे सइयां मेड़ेरे॥

२

मियां नैतो चाल पहचानो दिलबर तेज निजारेथो जानी।
दमजु सुने न पाए न दहनसे तेरे दुशनाम तमाम जुवेसे लवहोरि अपना तो हुआ काम तमाम॥

पाठान्तर

सुनने पावन तेरे दहन से दुशनाम तमाम।
लुम श्रीलवर्मेहूं मेरा तो हुआ काम तमाम॥

खमैया—तिताला

वन्दि पटवारी मोना खेड़ेदा मुकाना।
इश्कदो खेती वारी हासल भरना रांझेदे कारण चलीवे वन्दी॥

२

पान चड़ेरानो लायावे गुमानी मेरा मियां।
मिलीया महरम यारसी मन्न दुख भुलियांवो कीता करम रवागो॥

अल्ला मिलावे मैड़े रांझेनु सबेरे।
आरूद खबरनी या मद जो बकस चेपे बर दरियाव॥

खमैया—धीमा तिताला

राइ राइवे दिलवर राहि वेघोल घोल घतो कुर्बान कीता साड़ेड़े मन लाइवे।

मान करंदी हीर सियालो साड़े इश्क निभाना
प्यारीया साड़ेड़े नाल तुसो राजो अपने मन साँइवे॥

२

लावोना कोई यार मैड़ेनु काई उनसन जाय समझावोनो।
जङ्गल जङ्गलवा ढूंढ़दो रांझेनु भुलोनु राह बतापनो॥

खमैया कुसुर—धीमा तिताला

तैती जोर कोई जोजान भला मोर्जा वाले लहरदा बनावे।
भलावे फकीर सोणा मियां तांड़े टपेदो अशोवो सुणदे शोर॥

२

मत जारे ढोलन मतजा मानले साड़ड़ा गलां।
असी तरसादे तुसो वेखननु मत० ॥
बिन देखे हुण कल नहीं पांदा सुनवे महरम भलां॥

३

दिलदावें महरम यार तू मंड़ो कदर न जानदा।
दिलदा दरद वारावे किसनु सुनावां चुप रहंदे लाचार माणदा॥

४

आ पियारे मिलजा सानु रहदींया मुश्ताक चावन तेरेरे।
शोरा तां मियां रहंदे हरदम वे वाक तेड़े मिलनेदा प्यारेरे॥

सरपड़दा

लाग रहूं तेरे गरवा मोरा जिय चाहे प्यारे मोरे।
करिलो सिङ्गरवा सेज सवारूं और फुलनको हरवा॥

सिन्धु कसुर—धीमा तिताला

आ पियारा मिल जावे किस बेलेदो मे खड़ीयांरे।
इश्कदी गलां तुसो लगदो भलावे नाहीं तो साड़े नाल गुजारा॥

सरपड़दा—तिताला

पूरब बङ्गाला जादू गरदे भरे भरे लागो।

कन्हैया हमहिं छांड़ मत जइयो घरे ॥
पूरब देशकी बाँकीरे बङ्गालिन राखेंगो नैना
लगायरे लोगो ॥

ग़ज़ल या—धीमा तिताला

मौला करे ताड़ा भला भला भली निभाई यारवे ।
जिस दिन मौला मेड़ा काजीभो होशो मेरा मियां
पकड़ खड़ी तेड़ा पल्ला ॥

ग़ज़ल या—तिताला

महदीनु रजन थल भरपूर रहीलोमा ।
हरे गांव हरे ठांव ठाढ़ी नाम लेत अनुआइरे
सोप्यारे महबूब इलाही कीनो अपना ज़रूर ॥

२

गलियां बिच आंदा जांदा रहना माड़े दिलवर
इश्कादा फन्दा बुरा होंदा तुसी जानदे ।
याणे नाल स्याणी तुसो नेहा क्यों लगानावे ॥
प्रेमरङ्ग होंदे निभाना माड़े दिलवर० ॥

तिलङ्ग—तिताला

बावरेदी सारन जानीवे कमला यार भलावे मियाँ ॥
जङ्गल ढूंड़ा वारोवे वेलाभा ढूंड़ा मेरा मियां
ढूंड़ा मुलक मुलतानवे ॥

२

नित उठ जानदावीं भोरनी छैला ।
रैन देहा तेड़ी याद बिच रहंदावे मियाँ असरता
नाल जिन्द जोरनी ॥

३

साँवरेदा मिलना जरूरवे मैंड़ी सइयांवे ।
बेलां बेलां टोभां जङ्गल ढूंड़ फिरी मैंड़ा माहीड़ा
आमिल तेड़े हजूरवे मैंड़ा सांईवे ॥

४

यारदा निजारा सानु मेरा सोना प्यारा लगना
कीकरां जिन्द मेरी खसदोयां ।
दे दीदार जमदाल करम तेरे मिलनदा चाह दम
दमदा सदारङ्ग मेरो गल मानदा भी नाहोयां ॥

कमलेंदी सार में नहीं जानदी मेरी जानतो में नहो
जानदी भला ।
लैलीदी खातर वे मजनू भी भला शोरी मियाँ कूक
फिरे ढूंढें सांवरेनु भलावे सोना ॥

६

किन मारियाँवे जाल सटोयांवे ।
इश्क छिपाया वारोवे छिपदाभो नाहीं जाहर
कोता इन अंखियारे ॥

ग़ज़ल या—तिताला

तुम कौन हो भला कहाँके हां आए कहांते कहां
जाओगी ।
यहतो टुक बतलावो हमें किसने भेजा क्या है काम
जो नया नगर आ झांकेहो ॥
इहाँ आते हो तुरत जो रोते हो कुछ लाए हो सो
खोय गया किस सोचमें हो क्या भूल गए हमने
जो पूंछा है तुमसों इस्का दो जल्द जवाब हमें आंखे
खोलो क्यों ढांके हो तु० ॥
हिन्द हो के मुसलमान हो दुनियादार के फकोर
निदान देखो इधर किधर है ध्यान मुझसे तो कछु
बोलो भाई बेपारी हो या हो सिपाई सोधे हो के
बांके हो ॥
वतन तुमारा है किस ठांव बड़ा शहर है याके गाँव,
इन दशों दिशामें यह तो कहो पूरब पश्छिम उत्तर
दच्छिण ईशान अगन नैरत वायव धरतीके हो के
आसमां के हो तु० ।
क्या नाम तुम्हारा था वांपे जात में कौन कहलाबे थे
अब इहाँ कहा कहिये क्या हो तुम कुछ हमको तो
मालूम नहीं तुम आपी अपने साहब हो के दास
किसीके हाँके हो ॥
इस नगरी में जो आए हो मौज से यहांका सुख देखो
पर डरते रहियो याद रखो मैं तुमकों समझा दीना है
कुछ एसो करनी मत कीजो जो यहांके रहो न
वहांके रहो ॥

कुछ बन नहीं आवे छोहरा मलाह राम कैसे पार
उतरिए।
नदिया गहरी नाव झांझरी कहा करिये नवादवाद
बांमन चपुनव लीना कीउ जाको खेवनहारो पवन
चलत पुरवैया उछलत मैड़ा पनिया अथाह मझधार
जोर करे।
नाके मगर कच्छ मच्छ पैरत फिरें देख देख जिनसों
डरिए राम ॥
अनघट घाट पाट अति चोड़ो पायन मिलत रैतो
नहीं दोसत लहर पैलहर चढ़नको उठत आवे
बहार किनारे छलको छलको जावे कित जइये
कासों कहिये धीरज मनकों कौन बिध धरिये राम।
बहुत देरसे आय किनारे, बैठ रहो हों तुम्हरे सहारे,
अपनो दयाको नाव पर मोकों वेग बैठाकर ए
सीतावर पहले खेवे अपनी मोजसों पार लगा
किरपा करिए ॥

३

यह औसर दमका मेला है जो तू जग आया तो हिल
मिल जुल खा पीले बैठ उठ बोल बतलाव फिर
आता यहांका दुहेला है।
ते नातेतें अपने तई घेरा, नाहक कुनवेकों कहे मेरा,
इसकों तो मनमें सोच समझ माय वाप भाई कोइ
नहीं तेरा, तू आपी अपना अकेलारे ॥
अव्वलसे लेटे आखर तकता इह धोकेमें बहत जाते पे
कामको बातें नहीं पाते, यह हस्तो दरशन मेलाहै।
दरशन मेलेमें सूरत है सूरत में क्या क्या मूरत है॥य०।

४

प्यारे वहां जाके कहा बोलोगी करी कमाई यहाँ
गमाई खाली हाथ जाके जब पूछेगा तुमसे साईं तब
गांठ गिरह क्या खोलोगी ॥
किस कौल करारसे आयाथा बंधी मूठीमें क्या लाया
था प्यारे आदम नाम धराया था इसका तुझ को
निरवा करना जो यहां दोगी वहां ले लोगे।
इस नगरीको क्या परतीत चलना वहाँका विसवा
बीस, जिसको तुम समझे हो मीत, यहां तो है डरने
की रीत, और खेल क्या खेलोगे ॥

५

यह जग दरशनका मेलाहै जो तूं आया है यहाँ तो
कुछ देख भाल चल फिर मिल जुल हंस बोल बता
ले खा पी इस कारण सबको एकठोर सकेला है।
इस मन्दिर बिचमें रखता क्या रङ्ग विरङ्ग मूरत है
हिरदे से तनक परख तूँ इन मूरतोंमें क्या क्या
सूरत है यह अवसरद० ॥
धन उस कारीगरको जिसने इन अपने हाथ बनाया है
गुण ज्ञान जोवन छवि रङ्ग रूपमें हरएक आप
नवेला है।
जबलों सब यहांका है तबलों शहर हैं बाग बहार है
मन आनन्दे और चैन करत हैं लहरे मारे हैं यह
सुखका समया और सगरे यह देखन हारे आजो हैं
कल आप आप कों चल जायगा एकही कावे
अकेला है ॥
ए जो देखे है तूं आपसमें यहां एकसे एकका है नाता
कोई बाप बना कोई बेटा है कोई चचा भतीजा
कहलाता है।
कोई मियां अपनेंको जाने है, कोई दास आपकों
माने है कोई, पीर मुरीद कहाता है कोई गुरु कोई
चेला है।
जिस दम यह अपना रस्ता गह जावे गए दोस्त
निसबत ना है सब यहांके यहांही रह जावेंगे यह
बूंदें जिन दरियोंकी हैं जब मौजसे वह मिल जावेंगे
फिर तो कुछ ठंडा है न उसन है बखेड़ा
झगड़ा है न झमेला है ॥

६

एक दमका नाता आता है फिर जाता है।
पछताता है कछु हाथ नहीं मन पाता है ॥

मृगतृष्णा संसार बना है काम क्रोध मद मोह ठना है
नाहक पच पच मरता है।
नहीं डरता है मैं मैं निशिदिन करता है नहीं रस्ताहै
नहीं नाता है॥

७

हरि द्वारकानाथ गोविन्द गोपीरमण नन्दनन्दन
द्रुपदजा पुकारी।
काक कौरवन मानसपति हंसकों मलिन करमैं
मलिनता विचारी॥
वृद्ध अनिरुद्ध सब बद्ध मुख देखियत दुष्ट शासन वचन
कहे सिकारी॥
चीर छीनत छक्यो प्रेमरङ्ग अनगिनत विष्णु भए
वसन मय किनारी॥

८

जावादे कन्हैया म्हाको सास लड़ाकोछे।
ननदल छोटो दगद्यारो पोटो सासु समोव्यारो
लड़वामें झगड़ा कोछे॥
पानोड़ाने जाँता म्हाके पाग गिनेछे झूठो सांचो
बोले थांके साथ खड़ाकोछे।
प्रेमरङ्ग प्रभु तन मन धन वारो छानो प्रीत राखो
म्हाको लाज बड़ाकोछे॥

९

पैर परत प्यारो झांझर झमके प्यारो कान्हदा बुन्दा-
वाला वेसर चमके।
प्रेमरङ्ग चूनर चटकीलो जोवन मद मुख दामिन
दमके॥

१०

नैणा नाल नैणा साड़े मिलदे न सकदेवोड़ेरदेन
आंदे जांदे दिल विच सकदेवो।
लगणी न जाणी न पँचाणी दरदो न प्रेमरङ्ग लग लग
छुट छुट सकदेवो॥

११

नरदेहीको याहो काम मुख सीताराम सदा निकरे।
राम राम सुमरण बिन स्वाँसा लोहकार सोध
मन करे॥
त्रिविध तापके सनमुख मतहो क्या जाने जम
कब पकरे।
आज अभी इस छिन कहो सोयपति छिन वोतो
फिर नाहीं फिरे॥
कोलन कों नहीं पार गढ़नको मत तोसों सन्ताप धरे।
प्रेमरङ्ग रङ्ग भीजत श्यामघन मत ख्यालोंके ख्याल परे॥

१२

ज्यों रघुनाथ पियारे लागे।
तौ मूरख तन धनके कारण क्यों पच मरत अभागे॥
जिन जिन धर्म धर्मसो चाहत डर मायासों भागे।
जो भए हैं होइ हैं सजन सब मोह नींद तज जागे।
कहा तो तृण सो रूख होयगो तोउ काल मुख अभागे
प्रेमरङ्ग प्रभु शरणागतको वध्य भ्रात नहीं त्यागे॥

१३

मैं मन राखूं रामजी राम रहे मेरे मनमें।
तनिक तेज तनको निरखावे तो न मह तन मन धनमें॥
जो अब पाऊं पांव न छाड़ूं छाड़ कुमति
रहूं सन्तनमें।
प्रेमरङ्ग एक रङ्ग रङ्गऊं कहूँ रहूँ कबहुं घरमें वनमें॥

१४

रघुवरदे नाल लगी रूप सलोने नैन पगी नेह।
दिल विच रहंदा वारोवे न आंदवे प्रेमरङ्ग दा
जिन्द ठगी नेह॥

१५

बेदिलदो कहिए सनकोइ जाय सुनावा।
जोथे राझण वसदा मेरा मियां उसनूवे दिलदो॥
इश्कदा कमला वाराँदे दरद दिलां बिचावे।
प्रेमरङ्ग नु टुक दरस देवाइवो तवोषां बिरहजसनु॥

१६

साड़े नाल नैना छोदवे परवाह।
तलभ दोदारदो मूलन लभ देवो प्रेमरङ्गदे दिल चाह॥

१७

दिलदो मुराद भर पाई यार,सुनवे सइयांनो साड़ा
हाल सैन बताई यार।

प्रेमरङ्ग प्रभुदी वे लेदीं बलाइयां वे दिल भर आस
पुजाई यार ॥

१८

मेरा बनवासी क्यों नहीं आया।
कहो सुमन्त कहाँ छोड़ फिराया ॥
सुत सन्देश कहत डरत है शृङ्गवेर सो फिराया ॥
एक एक पूंछत राम कहाँ है वदन ढांप अकुलाया।
अपने मनकी कहि न सकत है जिन रथते राम
गमाया ॥
ज्योंत्यों पहुंचो राजभवनमें मोहित नृपको जगाया।
कहो राम कहँके गरलाया चित्रकूटमें बताया ॥
सुत ले आय देखाय जिवाबो दुखो जान करो दाया।
प्रेमरङ्ग प्रभु वनमें विहरत कहि दशरथको सुताया ॥

चलैया—धीमा तिताला

ओजी काही आंटो न जस्योरी कांई म्हासो राखन
लाग्यो ॥
काईतो करोला सायदा लेराँ लेरानीवे ननद
निगोड़ी घरमाहे कोंटों ॥
टेले तो सायब मोसों रसां बात बोल्या अब नाटो तो
अब नाटो।
रसिक सनेही रस अमृतरसही कांई तो करोला
सब म्हारो बाटो ॥

चलैया—तिताला

भलो कीनी भोर ही आए मेरे अगना।
लटपटी चाल उनींदे नेना वहीं क्यों न जावो जहां
रहे सजना ॥
हाथ रङ्ग केसर माथे सोहे चन्दन करजोरी सूर
कहै पीठ गड़े कङ्गना ॥

२

अहो मेरे हितकारण नन्दनन्दन नियरे कीनो गेह।
एक दिवस गई धेनु दुहावन वा दिन बरस्यो मेह ॥
लई ओढ़ाय कामरी कर गहि निजकर जान्यो गेह।
झूठो जादू कर कर मन बस कीनो कौन जुगत
कर लेह।
सूरदास प्रभु महा प्रबलदल सोत साल जिन देह ॥

आज हम करि न्दजूको कान।
या ब्रजको बसबो हेलोरी रस गोरसके हान।
बरजो जशोदा अपने कान्हको हम लूटी है पहँचान ॥
ग्वालबाल सब सखा सङ्ग लिए मारग रोको है आन।
सूरदास प्रभु तिहरे दरसको प्रीत पुरातन जान ॥

४

श्याम विनोदीरे मधुबनियां।
पाट पटम्बर पहरन लागे अब हरि भए हैं चिकनियां ॥
वेदिन हरि क्यों विसर गयो हो बांधे फिरत है जब
रना।
अब हरि मोपे काहे आवे भावत नवजोबनियाँ ॥

५

पीत पटवारो अङ्गरङ्ग को सांवरो नाम न जानूं आली
कौनको डावरो।
तट जमुनापे गउ न चरावे बैन बजावे मोतन हँसके
तिरछो चितयो जबते आली तबते मेरो मन भयो है
बावरो ॥
गृह काज और लाज तजो सब पर्यो प्रेमको मदन-
पावरो।
रूप सलोनो ब्रजनिध सोहै वापर सुमके चित है
उमावरो ॥

६

री वा ठगियाने मन हर लीनो।
नेक हो चितवनमें कुछ कीनो बरजोरी मेरो प्राण
छीनो ॥
नाम न जानो जात कौन है श्यामसुन्दर रस भीनो।
दीसत है ब्रजनिधको सों वह मन्द हसन छवि कीनो ॥

७

आवेरी धुन वार देया।
बीच बहे जमुना गहरोरी कैसे उतरूं पार देया ॥
यह मुरलीमें मन लिए जात है कीजे कौन उपाव
देया।

मोहन अङ्ग सम्हार नागरी या कुछ वचन चलत
जब कीजे कौन उपायरे दैया ॥

८

बनाजी थारो सेहर तो रङ्ग रूड़ो।
तन मन निछार चिरञ्जीव म्हारो बाईजीरो चूड़ो॥

९

छिम छननन छिम छननन बिछिया बाजे मेरे पाय।
सुनत श्याम सङ्ग लाग्या हो आवत धाय॥
डर लागत मोहि सास ननदको अब कहा कीजे
कैसे जीजे मेरो दैया हाय।
यमुना निकटको जैवोरो अइबो नित न्हैबो
मोपे तजो न जाय।
रसिक गोविन्दसों उघर मिलोंगी हँसेगी लोग
नाहि जानिगो मेरो बलाय॥

१०

नील-पटवारो प्यारो प्रीतमप्रानको।
नवल-किशोरी गोरी भोरी वृषभानकी॥
कुञ्जभवन-राजत छविछाजन [illegible] लाजत
लखि रतिपति अङ्ग सङ्ग पोके उपजत लेत मधुर
सुरतानको॥
सुभग सिङ्गार रह्यो फबि अङ्ग अङ्ग लसि चितवनि
रङ्गरस भरो बानको॥
रसिक गोविन्द अभिरामनि मामिनि नवदामिनि
घनश्याम सुजानको॥

भजैया—तिताला

नदीया भासिल रे गोरा-प्रेमतरङ्गे।
कालिन्दीर कुले बंशी बाजाइल रङ्गे॥
एवे सुरधनी तीरे सहचर सङ्गे दीनहीन जन देखि
दया करि कोले करि धरि हरेकृष्ण गोविन्द बोलें।
व्रजवासी कान्दाइले हे श्रीराधे बोले॥

२

क्योंकर पनियां जाऊं सखोरो हँसि हँसि घूंघट खोले
कहा कहौं रंगरसकी बतियां औचक छतियां छोले॥

हरि बिन या बिध व्रजमें रहियत।
जागत जात जाम जुग जामिनि, जतन नहीं
निरबहियत॥
पर पीड़क जानत तुम ऊधो, तातें हों सब कहियत।
एक स्वाद रसनाके अरजो, यातें सब हो सहियत॥
मन क्रम वचन शब्द सुन सूरज और कुछ नहीं
चहियत॥

राग धुनि

श्रीमन्नारायण नारायण नारायण।
जाको नाम लेत अघ नासे, कोटि पाप भए जारायण।
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, सुमिर सुमिर भए
पारायण॥
शिवरीके फल रुचि-रुचि पाए, विप्र सुदामा तारायण।
माधोदास आश चरणनकी, भवसागर भए पारायण॥

२

श्रीरामजी लला मोकूँ भावे हो श्रीकृष्ण लला
मोहि भा०।
चारहु भैया रामजी सुंदर श्याम, मैया गोद
खेलावे हो॥
पीत झंगलिया सुन्दर सोहे मैया, हाथ हरष
पहरावे हो॥
सिर सोहे जरकसी पगड़िया, कान कुण्डल
झलकावे हो॥
बान धनुष्या सुन्दर सोहे, खेलत सखा संग आवे हो।
लाल खड़ा सुन्दर हरिके पग, अवध नगर फिर
आवे हो॥
चारो भैया चतुर सुजाने, लछमन चँवर ढुरावे हो॥
माधोदास भजो सिय रघुवर, नैनन माह समावे हो॥

३

आछे प्यारे रामजी लला,
तुम्हारे वदन पर अनन्त कला॥

मुखमें बीरो नैना विशाल,
जित चितवे तित करे निहाल,
जहां पड़े भक्तनपे भीर ॥
हरषत आवे सिय रघुबीर।
छोटोसो धनुय्यां छोटो छोटो तोर ॥
खेलन निकसे सरजूके तीर।
प्रागदास चल सरजू तीर।
बीचमें मिल गए सिया-रघुबोर ॥

४

देखो सखीरी नन्दजीरा लाल, मोर मुकट गरे गुंज हार।
जमुनाके नीरे तीरे धेन चरावे,बंशी बजावे दै-दै तार॥
ग्वालबाल सब सङ्ग सखा लिए, आवत है सखी नन्दके द्वार ॥
कृष्णानन्द वह सन्ध्या समै में, गावत है नीकी तान पसार ॥

राग तिलङ्ग

एसो छल-बल कीनो मोरी माईरी, बँसरी बजाई मेरी सुधर बिसरी।
दई-दई कर आई मोरी माईरी ॥
हों दधि बेचन जात वृन्दावन अँगुरी पकर मेरो सब रस लीनो मो० ॥
ठाड़ो कदम तर;बंसरी बजावे, बंशी बजाय मेरो मन हर लीनो मो० ॥

२

वे राधा गोरी मोरा सांवरी कन्हैया।
कान्हाके शिरपर मुकुट बिराजे, राधाके शिर मोरी ॥

३

पान चँगेड़ो ला दे होजी मानो म्हानीहो।
दिलदा महरम मिलिया सब दुख भूलो याको तानो रम रब्बाना जीवानो माना हो ॥

४

राँझेदा कसमाना वे जिहाना मेडाहो।
मेरो उमग वारो राँझेदो आइयां, खेड़ा कूंड़ बहाना मेडाहो ॥

५

खेड़ा मगदानो जोरनो कमला यार भला मियांवे।
जङ्गल ढूंढा वारीवे वेला भी ढूंढा, मियां ढूंढा शहर तंबोलनी कम० ॥

६

मेडो सुध लाइयां वे रसिया यार।
रसिया प्रीतम साडे दिल बसदा, मियां मेडे दिल बिच बसिया यार ॥

७

मिल मिल जाना हो मेथो महरम यार।
ववरु अधीन बिन कल न परेंदो बे, सुनरे रब्बा साडा दिल खिल जा ॥

८

हुसन निज़ारा कीता वे भला मेंडे हाकमां।
इश्कका बीज बीके यह फल पाया, हाफिज़ मनभांदा किन कीतावे ॥

तिलङ्ग—तिताला

नींदरी मेडो झोके खाँदिया कमला यार नदाना भलावे मियाँ।
साहब सिन्ध राजा वारावे जुग जुग जीवें मेरा मियाँ सेज चढ़ी सरमादियां ॥

तिलङ्ग

राँझा दिल बिच समाना वे मेडा जहाना।
ऊंचानो खेड़ा वारीवे ढामक बाजे मेरे मियां राँझेदा सदयाना वे जहाना ॥

राग गौरी

एरी आली आछेनु पग धरत चलहु तोउ धरे तोहि नाम।
अब हो में नेहरते आई, यह अब जान्यो ठाम ॥
यह गोकुल गामको पेड़ोइ न्यारो, निपट चवाई गाम॥
मारग मिले नन्दको ढोटा मोहन वाको नाम
कपट पोत वलिहार श्याम है, मोह लेत व्रज वाम ॥

गौरी—तिताला

ओ मोहन मेरो अचरा छांड़ दे, हंस मत बोले
निरख नगर नरनारो ।
कहा मोहे तुम वैसो जानो, नाहि न तुमपर वारो ॥
सुन्दर वदन देखावो ताहोको, जो तुमपर तनमन
भई वारो ।
प्रेमरङ्ग हमसों नहिं तुमसों सुनन चाहत दश गारो ॥

गौरी

रमो राम म्हारे मनमें तनमें ।
जम लोभो नां मन होय धनमें ॥
सुकृतो होय जा जनमा तरन, तो सङ्गत ह्व जो
सन्तनमें ।
कान संभालो गुण रघुवरना आंख रूप जो ए
स्थापनमें ॥
नाक चरण तुलसो रस सूंघे, भनै नाम कोर्त्तनमें ।
हात करेते करम कृपानन्तु पाग बडे परमार थपनमें ॥
प्रेमरङ्ग प्रभु रोम रोम रम, रहो सरखु सुख घरमें
वनमें ॥

२

एरो अटके प्राण हमारे, इन मोहन मुरलोवारेसों ।
दिन नहीं चैन रैन नहीं निदिया, भले मन्त्र पढ़ डारे ॥

३

हा राधा प्यारो में थारो गुण गास्यां ।
पान खवास्यां फल विकास्यां, मुखपर चंवर उड़ास्यां ॥
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम सुन, छवि पर
बल बल जास्यां ॥

४

गाय ले रे मन गोविन्द गुना ।
गोविन्द गुनारे गोपाल गुना ।
एसो समय बहुरि नहीं पैहो, फिर पछतैहो
मेरे मना ।
जिन तोकों तन मन धन दोनो, नैन नासिका और
रसना ।
जाहि रचत दश मास लगे हैं, ताहि न सुमरत
एक छिना ॥
अधम तरे अधिकार भजनते, जेइ आए हरि चरना ।
ना पतियावे ता साख बताऊं, अजामाल गणिका
सदना ॥
धन-जोवन अञ्जुलिको जल जस, घटत जात पल-पल
हि छिना ।
यह जिय जान भजो रघुनन्दन, नाम देव आए हरि
शरना ॥

भैरवराग

श्रीरघुवीर कृपाला ।
दशरथ लाल दयाके सागर, मेटन भव जञ्जाला ॥
कौशल्या सुत त्रिभुवन नायक, करत भगत प्रतिपाला ।
भरत शत्रुहनके सुखदायक, धावत लछमन वाला ॥
नाम राम तिहु लोक उजागर, मोहनो रूप रसाला ॥
सदा रसिक गुणगाहक नायक, दाता ख्याल खुशाला ॥

२

प्रगटे गोकुलचन्द कन्हाई, चारहु दिस सोभा सरसाई ।
नन्द महर घर नौ निध राजत, अष्टसिद्ध तहां
देत देखाई ॥
बन-बन सब वनिता व्रज आवत, लायत कञ्चन थाल
बनाई ॥
निरखत मुखसुख यशोधानन्दन गावत मङ्गल देत बधाई ॥
चिरजोयो जुग जुग यह ढोटा, रसिक खुशाल
जोवन फल पाई ॥

३

वसो मेरे नैनन राधे कान ।
तिमिर हरन भव मेटन जनके, प्यारो पिया समान ॥
करुणासिन्धु सकल सुख आगर, गुण तिहु लोक
निधान ॥
मोहनो मूरत सोहनो सूरत, नेह सदैव निभान ॥
चौदह भुवन एक सोई व्यापक, पूरण ब्रह्म सुजान ॥
ख्याल खुशाल करत निश-वासर, भगत हेत भगवान ।

निरमोहियारे सुरत बिसार डारी मेरो कित
बिलमाये श्याम।
लाज न आई वचन कहेकी, कठिन कठोर भए मनके
अब भूलि गये निज धाम॥
चित नहिं धरत कबहु इत माही, निठुर निडर लागे
मोहनजू पौढ़ि पढ़ायो वाम।
लच्छनदास रावरी कीरति प्रगट भइ जग कल अपने
भलो धरायो नाम॥

५

आवत बनतें धेन चराई।
सन्ध्या समय सखा सङ्ग लीने, राम कृष्ण दोउ भाई॥
रँग रँग वसन अभूखन पहरे, उर वनमाल सुहाई॥
बैन बजावत मृदु मुसकावत, छब अपार हो छाई॥
निरखत ब्रजकी बाला जित-तित, हृदय विनोद बढ़ाई
जीवनके फल पाय असीसत, जीवो कुंवर कन्हाई॥
यह अपार सुख शोभा शोभित, उपमा वरनि न जाई
मात यशोदा करत आरती, रसिक खुशाल लुभाई॥

कबहु करन गयो माखन चोरी, दे-दे दगा बुलाय
भवनमें भुज भर भेटत उरज कठोरी।
जानत कहा कटाछ तिहारो, कमल नयन मेरो रतन
किशोरी॥
आवत देख्यो उराहनके मिस, टाढ़ो चितवत
चन्द चकोरी।
सूर सनेह श्याम मन अटक्यो, अन्तर प्रीत जात
नहिं तोरी॥

७

बैन माई बाजे बंशीवट।
सदा वसन्त रहत वृन्दावन, पुलिन पवित्र शुभग
यमुना तट॥

कलिङ्गा—गौरी

नर जाने अमर मोरी काया हो।
एक कुआं पे पाँच पनिहारी,पाँचो सोचे अपनो वारो॥
औघट घाट कुअनवा टेढ़ा, कुम्हलाय गई पाँचो क्यारी।
सहस पाँखरी एक शरीर, तन मन भजले दास कबीर
अपने गुरुके बलिहारी॥

गौरी

अब तो मानि न हठीलो मेरो बतियाँ।
चार दिवसको चटक चाँदनी, फिर आवेगी अँधेरी
रतियाँ॥
छोड़ गुमान कान दे सजनी, सौत लगाय रही है
घतियाँ।
रामलला सिख मान हितापन, हरि हिय लाय
जुड़ावे छतियाँ॥

२

आए हरि नामके बेपारी।
काहूने लादे खांड़ खोपरा, काहुने लादो खारी॥
सन्तने बन जा नाम हरीका, पूरा खेप हमारी॥
तुम तो हमारे कुम्भ कलस हो, मैं खासा पनिहारी॥
नाम तुमारा शिरपर राखत, नेक न शिरतें टारी॥
तनकर महल सुरत का पेड़ा, ज्ञानको गौन उतारी।
सूरदास प्रभु माल खज़ाना, लादे सन्त सुधारी॥

कलिङ्गा

हमारो गुरु भूले कुँ राह बतावे, सतगुरु तीन छन्द
ले गावे।
छपरमें कमरी वो जंगलको लकरी, गंदुरी यांकेरी
व मकरी वो बकरी लकरी मकरी॥
जुलाहा केरा ताना तंबोली केरा पाना,
नानभाई केरा वोनाना पाना ताना॥
बनिया केरा आछा हिङ्गा भैंसो केरा सिङ्गा,
महादेव का एता लिङ्गा, हिङ्गा सिङ्गा लिङ्गा॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो या सन्तनका मेला।
याही बातका महरम जाने, वही गुरु हम चेला॥

गौरी—अङ्गला

जोबन मदमातो एड़ो डोले।
नयन सैनके अनेक भावते रसवस मन हँस बोले॥

गारा

मैं तो सइयाँसो सरमात हों मैं तो नहिं जइहों सासरे
औगुण भरा गुण एको नाही, कैसे करहों पियामों
मैं सात हों मैं तो० ॥

२

एडो मैंने लाडले टो घोड़ियां हाँवे ।
घोड़ियां धुर मुलतानसे आइयाँ, जावे भाइयाँदो
जोरियाँ ॥

३

घुमा घुमा चरखुले वालियाँवे ।
चरखा तैडा रङ्ग विरङ्गा, जावे कातनवालियाँवे ॥

३

अरे अरे हो बलमा मोपे जादू डारारे ।
जादू डारा भला कियारे अरे, मन हर लिया
हमारारे ।

४

कोयल बोले शबदको बगियामें ।
इस बगियामें लाल लगेहैं देखु बलम तोरो पगियामें ॥

५

बांके नैनादो मारी मर जाऊंगी ।
हमरे सइयांके नैन रसीले, अँखियोंमें कजरा
घुलाऊंगी ॥

६

ननदल थारोरे बोरो यासे बारो म्हारो हजारी ढोला
मालुसे लाला ज्यों जोमाणे थिरमें गरमी लागी ॥
म्हारे मारू आंगन बाडु चपलारो बूटो मारो लड्डा
लूटो ॥

७

चला जारे बजार हमें जानीरे ।
ठराडी ठराडी टोलिया गङ्गा जल पानी, पीवनहार
गुमानीरे ॥

८

सइयां बनवारी कदमको छइयां सइया मोहि
आन मिले ।

एक वन ढूंढ मैं तो वनवन डोलूंरे मेरे गिरधारो
मेरेरे मुरारो ॥

९

तू तो माने न हठोलो मोरो बतियांवे ।
चार दिवसको चटक चांदनी, फिर आवेगा अँधेरो
रतियांवे ॥
छोड़ गुमान कान दे सजनी सान लगाय रहो
घतियांवे ।
राम लला सिख मान हितापन, हरिहिय लागि
जुड़ावे छतियांवे ॥

१०

सोना असो नाल तुसो नहीं बोलवे क्यों किता
मिलनेदा कोलवे ।
मनडा लगाय सांवल वस कोता सुन गबरू अनमोलवे॥

कलिङ्गवादि

निकसि आई बलमा मैं तेरे देशवा ।
तेरे देशवाके सब लोगवा दुखवा सुखवा भोग ।
यहां मैं अइल्यं कूडकमेल्यं अपने खससके भोग ॥

दश

घरमें गइल्यं सोगमें भइल्यं तुम बिन कैसे रइहों ।
पाप पुण्य दोउ सङ्ग कर दउ तोरे चरणमें अइहों ॥
पाँच पचोस नार एक राजा, झूठा जगत पसारा ।
गावे गूदर मन लागत नहिं सतगुरु किए मोहि पारा ॥

देशन म

मोह लियो मेरा जिय कामना नैने ।
महम्मद सा पिया मोरे डारे आइलों मोहो हमारे
पिए ॥

दश

म्हाने डर लागेछे राम मैं तो आवन करस्यां मोरो
मइयो रैन अँधेरो ।
निश अँधियारो कारो बीजरो चमके, सनन पवन
चले बेकल भई सजनी ॥
इतनी अरज म्हारो सुनोरो रसिया अब बिरहा
दुख देस्यां ॥

जोबन झालो रहो नहीं जाय।
दिन-दिन दूनो दुःख भरोरी, सायबा कासे कहुं
मैं जाय॥
एसे समै थे गुमानो डा मोसो धीरज धरो ना जाय॥

३

जोबन मातीके जो सारु ऊर्मे मुसकावे।
उमगो जोबन मेरी बल देशां सास मोरो आन
जगावै-सतावे॥

४

अछो रे वह काई थारो लासारो हो राजमूणी।
अधर न लाग गरे रस छाती, आप मरण
जगहा सरो होराज॥

५

मैलोवारे तेरो बांसरीने मोह लियारे।
बंशी बजायके मन हर लीनो जादू टोना कियारे॥

६

पियाके नैनासे मोहीरे।
बाँको तेरो कमर कटारो, ठुमक चाल पर वारो॥
इश्करङ्ग पिया याद लगो है, आँख लगा जन सोईरे॥

७

रावल जोगीरा मैं तो मोहोबे।
कानन कुंडल गल सेलो विराजे, सुध बुध सब
मेरो खोई॥

८

साजन लटकत आवै तोरो नाकबेसरियाके साजना।
साजन हो लटकत आवै पनघट देख ले कौने
सिपैयाके साजना॥

९

नहीं नहीं आली अब एतो हठ नीको।
मोरे कहेते चलरी सयानो मान मनायो नागर पीको।
अब तो मान तजो लखि राधे, रविको किरन
पान रस फीको।

प्यासे प्राण जायँगे जल बिन, फिर कह कीजे
सिन्धु अमीको॥
सूर गरभ लखि जोबन भामिनि, जानति हो अपने
शिर टीको।
जाके उदे तइलोक प्रकाशित ससिहिं कहाडर
कुमुदकलीको॥

विहारी

महतारो मैं न रहूं बिन राम।
वनको गवन राम लछमन सिय चले कहा करि
हों तेरे ठाम॥
महापापो कपटो कुटोल कुचालो, बसत जहां
जर जावे वह गाम॥
होत प्रात वनको हम जइ हैं, इहां मेरा कौन काम।
नहर अयोध्या सूनो लगत है, दशरथ गए सुरधाम॥
सुर नर मुनि मोहे दोष देत हैं का करि हो रजधाम।
चरण शरण रघुनन्दन बिन मोहे, छिन न परहि विश्राम॥
सूर श्याम चित्रकोट बसत हैं, मोहे नहीं आराम॥

२

मानि नहीं सइयां गुइयां नैनवा लागि हो।
नयेरे जोबनवाको नईरे उमगिया राम. वो तो
कुबे मोरो वहोयां गुइयां नैनवा लागि॥

३

रसिया प्यारा लागेरी मतवाला छैला आवै।
नैनन भरो मोहनो मोहन, मुरली मधुर वजावे॥
झूमत आवै मन ललचावे, ख्याल खुशाल मचावे॥

टेश

पिया बिन सूनो म्हारो देश।
सोना लेने पी गये वारो, सूना कर गये देश॥
सोना मिला न पी मिले, रूपा होय गये केश॥

विहारी

सइयांको खबरिया कोऊ ल्याओरे पतिकवा।
जबतें गये अजहुं ना आये, कैसे धरूं जिय
धीर मतिकवा

विहारी—ताल जत्

वह सूरतको वलिहार सखोरी।
और नहीं देखे कोउ जगमें, वैसी हो अनुहारी॥
सर्व सहे मेरे प्राण जीवन धन, वाहीसो हो भवपार।
गिरिधर पियको वा छव ऊपर कृष्णानन्द गये वार॥

कलिङ्ग

मैं ता ठाढ़ो री अंगनवा हो सइयांको आवन सुनवा।
कागा बोलेरे सखो सगुन भइलवा, दरक-दरक म्हारे उठल जोबनवा॥
बिन देखे मोहि कल न परत है, कृष्ण रसिक छल मनका हरवा॥

२

सुनोरी सखीरी तोरे सइयां हैं अवैयाहो।
जैसो करनो वैसो भरनो अयना है जग मंयाहो॥
खेलत रहो सखिनमें सजनी, आई लगव तन कोऊ न रखैयाहो॥

गौरी—कलिङ्ग

अब मैं जोगन भई मोहि लग्यो विरह-वैराग।
चारो वेद भेदसे पूछे तीरथ, कोटि गई॥
भेष अभेष कियो नानाविध, सब कोई मन्त्र दई।
सहस अष्टनाशी नो नाथ सिद्ध सब हरि एक पन्थ लई।
गावें गूदर है नाम सूलको जो गुरु ज्ञान दई॥

२

सइयां मोहि बावरा कर डारो, अरे सइयां भला मेरो जान।
भला हुआ दिन थोड़े हो बीते, तेरो उमर गुजरो मारोरे॥

३

तुम आवो हमारे डेरे सइयां, काहे रूस रहेरे।
बारा बरस चकवोसो बीतो, सोतनके बोल सहेरे॥

४

हो सइयां तोर वलैया लूं, चूनरिया ले दे मोलरे।
तैं तो मोरा लहंगा फारा मैं फारों तेरी तनियारे॥
सुनियो म्हारी रांझ परोसन, चचा-भतीजन मारारे॥

सुन मोरो गहकनीरो कोई चुरियां ले।
गली-गली मनहरवा कूके, अब लोरे चाहे तब लोरे॥

गौरी—कलिङ्ग

बेंदिया न देहों मोरे जियके जञ्जालरे।
बेंदिया देके मैं निकसी बजार, बेंदियाका हासल मागे शहर कोतवालरे॥

देश—तिताला

वारो वारोरे सांवलड़ा वंशोवालड़ावे।
मोहनो तान सुनाय रागमें, केहा जादू तैंने डालड़ावे॥

कलिङ्ग

सांवली सूरतटी बल-बल जाऊंगी।
वंशी सुनाय रिझाय लिया मन, चरणकमल चित लाऊंगी॥

२

मेरो लुङ्गे लटकनिया भीजेरे, भोजे-भोजे सपइयाका जामा झिलमिला होयरे।
मोरे गाढ़े गढ़ गये कंगना, मोरे सइयां बसे धुर पटना॥

३

राम-रस ऐसा है रे भाई, जाको नाम लिये अघ जाय जाके पियत अमर होय जाय।
संघत हो बौरा भए चाखत हो मरजाय।
आगे आगे दव जरे, पीछे हरियर होय।
वलिहारो वा वृक्षको, जड़ काटे फल होय॥
घर राखे घर ऊबरे, घर राखे घर जाय।
एक अचम्भा एसो देखो, मरो कालकूं खाय॥
एसो मिठो मोलाकोरे, तन-मन अरपे कोय।
जो नर पीवे सुधारस जाके, धर पर सीस न होय॥
सो रस पीवे नाम दे पिया गुरू अरु दास।
पोवत कबिरा छक रह्यो, अजहुं पिवनको आस॥

४

बंगला अजब बना हद वेस जामें नारायण बोले।
इस बंगलेमें दस दरवाजा बोच पवनदा थम्भा॥

आवत-जावत कोई नहीं देखा, याही बड़ा अचंभा।
पाँच तत्त्वकी भीत चुनाई, तीन गुणांकी गारा॥
भरम-भरमकी छान छवाई, चिने न चेतन हारा।
पांच पचीस पातुरा नाचे, मनुवा ताल बजावे॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो, बूझे सो फल पावे॥

काफी

माई मेरो दोनो कुल उजियार गुरगुण लेहु विचार।
सात खसम हम नैहर करले, सोले करल ससुरार॥
पांच पुतमें एककुँ कैलूं, और खइलूं दोय-चार॥
रांड परोसन कलेजा कैलूं, सांझ बड़ मकतार॥
कालो मूड़को एक न छोड़ा खाय गइल संसार॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो, या पदको करो विचार।

६

हम न मरिब मरिबे संसार हमको मिला
जीयावनहार॥
हम मरि है तो हमहूं मरिबे, हर न मरे तो हम
काहे मरिबे विचार॥
हर हममें हम हरमें निश-दिन, अलख निरञ्जन
हो निराकार॥
हर हो हम हम हो हर दीसत सब जग व्याप रहा
करतार॥
कहे कबीर मर गया सोई, जाके घटमें हरि न संभार।

आशावरी

बसि वनमाली आली किसविध पाइए?
एसो जिये आवे जैसे, जोगी होके जाइए॥
ओढ़े अङ्ग मृगछाला, विरहन भईबाला;
नख-शिख अङ्ग-अङ्ग भभूत रमाइए॥
गरमें डारंगी सेली, होंगी अकेली हैली;
ढूंढ़त निकुञ्ज कुञ्ज काहु न बताइए॥
एसो कोन वेग मिलावे श्रीगोविन्द प्रभुसों भेट भुज
भर भर अङ्कसो मिलाइए॥

२

ढोला मेडा यार वो ढोला मण्डा माहीडा आया वो
मैं रहियां किनारे तीर।
आप ही पार उतर गया साजन, एसो तकदीर
रह गई हीर॥

३

वारी उस खेड़ेदी बलिहारियां जिथे मेडा रांझण
बसदा वे।
रांझण मेडा मैं रांझणदी, रांझण मेडे मन बसदा वे॥
जोतूं प्यासा इश्कदा झङ्गसियाले जाय।
झङ्गसिया लेदो जाटनीतें राखेगो तेनु विरमाय॥

४

होले-होले छेड़वो बिवा गाड़ावान यार।
नेह लगायकार दूर कित जांदा, झङ्गसियाले तुसा
खेद्याद़े झेड़वो॥

बरवा—कहरवा

अजब घेरदार लहंगा छापेदार घूंघरू।
नाले-नाले मैं चलो वे बूहे खड़े हजार मैंवूहेदी
वारीजा, वां रांझणदे शिरतज॥

६

नदियादे पार धिगाना एसो कुकंदियांवो।
तेनु अखा रावी पार खड़ा मैं हर करो घर आवनावो॥

७

कमर संग लागोरी मोरा गुइयां।
अँगनेमें ठैठो सास ननदिया देखत मोहे अभागिरो॥

आशावरी—जङ्गला

ताना देद जादियां वो सोणा तेरो बांदियां।
अरज बँदोदो वारा कहे नहीं सकदो, बिन दामोदो
तेरो चेरियां॥

२

मोसों चलहु न जाय राम ससुरवा।
नैहरमें हम खेल गमायो, गुण-औगुण ले चलो
सइयांके एसरवा॥

३

झाँझरी मोरी नैया पार करो।
गहरी नदिया नाव पुरानी, अपनो जान उद्धार करो॥

एरी अलबेली नार ! मेरि कहा मानरी ।
राज बहादुर सब मिल खेले आइलो वसन्त
बोलोरी कोयलो अंटवा मोरी ॥

आसावरी

कोई पुन मेरनु ले गया ले गया जालम जोरवे ।
अन्दर बेखों वारीवे बाहर वेखों, मेरा मियां
सुनो पाई तेंड़ो सेझवे ॥

२

वारी मेरा कमलांगांजा च्याया नसा जोरवे ।
भांग अफीमदा अमन माने, एक चिलम घनघोरवे ॥

३

साड़े पैरां नालवे बन्दोदे अनवट नालवे ।
झांझर छल्लो नालदे बन्दोदे पाजेब नालवे ॥
ऊँचा अटारावि कतरा बैठो वो सोणावा पुरोंदा
. कुल्लि नालवे ॥

आसावरी—तिताला

मिल कर जानावे लाभो पुत्रापि समोदे गर लाग ।
ससोंदे पा बिच पावाटेवां पुनदे हस्तर बा, वाजिनोदा
जो बोकुरावे तिनोदा कोन हवाल ॥

२

तू घर आमो बैनो मानोंदा मानवे ।
राहतकदोनू आ मिल मोन्या जन्मदो असो चेरो
कहामो ॥
ऊंचानो कोटला हा रदानो सइयों वमदे लम्वे
ज्वान रावोदे पारासो हामगं तिथे साड़ामनमा ।

३

कांगड़ेदो राह बतलावणा वे संता मैंनू देवानु पूजन
जाणावे गांवदो वजावदोवारो मन्दर आंवदो मनदो
मुरादे पुजांवणावे ॥

४

मेरा कमला जिन्दा भो रहणावे ।
रेंणदेहा मानु ध्यान तुसाड़ा किसो बहाणे तू
मिलदाभो रहणावे ॥

सोणा तेनू इश्क पइलाइयां बेड़ियां बेलियां
मों इश्क रेंझिटा सानू मायल कीता मई रहतहों
सोइ जाणि ॥

६

पियवा कबों आवरे मोरे घरूं ।
तोर बिना मई कछुअ न भावे राख लेहु अबरूँ ॥

७

भली यां बेदरददी वाणो कोतो नाल सजन गर लाग
सवेरे जो बोतो सो बोतो ॥

८

मड़ो जिंदड़ो कबलग याद करे ।
आटा सेर तोन गज वस्तर दुनिया नाहक भ्रमत फिरे ॥
साढ़े तोन हात घर तमकूं चहिये नाहक महल चुने
नानकदामहै आप मुसाफिर जङ्गल बास करे ॥

आशा—टप्पा

मैंनू भादा गबरू जानवे हां जान सलामत जगदो
सोभा चाकवे ।
शोरोति सुन राजो रहणा मेरा मियां मैंनू तोहो तेंड़ो
पैरोंदो खाक पाकवे ॥

आसावरी

मिल कर जाणावे जाला दिलबर बेपरवा गरोवाँथू ।
क्यों शोणा शोरोते सुण राजो रहणा कोपया
साड़े ख्याल जोन्द खोणा ॥

२

मैंतेरा सांआवणिया चल्न गायबां बेसर मांदियां ।
अम्माना मारे वारो वाबुन झड़के वो मियां ताना
टै-टै सगाबोर ॥

३

रामावे गोकुल जा बसिये ।
गोकुलमें गङ्गा गोकुलमें जमुना, सब तीरथ गोकुलमें
सचिये ॥

४

सोणानो में कित वलकूकाँ रांझण बेपर वाह ।
कुल तोड़ साड़े दुतोंदा बेड़ावे मैं किस बल आखो जा ॥

अबेहसणा आगे पैर ना धरो लूट दियांवे।
हो रसिया लेदो जटियाते मैं मुख सदियाँ ॥

६

कोई चुड़ियां लो कोई चुड़ियां सुन मोरी
गाहकनोरी।
गली-गली मनहार पुकारे, शिरपर धरे मोटरिया ॥

७

रावीछड़ीवे रावीछड़ीवे छैला वो मैं दूतींदे कोल डरदी।
जित वेखां तित ढोला जांदइ जाँदा नथिदा बड़सी
दोनो कोंवारो ओझड़खांदा नित तड़फेदी तेंड़ो
जान कमीनो मैंड़ो जात भली ॥

८

जोगो बार बार क्यों आवे सानू सच बतला तेरा
मतलब क्यारे।
दें दोवे भिक्षालेदा बिनहो सुरतदा भरमावे ॥
आधीरात पहरके तरके, घर घर अलख जगावे।
आनिकानी मुद्रा गले विच सेलो सींगी नाद बजावे ॥
मद्दीवाले तूं रत्ताणी मत्ता साडा जिय ललचावे ॥

९

एरी ए मैं कैसे भरण जाऊं पनियाँ मग रोकत
कुँवर कन्हैया।
बाट-घाट मग रोकत टोकत मानि न नन्द-दुहैया ॥
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन, मेरे मनको हरैया।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छब निरखत,चञ्चल छैल कन्हैया ॥

१०

कान्ह करे तेरा जोरनी मोहनदी मइया एरो सुन
मात जशोदा कान्ह।
सब सखियांदे नाल जशोदा जाँदी जमुना पानी
चुन चुन कङ्कर कान्हा मारे गागर करे निशानो ॥
नन्द गरीब गरीब जशोदा अरी, कान्ह पिता कोई हो
रानी।
रहो रहो ग्वालिनि गाल न दीजे निपट गंवार न कीजे
अनदोसेनू दोष लगावे ठाकुरका भो कीजे।

मेरो हो ढोटा निपट हो छोटा तुमतो नवल
किशोरनी ॥
यह कान्हा वृन्दावन माहीं अधम अधिक मचायो।
उलटो रोष करो तुम हम पर पूत अनोखो जायो ॥
दधि मोरी खाय इन लाज मोरी लीनो भाजन
डारे फोरि ॥
एक दिन काना सङ्ग ले ग्वालन अगनें साडे आए।
सूने घरमें धूमचाई दहो लूट कर खाए।
मेरी दृष्टि न आवें कबहूं याके चेटक जोरनो।
जित देखूं तित रोता भाजत कहा होतरो माई ॥
एक दिन कोने लाग रहो तब आए कुँवर कन्हाई।
पकरी मैं बांह मोहन मन पकड़्यो एक दिलादां
चोरनो ॥
बाहर देखूं बाहर मोहन अन्दर मोहन देखूं।
सांवलडी सलोनी मूरत तहाँ देखूं मन पेखूं ॥
एसी लगन लगोरे जशोदा जैसे चन्द-चकोरनो।
इनको बात न मानो मैया यह तो बड़ो सयानो ॥
बाहर हमसों ऐंड़ो डोले, यह तो परो अयानो।
केवलराम वृन्दावन जोवन माय हंसो मुख मोरनो ॥

११

बालाजी बाबा शरण तुम्हारी आयोरे।
जनम मरण सुख दुख क्षुधा पिपासा षट उर्मिने
सतातोरे सोसा जलवासो ॥
जाग्रत, सपन, सुसुप्ति रातदिन तापत्रयने जराया।
चौबिस तत्त्वसो तन फरकत है, पचीसवां ढिग आयो ॥
त्वंग्रद लच्च चौरासी भटकायो तत्पद राम लोभायो।
प्रेमरङ्ग प्रभु शरणागत है, भक्त बछल सुन धायो ॥
श्रीव्यङ्कटमरणा श० नीलाम्बर वसना० रामानुज देवा
सङ्कर्षण स्वामी श्रीराधेकृष्णा।

राग आशावरी—तिताला

बन्दगी करिए बाला यार गला सुन-सुन जिन्दगी
रहंदे।
रब्बडा ढेदा ध्यान रखिए जिय धरिए शिर मन्दगी ॥

जटियां जोर ठगाइयांनो तेरो तेज निजारा
वनजारियांदे ।
हाटबजारां तैनू ढूंढदो फिरेदी रिन्दने में होदे
कारण लूटियां ॥

४

अमा नुकमो केहरे सोनिया हरिदेनाल नेह लगा।
विश्वम्भर हरिनाम कहेंदे, अपनेनूको होर क्यों मगा

देश—खिमटा

रात बालम हमसे लड़े हो।
वे मनमोहन हठ कीनो सखी मैं अपने मनमान भरे हो॥
जबतें मोहे सुहात कछू नहीं, विरह अगिन तन
जात जरे हो।
रामदास पिय वेग मिलावो, अबतो धीर नहीं जात
धरे हो॥

२

श्यामसे मोरे नेना लगे हो।
सुधि आवत झमकत चितवनको, वेधत बरछी
वैना लगे हो॥
भावत नाहिं वसन भूषण कछु कहां सेज सुख चैना
लगे हो।
रामदास पीतमके बिछुरे, बिछुड़त सब सुख सैना
गये हो॥

३

पीतमके कोज फन्दे पड़े ना।
जो कोई प्रीतके फन्दे परत हे, कोटि जतन कीन्हें
उबरेना॥
विरह अगिन बाढ़त निशवासर, दहत अनङ्ग सरीर
जरे ना।
खान पान सुध भूल जात हे, मनुवा एक पल धीर
धरे ना॥
कृष्णानन्द रटत निशिवासर, नेह लगे कछु काज
सरे ना॥

मोरे निदियासे नेना झुके तोरे पइयां पड़ूं जरा
सोवन दे।
सास मोरी सोवे ननद मोरी जागे, बाले सइयाँ तोरे
पइयाँ पड़ूं मोरे॥

५

मइकूं न जगावो सइयाँ, निदिया लागो रे।
सगरी रयन मोहे तलफत बीता, भोर भए रंग
पागी रे॥
जागत-जागत सब निश बितो, भोर भए तोसों
अनुरागी रे।
कृष्णानन्द प्रभू रसवस कर लीनो प्रेम प्रीतमें दागो रे॥

देश—एकताला

बेंदिया खोइ गई मैं तो साईं पिया तोरे साथ।
यह बेंदिया मोरे मैकैसे आई, सात लगाय रहो घात॥
कृष्णानन्द लेहों तुम होसों, मानों मोरो बात॥

२

बिछुवा देडालो महाराज, मैं तो भूली बालम
तोरी सेज।
निरखत है मारी नाज अदापर, चोन्ह लई तेरो घात॥

देश

बांसुरिया वाले सांवरे, मेरो गैल मत आव।
गारी मैं दूँगी नन्दके छैला, तेरे हो नाम ले चाव॥

२

अँखियां काहेकों लगाए, बिन देखे रहो ना जाय।
सास ननद मोरी जनमको वैरन, नित ही रहत
खुनसाय॥
सगरी रयन मोहे तलफत बीती, भोर भए गर लाय।
कृष्णरसिक तेरो यह मूरत, मो मन रहो समाय॥

देश—ठुमरी

गोरिया पनघटवा तेरो घूंघटमें मन मोहे।
कारे केस रतनारे नेना, गोरे गात अत सोहे॥
चन्द्रवदन मुसक्यान माधुरी, तिरछी नजरन जोहे॥

निठुरि चमक सिर धरत गगरिया, अदभुत ख्याल रचो है।
कृष्णादन्द विलोकत सोभा, देह-गेह बिसरो है॥

२

गगरिया छलकाई राम सइयाँ मोरीरे।
मैं जो गई थी पनियाँ भरनको, छुवत लाज न आई राम॥
कृष्णरसिक रसबस कर डारो, बरबस कण्ठ लगाई राम॥

देश

ननदुल सइयां बहुत दुख दीनो।
सनमुख हमसों प्यार औरनसो, ना जानें कछु कीनो॥
हाहा करत दया नहि आवत, मन मेरो हरलीनो।
चितवन भौंह मटक मुखमोरन, कोरन सरवस कीनो॥
कृष्णानन्द मानत नहि मनुवा, प्रेम प्रीत रस भीनो॥

देश—ठुमरी

उरझे बालम हमार नैना मै उरझे री कहीं।
उरझेत सुरझे नहीं परली रेशमवाकी गाँठ॥

२

हरवा मै ना पहिरूं मोरे सइयांके चुभि चुभि जाय
लाख टकेको हरवा मगायो, देखत सवत लजाय॥
कृष्णरसिक सुख निशवासर मैं, करिहों ढोल बजाय॥

३

बाबुल मोरी विदा करो काहेकूँ बलमा बिसान।
भीतर भोजी डोलिया सँवारी, बाहर चार कहार॥

सहाना—तिताला

बिजुली सी गोरिया चमक चली री रङ्गमहलमैं ठाँढ़ी रंगरलीरो।
साँवन भादोको रैन अंधेरिया, चमकत बाजूबंद दुति दशननिया॥
चन्द्रवदनि मृगनैनी-सुन्दर, कटि केहर स्तन नरियर जनिया॥

सौतनको बात मोहे नाहुन भावे गुइयाँ अपने सइयां यह बिलमावे।
जादू-टोना जन्तर-मन्तर, पढ़-पढ़ कर ले आवे॥

३

नित दौर नित दौर आवे मोरे मोरे मन्दिर तानन गावे रिझावे सुन्दर वर।
दर-दर फिरत रहत अन्दर वर, तन नारे तन नारे तान सुनावे वर॥

सहाना—धीमा तिताला

सुन्दर दुलहा सुन्दर दुलहन सुन्दर सखा सुन्दर सहेलो सब।
सुन्दर सुरंग केसरिया बाना, सुन्दर नग-भूषण जग मग अब॥

सहाना—तिताला

ननदीको बोलो-टोला मोहन सुहाय गुइयां नींदसे जगाय गारो दे-दे वरवस।
बड़े गुण मान वरज नहीं लहिहों, जावोगी बाबुल कैसो परोगे नाहो परवस॥

२

कालो बोलो कालो बोलो कालो बोलो कालो कालो।
शिवानो मृडानो भवानी महारानी बोलो कालो कालो॥
याहि आदि याही अन्त शक्ति है, तीनलोक प्रतिपालो बोलो कालो कालो।
याहि जिय जान याही सुखसम्पत, भक्त मुक्त प्रतिपालो बोलो कालो कालो॥

३

राजनके राजा महाराजा विक्रम साह।
देश-देशके गुणोजन आए, देत मुबारक अचल राजराज॥

४

राजनके शिरताज राजा श्रीरामचन्द्र।
जगत उधारण जन प्रतिपालन, तुही आदि अन्त सब ही कहे वन्द॥

सेजिया न सोवे नदान मोरे सइयां खड़ी पुकारू
रब तुहो रबतुहोवे ।
चुन चुन कलियां मैं सेजियां बिछाऊं, सेजिया न
सोवे नदान मोरे सइयां ॥

२

अब नहीं रहि हौं नदान जोबनवा ।
सासुजीसे कहियो ननदजीसे कहियो, सइयांसे
कहियो सुपनवा ।
निस अरु दिवस छिनक नहि भावत, अब ले जाहु
गवनवा ॥
अंग अंग सिथल रोम हुलसाने, लागो मदन पवनवा ।
कृष्णानन्द विलोकत ठाढी एकटक केलि भवनवा ॥

सोहनी—जत

किनो वस मोहे सखीरी बनवारी सोहनी तान सुनाय ।
मधुर-मधुर स्वर अधरन धर हरि वंशी नीकी स्वरन
सजाय ॥

सोहनी—तिताला

सइयाँ मैनू चिठियाहु नाह पठावे ।
रैन अंधेरो डरावनी लागे विरहा आन सतावे ॥

सोहनी—तिताला

सोहे ले डालो मलिया नीकी वारी चुन लावे नीको
कलियां ।
बेला चमेली दोना मरुवा मन रंगरलियां ॥

सोहनी—तान सवारी

मेरा मन जित लगियां तित लगियां ।
माधुरी मूरत देख लुभानी श्याम रङ्गरस पागियाँ ॥
कोउ बरजो कोउ कछू कहोरी डगर चलत मैं
मगियाँ ।
जाय मिलोंगी व्रजमोहनसो सरस रङ्ग-रस रंगियाँ ॥

२

मोहन प्यारे दी जरूरनी मैनू सोमेदी जरूरनी मैनु ।
वत्तन कारण पत्तन बेलियांवे सांवलके तू दूरनो मैनु ॥

मैडे सोणेनु मिलावो साईं सच्चा पीर मेरा मियांवे ।
मथा साईं वारिवे जग विच रोणा न मियां मनरंग
तू आस पूजा मोवे ॥
छांवे मानु राहे विच छेड़दा आँख लड़ादा
रसमांदा नाहीवे ।
सांवलड़ा मैनु कुछ-कुछ आँखदावे इस गलीमें तो
भाँदा नाहींवे ॥

सोहनी—धीमा तिताला

फरियाद सानु दिल करदावे मानदावो नाहीं
बोलदावो नाहीं तुसो साँवलयार ।
रस वस गइयाँ मैं तो तैंडरे नाल सोणा मिल जा
मैनु महरम यार ॥

सोहनी—तिताला

मौला जाने बेहाल मेरारे ।
दिलदी दरदवारी मौलाहि जाने बिनदीया बेकरार ॥

२

सुघर बनीके संग जागा बनरावे ।
नीके रङ्ग लगा पागावे ॥
सुन्दर दुलहन सुन्दर दुलहो, हितचितसो अनुरागा
बनरावे ॥

३

बने तेरो बनरी नीको बनो जीवे म्हारा बना भरे
छांवे बना ।
घोड़ेनो चढ़िया लाल बनरावे, मोतियन सोहे
गरे माल बनरावे ।

सोहनी टप्पा—धीमा तिताला
भजनादि

फरियाद अल्ला दिल करदांवे मानदावो नाही
तूसो ढोलन यार ।
लुट गइयाँ मैं तो तैंदडेरे पिछेनु आ मिल जा तोसो
नाल पियारा दिल करदावे ॥
सोणी सुरत यारदी आँखो भरियांवे खुमारदो ।

जावोनी कोईवे गुड़ ले आवो, रमभांवे सानु तो
तलब दीदारदी ॥

सोहनी—अत्

सोणा जिन्द जानोवे मैं तेनु पुकारदो सजन सोणा
तांड़ो बेपरवाही मियांवे ।
सोणोदा तन नाज कशोरी लगदे विरहदे ठाढे बाणवे
सोणा ॥

सोहनी—तिताला

सइयोनी मैं वारीवे वाला सनेही यार को कर
रखनीनी जञ्जाल ।
रांझण छांड़ चला बिचा वेलेनी बूटा-बूटानी जञ्जाल।

२

कितक्सीर कीतीवे ढोलणदावे ।
दिल दोगलां क्यों नहीं आँखदावे मैंडे मियां मैड़ो ॥
घोल घुमाई जिन्द सदके कीती नेह लगा जिन्द
जोतीवे माडेवे मियां ।

३

वेखा मानुकी आंखदा कमलावे रूठड़ा जांदा
मैडा सा थोड़ा ।
सेज सुख पइयाँ उघर गइयाँ यारवे ॥

४

रंग लागा वनरारे अब रंग लागा ।
चञ्चल वनरी अचपल वनरा ज्यों सोने मिल्यो
सोहागा वनरारे ॥

५

एरो छैल मेहरदा छोहरारे मेरी ओर नैन घुमाँवदा ।
माथे चीरा कलंगी सोहे, नैनन सैन चलांवदा ॥

६

कौन जाने दिलांदी सार अनीवे अनूठी ।
रांझण मांड़े डेरेनी आंवदा जिन्द असां सुख लूटवे
अनूठी ॥

७

कदर न जाणी तैं तो मांड़ीवे रांझा ।
लख वदनामी तेड़ीवे सिरपर झिलीयावें मियां तु :
लख फेरोवे रांझा ।

इश्क फन्दे बिच फन्दीवे मियां ।
नेह लगा करबे तू कित जादा मेड़ा सोणा ज्यों
गुजरी सो सेहदी सेदींवे सोणा ॥

९

उठरो जोबन मदमाती रामनाम भज ले दिनराती ।
सोख मान ले आज जा दिलकी हरि बिन कोऊ
तोरा सङ्ग न साथी ॥

१०

सांवल मैं बलमूल न वेखो हुण क्या करिए उपाय ।
बिन दिठियां मानूं एक पल ना कल सदा रङ्ग
तड़कदिया जोय जाय ॥

११

कान्ह वंशी बजाई आज सोहनी ।
सप्त तीन इकहिस रंगीले मदन मन्त्र पढ़ मोहनी ॥
व्रज युवती बहु और श्यामके, हरष-हरष
मुख जोहनो ॥
जानकीदास हरिचन्द्र चकोर लिय इकटक पलकन
छोहनी ॥

१२

झाड़खंडी जङ्गलके वासी हो ।
सुर नर मुनि सब तुमको ध्यावें, पावें सब सुखराशि ॥
वृषभवाहन सीस गङ्गविराजे, औरभुक रही जटासी ।
जानकीदास पै किरपा कीजो, उमारमण अविनाशी ॥

१३

तूं कित जांदा मैन ले चल नालवे ।
राम न लगियांदी वेशरम तू सानवे कृष्णा ज्यो
भामी त्यों पालवे ॥

१४

नैनादो झोके प्यारियाँ वो श्याम सुन्दर नन्ददुलारिकी।
बिन देखे सान् कल नहीं पड़दी, जानकीदास
सुख कारियांवे ॥

१५

सयाँने मुंड़ो आवे दूर न जाना ।
विनती करेदो तेड़े पइयां पड़दी, जिन्दुड़ी साड़ी
जीवाव मुज आजावे ॥

१६

वंशी अब न बजावो बनवारी ।
श्रवण सुनत सुध रहत न तनकी सुध-बुध दई
बिसारी ॥

१७

राँझण मेड़ा मैड़ानीयारवे आखा वो मैं कित बलकुं
काँ जाय ।
जङ्गल ढूंढा वारी बेलावो ढूंढा हो रसिया
लीद यारवे ॥

१८

रैण कहां जागी प्यारे बलमाहो ।
रैणके जागी माते नैन सोहावेदे कौन तिया अनुरागी ॥

१९

बिसरमत जावे नदानीयांदी यारियांवे ।
घड़ी बिच तोला वारी घड़ी बिच मासा, घड़ी बिच
पल्ल हजारो ॥

२०

माणिगर म्यानि बोला बेड़ा वरनैणीरो ।
मैं कांई जाणा थारो मनडो लग्योछे माणी डार
पोल्या म्हाने म्यानि जगावो ॥

२१

बोलो कीतीनो राँझण आयावो ।
गलियाँ साड़ड़ी अन्तर बिछावां बिछुड़ा साजन
पायानीवो ॥

२२

दिल लियाँ जायरे यह सांवलियावे ।
मुख मुरली वारी तान सुनावदां, साड़ा जिया
तरसायरे यह० ॥

२३

मन लियां जायरे अरे कोउ ठगियारे ।
सांवली सूरत साड़ा दिल चोर लीता जादू कीता
इश्क बगीयारे ॥

२४

हो मारूड़ा माने न पीला मृगानैणीदा ।
सोनेदी सुराही वारी मोनेदा प्यालावे कौन पिलावे
चङ्गा दारूड़ा ॥

फिरियाद अला-रब करदावे माण दावो नाहीं मैड़ा
ढोलन यार ॥
दिलांदी दरद वारी मोला हो जाने, कोई नहीं
देसाड़ो दादवे ॥

अलड़े घावन केड़ मेड़ा रांझणावे ।
तुज बिन मैं तो कल नहीं पांदो मेड़ा रांझणा मानले
साडी गल्ल सजणावे ॥

२७

अब मेड़ी आँखो बीच बसदा साजन सुरजन सइयां ।
आवो सजन गरलाग सवेरे, बार-बार बलगइयां ॥

२८

कानुरा रसिक पर वारो जो ।
वंशी बजावे मन ललचावे, आवत खारो हमारो जो ॥

२९

जाणीदी सोहनी सुरत यारदो मन परबसदो ।
पल नहीं भूलदो याद करदो तैनू, नित उठ पूछदो
तू कब मिल मे राह तकदो ॥

३०

काला चोरे वालावे महावालावे महोवाला तू साडड़ी
जान कमलावे ॥
तेंड़ो याद साड़ड़ो भूलदीवो नाहीं कांना सोहेदे
बालावे ॥

मोहनी—सवार

अरी अरे मलिया तोरो वारो बिनन्दावो नोकी कलियां ।
जान-सुजान पो माने रंग रलियाँ ॥

२

नड़रूं नड़रू नड़रूं अम्मा कासे कहूं कोउ नाल
जाए मा ।
एक डर है मोहे सास ननदोयादे रनिया जेठनियाको
धाय लगी तेरे पाय ॥

मोहनी—तिताला

चन्द जाहा मुखड़ा यारदा मैनू भावे ।
और गलों तेंड़ो कछु न सोहावे मिलन हो तो आवे ॥

आणावे मैं कहंदी नै नू यही गलांवे तुमाणा लेरवामी
जिन्द रखोवे ।
भट खेड़ांदे ढूंढ़री फिरेंदी तैनुवे मोयां आणावे
मै कुककुक जिंद थकी ॥

सोहनी—धीमा तिताला

गिरिधर तेड़ी सुरत मनपर बसदी मिलही मोहे
आय ।
जबते गय भय नहीं के राग रंग नू देहो देखाय ॥

सोहनी—तिताला

मुजवे गुमानी दामीयां ढ़ोलन यार गुमांणी ।
घायल कर कर खवर नाली तीहावे मियाँ
सदा रङ्गवारी जिन्द कुरवानी ॥

२

माहीदी जरुवे मेनु कित वजांदा मेंड़ासांई ।
जिस कारणमे पञ्चल मलीयांवे वोही रांझण
दूरदी वीचे मेनु ॥

३

सोलागा मोरा नैन तुमी सोंहो ।
सांवली सुरतवे रमभरी अँखियावे बिन देखे नहीं चैन॥

४

वे मियां असो वन्दे तेडे साडे हाल परमे हरदीन
जर रखणावे ।
तुसी करदार मझसाड़ेनाल मियां तेड़ी लेवां
बलाइयां तेड़ी रमझदा मुस्काल लखणांवे ॥

सोहनी—धीमा तिताला

तुसी मेड़े घर आनी ढोलन प्यारा ।
तेड़ी सुरतडे मुस्ताक रहंदे नित उठ रेन दिना ।
वेमियां जब आमी साडे कोल माड़े दिलनु चैनही
आंदा तेड़े बिरना ॥

सोहनी—तिताला

सुरत विसार डारो नन्दके दुलारे ।
हमरी बार मान होय बैठो राधारमण दमन दुखभारे॥

पुञ्ज पुञ्ज मोर गुञ्जहार हिय कुञ्ज कुञ्जवनविहरन
हारे ।
छिनछिन खबर लेत संतनको सदा सर्व्वदा सांझ
सकारे ॥
अपत अजामिल गीध गणिकादिक से पतित पातको
तारे ।
हमरी बार विचार करत हो कबहु न काहुके दोष
निहारे ॥
पतितपावन विरद तिहारो अबके मोहे निस्तारो ।
जुगल पतितके आनवनो है नाथ निदान निवारो ॥
आपसे पीयारे आपसे नहीतो जानदे कौन कोसे ।
इसफसने सेती गयजाना तुने मन बसे सपने
दोसिनी मन जानदा कौन कोसे ॥

२

साडा दिल चाहोदा वे यार जोतु बोरनो भाई ।
महरदी नजरामे वारिनि तराखो तो जोवन हो
सोयोही रहोंदा नित सोच विचार ॥

३

मै तेरीवे मोही वाला यार मै तेरीवे ।
आप छाड जांदावें नाल महोदे हणहोंवो दो तेरीवे ॥

४

सांइ तेरा भला करे वेगी आवनारे ।
इतनी अरज मेरी मानले गरीवांदो नालवादोदा पाइ॥

५

ओगुण तेडा भावे गुमानी डावे ।
औगुण तेडा वारीवेगुण करलीता वन्दीयानु कौन
रसावे ॥

६

तेंड़े नैन लगेहो रानाल सज्जन मैं तो फंदिया तेरो
मैंनु नादमदे ।
साँवलड़ा मैंनुको समझाँदा, असी वे तुसाड़े सोणा
किस झमदे ॥

आइयो वो रावल मियां कदी असां बल फेरा।
तपदी सोकदी फन्द उड़ोके तू सुण राझां साँई
कदी पाई ॥

देणीडा बेगाणा हां-हां वे यार।
आँखें लड़दो रवकोसीदे नाल ॥
विनति करेदो बारी पैरां पड़ेंदो कबो समझ
नादांणा बेयार ॥

९

सदड़े गइयाँ मैं तेरे सोणाबे मारे माहीडा यार।
जिन गलाँ तो मैं तेंडे बारी बे यार ॥

१०

सोणा लटक टिवाणा बाला नजर मिलांदावे।
खटके वारी मियां दाणा नटाणा दुर न सकदेवो
अटके माहीडा ॥

११

बिछुवा मैंनू की करणा यार।
सानू की पईवे इस्कदोगलां समझ ददाकी करणा मान

१२

भला मोही यार मैं तो मोहीबे आँखों सानूको
मारदा।
भालां माडा दावणा चंगडा काजोवो हाथां मां
तू तो ठग बजारदा ॥

१३

सइयाँनो मैनू झाला झालण झालियांवे।
कड़न छेला पुनससोदा हाल, जिस दिन मेरा वारावे
काजो होसोबे मियां जावो सुनावो ससीदे हालनो ॥

१४

वे अम्मा वे मेरो अम्मा वे अम्मा वे अक्कावे अम्मावे
मेरो वे।
पान सोपारो तेंडो जारत ले आइयाँ भूलो मां
चण्डमुण्ड असुर दलावे ॥

सोहनी—एकताला

गल सुणजा मेंडी तुज विन चैन न आंदा वे यार गुमानी
दिलदो ददा थीं बेकल रहंदो असो कूकदियां
फिरदियां दिवाणी ॥

२

अणी रांझण कजाक लूटलीती जिन्द मांडी।
जो तू सांडी जिन्द फेर देवो असी बंदियां हुइयां
हुण तेड़ी।

३

एरी माइ अँगना बुहारूं पलकनसों मोत पियरवा
साजनवा आइलो मेरे घर।
तिहारे मिलन कहो मन हुलसोला सुघर सुन्दर चतुर
बालमुवा पाइलो ॥
सदारंगीले पूजाले सबही इक्करीयां बड़ भागन
पाइलो ॥

सोहनी—तिताला

वेमही वाले मैंनू न विसारणावे।
कित बल जाँदा प्यारेदो अमान तैनूवे ॥
तेंडी सुरत मेंड मन पर बसदी वेहीरनो माणी
जिन्द बार बार जांदी ॥

सोहनी

वो मेंडा साँई तेंडे हाजर बंदो बिन दामादो
सांवल तेंडोयां वो०।
जीवे जीवावण बलिहारि यांदा अणीवे तु नाहक
मेंडी जिन्द फन्दो।

२

बो चोरेवाला भला भला मेरो जांन।
छिप-छिप जाँदावारो खबर न लोतो अदोत तैंडे
कांनां सोहे बुंदेवाला ॥

साई जाणीवे हाल मेडावे।
हुरों वोछड़ो वारोवे मेहोया वोछड़ोयांवे थोरो
तुकित विगोरियांवे ॥

४

जङ्गसियालेनुवे ध्यान असाडा वेमोया रांझण आमिल भलीयाँ ।
जतन लगी वारोवे सोड़ तन जाणावे रांझण ध्यान रहंदा तेडांवे ॥

५

कर कङ्गणा महंदो लावरे ।
अङ्ग उबटना मैंदी तेल चढ़ावो सीक रङ्ग पियाके लगावरे ॥

६

मेडा ढोलना दिलजानो ।
तेडो सुरत मेडे मनपर वसगइयाँ बांको सुरत मिठ बोलना ॥
ठगाठगाइ कर के मन बस करलीता मेडे चममोदे विच अन मोलना ॥

७

सुनतो जानो यारवे अँखियां न फेरोवे ।
हमदम इश्कदोना कहीना सुनो बन्दियां मैं तेरोवे ॥

८

बिन देखे कैसे रहिये अब मोपे रहिलो न जाय ।
जो रहें उनको हियो सराहिये सदारङ्ग मइकं रेन चेन ना दिन विहाय ॥

९

आज माई सान पियरवा मोसे करत रङ्गरसको बतियाँ ।
सदारङ्गीले पिउ हंसत बोलत हैं मइसन करत है नेहको घतियाँ ॥

१०

बड़ी रेन गइलो अजहु नहीं आये पो अब कहा करूं कित जाऊं एरी दई ।
आपन जायके अनत विरम रहें नींद गमाई औरनको ॥
हम जानो न थो एरी सखी जो होवत है प्रीत अतही बुरी ॥
मौज कहु का तुम जानत हो होवत हैंगी रङ्ग जवाबरी ॥

११

वारीवे दिवाणा कहैदे लोकांवे मस्ताना कहैदे ।
मैं तो तेनू कहंदो सोवे मानदां नाहो याहो मलां सयांणा कहैदे ॥

१२

दिल करे फरीयाद वेमांन दावो नाहो तेती ढोलन यार
लुट गइयां वारो तेडडे पाछे मेरा मियाँ आ मिलो साडे नाल प्यार ॥

१३

खबर न लोती मेरे यारवे मेरियां ।
आप न आवे वारी ना लिख भेजवे पेडा मैं तकदी तेरियां ॥

१४

गुमानी घर आजा रहणा रसिया ।
हंस हंस करजाणा पोवो पिवावो मइकों छकावो आज मेरे घर काजा ॥

१५

यारवा मेडोको आंखदा कमलावे ।
साथोड़ा जाँदा मेडावे माथोडा यारवा ॥

१६

अणो अणो रांझण कजाक लूटलोता जिन्द मेडो ।
जोतू मेडो जिन्द फिरदेवो असो बन्दियां छोड़याँ तेडो ॥

१७

मैंनू आ मिलो गरबांहोवे रांझा ।
तेडे कारणवे ओलंभे रहंदे असो तू मांडेरे सुखदा सांजा ।

१८

ते एत्ता मानको यारो नार हौं तोहै कबको मनावत तें एक न मानो ।
हितसों तोहै समझावतहौं सो तूं अपने मनमें जानो ।

१९

सुपने जागो रेन मैं तो उसके सबहो साथोरे प्यारा मेरा वेखोरो एहाँ ।
वारोरो इस दुतियनकों जिनराखो प्यारा ॥

सोहनी—धीमा तिताला

सखी पल आट भए जो भई मन हो मैं कहा करौं
काल न परे ।
इन्द्री बिकल उदास बालम बिन यह दुख कौन सहै ॥

सोहनी—तिताला

आज मई कहो नवल बारीमें परमल वास ।
चहुं ओर करक रहो प्यारे भँवरू डारत पास ॥

२

म्हारे डेरे आइयोजो ढोला सायवां राज ।
सेज सुनी निंदरिया न आवे उभो उभो वाटरो
जोवे बेगो आवो मोरे नाहा पूजलो मनको आस ॥

३

एतो मान न कोजिरी नार बीतो कबको मनावत
एक न मानि ।
होतो तेरे हितु लागा वा तू न माने समझ बावरे सांचे
मनको आलो हंतो तेरे नैन पराने ॥

४

राखिते ना पारि आमि प्रभु दियाछे येजन ।
अदरशने आँखि दुखो, हेरिले ये मन सुखो,
नयने रोदन करि ना हइल मिलन ॥
कि हइल आमार प'ल, व'लि कि करिया लन,
किशोरो हेरिले हेरि, से चित ना हेरे मरि,
लेगेछे तारे केमन ॥

५

राझण मैंडो खबर न लींतो अब मैं किसनू जाय
सुणावांहे ।
जो बीतो सो दिल बिच बीतो नूररङ्ग ठंढो सांमांले
रहजावां ॥

६

क्यों सोणा मै वन्दियां तेरियां महर नजरदो चेरियांवे ।
गुण औगुण सब माफ करोवे तुज विना नहो सेरियां ॥
एक गुण औगुण जानदे नाहोवे तु सुण जागलां
मेरियांवे ॥

मरुडी बोलावे मृगनेनी वा मारुडो ।
मैतो थारी दासो वारो तुमहारो साय वो कौन
पोलावे सङ्ग दारुडा मारुडो ॥

८

की तकसीर कीतो वो ढोलन मैडो दिल दागलां
आप क्यों नहो आवदावे मियां ।
घोल घुमाई छदके कितो नेह लगा जिन्दलीतो मंडी ॥

९

ढोलण साडी नजर नहो आंदा केवल कुकां जाकरे
फरियाद ।
दिलदो गलां वारो कौसन सुनावां रतियां आन
भूलदो आदवे ॥

१०

बरसें नूर जहूर सोराजी तेरे रोझरडे पर ।
जोड़ जोड़ धावे सोंद सोंद फलपावे पाप कटे दुखदूर ॥

११

मैंडा रांझण मिलादे पीरा तेरे जारत अइयाँ मुरादे
मङ्गदो मदके सदके गइयाँ होरां ।
तेडे घोलियां घालियां घनियां घतियां कड़दे कड़दे
जादियांरे दडियां नेदडियां याद साँझ औ सवेरा ॥

१२

नैणांदो नोके प्यारियां रांझण मिले तो मैं वारियां ।
नैणां तू साडो वारो बरछोदो णांको प्यारो लगी जैसे
कारियां ॥

साने न पो लावें सङ्ग दारुडाहो मारुडा ।
सोनेदो सुराई वारो सोनेदा प्याला आप पोवे म्हांने प्यावे ॥
उभो उभो मृगनैनी अरज करे ओ अरज मानो म्हारो
अवारुडा ॥

१४

जांणोदो सोहणो सुरत यारदो मनपर वसदो पल
नहीं भूलदो ।

याद करदो तैनू नित उठ पूछदी तूँ जब मिल
मैं राह तकदी ॥

१५

साँई जाणोवे सादी दिलोदा दरद वारोवे ।
कोई नहि जाने बिन दीठियाँवे करारोवे ॥

१६

कामन मैंन् लायावे मेंड़े यारदा जमाल ।
इश्कदी वेडी सानू अखवे सदारङ्ग किता तिसनु
सभ्भान ॥

१७

जब तेड चाकर हुइयां कुरवांण घोल घुमेंदियाँ
घतियांणी ।
तेडी सुरत मेंड़े मनपर वसदी को करां मेंडे सांइयानी ।
मदत तेडी रववेदाध्या महरकरी मिजमानी ॥

१८

औगुण तेडा भावें गुमांनीडावे ।
औगुण तेडा वारो गुण करलोता वन्दिनू को तरसावे ॥

सोहनी—तिताला

लागो म्हारो नेह साँवलेसों ।
साँवरी सूरत वारी मोहनी सूरत बिन देखे नहो चैन।

२

महिमोरावे मौला जानिवो ।
दिलांदी दरद वारी कोई नहो जानें बिन दिठिया
देदिवाने ॥

३

ढोलण मैंडा मेंडामी यारवे ।
आव्यावोमें कितवलकु कां जाँय करा फिरियादवे ॥
कदी तु मौला मैंडा काजोवी होसी पकरकरां
फिरियादवे ॥

४

असो जिन्द वारियाँ अखी वारियांवे ।
पलकांदी नोकों वेयार लड़ लड़ जांदियां सोहनी
सूरत लगदी प्यारियां ॥

सइयो वेखो जोवन मैंडा जाँदाणी ।
जोवन जाँदावो नर नहीं आंवदा नाहक
उमर गमावदाणी ॥

६

अलडे घावन छेड़वे बोवा मैंडेवो ।
नैणातं साड़े वरछोदो नोंकें वेसोणाको करदे
उलभेडवे ॥

७

भालण भालणा पयावे मैंडा यारवे ।
एक तत्ती दूजि मैंनू सहँदो उमग खेड़ांदी करी पुकारवे ॥

८

बाग बहारांवे दिलवर मैंडा ।
हंसत फुलभड़े दे नाल उमग दिलवर कीता गुलजार ॥

९

लाडले बनिवनी सो रङ्ग लागा ।
अतहीं जोवन मदमाती बनरी हित चितसों
दिलपागा ॥

१०

इश्कफन्दे बिच फन्दीवे मियां ।
हाल दिलांदा वारोवें मौलाही जाने तुं को जाने
हालवँदिया ॥

११

नैणादी नोंकें प्यारियां ।
जो सहँदा वारोवे नाल उमगदे मिया उनदे कलेजे
सारियाँ ॥

१२

तेरी मुरली नेक बजाऊँ श्याम ।
जोई जोई तान होत मुरलीमें, सोइ सोइ गाय सुनाऊं॥
तेरे सीस गथंरच वेनी, अपने मुकुट बंधाऊं ।
तेरे भूषण मैं पहरूँ हरि, मेरे तुमी पहराऊं ॥
तुम माननी होके मानकर बैठो मैं पर पाय मनाऊं ।
सूरदास प्रभु होडु राधिका, मैं नन्दलाल कहाऊं ॥

१२

जायके यशोदासे कहोंगी ।
सूधे रहो न गहो कर, सों कर बहुत सहो अब मैं न सहोंगी ॥
सोहैं हमारी जो सारी छुवोगे, गारी दिए बिन मैं न रहोंगी ॥
हाँरे हमारे को हाथ न लावो, लाल ! मैंहूं बनमाल गहोंगी ।
मोंसों टेक करो जिन मोहन एककी लाख बनाय कहोंगी ।
युगल सखी करों प्राण निछावर, अङ्ग अमिय रस लाय रहोंगी ॥

१३

तज अभिमान मान जो चाहे, प्रभुमय जगत न निरखत काहे ।
सत्गुरु सङ्गत कर गरुता तज, सहज मुक्त फल मिलत है ताहे ॥
जहां अहङ्कार तहाँ प्रभु नाहीं, सुखदुख अपनो करम निभाहे ।
प्रेमरङ्ग संतन पद रज हो, कोटजनम अघ तन दव दाहे ॥

१४

प्रभु तुम केते पतितकूँ तारे गिनत मैं हारे तारे ।
क्या ब्राह्मण चत्री, वणिया अन्त्यज क्या बूढ़े क्या बारे ॥
क्या पशु पँछी जलचर वनचर, निशिचर क्या दानव क्या कारे ।
यमकी फाँस प्रेमरङ्ग छूटत, कहतहि शरण हैं आये तुमारे ॥

१५

घटमें पैठत महरम पाया मनसों देखत मनमें समाया ।
मगकों देखत भरम भुलाया जगन्नाथ सबकों बिसराया ॥
नामरूपसों स्वरूप छिपाया स्थूल सूक्ष्म कारण महामाया ।
तन मन धन सब सियपति अरपे, प्रेम रङ्ग प्रभु भक्त कहाया ॥

१६

मेरा कहा मानोजी मोहन मोहना ।
नन्दरायके लाल लाड़ले, छैल छबीले सोहना ॥
किए प्राण बस नैन मिलाके, अब आवो मेरे गोहना ।
ख्याल खुशाल करण चित चाहत, कुञ्ज कुञ्ज छब जोहना ॥

१७

सखी मन मोहनाने मुरली बजाई ।
बंशीवट-तट ठाढ़ारो आली, बरजो न कुंवर कन्हाई ॥
चलोरी सखी मिल देखिए शोभा, उमंग उमंगाई ।
ख्याल खुशाल करत कुञ्जनमें, वृन्दावन छव छाई ॥

१८

दिवाणें क्यों भूला मगरूर ।
नरतन पाय सुमर साहेबका, या हितु जो मञ्जूर ॥
डार पत्र फल फूल उसीका, हेगा जलमें जहूर ।
गगन चन्द्र सूरज क्या तारे, सबमें पूरन-पूर ॥
आपन आपकों विसर गया है, एसा है बेशहूर ॥
सोवत जागत उठते बैठत, हरदम रहँदे हजूर ।
सबकों जगमें बड़ाकर माने, आपकों जाने धूर ॥
जब वो करम करे आपसे, तब हो होवे मसूर ।
कपटको टाटो डार बहावे तब दरसे वो नूर ॥
रूप रङ्ग रन हेत सीस दें, जो बिरले कोइ सूर ॥

१९

दिवाणें क्या खोजे घर दूर ।
इबराहीम अधम दिया छाड़ बलखको शोलासे लख छूर ॥
गोरख गोपीचन्द भरतरी शिरमें डारी धूर ॥
शेख फरीद कुंवेमें लटके हो गए चकनाचूर ॥
अनलहक हक कर पहुंचे शूली चढ़ मन शूर ॥
छांड़ कपट पकर गरीबी तातें पावे मञ्जूर ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो सौदा पूरण पूर ॥

सोहनी—चौताला

एरी इन बांसुरिया माई मेरो सरवस चोरायो हरि तो चुरायो हतो अकेलो चोर।
असन बसन अरु नयन श्रवण सुख लोक लाज कुल धरम धीर॥
अधर सुधा सर्व्वस जु हमारो ताहे निधरक पीवत रह गंभीर।
नन्ददास प्रभुको हियो कहा कहूं यह प्रेम बीर॥

२

सोवती कैसे ना मोहे नाहन सुतावे गुइयां!
बोलो ठोलो मारे नैना नचावे लड़े बरबस॥
अङ्गुरी नचाय नचाय गारो दे सइयांकों रसबस करे मोहे कसकस।

मालकोष—तिताला

गिरिको गुहा मध बजत बधाए सब सुर पवन प्रतापसों धाए।
अञ्जनी अत हरषत सुर निरखत विधि कर परस उठाए॥
अपने अपने शस्त्र अवध कहे अज चिरजीव बताए।
सुरमुनि काज करन कपि प्रगटे रामके दास कहाये॥
सुर मुनिवर वर दीन अभयकर सूरज शास्त्र पढ़ाए।
प्रेमरङ्ग रघुनाथ मिलनकों कपराज घर आए॥

सोहनी—तिताला

बजत बधाई अञ्जनीके आज।
प्रगट भए हनुमान महाबलि सुरमुनिके सारे काज॥
अञ्जनी आनन्द हरषत निरखत देव दुन्दुभो बाज॥
पवन-पुत्रको जनम सुनि हरषित श्रीरघुराज॥

राग बिहारी—ताल ठुमरी

छोटो ननदीरे पनियां कैसे के भरूं।
भरोरी गगर शिर समलत नाहीं मथवा कैसे के धरूं।
नाजुक कमर चलत लचकत मग कृष्ण रसिक कारूं।

बिहारी—ठुमरी

मोरी ननदीरो घर अङ्गना न सुहाय।
जबसे गए पिया सुधहु न लीनी रहे रहे जिय छोटी घबराय॥
छिन छिन शूल होत हियरे बिच क्यों सइयाँ दीन्हो बिसराय।
कर मीजत निशिदिन पछितातो लोकलाज जरजाय॥

२

लगोला म्हारो नेहरे साँवरे कन्हैया सों।
पल झपकत मोरी बहियां मरोरी सूरत-मूरत प्यारे मन हरलीनो॥

३

न जगावो मोहे रातको पिया जागो।
कहाँ गँवाए पिया रैन निठुरता भोर भए अनुरागो॥
हम जानो यह कपट तिहारो पोकल्लोक हग लागो।
(न जगावो मोहे)
रामदास पिया वेग मिलावो निपट लाज हम त्यागो॥
(न जगावो मोहे)

४

मैं तोरे बिन व्याकुल भइ सारी रात।
सगरो रयन मोहे तलफत बीतो पिय नहीं आए मेरे पास।
कृष्ण रसिक अब एक न मानों तुम क्यो सौंहैं खात॥

५

कागा बोले नारे जिया लहरियाले।
तलफत है दिन-रैन पिया बिन जावो खबरिया देरे॥

६

उमंगसे दे डारो मोरो झुलनो।
यह झुलनो मोरे भइकेसे आई नोकी-झोकीको झुलनो॥

७

नदिया किनारे बिके राम गुजरो।
लहँगा भो लाए सारो भो लाए
अंगिया न लाए सारो बात बिगरो॥

८

हिँडोलना मैं ना झूलूं मेरी जान।
जिय धड़कत यही बात सखोरो देवराको मन बेमान॥

सासके आँगन केवरारे कहीं ननदोके आँगन डान।
जामें उरझो आचरारे सइयांसे कहियो छुड़ान॥
कासों कहों यह भेद सखीरी विसर गई कुलकान।
कृष्णरसिक रसबस कर लीनो वह मधुरी मुसक्यान॥

६

गगरिया मैं घर धर आऊं ठाढ़े रहो बांके यार।
गगरी में धरि आऊं चुनरी पहिर आऊं
करि आऊं सोरहो सिङ्गार॥

कलिङ्गरा—ठुमरी

लागी गइलो हमरा जियरा।
पनवा ऐसो पातलीरे गज मतवारो चाल।
कृष्णरसिक तिरछी चितवन सों फेंकत है वह जाल॥
नहिं मानत मेरो एक पल हियरा॥

विहारी

ना बसो बर्द्दमानकी नगरिया।
आप न आवे वारो ना लिख भेजे जोवनडूं पिया
तोरी डगरिया॥
कृष्णरसिक कासों यह कहिये कोउ न लागत
मोरी गोहरिया॥

२

जोबनवा तू ना जइयोरे तेरे रहेंसे मेरा मान।
जो तू चला वारी वे जान न देशां मौला राखे
तेरी आन॥
कृष्णरसिक यह बात मान ले अब समुझै नादान॥

विहारी—तिताला

रातदो उनीदो बूंदे पानो पीने आइयां।
सेग सङ्गता बेग बंगता बेधड़दे दूवाइयां॥

जंगला—तिताला

मोरी भोली परोसिन वृन्दावन गैल देखाय देरे।
वृन्दाबनमें कान्ह बसत है मुरलीको टेर सुनाय देरे॥
कृष्णरसिक सों लगन लगो है मेरो मन
समुझाय देरे॥

विहारी—खेमटा

सूरज मुख पानो न जैहौं मोरी बेंदियाका रंग जरिजाय।
यह बेंदिया मोरे मइकेसे आई देखत सवत रिसाय।
कृष्णरसिक मन भाई झुलनिया कासे कहां समुझाय॥

विहारी—तिताला

मेरो श्याम कन्हैया विरमायो मैं कुबरी।
कारो तुम्बो गुणो हाथ परो जब मधुर मधुर बाजो
तुम रबरी॥
चेरीको चेरो पटरानो भई है कृष्ण कन्हैया वर पायो
कुबरी॥

२

नन्दनन्दनको जगवन्दनको कुछ कुबरो चन्दन
घस ल्यावै।
चेरोको चेरो भयो नंदलाला हमें तजके कुछ टेड़े
मनभावै॥
हाय उधो अब कह करि रहिए विष खइए याहो
जिय आवै।
गोपिनको मोहरें न चलें या कुबरो चामके दाम
चलावै॥

३

को हम को तुमसे तपसो बिन जोग सिखावन
आए हो ऊधो।
पै यह पूछत हों तुमसों सुध पाछलि आवत
है केहूंधो॥
एक भलो भई भूप भए और भूल गए दधि
माखन दूधो।
कुबरीसी अत सूधो बङ्को मिलो वरदेवजो
श्याम सो सूधो॥

४

कछु कान्हरको सुन कान कथा बहुभावन तो
भहराय गिरो।
छिन एक न नेक कहूँ कल लेन रहो मुखको
मुख माह बिरो॥

हरके फरके फिर हो फिर जात भई टटकी
पिंजराकी चिरी।
झुक झूम झुकी उझकी झिझकी झझरी न झरोखन
झांक फिरी ॥

५

ऊधो कैसो ले आये पातीरे।
मोहि योग कथा न सोहातीरे ॥
जब सुध आवे बारे श्यामकी विरह जरावत छातीरे ॥

६

चल बसिए वह गाँम जहाँ न बाजे बांसरी।
वन वन डारूं कटाय वाँस सब जो कानन सुन पाऊं ॥
काहेकुँ विरह विथा तन उपजे काहेकुँ नीर बहाऊं।
रूपरङ्ग बैरन है बंसरी कैसेके दाग मिटाऊं ॥

७

सइयाँ मोरे बारीके भंवरा कलिन कलिन रस लेरे।
छाड़त नाहीं सुभाव आपनो कोट जतन कहि हारी ॥
कर जोरें पाय परी बहु भातन और करी मनुहारी ॥
रूपरङ्ग यह करमकी रेखा अरे टारी टरत नहीं
टारी ॥

८

नींद नहीं आवेरे सजनी बिन पीतम मोरे नैन।
नेक पलक नहीं लागल मोरी जागिल सारी रैन ॥
एक तो विरहा आन दह्यो मोहिं दूजे सतावत मैन।
रूपरंग जिनके पी घर हैं सोवत है सुख चैन ॥

९

देखो देखोरी कन्हैया इत आवेरी।
सोवत देखी पाय गोरस मुख माहिं लगावेरी ॥
इत उत फिरे डरे नहीं नागर पुनि पुनि मोहि
जगावेरी।
क्रोधित देख मोहि अत चञ्चल बंसी मधुर बजावेरी॥

१०

मतवारे नैनां तुम होरी कहाँ लगाए।
चञ्चल ओट उमंग भरे नैना घूंघट ओट छिपाए ॥

विहाग—धुन

जोबना तैं गोरो अंगिया छिपाए।
मदमातो वह चाल चलत है देखत मन ललचाए ॥

विहागी

तिरछी नगरिया मोरे बालमकी विदेशिया।
बारा बरस पर सइयां मोरे आइला न जानू काहे
बाट बसैया ॥

दीपचन्द

रतनारे नैना तुम काहे लगाए।
चञ्चल और छबीले नैना घूंघट ओट छिपाए ॥

बरवा

मैं बीरान भई हो सइयाँ तोरे सेजवां।
मास-मछरिया मोहे न भावै औ गोहुंवाकी रोटी ॥
पिया ऐसी चाहे जाको कमर छोटी ॥

विहाग

नींदरी न आवे सारी रात मोरे बालम।
मोरे पिछवर वा पीपरको बिरवा
पिपरा कीसो तर छइयाँ ॥

२

झुक चलोरी दोऊ जबना उमंगो जाय।
छाड़के चलत तरवार मोरी सजनी अंगियामें कैसे
समाय ॥

३

सइयां राजो मैं रहिहों तेरो मरजीमें।
हमसे तो तुम काहे रिसाने बात कहो अलगरजीमें ॥

४

ऊधो बावरी भई मेरो जान।
कहाँके कान्ह कहाँके बासो कासों है पहँचान ॥
काके कहेको संदेसो लाए कासों कहो हित जान।
ऊधो अपनी रीझ आन ढिग बैठो भौंरा है रस छान ॥
अब यह वेल फलै या सूखे वाहे कहे हित जान।
बीन बजाय हर्‍यो मन मेरो राग रागिनी तान ॥
जैसे वधिक विचारत नाहीं मारत है शिर तान।
पिय बिन प्राण प्राणपति हरि सों बिन बांधे बंध जान॥
जब श्रीकृष्ण पूतना मारी सूरदास प्रभु खींचे प्राण ॥

सखीरो हम चरणनको दासी ॥
जौलों चरण न देखें उनके तौलों जियकों रहत
उदासी ॥
भटक भटक जिन जाओ कोउ तीरथ सुनत रहोरे
जोगी सन्यासी ।
कहां होत तीरथ कों तुमरे गरे परी मायाकी फाँसी ॥
मुख फेरो करवट लो जगसे का ले करो हो कर
बत कासी ।
उनकी दयासे देखे का जम ठौर ठौर मूरत अविनाशी ।

६

विनती मान ले पिय मोरी सीस धरतहूं तोरे
चरननपर ।
घूंघट खोल दरस दे मोकूं बलजाऊं तेरे
घूंघट खोलन पर ॥
हितसे मिलत रहो मोरन मुख दोउ जग वारहुं
हितके मिलन पर ।
कब रहूं पाप पाछेके बोलो तोरे आगे सीस धरन पर॥
बकस दे औगुण का जमकों डर कृपा न छांड़ो रहीं
चरनपर ॥

अरे मन सुख चाहो तो शिव पार्वती कों ध्यावो ।
सेत मूरती काकुट छानो जलसों सानिके मूरत बनावो।
आवाहन हरको करि हरपर अच्छत धोय चढ़ावो ।
आक धतूरा बेलको पातो कनककेर ले सुमन संघावो॥
धूप-दीप नैवेद्य देइके पुन निज सीस नवावो ।
आस-पास फिर तारी देके गलबल गाल बजावो ॥
शिव सबके मनकी जानत है भक्तिभावकी भावो ।
शिव प्रसन्न करबेको ढाकन बहुतहि सहज उपावो

बिहाग—ठुमरी

सखीरी वह सूरत मनमाहो ।
जब सों निरखो मोहनी मूरत और मोहे भावत नाहो॥
वह चितवन वह हंसन मनोहर वह क्रान्ती वह चाहो॥
कृष्णानन्द आनन्द में डोलत बार बार बलजाहो ॥

बिहारी

नैना मेरे निपट विकट छवि अटके ।
वारिजवदन कमलदललोचन यमुना निकटके तटके ॥
सोवत जागत विहरत निशदिन ध्यानमें वंशीवटके ।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर तोरे दरसकूं
नागर नटके ॥

२

जो कोई कानहि आज मिलावे ॥
तनमनसों जाऊं वलिहारी श्यामसुन्दर परसावे ॥
विन मोहन मोहन सुन सजनी घर अंगना न
सोहावे ।
रूपराम अब आय मिले हैं मन इच्छा फल पावे ॥

बिहारी—ठुमरी

औसर बार बार नहीं आवे ।
जो जानो सो करो भलाई कित कोउ दुख नहीं
पावे ॥
तन मन धन जोवन सब झूठो कोउ काम न आवे ।
तन छूटे धन कौन कामकों काहेको कृपण कहावे ॥
जाको मन हरिसों रंग राच्यो ताकों झूठ न भावे ।
सूरदास प्रभु तोरे दरसकूं विमल विमल यश गावे ॥

बिहारी

हम तो एक ही कर जानो ।
दोय कहे ताकों दुवधा है जिन हरिनाम न जानो ॥
एक हि पवन एक हि पानो एक हो जोत संसार
समानो ।
एक मटीके घड़े घड़ोले एक हि उपावनहार मैं
मानो ॥
माया देख कर जगत भुलानो काहेरे नर तू गरवानो।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो हरिके हाथ काहे न
बिकानो ॥

बिहारी—तिताला

अरे हाँरे सांवरे सो कहियो विरह विथा भई मोरोरे।
डार दियो विरहाके सागर भंवर मदन चाहे बोरोरे॥

योग किए विरहा नहीं छूटे करो तीरथ बहुतेरोरे।
अब ऊधो सूधो होय बोलो विनती करूं कर जोरीरे॥
गावे गूदर कुबजाके कारण अजहूं न किए व्रज फेरोरे॥

विहाग

सूरत मेरी मोहन सों अटकीरे।
जबसे ओट सरोज भए हो व्याकुल फिरों भटकीरे॥
वंशीवटके निकट हरि ठाढो छीन लई मटकीरे।
दुरजन लोग चबाव करत हैं सास-ननद हटकीरे॥
ब्रह्मदास कवि कहा बखाने वा नागर नटकीरे।

२

अब नंद गइयां लेहों सम्भार।
हम तो तेरे आन प्रगटे चराई है दिन चार॥
दूध दही सब चोर चोर खायो तुम जो कियो प्रतपार
हिरदेसे ए गुण तुमारो अब डारो है न विसार॥
ग्वाल-बाल सब पठाय दीने लीने भर अंकवार।
मात यशोदा हारे ठाढ़ी दोनो आंसूडार॥
को पिता को पुत्र काको देखो हिरदे विचार॥
सूरके प्रभु चले व्रज तज कपटका कागद फार॥

विहारी

मेरा राम मेरे घट होमें बसता है।
जोगी होके मठो बिच बैठा लम्बी माला जपता है॥
सांच नहीं उसके अन्दर यों क्या साहिब मिलता है।
जोगी होके जटा बढ़ाई नंगे पैरों फिरता है॥
हाथ बांध उपरकों करता यों क्या साहिब मिलता है।
मुल्ला हांके बांग जो देता यों क्या साहब बहरा है॥
चींटोके पग नूपुर बाजे उसको साहिब सुनता है।
सबके अन्दर सबसों न्यारा परखनकों क्या पैसा है॥
कहे कबीर सुनो भाइ साधो हरि जैसाका तैसा है॥

२

मै पियकूं ढूंढ़न जाऊं जोगिनियाके भेख किए।
सगरो रैन मोहे तलफत बीती भोर भए पिय लायो हिये॥

विहारी—ठुमरी

मेरे मन वोही सुरत बसी।
जबसे निरखे गिरिधर प्यारे वह चितवन वह हंसी॥
गुणनिधान परवीन सुन्दर छव दिलपर मेरे लसी।
कृष्णानन्द आनंद हिरदेमें उर विच चिह्न धसी॥

विहाग

यह जोबना मैं कैसे राखूं कैसे राखूं कैसे राखूं।
ज्यों पवनके लागी झकोरारो मैं कैसे राखूं॥
उमगी नीर भए तन सागर विरहा रहत तन घेरा॥

विहारी—तिताला

मैं तुझ पर वारी मेरा लाल बाना।
सिर सोहे गुजराती चीरा हाथों तेरे सब जपना॥

२

वियोगी देवरा कौन नगरिया लोभानारे।
खोजल मैं हाटल खोजल मैं बाटल खोजल मैं सारा जमानारे॥

३

हीरामन तोता कौन बगिया लोभायारे।
आमके धोके नरियर खाया चोंच टूट पछतायारे हो०॥

४

कैसो है सागर ताल गगरिया ना डूबे बालम।
गगरो झुकके भरने लागी बिछुरन लागे पांव॥
भरत-भरत मोरी कमर पिरानो कैसे धरूं आगे पांव॥

५

झमका तेरे नैणांदा वाह वाहरे।
गोरे मुखपर बेसर साहे कानों मोहे बूंदेवाला चमका॥

६

रामारे भइलो बदना मह मोरे सइयां सो परचे नाहीं चूनर धूमर भई।
आसाराम वे निरगुण गावत का अइलो का भइलो॥

७

बिन पिया मोहे नहीं चैन कैसो करूं मैं सजनी।
हमसों अवध बद अनत बिरम रहे कैसे कटेगो कठिन रैन॥

जाओ जाओ ऊधो हम जाने हो ।
गुनन भरे मोहे जान परे हो कपटी परम सयाने हो ॥
जोगकी बातें कहा सुनावो बांचत नैन पिराने हो ।
यह उपदेश देहु जाय कुबजा जाके रूप लुभाने हो ॥
जैसे वे तैसे तुम सेवक देखत निपट सयाने हो ।
सूरदास गोपी सब खोटी तुम-वे एकै रङ्ग रंगाने हो ॥

६

साजनवा हमरा मोतरे बालमुवा मोरा ।
गढ़पर बाजे बाजनारे नगर सोहावन लोग ।
काहूको बरजो ना रहि हों मोरो ननदल बोले
बोलरे ॥

बरवा

मन लागा देवरसों क्या जालम भोजाईरे ।
धोरेसे टटिया खोल मोरे देवरा खटका सुने तेरा
भाईरे ॥

विहारी

लिखि भेजो तेरी सूरत नगीनेमें ।
बेसर जड़ाई मोतिडा सगाया लालड़ो मढो नगीनेमें ॥

२

ए नर ! बं-बं-बं शिव रटरे ।
दूर होत तनताप तुरत हो आनन्द रहै निश घटरे ॥
हर हर करत सकल भय भाजत, यमको त्रास सब
मिटरे ।
जानकोनाथ सेवक शङ्करको कबहूँ ना होवे वटरे ॥

३

बोलो राम पिञ्जरके सुआ ।
मूढ़ ज्ञान चेत कर देखो धन्धा करत सकल जग मुआ ॥
काल मंजारो ले जायेगो हार चले जैसे ज्वारीको
जुआ ॥
गढ़ सुत हार कटहरा साजो अबहुँ चैन न नीच
मन हुआ ।
चाँप सखो जो रह्यो आधारन घटत नहीं करम
जड़कुआ ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो सन्तनके मुख
अमृतरस चुआ ॥

८

सुनहु भरत घर-जाओ करम ऐसो लिखो ।
हिरदे सोच जिन करो सदा आनंदमें रहियो ॥
पाँलागन परनाम तीनों मातनसों कहियो ।
जाय अयोध्या राज करो तुम बिलख बदन जन हो ॥

विहारी—तिताला

फेरो पीठ चले हम वनको तजो हमारो नेह ।
तबे भरत उठ कहा सङ्ग हम तुमरे चलवे बाट
बाट चलत दुख होय ॥
सेवा हम तुमरो करवे बालापनमें खेल रहे हैं
बिछुरत अस दुख होय ।
बिछुरो विथा सोई पै जाने जाका बिछुरत होय ॥

२

जबे भरत घर जाय मातासों कहा रिसाई ।
बिछुरे सीताराम लच्छमनसे दोउ भाई ॥
बैठी कैकयी राज करो दशरथ त्यागे प्राण ।
ऊंचे-नीचे महल देखके कौन हमारो काम ॥
नगर छोड़ सवा हाथ भुंइ खोदो रामचरन
चित लाई ॥
परकरमाकर पूज पायरी भरत कीन्ह परनाम ॥
धोंधोदास विरह वियोगी जे बोले सीताराम ॥

३

सब जग रूसा रूसन दीजे काई रामजी न रूसो
चहियेरे बाबा ।
अगन जरत प्रह्लाद उबारे मीरां विष अमृत कर
पाईरे बाबा ॥

विहाग

हरि बिन को राखे पत मेरो ।
अन्ध अन्धा को दुष्ट दुशासन आन सभामें घेरो ॥
भीषम द्रोण करनसे योधा तिनहुन पाछो फेरो ।
ओ मति भ्रष्ट भई सबहिनको पकर लई जो चेरो ॥

यो विश्वास रहो जिय मेरे हरि हिरदेमें टेरी।
हो यदुनाथ द्वारकावासी बूड़त राखो यहि बेरी॥
तजि खगराज आतुर उठ धाए तपन हरन जन केरी।
सूरदास प्रभ वसन बढ़ाए होय गए परवत ढेरी॥

२

रे ऊधो प्रभुसे कहियो समझाय।
की दुख देखे व्रजवधुअनको सबै रहैं बिलखाय॥
गोपीन छाड़ा व्रज गोकुलमें रहे द्वारका छाय।
गावै गुदर प्रभु सङ्ग गयो हो आयो पछछाय॥

३

राम मोकों दरशन दीजे रूप सलोने नैन।
वरन सकत नहीं एक जोभसों चलत नहीं मेरी बैन॥
वेद कहत जननीको अठरमें नेक नहीं सुख चैन।
प्रेमरङ्ग निशदिन रटना मिलन चाहत मन नैन॥

विहारी

जा जारे ऊधो हम जानेहो जानेहो पहचानेहो।
जैसे हरि तैसे तुम सेवक निपट चतुर सयानेहो॥
हमसे जोग भोग कुब्जासे वाहीके रूप लुभानेहो।
सूरदास मतलबी मधुकर मधुवन माह भूलानेहो॥

२

जाग जाग रे मुसाफिर जाग रे।
बीती रैंण और भोर भइलवा बोलो चिरैयां कागरे॥
गाफल पड़ा सोवे क्या कर गया कूच कापला आगरे।
तातें सोच समझ जिय अपने इहां नहीं कोइ सागरे॥
इस नगरीका अजब लेखा है चोर बसत औ ठागरे।
वसुधा सगरी मांग लेत हैं छीन पिछोरी पागरे॥
जमा संभार बचाय अपने को देइन दम धागरे।
रूपरङ्ग हुशियार सदा रहो साईं पंथ अब लागरे॥

वेहाग—ठुमरी

राम गुण गाऊं रे रतियां मैं राम गुण०।
जेहि गावल तरि पार पहुंचावल नाम ना वको मै
पाऊंरे दिनरतियां॥
वान परल प्रेमरङ्ग पाय पकरूं उहिम करि मन
लाऊंरे लाऊं छतियां मैं०॥

विहाग—तिताला

हरि विन कोउ नहि जगमें मीता।
यह संसार रैनका सपना जों बारूको भीता॥
यह स्वासा जो लुहारका धमना हरि विन जगमें
जीता॥
रागरङ्ग प्रभु सुमरण करले अवसर जात है बीता॥

२

बोलो राम पिञ्जरके सुवा।
सोच विचार देखो घटहीमें धन्धा करत
सकल जग मुवा॥
काल मञ्जारी ले जायगो हार चले जैसे
ज्वारीका जुवा।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो सन्तनके मुख
अमृतरस चुवा॥

विहारी

मेरो श्यामसुन्दर सों लागो अंखियां वो।
हौं यमुना जल भरन जात रहो सङ्ग नहीं कोउ
सखियां वो॥
औचक आन मिले पनघटमें भूल गईं सगरो
बतियां वो।
रामलला विन कल न परत है कैसे कटेंगो कठिन
रतियां वो॥

२

मेरो श्याम सनेया नहीं आयो सजनी।
बड़ी बार मइ जागत गइलों भोर भई सब गई रजनी॥

३

बेंदो मोरी छूटो नैहरवा।
जा कहियो नैहरके लोगसे बेंदो गिरो औसरवा॥

विहारी—तिताला

बहुत रहो बाबुल घर दूल्हन चल तोहै पियाने
बुलाई।
माया मोह छाड़ पीयरको बहुर मिलन नहीं पाई॥
ध्यान धरो ससुरार को सजनी अन्त तहां तू जाई।

चार कहार तेरी डोलिया ले आए सङ्ग बाम्हन
और नाई ॥
न्हाय धोयके वस्तर पहरे सज सिङ्गार बनाई ।
विदा करनकों चले कुटुम्ब सब सङ्ग ले लोग लुगाई ॥

विहारी

हमारो निरधन को धन राम ।
हात न खरचत चोर न लूटत गाढ़े आवत काम ॥
दिन दिन होत सवाए डौढ़े घटत नहीं कहुं दाम ॥
तुलसीदास प्रभु चित में आवत पारस को नहीं काम॥

२

सुध आए सुध जात हरीकी ।
हातमें छूटो यह मन मेरो जो अन्धीमे पात हरीकी ॥
गाँठ गाँठमे गांठ परी है छूटत नहीं छुटात हरीकी ।
लतीफ पिया तुम समझ बिचारो सुरज सुरज
पछतात हरीको ॥

३

तन दिरना दीम तन दिरना तारे दानी नादानो
तदानो तुम तना तन दिरना तन दिर तदरदानी दोस्त।
आखे गुलकीसो तरे एकदहे नाजुक तेरा
क्या लचकता है उठाए हुए बहारे दामन ॥

४

निपट विरहिया लोग व्रजके ।
मिल बिछुरत बिछुरे फिर मिल मिल पावत चितकू
चैन ॥

५

तैं मोरो मसकाइ डारी अंगियारे ।
जावो लाल पिया हमसे न बोलो तुम हो तो
मसकाय डारी अंगियारे ॥

६

तेरो चितवनको मारी मैं मर जाऊंगी तेरे नैनाकी
मारी मर जाऊंगी ।
कासम सा पिया गरवा लगाए मैं मारे शरमके
मर जाऊंगी ॥

देश—ठुमरी

बनजरवा लादे जाय राम देखहु न पायोरे ।
इस नगरीके दश दरवाजा निकस गइल कौन बाट
मोरे सइयां कुम जाय राम० ॥

२

मोरे पियाकी नजरिया लाग गईरे ।
मासा भरीकी कामनोरे मोती मासे दोय ॥
कमर फूलके बोझमेरे लचक लचक लच होय ॥

३

मोकूं चलत अङ्गनवा राम नजर लगी ।
राह चलत मोरो बगरी भुरग गई
छूट परो मोरे करको कङ्गनवा ॥

४

सुन सइयां मोरे ले दे मोती सागर खातका ।
नथनी बीच लाल लगा दे और झूमक नथनी
जड़ाय दे ॥

५

नदिया गहरीरे सइयाँ ए मैं कैसेके उतरुं पार सइयाँ
एक तो बादरवा दूजे गरजेरे तीजे अंधेरी सुनो
मेरे स० ॥

६

साजन सुरजन विना घरो ए घरो ना रहुं ।
साँचो पीत लगन को टोना सरस बुध गुरु से कहियो
अपने जियाको मरम सङ्गवा न छाड़ूं जनम जनम ॥

७

कजरवा देके तैं तो जियरा मार डारोरे ।
ए कजरामें कछु जादू कियो है वस कियो प्राण
हमारोरे ॥

८

लाड़ीला म्हारो रंभा हो ।
हमलारा राता माता म्हारे डेरे आइला
दिलवारी जोत सवाई आवे झूमा हो ला० ॥

अंसुअन भीजे म्हारे केस गोरिए।
बारा बरस पीछे सइयाँ मेरो आइलो छिप रहे
देहलीके ओट।

१०

साँवरेने वंसी बजाई मेरा मन मोहारे।
वंशी बजाई घरतें धाई मुरलीकी सबद सुनाई मेरा०॥

११

मन लागो सांवरिया सों जायरे उन बिन कछु न
सुहायरे।
जब लागी तब लगत न जानो अब भइल दुखदायरे॥

१२

क्या तुम हीं नहीं आये हो विदेशी सब परदेशी
अपने घर आये।
सावन आए पिया सब आए
कब लग जिय तरसाये हो विदेशी स० ॥

देश

कहां लगाऊं मैं तोर अरे मेरे नैहरके बिरवा।
बेला लगाऊं चमेली लगाऊं बिचबिच लाऊं तोर० ॥

२

काईं बोलोजी मासों राज।
बोलो जो-जो काईं सलडीनू
आनके लगाई प्यावे दारुडा॥

३

एहाँ झमकडा लागण देवो बाँके तुरकाणिदे।
सोनेदा चरखा रूपेदी मेखाँ इश्कदी पचरंग लागणिदे॥

देश—तिताला

घोड़ला धीमा करो महाराजा जी।
धप पड़े धरती तपेरे इन धूपनमें छीमा करो महा०॥

देश

मैं भूली सइयां डगर बताय दीजोरे।
सइयांके मिलनकों मैं जो गईरे औघट पर गयो पांव॥
रुणझुण रुणझुण बिछुवा बाजे मोरे जियरा लजाय।
तन घोड़ा मन पालकोरे काईं प्राण पियादो जाय॥
बालम चले शिकारको रे बिरह बाज लिए हातरो मैं०

हम ही कमावें तुम खावोरे ननदोके वीरा यारके।
हंसहंस पूछो बात तुम चलो हमारे साथ
अरे भंवरा कतहूं न जावो अधीरात॥

३

परदेशी मारू कहां लगाई एती बाररे।
नागर रस मोरे मनमें बसत है
किन सौतन बिलमाई ए० ॥

४

गागरिया ढरकाई सइयां मोरीरे।
हीं जमुना जल भरन जात हो
धर बहियां मचकाई स० ॥

५

निगोरे नैना लाग रहेरी बगियामें करत कलोल।
इस बगियाकी रीत निराली हमरे सइयां अनमोल॥
जब रे लगो तब लगत न जानो अब लागो दुख देन॥

६

गुसाईंजो मैं जोगिन हो यार रहोंगी
तोरे बांके नैनाने मुझे माराारे।
पान फूल और बेलको पाती गुसाईंजोकूं तिलक
चढ़ायूं॥
गुसाईंजीके लटमें गङ्गा बहत है
अटसट तीरथ नहीयूं॥

७

गोकुलमें छिप रहोरे कन्हैया मोंसे रूस रहो।
तेरे कारन योगन हुइयां घर घर ढूंढ़ फिरे मो० ॥

सोरठ—तिताला

प्यारो प्यारो राधाजीको करत खवासो।
रीझ रिझावत कमल फिरावत देख रूपको रासो॥
सूरजमुखो ढङ्ग लिए प्यारो ठाढ़ो राधा नाम उपासो।
प्यारीके मन प्यारो हो रञ्जन किशोरी आलो सङ्ग
दासो॥

सोरठ-देश—तिताला

थारो दासी होस्याँजी बिहारी आज म्हारे याहीं रहो।

नैणांरी निरख सुहावनी सूरत
याही बानपोछे प्यारो ॥
बरषाने की रलियां गलियां पाँवस रैण उजियारी ।
कुञ्जमहलमें चहल पहल बिच
व्रजनिध मान करस्यां सारोजी ॥

देश-सोरठ—तिताला

विरद सभारो राज कान्हुड़ा नन्दके ।
आनन्द करो दुख हरो सांवरे
निज भक्तन प्रतिपाल करो ॥

२

बोलो क्यों नहीं राधा प्यारी यामें काई मान घटेछे ।
हम बोलत तुम बोलत नाहीं
नन्दरो गुमानी थारे वास वसेछे ॥
बांके नैणां तिरछी चितवन
रावरी मूरत म्हारे दृगण वसेछे ॥
तिहारो ही ग्यान ध्यान तिहारो ही सुमरण
नागरीदास दिन रैन रटेछे ॥

३

रसिया म्हारा अमलारा राता माता आजोजो ।
थारो दासी में जनम जनमरी
थे म्हाने नित चहा जोजो ॥
थारी म्हारी लगन लगीछे रसिया
मत कहीं लोग हँसाजोजो ।
व्रजनिध रसिया म्हारे मन वसिया
वंशीकी टेर सुनाजोजो ॥

४

कोठे म्हारे राज सइयांने कहत मानो ।
की काहूसों तन वस कीन्हों को कहूं हो गये ग्यानो ॥
की कहूं वृन्दावन कुञ्जनमें मुरली मधुर बजाई बानो ।
रसिक रसीला श्याम सलोना की काहू नैणा लोभानो ।

कालिङ्गरा—तिताला

नीको लागो बालगोविन्दा बालगोविन्दा जशोदानन्दा
कुटिल लटूरी मुखपर पूरी
जसुमत गोद लिए नन्दनन्दा ॥
घुटुरुन ठुमक चलत मन्द गत
माखन मांगे आनन्दकन्दा ।
छुम छनन छुम छनन बिछुवा
बाजत रसिक मांगत चन्दा ॥

सोरठ

हरिजन बोलता नहीं सुआ ।
अष्टदलके कमल भीतर बोलता एक सुआ ॥
तोड़ पिञ्जर उड़ो चाहत प्रेम पारस छुआ ॥
पांच चोर पचीस पावक बांध डारो कुआ ॥
दास नानक शरण आए देत सतगुरु दुआ ॥

देश

अरे मन समझ समझ पग धरिए ।
इस जगमें अपनी नहीं कोई परछाई सो डरिए ॥
दोलत दुनियाँ कुटम कबोला
सङ्ग न चले कहा करिए ।
राम नाम ना विसारोजो मुख
सुमिर सुमिर जासों तरिए ॥

२

ओलू थांरी आवे छे घणा दिन बीता हो विहारीजोओ ।
थारी म्हारो प्रीतरो अन्त नहीं छे
म्हारा जिय तरसावे छे ॥
पगड़े पगड़े आवन कहि गए नैन नीर बरसावे छे ।
सुगणोरा सायबां अब तो आंव जोवन अमृत रस
बरसावे छे ॥

देश

ना छेड़ोजो राज म्हाणे ना छेड़ोजो ।
सास ननद मोरो निरखत मन रंग
हुणही आवत मांहे लाज ॥

खम्माच

भवसागरके भटभेरनमें प्रभुजी तुमकूं भूल रहा ।
काम क्रोध मद लोभ मोहके भक भोरनमें भूल रहा ॥
वृथा कथा वकवाद विरहकी
इनसों मिल मिल फूल रहा ।
तिहारे चरण शरण बिन व्रजनिध
यों ही इत उत डोल रहा ॥

सोरठ

जाने मोहि दीजिए चरण गहौं नन्दलाल।
एजी जान देहों जगदीश जावों हों तुमरी वलिहारी॥
दधि बेचन हम आई प्रातते भई दुपहरी।
श्यामसुन्दर वलिहारी हों अब न करो लरकाई॥
हमरे सङ्गकी ग्वालनी सोइ बेच दही घर जाई॥

२

एजी अजहूंलों यह दान दान तोरे पिता न लीनो।
अजब हठीले कान्ह छोट बड़ जात न चीनो॥
गगरी डगरमें फोरिहूं जाव खड़ो दरवाजे।
सुन पै है कंसराज अति कठिन हैं करम तुमारे॥
जेहि दरशन कों फिरे सिद्ध सिर जटा रखाए।
सो दरशन नन्दलाल आज तुमरे अब पाए॥
सकल आनन्द भयो जिय मोरो और न कछू सुहाए।
श्यामसुन्दर झगरो सोइ गावत राघोदास बनाये॥

देश

चितवनमें चितचोरी भई सखी
को मेरी लागो लागो गुहार।
यहरे गांवको नाम बिरहपुर यह विरहा अधिकार॥
धूरी ना गत जात रह्यो मत घूंघट दीनों उघार।
चितवन का जैसे प्रेमकी गासी लगी औ हो गई पार॥
निपट भयो जियरा जब व्याकुल तब कोंइतनी पुकार
रहि है कसक उठत हिरदे बिच निशदिन सो सो बार॥
अबलो क्यों हूं भरम न जाना आए बैद हजार।
पियको औषध एक है सजनी कोनो मनमें विचार॥
जो वजहन पिय मधवा पियासे
औ देखूं मैं वाकी बहार॥

झंझौटी

गोरीदा कङ्गणा यार वो मैं ईथे ढूंढ़ेंदी आइयां।
नथडोदा मोतीडा नीका लागे कजरा धारीदार॥

सोरठ

शुभग ठौर ढिग चूकके महावर पाई।
जैसे देखे चन्द उदित कामोदनी
नीरस पायके मोद उमंगाई।
शुभग सनेह नेह मृदुल मुसकान प्रीत
दसन दमकत अधर पल्लव अरुणाई॥
रचित बोलत बैन सुनत पिया उर चैन
रसक रस द्रवत तत भरो रस पाई।
उनत माधुरी ग्रीवहार हारावली
लाल पन्ना मानक मोती मुगाई॥
दुलगी तिलरी चम्पाकली सोहनी क्रान्त
तापे बनमाला सुगन्ध मधुर महकाई॥
भुजाभूषण भूषित बलय पहुँचि रचित करन महं
दोलती अङ्गरी मुदराई।
दिव्य द्युति बसन प्रभु लसन अङ्गरङ्ग पर
त्रिभुवन कहां एसो है सुन्दरताई॥
जुगचरण पङ्कज बरन तिमिर पतीयत पहरन
निशवासर ज्ञानी ध्यान लय लाई॥
जुथ जुवतीन मञ्जु अवध सुकवार कुञ्ज
ख्याल खुशियाल पुञ्ज केल उरझाई।

देश

झुकाए नैणां डोले छैजी जोबन माता।
नन्दलालके नेह भरो है प्रेम प्रीत रसराता॥
अङ्ग अनङ्ग देख सकुचावत तापर मृदु मुसकाती।
निशदिन करत ख्याल खुशाल किशोरी
राधे कृष्णगुण गाती॥

देश—अङ्गला

एरी माया सासुर है बड़ो दूर जां दिन सइयां मोसे
पूछो सब जग का लेकर मिलबो हजूर।
चलत चलत थक गई नैहरमें हो गई चकनाचूर॥
पांच पचीश दशों दिस सखियां
तिन मोहे कियो मगरूर।
जिन कहना गहना कियो पियको कर सिङ्गार भरपूर॥
गावै गूदर धन भाग सराहे मुखपर बरषत नूर॥

देश

अजब तमासा देख नटवा नटवा एक कला बहो तेरी।
सब घट नाच नचावनहारा लिखे नहीं जात अलेख॥

ठाकुर द्वारेमें बेठो विरहमन मक्क मन्दर शेख।
वेद पुरान कुरान पढ़पढ़ मजहम भौर विवेख॥
गावे गूदर दोउनको भगरो साहेब जात अलेख॥

देश—लूम

मारवणरो सरवर पांणी न जाय
सातो सहेलो मारवण झूम रही।
साथांको है मारवण भरभर ल्याय
थे कित अकेलो मारवण घूम रही॥
औघटरो मेरी आलो भरह्यं न जाय
पनघट उभा मारू ढोला है।
देखत रो सखो म्हारो मन डोलो
भाय उभोछे मारुड़ो अनमोला है॥
अरो भूठोरी मारवण झूठ न बोलवे
परदेशो ढोला कब घर है।
ज्यों तुरो आलो सचहो जान चढ़ा चढ़
चोवारो मारू देख रहे॥
काहे कूं री मारवण लिया है पहंचान
काहे सें देखो चाल सुहावणो॥
सूरत सों मेरो मालिया है पहचाण
वोहो है मारुड़ो मन भावणो।
आंखोंसे मेरो मा करो है पहचाण
पलकां से देखो मटकतो है॥
काहे पैरी मारवण गई सुरझाय
काहेकुं इत उत उझकती है।
काहे पैरी मारवण धोवतो पाव
काहे पे मिशो दाँत लगावत है॥
ढोलारी मेरीमा आयोछे वागों
अब म्हारो मनडो रिझावत है।
सोनेको गाड़ुवा मारवण रेशम डोर
लपक झपक मारवण जल भरे॥
ढोलारी खातर मारवण रभो है मुखमें
पानांरो बीरो अधर धरे।

नाइकारे बेटा चतुर सुजान
इनमें मेरा मारू ढोला कौन छे॥
बांकोइ घोड़ा जोड़ा कमर कटार
मारू ढोला उभा मुर छे।

देश—ठुमरी

जल भरत गगरिया मोह लई मोह लई अरे गोरिया।
गागरो उतारल कुंवना ऊपर
डार चलो रावरे प्रेम फसुरिया॥

देश

तुम बोलोरे सुगनवा बोलोरे सुगना
राधाकृष्ण राधाकृष्ण बोलोरे सुगना।
केतो पढ़ावत पढ़त नहीं तुम
बड़ो बारते मैं ठाढ़ो अंगना॥

२

एरो वुलियानाके रामरोरी बोलियाना
अरे मोरे साले ले करेजवा राम।
उचवा चढ़के मैं निचवा निहारोरी
कोउ नाहीं मेरा घेलना उतारे राम॥
कृष्णरसिक मन भयो बावरो निशदिन
फिरत तोरी नेह नगरिया।

देश-सोरठ—ठुमरी

मोरे निंदिया सों नेना झुके
तोरे पइयां लागूं जरा सोवन दे।
सास मोरो दूतो ननद मोरो वैरन
करि हैं सकारे चबावरे भोर होवन दे॥

देश—ठुमरी

राज मोरो डोलिया ले जावोरे
मैं तो चलो हूं पियाके देश।
बाबूल मोरो डोलिया मंगावो चलो हूं पियाके देश॥
चार कहार मिल डोलिया ले आवो
मोरो डंडिया न मैलो होय।
बहियां पकर पिया ले जैहैं तब सङ्ग और नहीं कोय॥

देश—तिताला

मोरे बूते हिलो ना जायरे जोबनवा उमंगो ।
काजर देहा तोकर कर वारी सुरमा दिया ना जाय ॥
जिन नैननमें पिया बसे हैं दूजा कौन समाय ॥

२

सन्देसड़ा म्हाड़ा लेता जाइयो राज ।
सब जग रूठा ओरो रूठ जाय दे
सइयां न रूसे जासों काज ॥

देश—ठुमरी

सेजड़ियाँ न जाऊं मोरा जिया तरसे जोसे ।
भाड़ आई भूड़ आई पलग बिछाय आई
अच्छी नोकी भाग आई वेगरा देखाय आई ॥

विहारी

खेवटिया पार लगावो नइया रहो मझधार ।
हमरे गुना पर तुम ना जावो अपनो ओर निहार ॥

देश

मोहन तोरी पइयां परूं
मइसे तिरछी नजरिया न हेर ।
तोरी चितवत सब जग चितवत है
पिया राखे सखी सब मेर ॥
जित देखों तित कोई न हमारो तोरी चितवनका फेर
फिरत विहाल याही तन वनमां होयगा कहूं भटभेर ॥
रामसहाय दयाकी चितवन
चहुं दिस होइगा उजेर ॥

२

सइयां कौन गुण रीझे सजनी ।
कहो कौन एसो सुन्दर कुवजा
जाके काम सब सीझे सजनी ॥
रामसहाय समझ अपने मन
कोऊ काहूको न खोजे ॥

३

सजनी सइयां कौन गुण कीनो ।
एक अनेक रूप धर बैठो तापर परदा दीनो ॥
रामसहाय सोच वही निशिदिन भय अजहूं ना होनो ॥

बोहा बोहा बालू रेतापर वारी बेलांझा होनी नाजो
जो धावधारे धावुनो टटोलो वालो राज ।
मेरा छोटा देवरा नादान धन वारोरे
लांझा होनी नाजो काचो कामनो ॥

५

झूमाझूमा माधो है वालो बोलो करे हटियालो
अनोखो कैसे समझाऊं ना समझे राज ।
आधी आधी रात वो तो नींद गमाई हन
सुपना किया यों हो आग रहो म्हांको कोय न काज ॥

देश—झुम

मारूजी आज वसो न म्हांरा सहरांमें थांको म्हांको ।
प्रीत लगोछे मारुड़ा पगड़े चलेस्यां थांरे देश ॥

२

म्हांके थे छो थांके म्हे छों
कांईरा करो जियामें अन्देश ॥

देश

चलोनि केसरिया मारूजी लूब बनो छे हरिया डूंगरां ।
खलबल खलबल नदीनीर करे छे
मोरला बोले छे जंगरां ॥

२

बाला जोबन युं हो जाय रे सुन सइयां मोरे ।
तू जो कहत पिया बालोरे बहुरिया हमरा कौन काज ॥
बेदरदीसों पीत न कीजे देखत आवे लाज ।

३

सइयाँ मैं विरहा की मारो मरूंरे ।
जो पिया हमसे रूस रहो है वाके पइयाँ परूंरे ॥

४

पइयां पइयां चलो पियाके मिलनकूं ए सजनी ।
या रित वरषामें फकर पिया परदेशवा विरम रहा
सतावन लागे मोरा जिया ॥

५

हमारे सइयाँ बोलिया न बोलो मोरे साथ
भुज भर लीनी मोहे गात ॥

रागरंग सइयां तोरे पइयां परत हूं
जिन छुवो म्हारो गात ॥

६

नींदको मातो गई सोय ये री ए मैं ना जानूं ॥
महमदसा पिया मोरे डेरे आइले
रखती नैणवा लगाय ॥
मइकूं न जगावो सइयां निंदिया लागीरे ।
बारे बरस पे सइयां मोरे आइले परहुं तोरे पइयां ॥

७

अब तू तो माने न हठोलो मोरी बतियां ।
चार दिवसको चटक चांदनो
फिर आवेगो अंधेरी रतियां ॥
छोड़ गुमान कान दे सजनो सोतलगाय रहो घतियां ॥
रामलला सिख मान हितापन
हरि हिय लाय जुड़ावे छतियां ॥

देश—तिताला

जीवे जीवनरा वाला बनरा ।
कांई करेंगा थांसे थारे गुणगनरा ॥
राज सुहागणरे तेर सियाले सायवां थे मारो जोबनरा ॥

२

सइयां नदिया गहरीरे कैसे उतरूं पार ।
एक तो बादर बिजरी चमकत
तीजि रैन अंधेरी घनघेरीरे ॥

३

महाराज बिछुवा दे डालो
मैं तो भूलो पलँग थारी सेज ॥
रसके रसीले प्यारे अजहूं न आये
कबहूं न जाऊं थारी सेज ॥

देश

जियराके मार डारोरे अबरे कजरवा देके ।
बड़ी बड़ी अंखियन कजरा सोहे
चितवनमें निहार डारोरे ॥

सुनो सुनो ननदो कैसे कटे दिन
सांवना सांवना मन भावना ।
नान्हीं नान्हीं बूंदे मेहा बरस गयो
मोरला बोले सुहावना ॥
बीजली चमके बादर गरजे दूरके ढोल सुहावना ॥

३

जोबन बांको छे जो सालुड़ामें मसकावे ।
उमंगी जोबन वे रावल देशां
सास भली मेरो आन जगावे ।

४

वृन्दावन बांसरी सो बजी ।
श्रवण सुनके भनक परी है नागन होके डसो ।

५

सवाजी म्हारा रसिया लागो हो आवे ।
वाट चलत मोरा अचरा जो गहे लोनों
बहियां पकर ललचावे ॥

६

मैं पइयां लागूं री मोरे पियाको संदेशवा बताव ।
हमसे न हंस बोले सुनोरी सखोरी
एरी युग सम दिवस सिरात ॥

७

ओ मैं नहीं जइहूं रे सइयां बगियां तुमारे हाथ ।
तुम तो हंस मोहे नीक न लागत छूवूं तुमारो माथ ॥
नेके चलोरी गोरिया नेके चलोरी
पिया पूछे एक बात ।
नेक चलत है नीकी लगत है हंसमुख पूछे एक बात ॥

बरवा—देश

अरी ए विदेश बालम धन अकेली
लगतें सांवन घर आय हो ।
सासरी दुख कासे कहिए तुमरो तो पूत निरमोहिया
हम खरच मांगत तरफ बोला
अटरे विदेसो घर आय हो ॥

हरि हरि गुवरी पियरी माटो महल लिपाय हो।
उस महल ऊपर राजा सोवै
रानीजो बिनिया डोलाय हो॥
उड़रे कागा मैं दूंगी बागा सोनेसे चोंच मढ़ाय हो।
तेरी पंख ऊपर कलम लिखि है
जदरे विदेशी घर आय हो।
आरे गङ्गा पारे जमुना बिच चन्दनका रूख हो॥
इस रूखके ऊपर कागा बोले कागाके वचन सुहाय हो।
आ मोरे बमना बैठ अङ्गना सांचे वचन सुनाय हो॥
थार भरके मोती दूंगी जदरे विदेशी घर आय हो।

सोरठ—झपताल

शोभा सदन प्यारो वरनि न जाई।
रूपकी राशि छवि अतुल राजत
वदन वरनन करे जो हो विधि बनाई।
इन्दुतें चार प्रगास आनन दीपत
रुचिकर मन धर धर सैन उपमा लखाई॥
तासु वर लीला वरजनकी कालिन्दी
लीला करत काली सकुटम्ब लाई।
लहलावत किरण सुरङ्ग रङ्ग चुनरी
नवल आभास जल ललित प्रगटाई॥
मानहुं नभमध बादर अरुण प्रात हो
विगस दिनकर सुभग सकल सुखदाई।
रतनमणि जड़ित वैना सुन्दर भाल वर भौंह
मनमथ धनुष रितु गुण चढ़ाई॥
चलत जीतत राज चारोदिस चक्रवती
राजा जोवन देत अपनी दुहाई।
नैन मधुकर जुगल निरख रस के तूजीकी छाए
उमंग भरे आनन्द मन बढ़ाई॥
जान रितु वसन्तकी कीर बैठे डारन
भली अवली तापे वेसर सुहाई।
रङ्ग विशाली लाली लजो अमल रुहन
वही कपोल लोल आरसी दुराई॥
श्रवण कुण्डल मार निरख अलकन और नछत
बोलत जानत पावस रितु आई॥
नथ मुक्ता ललड़ी रचत लटकन लटकाई।

सोरठ—एकताला

निपट निडर नटवर वर डगर डगर घेरे।
अतहि चतुर चितवत हरि गुरुजनहिं नाहीं सकत
अङ्ग निडरि निडरि अरि कर कर अङ्ग हेरे॥
अति अरज वरज काहूंको न मानत लरजत हिय मेरे।
हरिजू करत कारज सब गरज अपनी टेरे।
पीत वसन दामिन दुत हेरत जुगराज दास
फिर फिर मुसकाय तिरछी नीकी चितवन चितैरे॥

२

कारी भारी अतही डरावत भई एसे ही अचानक
तुम गहे लीनी पिया कर धर देख धरकत है
मोरी छतियां कैसी बतियां।
तुम तो सरस रसिया अपने ही गरजके कहो कोउ॥
कैसेके निकसन पैए डरत फिरत हो पिया कैसे कर
निकसे मेरे मुखसो बतियां॥

३

अब तुम कैसे अचानक गहे लो पनियां भरन करको
कराई बोलन लागी बँगरी गई लो मुरक।
बाट घाट मग रोकत टोकत पैंड़े चलत नीको अटक
भटक॥
अपनी बार रसिया तुम तो जावो कैसेकं सरक।
रस बतियाँ विनसे करत जाओ जाको लागी
नई चटक॥
धरक साह आजम छांड़ दे मइकूं घर जान दे लङ्गर
ढीठ तुरक॥

४

छैला सैलोका जरदी मैनू भांदो तेड़े नैणां जोगी
रावला भलावे।
लेखण कारण सुरत महबूबां अङ्ग भभूत मलावै॥

४

मोरे सइयां हो तुम बिन नींद न आवे।
नींद न आवे विरह सतावे तुम बिन कछु न सुहावे॥

टेंग

कांई बोलोजी म्हांसो राज भजो होजो पिया
सुतड़ो भानके जगाइ पीवन दारुड़ो।
मै तो थारो दासी सायबां जनम जनमरो
भरज करेछे छोटो मारुड़ो॥

२

बिनन गईलो वारी फुलवा न लागीला मोरे हतवा।
सदा रंगीले महम्मद सा सुन्दर बने
मोरी बहियां पकर लीनो मोज डारो॥

३

म्हांरी कलालन ए देखानो भालीजारा सरूप।
ताना सो तनिया छे वारो मेरते
कहीं ननीय भरोछे भाज म्हारो॥
म्हांरी कलालनरो पावरो कहीं बनोछे
जेसरमेर देखने भाजो॥

४

जिन्दड़ी लगी लगी तुज तांई
जिन्दड़ी लगी तुज तांई वो वो यार।
दिलांदा महरम साड़ा तुझोंके जानें रब सांई वो यार॥

सोरठ

छिटक रही चांदनी रसभीनो रात
पिया तेरे मिलनको भास।
सास ननदिया जागे मोरो
कैसे भाऊं सइया तोर पास॥

२

मोहे सैन बुलावे बाँका मारुड़ा
मैं कैसेकर भाँउ तोरे ढिग भागे।
चाँदनी रात प्यारे मोरे ननद जेठानो देरनिया जागे॥
तोरी परछइ मइ लुकके भजोजदोनको समीप
कैसे भाऊं जो तुं चलो श्याम वसन पहर भागे॥

३

पिया कर जोर विनती करत हों तिहारी
सइयाँ इतनो भरज है हमारो।
सुन लै तुमने क्या जियमें विचारो॥
भपनें जियाको बात मैं कह न सकत हों एतो
निठुराई किनवदो भाजज दिल हों कह तिहारी॥

४

बूंद भाई हो म्हांरे सायबां जो बूंद भाई हो।
इतसें भाई बादरीरे उतसें भायो मेह
हों भींजू थारे कारने नित नित नयो सनेह॥

५

बालमजो म्हारो चुनरो भींजे राज
दुपटा रोप लो भाडो दीजेजो।
घूमर म्हांरो रंग रंगीलो सायबां
छोटो लाडोजोरा जोबन छोजेजो॥

६

माहे सैन बुलावे बाँका मारुड़ा
एरो भालो कैसे कर भाऊं।
तेरे कारण गुरुजन दूरजन लाज लजाऊं॥
नेक धोरा रहो सोवन दो मन रंग
थारे पइयां परूं भौर बल बल जाऊं॥

७

नेवरिया झांझन बाजे म्हाँरो भावन ना बने रे
छोटो लाडो ननदल जागे।
सास ननदिया देरनिया जेठनिया
भागे हो रहत नित लागे॥

८

म्हांरे गरे लागणा रसिया बालमराज॥
भमरस जिन करो म्हांसे भदा रंग रसीले रस पागणा र०॥

९

कोयल बोले कांई तारां भीनो रात।
कूक कूक बाग बाग डार डार पात पात कांई तारां०॥

१०

द्रद्र तनन तदरे दानी दोम तदोम तदानो दोस्त।
दिरतुम दिरतुम नित नारे उदन तुं तद दानो दोस्त॥
तुरक चश्म मस्त कातिलके पुरजे जादू है दोस्त॥
क्योंकर दिल जांवर हो इनसे एको दारू है दोस्त॥

सोरठ—एकताला

मेड़ तणो मांडी छे मतवार।
दशमो भाटीरो मद चोखो छे भर दे सुमत कलवार॥
नैन पियाला पीवत अत रूप रस
काम क्रोध दियो जार॥
बखतावर मीराँ बड़ भागन घर बैठां हो पाये मुरार॥

२

घूंघट रो जिन खोलो जी थांने म्हांरां सों छे।
उभी उभी मृगानैणी अरज करे छे
धीरे धीरे मों सों बोलोजो थांनें म्हांरा सों छे॥

सोरठ

थाँरे आज मिलन रो उमाहो है मन मांहीं
रंगली जामें करस्याँ।
गणगोरयाँरो घोस सुहावनों
रसिक कुंवरजीनें भुज भर लेस्याँ॥
नँदजीरा लाल कुंवर बड़भागो मैं उननें बरस्याँ।
ब्रजनिध बालम जाणे छे आलम
सब हरष निरख हियड़ामें धरस्याँ॥

२

रांणाजी में सांवरे रंग राचो।
बांध घूंघरू प्रेम करि हो हरि आगे मै नाचो॥
राणे जी विषरो प्यालो भेजो हो नाहन जिय कांचो॥
मीरां चरण लाग रहो निरभै हैगो सांचो॥

३

मुरलिया राधे किन लई दे बताय।
प्राणनसों तिहारो सो गावत हों गुण गाय॥
बिन देखे मोहि कल न परत है पलभर रह्यो न जाय
यह वंसीमें मेरो प्राण बसत है मोकूं आन देखाय॥
शिव सनकादिक ध्यान धरत है सुर नर रहे लुभाय।
सूरदास प्रभु वंसी दीनो आनंद उर न समाय॥

४

सुन ननदल म्हाँरी थांरे वीरानें समझाय।
ले म्हांरो चीर कदम चढ़ बैठा
अब कहा करूँ मेरो माय॥
आठ पहर म्हाँरे लारैं लाग्यो मन्द मन्द मुसक्याय॥
ब्रजनिध म्हाँरो चीर दे डारो ठाढ़ो यमुना जाय॥

५

प्रीत करी सो मैं जानोरे मोहन।
दे विश्वास गयो तज मथुरा रति कुबजासों मानो रे०॥
कपट भरो कारो तन तेरो कपट भरो सब बानो रे०॥
आनंदघन हित चित री बाताँ जानत राधा रानो रे०॥

६

चुनरी में रंग प्यारी जो थांरो।
प्रेम प्रीत सों पिय संग बैठी गावत तानतरंग॥
नवल किशोरी गोरी भोरी तूं रसबोरी अंग।
रसिक गोविंद अभिराम श्यामसों
हिल मिल उमंग उमंग॥

७

घटानें छोड़ी लटा बूंदनकी अब कहा रोऊं माई।
बिजरी चमके कोयल कुहुक कुहुक डरावे॥
रंगरस भरे अहमदसा कां देख रो मेरा ध्यान बटावे॥

देश

वैरन कोयलिया कुहके घरी घरी कुहुके
मुझ विरहनकों अत हो सतावे माईरो।
दादुर मोर पपीहा बोले अत हो सरसावे
उनतन मेरो सुध ले आईरो॥

सोरठ

मद छको कांई आवे मारुड़ो मांणे।
आपो पीवे मांणे प्यावे हरगुण दारुड़ा मारुड़ा॥

२

पपिहरा पियाको बोलो न बोल।
सुन पावेगी विरहकी मारो डारेगो पङ्ख मरोर॥

३

सजन सुरजन बिना घरी बे घरी नां रहो
संगवा न छांडा हो जनम जनमकों।
सांची पीतकों नगरकों टोना रस रसबुध यों कहियो
उनतें जाय अपने जियाके मरमको॥

पियो महाराज दारूडोरो प्यालो
आप पियो म्हांने प्यावो ।
निदान रंग दासी थारी थांसे म्हांकों काज
थें म्हांरे मन भावो ॥

५

अंधेरे बगर में उजारा सखोरो दोपकके मन भावे ।
चमकत दामिनी मेहा रे बरसे
बादर घोर डरावे वे प्रेमको आँच जरावे ॥

६

कर कँगणवा सो बलमा मारा उतार लोनों ।
अंगुरी पकरत पाचा पकरा
बहियाँ झटक अचरा छोनों ॥

७

आसा पूजन मन चिन्ताहरण प्रभु बिन कौन समझरे
मन दुख दारिद्र दूर करनमें ।
तारन तरनको सुमरन कीजे जिन सदनको परनसों
मनरँग सरन पाए जब हीं लागी चरनमें ॥

८

चुनरी में रंग प्यारो जो थारो चुनरो में रंग ।
पहरि पोत सो पिय संग बैठा गावत तांन तरंग ॥
नवल किशारो गारो भोरो तूं रसबोरो अंग ॥
रसिक गोबिन्द अभिराम श्याममों
हिल मिल उमंग उमंग ॥

९

थे तो म्हांने प्यारा लागो राज ।
बलि बलि जावाँ थाके मुखडारो
घर पर भलांहो पधाख्यो म्हांरे आज ॥
प्यारोरे रस बस वसिया रसिया सज केसरिया साज ।
धन धनजो अभिराम श्याम थे तो
रसिक गोविन्द सिरताज ॥

सिंदूरा—तिताला

असाढ़ मास बरषा रितु आगम झिंगुरे झनक लगाई
गरज गरज घनघोर आए चहूं ओर तें
अब कोकला कुहुक सुनाई ॥

सिंदूरा

सुरत लागोलो गोरोरे पोउ तुमो
यार आवो गरवा लाग मिले ।
सदारंगोले महमद साह पियरवा नेक चल मो ढिग
मंदर बैठो जो सुख पावे हितू अनहितू देख जले ॥

२

वेगो फेर बैलोंवाले अरे बोरा ले हों रामनाम ।
हरो भूम कोनो गुसैयां सींचे चहूं ओर अष्टजामनाम ॥

३

थे तो आवो जो म्हारे डेरे सुरजन सइयां मोरे
लेहों मे तुमरो बलैया ॥
रैन दिना ध्यान तिहारोई लागो हो रहत है
आय करो वेगो काज पूरे मनके सब मेरे ॥

४

गंवार के छोहरारे अरे भला कहा कोनों मद तोरा ।
जाऊंगो मै अपने ननदके छोरा नहीं कहीं जोरा ॥

५

अरे जिन आस लगारे मन मेरे पियसों
ए कपटो कपट भरे ।
बाजो लगा सो हो जोता महरबान
जाको और होवे पास अरे० ॥

६

अरे जिन हम बहुत कर देखे दोद पे जिनसों
मिताई थो वे सब कर देखा दोद ।
अला बिन कोंन खबर ले मेरो वो जब साहब
अधरात कर देत अदा रंगसों दिन ईद ॥

७

अदा रंग सों और निभाई ए प्यारे निशदिनमें ।
एसो पो किन नहीं पायो
जो पायो सोते चल कर उन सों ॥

८

परमें माँड़ा घोनिया लाहा जा न सका जान ।
परमे माँड़ा सोधिया लोहा जा न सका जान ॥

डंगरिया चाड़ूंगरो चेम चेम नसा भतण पतण
नाथोया नाड़ा नितनयार नैण नैण करे देयार ॥

९

यार ढोलन घर आवरे आवरे साँई मे तो तैंड़ी
लेवाँ बलाई अरज करां तुजताँई ।
हाँ वे मैनू अपनी करमदा नाल निहाल करो वेड़ा
एरब्बा एहो माँगदे असां तू साड़े नाल
साड़े मनदो मुराद बर लाई ॥

१०

ओजी मे तो कांई जांणा छे राज
थाँरो नगरीरो बाट ।
अब भूला भूला फिरा छाँ या जगरे मांह अब थांरो ।
नाम जपां छां छाम्हे मुख पाठ हो जी म्हारा
अपनी मौजसे पूरण करदे थाट ॥

११

हां वे मियां मैंड़े तैंडे नाल आंखो लागी वे मेंड़ा प्यारा
जानो लोकां मैनू देखदा तैनू देदे नाहीं वे ।
तैड़े बिन दोठे साडा मन अकुलांदा वे मियां कूक
वेषलामो मैनू अब ढोलन तैड़े बिन दोठे साड़े
चश्मां चैन लेदे नाहीं ले ॥

१२

सहयोनी मैंडा रांझा केतिक दूर माड़े दिलदानी
महरम सांई रब्बा पूछ पूछ हारो रात सारी ॥
जो मियां रांझेनू आन मिलावे नेहदी बन्दी थारी ॥

१३

हरिकोनाम लेरे गँवारा कहा मन सोचत बारंबारा ॥
जब दरसन देखा चहिये तब दर्पण माज रहिये ॥
जब दर्पन लागो काई तब दरस कहांते पाई ॥
बाजीगरने डंक बजाया तब लोग तमासे आया ॥
बाजीगरने डंक सकेला तब रह गया आप अकेला ॥
जब पार उतरना चहिये तब केवट सों मिल रहिये ॥
जब उतर गए भवपारा तब कहा कामकों संसारा ॥
जब सौदा कीना चहिये तब सौदागर सों मिल रहिये ।
सौदागर सों सौदा कीना सौदागरके हम चीना ॥
कहे कबीर हम जाना जानके यह पहचाना ॥
पण्डित होय तो पतीजे मूरखको क्या कीजे ॥

सोरठ

सखी मोहे वाहो देशको जाना ।
जाको नाम न जानो ठिकाना ॥
जहां टूट जाय सब फन्दा ।
जहां दुनियां नहीं नहीं धन्धा ॥
जहां ठगी नहीं शशि भाना स० ।
जहां पीर पैगम्बर देवा ।
जहां रिषि मुनि असुर न भेवा ।
जहां कुफर इसलाम समाना स० ॥
जहां जाना ना कोई आवे ।
जाको रीत न कोई गावे ॥
जहां जायकर फेर न आना स० ॥
जहां वेद पुराण न बमना ।
जहां कुरान किताब न मुलना ॥
जहां पूजा निमाज न ध्याना स० ॥
जहां अंधेरहि उजियारा ॥
जहां भूख न प्यास अहारा ।
जहां पूरन आद जमाना स० ॥
जहां अगिन पवन नहीं पानो ।
जहां मरत जीव नहीं जानो ॥
जहां जाय न पढ़ो परवाना स० ।
जहां नरक सरग भी नाहीं ।
जहां सोउं पिया गलबाहीं ॥
जहां पैरूं सोहागके बाना स० ।
जहां नाद वेद ऊ नाया ॥
जहां सिपरो सारो माया ।
जहां पीव रचो छारो गाना स० ।
जहां लागो प्रेमको बाड़ी ॥
जहां फूल गुलाबन बाड़ी ॥
जहां फलो है मरुवा दोना स० ।

जहां रंग रूप नहीं रेखा ॥
विन नैन साहब देखा ॥
जहां पायो जीव अस्थाना स० ॥
जहां जात न पांत विवेका ।
सब घट एक हो लेखा ॥
जहां कृष्णानंद सब भाना ।
ब्रह्म रूप तहां मन माना ॥

सोरठ—एकताला

बंसी वेर परी वे मुरलिया मेरे वेर परी ।
आवत जात वजावत गावत कल न परत एक घरी ॥
एरो राग आग तन तावत निशदिन विरह जरी ॥
इन निरदईने दरद न जानो मदन पंजको गांठ धरी ॥

मारउ

नैना नींद घुरो किशोरी जीके नैनां नींद घुरो ।
आलस वस जोवन वस मधु वस देखत ललन दुरी ॥
पियकर सों सहज चिवुक तन बांकन भौंह मुरो ॥
बावरो सखो हित व्यास सुहन वल देखत आनंद भरो ॥

२

बैठे दाउ कुञ्जनको परछाई चलो क्यों न देखिये ॥
एक भुजा गहे लेत द्रुमको दूजो भुजा गलबांहो ।
छवि सों छवोलो लाल लिपट रह्यो
रो कनकवेलि उरझाई ॥
श्रोहरिदासके श्यामो श्यामा
कंजविहारो पगे हैं रंगमांहो ॥

३

सराइ ए नंद तिहारो हियोरे ।
मोहन से सुत छांड़ मधुपुरो गोकुल आन जियो ॥
कहा करूं मेरे लाल लाड़िले जो तुम विदा कियो ।
जीवन प्राण हमारे ब्रजको वसुदेव छीन लियो ॥
कियो पुकार बहोत पचहारन वरजत गमन कियो ।
सूरदास मन मानक मोहन ले पर हात दियो ॥

४

मेरो नैन भयो बैरागी ।
बिन देखे मोहन पिय सजनी नेक पलक नहीं लागो ॥
जाके गृह प्रभु आप लुभाने धन धन वाको भागी ।
ज्ञानदास प्रभु श्याम निरख छबि ताके हों पग लागी ॥

५

छोटो म्हारी ननदल बड़ो लवार ।
है गुणवती वारो गुण हु न जानो
एकको न वसे हजार ॥

६

सखीरो चातक मोहि जिवावत ।
पिउ पिउ रटत रहत निशवासर सोई शबद सुनावत ॥
अत सुकंठ अपनें पोनम को ता से जो मन लावत ॥
आप तो पियत रहत निश वासर
ओ विरहनकुँ पियावत ।
जो न सहाय होत यह पंछो प्राण अधिक दुख पावत ॥
सूर सुफल जोवन ताहो का काज पराए आवत ॥

७

बगवां बगवां कोयल बोले ज्यों ज्यों बोले
त्यों त्यों मोरा जिउ थर थराय ।
अरे अरे मलिया हों डरपोकनो अकेलो
बलालों देखिये सदारंग कौन आन मिलाय ॥

देश—धीमा तिताला

हों जो म्हांणे सङ्ग लिए जाय ।
ऊंचो अटारो म्हांरे पियाको पलंग बिछा देशो
म्हांसों चढ़ोई न जाय ॥

मारउ

नेना तो गुलाबो हो हो जो राज कोनिजो शरिया ।
लटपटो पाग कुसंभो वागा कहीं
सौतनारे रंगभरिया हो हो जो ॥

सोरठ—तिताला

माणो सिख माणो राजा महल पधारो बालो राज ।
उभो उभो लाड़ो थां सों अरज करेशां म्हांरो राज ॥
इतनो अरज म्हारो माण ले सायबों
लाड़ो हठ माने छे जो माणो ॥

सोरठ

हो जो म्हारो वेगो सुध लोजे हो जो महाराज ।

कबकी मै उभी उभी अपने मँदरवा

अरज करेशां बालो राज हो जो म्हांरो ॥

२

छोड़ा वर नैनी थांरो जोबन वाला जोबन वाला छेजो।

सोनेदी सुराइ वारी मीनेदा प्याला

आप पीवै सदा मतवाला ॥

सोरठ—तिताला

थे म्हारे घर आवोजी श्याम सलोना।

अबके म्हारे गले लगोछे जो सायबां

राम करे सोइ होना ॥

सोरठ—धीमा तिताला

हो राजा हेलो देतो लाजो भालो दियो हु न जाय।

गोरी गोरी बहियां चुरला विराजे सायबां

चुरलारो कोल म्हांरे चुभ चुभ जाय ॥

सोरठ—तिताला

सुवा चल बागन कों रस लीजे।

जीवन कृष्ण राम अमृत फल

श्रवणन भर भर पीजे ॥

को तेरो पुत्र पिता तू काको व्रथा मोह क्यों कीजे।

काल कराल करनको भच्छन विषे वासना छोजे ॥

सोवत जागत विहरत निशदिन राधाकृष्ण कहीजे।

सूरदास सेवर कों तजके हरिचरणन चित दीजे ॥

सोरठ

नहिं अस जन्म वारंवार ॥

पुरबलों धों पुन्य प्रगव्यो पायो मनुष्य औतार ॥

घटे पल पल बढ़े छिन छिन जात न लागे बार।

धरन पत्ता गिर परे ते फिर न लागे डार ॥

भवसागर जमलोक दरसे निकट अँधेरो डार।

सूर हरिकों भजन कर कर उतर पैले पार ॥

प्रभु मैं पीछो लियो है तुमारो ॥

तुम तो दीनदयाल कहावत सकल आपदा टारो ॥

महाकुटिल कुबुध अपराधो औगुण भरि लियो भारो।

सूर कूर को याहो विनतो ले चरननमें डारो ॥

प्रभु तुम मोसों पतित उबारो !

अब आयो हों शरण तुमारो जो जानों त्यों तारो ॥

तीनो पनमें भक्ति न कीनो काजर हूंते कारो ॥

हों पतित तुम पतित पावन अपनो ओर निहारो।

गोध व्याध गज गणिका तारो गए ले ले नाम तुमारो ॥

सूर कूर को या हो विनतो ले भक्तनमें डारो।

देश—सोरठ

लागि थाँनि रमक रँगोलो महाराज

थाँनै मोह्यो नंदकुमार ॥

चंद्रवदनी मृगलोचनी श्यामा वरसाने को नार ॥

सोरठ

चूड़ा रंग लाग रह्यो छे म्हारे आलोजा हो राज।

आप रंगोला थारी सेज रंगोलो रंगरंगोला साइबांजी

कांई ओर रँगोलो थारो रात ॥

२

सलूणो धणरा साहवां हों राज।

घट घट जोवे थांनि कामनी जो

कांई फोजोंरा सिरदार ॥

अटक उत कर आवसो कांई

मृगनैणी जो रो प्राण अधार ॥

३

घोड़ला कांईजी पलांणो म्हारो राज

म्हारो शिख मांणो हो राज ॥

एक लख देशां वारो दोय लख देशां

थांरा घोड़लारो बाग पकर खड़ेस्यां ॥

४

रूड़ो गोवलरा हो धजदार लोय थणोयाला।

कैलासवासो आनंद निवासो मोह्यो शिव सरदार ॥

५

नदिया गहेरो भई पिया बोलई पार।

हाँरे हाँरे वोर खेवटियारे वेगो ने आवो नेवरियारे ॥

६

सुरत लागलो मोरोरे पिउ तुमहो और आव

गरवा लाग मिले ॥

ए सदारङ्गोले मह्मद सा पियरवा नेक चल मंदर
मो ढिग बैठो सो सुख पावै
हित अनहित् देख जले ॥

७

काहेकूं प्रीत लगाई रे दैया।
प्रीत लगाकर बहुत दुख दोनों
यामे कोंन बड़ाई रे दैया ॥

सोरठ—झङ्गला

भाल्लो राज छेजी उमगो जोवणछे ।
पलँग बिछावो म्हारो हैलो ने बुलावो
दाव्हडारो बातें कांई उणहो जगावो राज
अपणी उमगसे जैसे मै जागो वैसे उण हौ जगावो ॥

सोरठ

राज बहादुरां कांई जाणे राज कैक पीरछे राज
कैफ पीवेछे बाज मतवारोछे राज।
सीस लटपटो पाग सोहै अदा रंग
कर सोहै मदरो प्यालो छे राज ॥

२

सेहो गल चंगो वे जेहड़ो वे मौला भाँवदो वे।
चुचक दे खर घणियाँ निधियां होर राझेनाल मंगो ॥

सोरठ-देश—तिताला

सांवलिया बिलमायोरो मेरे घर नहीं आयो।
अवर सखिन सों रसको बतियां
हमसे नजर छिपायो मेरे घर० ॥

२

म्हारो सई है भालो बालो लाजो।
पायल म्हारो रुणझुण बाजे नददल बैरन जागे ॥
सीस फेंटो अतहो लपेटों और केसरियो बागो ॥
रसिक बिहारीजीरो छब निरखत हो
लाज छाड़ चलो आगे म्हारो ॥

३

सुणी राखीछे मे तो म्हाण सरो बातें नाहन जाणूं
थांरो देश रा भांतण नाहन अरो ए।
बाट घाट मई रोकत टोकत गगरो डिग डिगवांदो
म्हांरो हों जाणतो तो लातो साथण ॥

सोरठ—तिताला

अरे मेरा भाता एरो ओ जा तू रह न सकत बावरे।
छतियां खेलण गइयां जांम रङ्ग लागा
ढोलन मेरा लावे नेह नवेल

सोरठ

थे तो कांई जानो बांका मारू राज।
विन देखे म्हांने कल न परे छे
थांसों लाग्यो म्हांरो काज ॥

२

थाँरे झमकड़े को राज माणे चावरे राज।
सात सखी मिल झूमर खेलन गइयां
कोइ गावे कोइ भावरे ॥
अपने पिया सङ्ग खेलन गइयाँ खेलन कांयह दावरे॥

३

म्हांरा मधवा मारू हो जो यह रोत चनवेको नाहींजो।
चार महोना थाँने चलन न देश्यां
लख्खो लख्खो बाँह पुकारोजो ॥

४

म्हांराजां म्हांरे नेड़े हो राजा आँवणा करा
कमल पदम जोरो आंण।
बारूरे दखणरो चाकरो विकट नरवदारो घाट ॥

५

वे केसरिया म्हांरो राज चूड़ो म्हांरो
रंग रंगा दे सायबां।
रंग गोरो रंग सांहरो जी म्हांणे पंथो म्हांणे
रंग रंगा दे राज चूड़ों म्हां० ॥

६

म्हांणे प्यारा लागोजो राज आलो जांपना हो म्हांणे।
रङ्ग भीना महाराज राजेसुर कुमर जी
कांई राज तुम प्रवोण प्रताप ॥

अपने को तेनू एसो बहुत घणे पछतांणा ।
दारूमें दरदिल बदा भोंहो पूछदो में देदते सयांणा ॥

८

म्हे को बे जाणां सांई धावे मैंकों ।
जम्ब वांदो घाटो ठंडा पानी
आणा वे आणा वे आणा वे आणा ॥
भांवो खांदो मीठा भातुला
ढेरन खांदो थोड़ा वे जम्बु वांदो ॥

९

वारा म्हारा गाढ़ा मारूड़ा हो
दोजे मोहि लहराँ लहरां ।
पार खड़ा मित्र रांझण
कूके दो सदियानी में सहराँ सहरां ॥

१०

तुसी वल चम्म भेदे चम्पयार भले डड़ी जब लड़ियां।
गुल अनार चोला वारो मेगू पौठे बंधा तनियां ॥

११

अरे तुम आ जारे अरे हो गउअनवारे ।
श्याम सुन्दर कृष्ण मुरारी मुख सों बांसरी बजायोरे
अरे तेरी भीजेगी कमरिया अरे हो० ॥

१२

बाइजी रो वीर हो मांणि कांई जाणें कब मिलसो ।
मोर मुकट कर लकुट विराजे चितवत तें म्हाँके तोर ॥
कहो पण्डित कब मिलन होसी जिया धरत ना धीर ।
रसिक विहारी जो थांने प्यारोजोरो
आँग आँग मिलो बलवीर ॥

१३

नैणारो सवादी गोरो थाँरे आंगण
ऊभो ऊभो सेण करे छे ।
मारे दिलरो थाँरे दिलरी कौन जाणे मनरङ्ग
म्हे कांई जाणां राजादो वे ॥

१४

बनाइ ठेहो आवे हो आवे हो राजीन्द्र है ।
अतरसरो तरो वारो पीत बढ़ावे ॥
सुणि कहे कै थांणें चांई एसो कपटो सङ्ग
सदा रङ्ग नैन सो मैन छिपावे ॥

१५

उमगो जोवण छे जो हो हो वालो राज छे जो ।
पलणा बंधावो म्हारो हैलोने बुलावो म्हांराज दारूड़ा
रोवत कहे होउने बीच खावो हो राज
अपनी उमगसे जैसे तुम जागी बैसे उनेबो जगावो ॥

१६

थाँरे तो नैनामें हों अलसांन घणी छे
पिया देख रहे चिवुक उठाय ।
बिथुरो अलक सिथल भइ पलकां भोंहे बांक तणीछे॥
घुल रहो नींद नैन अत लालो काजर रेख बणीछे ॥
रसिक विहारो प्यारो जो रो चितवन
मिल रहो अणी सों अणीछे ॥

१७

ज्यांणा ज्यांणा हों लोभो थांरा छल छन्दपना ।
नैन निवाय देखाय छल बल
दासी सों थांरा मकर घना ॥
याँ बातां थांने कौन पतीजे सायबां
थे तो बोलो झूठ घना ।
रसिकविहारी थे नाम कहावो
सोभा पावो याँ लछना ॥

१८

नैनां सेतो बोन्धो है विहार जोने आलो ।
घायल ज्यों विररावत राधे
घड़ी तोहे विना नहीं ठालो ॥
नैन सैन कुछ टोना कर कर चाल चलत मतवालो ॥
सब दुख मेट भेंट व्रजनिधकों छाड़ कपट चिरतालो ॥

१९

लाड़ीजीरी खोजनमें मुरड घनो छे
हो कंड़ी ठाढ़े उरडमे ।
नेमगा गाड़ो आड़ो छब वाढ़ो राज नहो कहुं कंड़ो ॥

भीणा पटरे घूंघटमा हाँ कर चमके कङ्कण चुड़ो।
या सोभा किणरी व्रजनिधजी
बात बनावो कांई अत अल जुड़ो॥

२०

क्यांजो मरजो रो गरजो गिरधारी
ते क्यों राख्या जी तोर।
पहले तो हित कर अपनायो
चाहिजे अब निबाहण ओर॥
बांका विहारी व्रजनिधने देखो ऊभा छे कर जोर॥

२१

राधे गुन्हा किया सब माफ करो।
कर जोरे ठाढ़ो हूं सनमुख
अवगुण मेरो चित न धरो॥
निशदिन ध्यान रहत चरणनकां
मूरत माधुरी हियरे धरो।
अब तो लाज स्वामिनी मेरी व्रजनिध मेरी ओर ढरो।

२२

म्हारो मन मोह्योजी बैन बजाय।
सुनत कानको पोर उठत है निशदिन कछु न सुहाय॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा तलफत जिय अकुलाय॥
मेरो कह्यो तू मान सखीरी व्रजनिध बेग बुलाय॥

सोरठ-देश—तिताला

एरी सखी बावरी क्योंरी भई।
वा कपटी लपटी सों झपटी रपटी सङ्ग गई॥
जानत नहीं साथन बातन घातन वाको घई।

२

हांजी मे तो कांई जाणां के राज थारो नगरीरो बाट।
भूला भूला फिरां के या जगरे माह
थारो नाम जपाकां मुख पाठ॥
हांजी म्हारा अपनो मौज सों पूरन कर दे थाट॥

३

या दिन मङ्गल रो आयो आयोछे राज।
आयोछे आयोछे म्हारा साथीड़ा है आज॥

१६२

हांजी मैं तो घणाघण केल करेस्यां
म्हारो राज आयो म्हारा मणमा के काज॥

४

छोराज थे तो म्हारा लारां लग्या आवो राज।
चांदनियामें सैन चलावो हो राज॥
इतनो अरज म्हारो अनबलिया अनखिला साजन
म्हारा जोव थांको चाहे हो राज॥

सोरठ

छिन्दगारो धन मारुडाने मोह लियो नखरालो है।
कांई जाणा मारुड़ा मोह लियो मृगानैणो जी है॥
ना में थारे घर गई जो सायबां ना में लियोछे बुलाय।
अमलनांरो रातो मातो म्हारे डेरे आइलो
आयोछे रूप लोभाय॥
म्हारी है वैरण आधा आधो बांट लियो
छन्दगारो कामन।
मारो कठड़द लरोरा हीरा पना
ए सोतन आधो आधो बांट लियो॥

सोरठ—तिताला

सजन घर आवोजी मीठा बोलो।
थारे कारण सब जग छांड्यो सायबां
छांड्योछे तिलक तंबोलो॥

सोरठ

सादो महजादा जी म्हांरो बनो राज।
इकटक अँखियां निरखत मग जित तित
सागर लाग्या जहाज म्हारो बनो राज॥

सोरठ—धामा

माणोजा माणोजा जिन्द यार बे
तेड़े मुखड़ेदो माणू भांदो बहार।
मौला तेंड़ा नितहो रखसी लाज
तू ता जाणदा महबूबांदो सार॥

२

दारुड़ोरो चाल हो सायबां लाड़ो जोने हो हो जो
सायबां प्यारोजीने हों म्हारे मन्दरो ये हो।

राजीन्द्र बकस उठ कलालण
घण वकसे खग वालो लाड़ीजी ॥
२
ठाढ़ो लो द्वारवा मइरे बोलावे
सैनन दे मइरे बोलावे ए हां मा।
जौलों नहीं देखों तोलों चैन नहीं मोहे आवै
रातरो यां लुक आवै ॥
सोरठ—जंगला
सलुड़ा मेरे मुसकावै जोबन मातो छेजो सा०।
उमग जोबन कहो रावल देशां
सासु ननद मोरी आन सतावै ॥
२
हाँजो म्हारे राजाजी सो कहियो
हो जी महलाँ सों डेरा नेडा करे।
भीजे म्हारी तंबूरो डोरो हाँजो
असमानी रङ्गरो वदरो झरे ॥
सोरठ
चढ़ आए बोले दई मोर हरे रूखकी ओर।
मैंने जानो रित पावस को हाफिज
आयो सावन घनघोर ॥
२
मांझलो रात पपीहानें जगाई हो।
एक तो पपीहा पीउ पीउ बोले
विरहाने आन सताई हो ॥
कृष्णरसिक विन तलफत कामिन
मनसिज मद बौराई हो ॥
३
हैलो ठाड़ो यमुनातीर सुन्दर श्याम शरीर।
मोर मुकुट कर लकुट विराजे
चितवत तिरछो चितवन आलो
मुरली वजावे बलवीर ॥
४
मद छकिया बालम छोजो म्हांरा मोती दे वालो।
अलवट हेरो सलवट हेरो
मोतीरा चोरपना जी छोजो ॥
सोरठ—जंगला
हों तोरे सङ्ग कैसेके जाय हों प्यारे मोरे
चरचा करेंगे यह चबाउ लोग नगरके।
अब तुम जावो आपन मन्दर कछू न जीय धरो हो
चन्द्र छिपे आय अङ्क भर लेऊंगो पायन परके ॥
२
पीतम नैणोरो कटारो हो राज।
हतियन राज सम्भालो हो कलेजे म्हांणे ॥
महम्मद सा पिया हमारे डेरे आइलो
थे तो म्हारो लाज संवारो हो राज कड़ेजे ॥
बालम राज गाढ़ो रङ्ग माने छे ॥
ढूलो पूत पठानरा राज मुड़े अवज कमानो सैला राज
तू सुणरे म्हारा वारीके भँवरा रैन घनरो रङ्ग मानेछे ॥
सोरठ—धीमा
सजन सुध ज्यों जानो त्यों लीजे।
प्रेमको गत प्रेमही जाने नित नित जोबन छीजे ॥
सोरठ
बिकाने मत जाजो होराज
थाने वरजेछे घररी नार हो राजोंदा राज।
सोनेदी बतक जरावदा प्याला
मुने प्याजो हे बखत सिंघ राज ॥
२
मारूजी मै नहीं आंवणाछे हो हो हो राज।
थे मारे डेरे आइलो सायवां हो हो हो हो हो हो राज ॥
ऊंची माड़ो लाल झरोका रङ्ग से रङ्ग बतला
थे मारे डेरे आइलो सायबांहो ॥
३
थारो जोबण बाला हो मृगानेनी थारो।
सीसफूल जरावदा कङ्गना
गलां सोहै मोतीमाला हो० ॥

४

रसिया मारूजी मैं ना बोलूं ना बोलूं केसरिया ।
पिछली पोत मोरे अगमन जानो
अंगिया बन्ध ना खोलूं ॥

५

तूं जात मइ श्रोर कहियोरे पतंगवा बोरा पतंगवा ।
बहे रोय रोय दोऊ नैण हमारे
लाग रहे दिन थारा म्हारे वोरा ॥

माणो सुख माणो राज महल पधारो म्हारो राज ।
जभी जभी लाड़ी थासों अरज करेशां महाराज ॥
इतनी अरज म्हारी माण ले सायबां
लगी हठ माणो जो राजा राणी राजा महल
पधारो मारो ॥

सोरठ—तिताला

मतवालो म्हारो अनवट ले गयो ।
ले गयो तो ले जान न देशां
कांई सालुड़ा में सनवट दे गयो ॥

सोरठ

मेरा कहा मानो सायबां माझलो रात ।
चांदनी रात छिटक रहै तारे
कोठे पलंग बिछावो सायबां ॥

२

कहीं मोरवा बोलन लागेरी या मधुवनको ओर ।
इतना सन्देशा मोरा पिया सन कहियो
तुम चंदा हम चकोर ॥

३

कोठे थे विलम्यां छोजो राजा म्हारे बून्दी वाला ।
बांकोइ घोड़ा थांरो बांकोइ जोड़ा
बांकोइ कमर कटारो छैजो० ॥

४

लाल चिरिया रङ्ग दे न मेरा अच्छा रङ्ग देनी ।
साल मेरा लाल चिड़ोई दो मोती एक नाल ॥

५

गुमानीड़ा मैं कैसे आऊं राज ।
रुनुझुन रुनझुन पायल मोरो बाजे
सास ननदरो लाज गुमानीड़ा० ॥

६

ननदल जागे म्हांरो है कैसे आऊं राज थारे महल ।
धीरज धरो मोपे बन नहीं आवे मन हो मनमें टहल ॥

७

गारलरो तिहार है सजनो चलोने यमुनाजीरा तीर
पूजन कारन ढरस्यां ।
गणगोरांरो दिवस सोहामनो रसिकविहारोजीने
भुज भर लेस्यां रङ्गोलो कुञ्जांमे रङ्ग करस्यां ॥

८

सहेली आलीजारो छब म्हाने भावे छे
निरख नैन सुख पावे छे ।
रंग रमावे छे मुरलो बजावे छे
रहस रहस रङ्ग जमावे छे ॥
कूरम कुलमें भान उदे भयो जारे जग जश गावे छे ।
रंगभोना महाराज जगतसिंह
म्हारे महलां आवे छे ॥
सवाई प्रताप कुलमें भाण ध्रुव ज्यों
अटल रह्यो आछो पोत निवावे छे ॥

९

आई सावन तीज सहेलो म्हारो ।
रिमझम रिमझम मेहा वरषे सरस चमके वीज ॥
डूंगरिया हरियाला भया जो कांई
बोले पपोहा पोउ पोउ भोज ।
घोड़ला चढ़ कांई सहल करे छे प्रतापसिंह प्रभु रोझ ॥

१०

नैना तो गुलाबो हो लायण क्यों जो राज किण ठगिया ।
रातामाता अँखिया रतनारो चितवन में रस पगिया ॥

११

रसिकविहारोजीने फेर परणास्यां ।
कुवरो किशोरो रसिक अलबेलो
रहस रहस गुण गास्यां ॥

ब्रजनिध मङ्गल गास्यां बाजे बजास्यां
उमग उमग हुलसास्यां ।
ब्रजनिध जीरी यह छब निरखके
हरष हरष हरषास्यां ॥

१२

लागोरी नैन अनोखो नेह ।
उलटी बात सुनोरी सजनी
नीर बहत अँखियन यह देह ।
खांन पान हो सब विसरोरी
पलक न लगत सुहात न गेह ॥
ब्रजनिध रूप माधुरी निरखत बार बार छब एह ।

१३

नैना तो सलोने हो जो थारे क्यों जी राज ।
मैं तो थारी दासी जनम जनम की थे म्हारा शिरताज ॥

१४

थाँरो राजाराणी लटका बनो ।
आछो लागे हो सायबां सालुडा
झटकावण आछो लागे हो ॥
हाँ राज म्हांने कची नींद जगाई ।
पोढ़न दे जित मन रंग रसिया कांई थारे मनमें आई ॥

१५

थकी रूट माणो सायबां मांझली रात ।
घोड़ला तो दीजो सायबां निपट निदान वे
डेरा तो कीजो सायबां चवल पार
छोटो लाड़ो अरज करेगां जियो महाराज ॥

सोरठ—तिताला

मारू मारो गाढ़ो है हो राज मारू म्हांरो ।
आंगन मारे केवड़ोजो कोई फूलोजी
गुलाबी नाजुक पोंचो पकर डर होके
सायबां अरज करे छे पिया प्यारी
घूंघटड़ो जोर खड़ेग्रेजी राता ॥
उमगो जोबन ए घनो खेबटियो बटपार ।
पाखर भीजे तंबू चुवे कांई बोलोरे असवार ॥

सोरठ

* ए सुन सइयो कामण म्हे कियो हो राज ।
म्हारा साजादा बनरा कांईजी
म्हारो लारंड़ लागोही आवे का० ॥
कामन करबन हम चली जो सायबाँ
देवराने पकरो बाँह जादू म्हे कियो हो राज का० ।
धुर भादोंकी रैन अंधेरी रिमझम रिमझिम फरी
पयलड़ी ठुमक मैं फरी बिछुवा झनके
म्हे फिरी हाँ जो म्हारा राजों दवनारा कामण ॥

देश-सोरठ

आली कहीं वरज्यो है वरज्यो मद पिवो बादरो ।
गरजो है मा गरजो चपल सैनन दे
मारे डेरे आए गोकरङ्ग म्हारा जिया लरज्यो है मा० ॥

२

ए तो पिया प्राण मारे ए नेसा लगे
ए तो टोना दुरावन नैणा लगे ।
सायबां म्हारे दिलादीं सुरजन सांई चितमें पगे ॥

सोरठ

एरे जोगो बावरे थे म्हारो गलो आवरे ।
भादोंकी रैन डरावनी लागे
मुझ विरहनकों जिवावरे ॥

२

हां जो थाने म्हारा सों छे घूंघटरा जिन खोलो ।
उभी उभी मृगानैणी अरज करेसां
धीरे धीरे मोसें बोलो ॥

३

तुम पर अली महाबली जी को सहाय रहे ।
बनरा बनरी मौज करो जी सायबाँ
ए पूरण होय मोरे मनके काज ॥

४

नैणां मोहीरे पियाके नैणां मोहीरे ।
बांकोइ तेरो कमर कटारो कांई
ठमक चाल पर वारी पि० ॥

आकरङ्ग पियाकी आंख लगी है
आंख लगायके मैं सोई।
तोरे नैणां मोहे नीके लागत है अब लागी सुख दैन
अटक भटक सब मिट गई आनन्द है दिन रैन पि० ॥

५

लाया हो नेणो सांग विरहदी।
सोनेदे पीर गुजरदी नेहा
दिलदी डरियां सांन लगी रंहदी सांग ॥

६

याद नालवे दिलदार नाल सोणा हां तां सोणा पैना
सोना गल सोनैदा सोणा
आमकांन तलवदो दिलदार नाल सोणा ॥

७

दरद न जाणदा वा मैंड़ा मांइयां।
ख्वारी बी लाई वारी बे लाय न जानो
मेरा मियां पाक मह्वोबत तेरियां ॥

८

नित दौगां तू दरद न जान हां यार यार यार।
असी आए तांडे वेखन कारण
इतनी अरज मारी मान ॥

९

म्हारे महँला आइया हमलांरा राता माता म्हारे
आयो हो राज कंवर।
पाग कसंभो थारे साथीड़ा बे सोहै
मदछकी वातां आण सुणाजो दरुरोयो छके ॥

१०

ए तो कामन वारने उभी छे हो हो
राजाजो थांरे थांरे कारनें।
सावनियाँ केसरियाँ मागे लाल रङ्ग
अवल छको जो सौतनियाके द्वारनें ॥

११

मोतीड़ा चुभ छे धीरा राज बोलो बोलो है राज कुमरजी।
इतनी विनती म्हांरो मान लोजे प्रताप सिंह
थें तो दिलांकी घुंडी म्हांसो खोलो ॥

१२

आवो भीनो सेझ हमारो आवो क्यों न राज।
कांई गुना मोसें रुठडा सायबां आवो क्यों न अरज
करे थांरे पइयां परत हूं सुभ रङ्ग डारे फुलनन हरवा ॥

१३

नींद नहीं आवे छे क्यां छैला मोहे नींद विहाने।
आवन कहे गए अजहूं नहीं आए
किन सौतन विरमाए ॥

१४

हियरा मोरा रुंधा हो आवेरे।
जिनके पिया परदेश गवन कीनो
उन विन कछु न सुहावेरे ॥
सुधबुध विसर गई तन मनकी
विरहा विकल भई जाय सुनावेरे ॥
ब्रजनिध पतके किसन सांवरे
सजनी मोहन आन मिलावेरे ॥

१५

मेरा मन मोह्यो बे रावल जोगिया।
कान कुण्डल गल सेलो सोहै सुध बुध मोरी सब खोयोबे० ॥

१६

झुलनिया तेरो जोर बनो नैहरके सुघर सोनार।
आट खाटकी नैयर बनी है मौला हो लगावे पार ॥

१७

हाँ वे छैला मार गया विरह कटारोरे।
लोभी नेक कहा नहीं माने वरजत वरजत हारोरे ॥

१८

भला इन सांवारेने मेरो मन हर लीनो।
बांसरी बजाए मोहे टेर सुनाए
चातुर सुघर सुन्दर रसभीनो ॥
तिरछी चितवन मन पर बस रही
ना जानूं कछु टोना कीनो।
नजर अधीन अत रस भरी मूरत
तन मन धन बलिहारी कीनो ॥

१९

असो भला तारदा वो यार

नैड़ी रूड़ी रूड़ी नजरां प्यारदी ।

अजीजदीन गमभ्भां तेरो तीखो

अखियाँ अकल खोंदो हुशियारदी ॥

२०

बिछुर दुख दीनो लाल प्राणआधार

आकर दरस दे मोंहि ।

आवन कह गए अजहूं न आए

जित ठौर कुतके ठौरको भई योंहि ॥

२१

रसिया काईं न करो सायबांजो म्हारो कांई गुना

मोंसे रूशो हो जी केसरिया राज ।

मे तो थारो दासी सायबां जनम जनमरी

मे तो थारोदासो थे म्हारे मन बसिया ॥

२२

मारू म्हारे वालो है राज ।

बागों बागों केवड़ाजो कांई सायबां ऊपर फूल गुलाबो

नाजक पोंचा पकर लियोजो कांई अरज करे पिया

प्यारी घूंघटडो जोर करे थे म्हारा सिरताज ॥

२३

हो महाराजा जोसे कहियोजो

जे म्हारा तंबू वारो लाल किनात ।

हो रेशमदी डोरी रङ्ग चुबे छै महाराज ॥

२४

चुनोटा टेढ़ो छे जोके गाढ़ा मारू छे जो ।

अलगर अलगर यों वहे जो खाँड़े कोसो धार ।

देख बिगानी गोदनो कांईं औघट पड्यो गंवार ॥

सोरठ—चौताला

थोड़ा दीजो राज राज म्हांणे

पीवें न पिवावे म्हांणे दारूड़ी ।

ना में थारे घर गई है ना मे लियो छे बुलाय ।

मदको मातो म्हारे आवसोजी सायबां

आंवण भोखा खाय ॥

सोरठ

रङ्ग बरसे छे सायबां रङ्ग छे हो रङ्ग छे

थारो मुखड़ो ने रङ्ग छे थारो बातड़ियांने रङ्ग छे ॥

आप बनों मतवालो सायबां मूने कहे कोन ढङ्ग छे ॥

जे तू म्हांसे चतुराई लाई मे वो करां उमंग छे ।

सोरठ—धीमा

अलबेलो म्हांरो राज थांपे रङ्ग छे मैं तो माहो ।

माथे तिलक भाग थारे सोहे बांके नैन सरोहो ॥

मेरे दिलमें बस गयो रङ्गरस धूम परो है नगरमे ॥

आवनको जलदो कीजिये नहीं तो

सौतन करेंगो हंस हंस हंस ॥

सोरठ

स्यामो सांवलियो ओवे हो राज

अब न करेस्यां सायबां ।

आवन करेस्यां सायबां आवणा हो राज सांवलिया

म्हारो राज करेस्यां सायबां थे म्हारे सिरताज ॥

२

मानो म्हारो बात सायबां कांई अहेस्यां ।

थे तो म्हारो पीत पहचानो

मे पावण लागी ए महाराज कांई कहेस्यां ॥

ऊभी राणीजो थानों बरज रहो

मारूजी थे म्हारो सिरताज ॥

३

ननदल जोरा वीरा काह्न कैसे समभावो

देस्यां थाने ओलंबो ।

पगड़े कोठे विलंम्या अलवा रह्या हालोजो हालोजो

काईं हेला देस्यां राज जाणों थाको वालंबो ॥

४

हो जो रसिया राज म्हांरा म्हाने आंगन सेन बुलावे ।

कैसे आऊं ढिग उनरे म्हारो ननदल जागे ॥

रुनक भुनक म्हारा बिछुवा बाजे हातरो चुरो खड़के

महलां जाकर सेज बिछाऊं महरबांन म्हारा बसिया ॥

५

हेलो रसिया राज म्हाने ऊभो आगण सेन बुलावे ।

मै कैसे आऊं मेरो सास ननदिया और जेठनिया जागै॥
रुनक झुनक मोरो पायल बाजै हातदो चूड़ो खनके
महलां चढ़ मै सेज संवारो मेहरबान मन बसिया॥

६

पानीडा जावे छे बलमारे आंगन बावरो खोदाव।
पानोड़ा जाऊं बलमारे आंगण बावरो खोंदाव।
पानोड़ा जाऊं ता म्हारो चूनर भोजे
छोटो लाड़ी जोने वेग बोलाव॥

सोरठ—चौताला

म्हासो म्हारा बालम रिमया राज।
गातां महल लगे आरो से दरश्यां नैणया राज॥

२

लोयण रा हो लोभी राज साहिबां
थे तो झूठो झूठो सोंह करे छे राज।
बातडलो न मानस्यां झुकन लजाणछे॥

३

म्हारो राज आज मारूजी म्हारे पावना डेहलो रङ्गरास
चतुरकारो इलमार रोझ सों
मौज महलां महलां दरसे।

सोरठ

सांवराजी हो राज चूड़े रङ्ग लाग रह्यो छे
लाग रह्यो छे व्रजराज चूड़े।
रङ्ग चूड़ो रङ्ग चूनड़ोजी कांई रंगीलो साज रङ्ग
वृन्दावन कुञ्जलताजो कांई सहस गो प्यारा सिरताज
चूड़ो रङ्ग लाग रह्यो॥
रङ्ग छे थारो बांसरलोजो कांई रङ्ग छे सबहो समाज।
मीरा गिरिधर रङ्ग रङ्गो छे बांह गहेको लाज॥
प्यारो थारो नैननडो मन
रञ्जन खञ्जन मीन मृग मोह्या छे।
मनमथ गञ्जन भञ्जन दुखड़ो
मुखडो मन मोहन सोह्या जोया छे॥

सोरठ—चौताला

प्यारी तेरे नैना मोहन मन रञ्जन खञ्जन गञ्जन
बिना हो अञ्जन सोभा सरस देत।
रूप उजारे अनियारे ठरारे गुनवारे भारे जोबन
मतवारे घूमघुमारे अरुण असित सेत॥
जबते निहारे मैं वारेरो मदन वान
मोन तुरत मृगज जलज समेत।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम प्यारे रसबस भए
तिहारे न्याय आपनपो हारे
वेद वानो वदत जाय नेत नेत॥

सोरठ

राधा प्यारो नाचत पियाके सङ्ग।
उरपति रपगति भेद बतावत गावत तान तरङ्ग॥
ललितादिक सखो ललित बजावत
वोन मृदङ्ग मुहुंचङ्ग॥
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम घन
बरसत नव नव रङ्ग॥

२

सब गुण भरो हो गोरो रूप राधा।
हावभाव कटाच्छन हँस हंस पिय मन करन समाधा॥
अङ्ग अङ्ग गति ललित सुभायन पाय चलत अगाधा।
जब बलिहार प्रोत मन मेरो गई विरहको बाधा॥

सोरठ—चौताला

निरगुण निरञ्जन निराकार
करतार गोचर सो देखियत।
सबहो गुणन में समाय रह्यो वाहो बात
काठमें ज्यूं तास पास फूलनमें विसेखियत॥
छोरमें जो घ्रत वीजमें तरवर साई जगत जगदोश
जग पेखियत।
वाहोको जगत जोत नैननके तारनमें
तारनमें ससिमें सूरजमें देखियत॥

सोरठ

ए पिया मैं वारो जाऊं ए वारो जाऊं।
इतनी अरज मारो मानलो महाराज
म्हांको जिन्दड़ो करेस्यां बलहारो॥

लाड़ी जीरे सींधे भीने बाल।
अकत कथा एक देख सखीरो
फन्द गयो मन रिझवार॥
३
आली कही वरजो है वरजी मद पिवो बादरा
काँई गरजो ए मा गरजो।
चपल चञ्चल म्हांरे डेरे आइलो
ओकरङ्ग म्हांरा जियरा लरजो॥
४
लाड़ी थारा जीवे हो बनरा राजाजी
थाणे चाहे हो राज।
एक लख देशां थाने महल पधारो सायबां दूजे लगच्छ
देशांनो खोलो हो घूंघटरा ए म्हाराजा
लाड़ी खोलो हो घूंघटड़ा॥
५
जोबन झिल रह्यो नहीं जाय।
सइयां बिन न हाय म्हांरे महलां आवो
हमलारां राता माता म्हांरे आयो है राज कुंवरजो।
पाग कुसुंभो थारे साथिडाने सोहै
मदछकी बातां आण सुनावो दारुरीयो छको॥
६
ए तो कामनवारणे जभी छे हो हो राजा
थारे थारे कारने।
सांवनिया केसरिया म्हांने लाल रंगा दे
अवल छकोजी सौतनिके वारणे॥
७
मोतिड़ा चुभे छे धीरा राज बोलो है राजकुंवर मो०
इतनो विनती म्हांरो मान ले प्रतापसिंह
थारो तो दिलांदो घुंडो म्हांसे खोलो॥
आवो जानी सेज हमारो आवो क्यों न राज॥
८
काँई गुनासे मोसे रूठा सायबां।
अरज करे थारे पइयाँ परतङ्ग
सुभरङ्ग डारो फुलवन हरवा॥

लारां लागोई आवे छे ननदल थारो वीरो
म्हांसों पिछली प्रीत जतावे छे।
एसो कपटी ढीठ ननदल थारो वोरो
सब मीला लाज लजावे छे॥
१०
लैली मजनूं वे इश्कदे रंग रंगे।
लैली मजनूं मजनूं लैलो वे एकहो रङ्ग पगे॥
लैली मजनूं एकहो इश्क में चकनाचूर
इश्क सागरमें पड़ा सिर में डारके धूर।
मुलतान सहर छोड़ यों एकदम आया लैली पास
जात पठान मजनूं चला कोस दोय सो पचास॥
पाय सङ्ग बोसीदन॥
११
मेरो वाणीमें बनवारो बसो
एक मुख करि गुणिन गसो।
असद अलाप अलापो न होई
मोसलताई तज नीके कसो॥
मुरली मुरसो समोद लोजिये
जो गावे राधिका सुर रमजसो॥
आनन्द घन हित सरसो बरसो
सोई कहत हो कहाँ धो हसो॥
१२
मोहन मित्र मिलाय।
सांवलिया पत लियो सुन्दर उन बिन रह्यो न जाय।
पिय रसियो अत बसियो राखो कण्ठ लगाय॥
नागरो दास छैल रस बागो जागो तो रैन विहाय॥
१३
तुम बोलोजी बोलो तुम बोलो
कपट न राखो जियरा खोलो।
नैन तराजू नाल हियरा
ओक रङ्ग तुम सोच सोच तोलो॥

१४

आयो ह थांना मारू पावणा लङ्करवा लश्कर लायो है
दिलिया नगरवारो सुन वे शोकरङ्ग
थारे दो नैनाने वाने मारो है ॥

१५

मै थांसे न बोलूं राज थे तो म्हांरी
अंगुरी पकरत ऐंचत बांहीं ।
थे गूजरवाको छोहरा शोकरङ्ग मैं व्रजको बामणी
थांसे हंसकर घूंघट न खोलूं ॥

१६

हिंडोलना मैं काईं झूलां राज ।
अगर चन्दनके खम्भ घड़ातो मलयागिरका पटाव ।
रेशम डोर पवन पुरवैया और घटा सावनकी आज ॥

१७

कवन घरी लागो नेह तुम सो जानो ।
वो घरी कौन सो थो नेह हमें जानो थो हाफिज
लगन लगी ध्यान न आवे पोतमें होतो जान जानो ॥

सोरठ—तिताला

बातड़ी थांको राज रे मै काईं गुण मानां ।
अमल छके आए घरसों रे पौत करो तो
कसम साहबकी रङ्गभीने छैला नीमानां ॥

२

मारे डेरे हो सायबांजो छको दारुड़ो ।
सोतनके ढिग कैसेके जाऊं
रसिया नेहा दिल मतवालड़ो ॥

३

क्या सोवे उठ जाग रे भोला परदेशो क्या सोवे ॥
एसो करो पाछे हंसी न होवे
अन्त न लागी तोहे दाग रे भोला० ।

४

बाटड़ी जोई सावन आया पो नहीं आए बाहरसे ।
फूले फुलवा वन घन लता द्रुम
छावनो छाई विरहा झरसे ॥

५

हां वे वो बांखेड़ांदो पवन सोहावणो ।
ऊंचानी डूंगर मोरला बोले
ननियांदो रमल मोहो भावनो ॥

६

हाँ वे लारों लागो हो आवे हो राजोन्द्र थाँरा वोरा
म्हांसे पिछलो पोत जतावे ।
आवन करेस्यां म्हांरे एसो कपटो
सदारङ्ग नैनासे सेन जतावे ॥

७

ढोलो नथ ढलके माड़ड़ो मलके गोरी जोरे हो मुखपर
झीना पट घुंघटडारे मांहो
नथनोरो झलको हो:जो भलके ॥
पगे लागस्याँ झांझण झणके मोतियनरी लरां लरके ।
नरवर कोट गढ़ अङ्गसमाहो
अलकांरो पलकां हलके ॥

८

काँई छे विरसासी सेलो वाले थारी बांसरी
मनभर आशा मारे बहको जात है साँसरी ।
दारुड़ो छकाँई माणे ढोठ लङ्गर बाँहो पकर
म्हांरो छीन लियो छें हाँसरी ॥
बाँहन गहै लो म्हारो गाढ़ो गाढ़ो
सोकरंग थारे नेहाँसरी ॥

९

छैल छबोलो छैल चिकनिया गोरी रूप लुभायो छे जो।
तुम चटकन मटकन पर रिझवत
बाँह पकर अपनायो छे जो ॥

१०

चतुर बनोने बनरा रिझायो है
घणो हो रिझायो हो सोनेरे बाजूबन्दवालो ।
झाँझन ऊपर हो जो पैजणो म्हांरे सालुड़ा ऊपर चोर ॥
नथुड़ी ऊपर मोती सांयवा.
म्हांरो सगो ननदोजोरा वोर ॥

११

तैंने मोह्यो वे रावल जोगिड़ा ।
रूड़ो रूड़ो वीन बजावै उमंगसे
सुधबुध मेरी खोई वे रावल जो० ॥

१२

मेरा मन हर लोनो तुम जादूगर चित चोर ।
हम जो कहत तुम मानत नाहीं जैसे चन्द चकोर

१३

बाज रह्यो छे थाल महलमें ।
उमगी पीत करत है रङ्गरस रो सहलमें ॥

१४

होजी म्हाने छोटी लाड़ी काहेकूं बतलावे
राज राज सैनरा हो ।
हों समझायो समझत नाहीं
एसोरी ढोट सवाई राजा बैनरा हो ॥

१५

साँवलड़े पिया क्यों करदा बेचैन ।
तांड़ो जुदाई नाल सुन वे आसक्त दिल
झांके लेदो दिन रैन ॥

१६

बालो कहीं वरज्यो है वरजो
म्हांरो सुन्दर सांवरा गरजो ।
बैन बजाय वस कर लीनो सुन्दर मूरत हरजो ॥

१७

हाँ वे मियाँ मांड़ो गला सुनदा नाहीं
हुणको कोती तकसीर तेंड़ो ।
राव राज बहादुर कर आर अदारङ्ग
नाल तो रहे हुरमत मेंड़ी ॥

१८

अब तो म्हांरे कौन जगावे छे जो राज
बालो भजो नोदड़ियां मतवाल्लो सायबाँ ।
ऊभ छे झरोखे रानो बाट तकेदो
कब घर आवे शुभरङ्ग रे सा० ॥

१९

थाँपर वारो म्हांरो राज बालो है ।
ना में थारे साथ गइलो ना मैं लियो छे बुलाय ॥
अमलांरो राता मातो म्हारे डेरे आइलो
इस्क पङ्कुरेमें झालो है थाय ॥

सोरठ—जंगला

कुत्तेने म्हांरो देड़ सेर आटो खायो रे ।
मैं जो खड़ी थी बाहर आँगणमें
कुतका ले कर पाछे दौरो दुम पकरके धायो रे ॥

सोरठ

क्यों बताना थां गम हरम यार बिरहदो ।
दिलदो सांग बिरहदो चुप कीती शोरो
इसविध जांदो जान गर रहदो ॥

२

जानो निमाणा वे मेड़ा लोकांदो बंदिया
सहदे एक नेहादे कारण ।
आज जमया कोजे सुध लीजे म्हांरो इस विध
जांदो जान तेरो दोस्तो जियदो तारण ॥

३

म्हारा राज लाडला हो राज थाने खम्मा ।
ऊंचो अटारो चन्दन केवारो दिबलारो जोत सवाई ।
आया छो घे म्हांरे डेरे रसिया
झमाझमा हो राज खम्मा ॥

४

मान ले म्हारो अरज गुमानिड़ा थारां वेखणरा गरज ।
आज जमया कोजे सुध लीजे म्हांरो
आपणा वेखण अरज ॥

५

मारू जोने कहजो हां जो म्हारा राज मारूजोने
कहजो समझाय आसमानो डोरो
रङ्ग चुवे जी लाल डेरांको ।
ऊंचा थारा तो तम्बू जरद बनात
हो हो आसमानो डोरो रङ्ग ॥

लाल पागयांसो लागो नेह ।
एसो सुन्दर वर मोह मिलावे राखोंगो नैनमें एह ॥

७

कांई कांई कैसे हो राज अब मैं थांने ।
झूठो सोग न म्हासों खावो उन ही रे जावो आज ॥
नथरो झलकां मारूड़ो मलकां हंद हँस हा हा खाय ।
आगाने पधारो मधवा मारूल
राखस्यां हियरे लगाय अब मैं० ॥

८

खिल रहे सोधे भोने बार बार देखा छे निहार ।
देख सखी अलकनकी लटकन
मनड़ो भयोछे रिझवार ॥

६

हो जाय कहजो जी आलोजा थांने
सुखसो विहानी रातड़ी ।
बालम आवो म्हांको छाय पाय
हरषे पिय सुन मतवाली बातड़ी ।

सोरठ—तिताला

सायबां म्हांरो नोदड़लो रा बालम जाग हो जाग मा ।
सानेदो सुराई वारो सोनेदा प्याला
प्याजा अधिक छकाजो जो ॥

२

हांजी महाराणी जीरा महलां रङ्ग बरसे ।
देखो जवाई बेटीरा हित बित बारो चित सरसे ॥
अनुरागी या बातई नाहीं घरराइ रसायत परसे ॥

टप्पा सोरठ—तिताला

मारूड़ाने समझावो हे ननदल ओलम्भो मैं
देशां जीके देशां म्हांरे मारूड़ाने हो जो समझावो० ॥
दारूडारी बतक भरा दे सायबां
अचकको छब गयो हैं ॥

सोरठ

हो जी अमलांरा माता आवज्यो जो म्हांरो बालम राज
बांकोइ जोड़ा थांरो बांकोइ घोड़ा
बांकोइ कमर कटारो है ॥

पतियां ले जाइयो पियके देश पतंगवा ।
गले बीच सेलो कान बिच मुद्रा
कर रहो जोगणवारो भेश ॥

३

म्हांरो सुन प्यारोजो कौन कौन अंगना सराऊं ।
हों भौंहे मृगनैन खञ्जन लख नासा फिर दुराऊं ॥
दशन चमक चोपे चमकन वचन सुनत सुख पाऊं ।
कह न सकत कछु वदन चन्द्रकों मनमें सुरस बसाऊं ॥

४

म्हांरो चतुर सुघर सुन्दर सुरजनुवा
पीतको रीत न जानो ए अनमानो ए हो ।
पियाको पोत मारे जियामें बसत है बिन देखे नहीं
चैन सरस मत अरज करे महारानो आनो ए ॥

५

हो जी लटकंदड़ो मोतो रूड़ो है ।
रूड़ी सेज रूड़ी महारानी
अपनो उमंगसे रूड़ा सालुड़ानो रङ्ग चूड़ो है ।

६

हां जी थांने और ठौर अब बाधा ओगुण घालो
नांह सुने छे जोने पूरां ।
पाछलो पीतको रीत कहां गई एतना दाष करेशां ॥
पास बैठ कर दाष लगावे सायबां
हो जी मैं तो लाज मरेशां ॥

७

राज थे घणो मिजानन है तेरा मारूड़ा जभा बाट ।
रङ्गड़ो बात तें कहो नगणा छे
अपने धणावासों रार न कोजे ।
ए गोरो उमंगो पोतरो प्याला मधवा घणो छे ॥

८

थें तो म्हांने प्यारा लागा राज ।
बलि बलि जावां थारे सुखडारो छब पर
भलां हो पधरूया म्हांरे आज ॥
प्यारो रे रसबस बसिया रसिया सज केसरिया साज ।

धन धन जीवन अभिराम श्याम थें तो
रसिक गोबिन्द सिरताज ॥

सोरठ—तिताला

म्हाँजी थांरे महलांमें मन्दिलरा बाजे राज
नीके महूरत महारानी घर काज।
सब सखियन मिल देश्याँ असीस थांने गाढ़ो
श्रोकरङ्ग मारुजी हीरे मोतियनकी
सोस बिराजत ताज राज ॥

सोरठ

घोड़ला चढ़ियाला म्हांरो सुन्दर सरस नाल।
कमर कटारी थारी बांकड़ोजी सदारङ्ग
गुमानीड़ा काईं रूड़ी रूड़ी सैल करस्यां चाल ॥

२

म्हांरे गरे लागणा रसिया बालम।
अनरस जिन करो म्हांसो सदारङ्ग
अदारङ्ग रसीले रस पाग ॥

३

एरी लालसे किस गुन मिलन बनि गो एरी ला०।
जो तुम समझे अपने जियमें तुम राजा हम चेरी ॥
ननदीरा बीरा नैन लगे सो लगे।
इतनी अरज म्हांरी मान ले रङ्गरस
जितहु जगे सो पगे ॥

४

केसरिया मारू बाँह गहेकी लाज हो।
हो तो थांरे दावन लगी छे थे म्हांरा सिरताज ॥

५

सोतणकी सब सहँदे रहँदे हो तैंड़े कारनवा।
हमरो मुख ले अपनी नहीं कहँदे हो महर करो
अब सरस इश्क सो नैन रहंदे तैंड़े ऐंड़े बैंड़े ॥

६

थांरो गुण मानो छे म्हांरो राज।
कृपा करो जी म्हांरे महलां आए बांह गहेकी लाज ॥

७

उड़ कागा म्हांने गह ला दोजो राज।
जो आँवना म्हांरे कथन बे लागि ॥
आसक दिल मिले चौक पुराऊं गाढ़ो आंगण छे।
श्रोकरङ्ग लिपाऊं काँई काँई छपाऊं ॥

८

लेहरां लागोई आवे ननदल पिछलो पोत जतावे।
नन्दरो ढीट बरज्यो नहो माने कूडा बोल सुनावे ॥

९

घणो यबार म्हांने भई हो राज थँारो मग जोहै।
कोटेंाबिलँभो म्हांरे मंदर है महरबान
मैं ऊभी अपने द्वार थारी मग जोहै ॥

१०

जागो क्यों न राज हो जो बाजे ठनननननन
बेवर झनकार बाजे बाजे बांको राज।
होजो सायबांन दारूड़ो पीवो यों राज ॥
नथनी फटके हो केथा ढ़ोला मोती हो जो
टीलो ढीलो बांको राज सा० ॥

११

लाड़ो थांरा जीवे हो बनरा बादसाहे सरा।
एक लख देश्याँ वारो महल पधारो
दूजो लख देशां खोलो घुंघटरा ॥

१२

साँवल सङ्ग मिला वे सोइ गलभाँटो।
बे मैड़ा में उनकी सजनी ज्यों सोणा सोहागा चाँदो।

१३

थे तों आवन करेस्यां राज मइकूं डर लागे छे
सुनो मारो सजनी रैन अंधेरो।
निश अँधियारो वारो बिजरो चमके सुन भवन
बेकल भई चेरो इतनो अरज सुन लोजा सब रस हो
बिरहा दुख देस्यां ॥

१४

लाड़ोजीरा प्यारा हो पो घर आवो तो में लेवां बलाई।
कितरो बार मोहो गैलो जोवत भयो
वेग आवन करेस्याँ साई।

१५

हो मारूजी मैं नहीं आवणां हो हो हो राज।
ऊंचां माडो दिवरां वारां रङ्ग हो रङ्ग बतलास्यां थें।
म्हांरे डेरे आइलो सायबां हो हो हो हो हो होराज॥

१६

गोरो री थांरे रे कंचन से कुच अंगियामें थांरे।
सियरे हात न लावो महरबान लागो लगे छे करारे॥

१७

छावर नैणी जोरी जोबन वालो हो।
मैं तो थारो दासी सायबां
जनम जनमरा नेहा लगा तुमो पालो हो॥
हो जी हो जा झीणां मारू जी मैं तो थांरे छाइयां।
ना मैं थांरे चाल चलो छे ना मैं किया छे करार॥
रमक झमक मारे डेरे आइला
म्हांरे हारे ठाड़े बलिहार॥

१८

नींदकी मातो गई सोय अरी ए में ना जानूं कांई।
महमद सा पिया मोरे डेरे आइलो
राखतो मं नंणवा दोय अरो०॥

१९

सखी मोहे ताना दे दे लाक अरो ए मैं कित जाऊं॥
बावर जियरा मानत नाहीं केतिक बार समझाऊं॥

२०

हम परदेशी लोग भँवरा
पियाका मिलन कब होवेगा।
अबके बिछुरे कबधों मिलागें
नदिया नाव संजोग भँवरा०॥

२१

जोबन भूम रहियां भूम रहियां दिन चार।
यह जोबन तरवरको छइयाँ देखो सोच विचार

२२

रैनको उनीदो मातो काहेकूं जगाईरे।
सगरी रयन मोहे तलफत बीतो भोर भए घर लाईरे॥

२३

कंगणिया घड़ाय दो ओजो आछा म्हांरा मारू ढोला।
सोनेको मोहे कंगनी घड़ाय दो
हीरा मोती लाल लगाय दो॥

२४

बोलिया न बोलो आधीरात मोरे सइयां
जोगियाके सङ्ग निकस जाऊंगी।
तोरी बोलो मोहे नीको न लागी
तन मन धन सरसाऊंगी।

२५

अमेतो आया आया म्हांरो ए साथण
में जाणां मेवाड़को।
रूपनगर सों चलो मारवण फतेगढ़ नागोर जोधपूर
मेरता मरहट असल बसे मारवाड़को मेवाड़को॥

२६

कहां कहां जाऊं तोरे साथ कन्हैया
बंसीकेरे बजैया कन्हैया।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें गहे लोनां मेरा हाथ क०॥
दध मेरो खायो मटकिया फोरी
लीनो भुज भर साथ क०॥
दध माखनके चोरैया क०।
लपट झपट मोरी गागर पटको
सांवरे सलोने लोने गात क०॥
कबहूं न दान लियो मनमोहन
सदा गोकुल आत जात क०।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर जनम जनमके नाथ क०॥

२७

रंगोलो सखो वंशी वनमें बजो।
धीर समीर तोर जमुनाके सुन्दर श्याम सजो॥
श्रवण सुनत सब व्रजको वनिता आतुर तुरत भजो।
जानकादास श्याम मिलवेको कुलको लाज तजो॥

२८

मेरे डेरे मोता मोहन आवरे।
दरद दिवाणो रूप लोभानो सुन्दर रूप देखावरे॥

पलकनके पग पांवड़े कर हों घर पुतरी पर पावरे ॥
गोविन्द शरण ब्रजमोहन प्यारे आनन्द रङ्ग बरसावरे॥

२९

थें म्हांरे गर लागो जी श्याम सलोना।
कृपा करो म्हांरे महल पधारो मोहन मनहि लगोना।
सुन्दर वदन सोभा सुख सागर
मुरली मन्त्र मदनको टोना।
भई दासी ब्रजनिध थांरी अब कछु और न होना ॥

३०

म्हांरा रसिया बालम जी थाने चाहै हो राज।
दासी थारो में जनम जनम री थें माकां सिरताज ॥

३१

म्हांरा रसिया बालम जो मोती दे घालो।
अलबट हेल्या सब सलवट हेल्या
मोतिडारा चोर पना जी हो ॥
और इठे थांरे म्हांरे कन्नै नाहीं
थांनि छछन्दपना घना जो हो।
ऊभी राधा प्यारी अरज करे छे
मानो ब्रजनिध बना जी हो ॥

३२

हेली चलो देखोरी चितरो चोर।
रेन अँधेरो कारी बिजरी चमकत
मोर करत अत सोर ॥
ब्रजगोपन सब सुख मदमाती कित रजनी कित भोर।
वृन्दावनको कुञ्जगलिनमें मदन जगा चहुँ ओर ॥
नन्दमहर को ढोट साँवरो हम सों भयो कठोर।
मन व्याकुल बिन दरस श्यामके चञ्चल चितमन जोर॥
तानसेनकों दरशन दीजे ओबल नन्दकिशोर ॥

३३

राज म्हांने ना छेड़ो जी खड़के म्हारो
हाथाँरो चूड़ो पायल म्हांरो बाजे।
इतनी विनती मोरी तुम सों महरबान
सास ननद मोरी जागे ॥
रेण चांदणी कांई हठ कर हियरे हाथ न डारो ॥

३४

भवन न भावे ए री मोहे पिया विन।
एसो जान सुजान पिया घरी घरी पल पल छिन छिन॥
इत घन गरजे बिजरी चमके जिय डरपावे ॥

३५

बनाजी थांरी अंखियां कामन मारो हो बनाजी।
मोही छे जी थांरी लटक चाल पर बरसानेकी नारी॥
जन्तर मन्तर जादू टोना कर कर बहुत हि हारो।
मिरांने बस कियो गिरधारी सांवरो सूरत प्यारो ॥

३६

हूं आतुर आयो सखी बधियां बागी दोर।
अलबेलिया रिझवार रो अजब छकणरो तोर ॥
छिपि छाने आयो जरा मिल्न कर रो अलगार।
अब रसिया जुबराजजू कर राखूं उरहार ॥

३७

ए सखी सावन बीते जात मोरे पियाने न पूछी बात।
बरषत मे चपला चमकत है जियरा डरत अधरात ॥
सांवर रङ्ग पिया परदेश छाए उन विन कछु न सुहात॥

३८

ननदोरा वीरा काँई काँई कहे समझावां।
पोढ़न दो जी म्हांने अब रङ्गरसिया
कांई थांरे मनमें आई ॥

३९

उनोदो छाजो काँजा कांई जगाई जगाई हो राज।
आलस आवे जिय अकुलावे नाहक नींद गंवाई हो॰ ॥

४०

हो मारूड़ाने थाँरो चाह घणो छे
उठ चल वेग पधारो मारो मारवण मारू।
मैं तो थांरो दासी जनम जनमरो
आज जमारो धणो छे ॥

४१

जाओ जो जाओ उनोदोरे सायबां।
राजकुँवरजो थांरे पग परसां और देशां राम दुहाई ॥

४२

म्हांरो माकड़ो किण विध थें वस कीनो ।
एक तो पियालो दूसरो पियालो
तीसरो पियालो भर दीनो ॥

४३

छकिया राजींद आयो है मारवण ।
देख सखी आवनरो सोभा
कांई करां नेछावर हे मारवण ॥

४४

नैणां रा सवादी थांरे आंगण ऊभो सैन करे छे ।
थांरा मनरो बात बोन रङ्ग उनरा
मनरी बात मैं न थाने हो राजीजी ॥

४५

अमलांरा माता म्हांरे डेरे आवो जो राज ।
डगमगता महल पधारो खँमा खँमा करलेशां ॥

४६

आजो पगड़े पावणां ।
थे कँथा अलगा क्यां आगा आवणां ॥

४७

पापीरे पपिहरारे पियाको बालो न बोल ।
सुन पावेगो कोइ विरहनो डारेगा चोंच मरोर ॥
डारो चोंच पपोहरारे डारे ऊपर काला लोन ।
पिउ मेरे मैं पीउकोरो तू पिय कहै सो कोन ।
थारो शब्द सहामणारे जे पिया मिले आज
चोंच मढ़ाऊं सोवनो तू मेरो सिरताज

४८

रसिया राज बांको है हो आंगन सेन बोलावै ।
कैसे आंउ ढिग उनरे सजनो म्हांरो ननदल जागे आवै ॥

४९

मैं कैसे आऊं थारे ढिग राज वो
कांई रुणझुण बिछुवा बाजे ।
पायल मोरी रुणझुण बाजे सास ननदको लाज वे ॥

५०

हो रङ्ग सायबां रङ्ग छे थांरो बातड़ियांमें रङ्ग छे ।
आय बनो मतवालो सायबां कौन कहै यह ढङ्ग छे ॥

५१

हो तोरे सङ्ग कैसे के जइहूं प्यारे मोरे
चरचा करेंगे यह चबाउ लोग नगरके ॥
अब तुम जावो आपन मन्दिर कछु जिय न धरो येहो।
चन्द्र छिपे आय अङ्क भर लेऊंगो पायन परके ॥

५२

रूड़ो गोरलरा धजदार लोयन अणियाला ।
कैलासवासो आनन्दनिवासो मोह्यो शिव सरदार ॥
जिनने शेष सब जग रटत है
महिमा कहियत वारंवार ।
कर पूजन प्यारी राधे पायो ब्रजनिध सो भरतार ॥

५३

लोयण लजोणा लागाजो राज आज यामें
ओरी रीझ झक राज लोयण लजोणा।
निरासारो प्यारो किन मोह्या
सांचो कहो क्यों न करो जो तुजक ॥
काजल लेख पोक अत राजे
आठ पहर म्हांरो उनारो अजक ।
ठगनो ठग लियो है ब्रजनिधकों
अधर मधुर रो करो रो गजक ॥

५४

आया छो जो मिजमान मोहन उदमाद्याजो म्हांरे ।
केसरिया मोठा करोरी कसूमा
फूलपान ल्यावो अतरदान ॥
राधाने महलां पहुंचावो जहां
मोहन सुन्दर श्याम सुजान ।
पूजन करवां टोरो बंधाई गौरलरो सनमान ॥
जनम जनम ब्रजनिध वर दोजे ए मागूं वरदान ॥

५५

आछो बहकाइ थांरो वांसरो हो राज ।
अधरन लाग गले रस छाको
आप मरणे जग हांस रो हो राज ।

५६

आई सावन तीज सहेली म्हांरी ।
रिमझिम रिमझिम मेहा बरसे सरस चमके बीज ।
डुगरियां हरियाला हुवाजी काई'
बोलरे पपीहा पिउ पीउ उचारी ॥
घोड़लारा असवारवेंन जताकणरो वाड म्हांरे तो
महल पधारज्योजी प्रतापसिंह महाराज ॥

५७

रसिक विहारी जीने फेर परणास्यां ।
कुंवरी किशोरीजी रसिक अलबेला मोहन सोहन है
बरजोरी हरख निरख हरखास्यां ॥

५८

थांसो म्हांने तीज रमणरो चाव ।
थें अलबेला रसिया मोहन सावन मास सुहाव ॥

५९

प्यारा मीठे बोलना ढोलना
थें मानि प्यारा लागो अनमोलना ।
म्हांनि बोलाया थें नहीं आया
कांई करो छे यह घोलना ॥

६०

चांदणियरा खंभा विलंब्या ।
उझख झरोखे झांकियाजो कांई
होजी छोटी लाड़ी जीरा सूरज जग्या ॥

६१

दारुड़ीरा चालो है सायबां
लाड़ीजीरे म्हांरो है मन्दरो ये राज ।
राजीन्द्र बकस उठ कलालण धन बकसे खङ्कवाड़ो ॥

६२

हो म्हांरा राजाजी म्हांनि थांरी
छब प्यारी लागी छे हो राज ।
रूड़ी रुड़ी छब थांरी म्हांने ओजी
मुडारी जोत जगीछे साज ॥

६३

या दिन मङ्गलको आयो छे आयो छे
आयो म्हांरा साथिडा हो आज ।
हांजी म्हें तो घणाघण केल करेस्यां म्हांरा राज
याही म्हांरा मन मणने भायो छे काज या० ॥

६४

म्हांरे आजोजी रसिया म्हांरे अमलांरा राता
माता आजोजी मैं तो थाँको छब पर बल बल जाज्यो ।
बंशी में तान सुनाजो म्हांको थाँको प्रीत जगत
सब जाने छे अब जिन लोग हंसाज्यो ॥
रसिक गोबिन्द अभिराम श्याम घन
तन रो तपन बुझाज्यो ॥

६५

जावाद्यो विहारी जीसों कौन वहांसे बोले ।
वो तो रे अन्तर कपटी कारो गुह्य गाँठ नहीं खोले ॥
मद मतवारो कुब्जन मांहो घर घर भटकत डोले ॥
व्रजनिध थांरी दासो वेस्यां छतियाँरो छेद न छोले ॥

६६

नैणां सुख भेज्यो है विहारी जीने आलो ।
कोयल जो कुल लावत राधे वदत न घरो दोय ठालो ॥
शीतल अङ्ग सुरत तेरो चंदा लाग रहो थांरो घालो ।
सब दुख मेट भेंट व्रजनिधजो छाँड़ कपट सिरतालो ॥

६७

सुन ननदल म्हांरी थांरा वीराने समझाय ।
ले म्हांरी चीर कदम पर बैठ्यो
अब कहा करूं मेरी माय ॥
आट पहर म्हांरे लारंड लाग्यो मन्द मन्द मुसक्याय ॥
व्रजनिध म्हारो चीर दे डारो ठाड़ी जमुना माय ॥

६८

हांजी सारी रेन आँखड़ल्यां बीच बीती ।
आवन कहे गए अजहूं न आए
कौन भरमाया थांनेदू ती ॥

जिनरा घरां पधार्‍यां उमंगसों
सो तो निचिती होय सोती।
बखतावर सांचा ब्रजनिधजी जाग्या थें कितर पछोती॥

६९

मोरा मेलांड़े रङ्ग छायो।
कोट भाग बांके महलां दोसे आंनद अत हो उमायो॥
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक वेद पुराणमें गायो।
बखतावर मीरां बड़ भागी घर बैठे वर पायो॥

७०

मन रे तं भज ले सारङ्ग पाग।
हो गए बड़े राय और राणा रह गए नाम निसाण॥
यों तन फूटो पींजरो रे चञ्चल पञ्छो प्राण।
उड़ गयो कोई अचरज नाहीं रहे सोइ अचरज जाण॥
खाम जात और आत है देखो याको कौन ठिकाण॥
एक दिवस यों चल्यो जायगो रोक न सके कोइ आण।
जब लग सांस शरीरमें रे तबलग कर ले कल्याण॥
माणक ताको सुमरण कर ले श्रीपत श्रीभगवाण॥

७१

बैरन बंशी फेर बाजो म्हे कांई जानों राज।
मैं सोवत हो अपने मन्दर श्रवणन आन परो
तजी घरके काज अब मैं का०॥

७२

लगन लगी है श्याम पियारे।
अब कैसे यह दुरावत हो जी ब्रजमोहन उजियारे॥
हों दूत कहत तिहारे ई गुण निशदिन सांझ सवारे।
आनन्द घन इह मुरली तिहारो ए सब भेद उचारे॥

७३

म्हांने झालो दियो राज।
श्याम सुन्दर रतनारे नेणां मोह लई ब्रजराज॥
मनमोहन मन मोह लियो छे
तज दइ है सब लोक लाज।
रसिकविहारी बनवारी गिरधारी थें म्हांका सिरताज॥

७४

नित हो चितारां चितये विहारो थांने।
थांके नैण सो म्हे रस छाक्या
रोझरोझ कर म्हांरे मन माने॥
आन कान सों म्हांने लजाने
आन पञ्चा मैं तो राजरे पाने।
ब्रजनिध थांने जगत पछाने
क्यों कर रहस्यां मैं तो सबके छाने॥

देश-सोरठ

मुरली श्याम कहां धों पाई।
करत नहीं अधरनतें न्यारो कहा ठगोरी लाई॥
एसो ढोठ मिलत हो हो गइ उनहोंके मन भाई।
हम देखत वह पोवत सुधारस देखोरो अधकाई॥
कहा भयो मुंह लागो हरिके बचनन लियो रिझाई।
सूर श्यामकूं विवस करावत देखो री अधिकाई॥

२

जनकपुर आए रघुपत राज।
विश्वामित्र को यज्ञ सुधार्‍यो सब विध सारे काज॥
कुण्डल किरीट पीताम्बर बागो नीके रह्यो विराज।
तोर्‍यो धनुष तिनका ज्यों रघुपति
दिन दूलह महाराज॥
दीनो जनक कनक मुक्ताहल पाटम्बर गजबाज।
दीजे दान भक्त नोछावर राम गरीब निवाज॥

३

राधे दे वृन्दावन वास।
महामधुर रसकेलि माधुरी फुरे याही अनियास॥
हरी खरी सुख भरी निकुञ्जन नव नव सुखद विलास
जमुनातीर ललित बंशी धुन अदभुत अमो निवास॥
कृपा रमडी उमड़ी आनन्द घन वेगि पूरोए आस॥

सोरठ

देवकी देखो दुःखभरी।
कालिन्द्रीके सुघट घाट पर बैठो सोसधर कलस न गई
जशोदा रानी ले गगरी डगरी॥

को घर सास ननद दुख दारुन के पोसों झगरो।
ना घर सास ननद दुख दारुन ना पिय सों झगरो॥
सात सुवन मेरे कंस पछाड़े आठ वो गरब भरो।
तुमरे सुतकों पोषपाल हों हम चाहे सो करो।
सूर श्याम हरि जन्म लियो है कंसहिं विपत परो॥

२

कहांके पथिक कहां कोनोरे गवन।
कौन गांवके ठांवके वासो
केह कारन तुम तजो है भवन॥
उत्तर दिसा एक नगर अयोध्या
नृप दसरथ वसे दिसा है तवन।
पिताके वचन सुनि वनकों सिधारे
इस कारण हम तजो है भवन॥
सीताके वचन सुनि सखी कहे पुनि पुनि
दोउ पथिक प्रिय तेरो है कवन।
सिय मुसकाइ कहे मधुर वचन इमि
गोरे हैं देवर स्वामो सांवरे तवन॥
कर जोरि सखी कहे जानकीसे वतियां
कवहूं के यह मग करोगो अवन।
तुलसी प्रभु विन भवन न भावे
मेरो मन हर लोनो जानकोरवन॥

३

साधो मैं वैरागन हरको।
भूषण वस्तर सवही हम त्यागे खान पान विसरानो
ए व्रजवासो कहत बावरो मैं दासी गिरधरको॥
ऊधो जो तुम जावो द्वारका विपत कहो गोपियनको
जैसे जल विन मीन ज्यों तड़पे
सो गत भई सखियनको॥
पात पात वृन्दावन ढूंढ़ो ढूंढ़ फिरो व्रज घरको।
आप तो जाय द्वारका छाए पोर मोटो विरहनको॥
मीरांके प्रभु गिरधर नागर मैं दासी गिरधरको।

४

प्रभु मेरे ज्यों राखो त्यों रहिए।
तुम विन नाथ अनाथकों को है
कासों विथा यह कहिए॥
निरबलके वल और न कोई सुन सुन सबको सहिए।
दोनदयाल अखिल प्रतिपालक याहो चाव ललचइए॥
प्रेम लछन भक्तनपे कृपा कर नेक माधुरो कहिए॥
केवलराम वृन्दावन जोवन सतसङ्गन सुख लहिए॥

५

सब तज भज हो नन्द कुमार।
और भजे तेरो काज न सर है मिटे न जम जञ्जार॥
जहिं जहिं जनम लियो बहुविधि सों
जुरे अघनके भार।
ते काटनकूं समरथ हरि कों तोछन नाम कुठार॥
वेद पुराण भागवत गोता सव कों यह व्रत सार।
भवसमुद्र पद नौका तुम विन कौन उतारे पार॥
इह जिय जान ताहि छिन भज ले वोते जात असार।
सूरदास इह समय पायगो दुर्लभ सब संसार॥

६

मैं वारो जाऊंरे सांवरिया तेरे वारना हो।
माता पिताकी बन्ध छुटाई नन्दरायको धेन चराई।
जशोदा भरम भुलानो झूलो पालना हो॥
प्रगट भए हैं व्रजमें जबते सबकों दुःख गयो है तबते
कूद परे कालोदह विषधर नाथना हो।
अघा बघा बहु असुर संघारे कंसरायके कंस उपारे
जमला अरजुन और पूतना तारना हो॥
इन्द्र जो कोप कियो व्रज ऊपर कोइ न रछकहार प्रतछक
कृपा करो नख ऊपर गिरिवर धारनाहो॥

७

देखो है विहारोजो म्हांसे नेह निभायो।
बहुत दिनारो प्रोत हमारो तोरत दरद न आयो॥
तन मन धन सब होमें अरप्यो बहुतक भांत रिझायो।
व्रजनिधजो सरवस मैं दोनो वां म्हांसे कपट जनायो॥

८

साँवरिया जो राज अब तो भूले नाहीं बने।
विपत बिदारन गिरधर तुम हो सुखमें मिलत घने॥

मैं तो मूढ़ कछू नहीं जानूं तुम बिन कौन गिने ।
अबको बेर कृपा करो स्वामी ब्रजनिध सरस तने ॥

९

जो रसिया आज अमलांरा राता माता म्हांरे आज्यो
मैं तो थाँकी छब पर बल बल जावां वंशीमें तान सुनाज्यो
म्हांको थांको प्रोत जगत सब जाने छे
अब जिन लोग हंसाज्यो ।
रसिक गोविन्द अभिराम श्यामघन
तनरी तपन बुझाज्यो ॥

१०

ऊधो रे मनकी मनमें रही ।
आपतो जाय द्वारका विरम रहे हम सों कछु न कही ॥
उत मथुरा इत गोकुल नगरी जमुना बीच बही ॥
एक समै हरि आए हते जो ह्वां थो मथत दही ॥
वे तो डार डारके भंवरा नई नई बास लही ।
सूर श्याम सो यों जाय कहियो वेग मिलो अबही ॥

११

ऊधो हरिसे कहियो जाय तुम तनक हमारो बात ।
सोतन हो गई नींद हमारो सुनियो अचरज बात ॥
नैन किवारी खोल साँवरी गई तिहारे सात ॥

१२

अँखियां बहुत दुखारी ऊधो और सकल अङ्गनते मेरो।
अधिक सिरात सिरात न कबहूं कोटि जतन कर हारो॥
एकटक मग लखि निमिष न लागे बिथा भई भारो।
भर गई विरह बयार माधोको एकटक रहत उघारो॥
अलि लाए गुरुज्ञान सलाका काहे के ए तिहारो ।
सूर सुअञ्जन आंज रूपरस आरति हरो हमारो ॥

१३

विनतो सुनो एक मोरीरे ऊधो ।
विन देखे मोहे कल न परत है स्वास जात है रूंधो ॥
वेग ले आवो श्याम सुन्दर कों मिले तो दरस कहूंधो
कृष्णानन्द प्रभु आन मिलावो बोलत काहे न सूधो ॥

१४

पियारी तेरे कजरारे नैन रङ्गीले ।
निरखत लगत मदन रितु राते चञ्चल चपल छबीले ॥
मोहन मेरे ललित सुखवारे भृङ्ग वरण नकसीले ।
ख्याल खुशाल विलोकत निशदिन
जोवन उमंग उजीले ॥

१५

सहज ही आए घर जदुराई ।
वागे वेस अङ्ग अङ्ग सोभा रूप मोहनो छाई ॥
ललित नैन रसभरो विलोकन चितवन चित उरझाई ।
विवस होय रही लटू भटूरी सुरझे ना सुरझाई ॥
मृदु मुसकानि प्राण कोने वस जोबन नव मन भाई ।
निरख रहो जबही लिपटानो ख्याल खुशाल रंगाई ॥

१६

मृदु मुसकात किशोर किशोरो ।
कुसमकुञ्ज मध अत रसभोने प्रेम प्रवोण लवोरो ॥
अंसन पर भुज दिए विलोकत
उरझावत मन कर वरजोरो ।
ललित खुशाल ख्याल व्रजमोहन
विवस मैन चितचोरो ॥

१७

दरस दोजे जो पियारे मोरे श्यामजो ।
जैसे व्रजबालन को दोने सरद रासमें वसकर लोने
तैसो देखावो छब धामजो ॥
जेही भेष गिरिराज उठायो ग्वाल ग्वालनो सकल बचायो
किए रूप बाहर से सब अभिरामजो ॥
मोसरूप जो माखन खायो नवल ग्वालनो छोन छिनायो
सगरे सखा सिखायो पूरण कामजो ॥
शिव ब्रह्मा सब जाकूं धावत सारद नारद गुणको गावत
वोही खुशाल मिलावो सुख विसरामजो ॥

१८

मान भरो प्यारो मान ले रो मान ले ।
ललित कुञ्ज मध लावत लावत हित पहंचान ले ॥
विन दरसन मन धोर धरत ना
याही बात जिय जान ले ।
करिए ख्याल,खुशाल श्याम मिल प्रेम प्रोत पहंचान ले॥

१९

अनोखे पिया उमड़ घुमड़ घन आए ।
हिये लगाय लेहौं व्रजमोहन मदन उमंग उमंगाए॥
दामिनी दमकत पवन सीयरी मोरन शोर मचाये ॥
ख्याल खुशाल बढ्यो रोकत है कोयल कूक सुनाए ॥

२०

प्यारी छब छाई सइयां नन्दकिशोर ।
नैन उनीदे बिलास रासरस सरस नेह रङ्ग बोर ॥
रित रसभरे नैन लख सकुचत मैन फिरत अहुँ ओर।
मृदु मुसकान मोहनी चितवन चिते लेत चित चोर ॥
राजत भूषण वसन अङ्ग अङ्ग सोभा स्यामल गोर ।
ख्याल खुशाल करत निशवासर कुञ्ज निकुञ्जन ठोर॥

२१

छुटत न नैन छुटाए लगेरी
श्यामसुन्दर सुकवार नन्दवारे सों ।
चितवन रूप मोहनी मोहन प्रेम प्रीत उरझाए ॥
करिए ख्याल खुशाल कुञ्जनमें ज्यों ज्यों रुच मन भाए॥

२२

वंशीवट बजे हो वंशी श्याम राधे राधे राधे नाम ।
छाय रही छब नन्दनन्दनकी नव निकुञ्ज अभिराम॥
ललित त्रभङ्गी ठाढो ललन तरे रूपरास सुखधाम ।
हिलमिल श्रीव्रषभाननन्दनी करिए पूरण काम ॥

२३

सखी छब छाई हो नन्दकिशोर ।
नवल वेस मनमोहनी चितवन नैनन में रंग जोर ॥
मोह लियो मन माधुरी बोलन ठाड़ोरी साँकरी खोर।
ख्याल खुशाल भरे मुसकावत नए नेह रङ्ग बोर ॥

२४

मांने प्यारी लागी छे जी राजरी मरोर ।
सीस मुकट रतनांसो जरियो कुण्डल सुरज करोर॥
सांवरी सूरत अत हो सुन्दर नैनन चितके चोर ।
व्रजजन मोहन तिहारे वदन पर वारो तन मन मोर ॥

२५

कुञ्ज पधारोजो रङ्गभरी रैन ।
रङ्गभरी दुलहन रङ्गभरे पिय श्यामसुन्दर सुख दैन ॥
रंगभरो जोरी यह चिरञ्जो रंग भञ्यो उलहत मैन ॥
रसिक विहारो प्यारो दोउ मिलि करो रङ्ग सुख चैन।

२६

आधी रात चाँदनी छाय रही ।
अति सुकुमारी लड़ेती प्यारी प्रीतम उर लपटाय रही॥
मनसो मन नैनन सों नैना तन सो तन उरझाय रही।
नागरिया नागर दोउ राजत लागत मृदु मुसकाय रही॥

२७

पिया विन नागन कारी रात ।
कहूं जामन होत जुन्हैया दस उलटो ह्वै जात ॥
जन्त्र न फुरत मन्त्र नहीं लागत पोत सिरानो जात ।
सूर श्याम विन विकल विरहनी मुरमुर लहरां खात॥

२८

वृन्दावनवासो कब मिलहो हरि
हम कब हों हैं व्रजवासी ।
ठाकुर म्हांरे नन्दकिशोर हैं ठाकुरानी राधासो ॥
सुनियोरी मोरी सखी सयानी हरि वंशी कर दासी ।
वंशीवटको सीतल छइयां सुभग बहे जमुनासो ॥
शिव ब्रह्मा जाको ध्यान धरत हैं
कर मोजत कामलासो ।
इतनी आस सूरको पूजो वृन्दाविपिन विलासो ॥

२९

हों नाहक बदनाम भई ।
देखन दोष लगावत उपजी व्रजमें रीत नई ॥
श्रवण सुने न लखे कबहूं सखी मेलत कबहुं नहीं ।
दीनबन्धु उर लागत मोहन तब कहती न गई ॥

३०

निरतत नट नागर जमुना तट चटक मटक और
रपट झपट सङ्गीत गत ले ता थेई ता तता थेई ता ।

दिग् दिग् थों थों जग जगतां जगतां झिनक झिनक
झिन नननन रासविलास सुन्दर गत लेई ॥
ता थुंगा ता ता ता थुंगा धिरक धिरक
क्रकी थिरर थिरर गड़ गड़ धां धां तान लेई।
ता ता धो धी थु थुना किट था दिटि था धा कड़
तक तक धम कट तक गिदि गन धा धा धा धेई ॥
धा ताड़ धा धा धो धा धा धा बजत मृदङ्ग रासमण्डल मध
राग सागर मुरलीमें गावत उपज लेत नई नई ॥

३१

लङ्कामे फिर गई राम दुहाई।
कहत मन्दोदर सुन पिय रावन तें क्यों कुबुध कमाई॥
एसी कुमत करी पिय तुम जो सीता हरी है पराई।
तू क्या जाने मेरो पराक्रम उनको करे बड़ाई ॥
भुवमन्दिरमें पकड़ मंगाऊं वे तपसी दोनों भाई।
बीस भुजा दस सीस हमारे कुम्भकरन सा भाई ॥
जामवन्तसे जोधा जिनके अङ्गदसे बलदाई।
हनूमानसे पायक जिनके छिनमें लङ्क जराई ॥
सरब सोनेको रची है लङ्का सो जाजन जल खाई।
तुलसिदास प्रभुको गत-लीला अवगत लखी न जाई ॥

३२

एसे रणमें रामजो जीते।
गहें कर धनुष कोप चढ़ धाए मार रावण लिए साते ॥
दोहु दिश जुद्ध भए हैं भारो हनूमानजो लङ्का जारो।
गदा खड्ग बरछी फरसी सो ढाय दई लंक भीते ॥
गरजत मेघा कुम्भकरणसें भारते भारो जीते ॥
एक लख पुत्र सवा लख नातो जूझ मरे हैं अरीते।
लङ्काराज भभीषण दीनो राम सीया ले आए
सुर नर मुनि मन आनन्द भयो है मङ्गल भये मन चीते ॥
भरत मिले शत्रुघन प्रफुलित मन
राम लच्छमन दरसन प्रीते ॥
जैजैकार भयो अवधमें रागरङ्ग मन डंका होते ॥

३३

लगन लगी है श्याम पियारे।
अब कैसे यह दुराव रहत है ब्रजमोहन उजियारे ॥
छोड़ सेवक तिहारे गुण तें मडराते चोप मतवारे।
आनन्दघन इह मुरली तिहारो ए सब भेद उचारे ॥

३४

या जग भरम भुलाना रे साधो।
रामनामका सुमरन छोड़ी माया हाथ बिकाना रे० ॥
धन जोबन मायाके मदमें निशदिन रहत दिवाना रे०।
मात पिता भाई सुत वनिता उनके रस लपटाना रे० ॥
कहे नानक कोटनमें काहू गुरु मुख ह्वै पहंचाना रे० ॥

३५

राधावर मान लीजो राज
गरीबांरो याहो विनती हो राज।
अरज करां छाँ चरण लगां छाँ दरस दान मोहिं दीजो ॥
मैं तो थाँरो दासी जनम जनमरी कृपा रावरी कीजो।
अली किशोरी प्यारीजीरो जीवन रूप रस पीजो ॥

३६

राधा म्हांरो चंपावरनी राज।
जीवे कुञ्जविहारी से वर रीसकीरां सिरताज ॥
अचल सिंघासन छत्र चंवर ढुरे
अलिजन सकल समाज।
अली किशोरी दंशी निरखत सोजा सकल सुकाज ॥

३७

आछो तो बजाई थांने बाँसरी हो राज।
अधरन लागो रस बरसे छे
औरकां मरन याको हांसरो हो राज ॥

३८

म्हे नहीं जाणां कपटी है ये रो मोतनरे मन गाँसरो।
ब्रजनिध भेद भेद अण छेद्यो परो रोम रोममें फाँसरो

३९

है री मा नन्दको गुमानी म्हारे मनड़े बस्यो।
गहे द्रुमडार कदमकी टाड़ो
मृदु मुसक्याय म्हांरो ओर हंस्यो ॥

पीताम्बर कट काछिनी काछे
रतन जटित माथे मुकट कस्यो ।
मीरांके प्रभु गिरधर नागर
निरख वदन म्हांरो मनडो फंस्यो ॥

४०

आवत री डफ बाजत गावत
मोहन सङ्ग चाचर व्रज खोरी ।
गोपी मिल सज मारग रोके रंग अबीर घट भोरी ॥
गारी केवल राम श्यामको छल करि धरिय निहोरी ॥
लच्छनदास लाय सुख लीजे हंस लीजे पट छोरी ॥

४१

म्हांने झालो दियो राज ।
श्यामसुन्दर रतनाले नैना में कोई कोनो राज ॥

४२

व्रजचन्दजू पियारे जीवन जरी हमारो ।
गल मोतियनदी माला साहै तिरछो चितवन न्यारो ॥
सिर बादनू चीरा कलंगी सोहत है लटकारो ।
कुण्डलको सोभा निरखत झांको दई बिहारो ॥
सब निरखत हो मोह लई सुध बुध गई बिसारो ।
अलीरतन छब देखत हो बार बार बलिहारो ॥

४३

सो मो बार तोहे समझायो ।
गोरस तो घर हो बहुतेरो काहेक छुवत परायो ॥
तनक दहीके कारण कान्हा माखन चोर कहायो ॥
एक समै एक राचस आयो करत है आपन चायो ।
गोपी ग्वाल गउनके पाछे विधना तोहे बचायो ॥
जन्म लियो वसुदेव देव घर मथुरातें व्रज आयो ॥
भाग बड़े हैं नन्द बबाके तिनको पुत्र कहायो ॥
बूड़तनें व्रज राख लियो है गोबर्द्धन कर लायो ॥
जे जे करत देव सब ठाड़े सुक्रत आड़े आयो ॥
वरजो री वरजे नहीं मानत करत है आपन चायो ॥
सूरदास भक्तनके पाछे विष्णुरूप धर आयो ॥

४४

राखो पति गिरिवर गिरधारी ।
अब तो नाथ रह्यो कछु नाहीं
उघरयो माथ अनाथ पुकारी ॥
रथविहीन पांडवसुत डोले
भीम गदा कर सों महि डारी ॥
थाकी पैज प्रबल पारथकी
हाथ धरनि धर हिम्मत हारी ॥
बैठे सूर सुभाय सुभट सब भीष्म करण द्रोण व्रतधारी ॥
कहे न सकत कोई बात परसपर
इन पतितन मेरो अपत बिचारी ॥
लाज गमाय दास दासनकी
फिर का करिहो आन मुरारी ॥
सूरदास लज्जा दासीकी फिर पछतैहो देख उघारी ॥

४५

हों तो थाकी ढाढ़न छूं जी राज ।
कुंवर जनम सुन हरख हुआ ए सुन व्रजपत महाराज ॥
मनबाञ्छित फल लेस्यां जी अब
मैं तो यो दिन पायो छे आज ॥
प्रगट हुवा अभिराम श्यामघन
रसिक गोबिन्द सिरताज ।

४६

नन्दजीके घरके ढाढ़ी आयो ।
जनम सुनत नन्दलाल श्यामको आन सोहलो गायो ॥
श्रीव्रजपत महाराज रीझ कर दोना दान सवायो ।
रसिक गोविन्दको बांह पकरके निज व्रजवास वसायो ॥

४७

चिरजीवी बेटो भानकी ।
सुन्दर माधो रूप आगधा मोहन जीवन प्रानकी ॥
लटकि लटकि पग धरत अवनि पर
गजगति मदन गुमानकी ।
रासविहारनि नैन निहारनि
अलि जोय कृष्ण सुखदानकी ।

४८

दुलहनो प्यारो श्रीराधे दूलह नन्दकुमार।
सारी सुरङ्ग पीत पटवारी राजत अदभुत रूप अपार॥
गोरे श्याम मनोहर जोरी सुन्दर अति सुकुमार।
लच्छनदास जुगल छब ऊपर नोछावर रति मार॥

४९

जालिम नेहरा बड़ो जगमें माइरी बरबस मन हीं हरे
निरखत ही बस कीनो सांवरो तबतें कल न परे॥
छिन छिन क्षीन होत अङ्ग मेरे मनतें नाहीं टरे।
लच्छनदास दसा नैननकी अहनिसि नीर झरे॥

५०

पपिहरा बोलइरे रटत रैन दिन स्वाती सलिल सनेह
मोत कठिन घनश्याम प्रीत वाके
बूँदन माहिं क्यों नाहिं वर बसत मेह॥
रसनाथ कित नथकत कण्ठस्वर थकत न दुबरी देह।
लच्छनदास धन्य प्रण वाकों
लगन न पावत रहत संभारे लगन प्रेमके ठेह।

५१

मन्द मन्द हँसत लाडली नवल श्याम
रजनो जुगल जाम ठाढ़े हैं कदम तरे।
कमल नैन मधुर बैन बोलत परस्पर रसभरी बतियां
सुखमें मगन दोउ उर लगाय बाँह गरे॥
रीझि भीजि हाव भाव दुहुंवोर चित चाव
लाज तोरि मधुर मधुर गावत अति प्रेम भरे॥
लछनदास रसविलास अधिक सनेह बाढ्यो
चीर गहें लालजू प्रियाजू पीतपट धरे॥

५२

पलक न लागेरी मेरी सुन आली
उन बिन देखे घरी पल छिन अब रैन दिनेरी।
कल न परत सोवत जागत मोहिं कोटि करो
बिसरे नहीं मनते लाज रहे घरने गुरुजनको घेरी॥
निपट बिसार्यो निरदई मोहन कबहुं न सुरति करत
इत माहीं भूलि न आवत फेरी।
लच्छनदास इती गुण मान्यो वेगि देखावो प्यारो
बिन ही दाम लियो सो को मानो चेरी॥

५३

मन रे सुनि पुराण क्या गीता।
मोह नगरको गैल न छांड्यो काम अमल मद पीता॥
सुत बित नार बन्धुके कारण पचि पचि जनम बितीता॥
पढ़ि पढ़ि ग्रन्थ कहाए पंडित लोभ अधिक मनजीता॥
तिरथन गए दिवस निशि श्रम करि
सह्यो धूप अरु सीता॥
अहङ्कार मच्छरको तनपर लोटों फिर रस लीता॥
मिथ्या दम्भ कपट नहिं त्यागो पाठ करत नित गीता।
लछनदास मन घाले खोयो हरिको कियो न मीता॥

देश—सोरठ

म्हांरे हिरदे लिख्यो जो हरिनाम अब नाहीं बिसरूं
मैं तो हिरदे लिख्यो जो गोपाल।
हाथी घोड़ा बहो घणा माया केर न पार
राज तजूं चितोड़को गामड़ो है असो हजार अब०॥
साध हमारो आतमामें साधनको देह।
रोम रोममें रम रह्या जों बादरमें मेह अब०॥
राती माती हरिनामकी बांध भक्तका सार।
राम अमल साखो फिरे धन मोरा राठोर॥
एक आड़ो गुरु गोविन्द खड़ा एक आड़ो सब संसार।
कैसे तोड़ रामसों मारो भा भारो भरतार॥
संसारी निन्दा करे रूठो सब परवार।
कुल मारोद लजाइयो मीरां बाई बहे अकरार॥
भक्तहीन पापी घणा राणांके दरबार।
केती विषरा प्याला पायदा के डालो कण्ठहार॥
राणेजो विषरा प्याला मोकल्या दीजो मीरांरे हाथ।
मैं तो चरणामृत कर पी गई अब थें जाणों म्हांरा नाथ॥
मीरां विषका प्याला पी गई मोती खूंटो तान।
म्हांरो दरद दिवाणा सांवरो
म्हांने दोड़ जगावे लो आन॥

गरुड़ चढ़ हरि अब आए मीरांके पास।
आनन्द तूर बजायके पूरी मनकी आस॥
राणां मो पर कोपियो म्हांरो तक तक सेज।
लाज लागि छे म्हांको दीजो पीहर भेज॥
मीरां महलमें उतरी राणि पकर्यो हाथ।
हतले वारो नातरो परत न मानूं बात॥
मीरां रथ बहल सिङ्गार के ऊंटां कसिया थात।
छावो मेलगी मेरती पहले पोखर जात॥
राणा साथ जो मोकलगी जाव्यो मीरांरी ओर।
कुलकी तारण अस्तरी मुरड़ चली राठोर॥
राणा मो पर कोपिय रती न राख्यो मोद।
ले जाती बैकुण्ठमें समझो नाहिं सिमोद॥
मीरां सुन्न दुहेलड़ी रामकी जैसी खांड़ेकी धार।
कोइ सन्तजन बिरला उतरे भवके पार॥
मीरांने प्रभु गिरिधर मिल्यो नागर नन्दकिशोर।
तन मन धन सब अरपिया चरण कमलकी ओर॥

सोरठ

हमारो सुध ज्यों जानों त्यों लीजो।
तुम विन मोरे और न कोई कृपा रावरी कीजो॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा यह तन पल पल छीजो॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर
मिल बिछुरन नहीं कीजो॥

२

हे मा बड़ी बड़ी अंखियन वारो
सांवरो मोतन हेरन हंसिके।
भौंहे कमान वान वाके लोचन मारत हियरे कसिके
जतन करो जन्तर लिखो बांधो ओषध लाऊं घसिके।
ज्यों तोको कछु और विथा हो नाहिं न मेरो वसिके॥
कौन जतन करां मोरो आली चन्दन लाऊं घसिके।
जन्तर मन्तर जादू टोना माधुरी सूरत वसिके॥
सांवरो सूरत आन मिलावो ठाढ़ी रहूं मैं हंसिके।
रेजा रेजा भयो करेजा अन्दर देखो धंसिके॥
मीरां तो गिरिधर विन देखे कैसे रहे घर वसिके॥

जावा दे गुमानी कृष्ण म्हांरे घर काम छे।
थें हो लङ्गर नन्दमहरके ब्रज वरसाने म्हांरो गाम छे॥
जानो नहीं तो पूंछ लीजो श्रीराधा म्हांरो नाम छे।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर नाम थांको बदनाम छे॥

४

घर आवो जी सजन मिठबोले।
तेरे तो कारण सब ही तजो है काजर तिलक तमोले॥
जब सुध आवत विरह सतावत
छिन मासा छिन तोले।
मीरां तो गिरिधर विन देखे कर धर रहो कपोले॥

५

राणां जी सांवरे रङ्ग राचो।
कोइ निरखत कोइ हरषत है जो
कोइ कोइ करत है हांसी कोइ सांचो।
ताल मृदङ्ग बजे मन्दिरमें हां हरि आगे नांचो॥
मीरां दासी गिरिधर जूको जनम जनमको जांचो॥

आवो जी गिरिधारी जो थांसु म्हें बोले।
थें तो म्हांरा जनम जनमरा सङ्गी
थांरे लारां लारां सङ्गमें डोले॥
आद अन्त तन मन धन मेरे आनन्द करां कलोले।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर आन मिलो अनमोले॥

७

मोरे प्यारे गिरिवरधारीजो दासी क्यों विसार डारी।
द्रौपदीको लाज राखो सब दुखसों निवारी॥
प्रहलाद पेज पारो नृसिंह देहधारी।
भीलनीके जूठे बेर खाए कछु जात न विचारी॥
कुबजा सों नेह लाया श्री गौतमकी नारि तारी।
प्यासी फिरों दरस विन तलफों मोहे काहे विसारी॥
मीरांको दरसन दीजे गिरिधर अपनो ओर निहारी॥

८

मनमोहन मारू मन डोलो धुंरे ।
श्यामा टे छया न थी अलगा थइया
कालो मरखोटो नाटा मनको धुंरे ॥
हवे हूं तो एटलुं घर थिए हयो नथो नीकलंजो
बड़ो म्हांरू केणी पेरे विधुं ।
नर सैयानो स्वामी साँवलियो
म्हांरे जीवडारू कामसारू सिधुं ॥

९

मुरलिया बाजो जमुना तीर ।
उमंग चली मांवन सलिता जों व्रज जुवतिनको भीर ॥
आहे दई निरदई मोहि रोके कैसे धरो जिय धीर ।
नागरीदास प्राणपति आगे पहुँचोंगो छोड़ शरीर ॥

१०

हरि छवि निरखु नैन जड़ मेरे ।
तरुन तमाल श्याम सिरसोरुह
अङ्ग अङ्ग पर दुति उरझेरे ।
मणिमय मुकट विराजत माथे
उदित कोटि रवि मनहुं सवेरे ॥
अलकें कुटक रहीं पग ऊपर
कच घुंघरवारे सघन घनेरे ॥
भ्रकुटी कुटिल श्रवण कुण्डल चल
आनन्द इन्दु कहत सकुचेरे ॥
भाल विशाल तिलक मृगमद को
कीर लजान नाशिका हेरे ।
जप तप योग यज्ञ तीरथ व्रत
राम ध्यान विन लगत अंधेरे ॥
लच्छनदास सन्त उर मूरत
वसत न भूलत सांझ सवेरे ॥

११

सब गुण भरो हो गौरा रूप राधा ।
हाव भाव कटाछन हँसि हँसि
पिय मन करत समाधा ॥
अङ्ग अङ्ग गति ललित सुभायन पाई चलत अगाधा ।
जब बलिहार हात मन मेरो गई विरहको बाधा ॥

भूपाली—झंझोटी

दिल मेरा दरिया हुआ कैसा लहर लहराता है ।
जा नहीं सकता है बाहर दिल हो में फिर जाता है ॥
लाखों मगर लाखों मच्छ लाखों सरप लाखों कच्छ हैं
लाखों करोड़ों जानवर दुनिया हमें दिखलाता है ।
मनसूबे केते जहाज इसमें हैं सौदागरोंके जिनमें
जिन्स सबसों सब तरफकूँ आतो जातो है ॥
इसकी चाहे थाह जो सो मरजिहासे पावेगा ।
जिसमें कवि खालिक भी लाल मणि पाती है ॥
देख चारों पास यों कहा जानकीदास
जिधर तिधर हरि रङ्गन रङ्ग नजर आतो है ॥

कलिङ्ग

महबूब खूब गरूर दिलदार यार महरम
तेरो हुसन हवाका जाहर जहूर है ॥
वंशीमें तान सुनके दिल हो गया दिवाना
मैं किसकों जा सुनाऊं मेरा कसूर है ॥
अबरू कमान कसके चश्मों के तीर तक तक
जखमा किया जिगर कूँ चकचूर चूर है ।
गोविन्द रसिक सजन सुन तुजसे लगन लगी है
जो जाय या रहे बले मिलना जरूर है ॥

२

इस सांवले सजन सों मिलना जरूर है ।
जिसको हुसनहवाका जाहर जहूर है ॥
नीलेसे तन बदनमें गुणका गरूर है ।
आँखोंमें आशनाई का दरियाव पूर है ॥
शीरीं जुबान जिसको गोया अङ्गूर है ।
खुश होके हंस मुसकानमें न्यामतसा नूर है ॥
महरम है महरम दिल है साहब गरूर है ।
जिसके निवाजने का ममला मशहूर है ॥
इस हो सबबसे मुझको रहना हुजूर है ।
जो कहे सो करना डरना कसूर है ।

कहना हाल आपना भी नज़दीक दूर है ॥
रसरास उसके इश्क़में दिल चूरचूर है ॥

सरपरदा

कोजे नजर महरको मैं तो तुम्हारा हो चुका।
अपने दिलो जान से मैं तो तुम्हारा हो चुका ॥
मुझमें तो कुछ ढङ्ग न रङ्ग जो पियासे मैं करूं
एक कृष्ण नामही सों काम मेरा हो चुका।
मेरो तुम्हारी लगन है औरको मालूम क्या
जगमें तो यह शोर है ए तो तुम्हारा हो चुका ॥
टुक तो कदम दोजिए दिलको मुराद लेनेको
जो किया क़िसमत लिखा सो तो मेरा हो चुका।
कसम पिया प्यारोकी कोजे नारायनकूं दास
ए तो गुलामान गुलाम अब तो तुम्हारा हो चुका ॥

कलिङ्ग

गोविन्द रसिक जानो सुन नन्दके गुमानो
लागो लगन पिछानो मुझको सलाह क्या है।
पग फूंक फूंक धरना हरदम सबोसों डरना
नित इस गलोका फिरना मुझको स० ॥
मुशकल है इश्क़बाजो दिल है तुम्हीं सो राजो
तुम तो हो खुश मिजाजो मुझको स०।
जाहर जहान यारो इतने पे बेकरारो
कुरबान बे बिहारो मुझको स० ॥
फरजन्द नन्दका है उसको अजब अदा है
बेदर्द है बेपरवा है जाने सबाब क्या है ॥
रहना सदा मगनमें मुशताक़ है हुसन पे
जोबनको मस्तो तनमें जिसको शराब क्या है।
उसको हंसीमें भाई मरना है औरका हो
अब लागो आशनाई मुझको स० ॥
गोविन्द रसिक प्यारा महबूब है हमारा
महताब आफ़ताब कमल और गुलाब क्या है ॥

२

महबूब खूब इश्क़को पहंचानता नहीं।
नसोहत भी किया उसके तईं मानता नहीं ॥
गुजरो जो दिलपे आन कोई जानता नहीं।
हंसि गुफ्तगू मुझसे सामने ठानता नहीं ॥
गोविन्द रसिक जांको कोई जानता नहीं।
कोई मेरा हवाल उसे बखानता नहीं ॥

सोरठ-धानी—पशतो

जोते जो दामे मुहब्बतमें गिरफतार हुआ
जो तेरा यार हुआ ॥
तेरो उलफतके लिए अपना बिगाना गए भूल
ना हुआ खाक वसूल अब तो सूरत भो तेरो
देखना दुशवार हुआ जो०।
बस परो उसके तईं इश्क़का आजार हुआ जो० ॥
आज जाते थे जो दोवाने तेरो महफिलके
जकड़े जञ्जोरोंमें बस
जङ्गल औ बियाबांसे सरोकार हुआ जो०।
सच है ऐसों के एसे हो सितमगार हैं हम
कर तू अब क़तल हमें दिल लगाकर
मैं परो तुझसे गुनहगार हुआ जो० ॥
रातों को हम से तू छिप छिपके क्यों जातो है परो
है खबर जरो जरो सच बता दे के तेरा
किससे नया प्यार हुआ जो० ॥
जबसे देखो है तेरे हुस्नको ऐसो झलक
न लगो तबसे पलक दिले आशक़ हो नहीं
तुझसे गिरफ़तार हुआ जो० ॥

सोरठ

मैंने अबतक तो तेरा इश्क़ निबाहा
अहा खाके सौ तरहके गम।
वले अफसोस मुझे तूने न चाहा
अहा बानिए जुलमो सितम ॥
तुझ बिन शबको ए कह के मेरा दिल
बोला नन्द आ बाखुदा।
काहेको इसतरहसे पहलूमें कराहा है
याद तो कर तुझको सनम ॥
सरफ तुलूं मर वफोल हो जब झुकायाँ सनम।

हम जामीद बिमा लफ़ाहा सुन आहा वफ़ा हा
आहा तरज तर वजकत मवकत मस्तो चकमो देम
तुरा दरबरे खेस समबिल्लाहके मनदो दम अस्
सनन चन्द अदा हां आहा कुशतए नासतो अम ॥
ज्यूँज्यूँ दोज्यों ज्यज दई जोड़ तु दोजे जोड़ खुदोअ
चे वो जुवा खिले दिल आवे माशूक
बसा दस्ता हा हा हा आहा ॥
जोड़ दो इशक़ बसम मानू घायल कीनो तकसीर
नैनकी भौंड़ी जो आ जाँन भली मढ़ड़े जोंदा ना तो
तिरछी तो निगाहों आहा नहीं कछु तोरनोकम।
काहे रूस खायके तुम रूम रहे हो पीतम आवो
किरपा करो जो जात है जान
करत विनती हूं हा हा आहा ॥
पाप हो जाइ धरम ॥
हैफ़ सद हैफ़ अफसोस सद अफ़सोस आया पेगाम।
अजल छुट गया ज़ख्म जिगरसे मेरे
हा हा हा अब निकल जाएगा दम ॥
अजमें अजीज तेरे मत मार मुसलमान मौजं
शिकन नहीं इसमें जरा यह गज़ल जिसने सुनो
उसने सराहा आहा तेरे हो सिरको कसम ॥

मोहनी

मुझको चाहे जकन दिखाता है
मेरा यूसफ़ कुएं भंकाता है।
कुछ जो सीधी भी बात कहता हूँ
तिरछियां फिर मुझे सुनाता है ॥
समा महफिल वो मुझको समझा है
शायद इस बातसे जलाता है।
जुल्फ़ को छेड़ता है जब शाना
दिल मेरा पेचताब खाता है ॥
गरमियाँ गेर से न कर ज़ालिम
जल रहा हूं अबस क्यों जलाता है।
खाक से भी मेरी गुबार रहा
क़ब्रको ठोकरें लगाता है ॥
तुझको अपनी हँसी खुशीको कसम
किस लिए तू हमें रोलाता है।
फ़िकरेमें उसकी चपलाहट
और मजमून कुलबुलाता है ॥
लेकिन आगे न फिकर कर गाया
देखता मुखतसिर हो भाता है ॥

२

बावफ़ा था मर गया इक बेवफ़ाके वास्ते।
आशना था जां गंवाई आशनाके वास्ते ॥
बागबाँ दीवार गुलशन तक तो आने दे हमें
कैंचियें लगवा न आ ज़ालिम खुदाके वास्ते ॥
बेतलब गर मौत भी आए शरीके मर्ग हूं
मिन्नतें ऐसी न लूं हरगिज दवाके वास्ते ॥
ए हुमा पेशे फ़क़ीरी सलतनत क्या माल है
बादशाह आते हैं परोसे गदाके वास्ते।
बाद मरनेके भी छेड़े हमको निफ़लाने इसी
ले हमारी खाक गिलको आशियांके वास्ते ॥
मू दिखावा दिक मलोने कैतुए खुरशीदरू
माहे नौ है शिर झुकाए इलतजाके वास्ते।
छोड़ दुनिया कर कनात बैठ कुञ्जे फख्रमें
खाक मत शिरपर उड़ा जल्ले हुमाके वास्ते ॥
जान कर गुलशन मुझे संयाद ले जाता नहीं
तू हो ए खुद रफतगो ले चल गदाके वास्ते ॥
हो गया नाबूद जब उकदाय तब साबत हुआ
उस करमको दोद ए अहले फनाके वास्ते।
खाक हो जो फिर मियाबख्तानका मारा वदन
हाथ उठाते शरम आती है दुआके वास्ते ॥
हमातन चश्म नरगिस यार तेरा दीदका
गुल हमातन गोश है तेरी सदाके वास्ते ॥
रहम कर ए जोफ बस इतना न तू मुझको भुला
हड्डियाँ दो चार रहने दे हुमाके वास्ते ॥
दिल न अपना है तन अपना न जी अपना है आह
सबसे बेगाने हुए एक आशना के वास्ते॥

करियो गोयाकी सिफाति या नबो बहरे खुदा
ए खुदा तू बख्श देना मुस्तफाके वास्ते ॥

सोरठ-धानी—पश्तो

पिया सांवरे महबूब को दिल बीचमें पाया।
नख सिखसे रूप मोहनो मन देख लोभाया ॥
मुखचन्द उजारो रहो छब छाय हर तरफ
होरोंका मुकुट पन्नामें लालोंमें जड़ाया।
अङ्ग अङ्गमें गहने पहने हुए कानोंमें कुण्डल
जोटा वसंती माजे हुए सोने लगाया ॥
वनमाला गलेमें परो खुशबूसे तर बतर
कर में है कंगना बंधायों दूल्हा बनाया ॥
वर वृन्दावनको कुञ्जमें करता खुशाल ख्याल
जो एको तीनलोकमें नन्दलाल कहाया ॥

सोरठ—सरपड़दा

फरजन्द नन्दजोका दिल बीच भांवदा।
वर पाय रूब नूपुर सुन्दर सोहांवदा।
टीका संदलका खींचके माथेमें अदासो
आता है लटक चाल मटक मेरे आंवदा।
नीमा जरीका गल बिच कट काछनी कसे
पीले दुपट्टे वाला बोड़ा चबांवदा।
करता है निरत नादर घुंघरू को झनकसो
ता ता थेई थेई ता ता गत है लांवदा ॥
नैनोंकी आन तानके अबरू कमानसे
पलकोंका तोर खींच कलेजे चुभांवदा।
घायल किया है मेरे तईं उसके इश्कने
शुकदेव चरण दासके दिलमें समांवदा ॥

सोरठ—कलिङ्ग

दुनिया मेरो सो आके खरीदार ले चले।
एक दिलके आइनेमें फकत यार ले चले ॥
जाता नहीं मैं आपसे ले जाते हो मुझे।
जुलफोंमें बांध बांध सितमगार ले चले ॥
कहती थी एतो बातें महलोंमें इश्कके
जावेंगे हम उधरको जिधर यार ले चले ॥
आगे खुदाए जाने क्या होवेगा सितम
फुसलाके मेरे दिलको तरहदार ले चले।
तहकीक है यह रोजे गुलाल है गुलाबी
मरनेके तलख शोरों सरकार ले चले ॥

सोरठ—झंझौटी

किसके घर रात रहे आए हो घबराए हुए।
जुलफ बिखरी हुई मुखड़ेपे बल खाए हुए ॥
आज कुछ खैर नहीं आए हो मचलाए हुए।

टप्पा

सुरङ्गो सीस पर पगियां जवाहर जोत जगमगियां
कलंगी परम मन ठगियां किया क्या हाल तैं मेरा।
तुझे मैं रैन दिन गया मुझे तू ताव सताया
शिकोहा कहर फुरमाया किया० ॥
भुला मुझे बाट चोहटका पड़ा मुसकानका डाका
लूटा यह दिल शहर बांका किया०।
पड़ी कुलकानको गरदा चढ़ा है इश्कको जरदी
हुवा है रङ्ग ज्यों हरदो किया० ॥

मिश्र

दाम उलफत में तेरे जोके गिरफतार हुवा
सबसे आजाद हुवा।
खञ्जरे नाजसे जिसका जिगर अफगार हुवा
वोही दिल शाद हुवा ॥
इश्कमें चैन कहीं होता है दिलको साहिब।
तुम्हीं इनसाफ धारो जिन्दगानो सो गया
जिसको यह आजार हुआ जानसे बरबाद हुवा ॥
जिसने माथेमें मलो खाक रहे पोर मजा
वा दिले सिदको सफा फिर कोई दिनमें
वा हिम्मालके आसार हुवा ॥
साहबे इरशाद हुवा खूबरूयों में बेवफा।
किसने सुनो या देखो नकसूआ ज्यों गुमां जो हुवा।
इनमें सोदाई सितमगार हुवा पर तू उस्ताद हुवा ॥
क्योंकर अब रात दिन आरामसे अपने न कटे
किमदतादेसे बुधविहारोका कदम
हमको सजावार हुवा यह खुदादाद हुवा ॥

दमबदम तेरी नई शान है मेरे कन्हैया।
चश्म बद्दूर अजब आन है मेरे कन्हैया॥
हाथमें वंशी औ वनमाल गरे शिरपे मुकुट
क्या ही दिल लेनेका सामान है मेरे०।
ना तु है माह न खुरशेद न हूरे हिरम
जिन फरिश्ता न तू इनसान है मेरे०॥
इस तेरे हुस्ने नज़ाकत का क्या करूं मैं बयान
बदखशां तरे से हैरान है मेरे०।
बुधविहारी जो तेरी वंशी नहीं है ए कोई
फ़ितनओ आफ़तो तूफ़ान है मेरे कन्हैया॥

खमाच

जो एक निगाह महरको वो महलका करे।
दुश्मन अगर तमाम जहां हो तो क्या करे॥
राहत हो या के रञ्ज हो शादी हो या के ग़म
खु़ाहिश वही है अपनो जो कुछ सांवरा करे।
नक़शे क़दम तेरेमें है तासीरे जामेजम
असरार दो जहांसे बहम आशना करे॥
तीरे निगाह तेरा लगा जिसके दिलमें है
क्यों कर न उसकी आंखसे आंसू बहा करे।
है इलतमास बुद्धिविहारी से यह सदा
जबतक यह जो रहे तेरी वंशी बजा करे॥

धानी

दिल पर सौ ज़ख्म बदन पर कोई आसार नहीं
कहो कहो इसमें क्या।
हमने इस काटको देखी कोई तलवार नहीं
निगाहे यार सिवा॥
तेरे दीवानेने खञ्जरसे मारा क्यों कर
तू ही बतला दे हमें।
बुतकदेमें कोई बुत तुझसा तरहदार नहीं
ए सनम नामे खुदा॥
बदजबानीका तुम्हारी नहीं करनेके गिला
है यही अपनो वजा॥
गो ज़बां रखते हैं पर आदते तकरार नहीं
जो कहो तुम सो बजा।
इश्क़े खू़बांने है उस रङ्गको देखलाई बहार
जिसकी ना दीदो शुनीद॥
दाग़ दिल छोड़ हमें भाता कोई गुलज़ार नहीं
गो सरापा हो फ़िज़ा।
कर चुके तजरुबए इश्क़ ए ज़ालिम आजा
इश्क़ हासल है यही
होगा चङ्गा मरीज़े इश्क़ वो बीमार नहीं
कोजिए लाख दवा॥
ना हमें तख्‍तको खु़ाहिश है न मसनदको हवस
ए खुदाबन्दे करीम
दिल मसीहाए बजु़ स्त खाके दरबार नहीं
हमको बिठला न उठा॥

कलिङ्ग

दिल औ निगाहको करके परेशान ले गई।
चितवन मरोर तनकी झलक जान ले गई॥
दिनको तो चैन ले गई मुखड़ेको याद और
रातोंकी नींद ज़ुल्फ़े परेशान ले गई।
तेरी निगाहवानो करे कोई लाखमें
जिस दिलसे लाग थी उसे पहचान ले गई॥
जाता है कोई दाद औ दानिश्ता तालबे
मेरी निगह मुझे उधर अनजान ले गई।
चम्पाकली की देख नए पाव हाथ फूल
बाले की झांक सब मेरे औसान ले गई॥

रागिनी—जंगला

जानी मुझे बस किया बांकी अदा देख देख।
तिरछी भौंहें खींच कमां तीर रवां कश किया॥
दुनियामें अजूब खू़ब एक तू ही है महबूब
सेहर किया मेहर किया जेहर किया हश्र किया॥
सदके जाऊं तेरे यार एकबार कर पियार
हो कर दिलदार सजन गशके तांई गश किया।
इश्क़के नशेमें मस्त है जानकीदास
और नहीं प्यास खास दिल मेरा बेकस किया॥

भंझौटी

देखा था मैंने सनम एक चला आता था।
उसको थी सांवली सूरत औ मुसकराता था॥
मैंने उससे कहा तू एक बात मेरी सुन
सैन दे मुझको बुलाता वो चला जाता था॥
क्या कहूँ दूरसे थे देखते गुरुजन ठाढ़े
लाजके मारे मुझे खौफ औ डर आता था॥
देखे से दूरसे गुरुजन से शरम आता था॥
सखी तू मुझकों मिलावे जो कहूं प्राणप्यारा
रहे तब जान मिले सैन जो बताता था॥
सखी थी चतुर सुजान उनको तो है ले आई
मिले जो पीउ पियारे मदन लोभाता था॥
जानकीदास दोनो मिलके जो आनन्द हुआ
मोहे सूरत से न कुछ ध्यान किया जाता था॥

विहारी

याद कर साहेब को गाफ़िल नाहीं तो पछतायगा।
करता है मगरूरी मूरख जमकी जूती खायगा॥
हो गए सुलतान राजे तू भी यों हीं जायगा।
लाख चौरासी में ज़ालम हरि विना भटकायगा॥
कहता जानकीदास ऐसे नाम हो रह जायगा।

सोरठ

मैं दीवाना नामका मोही कोइ न छेड़ोरे।
वन वन सब मैं ढूंढ़के हस्तीको मारोरे॥
हस्ती बिचारा क्या करे मैं तो शेरको मारोरे।
हाथ मेरे शमशेर मेरे खूब तरेकारे॥
भग जा मेरे आगेसे नहीं मार बैठूंगारे॥

जंगला

पाँड़े मोहे राम नाम लिखावो कुछ और नाहीं सिखावो
सिखते हो सेहल सममें जो तुममें है सो हममें
जननी जना पिलाया देह दैवने तो जिलाया
जिन्दगीका कौन ठिकाना पिञ्जरेमें पवन समाना॥
जिन पांच तत्त्व नचाया एक एक सों बचाया
मिल जुल जगत बनाया सब नाम रूप जनाया॥
पढ़ना पढ़ा तभी हरिनाम लेहीं अभी दिन चार
राज निहारो विन राम है अंधियारो॥
एकचक्र राज पिताकों प्रतिविम्ब नाहीं ताकों
प्रेमरङ्ग कों बिगाड़ो जो रोम रोममें ठाढ़ो॥

कालिङ्ग

मेरा महबूब खूब सोहना मोहना सांवला बेली है।
चीरो शिर जरकसी सोहे गरे मखतूलको सेलो है॥
किनारीदार दुपटा ज़ाफ़रानी जिसपे क्या बूटा
भया दिल देखिके मुश्ताक़ छबीला छोर है छूटा।
सनम बंशी बजांवदा गांवदा तान सुनांवदानी॥
साड़ी गली आंवदा भाँवदा चश्म चोट चलांवदानो।
जिगरमें घाव किया अबरू लिए खञ्जर कटारी
वही दारू दरद सबी वो लगी है उससे यारी॥
प्यारा गोविन्द रसिक सजन हैगा दिलदा जानी
कीती साड़ी ज़िन्दगी कुरबान भई मैं प्रेम दिवानी॥

२

लगी हैं इश्क़दी चोटें दे दे पलककी ओटें।
भीजी रस प्रेमदी पोटें देख सखी नन्दके ढोटें॥
भई हूं रूप दीवानी भरन गई जमुना तट पानी।
मिले हैं कृष्ण गुमानी सूरत उर माहिं लिखानी॥
भए हैं मनकेरे भाए कृपा कर कृष्णजी आए।
नानाविध भोग लगाए चरणमें सीस नमाए॥
जशोदा जूके हैं प्यारे छके रसप्रेम मतवारे।
बने हैं रैन रतनारे सेवादास पतितकूं तारे॥

सरपर्दा

हरिनामको सुमर ले क्या वक़्त पाया है।
फिर हाथ नहीं आवैगा सतगुरु बताया है॥
इस मायाके नशे में बेहोश हो रहा है।
ए काया भी चलेगी किस नींद सो रहा है॥
माता पिता बिरादर फ़रज़न्द में उरझाना।
इस काम क्रोध मोहमें हर गए हैं पिराना॥
रावण सरीखे हो गए जिनके तपे निशान।
एक पलमें छीन लीने तब तेरा क्या गुमान॥

कहता है मगन रूप टुक समझो यार मन।
हरि राम नाम साँचा सब झूठा है जतन॥

२

आवेंगे महाराज आज भाग हमारे
वारूं तन मन धन सभी औ प्राण पियारे।
नैननको कर नसों पन्थ बुहारे
पधारे घन श्याम सुन्दर नन्ददुलारे॥
वृन्दावनचन्द्र देख नैनके तारे
हिरदे लगी हैं मेरे प्राण पियारे।
माणक ऐसे मिले आनन्द भारे
सुध बुध सब भूल गई काज सँवारे॥

जंगला

मुखड़ा ज्यों टुक देखावो जियराने कों लुभावो
तेरे लोचन सलोने मेरा जो मन हरा है।
सुनिए जो रामबिहारी चितवन तेरी कटारी
लागी कठिन हमारे घायल ज्यों तन परा है॥
नासा लसत मोती निदरेत चन्द्र जोती
अंखियोंको तप्र बुझावो नव रूप सों भरा है।
चीरा सुरङ्ग सोहै अत चित्त कूँ विमोहै
झलके कुटिल छबीली जादूमा कुछ करा है॥
श्रीनन्दजूके वारे राम मखोंके प्राण प्यारे
सांवल सरूप तेरा हियरेमें आन धरा है॥

पीलू

मैं कहा था इस जहांमें मत किसीका हो रहो।
क्या कोई आपना करेगा आपी आपना हो रहो॥
कृष्ण नाम मनमें जो है ना और किसीसे काम है
जो होना था सो हो गया चरणोंमें उसके हो रहो।
जो तुझे जाने है उसकों जान उसका हो रहो
जो तुझे जाने नहीं है उससे न्यारा हो रहो॥
जो तुझे सरे रा करे हमराह उसके हो रहो।
जो तुझे ग़मगीं करे ग़मख्वार उसके हो रहो॥
काम है जो करनेका उस कामका हो हो रहो।
कारबदकारी का बद है तू बेकार हो हो रहो॥
यह नसीहत सुनते हो सुनके ज्यों बहरा हो रहो।
प्रेमरङ्ग देखा जो चाहे देखता हो हो रहो॥

कलिङ्ग

देख दस्तारे बसन्ती साकिए सरशारको।
खुल गई हैं आज अंखियां नरगिसे बीमारको॥
रात रहे जावेगी क़ासिद वक़्त रहने का नहीं
दिल तड़फता है शिताबी ला खबर दिलदारको।
आशक़ोंके रङ्गमें और किसीका काम नहीं
क्या तरह गुज़री मगर मनसूरसें सरदार की॥
जो तुझे मेहदीका शौक़ है दिल हमारा हाथ ले
हर किसीसें पूछ ले रङ्गोंके रंग रंगदारको।
ईबलीसे बेवफ़ाकी मेहरबानो पै न भूल
दिलका दुश्मन है वही जो बात करता प्यारको॥

सोरठ

श्रीरघुनाथजी मेरे कां वरन सके गुण तेरे।
प्रभु प्रथम मीन वपु धार्‍यो संखासुर गरब प्रहार्‍यो॥
ब्रह्माको वेद जो दीने तुम काज सुरनके कीने।
प्रभु कच्छप रूप बनायो मंदराचल पीठ धरायो॥
शूकर नरहरि बपु धारो प्रह्लाद प्रतिज्ञा पारो।
तुम हो बल बामन स्वामी तुम परशुराम वरनामी॥
तुम हो रघुवंश उजागर तुम कृष्णानन्दके नागर।
बुध निकलंक रूप तिहारो हर भक्तनको रखवारो
अवगत गत नाथ तिहारी जाए दास कान्हर बलिहारी॥

२

असोना बसोना बहम देखते हैं
वो इस आईना दिलमें जम देखते हैं।
गमे हिज्रमें उसके जो अपने हरदम
खाना पराया अदम देखते हैं॥
जो जी चाहता है के जा उससे मिलिये
तो ताक़त नहीं इतनी हम देखते हैं॥
न मिलनेका उसके बयां क्या करें हम
शबो रोज़ रञ्जो अलम देखते हैं।

अगर आवे अब नाज़नीं वो शिताबी
तो हम अपने दममें यह दम देखते हैं ॥
अदमसे जुदा होके हस्तीमें आके
न देखे कोई के जो हम देखते हैं ।
तसव्वरमें उसके बहर लब हमेशा
जमाल अपने दिलवर का हम देखते हैं ॥

२

सलोने बांसरी बजाई लगी धुन श्रवणमें आई ।
परी हूं धरन मुरझाई श्याम विन क्यों जिऊं माई ॥
व्याप गई मैनकी वेदन दिवानी हो गई ता छिन ।
कछू सुध ना रही तन मन श्याम रट नाम ले लेकिन॥
बुलावो वेद गुनीजनकूं जिलावे मन्त्र पढ़ उनकूं
कहत सब परत नहीं जानी बिकल तन जान
मुरझानी ।
चले सब गुनी गुन हारी डसी मानो श्याम अहि कारी
उसामें लेत है प्यारी न देखे नैन गिरिधारी ॥
समझ सखी चतुर तू मनमें यही दुख विरहकी तनमें
वैद सखी श्याम मन माने पीर वह मर्मको जाने ॥
कोउ सखी चतुर गई तहंते ले आई श्याम है जहंते
रसिक जब चतुर उठ दौरे हंसे कछु तनक मुख मोरे
दियो जल मन्त्र पढ़ पढ़के गयो दुख काम कढ़कढ़के
तनक मूर्च्छा जो जागी लखे हरि फेर पल लागी
सकुच पट ओट मुसक्यानी लगी जिय रहत
नहीं छानी ॥
कहत सब धन कुंवर नन्दनन्द निरख वलिहार
गोकुलचन्द ॥

जंगला

जगमें आए तो क्या हुवा जो कृष्णनाम न जाना ।
ज्यों सूकर कूकर मरकत सम हरिको नाहिं न जाना
आठ पहर धन्धामें बीतत काम क्रोध लोभ साना ।
एक घरी हरि नाहि न सुमरो जो सोहत सुखप्राणा
अन्त समैं कोउ काम न आवै आखर फेर पछताना
सूर कूर मान ले मेरी हरि चरणन कर ध्याना ॥

रात समैं कहने लगी रो रोके परवानेसे
तू भी जले है वलेकिन मैं भी तो अए जाने मन ॥
देख तो तुझको जला देता हूं सारा वदन ।
आते ही बस जान फ़िदा करता हूं तुझ पे सनम
फिर मैं फिरता नहीं ज़िन्दा तेरे अस्तानेसे ॥

झंझौटी

किस क़दर मुझको नातवानी है ।
बारे सरसे भी सरगरानी है ॥
सारे कूचेमें उस परीरूको आजकल जो लंतरानी है॥
कूचए इश्ककी गदाईमें
किसकी मिरजाई किसकी खानी है ।
महीनों घरमें मैंने रखा उसको
यह बिताई है दया समानी है ॥
तेरा आरज़ू छिपा तो बसमें मुआ
आरज़ो मेरी ज़िन्दगानी है ।
गैरकी दुश्मनीका क्या शिकवा
या रज़ाए अदूए जानी है ॥
पैर रख कर ज़मीं पे कब वह चले
पैहन पोशाक आसमानी है ।
तलवे कांटों से हो गए गिर बाल
खाकसी खाक हमने छानी है ॥
चाहिये ज़ख्म दिल हरे हो जायं
उसको पोशाक आज धानी है ।
दिल भी उससे उठा नहीं सकते
नातवानो से नातवानी है ।
इश्कमें उसके हमको ए गोया
रात दिन शगले ग़ैरख्वानी है ॥

गारा

उसको मुझसे रूठा दिया किसने
मेरे दिलको रुला दिया किसने ।
एक क़लम हरफ़ दोस्ती भूला
हाय उसको पढ़ा दिया किसने ॥

आईने में दिखाके तेरी शकल
हमको हैरां बना दिया किसने।
ए फलक हमतो बैठे हंसते थे
उठते उठते रुला दिया किसने॥
मांगते हो गुनहगार हुए
उससे बोसा लिया दिया किसने।
नहीं मालूम शौक कत्लमें कुछ
सर हमारा उड़ा दिया किसने॥
हवाए नफ्समें कबाबको बू है
मेरे दिलको जला दिया किसने॥
कल तलक दोस्त था वो गोया के
आज दुशमन बना दिया किसने॥

सोरठ

रात हिजरां में तेरी याद थी श्री रोना था।
हो गया ग़मसे तेरे मुझपे जो कुछ होना था॥
अश्कबारी से न थी आंखको फुरसत एक पल
सोते जारी थे कहां खाट किधर साना था॥
मेरे दिलवरसे वहीं जाके हुवे चश्म दो चार।
जो के किस्मतमें बदा दिल के तईं होना था॥
उड़ गया होश मेरा जिसके असरसे झटपट
उसकी चितवन थी न जादू था न कुछ टोना था॥
आस्तीं आँखपर रख दो मेरे नामहने अबस
अशकसे अपने मुझे दाग़ जिगर धोना था॥
खाक ज़र जिनको बराबर है न पूछो उनको
जिसको वह मैल उठा देते उसे सोना था।
दरद ग़म ही तो है फल फूल इस मुहब्बत का
तुराब इश्क़ तुझे दिलमें नहीं बोना था॥

विहारी

यां तलक दिलमें जुदाईकी रवानी रह गई।
वसलमें छूटा न दाग़ उसको निशानी रह गई॥
दूरसे वह मुंह दिखाकर ले गया सब्रो क़रार।
सामने आवे तो ज़िन्दा जांफिशानी रह गई॥
दोस्तो क्या कहिए उसका माजरा फिर इन दिनों
मेहरबानी घट गई नामेहरबानी रह गई॥
खत निकल आया गई उड़ सादारूईको बहार
हमसे अबतक उसको वो ही बदगुमानी रह गई॥
वो तजल्ली है कहां मुश्ताक हो जिसका कोई
नाहक अब यारोंसे उसको लंतरानी रह गई॥
मिट गई लैला मुवा मजनूं हुवा क़िस्सा तमाम
आशकी माशूककी जगमें कहानी रहगई॥
मुन्तज़र सायत करो ग़ाफ़िल न हो हवसे तुराब
आये दिन चलनेके थोड़ा ज़िन्दगानी रह गई॥

सोरठ

हमन हैं इश्क दीवाने हमन का होशदारी क्या।
रहे आज़ाद या जगमें हमें दुनियासे यारी क्या॥
खलक सब नाम अपनेको बहुत कुछ सिर पटकता है
हमन गुरुज्ञान आलम है हमन को नामदारी क्या॥
जो बिछुड़े हैं पियारे सों भटकते दर बदर फिरते
हमरा यार है हमतन हमनको इन्तज़ारी क्या।
न पल बिछुड़े पिया हमसे न हम बिछुड़ें पियारेसे
जहां यह प्रीत लागी है तहां फिर बेक़रारी क्या॥
सांई कबीर हो फारिग़ दस्त दर दस्त दुनिया पर
कि चलना राह नाजुक है हमन सिर बोझ भारी क्या॥

सोरठ—कलिङ्ग

जबते लगी है सजनी भावे नहीं दिन रजनी।
छिन छिन अतन तन तजनी कैसा करूं पायल बजनी॥
जबतक न देखूं श्यामको
नींद नहिं आवे अंखियनको।
जबतक न लगाऊं छतियन सों
तबतक नहीं चैन जियको।
भ्रूकुटी सरस बनी है नयना सिर बीच तनी है॥
सर फेंकत कामधनी है बिरहिन जिय मांझ अनी है॥
कुण्डल कपोल विच झलके
मानो शोभा आनन्द छलके॥

वे तो घूंघरवालो अलकें बिन देखे परें न पलकें ॥
नासा बिच बुलाक सोहै मेरो मन मोह लियो है ॥
व्रजयुवतिन को मन मोहै
ऐसो सुन्दर जग बिच को है ॥
वाके अधर विम्ब विशाला गल बीच वैजन्ती माला ॥
सब सङ्ग सखा लिए बाला वाको नाम है नन्दलाला ॥
शिरपर मुकुट विराजे मानो भानु उदित भए छाजे ॥
जमुनाके कुंजकरोलें कुञ्जन कुञ्जन बिच डोले
कहै बांक बरस राधा प्यारी ललिता सखा सङ्ग बोले ॥

मारठ

लगा है इश्क तुम सेती निबाहोगी तो क्या होगा।
मुझे है चाव मिलनेको मिलावोगी तो क्या होगा ॥
सुनूंगो तान वंशीमें सुनावोगी तो क्या होगा
हुसन चश्मोंके प्याले भर पिलावोगी तो क्या होगा।
चमन बिच आनकर मुखड़ा देखावोगी तो क्या होगा॥
भरम करता है कुल आलम हँसावोगी तो क्या होगा
सजन तुम बिन तड़पता जो जिआवोगी तो क्या होगा
मेरे इस दिल दीवानेको सतावोगी तो क्या होगा ॥
अजब दीदार रोशन है छिपावोगी तो क्या होगा।
चोराकर दिल पराएको दिलावोगी तो क्या होगा ॥
जिगरके दर्दको दारू बनावोगी तो क्या होगा।
रसिक गोविन्द सोने से लगावोगी तो क्या होगा ॥

२

भए तुम नन्दके दानो नई व्रज रीत यह ठानो
चलत हो चाल लङ्गराना तिहारो छैलता जानो।
जमुन तट हों चली पानी मिले मग बीच मोहै आनो
कहत क्यों बात सतरानी
चले क्यों न जावो अभिमानी
कहां तुम फिरत इतरानो कही मेरी नेक नहीं मानो
जोवन गुण रूप गर्व्वानो करें अब तोहे नकसानो ॥
वचन सुनि ग्वालि मुसकानो कही रसरीतको ठानो
रसिक गोविन्द दिल जानो
लगो तोसों प्रीत मनमानी

सरपड़दा

ए तरहदार भला तुमने अजब काम किया
भर नज़र देखने पाए नहीं बदनाम किया ॥
अब खुशी साथ हमें आके देखावो तो जमाल
ज़ुल्फ़ तेरोने मेरे दिलको कैदे दाम किया ॥
तुझको कुछ शर्म नहीं आती है अफ़सोस सनम
तेरी खातिर न कभी मैंने तो आराम किया ॥

जंगला

ले चलो मुझको उस आईनए रुखसारके पास।
खाक उस ज़ीस्त पै जो यार न हो यारके पास ॥
दिले दीवाने के इस होश का दीवाना हूं
फटकता है नहीं हरगिज़ किसी हुशियारके पास ॥
निरगिसे चश्म का मत कर दिले बीमार ख़याल
याने बीमार नहीं रखते हैं बीमारके पास।
सर मेरा तनसे जुदा खूब किया सर सदके
रखना क़ातिल मुझे पर अपनो हो दीवारके पास ॥
मस्त चश्मों से कर आब्दर को हुए हमबिस्तर
है मज़ा इसको यहां बैठे जो मैखूारके पास ॥

भैरवी

हज़ारों ही खूबांको हम देखते हैं
परी गुलबदन तुमसे कम देखते हैं।
तू जैसा था वैसा ही है मेरे प्यारे
वो नादां हैं जो वेशो कम देखते हैं ॥
तुम्हें आईनेसे हमें रफ़्त तुमसे
वह तुम देखते हो यह हम देखते हैं ॥
उतर जाए है दिलसे मेहराबे काबा
तेरे अब्रुओं का जो खम देखते हैं।
तुम्हारा है हमको ख़याल खूाबमें भी
तुम्हींको खुदाकी कसम देखते हैं ॥

भैरवी—जंगला

जो तू सनम हमसे बेज़ार होगा
जगमें जीना तेरा दुश्वार होगा।

चलना होवे तो चल मेरे प्यारे
कबलग बतियां बनावता रहेगा।
जिधर भर नज़र करके देखेगा ज़ालिम
उधर मोती लड़ियोंका बाज़ार होगा॥
मैं जाता हूं दिलको तेरे पास छोड़े
मेरी याद हरदम दिलाता रहेगा।
बुतोंको परस्ती तू मत कर ए ज़ालिम
खुदाकी क़सम तू गुनहगार होगा॥

जंगला

अरे मन हरिकी शरण परेगा
जगमें तेरा काम पलमें सरेगा।
नज़र भरके देखेगा रघुवरको
पलकमें सभी पाप तनका जरेगा॥
गणिका गीध अजामिल हस्ती
उन्हें रघुवर अपना करेगा।
गोविन्द सुमरे सदा सुख होगा
प्रेमरङ्ग प्रभुसों जो रंग रंगेगा॥

झिंझोटी

राम तुम्हीं सों जो हमने देखा
हर एक आलम जुदा हुवा है।
कोई जला कोई गया बहाया
कोई ज़मींमें सुदा हुवा है॥
क्या पण्डित क्या मुल्ला बांचे पोथी
ब्रह्म वही जो खुदा हुवा है।
सबमें तो तुम हो सबको ज़िन्दगी
प्रेमरङ्ग दिल फ़िदा हुवा है।

सोरठ

वो सांवरा सलोना मेरा नज़र पड़ा है।
क्या खूब रङ्गमहलमें बांको अदा खड़ा है॥
सिरपर गुलाबी फेंटा कलंगी को झलक तैसी
कानोंके बीच कुण्डल करमें कनक कड़ा है।
मुरली लकुट विराजे कटि काछनी छवि छाजे
ब्रह्मरङ्ग प्रभुको शोभा लखि चरणों बिच अड़ा है॥

कालिङ्गड़ा

दिल ले गया है मेरा दिलदार हंसते हंसते।
क्या काम कर गया है गमख्वार हंसते हंसते॥
हमने कहाथा ए दिल उस बेवफ़ासे मत मिल
एक रोज़ करेगा तुझको बेज़ार हंसते हंसते॥
यारो ज़रा चलो तो लावो मनाके उसको
वो हो गया है हमसे बेज़ार हंसते हंसते।
मजलिस में आशक़ोंको अबरू तेरीको देखा
आपसमें चल रही है तलवार हंसते हंसते॥

आसावरी

चमनमें जाकर जो हमने देखा
हरेक बुलबुल चहक रहा था।
क़दम क़दम पर तमाम गुलशन
गुलोंकी बूसे महक रहा था॥
अरे तू बुलबुल कल कहां था
अजब तरहका समां जो देखा
इधरका गुलशन खुशीसे हंसता
उधरका सबज़ा लहक रहा था।

देवगान्धार

इश्क़की चोट है भारी कहा तिन जाने संसारी।
लगी दिल लगन मोड़ जाने कठिन यह नेहकी बारी॥
कसक उर पीर थिर नाहीं कलप सम पलक जुग जाहीं
मीनतन प्राण जल वारी नेक जो तोड़ि करी न्यारी।
सती प्रिया पतिके सङ्ग जरई सूर सन्मुख रण लरई॥
चातक चकोर व्रत है सांचा लगी मन आस ले बाचा।
विरह जर जोर सुखकारी मिटे लिये दाग उजियारी॥
दासको आस बलिहारी नेक दे दरस धनुधारी॥

परज

तड़फनेमें क्या मज़ा है क़तल हो प्यारेके हाथ
उसको लज्ज़त को किसी बिस्मिलसे पूछा चाहिए।
जिसने उसका ज़ख्म खाया है उसे मालूम है
तेग़ अबरू की सिफ़त घायलसे पूछा चाहिए॥
यार मेरा जो नहीं मिलता है के बीमार है
बात कहनेकी नहीं घायलसे पूछा चाहिए॥

यारके मिलनेको मुझको कोइ तरह आती नहीं।
किस तरह जाता है दिल बेदिलसे पूछा चाहिए ॥

कलिङ्ग

हमनसे मत मिलो लोगो हमन खफ़तो दिवाने हैं।
खुशीकी राह छोड़ो हैं कठिनमें जिय समाने हैं ॥
छोड़ो खिलक़त वज़ीरोंकी मिलो लज्जत फकीरोंकी
चढ़े किश्ती सबूरीको विरह दे हाथ गहाने हैं ॥
हमन दिन रैन रोते हैं क्या ग़मसे जान खोते हैं
शूलीको सेज सोते हैं इश्क़के या मकाने हैं।
हमन एक जान है जानो पिया हरनामका पानी
आखर को हो गए बानो वलोनामा समाने हैं॥

२

जबतें देखो है सलोनो तबतें नहीं भावे भोनो।
कहो मत बौराए कोनो तन होय रहा मन मोना ॥
दुति साम सलोना दमको
मानो दामिन सों तन चमको।
मलयागिर उर गमको छब छाय रही जग झमको ॥
जबतें देखो भरि नैना तबतें नहीं आवत चैना ॥
मोहि सूझत नहीं दिन रैना रट लाग रही हरि बैना।
कबहूं दिग आय देखावत है
कबहूं कहूं जाय छिपावत है॥
कबहू तन आप नचावत है
कबहूं कहूं दरशन पावत है।
कबहूं चोरी हैं दूध दही कबहूं सखियनकी बांह गही॥
कबहूं उरहन सब जात कही
कबहूं हरि सांचो झूठ नहीं।
कबहूं कालिन्दी कूद परो
कबहूं वसुनाग को सीस धरो॥
कबहूं ग्वालनसन इन्द्र हरो
कबहूं जमला सो भाग डरो।
कबहूं साधुन उर आन बसो
कबहूं कर धनुष हि बाण कसो॥
कबहूं गोपिन घर करत हंसो
कबहूं कलङ्गी सिर मुकुट लसो।
कबहूं सागरको जाय मथो
कबहूं पारथको साज रथो॥
कबहूं द्रोपतसुता लाज रखो
कबहूं गजको जल टेर लखो॥

विहारी

है अजब लज्जत शिकार अफ़ग़न तेरे तीरोंके बीच।
जिसको चरचा हो रहा है सारे नकचीरोंके बीच॥
है खुमारी आंखोंमें बिखरे हुए बालोंके बीच
जिस तरह दो मस्त जकड़े होवें ज़ञ्जीरोंके बीच।
ख़ूनके क़तरेका आलम तू मेरे अश्कोंमें देख
लालके टुकड़े चमकते हैं पड़े हारोंके बीच॥
आके दिल होता है टुकड़े उसका मेरी आहमें
आ गया काफ़र के अब आहोंकी तासीरोंके बीच।
गर मुरक्क़में तेरे हो उस मसीहाकी शबीह।
जान पड़ जावे मुसव्वर सारी तसवीरोंके बीच॥
शामसे मैं बैठता हूं रोज़ फ़िक्रे वस्लमें
अब गुज़रके सुबह हो जाती है तदबीरोंके बीच।
जा नहीं सकता है कोई तेग़ अबरूके क़रीब
दिलको टुक देखो जिगर जलता है शमशीरोंके बीच॥
गुफ़्तगूए यारको क्या बात है क्या बात है
सारी महफ़िलको लगा लेती है तक़रीरोंके बीच।
हो सफ़र तुमको मुबारक सैर गुलदस्ते चमन
लाल औ गुलका न लावो ज़िक्र दिलगीरोंके बीच॥
उस तरहको अब तो सूरत कोई बख़्शिसको नहीं
शायद हो जावे कोई तक़सीर तक़मीरोंके बीच॥

देश

क़ासिदो कुछ भी खबर यारके है आनेको।
जान जाती है चली हिज्रमें दीवानेको॥
आप आवे न कभी ख़त न किताबत भेजे
सैकड़ों तरह देखाई मुझे तरसानेको।

जिरियां मेरी पै उसे रहम नहीं आनेका
जबतलक चश्म मेरो खूं नहीं बरसानेकी।
ए शमा बहरे खुदा कुछ मुझे तदबीर बता
या मुझे जल्द मिलाने या उसे आनेको ॥

यमन—माफ

गम रहा जबतक कि दममें दम रहा।
दिलके जानेका निहायत गम रहा ॥
मेरे रोने को हकीकत जिसमें थी
एक मुद्दत तक वो कागज़ नम रहा ॥
रोते देखा मुझको ता वह हंस दिया
बर्क चश्मे अब्रे बारां थम रहा।
दिल न पहुंचा गोशए दामां तलक
कतरए खूं था ज़मीं पै जम रहा ॥
कहते हैं लैली के खोमे को शिया
उसमें मजनूं का सदा मातम रहा।
अब गुज़र गई शाम होने आई मीर
तू न चौंका अब बहुत दिन कम रहा ॥

अहंग

लाल रुखां सभन बरां सर्व रवां कोस्तो।
सङ्ग दिलां सितमगरां आफ़त ज़दां कोस्तो ॥
अज़ चमन कि रिश्तए नरगिसे दस्तबस्तए कद्र
शिकर शिकस्तए गुञ्चेदाह्नां कोस्तो।
अबरुए तो चु माहे नो बुर्दजे माहे नो गिरो
आफ़ते जानमन मशा फ़ितनए जां कोस्तो ॥
सर्वकदे तो टोद आम आह अफ़लक शोदम
नरगिसे दोद दोदम तावतवां कोस्तो।
खाकानो गुलामे तो मस्त शोद जिजामे तो जाबिद
हद बनाम तो रुहे रवां न कोस्तो ॥

२

मुतरिबे खुश नवा बिगुता जवता जनो बनो
बाद ए दिल कुशा बिगो।
बा सनमे चु लाबुते खुश ब नसीव खिलवते वाश
शिताब कामजू ताज बताज नोबनो।

बरजे है या तेके खरो वरन मदाम
मयखोरी बाद बिखुर बना मौता ॥
साकिए सीन साकेमन मस्त मयम
बियार पेशजू रदकि पुर कुनम सबूता ॥
शाहेद दिल रुबाये मन मे कुनद
अज़ बरायन मन कशो निगारो रंगूबूता।
बादसबा चु बुगज़री बरसरे कूय आपरो
फोसए हा शश बिगुता जवता जनोबनो ॥

कलिङ्ग

सलोनो सांवरो प्यारो सजल मर जलद द्रग कारो।
मुकट शिर चन्द्रका छाजे तिलक वर भालमें भ्राजे ॥
विकट भ्रकुटो अलक छूटो मनो मनसिजने हैं लूटो।
डोलनि छवि श्रवन कुण्डलको लजत दुति भानु
मण्डलको ॥
अधर मुरली सुभग नासा कपलोन चिबुक छवि वासा।
विराजित ग्रीव वनमाला कमल कर कम्ब दुति आला ॥
रुक्म मनिमाल उर सोहे उदर लखि मन मोहे।
रोमावलि असित है नोका जमुनको धारको लोको ॥
ललित नाभो लगे प्यारो अगम जल अलि नयन वारो।
पिताम्बर कटि कसे आवे लखि अनङ्ग नित सकुचावे ॥
जटित मणिकाछनो काछे गुहे घुंघरू ललित आछे।
जुगल जङ्घा हरत मन कों मनो मनिखम्भ निंदन कों ॥
उरू पदकञ्ज अरुनाई झनक नुपूरन सुखदाई।
विशद नख अवलिका भाए नखत गन देखि सकुचाए ॥
त्रिभङ्गी ध्यान जो धारे अवसि भव जलधि सों पारे।
प्रगटि व्रजमें विहारन को लछनदासन उधारन कों ॥

भैरवी

गुलशनमें देखता हूं सब गुलरुखोंमें तू है।
तुझ गुलबदनको प्यारे सारे चमनमें रू है ॥
जिस गुल को तूने चाहा किया ख़ुशबोंसे मामूर।
हर फूल औ कली में गुलगूं सभामें तू है ॥
इस तख़्तए चमनमें हैं गुल तरह तरहके
सब है ज़हूर तेरा सब रङ्गियोंमें तू है।

है नाजनीं तू ऐसा सानी तेरी न कोई
मुश्ताक़ तुझ दरसका इश्क़े. चमनमें तू है।
जलवा तेरे खुशरङ्गका हर गुलमें है झलकता
हर शाख़ बर्ग कहता दस्ता गुलोंमें तू है॥

कलिङ्ग

सांवरे महबूबका दिल कों मेरे ध्यान है
हां मनको मेरे ध्यान है।
देख मुकटको लटक पीत वसनकी चटक
मनको मिटी सब भटक आनके कुरबान है॥
देख नैनोंकी कोर भौंहकी प्यारी मरोर
मनको हरन चितको चोर माधुरी मुसकान है।
बरछी सी तिरछी निगाह करती है सोमें राह
क्यां कर बचे कोइ आह किसका ए अब प्रान है॥
मुख ऊपर मु लों धरे दुखको हरे सुख करे
गुञ्ज की माला गरे कुञ्जके जुह हान है।
कालिन्दीके तीर रास हर तरे करते विलास
वलवल जानकीदास सदके. कोटी जान है॥

भैरवी

रहता हूं सदा तालबे दीदार उसीका।
बीमार हूं मैं निरगिसे बीमार उसीका॥
वंशोकी तेरी तान है या तीरे सीना है
सूराख़. मेरे दिलमें हुवा पार उसीका।
है गोपियोंका हाल परेशां जो बेतरह
दिखलाए कहीं तुरए तर तार उसीका॥
तन उसका है जां उसका है और दोनो दिल उसीका
मैं हूं ए खरीदार है बाज़ार उसीका।
है वृद्धिविहारी जो मेरा सांवरा साहब
करता हूं गुलामोमें मैं इक़रार उसीका॥

खम्माच

सुध मेरी लीजिए आह नन्दनन्दन वनवारी।
विरहका घाव मेरे दिलमें लगा है कारी॥
हरिहो हरिहो हरिहो हरिहो।

याद आती है मुझे जब कि मुकुटकी वो लटक
जान सीने से निकल जाती है सौ-सौ बारी॥
मिस्ल सौदाईके फिरता हूं परेशां अहवाल
जबसें देखो हैं तेरी गेसुए घुंघरवारी।
कौनसी बात पे रीझेंगे वे साहब हमपर
न हमें इल्म न कतेब न कुछ जरोजारी॥
बुधविहारी जो तेरे शौक़में बेताब है दिल
कब दिखावोगे मुझे सांवरी सूरत प्यारी॥

२

आहुए चश्म तेरा मोतिआंदा हार न टूटे।
यह अश्क मुसलमल रहें पर तार न टूटे॥
हम पर विरहना चले सहराको निकल कर
हर चोब पुकारे के मेरा खार न न टूटे।
सैयादसे बुलबुलने कहा रोके क़फ़समें
मैं मर गई बलायसे गुलज़ार न टूटे॥
रातको मजलिसमें सुराहोको न लगा हिचक
प्याले से लगी कहने के ख़ुमार न टूटे॥
मैखानेमें जा शोखोंमें साक़ीने पिया मय
शीसए एकदिन खबरदार न टूटे।
मत भूलियो इन बातों को जाने दो चुप रहो
यह रिश्तये नाज़ुक है मगर तार न टूटे॥

मारू

रङ्गीली कान्हकी वंशी पड़ी धुन कानमें प्यारी।
दर्द विरहा भयो जालिम कहरसो जान पर मारी॥
परी बेहाल सुनसुन कर जमीं पर प्रेम मतवारी।
कहे मुखसे कछु निकसे कछु मैं वारी गिरधारी॥
सभी सखियां कहे एसे तुजे को पीर है क्यारी।
कहे तू क्यों नहीं हमसे तेरे आंखोंसे जल जारी॥
कहूं मैं पीर क्या तनकी तुमन पे ना टरे टारी।
लगन जो को लगी जिससे सोई मेटे विथा सारी॥
लिया चाहो धर्म्म तुम ज्यो मिलावो आन वनवारी।
तुम्हारे पाय पर परके जानकीदास बलिहारी॥

सोरठ—पद

बिपिनविहारीको प्यारो वंसी
हमारो बैरन बजो है वनमें ।
मदनमोहन बसकरन मन्त्र पढ़
हरत चित्त मन सुनत श्रवनमें ॥
याकुल व्याकुल सुन सकल मधुर धुन
परत न कल पल फिरत भवनमें ।
न जानं अब क्या करेगो ज़ालम
अगन लगा कर बिरहको तनमें ॥
है कोई ऐसा जो जा सुनावे
तरम जो आवे पियाके मनके ।
ऐसा न कीजे जी दान दीजे जो
लाय लीजे लगा वटनमें ॥
सुनत सहेली चली अकेली
तड़फ तड़फ जैसे बिजुली घनमें ।
सो पूछो जाकर कहा जुटाकर
निकट बुलाकर सरस वचनमें ॥
सुनत बिचारो बिथा करारो
सरत बिसारो जो तन आपनमें ।
सखो पकड़ भुज ले आई हरिको
जहां है प्यारो खड़ी धरनमें ॥
पकड़ जुगल भुज प्रिया प्रीतमको
आनन्द उपजो सदन मदनमें ।
जानकीदास छवि निरख दोउन की
हरखि हरखि सुख लेत दृगनमें ॥

सिन्धु—भैरवी

दुनियाके जो मज़े हैं हरगिज़ यह कम न होंगे ।
चरचे यही रहेंगे अफ़सोस हम न होंगे ॥
आग़ाज़, इश्क़ हीमें शिकवा बुतोंका ए दिल
टुक सब्र कर अभी तो क्या क्या सितम न होंगे ॥
बुलबुल का दाग़ दिल से हरगिज़ जुदा न होगा
कल हाथ दोनों जबतक मेरे कलम न होंगे ।
दिल लेके सबका साहब मजलिससे उठ चले हो
कोइ दम में आशको के सोनेमें दम न होंगे ॥
ज़ुल्फ़ोंको तेरी निस्बत सम्बुलसे कम नहीं है
जब चाहो देख लीजो यह पेच ख़म न होंगे ।
सुनता हूं बाद मेरे दिले दख़ल गैर का है
तुमसे अलाहदा हम कभी एक दम न होंगे ॥
पावे हैं खाके कर दो मुझको ज़मींके अन्दर
सुनले हो गरचि हम पर रञ्जो अलम न होंगे ।
लगती न पलक मेरी निशदिन सवार है
आंखोंमें मेरे जबतक सारे क़दम न होंगे ॥
यारो गिरफ़्तगीको क्यों राहें बतरको क्या
कुरबान हुवे गुलपर गुलको अदम न होंगे ॥

भैरवी

रहता हूं सदा तालबे दीदार तुम्हारा ।
मुद्दतसे मेरा दिल है गिरफ़तार तुम्हारा ॥
उम्मेद यही शामो सहर रखता हूं दिलमें
रञ्ज लो दिखलावेगा दीदार तुम्हारा ।
महताब भी ख़िजलतसे तरख़ पे है घट गया
क्या ख़ूब है मुखड़ा यह तरहदार तुम्हारा ॥
दिल देने को तयार हैं कितने ही ख़रीदार
क्या गर्म है यह हुस्नका बाज़ार तुम्हारा ।
यारोंको तो मुखड़ा ज़रा दिखलावो नाज़नीं
देखा करें यह हुस्न सुबह शाम तुम्हारा ॥
यह बात सुनाओ है तो हम जावें खुननको
है नाज़ नहीं ज़ुल्फ़का हर काम तुम्हारा ॥

भैरवी

कैसा सितम यारो किया बाद सबाने ।
गुनचोंको है खिला दिया बाद सबाने ॥
सिर सङ्गसे टकराया इस ग़मसे हिनाने,
किस तर्फ़ है भुला दिया बाद सबाने ।

२

जमशेद कहां जम कहां ओ कहां दारा
दुनिया है मकारा

बस भूल गये तुम भो उस हक़का सहारा।
उस तर्फ़से भूल गए सबको हमदम
रब्बा विना न कोई अपना दुनिया हुवा सपना
कहता है मदन हैदरो हैदरके करमसे
ए तेरा कार जहां जाए जब करम करे करतारा॥
दुनियामें तेरा कोइ नहीं मन कहत हो पुकारा।
हरनाम उतारा भवके जो पार पोमें
हर का है सहारा॥

३

तुम बिना दिल नहीं लगता है मेरो जान
ए मेरे दिलजां।
मानिन्द शेर फिरता हूं हर शहर बियावां
नहीं डरता हूं मैं आपसे लग जायगी कहां॥

४

जाते हो पास गैरोंके सुनता हूं मैं हरदम।
वहां होता है मुझे गम
ऐसा जो कोई करता प्यारे जौर ओ सितम॥

रेखता

आज मोहन मोह लई बांसरी बजायके।
हरि हरि सब करत जात गागर शिर धरत जात
नीर नार भरन गई सुध न रहीं सरीरकी।
वन वन सब ढूंढ़के कटाय डारू बांसरी
ना उपजे बांस नाह बाजे बांसरी॥
मोर मुकट सिरपे धरे हाथ लई बांसरी
पेमसोंकी राखे निकास लई सांसरी।
विरहिनोंकी बसमें करी कामकों जगायके॥
ग्वालनी सब मोह लई राधिका रिझायके।
सूर प्रभु मगन भए इतना गुण गायके॥

रेखता—कलिङ्ग

मोर मुकुट अली अलक तिलक
कुण्डल की लटक फिर तैसेही।
मेरो मन मोह्यो नन्दलला चोरेकी चटक फिर तैसेही॥
भाल विशाल विशाल दृगन दुति
पलकनकी गत तैसेही।
तिरछी चिनवन चित चोर लियो
भौंहोंकी मटक फिर तैसेही॥
लोल कपोल मोल लोनो मन
शुक नासा छबि कौन गिने।
हांसी फांसी सम विन्दु लसें
दांतो की चमक फिर तैसेही॥
अधर चमक रसना ठोढ़ी वर
गर कौस्तुभ मणि कण्ठ लसे
भुजदण्ड सुदण्ड करो वे मानो पट पीत-दमक फिर तैसेही।
कमला भृगुकी पदचिह्न लसे
वक्षस्थल उर रेख महा नाभी सर ओ वनमाल बन्यो
मणिमाल झपट फिर तैसेही॥
कट केहरी जङ्घ कछे कछनी
ओ चाल गयँदन की निदरी जानु प्रभानु चरण पङ्कज
मन मधुर अटक फिर तैसेही।
वेनु बजावत आवत गावत सुख उपजावत मैन ठगे
सांवल सोअङ्ग त्रभङ्ग भेष नटवरकी भटक फिर तैसेही॥
अङ्ग रङ्ग तन मन पगे जिय नोछावर कोजे
सङ्ग दास मुकुन्द अनुपम शोभा
उपमाकी भटक फिर तैसेही॥

राग अङ्ग—ग़ज़ल अंगरेज़ी

संगष्टर सुइट विगिन दि ले।
एवर निउ एण्ड एवर गे॥
ब्रिङ्ग दी जय इन्सपायरिङ्ग वाइन।
एवर फ्रेश एण्ड एवर फाइन॥
विइटम् ए हारट एण्ड गिल अस।
जेण्टली लेट दी मोमेण्टस् पास॥
कौस ई ष्टीलिङ्ग फ्लैन यू मी।
एवर फ्रेश एण्ड एवर गे॥
जेण्टल व्वाय हुज़ सिलवर फ्लोट।
नो मोर सुब टु केडेन्स् खोट॥
फ़िल अस कुइक दो जिन रोश वाइन।
एवर फ्रेश एण्ड एवर फ़ाइन॥

क्वाइ व्वाय लाइफ् डेडो ओसओ अरस।
व्वाइथ ओट वाइन सम डीउसियो अरस ॥
दीज् विल मेक टाइम पास
एवर फ्रेश एण्ड एवर गे ॥
टु मि दी ख्रोट एनचेण्टिङ्ग मेट चारमस।
डीवोट्स देट नेवर फेड ॥
चारम टेम्श पाथर हरपोटससाग।
एवर फ्रेश एण्ड एवर पाग ॥
जिफाइरस ह्वाइल यू जेण्टली मूव
बाइ दो मेरीगोन आफ, माइ लव।
सफ्टली हाफिज सम इसप्टेस रिपोट
एवर फ्रेश एण्ड एवर ख्रोट ॥
ओ माइ डियर, गड नो मैन कैन सो डियर
इज नो मोर वट वान गड टु आई ऐम प्रे।
ओ लर्ड हियर माई दीज् पूअर वर्ड्स नो मैन कैन सी
धध धांधांधांधांधांधांधांधां तरोललल्ललल्ननंनना नंन
नंनाननननना ॥

झंझौटी

दीवाना किया बज़्मसें शम्र आके किसीने।
बेहोश किया चहरे को दिखलाके किसीने ॥
कुछ दस्त दराज़ी का इरादा किया मैंने।
झटका वहां हाथ फिर शरमाके किसीने ॥
रखियो मेरी तुरबत पै गुले दस्तए निरगस।
मारा मुझे दीदारसे तरसाके किसीने ॥

२

किसके घर रात रहे आए हो शरमाए हुए।
सोने को चाक किए दिलमें हो घबराए हुए ॥
जिसका दिल लेना है मञ्ज़ूर किफायतसे कहो।
पर फैलाके जो तुम बैठे हो मचलाए हुए ॥
आपसे मैं नहीं आनेका तेरे दरको तरफ।
दिल ले आना व लिये जाता है दौड़ाए हुए ॥

झंझौटी—एकताला

काहेकूं बांधत तीर कमनिया।
भौंहें बनो कमान तुमारो
पलक बन्द डर कसो कमनिया ॥
सम्त हृदय मृग वन वन ढूंढत
सुनि सुनि मारत शब्द रमनिया।
राम सखे तू घायल कीता पुहुंचाए हैं सुरगनिमनिया ॥

झंझौटी—रेखता

समझ मन जानिको मैं बदनामोमें क्या है।
गोश कुतब अब्बिया सब ऐसे कहता है ॥
भूखे प्यासेको देना सङ्ग यहो चलता है।
प्यारेको राखो याद मौलाको रजा है ॥
छके हैं जे दरससे उनको शराब क्या है।
सुखसों सहना हरेक दुखमें प्यारा आता है ॥
जिन्दगानी जाना उसका जो नेह निभाता है।
दिल मिलाता दिल सेती जिनसे छाना रखना क्या है॥
जो न चाहें अपने तांई जिनको चाहना क्या है।
वल्लभ सो लगा नेहा वाही दिलमें भाता है ॥

झंझौटी—तिताला

दिल कहीं मेरा गिरफ्तार हुवा चहता है।
फिर मुझे इश्कका आज़ार हुवा चहता है ॥
वो तो परदेसे निकलता नाहीं हरगिज़ बाहर
जिसका तू तालबे दीदार हुवा चहता है।
पान खा खाके लबे बाम फिर वो आने लगा
खूं हमारा पसे दीवार हुवा चहता है ॥
देख लेने दो ज़रा ओर भी मुझको यारो
बन्द अब रोज़ने दीवार हुवा चहता है।
गुलपे गुल खाए जो फुरकत से तेरे सोने पर
सोना अब तब कोई गुलज़ार हुवा चहता है ॥
बात करता है रुकावटसे खुदा खैर करे
मुझ पे यारो सितमे यार हुवा चहता है।
ऐसा भड़काया रकीबोंने उसे वाय नसीब
दुशमने जां मेरा दिलदार हुवा चहता है ॥
कहिये उस परदेनशींसे तेरा खातरके लिए
आज रुसवा सरे बाज़ार हुवा चहता है ॥

बिहारी

हाथ फिर वहशतने फैलाए गरेबांको तरफ.।
फिर मुझे जाना पड़ा कोहो बियाबांको तरफ. ॥
फिर बहार आई गुले रुख़सार याद आने लगे
उड़चला दिल मिस्ल बुलबुल फिर गुलिस्तांको तरफ
आस्तीं फिर आंसुओंसे आह तर होने लगी
फिर उमड जाने लगे यह अश्क दामांको तरफ ॥
फिर यह दिल मायल हुवा उस काकुले ख़मदारका
फिर चला दौड़ा हुवा दीवाना जिन्दांको तरफ़।
राग रङ्गमें रङ्ग हुवे मस्ताना हो मस्तानेके
इश्क़ ख़ूबांको बहार देखो परस्तांको तरफ. ॥

झंझोटी—पश्तो

कहते हैं जीन ब्रह्मको के आद अमर है।
उसके नहीं फ़रज़न्द न मादर न पदर है ॥
दिन रातको है रोशनी वह शमस कमर है।
हर जापै हर समयपै जिसका यह असर है ॥
तहक़ीक़. किया ख़ूब वह हर घटमें रम रहै।
व्यापक है ब्रह्म कृष्णानन्द व्रजमें रम रहै ॥

ग़ज़ल—बिहागी

आराम कहां दिल तो पड़ा ग़ैरोंके पाले।
मुफ़लिस को खुदा इश्क़के फन्देमें न डाले ॥
डाले तो जनाज़े. पै खड़ा इश्क़ पुकारे।
अब तुम तो चले मुझको किया किसके हवाले ॥
अरे हां रे जा जा बात नसीहत को ज़रा मान।
अब टुक तो ज़रा देख ले यह चलते हैं नाले ॥
जो दर्द सताना है सताके तू हंसा ले।
क्या तू न पड़ेगा किसी बेदर्दके पाले ॥

२

मालक कुल आलमके हो तुम सांचे श्रीभगवान।
थावर जङ्गम पावक पानी धरती वो आसमान ॥
सबमें जलवा तेरा तेरी कुदरतके कुर्बान।
सुदामाके दरिद्र काटे पांडेको पहंचान ॥
भई दो मूठी चावलका चाबी बख़शी दो जहान।
महाभारतमें रथ हांका अरजनकी पहंचान ॥
उनने देखा अपने कुलका पटका तोर कमान।
कौन है मरता कौन है जीता यह तेरा अज्ञान ॥
तैं तो चेतन अजर अमर है जो गीतामें ज्ञान।
लख चौरासी ढूंढ़ है आया कर हरिको ध्यान ॥
हरविलास आसा चरणनकी क़ुदरतके क़ुरबान ॥

कलिङ्ग

क़त्ले उश्शाक़ किया करते हैं।
बुत कहीं खौफे. ख़ुदा करते हैं ॥
सिर मेरा तनसे ज़ुदा करते हैं।
दैरको आपो दुआ करते हैं ॥
मर गये पर हदफ़े तीर यार
जा बजा तोदा बना करते हैं।
नातवानी ने दिए पर मुझको
जो परीको हुमा करते हैं ॥
ख़ून रोती है चमनमें बुलबुल
हम जो फुलोंसे हंसा करते हैं।
रोज़. दो चारका करता है ख़ून
दस्तो पा सुर्ख़ रहा करते हैं ॥
राज़. महशरसे डरे क्या आशक़.
एसे हंगामे हुवा करते हैं।
दहने ज़ख़्मसे उस क़ातिलको
तेग़को चुन लिया करते हैं।
हम बने चांदके हाले गोया
गिर्द उस महके रहा करते हैं ॥

बिहागी

सन्दली रङ्गपै मैं मर हो गया।
दर्द सर किसका यां सर हो गया ॥
क्या लिखूं खत के तेरे ख़ून निकला।
कहियो क़ासिद कि वो दफ़्तर हो गया ॥
ए मसीहा न खबर ली तूने।
वो जो बीमार था सो मर हो गया ॥

पैर तो मैंने अदब से न धरे ।
राहमें तेरो मेरा सर हो गया ॥
वो मुआ कौन करेगा यहां प्यार ।
आपके कूचेका वो यार हो गया ॥
ए मसीहा मैं करूं क्या जीके ।
पाससे मेरे दिलबर हो गया ॥
जान भी मेरी गई हमराह ।
नामे क्या लेके कबूतर हो गया ॥
अपने कातिलका लड़कपन देखो ।
देख कर खूंको मेरे डर हो गया ॥
कत्ले उश्शाकसे अब न कर तहे तेग ।
अबरू बाज़के अन्दर हो गया ॥
और गैरोंसे वो क्या कहता है ।
एक सिर थांभे मेरा फ़िकर हो गया ॥

गरक शोशे मन अमरे दास्ते यार वकाय गुज़रे दास्ते ।
आंके जहां रवागी जिन्द करद काम बुमन
हमनज़रे दास्ते ॥
रफ़ने ओ परवाने ओ मैशुदे शमा गर बाल परे दास्ते ॥

तिताली—खमाच

रात उस कूचेमें क्यों कर मेरा जाना बनता ।
देख लेता जो कोई खाक बहाना बनता ॥
मेरी औ तेरी मुलाकात जो होतो जानो ।
दुश्मने जान मेरा सारा ज़माना बनता ॥
डर है और खतरा मुझे खौफ़ है जासूसोंका ।
बने कब उससे तुझे ले के रवाना बनता ॥
हम सफ़ीरोंमें भला कौन सा होता अपना ।
दिल लगाना न कहो कैसे लगाना बनता ॥
सोहबते यार अगर होतो मुझे वाय नसीब ।
फिर न ताज़ीस्त मेरा दिल यह दिवाना बनता ॥
मुतरबे बज़्ममें उस महके किसी तौरसे आप ।
यह गज़ल उस बुते रानाको सुनाना बनता ॥

सोरठ

कहो मन राम औ सीता । जनम यह जात है बीता ॥
जैसे घुन काठको खोवे । तैसे यह कौन तन होवे ॥
इनको निपुन पति सङ्गी । न ध्यायो नाम तिरभङ्गी ॥
कठिन है जाव जमबाटो । लुटे जहां निज मत्याना ॥
जमा मत जात हो हारे । परे गरे तांक अनि भारे ॥
लिखा जब हिसाब लेवेगा । वहां का जवाब देवेगा ॥
रहो है भूल मायामें । न चीन्हो चोर कायामें ॥
मखन एक कोर जब पावे । सदा गुण रामके गावे ॥
कृष्णानन्द गावत यह ताना ।
सुन्दर वदन मदन मन मोहन सों जो लागा ध्याना ॥

झपाली

प्यारो दधि बेचनके मिस आवे ।
गरब गहीलो आहि ग्वालनोरे तोरो गत कोउ न पावे ॥
उझकत झांकत बोलत सुनावे ।
पतको लज्जा राखे अचरा छुड़ावे ॥
मन चितवत आनंद मन भावे ।
कबहुं दौरत कबहुं परावे काहूके दधिको मटका गिरावे ॥
श्री झनकत सब गोपियनमें कर धर बीन बजावे ।
सूरदास स्वामी तुमर दरसकूं रीझ रीझ गुण गावे ॥

एकताला

अरे महरवारे मोरो डालिया ले आवो ।
जादु ले चलो मोरे पियासों मिलावो ॥
आइला दिन गवननके अब मोपे रहिनो न जाय ।
याह मोरो पीर पावो ॥

लावनी—झपाली

भजन कर मजन कृष्ण केरा ।
मिट जावेगा तेरा लख चौरासी का फेरा ॥
अरे मन तू मत कर अभिमाना ।
अमर नहीं कोई इस जगतमें कर ले हरि ध्याना ॥
सचर अचर सब जीव पड़ा है काल जाल माहीं ।
हरि भज लीजे विलमन कीजे कर चित एक ठाहीं ॥
परे जब काल आय नेरा ।

रहे धन दौलत माल धरा सब लाखनका डेरा ।
छोड़ चलेगा छिनेरा आखर कोई नहीं तेरा ॥
राम रुपैया रोक अमोलख खरचे नहीं खुटेरे ।
हस्तिराम हरिनाम हुण्डियां लिखि दई गुरु तूं ठेरे॥

लावनी

अजहूं समझ मन मेरा मूरख ए दिन फेर न आवेगा।
हरि बिन बिरथा जनम जात है फेर पाछे पछतावेगा॥
बालपना सब खेल गमाया लरकनके सङ्ग जाता था ।
तरुणापन तरुनीमे खोया विषे वासमें रहता था ॥
बिरधपना बेकाम न खोना राम नामसे ले लेना ।
भाव भक्ति कर जुगत समैतो खूब तरे गोविन्द गाना॥
आगे जरा अवस्था आवे जामें बहुत दुख पावेगा ।
हाड़ मासमें सूल पड़ेगा जब क्या गोविन्द गावेगा ॥
कृष्णनाम सों मुक्ति होवै रामनाम सों तरना है।
हस्तिराम हरि सुमरण कर ले
तासों भवपार परना है ॥

२

सुफल जन्म तेरारे मिटे चौरासी का फेरा ।
कर दरशन गिरिधरन राजको सुफल जनम तेरा ॥
पूरब देशमें पुरी जो मथुरा गोकुल का नेरा ।
सीतल जल ठकुरानी घाट का जहां वैष्णवका डेरा ॥
सुन्दर मन्दिर सात सरूपके देवल ऊंचेरा ।
ध्वजा फहरके नौबत बाजे घड़ धो घड़धो सवेरा ॥
नर नारी हिल मिलके आवें गुण गावें हरि केरा ।
दरसन पावे आनन्द आवे तरे भवसागर बेरा ॥
हरि हरि करतां हरे सकल दुख सुख होय अधकेरा।
कृपा करो हरिदासके ऊपर राखो चरणन नेरा ॥

३

गगरिया उतारेरे बनवारी । तेरी सूरत पर वारी ॥
ले गागर सागरकों निकसी कङ्कर मारी गिरधारी ।
गगरी फूट गई चुनरी भीज गई
सास ननद घर दे गारी ॥
उड़रे कागा जावो दक्षनकों खबरां ले आवो प्रीतमकी।
प्रीतम मेरा फूल गुलाबी मैं कलियां सुख दरसनकी॥

रखनेवाला सोई है बैल वाला ।
आसन बनारसीमें डाला पहरें गल विभूत मृगछाला
वर देवेकूं बड़ो दयाला ॥
तुम तुम तुम तुम डमरूवाला
सोहे त्रिशूल और मृगछाला ।
बाघम्बर अम्बर सोहे शिव जटाजूट मन मोहे ॥
रागरङ्ग करत है गाने कृष्णानन्द गावत है ताने ॥

५

कानने बजाई बांसरी मुझे बिलमाईरे ।
सखी जब जमुनाका नीर भरन कूं जाईरे ॥
एक दिन जल भरनेकुं चली सोस धर मटकी ।
मोहे मिले नन्दके लाल बांह मेरी झटकी ॥
मेरे तोरा हार सिङ्गार चोली सब तरकी ।
मैं तो गिरि रपटके पाव फट गई मटकी ॥
मैं गिरि धरन पे जाय सखी सब सटकी ।
मैं तो हो गई हाल बिहाल देख छब नटकी ॥
मैं गई सुधबुध बिसराय सरम नहीं रहीरे ।
मोहे मिला नगर का लोग भरम सब गईरे ॥
मेरी सास सुनै और ननद सोर सुन करई ।
सुन पावे गुरुजन लोक तासों मैं डरई ॥
जब देख बहूका हाल सास तब बोली ।
बहू कहां फटा तेरा चीर अङ्गका चोली ॥
बहू कौन मिला बलवान भरी मेरी ओली ।
बहू बड़ी भई है खैर कंथ घर पोली ॥
मेरा पुत्र बड़ा जलजाल सांचो कहु मेरे ।
एरी कुलकूं लगाई दाग लाज नहीं तेरे ॥
जब कहत बहू सुन सास अरज एक मेरी ।
या गोकुल ब्रज की नार बड़ी छल हेरी ॥
कहने लागी सब सवत देन लागी गारी ।
मेसों झटझोटा हुवा चोर तहां फारी ॥
नवल जबरका सङ्ग मुझे दे मारारे ।
बहू कहे चतुराई सों बात समारीरे ॥

यह छलबल सों कर बात मास समझाईरे ॥
मास किया बड़ प्यार अङ्ग भर लाईरे ।
बहु औगुन लिये छिपाय चतुरताईरे ॥
कहै केसव दास बनाय सगुण ब्रह्मताईरे ।
कृष्ण पूरन अवतार पार नहीं पाईरे ॥

कहरवा

न बजावो मोहन मुरली जादू भरी तोरी तान ॥
जैसी तोरी बंसीकी बाजन तैसाई तेरो गान ।
कुलको कलङ्क लगावत धावत सुन कान ॥
छांड़ आई पीवत बालक छोड़ मह्ीको मथान ।
प्रेमरङ्ग प्रभु सङ्ग निशदिन खेलन परो बान ॥

ठुमरी

सिकियाके चोरी चोरी बंगला छवाव
तू खिरकी रखतीरे गोरी ।
गोरियारे गोरियाके करो सुरतिया
सइयां मोरा भुललीरे गोरी ॥
बंसवा कटाय कैसे बंगला छुवावतो
खिरकी रखतीरे गोरी ।
गोरियारे गोरीयाके करो सुरतिया
सइयां मोरा भुललीरे गोरी ॥
सोवनाके थरवामें जेवना परोसतो
घियना डारतीरे गोरी ।
गोरियारे गोरिया जेवईको बेरिया
सइयां भुललीरे गोरी ॥
चुन चुन कलियां मैं सेजियां बनावतो
फुलवा डारतीरे गोरी ।
गोरिया सुतईको बेरिया सइयां
मोसों रुटलीरो गोरी ॥

लावनी

नन्दनन्दा मोहै प्यारे कृष्ण गोविन्दा ।
वृन्दावन रास रचन्दा सुर नर मुनि सब वृन्दा
करे रासविलास आनन्दा ॥
घर घर हरि माखन खावे व्रज गोपानके घर जावे
दौरो जो आप वो धावे ।
छुम छननन ठुमकत आवे तत थेई थेई नाच नचावे
घुटुरन जलदी हरि धावे कृष्णानन्द लावनी गावे ॥

विहारी—खम्माच

आंख उस अबरू तमासे जो लड़ाना बनता ।
दिल मेरा नावके मिज़्गांका निशाना बनता ॥
सामने क़ातिले शफ़्फ़ाक़ के जाना बनता ।
सिर तहे तेग़ अजल काश झुकाना बनता ॥
अपना बेगाने का करता न कभी मैं शिकवा
यार बेगाना अगर वो न यगाना बनता ।
याद होतो मुझे गर क़िस्सए शीरींफ़रहाद
हाल दिल उसको शबे वसल सुनाना बनता ॥
सखी अनजाममें होता न अजलसे साक़ी
वार एक और जो क़ातिलका लगाना बनता ।
गोश अलताफ़से सुनता वो अगर हाल मेरा
हरके शिकवाको न तक़रीर सुनाना बनता ॥
दस्तपा सुरख़ मेरे ख़ूनमें करना क़ातिल
शौक़ यह रङ्ग हिना का तो बहाना बनता ।
रश्क शानासे न होता मुझे दर्द शाना
मेरा शाना जो तेरे ज़ुल्फ़का शाना बनता ॥
दोस्ती यारको उससे ज्योंहो होतो मजनूं
दिलको फिर सारे जहां सेतो छुड़ाना बनता ॥

सावनी—भूपाली

आज हम देखे गिरिधारी ।
सुन्दर वदन मदनकी शोभा चितवन अनियारी ॥
बजावै वंशी मदुवनमें ।
गावत तान तरङ्ग रङ्ग अति बैठे ग्वालनमें ॥
सोहनी मूरत है प्यारी ।
निशदिन दिलमें बसो रहत है टरत नहीं टारी ॥
प्रेम दो लगन लगी जगमें ।
आन मिले दिलदार यार दीदार करो जगमें ॥
सांवरी सूरत है प्यारी ।
वंशीवट कट निकट जमुनतट विरतत बनवारी ॥

लावनी कहते नटवरकी ।
कृष्णानन्द आनन्द मगन भए श्रीराधावरके ॥

लावनी—विहारी

गिरिधर मुरली बाजे कृष्ण तेरी
आवाज़ सुन कर मैं दौरी ।
बीजल ज्यों असमान चली बादल ज्यों गाजे गहरी ॥
नागड़ दम नागड़ दम कदम कदम तरे
बाजे बांसरी मोहनकी ।
रिमझम रिमझम मुरली बाजे
तट जमुना पै लाग झरी ॥
हातमें लठिया कांधे कमलिया कृष्ण चले वृन्दावनमें ।
सभी गवाले धेन चरावें हिलमिल बैठे कुञ्जनमें ॥
तट जमुनाके तीर कृष्णजी गए जल जमुन न्हानेको ।
रिमझम रिमझम मुरली बाजे
लगी लाल गुण गाने को ॥
हो नन्दजीके व्रजवासी कन्हैया
हमसे कर गए बहाना ।
दूध दही सब छान जो लीन्हो भए हरी मस्ताना ॥
कृष्णानन्द रहत निशवासर हरिके चित ध्याना ।
तन मन धन सब अरपण कीन्हे हरिचरन मन माना ॥

२

सुफल जन्म तेरा रे मिटे लख चौरासीका फेरा ।
कर दरशन गिरिधरनराजका होय पार बेरा ॥
व्रजमण्डलमें पुरी ज्यों मथुरा गोकुल के नेरा ।
शीतल जल ठकुरानी घाट का तहाँ वैष्णवनका डेरा ॥
सुन्दर मन्दिर सात सरूपके देवल ऊंचेरा ।
श्रीनवनीत प्रिया तहाँ राजत जशोदा नन्दकेरा ॥
मथुरानाथ मनोहर मूरत विठलनाथ मेरा ।
दीनदयाल द्वारकानाथ है गोकुल चन्द्र नेरा ॥
गोकुलनाथ अनाथके नाथ है कृपादृष्टि हेरा ।
मदन मोहन सोहन सूरत है बालकृष्ण घेरा ॥
कल्यानराय त्रभङ्गी नटवर मुकुन्दराय हेरा ।
श्रीगिरिधर गोस्वामी सेवा करे गोपाललाल केरा ॥
श्रीवल्लभ श्रीविठलनाथ प्रभु विष्णु स्वामी मेरा ।
नरनारी मिलजुल सब आवैं दरस पावैं हरि केरा ॥
प्रसाद पावैं कीर्त्तन गावैं पुष्ट मारग केरा ।
रामसागर आनन्दमें निशदिन तरे भवसागर बेरा ॥

लावनी—ढंग

गगरी भरीरे दही दूधनकी ।
मैं बेचनकुं चली नजरां पड़ीरे तेरे कन्हैयाकी ॥
मुस्कल हुई जानेकी चोगाली लगावता गेंदेकी ।
छोड़ देत काछनी कड़ा लिया रे तन वदनेका ॥
अजब खियाल कन्हैयाका जशोदा देख ले
तेरे फ़रज़न्दकी ।
दूसरी ग्वालनी इमकर बोली
देखे जशोदा मेरी वृन्दावनमें भई अकेली ॥
के मेरे शिरपर की गगरी तेरे कन्हैयाने ढोरी ।
सारी भिजोई ज़रतारनकी सास मारत वह दौरी ॥
तातें लाग्यारे कान्ह हंसनेकी ।
तीसरी ग्वालनी इमकर बोली मैं देखे जसुधा मेरी ॥
ताँ ठाड़े वनमाली मुजकूं केतारे सुन अलबेली ।
देखुं चम्पाकली हार लियारी गजमोतिनकी ॥
अजब ठिकानारे गोकुल नगरी ताँ ठाड़े वनमाली
बंशी बजावत सारङ्गधारी ।
रिमझिम रिमझिम मुरली झननन तानन सी तननन
ताथेइ ताथेइ ताता नाचतरे रासमें रङ्गिनकी ॥

२

शिव शङ्कर जूकी लीला परमसुलीला ।
चढ़ा बैल व बाघ तबेला दुर्गा अपने पास कबीला ॥
गणेश बालक अजब छबीला रङ्ग रङ्गीला ।
बूटेदार बाघम्बर पीला तापर गज चर्म्माम्बर गीला ॥
गर सी गरी बन्यो है लीला मरकत मणि
जों है नीला ।
भोलानाथ चित्ततें ढीला सीस गङ्गा जटा सलिला
तापर अमृत राय वसीला ॥
रसिक रसीला शिव बमभोला छैल छबीला
रङ्ग रङ्गीला ॥

मेरी लाडलीके मन्दिर आगे नाचेरी गणेश।
पग दोनों चौरासो बाजे हाथ कमलका फूल॥
लम्बी सुण्डको लटक बतावे एकदन्तको हल।
तिसरे हाथमें वेद लिये है चौथेमें तिरशूल॥
सब पञ्चनको राम राम मेरे गुरुको है आदेश।
थुङ्ग थुङ्ग तकथुङ्गा धौलाङ्ग थेई थेई ताता थेइ थेइ तत्॥

लावनी—जंगला

मेरी मदन मोहन सों प्रोत लगीं दोउ अंखियां।
मोहे विन देखे नहीं चैन रैन दिन सखियां॥
मैं बंशोवट पनघट भरने गई पानी।
मेरी नजर पड़ गया आह श्याम दिलजानी॥
जब आह आह कर नार भई बेहाले।
तब पड़ी धरन पर जाय डसी जों काले॥
सब देख प्यारी का हाल सखी भई जरदी।
कहे ढूंढ़ ले आवे जल्द श्याम बेदरदी॥
चल नन्दनन्दन से जायके कहा सहेली।
चली तुम विन रही है सूख मदनकी वेली॥
जब सुनति आए नहीं कहा होस विसराने।
जब चले दौर जो जा कोइ आग बुझाने॥
तब प्यारी प्यारी कहे उठा श्याम गल लाए।
जब सखी मगन भई जानकीदास सुख गाए॥

२

ए री ग्वालनी कहती जशोदासे।
संभाल अपना गोकुल कन्हेया जुलम पड़ा हमसे॥
एक दिन जल भरने जाती।
मात सहेल्यां हिल मिल ग्वालन नखरे सों चलती॥
कृष्णने मोही मेरी जान।
महलोंके ऊपर महल मेरा आधीरात का जो पहरा॥
किधर सों आया कृष्ण तेरा।
हो गया किस्त और मिस्त लिया शिर आन मेरा॥
मेरा मन हरया हरो मेरी जान।
उलझे नैना आवैना करे श्रो सेना से सैना॥
कृष्णानन्द गावत यह ताना।
सुन्दर बदन मदनमोहनमों जी लागा ध्याना॥

लावनी—जंगला

हम तेरे वे खातर बड़ी दूरसे आते।
तुम हमें देखके क्या मुखड़ा छिपाते॥
हमसों जो लगाई लगन काहेकूं तोड़ा।
मेरी कौन गुन्हा तकसीर बोलना छोड़ा॥
हम तेरे इश्क़में जोबन जोय जलाया।
चला छिरदेसी बेदरद दरद नहीं आया॥
यह साह वली उस्ताद गावता ख्याले।
पर इश्कका फन्दा बड़ा बुरा जञ्जाले॥

२

सुन सहेलियो मेरा लाल मनावो।
पल पसारके मेरा दरद सुनावो॥
तुम जावोगे हमे सङ्ग ले जाना।
मैं अकेली मेरा धरकना सोना॥
पिया मत जारे परदेशां का जाना।
कोई साल दुसाला आढ़ लपटके सोणा॥
इस पहरमें क्या परदेशोंको पाते।
उठ चला महोबत छोड़ जगतकी राते॥
इस पहरे में क्या रंडोंको असनाई।
कोई कठिन प्रोतको रात चातुरा भाई॥

३

परदेशीसे महोबत करके दिलमें पछताना।
छोड़ चला बेदरद बिछुरते लाज नहीं आना॥
धर घोड़े पर जीन सिपइया राज सुनजारे।
निकाल कमरसों कटार मेरे तनके मार जारे॥
भली करी मौलेने जोड़ी बिछुड़ाई।
याद करो उस रोज बिछुड़ते लाज नहीं आई॥
छोटा सा एक यार हमरा ढूंढ़ा जग सारा।
देश कवन सो जाय कि घरको भेजो हरकारा॥

४

ले गागर सागर सों निकसी कङ्कर मारे गिरधारी।

गगरो फूट गई चुनरी भीज गई
सासु ननद घर दे गारी ॥
जल भरनको जाय मेरा लाल पनघटवा।
उड़ो काग तुम जाव दखन को
खबर लावो मोर पीतमको उमगो जोबना कहा न माने
नदिया बाढ़ी सावनको ॥
इश्क करोगे मुसकल होगा रंडो अपने मतलबको।
इन बातनमें नफा नहीं है सङ्गत कर ले साधोंको ॥

अहीरी—प्रदीप

माया बेधर हो मन ए दई निकसब कैसे क होई।
जगमें आय कछु भक्त न कीनो
निशदिन खाय खाय सोई।
तन मन जिउ पिउ कछु नहीं जाना
वेस अकारथ खोई ॥
का आया कायाके हो गए याही को मल मल धोई।
चलतको बार याहु सङ्ग न लागी और लागे कब कोई ॥
का जम बेत सों हेतको विरवा खेतमें जोको बोई।
शिव ले नामको सांझ सवेरो फल पावै गो सोई ॥

२

माया क्या हमको भटकावे ठौर ठौर है वोही।
मो उरझाइके आप उरझा है अब निरवारे सोही ॥
कों उरझा और कामें उरझा एही है एहो ओई।
जोहि जोहि काज का रूप धरा उन सो एकोने होई॥
कुम्भ लियो पहले विन जोते कैसे जोता बोई।
सत गुरु मिल सब पायो काजम तनक कुमतिया खोई॥
पियाको मिलि आनन्द सङ्ग जागी खाई सोई ॥

३

खट कबतक हम भरिए दुखके दिन अबतक पिय
नहीं अइलो मा।
बीते असाढ़ तबके बिन पीके रो रो सावन गइलो मा ॥
भादो आसन पियको आस न
कौन कौन दुख सहिलो मा।
बारा मास दुःख में गुजरे कौन कौन गम खइलो मा
दुखके दिन कौने दिन जइ हैं
कब सुखको निश पइलो मा ॥
पियके मीत काजमसे पूछतो कहा धीरजको गइलो मा

खट

चित मोरा पिय ओर के भरे अब को गगरो।
लागी लगन पिय ओर को जबते
लोक लाज तबही बिसरो ॥
छूछी गगर धर जात डरे जिउ
कैसो पीत लगत करो डगरो ॥

श्रीरामदूताय नमः

लावनी—कलांगड़ा

हनूमान वीर ठंका जिनका मुलकोंमें डंका।
हुकम पाय कूदि गए लङ्का उठि जब रावणके शङ्का ॥
बड़े बड़े जोधा आए हैं स्वामो।
अखैकुमार मार्यो एक नामी ॥
बागे सब दियां उजारो।
लङ्का सोनेको जारो ॥
सिया सुध छिन में ले आए।
बीरवानो जब रिझाए ॥
मरजादा रखो समुन्दरको।
शिला सब तर गई पत्थरको ॥
सकत एक लागो लछमनकूं।
हुक्म जब दिया पवनसुतकूं ॥
सजीवन लाय देहु हमकूं।
कि मुसकिल नहीं है यह तुमकूं ॥
दोना गिर ल्याया एक छिनमें।
के लछमन जगाय दिया पलमें ॥
कारज रघुवरके सारे।
सदा तुम भक्तनके प्यारे ॥
अञ्जनी पूत धन्य तुमकूं।
दुष्टनको संहार करो तुम मेहर करो हमकूं ॥
सहायक सदा रहो मेरो।
के दुसमन आवे नहीं नेरो ॥

श्रीवल्लभ चन्दकी मायासा ।
के रघुवर मिलनेकी आसा ॥

लावनी—रेखता

गोरी एक बनो है हद वेश ।
शिरपर लम्बे लटके केश ॥
आदासे चली है मुख मोर ।
अचरा दिया उरसे छोर ॥
श्रीमुख कोटि चन्द सा झलके ।
मदभरी नैनांदो पलके ॥
नैनांमें श्याम फबरा कजरा ।
हाथोमें बेलांदा गजरा ॥
मांग शिर मोतिनको सोहे ।
गोरीका बांको है भोहे ॥
कानोमें करणफूल ढलके ।
शिर बिच शीश फूल झलके ॥
आड़ शिर सोहे केसरकी ।
मोह्यो मन मोती बेसरकी ॥
शिर पर टीको यों लहके ।
अङ्ग सब केतकी ज्यों महके ॥
गोरीके बेंदी फब रही भाल ।
आशिक पर डार्यो प्रेमदा जाल
भाल बिच हीरेकी टीको ।
दशननको चमक है नीको ॥
दांतोमें चुनोदी मेखें ।
मिसीदी अजब बनी रेखें ॥
नासिका सुवासा राजे ।
अधर लख किन्दरी लाजे ॥
नाक बिच सुन्दर है बारी ।
ओढ़े कुसुम्भी सारी ॥
ठोढ़ी मद चुम्बको शोभा ।
कपोल गाढ़ कामको गोभा ॥
गुलूबंद गलेमें सोहे ।
बाजूबंद देखि मन मोहे ॥

गोरीकी अजब बनी अंखियां ।
मुखमें चबाय रही बिडियां ॥
प्यारीकी खूब बनी छतियां ।
करमें हरी हरी चुरियां ॥
प्यारी कुच श्रीफल कर मदयां ।
चकवा दोउ श्रीफलकी सखियां ॥
हाथों हथफूल है भारी ।
पोहोंचो वङ्गडोको छब न्यारी ॥
पावनमें मेंदी है प्यारी ।
अङ्गुल्यांमें छल्लोंकी न्यारी ॥
उदर परो ना न है रेखा ।
नाभी गम्भीर छवि देखा ॥
प्यारी कटि केहरसो दरसे ।
लहंगा रङ्ग सुहावना सरसे ॥
नारा रङ्ग हरा बना भारी ।
गयन्द गति चलति मतवारी ॥
जङ्घा छवि कदली को नाई ।
अङ्ग बीच मदनको झांई ॥
कटिपर किङ्कनी राजे ।
मधुर सुर मन्द कल बाजे ॥
चरण बिच जेहर कर रही सोर ।
अनवट त्रिभुवनकी घनघोर ॥
पायल पग पायन यों झमके ।
नखां छवि चन्दकला चमके ॥
एड़ी रङ्ग नारङ्गी नाई ।
पगां तले कमलकी झांई ॥
गोराके अजब बने सब गात ।
सुन्दर हंसि हंसि करती बात ॥
गोरानें दर्पण लीना हात ।
चहुंदिश सुर सुरके मुसिकात ॥
गोरीने सज सोहल सिङ्गार ।
गले बिच मन मोतिनके हार ॥
नवेली सङ्ग लिए सखियां ।

दस्तों बीच फूलोंदी छड़ियां ॥
हुकुम श्रीवल्लभ का पाया।
छन्द यह यारोंने गाया॥
वल्लभ छन्द किया खासा।
जुगल चरननको है आसा॥

देवगान्धार—रेखता

देखें कहीं नन्दके लाला। बतावो वंशीवाला॥
मेरा जी उलझ गया आलो। टोना मोहे डारे वनमाली॥
तजो मैं खान पानीरो। नहीं मेरो पीर जानीरो॥
लगी दोय कानमें दूतो। तजो मोहे सेजमें सूतो॥
विरहका वाण मारा है। कलेजा छेद डारा है॥
सलोना सांवरा प्यारा। दृगन सों होय ना न्यारा॥
ढूंढ़ा वन बाग बी सारा। मिला नहीं प्राणका प्यारा॥
आली कोई हरि मिलावोरी। मेरा कोई जीव बचावोरी॥
देखे विन जीय तरफत है। नैनों बिच नीर बरषत है॥
जहां होय कान्ह कारोरी। मुझे ले जाय डारोरी॥
मेरो मन नाहीं मानेरो। लगी रट श्याम कान्हेरो॥
अरज हरिदास प्यारे सों। मिलावो कान्ह कारे सों॥
कृष्णानन्द आनन्दमें डोले। वृन्दावन करता कलोले॥

कलिङ्ग

सांवरे गोविन्दने मन तो मेरा हर लिया।
फिर गई तिरछी निगाह सीनेमें जादू किया॥
मोर मुकुट की झलक वंशीकी प्यारो ललक
कानमें कुण्डल चमक झांकी अजब गश किया।
भौंह तावांकी कमान चलते हैं चितवनके वान
रखता हूं मैं जाय प्राण सीनामें रस्ता किया॥
गिरिधर का यह काम जपता हूं एक तेरा नाम
रखता हूं मैं आठो जाम हरिके चरण दिया॥

ज'गला

रूड़ो पैठ वालो न थी नाथ तू नेहु न मुरे।
श्यामाटे न थी आव्या घेर आव्यां क्यां भ्रम्युरे॥
माहे मन मोन पुरो आसशाल हा क्यां विलम्युरे।
कृष्णानन्दनू पामस्ये एणी पेर माह्रे जीय भ्रम्युरे॥

बरवा

वालहा आमि जाने तुमि रङ्ग रङ्ग सुरङ्ग छो रेलो।
तुम निकले हो रङ्ग पतङ्ग छ वा निरमोही
न थइए दोनानाथजी रेलो॥
बाला आमि जाने तुमि दरियाव छो रेलो।
तुम निकले डंगरियां रानो छे ए वा निरमोही
न थइए दोनानाथजी रेलो॥
एणी पेरे कृष्णानन्द विनती करे रेलो।
श्यामा टे न थो आव्या माह्रे घेर है ए वानी रेलो॥

२

धन वृन्दावन रूड़ु धामके धन जमुना नदीरे लोल।
धन धन मोकलो यं साकुगासके
आठो भादरवा बदी रे लोल॥
त्याहा प्रगट्या नन्द नन्दन आनन्द मन अति
घणीरे लोल।
कृष्णानन्द जाय वलिहार उदयो व्रजचन्द तनी रे लोल॥

कालिङ्ग

श्यामा थें न थो आव्यारे आव्या।
वालहा तें तो जनम जनम ना माल्या॥
रूड़ी पैठे लागो वालहा नीका।
वालहा थें तो नन्दमहर ना कोका॥
चन्दन घसहुरे नीका।
माह्रे और लागे सब जग फीका॥
म्हाह्रे घेर आवोरे रसिया।
कृष्णानन्दने मन तुम वसिया॥

२

धन धन रूड़ो व्रजदेशरे।
वालहे माह्रे कीनो परवेसरे॥
तेने जपे ब्रह्मा शेष महेश चलो श्रीजीनो दरशन
करिएरे।
धन धन वृन्दावन धामरे धनधन गोकुलयूं गामरे
धन धन श्रीमथुरा धाम चलो श्रीनाथजीने जोइएरे॥
वालहो नटवर वेश साजेरे रसरास करे है समाजेरे

सब गोपिनमें आप विराजे चलो० ।
माहे मनमें थयूं आनन्दरे निरखि रूप वृन्दावन चन्दरे
वारी जावे श्रीकृष्णानन्द चलो० ॥

धनाश्री

तारे चरण कमलने हुं नमूं महारानीरे ।
वृन्दावन दे मोहे वास राधा रानीरे ॥
धन धन यह गोकुल गांम जो महारानीरे ।
धन वरसानो यह ठाम राधारानीरे ॥
धन नन्द गाम गोवर्द्धन महारानीरे ।
धन व्रज चौरासी धाम राधा रानीरे ॥
कृष्णानन्द जाए वारने महारानीरे ।
मुने श्रीकृष्ण मिलननी आस राधारानीरे ॥

२

नन्द नन्दन वृन्दावन चन्द प्रगट थयूं व्रज माहीजो ॥
अन्धकार सब दूर गयुं माहे
आनन्द भयुं मन याहीजो ।
रूड़ी पेठे लीलामृत जो गाते
कृष्णानन्दते वलवल जाहीजो ॥

सोरठ

माह्रे माटूं थयूं छे आनन्द आए सांवलिया
माह्रे मनना पूरी आस ।
मैं गाऊंरूड़ो तान
माह्रे मनमें छे अब ध्यान आए० ॥
सङ्खचक्र गदा पदम सोहै
निज भक्तजनको मन मोहै आए० ।
कृष्णानन्दने सुख पाया
राग रङ्गते घण जाम्यूं आए० ॥

धानी

माह्रे मनमें थयुं आनन्दरे आज सोहलो ।
माह्रे घर आव्या व्रजनाथरे आज सोहलो ॥
पूरव्या मनना सबही काजरे
निरख्या नैना श्रीव्रजराजरे आ० ।
धन वृन्दावन मथुरा धामरे
धन धन गोकुलियो यह गामरे० ॥
कृष्णानन्द निरख व्रज चन्दरे
काव्या जनन जमना दुखदन्दरे आ० ॥

राग—मल्हार

आज आनन्द माहे अति घनु आव्या व्रजना नाथ
मङ्गल गाबूंरे ।
आजनो दिन रलियां उमानूं सर्व पूरो
मननी वात मङ्गल गाबूंरे ॥
पलकन थो मग आमो झारस्यूं भेंट करूं माह्रो
नाथ म० ।
कृष्णानन्द जाए वारने धन धन माह्रा नाथ म० ॥

धानी

आज भोर हो माह्रा नाथजी आया छो म्हांरे द्वार जो ।
क्यां क्यां तुमो राती रम रह्या
कुड़ी नथो बोला म्हांमे बात जो ॥
रूड़ी पैठे पीठे कङ्गनादा गोयो नैना तंबोल लखात जो ।
धरनी पगी ते डगमगस्यूं धगे कृष्णानन्द
झूठा सोहै खात जो ॥

राग—गौरी

दाड़े दाड़े माखन चोरो करो छो तुम व्रनारे ।
नेदाड़ाना आव्याछो म्हांरे हाथ जो
श्रोछारे तू नन्द अहीरनारे ॥
नन्दगाम सों कान्ह तुमो आवियारे मागो छे
महीड़ानो दान जो श्यामा टे एटलो घेरनारे ।
मथुराते ग्वालनो चलीरे कहीं माथे छे महीडानो माठ
जो बीच रोके छे नन्दनन्दनारे ॥
मागे छे जोबन दान जो श्रोछारे तूं नन्द अहीरना
कान्ह गढ़ सुरे ग्वालन उतारनारे ।
नहीं दे छे महीड़ा दान जो कृष्णानन्द जाए वारनेरे ॥

मटीयाल

माह्रे मोटूं थयूं छे आनन्द जो हरिना जन पावनारे
लोक ।

माझे मोतियां बुठूछे मेह हरिना जन पावणारे
लोल पुरवलूं उदयो छे पुण्य हरि० ॥
रूडी पैठे छापा तिलक शोभतां जो कण्ठे सुन्दरती
तुलसीनी माल हरि० ।
कृष्णानन्द आनन्द डोलतां वलिहारी जावे कृष्णजीना
माझे घणुं थयूंछे आनन्द जो हरिजनना
पावणारे लोल ॥

भूपाली

आनन्द माझे मन थयूं सखी निरख्याते नन्दना नन्दरे।
अतीत हरख्या आल्हादमें सखी
आव्या श्रीगोकुलचन्दरे ॥
नैने ढाल निरखारे श्रीव्रजना नाथ श्रीगोकुलनाथ
गावो सखी आज सोहलो ।
घरघरते बन्दन माल सोभित गावे छे मङ्गलचाररे ॥
धा धा किटतक धुमकिट धा धिलाङ्ग
बाजे छे वीन मृदङ्गरे ।
बीच वसरी डफ झांझ झनकन गावे छे कृष्णानन्दरे ॥

लावनी

सुन रे मन क्यों फिरे भटकता
कर ले ध्यान जगदम्बेका ।
सुख सम्पत नित बढ़े पियारे होगा जनम सुफल तेरा ॥
बड़ा कठिन है मनुवा मेरे रस्ता प्रेमनगरकारे ।
समझ बूझ पग राख संभल कर
चाख प्रेमको रस प्यारे ॥
मधु जोबनमें फिरो दिवाना
कुछ नहीं ख्याल खबर तुजको ।
औसर गया हाथ नहीं आवे
समै पाय मत गाफिल हो ॥
सुमर भवानी सब जग जानी
कहा भरोसा इस तनका ॥
प्रेम सखीकी रहे आसरा सदा उसके हो चरणनका ॥

२

जै काली कल्याण करे सन्तन प्रतपालो सदा खुशालो ॥
मङ्गलकी सेवा सुन मेरी देवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खरे ।
पान सोपारी ध्वजा नारियर ले ज्वाला तेरे भेट करे ॥
बुद्ध विधाता तूं जगमाता मेरा कारज तूं सिद्ध करे ।
चरण कमल का लिया आसरा चरण तुमारे आन परे ॥
ज्यों ज्यों भीर परे भक्तनमें त्यों त्यों आनके सहाय करे ।
गुरूवारते सब जग मोहो चरण अनोखे रूप धरे ॥
मात होयके पुत्र खिलावे आप हो जननी सहाय करे ।
शुक्र सुखदाई सदा सहाई सन्तनके जय कार्ज करे ॥
ब्रह्मा शेष महेश सहसफनि लिये वेद तेरे द्वार खरे ।
तुमरी महिमा कबलग वरणों छिनमें संकट दूर करे ॥
वार सनीश्वरकूं का वरणो जब कालीका हुकम करे ।
खपर तसूल मण्डधारणो जब रक्तवीजकूं भस्म करे ॥
तेरो महिमा कब लग बरनू महोषासुरको पकर दले ।
आदित्यबार सुनि आदि भवानी
अपने जनके दुःख हरे ॥
बड़े बड़े सब दानव मारे चण्डमुण्ड सब चूर करे ।
जब तूं देखे दयारूप होय छिनमें संकट दूर करे ॥
सोम सुभाव धरे मेरी मैया जनको अरज कबूल करे ।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी अटल भवनमें राज करे ॥
दरसन पावे मङ्गल गावे सदासन्त तेरे ध्यान धरे ॥

२

कैसे करूं साजन पिया विन जाता है जोबन मेरा ।
कोन देशमें जाय बिलम रहे नहीं आया दिलवर मेरा ॥
बार बार गजमोती परोए सुरत बनाए गुलदारा ।
चन्द्रवदन सा बदन जो उसका
हुवा बादलमें उजियारा ॥
छतीस पान का बीरा चाबती नीर बरसता नैनोंमें ।
बाला जोबन मदनकी मस्ती पड़ गई प्यारे इश्कोंमें ॥
आसमान सो परी जो उतरी
ज्यों बीजल चमके बादलोंमें ।
सोले सिङ्गार बतीसों आभरण करके बैठो मेहलोंमें ॥
लावो जहरका प्याला पीजिए
अब नहीं जोवना मुल्कोंमें ।

बेदरदी सों प्रीत कर कै नफा न पाया यारीमें ॥
मदनमोहन को आन मिलावै उन बिन मेरा जीतरसे
रागरङ्ग सों तान सुनोंगी जासो हियरा अत हरसे ॥

४

खड़ी दरसन देखन को तिहारे दरसन दे जारे।
अरे जलदी आव मेरी जान सांवरे नैन मिला जारे ॥
बिन दरसन मन मानत नाहीं जसोदानन्दवारे।
करना प्यार हमारे प्यारे अबहीं आ जारे ॥
तुम तो बड़े प्रवीन हमकों ऐस प्रीत भारे।
अरे श्रीवृन्दावन-चन्द्र-बिलासी पूरन अवतारे ॥
यही चाह चित बढ़ी उमंग उर टरत नहीं टारे।
मिलिये धाय धाय पिय अपने मोहन मतवारे ॥
करिए केल कुञ्ज कुञ्जनमें गहर गहर बन टारे।
ख्याल खुशाल भरे अंग अङ्गमें वेग हो प्रगटारे ॥

तथा   रागसागर रचित

प्रथम भए रवनी बस प्यारे बिम्बकै उदे आए
राम किरिया खात।
बिवस भए देखियत गात अदेशकार कौन तोय
ललित वचन बोलत हो तुतरात ॥
बेला बेर बीत गई आली आस पूज गई देव
गरीब नवाज का कों भो सङ्कम खट पट भई रात।
दे शाख सुघर तोय सुआ बस्ल पहर खड़ो
सुघराई जानि परात ॥
हम आसवारी सारी रैन तुम देवगन्धारी गावत
गुजरी सुन बीती परभात।
तोड़ी हमसों प्रीत जौनपुर बसत है नवल तोय
दे शीख उने जाय लाचार हो बहादुरी डरात ॥
जङ्गल जङ्गल ढूंढ़त हारी झिझवट जिन करो
मेरे प्यारे आसा जीवत बिहात।
सारङ्गनयनी पास जावो मधु माधवी बड़ हंसनी
सामन्त प्यारे हन्दावन मध इहां लङ्क दहात ॥
धन धन श्री मूलतान मन्त्र पढ़ डार्यो अभी मैं
पल छन निरखत तुमकों पुरिया बड़ भाग गात।
जैतश्री वाकी पूरब पूरे पुण्यफल जाकों पूरवा लखात ॥
मार वाने दई है कामको श्रीमहाराज
गोरी गोरी टंकरात।
एमन होत कल्याणकों चाहत भूपाल बड़े
हमीर पूरी रात ॥
को मोदीयत कर छाया पग डगमगात।
ऐड़ात जभात बहु नायक हो जु कान्हर बागे कैमरो
कण्ठमाल कौस्तुभमणि महाना बोल सुहात ॥
वाके दरबारमें गए बहार करन हिंडोरे
पांचमे बसत हो भंवर नाम कहात।
बिहागत भई मेरी खम्भा पकर ठाढ़ी रहत
पर जो दुख बीतो मारू कासे कहूं बात ॥
सो रटन लागो सास मेरो जय जय बनियां करार कर गए
सोहनी मोहनी कर घात।
मोहिं अहीरी जान गोकुल ग्वालिया एराको चाल
चलत छलक छांड कहीं जात ॥
कपोल कहां पीक लागो जानि है जु जानो दीपक
चन्द प्रकाश भए नीलाम्बर आढ़ आए कलि
गये अवध दे रात।
हे घनश्याम मोलार नटवर हैं वाहीके गोड़े पग धरात ॥
बांके श्रीविहारी लहर लीम पहाड़ पै
कङ्कन गड़ात खड़ी ता नायकाकी बात।
बेजु बावरो रावरो हितू हितारो रागसागर गावत
तीन तिलक शिर मांझ देखात ॥

इति रागसागर

सोरठ

मेरा दिल है बेक़रार सांवनमें पी तू आ जा।
कारी घटा डरावै बिरहा मुझे सतावै
तेरा है इन्तज़ार सा० ॥
कोयल कुहुक सुनावे बिजुरी चमके देखावे
बरसे है बारबार सा०।
बोलि हैं दादुर मोर करते हैं झींगर शोर
•बरषा नई है बहार सा० ॥

बेताब हूं सुन ए दिल भाता नहीं कुछ तुम विन
आंसू है जार जार बा० ॥

२

परदेशी पो कब आवेंगे बमना सगुन बिचार।
कारो घटा सब छाई नदीयां सबी भर आई
पड़ने लगो फुहार ॥
सुनियो वीर बटोही पियासों कहियो यों हो
रोती है जार जार ॥

३

केसरिया बालम राज तू म्हांरे डेरे होता जा।
सेज टिलको सूनो है सोनेके मन्दिरमें
चैनो खुसो पाई न कहीं विरहा नगरमें
यह हुस्न मुलक उन बिना होता है तराज तू० ॥
पण्डित जो पूछतो हूं ब्रह्मा जीत बामना
कहो शुभ घरी सों आवे सजन मेरे आंगना
रुदका माता आवे मेरे वस्लका सिरताज ॥

सोरठ

निगह वह तीर जिसको है जुल्फ ज़ञ्जीर जिसको है।
फ़िरशते देखकर हैरां कि यह तसवीर जिसको है॥
कन्हैया हुस्नका सागर लहर गम्भीर जिसको है।
अजब महबूब है बांका अदा शमशेर जिसको है ॥
मरे आशक़ जिलाने को हंसो अक्सोर जिसको है।
सलोना सांवरा प्यारा कि राधा मोर जिसको है ॥
तगाफ़ुल ऐसे सुन्दर पर बड़ो तक़ सीर जिसको है ॥

२

छवि देखि कन्हैयाको दिल हो गया दोवाना।
ज्यों गुल पर भ्रमर घूमे ज्यों शमा पर परवाना ॥
ज्यों चन्द्रमें बादल तैसे ज़ुल्फोंका घुमड आना।
वह बांको निगाहैं और कछु मन्द सा मुसकाना ॥
वह सांवरे तन ऊपर गहनोंका झमक आना।
ज्यों श्यामघटा भीतर बिजुलीका तड़प जाना ॥
ज्यों कृष्णका दरसाना ज्यों राधिकाका आना।
यह दोनोको छब ऊपर सुन्दर हुवा कुर्बाना ॥

करुणानिधान सुनिए कछु करुणा कान्ह मेरो।
निशदिन रट लाग रही है जिय मांझ याद तेरो ॥
प्रह्लादके हितकारो। खम्भ फार देहधारो ॥
नृसिंह नाम पाए। सब सन्तनके मन भाए ॥
गजको जो अरज मानो। सो तो अविदित वानो ॥
ग्राहके जो फन्द काटे। अघ कोट कोट डाटे ॥
जुग जुग पतित तारे। कवि गिनत गिनत हारे ॥
टुक मेरो ओर देखो। तुम सोवत हो के जागो ॥
मैं बार बार टेरों। टुक बाट तिहारो हेरों ॥
महाराज अवध-बिहारो। मिल राम सखो वलिहारो॥

भगवत्स्तुति

करुणामृतैकजलधे शृणु कृपया मे सुवाचम्।
करुणासुनोसि साधो, कमलेश दोनबन्धो,
प्रह्लादमेव पातु, दितिजासुरं निहन्तु,
कृष्णानन्दं पातु लक्ष्मीपतं शरणं त्वम् ॥

२

भुवनगुप्तये ब्रह्मणार्चितम्,
दशरथालये व्यक्तिमागतम्,
जनकनन्दिनोलक्ष्मणान्वितम्,
भज मनः सदा राममद्भुतम्।
कमललोचनं पापमोचनम्
स्वजनरञ्जनं हतभञ्जनम्,
षड्रिपुमर्द्दनं बुद्धिवर्द्धनम्
भज मनः सदा राममद्भुतम् ॥
अमरकिन्नरैः सिद्धचारणैः
मुनिभिरर्चितैरप्सरोगणैः
परमविद्यया स्वेच्छया चितं
भज मनः सदा राममद्भुतम् ॥

३

अच्युतं केशवं रामनारायणम्
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभम्
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥

खगजं शेषपं सत्यभामाधवं श्रीपतिं श्रीकरं
राधिकाराधितम्।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं
नन्दजं संदधे॥
विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे रुक्मिणीनायके
जानकीवल्लभे।
वल्लभी-वल्लभायान्वितायात्मने कंसविध्वंसिने
कृष्ण केशिघ्नते असुरनिकन्दिने॥
कृष्ण गोविन्द हरे भक्तपते नरहरे
वनमालिन् विट्ठल वृन्दावनचन्द्र हे।

द्वारकानायक द्रौपदीसहायक
असुरविदारक यशोदानन्द हे॥
राक्षसादण्डित सीतया शोभित
लक्ष्मणेनार्चित वानरै सेवित
सर्व्वविश्ववन्दितागस्तिना पूजित
राघव-रावणमस्तकछेदन हे।
धेनुकारिष्टकानिष्टकृत् प्राणहृत
भूमिभारदूरकृत् गोब्राह्मणपालन हे॥

इति श्रीकृष्णानन्द-व्यासदेव-सङ्कलित रागसागरोद्भव सङ्गीत-रागकल्पद्रुमे
मूलतानी-बरवा-कहरवा-दादरा-बिहारी-सोरठ-रेखता-गजलियात
पश्तगभादि रङ्गीन गान सम्पूर्ण।

———०———